साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ११ रविवार ७ जनवरी १९९० माघ सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत् १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

विनायक नगर (केशव स्मारक विद्यालय) हैदराबाद में

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशताब्दी समारोह सम्पन्न

हैदराबाद, ३१ दिसम्बर १९८९

सन् १९३८-३९ का हैदराबाद आर्यसत्याग्रह का आन्दोलन (धर्म-युद्ध) आर्यसमाज के स्वर्णिम इतिहास मे एक प्रमुख अध्याय है। इस सत्याग्रह की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्त्वावधान मे २९, ३० तथा ३१ दिसम्बर १९८९ को 'हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी महोत्सव" तथा "अखिल भारतीय आर्य त्रि-दिवसीय सम्मेलन", विनायकनगर (केशव स्मारक विद्यालय का विशाल प्रागण) नारायण गुडा, हैदराबाद मे देश के विभिन्न प्रातो से आये हुए हजारो आर्य नर-नारियो की उपस्थिति में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के पचास वर्ष पूर्ण होने के इस अवसर पर आयोजित इस ऐतिहासिक समारोह मे बलिदानी आर्य वीरो को बडी श्रद्धा के साथ याद किया गया तथा उनके बलिदानो से प्राप्त प्रेरणा को हृदयगम करने का सकल्प लिया गया। स्मरणीय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जनवरी १९३९ में एक प्रचण्ड धर्मयुद्ध हैदराबाद निजाम के विरुद्ध प्रारम्भ किया था, जो आठ मास तक चला, जिसमे लगभग चालीस आर्यवीर वीरगति को प्राप्त हुए थे, तथा हजारो आर्य सत्याग्रहियो, जिनमें सभी धर्मों, वर्गों, प्रातो के अतिरिक्त विदेशी भी थे, ने निजाम हैदराबाद की जेलो की घोर यातनाएँ सही थीं।

अर्धशताब्दी महोत्सव का प्रारम्भ शुक्रवार दिनाक २९ दिसम्बर को प्रात ८ बजे विशाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ हुआ, जिसका ब्रह्मत्व प० राजगुरु शर्मा, प० पृथ्वीराज शास्त्री तथा प० विश्वमित्र जी ने किया। श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर नई दिल्ली के ब्रह्मचारियो ने वेद पाठ किया।

पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने समाराह का शुभारम्भ ध्वजारोहण के साथ किया। इस अवसर पर श्री स्वामी जी महाराज ने "ओ३म्'-पताका, आर्यसमाज और हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के महत्त्व की विस्तृत चर्चा करते हुए अमर शहीद आर्यवीरो को श्रद्धाजलि प्रस्तुत की तथा उनके प्रेरणाप्रद जीवन को हृदयगम करने का आह्वान किया। पूज्यपाद स्वामी सर्वदानन्द जी और प० गगाराम जी ने सगठन-शक्ति के महत्त्व पर प्रकाश डाला। विषय का प्रवर्त्तन लौहपुरुष प० रामचन्द्रराव 'वदेमातरम्" ने किया। श्री नारायण स्वामी जी वानप्रस्थी ने स्वागत भाषण किया।

शनिवार, ३० दिसम्बर को यज्ञोपरान्त प० राजगुरु शर्मा तथा प० पृथ्वीराज शास्त्री ने जहा वेदोपदेश किये वहा प० क्षितीश वेदालकार, जो १९३९ के सत्याग्रह के प्रथम सत्याग्रहियो मे थे ने वेदोपदेश के साथ अपने ऐतिहासिक सस्मरण सुनाये।

दोपहर बाद विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। दस हजार से भी अधिक सम्पूर्ण भारत मे आये नर-नारी विशिष्ट साजसज्जा के साथ इसमे सम्मिलित हुए। शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प० रामचन्द्र राव वन्दे मातरम, डा० धर्मपाल, प्रो० शेरसिह, श्री छोटूसिह एडवोकेट, स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री वटुकृष्ण जी आदि विभिन्न प्रान्तो की सभाओ के प्रधान कर रहे थे। विशाल शोभायात्रा हैदराबाद के राजमार्गो से होती हुई चल रही थी। अनेक स्थानो पर आर्य नेताओ

(शेष पृष्ठ २ पर)

देश की वर्तमान विस्फोटक स्थिति में

कश्मीर और पंजाब में चुनाव न कराये जायें

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशताब्दी में आर्य नेताओं का सरकार को परामर्श

विनायक नगर (हैदराबाद) ३१ दिसम्बर। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्द्ध शताब्दी समारोह के अन्तिम दिवस के खुले अधिवेशन मे खचाखच भरे हुए पडाल में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की वर्तमान साम्प्रदायिक स्थिति को देश की अखण्डता के लिए भारी खतरा बताते हुए कहा कि जब तक काश्मीर और पजाब की वर्तमान अवस्था सामान्य नही हो जाती उस समय तक वहाँ विधानसभा चुनाव न कराए जावे।

स्वामी जी ने कहा कि पजाब और काश्मीर की वर्तमान भयानक स्थिति के लिए केन्द्रीय सरकार की ढुलमुल और घुटने टेक नीति ही जिम्मेदार रही है। स्वामी जी ने भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से जोरदार अपील करते हुए कहा कि लोकसभा मे पहली बार देश की जनता ने उन्हें भरोसे मे लिया है। लोकसभा की यह देशभक्त पार्टी देश को उचित मोड देने मे सक्षम है, क्योकि उसके पास योग्यतम नेतृत्व है। इसलिए वह खुलकर अपनी आतरिक विचारधारा को मूर्त्तरूप देकर देश का मार्ग-दर्शन करे।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी—आर्यसमाज ही भारत में राष्ट्रीय चरित्र का विकास कर सकेगा—कुमुद बेन जोशी

हैदराबाद-विनायक नगर ३१ दिसम्बर। उपर्युक्त उदगार आन्ध्र प्रदेश की राज्यपाल सुश्री कुमुद बेन जोशी ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी महोत्सव के तीसरे दिन के पांचवे सत्र मे व्यक्त करते हुए कहे, उन्होंने बडे गर्व के साथ यह कहा कि आज मैं जो कुछ हूँ वह आर्यसमाज की देन हूँ, मेरा जन्म आर्य परिवार मे हुआ मेरा पालन-पोषण भी आर्य समाज मे ही हुआ है, इसीलिए महर्षि दयानन्द पर मुझे अत्यन्त श्रद्धा एव गर्व है।'

राज्यपाल कुमुद बेन जोशी ने कहा, 'आर्यसमाज कोई साम्प्रदायिक सस्था नही है, वह तो मानव धर्म का सन्देश देने वाला एक सुदृढ सगठन है। वास्तव मे स्वतन्त्रता सग्राम मे आर्यसमाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है'

राज्यपाल ने कहा 'हैदराबाद एक ऐसा सगम स्थल है जहा से जो कोई आन्दोलन शुरू होता है तो उसकी गूज सारे देश मे प्रतिध्वनि के रूप मे होती है। आज से पचास वर्ष पूर्व इसी हैदराबाद की धरती पर हजारो आर्य सत्याग्रहियो ने अपने साहस का उल्लेखनीय कार्य किया है उसकी बदौलत सम्पूर्ण हैदराबाद प्रदेश आज सुख की सास ले रहा है।

अन्त में राज्यपाल ने कहा आज इस विषम परिस्थिति मे आर्यसमाज ही राष्ट्रीय भावात्मक एकता और राष्ट्रीय चरित्र के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव ने आरम्भ मे राज्यपाल का स्वागत किया और अध्यक्षता स्वामी आनदबोध सरस्वती ने की।

राज्यपाल के समारोह मे जाते समय उपस्थित जन समूह ने गोहत्या बन्द करो के गगन भेदी नारे लगाये।

स्वतन्त्रता के दिनो में सर्वप्रथम आर्यसमाज ने दी आवाज थी —जाखड़

आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी समापन समारोह मे पूर्व लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड ने अमर स्वतन्त्रता सेनानी एवम् आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओ को सबोधित करते हुए कहा कि आज की राजनीति की नीव में भूठ विद्यमान हो गया है, अब देश की जनता को सोचना चाहिए कि आज भारत मे क्या हो रहा है और क्यो हो रहा है? किस किस लिए हो रहा है?

श्री जाखड ने स्पष्ट शब्दो मे कहा, आर्यसमाज एक ऐसी सस्था है जो देश मे राष्ट्रीय भावना को सुदृढ कर सकता है, आज देश की रक्षा का प्रश्न महत्त्वपूर्ण है, देश की एकता और अखण्डता की बात सर्वोपरि है। सम्पूर्ण भारतवासी भारत को अपनी माता और सारे लोगो को अपना भाई-बन्धु समझे, सारे नागरिक समान रहे न्याय पूर्ण रहे, इस प्रकार की सभी भावना केवल आर्यसमाज के द्वारा पैदा की जा सकती है।

(पृष्ठ १ का शेष)

का पुष्प मालाओ से स्वागत किया गया। अनेक प्रातो एवम् आर्यसमाजो से आई मडलियाँ अपने विशाल पट लिये आर्यसमाज का सन्देश गुजाती हुई चल रही थी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की मडली का नेतृत्व श्री प्रियतमदास रसवन्त श्री सुरेन्द्र कुमार हिन्दी तथा श्री वेदव्रत शर्मा के दोनो सुपुत्र कर रहे थे। भारी वर्षा होते हुए भी जुलूस अपने मार्ग पर अबाध गति से चलता रहा। वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, अत्यधिक भीग जाने पर भी जुलूस का नेतृत्व करते रहे। हैदराबाद के शहीदो को अपनी श्रद्धाजलि इस प्रकार अदम्य धैर्य एव साहस के साथ दी।

रविवार ३१ दिसम्बर को भारतीय सविधान और धर्मनिरपेक्षता सगोष्ठी का उद्घाटन श्री बलराम जी त्रिखा एडवोकेट ने किया। श्री राजेश्वर राव जी मुख्य अतिथि व श्री गोपाल राव जी एडवोकेट अध्यक्ष थे। श्री नवनीतलाल एडवोकेट व प० वन्दे मातरम् जी ने विषय प्रवर्त्तन किया। श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज के त्रिसूत्री कार्यक्रम को पूर्ण निष्ठा के साथ क्रियान्वित करने के लिए आर्यजनो का आह्वान किया। गोवध निषध, नशाबन्दी तथा अग्रेजी हटाओ—ये तीन आर्यसमाज के कार्यक्रम जनता के सम्मुख हैं।

योगी श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी का निर्वाण

७ जनवरी १९९० सायं ३ बजे

श्रद्धाञ्जलि सभा

गुरुकुल श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली, गुरुकुल खेडा खुर्द, दिल्ली, गुरुकुल बुकलाना, मेरठ, गुरुकुल वार्शी हैदराबाद, पातञ्जल योगधाम, ज्वालापुर, बौन्तापल्ली योगधाम आदि के सस्थापक योगी श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती का २६ दिसम्बर ८९ को ब्रह्ममुहूर्त मे स्वर्गवास हो गया।

स्वर्गीय श्री स्वामी शुद्धबोध तीर्थ के एकनिष्ठ शिष्य के रूप मे स्नातक बनकर निकलने के उपरान्त आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री ने प्राचीन आर्ष पणाली पर व्याकरण के पठन-पाठन के लिए उल्लेखनीय कार्य किया था और इसके अभिनन्दनीय प्रयोग को उन्होने 'दयानन्द वेद विद्यालय' की स्थापना द्वारा सफल किया था। अपने आर्ष शिक्षण की प्रतिभा उन्होने 'सिद्धान्त कौमुदी की अन्त्येष्टि' नामक रचना में प्रदर्शित की थी। अपनी विशिष्ट प्रबुद्धता का परिचय "दयानन्द सन्देश' नामक मासिक-पत्र के सम्पादन द्वारा दिया था। जिसके कमवीर अक, आचारा अक स्वराज्य अक आदि आज भी अपनी महत्त्वपूर्ण सामग्री के लिए स्मरण किये जाते है।

"सार्वदेशिक" मे प्रकाशित महर्षि दयानन्द की 'अज्ञात जीवनी' पर दीर्घ अनुसधान कर "योगी का आत्मचरित्र" लिख कर आपने भारतीय स्वतन्त्रता समर का एक अचर्चित पक्ष तो उजागर किया ही, पातजल योग का भी विशदीकरण किया।

दयानन्द, आर्यसमाज और योग के इस दीवाने का अभिनन्दन अभी हाल ही मे तो "आर्ष परम्परा के गौरव गुरु' ग्रन्थ में भेट कर किया गया था।

इस असामयिक देहावसान को घडी मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा 'आर्यसन्देश' परिवार परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है, दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा आर्यजनो को उनके आदर्श जीवन मे प्रेरणा प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करें।

७ जनवरी १९९०, शनिवार साय ३ बजे गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली मे श्रद्धाञ्जलि सभा होगी। सभी महानुभाव अधिकाधिक सख्या मे पधार कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

गुरुकुल पत्रिका—मासिक शोध पत्रिका

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की गुरुकुल-पत्रिका मासिक शोध पत्रिका का प्रकाशन प्रो० जयदेव वेदालकार के सम्पादकत्व में नियमित हो रहा है। वर्ष ४१ के इस अप्रैल-जून १९८९ में उन्होने ख्याति प्राप्त विद्वानो के शोध लेखो का सुन्दर सकलन किया है। डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित 'ऋषि दयानन्द की जीवनी—एक विश्लेषण' लेख मे ऋषि के जीवन काल विषयक भ्रातियो का निराकरण सहज ही हो जाता है। डा० सत्यव्रत सिद्धातालकार ने 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' लेख में वेदो की सार्वकालिकता का प्रतिपादन किया है। भारतीय सस्कृति के पोषक कवि श्री नरेश मेहता के व्यक्तित्व एव कर्तृत्व का भी सुन्दर विश्लेषण सुधी आलोचक डा० विद्यासिंह ने प्रस्तुत किया है। आर्य समाज सान्ताक्रुज तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के अधिकारियों द्वारा साहित्यकार, कर्मठ पत्रकार एव वेद मनीषी आदरणीय प० सत्यकाम जी विद्यालकार, विद्यामार्तण्ड के सेवा मे समर्पित अभिनन्दन पत्र का अविरल प्रकाशन प० जी महाराज के कर्तृत्व का मूल्याकन तो है ही, यह अन्य सस्थाओ के लिए प्रेरक भी है। विश्वविद्यालय द्वारा पत्रिका के नियमित पकाशन के लिए अनुशसा—

—डा० धर्मपाल

वेद-मनन

उपदेश

पृथक् सर्वे प्राजापत्या प्राणानात्मसु बिभ्रति ।
तान् सर्वान् ब्रह्म रक्षति ब्रह्मचारिण्याभृतम् ॥
अथर्व, काण्ड ११ । अ० ३ । सूक्त ५ । २२ ॥

एक मनुष्य की प्रकृति दूसरे से मिलती नही है। सब अपने जुदे-जुदे सस्कार साथ लेकर उत्पन्न होते हैं। सब के एक सी ही शक्तियां नहीं और न एक से उद्देश्य हैं। उन के कर्मानुसार उनकी रुचियां पृथक्-पृथक् हैं। सब एक ही रस्सी में बांधे नहीं जा सकते। कवि ने ठीक कहा है—'भिन्नरुचिर्हि लोक ।' कह सकते हैं कि जितने मनुष्य हैं उतनी ही उनकी लगन हैं। इन विविध रुचियों का प्रादुर्भाव कैसे होता है ? यदि शिक्षक इन सब को गडरिये की तरह हाकने वाला हो तो उनके अन्तर कोई शक्ति ही दिखाई नहीं देती। वे भेडों के गल्ले की नाई चल देते हैं और जब शिक्षक रूपी गडरिया एक पल के लिए भी उन से ओझल होता है तो उन के लिए सीध रास्ते चलना कठिन हो जाता है।

जीवात्मा मानसिक, वाचिक और कायिक कर्म करने मे स्वतन्त्र है। केवल उन कर्मों का फल भोगने में वह परतन्त्र है। इस स्वतन्त्र कर्त्ता के अन्दर स्वतन्त्र ही प्राण शक्ति है। यदि उसे दबा दिया जाय तो 'जीवित शव समान वह प्राणी' की लोकोक्ति उस पर घट जाती है। वह स्वाभाविक के तुल्य हुई शक्तियां किस प्रकार लाभदायक हो सके ? इसके लिए आवश्यक यह है कि आचार्य अपने शिष्यों में वेद-ज्ञान के भरने का यत्न करे। उनको अपनी मानसिक शक्तियों का दास बनाने की चेष्टा न करे। फिर किसी प्रकार की चिन्ता नही रहती। आचार्य का स्वाभाविक रीति से ब्रह्मचारी में भरा वेद ज्ञान स्वयम् उन के विकास का साधन बनता है।

बालक के अन्दर उसकी प्रकृति के अनुसार ही विचित्र प्रश्न उत्पन्न होते हैं। मूर्ख अध्यापक उनको दबाने की चेष्टा करता है। प्रत्येक अध्यापक अपना गौरव स्थिर रखने के लिए आवश्यक समझता है कि वह अपने आपको अपने शिष्यों के सामने सर्वज्ञ सिद्ध करे। वह भूल जाता है कि शायद उसके सुपुर्द ऐसा बालक किया गया है जो पूर्व जन्म में उस से कहीं अधिक उन्नति कर चुका है। यदि शिष्य की बुद्धि गुरु की अपेक्षा तीव्र है तो ऐसे बर्ताव से उस को बड़ा गहरा धक्का लगता है। यह भूल नहीं जाना चाहिए कि आचार्य का काम केवल शिक्षा देना ही नहीं, शिक्षा ग्रहण करना भी उसका कर्त्तव्य ही नहीं अधिकार है। अपने बीस वर्षों के आनुपूर्वी अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि जिन शिक्षको ने जीवात्मधारी बालकों को केवल जड यन्त्र समझ कर उनको रेवड़ की तरह हाकने का यत्न किया उन्होंने न केवल अपने आधीन विद्यार्थियों की उन्नति ही रोक दी प्रत्युत अपने आपको भी अवनत किया। परन्तु जिन्होंने इस आत्म सम्पन्न प्राणधारियों को केवल मार्ग दिखाना ही अपना कर्त्तव्य समझा उन्होंने न केवल अपने शिष्यो के आत्मा को विचित्र प्रकार से विकसित ही किया प्रत्युत अपनी दैवी शक्तियों को भी प्रादुर्भूत किया। इसका विशेष कारण भी है। जो वाणी पर ही सारा निर्भर न कर के कर्म का आश्रय लेते हैं उन्हें अपने शिष्यो का मार्ग दर्शक बनने के लिए उन गुणों का अनुकरण स्वयम् करना पड़ता है जिन्हें वे विद्यार्थियों के मनों में भरना चाहते हैं।

वेद-ज्ञान ब्रह्मचारी के अन्दर क्यों भरना चाहिए ? इसलिए कि वैदिक शिक्षाओं मे से वह अपनी प्रकृति के अनुसार स्वय मार्ग चुन लेवे। गुरु का परिमित, एकदेशी ज्ञान शायद ही एक दो शिष्यों के लिए उपयोगी हो। वेद ज्ञान मे इतनी लचक है कि उसे प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयोगी बना सकता है। गुरु परम्परा से जिस ज्ञान को ग्रहण करते आए हैं उस मे जो बल है वह एक व्यक्ति के कृत्रिम रीति से उपार्जन किए ज्ञान में नही हो सकता। इसलिए वेद द्वारा भगवान् का आदेश है कि जिस मनुष्य जाति के अन्दर ज्ञान प्राप्त करने का विशेष कारण (बुद्धि) विद्यमान है उस की भलाई इसी में है कि उस कारण को स्वाभाविक रीति से पुष्ट तथा विकसित करने के लिए उसे हिला दिया दिया जाये, उसे बलात्कार से खींच कर किसी एक ओर लगाने का यत्न न किया जाय। जब तक ससार में ब्रह्मचर्य के मूल साधनों को फैलाने का यत्न न होगा तब तक बढ़ा हुआ राग द्वेष उस ससार को, जिसे उसके निर्माता ने उन्नति का धाम बनाया था, नरक कुण्ड ही बनाता रहेगा।

शब्दार्थ

(सर्वे प्राजापत्या) प्रजापति आचार्य के सब शिष्य (पृथक्) भिन्न-भिन्न रुचि वाले होकर (आत्मसु प्राणान् बिभ्रति) अपने शरीर में प्राणों को धारण करते हैं। (तान् सर्वान्) उन सब शिष्यों को (ब्रह्मचारिणि) ब्रह्मचारी आचार्य में (आभृतम्) रखा हुआ (ब्रह्म) ज्ञान (रक्षति) रक्षा करता है।

ओ३म् तमीशान जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे,वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये ॥

पूषा-पोषणकारी

—देवनारायण भारद्वाज

※ ● ※

प्रभु के बिना ठिकाना क्या, कोई और नहीं अँगनाई।
हम ने बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यो तुम ने देर लगाई ॥
प्रभु के ईक्षण की यह माया
उसने दर्शन यह दिखलाया
जो नाथ जगत् का स्वामी है
उसने ही यह जगत् बनाया।
जगत् चराचर सचारक तक, हम ने अपनी पेंग बढाई।
हम ने बढकर टेर लगाई, फिर क्यो तुम ने देर लगाई ॥
प्रभु 'पूषा' पोषणकारी हो
हर क्षण करने रखवारी हो
विज्ञान विभव दोनो ही के
पालन कर्ता अधिकारी हो।
इसी अकेले अधिशासी से जगभर ने कुबेरता पाई।
हम ने बढकर टेर लगाई, फिर क्यो तुम ने देर लगाई ॥
हो हिंसा रहित स्वस्तिकारी
जग सभी तुम्हारा आभारी
आओ - आओ हमे बचाओ
कर दो रक्षा अभी हमारी।
अब तो होगे तुम्ही सहाई, हम ने तुम से आश लगाई।
हम ने बढकर टेर लगाई, फिर क्यो तुमने देर लगाई ॥

—आर्यसमाज आजमगढ़ (उ० प्र०)

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

मे ऋषि बोधोत्सव का आयोजन

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव २२, २३, २४ फरवरी, १९९० को ऋषि जन्म स्थली टकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। देश-देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान् ऋषि के चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेगे। कन्या गुरुकुल (बडौदा, पोरबन्दर, जामनगर) की कन्याए, टकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी, आर्यवीर दल ध्रागध्रा के युवक, समारोह में कार्यक्रम प्रस्तुत करेगे। अभ्यागतो के आवास, भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टकारा ट्रस्ट की ओर से नि शुल्क होगा।

विनम्र निवेदन है कि आर्यजन भारी सख्या मे ऋषि बोधोत्सव पर टकारा पधारें और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें।

प्रधानमन्त्री के नाम सभा-

सम्माननीय
श्री विश्वनाथ प्रतापसिह जी,
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली।

महोदय,

सादर नमस्ते!

भारतवष लम्बे समय तक एक गुलाम देश रहा है। पिछली शताब्दी मे पुनर्जागरणकाल मे कुछ महापुरुषो, मनीषियो, सन्तो तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओ ने इस परतन्त्रता की विवशता के सम्बन्ध मे गभीरता पूवक विचार किया तथा गुलामी की बेडियो को काटने की दिशा मे यथाशक्ति प्रयास किए। १८५७ का प्रथम स्वाधीनता सग्राम इस दिशा मे एक महत्त्वपूर्ण कदम था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की। महर्षि ने अनेक सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक आयामो का चिन्तन किया और उस समय के ज्ञान में सवर्धन किया। "स्वराज्य" का प्रयोग करने वाले वे पहले व्यक्ति थे। आगे चल कर कांग्रेस की स्थापना १८८५ मे हुई और राष्ट हित के तथा समाज कल्याण के सभी कार्यक्रम काग्रेस ने अपने हाथ मे ले लिये। इसका एक मुख्य कारण यह भी था कि काग्रेस मे ८० प्रतिशत ऐसे लोग थे जिनकी शिक्षा-दीक्षा आर्यसमाज की सस्थाओ मे हुई थी अथवा वे आर्यसमाज की विचार-धारा से प्रभावित थे। महात्मा गाधी ने काग्रेस को नेतृत्व प्रदान किया और उस समय सम्पूर्ण स्वराज्य' का कार्यक्रम हाथ मे लिया गया। उस इतिहास को दोहराना मेरा उद्देश्य नही है।

भारत स्वतन्त्र हुआ। चारो ओर प्रसन्नता थी और आशा की गयी कि कि अब राष्ट्र उन्नति करेगा और हमे यह कहने मे गर्व होना चाहिए कि अनेक क्षेत्रो मे राष्ट्र ने सामाजिक और व्यक्तिगत उन्नति भी की। आज हमारा देश विश्व के देशो के बीच अपनी पहचान लिये हुए है।

स्वतन्त्रता के बाद लम्बे समय तक काग्रेस की सरकार ही इस देश मे बनती रही। लोगो के मन मे काग्रेस के प्रति सम्मान और श्रद्धा के भाव थे। यह सृष्टि का नियम है कि लम्बे समय तक एक समान रहने पर उसमें विकृति आ जाती हैं और उसके परिष्कार की आवश्यकता रहती है। यदि परिष्कार न किया जाए तो प्रगति अवरुद्ध हो जाती है और मात्र प्रवाह रह जाता है। मात्र प्रवाह से किसी का कल्याण नही होता।

देश में १९८९ में राष्ट्रीय निर्वाचन हुए और जनता ने आप को राष्ट्र का नेता चुना। आपके हाथ में आज देश का नेतृत्व है। आप के ऊपर उत्तरदायित्व भी बहुत अधिक है। सर्वप्रथम उत्तरदायित्व तो यही है कि जनता ने जो कजूस बहुमत आपको दिया है, उसे आप वास्तविक बहुमत मे बदल सकें। आपको दो वैसाखिया दो गयी है। आप को अपने को सशक्त बनाना है ताकि इन वैसाखियो से आप छुटकारा पा सकें। बल्कि मैं तो कहूगा कि इन वैसाखियो की कीलो को अपने अपने पैरों के अन्दर समाहित कर लें। उन्हें अपने अन्दर आत्मसात् कर ले। यह कोई आसान काम नही है, पर असम्भव भी नही है। एक-डेढ वर्ष का समय किसी भी सस्था के इतिहास मे नगण्य होता है, पर कुछ क्षण ऐसे होते है जो धारा-दिशा को मोडते हैं और वे ही ऐतिहासिक होते हैं। जनता दल का यह समय ऐसा ही था।

आपको यह सिद्ध करना है कि इस प्रकार की परिस्थितियो मे भी आप परिष्कार की ओर अग्रसर हो सकते हैं। सब से बडा विकृति का मसला भ्रष्टाचार का है। उससे मुक्ति पाना अपने साये से मुक्ति पाने के समान है। समाज मे भ्रष्टाचार को लोग व्यवहार मानने लगे है। धार्मिक सस्थाओ से भी सरकारी कार्यालयो मे सुविधा शुल्क की अपेक्षा की जाती है। यदि आप थोडी सी भी झलक दिखा दे, कि आप भ्रष्टाचार से चार आख होना चाहते हैं तो निश्चय ही भविष्य के लिए आशाएँ बध सकती हैं। चीनी बाजार मे आ गयी है। यह इस बात का प्रमाण है कि बडे औद्योगिक घराने आपकी आर्थिक नीतियो से त्रस्त हैं। दूसरी समस्या महगाई की है। सामान्य जनता इसी से प्रभावित होती है। महगाई पर नियन्त्रण, यदि नही किया गया तो जन-मानस को अपनी समझदारी दिखाने मे देर नही लगेगी। दुनिया इस देश को अनपढों, गरीबो और

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के
आर्य युवा

गत वर्षों को भाति, इस वर्ष भी दिल्ली क्षेत्र मे स्थित विद्यालयो के छात्र-छात्राओ तथा आर्यवीर दलो के युवको के लिए विभिन्न खेलकूद, चित्रकला निबन्ध भाषण, वाद-विवाद, समूह-गान प्रतियोगिताओ का भव्य आयोजन निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार

दिनाक	—	१३ जनवरी ९०	—२० जनवरी, ९०	—२७ जनवरी, ९०
दिन	—	शनिवार	—शनिवार	—शनिवार
समय	--	प्रात ११ बजे	—प्रात ११ बजे	—प्रात १० बजे
स्थान	—	रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल, वाई-ब्लाक, सरोजिनी नगर नई दिल्ली	—बिरला आर्य कन्या स्कूल बिरला लाईन्स, कमला नगर	—सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पजाबी बाग
प्रतियोगिता		**चित्रकला**	**वाद-विवाद**	**खेलकूद**
(कक्षा-वर्ग) १-५ (क)	—	गाय	—शाकाहारी दीर्घायु होता है	★ १००, २००, ४००, १५०० मोटर दौड, ऊचीकूद, लम्बीकूद, भाला फेंकना, गोला फेंकना
६-८ (ख)	—	यज्ञ करता परिवार	—स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।	● छात्र/छात्रा के लिए अलग-अलग तीन वर्गों में
९-१२ (ग)	—	महापुरुष	—स्वाधीनता आन्दोलन मे स्वामी श्रद्धानन्द का योगदान	वर्ग-५ से १०
		निबन्ध		वर्ग-१० से १४
१-५ (क)	—	शिक्षा की आवश्यकता		वर्ग १४ से १७
६-८ (ख)	—	हिन्दी भाषा का महत्त्व		
९-१२ (ग)	—	मद्यनिषेध राष्ट्र-प्रगति के लिए आवश्यक		

* उपर्युक्त प्रतियोगिताओ मे डेढ सौ पचास से अधिक शील्ड और कप पुरस्कार में दिए जायेंगे। सभी विजेताओ को वैदिक-साहित्य तथा प्रशस्ति-पत्र भी दिये जायेंगे।

प्रधान का खुला पत्र

नासमझो का देश समझती है पर यह देश ऐसा नही है। यहा समझदारी भी है। अगली समस्या साम्प्रदायिकता और उग्रवाद की है। इनका समाधान किसी मन्त्र फूकने के समान नही है। इनका समाधान तो निष्ठा और विश्वसनीयता और आत्मविश्वास मे निहित है। क्या आतकवादी गतिविधियो से जुड लोग जो ससद म आ गए है और जिन्होने लोक तान्त्रिक शासन व्यवस्था मे विश्वास व्यक्त किया है वे हिंसा से दूर रह कर निपुण ढग से सविधान के अनुसार इस समस्या के समाधान मे सहयोग देंग। राष्ट्र की अखण्डता परमावश्यक है। निजी स्वार्थो के लिए इनके टुकड करने देश के साथ दुर्भाग्य होगा जमीनी दीवार ढह गयी है। हम री दीवार ढहनी चाहिए। ... कम से कम नई तो न। सविधान की धारा ३० और ७० इस प्रकार की गतिविधियो को अकर्षित करती है। इन्हे समाप्त किया जाए। पजाब जम्मू कश्मीर पूर्वोत्तर प्रान्तो मे समस्याएँ हैं। रामजन्मभूमि और बाबरी मस्जिद भी भयकर समस्याएँ है। तुष्टीकरण की बलिवेदी पर हिन्दू जाति के साथ किसी प्रकार का अन्याय राष्ट्र हित मे नही है।

इस देश मे गरीबी है भुखमरी है लोग शहरो की ओर भाग रहे हैं। उन्हे गावो में ही रोजगार उपलब्ध कराए जाए। कमजोर तबको किसानो म दूरो दस्तकारो बुनकरो का सहायता पहुचाई जाए। कर्जे माफ करना कोई समाधान नही है। इस तो देश का अर्थतन्त्र कमजोर हो जाएगा। सुविधाए दी जाए हत दी जाएँ परन्तु ऋण माफी नहा। इससे तो लोगो मे प्रमाद बढता। वास्तविक पचायती राज्य का परिकल्पना वैदिक कालीन है। इसका सही क्रियान्वयन आवश्यक है।

आकाशवाणी दूरदर्शन और समाचार पत्रो को स्वायत्तता प्रदान की जाए ठीक है परन्तु इनके माध्यम से नैतिकता और सच्चरित्रता का प्रचार हो। सेक्स का भोडा प्रदर्शन तो विकृत मस्तिष्क वालो की आवश्यकता होती है जनसामान्य के लिए तो सामान्य मनोरंजन पर्याप्त है। दूरदर्शन पर भारतीय संस्कृति और जनभावना पर आधृत कार्यक्रम ही दिखाए जाएँ। नैतिक मूल्यो पर आस्था बढाने वाले तथा भ्रष्टाचार आदि दुरितो से छुडाने वाले कार्यक्रम प्रदर्शित किए जाय। महिलाओ और युवको को सकारात्मक भूमिका के कार्यक्रमो का विशेष महत्त्व दिया जाए।

भारत के पडोसी देशो मे अच्छे सम्बन्ध नही हैं। इस दिशा मे प्रयास जरूरी है। विदेशो मे भारतीय मूल के लोगो पर अत्याचार हो रहे है। फिजी नेपाल केन्या श्रीलंका खाडी देश दक्षिण अफ्रीका इसके उदाहरण हैं। वहा पर अपने लोगो की सुरक्षा के लिए कारगर उपाय किये जाने चाहिए। गुट निरपेक्षता की नीति अच्छी है चलनी चाहिए।

यह अत्यन्त खेद का विषय है कि आपकी सरकार मे शिक्षा मन्त्री का कोई स्थान नही है। यह विषय प्राथमिकता की अपेक्षा करता है। आप इस ओर ध्यान दे। पाठ्यक्रमो मे इतिहास की पुस्तको मे जो अनर्गल बातें लिखी है उनमे सुधार करे। आर्यो को आक्रान्ता के रूप म प्रस्तुत करना भारतीयता के ऊपर कुठाराघात है। आपका इस दिशा मे ध्यान देना चाहिए। उत्तर दक्षिण को एकता के लिए इस विषय को सदा सदा के लिए समाप्त करना आवश्यक है। शिक्षा पद्धति मे भारतीय भाषाओ तथा संस्कृत को उचित स्थान मिलना चाहिए। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास और संस्कृति का सही अध्ययन होना चाहिए।

देश के सभी वर्गो के लिए समान आचार सहिता—समान कानून होना चाहिए। न्याय प्रक्रिया को सरल तथा शीघ्रता वाला बनाया जाना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि आप इस दिशा मे आवश्यक कदम उठाएगे। राजनीति मे किसी भी पराजय को अन्तिम पराजय और किसी भी विजय को अन्तिम विजय मानना एक प्रकार की भूल होता है।

विजय उन्ही का वरण करती है जो कर्म मे विश्वास रखते हैं।

सद्भावना ओ सहित　　　　भवदीय

—डा० धर्मपाल

प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

तत्त्वावधान में दिल्ली की ओर से छठा

महासम्मेलन

आयोजित किया गया है। इसके अतिरिक्त आर्य युवा सम्मेलन के अवसर पर भी छात्र-छात्राओ और आर्य वीरो द्वारा पी टी योग प्रदर्शन, शरीर सौष्ठव और भाला, लाठी, तलवार चलाने के प्रदर्शनो के साथ-साथ वेद-गायन, सामूहिक-गान आदि आयोजित किये जायगे।

—२७ जनवरी ९०
—शनिवार
—प्रात १० बजे
—सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पजाबी बाग

खेलकूद

(आर्यवीर दल)

२०० ४०० ८०० ३००० मीटर दौड लम्बी कूद, वर्ग (क)
ऊचीकूद भाला फकना वर्ग (ख)
गोला फकना वर्ग (ग)

● आर्यवीर १८ से २५ वर्ष तक भाग लगे।

—३ फरवरी, ९०
—शनिवार
—प्रात ११ बजे
—रघुमल आर्य कन्या विद्यालय राजा बाजार नई दिल्ली

भाषण

—योगीराज कृष्ण
—अस्पृश्यता निवारण मे आर्य समाज की भूमिका
—नारी उत्थान मे आर्यसमाज का योगदान

—१० फरवरी ९०
—शनिवार
—प्रात ११ बजे
—सत्यभामा आर्य कन्या विद्यालय करोलबाग

समूह गान

वर्ग क ख ग मे वीररस तथा भक्तिरस के वैदिक गीतो का गायन

—१२ फरवरी ९०
—सोमवार
—प्रात ११ बजे
—रत्नदेवी आर्य कन्या विद्यालय कृष्णनगर

बालाबाल

केवल बालिकाओ के लिए प्रतियोगिता होगी।

*** विस्तृत जानकारी के लिये दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ (दूरभाष ३१०१५०) से सम्पर्क करे।**

*** सभी पुरस्कार दिनाक १७ फरवरी १९९० शनिवार को नेहरू स्टेडियम, लोधी रोड, नई दिल्ली मे आयोजित आर्य युवा महासम्मेलन के अवसर पर प्रदान किये जायेंगे।**

आर्य जगत के समाचार

आर्षपाठविधि के नि शुल्क शिक्षण केन्द्र

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर रोहतक का

हीरक जयन्ती महोत्सव

२२ से २५ फरवरी १९९०

यह प्रसन्नता का विषय है कि महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, जिला रोहतक, (हरियाणा) उत्तरोत्तर उन्नति करता हुआ अपनी स्थापना के ७५वें वर्ष में पहुँच गया है। अतएव इस उपलक्ष्य मे फाल्गुन कृष्णा द्वादशी से अमावस्या पर्यन्त स० २०४६ शिवरात्रि के अवसर पर २२, २३, २४ एव २५ फरवरी १९९० ई० मे गुरुकुल की हीरक जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर आर्यजगत् के अनेक धुरन्धर वैदिक विद्वान्, वरिष्ठ नेता, तप पूत वीतराग सन्यासी, प्रमुख राजनैतिक नेता तथा उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अत आप सपरिवार भारी सख्या में पधार कर लाभ उठायें।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर गत ७५ वर्षो से आर्यजगत् की महान् सेवा कर रहा है। उल्लेखनीय है कि इस सस्था की आधार-शिला अमर शहीद हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जीके करकमलो द्वारा रखी गई थी, गुरुकुल के सस्थापक स्वर्गीय दीवान पण्डित विश्वम्भर जी थे। पूज्य स्वामी परमानन्द जी, श्रद्धेय स्वामी ब्रह्मानन्द जी श्रद्धेय स्वामी आत्मानन्द जी जैसे वीतराग महात्मा एवम् अनेक प्रबुद्ध विद्वानो ने अपने जीवन-जल से इस वाटिका को अनवरत सींचा है। यह इस वाटिका का परम सौभाग्य है कि इसे परमतपस्वी धुरन्धर विद्वान् ओजस्वी वक्ता एव महान् समाज-सुधारक स्वामी ओमानन्द जी जैसे आचार्य का सरक्षण प्राप्त है।

इस गुरुकुल की सर्वप्रथम विशेषता है महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्ष पाठविधि से वेद-वेदाग उपागो का पठन-पाठन। यह गुरुकुल "महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक" से सम्बद्ध है।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

इस अवसर पर १ फरवरी बृहस्पतिवार १९९० से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। जिसकी पूर्णाहुति २५ फरवरी को प्रात १० बजे हो रही है। श्रद्धालु जन यज्ञ हेतु पुष्कल घृत सामग्री भेजकर पुण्य के भागी बनें।

सम्पादक के नाम पत्र—

आरक्षण और आर्थिक स्थिति

जनता दल के एक वरिष्ठ नेता श्री चन्द्रशेखर ने १२ दिसम्बर ८९ को लखनऊ में बातचीत के दौरान कहा—"कि आरक्षण के लिए केवल जाति पर ध्यान न दिया जाए, बल्कि आर्थिक स्थिति पर भी गौर किया जाए।' ४२ सालो तक स्वाधीनता के वातावरण में रहने के पश्चात् अब हमारे नागरिग और सोचने के ढग मे भी परिवर्तन आना जरूरी है। विदेशी शासको ने केवल हरिजनों का ही शोषण नही किया था, अपितु समाज के अन्य लोगो पर भी जुल्म किये थे। धर्म परिवर्तन के नाम पर इस देश में कभी 'जजिया कर' लगा था तो कभी पादरियो द्वारा वन प्रदेशो में आतक फैलाया गया था। स्वाधीनता प्राप्त करने के पश्चात् हरिजनो को ऊपर उठाने की भावना से ही आरक्षण का प्रस्ताव रखा गया था, किंतु बाद में आरक्षण वोट हथियाने और चुनाव जीतने का साधन बन गया। इस चुनाव से पूर्व केवल अनुसूचित जाति और जनजाति के रिक्त स्थानों को भरा गया, जबकि सामान्य भर्ती पर कई सालो से पाबन्दी लगी है।

आरक्षण से माध्यम से विगत ४२ सालो मे अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगो ने काफी प्रगति कर ली है। कहीं-कहो तो एक ही परिवार के लोग विधायक, सासद और मन्त्री बनते आ रहे हैं। कहीं-कहीं पूरा परिवार राजपत्रित अधिकारियो से भरा हुआ है। आरक्षण की सुविधाओं का लाभ कुछ शहरी परिवार उठाकर मालामाल हो गए हैं और उन्हीं की जाति के अन्य लोग उन सुविधाओं से वचित हैं। इतना ही नहीं आरक्षण के कारण योग्य के ऊपर अयोग्य तथा वरिष्ठ के ऊपर कनिष्ठ को पदोन्नति दी जा रही है और इस तरह सरकारी कार्यालयो में कुठा तथा मन-मुटाव का अप्रिय वातावरण बन रहा है।

अब समय आ गया है और आरक्षण पर पुनर्विचार करने की जरूरत है। चुनाव से पहले हर बार अनु० जाति और जनजाति की लिस्ट मे कुछ नई जातियाँ जोड दी जाती हैं। वोटो की राजनीति के लिए सत्तारूढ दल बराबर ऐसा करता रहा है। यह गलत बात है और इस राजनैतिक चुसु पर रोक लगनी चाहिए। इस सन्दर्भ में श्री देवीलाल, उप प्रधानमन्त्री का यह प्रस्ताव भी स्वागत योग्य है—'कि एक परिवार मे एक सदस्य को ही आरक्षण की सुविधा दी जाए।' यह भी ज्ञातव्य है—"कि स्वय बाबा भीमराव अम्बेडकर ने केवल १० सालों के लिए ही आरक्षण का प्रस्ताव किया था।"

—भूषण "द्विवेदी"
कलकत्ता ८८

विशेषांक संग्रहणीय रहा

आर्यसन्देश का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवम् आकर्षक था। सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। स्वामी जी के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। इस पत्र के विशेषाको की बडी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। पत्र बडी तेजी के साथ अपनी लोकप्रियता की ओर अग्रसर है। आशा है भविष्य मे भी यह पत्र इसी तरह पाठकों की सेवा करता रहेगा। विशेषाक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
मन्त्री
आर्य युवक परिषद्
गोहाना (सोनीपत)

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मंडल

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मडल, जो दक्षिण दिल्ली की ५० आयसमाजो का सगठन है, की ओर से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस ७ जनवरी, १९९० को आर्यसमाज रामाकृष्णा पुरम् सेक्टर-६ मे मनाया जाएगा, जिसमे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, प० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० महेश विद्यालकार, श्रीमती सुनीती आर्या, सासद विजय कुमार मल्होत्रा, सासद मदनलाल खुराना आदि श्रद्धाञ्जली प्रस्तुत करेंगे।

पुस्तक समीक्षा—

भगवान् दयानन्द का दिव्य का दिव्य सन्देश

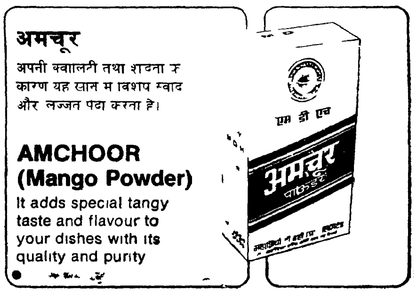
महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना एव वैदिक ज्ञान का सवर्धन करके भारतीय आर्य जाति पर एक महान् उपकार किया है। महर्षि ने आदेश दिया था कि भावी सन्तति को आर्य बनाइये—इसी मूल वाक्य को लेकर श्री सोहनलाल शारदा ने स्वर्गीय महारानी श्रीमती हर्षवन्त कुमारी जी शाहपुरा की पुण्य स्मृति में इस ट्रैक्ट का प्रणयन किया है। इसके पढने से आर्य जनो को श्रेष्ठ पुरुषो के ज्ञान को प्राप्त करने के प्रेरणा मिलेगी, अकर्मण्यता दूर होगी तथा पुरुषार्थ की भावना जगेगी। इस लघु पुस्तिका के साथ नित्य सन्ध्या-यज्ञोपासना-विधि की भी एक पुस्तिका सलग्न है जो पूर्णत महर्षि कृत ग्रथों को ही आधार बनाकर तैयार की गई है। लेखक ने स्रोत स्थानो का निर्देश भी स्थान-स्थान पर कर दिया है। इस प्रशसनीय कार्य के लिए सोहनलाल शारदा, स्वाध्याय मण्डल, शाहपुरा, जिला भीलवाडा, राजस्थान के सचालक बधाई के पात्र हैं।

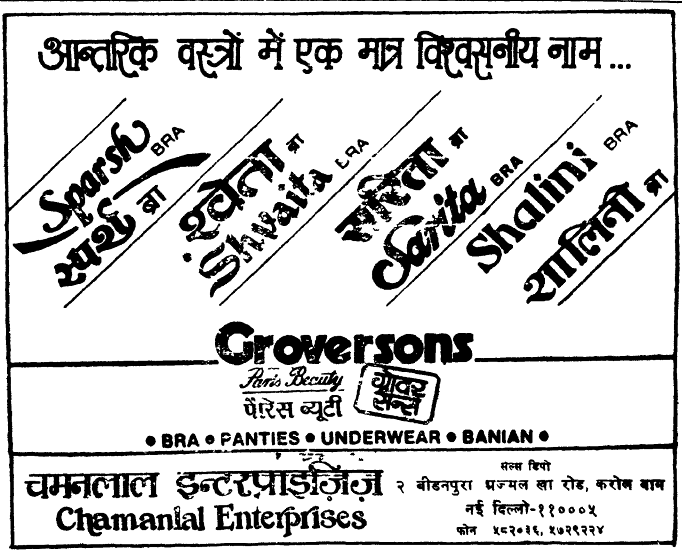
(भगवान् दयानन्द का दिव्य संदेश नित्य सन्ध्या-यज्ञोपासना-विधि सोहनलाल शारदा स्वाध्याय मण्डल, शाहपुरा, जिला भीलवाडा (राजस्थान) नि शुल्क)

—डा० धर्मपाल


लाखों लोगों की पसंद
एम डी एच दंत मंजन
23 जडी बूटियो से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि
आपके परिवार
के लिये पूर्ण दंत सुरक्षा
दांतो का दर्द, मुह की दुर्गन्ध
मसूडो की सूजन ठंडा गर्म
पानी लगना मुह में छाले होना तथा
दांतो की अन्य बीमारियो का घरेलू इलाज
एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
प्रतिदिन प्रयोग करें
अपने निकटतम
दुकानदार से खरीदे
सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन 537987, 537341


चाट मसाला
CHAT MASALA
Excellent for garnishing
Chat Salads and fruit to
provide delicious taste and
flavour


अमचूर
अपनी क्वालिटी तथा शुद्धता के
कारण यह खाने में विशेष स्वाद
और लज्जत पैदा करता है।
AMCHOOR
(Mango Powder)
It adds special tangy
taste and flavour to
your dishes with its
quality and purity
एम डी एच
अमचूर
पाऊडर


आन्तरिक वस्त्रों में एक मात्र विश्वसनीय नाम...
Sparsh BRA
स्पर्श ब्रा
श्वेता ब्रा
Shweta BRA
सरिता ब्रा
Sarita BRA
Shalini BRA
शालिनी ब्रा
Groversons
Paris Beauty
पैरिस ब्यूटी
ग्रोवर सन्स
• BRA • PANTIES • UNDERWEAR • BANIAN •
चमनलाल इन्टरप्राइजिज़
Chamanlal Enterprises
सेल्स डिपो
२ बीडनपुरा प्रज्मल खां रोड, करोल बाग
नई दिल्ली-११०००५
फोन ५८२०३६, ५७२९२२४

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No. 32387/77 Post in N D P S O on 4-5-1-90 Licensed to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

साप्ताहिक आर्यसन्देश ७ जनवरी १९९०

आर्यसन्देश के सदस्य बनकर आप

पायेंगे—

- वर्ष मे पूरे ५२ अक
- वर्ष मे आठ विशिष्ट विशेषांक
- वैदिक-सस्कृति से ओतप्रोत लेख और कविताएँ
- आर्य जगत की ऐतिहासिक घटनाओ की जानकारी
- दिवगत आर्य श्रेष्ठियो के सक्षिप्त परिचय
- आर्य-पर्वों पर विशिष्ट-लेख
- आर्य जगत् की सस्थाओ के समाचार
- राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र पर अग्रलेख
- अराष्ट्रीय तथा अवैदिक गतिविधियो का घोर विरोध

नही पायगे—

- आत्म प्रशसा अथवा व्यक्ति विशेष का गुणगान
- विभिन्न गुटो की आलोचना-प्रत्यालोचना

यदि आप उपर्युक्त विचारो से सहमत हैं तो कृपया आज ही २५० दो सौ पचास रुपये चैक/मनीआर्डर/नकद भेजकर, अपनी प्रिय पत्रिका 'आर्यसन्देश' के आजीवन सदस्य बन जाइये। शुभ कार्य में विलम्ब कैसा।

१९९० में आर्यसन्देश के विशेषांकों का कार्यक्रम

ऋषिबोधांक	२५ फरवरी, ९० रविवार
गुरुदत्त-विद्यार्थी (निर्वाण शताब्दी अंक)	१८ मार्च, ९० रविवार
समग्र-क्रान्ति अंक	२५ मार्च, ९० रविवार
हैदराबाद-विजय अक	१९ अगस्त, ९० रविवार
प० शिवकुमार शास्त्री (अमृत महोत्सव अक)	१४ अक्तूबर, ९० रविवार
ऋषि निर्वाण अंक	२१ अक्तूबर, ९० रविवार
प० इन्द्र विद्यावाचस्पति शताब्दी स्मृति अंक	११ नवम्बर, ९० रविवार
श्रद्धानन्द बलिदान अक	२३ दिसम्बर, ९० रविवार

यदि आप—

आर्यसमाज के सदस्य हैं, तो दूसरो को भी बनाये।
आर्यसन्देश के सदस्य हैं तो दूसरों को भी बनायें।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

बर्ष १. अंक १२ रविवार १४ जनवरी १९९० माघ सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द - १६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

हैदराबाद आय सत्याग्रह अधशताब्दी की सफलता पर--

आर्यों का केन्द्र सार्वदेशिक सभा को शक्तिशाली बनाना आर्यों के लिए अत्यन्त आवश्यक है

–स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

हैदराबाद मे निजाम सरकार हिन्दू (आर्य), सिख इन सभी के साथ सौतेली माता का सा या उससे भी बुरा सलूक करती थी। जनता के धार्मिक कामो मे, शिक्षा के सम्बन्ध में, मन्दिर, पाठशाला, व्यायामशाला, यज्ञशाला, अखाडा इत्यादि बनाने की स्वतन्त्रता न थी। स्वीकृति मागने पर अनेक प्रकार की अडचने डाली जाती थी और तग किया जाता था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इन रुकावटो को हटाने तथा हिन्दू मुसलमानो से समान व्यवहार करने के लिए रियासत के राज्यचक्र (निजामशाह) से बातचीत करने, आर्य नेताओ को हैदराबाद भेजा था किन्तु उस प्रयत्न का कोई लाभ न हुआ। अन्ततोगत्वा आर्यसमाज ने सत्याग्रह आन्दोलन करने का निश्चय लिया। सार्वदेशिक सभा द्वारा सत्याग्रह की घोषणा करने पर सारे आर्य जगत् मे एक अपूर्व जोश तथा उत्साह उत्पन्न हो गया था, देश के सभी प्रान्तो से सत्याग्रही आने लगे और इस सत्याग्रह को बडे ही सुनिश्चित ढग से आर्य नेताओ ने चलाया। महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के पश्चात् एक-एक सर्वाधिकारी के साथ बडी-बडी संख्या मे सत्याग्रही सत्याग्रह करते थे। २८००० सत्याग्रही निजाम की जेलों में पहुँच गये थे और बहुत से आने को तैयार थे।

३० सत्याग्रही इस सत्याग्रह में आहुत हुए। जेलो में सत्याग्रहियो को सभी प्रकार के कष्ट, यातनाएँ दी गई जो नही दी जा सकती थी और इन यातनाओ से आर्य सत्याग्रहियो के धैर्य, हौसले जोश मे आश्चर्यजनक वृद्धि होती थी। जिसका कारण था उनका धार्मिक बल, यह सत्याग्रह सत्य धर्म पर आधारित था। आर्यसमाज के नेताओ ने इसका सचालन ऐसे सयम तथा सयत प्रकार से किया था जिसे देख देश के बडे-बडे राजनैतिक नेता आश्चर्य चकित थे। इस आर्य सत्याग्रह की अर्धशताब्दी हैदराबाद में लगातार दो सप्ताह अर्थात् दो बार मनाई गई। प्रथम बार आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश ने मनाई तथा दूसरी बार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक सप्ताह पश्चात् मनाई। इसमे कई राजनैतिक लोग आए। लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री बलराम जाखड जी, आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री डा० चेन्ना रेड्डी जिसने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कहने पर आर्य सत्याग्रहियो को दो सौ रुपये मासिक देने की बजाय तीन सौ रुपये मासिक देना स्वीकार किया। आन्ध्र की राज्यपाल कुमुदबेन जी जोशी, श्री हरकिशनलाल जी भगत ने आर्य सत्याग्रहियो को श्रद्धाजली भेंट करते हुए बहुत प्रभावशाली शब्दो में आर्यसमाज के कार्यों की प्रशसा की।

प्रथम समारोह को देखने का अवसर नही मिला, किन्तु दूसरे मे देश के सभी प्रान्तो से आर्य बडे उत्साह और बडी सख्या में पहुचे, जितनी आशा नही थी। क्योकि दूसरो अर्धशताब्दी के विरोध मे पहली के कई पक्षीय सज्जनो ने बडे-बडे इश्तिहार बाजारो मे लगाए हुए थे। आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र से आये कई लोगो ने बताया कि हमें पत्र भेजे गये थे कि इस २९-३१ दिसम्बर की अर्धशताब्दी मे कोई न जाये। सम्भव है कि इस विरोध से इसका अधिक प्रचार हुआ और लोग बडी सख्या मे पहुँचे। किन्तु आर्यसमाज मे इस प्रकार का कटु विरोध होना बहुत ही दु ख तथा लज्जा की बात है और फिर उस विरोध को जन-जन तक जो आर्यसमाज को जानता भी नही, उसे बताना आर्यसमाज के लिए लोगो मे अश्रद्धा पैदा करना है। ऐसा करना आर्य मात्र के लिए अपराध है। परस्पर बातचीत मे जिसमें द्वेष भावना न हो, सब बातो का समाधान हो सकता है। यदि आर्य में द्वेष न हो तो उसकी बात आज नही तो कल अवश्य ही मानी जायेगी। एक धर्म के मानने वालो मे द्वेष कहा से आ गया। धर्म का ह्रास होने से द्वेष की उत्पत्ति होती है। जो प्राय पक्षीय लोगो मे कभी-कभी कही-कही उत्पन्न हो जाता है। लडाई समाज को निर्बल, अपयशस्वी बनायेगी। लोभ रहित, अपराध रहित, द्वेष रहित आर्यों मे बहुत लोग है, हर प्रान्त मे है। प्रान्तीय सभाए उनकी बात मानें, प्रान्तीय सभाओ से निष्पक्ष लोग

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद मनन

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

देवानामेतत् परिषूतमनभ्यारूढ, चरति रोचमानम् ।
तस्माज्जात ब्राह्मण ब्रह्म ज्येष्ठ, देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम् ।

अथर्व काण्ड ११ अ० ३। सूक्त ५। २३॥

इस मे पहले मन्त्र मे वेद-ज्ञान ब्रह्मचारी के अन्दर भर देना ही आचार्य का कर्तव्य बतलाया है। यह क्यों ? इस का हेतु इस मन्त्र मे बतलाते है। कल्पना करो कि एक बड़ा भारी यन्त्र है जिस मे बहुत सी कल चल रही है सकडो पहिए चक्कर काट रहे हैं और बासियो प्रकार की लाभकारी वस्तुए तैयार हो रही है। यदि किसी साधारण मनुष्य को उस कला घर मे अपना काल यापन करना है तो क्या यह आवश्यक नही है कि कलाघर मे प्रवेश करने से पहले वह उस यन्त्र के एक एक पुर्जे से परिचित हो जाय। इस काम के लिए कौन उत्तम शिक्षक हो सकता है ? यदि कलाघर के निर्माता इञ्जिनियर की निर्मित तद्विषयक पुस्तक का पाठन कराने वाला योग्य शिक्षक मिल जावे और एक एक वर्णन को कलाघर पर घटाता चला जाय तभी कलाघर का पथगामी कलाघर से लाभ उठा सकता है अन्यथा वह पहियो के चक्कर मे फस कर जान दे बैठने के अतिरिक्त और क्या कर सकता है ?

यह ससार मनुष्य के लिए सब से बडा असीम कलाघर है इस के अन्दर मानव कलाघरो की तरह केवल निर्जीव जड सृष्टि ही नही प्रत्युत चेतन सृष्टि भी भ्रमण कर रही है। इस विचित्र कलाघर वा दिव्य सृष्टि सम्पूर्ण अनादि निर्माता ही निर्माण की है। आठो वसु जिन के अन्दर सारी सृष्टि निवास करती है, ग्यारह रुद्र जिन के मिले रहने मे स्थिति और जिन के बिछुड जाने मे मौत और रोना होता है सवत्सर के बारहो आदित्य विद्युत् और यज्ञ यह सब उसी प्रकाशस्वरूप से प्रकाशित होते हैं। वह इन सब का प्रकाशक है। और फिर इन देवो मे अमरपन भी उसी ने डाला है। ये सब प्रकाशक देव अपना अपना प्रकाश उसी स्व प्रकाशस्वरूप से प्राप्त करते हैं वहाँ इन्हे प्रवाह से अनादि भी इसी ने बना छोडा है। प्रलय के पश्चात जब जब सृष्टि होती है तब तब ये शक्तिया अपना काम करती है— सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत दिव च पृथिवीञ्चान्तरिक्ष मथो स्व ।

विधाता ने सूर्य चन्द्र अन्य प्रकाशमान लोकान्तर तथा पृथिवी अन्तरिक्षादि पूर्व कल्प की तरह ही निर्माण किए हैं। इन सब का रचयिता इस कलाघर का निर्माता स्वयम कैसा है जगत के सब प्रकाशमान लोक उस के वश मे है। सासारिक इञ्जिनियर तो कलाघर निर्माण कर के अलग हो सकता है परन्तु यह इञ्जिनियर अपने निर्माण किए कलाघर मे व्यापक है इसलिए यह कलाघर कभी बन्द नही होता। कलाघर के निर्माता मनुष्य को पकड कर अलग कर दो तो उस के कलाघर की समाप्ति हो जाती है परन्तु यह ससार रूप माया का स्वामी ऐसा मायावी है कि इसे कोई पराजित नही कर सकता। यह प्रकाश स्वरूप सब के ऊपर विचरता है। यह जहा सूक्ष्म इतना है कि सूक्ष्मतर पदार्थों के अन्दर भी विद्यमान है वहा इतना बड़ा भी है कि सब पदार्थो को घेरे हुए है। इस की लपेट से बाहर कोई नही है।

जो ऐसा ब्रह्म सब से बडा और सब का स्वामी है जिस से ससार रूपी यह विचित्र कलाभवन न केवल निर्माण ही किया गया है प्रत्युत जिसके आश्रय पर ही यह स्थित है। तज्ज× तत्अन— उसी मे सब सृष्टि होती उसी पर स्थित रहती और उसी मे लय होती है। यह सब का प्रकाश देता हुआ और सब का आधार होता हुआ भी स्वयम किसी आधार की अपेक्षा नही रखता। उसी ने इस सारे ब्रह्माण्ड को रच कर उसका ज्ञान मनुष्य को दिलाने के लिए वेद का प्रादुर्भाव किया है। जिसने आख पैदा की पहले उसे दिखलाने के लिए सूर्य का निर्माण किया उसी ब्रह्म ने मनुष्य की बुद्धि को प्रदर्शन करने के लिए सत्यज्ञान का ससार मे प्रसार किया है।

निस्सन्देह सीधे मार्ग पर चलाने के लिए योग्य ब्रह्मचारी को सासारिक आचार्य की आवश्यकता है परन्तु यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिए ज्ञान के प्रसारक परमात्मा और जिज्ञासु के बीच मे कोई तीसरा पर्दा नही आना चाहिए। वहा आत्मा की ही पहुच है इसलिए धन्य हैं वे नररत्न जो सत्य विद्या की प्राप्ति का मार्ग सांसारिक आचार्य से से जान कर सीधे ज्ञानेश्वर की शरण मे आते हैं क्योंकि उसी मे जीवन डूबने से महत्त्व की प्राप्ति होती है।

शब्दार्थ

(देवानाम) सब दिव्य शक्तियो का वा इन्द्रियो का (परिषूतम) सम्पूर्ण रूप से निचोडा हुआ सार (एतत) यही ब्रह्मचर्यरूप होकर (रोचमानम) सब सूर्यादि नक्षत्रो मे चमकती हुई शक्ति है जो (अनभ्यारूढ) किसी से न दबने वाली (चरति) सर्वत्र गमन करती है। (ब्राह्मणम) ब्रह्म सम्बन्धी (ज्येष्ठम) सोत्कृष्ट (ब्रह्म) ज्ञान वेद (तस्मात) उसी शक्ति से (जातम) उत्पन्न हुआ है। और (अमृतेन साकम) अमरता के साथ (सर्वे देवा) सब दिव्य शक्तियाँ अथवा इन्द्रिया भी उसी से पैदा हुई है।

(पृष्ठ १ का शेष)

सभा को शक्तिशाली बनाना

केन्द्रीय सार्वदेशिक सभा में आएँ। इस प्रकार केन्द्रीय सार्वदेशिक सभा की नियन्त्रण शक्ति बढ़ेगी और आर्यसमाज मे बल आयेगा जिससे आर्यसमाज देश मे सुधार के अनेक कार्य कर सकेगा। यदि केन्द्र निर्बल हो गया तो आर्यसमाज कोई बडा सघर्ष (देशव्यापी कार्यक्रम) कैसे कर सकेगा। इसलिए केन्द्र (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) को बलवान शक्तिशाली बनाना आर्यो के लिए एक अत्यन्त आवश्यक कार्य है।

ओ३म स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्ति न पूषा विश्ववेदा ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु

छाया विद्वानो की

—देवनारायण भारद्वाज

प्रभु एक देव की बात नही यह सब देवो की माया है।
हमें चाहिए नाथ तुम्हारे, सब विद्वानो की छाया है॥

इन्द्र बढाये विद्युत् जल को
वृद्ध श्रवा नभ श्रवण कमल को
पूषा पोषक वायु बहाये
और बृहस्पति ज्ञान अनल को।

तप तार्क्ष्य भूमि का वडवानल जग मे सब की हीदाया है।
हमे चाहिए नाथ तुम्हारे सब विद्वानो की छाया है॥

क्षत्रिय राजा इन्द्र हमारा
आकर जब उसने हुकारा
वैश्य बना यह पूषा पोषक
अति वैभव का किया पसारा।

शूद्र परिश्रम वडवानल ने, सहयोग सदा विकसाया है।
हमे चाहिए नाथ तुम्हारे सब विद्वानो की छाया है॥

विमल बृहस्पति ब्राह्मण आया
सन्मार्ग उसी ने दर्शाया
यो बृहत ब्रह्म के दल बल से
विद्वानो ने साथ निभाया।

प्रभु ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य शूद्र सब का साथ हमे भाया है।
हमे चाहिए नाथ तुम्हारे सब विद्वानो की छाया है॥

—आर्यसमाज आजमगढ (उ० प्र०)



ओ३म्
आर्य सन्देश

गणतन्त्र दिवस और स्वामी श्रद्धानन्द की झांकी

सम्पादकीय

गणराज्य दिवस की परेड में प्रत्येक राज्य की ओर से झांकियां प्रस्तुत की जाती हैं और वे झांकियां अपने वैविध्य, रंग बिरंगेपन और उस-राज्य की विशिष्टता की द्योतक होने के कारण जनता के लिए विशेष उत्सुकता और मनोरंजन का कारण होती हैं। परेड को देखने के लिए एकत्रित लाखों लोगों का विशाल समुदाय समग्र भारत को छोटे रूप में इस प्रकार एक ही स्थान पर देखकर जहां देश की एकता का भाव हृदयंगम करता है, वहां उसे राष्ट्रीयता की भी प्रेरणा मिलती है। जब अन्य सब राज्यों और केन्द्र शासित राज्यों की झांकियां होती हैं तो दिल्ली की ओर से भी अपनी अलग झांकी क्यों न हो? दिल्ली का यह अधिकार है कि वह भी अपनी ओर से झांकी प्रस्तुत करे। केन्द्रीय सरकार के निर्माण विभाग या उद्यान विभाग की ओर से प्रस्तुत झांकियों को दिल्ली की ओर से नहीं माना जा सकता।

भारतीय जनसंघ शासित दिल्ली प्रशासन ने सन् १९६८ में केन्द्रीय रक्षामन्त्रालय को पत्र लिख कर यह निवेदन किया था कि गणराज्य दिवस की परेड में दिल्ली की भी एक झांकी होनी चाहिए। यह सुझाव रक्षा मन्त्रालय ने स्वीकार कर लिया और दिल्ली प्रशासन से कहा कि वह झांकी की रूपरेखा भेज दे। जब दिल्ली प्रशासन ने झांकी की रूपरेखा भेजी तो मन्त्रालय की उस समिति ने जो झांकियों के सम्बन्ध में निश्चय किया करती थी, उसे अस्वीकार कर दिया था।

दिल्ली राज्य ने अपनी ओर से झांकी का जो विषय चुना था, वह बहुत अच्छा था। स्वामी श्रद्धानन्द अंग्रेजों की संगीनों के सामने छाती ताने खड़े हैं— यह दृश्य कितना भव्य, कितना प्रेरणादायक और कितना ओजस्वी है। जिस निर्भयता का उदाहरण स्वामी जी ने प्रस्तुत किया था, इस युग में वैसा उदाहरण मिलना मुश्किल है। परन्तु केन्द्रीय रक्षा मन्त्रालय को यह विषय पसन्द नहीं आया था, इसलिए उसने दिल्ली की ओर से अलग झांकी की मांग तो मान ली थी, किन्तु इस विषय को स्वीकार नहीं किया था।

उस समय केन्द्रीय सरकार पर मुखापेक्षिता, भय और आतंक की मनोवृत्ति से इतनी ग्रस्त थी और अंग्रेज तथा अंग्रेजी का वर्चस्व उसके दिल और दिमाग पर इतना हावी था कि वह राष्ट्र की नई पीढ़ी को निर्भयता का उपदेश देने वाली इस ऐतिहासिक घटना का चित्रण भी नहीं करा सकती थी।

आशा है अब बदली हुई राजनैतिक परिस्थितियों में, जबकि भारतीय जनता पार्टी (पूर्व—भारतीय जनसंघ) वर्त्तमान केन्द्रीय सरकार पर अंकुश रखे हुए है, अपने १९६८ के प्रस्ताव को (२२ वर्षों के बाद ही सही) कार्यान्वित करवाने में सक्षम होकर, महान् समाज सुधारक, अछूतोद्धारक, दलितोद्धारक, हिन्दू-मुस्लिम-सिख एकता के प्रबल पोषक, स्वतन्त्रता सेनानी एवं निर्भीक आर्य सन्यासी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी।

'आर्यसन्देश' के

—स्वयं ग्राहक बनें।

—दूसरों को बनायें॥

'आर्यसमाज' के

—स्वयं सदस्य बनें।

—दूसरों को बनायें॥

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी—

स्मृति दिवस (१७ जनवरी) पर विशेष—

श्री ऋभुदेव शर्मा

श्री शर्मा जी का जन्म १६ दिसम्बर सन् १९१७ को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नवपुरा गांव में हुआ था। आपके पिता श्री नयपाल शर्मा बड़ी ही धार्मिक प्रवृत्ति के सत्पुरुष थे और और साधु-सन्यासियों की सेवा करना उनका प्रिय कर्त्तव्य था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा नोनौदा ग्राम के प्राथमिक विद्यालय में हुई। वहां पर आपके एक अध्यापक श्री बाबूलाल जी कवि थे। उनकी प्रेरणा से आपको कविता करने की प्रेरणा मिली थी। बलिया जिले के रसड़ा नामक स्थान के विद्यालय से सातवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत आप राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हो गए और फिर उसके बाद पंजाब में स्वामी वेदानन्द जी के पास जाकर संस्कृत तथा वैदिक धर्म से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया। जिन दिनों आप स्वामी वेदानन्द जी के पास 'गुरुदत्त भवन लाहौर' में रहते थे उन दिनों आप गैरिक वसनों में रहते थे और आपका नाम 'स्वामी आत्मानन्द' था।

लाहौर के उपरान्त आप सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के पास औंध (सतारा) पहुँच गए। वहां पर भी आपने अपना स्वाध्याय जारी रखा। फिर आप निजाम राज्य के नेता श्री मनोहरलाल जी की प्रेरणा से 'दयानन्द गुरुकुल एकेडमी' के आचार्य बनकर हैदराबाद (दक्षिण) चले गए और फिर सारा जीवन उन्होंने वहां ही बिता दिया। आपने हैदराबाद के 'केशव स्मारक आर्य उच्च विद्यालय' में हिन्दी-शिक्षक का भी कार्य किया था। अध्यापन-कार्य करने के साथ साथ आप लेखन तथा सम्पादन की दिशा में भी अग्रसर हुए और वहां से प्रकाशित होने वाले 'आर्यभानु' पत्र के सह सम्पादक भी रहे। कुछ दिन तक आपने 'शिव' नामक एक साप्ताहिक पत्र भी निकाला था। आप एक सुकवि तथा सुलेखक भी थे। 'शिव' साप्ताहिक में धारावाहिक रूप में प्रकाशित आपकी 'ईशोपनिषद् की व्याख्या' बड़ी ही प्रभावकारी रही थी।

हैदराबाद में हिन्दी-प्रचार का कार्य करने में भी आप अग्रणी रहे थे। आप 'हैदराबाद संस्कृत प्रचार समिति' और 'हिन्दी प्रचार सभा' के भी सक्रिय सदस्य थे। आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'ऋग्वेद भाष्य' के अतिरिक्त 'महर्षि दयानन्द गान' और 'आर्य भजन संग्रह' प्रमुख हैं।

आपका निधन १७ जनवरी सन् १९७० को हैदराबाद में हुआ।

—आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'

स्मृतिदिवस (२९ जनवरी) पर विशेष—

चतुर्वेद भाष्यकार प० जयदेव शर्मा विद्यालंकार मीमांसातीर्थ

राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रथम बार चारों वेदों का सम्पूर्ण भाष्य लिखने वाले प० जयदेव शर्मा का जन्म १८९२ ई० में अम्बाला जिले के एक ग्राम में हुआ था। उनका अध्ययन गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में हुआ, जहां आचार्य प्रवर स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों में बैठकर उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण करने के अनन्तर प० जयदेव शर्मा ने जोबनेर, गुरुकुल कांगड़ी तथा गुरुकुल मुल्तान में अध्यापन कार्य किया। कुछ समय तक वे ज्ञानमण्डल काशी तथा कलकत्ता में भी रहे। स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा और आदेश से शर्मा जी ने मीमांसा शास्त्र का विशेष अध्ययन कलकत्ते रहकर किया तथा वहां से मीमांसा तीर्थ की उपाधि ग्रहण की।

आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर के संस्थापक एवं संचालक श्री मथुरा प्रसाद शिवहरे की प्रेरणा से शर्मा जी ने चारों वेदों का हिन्दी भाषा में भाष्य लिखने का संकल्प किया। मई १९२५ में यह कार्य प्रारम्भ हुआ और ११ वर्ष के निरन्तर परिश्रम के पश्चात् १९३६ में चतुर्वेद भाष्य समाप्त हुआ। चारों वेदों पर लिखा गया यह हिन्दी भाष्य न केवल हिन्दी में अपितु किसी भी भारतीय भाषा में लिखा गया प्रथम सम्पूर्ण भाष्य है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

व्रत अपनायें बन्धन कट जायें

—देवनारायण भारद्वाज

एक साधारण श्रमिक पात काम पर जाता है और पारिश्रमिक लेकर थका मादा सायकाल घर आ जाता है। जो मिलता है भूख के स्वाद मे खाकर गहरी नीद सो जाता है। जीने के लिए इतना क्रिया-कलाप क्या पर्याप्त नही है? देश क्या है, धर्म क्या है, इसमे कोई प्रयोजन नही, जो बना दिया वही सब ठीक है। पर वास्तव मे इतना ही पर्याप्त इसलिए नही, क्योकि वह मनुष्य है, पशु नही है। आहार निद्रा, भय, मैथुन, क्रियाकलापो मे मनुष्य व पशु दोनो समान है। इन से आगे वह कुछ नही करता तो शरीर मे मनुष्य होकर भी वह जीवन मे पशु हो गया। एक दूसरा मनुष्य है। उसने अ, आ, इ, ई अक्षर सीखे इनको मिलाकर शब्द, फिर शब्दो को मिलाकर वाक्य बनाना सीखा। वाक्यो मे कर्त्ता, क्रिया, कर्म आदि व्याकरण क्रम अपनाया। इतना ही नही शब्दो व वाक्यो के अर्थो को समझा। शब्द-अर्थ से ससार के पदार्थो का प्रत्यक्ष परिज्ञान किया। पदार्थों के रग गध व स्वादो को समझा। एक एक कर ज्ञान के सोपान चढने पडे। यदि वह पहले अक्षर ही न सीखता तो कोई समस्या नही होती। अज्ञान मे ज्ञान व अन्धकार से प्रकाश की ओर बढना ही मनुष्य का धर्म है। यही धर्म मनुष्य को पशु से ऊपर उठाता है। "यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धि स धर्म", के अनुसार जिसमे मनुष्य को मुक्ति के साथ-साथ सासारिक अभ्युदय-विकास प्राप्त हो वही धर्म है। इतना ही नही मनुष्य केवल अपने अभ्युदय की बात नही कर सकता है। उसे "आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्" को ध्यान मे रखकर अन्य मनुष्यो के मार्ग मे अवरोध खडे करके अपना स्वार्थ मात्र नही साधना है, प्रत्युत जो उसे अपने लिए प्रतिकूल लगता है, वह कार्य दूसरे के लिए नही करना है। ऐसा करने के लिए मनु के अनुसार अहिंसा सहित धर्म के ग्यारह प्रतीको को धारण करना होगा। धैर्य, क्षमा, मन का दमन, अचौर्य, शरीर-मन की पवित्रता, इन्द्रियों को वश मे रखना, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध का ध्यान रखना होगा। इस प्रकार पशुता से ऊपर उठकर मनुष्यता 'मनुभव' की कामना हमे एक-एक करके बन्धनो मे बाँधती जायगी। प्रस्तुत मन्त्र इन्ही बन्धनो के प्रति हमे सावधान करता है—

उदुत्तम वरुण पाशमस्म-
दवाधम विमध्यम श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते
तवानागसो अदितये स्याम॥
ऋ० १।२४।१५

पदार्थ—हे (वरुण) वरणीय परमेश्वर (अस्मत्) हम लोगो से (उत्) ऊपर उठा-दूर कर (उत्तमम्) उच्च श्रेणी के अतिदृढ, (अव) गति दो-परे हटाओ (अधमम्) निकृष्ट या निम्न कोटि के (मध्यमम्) मध्यम श्रेणी के (पाशम्) बन्धनो को (वि) विशेष रूप से (श्रथाय) शिथिल करो। (अथ) बन्धनो से छूटने के अनन्तर (वयम्) हम (आदित्य) हे अविनाशी प्रभो (व्रते) नियमो में चलते हुए (तव) आपके) (अनागस) पाप कर्मों से रहित हुए (अदितये) नाशरहित मोक्ष के लिए (स्याम) समर्थ होवे।

उच्च, मध्यम व निकृष्ट श्रेणी के कहे जाने वाले तीन प्रकार के बन्धन क्या हैं। यह शरीर बन्धन का कारण है और यही मुक्ति का माध्यम भी है। चौरासी लाख योनियो में से अकेली मनुष्य की योनि है जो ससार के सुखो के साथ-साथ मोक्ष को प्राप्त कर सकती है। मानव शरीर के मुख्य तीन भाग हैं प्रथम ग्रीवा से ऊपर सिर, द्वितीय ग्रीवा से नाभिस्थल तक तथा तृतीय नाभि से नीचे। प्रथम भाग में सारी ज्ञानेन्द्रिया मन व मस्तिष्क का वास है। जिस इन्द्रिय के साथ मन जुड जाता है वही गतिशील होकर कर्मेन्द्रिय को सचेष्ट कर देती है। आख रूप देखती है, नासिका गन्ध सूघती, कान ध्वनि श्रवण करते, रसना रसाभास व त्वचा स्पर्श का अनुभव करने लगती है। यह सभी कार्य हमारे हित के लिए हो सकते हैं, पर हमे अहित की सीमा तक भी पहुचा सकते हैं। ये जो साधन हमें दिये थे ज्ञान के लिए—हमारे अज्ञान को बढाने के माध्यम भी बन सकते है। एक व्यक्ति प्रकाश में पढता-लिखता कोई रचनात्मक कार्य करता है, दूसरा व्यक्ति उसी प्रकाश मे चोरी डकती की योजनाएँ पूरी करता है। यह मन ही वह पकाश है जो हमे कही भी अटका-भटका या लटका देता है या इसका एक ही झटका सन्मार्ग पर पहुचा देता है। अनेक व्यक्ति शरीर से असमर्थ होते हुए भी अपने स्वस्थ मन-मस्तिष्क के द्वारा जीवन में सफलताएँ प्राप्त कर लेते हैं। मन से स्वस्थ व्यक्ति कारागार में बन्द रहकर भी अमूल्य ग्रन्थ रच देते है, पर शरीर से पूर्ण स्वस्थ किन्तु मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति अपना सामान्य जीवन जीने में असमर्थ होते हैं। इस प्रकार अज्ञान या मन का बन्धन सबसे दृढ बन्धन है।

मनुष्य ने अपने मस्तिष्क से बडे-बडे वैज्ञानिक अनुसधान व आविष्कार किए। दूरदर्शन का आविष्कार कल्याणकारी हो सकता है और कलुषकारी भी। सदाचरण नैतिक जागरण के चित्र कल्याण के वरदान होगे तो अश्लील कामुक चित्र अभिशाप बन सकते हैं। इसमे दिखाये जाने वाले विज्ञापन अर्थ सचय का साधन बन रहे हैं। हमारे शरीर का दूसरा भाग ग्रीवा से नाभि प्रदेश तक है। इस क्षेत्र मे हाथ, हृदय, फेफडा, नाभि आदि प्रमुख अग हैं। यह भाग भोजन ग्रहण, पाचन, रक्त निर्माण, शुद्धिकरण, रक्त प्रसारण एव प्राणवायु प्रवाह से सम्बन्धित है। ऊपर नीचे के भाग खुले रहने पर यदि इस भाग को कोई रस्सी से बाध भी दे तो भी विशेष कठिनाई नही होगी। दौड भागकर सहायता प्राप्त की जा सकती है। इस भाग में जो कार्य किए जाते हैं—उन्हें कोई छोड भी नही सकता है। चाहे वह ब्रह्मचारी गृहस्थी या सन्यासी ही क्यो न हो। इसलिए मन्त्र में इस प्रकार के बधनो से छुटकारे की बात नहीं कही गई है—केवल इन्हें शिथिल या ढीला करने की बात कही गई है। इनकी आवश्यकताओ की पूर्ति में अभाव का यह मध्यम बन्धन है।

नाभि से नीचे के भागो मे मुख्य रूप से दो प्रकार के अग हैं—जननेन्द्रिय एव पैर। पैर बाध देने से हमारी गति अवरुद्ध हो जाती है। यदि कोई सामयिक सहायता न मिले तो हम एक ही स्थान पर बन्दी बन कर मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं। मरना है, पर सुयश प्राप्त कर मरना अमर हो जाना है। जो फूल खिला है उसे मुरझाना है, पर कितनी शोभा-सुगन्धि बिखराकर कितना प्यार प्राप्त कर मुरझाता है—यही उसका मूल्य है। शरीर का शेष भाग खुला रहे तो पैर का बन्धन शीघ्र छूट सकता है। पर यह जो जननेन्द्रिय का बन्धन है। वह अधम इसलिए है कि कामुकतावश इनका दुरुपयोग कर बैठते हैं और स्वय क्षीण होकर आत्मा को दीन बना देता है। एक तेल बेचने वाला गलियों में जोर-जोर से चिल्लाकर तेल लो तेल लो की ध्वनि से तेल बेचता था। कुछ दिन बाद जब तेल बेचने आया तो उसके मुख से तेल लो की ध्वनि निकल ही नही पा रही थी वह धीरे से बोल पा रहा था—'तेल लो' किसी ने उससे पूछ लिया—भाई तुम्हारी आवाज में तो दम ही नही है। क्या बात हो गई? तो उसने कहा कि मेरा विवाह हो गया है। बात विवाह की नहो इन्द्रियों के दुरुपयोग की है। इनके दुरुपयोग का दीर्घगामी फल तो होना ही है, तुरन्त भी पतनकारी प्रभाव दिखाई देता है। वासना व कामुकता की वृद्धि न्याय नीति को तिलाजलि दे देती है। नित्य समाचार पत्रो में बलात्कार की घटनाएँ किसी भी सदाचारी व्यक्ति के सिर को लज्जा से झुका देती हैं। भले ही मस्तिष्क योजना बनाए, हाथ सहायता करें, पर यदि व्यक्ति अपने स्थान से न हिले तो कार्य पूर्ण न हो। यही वासनाएँ व्यक्ति को दूर-दूर तक भ्रमित कराती हैं और व्यक्ति अत्याचार कर बैठता है। यही है अन्याय का अधम बन्धन।

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष व अभिनिवेश—यह सभी बन्धन हमारे मन के कारण हैं। मन हमें अविद्या में उलझा देता है। हम अस्मिता के कारण बुद्धि को ही आत्मा समझने लगते हैं। जो अच्छा लगता है—उसमें लिप्त होना राग, जो बुरा लगे उसे छुडाना द्वेष है। मृत्यु के भय से सत्रस्त रहना अभिनिवेश है। अज्ञान, स्वार्थ, विक्रोश, (दूसरे को कष्ट पहुँचाकर सुखी होना भले ही स्वय की हानि हो), आलस्य व अभाव आदि के अवगुणो के पीछे मन की चाल छिपी होती है। इसलिए किसी ने ठीक ही कहा है—'मन न रगायो, रगायो जोगी कपडा।' सभी दुखो की जड यही प्रथम कोटि के बन्धन है। इन्हें समाप्त करने के लिए इनसे युद्ध करने के स्थान पर इनसे ऊपर उठना पीछा छुडाना ही श्रेयस्कर है। शरीर से स्वस्थ किन्तु मन से दुर्बल एक व्यक्ति आलसी व निर्धन था। इसी कारण उसकी पत्नी भी उसे ताडती-लताडती रहती थी। नारद जी को उस पर दया आ गई। वे उसे स्वर्ग लोक ले गए। स्वर्ग के द्वार पर कल्पवृक्ष के नीचे उसे बैठा कर अन्दर विष्णु जी से आज्ञा लेने

गये। उस मृत्युलोकवासी मानव को सुन्दर, सुहावना, सुगन्धित शीतल, हरीतिमा-पुष्पयुक्त वातावरण अच्छा लगा। उसने सोचा एक अच्छा आसन हो—आसन आ गया। सोचा भोजन हो—भोजन मिल गया। सोचा अपसराएँ नृत्य करें—नृत्य होने लगा। तभी स्मरण हुआ कहा मेरी पत्नी की ताडना कहा इतना मनोरम सुख— सोचना था कि पत्नी भी बेलन सहित आ गई। ये आगे-आगे पत्नी पीछे-पीछे दौड रही थी। तभी नारद जी आ गए और उस मनुष्य से बोले—कल्पवृक्ष के नीचे भी तुम्हारी धर्म, स्वर्ग, मोक्ष की मनोकामना न होकर इस दुर्गति की कामना होना आश्चय की बात है।

धर्म, अर्थ, काम मोक्ष के सोपान हैं। धमपूर्वक अर्थ कमाया जाये। काम की प्राप्ति केवल अर्थ से नही, प्रत्युत धर्म-अर्थ दोनो से करना ही मोक्षकी ओर अग्रसर होने का प्रेय पथ है। यदि हम इन का समन्वय, सन्तुलन व सगठन नही कर पाते हैं तो यह लोकेषणा, वित्तैषणा,एव पुत्रैषणा के बन्धनो मे रूपान्तरित होकर हमे सत्पथ मे विमुख कर देते हैं। धर्म पालन हेतु गृह त्याग करके साधु बने—दान-दक्षिणा की भरमार से आश्रम, मठ, मन्दिर खडे कर लेते हैं। फिर वही सब करने लगे जिसे न करने के लिए घर छोडा था। अच्छी त्याग तपस्या से कीर्ति मिली। कीर्ति प्रथम कोटि के बधनों मे से एक है। इसे तोडने की नहीं, इससे ऊपर उठने की आवश्यकता है। अच्छे कार्य से कीर्ति होगी तो क्या कीर्ति से बचने के लिए बुरे काम किए जाएँ, तब तो अपकीर्ति होगी। कीर्ति प्राप्त कर उस पर अभिमान न करके आगे-आगे कीर्तिमान स्थापित करना चाहिए।

अर्थ या वित्तैषणा का बन्धन मध्यम कोटि का है। धर्म पालन मे अर्थ आवश्यक है, पर जब यह बढ जाता है तब धर्म पीछे रह जाता है, हम इसी की सुरक्षा मे लगे रहते हैं। इसे बढाने के लिए हम अधर्म का दामन पकड लेते हैं—फिर तो धर्म मारा जाता है। 'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित'—अर्थात् मारा हुआ धर्म मनुष्य का नाश कर देता है और रक्षा किया हुआ धर्म मनुष्य की रक्षा करता है। अर्थ के बन्धनो को समूल नष्ट नहीं किया जा सकता है, पर ये विशेष रूप से शिथिल या ढीले बने रहें तो हमारा धर्म पालन व रक्षा दोनो हो सकते हैं—

धनहीनो न हीनश्च
धनिक ससुनिश्चय।
विद्यारत्नेन यो हीन
स हीन सर्व वस्तुषु॥

आचार्य चाणक्य ने ठीक ही कहा है कि धन से हीन मनुष्य हीन नही, किन्तु यदि वह विद्यावान् है है तो वह निश्चय ही धनी है। विद्या रत्न से जो रहित है वह सभी वस्तुओ मे हीन है। एक पडित जी कथा सुना रहे थे। एक भक्त ने शका प्रकट कर दी—अधर्म का क्या कारण है? पडित जी ने फिर बतायेगे कहकर प्रश्न को टाल दिया। दूर बैठा एक चाडाल भी कथा सुन रहा था। घोर छुआछूत व ऊँच नीच का युग था सो विचारा निकट कैसे आता। किसी कार्यवश चाण्डाल अपने ग्राम से राजधानी गया था, वहा वे पडित जी भी मिल गए। वह बोला, पडित जी आपने कुछ खाया नही—शायद बाजार की वस्तुओ से आप परहेज करते हैं। मेरे पास शुद्ध देशी घी के लड्डू हैं आप खा लीजिए। पडित जी ने मना कर दिया। वह बोला—भोजन के बाद लोग आपको आना-दो आना (उस समय मे रुपये का १६वा या ८वा भाग) दक्षिणा देते हैं। मै आपको पूरे पाच रुपये दूगा, फिर यहा ग्राम का कौन देखने वाला है। पडित जी ने सोचा बात तो ठीक है—यहा कौन देख रहा है। भूख भी मिटेगी और दक्षिणा से मार्ग व्यय पूरा हो जायेगा, चलो खा लेते हैं। लड्डू खाकर जल पान कर दक्षिणा प्राप्त कर पडित जी उठना ही चाहते थे कि चाण्डाल बोला पडित जी उस दिन कथा मे किसी व्यक्ति ने प्रश्न किया था, उसका उत्तर आपने फिर देने को कहा था—कही अधर्म का कारण यह लोभ ही तो नही है।

सबसे अधम बन्धन काम का है। इसी से सन्तो के वैराग्य का व राजाओ के राज्य का नाश हुआ है। सयोगिता के कारण पृथ्वीराज ने न केवल अपनी प्रत्युत सम्पूण भारत की दुर्दशा करा दी। मर्यादा से अधिक काम वासना विनाश का कारण बनती है। कोई पौराणिक भक्त गगा स्नान करते समय गगा जी से प्रार्थना करने लगा-गगा मैया मेरा वश बढा दो, पर वह गहरे भवर में फसकर डूबने लगा, तभी उसने दूसरी प्रार्थना की—मैया मेरा वश बढा या मत बढा, मेरे पिता के वंश को ही बचा ले। मन्त्र ने इसी पुत्रैषण-काम वासना से दूर जाने का सन्देश दिया है। यही वह बन्धन है जो मनुष्य को अधम से अधम बना देता है। एक लाला जो जीवन-यापन हेतु चक्की से दाना दलते-दलते वृद्ध हो गए और कहने लगे इस जीवन से तो मौत भली। एक साधु ने उनकी दशा पर द्रवित होकर कहा मेरे साथ चलो तुम्हारा दुख भी दूर होगा और स्वर्ग भी मिलेगा। उन्होने सन्तान होने के बाद चलने को कहा। सन्तान हुई उसे पालने के लिए समय मागा। मर कर बल बन कर बच्चे का सामान ढोया—मर कर कुत्ता बने रखवाली की—फिर मरकर मेढक बन गए और नाली के पास पडे पडे नाती पोतो का सुख देखना पसन्द किया। साधु ने फिर भी स्वर्ग चलने की बात मेढक योनि में उनसे कही—देखो लाला तुम्हारी कितनी दुर्गति हुई, कहा से कहा पहुँच गए। अब भी मान लो आओ तुम्हे स्वर्ग ले चले मेंढक ने चिल्लाकर कहा 'चला जा यहा से। क्या मै ही रह गया हू स्वर्ग जाने के लिए और सब क्या मर गए हैं। उनको ले जा मुझे यहा पडा रहने दे। लोग सन्तानो के हाथो अपमानित होते रहते हैं और वानप्रस्थ आश्रम खाली पड रहते हैं।

बन्धन एक अनुबन्ध है कुछ नियमो के पालन का। यदि इनका पालन नही किया जाता है तो वही बन्धन बाधा बन जाते हैं। मुक्ति का अभिलाषी मानव-दानव पशु बन जाता है। एक अति प्रचलित वेद मन्त्र का उल्लेख प्रासगिक होगा।

उलूकयातु शुशुलूकयातु जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्। सुपर्णयातुमुत गृध्रयातु दृषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र॥

अथर्व० ८।४।२२

अर्थात् उल्लू की चाल मोह को, भेडिए की चाल क्रोध को, कुत्ते की चाल स्वजाति द्रोह, मत्सर, जलन व चाटुकारिता को, कोक चिडा-चिडी की चाल कामवासना को गरुड की चाल अहकार को और गीध की चाल लोभ वृत्ति को छोड दें। हे आत्मन् इन राक्षसो को ऐसे रगड दे जैसे सिलबट्टे पर मसाला रगडा जाता है। इन बाधाओं को मर्यादित बन्धन और स्वधारित बन्धनो को व्रत का रूप प्रदान कर हम आदित्य परमेश की गोद का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। आदित्य की गोद मे क्या है? वही मुक्ति है जिसे हम चाहते हैं। कोई एक व्यक्ति कुछ गुणो मे निपुण हो सकता है पर वह सर्वगुण सम्पन्न नहीं हो सकता है। यह तो परम पिता परमात्मा ही है जो सभी गुणो से सम्पन्न सगुण और सभी दुर्गुणो से दूर निर्गुण है। जैसे दार्शनिक, ज्ञानी, वैज्ञानिक, कलाकार, चित्रकार, चिकित्सक, अभियन्ता या सगीतकार के पास जाकर दशन, ज्ञान, विज्ञान, कला, चित्र, चिकित्सा, यन्त्र, सगीत की विद्या प्राप्त कर सकते हैं, वैसे 'आदित्य' अविनाशी प्रभु से हमें 'अदितये' उसका नाश रहित आनन्द या मुक्ति प्राप्त हो सकती है। जैसे एक विशेषज्ञ से उसका ज्ञान सीखने के लिए उसके निदशो का पालन करना होगा वैसे ही मुक्ति को प्राप्त करने के लिए प्रभु के व्रतो का पालन करके पहले निष्पाप होना होगा।

बन्धन ऊपर से थोपे गये लगते है, जबकि व्रत भीतर से स्वय अगीकृत किए होते हैं। किसी अध्यापक ने अपने विद्यार्थी से कहा कि ये ५ प्रश्न हल कर लोगे तभी भोजन मिलेगा—यह हुआ बन्धन। विद्यार्थी गणित के प्रश्नो मे उलझ गया—उसने स्वय सकल्प किया कि ये सभी प्रश्न हल कर लूगा तभी भोजन करूगा—प्रश्नो की उलझन मे भोजन का समय भी निकल गया। जब सभी प्रश्न हल हो गए तभी निश्चिन्त होकर भोजन करने बैठा—यह हुआ व्रत पालन और उसका आनन्द। किसी भयकर अपराधी को बचाने के लिए वकील ने उसे एक युक्ति सुझाई। वकील ने कहा कि तुम न्यायाधीश के सामने पागलपन का अभिनय करना और जो भी पूछा जाए, उसका उत्तर केवल 'ओ-ओ-ओ' कह कर देना। उसने यही किया और वह छूट गया। जब वह अपराधी चलने लगा तो वकील ने शेष शुल्क की माग की तो उसने वकील को वही उत्तर दे दिया—'ओ-ओ,-ओ।' उसने कहा जो मन्त्र हमें न्यायाधीश के दण्ड से छुडा सकता है, वह हमे वकील के शुल्क से भी बचा सकता है। स्वेच्छा से श्रद्धापूर्वक अपनाये जाने पर यही बन्धन व्रत बनकर हमारा उद्धार करने लगते हैं।

व्रत पालन से अविद्या हटकर विद्या में, अस्मिता वास्तविक आत्मतत्त्व मे, राग-वराग्य में, द्वेष-मैत्री मे और अभिनिवेश ईश्वर जीव प्रकृति के बोध मे परिणत हो जाता है। विषय तृष्णा—जितेन्द्रियता में काम—निष्काम मे, क्रोध—शम मे, लोभ—सन्तोष में, मोह—विवेक में, शोक—प्रसन्नता में, ईर्ष्या-प्रशसा मे

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत के समाचार

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल देहात का ग्यारहवां वार्षिकोत्सव दिनाक ३।१।१९९० को आर्यसमाज, महरौली में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। महरौली के युवा नेता श्री राजेन्द्र कुमार ने ध्वजारोहण करते हुए अपने सन्देश मे कहा कि आज हम सभी को एक ओ३म् के ध्वज के नीचे एकत्र होकर बहुत काम करने की आवश्यकता है।

उत्सव के मुख्य अतिथि चौ० महेन्द्रसिंह (पी०के० भट्टे वाले) ने दिल्ली देहात के आर्यों की लगन तथा कार्यों की प्रशसा करते हुए सहर्ष इक्यावन सौ रुपये दान दिया। भारतीय "संस्कृति रक्षा सम्मेलन" की अध्यक्षता प० आशानन्द आर्य ने की तथा मुख्य वक्ता डा० सुरेन्द्र प्रकाश ने भारतीय सस्कृति की प्राचीनता एव सार्वभौमता का वर्णन किया और भारतीय दृष्टिकोण से पर्यावरण विनाश, बेरोजगारी, साम्प्रदायिक तनाव आदि जैसी आज की समस्याओ को सुलझाने पर जोर दिया।

समापन में मण्डल के अध्यक्ष तथा दिल्ली देहात के आर्य युवा नेता श्री उदय श्रेष्ठ ने उत्सव मे पधारे सभी लोगो का धन्यवाद करते हुए अनाथ, गरीब व दुःखी कन्याओ, महिलाओ को उचित व्यवस्था करने का आह्वान दिया तथा जनता से रूढ़िवाद, जातिवाद भाई भतीजावाद आदि छोड़कर आर्यसमाज की मौलिक नीतियो पर चलने का अनुरोध किया।

ऐसे नहीं बचेगी संस्कृत

नई शिक्षा नीति में प्रत्येक विद्यार्थी को तीन भाषाएँ पढ़नी होगी–

१ मातृ या क्षेत्रीय भाषा

२ सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी

३ इगलिश

सस्कृत के लिए कोई जगह नही है। कोई कुर्सी खाली हो तो वहा सस्कृत बैठे।

मातृभाषा पर हरेक का जन्मसिद्ध अधिकार है और राष्ट्र की व्यापक भाषा के रूप मे हिन्दी को जानना सब के लिए आवश्यक है। इसलिए इन दोनो मे से किसी को नही हटाया जा सकता। अंग्रेजी जानना सब के लिए आवश्यक नही है। इसलिए उसकी अनिवार्यता को हटाकर उसके स्थान पर सस्कृत को बिठाया जायेगा। अंग्रेजी को अनिवार्यता समाप्त किए बिना सस्कृत के लिए कोई स्थान नही मिलेगा। इसके लिए कौन प्रयत्न करे ? आर्यसमाज ?

वर्तमान मे आर्यसमाज अंग्रेजी के लिए सर्वात्मना समर्पित है। पहले डी० ए० वी० सगठन ने देश के कोने-कोने मे इगलिश माध्यम के स्कूल खोलकर धीरे धीरे अंग्रेजी को भारतीयो की मातृभाषा बनाने और हिन्दी को देश निकाला देने की योजना बनाई। उसकी देखा देखी आर्यसमाज के अन्तर्गत इगलिश माध्यम के स्कूलो की बाढ आ गई। इस बाढ मे बह कर आर्यसमाज के सर्वोच्च नेता भी इगलिश माध्यम के स्कूलो का उद्घाटन करने मे गर्व करने लगे। ये सब सरकार के लोग नहीं है, नामधारी आर्यसमाजी हैं जो धार्मिक लाभ के लिए अपने धर्म, सस्कृति, सभ्यता आदि को तिलाजलि देकर अंग्रेजी के प्रचार-प्रसार को अपना वैदिक धर्म मानते हैं। स्वय सस्कृत का गला घोट कर सुप्रीम कोर्ट, प्रधान मन्त्री आदि से सस्कृत को बचाने का अनुरोध कर रहे हैं। इनके बचाये सस्कृत नही बचेगी। सस्कृत के बिना हिन्दी नही रह सकती। इसलिए सस्कृत का जाती देख अपनी लाज बचाने के लिए हिन्दी चुपचाप खिसक जायेगी। आर्यसमाज यदि ईमानदारी से सस्कृत को बचाना चाहता है तो उसे अपनी सस्थाओ में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करनी होगी। अंग्रेजी कैंसर है, आपरेशन करके जब तक इसे नही निकाला जायेगा, तब तक इस दिशा मे किए गये सभी प्रयत्न निष्फल होगे।

—विद्यानन्द सरस्वती
जी-१४/१६ माडल टाउन, दिल्ली

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर का ११०वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर का ११०वा वार्षिकोत्सव, शिव, रात्रि पर्व के अवसर पर प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष, बृहस्पतिवार, २२ फरवरी से रविवार, २५ फरवरी, १९९० तक श्रद्धानन्द पार्क में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यजगत् के सन्यासी, दार्शनिक, विद्वान् उपदेशक, कवि, भजनोपदेशक आदि पधार रहे हैं।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर देहात का वार्षिक अधिवेशन रविवार, २५ फरवरी को मध्याह्न २ बजे से आर्यसमाज मेस्टन रोड में होगा।

आवश्यकता है

आर्यसमाज बी-एन पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली-५२ को वैदिक कर्म काण्ड में निपुण एक प्रौढ पुरोहित की आवश्यकता है।

सम्पर्क करें—मन्त्री देवराज कालरा, ए एम-१३६ शालीमार बाग, दिल्ली-५२, दूरभाष—७१२४६१४

(पृष्ठ ३ का शेष)

पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार

भाष्यकार ने स्वामी दयानन्द की वेदार्थ प्रक्रिया का ही अनुसरण किया है। भाष्यारम्भ मे विद्वान् भाष्यकार ने महत्त्वपूर्ण भूमिकायें लिख कर चारों वेद संहिताओ का सविस्तार परिचय दिया है। अब तक इन भाष्यो के अनेक सस्करण हो चुके हैं। १९४६ से १९६० तक शर्मा जी वनस्थली विद्यापीठ में सस्कृत के प्राध्यापक रहे। माघ शुक्ला १३ स० २०१८ वि० दिनाक २९ जनवरी १९६१ रविवार के दिन प० जयदेव शर्मा का निधन हुआ।

श्री प० जयदेव विद्यालकार रचित ग्रन्थो का विवरण इस प्रकार है —

१ ऋग्वेद भाषा भाष्य (७ भाग)
२ यजुर्वेद भाषा भाष्य (२ भाग)
३ सामवेद भाषा भाष्य (१ भाग)
४ अथर्ववेद भाषा भाष्य (४ भाग)
५ माधवानुक्रमणी—ऋग्वेद के भाष्यकार वेंकट माधव ने ऋग्वेद के आठो अष्टको के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में स्वर, आख्यात, नियत छन्द आदि आठ विषयो की विवेचना की है। प० जयदेव शर्मा ने इस ग्रन्थ का भाष्यानुवाद किया।
६ ईशोपनिषद् भाषा भाष्य
७ यमयमी सूक्त व्याख्या
८ अथर्ववेद और जादू टोना—आर्यसाहित्य मण्डल अजमेर से प्रकाशित।
९ क्या वेद में इतिहास है ? श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के वेद में इतिहास विषयक विचारो का सप्रमाण खण्डन। आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर से २०१० वि० में प्रकाशित।
१० पुराण मत पर्यालोचन—आचार्य रामदेव जी के सहलेखन में लिखा गया पुराणालोचन विषयक ग्रन्थ। गुरुकुल कांगडी से १९७६ वि० (१९१९) में प्रकाशित।
११ हैदराबाद सत्याग्रह का रक्त रजित इतिहास—सूर्यदेव शर्मा के सहलेखन में आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से १९४७ में प्रकाशित।
१२ आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न—आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से प्रकाशित।
१३. स्वामी दयानन्द सरस्वती के यजुर्वेद भाष्य तथा प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के यजुर्वेद भाष्य विवरण की तुलना—अध्याय १ से १० पयन्त परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा १९५० में प्रकाशित।
१४. अप्रकाशित ग्रन्थ—शेक्सपीयर के कुछ नाटको का संस्कृतानुवाद।

—प्रो० भवानीलाल 'भारतीय'
—अध्यक्ष दयानन्द पीठ, पजाब विश्वविद्यालय, चडीगढ़

(पष्ठ ५ का शेष)

व्रत अपनायें बन्धन कट जायें

और द्वेष —प्रेम मैत्री मे रूपायित हो जाता है। अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्या परिग्रहा यमा । शौचसन्तोषतप स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा । इन यम नियमो का पालन करके न केवल हम अपना उद्धार कर सकते हैं प्रत्युत्तर समाज का सुधार भी कर सकते हैं और समर मे आनन्द हर्ष का साम्राज्य स्थापित कर सकते है —पर इसे आरम्भ स्वय अपने से करना होगा। किसी विचारक ने कितना सटीक उपदेश किया है—

अरे सुधारक जगत को
मत कर चिन्ता यार।
यह मन तेरा जगत है
पहले इसे सुधार॥

यह व्रत भी हमारे हृदय मन्दिर मे यो हो आकर बस जायगे। इनकी साधना का भी एक क्रम है आभास आवेश आवेग सकल्प क्रम मे अपने लक्ष्य व मार्ग का विचार आभास है मार्गदर्शक व सत्सग से आभास आवेश बन जाता है अर्थात उसमे हमारी आस्था बढना है किन्तु सत्सग व साथी के विलग हो जाने पर वह आवेश हट जाता है। स्वय की भावना व शक्ति से वही विचार आवेग पुन प्रकट हो जाता है तब यह आवेग रूप मे आकर दृढ हो जाता है—यही सकल्प है। महर्षि चरक ने कहा है प्रज्ञापराधो मूल सर्वरोगाणाम अर्थात बुद्धि का दोष सभी रोगो की जड है। एक अन्य वेद मन्त्र भी इस दिशा मे सजग करता है—

उदुत्तम मुमुग्धि नो विपाश मध्यम चत अवाधमानि जीवसे
ऋ० २५ २१।

अर्थात अविद्या अन्धकार का नाश करने वाले जगदीश्वर आप (न) हमे (जीवसे) अच्छे जीवन के लिए (उत्तमम) श्रेष्ठ (मध्यमम) मध्यम द्रव्य रूपी (पाशम) बन्धन को (मुमुग्धि) अच्छे प्रकार छुडवाए तथा (अधमानि) जो हमारे दोष रूपी निकृष्ट बन्धन है उनका भी (विचन) विनाश कीजिए। मन बुद्धि शरीर सत रज तम गुणी प्रकृति के आनुपातिक योग से उत्तम मध्यम व अधम बन्धनो मे फस जाते हैं उन्हे वेद धारित व्रतो के द्वारा खोला जा सकता है मन का सकल्प बुद्धि की योजना मे ढलकर शरीर के द्वारा क्रियात्मक रूप धारण कर लेता है। मन का विपरीत विकल्प भी बुद्धि की योजना मे शरीर के बन्धनो मे बदल जाता है। बुद्धि अग्नि का कार्य करता है। उत्तम पदार्थों को अग्नि सूक्ष्म करके उनकी शक्ति को बढा देता है और निकृष्ट दूषित पदार्थों को नष्ट करके वातावरण को शुद्ध भी कर देता है। मन के बन्धनो को बुद्धि के द्वारा शिथिल करके उन्हे व्रत द्वारा तोड दिया जा सकता है और इन यम नियमो के पालन से स्वय व समाज को सुखी बनाया जा सकता है

पुस्तक समीक्षा— वैदिक पथ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तर्क केसरी ने वैदिक पथ का प्रणयन करके जनजन को गूढ वैदिक विषयो मे सरल भाषा मे अवगत कराया है। ईश्वर जीव प्रकृति तथा समस्त आचार विचार एव व्यवहार की सरल सवाद शैली मे प्रस्तुत किया है। उनकी शैली ज्ञानपरक है वे वेद मन्त्र के आधार पर अपने विषय को प्रस्तुत करते हैं वेद मन्त्र का उद्धरण करके उसे आधुनिक सदर्भों मे जोडते हैं। इसमे उनका कर्तव्य चरितार्थ हो जाता है। साथ ही वे स्वय भी सीमाओ मे बधे रहते हैं आर्ष ग्रन्थो का प्रतिपादन करने के उपरान्त वे पुन वेदमन्त्र पर लौट आते हैं। पुस्तक की विषय सामग्री अच्छी है पठन करने एव मनन करने योग्य है।

वैदिक पथ आचार्य हरिदेव वेद प्रचारक मण्डल ० रामजस रोड करौल बाग नई दिल्ली पष्ठ सख्या ११ मूल्य ५ ५०

डा० धर्मपाल

आयसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 323 77 Post in N D P S O on 11 12 1 90 L e ced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डो० (सी०) ७५९ पूव भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

आर्यसन्देश के सदस्य बनकर आप

पायेंगे—

- वष मे पूरे ५२ अंक
- वष मे आठ वशिष्ट विशेषाक
- वैदिक सस्कृति से अनुप्रात लेख और कविताए
- आय जगत की एतिहासिक घटनाओ की जानकारी
- दिवगत आय श्रेष्ठियो के सक्षिप्त परिचय
- आय पर्वो पर विशिष्ट लेख
- आय जगत की सस्थाओ के समाचार
- राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र पर अग्रलेख
- अराष्ट्रीय तथा अवदिक गतिविधियो का घोर विरोध

नहीं पायगे—

- आत्म प्रशसा अथवा व्यक्ति विशेष का गुणगान
- विभिन्न गुटो की आलाचना प्रत्यालोचना

यदि आप उपयुक्त विचारो से सहमत है तो कृपया आज ही २५० दो सौ पचास रुपये चक मनीआर्डर नकद भेजकर अपनी प्रिय पत्रिका आयसन्देश के आजीवन सदस्य बन जाइये। शुभ कार्य मे विलम्ब कैसा।

वष १९९० में 'आर्यसन्देश' के विशेषांकों का कायक्रम

ऋषिबोधांक	~~२५ फरवरी~~	९० रविवार
गुरुदत्त विद्यार्थी (निर्वाण शताब्दी अक)	१८ माच	९० रविवार
समग्र-क्रान्ति अंक (आयसमाज स्थापना अक)	२५ माच	९० रविवार
हैदराबाद विजय अंक	१९ अगस्त	९० रविवार
प० शिवकुमार शास्त्री (अमृत महोत्सव अक)	१४ अक्तूबर	९० रविवार
ऋषि निर्वाण अंक	२१ अक्तूबर	९० रविवार
प० इन्द्र विद्यावाचस्पति शताब्दी स्मृति अंक	११ नवम्बर	९० रविवार
श्रद्धानन्द बलिदान अंक	२३ दिसम्बर	९० रविवार

यदि आप—

आर्यसमाज के सदस्य हैं, तो दूसरो को भी बनाये।
आर्यसन्देश के सदस्य हैं तो दूसरो को भी बनाये।

सेवा में—

श्री पुस्तकालयाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार—(उत्तर प्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सर्वदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली न० १५ कैलाशनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश
वर्ष १२ अंक १३ रविवार २१ जनवरी १९९० माघ सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द – १६५ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली के प्राणाधार : स्व० वैद्य प्रहलाददत्त जी की पुण्य-स्मृति में
वैद्य प्रह्लाददत्त मार्ग

दिल्ली १३ जनवरी, दिल्ली के विख्यात समाजसेवी, आर्य जगत् की विख्यात विभूति तथा आर्यसमाज सदर बाजार के प्राणाधार स्व० वैद्य प्रहलाददत्त जी की पुण्य तिथि के अवसर पर दिल्ली नगर निगम ने स्वर्गीय वैद्य जी की समाज के प्रति की गयी महती सेवाओ को सम्मान देने तथा उनकी स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए, सदर बाजार स्थित डिप्टीगज में स्व० वैद्य जी के निवास स्थान को जाने वाले मार्ग का नाम "वैद्य प्रहलाददत्त मार्ग रखकर स्व० वैद्य जी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

समारोह के मुख्य अतिथि तथा क्षेत्रीय सासद् सदस्य प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा ने "वैद्य प्रहलाददत्त मार्ग —पट का अनावरण करते हुए स्व० वैद्य जी द्वारा आर्यसमाज तथा दिल्ली के लोगो के प्रति किये गये अविस्मरणीय कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि आज की वर्त्तमान गम्भीर परिस्थितियो मे स्व० वैद्य प्रहलाददत्त जी जैसे सात्त्विक, दृढ-प्रतिज्ञ, भारतीय सस्कृति मे ओत-प्रोत तथा निष्काम-भाव से कार्य करने वाले बुद्धिजीवी की लोगो को आवश्यकता है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रो० बलराज मधोक (भू०पू० सासद) ने अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि वैद्य जी ने आर्यसमाज हिन्दूमहासभा, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ, भारतीय जनसघ तथा सभी राष्ट्रवादी शक्तियो की भर-पूर सेवा की। उनका सादा-सरल जीवन उच्च राष्ट्रीय विचार आने वाली पीढी के लिए प्रेरणास्पद रहेगा।

समारोह की अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की। श्री स्वामी जी ने स्व० वैद्य जी के जीवन के विभिन्न पहलुओ की चर्चा करते हुए अपने अनेक सस्मरण सुनाकर इतिहास के अनेक लुप्त पृष्ठो को उजागर किया। उन्होने स्व० वैद्य जी को आर्यसमाज और हिन्दू समाज के लिए समर्पित श्रेष्ठ आर्य की सज्ञा दी।

समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल, आर्यसमाज दीवानहाल, सदर बाजार, नयाबास, दरियागज, कबीरबस्ती पुलबगश, रामाकृष्णापुरम बस्ती हरफूलसिह वाकनेर करौलबाग, सुभाष नगर आदि के अधिकारी तथा कार्यकर्ता भारी सख्या मे उपस्थित थे। उनके अतिरिक्त सदर बाजार क्षेत्र की सभी राजनैतिक धार्मिक सामाजिक तथा व्यापारिक और सामाजिक सस्थाओ के अधिकारी एव कार्यकर्त्ताओ ने भी इस अवसर पर उपस्थित होकर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

समारोह का सफल आयोजन स्व० वैद्य जी के सुपुत्र श्री इन्द्रदेव जी ने किया तथा उपस्थित जन समुदाय का धन्यवाद किया। स्व० वैद्य जी के परिवारजनो की ओर से इस अवसर पर जलपान का भी आयोजन किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से
आर्य युवा महासम्मेलन
के कार्यक्रम प्रारम्भ

नई दिल्ली, १३ जनवरी। दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित किये गये छठे आर्य युवा महासम्मेलन के सन्दर्भ में आज रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज मन्दिर, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली मे चित्रकला तथा निबन्ध प्रतियोगिताएँ भिन्न-भिन्न वर्गों मे आयोजित की गयी। इन प्रतियोगिताओ में दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रो के आर्य विद्यालयो से लगभग दो सौ प्रतियोगी बालक-बालिकाओ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का समारम्भ करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त ने आर्य युवा महासम्मेलन तथा इससे सम्बन्धित कार्यक्रमो की रूपरेखा तथा इनके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्यसमाज के छठे नियमानुसार ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना। दिल्ली सभा इसी उद्देश्य को सम्मुख रखकर दिल्ली के विद्यालयो मे पढ रहे बालक-बालिकाओ के सर्वाङ्गीण विकास हेतु प्रतिवर्ष ऐसे आयोजन करती है। उन्होने इस अवसर पर उपस्थित आर्य विद्यालयो की अध्यापिकाओ, प्रबन्धको तथा छात्र-छात्राओ से अपेक्षा की कि वे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे कोई कसर बाकी नही रखेगे।

इस अवसर पर आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के अधिष्ठाता श्री प्रियतमदास रसवत, आर्यसमाज सरोजिनी नगर के मन्त्री श्री सत्यस्वरूप, रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल के प्रबन्धक श्री रोशनलाल गुप्त तथा स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती अनीता कपिला ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्रीमती कपिला ने प्रतियोगिताओ तथा कार्यक्रम की सुदर व्यवस्था के साथ साथ उपस्थित जनसमूह के जलपान की भी व्यवस्था की।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद मनन

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद् बिभर्ति, तस्मिन्देवा अधि विश्वे समोता ।
प्राणापानौ जनयन्नाद् व्यान, वाच मनो हृदय ब्रह्म मेधाम् ।।

अथर्व, काण्ड ११ । अ० ३ । सूक्त ५ । २४ ।।

ब्रह्म मे जिस की गति हो उसी को ब्रह्मचारी कहते है। ब्रह्म तेजस्वरूप है, जो स्वयम् तेजस्वी न हो उसकी तेजस्वरुप मे गति कैसे हो सकती है। वेद मे इसलिए आदेश है कि तेजस्वरूप परमात्मा से तेज की याचना पहले करो—'तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।' जब तक ब्रह्मचारी के ज्ञानचक्षु खुल नही जाते तब तक वह ज्ञानस्वरूप का न ज्ञान प्राप्त करता है, न उसकी ओर गमन करता है और न ही उसको प्राप्त होता है। परन्तु जब वह उस ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है तब उस ब्रह्म के निर्मित सब देव (वसु, रुद्र, आदित्य, विद्युत्, यज्ञ) उस ब्रह्मचारी में ओत-प्रोत हो जाते हैं—अर्थात ब्रह्मचारी उनके यथार्थ स्वरूप को समझने लगता है। इस मे से एक-एक के तत्त्व को वह खोल कर रख देता है और उस ज्ञान की सहायता से वह अपने तथा अन्य मनुष्यो के जीवन के लिए प्रकाश प्राप्त करता है। लोग ब्रह्मचारी को उसके गुणो से जानते है और तब उसके पीछे चलने हैं।

प्राण, अपान और व्यान-प्राणो की गति का ज्ञान सब से पहले होता है। वह प्राणों को वश मे करना सीखता है। प्राणो द्वारा अन्दर के विकारो को बाहर कैसे फेकना, बाहर की शुद्ध प्राण वायु को कैसे भीतर ले जाना, सारे अन्त स्थ वायु की समान गति को कैसे स्थिर रखना, इस सारी क्रिया पर ब्रह्मचारी ही प्रकाश डाल सकता है। ससार की सारी गति प्राणो की गति पर ही निर्भर है। एक जापानी वीर शारीरिक व्यायाम आरम्भ करने से पहले क्यो दीर्घ श्वास तथा प्रश्वास का अभ्यास करता है? इसलिए कि प्राणो की गति ठीक होने से ही व्यायाम द्वारा शरीर कमाया जा सकेगा। एक बोझ उठाने वाला पहलवान चार मन की मुगरी पर हाथ डालने से पहले प्राणो को क्यो वश मे करता है? इसलिए कि वह जानता है, कि मुगरी को उठाकर स्थित रखने के लिए प्राणो की स्थिरता आवश्यक है। जिन वक्ताओ ने प्राणो को वश में करना नही सीखा वे बार-बार पानी पीते हैं तथा गला और स्वास्थ्य सब कुछ व्याख्यान पर न्यौछावर कर देते हैं। एक प्रबन्धकर्त्ता आई हुई विपत्तियो का सामना नहीं कर सकता यदि प्राण उस के वश में न हो। इसके साथ ही आत्मा को परमात्मा मे जोडने का साहस भी प्राणो को वश मे करके ही हो सकता है। इसलिए उपनिषत्कार ऋषि कहा है—

> प्राणस्येद वशे सर्वं
> त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम्।
> मातेव पुत्रान् रक्षस्व
> श्रीश्च प्रज्ञा च विधेहि न ।।

तीनो लोको मे जो कुछ अवस्थित है वह सब प्राणो के वश मे ही है। हे प्राण! जैसे माता पुत्रो की रक्षा करती है वैसे तुम हमारी रक्षा करो, हमारे लिए शोभा और ज्ञान की वृद्धि करो।

जब प्राण वश मे हुए तभी वाणी वश में होती है। इस लोक तथा परलोक दोनो की सिद्धि के लिए वाणी का वश में होना बडा भारी साधन है। यजुर्वेद मे वाणी की महिमा इस प्रकार बतलायी गई - 'सा विश्वायु, सा विश्वधाया, सा विश्वकर्मा।' वाणी ने जहा मनुष्य को चक्रवर्ती राज्य दिलाया है वहा वाणी के दुरुपयोग ने बादशाहो के तख्ते भी पलट दिए है। उस वाणी को ब्रह्मचारी ही ही कल्याणकारिणी बना सकता है। जिसने वाणी के दुरुपयोग से शत्रुओ की सख्या बढा ली हो वह शान्त चित्त होकर नही बैठ सकता। मन को ससार का विजेता बतलाया है।

> मन के हारे हार है,
> मन के जीते जीत।
> परमातम को पाइए,
> मन ही की परतीत ।।

ऐसे बली मन को क्रमश साधनो द्वारा ब्रह्मचारी ही काबू कर सकता है। तब हृदय की विशालता का प्रादुर्भाव होता है। सकुचित हृदय ससार यात्रा में पग-पग पर ठोकरे खाता है और चचल मन ऐसे व्यक्ति को विविध नाच नचाता है वह हृदय को महान् कैसे बनायेगा? 'ओ३म् मह पुनातु हृदये'—हे परमेश्वर! अपनी महानता से हमारे हृदय को पवित्र करो, यह नित्य की प्रार्थना कैसी महत्त्वपूर्ण है। जब तक हृदय उदार नही तब तक उस महान् परमेश्वर की महिमा को समझना कैसे हो सकेगा? उस के विस्तृत जगत् का मर्म बतलाने वाले वेद अपने भेद को उस के लिए कैसे प्रकट कर सकेंगे।

बाल-ब्रह्मचारी वेद के भेद को खोल कर सर्वसाधारण के सामने रख सकते हैं। वह वेद नही जो लेखनी और मसीपात्रो मे बन्धा हुआ है। प्रत्युत वह वेद तो देश और काल की सीमा से परे हैं। व्याकुल ससार ने जब-जब ब्रह्मचारी के दर्शनार्थ हृदय से प्रार्थना की तब-तब बाल ब्रह्मचारी ने दर्शन दिए। अब फिर प्रजा व्याकुल होकर बाल-ब्रह्मचारी की बाट जोह रही है। दयामय प्रभो! यदि आप के प्रकाश से तेज धारण करने में कोई ब्रह्मचारी मग्न है तो उसे शीघ्र तेज प्रदान करो, ताकि वह ससार से सन्देह और अविद्या के बादलो को छिन्न भिन्न कर के उड़ा दे।

शब्दार्थ

(ब्रह्मचारी) तेजस्वरूप परमात्मा में विचरने वाला ब्रह्मचारी (भ्राजत्) उस के तेज से स्वय चमकता हुआ (ब्रह्म) परमात्मा को (बिभर्ति) धारण करता है। तदनन्तर (तस्मिन्) उस तेजस्वी ब्रह्मचारी में (विश्वे देवा) सब वसु आदि देव (समोता) पूर्ण रूप से ओत-प्रोत हो जाते हैं, तद्गत हो जाते हैं। तभी वह मयमी (प्राणापानौ) प्राण और अपान को (व्यानम्) व्यान को (वाचम्) मधुमती वाणी को (मन) शान्त मन को (हृदयम्) हृदय की विशालता को (ब्रह्म) वेदज्ञान को (आत्) और (मेधाम्) उस के योग्य विकसित बुद्धि को (जनयन) उत्पन्न करता है, युक्त होता है।

भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्षभियजत्रा ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहित यदायु ।।

अंग अग सुमंगल

—देवनारायण भारद्वाज

[illegible]

तुम रहते हो साथ हमारे, हम रहें तुम्हारे सग सग।
हे नाथ करो अनुकम्पा, भर जाय सुमगल अग अग ।।

हे देवेश्वर है विनय यही
जगदीश बनो अब सदय सही
सब यज्ञ यजनकर्ताओ को
हे यजनीश्वर दो विजय वही।

यह देह तुम्ही ने की प्रदान, हो जाय नही अब रग भग।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाय सुमगल अग अग ।।

यह सुने कान कल्याण सदा
हो नयन दृष्टि कल्याण प्रदा
प्रत्येक अग आभास करे
तेरी महिमा का ज्ञान सदा।

बलवान बने तन का वितान, हो जाय नही ये तग तग।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाय सुमगल अग अग ।।

प्रभु गीत करें हम उच्चारण
आदेश तुम्हारा कर पालन
आयु हमारी देव हितैषी
हो देह आत्म सुख सचारण।

कल्याण वान उत्तम उमग, हर समय दमन हो दग जग।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाय सुमगल अग अग ।।

—आर्यसमाज आजमगढ़ (उ० प्र०)

ओ३म्

आर्य सन्देश



स्वामी श्रद्धानन्द चौक

यह हम रे देश का परम्परा रही है कि महान पुरुषो द्व रा किए गए काय की स्मृति को स्थायी बनाए रखने के लिए स्थान विशेष पर उसके स्मारक बना दिए जाते हैं। ऐसे महापुरुषो के अनेक स्मारक हमारे देश मे हैं। इन स्मारको की लोग यात्रा करते हैं समय-समय पर लोग वहा जाते हैं तथा इन स्थ नो का देखकर प्ररणा ग्रहण करते हैं। कुछ लोग इन स्थानो की पूजा भी करते हैं। आर्यसमाज इस प्रकार के किसी बाह्याडम्बर की अनुमति नही देता। फिर भी इतना निश्चित है कि जलियावाला के शहीदो को श्रद्धाञ्जलि देने के लिए लोग वहा पर बने स्मारक को देखते हैं तथा वे श्रद्धाभिभूत होते है। प० मोतीलाल नेहरू के इलाहाबाद स्थित आनन्द भवन को देखकर वे उनके राष्ट्र के प्रति किए गए याग को स्मरण कर लेते हैं। वर्धा और साबरमती के आश्रमो का देखकर गाधी जी की क्रियाशीलता याद आती है। बारदोली को देखकर सरदार पटेल का याद आती है। ननकाना साहब की यात्रा के लिए हमारे अनेक भाई आज भी पाकिस्तान जाते हैं। राम और कृष्ण से जुड स्थानो का भी यही महत्त्व है। महर्षि दयानन्द के जीवन से गुफित टकारा मथुरा अजमेर और पाखण्ड खण्डिनी पताका स्थान को हम सम्मानपूवक देखते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन की भी एक ऐसी अपूव घटना है। ३० माच १९१९ को स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली के घटाघर चौक पर अग्रजी सनिको की सगीनो के सामने छाती तानकर कहा था—चलाओ गोलिया! और चारो ओर स्तब्धता छा गई थी। वही स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दुओ और मुसलमानो की एकता का समथक था। और इसीलिए उसे अगले दिन जामा मस्जिद से भारतीय जनता का आह्वान करने का अवसर मिला था। वेद मन्त्रो से उसने जामा मस्जिद को गुजायमान किया था।

उस शहीद की स्मृति मे नया बाजार स्थित श्रद्धानन्द बलिदान भवन सभी आर्यवीरो के लिए प्ररणा और नव ऊर्जा प्रदान करने वाला स्थान है। प्रतिवष उनके बलिदान दिवस के अवसर पर हम वहा से एक शोकयात्रा निकालते हैं। घण्टाघर का वह प्रसिद्ध स्थल भी उसी माग पर पडता है। हमारी सरकार से साग्रह माग है कि इस चौक का नाम स्वामी श्रद्धानन्द चौक रख दिया जाए। भाई मतिदास चौक भी समीप ही है। वहा पर उनका बलिदान हुआ था तो यह स्थान वह है जहा पर स्वामी श्रद्धानन्द ने विदेशी सत्ता को ललकारा था।

हे आर्यो हम आज ही से अपना प्रयास आरम्भ कर द कि इस स्थान का नाम स्वामी श्रद्धानन्द चौक रखा जाए। सगठन मे शक्ति है। हमारा सम्मिलित प्रयास निश्चय ही हमे सफलता देगा।

—मूलचन्द गुप्त

'आर्यसन्देश' के

—स्वय ग्राहक बनें।

—दूसरो को बनायें॥

'आर्यसमाज' के

—स्वय सदस्य बन।

—दूसरो को बनायें॥

मकर-सक्रान्ति पर्व सम्पन्न

प्रतिवष की भाति इस वष भी आर्यसमाज दीवानहाल की ओर से लोहडी तथा आय पव मकर सक्रान्ति चान्दनी चौक स्थित अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की भव्य प्रतिमा के समीप उल्लासमय वातावरण मे मनायी गयी।

मध्याह्न २ बजे वहद् यज्ञ के पश्चात प० गुलाबसिंह राघव तथा प० देवजीत ने वहा मधुर मनोहर उपस्थित भाव विभोर किया वहा पण्डित यशपाल जी सुधाशु तथा प० निरञ्जन देव शास्त्री ने इस आयपव के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए जनमानस से इस पव को वैदिक रीत्यनुसार मनाने तथा इस अवसर पर दीन दुखियो को स्ववित्तानुसार कम्बल आदि दान करने हेतु प्ररित किया।

आर्यसमाज के प्रधान श्री सूयदेव जी ने उपस्थित जनसमूह का स्वागत करते हुए आयपव के आयोजन मे सम्मिलित होने पर धन्यवाद दिया तथा अपेक्षा की कि वे आर्यसमाज के सभी कार्यक्रमो मे भाग लेकर भारतीय सस्कृति के प्रचार प्रसार मे सहयोग द।

सम्पादक के नाम पत्र—

● ३१ दिसम्बर ८९ का अक पढ़ना बहुत अच्छा लगा विशेष रूप मे सम्पादकीय लेख— हैदराबाद सत्याग्रह शताब्दी पढकर विस्तृत जानकारी मिली। यह लेख बहुत ही प्रशसनीय था।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप सत्यार्थप्रकाश व अन्य ग्रन्थो के विषय मे भी नियमित रूप से हमे ज्ञानवधक लेख पठन करवाते जाए क्योंकि इन अमूल्य ग्रन्थो तक पहुच नही पाने वे भी आर्यसन्देश मे ज्ञान प्राप्त कर लगे।

मेरी परमात्मा से यही प्राथना है कि नववष मे आर्यसन्देश उन्नति के शिखर पर पहुचे।

—डा० अरविन्द कुमार शर्मा रेलवे रोड कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

● आर्यसन्देश का नियमित प्रकाशन और पाठको तक प्रपण एक आर्योचित स्वस्थ परम्परा है। इसके विशेषाक अत्यन्त आकषक और आत्म उत्कृष्ट होते है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी और सम्पादक मण्डल बधाई के पात्र हैं

—श्रीमती दशनदेवी प्रधाना महिला आर्यसमाज आयमगढ (उ० प्र)

● आर्यसन्देश का श्रद्धानन्द बलिदान अक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। विशेषाक की सामग्री बेहद रोचक व उपयोगी लगी उत्कृष्ट सामग्री उपलब्ध कराने का आपका प्रयास काफी सराहनीय है

—गोविन्दराम टेकचानी भगवती जनरल स्टोर निम्बाहेडा (राज०)

● श्रद्धानन्द बलिदान अक प्राप्त हुआ एक के बाद एक आकर्षक जीवनोपयोगी एव अमूल्य विशेषाको की प्राप्ति के साथ साथ वष १९९० मे भी प्रकाश्य आठ विशेषाको की पूव जानकारी प्राप्त कर हृदय गद्गद हो उठा ऐसे सवश्रेष्ठ पत्र की सदस्यता विश्व के समस्त हिन्दीभाषी आर्य परिवारो को लेनी चाहिए। मेरी इस पत्र के प्रति हार्दिक शुभ कामनाए स्वीकार कर।

—रामाज्ञा आर्यपुत्र भागलपुर, देवरिया (उ० प्र०)

● आध्यात्मिक एव सामाजिक जागति और सास्कृतिक चेतना की दिशा मे आयसन्देश की भूमिका पत्रकारिता के इतिहास मे अ[illegible] इतने कम पृष्ठो मे वेदधम का पष्ठ पोषण अदभुत ढग से कर पा[illegible] के सम्पादन की विशेषता है। इससे भी अधिक विशेषाक निकालने की कला के आप लोग विशेषज्ञ हैं और इसके लिए आपकी जितनी भी स्तुति की जाए कम होगी। स्वामी श्रद्धानन्द विशेषाक कागज की गुणवत्ता साज सज्जा और विनय प्रस्तुति की दृष्टि से नितान्त उच्चकोटि का बन पडा है। शोभनम शोभनम शोभनम।

—देवनारायण भारद्वाज, आयमगढ (आजमगढ)

अभय बनो

सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम०ए० एल०टी०, आर्यसमाज गोरखपुर

अभय न करत्यन्तरिक्षमभय
द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभय पश्चादभय पुरस्तादु-
त्तरादधरादभय नो अस्तु ॥

(न) हम सब के लिए (अन्तरिक्ष) अन्तरिक्ष (अभय करति) अभय साधक होवे और (इमे उभे द्यावापृथिवी) ये दोनो द्यावा पृथ्वी (अभयम्) अभयदायी हो। (पश्चात् अभय) पीछे से अभय (पुरस्तादभय) सामने से अभय (उत्तरादभय) ऊपर से अभय और (अधस्तादभय) हम सब के लिए नीचे से अभय हो।

मनुष्य का सब से बडा शत्रु भय है। यह सदा मनुष्य के मस्तिष्क को विकृत करता रहता है। याद रखिए, इस भय ने लाखो मनुष्यो को असमय मे ही वृद्ध कर दिया है। हजारो मनुष्य इस भय के वश में होकर काल-कवलित हो गए। यदि हम ससार में आयु, धन, विद्या और बल चाहते हैं तो इस भयकर रोग को, भय को अपने मन से हमे दूर कर देना होगा। ससार में किसी भी क्षेत्र मे हमारी असफलता का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यह भय ही कारण होता है।

अभय-प्रार्थना के मन्त्रो मे भय को दूर कर अभय या निर्भय बनने की प्रार्थना एव कामना की गई है। कहा गया है कि अन्तरिक्ष लोक, द्युलोक और पृथ्वी लोक हमारे लिए अभय हो। अतरिक्ष में विचरण करते हुए हमें किसी प्रकार के भय की शका न हो अर्थात् अतरिक्ष से हमें किसी प्रकार की हानि न हो। हम निडर होकर अन्तरिक्ष में विचरण करे। हम निडर होकर अतरिक्ष के नीचे अपने कार्यों को करते चले। फिर कहा गया है कि यह द्युलोक अर्थात् सूर्यादि लोक हमे किसी प्रकार की क्षति न पहुचाएँ, मार्ग मे किसी प्रकार का विघ्न न उपस्थित करें। यह पृथ्वी भी हमे भयभीत न करे। अपने चारो ओर अभय की कामना करता हुआ व्यक्ति कहता है कि मेरे आगे पीछे, ऊपर-नीचे सामने और चारों ओर अभय रहे। वास्तव मे जब मनुष्य के मन में भय का सचार हो जाता है, तब ससार की कोई शक्ति आगे नही बढा सकती—उसका कार्य नही करवा सकती।

चार्ल्स बारह के किले पर शत्रुओ ने चढाई कर दी। वे अपने सचिव को पत्र लिखवा रहे थे। उनके किले पर बम फेंका गया। वह किले के अन्दर बनी भवन की छत को फाडकर राजा के अन्त पुर मे राजा के ठीक दरवाजे-खास में जा गिरा, जहा कि राजा उस समय बैठे हुए थे। इस भयानक दृश्य को देखकर सचिव के हाथ कापने लगे और उस के हाथ से कलम छूटकर धरती पर जा गिरी। पर चार्ल्स जरा भी भयभीत नही हुए बोले, "क्या बात है?"

सचिव बोला, "महाराज! बम गिरा है।"

"हा।" राजा ने उत्तर दिया, "वह तो है लेकिन उस बम का इस पत्र के विषय से क्या सम्बन्ध है?" आप अपना पत्र जारी रखो।" और वह पत्र लिखवाने लगे।

जहा तक भय का प्रश्न है, ससार में वीरता प्रदर्शन मे ही साहस की आवश्यकता नही है अपितु हमारे दैनिक जीवन मे भी इसकी उपयोगिता लक्षित होती है। ईमानदार होने के लिए भी निर्भीक होना चाहिए। प्रलोभनो से बचे रहने के लिए भी निर्भीक होना आवश्यक है। बोलने के लिए भी साहस और निर्भीकता चाहिए। अपने विचारो को सब के सामने रखने के लिए दिलेरी और निर्भयता की आवश्यकता है और आप जो कुछ नही हैं उसे स्वीकार करने के लिए भी निर्भीकता जरूरी है। ससार के दुखो का कारण दुर्बलता और अनिश्चय है। लागफेलो ने कहा है "अपने दरवाजो पर यह पुराना आदर्श वाक्य लिख दीजिए।" दृढ बनो, दृढ बनो और हर क्षेत्र मे दृढ बनो।" मनुष्य अपने जीवन मे छोटे-छोटे सघर्षों से जूझ कर ही महान् बनता है। इस दुनिया में ऐसी कितनी ही महान् एव रहस्यमय जीतें हुई हैं, जिन्हें भौतिक आख देख नही सकती, जिसके बदले मे कोई पुरस्कार दिया नही जाता और जिसके स्वागत के लिए बाजे नहीं बजाए जाते। विक्टर ह्यूगो ने कहा है कि "विपत्ति, निर्वासन, लालसा और गरीबी वस्तुत जीवन सग्राम के क्षेत्र हैं, जिनमें सघर्ष करना पडता है।"

इस प्रकार जीवन में आगे बढ़ने के लिए निर्भयता और साहस पहली वस्तु है।

भय क्या वस्तु है? यदि हम भय का विश्लेषण करें तो हमे पता लगेगा कि क्लेश, अनिष्ट और आपत्तियो की कल्पना ही भय है। हम सोचते हैं कि ये आपत्तिया हमारे ऊपर कल या निकट भविष्य में आयेगी और उनके आने की चिन्ता से हम सूखते रहते हैं। पर वे कभी नही आती। हमारे निर्बल मन बहुत सी घटित, ज्ञात, परिचित बातो को अनिष्टकर मानकर उनसे तो भयत्रस्त होता ही है, साथ ही भविष्य में आने वाली बातो में सदा अनिष्ट की आशका करके भी यू ही भय पीडित बना रहता है। इसलिए कहा गया है कि जीवन मे सफलता प्राप्त करने के लिए सब से अधिक आवश्यक वस्तु है—निर्भयता। स्वामी रामतीर्थ ने लिखा है—"एक ही दृष्टि से शेरो को वश मे किया जा सकता है। एक ही नजर डालकर शत्रु को शान्त किया जा सकता है। निर्भयता के एक ही प्रहार से विजय पाई जा सकती है।"

स्वामी दयानन्द के जीवन मे एक घटना आती है, जब वे नर्मदा नदी के स्रोत की ओर गिरि गह्वरों में एकान्तवासी सच्चे योगियो के मिलने की आशा से जा रहे थे। विकट जगल था। उस जगल मे रास्ता न मिलने के कारण वे खडे कुछ सोच रहे थे कि सामने से मुह फैलाये मृत्यु रूप बडा काला रीछ आता दिखाई दिया। वह गर्ज कर उनके सामने पिछली टागो के बल खडा हो गया। पर, स्वामी दयानन्द जरा भी नहीं घबराये और उस पर उन्होने सीधी निर्भय नजर डाली। दृष्टि से दृष्टि का मिलन हुआ। हिंस्र पशु डर गया। स्वामी जी ने अपना डडा उसके मुख पर मारने को उठाया। रीछ डर कर चीखता हुआ वहा से भाग गया। रीछ की आवाज सुनकर बहुत से लोग वहां आ गए। उन्होने स्वामी जी को आगे जाने से मना किया पर वे नहीं माने और आगे बढने का निश्चय किया। महाराज ने स्वय अपनी आगे की यात्रा का वर्णन किया है—"फूल के असख्य वृक्षों और अनेक प्रकार की कटीली झाडियों से वह जगल भरा हुआ था। किसी ओर भी उसमें से निकलने का मार्ग नहीं था। वहां से छुटकारा पाना मेरे लिए कठिन हो गया। कुछ दूर तक बैठे-बैठे, कुछ दूर तक घुटनों के बल चलना पड़ा। मेरे वस्त्र धज्जी-धज्जी हो गए। कांटे लगने से मेरे शरीर के बहुत से स्थानों से रक्त की धारा बहने लगी। थकावट और भूख से अवसन्न शरीर, पृथ्वी पर अन्धकार का बढता प्रभुत्व, वन मार्ग, एकान्त विषम, परन्तु प्रभु का अटल निश्चय लेकर वे चलते गए-चलते गए।

निर्भयता क्या है? आत्मा की शक्ति को समझना निर्भयता है। आत्मा के वास्तविक स्वरूप का सजीव ज्ञान और उस पर निश्चल विश्वास निर्भयता है। परमेश्वर में अटूट श्रद्धा उत्पन्न कीजिए उसका विश्वास हृदय में लाइए। हृदय से भय दूर हो जाएगा। स्वामी दयानन्द इसी से इन विपत्तियों से नहीं डरे। आगे ही आगे बढते गए। याद रखिए —"आपत्ति के भय से बढकर कोई आपत्ति नही। मौत के डर को मन मे जगह देने के बजाय हमे मर जाना बेहतर है। योगी कवि के शब्दो मे—

पग-पग काटे रोडे पत्थर,
पल-पल महायुद्ध गर्जन स्वर
बस बिना सहारे इकले हो,
बढ़ते करते युद्ध निरन्तर।
चलना सरल नहो इस पथ पर।
नही किसी पर तुम हो निर्भर,
आओ अपने घर से बाहर
इस पथ के यात्री चलते हैं,
सब उठा-उठा अपना बिस्तर।
चलना सरल नही इस पथ पर।
निर्भयता के इस शुभ पथ पर
पग-पग जीवन का मुखरित स्वर,
स्वागत उसका जो आए ना
लानत! मागे जो कि सहारा,
यहां किसी से द्वेष फैलाकर,
चलना सरल नही इस पथ पर। □

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। — महर्षि दयानन्द

आर्य जगत के समाचार

आचार्य यशपाल 'सुधांशु' भारत लौटे

आचार्य यशपाल 'सुधाशु' धर्माचार्य आर्यममाज दीवान हाल, दिल्ली, १० जनवरी १९९० को थाईलैण्ड देश मे वैदिक धम का प्रचार-प्रसार करके स्वदेश लौट आये है। श्री मुधाशु जी ने थाईलैण्ड देश की राजधानी बैंकाक और नखोन, फतोन, चिगमई आ'द अनेक शहरो में वेद प्रवचन किये। उनका मुख्य कार्यक्रम हिन्दू ममाज के सौजन्य मे बैंकाक नगर मे रहा। उनके प्रवचनो के मुख्य कैसेट थाई भाषा मे अनूदित करके रिकार्ड किये गये। इन कैसेटो से थाई लोगो को वैदिक धर्म और भारतवर्ष को गौरवमयी सस्कृति को जानने और ममझने मे काफी सहयोग मिल रहा है। श्री मुधाशु के वै॰॰क धर्म प॰ प्रार्थनाओ पर आधारित भजनो का भी थाईलैंण्ड निवासियो ने भरपूर स्वागत किया। वहा अनेक सनातन धर्म के मन्दिरो मे अत्र आर्यममाज मे प्रचलित भजन गाये जा रहे हैं। ९ जनवरी को बैंकाक के हवाई अड्डे का दृश्य बडा कारुणिक रहा। जब श्री मुधाशु जी को वहा के नागरिको ने अश्रुओ से भावभीनी विदाई दी, सभी न एक स्वर मे माग की आप पुन कम से कम एक वर्ष के लिए थाईलैण्ड पधा॰े।

श्री आचाय सुधाशु १२ वर्षों से आर्यसमाज दीवान हाल के धर्माचार्य पद पर कार्य कर रहे है। वे २७ नवम्बर को थाईलैण्ड के लिए रवाना हुए थे।

—॰म्पादक

॰ायसमाज, आनन्द विहार
भवन निर्माण हेतु अपील

आनन्द विहार, जो पूर्वी दिल्ली के मुख्य ॰॰॰ के माग पर स्थित है, मे अब विधिवत् आयसमाज का गठन हो गया है। भवन का निर्माण कार्य जारी है। आय परिवारो और आर्य ॰स्कृति के अनुयायियोकी बडी माग ॰ो कि वैदिक सस्कृति प्रचार हेतु एक ॰॰श्चित धार्मिक स्थान हो जहा नियमित रूप से "यज्ञ होत्र" आदि कर सक। महात्माओ सन्यामियो ॰त्र प्रवक्ताओ के प्रवचन सुन सके और अपने पवित्र पर्वो को मना मके।

प्रसन्नता का विषय है कि इस समाज की यज्ञशाला, मुख्य द्वार, प्याऊ, चार दिवारी आदि पहले ही पूरे चुके हैं, अब एक पुरोहित का कमरा, वाचनालय, हाल, महात्माओ का आवास कक्ष, स्त्री सभा इत्यादि के लिए समुचित व्यवस्था करने का काय जारी है।

आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण कार्य को पूरा करने हेतु आर्यजन यथोचित धनराशि भेजकर इस पुण्य मे अपनी आहुति डाले।

—सम्पादक

आर्यसमाज कलकत्ता-वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यममाज कलकत्ता के १०४वे वार्षिकोत्स॰ के समापन समारोह पर नव दिवसी॰ अथर्ववेद परायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई जिसमे हजारो नर-नारियो ने बड उत्साह के साथ भाग लिया। ४५ यजमानो ने पूर्णाहुति मे भाग लिया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी वि॰वपाल जयन्त (गुरुकुल कण्वाश्रम) जिन्ह आधुनिक भीम के नाम से जाना ॰॰॰ है, ने योग का अद्भुत प्रदर्शन जिसमे चन्द्रहास एव भाल लगाकर सरिया मोडना, जजीर तोडना इत्यादि प्रदर्शन शामिल थे जिसे मुहम्मद अली पार्क मे उपस्थित हजारो लोगो ने देखा।

अपराह्न ३ बजे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन मनाया गया जिसका सयोजन श्री श्रीराम आर्य ने किया तथा अध्यक्षता श्री प्रो० उमाकान्त उपाध्याय ने की। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रो के नेताओ तथा विद्वानो ने राष्ट्रीय एकता के सम्बन्ध मे अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि विना सास्कृतिक एकता के राष्ट्रीय एकता सम्भव नही है।

इस नव दिवसीय विशाल सम्मेलन मे २३ दिसम्बर को विशाल शोभायात्रा तथा प्रतिदिन ७ से ६ बजे तक अथर्व वेद पारायण बृहद् यज्ञ अपराह्न विधि सम्मेलन तथा साय ६ से १० तक बाहर से पधारे विद्वानो के प्रवचन एव उपदेश हुए।

इस अवसर पर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, सस्कृति सम्मेलन, महिला सम्मेलन एव वेद सम्मेलन आयोजित किये गये।

पंजाब में शास्त्रियों की नियुक्ति बन्द

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के महामन्त्री श्री रोशनलाल शर्मा ने श्री एन० के० मुकर्जी, राज्यपाल पजाब, श्री आर० पी० ओझा मुख्य सचिव पजाब, श्री राजेन्द्रसिंह शिक्षा सचिव पजाब, श्री पीतमसिंह गोयल, डी० पी० आई० पजाब को अलग अलग तार भेजकर पजाब सरकार द्वारा अध्यापको की सेवा शर्तों मे सशोधन करके शास्त्रियो की नियुक्ति पर पाबन्दी लगाने का सख्त विरोध किया है।

श्री रोशनलाल शर्मा ने कहा है कि शास्त्री डिग्री स्नातक के समकक्ष है, इसलिए शास्त्री का नियुक्तियो पर पाबन्दी लगाना सरासर अन्याय है तथा इससे सस्कृत भाषा को जो कि सभी भाषाओ की जननी है, गहरा धक्का लगेगा।

श्री शर्मा ने माग की है कि शिक्षा-शास्त्री के साथ-साथ सस्कृत अध्यापक के रूप मे शास्त्री की नियुक्ति अनिवार्य की जाए।

मकर संक्रान्ति पावन पर्व है

आर्यों का ये मकर सक्रान्ति, पावन पर्व है।
रहस्य है इम में बडा, हम सब को इम पर गर्व है॥
राम, कृष्ण, ऋषि वृन्द ने इस पर्व को माना सदा।
पाला सनातन धर्म को, था सत्य को जाना सदा॥
इस दिन घरो मे यज्ञ पावन, आयजन करते थे सब।
वैदिक कथा से मानमिक, पीडा सकल हरते थे सब॥
ज्ञान की गगा विमल, बहती थी प्रजा थो सुखी।
था स्वग का वातावरण, कोई नही था तब दुखी॥
शा॰॰ थे मब धर्मात्मा, जनता का रखते ध्यान थे।
वीर, व्रतधारी, सदाचारी, महा बलवान थे॥
विश्व हित की योजना, इस दिन बनाते थे सुनो।
न्यायकारी थे प्रजा का दुख मिटाते थे सुनो॥
हम गुरु थे विश्व के, इसका सुखद परिणाम था।
हम भारती सब देवता थे, अरु हर तरह आराम था॥
चोर, डाकू, जार, मद्यप, इस जगत् में थे नही।
व्यभिचारिणी नारिया, भी विश्व में ना थी कही॥
यदि अर्थ इस त्योहार का, ससार सारा जान ले।
गौतम, कपिल, दयानन्द की, यदि सीख दुनिया मान ले॥
सद्भावना जागे हृदय मे, विश्व के कल्याण की।
सब ईश विश्वासी बनें, बाते तजे अभिमान की॥
वेद के अनुकूल जीवन, ये हमारा हो प्रभो।
सब के जीवन का सहारा तू ही प्यारा हो प्रभो॥
विश्वास है हम को जगत् के, दूर होंगे दुख सभी।
दीन, दुखिया ना रहेंगे, प्राप्त होंग सुख सभी॥
हे ईश तुम वरदान दो, हम कर्म नेको के करें॥
मानव बने, मानव सभी, ससार की पीडा हरें॥

—प० नन्दलाल "निर्भय" सिद्धांत शास्त्री
ग्राम-पो० बहीन, जिला (फरीदाबाद, हरियाणा)

शोक समाचार

आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक, समाजसेवी एव स्वतन्त्रता सेनानी श्री प० जयदेव (जतोईवाला) प्रधान आर्यसमाज गन्नौर की धर्मपत्नी का २५ दिसम्बर को स्वर्गवास हो गया है।

× × ×

श्रीमती विद्यावती

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध दानवीर आर्य नेता स्व० लाला नारायणदत्त जी ठेकेदार की सुपुत्री श्रीमती विद्यावती जी का देहावहान हो गया है।

× × ×

श्री गिरधारीराम मदान

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, दिल्ली के प्रधान श्री ओमपकाश मदान के पिता श्री गिरधारीराम मदान का देहावसान २३ दिसम्बर ८९ को हो गया है।

× × ×

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार सभी दिवगत आत्माओं की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है।


लाखों लोगों की पसंद
एम डी एच दंत मंजन
23 जडी बूटियो से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि
आपके परिवार
के लिये पूर्ण दंत सुरक्षा
दातो का दद, मुह की दुर्गन्ध
मसूडो की सूजन, ठडा गर्म
पानी लगना मुह म छाले होना तथा
दातो की अन्य बीमारिया का घरेलू इलाज
एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
प्रतिदिन प्रयोग करें
अपने निकटतम
दुकानदार से खरीदे
सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०
9/44, इन्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन 537987, 537341


चाट मसाला
चाट सलाद और फलों को
अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये
यह बेहतरीन मसाला है।
CHAT MASALA
Excellent for garnishing
Chat Salads and fruit to
provide delicious taste and
flavour
अमचूर
अपनी क्वालिटी तथा शुद्धता के
कारण यह खाने में विशेष स्वाद
और लज्जत पैदा करता है।
AMCHOOR
(Mango Powder)
It adds special tangy
taste and flavour to
your dishes with its
quality and purity


आन्तरिक वस्त्रों में एक मात्र विश्वसनीय नाम...
Sparsh BRA
स्पर्श ब्रा
श्वेता ब्रा
Shvaita BRA
सरिता ब्रा
Sarita BRA
Shalini BRA
शालिनी ब्रा
Groversons
Paris Beauty
पैरिस ब्यूटी
ग्रोवर सन्स
• BRA • PANTIES • UNDERWEAR • BANIAN •
चमनलाल इन्टरप्राइज़िज़
Chamanlal Enterprises
सेल्स डिपो
२, बीडनपुरा अजमल खां रोड करोल बाग
नई दिल्ली-११०००५
फोन ५८२०३६ ५७२९२२४

आयसन्देश—दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on १ 19 0 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसस न० यू १३६

ऋषि दयानन्द की जन्मस्थली (टकारा) मे ऋषि मेले का आयोजन

टकारा तथा अन्य ऐतिहासिक स्थलो की यात्रा करें

ऋ ब ा मत्र म शिवरात्रि) के पावन पर्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मस्थली टकारा (गुजरात) मे आगामी फरवरी को विशाल ऋषि मेले का भव्य आयोजन किया गया है इस अवसर पर आय परिवारो को टकारा तथा अन्य ऐतिहासिक स्थलो की यात्रा के लिए प्रबन्ध किये गये है

आयसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे विशेष बस दिनाक फरवरी ० को चलेगी इस बस के यात्रीगण द नगर हवेली दमन अम्बा वाला मन्दिर वर गोवा वास्कोडिगामा अजन्ता एलोरा द गोर आदि स्थानो की यात्रा करेगे

- प्रतियात्री किराया १०२५ रुपये होगा
- निवास एव भोजन की व्यवस्था आयसमाजो मे होगी अन्यथा यात्रा स्वय अपने व्यय से करेगे

सम्पर्क सूत्र—रामचन्द्र आय ४६६ भीमनगर गुडगावा दूरभाष ७ ५ पी० पी०

आयसमाज रोहतास नगर (शिवाजी पाक) शाहदरा दिल्ली ३२ की ओर से एक बस दिनाक फरवरी ९० को रात्रि ११ बजे प्रस्थान कर आगरा ग्वालियर झासी गुना धुलिया पूना कडाल गोवा बम्बई सूरत टकारा जामनगर ओखा द्वारका पोरबन्दर सोमनाथ अहमदाबाद उदयपुर आबू ब्यावर अजमेर जयपुर होती हुई ४ माच ९० को दिल्ली पहुचेगी

- प्रतियात्री किराया ९२५ रुपये होगा
  निवास एव भोजन का प्रबन्ध आय सस्थाओ की ओर से होगा अथवा यात्री स्वय अपने व्यय से करेगे।

सम्पर्क सूत्र—सुशील कुमार आय कृष्णचन्द्र आय

दूरभाष २२८३०६२ ३ ७ ९४८ ५१३७३०

आयसमाज रोहतास नगर (शिवाजी पाक) शाहदरा दिल्ली ३२

सेवा में--

२३६७- श्री पुस्तकाध्यक्ष जी,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी,
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ०प्र०)

१४३८ प्रसार —वैशाख २०४६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली न० १७ कलाबनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक १४ रविवार २८ जनवरी १९९० माघ सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

पंजाब और कश्मीर सेना के सुपुर्द करो

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का भारत के प्रधानमन्त्री को परामर्श

आर्यजगत की शिरोमणि सभा—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने माननीय श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह जी को भारत का प्रधानमन्त्री बनने पर बधायी देते हुए आशा प्रकट की कि उनके नेतृत्व में राष्ट्र जहा बहुँमुखी उन्नति की ओर अग्रसर होगा, वही पजाब तथा कश्मीर में व्यापक रूप से बढ रही अलगाववादी शक्तियो का सख्ती से मुकाबला कर राष्ट्रीय-एकता और अखण्डता को बनाये रखा जा सकेगा और उसके लिए आवश्यक है है कि इन दोनो प्रदेशों में कम से कम दस वर्षों तक सैनिक-शासन स्थापित किया जाए, क्योंकि विधर्मी प्रशासन तथा राष्ट्रपति/राज्यपाल शासन के प्रयोग अनेक बार किये जा चुके हैं—जो असफल रहे हैं। श्री स्वामी जी द्वारा प्रधानमन्त्री को लिखा गया पत्र इस प्रकार है—

माननीय श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह जी,
प्रधानमन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली,
सादर नमस्ते।

आर्यसमाज की शिरोमणि सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आपको प्रधानमन्त्री बनने की बधाई देते हुए परमात्मा से कामना करता हू कि इस पद पर रहते हुए आप भारतवर्ष की प्रगति तथा उन्नति के लिए अधिक योगदान कर सकें।

जैसा कि आप जानते ही हैं कि ५० वर्ष पूर्व हैदराबाद में निजाम को सत्ता मुक्त करने के लिए आर्यसमाज ने १९३९ में सत्याग्रह किया था। गत २९, ३० और ३१ दिसम्बर १९८९ को उसी आर्य सत्याग्रह की याद में स्वर्ण जयन्ती समारोह हैदराबाद में आयोजित किया था। इस इस समारोह के अन्तर्गत पजाब और काश्मीर की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए समस्त आर्य जनता में यह प्रस्ताव पारित किया कि सरकार से इन दोनो राज्यो में शान्ति कायम करने के लिए अनुरोध किया जाए और जब तक स्थिति नियन्त्रण में आ जाए, इन दोनों राज्यों में विधान सभा के चुनाव न कराए जाएँ।

उपरोक्त निर्णयो के सन्दर्भ में आपके समक्ष कुछ और विचार प्रस्तुत करना अपना दायित्व समझता हू। जैसा कि आप जानते हैं कि वर्तमान लोकसभा में मान गुट के ६ सदस्य चुने गए हैं। इनके चुनाव के तरीकों से आप अवश्य ही जानकार होगे। यह भी भली प्रकार से स्पष्ट है कि यदि उग्रवाद की सहायता से ये लोग चुनाव न जीतते तो इनमे से कुछ को फांसी की सजा और कुछ को उम्र कैद की सजा मिलनी निश्चित थी, परन्तु इन्हें जेलो से रिहा किया गया और सभी मुकदमे भी वापस ले लिये गए। इससे उग्रवादियों का उत्साह बढ़ा और सारी सुरक्षा व्यवस्था के मनोबल को ठेस पहुँची। आज उग्रवादी अपने आपको पजाब का स्वामी मानते हैं। जिस तरह वे आदेश जारी करते हैं, उस तरह तो राज्यपाल भी नहीं करते। अधिकारियो को धमकिया दी जा रही है, व्यापारियो और डाक्टरो से लाखो रुपये वसूल किए जा रहे है। पुलिस अफसरो की सूचिया प्रकाशित की जा रही है, जिन्हें दण्ड देने का इरादा है। सिमरनजीत सिंह मान कानून के अनुसार काम करने वाले बडे-बडे अफसरो को हिटलर बता रहे है और उनके विरुद्ध उसी तरह की कार्यवाही करने की धमकी दे रहे हैं, जैसे दूसरे महायुद्ध के बाद नाजियो के खिलाफ की गई थी। पुलिस थानो पर हमले हो रहे हैं। अर्ध सैनिक बलो को निशाना बनाकर मौत के के घाट उतारा जा रहा है। एक-एक सप्ताह मे कई-कई लाख की फिरौतिया वसूल की जा रही हैं।

मैं नही समझता कि आप सुरक्षा कर्मियो की मन स्थिति का अन्दाजा नही लगा सकते कि जिस प्रकार अपने परिवार व अपनी जान की परवाह किये बिना देश के वीर पुलिस अफसर उग्रवादियो से टक्कर लेते हैं और सरकार उन्ही मे से कुछ उग्रवादी नेताओ को अकारण रिहा कर देती है और इसके विपरीत पुलिस अधिकारियो से जवाब तलबी होती है। पिछले एक महीने में लगभग ५० सुरक्षा सैनिक उग्रवादियो के साथ मुठभेड मे मारे गये हैं। क्या इन मुठभेडो को भी झूठी मुठभेड का नाम दिया जा सकता है।

आज तक की परिस्थितियो पर यदि गभीरता पूर्वक विचार किया जाए तो स्पष्ट होगा कि यदि पजाब में विधान सभा के चुनाव करवा दिये गए तो कोई हैरानी नही होनी चाहिए कि बडा भारी अनर्थ होगा। यदि ११७ मे से लगभग ८० सीटें मान ग्रुप के उन उग्रवादियो, उनके रिश्तेदारो इत्यादि को इनाम मे मिलेगी (जिन्होने देश की बडी से बडी हस्ती के खून से अपनी प्यास बुझायी थी) तो आप इसका भी भलीभांति अन्दाजा लगा सकते है कि इस प्रकार के लोगो की सरकार पजाब मे क्या-क्या गुल खिलायेगी। ऐसी सरकार पर नियन्त्रण तो दूर सहयोग की अपेक्षा भी केन्द्र सरकार को एक पूरा न होने वाला स्वप्न लगेगा। ऐसी सरकार सत्ता सभालते ही विधान सभा में प्रथम प्रस्ताव खालिस्तान का पास कराएगी, जिससे आपके लिए एक नया वैधानिक सकट पैदा हो जायेगा।

इसी प्रकार काश्मीर में भी पाकिस्तानी उग्रवादियो की गतिविधिया तेज होती जा रही हैं। पिछले एक महीने से तो काश्मीर मे कोई ऐसा एक भी दिन नही निकला जब घरो, दुकानो, स्कूलो को जलाया न गया हो। मन्दिरो को तबाह न किया गया हो। पथराव, आगजनी, लूटपाट तो नित्य प्रति की घटनाएँ बन चुकी हैं। भारत के ध्वजो को जलाना और पाकिस्तानी झण्डे फहराना तो सामान्य सी बात हो गई है। सैकडो परिवार वार जिनमें सभी समुदाय के लोग हैं, कश्मीर से पलायन कर चुके हैं और देश के अन्य हिस्सो मे असहाय और बेघर होकर पडे हैं। ऐसी अवस्था मे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद-मनन

उपदेश

—स्वामी श्रद्धानन्द

चक्षु श्रोत्र यशो धेह्यन्न रेतो लोहितमुदरम् ।।२५।।
तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे
तपोऽतिष्ठत् तप्यमान समुद्रे ।
स स्नातो बभ्रु पिंगल पृथिव्या बहु रोचते ।।२६।

अथर्व, काण्ड ११ । अ० ३ । सूक्त ५ । २५, २६ ।।

'स पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्'—वह पूर्वजो का भी आचार्य, गुरुओ का भी गुरु हम सब को क्रमश ब्रह्मचर्य की अन्तिम सीढी पर ले जाता है। हम ने सब से पहले आ व को दृढ करना है, फिर श्रोत्र और उस के साथ अन्य सब इन्द्रियो को। नित्य सन्ध्या मे इसी लिए ऋषियो ने सर्व शुद्धि की प्रार्थना बतलाई है। वाणी, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, नाभि, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु और हाथो को सावधान कर के और उन को वश मे रखने की प्रतिज्ञा कर के प्रार्थी इन सब की पवित्रता के लिए याचना करता है। यही सन्ध्या का मार्जन मन्त्र है। इस मे शुद्धि का ठीक प्रकार बतलाया है—'भू पुनातु शिरसि'—प्राणेश्वर परमात्मा पहले शिर को पवित्र करे, प्राणो की गति का साधन शिर ही है। 'भुव पुनातु नेत्रयो'—दुखो से अलग रखने वाला परमेश्वर आखो को पवित्र करे दुखो का आरम्भ ही आखो के बिगडने पर होना है। आखे बिगडने न पाएँ। 'स्व पुनातु कण्ठे' सारे सुख का स्थान कण्ठ है। उस की पवित्रता के लिए सुखस्वरूप परमात्मा से प्रार्थना है। 'मह पुनातु हृदये' प्रभु अपनी महानता से हृदय को पवित्र (विशाल) करे। 'जन पुनातु नाभ्याम्' अपनी जनन शक्ति से परमेश्वर स्त्री और पुरुष दोनो की जननेन्द्रियो को पवित्र करे, जिस से वे उन्हे स्वादेन्द्रिय न बनावे। 'तप पुनातु पादयो'—तप शक्ति हमारे पैरो मे आवे। 'सत्य पुनातु पुन शिरसि'—सत्यस्वरूप परमात्मा फिर से शिर को पवित्र करे। जिस मे मस्तिष्क मे ठीक सोचने की शक्ति आवे, और 'ख ब्रह्म पुनातु सर्वत्र'—चारो ओर, ऊपर नीचे व्यापक परमात्मा शुद्ध करे। रक्षा करे। ऊपर के २५ वे मन्त्र मे सिलसिला और है। आख और कान मे सब इन्द्रिया आ गईं। जब व पवित्र हो तब अपयश नही होता, प्रत्यक्ष प प न होने से यश बढता है। यश से अन्न प्राप्त होता है। शुद्ध अन्न यशस्वी को ही मिलता है। पवित्र अन्न का उपभोग करने वाले का वीर्य शुद्ध होता है। वीर्य का अन्न पर ही आधार है। वीर्य ठीक होने से रुधिर की गति ठीक रहती है। वीर्यहीन पुरुष का रुधिर नियम मे नही रहता। रक्त की शुद्धि का साधन प्राण वायु है और उस में वीर्य की अरक्षा से विकार आ जाता है। इन सब शुद्धियो पर उदर की शुद्धि निर्भर है और उदर की शुद्धि के बिना मनुष्य की सारी बनावट अशुद्ध हो जाती है।

यह सारा शुद्धि का क्रम ब्रह्मचर्य के यथावत् पालन पर ही निर्भर है। ब्रह्मचारी इन सब मजिलो मे पार होकर समुद्र के समान गम्भीर हो जाता है। और इतना तेज धारण करता है कि सर्वसाधारण से ऊँचा उठ जाता है। जिस प्रकार पर्वत पर चढकर महात्मा पुरुष मर्त्यलोक के निवासियो के मार्गदर्शक बनते है, इसी प्रकार ब्रह्मचारी अपने तपोबल से तेजस्वी होकर ऊपर उठता है। तब विद्यारूपी समुद्र मे स्नान से तेज धारण किया हुआ ब्रह्मचारी अपने प्रकाश से सर्वसाधारण को अपनी ओर खीचता हुआ उनकी शुद्धि का साधन बनता है।

इस ब्रह्मचय का जब भारत में प्रचार था उसी समय यह देश सारे ससार का शिरोमणि था और सारे ससार के लोग अपनी आचार शुद्धि के लिए इसी 'देव निर्मित' देश की शरण मे आया करते थे। अब भी यदि ससार की गिरी हुई दशा का सुधार होगा तो ब्रह्मचर्य के ही पुनरुद्धार से।

शब्दार्थ

हे तेजस्वी ब्रह्मचारी ! तुम हमे (चक्षु श्रोत्रम्) दृग् शक्ति और श्रवण शक्ति से युक्त आख और कान तथा अन्य सब शक्तिशाली इन्द्रियो को (यश) निष्कलक यश को (अन्नम्) पवित्र अन्न को (रेत) कामवासना शून्य वीर्य को (लोहितम्) शक्तिमय लाल खून को और (उदरम्) रोग रहित तथा शरीर वर्धक पेट को (धेहि) धारण कराओ।२५।

सब मनुष्यों के लिए (तानि) चक्षु आदि इन्द्रियो को और यश आदि पदार्थों को (कल्पत्) सामर्थ्य युक्त बनाता हुआ ब्रह्मचारी (जितेन्द्रिय और यशस्वी ब्रह्मचारी ही (सलिलस्य पृष्ठे) गम्भीर ज्ञान समुद्र के तल पर (तपोऽतिष्ठत्) तप करता हुआ ठहरता है। इस प्रकार (समुद्रे) ज्ञान समुद्र में (तप्यमान) तपाया जाता हुआ (स) वह ब्रह्मचारी ही (स्नात) असली स्नातक होकर, ज्ञान वारिधि मे नहाया हुआ होकर, (बभ्रु) चक्षु आदि इन्द्रियो का और यश आदि पदार्थों का धारण करता हुआ (पिंगल) अत्यन्त तेजस्वी होता हुआ (पृथिव्या) इस पृथ्वी पर (बहु रोचते) नाना प्रकार से सुशोभित होता है।२६।

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ।।२६।।

स्तुतियों में रम जाओ

—देवनारायण भारद्वाज

मेरे प्यारे प्रभु आ जाओ, गीतस्तुतियो मे रम जाओ ।
यह हृदय तुम्हारा मन्दिर है, प्रभु इसमे आकर बस जाओ ।।

प्रभु गीतस्तुति का श्रवण करो
यह सफल सुजीवन हवन करो
मेरी दुख पीडा हरने को
मेरे ईश्वर आगमन करो ।

हर हव्य भाग्य के दाता हो, निज हव्य हमे भी दे जाओ ।
हर हृदय तुम्हारा मन्दिर है प्रभु इसमे आकर बस जाओ ।।

प्रभु दुनिया के ओर छोर से
इस जीवन के सभी ओर से
प्रभु आकर सताप मिटाओ
अपनी सुखमय कृपा कोर से ।

हो भक्ति मगन वन्दना करूँ, वन्दना दया कर सुन जाओ ।
यह हृदय तुम्हारा मन्दिर है, प्रभु इसमे आकर बस जाओ ।।

प्रभु तुम्ही हमारे दाता हो
कामना पूर्ति के स्रोता हो
मम हृदय यज्ञ का कुण्ड बना
हो तुम्ही गीत तुम श्रोता हो ।

मम हृदय यज्ञ का मन्दिर है, प्रभु आहुति लेकर रम जाओ ।
यह हृदय तुम्हारा मन्दिर है, प्रभु इसमे आकर बस जाओ ।।

—आर्यसमाज शाहमगढ़ (उ० प्र०)

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ७ जनवरी को आर्यसमाज सैक्टर ६ आर के पुरम नई दिल्ली मे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर अपने प्रभावशाली भाषण में श्री विजयकुमार मल्होत्रा ससद सदस्य ने कहा कि वर्तमान समय मे आर्यसमाज को अपने सभी क्रान्तिकारी, समाज-सुधारक आन्दोलनों को पुन जागृत करना होगा तभी भारत सरकार से हम आर्यसमाज के मन्तव्यों तथा स्वा० श्रद्धानन्द के स्वप्न को पूरा कर सकेंगे। वैदिक विद्वान् डा० महेश विद्यालकार ने कहा कि बलिदान दिवस हर वर्ष मनाते हैं। किन्तु उनके जीवन से कुछ सीख नही लेते है। हमें उनके शुद्धि-आन्दोलनो को तन, मन, धन से आगे बढाना होगा। सभा को सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्रीमती सुनीति आर्या ने भी सम्बोधित किया। समारोह मण्डल के प्रधान श्री कृष्णलाल सूरी तथा महामन्त्री श्री रामशरणदास आर्य के प्रयत्नो से सफल रहा।

ओ३म्
आर्य सन्देश



वसन्त पंचमी

दूसरी ऋतुएँ अपना समय आने का इन्तजार कर लेती होगी, परन्तु वसन्त में इतना धीरज नही है। वसन्त के आगमन से पर्याप्त पहले यह ऋतु बच्चो की तरह मचलने लगती है। शिशिर अभी होती ही है कि तभी वसन्त द्वार पर अपनी दस्तक देना प्रारम्भ कर देता है। आजकल का सुहाना मौसम इसी बात का पर्याय है।

वसन्त ऋतु को हम उसी प्रकार मनाएँ जैसी कि यह ऋतु है—आह्लाद और प्रसन्नता को किलकारियो से परिपूरित। पर क्या उत्सव को इस प्रकार मना लेने मे ही हमारे कर्तव्य की इतिश्री हो जाती है। भारतीय सस्कृति उत्सवो से परिपूर्ण है और यहा का समाज उत्सवधर्मी है। हमे कोई न कोई बहाना चाहिए और हम उत्सव मनाने को तैयार रहते हैं। उत्सव का अर्थ है—अच्छे परिधान और सुस्वादिष्ठ भोजन। उत्सव का इससे भी बडा अर्थ है—सामूहिकता। हम अपने उल्लास को सामूहिक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। उल्लास जब उमडता है तो वह अकेला नही रहता। वह आसपास के लोगो मे अवश्य ही बटता है। उल्लास एक सुगन्ध है जो जितना बाटोगे उतना ही अधिक फैलेगा। इसीलिए भारतीय समाज जीवन्त और जागृत है। बुरे दिनो में भी हम उत्सवो को नही भूलते। उस दिन हम अपने व्यक्तिगत कष्टो को भूलकर भी सामूहिक उल्लास मे सम्मिलित हो जाते है।

हम आनन्द के लिए दौडते भागते हैं। क्या हमारे उत्सव केवल आनन्दपरक हैं। यह प्रश्न विचारणीय है। हमारी सस्कृति और हमारा धर्म इस बात का साक्षी है कि प्रत्येक पर्व के साथ व्रत भी जुडे हैं। व्रत से तात्पर्य उपवास से नही है। हमारा समाज व्रतधर्मी भी है। व्रत का अर्थ है मर्यादा। जितने उत्सव हैं उतने ही हमारे व्रत पर्व हैं। वसन्त पचमी पर भी हम व्रत करते हैं कि हमारा जीवन मर्यादित होगा। हम सदाचारी होगे। हम लक्ष्मी, सरस्वती और हनुमान के गुणों को अपने अन्दर धारण करेंगे। हम सात्विक और पवित्र बनेगे। हम दूसरो के कार्यों के लिए सदैव समर्पित होगे। हम धर्म के मार्ग पर चलेगे।

धर्मवीर हकीकत राय

भारतीय हिन्दू धर्म पर सदा से ही आपत्तियाँ आती रही हैं तथा भारत के वीरो ने सदा ही धर्म की ज्योति को प्रज्वलित रखने में अपने प्राणो को न्योछावर तक कर देने मे कभी कोई कसर उठाकर नही रखी। भारतवर्ष पर मुसलमानो का पहला आक्रमण सवत् ७६९ विक्रमी में हुआ था। उनका इस आक्रमण का एक उद्देश्य तो भारत की समृद्धि को अपने अधिकार मे ले लेना था, परन्तु दूसरा उद्देश्य जो अधिक महत्वपूर्ण था, वह था—इस देश पर अधिकार करके, सदा-सदा के लिए अपने नियन्त्रण में ले, लेना और तभी सम्भव था, जब यहा के लोगो को मुसलमान बना लिया जाये। यह आक्रमण बगदाद के खलीफा की ओर से किया गया था। इस्लाम एक मजहब है। इसका यहा अधिक विवरण न देकर, इसके विरुद्ध भारतीय वीर हुतात्मा धर्मवीर हकीकत राय के कर्तृत्व का विवरण देना ही अभीष्ट है।

वह बसन्त पंचमी का दिन था। पश्चिमी पजाब का सियालकोट शहर था। उस वीर हकीकत राय को अपने मुसलमान साथी विद्यार्थी की मा दुर्गे को गालो सहन नही हुई और उसने 'फातिमा' के लिए वैसे ही शब्दो का प्रयोग किया। काजी की ओर से दण्ड मिला कि या तो वह मुसलमान बन जाए, अन्यथा उसे बीच में से आरे से चीरा जाएगा। उस उस वार बालक का अपने धर्म के प्रति ऐसा प्रगाढ़ प्रेम था कि उसने जीवन त्याग देना श्रेयस्कर समझा। स्वधर्मे निधन श्रेय परधर्मो भयावह। और वह वीर बालक अपने धर्म की खातिर, धर्म की बलिवेदी पर न्योछावर हो गया। आज भारत मे अनेक स्थानो पर लाभ, लालच के वशीभूत लोग धर्मान्तिरण कर रहे हैं। उन्हे उस वीर हकीकन राय का स्मरण करना चाहिए। रावी नदी का तट आज भी उस बलिदान को भूला नही है। उसके खून के छीटे आज भी प्रसुप्त हिन्दी समाज को झिझोडने मे समर्थ है। अन्याय अत्याचार के नीचे सिसकती कराहती मानवता पुकार-पुकार कह रही है—उस वीर बलिदानी हकीकन राय को स्मरण करो।

वह वीर धन्य है। वह धर्मध्वजी धन्य है। वह भारत मा का सपूत धन्य है। वह अपने धर्म और सस्कृति पर अपने को न्योछावर करने वाला धन्य है। उसने सिर कटाना पसन्द किया, पर सिर झुकाया नही। उस वीर की स्मृति को हमारा शत-शत प्रणाम।

वसन्त पचमी के अवसर पर हमारा कर्त्तव्य है कि अपने धर्म और सस्कृति की रक्षा का प्रण ले तथा किसी भी प्रकार की आपदा से भयभीत न हो। आओ मिलकर बोलें—वैदिक धर्म को जय!

सम्पादक के नाम पत्र—

महर्षि दयानन्द सरस्वती की भाषा

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश एवम् अपने अन्य ग्रन्थो की रचना की, हिन्दी भाषा उतनी व्याकरण सयत, प्राजल एव परिष्कृत नही हुई थी जितनी कि आगे चलकर बीसवी सदी के पूर्वार्ध में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग मे हो गयी।

स्वामी जी द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश में अनेक वाक्यो का वर्तमान रूप स्वामी जी रचित मौलिक स्वरूप से भिन्न है। मूल वाक्यो को जो आधुनिक व्याकरण सयत भाषा की कसौटी पर खरे नही उतरे थे उन्हे व्याकरण-सयत करने के मोह मे बाद के सस्करणो के शब्दो मे कही-कही कुछ परिवर्तन किए गये हैं। यह परिवर्धन स्वामी जी की भाषा के तथाकथित दोष परिहार के रूप में किये गये कहे जाते हैं। परन्तु इस प्रकार का औचित्य नितान्त असन्तोषजनक है। यह स्पष्ट दुःसाहस है। ऋषि-ऋण चुकाने की इस रीति-नीति को अक्षम्य एवम् अविवेकपूर्ण कहा जाए तो अनुचित न होगा।

यह सत्यार्थप्रकाश के प्रवीण प्रणेता के साथ सरासर धृष्टता तो है ही साथ ही अन्याय भी है। यद्यपि भावो मे अन्तर नही आया है पर भाषा मे किसी-किसी स्थल पर इतने परिवर्तन किये गये है कि असली-नकली का भेद करना कठिन हो गया है। यह निर्विवाद स्वामी जी की लेखन शैली की आत्मा का हनन करना है। प्रकाशको को स्वामी जी की भाषा मे आज की हिन्दी भाषा के स्तर को दृष्टि मे रखकर परिवर्तन कर इस प्रकार शुद्धीकरण करने का कोई अधिकार नही था। वे भाषा की त्रुटिया नही वरन् उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार है। बाइबिल के न्यूटेस्टामेण्ट की अग्रेजो और आजकल की अग्रेजी में अत्यधिक अन्तर है। इसी प्रकार शेक्सपियर को तत्कालीन अग्रेजी और इस समय की अग्रेजी के व्याकरण मे काफी अन्तर है। किन्तु इसके माने यह तो नही कि बाइबिल की और शेक्सपियर के नाटको की भाषा को अब की प्रचलित अग्रेजी भाषा के व्याकरण के अनुरूप ढाल कर उसमे हेर-फेर कर दिया जाए, और न ऐसा किया ही गया है।

जो आनन्द और रसास्वादन स्वामी जी की कृतियो मे उनके द्वारा अकित मौलिक भाषा के पढने मे आता है वह उसको आजकल की भाषा के नियमो के आधार पर सशोधित कर पढने में आ हो नही सकता। वह स्वामी जी की भाषा नही, कृत्रिम भाषा है। जब हम उनकी भाषा पढते हैं तो ऐसा आभास होता है जैसे कि स्वामी जी स्वय ही बोल रहे हो। लेकिन जब सशोधित रूप से पढते हैं तो लगता है कोई और बोल रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि स्वामी जी की सभी रचनाओ को किसी भी प्रकार बदले हुए रूप मे नही वरन् मौलिक रूप मे यथावत् प्रकाशित किया जाये।

—सोती वीरेन्द्र चन्द्र,
कमला कुटीर, ५६५, सुभाष नगर, इलाहाबाद

२६ जनवरी पर विशेष—

गणतन्त्र दिवस

२६ जनवरी-गणतन्त्र दिवस स्वतन्त्र भारत का सब से महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन समस्त आबाल-वृद्ध भारतीयो का मन आनन्द की तरगो से उद्वेलित रहता है। इस दिन दिल्ली की आकर्षक परेड देखने के लिए प्रत्येक भारतीय का मन लालायित रहता है, तथा सम्पूर्ण राष्ट्र इस राष्ट्रीय पर्व को विविध रगारग कार्यक्रमो से मनाता है। इस राष्ट्रीय पर्व को मनाने का सौभाग्य दिया हमारे क्रान्तिकारी, स्वाधीनता के दीवाने महात्मा गाधी, सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिह, चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपतराय जैसे सैकडो-हजारो क्रान्तिकारी नेताओ ने।

यद्यपि हमे स्वतन्त्रता १५ अगस्त १९४७ को प्राप्त हो गयी थी, परन्तु हम पूर्ण स्वतन्त्र २६ जनवरी १९५० को हुए। उसी दिन स्वतन्त्र भारत का अपना सविधान लागू हुआ स्वाधीनता से पूर्व २६ जनवरी स्वाधीनता दिवस के रूप मे मनायी जाती रही है। ३१ दिसम्बर १९२९ और १ जनवरी १९३० की मध्य रात्रि मे लाहौर के रावी नदी तट पर श्री प० जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के अध्यक्ष के रूप मे तिरगा ध्वज फहराते हुए कहा था कि स्वतन्त्रता आन्दोलन का उद्देश्य पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति होगा। इस अवसर पर देश के भक्तो ने प्रतिज्ञा की थी कि वे तब तक चैन की साम नही लेगे, जब तक पूर्ण स्वराज्य, पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त नही हो जाती। इस अवसर पर यह निश्चय किया गया था कि २६ जनवरी १९३० स्वाधीनता दिवस के रूप मे मनाया जायेगा और इस दिन पूरे देश मे अधिक से अधिक लोगो तक स्वतन्त्रता का घोषणा पत्र पहुचाया जायेगा। इस घोषणा पत्र ने प्रत्येक भारतीय के मन मे स्वतन्त्रता प्राप्ति की भावना जागृत की। तब से स्वाधीनता के पूर्व तक २६ जनवरी को क्रान्तिकारी नेता स्वाधीनता दिवस के रूप मे मनाते रहे। इस दिवस के महत्त्व के कारण ही १९५० मे भारत का नया सविधान तैयार हो जाने पर २६ जनवरी को ही सविधान लागू करने का फैसला किया गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत ने विविध क्षत्रो मे पर्याप्त उन्नति की है, तथापि व्यक्ति का नैतिक पतन जितना अधिक हुआ, वह चिन्ता का विषय है। इस नैतिक पतन के कारण ही प्रत्येक नागरिक त्रस्त है। इसका मूलभूत कारण हमारी शिक्षा और धर्म के पृथक् पृथक् रखने की नीति है। धर्म ही एकमात्र ऐसा साधन है जो व्यक्ति का आचार कर्त्तव्य, नैतिकता आदि गुणो की शिक्षा प्रदान करता है। स्वतन्त्र भारत मे आज भी वोटो की राजनीति के कारण न हमारे देश की कोई राष्ट्रभाषा है और न सस्कृति है। इसी प्रकार कुछ अन्य भी मूलभूत कार्य थे, जिनका निर्णय स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ हो जाना चाहिए था परन्तु आज तक नही हो सका।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे अपने प्राणो की बलि देने वाले अपने यौवन की उमगो को राष्ट्र को समर्पित कर देने वाले उन शहीदो के प्रति मात्र श्रद्धाञ्जलि प्रकट कर देने से हमारा कर्त्तव्य पूर्ण नही हो जाता। उन शहीदो के प्रति हमारी सब से अच्छी श्रद्धाञ्जलि शहीदो द्वारा देखे गए स्वतन्त्र भारत के उज्ज्वल भविष्य को साकार करने की प्रतिज्ञा होगी।

—डा० भारतेन्दु द्विवेदी
शान्ति निकेतन, ज्ञानपुर, वाराणसी

कम्बलों का वितरण

कलकत्ता ६ जनवरी आर्य समाज चण्डीपुर, द्वारा ग्रामाचल के गरीब लोगो में ४० कम्बल वितरित किये गये। आर्यसमाज चण्डीपुर, २४ परगना के अधिकारियो ने बताया कि आगामी फरवरी माह मे उत्सव के समय भी निधन लोगो मे निःशुल्क वस्त्र वितरण करने की उनकी योजना है। ऊनी कम्बल का वितरण आर्यसमाज चण्डीपुर के गुरुकुल आश्रम मे किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के प्रमुख व्यक्ति तथा आर्यसमाज कलकत्ता के मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल एव प० प्रियदर्शन सिद्धान्तभूषण सहित अन्य कई प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

वसन्त पचमी (३१ जनवरी) के अवसर पर

वसन्त-वर्णन

—ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति

(१)

आया ऋतुराज ले सुवास पुहुँपन की
धरती का एक-एक कन महकता है।
सरित्-सर-शैल-बाग-वन- उपवन की
सुषमा निहार नव मन हरषत है।
शैत्य-तुषार अवसान के निकट "ओम"
मध्य में शीतोष्ण के निसर्ग विलसत हैं।
आमो का कमनीय नूतन कनक पात—
प्रकृति-कौसेय पट बन सरसत है॥

(२)

कुजो में कोयल कलोल करे बार बार
बासुरी सा राग कलकठ मे सुनाई है।
बागो मे अलियो का मधुर गीत गुजता
पक्षियो की अपनी अलग शहनाई है।
सारस सिवार टारटार सर सैर करे
सरसिज मे शोभा अनूप निखर आई है।
चेतन-अचेतन मे चेतना जगी है नव
वसुधा पर "ओम" अद्भुत अँगडाई है॥

(३)

पत्रहीन दीखते वीरुध विटप सब
पुष्पो से डालिया झुकि-झुकि आई है।
सरसो, मटर व गोधूम खिले खेतो मे
महुआ-समाज में अजीब खुशी छाई है।
भोर मे आता ले मलय सुरभि साथ
सुरभित क्षितिज मे उषा हरषाई है।
चाँदनी सी रजनी मे सृष्टि हँसि उठे "ओम"
प्रकृति प्रमोद यही सर्ग तरुणाई है॥

(४)

छोडता नही है मन वन-उपवन को
देखि-देखि सुमनो की शोभा हजार है।
धरती की रेणु लगे 'ओम" ज्यो ही पराग सी
अमल अनन्त तले खिला ससार है।
लतिका के अक मे खेल रही कलि बाला
रोमाचित हो रहा देखि के पहार है।
भीनी सी सुगन्ध आती आम-बगियन मे
नन्हे किजल्को की पडती फुहार है॥

(५)

आकर्षक अयस् सी बनी दिशाएँ सब
दृष्टि सबलात् खिच-खिच ही जाती है।
शीतल, सुगन्ध, मन्द वायु चले चहुँ ओर
हृदय की कली हिल-हिल ही जाती है।
तटनी के तट का विहार मोदमयी "ओम"
तटी-निकुजिका खिल-खिल ही जाती है।
वायु के पलने पर सौरभ दोलायमान
सपनो की गली सिच-सिच ही जाती है॥

—आर्यसमाज रावतभाटा वाया कोटा (राज०)

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी—

जन्म दिवस पर विशेष—

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान्, तर्क शिरोमणि एव प्रगल्भ लेखक तथा शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का जन्म माघ कृष्णा दशमी सवत् १९१८ विक्रमी को लुधियाना के जगरावा ग्राम में हुआ था। स्वामी दर्शनानन्द का पूर्वनाम—नेतराम और फिर कृपाराम था। वे अद्वैत के प्रभाव मे थे तथा एक बार उन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती से शास्त्राथ करने का विचार किया था। नवीन वेदान्त की आलोचना में स्वामी जी महाराज की युक्तियो को सुनकर उनका नशा हिरन हो गया और वे उनके अनुयायी बन गए।

प० कृपाराम ने काशी में रहकर अध्ययन किया। वही पर उन्होने 'तिमिर नाशक' प्रेस की स्थापना की जहां से वे विविध शास्त्र ग्रन्थो का प्रकाशन करते थे तथा उन्हे नि शुल्क वितरित किया करते थे। उन्होंने स्वामी मनीषानन्द जैसे ख्याति प्राप्त विद्वान् से शास्त्राध्ययन किया तथा आगे चलकर आर्यसमाज के उत्साही उपदेशक, व्याख्याता तथा शास्त्रार्थ महारथी बने।

स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने काशी मे सनातन धर्म के विद्वान् प० शिवकुमार शास्त्री से भी शास्त्रार्थ किया था। उन्होने अनेक शास्त्रार्थ किए तथा वैदिक धर्म की ध्वजा को ऊँचा उठाया। बिजनौर में 'प्रायश्चित्त' विषय पर किया गया शास्त्राथ वैदिक साहित्य की अमूल्य थाती है।

स्वामी दर्शनानन्द पत्रकार भी थे। उन्होने 'तिमिर नाशक' साप्ताहिक भी चलाया, दानापुर से प्रकाशित 'आर्यावर्त' का सम्पादन भी किया तथा 'वेदप्रचारक' और 'भारत उद्धार' नामक पत्रो का प्रकाशन भी प्रारभ किया। दिल्ली से उन्होने 'वैदिक धर्म' तथा 'वैदिक मैगजीन' नामक पत्र निकाले। उन्होने गुरुकुल सिकन्दराबाद की स्थापना करके वहा से 'गुरुकुल समाचार' नामक पत्र भी निकाला। हरिज्ञान मन्दिर लाहौर मे उन्होने 'ऋषि दयानन्द' नामक पत्र निकाला था। सिकन्दराबाद के पश्चात् उन्होने बदायू मे गुरुकुल की स्थापना की। आगे चलकर उन्होने मुजफ्फर नगर में 'त्रिरालसी' में गुरुकुल शुरू किया। 'गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर' उनका कीर्तिस्तम्भ है।

स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज एक लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार भी थे। उनका सम्पूर्ण वाङमय 'दर्शनानन्द ग्रन्थ सग्रह के छ भागो मे प्राप्य है। 'आर्यसिद्धान्त मुक्तावली' और 'उपनिषत् प्रकाश' भी प्राप्य है। गोविन्दराम हासानन्द और मधुर प्रकाशन ने उनके साहित्य को जन जन तक पहुँचाने मे विशेष सहयोग दिया है।

स्वामी जी महाराज का खण्डनात्मक साहित्य प्रभूत मात्रा मे उपलब्ध है। आर्यसमाज के प्रचारको को उस साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। उनके निधन पर लाला लाजपत राय ने कहा था—"जिस समय हमें स्वामी दर्शनानन्द का स्मरण आता है, आँखो अश्रुधारा बहने लगती है। उनमें ऐसे गुण थे, जो बहुत कम मनुष्यो में देखे जाते हैं। उस व्यक्ति की वाणी दो धारी तलवार की भांति ऐसी तीव्रता से, दक्षता से चलती थी कि आक्षेपकर्ताओ के आक्षेप कट-कट कर गिरते थे।

उस ऋषिवर को हमारा शतश प्रणाम।

वार्षिकोत्सव सूचना

आर्यसमाज तिगांव

फरीदाबाद यहा से १० किलोमीटर दूर हरियाणा के प्रसिद्ध गाव तिगाव की आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर, तिगांव (फरीदाबाद) में शिवरात्रि के अवसर पर १९ से २५ फरवरी तक सामवेद पारायण यज्ञ के साथ सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आर्य-साहित्य-प्रदर्शनी, आर्यसमाज के सिद्धान्त, इतिहास और कार्यक्रम सम्बन्धित चित्र प्रदर्शनी आयोजित होगी।

इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री बालदिवाकर 'हस' प्रधान सचालक आर्यवीर दल तथा अन्य अनेक वैदिक विद्वान् पधार रहे हैं। २४ तथा २५ फरवरी को अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया है।

मेजर रामप्रकाश धाम

आर्यसमाज सी-३ ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली के पूर्व प्रधान, मेजर रामप्रकाश धाम का देहावसान १५ जनवरी, ९० को नासिक मे अपने कनिष्ठ सुपुत्र के निवास पर हो गया है।

स्वर्गीय मेजर रामप्रकाश धाम, स्थल सेना मे मेजर के पद से सेवा निवृत्त होकर जनकपुरी में रह रहे थे। वह आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भी माननीय सदस्य थे। जनकपुरी की सभी धार्मिक गतिविधियो में उनका प्रमुख योगदान रहता था। अपने सेवा काल मे उन्होने इलाहाबाद, देवलाली, बम्बई आदि की आर्यसमाजो मे भी सक्रिय कार्य किया। आर्यसमाज सी-३ ब्लाक, जनकपुरी का नवीन भवन भी उन्ही के प्रधानत्व काल मे बना है।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार जनो को धैय प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

आर्य जगत के समाचार

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे—

सात दिवसीय प्रचार कार्य सोल्लास सम्पन्न

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे वदिक धर्म के प्रचार हेतु, सामाजिक बुराइयो तथा अन्धविश्वासो के प्रति जनजागरण हतु सात दिवसीय वेद प्रचार कार्य १७ दिसम्बर मे २५ दिसम्बर तक सोल्लास आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम मे आर्यसमाज के प्रधान श्री रोशनलाल शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री रणवीर सिह भाटिया, वैदिक विद्वान प० सुन्दरलाल शास्त्री, श्री ज्ञानप्रकाश वर्मा, श्री रामनाथ यात्री भजनोपदेशक तथा श्री देवराज आर्य ने आर्य जनता का मार्गदर्शन किया तथा अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज एव स्वाधीनता सग्राम के अमर सेनानी श्री रामप्रसाद बिस्मिल के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। श्री रणवीर भाटिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि देश पर बलिदान होने वाले वीरो को हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि हम सामाजिक बुराइयो तथा अन्धविश्वासो आर्थिक विषमताओ और भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए देश के प्रति अपने कर्त्तव्यो का पालन करे। डा० बालकृष्ण शास्त्री की अध्यक्षता मे समापन समारोह आयोजित किया गया।

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी के ५४वे वार्षिकोत्सव दिनाक २५ से २८ दिसम्बर के अवसर पर प्रसिद्ध विद्वानो और भजनापदेशको के प्रवचन और भजनोपदेश स स्थानीय जनता ने भरपूर लाभ उठाया। नित्य प्रात हवन के कार्यक्रम के साथ ही पाणिनि कन्या महाविद्यालय की छात्राओ का सस्वर वेदपाठ भी हुआ।

समारोह मे आचार्य रामकृष्ण आर्य कलकत्ता श्रीराम आधार शास्त्री मिर्जापुर डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री अमेठी डा० प्रज्ञादेवी प्राचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी के प्रवचन एव सगीताचार्य प० रामप्रसाद पाण्डेय वाराणसी श्री दिनेशदत्त आर्य बिजनौर, सत्यप्रकाश आर्य मिर्जापुर तथा आर्यसमाज लल्लापुरा के नवयुवक कलाकार सर्वश्री रवि प्रकाश, विजय कुमार एव श्रीप्रकाश के मधुर प्रभावोत्पादक भजनोपदेश हुए।

इस अवसर पर आचार्य रामकृष्ण जी एव श्रीराम अधार शास्त्री व ज्वलन्तकुमार शास्त्री ने वैदिक सस्कृति का आधुनिक परिवेश मे विवेचन करते हुए रामायण तथा महाभारत के उद्धरण देते हुए उस सस्कृति के सवाहक-प्रसारक महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज की भूमिका पर पूर्ण प्रकाश डाला। भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे स्वामी जी और अन्य अगणित सेनानियो के योगदान की चर्चा हुई।

डा० प्रज्ञादेवी जी ने सस्कृत के अध्ययन पर विशेष रूप से बल देते हुए बताया कि यदि हमे वैदिक सस्कृति को बचाना है तो हमे सस्कृत शिक्षा और गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति को अपनाना अत्यन्त आवश्यक है।

२८ दिसम्बर को प० सोममित्र शास्त्री (आधुनिक अर्जुन) द्वारा धनुर्विद्या का प्रदर्शन भी विशेष रूप से आकर्षण का केन्द्र था।

धर्मवीर हकीकतराय बलिदान-दिवस

आर्यसमाज सरोजिनी नगर तथा अखिल भारतीय हकीकतराय सेवा समिति, नई दिल्ली के सयुक्त तत्त्वावधान मे धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस रविवार ४ फरवरी १९९० को आर्यसमाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली मे समारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

समारोह की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक सभा करेगे। डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री प० क्षितीश वेदालकार, श्री रामनाथ सहगल आदि अनेक विद्वान्/नेतागण सम्बोधन देंगे।

इस अवसर पर बच्चों द्वारा वीर हकीकतराय के जीवन पर नाटक, गीत, भाषण प्रस्तुत किये जायेंगे।

यज्ञशाला का शिलान्यास

आर्यसमाज बी० जे० पश्चिमी शालीमार बाग मे वसन्त पचमी के अवसर पर ३१ जनवरी १९९० को प्रात ६ बजे प० यशपाल सुधाशु के ब्रह्मत्व मे यज्ञ के पश्चात् महाशय श्री प्रेमराज जी के कर कमलो से यज्ञशाला का शिलान्यास किया जाएगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—डा० ओ३म्प्रकाश नाम, प्रधान

वेदवेदांग पुरस्कार-१९९०

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई प्रवर्तित वेद वेदाग पुरस्कार १९९० हेतु आर्य जगत् के प्रकाण्ड विद्वान् एव अनेक ग्रन्थो के रचियता, गुरुकुल कागडी के स्नातक श्री पण्डित हरिशरण जी सिद्धान्तालकार एव वेदोपदेशक पुरस्कार के लिए जीवन पर्यन्त आर्य भजनोपदेशक के रूप मे सेवा करने वाले श्री श्री ओमप्रकाश जी वर्मा का चयन किया गया है।

पण्डित हरिशरण जी सिद्धान्तालकार को वेद वेदाग पुरस्कार के रूप में २१०००/- इक्कीस हजार की थैली सम्मान पत्र, रजत ट्राफी एव शाल तथा श्री ओमप्रकाश जी वर्मा को वेदोपदेशक पुरस्कार के रूप मे ११०००/- ग्यारह हजार की थैली, सम्मान पत्र, रजत ट्राफी एव शाल दिनाक ३१ जनवरी ९० को भारतीय विद्या भवन बम्बई के सभागार मे दिया जाएगा।

पुरोहित-प्रशिक्षण-शिविर

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (वल्लभगढ) जिला फरीदाबाद में २ ३, ४ मार्च को होने वाले ५३वें वार्षिकोत्सव पर पुरोहित-प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण २६ फरवरी से प्रारम्भ होकर एक सप्ताह तक चलेगा। प्रशिक्षणार्थियो को एक सप्ताह में सोलह सस्कारो का प्रशिक्षण दिया जाएगा, तथा अन्तिम दिन प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। भोजन एवम् आवास की नि शुल्क व्यवस्था है। केवल नामाकन हेतु ५१ रुपये लेने का प्रावधान है।

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज मन्दिर, गाधीनगर, दिल्ली के लिए एक सुयोग्य तथा गृहस्थ पुरोहित की आवश्यकता है।

सम्पर्क करें—महेन्द्रपाल वर्मा प्रधान, आर्यसमाज गाधीनगर, दिल्ली-३१

शोक समाचार

श्रीमती चतुरोबाई

आर्यसमाज सीहोर की सस्थापक सदस्यो मे से एक माता चतरो बाई जी का दिनाक १२ दिसम्बर को निधन हो गया।

श्रीमती चतरो माता जी तथा उनके स्व० पति श्री भजनलाल जी आर्य इस समाज के सस्थापक सदस्यो मे थे। आर्यसमाज के प्रति पूरे परिवार सहित आजीवन समर्पित रहे। आपने अपनी समस्त चल अचल सम्पत्ति आर्यसमाज को दान की थी। मृत्यु के समय आपकी आयु लगभग ९० वर्ष थी।

श्री शंकरलाल पाली

आर्यसमाज हौज खास के सस्थापक सदस्य प्रारम्भिक मन्त्री श्री शकरलाल जी पाली का आकस्मिक निधन दिनाक ३० दिसम्बर १९८९ को हो गया।

श्री पाली जी अनेको वर्षों तक नागपुर एव दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो के प्रधानाचार्य एव डी०ए०वी० विद्यालयो के एक कुशल प्रबन्धक रहे हैं। वह एक अनुभवी शिक्षाविद एव सफल आर्योपदेशक, आर्य सुधारक थे। तीन दशक से अधिक समय तक शिक्षा क्षेत्र मे कार्य कर, अवकाश ग्रहण करने के बाद उन्होने वानप्रस्थ ग्रहण किया था और मुनि शकर वानप्रस्थी कहलाए थे। उन्होने अनेक वर्षों तक बम्बई दिल्ली, नागपुर आदि महानगरो मे समाज सुधार का बीडा उठाया था।

उनके असामयिक निधन से आर्य-जगत को गहरी क्षति पहुँची है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सदगति के लिए तथा उनके परिवार जनो को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

वार्षिक निर्वाचन—

आर्यसमाज कर्मपुरा दिल्ली-१५ का वार्षिक निर्वाचन दिनाक १७ दिसम्बर को प० देवेन्द्र आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ—

प्रधान श्री हरिनारायण गुप्त
मन्त्री श्री यशपत राय गुप्त
कोषाध्यक्ष श्री मदनलाल आर्य

आर्यसमाज देवबन्द का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से माघ सक्रान्ति २०४६ को सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान श्री विश्वनाथ
मन्त्री : श्री जुगल किशोर
कोषाध्यक्ष : श्री बलराम

यज्ञ
प्रदूषण-निवारण का सर्वश्रेष्ठ उपाय

—डा० धर्मपाल

स्वामी समपणानन्द वैदिक शाध सस्थान गुम्कुल प्रभात आश्रम (टोकरी) मेरठ मे शाध सगाष्ठो व वार्षिकोत्सव कायक्रम १३ व १४ जनवरी ९० का ममारोह पूवक मम्पन्न हुआ ।

१३ जनवरी का अ धुनिक पर्यावरण ममम्या व वदिक ममाधान शोध सगोष्ठी का दो मत्रो म आयाजन दिल्ली आय प्रनिनिधि सभा के प्रधान डा० धमपाल की अध्यक्षता मे किया गया । गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा जय भारती माता सरस्वती वन्दना के गान से कायक्रम का शुभारम्भ हुआ ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मप ल ने अपने अध्यक्षीय भाषण म प्रदूषण के कारण विश्वव्यापी भयावह स्थिति का चित्रण करते हुए कहा कि आज देश मे रेगिस्तान बढ रह है । नदिया अपना पाट छाड रही हैं तथा दक्षिणी ध्रुव के उपर ओजोन की पट्टी मे छिद्र हो गया है जिमके फलस्वरूप सूय भगवान की लाभकारी रश्मिया अब खतरे का कारण बन रही है ।

डा० धमपाल ने आगे कहा कि यज्ञ एक ऐमा पवित्र कम है जो सभी प्रकार के प्रदपण का सर्वश्रष्ठ उपाय है । उन्होने यह भी कहा कि ओ द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष७ के मुप्रसिद्ध शान्ति पाठ के वेद मन्त्र मे वैदिक ऋषियो न प्रदूषण रहित जल, वायु पृथ्वी आकाश आदि द्वारा जीवन के कल्याण व शान्ति को कामना सृष्टि के प्रारम्भ मे ही की थी । उन्होने वैदिक आश्रम व्यवस्था का भी आधुनिक पर्यावरण समस्या का भी समाधान बताया । डा० धमपाल न यह भी बताया कि राष्ट्रपति ने ससद मे २० दिमम्बर ८९ को अपन अभिभाषण मे पर्यावरण प्रदूपण निवारण के प्रनि भारत मरका र की जागरूकना का भी जिक्र किया । साथ ही उन्होन यह भी बताया कि पर्यावरण राज्यमन्त्री श्रीमती मेनका गाधी भी नीम आदि वृक्षारोपण एव नदिया के जल शुद्धिकरण के बारे मे विशेष रुचि लेकर पर्यावरण शुद्धि के लिए प्रयत्नशील हैं ।

डा० धमपाल ने यह भी कहा कि दिमम्बर ८४ मे भोपाल गैस काण्ड के दौरान जहा जहा भी यज्ञ हवन किये जाने रह वहा वहा विषैली गैम का कुप्रभाव नगण्य रहा ।

इमसे पूव दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० अवनीन्द्र कुमार ने अथर्ववेद के सन्दर्भ मे अपना शोध निबन्ध पढा । श्रीमती कैलाशवती (मेरठ) डा० सूभाष वेदालकार (जयपुर), डा० कृष्णकान्त शुक्ल (रुहेल खण्ड डा० जयदत्त उपरेनी (कुमाऊँ) डा० कृष्णकुमार (गढवाल) डा० वदप्रकाश (गुरुकुल कागडी) डा० विजेन्द्र (बदायू) डा० जगदीश (मेरठ) डा० निगम शर्मा (गुरुकुल कागडी) सत्यव्रत राजेश (गुरुकुल कागडी) डा० गणश दत्त शर्मा मेरठ) डा० रामप्रसाद वेदालकार (गुरुकुल कागडी) आदि ने भी जल वायु भूमि ध्वनि आदि सभी प्रकार के प्रदूषण निवारण के सम्बन्ध मे वेदो मे वर्णित उपायो के बारे मे अपन शोध निबन्ध पढे । गुरुकुल के आचाय स्वामी विवेकानन्द ने भी देववाणी सस्कृत व यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला ।

सगोष्ठी का सचालन सस्थान के निदेशक डा० निरूपण विद्यालकार ने कुशलता मे किया । उत्तर प्रदेश आर्य प्रनिनिधि सभा के प्रधान प० इन्द्रराज ने सभी विद्वान वक्ताओ का अभिनन्दन किया ।

—विमलकान्त शर्मा

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N. No 32387/77 Post in N D P.S O on 25 26-1-90 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसस नं० यू १३९

(पृष्ठ १ का शेष)

पंजाब और कश्मीर सेना के सुपुर्द करो

राज्य सरकार को बर्खास्त करके राष्ट्रपति शासन ही एकमात्र उपाय है, जिससे फिलहाल स्थिति पर नियन्त्रण किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त आपको यह भी लिखना अपना कर्त्तव्य समझता हू कि ऐसा ही एक ज्ञापन मैंने तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को प्रस्तुत किया था, जिसमे उन्हे निजी सलाह दी गई थी कि यदि देश से आतकवाद का निशान पूरी तरह मिटाना चाहते हो तो पजाब और कश्मीर को १० वर्ष के लिए सेना के हवाले करके पूरी सीमा पर एक बडी सुरक्षा पट्टी बनाई जाए जहा पर सेना निवृत्त परिवारो को बसाकर उन्हे मताधिकार दिए जाएँ। केवल इसी एक उपाय से आतकवाद का प्रभाव और उन्हे पाकिस्तान से मिलने वाली सहायता पूरी तरह समाप्त की जा सकती है। इसी प्रकार से ही स्थिति का समाधान हो सकता है।

[illegible] और सच्ची शुभकामनाओ के साथ मेरी आपको भी यही राय है कि इन सुझावो पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके शीघ्र ही सख्ती के साथ स्थिति पर नियन्त्रण करने के लिए कदम उठाएँ। ईश्वर आपको पूर्ण शक्ति प्रदान करे।

हार्दिक शुभकामनाओ सहित,

भवदीय

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

भू०पू० ससद सदस्य

प्रधान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली

जय जय हे गणतंत्र महान्

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

नव अधिकार दिलाने वाला, कोमल भाव जगाने वाला।
भारत की पावन धरती पर समता स्रोत बहाने वाला।
जन जन को हर्षाने वाला, जय जयकार कराने वाला।
शान्ति समृद्धि व बलिदानो की सच्ची राह दिखाने वाला।
इसका लक्ष्य महान है यह स्वतन्त्रता प्रतिमान है।
भारत मा की मर्यादा को पावनतम यह शान है।
इसकी आन न जाने पाए, चाहे प्राण भले ही जाएँ।
इसकी रक्षा मे हम निर्भय, युगो-युगो तक बलि-बलि जाएँ।
जय का यह अभियान है गूज रहा जय गान है।
भारत मा की मर्यादा का, गौरव है अभिमान है।
प्रेरक इसका है बलिदान, ज्योति जगायी ज्योतिष्मान।
चिरजीवी हो पुण्य हमारे, जय-जय हे गणतन्त्र महान्।

—मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ०प्र०)

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तरप्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
[illegible] प्रेस गली नं० १७ कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वष अक १५ रविवार ४ फरवरी १९९० माघ सम्वत २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड १०० डालर दूरभाष २१०१५०

सत्भावा स्कूल में गणतन्त्र दिवस समारोह

भारत की स्वाधीनता एवम् अखण्डता की रक्षा हमारा कर्त्तव्य

–सूर्यदेव

सत्भावा आय कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल करोल बाग नई दिल्ली मे गणतन्त्र दिवस का आयोजन दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धमपाल की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आय विद्या सभा हरिद्वार के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि हमे आजादी अनेक बलिदानो के बाद मिली है। इसका इतिहास बहुत पुराना है। हमारे देश का स्थान विश्व मे था है और रहेगा परन्तु इसके लिए हमे पूरी तरह सतक रहना होगा विवेकशील बनना होगा और सच्चा इसान बनना होगा। सच्चा इन्सान वही होता है जो समाज कल्याण मे तत्पर रहे। आयसमाज के नेताओ ने जहा समाज कल्याण के काय किए हैं वहा पर राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन मे भी बढ चढकर भाग लिया है। आज भी हमारा कर्त्तव्य है कि भारत को स्वाधीनता एव अखण्डता की रक्षा के लिए हम सदैव तैयार रहे। इस अवसर पर सस्था के प्रधान श्री तीथराम आहूजा और प्रबन्धक श्री चन्द्रदेव जी ने अभ्यागतो का पुष्पमालाओ से स्वागत किया तथा सस्था के माध्यम से नयी पीढी के निर्माण के सकल्प को दुहराया। अध्यक्ष डा० धर्मपाल ने विद्यालय की छात्राओ द्वारा राष्ट्रीय एकता एवम् अखण्डता की भावनाओ के अनुरूप कायक्रमो की सरचना करने के लिए प्रधानाध्यापिका शिक्षिकाओ तथा बालिकाओ को अपनी शुभकामनाए दी। छात्राओ द्वारा प्रस्तुत सभी कायक्रम मनोहारी प्रेरणादायक तथा राष्ट्रीय एकता की भावना का सवधन करने वाले थे। ●

बिरला आय कन्या स्कूल मे गणतन्त्र दिवस समारोह

बिरला आय कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल मे दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धमपाल की अध्यक्षता म गणतन्त्र दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री तीथराम आहूजा का भव्य स्वागत भी किया गया। श्री आहूजा ने पुरानी पीढी के लोगो द्वारा देश के लिए किए गए कार्यों का स्मरण किया। वे अपनी उन पुरानी यादो मे खो गए तथा भाव विह्वल हो उठ। उन्होने विद्यालय के लिए दो हजार रुपये का दान भी दिया। विद्यालय की प्रधानाचाया श्रीमती आदश कोहली न विद्यालय की उपलब्धियो का सक्षिप्त विवरण दिया। अध्यक्ष ड० धमपाल ने विद्यालय के शतप्रतिशत परीक्षा परिणाम पर अध्यापिकाओ और छात्राओ को बधाई दी। छात्राओ ने सुदर एव आकषक कायक्रम प्रस्तुत किए। इस समारोह म क्षत्रीय जनता के प्रतिनिधियो तथा स्थानीय आयसमाज के अधिकारियो ने भी भाग लिया। ●

जन्मशती पर विशेष—

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द महाराज

भारतीय स्वाधीनता समर के अमर सेनानी लाला लाजपतराय शास्त्राथ समर के विजयी योद्धा आय गौरव स्वामी दशनानन्द जी महाराज ओजस्वी वक्ता एव दृढ निश्चयी स्वामी सत्यदेव परिव्राजक तथा हैदराबाद सत्याग्रह के वीर सेनानी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज—इन सभी महापुरुषो को जन्मस्थली होने का गौरव पजाब के लुधियाना जिले को है।

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज का जन्म ग्राम लोही के सरदार केहर सिह के घर मे विक्रमी सवत १९३४ के पौष मास की पौणमासी को हुआ था। सरदार केहर सिह अपने पुत्र को ऊँची से ऊँची शिक्षा देना चाहते थे, परन्तु उस वीर बालक की आकाक्षाएं प्रारम्भ से ही बाह्योन्मुखी थी। वह कुछ साधु सन्तो के सम्पर्क में आया और उसके जीवन मे ऐसा परिवतन आया कि वह घर बार छोड चला। उसका विवाह भी हो चुका था, पर वह तो सासारिक एव पारिवारिक सभी बन्धनो से मुक्त हो चुका था।

उस वीर बालक ने आगे चलकर अपना जीवन आयसमाज के प्रवतक महर्षि दयानन्द सरस्वती का समर्पित कर दिया और उसके जीवन का एक एक क्षण महर्षि की विचार धारा का प्रचार प्रसार करने मे लग गया। अपने आरम्भिक काल मे वह गुरुद्वारे मे गुरुवाणी का पाठ सुना करते थे। तभी उसने एक बार महर्षि दयानन्द का भाषण सुना और उस भाषण का ऐसा प्रभाव पडा कि उन्होने गीता और वेदा का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। उनके विचार चिन्तन मे गुरुवाणी और वैदिक विचार धारा का अपूव सगम बना। इन दिनो का समन्वित रूप स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज के व्यक्तित्व एव कतृत्व मे उपलब्ध है।

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द ने विदेशो मे वेद का प्रचार किया। व बर्मा मोरिशस दक्षिण अफ्रीका सिगापुर तथा अन्य अनक देशो म गए। भारत का कोई प्रान्त उनकी प्रचार यात्रा से अछूता न रहा। वे दिन मे केवल

(शेष पृष्ठ ५ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

ओ३म त्वमग्ने यज्ञाना होता विश्वेषा हित । देवेभिर्मानुषे जने ।।

तुम होता और विधाता

—देवनारायण भारद्वाज

आनन्द हमे मिल जायेगा, यदि तुम से अपना नाता हो।
प्रभु मेरे जीवन यज्ञो के तुम होता और विधाता हो।।

हे प्रभो रूप ईश्वर प्यारे
सब सृष्टि यज्ञ है विस्तारे
इस जग के तुम हितकारी हो
हो इसके आधार सहारे।

श्रेष्ठ कर्म की पुण्य प्रेरणा उत्साह अपरिमित दाता हो।
प्रभु मेरे जीवन यज्ञो के, तुम होता और विधाता हो।।

हो परमेश्वर गुणवान महा
हम कर सकते गुणगान कहा
गुण अंश तुम्हारे प्राप्त करे
तो हो जाये कल्याण यहा।

मैं राही हूं गुणग्राही हूं तुम तन-मन जग के ज्ञाता हो।
प्रभु मेरे जीवन यज्ञो के तुम होता और विधाता हो।।

प्रभु गुण चिन्तन का ले व्रत भी
हम मनन शील हो मन वी
उनके गुण ज्ञान आचरण मे
हो नाम हमारा उदन वी।

भगवन हम ... यदि उसके गुण का ... हो।
प्रभु मेरे जीवन यज्ञो के तुम होता और विधाता हो।।

—आर्यसमाज आजमगढ़ (उ० प्र०)

सम्पादक के नाम पत्र—

प्रसार भारती राष्ट्र निर्माण के लिए बने

प्रसार भारती का मुख्य दर्शक भारतीय और भारत है जैसा कि इसे प्रस्तुत उसके नाम से स्पष्ट होता। इस युग मे दूरदर्शन प्रचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है किसी भी छोटे बड़े नगर ग्राम की छत पर चक्कर देख ला एन्टीना ही एन्टीना नजर आयेगा। अनुमानत भारत मे देखन वालो की संख्या ५० करोड़ होगी। पता नही क्यो ? नई केन्द्रीय सरकार ने सबसे पहले इसके महत्त्व को न समझते हुए सोने का अण्डा देने वाली इस मुर्गी को ... देने या बेच देने का निश्चय कर लिया है।

पिछली सरकार की दूरदर्शन से लाभ उठाने की नीति जहा विपक्ष के लिए घातक थी वही नई सरकार की नीति तो राष्ट्र के लिये ही घातक बन जायेगी। इसे निगम के सुपुर्द कर देना निश्चय ही हिमालय जैसी भूल होगी। यह साधन ऐसे लोगो के हाथ मे चला जा सकता है जिन का कुछ पता नही कि वे किस मनोवृत्ति के होगे। यदि वे अफसर, व्यापारी या अवसर से लाभ उठाने वाले हुए तो निश्चय ही वे घटिया और सस्ती ऐसी फिल्मो एव कार्यक्रमो से दूरदर्शन भर देगे जहा से उन्हे निगम के लिए वैध और अपने के लिए मोटी अवैध आमदनी हो सकेगी। राष्ट्र के हित का तो उन लोगो के लिए कोई महत्व नही रहेगा। आचारभ्रष्ट लोग तो इसे अपना व जनता की वासना पूर्ति का साधन भी बना सकते हैं।

जिस दूरदर्शन द्वारा राष्ट्र निर्माण का महान् कार्य हो सकता है, उस साधन से जनता की मनोवृत्ति बिगाडने और लोगो को घटिया स्तर का मनोरजन दिया जा रहा है। जिस दूरदर्शन के कार्यक्रमो को बच्चे और वयस्क नवयुवक, नवयुवतिया दिन रात देखती हैं, उसमे आचार भ्रष्ट करने वाली, कामोत्तेजक, गन्दे गीतो भरी फिल्मे दिखाना राष्ट्र को गढे मे गिराना नही तो क्या है ? जन प्रतिनिधियो का कर्तव्य है कि वे ससद मे बहस के दौरान इस महत्वपूर्ण साधन को राष्ट्र-निर्माण और केवल राष्ट्र-निर्माण के लिए लगाने पर जोर दे। पत्रकार बन्धु इस पक्ष को पाठको के सम्मुख प्रस्तुत करे।

ऐसे प्रबन्ध होने चाहिये कि दूरदर्शन पर घटिया मनोरंजन पूरी तरह बन्द हो। उसका मुख्य ध्येय राष्ट्र-निर्माण ही हो। उसमे केवल और केवल देशहित सामग्री ही दिखाई जाए। जैसे बालोपयोगी नाटक एव फिल्मे, शौर्य से भरपूर सामग्री, देशभक्ति के गीत, त्यागी, तपस्वी एव महापुरुषो की जीवनियाँ देश दर्शन विज्ञान की प्रगति, खेल-कूद और दौडो के रोचक विवरण वीर पुरुषो की शौर्य गाथाए पुरातत्व एव इतिहास आदि आदि।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
सी ४ बी/३३२-बी, जनकपुरी, नई दिल्ली ५८

* * *

आर्यसन्देश के विशेषांक

आर्यसन्देश नियत समय पर प्राप्त हो जाता है अत आपको धन्यवाद। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अंक मिला, मन हर्षित हुआ। इस समय मेरे पास लगभग १५ पत्र पत्रिकाय आ रही है किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द अक आर्यसन्देश का सर्वोत्तम अक लगा, इसमे सबसे अधिक जानकारी मिली। अत आपका पुन धन्यवाद।

—धर्मपाल सिंह
१७८ चुक्खूवाला देहरादून (उ० प्र०)

× × ×

आपके प्रेषित किए हुए ... सत्यकेतु स्मृति अक एव श्रद्धानन्द अक मिले। देखते ही हृदय प्रसन्नता से भर गया। एतदर्थ मैं हृदय से आभारी हूं। इन अको का पारायण आरम्भ कर दिया है पूर्ण होने पर अपनी प्रतिक्रिया लिखूगा। इन्हे देखकर नि सकोच कहा जा सकता है कि ये दोनो अक दुर्लभ सामग्री से युक्त है एव आर्यसमाज के साहित्य उद्यान के अत्युत्तम पुष्प है। ऐसे विशिष्ट प्रकाशनो से स्वाध्यायशील आर्यजनो की आकाक्षाय पूरी होती है। ईश्वर से आपके लिए हार्दिक शुभ कामनाय करते हुए आशा करता हूं कि समय-समय पर आप ऋषि दयानन्द सहित सभी महापुरुषो वेदादि ग्रन्थो को लोकप्रिय बनाने वाले सुरुचिपूर्ण लेख आदि प्रकाशित कर आर्यसमाज को कृण्वन्तो विश्वमार्यम के पथ पर अग्रसर करेंगे। मैं स्वय को भाग्यशाली समझता हूं कि मैं आपके 'आर्यसन्देश' परिवार का सदस्य हो गया हूं।

श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी विरचित महर्षि का जीवन चरित आजकल अप्राप्य है। महर्षि दयानन्द को जानने-समझने के लिए जीवन चरित्रो का स्थान निर्विवाद है। मैं और मेरे स्थानीय मित्र चाहते है कि कोई प्रकाशक शीघ्र इसे प्रकाशित करे। आप भी 'आर्यसन्देश' के माध्यम से सार्वदेशिक सभा एव अन्य प्रकाशक संस्थाओ का एतदर्थ प्रेरित करें।

पुन कोटिश धन्यवाद !

– मनमोहन कुमार आर्य
१९६/II चुक्खूवाला देहरादून-२४८००१

× × ×

आप द्वारा प्रेषित स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक और उसके पश्चात के के अन्य अंको को देखकर मेरे हृदय मे आपके प्रति एक विशेष विश्वास का शिलान्यास हुआ है। अत नववर्ष के पावन अवसर पर आपका आभार व्यक्त करता हू। यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि आप इस वर्ष मे आठ भव्य विशेषांक प्रकाशित कर रहे है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वे आपके इस सकल्प को पूर्ण करे, ताकि हम अपने लक्ष्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को क्रियान्वित रूप दे सके।

विशेषांको के कवर की साज सज्जा, तथा अन्दर के कागज और छपायी की उत्कृष्टता तथा सुयोग्य वैदिक विद्वानो की ज्ञान-वर्धक रचनाये सभी कुछ प्रसंशनीय हैं।

—लालमणि शर्मा
ग्राम—पडरी, पो०—कुन्डैल, जि०—बलिया, उ० प्र०

ओ३म्
आर्य सन्देश



महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय और वर्तमान परिस्थितियां

इस सप्ताह हम उन दो विभूतियो का स्मरण कर रहे है जिन्होने इस शताब्दी को आकार दिया, दिशा दी, ऊर्जा प्रदान की और भावी पीढी के मार्ग को प्रशस्त किया। ये विभूतिया, उन अनेक महाविभूतियो की विशिष्ट मण्डली-आकाश गगा में ही थी, जिनके कर्तृत्व के परिणाम स्वरूप भारत को स्वतन्त्रता मिली और यहा पर गणराज्य की स्थापना हुई तथा अपना सविधान– अपना नियम– लागू किया गया।

लाला लाजपतराय उन्ही महान् विभूतियो मे से एक थे। लाल-बाल-पाल नामक गरम दल की तिकडी के सदस्य शेरे पजाब का जन्म आज से १२५ वर्ष पहले लुधियाना की जगरांवा तहसील में २८ जनवरी १८६५ को हुआ था। लाला लाजपतराय ने कांग्रेस में सम्मिलित होने पर पाया था कि कांग्रेस सुधार की पार्टी है, आजादी की नही और कांग्रेसी अवकाश की सुविधा वाले देशभक्त हैं। बस यही अवधारणा उन्हें आजादी का दीवाना और सच्चा देशभक्त बनाने में सफल हुई। उन्होने अपना सब कुछ छोडा और स्वदेशी, स्वराज, बॉयकाट तथा राष्ट्रीय शिक्षा का यह चार सूत्री कार्यक्रम अपनाया। उन्होने आगे चलकर राष्ट्र के लिए जो कार्य किया, उस पर हमारा मस्तक सदा गर्व से उँचा उठता रहेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एक ऐसी महाविभूति थे जिन्होने भारत को आजादी दिलाई, जिसकी एक ललकार पर सारा देश उनके पीछे हो जाता था, उस महापुरुष की पुण्य तिथि ३० जनवरी है। उस महापुरुष के जन्म, मृत्यु तथा कर्तृत्व का परिचय देने को अपेक्षा यह उचित होगा कि उनके कुछ वक्तव्यो को इस अवसर पर पढा जाए तथा उस पर मनन किया जाए। "मै कोई फरिश्ता नही हू। आपको कोई बात इसलिए नही माननी चाहिए क्योकि मै उस बात को कहता हू। आपको अपनी बुद्धि व विवेक से काम लेना चाहिए। यदि मेरे जैसे हजारो महात्मा भी आपको कोई बात कहें, जो आपको उचित न लगती हो तो उसे तत्काल अस्वीकार कर दीजिए। इस तरह व्यवहार करने से ही आप अपनी स्वतन्त्रता को बनाए रख सकते है, और उसके योग्य भी बनेंगे।"—ये विचार बहुत ही महान तथा प्रासगिक भी हैं। हम अग्रेजो के गुलाम थे। हम आजाद हुए। कुछ लोगो का शासन हो गया। हम उनकी मानते रहे, गलत या सही तथा अपने विवेक का प्रयोग नही किया, जो उन्होने कहा वही मान लिया, जो उन्होंने कहा वैसा ही कर दिया तो क्या यह स्वतन्त्रता है। नही, वास्तव में स्वतन्त्रता तभी है, जब हम स्वय विचार करे। हमें परामर्श एव मन्त्रणा करनी चाहिए और जो निर्णय हो, उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए। कई बार कहा जाता है कि 'जो हमारे धर्म गुरु ने कह दिया, जो फतवा दे दिया, वही परम सत्य है।' यह बात गांधी के चिन्तन के विरुद्ध है। यह बात दयानन्द के चिन्तन के विरुद्ध है। दयानन्द ने स्पष्ट शब्दो में कहा था कि जो सत्य है, हम उसी का ग्रहण करे। किसी प्रकार के पूर्वाग्रह अथवा पक्षपात में हम लिप्त न हो। आज के वर्तमान सदर्भ में इस वक्तव्य का विशेष महत्त्व है।

गांधी जी ने एक बात और कही थी—"रचनात्मक काय के लिए शासन से अनुदान स्वीकार करने के मै विरुद्ध हू और न हमे वर्ष-प्रतिवर्ष जनता से ही रकम मांगनी चाहिए।" वास्तव मे जो संस्थाए सरकार के अनुदान पर चलती हैं वे सरकारी हो जाती हैं। वहा पर हम अपने स्वतन्त्र मन्तव्य नहीं रख सकते और जो अ-सरकारी सस्थाएँ होती हैं, वे ही वास्तव में असरकारी हैं। इस सन्दर्भ में मैं स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, आचार्य प्रभात आश्रम मेरठ का स्मरण कराना चाहता हू जिन्होने कहा था—आपने बच्चो का निर्माण करने की जिम्मेवारी मुझे दी है। यह कार्य आपके सहयोग से होगा और अवश्य होगा। इस काय के लिए मैं सरकार का दरवाजा नही खटखटाऊँगा। यहा हमारा उद्देश्य वेतन और सुविधा-भोगी होना नही है। यहा हमारा उद्देश्य है—साधना और तपस्या के द्वारा नई पीढी का निर्माण। गांधी जी की यह बात भी आज प्रासगिक है।

एक विचित्र बात कहना चाहता हूँ कि ऐसा क्यो होता है कि महापुरुष अपने समय मे वट वृक्ष की तरह छाए रहने के बाद अपनी यात्रा के अन्तिम पडाव तक आते आते अप्रासगिक हो जाते है। क्या इसमे इन महापुरुषो का महत्त्व कम हो जाता है। कदाचित् नही। शायद यह ऐतिहासिक अनिवार्यता है। गांधी से पहले भारत की राजनीति पर तिलक, लाजपतराय, विपिनचन्द्र पाल मोतीलाल नेहरू आदि दिग्गजो का वर्चस्व था। लेकिन गांधी के आते ही इन तमाम बडे नेताओ का प्रभामण्डल फीका पड गया। ऐसा सभी सस्थाओ में होता है। परिवर्तन समाज का अनिवार्य नियम है। गर्म राष्ट्रवाद के प्रतीक अचानक ठडे पड गए और शान्ति की बात करने वाला गांधी सब से ऊँचा हो गया। वह अचानक गर्म लोहा बन गया। उसकी शान्ति मे भी गर्मी थी। टैगोर और रोम्या रोला जैसे महापुरुष जो काव्य की रमणीयता तथा समस्वरता के द्वारा विश्व मानव की खोज मे तल्लीन थे, उसकी कार्य पद्धति से उद्वेलित हुए थे। असहयोग आन्दोलन तथा अपनी सरकार के विरुद्ध विद्रोह के स्वरो को भले ही वे अहिंसात्मक थे, वे पचा नही पाए। उन्हे रामकृष्ण परम हस और विवेकानन्द का दर्शन तो पसन्द आया था, पर वे विद्रोह के स्वर मे बोलने वाले दयानन्द और गांधी से उखडे-उखडे मे रहे। भले ही आगे चलकर वे भी उनके हिमायती बने और उनका असहयोग प्रतिकार मे बदला, सविनय अवज्ञा मे बदला और आगे चलकर 'करो या मरो' मे बदला। इस स्थिति तक आते-आते गांधी लाजपतराय हो गए थे, वे दयानन्द हो गए थे, उन्होने पूर्ण स्वराज्य की माग कर दी थी।

वह गांधी भी बाद के दिनो मे भारत की दुर्दशा को रोक नही पाया था। स्व० श्रीमन्नारायण ने लिखा है कि अपने अन्तिम दिनो में गांधी जी ने कहा था—"साम्प्रदायिक घृणा और हिंसा मे आज दिल्ली जल रही है। मेरी अपील का उन पर कोई असर नही पडता। एक समय था जब मेरी आवाज का जनता पर जादू सा असर था। मालूम पडता है, आज वह सारी शक्ति समाप्त हो गयी है।" गांधी की यह असहायता ऐतिहासिक अनिवार्यता थी।

आज भी देश में यही साम्प्रदायिक विद्वेष की स्थिति है। कश्मीर मे तो शुरू से ही है, पजाब में पिछले आठ साल से है। भारत के अन्य स्थानो पर भी है। कुछ लोग इस आग मे ईंधन और तेल डालकर इसे ज्यादा भडका रहे है। कश्मीर की ताजा स्थिति भयावह है। विदेशी शक्तिया आतकवादियो को सहयोग दे रही हैं और आतकवादियो की जड वहा की घाटी मे मौजूद है। एक ऐसा विश्वास बन चुका है कि गणराज्य को चलाने वाले कोई सही काम नहीं करते। उनके हर काम की आलोचना होती है।

परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि किसी प्रकार के तुष्टीकरण की प्रवृत्ति को छोडकर, ठोस कदम उठाए जाए, जो राष्ट्रीय अखण्डता में सहयोगी हो। शुभं भवतु।

— धर्मपाल

डा० श्यामसिंह शशि को पद्मश्री सम्मान

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों मे रचनात्मक स्तर का उल्लेखनीय कार्य के लिए अपने अपने क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तियो का पद्मविभूषण, पद्मभूषण तथा पद्मश्री आदि अलकारो से सम्मानित किया गया। दिल्ली में हिन्दी तथा अग्रेजी साहित्य के विकास में सतत कार्यरत, डा० श्यामसिंह शशि निदेशक प्रकाशन विभाग भारत सरकार को 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है। डा० शशि वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज के मन्तव्यों से ओतप्रोत, अपने साहित्य के माध्यम से सार्वत्रिक वैदिक भावनाओ के प्रचार-प्रसार में सलग्न रहे हैं। उनकी नृ-वैज्ञानिक कृतिया उस अतीत सस्कृति का स्मरण कराती हैं, जो सृष्टि के आदि में रही होगी। डा० शशि को इससे पहले भी भारत सरकार, प्रान्तीय सरकारो तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। आपकी सौ से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस सम्मान पर आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

—मूलचन्द गुप्त, सम्पादक

आर्य लेखक कोश : एक महत्त्वाकांक्षी योजना

आर्यसमाजें इस सारस्वत यज्ञ में सहयोग करें

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

प० लेखराम ने अपनी मृत्यु शय्या से आर्य जाति को जो अपना अन्तिम सन्देश दिया था वह इस प्रकार था—'आर्यसमाज मे तकरीर और तहरीर का काम कभी बन्द नही होना चाहिए।' तकरीर का अर्थ है व्याख्यान और तहरीर का अर्थ लेखन कार्य से लिया जाना है। यह कौन नही जानता कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द स्वय एक लेखक तथा सफल साहित्यकार थे। उन्होने अपने स्वल्प जीवन काल मे छोटे ओर बडे ३२ ग्रन्थ लिखे तथा पाण्डुलिपियो का एक बडा भण्डार अप्रकाशित ही छोड गये। ऋषि दयानन्द के इस लेखन कार्य का अनुकरण उनके परवर्ती आर्य विद्वानो और लेखको ने भी किया। आर्यसमाज के ११५ वर्ष के जीवनकाल मे हजारो लेखको ने अपनी अनुपम विद्वत्तापूर्ण कृतियो के द्वारा साहित्य की अभिवृद्धि की है। आर्यसमाज का यह साहित्य शास्त्रीय भी है और लौकिक भी है। उसमे उपदेशात्मकता भी है और पाठक को रस बोध कराने की शक्ति भी है।

ऋषि दयानन्द के परवर्ती जिन लेखको ने आर्य साहित्य की अभिवृद्धि मे अपना योगदान किया है—उनमे सवश्री प० भीमसेन शर्मा, प० तुलसीराम स्वामी स्वामी दर्शनानन्द प० लेखराम प० गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द प० राजाराम प० आर्यमुनि महात्मा नारायण स्वामी, प० गगाप्रसाद उपाध्याय आदि ऐसे अनेक नाम लिये जा सकते है। वर्तमान काल के जीवित आर्य लेखको की सख्या भी बहुत बडी है। सबके नामो का गिनाना भी सम्भव नही है।

आर्य लेखक कोश की योजना

कई वर्ष पूर्व मेरे मन मे आर्यसमाज मे जुडे लेखको, साहित्यकारो, पत्रकारो तथा शोधकर्मियो का जीवनवृत्त तथा कार्यवृत्त एकत्र करने का विचार आया। मैंने आर्य समाज के साहित्य का अध्ययन तो विगत आधी शती के दीर्घ काल मे इतने मनोयोग पूर्वक किया है कि अत्यन्त विनम्रता के साथ मै यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि आर्य लेखको, उनके जीवनवृत्त तथा उनकी कृतियो की जितनी जानकारी मुझे है, उतनी शायद ही किसी को हो। गत २० वर्षों से तो मै निरन्तर आर्यसमाजी लेखको का परिचय तथा उनके ग्रन्थो का विवरण एकत्र करता रहा और उसे व्यवस्थित करता रहा। अन्तत मैने इन सारे लेखको के इतिवृत्त को जब अकारादि क्रम से व्यवस्थित किया तो यह लेखक सूची लगभग १५०० तक पहुँच गई। पहले तो मेरे मन में विचार आया कि आज आर्यसमाज मे अध्ययन और स्वाध्याय की प्रवृत्ति समाप्त प्राय है। आज के आर्यसमाजी प० लेखराम, प० गुरुदत्त, प० तुलसीराम स्वामी स्वामी दर्शनानन्द आदि साहित्यकारो के नाम तक से अपरिचित हैं, उनके साहित्य से परिचित होना तो सर्वथा अकल्पनीय ही है। अत इस स्थिति मे मेरे द्वारा तैयार किये गये इस आर्य लेखक कोश का क्या महत्व है और इसे छापने मे भी किसकी रुचि होगी। प्राय भवभूति के शब्दो में यही सोचकर मन को सन्तोष देता था कि—

उत्पत्स्यते मम कोऽपि समानधर्मा।
कालो ह्य निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।

मेरे जीवन काल मे न सही, बाद मे तो मेरा कोई समानधर्मी, आर्यसमाज के साहित्यिक इतिहास मे रुचि लेने वाला उत्पन्न होगा ही, क्योकि काल अनन्त है और माता धरित्री भी पर्याप्त विस्तृत है। मेरे द्वारा सचित दुर्लभ पुस्तको की भाति लेखक कोश की मेरी यह पाण्डुलिपि भी पडी रहेगी और यदि कभी किसी ने उसकी उपयोगिता को समझा तो वह उसे प्रकाशित भी करायेगा।

किन्तु मेरे मन मे एक आशा का भाव भी अचानक जागृत हुआ। मैने ८ वर्षों तक दयानन्द शोध पीठ पजाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर कार्य करने के पश्चात् ३० अप्रैल १९८८ को इस महत्त्वपूर्ण पद से अवकाश ले लिया। ध्यातव्य है कि समस्त भारत के १५० विश्वविद्यालयो मे अकेला पजाब विश्वविद्यालय ही एक मात्र ऐसी विद्यापीठ है जहा १९७६ से दयानन्द शोध पीठ (दयानन्द चेयर फार वैदिक स्टडीज) स्वतन्त्र रूप से ऋषि दयानन्द और उनके वैदिक सिद्धान्तो पर उच्चस्तरीय शोध कार्य करा रही है।

मेरे आठ वर्ष के अल्पकालीन अध्यक्ष काल मे लगभग २० शोधार्थियो ने दयानन्द और वैदिक विचारधारा को शोध कार्य के लिए चुन कर पी-एच० डी० की उपाधि ग्रहण की है। शोध विषयक परामर्श लेने वालों की तो यह स्थिति है कि भारत ही नही, अन्य देशो के शोध विद्वान् भी प्रत्यक्ष या पत्राचार द्वारा मुझ से परामर्श लेते हैं। (दयानन्द पीठ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे भी है, किन्तु वहा की स्थिति यह है कि आज दो वर्ष से इस पीठ के प्रोफेसर का पद रिक्त पडा है और इसे भरा नही जा रहा है। एक बार तो स्थिति यहाँ तक आ गई थी कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दयानन्द प्रोफेसर के पद को सर्वथा समाप्त ही कर दिया गया, किन्तु जब मैंने आर्यसमाजी पत्रो मे इसका विरोध किया और नवभारत टाइम्स के चण्डीगढ स्थित सवाददाता श्री राधेश्याम शर्मा को हरयाणा के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल से टेलीफोन पर सम्पर्क कर इस पद को समाप्त करने से होने वाले परिणाम और प्रतिक्रिया की जानकारी देने का आग्रह किया तो मुख्यमन्त्री जी द्वारा इस पद को यथावत् रक्खा गया। तथापि इस पद का रिक्त रक्खा जाना चिन्तनीय है। आर्य समाज के उन नेताओ को तो इस स्थिति का ज्ञान भी नही है जबकि हरयाणा मे ही आर्यसमाज को सर्वाधिक प्रभाव पूर्ण माना जाता है।)

यह सब लिखने का प्रयोजन यह बताना है कि पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ आज देश का ऐसा प्रमुख शोध सस्थान है जहा विश्वविद्यालय स्तर पर ऋषि दयानन्द विषयक शोध कार्य होता है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तो केवल एम०डी० यूनिवर्सिटी ही है, क्योकि इस विश्वविद्यालय के तो केवल नाम मे ही "महर्षि दयानन्द" (यह भी नही केवल एम० डी०) वर्ण जुडे हैं।

मै पुन प्रकृत विषय पर आता हूँ। ६० वर्ष की आयु पूरी होने पर मैंने उक्त पद से विधिवत अवकाश तो ले लिया, किन्तु मुझे पुन स्वल्प वेतन पर ३ वर्ष के लिए प्रोफेसर पद पर नियुक्त कर लिया गया। यह अवधि भी अगले वर्ष ३० अप्रैल को समाप्त हो जाएगी। अब मुझे विश्वविद्यालय ने निवास की सुविधा भी नही दी है। अस्तु गत वर्ष मेरे मन मे विचार आया कि यदि परमात्मा ने कुछ जीवन और दिया है तो क्यो नही आर्य लेखक कोश को छापने का उद्योग किया जाये। जब वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्ध से इस ग्रन्थ की छपाई पर आने वाली लागत पूछी तो पता चला कि ७०० पृष्ठो का यह ग्रन्थ पचास हजार मे छप सकता है। मेरे जैसे मसिजीवी के लिए इतनी बडी राशि उपलब्ध करना भी एक समस्या थी।

प्रकाशन समस्या का समाधान कैसे हो ?

अन्तत मैने निश्चय किया कि क्यो नही इस ग्रन्थ के अग्रिम ग्राहक बनाये जाय और प्रत्येक व्यक्ति से १०० रु० अग्रिम मूल्य के रूप मे लिये जाये। यदि ५०० व्यक्ति भी १०० रु० की राशि दे दे तो ग्रन्थ का छपना शक्य हो जाएगा। ईश्वर की कृपा से आर्यसमाज मे मेरा परिचय का दायरा भी बहुत विस्तृत है। जम्मू से लेकर मद्रास और पोरबन्दर से लेकर कलकत्ता तक के आर्य बन्धु मेरे प्रति सम्मान भाव रखते हैं। फिर एक बात यह भी ध्यान मे आई कि मेरे इस ग्रन्थ में दिवगत लेखको के साथ साथ जीवित समकालीन लेखको का भी विवरण दिया गया है। अत ऐसा हर लेखक तो इस ग्रन्थ का लेना पसन्द करेगा ही। इस विचार से मैने अपने साथी लेखको को एक मुद्रित विज्ञप्ति भेजी और उन से अनुरोध किया कि १०० रु० अग्रिम भेजकर इस कार्य मे मेरा सहयोग करे। ग्रन्थ छपते ही मात्र १०० रु० मे ही उन्हे भेज दिया जाएगा। यदि आज के पुस्तक प्रकाशन की स्थिति को ध्यान मे रखा जाए तो इस ग्रन्थ का ५०० रुपया मूल्य भी रखा जा सकता है। किन्तु यह तो ऐसा प्रकाशक ही कर सकता है जो स्वय अपनी पूजी इसमे लगाए और ४००-५०० प्रतियां ही बेचकर लाखो के वारे न्यारे कर ले। इस ग्रन्थ से धनोपार्जन मेरा लक्ष्य नही है, मेरी इच्छा तो ग्रन्थ को प्रकाशित करने की ही है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ओ३म्
आर्य सन्देश



महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय और वर्तमान परिस्थितियां

इस सप्ताह हम उन दो विभूतियो का स्मरण कर रहे है जिन्होने इस शताब्दी को आकार दिया, दिशा दी, ऊर्जा प्रदान की और भावी पीढी के माग को प्रशस्त किया। ये विभूतिया, उन अनेक महाविभूतियो की विशिष्ट मण्डली-आकाश गंगा में ही थी, जिनके कर्तृत्व के परिणाम स्वरूप भारत को स्वतन्त्रता मिली और यहा पर गणराज्य की स्थापना हुई तथा अपना सविधान— अपना नियम— लागू किया गया।

लाला लाजपतराय उन्ही महान् विभूतियो में से एक थे। लाल-बाल-पाल नामक गरम दल की तिकडी के सदस्य शेरे पजाब का जन्म आज से १२५ वर्ष पहले लुधियाना की जगरांवा तहसील में २८ जनवरी १८६५ को हुआ था। लाला लाजपतराय ने काग्रेस मे सम्मिलित होने पर पाया था कि काग्रेस सुधार की पार्टी है, आजादी की नही और काग्रेसी अवकाश की सुविधा वाले देशभक्त हैं। बस यही अवधारणा उन्हे आजादी का दीवाना और सच्चा देशभक्त बनाने में सफल हुई। उन्होने अपना सब कुछ छोडा और स्वदेशी, स्वराज, बॉयकाट तथा राष्ट्रीय शिक्षा का यह चार सूत्री कार्यक्रम अपनाया। उन्होने आगे चलकर राष्ट्र के लिए जो कार्य किया, उस पर हमारा मस्तक सदा गर्व से ऊँचा उठता रहेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एक ऐसी महाविभूति थे जिन्होने भारत को आजादी दिलाई, जिसकी एक ललकार पर सारा देश उनके पीछे हो जाता था, उस महापुरुष की पुण्य तिथि ३० जनवरी है। उस महापुरुष के जन्म, मृत्यु तथा कर्तृत्व का परिचय देने को अपेक्षा यह उचित होगा कि उनके कुछ वक्तव्यो को इस अवसर पर पढ़ा जाए तथा उस पर मनन किया जाए। "मैं कोई फरिश्ता नही हू। आपको कोई बात इसलिए नही माननी चाहिए क्योकि मै उस बात को कहता हू। आपको अपनी बुद्धि व विवेक से काम लेना चाहिए। यदि मेरे जैसे हजारो महात्मा भी आपको कोई बात कहे, जो आपको उचित न लगती हो तो उसे तत्काल अस्वीकार कर दीजिए। इस तरह व्यवहार करने से ही आप अपनी स्वतन्त्रता को बनाए रख सकते हैं, और उसके योग्य भी बनेंगे।"—ये विचार बहुत ही महान तथा प्रासगिक भी हैं। हम अग्रेजो के गुलाम थे। हम आजाद हुए। कुछ लोगो का शासन हो गया। हम उनकी मानते रहे, गलत या सही तथा अपने विवेक का प्रयोग नहीं किया, जो उन्होंने कहा वही मान लिया, जो उन्होंने कहा वैसा ही कर दिया तो क्या यह स्वतन्त्रता है। नहीं, वास्तव में स्वतन्त्रता तभी है, जब हम स्वयं विचार करें। हमें परामर्श एव मन्त्रणा करनी चाहिए और जो निर्णय हो, उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए। कई बार कहा जाता है कि 'जो हमारे धर्म गुरु ने कह दिया, जो फतवा दे दिया, वही परम सत्य है।' यह बात गांधी के चिन्तन के विरुद्ध है। यह बात दयानन्द के चिन्तन के विरुद्ध है। दयानन्द ने स्पष्ट शब्दो में कहा था कि जो सत्य है, हम उसी का ग्रहण करे। किसी प्रकार के पूर्वाग्रह अथवा पक्षपात मे हम लिप्त न हो। आज के वर्तमान सदर्भ में इस वक्तव्य का विशेष महत्त्व है।

गांधी जी ने एक बात और कही थी—"रचनात्मक काय के लिए शासन से अनुदान स्वीकार करने के मैं विरुद्ध हू और न हमे वर्ष-प्रतिवर्ष जनता से ही रकम मांगनी चाहिए।" वास्तव मे जो सस्थाए सरकार के अनुदान पर चलती हैं वे सरकारी हो जाती हैं। वहा पर हम अपने स्वतत्र मन्तव्य नही रख सकते और जो अ-सरकारी सस्थाएँ होती हैं, वे ही वास्तव में असरकारी हैं। इस सन्दर्भ में मैं स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, आचार्य प्रभात आश्रम मेरठ का स्मरण कराना चाहता हूँ जिन्होंने कहा था—आपने बच्चों का निर्माण करने की जिम्मेदारी मुझे दी है। यह कार्य आपके सहयोग से होगा और अवश्य होगा। इस काय के लिए मै सरकार का दरवाजा नही खटखटाऊंगा। यहा हमारा उद्देश्य वेतन और सुविधा-भोगी होना नही है। यहा हमारा उद्देश्य है—साधना और तपस्या के द्वारा नई पीढी का निर्माण। गाधी जी की यह बात भी आज प्रासगिक है।

एक विचित्र बात कहना चाहता हूँ कि ऐसा क्यो होता है कि महापुरुष अपने समय मे वट वृक्ष की तरह छाए रहने के बाद अपनी यात्रा के अन्तिम पडाव तक आते आते अप्रासगिक हो जाते है। क्या इसमे इन महापुरुषो का महत्त्व कम हो जाता है। कदाचित् नही। शायद यह ऐतिहासिक अनिवार्यता है। गाधी से पहले भारत की राजनीति पर तिलक, लाजपतराय, विपिनचन्द्र पाल, मोतीलाल नेहरू आदि दिग्गजो का वर्चस्व था। लेकिन गाधी के आते ही इन तमाम बडे नेताओ का प्रभामण्डल फीका पड गया। ऐसा सभी सस्थाओ में होता है। परिवर्तन ससार का अनिवार्य नियम है। गर्म राष्ट्रवाद के प्रतीक अचानक ठडे पड गए और शान्ति की बात करने वाला गाधी सब से ऊँचा हो गया। वह अचानक गर्म लोहा बन गया। उसकी शान्ति मे भी गर्मी थी। टैगोर और रोम्या रोला जैसे महापुरुष जो काव्य की रमणीयता तथा समस्वरता के द्वारा विश्व मानव की खोज मे तल्लीन थे, उसकी कार्य पद्धति से उद्वेलित हुए थे। असहयोग आन्दोलन तथा अपनी सरकार के विरुद्ध विद्रोह के स्वरो को भले ही वे अहिंसात्मक थे, वे पचा नही पाए। उन्हे रामकृष्ण परम हस और विवेकानन्द का दर्शन तो पसन्द आया था, पर वे विद्रोह के स्वर मे बोलने वाले दयानन्द और गाधी से उखडे-उखडे से रहे। भले ही आगे चलकर वे भी उनके हिमायती बने और उनका असहयोग प्रतिकार मे बदला, सविनय अवज्ञा में बदला और आगे चलकर 'करो या मरो' में बदला। इस स्थिति तक आते-आते गाधी लाजपतराय हो गए थे, वे दयानन्द हो गए थे, उन्होने पूर्ण स्वराज्य की माग कर दी थी।

वह गाधी भी बाद के दिनो में भारत को दुर्दशा का रोक नही पाया था। स्व० श्रीमन्नारायण ने लिखा है कि अपने अन्तिम दिनो में गाधी जी ने कहा था—"साम्प्रदायिक घृणा और हिंसा से आज दिल्ली जल रही है। मेरी अपील का उन पर कोई असर नही पडता। एक समय था जब मेरी आवाज का जनता पर जादू सा असर था। मालूम पडता है आज वह सारी शक्ति समाप्त हो गयी है।' गाधी की यह असहायता ऐतिहासिक अनिवार्यता थी।

आज भी देश में यही साम्प्रदायिक विद्वेष की स्थिति है। कश्मीर मे तो शुरू से ही है, पजाब में पिछले आठ साल से है। भारत के अन्य स्थानो पर भी है। कुछ लोग इस आग मे ईंधन और तेल डालकर इसे ज्यादा भडका रहे है। कश्मीर की ताजा स्थिति भयावह है। विदेशी शक्तिया आतकवादियो को सहयोग दे रही हैं और आतकवादियो की जड वहा की घाटी मे मौजूद हैं। एक ऐसा विश्वास बन चुका है कि गणराज्य को चलाने वाले कोई सही काम नही करते। उनके हर काम की आलोचना होनी है।

परन्तु आवश्यकता इस बात को है कि किसी प्रकार के तुष्टीकरण की प्रवृत्ति को छोडकर, ठोस कदम उठाए जाए, जो राष्ट्रीय अखण्डता में सहयोगी हो। शुभ भवतु।

—धर्मपाल

डा० श्यामसिंह शशि को पद्मश्री सम्मान

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर विभिन्न क्षेत्रो मे रचनात्मक स्तर का उल्लेखनीय कार्य के लिए अपने अपने क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तियो को पद्मविभूषण, पद्मभूषण तथा पद्मश्री आदि अलकारो मे सम्मानित किया गया। दिल्ली में हिन्दी तथा अग्रेजी साहित्य के विकास में मनन कार्यरत, डा० श्यामसिंह शशि निदेशक प्रकाशन विभाग भारत सरकार को 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है। डा० शशि वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज के मन्तव्यों से ओतप्रोत, अपने साहित्य के माध्यम से सार्वत्रिक वैदिक भावनाओ के प्रचार-प्रसार में सलग्न रहे हैं। उनकी नृ-वैज्ञानिक कृतिया उस अतीत सस्कृति का स्मरण कराती हैं, जो सृष्टि के आदि में रही होगी। डा० शशि को इससे पहले भी भारत सरकार, प्रान्तीय सरकारो तथा विभिन्न संस्थाओ द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। आपकी सौ से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस सम्मान पर आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

—मूलचन्द्र गुप्त, सम्पादक

आर्य लेखक कोश : एक महत्त्वाकांक्षी योजना

आर्यसमाजें इस सारस्वत यज्ञ में सहयोग करें

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

प० लेखराम ने अपनी मृत्यु शय्या से आर्य जाति को जो अपना अन्तिम सन्देश दिया था वह इस प्रकार था—'आर्यसमाज में तकरीर और तहरीर का काम कभी बन्द नही होना चाहिए।' तकरीर का अर्थ है व्याख्यान और तहरीर का अर्थ लेखन कार्य से लिया जाता है। यह कौन नही जानता कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द स्वय एक लेखक तथा सफल साहित्यकार थे। उन्होने अपने स्वल्प जीवन काल में छोटे और बडे ३२ ग्रन्थ लिखे तथा पाण्डुलिपियो का एक बडा भण्डार अप्रकाशित हो छोड गये। ऋषि दयानन्द के इस लेखन कार्य का अनुकरण उनके परवर्ती आर्य विद्वानो और लेखको ने भी किया। आर्यसमाज के ११५ वर्ष के जीवनकाल मे हजारो लेखको ने अपनी अनुपम विद्वत्तापूर्ण कृतियो के द्वारा साहित्य की अभिवृद्धि की है। आर्यसमाज का यह साहित्य शास्त्रीय भी है और लौकिक भी है। उसमे उपदेशात्मकता भी है और पाठक को रस बोध कराने की शक्ति भी है।

ऋषि दयानन्द के परवर्ती जिन लेखको ने आर्य साहित्य की अभिवृद्धि मे अपना योगदान किया है—उनमे सर्वश्री प० भीमसेन शर्मा, प० तुलसीराम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द, प० लेखराम, प० गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, प० राजाराम, प० आर्यमुनि, महात्मा नारायण स्वामी, प० गगाप्रसाद उपाध्याय आदि ऐसे अनेक नाम लिये जा सकते है। वर्तमान काल के जीवित आर्य लेखको की सख्या भी बहुत बडी है। सबके नामो को गिनाना भी सम्भव नही है।

आर्य लेखक कोश की योजना

कई वर्ष पूर्व मेरे मन मे आर्यसमाज से जुडे लेखको, साहित्यकारो, पत्रकारो तथा शोधकर्मियो का जीवनवृत्त तथा कार्यवृत्त एकत्र करने का विचार आया। मैंने आर्य समाज के साहित्य का अध्ययन तो विगत आधी शती के दीर्घ काल मे इतने मनोयोग पूर्वक किया है कि अत्यन्त विनम्रता के साथ मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि आर्य लेखको, उनके जीवनवृत्त तथा उनकी कृतियो की जितनी जानकारी मुझे है, उतनी शायद ही किसी को हो। गत २० वर्षों से तो मैं निरन्तर आर्यसमाजी लेखको का परिचय तथा उनके ग्रन्थों का विवरण एकत्र करता रहा और उसे व्यवस्थित करता रहा। अन्तत मैंने इन सारे लेखको के इतिवृत्त को जब अकारादि क्रम से व्यवस्थित किया तो यह लेखक सूची लगभग १५०० तक पहुँच गई। पहले तो मेरे मन में विचार आया कि आज आर्यसमाज मे अध्ययन और स्वाध्याय की प्रवृत्ति समाप्त प्राय है। आज के आर्यसमाजी प० लेखराम, प० गुरुदत्त, प० तुलसीराम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द आदि साहित्यकारो के नाम तक से अपरिचित हैं, उनके साहित्य से परिचित होना तो सर्वथा अकल्पनीय ही है। अत इस स्थिति मे मेरे द्वारा तैयार किये गये इस आर्य लेखक कोश का क्या महत्व है और इसे छापने मे भी किसकी रुचि होगी। प्राय भवभूति के शब्दो में यही सोचकर मन को सन्तोष देना था कि—

उत्पत्स्यते मम कोऽपि समानधर्मा।
कालो ह्य निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।

मेरे जीवन काल में न सही, बाद में तो मेरा कोई समानधर्मी, आर्यसमाज के साहित्यिक इतिहास मे रुचि लेने वाला उत्पन्न होगा ही, क्योकि काल अनन्त है और माता धरित्री भी पर्याप्त विस्तृत है। मेरे द्वारा सचित दुर्लभ पुस्तको की भाति लेखक कोश की मेरी यह पाण्डुलिपि भी पडी रहेगी और यदि कभी किसी ने उसकी उपयोगिता को समझा तो वह उसे प्रकाशित भी करायेगा।

किन्तु मेरे मन मे एक आशा का भाव भी अचानक जागृत हुआ। मैंने ८ वर्षों तक दयानन्द शोध पीठ पजाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर कार्य करने के पश्चात् ३० अप्रैल १९८८ को इस महत्वपूर्ण पद से अवकाश ले लिया। ध्यातव्य है कि समस्त भारत के १५० विश्वविद्यालयो में अकेला पजाब विश्वविद्यालय ही एक मात्र ऐसी विद्यापीठ है जहा १९७६ से दयानन्द शोध पीठ (दयानन्द चेयर फार वैदिक स्टडोज) स्वतन्त्र रूप से ऋषि दयानन्द और उनके वैदिक सिद्धान्तो पर उच्चस्तरीय शोध कार्य करा रही है। मेरे आठ वर्ष के अल्पकालीन अध्यक्ष काल में लगभग २० शोधार्थियो ने दयानन्द और वैदिक विचारधारा को शोध कार्य के लिए चुन कर पी-एच० डी० की उपाधि ग्रहण की है। शोध विषयक परामर्श लेने वालों की तो यह स्थिति है कि भारत ही नही, अन्य देशो के शोध विद्वान् भी प्रत्यक्ष या पत्राचार द्वारा मुझ से परामर्श लेते हैं। (दयानन्द पीठ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे भी है, किन्तु वहा को स्थिति यह है कि आज दो वर्ष से इस पीठ के प्रोफेसर का पद रिक्त पडा है और इसे भरा नही जा रहा है। एक बार तो स्थिति यहाँ तक आ गई थी कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दयानन्द प्रोफेसर के पद को सर्वथा समाप्त ही कर दिया गया, किन्तु जब मैंने आर्यसमाजी पत्रो में इसका विरोध किया और नवभारत टाइम्स के चण्डीगढ स्थित सवाददाता श्री राधेश्याम शर्मा को हरयाणा के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल से टेलीफोन पर सम्पर्क कर इस पद को समाप्त करने से होने वाले परिणाम और प्रतिक्रिया की जानकारी देने का आग्रह किया तो मुख्यमन्त्री जी द्वारा इस पद को यथावत् रक्खा गया। तथापि इस पद का रिक्त रक्खा जाना चिन्तनीय है। आर्य समाज के उन नेताओ को तो इस स्थिति का ज्ञान भी नही है जबकि हरयाणा मे ही आर्यसमाज को सर्वाधिक प्रभाव पूर्ण माना जाता है।)

यह सब लिखने का प्रयोजन यह बताना है कि पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ आज देश का ऐसा प्रमुख शोध सस्थान है जहा विश्वविद्यालय स्तर पर ऋषि दयानन्द विषयक शोध कार्य होता है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तो केवल एम०डी० यूनिवर्सिटी ही है, क्योकि इस विश्वविद्यालय के तो केवल नाम में ही "महर्षि दयानन्द" (यह भी नही केवल एम० डी०) वर्ण जुडे हैं।

मैं पुन प्रकृत विषय पर आता हूँ। ६० वर्ष की आयु पूरी होने पर मैंने उक्त पद से विधिवत अवकाश तो ले लिया, किन्तु मुझे पुन स्वल्प वेतन पर ३ वर्ष के लिए प्रोफेसर पद पर नियुक्त कर लिया गया। यह अवधि भी अगले वर्ष ३० अप्रैल को समाप्त हो जाएगी। अब मुझे विश्वविद्यालय ने निवास की सुविधा भी नही दी है। अस्तु गत वर्ष मेरे मन में विचार आया कि यदि परमात्मा ने कुछ जीवन और दिया है तो क्यो नहीं आर्य लेखक कोश को छापने का उद्योग किया जाये। जब वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्ध से इस ग्रन्थ की छपाई पर आने वाली लागत पूछी तो पता चला कि ७०० पृष्ठों का यह ग्रन्थ पचास हजार मे छप सकता है। मेरे जैसे मसिजीवी के लिए इतनी बडी राशि उपलब्ध करना भी एक समस्या थी।

प्रकाशन समस्या का समाधान कैसे हो?

अन्तत मैंने निश्चय किया कि क्यो नही इस ग्रन्थ के अग्रिम ग्राहक बनाये जाये और प्रत्येक व्यक्ति से १०० रु० अग्रिम मूल्य के रूप मे लिये जायें। यदि ५०० व्यक्ति भी १०० रु० की राशि दे दें तो ग्रन्थ का छपना शक्य हो जाएगा। ईश्वर की कृपा से आर्यसमाज मे मेरा परिचय का दायरा भी बहुत विस्तृत है। जम्मू से लेकर मद्रास और पोरबन्दर से लेकर कलकत्ता तक के आर्य बन्धु मेरे प्रति सम्मान भाव रखते हैं। फिर एक बात यह भी ध्यान मे आई कि मेरे इस ग्रन्थ में दिवगत लेखको के साथ साथ जीवित समकालीन लेखको का भी विवरण दिया गया है। अत ऐसा हर लेखक तो इस ग्रन्थ का लेना पसन्द करेगा ही। इस विचार से मैंने अपने साथी लेखको को एक मुद्रित विज्ञप्ति भेजी और उन से अनुरोध किया कि वे १०० रु० अग्रिम भेजकर इस कार्य में मेरा सहयोग करें। ग्रन्थ छपते ही मात्र १०० रु० मे ही उन्हें भेज दिया जाएगा। यदि आज के पुस्तक प्रकाशन की स्थिति को ध्यान मे रखा जाए तो इस ग्रन्थ का ५०० रुपया मूल्य भी रखा जा सकता है। किन्तु यह तो ऐसा प्रकाशक ही कर सकता है जो स्वय अपनी पूजी इसमें लगाए और ४००-५०० प्रतियां ही बेचकर लाखो के वारे न्यारे कर ले। इस ग्रन्थ से धनोपार्जन मेरा लक्ष्य नहीं है, मेरी इच्छा तो ग्रन्थ को प्रकाशित करने की ही है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

भारतीय मुस्लिम लेखक और मस्जिद

अनुवादक—डा० श्रीमती जयन्ती चांदोरकर

(सुप्रसिद्ध मन्दिरो को ध्वस्त कर उन्ही की सामग्री से उन्ही के ऊपर मस्जिदो के निर्माण की प्रामाणिक जानकारी देते हुए इण्डियन एक्सप्रेस' के प्रख्यात सम्पादक श्री अरुण शौरी के लेख (दैनिक इण्डियन एक्सप्रेस, दिनाक ५।२।८९) के अनुवादित अश)

इस लेख मे 'हिन्दुस्तान इस्लामी आहदमे नामक पुस्तक से कुछ उद्धरण दिये हैं। यह पुस्तक १९७२ ई० में अरबी मे प्रकाशित हुई, जिसका अनुवाद १९७३ ई० मे उर्दू तथा १९७७ ई० में अग्रेजी मे प्रकाशित किया गया। इसकी प्रस्तावना के लेखक हैं 'अबूहसन अली नदवी' जो 'अली मिया' के नाम से जाने जाते हैं। ये 'जमाते इस्लामी' के सस्थापको मे से एक, 'मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड' के अध्यक्ष तथा 'अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामिक सगठन' के सस्थापक हैं। ये कई ग्रन्थो के लेखक भी है। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी, श्री वी० पी० सिंह तथा श्री चन्द्रशेखर से इनके निकट के सम्बन्ध हैं। हिन्दुस्तान की मुस्लिम राजनीति पर इनका बडा प्रभाव है। इनके पिता भी बड़े लेखक थे, जिन्हे हजारो हिन्दुओ का धर्म-परिवर्तन करवाने के कारण मुस्लिम समाज में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। उन्होने ही यह पुस्तक लिखी है। इसके उपरान्त मौ० अब्दुल ने आठ खण्डो की एक डिरेक्टरी तैयार की है जिसमे ४५०० ऐसे मुसलमानो की जानकारी दी गयी है, जिन्होने भारत मे इस्लाम की तन, मन, धन से सेवा की। परन्तु विशिष्ट बात यह है कि 'अलीगढ मुस्लिम विद्यापीठ', 'उस्मानिया विद्यापीठ', 'निजाम ट्रस्ट्' आदि के ग्रन्थालयो मे से इसकी सभी प्रतिया निकाल दी गई हैं। यह ग्रन्थ किसी हिन्दू के हाथ न पड जाये, ऐसी पूरी सावधानी मुस्लिम नेताओं ने बरती है। इस ग्रन्थ की उर्दू प्रति श्री शौरी ने देखी थी। बाद में काफी खोज करने पर उन्हें वह प्राप्त हुई। अपनी प्रस्तावना मे अली मिया ने यह प्रमाणित करना चाहा है कि सिर्फ विशुद्ध देशभक्ति, ज्ञानवृद्धि और सत्यप्रेम से प्रेरित होकर उनके पिता ने यह ग्रन्थ लिखा है। साथ ही उनके परिश्रम की भूरि-भूरि प्रशसा भी की गई है।

'इस ग्रन्थ में हिन्दुस्तान की मस्जिदे' नामक १८ पृष्ठो का महत्वपूर्ण खण्ड है। इसमे सात मस्जिदों के इतिहास तथा निर्माण के बारे में श्री शौरी ने जानकारी दी है।

(१) दिल्ली की कावत-अल-इस्लाम मस्जिद कुतुब ऐबक ने हिजरी ५८७ मे पृथ्वीराज चौहान द्वारा निर्मित मन्दिर को नष्ट कर उस पर बनवायी। बाद मे हिजरी ५९२ में इसी टूटे मन्दिर के पत्थरो का उपयोग करके शाहबुद्दीन गौरी ने उसे विराट् स्वरूप दिया।

(२) कन्नौज (३) इटावा (४) जौनपुर की बडी मस्जदे भी वहां के मन्दिरों को तोडकर ही बनवायी गयी हैं।

(५) अयोध्या मे रामजन्मभूमि तथा उसके निकट के सीता-महल का नाश कर हिजरी ९६३ मे बाबर की आज्ञा से उस पर बाबरी मस्जिद का निर्माण हुआ।

(६) काशी का सुप्रसिद्ध विश्वनाथ मन्दिर तोडकर औरगजेब ने वहा मस्जिद का निर्माण किया। गंगा के किनारे स्थित २३८ फुट ऊँची और २८ मीनारो वाली मस्जिद का निर्माण भी मन्दिर के अवशेषो पर ही किया गया। इसका कारण उन दो स्थानो पर हिन्दुओ के मुख्य श्रद्धा-स्थलो का होना था।

(७) मथुरा मे भी श्रीकृष्ण जन्म के स्थान पर स्थित गोविन्द मन्दिर को भी औरगजेब ने तुडवाकर उस पर मस्जिद बनवायी।

मौलाना ने अपने इस ग्रन्थ मे मस्जिदो की जानकारी के साथ यह भी जानकारी दी है कि किस प्रकार इसमे उपयोग की गयी सामग्री टूटे हुए मन्दिरो से ली गयी थी। मूल ग्रन्थ के अरबी तथा उर्दू सस्करणो में मुसलमानो तथा मुगल बादशाहो के इस विनाशक कार्य को गौरवान्वित किया है। परन्तु अग्रेजी अनुवाद मे इस सम्पूर्ण परिच्छेद को हटाकर कुछ सीधे सादे वाक्यो को जोड दिया गया है, ताकि इसे पढने वाले अन्य पाठको (जो मुसलमान नही है) का इस विनाश की ओर ध्यान न जा सके।

श्री शौरी के अनुसार बाबरी मस्जिद के लिए लडने वाले अनेक मुस्लिम नेताओ को इसकी जानकारी है परन्तु वे इस बात को छिपा रहे है। यह कार्य वे धर्माभिमान या बाबरी मस्जिद के रक्षणार्थ नही, परन्तु मुस्लिम समाज मे अपना महत्त्व प्रस्थापित करने के लिए कर रहे हैं। परन्तु उनके इस कार्य के कितने दुष्परिणाम हो रहे है यह उन्हे कोई नही बता येगा और न कोई उन्हे रोकेगा ही।

— लोक शिक्षक' जयपुर (राज०) मे साभार

(पृष्ठ ४ का शेष)

आर्य लेखक कोश...

मेरी आर्थिक सहयोग के लिए अपील और उस की प्रतिक्रिया—

मैंने ग्रन्थ हेतु अग्रिम राशि भेजने के लिए व्यक्तियो की ही भाति सस्थाओ से भी आग्रह किया। मेरा विचार था कि यदि देश की लगभग ५ हजार आर्यसमाजो में पचास आर्यसमाजें भी मुझे १००० रुपया दे दे तो इस प्रकार ५० हजार की राशि सहजतया एकत्र हो जाएगी और व्यक्तियो से मात्र १००-१०० रुपये लेने की अधिक आवश्यकता नही पडेगी। यह लिखते हुए खेद होता है कि अनेक आर्यसमाजो को पृथक्श लिखने पर भी मुझे कोई आशाजनक सहयोग नही मिला। इसके विपरीत दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष, यति मण्डल के प्रधान वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुण्य कार्य में २ हजार की राशि भेट की। मैंने प० युधिष्ठिर जी मीमासक से तो मात्र १०० रु० भेजने के लिए ही निवेदन किया था, किन्तु एक लेखक की पीडा को लेखक ही समझता है। उन्होने तत्काल एक हजार रुपये भेज दिए। दिल्ली प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी से मैंने १०० रुपये मांगे तो उन्होने २५० रुपये भेजे।

मेरा निवेदन—

देश की यदि ५० आर्यसमाजे भी प्रत्येक १००० रुपये भेज दें तो मेरा कार्य अत्यन्त सहज हो जाएगा। यह राशि दान रूप मे न होकर अग्रिम मूल्य के रूप में ही है क्योकि ग्रन्थ छपने पर इतने ही मूल्य की प्रतिया मैं उन समाजो को भेज दूगा।

२ मैंने जिन आर्य लेखको तथा स्वपरिचित आर्य बन्धुओ को १०० रुपये भेजने के लिये लिखा है, वे बिना विलम्ब किये यह राशि भेज दे। बूद बूद एकत्र करने से सागर भरता है। इसी न्याय से पर्याप्त लोगो की राशिया आई है और आ रही हैं। आर्य लेखको से विशेष निवेदन है, क्योकि छपने पर सम्भवत ग्रन्थ का मूल्य बढ सकता है।

३ मैंने स्वय निश्चय किया है कि कुल लागत मूल्य मे जितनी राशि कम पडेगी उसे मैं स्वय येन केन प्रकारेण पूरा करूगा, क्योकि जब ग्रन्थ छापने का निश्चय कर ही लिया तो उसे पूरा होना ही है। मेरा यह भी सकल्प है कि आगे मुझे आर्यसमाजो के उत्सवो में जो भेट, दक्षिणा आदि मिलेगी, वह भी इसी कार्य में लगाऊगा।

अत निवेदन है कि आर्यसमाज की सभी सस्थाये इस पवित्र सारस्वत यज्ञ मे अपनी आहुति प्रदान करे। पुस्तक का केवल १००० का ही सस्करण छपेगा जो पहले अग्रिम दे देंगे उन्हे अवश्य ही मिल जायेगा। सहायता राशि इस पते पर भेजें।—

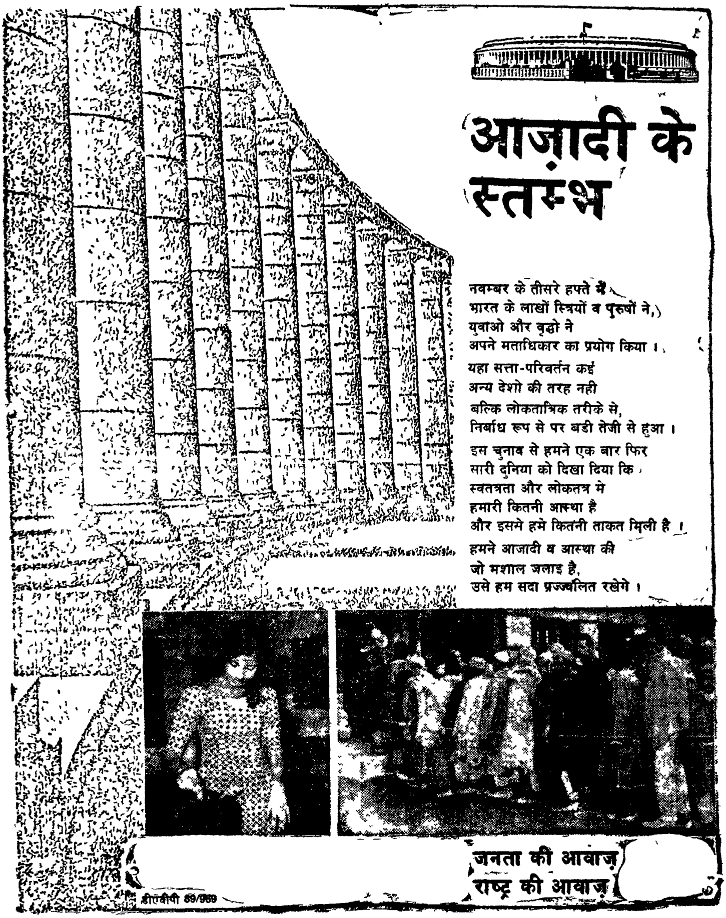
- डा० भवानीलाल भारतीय,
कोठी न० ४१, सेक्टर १५ ए,
चण्डीगढ-१६००१५

(पृष्ठ १ का शेष)

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द महाराज...

एक बार भोजन करते थे। उस वृद्धव्रती का जीवन सदाचार की भट्टी मे तपा था। स्वामी जी का जीवन सघर्षमय था। स्वाधीनता सग्राम मे उन्होने अपूर्व योगदान दिया। वे लाहौर के शाही किले मे बन्द भी रहे। लौहारू में उन्होंने सत्याग्रह किया था। स्वामी जी महाराज का हैदराबाद सत्याग्रह को दिया योगदान आर्यसमाज के इतिहास मे सदैव स्मरणीय रहेगा। सत्याग्रह के दौरान उनका सारा समय शोलापुर और हैदराबाद मे ही बीता। दीनानगर का दयानन्द मठ उनका एक बहुत बडा स्मारक है। स्वामी जी महाराज हर प्रकार के अत्याचार के विरुद्ध थे। उनकी मान्यता थी कि कार्यं वा साधयेय देह वा पातयेयम्। उन्होने अन्याय एव अत्याचार तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध सदा अपने को सर्वात्मना समर्पित किया। उनका कहना था कि यदि आर्यसमाजी दोष रहित हो, तभी भ्रष्टाचार निवारण में सफल हो सकता है। अत उसे पहले अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

स्वामी जी के जन्म दिन पर हमारी उनके प्रति विनत श्रद्धाजलि। हमारी कामना है कि उनके तप और त्याग की ज्योति हम सभी का मार्गदर्शन करती रहे। □



वार्षिकोत्सव—

आर्यसमाज लाजपतनगर

आर्यसमाज लाजपतनगर नई दिल्ली का ३५वा वार्षिकोत्सव ५ फरवरी से ११ फरवरी तक मनाया जा रहा है।

९ फरवरी को दोपहर दो बजे से शोभायात्रा प्रारम्भ होगी।

११ फरवरी रविवार को पूर्णाहुति के पश्चात् आर्यसम्मेलन स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में मनाया जायेगा।

अभिनन्दन—

डा० शिवपूजन सिंह कुशवाहा

ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित समारोह मे महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास, आर्यसमाज फुलेरा, (राजस्थान) की ओर से डा० शिवपूजन सिंह कुशवाहा को उनके द्वारा की गयी सेवाथ २५०१ रुपये नकद, दयानन्द स्वर्णपदक, उत्तरीय तथा प्रशस्ति-पत्र स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया।

●

सोनीपत मे—

महात्मा दयानन्द पुण्यतिथि

आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल एव हिन्दू मच सोनीपत के तत्त्वावधान में महात्मा दयानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्य तिथि सिक्का कालोनी सोनीपत में मनाई गई। इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन हरिचन्द स्नेही (मण्डलपति आर्य वीर दल) के ब्रह्मत्व में किया गया। इस अवसर पर विद्वानों ने पूज्य महात्मा जी के जीवन पर प्रकाश डाला। श्रद्धेय महात्मा दयानन्द जी की अन्तिम इच्छा "वेद प्रचार के प्रसार एवम् उनके आदर्शों पर चलकर मानव चोले को सफल बनाने" का सकल्प लिया गया। कार्यक्रम की समाप्ति पर ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

भारतीय मुस्लिम लेखक और मस्जिद

अनुवादक—डा० श्रीमती जयन्ती चांदोरकर

(सुप्रसिद्ध मन्दिरो को ध्वस्त कर उन्ही की सामग्री से उन्ही के ऊपर मस्जिदों के निर्माण की प्रामाणिक जानकारी देते हुए इण्डियन एक्सप्रेस' के प्रख्यात सम्पादक श्री अरुण शौरी के लेख (दैनिक इण्डियन एक्सप्रेस, दिनांक ५।२।८९) के अनुवादित अंश)

इस लेख मे 'हिन्दुस्तान इस्लामी आहदमे नामक पुस्तक से कुछ उद्धरण दिये हैं। यह पुस्तक १९७२ ई० में अरबी मे प्रकाशित हुई, जिसका अनुवाद १९७३ ई० मे उर्दू तथा १९७७ ई० मे अग्रेजी मे प्रकाशित किया गया। इसकी प्रस्तावना के लेखक है 'अबूहमन अली नदवी' जो 'अली मिया' के नाम से जाने जाते हैं। ये 'जमाते इस्लामी' के सस्थापको मे से एक 'मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड' के अध्यक्ष तथा 'अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामिक सगठन' के सस्थापक हैं। ये कई ग्रन्थो के लेखक भी है। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी, श्री वी० पी० सिह तथा श्री चन्द्रशेखर से इनके निकट के सम्बन्ध हैं। हिन्दुस्तान की मुस्लिम राजनीति पर इनका बडा प्रभाव है। इनके पिता भी बड़े लेखक थे, जिन्हे हजारो हिन्दुओ का धर्म-परिवर्तन करवाने के कारण मुस्लिम समाज में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। उन्होने ही यह पुस्तक लिखी है। इसके उपरान्त मौ० अब्दुल ने आठ खण्डो की एक डिरेक्टरी तैयार की है जिसमे ४५०० ऐसे मुसलमानो की जानकारी दी गयी है, जिन्होने भारत मे इस्लाम की तन, मन, धन से सेवा की। परन्तु विशिष्ट बात यह है कि 'अलीगढ मुस्लिम विद्यापीठ', 'उस्मानिया विद्यापीठ', 'निजाम ट्रस्ट' आदि के ग्रन्थालयो मे से इसकी सभी प्रतिया निकाल दी गई हैं। यह ग्रन्थ किसी हिन्दू के हाथ न पड जाये, ऐसी पूरी सावधानी मुस्लिम नेताओ ने बरती है। इस ग्रन्थ की उर्दू प्रति श्री शौरी ने देखी थी। बाद में काफी खोज करने पर उन्हे वह प्राप्त हुई। अपनी प्रस्तावना मे अली मियां ने यह प्रमाणित करना चाहा है कि सिर्फ विशुद्ध देशभक्ति, ज्ञानवृद्धि और सत्यप्रेम से प्रेरित होकर उनके पिता ने यह ग्रन्थ लिखा है। साथ ही उनके परिश्रम की भूरि-भूरि प्रशसा भी की गई है।

'इस ग्रन्थ मे हिन्दुस्तान की मस्जिदें' नामक १८ पृष्ठो का महत्त्वपूर्ण खण्ड है। इसमे सात मस्जिदो के इतिहास तथा निर्माण के बारे में श्री शौरी ने जानकारी दी है।

(१) दिल्ली की कावत-अल-इस्लाम मस्जिद कुतुब ऐबक ने हिजरी ५८७ मे पृथ्वीराज चौहान द्वारा निर्मित मन्दिर को नष्ट कर उस पर बनवायी। बाद मे हिजरी ५९२ में इसी टूटे मन्दिर के पत्थरो का उपयोग करके शाहबुद्दीन गौरी ने उसे विराट् स्वरूप दिया।

(२) कन्नोज (३) इटावा (४) जौनपुर की बडी मस्जदे भी वहा के मन्दिरों को तोडकर ही बनवायी गयी हैं।

(५) अयोध्या में रामजन्मभूमि तथा उसके निकट के सीता-महल का नाश कर हिजरी ९६३ में बाबर की आज्ञा से उस पर बाबरी मस्जिद का निर्माण हुआ।

(६) काशी का सुप्रसिद्ध विश्वनाथ मन्दिर तोडकर औरगजेब ने वहा मस्जिद का निर्माण किया। गंगा के किनारे स्थित २३८ फुट ऊँची और २८ मीनारों वाली मस्जिद का निर्माण भी मन्दिर के अवशेषो पर ही किया गया। इसका कारण उन दो स्थानो पर हिन्दुओ के मुख्य श्रद्धास्थलो का होना था।

(७) मथुरा मे भी श्रीकृष्ण जन्म के स्थान पर स्थित गोविन्द मन्दिर को भी औरगजेब ने तुडवाकर उस पर मस्जिद बनवायी।

मौलाना ने अपने इस ग्रन्थ मे मस्जिदो की जानकारी के साथ यह भी जानकारी दी है कि किस प्रकार इसमें उपयोग की गयी सामग्री टूटे हुए मन्दिरो से ली गयी थी। मूल ग्रन्थ के अरबी तथा उर्दू सस्करणो में मुसलमानो तथा मुगल बादशाहो के इस विनाशक कार्य को गौरवान्वित किया है। परन्तु अग्रेजी अनुवाद मे इस सम्पूर्ण परिच्छेद को हटाकर कुछ सीधे सादे वाक्यो को जोड दिया गया है, ताकि इसे पढने वाले अन्य पाठको (जो मुसलमान नही हैं) का इस विनाश की ओर ध्यान न जा सके।

श्री शौरी के अनुसार बाबरी मस्जिद के लिए लडने वाले अनेक मुस्लिम नेत्"ओ को इसकी जानकारी है परन्तु वे इस बात को छिपा रहे हैं। यह काम वे धर्माभिमान या बाबरी मस्जिद के रक्षणार्थ नही, परन्तु मुस्लिम समाज मे अपना महत्त्व प्रस्थापित करने के लिए कर रहे हैं। परन्तु उनके इस कार्य के कितने दुष्परिणाम हो रहे है यह उन्हे कोई नहीं बन.येगा और न कोई उन्हे रोकेगा ही।

—लोक शिक्षक' जयपुर (राज०) मे साभार

(पृष्ठ १ का शेष)

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द महाराज...

एक बार भोजन करते थे। उस दृढव्रती का जीवन सदाचार की भट्टी मे तपा था। स्वामी जी का जीवन सघर्षमय था। स्वाधीनता सग्राम मे उन्होने अपूर्व योगदान दिया। वे लाहौर के शाही किले मे बन्द भी रहे। लौहारू में उन्होंने सत्याग्रह किया था। स्वामी जी महाराज का हैदराबाद सत्याग्रह को दिया योगदान आर्यसमाज के इतिहास मे सदैव स्मरणीय रहेगा। सत्याग्रह के दौरान उनका सारा समय शोलापुर और हैदराबाद मे ही बीता। दीनानगर का दयानन्द मठ उनका एक बहुत बडा स्मारक है। स्वामी जी महाराज हर प्रकार के अत्याचार के विरुद्ध थे। उनकी मान्यता थी कि कार्यं वा साधयेय देह वा पातयेयम्। उन्होंने अन्याय एव अत्याचार तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध सदा अपने को सर्वात्मना समर्पित किया। उनका कहना था कि यदि आर्यसमाजी दोष रहित हो, तभी भ्रष्टाचार निवारण में सफल हो सकता है। अत उसे पहले अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

स्वामी जी के जन्म दिन पर हमारी उनके प्रति विनत श्रद्धाजलि। हमारी कामना है कि उनके तप और त्याग की ज्योति हम सभी का मार्गदर्शन करती रहे। □

(पृष्ठ ४ का शेष)

आर्य लेखक कोश...

मेरी आर्थिक सहयोग के लिए अपील और उस की प्रतिक्रिया—

मैंने ग्रन्थ हेतु अग्रिम राशि भेजने के लिए व्यक्तियो की ही भाति सस्थाओ से भी आग्रह किया। मेरा विचार था कि यदि देश की लगभग ५ हजार आर्यसमाजो मे पचास आर्यसमाजें भी मुझे १००० रुपया दे दे तो इस प्रकार ५० हजार की राशि सहजतया एकत्र हो जाएगी और व्यक्तियो से मात्र १००-१०० रुपये लेने की अधिक आवश्यकता नही पडेगी। यह लिखते हुए खेद होता है कि अनेक आर्यसमाजो को पृथक्श लिखने पर भी मुझे कोई आशाजनक सहयोग नही मिला। इसके विपरीत दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष, यति मण्डल के प्रधान वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुण्य कार्य में २ हजार की राशि भेंट की। मैंने प० युधिष्ठिर जी मीमासक से तो मात्र १०० रु० भेजने के लिए ही निवेदन किया था, किन्तु एक लेखक की पीडा को लेखक ही समझता है। उन्होने तत्काल एक हजार रुपये भेज दिए। दिल्ली प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी से मैंने १०० रुपये मागे तो उन्होने २५० रुपये भेजे।

मेरा निवेदन—

देश की यदि ५० आर्यसमाजें भी प्रत्येक १००० रुपये भेज दें तो मेरा कार्य अत्यन्त सहज हो जाएगा। यह राशि दान रूप मे न होकर अग्रिम मूल्य के रूप मे ही है क्योकि ग्रन्थ छपने पर इतने ही मूल्य की प्रतिया मैं उन समाजो को भेज दूगा।

२ मैंने जिन आर्य लेखको तथा स्वपरिचित आर्य बन्धुओ को १०० रुपये भेजने के लिये लिखा है, वे बिना विलम्ब किये यह राशि भेज दे। बूद बूद एकत्र करने मे स[illegible] भरता है। इसी न्याय मे पर्याप्त लोगो की राशिया आई हैं और आ रही है। आर्य लेखको मे विशेष निवेदन है, क्योकि छपने पर सम्भवत ग्रन्थ का मूल्य बढ सकता है।

३ मैंने स्वय निश्चय किया है कि कुल लागत मूल्य मे जितनी राशि कम पडेगी उसे मैं स्वय येन केन प्रकारेण पूरा करूगा, क्योकि जब ग्रन्थ छापने का निश्चय कर ही लिया तो उसे पूरा होना ही है। मेरा यह भी सकल्प है कि आगे मुझे आर्यसमाजो के उत्सवो में जो भेंट, दक्षिणा आदि मिलेगी, वह भी इसी कार्य में लगाऊगा।

अत निवेदन है कि आर्यसमाज की सभी सस्थाये इस पवित्र सारस्वत यज्ञ मे अपनी आहुति प्रदान करें। पुस्तक का केवल १००० का ही सस्करण छपेगा जो पहले अग्रिम दे देगे उन्हे अवश्य ही मिल जायेगा। सहायता राशि इस पते पर भेजें।—

— डा० भवानीलाल भारतीय,
कोठी न० ४१, सेक्टर १५ ए,
चण्डीगढ-१६००१५

वार्षिकोत्सव—

आर्यसमाज लाजपतनगर

आर्यसमाज लाजपतनगर नई दिल्ली का ३५वा वार्षिकोत्सव ५ फरवरी से १८ फरवरी तक मनाया जा रहा है।

९ फरवरी को दोपहर दो बजे से शोभायात्रा प्रारम्भ होगी।

११ फरवरी रविवार को पूर्णाहुति के पश्चात् आर्यसम्मेलन स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में मनाया जायेगा।

अभिनन्दन—

डा० शिवपूजन सिंह कुशवाहा

ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित समारोह मे महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास, आर्यसमाज फुलेरा, (राजस्थान) की ओर से डा० शिवपूजन सिंह कुशवाहा को उनके द्वारा की गयी सेवाथ २५०१ रुपये नकद दयानन्द स्वर्णपदक, उत्तरीय तथा प्रशस्ति-पत्र स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के कर कमलो द्वारा प्रदान किया गया।

●

सोनीपत में—

महात्मा दयानन्द पुण्यतिथि

आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल एवं हिन्दू मच सोनीपत के तत्त्वावधान में महात्मा दयानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्य तिथि सिक्का कालोनी सोनीपत में मनाई गई। इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन हरिचन्द स्नेही (मण्डलपति आर्य वीर दल) के ब्रह्मात्व में किया गया। इस अवसर पर विद्वानो ने पूज्य महात्मा जी के जीवन पर प्रकाश डाला। श्रद्धेय महात्मा दयानन्द जी की अन्तिम इच्छा "वेद प्रचार के प्रसार एवम् उनके आदर्शों पर चलकर मानव चोले को सफल बनाने" का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम की समाप्ति पर ऋषि लगर का आयोजन किया गया।

●

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१
R. N. No 3238/77 Post in N D P S O on 1 2-2-90 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट

टकारा, जिला—राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण

एवं

आर्थिक सहायता की अपील

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव २२, २३, २४ फरवरी, १९९० को ऋषि जन्म स्थली टकारा मे भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश-देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान् ऋषि के चरणो अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे।

सम्प्रति टकारा ट्रस्ट के अधीन—ऋषि जन्म गृह प्रबन्ध, गो-सवर्धन केन्द्र (गोशाला) अतिथि गृह, वेद प्रचार, अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र गृह, आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय चल रहे हैं।

ऋषि जन्म स्थली टकारा मे अभी और भी अनेक विशेष करणीय कार्य हैं जैसे—ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार मे लेना, टकारा की सस्थाओ का विकास तथा जन्म स्थली को विश्वदर्शनीय बनाना। टकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टकारा उत्सव की सफलता, टकारा की सस्थाओ का विकास तथा अन्यान्य कठिनाइयो को दूर करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे है। इन सब कार्यों के लिए पाच लाख रुपयो की और आवश्यकता है।

अत आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इष्ट मित्रो सहित ऋषि बोधोत्सव पर टकारा पधारिये और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए। यह दान राशि आप क्रास चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से टकारा सहायक समिति अथवा 'महर्षि दयानन्द' स्मारक ट्रस्ट टकारा के नाम से इसके दिल्ली कार्यालय, आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवाने की कृपा करे।

विशेष सूचना —टकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि पर आय कर की छूट है।

सेवा में-

2367-श्री पुस्तकाध्यक्ष जी,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी,
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ०प्र०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक १ रविवार ११ फरवरी १९९० फाल्गुन सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

१२ फरवरी को

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह पूर्वक मनायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्य सभा के निर्णयानुसार वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक, आर्य जाति के महान् रक्षक, आदर्श राष्ट्र-निर्माता तथा आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस १२ फरवरी को पड़ता है। सम्भवत. कुछ लोग इस सम्बन्ध मे आश्वस्त नही हैं। परन्तु आर्यों की शिरोमणि सभा की ओर से प्रचारित जन्म तिथि १२ फरवरी ही है।

उन्नीसवीं सदी मे भारत मे जितने महापुरुष हुए हैं, और जिनके जीवन-चरित्र छपे मिलते हैं और जिनकी पुण्य गाथा आज भी बड़े गौरव से गायी जाती है, उनमे अकेले युगद्रष्टा राष्ट्रगुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ही विलक्षण पुरुष हुए हैं, जिन्हे भारत राष्ट्र की परतन्त्रता अखरी और जिन्होंने पराधीनता का अन्त करने के साथ-साथ वेदो की पुन स्थापना, भारतीय संस्कृति की सर्वशुद्ध विवेचना, स्वदेश, स्वधर्म, स्वभाषा, समाज-सुधार, राजनैतिक सामाजिक, आध्यात्मिक-सुधारो, नारी-दलित-हरिजन उद्धार हेतु जीवन-पर्यन्त संघर्ष किया।

ऋषि जन्म दिवस पर आइये व्रत ले कि हमारे प्राण भले चले जायें, परन्तु हम जगद्गुरु दयानन्द द्वारा दिखाये मार्ग से विचलित नहीं होंगे। परमात्मा इस प्रण पालने में हमारे सहायक हों।

—सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से-

आर्य युवा महासम्मेलन

शुक्रवार, १६ फरवरी १९९०, प्रातः ९ बजे
तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम
नई दिल्ली में

वेद-गायन, पी० टी०, योग, शस्त्रादि प्रदर्शन

अध्यक्षता—श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

उद्बोधन—प्रोफेसर शेरसिंह
डॉ० श्यामसिंह 'शशि'
डॉ० महेश विद्यालंकार
प्रो० प्रकाशवीर शास्त्री
श्री बाल दिवाकर 'हंस'

इसी अवसर पर विजयी प्रतियोगियो को पुरस्कार दिये जायेंगे।
भारी सख्या में पहुंच कर समारोह को सफल बनायें।

डा० धर्मपाल	सूर्यदेव	महाशय धर्मपाल	प्रियतमदास रसवन्त
प्रधान	महामन्त्री	स्वागताध्यक्ष	अधिष्ठाता

ऋषि बोधोत्सव पर

आर्यसन्देश का उत्कृष्ट विशेषांक

ऋषि बोधांक

'आर्यसन्देश' अपनी गौरवमयी परम्पराओं के अनुसार ऋषि बोधोत्सव के पावन पर्व पर आर्यजगत् के विख्यात विद्वानों, लेखकों, पत्रकारो एवं कवियों की शोध रचनाओ से भरपूर आकर्षक साज-सज्जा के साथ "ऋषि बोधांक" आगामी २५ फरवरी १९९० को प्रकाशित कर रहा है।

पूर्व घोषणा के अनुसार इस वर्ष आठ भव्य विशेषांक और चवालीस साधारण अंक प्राप्त करने लिए आज ही अपने परिवार, आर्यसमाज और शिक्षण-संस्थाओं के लिए आर्यसन्देश के नियमित ग्राहक बनें और बनायें।

१८ फरवरी को

सीताष्टमी उत्साह पूर्वक मनायें

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के साथ-साथ महारानी सीता का नाम भी जन-जन की जिह्वा पर विद्यमान है। आदर्श आर्य नारियो की गणना मे भगवती सीता का नाम सर्वोपरि आता है। पतिव्रत धर्म इनका विशेष गुण था।

माता सीता का जन्म फाल्गुन कृष्णा अष्टमी को हुआ था। इस वर्ष यह दिन १८ फरवरी रविवार को पड रहा है। यह दिन सीता-अष्टमी के नाम से विख्यात है।

इस अवसर पर हमें उनका स्मरण करना चाहिये और उनसे शिक्षा ग्रहण कर बहिनो को उनके समान पतिव्रत-धर्म का पालन करना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वीकृत १४ आर्य पर्वों सीताष्टमी पर्व नारी-सम्मानार्थ महान् पर्व है इस पर्व को आर्य-समाजें, आर्य विद्यालय एव आर्य पर्व पद्धति के अनुसार श्रद्धापूर्वक मनावे।

—सम्पादक

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद-मनन

उपदेश

स्वावलम्बन

—आचार्य यशपाल सुधांशु

स्वयं वाजिस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व ।
महिमा ते ऽन्येन न सन्नशे ॥

—यजुर्वेद २३।१५

अर्थ—

वाजिन् ! स्वयं तन्वं कल्पयस्व ।

हे ज्ञान क्रिया शक्ति से युक्त मानव ! अपने शरीर को समर्थ कर शक्ति युक्त कर ।

स्वयं यजस्व—स्वयं यज्ञ कर परोपकार कर ।

स्वयं जुषस्व—प्रेम पूर्वक स्वयं सेवन कर ।

ते महिमा अन्येन न सन्नशे—तेरा महत्त्व दूसरे के द्वारा नहीं दिया जा सकता ।

मन्त्र का उद्देश्य—मनुष्य स्वावलम्बी बने और महान होने के लिए स्वयं प्रयत्न करे ।

मन्त्र व्याख्यान—कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके नाम इतिहास में आ जाते हैं और वे अमर हो जाते हैं । कुछ निडर वीर धीर ऐसे भी होते हैं जिनके कारण इतिहास अमर बना करता है । एसे कर्मठ धीर वीर नहा होते हैं जो स्वावलम्बन का जीवन जीते हैं ।

वेद का उपदेश है हे मनुष्य ! तू स्वावलम्बी बन । अपने ऊपर भरोसा कर । दूसरों के सहारे मत बैठ । दूसरे के मुख की तरफ न देखने वाला, परमुखापेक्षी मनुष्य कभी नहीं होता, ऐसे व्यक्ति का मन बुझा रहता है हीनता से ग्रसित रहता है । इसीलिए आत्मविश्वास की अग्नि को प्रचण्ड करना ही होगा । यह अग्नि ही जीवन का तेज है । वेद का सम्बोधन भी अनुपम है — वाजिन ! ज्ञान क्रिया से सम्पन्न मानव ! समस्त प्राणियो मे बुद्धि केवल मनुष्य को प्राप्त है ज्ञान और क्रिया दोनो के द्वारा ही हर कार्य मे सफलता मिलती है । तो कहा गया—आ ज्ञान कर्म वाले ! गतिशील मानव !

सबसे प्रथम अपने शरीर को शक्ति से युक्त कर और उसके बाद ज्ञान अर्जन कर । शक्ति तेरी गति का सम्बल है । गति क्रिया, ज्ञान के बिना सम्भव नही, लेकिन बिना क्रिया के ज्ञान भी भार ही है । (ज्ञान भार क्रिया विना) कोरा ज्ञान तो दुःख का कारण होता है । हमारी क्रियाओ का प्रथम भाग शरीर साधना मे लगना चाहिए । हम कमाई तो करते हैं धन तो कमाते हैं शरीर बिगाड कर । शरीर ससार की सबसे कीमती वस्तु है, उसे ही गवा दिया, फिर इन धनो से क्या लाभ ? यह ध्यान रखना चाहिए स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ विचार पनपते है । इसलिए शरीर दृढ होना चाहिए जो हर अवस्था मे साथ निभा सके पत्थर सा दृढ—अश्मा भवतु ने तनु शरीर को हेय समझकर किसी भी क्षेत्र मे आगे नहा बढा जा सकता ।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।
—कालिदास

धर्म की साधना के लिए प्रथम शरीर की साधना आवश्यक है । शारीरिक उन्नति से ही अन्य सब उन्नति सम्भव है । मनुष्य का शरीर विधाता की अनुपम रचना है । इस विधाता की अनुपम रचना को हम बिगाडने का क्या अधिकार है ? महर्षि चरक कहते हैं—

त्रयोपस्तम्भा शरीरस्य
आहार स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति ।

शरीर का महल तीन खम्भो पर स्थिर है, वे खम्भे है—आहार, निद्रा ब्रह्मचर्य । अतः निरन्तर नियम मे रहकर शरीर की निरोगिता की चिन्ता करनी चाहिए । मानव ने ये तीनो ही खम्भे धन कमाने की चिन्ता मे ध्वस्त करने शुरू कर दिये जिसके कारण यह देवपुरी, यह शीघ्र ही जर्जरित होकर गिर जाती है । ससार का प्रथम सुख स्वस्थ शरीर है—

पहला सुख निरोगी काया,
दूजा सुख घर मे हो माया ।

ससार की रम्यता का उपभोग स्वस्थ शरीर के माध्यम से ही हो सकता है । कृत्रिम प्रसाधनो की चमक सौन्दर्य नहीं है, एक मात्र खोखलेपन निर्बलता का प्रतीक है चमक, शक्ति युक्त शरीर की अरुणाई मे दमकती है ।

जीवन का वन नही सजाया जाता
कभी कागज के फूलो से ।
है अच्छा दो पाट इसे
जीवित बलवान् बबूलो से ।
सौन्दर्य शक्ति का है अनुचर
जो है बली, वही है सुन्दर,
सुन्दरता नि सार वस्तु है
हो न साथ शक्ति अगर ॥
—मैथिली शरण गुप्त

शरीर की सम्पन्नता है निरोगी रहना स्वस्थ रहना, इसीलिए महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के छठे नियम मे कहा "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक सामाजिक उन्नति करना । तीन प्रकार से व्यक्ति समुन्नत होवे । मन्त्र मे भी तीन उन्नतिया स्पष्ट है तन्वं कल्पयस्व—शारीरिक उन्नति, स्वयं यजस्व—सामाजिक । स्वयं जुषस्व—मे आत्मिक ।

अत प्रथम शारीरिक उन्नति होनी चाहिए तभी अन्य क्षेत्र मे उन्नत हुआ जा सकता है । सबल होकर यज्ञ करे, परोपकार मे लगे । मन्त्र मे एक विशेष बात और कही गयी है । कर्त्तव्य करने मे और उपकार करने मे श्रद्धा, प्रीति दृढ विश्वास अवश्य होना चाहिए तभी चमत्कारिक लाभ मिल सकता है ।

यदेव श्रद्धया क्रियते
तद बलवत्तर भवति ।

जो भी कार्य श्रद्धा से किया जाता है वही कार्य अधिक प्रभाव शाली सुन्दर बन पडता है ।

अध्ययनशील विद्यार्थी सफलता के मधु कलश को तभी पा सकेगा, जब उसमे आस्था हो आस्था, श्रद्धा ही दृढ विश्वास को जन्म देती है । आस्थावान अभ्यास से एक पाव से रस्सी पर चलता हुआ जमाने को हैरान कर सकता है । श्रद्धायुक्त, लगनशील, मेहनती रेगिस्तान मे फूल खिला सकता है । दूसरो के मुख की तरफ सहायता के लिए ताकने वाला कायर कहलाता है, कमजोर दुर्बल चरित्र वाला व्यक्ति भी मृत के समान है । वेद निराश, हताश, कम्पित मनुष्य को धीर बधाता हुआ कहता है—

महिमा ते अन्येन न सन्नशे

तुम बडा बनना चाहते हो तो स्वयं बडा महान बनने का प्रयत्न करो । उसके लिए दूसरो पर भरोसा मत रखो । बडे से बडा हाथ तुम्हे बडा नही बना सकता । बडा बनने के लिए आत्मविश्वास, कठोर परिश्रम आवश्यक है । जीवन में उन्नति का क्षेत्र असीम है उसमे वह जितना चाहे ऊपर उठने का प्रयत्न कर सकता है । अत्यन्त पुरुषार्थ से भाग्य (प्रारब्ध) बदला जा सकता है । वह प्रभु भी उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करता है । जो अपनी सहायता नही कर सकते वे दूसरो की सहायता करने में असमर्थ रहते हैं । जो अमीरी मे पले हैं और धन वैभव की जिनके पास कमी नही, उन्हें सब सहायता देना चाहते हैं । वे माता पिता के प्रताप स्वरूप खडे हो जाते है । पर, यह याद रखना चाहिए किसी की गरीबी उन्नति मे कभी बाधक नही बनती । योगेश्वर कृष्ण कहते हैं –

यस्यानुग्रहमिच्छामि
तस्य सर्वं हराम्यहम् ।

जिस पर प्रभु कृपा करते है उसका सब हर लेते हैं । जो मुसीबतो ठोकरो दुखो की खाइयो को लाघता हुआ दौड लगाता है उसे ही परमात्मा का पारितोषिक मिलता है । जो विघ्नो से डर गया सफलतायें भी उससे मुह मोड लेती हैं । दुर्भाग्य विपत्ति दरिद्रता वृक्ष मे खाद की भाति है । खुले आकाश मे सूर्य की आतप को अन्धड प्रवात को सहता हुआ फल काटो मे मुस्कराता है । कठोर परिश्रम पक्का इरादा दूर दृष्टि रखकर जो चला सफलता उसके पीछे चली और चलेगी भी, जिसका सहारा कोई बनना नहीं चाहता खुद का भारी दुनिया मे अकेला समझना है उसे भगवान को सहारा मानकर अपने भरोसे दुनिया की विषम परिस्थितियो मे लडने के लिए कमर कसनी चाहिए ।

किश्तिया सब की
पहुच जाती हैं किनारे ।
नाखुदा जिनका नही,
उनका खुदा होता है ॥

महाभारत का कर्ण, एकलव्य आत्मभरोसे से ही धरा को प्रकम्पित कर देने वाले धनुर्धर बने ।

महाभारत का कर्ण द्रोण के सम्मुख भीम को फटकारते हुए कहता है—

सूतो वा सूतपुत्रो वा
यो वा को वा भवाम्यहम् ।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

सम्पादकीय–

ऋषिवर दयानन्द

भारत भू का यह सौभाग्य रहा है कि जब जब देश पर सकट छाय विदेशियो ने आक्रन्त किया अन्ध विश्वासो और रूढियो का जड गहरा हा गयी अथव आपस मे ही राजनेताओ एव स मग्न्य जनता मे लडाइया हो गयी उम समय ऐमे महापुरुपो का जन्म हुआ जि हाने असत्य के विरुद्ध सघर्ष किया तथा सत्य की स्थापना की अविद्या का नाश किया अन्धकार का नाश किया न ऱ विद्या और प्रकाश की ओर बढने के लिए जनमानस को उत्प्रेरित किय ऐसे ही महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती भी थे जिन्होने अपनी अमिट पद रेखाय आने वाली पीढियो के लिए छोडी हैं। उनका सन्देश अमर है। आज की परिस्थितियो मे भी जब दश पर सकट के बादल छाए हैं पडोसी देश आक्रामक बने हुए हैं राष्ट्र की एकता और अखण्डता को खतरा है अन्ध विश्वासो का विषधर अपना फन उठाए खडा है हमे उस वीर सन्यासी योद्धा का स्मरण करना चाहिए तथा इन विभीषिकाओ की चुनौती को स्वीकार करते हुए उनकी शिक्षा तथा उनके बताए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

स्वामी दयानन्द सरस्वती एक महान समाज सुधारक प्रखर क्रान्तिवादी तथा राष्ट की ओजस्विता के प्रबल समथक महापुरुष थे। उनके हृदय मे विदेशी राज्य को उखाड फेंकने तथा स्वराज्य की स्थापना करने के लिए वैसी ही प्रचण्ड अग्नि धधक रही था जसी कि उनके हृदय मे अध्यात्मिकता का सन्देश दिग दिगन्त तक फलाने की थी अथवा सामाजिक बुराइयो को दूर करन के लिए थी।

योगी अरविन्द न कहा था कि स्वामी जी महाराज की आत्मा मे ईश्वर का निवास था उनका आखो म दूरदष्टि था उनके हाथो मे शक्ति थी तथा वे प्रकाश के अग्रदूत थे और मानव शिल्पी थ उन्होने घोषणा की थी कि ससार अन्ध विश्वास और अज्ञान की बेडियो मे जकडा हुआ है मैं उन्ही बेडियो को तोडन और लोगो का दासता स मुक्ति दिलाने के लिए आया हू लोगो का उनकी स्वाधीनता स वाचत रखना मेरे उद्देश्य के सवथा विपरीत है। स्वामी जी महाराज का इच्छाए स्वहित तक सीमित नही थी। व तो मानवमात्र का कल्याण चाहते थे। उन्होने कहा था मैं अकेला ही माक्ष प्राप्त कर लू इसमे क्या लाभ होगा। मेरा हार्दिक इच्छा ह कि सारी मनुष्य जाति मोक्ष प्राप्त करे। कितनी उदात्त भावनाय उस महामना ऋषिवर की थी।

आज उनके जन्मोत्सव का आयोजित करत हुए हमारा कर्त्तव्य है कि इन मानवीय भावनाओ के प्रचार प्रसार के लिए हम सकल्प ल। सभी को समानता का अधिकार दिलाए। बिना किसी भेदभाव के सबको समान शिक्षा समान रोजगार और उन्नति के समान अवसर द। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के बाधक तत्वो का पूरी शक्ति स विरोध कर। सती प्रथा बाल विवाह दहज अनमेल विवाह की कुरीतियो को जड स मिटा द। अन्धविश्वासो और ढोगो का अपने स दूर भगाए। राष्ट्र को मजबूत कर।

स्वामी जी महाराज का जन्म दिन १० फरवरी का है। इस दिन हरियाणा सरकार ने राजकीय अवकाश घोषित किया हुआ है। हम प्रयास करना चाहिए कि सम्पूर्ण देश म स्वामी जी महाराज के सम्मान मे राजकीय अवकाश हो।

—मूलचन्द गुप्त

(पृष्ठ २ का शेष)

स्वालम्बन

दैवायत्त कुले जन्म
मदायत्त तु पौरुषम ॥

म सूत हूँ (रथ हाकन वाला) या सूतपुत्र जो भी हू अपन पौरुष से हू। कुल तो भाग्य प्रदत्त होता है जो मेरे हाथ मे नही था मेरे हाथ मेरा पौरुष है।

अर्वाचीन काल मे इब्राहिम लिकन और डा० अम्बेडकर इसके सशक्त उदाहरण है। नीतिकार के शब्दो मे—

उद्यम साहस धैर्य
बुद्धि शक्तिपराक्रम।
षडैते यत्र वर्तन्ते
तत्र देव सहायकृत ॥

जो उद्यम साहस धैर्य बुद्धि बल और शौर्य ये छ गुण अपना कर चलता है उसका भगवान भी सहायक होता है।

पता —
आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

क्या हिन्दुस्तान में हिन्दू होना अपराध है ?

—प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा
(ससद सदस्य)
महामन्त्री—भारतीय जनता पार्टी

[प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा ससद सदस्य और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामन्त्री है। आप सुप्रसिद्ध समाजसेवी, राष्ट्रभक्त तथा चिन्तक हैं। आपने भारतवर्ष मे हिन्दुओं के साथ किये जा रहे भेदभाव तथा इससे उत्पन्न वर्गभेद की समस्या पर गहन विचार किया है। इस लेख मे उन्होने आर्यसमाज तथा हिन्दू सस्थाओ की विशाल हृदयता का विवरण देते हुए सरकार से आग्रह किया है कि इन सस्थाओ पर अनावश्यक प्रतिबन्ध न लगाये जाये, बल्कि इन्हे भी वैसी ही स्वायत्तता प्रदान की जाय जैसे कि अल्पसख्यक समुदायो तथा उनके द्वारा सचालित सस्थाओ को दी जा रही है। वे चाहते हैं कि सरकार हिन्दुओ की उदारता का दुरुपयोग न करे।

"क्या हिन्दुस्तान मे हिन्दू होना अपराध है ?" यह लेख पाठको की प्रसुप्त चेतना को प्रबुद्ध करने वाला होगा। यह लेख हमने दिसम्बर १९८८ मे प्रकाशित किया था, जब शासन की डोर काग्रेस (आई) के हाथो मे थी। अब राष्ट्रीय धरातल पर राजनैतिक परिवर्तन अवश्य आया है, परन्तु श्री मल्होत्रा के विचार आज भी उतने ही सामयिक हैं। हमे प्रसन्नता है कि वर्तमान स्थिति में भी श्री मल्होत्रा ने इस लेख के पुन प्रकाशन की सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर सरकार को इस पर मनन करने और तदनुरूप आचरण करने की प्रेरणा की है। — सम्पादक]

विश्व के सभी जनतान्त्रिक देशो मे बहुसख्यक वर्ग का स्वाभाविक रूप से वर्चस्व होता है। अल्पसख्यको की अधिक से अधिक माग यह रहती है कि कानूनन उन्हे बहुसख्यको के समकक्ष माना जाए और धर्म या भाषा के आधार पर उनसे किसी प्रकार का भेदभाव न किया जाये। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व भारत के मुसलमानो ने पृथकता के आधार पर विशेष अधिकार प्राप्त किए और पाकिस्तान बन जाने के बाद भी उन अधिकारो को प्राप्त करते रहना वह अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानने लगे है। धार्मिक आधार पर पाकिस्तान के गठन और पाकिस्तान के इस्लामी राज्य घोषित होने के बाद भारत के मुसलमानो को चाहिए था कि वह पृथकतावाद को छोडकर भारत की राष्ट्रीय धारा मे सम्मिलित हो जाते।

परन्तु पृथक्तावाद के आधार पर वह लाभ मे रहते है। इसका अनुभव वह कर चुके थे और सत्तारूढ दल व अनेक विपक्षी दलो में अल्पसख्यको के वोट लेने के लिए तुष्टिकरण की दौड ने उन्हे और पृथक्तावादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। इसलिए अल्पसख्यको की भारत मे माग योग्यता के आधार पर बराबरी की नही अपितु विशेष अधिकारो और सुविधाओ की रहा है और सत्तारूढ दल उस अनुचित माग को पूरा भी करता रहा है।

जापान स्विट्जरलैंड, जर्मनी, चीन, युगोस्लाविया आदि के सविधान मे यह स्पष्ट प्रावधान है कि "कानून के समक्ष सब नागरिक बराबर होगे। मानव अधिकारो की सार्वभौम घोषणा की धारा-७ कहती है—"कानून के आगे सब बराबर है और बिना किसी भेदभाव के कानून की सुरक्षा के अधिकारी हैं।"

किसी मुस्लिम देश ने इन मानव अधिकारो को नहीं माना। मुस्लिम देशो मे इस्लाम राज्य-धर्म होता है और अल्पसख्यको के अधिकार नगण्य होते हैं। अनेक मुस्लिम देशों मे अन्य धर्मावलम्बियो को पूजा, उपासना करने, अपने उपासना स्थल बनाने, यहा तक कि अपने धर्मग्रन्थ रखने का भी अधिकार नही है। मलेशिया, जहा मुस्लिम जनसख्या ४५ प्रतिशत से ५० प्रतिशत के बीच है, वहा भी इस्लाम राज्य-धर्म है और अन्य धर्मावलम्बियो को बराबर के अधिकार प्राप्त नही है।

भारत मे १९८७ की जनगणना मे हिन्दुओ की जनसख्या ८२.६ प्रतिशत है और सिख, बौद्ध व जैन भी यदि इनमें सम्मिलित कर लिये जाए तो यह सख्या ८६.२ प्रतिशत हो जाती है।

भारत के सविधान मे यद्यपि अनुच्छेद १४ मे कानून के सामने बराबरी, अनुच्छेद १५ मे भेदभाव की मनाही अनुच्छेद १६ मे नौकरियो मे समान अवसर, अनुच्छेद २९ (२) मे शिक्षा के समान अवसर घोषित किए गए है, परन्तु अनुच्छेद ३० में अल्पसख्यको को अपनी शिक्षा सस्थाएँ स्थापित करने और चलाने का अधिकार देने, अनुच्छेद ४४ में देश के सभी नागरिको के लिए एक समान नागरिक सहिता (सिविल कोड) बनाने के निदेशक सिद्धान्त को लागू न करने और प्रधानमन्त्री के अल्पसख्यकों के लिए १५-सूत्री कार्यक्रम से अल्पसख्यको को ऐसे अधिकार और सुविधाए प्राप्त हो गई हैं जिनके कारण समय समय पर और स्थान-स्थान पर हिन्दुओं को ऐसा भेदभाव व पक्षपात सहन करना पडता है जिससे उनके मन में यह क्षोभ पैदा होता है कि क्या हिन्दुस्तान में हिन्दू होना अपराध है ?

इससे अधिक विडम्बनापूर्ण व आश्चर्यजनक बात क्या हो सकती है कि हिन्दुत्व के श्रेष्ठतम प्रेरक महर्षि दयानन्द व स्वामी विवेकानन्द की सस्थाए, आर्यसमाज व रामकृष्ण मिशन न्यायालय के द्वार खटखटाए कि वह हिन्दू सस्थाए नही और उन्हे अल्पसख्यको की श्रेणी मे रखा जाये।

डी० ए० वी० सस्थाओ की प्रबन्धकर्तृ सभा के अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायधीश स्वर्गीय श्री जे० एन० कपूर प्राय मुलाकात मे खिन्न हृदय से मुझे कहते थे कि 'मेरी आत्मा न्यायालय मे आर्यसमाज के अनुयायी हिन्दू नही" तर्क प्रस्तुत करते हुए धिक्कारती है, परन्तु मैं क्या करूँ, डी० ए० वी० सस्थाओ को बचाने का और कोई उपाय नही।

प्रदेश सरकारो की शिक्षा सहिताओ के अनुसार कोई मान्यता प्राप्त स्कूल व कालेज अपने स्कूलो में धार्मिक शिक्षा नही दे सकता। स्कूल कालेज का भवन किसी सस्था के कार्यक्रम के लिए नही दिया जा सकता। छात्रों का प्रवेश तथा अध्यापकों व कर्मचारियो की नियुक्तियां सरकारी व शिक्षा विभाग के आदेशों, नियमों व निरीक्षण में की जाती हैं। परन्तु यह नियम सहिताए व आदेश अल्पसंख्यक स्कूलों पर लागू नहीं होते। वह अपने यहा कोई भी धार्मिक पाठ्यक्रम रख सकते हैं, भवन व मैदान को किसी भी सस्था को उपयोग के लिए दे सकते हैं। कम नम्बर होने पर भी किसी को प्रवेश दे सकते हैं और प्राध्यापको के चयन में शिक्षा विभाग व विश्वविद्यालय का उनके यहा कोई दखल नही।

राजधानी दिल्ली में कालेजो में दाखिले दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा सचालित होते हैं और कालेज प्रबन्ध समितियो को भी स्वेच्छा से एक भी विद्यार्थी दाखिल करने का अधिकार नही। परन्तु विश्वविद्यालय के जो नियम डी० ए० वी० कालेज, सनातन धर्म कालेज, रामजस कालेज, हिन्दू कालेज आदि में लागू होते हैं वह सेंट स्टीफस, जीसस एण्ड मेरी, खालसा, जाकिर हुसैन कालेज पर लागू नही होते। कम नम्बर होने पर भी मुस्लिम, सिख, ईसाई छात्र एव छात्राओ को दाखिला मिल जाता है जबकि अधिक नम्बर होने पर भी हिन्दू छात्र एव छात्राओ को नही।

जब मैं दिल्ली का मुख्य कार्यकारी पार्षद था तो क्वीन्स मेरी स्कूल की प्रबन्ध समिति ने स्कूल की प्रिंसिपल के लिए एक विज्ञापन दिया। विज्ञापन मे कहा गया था कि प्रत्याशी के लिए कैथोलिक ईसाई होना अनिवार्य है। किसी की शिकायत पर कि ऐसा विज्ञापन शिक्षा सहिता के विरुद्ध है, शिक्षा विभाग ने स्कूल प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियो को सुझाव दिया कि वह किसी को भी अपनी इच्छानुसार प्रिंसिपल रख ले परन्तु विज्ञापन में कैथोलिक ईसाई होने की अनिवार्यता की शर्त न रखे।

प्रबन्ध समिति ने इसे स्वीकार न किया और न्यायालय में चले गए। न्यायालय में शिक्षा विभाग ने तर्क दिया कि स्कूल में प्राय सब छात्राए हिन्दू हैं तो यह स्कूल ईसाई स्कूल कैसे हुआ ? न्यायालय ने निर्णय दिया कि भारत के संविधान के अनुसार धार्मिक अल्पसख्यकों द्वारा चलाई जा रही शिक्षा सस्थाओं में सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती। उसमे पढने वाले छात्र, शिक्षक व कर्मचारी चाहे सभी हिन्दू हों, परन्तु प्रबन्ध समिति यदि धार्मिक अल्पसख्यको की है तो वह शिक्षा संस्था अल्पसंख्यक संस्था कहलायेगी।

आर्यसमाज, सनातन धर्म व अन्य हिन्दू सस्थाओ द्वारा सचालित शिक्षा सस्थाओ के प्रिसिपल, मुख्याध्यापक व अध्यापक किसी भी जाति, धर्म व विचार के हो सकते है। इन सस्थाओ के अनेक अध्यापक इनकी विचारधारा के कट्टर विरोधी हैं यहां तक कि धर्म के ही कट्टर विरोधी प्राध्यापक इन धार्मिक सस्थाओ के स्कूलों में पहुच गए है। परन्तु ईसाई, मुस्लिम, सिख सस्थाओ द्वारा सचालित शिक्षा सस्थाओ मे वह अपने कट्टरपन्थी शिक्षक व कर्मचारी भर्ती कर सकते हैं।

रामकृष्ण मिशन को भी न्यायालय में जाकर सिद्ध करना पडा कि वह हिन्दुओ से अलग हैं और अल्पसख्यक श्रेणी में आते हैं। अन्यथा प० बगाल की मार्क्सवादी सरकार अपने पाठ्यक्रम और अपनी नियुक्तियो द्वारा उन शिक्षा सस्थाओ का स्वरूप ही बदलकर उनको चलाने का उद्देश्य ही पूर्णतया नष्ट कर देती।

डा० वी० के० आर० वी० राव भारत के शिक्षा मन्त्री थे। उन्होंने एक बार अत्यन्त उत्साह मे घोषणा कर दी थी कि अपने मंत्रित्वकाल मे वह देखना चाहेगे कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का उपकुलपति मुसलमान व अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय का उपकुलपति हिन्दू हो। अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय मे उन दिनो आदोलन प्रारम्भ हो चुका था कि अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय केवल मुसलमानो के लिए और मुस्लिम धर्म व मान्यताओ के सरक्षण के लिए है और उसका मुस्लिम स्वरूप बना रहना चाहिए। यह अल्पसख्यक सस्था है और भारतीय सविधान की धर्म निरपेक्षता इस पर लागू नही होती।

अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के शिष्टमण्डल को श्री राव ने तर्क दिया कि यह विश्वविद्यालय शतप्रतिशत केन्द्रीय सरकार के अनुदान से चलता है। सरकार का धन किसी एक धर्म के प्रश्रय व प्रोत्साहन के लिए खर्च नही किया जा सकता। मुस्लिम मतावलम्बी यदि चाहें तो अपने धन से कोई सस्था चला लें, सरकार उसमे हस्तक्षेप नहीं करेगी। सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपने निर्णय में यह उद्घोषित किया कि पूर्णतया सरकारी अनुदान से कोई मजहबी शिक्षा सस्था नही चलाई जा सकती। परन्तु मुस्लिम मतों का आकर्षण और अपने सामुहिक मतदान के सामर्थ्य को भयादोहन के रूप में सफलतापूर्वक प्रयोग करने के मुस्लिम स्वभाव के कारण सरकार ने ससद में कानून के जरिए केन्द्रीय सरकार के कोष से पूर्णतया सञ्चालित अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय का मजहबी रूप सुरक्षित कर दिया।

जम्मू-कश्मीर एक छोटा सा प्रदेश है। उसकी आबादी दिल्ली की आबादी से कही कम है। लगभग ४० लाख इसकी आबादी है। इसकी राजस्व आय नगण्य है। राजस्व व्यय के साथ-साथ योजना का लगभग पूर्ण व्यय केन्द्रीय सरकार उठाती है। यह एकमात्र ऐसा प्रदेश है जहा पूर्ण शिक्षा बी० ए० एम० ए० के साथ-साथ इञ्जीनियरिंग व डाक्टरी की शिक्षा भी नि शुल्क है। एक डाक्टर पर पाच वर्षों मे लगभग दो लाख से अधिक रुपये खर्च होते हैं। हमारे सविधान मे अनुसूचित जाति के लिए शिक्षा व नौकरियो मे स्थान सुरक्षित करने का प्रावधान है। पिछडे वर्गो के लिए भी शिक्षा व नौकरियो मे स्थान सुरक्षित किए जा सकते हैं। जम्मू कश्मीर मे जहा मुसलमान बहुमत मे हैं, सभी मुसलमानो को पिछडा वर्ग घोषित कर दिया गया है। इसका यह परिणाम निकला है कि जम्मू कश्मीर मे विद्यार्थी यदि मुसलमान है तो इञ्जीनियरिंग कालेज व मेडिकल कालेज में बहुत कम अक होने पर भी दाखिला मिल जाता है और यदि विद्यार्थी हिन्दू हैं तो कहीं अधिक अक होने पर भी दाखिला नही मिलता।

सभी प्रदेशो ने अपने-अपने मेडिकल कालेजो को अपने-अपने प्रदेशो के विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित किया हुआ है। दिल्ली के विद्यार्थियो के लिए देश के किसी अन्य प्रदेश में दाखिला नही मिलता था और दिल्ली में मेडिकल कालेजो में दाखिला अको के आधार पर समस्त देश के लिए खुला था। अनेक प्रादेशिक विश्वविद्यालय हायर सेकेण्डरी में इतने अधिक अक देते थे कि उनके प्रदेश के अधिकाश विद्यार्थी दिल्ली के मेडिकल कालेजो मे प्रवेश प्राप्त कर लेते और उनसे कही अधिक योग्य दिल्ली के विद्यार्थी प्रवेश पाने से वचित रह जाते थे। अत हमने निर्णय किया कि दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत मेडिकल व इञ्जीनियरिंग कालेज के स्थान दिल्ली के छात्रो के लिए सुरक्षित कर दिए जाएं और केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत मेडिकल कालेजो मे प्रवेश के लिए चयन परीक्षा हो।

उस समय जम्मू कश्मीर के कुछ विद्यार्थी मेरे पास आए। उनके नम्बर ८० प्रतिशत से अधिक थे। वह मौलाना आजाद मेडीकल कालेज मे दाखिला चाहते थे। उस समय दिल्ली मे पुरुषो का यही मेडिकल कालेज था। उसमें कुछ स्थान उन प्रदेशो के विद्यार्थी के लिए हमने सुरक्षित रखे थे जहा कोई मेडिकल कालेज नही है।

जम्मू कश्मीर मे क्योकि मेडिकल कालेज था अत जम्मू कश्मीर के लिए सीटे सुरक्षित हो नही सकती थी। कश्मीर घाटी के उन हिन्दू विद्यार्थियो की विडम्बनापूर्ण परेशानी थी कि कश्मीर मेडिकल कालेज मे दाखिला इसलिए नही मिल सकता था क्योकि वह हिन्दू थे और देश के अन्य किसी भाग मे इसलिए नही कि वह कश्मीर निवासी थे और वहा मेडिकल कालेज था।

मुस्लिम नेता इस बात का विकट प्रचार करते रहते हैं कि आई० ए० एस०, आई० एफ० एस०, आई० पी० एस० आदि केन्द्रीय और प्रादेशिक सेवाओ मे मुसलमानो का प्रतिशत कम है अत उनके लिए विशेष स्थान सुरक्षित करने चाहिए। उनका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया गया कि इन सेवाओ मे भर्ती खुली परीक्षाओ और प्रतियोगिताओं के आधार पर होती है और उत्तर पत्रो मे नाम न होने के कारण धार्मिक आधार पर किसी से भेदभाव सम्भव ही नही। इस पर इनकी माग है कि धार्मिक आधार पर भेदभाव करके मुसलमानो को बिना योग्यता भी इन सेवाओ मे लेना चाहिए। भारत का सविधान इसकी अनुमति देता नही अत सरकार की ओर से यह रास्ता निकाला गया कि मुस्लिम व अन्य अल्पसख्यको को इन प्रशासनिक परीक्षाओ के लिए तैयार करने के लिए विशेष कक्षाए आयोजित की जाए। प्रदेश सरकारो को निर्देश दिए गए कि धार्मिक अल्पसख्यको के लिए, ऐसे कालेज खोले जायें व ऐसी कक्षाएँ आयोजित की जाए जो उन्हें नि शुल्क परीक्षाओ के लिए तैयार करें।

भारत सरकार के शिक्षा एव सस्कृति मन्त्रालय की सचिव की हैसियत से श्रीमती सरला ग्रेवाल ने १० सितम्बर, १९८४ को निम्न परिपत्र सभी राज्यो व केन्द्र शासित प्रदेशो के मुख्य सचिवो को लिखा—

"प्रिय

प्रधानमन्त्री ने साम्प्रदायिकता रोकने के उपाय पर ११-५-१९८३ के अपने टिप्पण में निर्देश दिए थे कि—

(१) क—अनेक पदो पर भर्ती खुली परीक्षाओ द्वारा होती है। प्राय अल्पसख्यक वर्ग शिक्षा पद्धति का लाभ उठाने मे पिछडने के कारण इन प्रतियोगी परीक्षाओ मे टिक नही पाते। इस अडचन को दूर करने के लिए अल्पसख्यक शिक्षा सस्थाओ मे ऐसी प्रशिक्षण कक्षाए लगाने को प्रोत्साहित किया जाये जिनसे यह लोग सफलता पूर्वक प्रतियोगी परीक्षाओ मे भाग ले सकें।

ख—अल्पसख्यको द्वारा ऐसा तकनीकी कौशल प्राप्त करने मे, जिससे वह पिछडे हुए हैं राष्ट्रीय विकास मे सहायता मिलेगी। सरकार व निजी सस्थाओ द्वारा अल्पसख्यक बहुल क्षेत्रों मे औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र व पोलीटेक्निक खोलने के प्रबन्ध किए जाए जिनमें अल्पसख्यक वर्ग के पर्याप्त सख्या मे प्रवेश को प्रोत्साहित किया जाये।

(२) प्रधानमन्त्री के यह निर्देश गृह मन्त्री ने एक पत्र के साथ आपके मुख्यमन्त्री उपराज्यपाल को २८-५-८३ को भेज दिए थे परन्तु एक वर्ष बीत जाने पर भी अल्पसख्यक शिक्षण सस्थाओ मे प्रशिक्षण कक्षाए प्रारम्भ करने मे विशेष प्रगति नही हुई। प्रधानमन्त्री का विचार है कि जब विश्वविद्यालय व कालेज विद्यमान हैं तो ऐसी कक्षाए कुछ महीनो में खुल जानी चाहिए थी।

(३) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अल्पसख्यक छात्रो के लिए प्रशिक्षण कक्षाए प्रारम्भ करने के लिए सहायता देने की योजना बनाई है। अपने प्रदेश के विश्वविद्यालय व कालेजो मे यह योजना विस्तारित कीजिए और उनमे अल्पसख्यक प्रशिक्षण कक्षाए प्रारम्भ करने के प्रस्तावो को तुरन्त अपनी सिफारिश के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पास भेजिये।

(४) १९७१ की जनसख्या के आधार पर उन क्षेत्रों की सूची भी सलग्न है जिनमें अल्पसख्यक वर्ग अधिक सख्या मे रहता है। आप ऐसे क्षेत्रो के जिला मजिस्ट्रेटो को

क्या हिन्दुस्तान मे हिन्दू होना अपराध है

निर्देश दे कि वह विश्वविद्यालय, अल्सख्यक शिक्षा सस्थाओ के प्रतिनिधियो व प्रमुख अल्पसख्यक नागरिको से बैठक करके विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से प्रतियोगी प्रशिक्षण कक्षाए खोलने पर विचार करे।

(५) अपने प्रदेश के ऐसे क्षेत्रो की सूची तैयार करे जिनमें अल्पसख्यक वर्ग पर्याप्त सख्या में रहता है और जहाँ कोई पोलिटेक्निक कालेज नही है। वहा पोलिटेक्निक कालेज खोलने का प्रस्ताव ३० सितम्बर तक इस मत्रालय के पास भेजिए और उसकी एक प्रति गृह मत्रालय के अल्पसख्यक प्रकोष्ठ में भी भेजिए।

पहली दृष्टि में यह पत्र मासूम सा लगता है परन्तु इसके परिणामस्वरूप हिन्दुओ से कितना अन्याय हुआ है इसका अनुमान लगाना कठिन था।

इन्जीनियरिंग कालेज व मेडिकल कालेजो मे दाखिले अब प्राय प्रतियोगी परीक्षाओ द्वारा होते है परन्तु पोलिटेक्निको मे दाखिला १० वी व १२ वी कक्षा में प्राप्त अको के आधार पर होता है। इन्जीनियरिंग कालेज, मेडिकल कालेज व पोलिटेक्निक कालेजो मे प्रशासन ने प्रवेश का अपना कोटा निर्धारित कर रखा था। मैंने अपने काल मे प्रशासन का कोटा समाप्त कर प्रवेश को केवल विश्वविद्यालय व हायर सेकेण्डरी बोर्ड की परीक्षाओं मे प्राप्त अको के आधार पर कर दिया।

एक नम्बर कम होने पर भी किसी को दाखिला न मिल सके, इसके कठोर प्रबन्ध कर दिए गए। सिफारिश का नामोनिशान मिटा दिया गया था। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियो को छोडकर शेष सब बिना धार्मिक व अन्य भेदभाव के योग्यता के आधार पर दाखिला पाते थे।

परन्तु सरकार ने १९८४-८५ मे केवल अल्पसख्यको को प्रवेश देने के लिए दस पोलिटेक्निक देश मे खोल दिए। राज्य सभा में ४ दिसम्बर, १९८५ को दिए गए उत्तर के अनुसार इनमे से दो पोलिटेक्निक दिल्ली में और एक-एक अलीगढ, लखनऊ, मुरादाबाद, अजमेर, गोआ, भोपाल, राची और किलाकराई (तमिलनाडु) मे खोला गया है। अल्पसख्यको के लिए और भी पोलिटेक्निक खोलने पर बल दिया जा रहा है।

७० प्रतिशत अधिक अक प्राप्त किए बिना पोलीटेकनिक में दाखिला असम्भव है। परन्तु मुस्लिम व ईसाई विद्यार्थी को उपर्युक्त पोलिटेक्निको में जहा दाखिला उनके लिए सुरक्षित है काफी कम अक प्राप्त करने पर भी दाखिला उपलब्ध है।

देश में हिन्दुओ की जनसख्या ८४ प्रतिशत है जिसमे से अनुसूचित जातियो को छोड कर शेष ७० प्रतिशत है। इन ७० प्रतिशत मे से कम से कम ५० प्रतिशत ऐसे हैं जो मुसलमानो से भी अधिक गरीब हैं और झुग्गी-झोपडी, गदी बस्तियो, ग्रामीण क्षेत्रो, कटरो या रैनबसैरो में रहते हैं। ३५-४० करोड की इस जनसख्या के लोग अपना पेट काटकर अपना खून सुखा कर अपनी सतान को पढाए और १२ वी कक्षा मे उसके ७० प्रतिशत अक भी आ जाए परन्तु उसे पोलिटेक्निक मे दाखिला न मिले और उसी के साथ पढने वाले मुस्लिम विद्यार्थी को कही कम अक मिलने पर भी दाखिला मिल जाए तो उस हिन्दू विद्यार्थी के मन पर क्या बीतेगी। क्या उसके मन मे यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया नही होगी कि हिन्दुस्तान मे हिन्दू होना अपराध है।

केन्द्रीय व प्रादेशिक सेवाओ, पुलिस सेवाओ, बैंकिंग सेवाओं व अन्य बीसियों सेवाओ के लिए प्रतियोगी परीक्षाए होती हैं। इन में केवल मुसलमानो का प्रतिशत कम हो, ऐसी बात नहीं है। पब्लिक स्कूलो में पढने वाले, कई ट्यूशनें लगा सकने वाले, अमीर घरानो, प्रशासनिक सेवाओं के उच्च पदस्थ अधिकारियो की सन्तानें ही अधिकाशत इन परीक्षाओ में सफल होती है।

इन परीक्षाओ की तैयारी एक विशेष प्रकार की होती है। इसके लिए कुछ प्रशिक्षण सस्थाए हजारों रुपये प्रति मास लेकर लिखित एवं मौखिक परीक्षाओ की तैयारी कराती हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने जुलाई १९८४ में अल्पसख्यको को प्रतियोगी परीक्षाओं को तैयारी के लिए "प्रशिक्षण कक्षाओं" की योजना तैयार की। जिसका उद्देश्य केन्द्रीय व राज्य सरकारों की सेवा भर्ती की प्रतियोगी परीक्षाओ के लिए अल्पसख्यक समुदाय के व्यक्तियो को तैयार करना घोषित किया गया।

इसके अनुसार प्रत्येक विश्वविद्यालय में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई० ए० एस०), भारतीय विदेश सेवा (आई० एफ० एस०) व अन्य अखिल भारतीय सेवाओ के लिए १०० अल्पसख्यक विद्यार्थी, पी० सी० एस० व अन्य इसी स्तर की सेवाओ के ५० विद्यार्थी व बैंकिंग एल० आई० सी० आदि की प्रतियोगी परीक्षा के लिए ३०० विद्यार्थी प्रशिक्षित किए जाते हैं और प्रत्येक कालेज मे ५० अल्पसख्यक विद्यार्थी लिये जाते हैं।

लोकसभा मे २७ अप्रैल, १९८८ को श्री प्रमोद महाजन व श्री शकर सिह बघेला के प्रश्न के उत्तर में श्री एल० पी० शाही ने बताया कि दस विश्वविद्यालयो—आगरा, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, भोपाल, कालीकट, गौहाटी, गोरखपुर, जामिया मिलिया इस्लामिया, लखनऊ व मेरठ विश्वविद्यालयो तथा इनके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के पाच, केरल के दो, मध्य प्रदेश, गुजरात व तमिलनाडु के एक-एक कालेज मे मुस्लिम व ईसाई परीक्षार्थियो के लिए यह प्रशिक्षण कक्षाए प्रारम्भ हो चुकी हैं और लगभग ३० लाख रुपये उसके लिए अनुदान दिया जा चुका है। शेष विश्वविद्यालयो व कालेजो मे यह कक्षाए शीघ्र प्रारम्भ की जायेंगी।

स्थिति यह है कि देश भर मे मुस्लिम, ईसाई व अन्य अल्पसख्यको की प्रमुख केन्द्रीय व सरकारी पदो, पुलिस, बैंक, इन्श्योरेंस आदि की प्रतियोगी परीक्षाओ की तैयारी के लिए मुफ्त प्रशिक्षण प्राप्त होता है और उनसे अधिक गरीब, अधिक विपन्न हिन्दू या तो हजारो रुपये खर्च कर यह प्रशिक्षण प्राप्त करें अथवा पैसे की कमी के कारण प्रतियोगी परीक्षाओं मे बैठने का सपना ही छोड दें।

एक साथ पढने [illegible] एक जैसी आर्थिक स्थिति वाले अपने मुसलमान मित्र को नि शुल्क यह प्रशिक्षण प्राप्त करते देख लाचार हिन्दू परीक्षार्थी के मन में यह भाव क्यों पैदा नही होगा कि उसका कसूर केवल इतना है कि हिन्दुस्थान में वह हिन्दू होकर पैदा हुआ।

तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने ११ मई, १९८३ को सभी केन्द्रीय मन्त्रियो को पत्र लिखकर अपने १५ सूत्री अल्पसख्यक कार्यक्रम की घोषणा की थी जिसके अनुसार केन्द्रीय पुलिस दलों, प्रदेशो की पुलिस सेवाओ, बैंको, रेलवे, पब्लिक सेक्टर सस्थानो में मुसलमानो, ईसाइयो की भर्ती में विशेष बल, और ध्यान देने, चयन समितियो मे भी अल्पसख्यको को रखने, बैंको से अल्पसख्यको को ऋण की विशेष सुविधाए देने के निर्देश दिए गए थे।

प्रधानमन्त्री ने इन १५-सूत्री कार्यक्रम के अतिरिक्त और भी निर्देशों के साथ यह भी घोषणा की कि १५ सूत्री कार्यक्रम के अतिरिक्त और भी कदम उठाए जायेंगे। गृह मन्त्रालय में एक विशेष अल्पसख्यक सेल खोला जायेगा आदि-आदि। श्रीमती गाधी ने विश्वास प्रकट किया कि १५-सूत्री कदमों व अन्य पगों से, जो बाद मे उठाए जाएगे, मुसलमान व अन्य अल्पसख्यक राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलुओ मे पूरी तरह भाग लेगे और राष्ट्रीय एकता के कार्य को आगे बढाएगे।

अल्पसख्यक आयोग पहले ही था। १९८३ के बाद गृह मन्त्रालय में अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की स्थापना की गई, शिक्षा मन्त्रालय में अल्पसख्यक सेल बनाया गया, केन्द्र में प्रधानमन्त्री की अध्यक्षता मे १८ सूत्री निर्देशो की मानिटरिंग के लिए अल्पसख्यक समिति और प्रदेशों में मुख्य मन्त्रियो की अध्यक्षता मे ऐसी समितिया गठित की गईं, जिनकी बैठकें अनिवार्य रूप से तीन महीने में एक बार और जिला कलेक्टर व डिविजनल कमिश्नरो की अध्यक्षता में पुनर्गठित अल्पसख्यक समितियो की बैठक एक मास में एक बार करने का नियम बना दिया गया। इन सब समितियो में तथा लोक सभा, राज्य सभा में प्रश्नोत्तरो व बहसों में बार-बार अल्पसख्यको के विशेष अधिकारो व सुविधाओं के प्रश्न उठाए गए जिस से हिन्दुओ से अधिक अधिकार व सुविधाए अल्पसख्यको को मिलती चली गई।

रिजर्व बैंक ने सभी बैंकों को निर्देश दिए कि अल्पसख्यक यदि ऋण के लिए आवेदन दें तो उन्हें तुरन्त ऋण देने के लिए विशेष पग उठाए जायें। आम मामलो मे यानी हिन्दुओं के मामले में ऋण के लिए मकान, जायदाद का आभूषणादि गिरवी रखे जाते हैं, परन्तु अल्पसंख्यको के लिए यह नियम

बना दिया गया कि जो ऋण उन्हे दिया जाये उस ऋण से कारोबार कर के ऋण चुकता किया जा सकता है अथवा नही केवल यह देखा जाये

सभी बैंको को यह भी निर्देश दिए गए हैं कि बैंको मे भर्ती मे अल्पसंख्यको की भर्ती के लिए विशेष प्रयत्न किए जाय। साक्षात्कार समितियो मे अल्पसंख्यक समुदाय को अवश्य स्थान दिया जाय।

देश मे ४० जिले चुने गए हैं जिन्हे पहले तो अल्पसंख्यक प्रभुत्व के जिले घोषित किया गया। जब लोक सभा में इस पर आपत्ति उठाई गई कि जिन जिलो मे मुसलमानो की सख्या १५ या २० प्रतिशत है वह मुस्लिम प्रभुत्व के जिले कैसे हो गए? इस पर उन जिलो का नाम करण अल्पसंख्यक प्रभुत्व के स्थान पर अल्पसंख्यक सकेंद्रित जिले कर दिया गया है। इन मे से १२ जिले उत्तर प्रदेश के, ८ प० बंगाल के, ५ केरल के, ३ बिहार के, २ कर्नाटक के, २ महाराष्ट्र के, आन्ध्र प्रदेश के एक एक हरियाणा मध्य प्रदेश राजस्थान व गुजरात के हैं।

१८ मार्च १९८८ को लोक सभा मे मुस्लिम लीग के श्री जी० एम० बनातवाला के प्रश्न के उत्तर मे श्री एदुयार्द फलेरो ने बताया कि इन ४० जिलो मे एक एक बैंक को प्रमुख रूप से अल्पसंख्यको की जिम्मेदारी दी गई है। इन बैंकों ने अल्पसंख्यको को ऋण प्रदान को मानिटर करने के लिए स्पेशल आफिसरो की नियुक्ति कर दी है। इसके साथ ही बैंको मे अल्पसंख्यको की भर्ती को मानिटर करने के लिए सम्पर्क अधिकारियो की भी नियुक्ति हो चुकी है।

श्री फलेरो ने आगे बताया कि सभी बैंको को कहा गया है कि अल्पसंख्यको मे ऋण के प्रवाह को बढ़ाने के लिए उपाय और उठाये।

( ) प्रत्येक बैंक मे अल्पसंख्यको मे ऋण प्रवाह को मानिटर करने के लिए एक विशेष कक्ष गठित किया जाये

( ) देश स्तरीय बैंकिग की समितियो व जिला स्तरीय सलाहकार समितियो की बैठको मे अल्पसंख्यको को ऋण दिलाने मे हुई प्रगति की निरन्तर समीक्षा की जाये

( ) जहां कहीं भी अल्पसंख्यको की अधिक आबादी है और विशेषकर इन ४० जिलो मे सरकार के गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो का विशेष प्रचार किया जाये

विशेष रूप से नियुक्त अधिकारी अल्पसंख्यक समुदाय मे बैंको के ऋण प्रदान कार्यक्रमो का प्रचार करे और ब्राच मनेजरो के सहयोग से अल्पसंख्यको के हित के लिए उपयुक्त योजनाए तैयार करे।

४० जिलो के बैंको द्वारा अल्पसंख्यको को दिए गए ऋण का ब्यौरा निर्धारित प्रफार्मा पर प्रत्येक तीन महीने मे तथा शेष सब बैंको द्वारा प्रत्येक छह महीनो मे भेजा जाये।

इसके अतिरिक्त सरकार ने एक कक्ष की स्थापना की है जो देखेगा कि १५ सूत्री कार्यक्रम के दिशा निर्देशो के अनुसार अल्पसंख्यको को नौकरियो मे भर्ती हो रही है अथवा नही

यह तो समझ मे आता है कि सरकार इस बात का प्रबन्ध करे कि धर्म मजहब के आधार पर भेद भाव न हो, परन्तु एक ही क्षेत्र मे रहने वाले एक ही कारोबार के लिए आवेदन देने वाले हिन्दू को ऋण न मिले और मुसलमान को तुरन्त ऋण मिल जाय तो गरीब बेरोजगार हिन्दू के रूप मे पैदा होकर उसने क्या अपराध किया है।

पुलिस की भर्ती के लिए अब विशेष आकर्षण पैदा हो गया है। लिखित परीक्षा मे प्रत्येक प्रदेश मे हजारो नौजवान बैठते हैं। फिर साक्षात्कार होता है। डाक्टरी परीक्षा होती है। कद और शारीरिक बनावट को नाप लेखा जोखा होता है। इस पर भी आम मान्यता है कि २० २५ हजार रुपये की रिश्वत दिए बिना अब पुलिस की नौकरी मिलनी नही। प्रधानमन्त्री के १५ सूत्री कार्यक्रम व दिशानिर्देशो के अन्तर्गत प्रादेशिक पुलिस सेवा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस सीमा सुरक्षा बल आदि मे अल्पसंख्यको विशेषकर मुसलमानो की भर्ती की विशेष मुहिम चलाई जा रही है। यद्यपि उनके लिए प्रतिशत निश्चित नही किया गया परन्तु इतनी पर्याप्त संख्या मे उनको भर्ती के आदेश दिए गए है कि पुलिस बल हिन्दू मुस्लिम मिला जुला प्रतीत हो। योग्यता के आधार पर भर्ती के स्थान पर धार्मिक आधार पर भर्ती संविधान के विरुद्ध तो है ही देश की एकता के लिए क्षोभकारक एवं ग्लानिकारक भी है।

इसी प्रकार मुस्लिम निजी कानून मे सरकार द्वारा दखल न देने मे भी विडम्बना पूर्ण और भेदभाव पूर्ण स्थिति पैदा हुई है भारत के सभी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

B N No 3238/77 Post in N D P S O on 8 9 2-90 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डो० (सो०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

(पष्ठ ७ से आगे)

नागरिको के लिए एक समान नागरिक सहिता का सिद्धान्त सविधान के निदेशक सिद्धान्तो मे सम्मिलित है। दण्ड प्रक्रिया सहिता यद्यपि भारत के सब नागरिको के लिए एक समान है परन्तु यह सहिता मुसलमानो के लिए पथक है और सरकार ने सविधान के निर्देश के अनुसार उसे एक समान बनाने के स्थान पर शाहबानो केस मे ता दण्ड प्रक्रिया सहिता मे ही सशोधन कर कठमुल्लापन के आगे घुटने टेक दिए।

१९६७ मे मेरे मुख्य कार्यकारी पार्षद बनने के कुछ ही दिनो बाद एक घटना हुई कि दिल्ली के एक प्रसिद्ध नेता ने तीसरा विवाह कर लिया। पहली पत्नी के रहते दूसरा विवाह कानूनन अपराध है। उनकी पहली पत्नी की ओर से एक सबधी मेरे पास आये और उन्होने अनुरोध किया कि प्रशासन हस्तक्षेप करे और उस विवाह को अवैध करार ... करवा दे। विभाग मे मैने ... देने को कहा। उस नेता ... चला और उसका ... वकील मित्र मेरे पास आए ... कहा कि विवाह तो हो चुका है। उसकी पहली पत्नी ने न्यायालय मे आपत्ति नही की है और फिर उसने कहा कि हमारे पास दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम का सर्टीफिकेट है कि उक्त विवाह से पूर्व वह मुसलमान बन चुका था। अब यदि आप चाहते हैं कि वह सदैव के लिए मुसलमान बन जाए तो आप कार्यवाही करे।

इस घटना के बाद तो इस प्रकार के बीसियो केस मेरे ध्यान मे आए। लाजपतनगर की आर्यसमाज के प्रतिनिधि मेरे पास आए कि उनके क्षेत्र की एक युवती के पति ने दूसरा विवाह कर लिया है। युवती और उसके बच्चो को घर से निकाल ... गया है। शिक्षा विभाग ने जब उसके विरुद्ध कार्यवाही प्रारम्भ की तो उसका बचाव था कि विवाह से पहले वह मुसलमान बन गया था। सरकारी कर्मचारी बिना अनुमति दूसरा विवाह नही कर सकता। इस नियम के आधार पर जब कार्यवाही की गई तो उसने भी वह हथियार इस्तेमाल किया कि यदि उसके विरुद्ध कार्यवाही की गई तो वह हमेशा के लिए मुसलमान बन जायेगा। न जाने कितने ऐसे कर्मचारियो के मामले मेरे पास आये जो दूसरा विवाह करने के लिए मुसलमान बन गए थे।

एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह अनैतिक है अनुचित है। महिलाओं पर अत्याचार है अन्याय है और उसे सहन नही करना चाहिए। परन्तु एक व्यक्ति हिन्दू है तो एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह नही कर सकता। परन्तु वही व्यक्ति यदि अपना नाम मुसलमान रख ले, इमाम से मुसलमान बनने का प्रमाण पत्र ले आए तो उसे खुली छूट है कि एक नही दो नही तीन पत्नियों के रहते चौथा विवाह कर ले। भेदभाव दूर करने का हल यह नही कि हिन्दुओ को भी दो या अधिक विवाह करने की अनुमति दी जाये अपितु मुसलमानो के इस अवाछित अधिकार पर प्रतिबध लगाना चाहिए।

इस प्रकार के भेदभाव पक्षपात पूर्ण रवैये से कुछ समय के लिए अल्पसख्को को लाभ हो सकता है। यह भी ठीक है कि हिन्दू हिन्दू के नाते प्राय नही सोचता परन्तु सहन करने की भी एक सीमा होती है। अपने ही देश में जहा वह ८६ प्रतिशत है यदि उनसे द्वितीय श्रेणी के नागरिक का व्यवहार किया जायगा तो भारत मे सेक्युलरिज्म जो हिन्दुओ की उदारता के कारण कायम है, कब तक चल पायेगा?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली नं० १७, ... दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक १७ रविवार १८ फरवरी १९९० फाल्गुन सम्वत् २०४६ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत् १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

महर्षि दयानन्द के महान् जीवन से प्रेरणा प्राप्त करें !
अज्ञान, अन्धकार, पाखण्ड को दूर करने का व्रत लें !
महर्षि बोधोत्सव धूमधाम से मनायें !

शालीमार बाग मे—

यज्ञशाला का शिलान्यास

आर्यसमाज शालीमार बाग बी० जे० पश्चिमी मे यज्ञशाला का शिलान्यास वयोवृद्ध आर्यनेता श्री महाशय प्रेमराज जी के कर कमलों से समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह के अध्यक्ष, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज के अधिकारियों का साधुवाद करते हुए आशा व्यक्त की कि यहा पर प्रतिदिन यज्ञ होगा तथा सभी मिलकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सलग्न होगे। उन्होंने यज्ञ की उपादेयता के विषय में कहा कि यह श्रेष्ठतम कर्म है तथा इस से मनुष्य का आध्यात्मिक सामाजिक एव शारीरिक विकास सम्भव है।

डा० महेश विद्यालकार ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यहां पर शीघ्र ही आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण किया जाए। उन्होंने पूर्ण सहयोग का भी आश्वासन दिया। आर्यसमाज के प्रधान डा० ओ३म्-प्रकाश मान ने अभ्यागतो का स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री व्रजभूषण तायल और श्री चमनलाल कपाही ने पांच-पांच हजार रुपये दान की घोषणा की। महाशय प्रेमराज जी ने पाच हजार और श्री साहिबसिह राणा ने पत्थर के कार्य पर सम्पूर्ण व्यय देने की घोषणा की।

बृहस्पतिवार, दिनांक २२ फरवरी को

अमर शहीद
स्वामी श्रद्धानन्द महाराज का
जन्म-दिवस समारोह

दिल्ली नगर निगम की ओर से महान् राष्ट्रवादी, निर्भीक आर्य सन्यासी, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का जन्म दिवस बड़े समारोह पूर्वक बृहस्पतिवार दिनाक २२ फरवरी १९९० को प्रातः १० बजे मनाया जाएगा, जिसमें वहां विभिन्न स्कूलों के बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे वहां आर्यसमाज तथा नगर निगम के नेता और अधिकारीगण अपने श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे।

मधुमेह चिकित्सा केन्द्र का उद्घाटन

आर्यसमाज अशोकनगर नई दिल्ली में ४ फरवरी १९९० को डायबीटिक केयर सैण्टर (मधुमेह चिकित्सा केन्द्र) का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय ससत् सदस्य श्री मदनलाल खुराना ने कहा कि आर्यसमाज का योगदान राष्ट्र को ऊँचा उठाने मे सदा से रहा है। आध्यात्मिकता के साथ-साथ राजनैतिक चिन्तन को भी आर्यसमाज ने प्रभावित किया है। भारत का सविधान आर्यसमाज के सिद्धान्तो एवं मन्तव्यो से प्रभावित है। आर्यसमाज ने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र मे भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

समारोह की अध्यक्षता, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने की। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज अशोक नगर पश्चिमी दिल्ली के केन्द्र में स्थित है तथा यहा पर शुरू किया गया, यह केन्द्र सम्पूर्ण दिल्ली मे ऐसे केन्द्रों का आरम्भ बिन्दु होगा। हमारी कामना यह नही है कि अधिक बीमार यहा आएँ, बल्कि हमारी कामना है कि जो भी आए, उसे वह ज्ञान मिले जिसके फलस्वरूप वह कभी बीमार न हो। "कामये दुखतप्ताना प्राणिनाम् आर्त्तिनाशनम्" इस अवसर पर क्षेत्रीय आर्यसमाजों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सस्थाओं के अधिकारी भारी सख्या मे उपस्थित थे।

दिल्ली की आर्यसमाजो तथा शिक्षण सस्थाओ की ओर से—

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली
के तत्त्वावधान मे
ऋषि बोधोत्सव
शुक्रवार २३ फरवरी १९९० को
फिरोजशाह कोटला मैदान नई दिल्ली
में प्रात ८ बजे से साय ४ बजे तक मनाया जाएगा।

कार्यक्रम :

यज्ञ :	प्रात ८ बजे
ध्वजारोहण	प्रात ९ बजे
खेल प्रतियोगिता	प्रात १० बजे
भाषण प्रतियोगिता :	मध्याह्न १२ बजे
सार्वजनिक सभा :	मध्याह्न २ बजे

आर्यजन भारी संख्या में पधारें

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—सुखचन्द गुप्त

वेद-मनन

उपदेश

आज

—आचार्य यशपाल सुधांशु

वेद में अनेक प्रार्थनाएँ आज (अद्य) शब्द से प्रारम्भ हुई हैं। 'इम मे वरुण श्रुधी हवम अद्या च मृडय।' हे वरणीय प्रभो! मेरी पुकार सुनो, मुझे आज ही सुखी करो। 'मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविन कुरु।' मुझे आज ही मेधावी करो। 'वाचस्पतिर्बला तेषा तन्वो अद्य दधातु मे। वेदवाणी के स्वामिन्! पवित्र बलो से मेरे शरीर को भरपूर कर दो। 'विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये।' समस्त विद्वान् मेरा आज ही कल्याण करने वाले हो।

हमारे जीवन का स्वर्णिम कल आज पर ही निर्भर है, भविष्य को उज्ज्वल करने की आकांक्षा यदि हमारे मन मे है तो आज को सवारना होगा। आज जो हम ने बोया है, कल वही तो हम काटेंगे। कल हम अपने सपनो को हरे-भरे बगीचे मे विहार करना चाहते हैं तो उस के लिए आज ही तैयारी करनी होगी। आज उन समस्त इच्छित फल, फूलो के बीजो को बोना होगा, जिनको हम भविष्य मे पाना चाहेंगे। अगर आज को हम ने गवा दिया तो कल सुनहरी भविष्य की ओर नही बढ सकेंगे। न जाने कितने आज के पलों को, दिनो को, हम ने समय की धारा मे बहा दिया, और हम अवसर की प्रतीक्षा मे खड़े रह गये। समय या अवसर कभी किसी की प्रतीक्षा नही करते। उपर्युक्त मन्त्राशो मे याचक की तीव्र चाह अद्य शब्द से परिलक्षित होती है। आज ही" अब ही। सचमुच आज ही अब आप अपने को सुखी और मेधावी करना चाहेंगे तो आज ही उन साधनो को, अभ्यासो को अपनायेंगे, जिन से आप सुखी और मेधावी बन सकते हो।

किसी बुराई या व्यसन मे छुटकारा पाने के लिए हमे आज ही प्रतिज्ञा करनी चाहिए। अगर यह सोच लिया कि कल छोड देंगे तो वह कल फिर नही आता और अपनी लत से छुटकारा नही पाया जा सकेगा। कल फिर उस तरह की सात्विक भावना नही आ सकती। कल फिर व्यसनों के व्यामोह से हम घिर जायेंगे।

दान देने की प्रबल भावना आपके दिल मे है तो वह त्यागमयी वृत्ति कल आप से तिरोहित हो जायेगी। लोभ मन मे समा जायेगा। अपने गिरते स्वास्थ्य के प्रति आपको चिन्ता हुई, आपने निश्चय किया प्रतिदिन व्यायाम करूँगा। अगले दिन आंख नही खुली, आलस्य मे पडे रहे और रोगो को निमन्त्रण देते रहे, वह स्वर्णिम कल भविष्य के विवर मे जा छिपा। विषयो से विरक्त होने पर जब पूर्ण वैराग्य का निश्चय हो जाये तो उसी दिन सन्यास की इच्छा करनी चाहिए और अगर फिर कल या फिर कभी पर अपने को छोड दिया तो अनेक रागमयी विचारधाराएँ आपका मन प्रकम्पित कर देंगी। और महानता की तरफ बढने से वचित रह जायेंगे। शतपथ ब्राह्मण मे कहा गया है—"न श्व श्वस उपासीत। को हि मनुष्यस्य श्वो वेद ॥

कल करूँगा, कल तो कर ही दूगा, ऐसा नही कहना चाहिए, मनुष्य के कल को कौन जानता है।

सन्त की वाणी विचारणीय है—

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब।

कल तो काल का नाम है। आज कर्म का दिन है और कल तो फल का दिन है। अत आज ही अपने जीवन को आध्यात्मिक पथ की ओर ले चलिए। आज ही समय की डोर को अपनी मुट्ठियो मे कस लीजिए। आज जो अवसर आप को मिला उसे खोइये मत। उत्तम कर्म कल तुम्हे कीर्ति प्रदान करेंगे। उन शुभ कर्मों के प्रति आज ही सजग होइये। 'अद्य जीव माश्व।' आज को सामने रख जीने का प्रयत्न करो न कि कल पर। कल की आशा को विश्वास मे बदलने के लिए आज को अपनाना होगा। वर्तमान के ललाट पर पसीने की बूदें भविष्य का मोती हैं।

उज्ज्वल अतीत' था
भविष्य भी महान है।

ओ३म् ये त्रिषप्ता परि यन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रत।
वाचस्पतिर्बला तेषा तन्वो अद्य दधातु मे ॥ ३१

वाचस्पति दो बल अपना

—देवनारायण भारद्वाज

—*—

बल वाणी के तुम स्वामी हो, वाणी हमको भी मिल जाये।
हे वाचस्पति दो बल अपना, बोलना हमे भी आ जाये ॥

कर दिया सात को तीन गुणा
तब यही अक इक्कीस बना
तीन वचन के सात रूप में
सब शब्दो का सगीत बना।

पिगल व्याकरण वाक्य आयें, भाषण हमको भी आ जाये।
हे वाचस्पति दो बल अपना, बोलना हमे भी आ जाये ॥

कर दिया सात को तीन गुणा
तब यही अक इक्कीस बना
महत् अहम् तन्मात्राओ के
सत् रज तम से जग रूप बना।

पूर्ण प्रकृति की विद्याओ के, प्रभु हम भी वक्ता हो जायें।
हे वाचस्पति दो बल अपना, बोलना हमे भी आ जाये ॥

प्यारे परमेश्वर वाचस्पति
अभिव्यक्ति प्रकृति मे दे दो गति
सृष्टि ज्ञान हो देह दृष्टि मे
तन मे धारण हो शक्ति सुमति।

इस सृष्टि ज्ञान के वाचन से, अध्यात्म प्रगति हम पा जायें।
हे वाचस्पति दो बल अपना, बोलना हमे भी आ जाये ॥

—आर्यसमाज शाहगज (उ० प्र०)

समझ जाये जो आज का सघर्ष, कल की सफलता कि ये वर्तमान [illegible] है। [illegible]

"अतः जो आज वर्तमान है उसे ही देखिए, उसे आज ही सवारिये, [illegible]

पता—[illegible]
दिल्ली-[illegible]

ओ३म्
आर्य सन्देश



सर्वविध स्वतंत्रता के उपासक स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज उन महान् विभूतियो मे एक थे जो देश और धर्म की सेवा करते हुए, मनुष्य मात्र को परतन्त्रता की जजीरों से मुक्त कराने के लिए, सभी भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने के लिए, दलितो का उद्धार करने के लिए, महिलाओ का कल्याण करने के लिए, भटके हुओ को रास्ता दिखाने के लिए, अपना धर्म छोडकर अन्यत्र गए हुए लोगो को शुद्ध करने के लिए, युवा-पीढी को सस्कारवान् बनाने के लिए आजीवन मेहनत करते रहे। भारत की सास्कृतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए—तथा इन्ही क्षेत्रो मे भी व्याप्त परतन्त्रता की शृ खला को तोडने के लिए उन्होंने उस कठिन समय में भी गुरुकुल की स्थापना की थी। उनका यह गौरवमय कार्य विदेशी आधिपत्य को एक चुनौती थी। हम आज भौगोलिक दृष्टि से तो स्वतन्त्र हैं, परन्तु हमारा चिन्तन अभी भी गुलामी के आयने में से झाकता प्रतीत होता है। इसका निदान केवल मात्र भारतीय धर्म, ।चार-विचार एव सस्कृति की शिक्षा देने से ही सम्भव है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, पूर्व नाम महात्मा मुन्शीराम का जन्म २२ फरवरी १८५६ को जिला जलधर पजाब के तलवन ग्राम मे हुआ। इस अवसर पर स्वामी जी महाराज की स्मृति मे नमन करते हैं और परमात्मा से कामना करते हैं कि हम उस मार्ग पर चलें जो कल्याण मार्ग के पथिक का मार्ग है। हम भी उसी राह के राही बनें।

सीताष्टमी

आराधना का उल्लास श्रद्धा से ही अर्जित किया जा सकता है। उत्प्रेरक तत्त्व की तरह बौद्धिक विवेचन उस अर्जन में सहायक तो हो सकता है, लेकिन अपनी एकाकी उपस्थिति मे वह निष्क्रिय ही सिद्ध होता है। इसलिए आराधना की भावभूमि रहते हुए, लोग जो चर्चाएं करते हैं, वे बौद्धिक दृष्टि से भले ही बे स्वाद हो, लेकिन स्वभाव की दृष्टि से वे उल्लास बढ़ाती ही हैं। उदाहरण के लिए फाल्गुन बदी अष्टमी के दिन सीताष्टमी का पर्व मनाते हुए जानकी के चरित और गुणो की चर्चा प्रभु-भक्तो मे एक आह्लाद की भावना को जन्म देती है।

स्त्री जाति को विधाता ने ललित, स्निग्ध, मृदु, मधुर गुणो की राशि बनाया है। यह कहा गया है कि यदि मनुष्य मे नारी के गुण आ जाए तो वह देवता हो जाता है। मधुर स्वभाव, वेदना की प्रसाद-प्रवृत्ति, सभी की कल्याण कामना—ये भावनाएँ स्त्रियो मे होती हैं और मनुष्य इन्ही गुणो को पाने की आकांक्षा करता है। नारी दया की अवतार, प्रेम की परम-धाम, सौन्दर्य की प्रतिमा, मधुरता की मूर्ति है। वह ससार का मूल है। वह गृहस्थाश्रम की जीवन शक्ति है।

जिस नारी जाति की इतनी महिमा है। सभ्य समूहो में जिसका समादर है। आदि सृष्टि से समस्त ससार में सर्वोत्कृष्ट और आदर्श रूप मे किस देवी मे इस वसुन्धरा को अपने जन्म से पवित्र किया था, यह प्रश्न मानव समाज की शिक्षा के लिए इतिहास की दृष्टि से अत्यावश्यक और महत्त्वपूर्ण है। इसके उत्तर के लिए सारे ससार के प्राचीन और अर्वाचीन स्त्री रत्नों के चारु चरित्रो की तुलनात्मक दृष्टि से जांच पड़ताल की जाए तो सर्वसम्मति से एक ही नाम निर्धारित होगा और वह तत्त्वज्ञानी-शिरोमणि मिथिलाधिपति राजर्षि विदेह जनक की आत्मजा और सूर्यकुल कमल दिवाकर मर्यादा पुरुषोत्तम महाराज रामचन्द्र की धर्मपत्नी सती शिरोमणि श्री सीता जी का प्रात स्मरणीय पवित्र नाम है।

आओ हम सीताष्टमी के पर्व को मनाते हुए, माता सीता के गुणो का ध्यान करें और उन्हें अपने जीवन मे लाने का प्रयास करें।

—मूलचन्द गुप्त

स्वामी श्रद्धानन्द

कवि कस्तूरवा 'घनसार'

(१)

सन्यासी बड़ो था शेर, श्रद्धा का सबल पुञ्ज,
श्रद्धा को बताई स्वामी श्रद्धानन्द नाम था।
श्रद्धा साथ श्रेष्ठ श्रुत कीर्ति श्रेयस हेतु,
श्रद्धा से किया था कार्य, श्रद्धा का सुधाम था॥

देश सेवा दीन सेवा, श्रद्धा से बताते चले,
दलितोद्धार शुद्धि यही मुख्य काम था।
पजाब, बिहार, मालाबार में प्रचार किया,
हिन्दू-सगठन हेतु, किया न आराम था॥

(२)

अत्यधिक रुचि लेते, महिला सुधार हेतु,
कन्या गुरुकुल खोल, विद्या-दान दिया था।
तड़फ असीम रही, अहर्निश कार्य किया,
जगाये जनो को, श्रद्धा साथ मान दिया था॥

नील-गिरि 'नीलधारा विशाल जगल बिच,
झोंपड़ियाँ बनाई ब्रह्मचारी-ध्यान किया था।
निजी अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया,
गुरुकुल बना स्वामी वेद-ज्ञान दिया था॥

(३)

देशभक्त रहे बहुत वीर वर सावरकर,
प्रेरणा स्वामी से लेके, नाम चमकाया था।
श्रद्धानन्द शुद्धि-सगठन हिन्दुओ का किया,
आये थे मैदान शखनाद को बजाया था॥

ब्रिटिश सत्ताधीशो ने भगाना चाहते स्वामी
कठोर-कदम आगे, चल के दिखाया था।
दिल्ली सत्याग्रह मे जो, सैनिको की सही मार,
छाती आगे खोली स्वामी नही घबराया था॥

(४)

भारतीय-इतिहास रहेंगे अमिट लेख,
जामा मस्जिद बैठ भुजा को उठाई थी।
हिन्दू-मुस्लिम सत्य एकता के धर्म पर,
बोल के अजीब एक छाप को लगाई थी॥

देश-भक्ति धर्म के अविच्छेद सम्बन्ध रहे,
ऐसी भावना को लेके, सहानुभूति दिखलाई थी।
"घनसार' स्वामी श्रद्धानन्द ने जो काम किया,
भारत में प्रचार की धूम जो मचाई थी॥

(५)

अब्दुल रशीद एक हत्यारा कनिष्ठ खल
अचानक आके गोली छाती पर दाग दी।
स्वामी जी शहीद हुए, दिसम्बर तेबीस को,
दुष्ट ने हमारे पूज्य देवता को आग दी॥

सद्धर्म की वेदी पर, समर्पित किया वपु,
भाग्य का लेखा ? चक्र, अजीब भावी भाग दी।
अपूर्व कार्य साथ, वैदिक प्रचार युक्त,
देश के उत्थान भाव लेके, काया त्याग दी॥

—कवि कुटीर, पीपाड़ शहर (राज०)

स्वामी श्रद्धानन्द

मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूं !

—पं० जवाहरलाल नेहरू

स्वामी श्रद्धानन्द के तेईस दिसम्बर सन् १९२६ के बलिदान के विषय में प० जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्म कथा—मेरी कहानी में पृष्ठ २३३-२३४ पर जो उल्लेखनीय भाव व्यक्त किये हैं वे यहां प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

"साल १९२६ के आखिर में हिन्दुस्तान में एक भारी दुखद घटना से अधेरा-सा छा गया। इस घटना से हिन्दुस्तान भर घृणा व रोष से काप उठा। उस से पता चलता था कि जातीय वैमनस्य हमारे लोगों को कितना पीछे गिरा सकता था।

स्वामी श्रद्धानन्द को, जबकि वे बीमारी में चारपाई पर पडे हुए थे, एक धर्मान्ध मुसलमान ने कतल कर दिया। जिस पुरुष न गोरखों की सगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी और उनकी गोलिया का सामना किया था उसकी कैसी मौत!

करीब-करीब आठ वर्ष पहले इसी आर्यसमाजी नेता ने दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद की वेदी पर खडे होकर हिन्दुओं और मुसलमानों की एक बहुत बडी सभा को एकता का और हिन्दुस्तान की आजादी का उपदेश दिया था। उस विशाल भीड ने 'हिन्दू-मुसलमानों की जय" के शोर से उनका स्वागत किया था। और मस्जिद से बाहर गलियो में उन्होने उस ध्वनि पर अपने खून की एक सयुक्त मोहर लगा दी थी। और अब अपने ही देश-भाई द्वारा मारे जाकर उनके प्राण-पखेरू उड गये। हत्यारा यह समझता था कि वह एक ऐसा अच्छा काम कर रहा है जो उसे बहिश्त को ले जायेगा।

विशुद्ध शारीरिक साहस का, किसी भी अच्छे काम में शारीरिक तकलीफ सहने और मौत तक की परवाह न करने वाली हिम्मत को

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वीर हकीकत से लाखों बच्चे भारत को दो जगदीश्वर !

—प० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री

वीरो की है जन्मभूमि ये, भारत प्यारा देश हमारा।
मुक्त कण्ठ से जिसके यश की, गाथा गाता है जग सारा॥
जब-जब देश धर्म के ऊपर, सकट के है बादल छाए।
मानवता के दुश्मन जब-जब, इस भारत पर चढ़ के आए॥
भारत वीर सपूत बढे तब, नही मौत का भी भय खाए।
भारत माता के चरणो में, वीरों ने निज शीश चढाए॥
हर-हर महादेव का गूजा, आसमान में पावन नारा।
मुक्त कण्ठ से जिसके यश की, गाथा गाता है जग सारा॥
सतरह सौ चौतीस ईसवी मे, लाहौर शहर में बालक!
वीर हकीकत धर्म दिवाना, वैदिक मर्यादा का पालक॥
लाखो यवनो बीच शेर की, तरह निडर वह खडा हुआ था।
राम, कृष्ण का सच्चा सैनिक, सत के ऊपर अडा हुआ था॥
धर्मवीर को धर्म धर्मियो, निज प्राणो से भी था प्यारा।
मुक्त कण्ठ मे जिसके यश की, गाथा गाता है जग सारा॥
कहने लगा नबाव हकीकत, बेटा बात मान ले मेरी।
मुसलमान बन सुख पाएगा, पगले क्यों करता है देरी॥
साप मरे लाठी ना टूटे, बचे जिन्दगी जिससे तेरी।
तुझ को मैं बेटी दे दूगा, समझ न इसमें हेरा-फेरी॥
खुदा कसम खाकर कहता हू, जो जग का है एक सहारा।
मुक्त कण्ठ से जिसके यश की, गाथा गाता है जग सारा॥
अगर बात ना मानी मेरी, तो तू पीछे पछताएगा।
मात, पिता रोऐंगे तेरे, सजा मौत की तू पाएगा॥
बोला तभी हकीकत मुझ को, तू पापी क्या समझाएगा।
सृष्टि का है नियम अटल ये, जो आया है वह जाएगा॥
धर्म नहीं छोड़ूगा मुझ को, मत दिखलाओ दुष्ट दुबारा।
मुक्त कण्ठ से जिसके यश की, गाथा गाता है जग सारा॥
धर्म न छोडा वीर हकीकत ने, हर्षित हो शीष कटाया।
देश धर्म के दीवाने ने, सकल विश्व में नाम कमाया॥
वीर हकीकत से भारत को, जगदीश्वर दो लाखों बच्चे।
देश-भक्त बलवान, सूरमा, धर्म प्रेमी मन के सच्चे॥
भारत माँ के तप: पूत ने, तन, मन, धन भारत पर वारा।
मुक्त कण्ठ से जिसके यश की, गाथा गाता है जग सारा॥

—ग्राम पोस्ट बहीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

१.	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम)		१ ५०
२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वितीय)		१ ५०
३	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२ ००
४	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ)		३ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग पचम)		३ ००
६	नैतिक शिक्षा (भाग षष्ठ)		३ ००
७	नैतिक शिक्षा (भाग सप्तम)		३ ००
८	नैतिक शिक्षा (भाग अष्टम)		३ ००
९	नैतिक शिक्षा (भाग नवम)		३ ००
१०	नैतिक शिक्षा (भाग दशम)		४ ००
११	नैतिक शिक्षा (भाग एकादश)		४ ००
१२	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
१३	धर्मवीर हकीकतराय	वैद्य गुरुदत्त	५ ००
१४	फ्लैश आफ ट्रुथ	डा० सत्यकाम वर्मा	२ ००
१५	सत्यार्थप्रकाश सन्देश	"	२ ००
१६	एनाटोमी आफ वेदान्त	स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
१७	आर्यों का आदि देश	" "	२ ००
१८	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	प० सच्चिदानन्द शास्त्री	५ ००
१९	प्रस्थान त्रयी और अद्वैतवाद	—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	२५.००
२०	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	" "	५ ००
२१	चत्वारो वै वेदा	" "	२ ००
२२	द्वैतसिद्धि	" "	५ ००
२३	आर्यसमाज आज के सदर्भ में	—डा० धर्मपाल, डा० गोयनका	२० ००
२४	हसता चल, हंसाता चल	स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती	६ ००
२५	दयानन्द एण्ड द वेदाज (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२६	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२७	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२८	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५०/-रु० सैकडा
२९	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	डा० रघुवीर	५०/-रु० सैकडा
३०	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका (सन् १९८३)		५ ००
३१	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्धशताब्दी स्मारिका १९८५		५ ००
३२	महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारिका १९८५		१०.००
३३	महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषांक		१०.००
३४.	ऋषिबोधांक		१० ००
३५	योगीराज श्रीकृष्ण विशेषांक		१० ००

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक् नहीं लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एवं नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

पुस्तक प्राप्तिस्थान—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

आर्यसमाज सरोजिनी नगर मे--

हकीकतराय बलिदान दिवस

आर्यसमाज भी आतकवाद का शिकार होता रहा है। धर्मवीर प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक आर्यों ने बाल हकीकतराय की तरह देश व धर्म के लिए बलिदान देकर एक नया इतिहास रखा है। ये उदगार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध ने आर्यसमाज सरोजनी नगर एव अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति के सयक्त तत्त्वाव धान मे आयोजित हकीकत राय श्रद्धाजलि समारोह वसन्तोत्सव कार्यक्रम मे व्यक्त किये।

स्वामी आनन्दबोध ने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द के सुधारवादी कार्यों को आगे बढा कर एव उनके आदर्शों पर चल कर समस्त ससार में शान्ति स्थापित की जा सकती है। स्वामी आनन्दबोध ने आर्यजनो को जागरूक होकर आग बढने का आह्वान किया ताकि वीर हकीकत राय के बलिदान का इतिहास फिर से न दोहराया जाये।

इस अवसर पर दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्म पाल ने धर्मवीर हकीकत को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि उस वीर बालक ने हिन्दू धम की रक्षा के लिए ए‹ अभूतपूर्व बलिदान दिया था और उसे स्मरण रखने का यही सच्चा उपाय है कि हम सब सगठित होकर धर्मान्तरण की समस्या का सामना कर और किसी भी हिंदू भाई को विधर्मी न होने द। प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूयदेव ने कहा कि हकीकत राय एक पुण्य आत्मा एव सस्कारी बालक था जिसने सिर कटाना स्वीकार किया परन्तु सर झकाना नही स्वीकार किया। उन्होने आगे कहा कि आज हमे अपने बच्चो मे धम व समाज सेवा के अच्छे सस्कार डालने चाहिए ताकि वे अच्छे नागरिक बन कर राष्ट्र सेवा कर सकें।

मूर्धन्य पत्रकार व आर्य जगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार ने कहा कि हकीकत राय के बलिदान के बाद एक यह हकीकत सामने आती है कि आज की शिक्षित पीढी धर्म प्रेमी नही है। वर्तमान पीढी को धर्मवीर हकीकत राय से प्रेरणा पाकर जागृति लानी चाहिये।

प्रख्यात वैदिक विद्वान प० यशपाल सुधाशु ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि रावी नदी के तट पर हकीकतराय का बलिदान युगो युगो तक हिन्दू जाति को बलिदान की प्ररणा देता रहगा। उन्होने अपनी विदेश यात्रा के सस्मरणो के साथ बताया कि इस्लामियत भारत मे ही नही विदेशो मे भी योजनाबद्ध तरीको से आतक फैलाकर इस्लाम को फैला रही है। अत भारतीयो को विशेष सावधानी बरतनी चाहिये।

इस स पूव भाषण, कविता आदि प्रतियोगिताओ मे विजयी बालकों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का सचालन समाज के उपप्रधान एव हकीकत राय समिति के मन्त्री श्री रोशनलाल गुप्ता ने कुशलता मे किया। इस अवसर पर देश की एकता व अखण्डता को सुरक्षित रखने के लिए कश्मीर से धारा ३७० को हटाये जाने का प्रस्ताव भी पारित किया गया।



आर्यसमाज न्यू मोतीनगर

धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस

आर्यसमाज न्यू मोतीनगर मे आयोजित धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस पर अनेक विद्यालयों के छात्र छात्राओ ने धर्मवीर हकीकत राय के जीवन पर भाषण प्रतियोगिताओ तथा अन्य सास्कृतिक कार्यक्रमो मे भाग लिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्म पाल ने विजताओ को पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर भाई महावीर श्रीकृष्ण अवतार श्री पी० सी० गुप्ता आदि सभी नेताओ ने वीर हकीकतराय के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्री तीर्थराम आय ने सभी अभ्यागतो का अभिनन्दन किया।

वधू का आवश्यकता

तीरथराम अस्पताल मे कार्यरत एम० बी० बी० एस० हृदयरोग विशेषज्ञ जिसकी आयु २७ वष है हेतु ब्राह्मण परिवार की एम० बी० बी० एस० लडकी की आवश्यकता है।

सम्पक कर—डा० हसराज शर्मा/ दीवानचन्द स्मारक अस्पताल, ओचन्दी, दिल्ली-३९

(पृष्ठ ४ का शेष)

मैं इस सजीव तस्वीर····

मैं हमेशा से प्रशसक रहा हू। मेरा खयाल है कि हम मे ज्यादातर लोग उस तरह की हिम्मत की तारीफ करते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द मे इस निडरता की मात्रा आश्चर्यजनक थी। लम्बा कद भव्य मूर्ति, सन्यासी के वेश मे बहुत उम्र हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी चमकती हुई आखें और चेहरे पर कभी कभी दूसरो की कमजोरियो पर आने वाली चिडचिडाहट या गुस्से की छाया का गुजरना, मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हू। अकसर वह मेरी आंखों के सामने आ जाती है।'

आर्य जगत के समाचार

श्री गजानन्द आर्य
विज्ञान परिषद् प्रयाग के अध्यक्ष

विख्यात उद्योगपति, समर्पित आर्य नेता एव परोपकारिणी सभा, अजमेर के महामन्त्री श्री गजानन्द आर्य वर्ष १९८९-९० के लिए 'विज्ञान परिषद् प्रयाग' के सभापति निर्वाचित हुए हैं।

ज्ञातव्य है कि 'विज्ञान परिषद् प्रयाग' की स्थापना इलाहाबाद विश्वविद्यालय परिसर में १० मार्च १९१३ को विज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु हुई थी। परिषद् द्वारा अप्रैल १९१५ से 'विज्ञान' मासिक पत्रिका और १९५८ से "विज्ञान परिषद् अनुसधान पत्रिका" त्रैमासिक शोध पत्रिका प्रकाशित की जा रही हैं। विज्ञान के विविध सामयिक विषयो पर अखिल भारतीय सगोष्ठियां भी समय-समय पर आयोजित की जाती हैं।

श्री गजानन्द जी आर्य को हार्दिक बधाई।

निर्वाचन सम्पन्न—

आर्यसमाज किरनगार्डन

आर्यसमाज किरनगार्डन नजफगढ रोड, नई दिल्ली-५९ का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री चौ० अमरजीतसिंह
मन्त्री—श्री सतीश कुमार अरोडा
कोषाध्यक्ष—जसवतराय महाजन

आर्यसमाज धार

आर्यसमाज धार (म०प्र०) का वार्षिक अधिवेशन दिनाक २८ जनवरी को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ

प्रधान—श्री सत्यन मित्तल
मन्त्री—श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी
कोषाध्यक्ष—श्री गजानन्द शर्मा

आर्यसमाज घोंडा

आर्यसमाज घोंडा, दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन श्रीमती ईश्वर देवी धवन प्रधाना क्षत्रीय आर्य उपसभा शाहदरा की अध्यक्षता मे दिनाक २६ जनवरी को सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री ओमप्रकाश गुप्त
मन्त्री—श्री लक्ष्मण दास गुप्त
कोषाध्यक्ष—श्री उत्तम प्रकाश

आर्यसमाज बिरला लाइन्स

आर्यसमाज बिरला लाइन्स, दिल्ली-६ का वार्षिक निर्वाचन दिनाक २८ जनवरी ९० को श्री राजसिंह मल्ला पर्यवेक्षक-दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री आर्यबन्धु जयप्रकाश
मन्त्री—श्री रामकिशन शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री देवदत्त गौतम

वार्षिकोत्सव सम्पन्न—

आर्यसमाज बांस बेड़िया

पश्चिमी बगाल के हुगली जिला स्थित बासबेडिया आर्यसमाज का ४९वां वार्षिकोत्सव २४, २५ एव २६ जनवरी को बडी धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर आर्य जगत के व्याख्याता डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, (नालन्दा), ब्रह्मचारी सत्यव्रत (हैदराबाद), श्री महावीर प्रसाद तार्किक चतरा (बिहार) के महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुए। इस अवसर पर सास्कृतिक सम्मेलन, पर्यावरण-सुरक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन भी आयोजित किये गये।

शोक समाचार—

श्री हरबंसलाल पुरी

आर्यसमाज रामाकृष्णापुरम सेक्टर-५ के प्रधान, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री हरबसलाल जी पुरी का निधन हो गया है श्री पुरी ने अपना समस्त जीवन आर्यसमाज की सेवा मे बिताया तथा अन्तिम क्षणो तक आर्यसमाज की सेवा मे लगे रहे।

श्री डी० के० भल्ला

सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पजाबी बाग की प्रिंसिपल एव कर्मठ कार्यकर्त्री श्रीमती बृजबाला भल्ला के पति श्री डी० के० भल्ला का अकस्मात निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार दिवगत आत्माओ के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट करती है तथा परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सद्गति के लिये तथा परिवार जनो को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

जोधपुर में—

स्वामी दयानन्द स्मृति मेला

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर की दिनाक २८।१।९० की कार्यकारिणी की बैठक मे दिनाक २७, २८, २९ सितम्बर, १९९० को जोधपुर में स्वामी दयानन्द स्मृति मेला अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

इस आयोजन को विशाल स्तर पर मनाने और इस अवसर पर वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन और सस्कृति-रक्षा सम्मेलन रखने का निर्णय लिया गया।

गुरुकुल गदपुरी में तोड़-फोड़

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जि० फरीदाबाद, हरियाणा आर्यसमाज की ३८ पुरातन शिक्षण-सस्थानो में से एक है—जो निर्धन तथा अनाथ बच्चों को नि शुल्क शिक्षा तथा भारतीय सस्कृति से पोषित कर रहे हैं। यह गुरुकुल सरकार से मान्यता प्राप्त है, तथा पिछले ५० वर्षों से जनता की सेवा कर रहा है। तथा गुरुकुल की व्यवस्था स्थानीय लोगो के दान और सहयोग से चल रही है।

दु ख का विषय है कि हरियाणा के निर्माण विभाग के अधिकारी गुरुकुल के ऐतिहासिक महत्त्व को न देखकर, नेशनल हाईवे को चौडा करने की आड में गुरुकुल के कुछ भाग को तोडने की धमकियां दे रहे हैं। जो सर्वथा अनुचित है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने प्रधानमन्त्री, उपप्रधानमन्त्री, उद्योग मन्त्री तथा मुख्यमन्त्री (हरियाणा) को पत्र लिखकर इस मामले मे हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है।

निःशुल्क स्वास्थ्य-परीक्षण

आर्यसमाज सैनिक विहार दिल्ली-३४ की ओर से बैंक कालोनी, सरस्वती मार्ग पर स्थित झुग्गी-झोंपडियो में रह रहे लोगों के स्वास्थ्य लाभार्थ २६ जनवरी को एक निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

समाज के प्रधान डा० (ले० कर्नल), जे० के० तलवाड तथा अन्य विशेषज्ञ डाक्टरों के दल ने इस शिविर में २०० लोगों के स्वास्थ्य की परीक्षा की, तथा निःशुल्क दवाइयां वितरित कीं।

आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन में २२ से ३१ मार्च १९९० तक १० दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के साथ योग, सांख्य तथा न्यायदर्शन के चुने हुए सूत्रो का अध्यापन भी किया जायेगा। शिविर शुल्क २००/- रुपये रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होगे, उनको योग्य जान कर शुल्क मे छूट दी जा सकेगी। इच्छुक शिविरार्थी १५ मार्च से पूर्व ही अपनी योग्यता, व्यवसाय, आयु सहित आवेदन निम्न पते पर करें—

दर्शन योग विद्यालय, आर्य वन विकास-रोजड, पो० सागपुर, जि० साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

आवश्यकता

गुरुकुल कागडी आवासीय विद्यालय में निम्न आवश्यकता है।

१ आश्रमाध्यक्ष —विद्यालय आश्रम मे एक आश्रमाध्यक्ष, जिसकी योग्यता स्नातक, आयु ४० वर्ष से ४५ वर्ष मासिक वेतन ६००/- मासिक, भोजन एवम आवास नि शुल्क।

२ अधिष्ठाता—तीन अधिष्ठाता, आयु कम से कम ४० वर्ष योग्यता कम से कम हाई स्कूल, ४००/- मासिक वेतन एव नि शुल्क आवास एव भोजन।

शाकाहारी व्यक्ति निम्न पते पर प्रार्थना-पत्र भेजे। प्रार्थना-पत्र विज्ञापन के १५ दिन बाद तक ही मान्य होगे।

(कैप्टन देशराज)
सहा० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कागडी

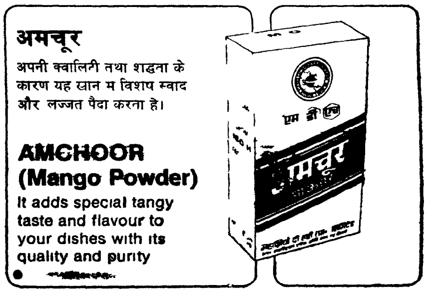
वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात द्वारा आर्यसमाज पालम कालोनी में वसन्त पचमी के दिन आयोजित वीर हकीकतराय बलिदान दिवस को बडी श्रद्धापूर्वक मनाया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल तथा अन्य वैदिक विद्वानो ने दिल्ली देहात से आये भारी जनसमूह को सम्बोधित कर धर्मवीर बाल हकीकतराय के बलिदान से प्रेरणा प्राप्त करने का आह्वान किया।

इसी अवसर पर डा० धर्मपाल ने वयोवृद्ध भजनोपदेशक पं० हरिश्चन्द्र आर्य का अभिनन्दन किया। कार्यक्रम के संयोजक पं० उदयभेष्ठ ने अभ्यागतों का स्वागत किया।


लाखों लोगों की पसंद
एम डी एच दंत मंजन
23 जडी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि
आपके परिवार
के लिये पूर्ण दंत सुरक्षा
दांतों का दर्द मुह की दुर्गन्ध
मसूड़ो की सूजन, ठंडा गर्म
पानी लगना मुह मे छाले होना तथा
दातो की अन्य बीमारियो का घरेलू इलाज
एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
प्रतिदिन प्रयोग करें
अपने निकटतम
दुकानदार से खरीदे
सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०
कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015


चाट मसाला
चाट मसाला
चाट सलाद और फलो को
अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये
यह बहुतरीन मसाला है।
CHAT MASALA
Excellent for garnishing
Chat Salads and fruit to
provide delicious taste and
flavour


अमचूर
अपनी क्वालिटी तथा शुद्धता के
कारण यह खाने मे विशेष स्वाद
और लज्जत पैदा करता है।
AMCHOOR
(Mango Powder)
It adds special tangy
taste and flavour to
your dishes with its
quality and purity
एम डी एच
अमचूर


आन्तरिक वस्त्रों में एक मात्र विश्वसनीय नाम...
Sparsh BRA
स्पर्श ब्रा
श्वेता ब्रा
Shvaita BRA
सरिता ब्रा
Sarita BRA
Shalini BRA
शालिनी ब्रा
Groversons
Paris Beauty
पैरिस ब्यूटी
• BRA • PANTIES • UNDERWEAR • BANIAN •
सेल्स डिपो
चमनलाल इन्टरप्राइजिज
Chamanlal Enterprises
नई दिल्ली-११०००५

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No 32387/77 Post in N D P S O on 15 16 2-90 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डो० (सो०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

प्रथम वेद महोत्सव १९९०

वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान' के तत्त्वावधान में ५ मार्च से ११ १९९० तक रामलीला मैदान नई दिल्ली में अध्यात्मयोग अधिदैवत से समन्वित एक अभूतपूर्व यज्ञ समारोह याज्ञुषिक प्रक्रिया के अन्तर्गत २७ नक्षत्रो युक्त २७ यज्ञकुण्डो द्वारा सम्पन्न होगा।

विशेष आकर्षण

१ ऋग्वेद से स्तुति, यजुर्वेद से यजन सामवेद से गीति तथा अथर्ववेद से जपन एव दैवत सगतिकरण।

२ जिस यजमान पति-पत्नी का जिस नक्षत्र मे जन्म हुआ है, वे उन्ही नक्षत्र नाम वाले यज्ञ-मण्डपो मे विराजमान होगे।

३ ६ से ११ मार्च तक ब्र० कृष्णदत्त जी महाराज (बरनावा) का योग-मुद्रा मे प्रवचन।

४ म० देवेश भिक्षु जी द्वारा अध्यात्मयोग प्रवचन।

५ श्री रामचन्द्र जी 'विकल' द्वारा क्रियात्मक योगाभ्यास।

५ वेद सगोष्ठी।

आर्यजनो से प्रार्थना है कि अपने परिवार तथा इष्ट मित्रो सहित इस वेद महोत्सव मे पधार कर इसकी शोभा बढायें तथा अपना अमूल्य योगदान धन, घृत, सामग्री, ऋषि अगर आदि के वस्तुओ से भी इस महा-यज्ञ को सफलीभूत करें।

वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान

X-११, पश्चिमी पटेलनगर, नई दिल्ली-११०००८

दूरभाष ५८३३४२, ६४४४९५६, ५७३४२६३, ३१२०४४

सेवा में—

पुस्तकालय अध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तर प्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक १६ | रविवार ४ मार्च १९९० | फाल्गुन सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०९०

मूल्य एक प्रति ५० पसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता का संकल्प लेकर

आर्य युवा महासम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली, १६ फरवरी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आज छठा आर्य युवा महासम्मेलन, तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में उत्साह पूर्वक भव्यता से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली के स्कूलो, आर्य वीरदल के वीरो व गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा प्रस्तुत किए गये शानदार प्रदर्शनों की सभी ने भूरि भूरि प्रशसा की व करतल-ध्वनि द्वारा उनका उत्साहवर्धन किया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री सेवाराम शर्मा, विकास आयुक्त, दिल्ली प्रशासन ने शस्त्र-सचालन मे कन्या गुरुकुल नरेला को प्रथम, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश को द्वितीय तथा गुरुकुल गौतम नगर को तृतीय पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। योगासन में राजकीय बाल माध्यमिक विद्यालय घोण्डा को प्रथम, श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल गौतम नगर को द्वितीय, दीवानचन्द आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लोधी रोड को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया। पी० टी० प्रदर्शन में बिरला आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कमला नगर, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर तथा सी० एल० भल्ला डी० एन० माडल स्कूल झण्डेवालान को क्रमश प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार दिये गये।

स्मरणीय है कि सभा द्वारा १३ जनवरी से १२ फरवरी तक खेल-कूद, शैक्षिक व सास्कृतिक विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी थी, जिसमे ५१ शिक्षण सस्थाओ के हजारो विद्यार्थियों ने भाग लिया और इस अवसर पर ३८३ विजेताओं को शील्डें, पदक एव वैदिक-साहित्य भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

मुख्य अतिथि श्री शर्मा ने पुरस्कृत बच्चो को बधाई देते हुए कहा कि वास्तव में परिश्रम ही जीवन में सफलता का मूल-मन्त्र है। तथा उन्हें अपना लक्ष्य निर्धारित कर, निष्ठापूर्वक आगे बढकर कार्य करना चाहिए।

समारोह मे भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के निदेशक पद्मश्री डा० श्याममिह 'शशि' को भी स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। विद्वान्, लेखक, कवि व मूर्धन्य साहित्यकार डा० "शशि" ने अपने अभिनन्दन के प्रति भाव-विभोर होकर कहा कि मैं आर्यसमाज में ही पला हू, बडा हुआ हू, जिया हू और वास्तव मे पद्मश्री द्वारा प्रदान किया गया सम्मान भी आर्यसमाज का ही सम्मान है। डा० शशि ने चरित्र निर्माण के लिए बच्चों को अच्छी-अच्छी पुस्तके पढने के लिए एव परिश्रम के द्वारा अपना

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आईये ! हम आयेजन—

* ६ मार्च को पंडित लेखराम बलिदान दिवस
* १९ मार्च को पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शती दिवस
* २७ मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस
* ३१ मार्च को क्रांतिकारियों के गुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा स्मृति दिवस

सोत्साहपूर्वक मनावें और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में जुट जाने का संकल्प लें।

"आर्यसन्देश" के पाठकों के लिए इस मास में दो विशेषांक

१८ मार्च को—	२५ मार्च को—
गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी स्मृति अंक	**आर्यसमाज स्थापना दिवस समग्र-क्रान्ति अंक**

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मुलचन्द गुप्त

वेद-मनन

उपदेश

भूल

—आचार्य यशपाल सुधांशु

यस्य छाया ऽमृत यस्य मृत्यु —

उसका स्मरण (आश्रय) ही अमृत है और भूल ही मृत्यु है।

भूल करके भूल को भूलने पर भी, भूल का फल भोगना पडता है। पहली प्रतीत होने वाली भूल विस्मरण नही, बल्कि वह कार्य है, जो मनुष्य अनजाने से कर बैठता है। शास्त्रो मे इसे अज्ञान कहा गया है, जो अन्धकार के समान जीवन पथ को आवृत कर देता है। उद्यान के सुन्दर पुष्प और लहलहाती झाडिया दिन के उजाले में बडी सुन्दर प्रतीत होती है किन्तु, अज्ञान, भय के कारण रात्रि के गहन अन्धकार मे वही झाडिया, वही पेड भयकर प्रतीत होते हैं। वहां की नीरवता श्मशान के भयावह स्थल सी अन्धेरे के हो जाने पर हो जाती है। भय, भोग, भ्रम तीनो पाश अज्ञान के ही हैं। शिशु अपनी अबोधता से सर्प को पकड ले या आग मे हाथ डाल दे तो वह अग्नि और सर्प अपना स्वभाव नहीं छोडते। इसीलिए भगवान् कृष्ण ने उत्तम ही कहा है—

'अवश्यमेव भोक्तव्य
कृत कम शुभाशुभम्"।

महर्षि दयानन्द ने इसे इस रूप मे कहा है "मनुष्य कम करने में स्वतन्त्र है, पर फल भोगने मे ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है।" पर सबसे बडी भूल है जीवन धन दाता ईश्वर को भूलना।

"खुदा को भूल गये लोग
फिक्रे रोजी मे।
रिजक का ख्याल है
राजक का नही।"

रोजी और रोटी के चक्कर मे आज का मानव जीवन ध्येय को भूला हुआ है। जीवन के अवसान पर जब भूल याद आती है तो प्राय तडफन देखी जाती है।

"बागे हयात लुट गया फिर होश मे आये तो क्या।

जीवन की सुन्दर वाटिका लुट गयी फिर पश्चात्ताप किये क्या होता है? इतना होने पर भी घबराना नही चाहिए। चीन के प्रसिद्ध लेखक का कथन है—"पूर्ण घटने के बाद चन्द्रमा बढना शुरू होता है। गहरी काली रातो के बाद चन्द्रमा की सोम भरी ज्योत्स्ना छिटकनी है।" प्रसिद्ध दार्शनिक "शा" का कथन आशा का स्रोत है। 'जीवन के आनन्द की सारी मिठास जीवन के तल मे रहती है। जीवन का सर्वोत्तम काम जीवन के अन्त मे किया जा सकता है।" अथर्ववेद के शब्दो में दृढ व्रत धारण कर कहें—कृत मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित।

भाग्य की टूटी लडो मे
जोड कर पुरुषार्थ।
हार को मैने किया
हर कदम पर जीत॥

"उद्यान ते पुरुष नावयानम्।"

ऐ जीव! तेरा जन्म ससार में ऊपर बढने के लिए ही हुआ है। पतन के लिए नही।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत। कठ०

उठो जागो, प्राप्त करो, प्रभात वेला तुम्हें आगे बढने के लिए पुकार रही है, जीवन की वाटिका पुरुषार्थ के सुमनों से सजा कर मुस्काओ। जीवन के क्षण-क्षण मे, हर क्षेत्र में, हसी आशा और विश्वास को जन्म देती है। जापान के जाने माने कवि नागो ची ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कविता मे इन्ही भावो को दिखाने का प्रयत्न किया है।

जब मेरे जीवन के हर क्षेत्र से हरियाली सूख गयी हो, उस अवनि के सभी पक्षी मौन हो चुके हो, सूर्य की आभा को काला साया अन्धकार में धकेल रहा हो, मेरे अपने परिचित मित्र भी मुझे काटो के दोराहे पर छोडकर चल दिये हो, तब हे मेरे देव! मेरे प्रति इतनी कृपा करना, सम्पूर्ण सकटो को भी अपने सिर पर रख कर मै मुस्करा सकू, उपहास कर सकू कठिनाइयों का।

मुस्कराते हुए दृढता का पग आगे बढाते हुए सयम साधन का दीप जलाना, उसकी राह में चलना है जो उस परमेश को भूल कर पाप मग्न हो जाता है, उसे सांसारिक सुख मिल जाने पर भी अशान्ति ही रहती है। जिस के द्वारा सृष्टि के प्रत्येक कण-कण में गति होती है उसका स्मरण, कर्मों में श्रेष्ठता तथा दु खी जनों की सेवा है। जो हृदय से प्रसन्नतापूर्वक समर्पण द्वारा विशेष भक्ति करता है वही उसका आश्रय अमरता का साधन है, भूल ही मृत्यु है।

ओ३म् श न इन्द्राग्नी भवतामवोभि श न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शयो श न इन्द्रापूषणा वाजसातौ॥१॥

हों विद्युत्, इन्द्र सृजनकारी

—देवनारायण भारद्वाज

* ● *

जीवन अशान्ति को दूर करें ये दयादृष्टि सब शूर करे।
हो देव जनो की अनुकम्पा, सुख शान्ति हमे भरपूर करे॥

ये अग्नि और विद्युत भारी
हो नही हमें पीडाकारी
रक्षा का साधन बन जाये
तब सुख की होवे तैयारी।

इनके प्रयोग मे सुख पाये, उपयोग उन्नति परिपूर करें।
हो देव जनो की अनुकम्पा, सुख शान्ति हमे भरपूर करे॥

वरणीय वायु विद्युत प्यारी
दे भोग्य हमे वैभवकारी
उत्पादन नित्य बढाये हम
हो विद्युत् इन्द्र सृजनकारी।

ये देव हमे हो सुखकारी, रोगो के भय को चूर करें।
हो देव जनो की अनुकम्पा, सुख शान्ति हमें भरपूर करें॥

मेघ सुपोषक विद्युत् धारी
कृषि कार्य सफल हो सहकारी
घन धान्य विपुल वर्षा करके
सब सुखकारी दें सुख भारी।

विद्युत् की सयुक्त शक्तिया, मानव मन मगन मयूर करें।
हो देव जनों की अनुकम्पा, सुख शान्ति हमें भरपूर करें॥

—जगन्नाथ निवास, रैदोपुर नई बस्ती आजमगढ़ (उ० प्र०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा प्रचार कार्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा नियमित रूप से दोपहर में भोजनावकाश के समय सरकारी कार्यालयो के समीप सभा के प्रचार वाहन द्वारा वेद प्रचार किया जाता है। सभा के प्रचार वाहन मे माइक, लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर, हारमोनियम, ढोलक, चिमटा तथा दरियो एव कुर्सी मेजो की समुचित व्यवस्था है। श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के नेतृत्व मे सभा के सभी महोपदेशक एव भजनोपदेशक इस कार्य मे सहयोग देते हैं।

१७ और १८ जनवरी १९९० को कृषि भवन के विशाल मैदान में हजारो सरकारी कर्मचारियो ने इस सुविधा का लाभ उठाया। २४ जनवरी १९९० को निजामुद्दीन ईस्ट में दिल्ली विद्युत प्रदाय सस्थान के समीप पार्क मे प० तिलकराज शर्मा की व्यवस्था के अनुसार वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वेद प्रचार हेतु मानद उपदेशको को भी आमन्त्रित किया जाता है। १२ जनवरी को लोहडी एव मकर सक्रान्ति के पर्वों की महत्ता का प्रतिपादन करने के लिए वोट क्लब पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कायक्रम मे मारीशस निवासी आर्यबन्धु श्री हरगोविन्द सपत्नीक सम्मिलित हुए। भजनोपदेशकों के मधुर संगीत को सुनकर विशेष रूप से आह्लादित हुए।

ओ३म्
आर्य सन्देश

अमर शहीद पं० लेखराम

इस वीर भोग्या वीरप्रसू भारतभूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया और मानवमात्र के कल्याण के लिए अपने को समर्पित कर दिया। राष्ट्र, जाति और धर्म के लिए अपने जीवन का बलिदान करने वालो की परम्परा भी सुसम्पन्न एव सुदीर्घ है। सम्पूर्ण विश्व इस बात का साक्षी है कि जिसने भी मानवता को नई दिशा दी, उसे अनेक कष्ट भोगने पडे और विधर्मियो की गोली या छुरी या सलीब का शिकार होना पडा। चाहे ईसा हो या गाधी, दयानन्द हो या श्रद्धानन्द—सभी इसी बलिपथ के राही बने। अमर शहीद लेखराम की भी नियति यही रही।

सन् १८९७ के फरवरी मास मे एक गठे बदन का मुसलिम युवक पण्डित लेखराम के घर पहुँचा। उसने बताया कि पहले वह हिन्दू था। दो वर्ष पहले मुसलमान बना था। वह पुन हिन्दू धर्म की शरण में आना चाहता है। धर्मवीर लेखराम के लिए इतना परिचय पर्याप्त था। वह युवक पण्डित लेखराम के साथ रहने लगा। सभी जगह उनके साथ जाता। अनेक हितैषियों ने पण्डित लेखराम को सचेत भी किया। ६ मार्च १८९७ का दिन उस युवक ने चुना। सन्ध्याकाल जब पण्डित जी अपना दैनन्दिन लेखन कार्य करके जरा उठे, अगडाई ली तो इस युवक ने अपनी छुरी उनके पेट में घुसेड दी। पण्डित जी ने आह तक न की। किसी को पता भी न लग पाया। दुष्ट हत्यारा साफ बच निकला।

पण्डित लेखराम का शहीद दिवस सभी आर्यजनों के लिए प्रेरणा का दिन है। एक बालक वीर हकीकतराय था। उसे भी यह नियति भोगनी पडी थी। हम हकीकतराय का स्मरण श्रद्धा से करते हैं। गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रो का स्मरण श्रद्धा से करते हैं। उसी श्रद्धा से इस पवित्र दिन शहीद लेखराम का स्मरण करते हैं। हमारा कर्तव्य है कि ३६५ दिन और चौबीसो घण्टे, साठो मिनट और साठो सेकेण्ड उसे स्मरण करे तथा वैदिक धर्म की पताका को दिग् दिगन्त तक ले जाने के लिए प्रयत्नशील रहें।

पण्डित जी ने मरते समय कहा था कि तकरीर और तहरीर के कार्य को बन्द न होने देना। हमारा प्रयास है कि यथाशक्ति इस कार्य में सहयोग देते रहें। आर्यसन्देश के माध्यम से तथा आर्यसमाजों के सत्सगों एव समारोहो के माध्यम से हम यह कर रहे हैं। आर्यसन्देश के विशेषाक, आयजाति को प्रेरणा देने के लिए हैं कि वे भी इस प्रशस्त पुण्य पथ पर बढे चलें।

वीर लेखराम का जन्म चैत्र शुक्ला ८, सवत् १९१५ विक्रमी को ग्राम सैयदपुर, तहसील चकवाल, जिला जेहलम में हुआ था। उनकी शिक्षा ६ वर्ष की आयु मे उर्दू और फारसी पढ़ने के साथ प्रारम्भ हुई। उन्हें चाचा के पास पेशावर पढ़ने के लिए भेजा गया, परन्तु चाचा पुलिस की नौकरी मे थे और उनके स्थानान्तरण होते रहते थे, अत पुन गाव में ही बुला लिया गया। २१ दिसम्बर १८७५ को लेखराम पुलिस मे नौकर हो गए। उस समय उनकी आयु मात्र १७ वर्ष की थी। पुलिस का कार्य उनके अनुकूल न था। वे निरन्तर ईश्वर भक्ति की ओर प्रवृत्त रहते थे। प्रारम्भ मे उनकी प्रवृत्ति पौराणिकता की ओर थी। शनै-शनै उनका मन छानबीन के लिए उत्सुक हुआ। उन्होने अनेक ग्रन्थ मगाए। उनका तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ भी पढे। बस फिर क्या था। यहाँ से उनकी जीवन धारा ही बदल गयी। उन्होने पेशावर में आर्यसमाज को स्थापना कर दी।

उनका सर्वप्रथम ऋषि से साक्षात्कार अजमेर मे हुआ। उनसे बातचीत करने बाद तो वे बस दयानन्द के हो गए। उन्होने रात-दिन आर्यसमाज का कार्य किया। ३५ वर्ष की आयु तक विवाह नहीं किया। आर्यसमाज पेशावर की ओर से एक मासिक पत्र 'धर्मोपदेश' प्रारम्भ किया। वे लिखते थे, व्याख्यान देते थे तथा शुद्धि के कार्यों में रात-दिन लग रहते थे। उनके व्याख्यानों और शास्त्रार्थों की धूम मची थी। २४ दिसम्बर १८८४ को उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और अपना जीवन आर्यसमाज को अर्पित कर दिया।

ऋषि दयानन्द ने उन्हें अनेक पत्र लिखे होगे। पर दो पत्र उपलब्ध हैं। एक मे पण्डित लेखराम को गोरक्षा विषयक प्रार्थना पत्र पर हस्ताक्षर कराने के लिए कहा गया था। दूसरे मे हिन्दी प्रचार के लिए कमीशन को 'मेमोयर' भेजने के विषय मे कहा गया था। लेखराम ने दोनो कार्य उत्साह पूर्वक किए।

लेखराम का आर्यसमाज को अभूतपूर्व योगदान है—ऋषि का जीवन चरित। यह कार्य उन्होंने सुदीर्घ साधना करके, उन सभी स्थानो का भ्रमण करके जहा पर ऋषि दयानन्द गए थे—किया। जहा-जहा भी लेखराम गए, वहा-वहा उन्होने वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार भी किया। स्वामी श्रद्धानन्द के साथ मिलकर उन्होंने कुम्भ के मेले पर प्रचार किया। सिन्ध मे भी उन्होने धर्म-प्रचार किया। उन्होंने लरकाना में शुद्धि कार्य किया। जब ऋषि की जीवनी लिखने के सिलसिले में वे राजपूताने गये तो वहा पर भी वेद प्रचार में सलग्न रहे। काठियावाड मे जाकर भी उन्होंने आर्यसमाज को बढाने की दिशा मे कार्य किया।

वे खानपान की शुद्धता पर बल देते थे। उन्होने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए—करनाल में मिथ्या ज्योतिष का खडन, क्वेटा मे व्याख्यान, मुजफ्फरनगर में अन्धविश्वासो का खडन, सियालकोट मे सिखो की रक्षा, मालेर कोटले में शास्त्रार्थ, मरो का उत्सव, बलूचिस्तान मे वेद प्रचार, अजमेर मे जान पर खेलकर कब्र परस्ती और मर्दुम परस्ती का खण्डन, गुलाम अहमद कादियानी के शिष्यो से टक्कर। लेखराम को इन महान् कार्यों के लिए सदैव याद किया जायेगा।

उन्होंने छोटी बड़ी लगभग ३३ पुस्तके लिखी। वे आर्य सस्कृति के महान् रक्षक थे। उनका जीवन सदाचार और सादगी से परिपूर्ण था।

उनके शहीदी दिवस पर हमारी विनत श्रद्धाञ्जलि।

—डा० धर्मपाल

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी—

पुण्य तिथि ३ मार्च पर विशेष—

प्रख्यात पत्रकार

पं० अवनीन्द्र कुमार विद्यालकार

अब से लगभग सत्तर वर्ष पूर्व जब भारत मे हिन्दी पत्रकारिता का कोई आदरणीय स्थान न था, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने 'श्रद्धा' और 'विजय' साप्ताहिक पत्र निकाल कर इस दिशा में एक नया युग प्रारम्भ किया था। फिर तो काशी से 'आज', कानपुर से 'प्रताप', आगरा से 'सैनिक', नागपुर से 'प्रणवीर', दिल्ली से 'अर्जुन' और कलकत्ता से 'विश्वमित्र' आदि कितने ही हिन्दी-पत्र निकलने लगे। कई अग्रेजी अखबारो ने अपने पत्रो के हिन्दी-सस्करण भी निकाले। दिल्ली का 'हिन्दुस्तान टाइम्स' उनमे प्रमुख था। उसने 'दैनिक हिन्दुस्तान' के नाम से हिन्दी सस्करण निकाला। जिसका जनता ने हृदय से स्वागत किया। स्व० श्री अवनीन्द्र कुमार जी विद्यालकार ने अपने जीवन का बड़ा भाग इसी दैनिक 'हिन्दुस्तान' को समर्पित किया।

गुरुकुल कांगडो, हरिद्वार से १९२८ में शिक्षा समाप्ति के पश्चात् लाहौर से प्रकाशित 'आर्य'साप्ताहिक के प्रधान सम्पादक के रूप में जीवन आरम्भ किया। तत्पश्चात् बिहार विद्यापीठ मे राजनीति के प्राध्यापक रहे। स्वतन्त्रता सग्राम में कार्य करते हुए कई प्रान्तिक एव साप्ताहिक बुलेटिन निकाले। कानपुर काग्रेस के तीन वर्ष तक सभापति भी रहे। सन् १९३४ मे दिल्ली आए और अन्तिम समय तक हिन्दी पत्रकारिता से जुडे रहे।

१९३४ मे १९५० तक के २६ वर्षों मे आपने दैनिक नवयुग, दैनिक नवभारत टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान दिल्ली में प्रधान सम्पादक, सयुक्त सम्पादक के रूप में कार्य कर राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

सन् १९५० से स्वतन्त्र पत्रकार

(शेष पृष्ठ ६ पर)

विद्वान् धार्मिक कल्याण कृती हो जायें

—देवनागयण भारद्वाज आर्यसमाज आजमगढ (उ० प्र०)

यम नियमो व धम के लक्षणो की सूची देखकर कई व्यक्ति घबडा सकते हैं। न सब का पालन उनके लिए बडा दूरूह व कठिन काय लग सकता है। उस समय यदि उन्हे धम शब्द का सही अथ ज्ञान हो जाय तो वे इस गहन गम्भीरता स राहत अनुभव कर सकते है। धम शब्द की व्य त्त ध धात त है— य धायते ति स धम अथात जो धारण क्य ज य उस धम कहते है। कौन ह गा जो बुराइयो को धारण करना च हेगा और कौन नही होग जो अच्छ इयो को धारण नही करना च हेग । यदि कोइ बुर इयो को ध रण करता भ ह त वह उ के उपर अच्छाइ । क आवर ण चढ ये विना नहा रह सकता। बड से बडा भ्रष्टाचारी समाज म स्वय को शिष्टाचारी क रूप मे स्तुत करना च हता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने प्ररणादायक ग्रन्थ व्यवहार भानु मे एक प्रश्न सब मनुष्यो का विद्वान वा धर्मात्मा होना सम्भव है वा नही ? का उत्तर इस प्रकार दिया है— विद्वान होना तो सभव नही परन्तु जो धमात्मा हुआ चाहे तो सभी हो सकते हैं। अविद्वान लोग दूसरो का धम मे निश्चय नही कर सकते और विद्वान लोग धार्मिक होकर अनेक मनुष्यो को भी धार्मिक कर सकते हैं और कोइ धूत मनुष्य अविद्वान को बहका के अधम म प्रवत्त कर सकता है परन्तु विद्वान को अधम मे कभी नही चला सकता क्योकि जसे देखता हुआ मनुष्य कुए म कभी नही गिरता पर तु अन्ध का तो गिरना सम्भव है इसी ग्रथ के अ म पारच्छेद म महर्षि न व्यक्त किय हे जो मनुष्य विद्या कम जानता हो पर तु दुष्ट व्यवहारो को छोड कर धार्मिक होके खान पान बोलन सुनन बठने उठने लेने देन आदि व्यवहार सत्य से युक्त यथायोग्य करत हे वह कभी दुख को नही प्राप्त होता और जो सम्पूण विद्या पढ के उत्तम व्यवहारो को छोड कर दुष्ट कर्मों को करता है वह कही कभी सुख को प्राप्त नही हो सकता। प्रस्तुत वेद मन्त्र जीवन जीने का यही सरल सूत्र हमे सहज ही प्रदान कर रहा है—

भवत न समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञ७ हि७ सिष्ट मा यज्ञपति जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य न ॥ यजु० ५।३

पदाथ —(न) हमारे साथ या हम लोगो के बीच मे (समनसौ) समान मन वाले अर्थात एक दूसरे के सहायक (सचेतसौ) तुल्य ज्ञान ज्ञापन समान ज्ञान समान बुद्धि वाले स्त्री पुरुष (अरेपसौ) अत्याचार पाप वर्जित मे रहित गृह ० किन (भवतम हो जो (मा) नही (यज्ञम शुभ कम रूपी यज्ञ को (मा) नही (यज्ञपतिम) नप लक शुभ कम करने वाले को हिंसिष्टम) नष्ट कर जातवेदसौ) उत्पन्न पदाथ वाले विज्ञान उत्पन्न हो गया है ज्ञान विज्ञान जिनको ऐसे विद्वान (शिवौ) मगल करने वाले (अद्य) आज सदा (भवतम) होव ।

मत्र त्रिआयामी कायक्रम प्रस्तुत करता है। प्रथम हमारे आसपास समाज मे जो स्त्री पुरुष हो वे सहृदय सचेत व निष्पाप हो द्वितीय समाज मे शुभ कम नष्ट न हो निरन्तर चलते रहे व इन शुभ कर्मों के करने वाले भी समाप्त न हो प्रत्युत प्रोत्साहन पाकर बराबर बढते रहे और तृतीय समाज मे उत्पन्न हो गया है ज्ञान जिनको ऐसे विद्वान भी हो जो कल्याणकारी कार्य करके हमारा नेतत्व करते रहे। सष्टि मे कई स्थानो पर यज्ञ हो रहा है। एक अग्निहोत्र हम करते है जिस मे दान देव पूजा व सगतीकरण होता है। इसमे पर्यावरण का प्रदूषण भी मिटता है। एक यज्ञ परमात्मा कर रहा है वर्षा कर के नदी मे जल भर के पवतो पर वायु प्रवाह वनस्पतियो का हरीतिमा की मनोरम छटा प्रदान करके। पहले मनुष्य इन प्राकृतिक स्थलो पर जाकर स्वास्थ्य व आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करता था अब वहा वह साथ मे मदिरा लकर उसका दोहन ही नही उपभोग करने जाता है और उसे नष्ट करके लौटता है। जगलो को काट कर नई नई समस्याए मनुष्य ने उत्पन्न कर दी है। प्रकृति की हर वस्तु का उपयोग हे । इसे व्यवस्थित रूप दिया जा सकता है किन्तु इसे हटा कर मनुष्य आपत्ति मे पड सकता है। चीटी से लेकर शेर व हाथी तक सब जीवो का अपना महत्त्व है।

ससार ईश्वर वाटिका
तू सैर कर सुख चैन से।
फल फूल पत्ता ताड मत
तू देख जी भर नैन से॥

यह जो ईश्वरीय यज्ञ चल रहा है इस मे फल फूल पत्ता नितान्त आवश्यकता की स्थिति मे तोडते हो तो नये वक्ष भी लगाओ पुरानो को खाद पानी दो। गाय भी अपने अमत दुग्ध का दान कर एक यज्ञ करता है। दुग्ध का नाश न हो तो गाय की रक्षा करनी होगी। उद्यान यज्ञ का लाभ बना रहे इसलिए माली की रक्षा करनी होगी। यज्ञ की रक्षा के लिए यज्ञपति यज्ञकर्ता की रक्षा करनी होगा। यह रक्षा तभी सम्भव होगी जब हम यज्ञ व यज्ञकर्ता के साथ अत्याचार नही करग। अरेप की भावना से काम लगे। यह अरेप या पापमुक्ति की भावना हमारे सचत रहने से आयेगी। ससार मे घटने वाली नित्य प्रति की घटनाएँ व उनके परिणाम हमे बराबर सचत करते रहते है। ससार के ऊच नीच को देखकर हमारे हृदय मे सहृदयता सब के साथ सहानुभूति के व्यवहार की भावना उत्पन्न हो जायेगी। इस प्रकार यह ससार जीने योग्य बना रहेगा और अच्छ काय बढने रहेग।

जैसा कि प्रारम्भ मे कहा है कि विद्वान की तुलना मे किसी अति साधारण किन्तु धार्मिक मनुष्य का कम महत्व नही है। मत्र के अनुसार सौमनस्य सामान्य ज्ञान व शरीर बल के आधार पर किसी की सम्पत्ति के अपहरण का भाव नही है तो वह व्यक्ति धार्मिक है। ऐसे व्यक्ति ससार को सफलतापूवक सुखी बनाये रह सकते है। यदि इन मे से कुछ व्यक्ति विशेष ज्ञान प्राप्त कर जातवेद बन जाते हैं तो वे और अधिक कल्याण कारी हो सकते है पर विनाशकारी भी हो सकते हैं। गभ मे कन्या या पुत्र क्या है ? जन्म से पूव नही ज्ञात होता था। भ्रूण परीक्षण इस लिए किया गया कि गर्भस्थ शिशु मे शारीरिक रोग दोष होने पर उसे उसी अवस्था मे ठीक किया जा सके। बात विज्ञान विद्वान की अच्छी थी पर हुआ क्या भ्रूण परीक्षण से लिंग भेद कन्या या पुत्र के रूप मे कर के कन्याओ के भ्रूण नष्ट किये जाने लगे। महादेवी वर्मा नन्ही बालिका के रूप में इलाहाबाद के विद्यालय मे प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर रही थी। अवकाश के समय मे विद्यालय उद्यान मे बैठ कर मुर्गी व उस के बच्चो को देख गिनकर खेलती रहती थी। एक दिन एक बच्चा कम था। पूछने पर ज्ञात हुआ कि कोई अध्यापिका ले गई है। उन्होने फिर पूछा वे उसे पालगी। उत्तर मिला नही खायगी। उन्होने रुदन आन्दोलन छेड दिया तभी शान्त हुई जब वह बच्चा लाकर उन सभी बच्चो मे मिला दिया गया। नन्ही बालिका जीव दया के जिस रहस्य को जानती थी शिक्षित अध्यापिका उस पाठ को नही पढ सकी थी। इसलिए धार्मिक होने के लिए शिक्षा से अधिक सस्कार वाछनीय है।

सौमनस्य कैसे हो समान मन कैसे हो ? चलो चोर साहूकार राजा रक आदि परस्पर विरोधी सत्ताओ के मन भले समान न हों पर एक परिवार के पिता पुत्र भाई भाई माता पुत्री पति पत्नी का मन तो समान होना ही चाहिए। समान मन का कोई रूढ अथ नही है। समान का अर्थ सन्तुलन भी है और सम्पूरक भी है। मा पुत्री के मन समान हो। मा पुत्री को सुयोग्य विदुषी यशस्वी एव चमत्कारी देखना चाहती है। यदि वह यह भी समझ जाये कि बाल्यकाल की क्या उमग यौवन की क्या तरग और प्रौढता की क्या जग होती है जिसे उसने भोगा है तब अच्छाई का अनुभव प्राप्त किया है जब कि वह पुत्री को इन सब प्रक्रियाओ से परे रख कर एकदम उच्च स्तर प्रदान करना चाहती है जो असम्भव है। सभी परिस्थितियो के समन्वय मे ही पुत्री को उचित सौमनस्य की शिक्षा दी जा सकती है। पुत्री अपने मन को मा के स्तर पर नही ले जा सकती है पर मा जिसने बाल युवा मन को भी देखा है अपने प्रौढ मन को पुत्री के मन स मिलाकर सौमनस्य स्थापित कर सकती है।

हृदय मे सौमनस्यता लाकर या सहृदयता से विचार कर के ससार की हर वस्तु हमे सचत करने लगती है। शिक्षा देने लगती है। जो काम बडे बड ग्रन्थ नही कर पाते हैं। ससार के दृश्य व घटनाए वह कर देती हैं। साधारण व्यक्ति छोटी-छोटी घटना को वैज्ञानिक

आविष्कार का रूप देकर वैज्ञानिक बन जाते हैं। वेद का नाम श्रुति इसीलिए है कि सुन-सुन कर हम भी गुन लें। माता-पिता पूर्वज जो करते चले आते हैं, उन से सीख कर हम भी वैसा करने लगते हैं। अपराध के कारण कुछ व्यक्ति दण्डित होते हैं, जेल जाते, फासी चढते हैं। कोढी, अपंग, रोगी, दीन-हीन घूम फिर कर हमे सचेत करते हैं कि अच्छे काम करो नही तो यही दशा होगी। कहते है कि सास को डाट खाते देखकर बहू सचेत हो जाती है। देखा-देखी धर्म, देखा देखी पाप, सामान्य श्रमिक भी इस बोध को जानता है। सुदूर ग्राम वनवासी क्षेत्रो मे मनुष्य प्रभु के सुने सुनाये नाम का स्मरण कर के परस्पर सद्व्यवहार से प्रसन्न रहते थे। कोई पादरी सुविधापूर्ण सुसज्जित जल-यान पर धर्म प्रचार के लिए निकले और एक टापू पर पहुच गए, जहा तीन बूढे व्यक्ति उनको मिल गए। पादरी ने उन से पूछा तुम ईश्वर प्रार्थना कैसे करते हो ? उन्होने बताया, हम प्रात उठकर दोनो हाथ ऊपर उठाते हैं और कहते हैं कि "तीन तुम हो, तीन हम हैं, हमारी रक्षा करो" और काम पर चल देते हैं। पादरी ने कहा, हम तुम्हें बाइबिल से प्रार्थना करना सिखाते हैं। उन्होने एक प्रार्थना याद करा दी और आगे चले गए। पादरी के दूर निकल जाने पर दलदल पानी सबको लाघ कर वे तीनो बूढे जहाज के पास आकर पुन पादरी से बोले, हम वह प्रार्थना भूल गए हैं, फिर याद करा दीजिए। पादरी ने देखा कि जिस दलदल पानी मे हम उतरने का साहस नहीं कर सकते हैं, उस पर निर्भय चल कर प्रभु स्मरण के लिए आने वाले बूढो को क्या सिखाया जाये, इनकी तो वही प्रार्थना श्रेष्ठ है, उसे ही करते रहने को उचित बता दिया। महात्मा आनन्द स्वामी की यह बोध कथा हमें यही बताती है कि मन की आस्था प्रथम है, प्रार्थना की शब्द-व्यंजना का स्थान द्वितीय है। आस्था के लिए विद्वत्ता की नही हृदय की आवश्यकता है।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा
शास्त्र तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्या विहीनस्य
दर्पण किं करिष्यति ॥

आचार्य चाणक्य ने कहा है कि जिस मे स्वाभाविक बुद्धि नही है, उसका शास्त्र क्या कर सकते हैं। नेत्रहीन को दर्पण से क्या लाभ है। ससार का हर क्षण हर प्राणी हमको सचेत करता है। लाक्षागृह के अग्नि-काण्ड से बचने के लिए नीतिज्ञ विदुर ने पाण्डवो को चूहे के माध्यम मे सचेत किया था। उन्होने कहा कि वन की आग से कौन बच जाता है। युधिष्ठिर ने समझ लिया, चूहा और चूहे की बिल की भाति सुरग खोद कर सभी पाण्डव बच निकले थे। एक आलसी व्यक्ति इधर उधर से उधार माग कर अपना काम चलाना था और ऋण भुगतान की याद दिलाने पर झगड पडता था। इस आलसी से जो सावधान रहते वे बच जाते थे, शेष उसकी चिकनी-चुपडी बातो में आकर फस जाते थे। वही आलसी ऋण जीवी एक मित्र के समीप जाकर बोला, मैंने निकट के बाजार मे दो सौ रुपये का सामान क्रय कर लिया है। पर्स मैं घर भूल आया हू। कृपया दो सौ रुपये उधार देने का कष्ट करें। मै बाद मे चुका दूगा। परेशानी मे मित्र के मित्र ही काम आता है—कहते हुए मित्र ने अपनी जेब मे हाथ डाला और एक रुपया निकालकर बोला—लो, बस से घर जाओ पर्स ले आओ। उधार मागने की आलसी की प्रवृत्ति को जान कर मित्र ने अपना धन ही नही, भुगतान का विवाद भी बचा लिया। कार्य-कार्य को सिखाता है, इस साधारण बात में असाधारण रहस्य है।

अंग्रेजी में 'रेप' शब्द बलात्कार या बलपूर्वक वस्तु या स्त्री अपहरण एव दुराचार के अर्थ मे प्रयुक्त होता है जो वेद से ही वहा गया प्रतीत होता है। रेप को छोड कर 'अरेप' की भावना को बढाने की प्रेरणा मन्त्र हमें देता है। दो नन्हे बालक साथ-साथ खेल रहे थे। एक का खिलौना दूसरे ने छीन लिया। वह कमजोर बालक चीत्कार कर रो पडा। मा ने दौड कर स्थिति को सभाला। उसने छीनने वाले बालक को समझाया, ऐसा नही करते हैं, बच्चो को अपने-अपने खिलौने से खेलना चाहिए। छीनने वाले बालक को उस पीडा का पता नही था जो उस बच्चे को हुई जिसका खिलौना छीना गया था। उसका रुदन-चीत्कार भी उसे नही समझा सका, क्योंकि उसे तो अपने सुख मे ही सुख है। मा दोनों की दशा को जानती थी, सो उसने समझा कर उसे अन्याय से बचा लिया। ससार के साधारण प्राणी अपने मार्ग दर्शन से नित्य हमें इस अत्याचार से सावधान करते हैं। यदि हम उनका सकेत मान जायें तो हम धर्मात्मा बन सकते हैं, अन्यथा धर्म ढोंग बनकर रह जाता है। एक रूपवती सुन्दरी नवयुवती नदी किनारे बैठी प्रतीक्षा कर रही थी कि कोई आये मुझे नदी पार करा दे। बडी देर बाद एक साधुमण्डली वहा से निकली। आगे-आगे वृद्ध-प्रौढ व पीछे-पीछे तरुण चल रहे थे। प्रौढो ने स्त्री-स्पर्श भय से युवती को नदी पार कराने से मना कर दिया, जब कि एक नवयुवक साधु ने उसे कन्धे पर बैठा कर नदी पार उतार दिया। रात्रि की प्रार्थना सभा मे उस प्रौढ साधु ने गुरु महाराज से शिकायत की, कि अमुक युवक साधु ने कन्धे पर बैठा कर नवयुवती को नदी पार कराया है। प्रत्युत्तर में उस तरुण साधु ने कहा कि गुरुवर मैंने उस युवती को नदी पार कराके कन्धे से उसी समय उतार दिया था, किन्तु ये प्रौढ साधु महाराज तो उसे अब तक मन कन्धे पर लादे हैं। इसलिए पुस्तकीय ज्ञान या आयु नही सहृदय सचेत अन्तर्भावना हमे पाप कर्म से रोकती है, जिसकी भावभूमि को हमें सदैव सम्पुष्ट करना चाहिए।

इन्द्रश्च मृडयाति नो, न पश्चात् अघ नशत्। भद्र भवाति न पुर ॥ ऋ० २।४१।११

अर्थात्—(इन्द्र) परमेश्वर (च) निश्चय से (न:) हमे (मृडयाति) सुख ही देते हैं, (न) हमारे (पश्चात्) पीछे (अघ) पाप (न नशत्) न लगे तो, (न पुर) हमारे सामने (भद्र) भद्र कल्याण ही (भवति) होवे-होता रहे। समाज मे बहुतायत सामान्य जन की है जो सहृदय सचेत एव अनात्यचारी होते हैं। इनके द्वारा अच्छे-अच्छे कार्य होते रहते हैं और अच्छे कार्य करने वालो की रक्षा होती रहती है। एकदम उच्च कोटि के तपस्वी विद्वान् अल्प होते हैं, किन्तु ये अल्प जो सुन्दर मार्ग व आदर्श बना देते हैं, उन पर सामान्य व्यक्ति चल कर समाज को अधिक सुखी कर देते हैं। इसके विपरीत एकदम दुष्ट निकृष्ट अनाचारी-अत्याचारी व्यक्तियो की सख्या समाज मे अत्यल्प होती है, पर ये समाज का जीवन दूभर कर देते है। उसकी नाक में दम कर देते हैं। एक बडे बाल्टे में एक किलो शर्करा डाल देने से पानी मीठा नही हो जाता है, पर उतने ही पानी में सौ ग्राम नमक पड जाने पर वह खारी अवश्य हो जाता है। अतएव इन निकृष्ट व उन उत्कृष्ट के मध्य मे स्थित बहुसख्यक साधारण व्यक्ति ही ससार के सचालन का माध्यम होते हैं। मन्त्र कहता है कि इन व्यक्तियो के पीछे यदि पाप न लग जाये तो ससार में सदैव सुख का साम्राज्य बना रहे।

यद्यपि समाज के साधारण व्यक्ति उसके मुख्य अग व सचालन की सामग्री हैं, किन्तु ये जडता ग्रसित न हो जाये, न इनमें प्रगति-प्रोन्नति की प्रतिस्पर्धात्मक भावनायें जागृत हों और पाप से दूर रहें—इसीलिए विशेष जागरूक 'जातवेद' ज्ञानी विद्वानो की महती आवश्यकता है। यही ज्ञानी विद्वान् अपने अध्ययन-मनन अनुसधान से समयानुकूल सिद्धान्त प्रस्तुत करते है, जिन पर सामान्य जन चल कर समाज को सबल बनाते है। पाचन क्रिया की समग्र जानकारी योग्य चिकित्सक के लिए अनिवार्य है। खाद्य सामग्री का भोजन नलिका मे जाना छोटी आत बडी आत की प्रक्रिया अम्ल रस व उत्प्रेरक रसायनो का मिलना आदि सभी कुछ उसे जानना चाहिए। पर साधारण व्यक्ति भूख लगने पर सात्विक भोजन ग्रहण कर ले' पाचन क्रिया स्वय प्रारम्भ हो जायेगी। रेल, रेडियो, दूरदर्शन आदि आविष्कार विशिष्ट वैज्ञानिको ने किए जो अगुलियो पर गिने जा सकते है। इनकी मरम्मत की जानकारी रखने वाले यान्त्रिक भी नगर में कम होते हैं, पर इनका प्रयोग करने वाले व्यक्ति असख्य होते हैं। अपने घर मे लोग रोज विद्युत प्रकाश ध्वनियत्र, कूलर, फ्रिज, गैस चूल्हो का प्रयोग करते हैं। वे इनके पूर्ण ज्ञाता नहीं होते हैं। बटन को आन-आफ करने व सावधानी रखने की सामान्य बुद्धि पर्याप्त है। यही सावधानी हटी कि दुर्घटना घटी।

लिपि के अक्षर व व्याकरण का निर्धारण ऋषियो ने किया, गणित के सूत्र सगणक वैज्ञानिक विद्वानो ने आविष्कृत किए, किन्तु उनका प्रयोग सर्व सामान्य जन करते हैं। इनके प्रयोग से वह विद्याएँ बढती है, उनका प्रसारण करने वाले व्यक्तियो का पालन होता है, इस प्रकार शुभ कर्म व शुभ कर्म कर्त्ता दोनो का नाश नही होता। मन्त्र कहता है इन शुभ कार्यों का नाश-ह्रास न हो, यह तो ठीक है, किन्तु कल्याण काया का विकास भी हो। यह तभी सम्भव होगा, जब 'जातवेद' विद्वानो मे साधारण धार्मिक व्यक्तियो की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

पं० अवनीन्द्र कुमार

के रूप में कार्य किया। श्री अवनीन्द्र जी की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, अर्थशास्त्र, ऐतिहासिक और वर्तमान राजनीति विषयों पर गहरी पैठ थी। उन्होंने लिखा और खूब लिखा। उनके युग के प्राय सभी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होते थे।

श्री अवनीन्द्र जी ने हिन्दी के प्रचार में विशेष योगदान दिया। वे दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सस्थापकों मे से एक थे। वे कई वर्ष तक सम्मेलन के प्रचार मन्त्री रहे। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स्थायी समिति के १९५० से सदस्य रहे। हिन्दी साहित्य परिषद् की दिल्ली में स्थापना की और १९५५ तक उसके प्रधान मन्त्री रहे।

उन्होने कई पुस्तकें भी लिखी, 'सरल अर्थशास्त्र', 'पचवर्षीय सिंचाई बिजली योजना', 'सामुदायिक योजना', 'हमारे राष्ट्रपति राधाकृष्णन्', 'मालवीय जी', 'भारत ज्ञान कोश (वार्षिकी)', 'विश्व ज्ञान कोश', 'हिन्दुस्तान वार्षिकी' 'नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के 'हिन्दी विश्व कोष', के कुछ अध्याय भी लिखे। बच्चो के लिए 'बकरी गाव खा गई' बहुत ही रोचक और 'आदला दल' जैसी महत्त्वपूर्ण और शिक्षाप्रद पुस्तकें लिखी।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में डा० सत्यकेतु की शिष्य मण्डली के सदस्य होने के कारण श्री अवनीन्द्र जी को आयसमाज से अत्यधिक प्रेम रहा। उन्होंने ही मिन्टो रोड स्थित सरकारी क्वाटरो मे आर्यसमाज की स्थापना की थी।

स्वतन्त्र-पत्रकारिता का पूरा समय आपने आर्य पत्रो के लिए अपने शोधपूर्ण लेख लिखने मे लगाया। आपने जहा महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो, आर्यसमाज के कार्यक्रमो तथा हिन्दुत्व की महत्ता पर शोध लेख लिखे, वहा सरकार की तुष्टिकरण-नीतियों पर भी लगातार चोट की। आपके लेख प्राय सार्वदेशिक, साप्ताहिक तथा अन्य आर्य-पत्रो मे प्रकाशित होते रहे।

आपका निधन ३ मार्च १९८६ को नई दिल्ली मे हुआ।

—सुशीला शास्त्री, नई दिल्ली

(पृष्ठ ५ का शेष)

विद्वान् धार्मिक कल्याण करने हो जायें

सहृदयता चेतनाशीलता, एव अत्याचारी कुचेष्टाएँ न हों। यदि ऐसा नही होगा तो कल्याणकारी आविष्कार करने वाले विद्वान् ध्वसकारी सृष्टि-सहार क्षण मात्र मे कर सकते हैं। अणु शक्ति का सृजन विश्व कल्याण की भावना से किया गया, किन्तु वैज्ञानिकों ने उससे अणुबम की रचना कर डाली। विश्व निर्माण के द्वार पर जाकर सहसा ध्वस के कगार पर पहुँच गया। इसीलिए प्रायश्चित्त स्वरूप, उसी वैज्ञानिक ने विश्व के सर्वोच्च शान्ति-साहित्य 'नोबेल पुरस्कार' की स्थापना की। धार्मिक भावनाओ से ओत-प्रोत साधनहीन वनवासी सामान्य जनो ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम की सहायता कर के उन्हें विजयी बनाया। वेद भाष्यकार विद्वत्ता में प्रवीण किन्तु धार्मिकता मे हीन स्वर्णमयी लका का अधिपति रावण अपने राज्य व स्वय के महानाश को बचा नही सका। एक सुन्दर अभिनेत्री मृत्यु-उपरान्त स्वर्ग के द्वार पर पहुची। एक देवदूत ने वहां उसका स्वागत किया और मुख्य द्वार से जब अन्दर ले जाने लगा तो मार्ग में एक सेतु पर होकर जाते समय उसने अभिनेत्री को सावधान किया। बोला, यहा पर अन्तिम परीक्षा होती है। मन मे कोई बुरा विचार नही आना चाहिए। यदि बुरा विचार आयेगा तो स्वर्गगामी व्यक्ति सेतु से नीचे गिर कर नदी में जायेगा और वह नदी उसे नरक में बहा कर ले जायेगी। बात करते-करते सेतु का छोर आ गया था, कि एक धडाम की ध्वनि गर्जना हुई। युवती ने पीछे मुडकर देखा तो पाया—सेतु ढह गया था और देवदूत पता नही उस मे कहा दब गया था। सार यह कि साधारण व्यक्ति के कुविचार से तो वह व्यक्ति ही नष्ट होता है, किन्तु विशिष्ट विद्वान् के कुविचार से वह स्वय तो नष्ट होता ही है, वह सुमगल सृष्टि को भी विनष्ट कर देता है। इसलिए मन्त्र की अपेक्षा है कि साधारण व्यक्ति धार्मिक होकर सृष्टि का कल्याण करते रहें, साथ ही विद्वान् भी धार्मिक हैं, जो नूतन निर्माण करते रहें।

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य युवा महासम्मेलन सम्पन्न

लक्ष्य निर्धारित कर कार्य करते रहने रहने का आह्वान किया।

प्रो० शेरसिह, कुलाधिपति, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने कहा कि जो लोग आज युवको मे अनेक दुर्व्यसनो आदि को देखकर निराश हो रहे है, उनके लिए आर्य-समाज और इसके मन्तव्य दीपक की भाति मार्ग प्रशस्त कर रहे है।

सभा प्रधान डा० धर्मपाल ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की गतिविधियो का परिचय देते हुए कहा कि भावी-पीढ़ी के निर्माता इन बच्चो एव युवको को समाज सेवा व राष्ट्र-निर्माण के कार्यों मे आगे बढ कर उत्साह पूर्वक सहयोग देना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आर्य वीरो व स्कूल के बच्चों ने यहा शानदार एव भव्य-प्रदर्शन कर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। स्वामी जी ने आगे कहा कि आज हमारे देश की सीमाओं पर हमारी स्वतन्त्रता एवम् अखण्डता को चुनौतियां दी जा रही हैं। ऐसे समय में स्कूल व कालेजों में छात्रो को विशेष ट्रेनिंग व हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे आवश्यकता पडने पर ये बच्चे राष्ट्रीय-भावना से ओतप्रोत होकर राष्ट्रीय-सुरक्षा मे सहायक हो सकें।

सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कुशलता से मच का सचालन किया।

आर्यसमाज शालीमार बाग का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज,शालीमार बाग बी० एन० पूर्वी दिल्ली का वार्षिकोत्सव ११ फरवरी से १८ फरवरी तक धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रात प० परमानन्द जी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ और रात्रि में आचार्य प०पुरुषोत्तम एम० ए० की वेद कथा हुई। वेद कथा से पूर्व प० श्यामवीर राघव के भजनोपदेश हुए।

शनिवार १७ फरवरी को आर्य महिला सम्मेलन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की उपप्रधाना श्रीमती ईश्वर देवी धवन की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन में डा० उषा शास्त्री, डा० शशि प्रभा, श्रीमती सुनिति आर्या, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित तथा श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र के प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

रविवार १८ फरवरी को पूर्णाहुति हुई तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल जी, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और महामन्त्री श्री सूर्यदेव के व्याख्यान हुए। सभा का सयोजन डा० महेश विद्यालंकार ने किया। इस अवसर पर माता शांतिदेवी आर्या को उनके योगदान के लिए प्रतीक चिह्न एवं शाल भेंट कर के सम्मानित भी किया गया।

शोक समाचार—

श्री वेदप्रकाश गोयल

कलकत्ता। प्रसिद्ध उद्योगपति तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल के अनुज भ्राता श्री वेदप्रकाश जी गोयल का ५० वर्ष की अल्पायु मे १० फरवरी को असामयिक निधन हो गया है। उनके निधन से आर्यसमाज तथा अन्य अनेक सस्थाएँ एक विशिष्ट और अनुभवी कार्यकर्त्ता से वंचित हो गयी हैं।

वह अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र तथा एक पुत्री छोड गए हैं। आपका जन्म १४ जनवरी १९४० को हुआ। आपने सडक परिवहन, इस्पात-निर्माण, भवन-निर्माण, कृषि-यन्त्र-निर्माण आदि अनेक उद्योगों में ख्याति प्राप्त की।

दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक-सतप्त परिवार को इस वियोग को सहन करने की क्षमता प्रदान करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।

श्री अशोक वर्धन बिरला

पिछले दिनों हुई भीषण वायुयान दुर्घटना, जिस में ९० स्त्री-पुरुषों तथा बच्चों की मृत्यु हुई, में श्री अशोक वर्धन जी बिरला, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनन्दा बिरला का भी असामयिक निधन हुआ। दिवंगत बिरला परिवार अपनी देशभक्ति, धर्मपरायणता, दानशीलता और भारतीय उद्योग को विश्व-मानचित्र पर प्रकाशमान रखने के लिए विख्यात रहा है।

आर्यसमाज बिरला लाईन्स, बिरला आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, आदि अनेक सस्थाओं मे शोक सभायें आयोजित कर परम पिता से दिवगत आत्माओ की शान्ति के लिए प्रार्थना की गयी।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

B N No 3238 /77 Post in N D P S O or 1 2 3 90 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

स्वामी श्रद्धानन्द जन्मदिवस सम्पन्न

नई दिल्ली २२ फरवरी। महान स्वतन्त्रता सेनानी निर्भीक सन्यासी शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता और हरिजनो गिरिजनो के परम हितैषी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जन्म दिवस की १३२वी जयन्ती के अवसर पर भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। इस समारोह का आयोजन दिल्ली नगर निगम की ओर से किया गया।

इस अवसर पर नगर निगम के आयुक्त श्री ऋषिदेव कपूर आई० ए० एस० तथा उपायुक्त श्री आर० के० भाटिया ने चांदनी चौक स्थित स्वामी जी की भव्य प्रतिमा पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। वक्ताओं ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी का जीवन देश, समाज व राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित रहा। स्वामी जी का विश्वास था कि भारत को केवल विदेशी साम्राज्य से स्वतन्त्र कराना ही काफी नही अपितु समाज को कुप्रथाओ विदेशी भाषा और अन्धविश्वास के प्रभाव से भी बचाना आवश्यक है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जीवन पर्यन्त हिन्दू मुस्लिम सिख एकता के लिए संघर्ष करते रहे और अन्त मे एक अतताई मुस्लिम के हाथो शहीद होकर अमर हो गये।

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली २३ फरवरी। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि आज राष्ट्र को आन्तरिक और बाह्य दोनो प्रकार के खतरो मे सावधान रहने की आवश्यकता है और आर्य-समाज के कार्यकर्ता राष्ट्र की एकता और सुरक्षा के लिए हर प्रकार के बलिदान के लिए तैयार हैं।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस अवसर पर ऋषिबोध को आत्मबोध एवं राष्ट्रबोध बनाने की प्रेरणा दी।

भाषा के सम्पादक डा० वेदप्रताप वैदिक ने पश्चिमी यूरोप एशिया और सारा दुनिया के देशो के सामने जो समस्याएँ हैं, उनका एक मात्र हल ऋषि दयानन्द की विचारधारा को बताया।

वैदिक विद्वान डा० प्रशान्त वेदालकार ने ऋषि दयानन्द की सास्कृतिक, सामाजिक एव राजनैतिक धरोहर को सुरक्षित रखने वाले आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ को आगाह किया कि आज की कठिन परिस्थितियो मे जागरूक रहने की महती आवश्यकता है।

श्रद्धाञ्जली सभा से पूर्व बृहद यज्ञ ध्वजारोहण स्कूली बच्चो के खेल कूद कबड्डी कुश्ती दौड भाषण प्रतियोगिता तथा सास्कृतिक कार्यक्रमो का भी आयोजन किया गया।

सेवा में—

श्री पुस्तकालयाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तर प्रदेश)

प्रकाशक ... ५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
वैदिक प्रेस गली न० १७ कृष्णनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ११ अंक २० | रविवार ११ मार्च १९९० | फाल्गुन सम्वत २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सवत १९७२९४९०९०

मूल्य एक प्रति ५० पसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

भारत सरकार

कश्मीर में युद्धस्तर पर कार्रवाई करे

धारा ३७० अस्थायी व्यवस्था, उसे रद्द किया जाये

आर्यसमाज की भारत सरकार से जोरदार मांग

दिल्ली ५ माच। काश्मीर की वर्तमान स्थिति पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में विभिन्न सूत्रो से जो जानकारी प्राप्त हुई है, उनसे पता चलता है कि काश्मीर मे इस समय आतकवादियो की सहायता से पाकिस्तान ने अघोषित युद्ध प्रारम्भ किया हुआ है। वहा इस्लामी राज्य की स्थापना के प्रयत्न हो रहे हैं। लूटपाट, आगजनी बलात्कार आदि अनेक प्रकार के अत्याचारो से काश्मीर के अल्पसख्यक हिन्दू-सिख जान बचा कर अपने घर बार छोडकर भाग रहे हैं। उन्हें बिस्तर तक भी नही ले जाने दिये जा रहे हैं। रूबिया अपहरण और ५ आतकवादियो को रिहा कर देने से अलगाववादियो के हौसले बढ गये हैं और पूरी घाटी में पाकिस्तानी झण्डे फहराये जा रहे हैं। माच के अन्तिम सप्ताह तक हिन्दू सिखो को घाटी छोड देने की धमकिया दी गई हैं। उन्हे सम्पत्ति छोडने पर अनेक प्रकार से विवश किया जा रहा है। अत्याचारो की लोमहर्षक स्थिति को सुनकर रोंगटे खडे हो जाते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारत सरकार स जोरदार माग करते हुए कहा है कि वह ढुलमुल नीति का परित्याग करके काश्मीर में युद्ध स्तर की कार्रवाई करे और देश को बचाने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि काश्मीर को सेना के हवाले कर दिया जावे।

स्वामी जी ने धारा ३७० के विषय मे स्पष्ट करते हुए कहा कि यह अस्थायी व्यवस्था की थी। प० जवाहरलाल नेहरू ने भी इसे अस्थायी व्यवस्था बताते हुए कहा था कि धीरे धीरे घिसते घिसते घिस जायेगी। भारतीय जनता पार्टी ने धारा ३७० के विषय मे जो नीति अपनाई है उसी कारण भाजपा को जनता से व्यापक समर्थन मिला है।

स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट किया कि पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को उन्होने पजाब और काश्मीर के विषय मे अनेक सुझाव दिए थे किन्तु अल्पसख्यक लोगो की तुष्टीकरण के कारण उन्होन उस पर आचरण नही किया जिस कारण उनकी पार्टी को भारी पराजय का सामना करना पडा है। स्वामी जी ने वर्तमान केन्द्र सरकार से अनुरोध किया है कि वह भी अल्पसख्यको की वैशाखी पर चलने का प्रयत्न न करें नही तो देश की जागरूक जनता इसे किसी भी अवस्था मे सहन नही करेगी।

स्वामी जी ने इस विषय मे प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिह जी को एक विशेष पत्र लिखा है।

आईये ! हम आर्यजन—

- १९ मार्च को पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शती दिवस
- २७ मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस
- ३१ मार्च को क्रांतिकारियों के गुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा स्मृति दिवस

सोत्साहपूर्वक मनावें और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में जुट जाने का संकल्प लें।

"आर्यसन्देश" के पाठकों के लिए इस माह दो भव्य विशेषांक

१८ मार्च को—	२५ मार्च को—
गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी स्मृति अंक	**आर्यसमाज स्थापना दिवस समग्र-क्रान्ति अंक**

प्रधान-सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—प्रकाशचन्द्र गुप्त

वेद मनन

उपदेश

यस्यां भूतं समभवद्, यस्यां विश्वमिदं जगत्। [illegible] ॥

वीरांगना

—आचार्य यशपाल सुधांशु

वेद की ऋषिका कहती है—

अहं केतुरहं मूर्धा अहमुग्रा विवाचनी।

मैं राष्ट्र की पताका हू, मैं ही राष्ट्र का मस्तिष्क हू, दुराचारी के लिए उग्र हू और सभाओं परिषदों मे विवेचन करने वाली हू।

वास्तव मे नारी राष्ट्र की पताका ही नही वह तो राष्ट्र रूप शरीर का नाडी हैं। चतुर वैद्य नाडी देखकर के सारे रोग भाप लेता है तो नारी के सभ्य उन्नत-अवनत स्वरूप से राष्ट्र के विकास-अविकास का भी पता चल जाता है। अत वह पूज्या है उसकी निन्दा राष्ट्र-निन्दा है।

नारी निन्दा मत करो
नारी नर की शान।
हाथ पसार के देख लो
नाडी ही मे प्राण॥

नारी बेटी के रूप मे वत्सला बहिन के रूप मे स्नेह ममता तो मा के रूप मे श्रद्धा है। राग के अनोखे स्वरो से आबद्ध वह पत्नी के रूप मे प्रेयसी है। यहा उसका एकमात्र स्वरूप प्रणय है। सम्बन्धो की छोटी बडी कडी से हटकर पत्नी के रूप मे वह समान पद पर आ विराजती है। वह पुरुष का आधा प्रिय अग है। महर्षि व्यास ने उसकी प्रशस्ति गाते हुए कहा—

अर्ध भार्या मनुष्यस्य,
भार्या श्रेष्ठतम सखा।
भार्या मूल त्रिवर्गस्य,
भार्या मूल तरिष्यत॥

स्त्री पुरुष का आधा भाग है, पत्नी के रूप मे वह श्रेष्ठ मित्र है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप त्रिवर्ग की प्राप्ति में सब से अधिक सहायक है और ससार सागर तरने मे परम सहभागिनी है।

मन मे नम्रता, वाणी मे लज्जा, वाणी मे मधुरता, आचल में दूध लिये वह महादेवी जगनिर्मात्री है। उसने युग-युगो के इतिहास को गढा है। जब कभी भी उसे प्रदर्शन की वस्तु समझ उसकी लज्जा को अनावृत किया गया, परिणामस्वरूप कुल [illegible] गए। जब कभी वह उपेक्षिता सीता के रूप में अशोकवन में शोकाकुल हुई आसुओं के सैलाब मे उसने राजा-महाराजाओं के मुकुट बहा दिये।

जब उसे अशक्त क्रीतदासी समझ दाव पर लगाया गया इतिहास ही बदल गया, नरमुण्डो की माला पहन कुरुक्षेत्र जाग पड़ा। जब वह राज सिंहासन पर बैठी, विधवा वीरागना समझ उसे परवशता की बेडिया पहनाने की कोशिश की गयी, उसने अपनी हुकार से रानी झासी बन देश के तारुण्य को जगा दिया, इतिहास आज भी उसकी चिन्गारियो को नही भूला। जिस कुल जिस घर मे ये देविया अनादृत होती हैं अनेक प्रकार से सतायी जाती हैं ये शोषित पीडित देविया जिन को अपना शाप देती हैं वे विष दिये की तरह सम्पूर्णतया विनष्ट हो जाते हैं।

जामयो यानि गेहानि
शपन्त्यप्रतिपूजिता।
तानि कृत्याहतानीव
विनश्यन्ति समन्तत॥

मनु० ३।५८

सुना है आहे मजलूमा मे
कुछ तासीर होती है,
दुआ जो दर्दमन्दो की वह
अक्सर तीर होती है।

राष्ट्र रूप शरीर की यह नाडी नारी आज अल्पवसना हुई अपनी लज्जा को प्रदर्शन के बाजार मे नीलाम कर रही है। [illegible] विलासिता की गन्दगी बनती जा रही है। झाडू से लेकर सिगरेट बीडी तक के विज्ञापनो में नारी शरीर की प्रदर्शनी लगी है। महिला का अर्थ ही महिमावाली पूज्या है, फिर क्यों अपनी महिमा और पूजा को खुद अपमानित कर रही हो। विश्ववन्द्या! आप वीरांगना हो, श्रद्धा हो, वीरता की लपलपाती [illegible] हो। [illegible] की मनभावनी कुलकुल हो, लोरिया गाती मा हो, स्नेह एव ममता के झूले झुलाने वाली बहना हो, अपना स्वरूप पहचानिये। [illegible] की वस्तु की तरह [illegible] मे शामिल मत कीजिये।

[illegible], [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible]: सेवत, [illegible],
[illegible] स्त्री पूर्तयत्येक [illegible]॥

[illegible] — [illegible], [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] पुरन्धि [illegible] राय।
[illegible] सत्यस्य [illegible] [illegible] पुरन्धो [illegible]॥

ऋ० म० ५।३।२८।२

परिपालन हो न्याय-धर्म

—[illegible]नारायण भारद्वाज,

※ ● ※

[illegible] किया [illegible] हम को, [illegible] हेतु।
तेरे ये गीत प्रशसा के, मैंने गाए सुख शान्ति हेतु॥

हो ऐश्वर्य [illegible] सुख वाला
वन्दना-ज्ञान भी सुख वाला
[illegible] बोझ नहीं हो,
[illegible] हो सुख वाला।

हो तेरे प्रभु नियम निष्फल मेरी उन्नति [illegible] हेतु।
तेरे ये गीत प्रशसा के, मैंने गाये सुख शान्ति हेतु॥

[illegible] [illegible] कर्तव्य [illegible]
[illegible] [illegible] व्यवहार [illegible]
[illegible] दिशा से हट जाये
हो परिपालन नित न्याय-धर्म।

[illegible] कर धर्म कर्म, दो कीर्ति [illegible] कर [illegible] हेतु।
तेरे ये गीत प्रशसा के, मैंने गाये सुख शान्ति हेतु॥

स्वीकार करो प्रभु पुण्य स्तुति
आनन्द बढ़ाये ये प्रभु स्तुति
स्वर गीत समर्पण सुनो मीत
माधुर्य बढ़ाये गीताहुति।

श्रान्त पथिक के क्लान्त क्लेश को, दे दिया गीत मे शान्ति सेतु।
तेरे ये गीत प्रशसा के मैंने गाये सुख शान्ति हेतु॥

[illegible] निवास, रैदोपुर, नई बस्ती, आजमगढ़ (उ०प्र

कर्तव्यनिष्ठ श्री रामनाथ सहगल

१३ मार्च १९२६ को जन्मे श्री रामनाथ सहगल आर्यसमाज क्षेत्र के कुशल, साहसी तथा समर्पित जीवन वाले कार्यकर्ता हैं। आर्यसमाज का कार्य उनकी रग-रग मे समाया हुआ है। आर्यसमाज के सभी क्षेत्रों मे उनकी गति और विकास है। बडे-बडे महासम्मेलनों से लेकर छोटे-बडे [illegible] कार्यों में भी उनकी कार्यकुशलता व कर्मठता के दर्शन होते हैं। ऐसे कार्यकर्ता आर्यसमाज के क्षेत्र मे बहुत कम मिलेंगे, जो प्रत्येक समय सामाजिक कल्याण की भावना से ही कार्य करते हों। आर्यसमाज का कोई प्रशिक्षण-शिविर हो, या योग-शिविर हो या फिर सेवा केन्द्र हो, सभी जगह श्री सहगल दिखलायी देंगे। अपने इन विशिष्ट गुणों के कारण ही वे आर्यसमाज एव डी० ए० वी० शैक्षणिक जगत् की अनेक संस्थाओं के आधार स्तम्भ बने हुए हैं।

श्री सहगल के [illegible] जन्म-दिवस पर प्रभु से उनके सुदीर्घ एव स्वस्थ जीवन की कामना है।

—[illegible]

सम्पादकीयम्

आगामी १९ मार्च को महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य मुनिवर गुरुदत्त 'विद्यार्थी' एम० ए० का शताब्दी दिवस है। आर्यसमाज के विद्वानों, अधिकारियों को सम्भवत इसका पता ही नही है। हम यह दावा करते हैं कि विश्व को आर्य बनाएँगे, परन्तु सुध तो हमें अपने देश, समाज और परिवार की तो दूर रही, अपनी स्वयं की भी नही है। हम अपने दैनन्दिन कार्यों मे इतने व्यस्त है कि हमें न तो ईश्वर-स्मरण की फुरसत है और न ही आर्यसमाज के देदीप्यमान पृष्ठो को खोलकर देखने की।

आर्यसमाज के इतिहास मे बलिदानों की एक लम्बी परम्परा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम आदि की सुदीर्घ परम्परा है। रगीला रसूल लिखने वाले तो थे प० चमूपति जी पर बलिदान हो गए थे, महाशय राजपाल। आर्यसमाज के सेवको को चाहिए कि इन जाज्वल्यमान पृष्ठो को कभी-कभी खोलकर देख लिया करे। उन्हें इससे प्रेरणा मिलेगी। वे धर्म के लिए आगे बढेगे। वे "ओ३म्" की पताका गौरव से फहरा सकेंगे। उनकी यज्ञ और वेद प्रचार में श्रद्धा बढ़ेगी।

यह समय है जब हम प० गुरुदत्त का स्मरण करें। केवल स्मरण न करें बल्कि उसके कर्तृत्व से प्रेरणा ले तथा तदनुसार अपने जीवन को कर्ममय-यज्ञमय बनाएँ।

यू तो जीने के लिए लोग जिया करते हैं,
लाभ जीवन का नही, फिर भी जिया करते हैं,
मृत्यु से पहले तो मरते हैं, हजारों लेकिन,
जिन्दगी उन्ही की है, जो मर कर भी जिया करते हैं।

ऐसा ही वीर सपूत था, प० गुरुदत्त जो मात्र २६ वर्ष की आयु मे इस ससार से चला गया। यह विस्मयकारी है कि इस छोटी सी आयु में उसने कितना कार्य किया, कितना प्रचार किया, कितना साहित्य लिखा और कितनी सस्थाओं के सचालन में योग दिया। जीवन की पूर्णता का आकलन दीर्घ जीवन से नहीं महत्त्वपूर्ण कार्यो से किया जाता है। छोटे जीवन में ही उसने जीवन की पूर्णता को पा लिया था।

१९ मार्च १९८९ को प्रात ७०० बजे वह वीर चला गया। आर्य-समाज को उसका अभाव सदैव खटकता रहेगा। प्रभु से प्रार्थना है कि हम उनके मार्ग पर चलकर वैदिक धम के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बने।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा इस अवसर पर आर्यसन्देश का भव्य-विशेषाक "गुरुदत्त निर्वाण-शताब्दी स्मृति अक" का प्रकाशन कर रही है। सभा का उद्देश्य है कि उस वीर प० गुरुदत्त का सभी आर्यसमाज स्मरण करें तथा उसके कर्तृत्व से प्रेरणा ले।

महान् दयानन्द

—उत्तमचन्द 'शरर'

ओ तुग हिमालय शृङ्ग तुल्य उज्ज्वल महान्,
गम्भीर पर पावन चरित्र गगा समान।
ओ ब्रह्मचर्य साकार दिव्य जीवन अनूप,
पाखण्ड, दम्भ के लिए उग्र विद्रोह रूप।
ओ दया, अहिंसा, सत्य, न्याय के चमत्कार,
ओ अबला, दीन अनाथ, दलित के चीत्कार।
ओ पयोदधि से शान्त, बिजलियो से विह्वल,
ओ प्रखर तेज में सूर्य, चन्द्रमा से शीतल।
निर्भीक, तपस्वी, परिव्राट् कौपीन धारी,
आचार्य ऋषिवर दयानन्द ओ ब्रह्मचारी।
ओ जग हित निज जीवन अर्पित करने वाले,
विष पी पीकर भी पर पीडा हरने वाले।
ओ तेजस्वि, ओ क्रान्तदर्शी ओ सत्यकाम,
युग पुरुष, हमारा युग-युग तक तुम को प्रणाम।

आर्यसन्देश के—
ऋषि-बोधांक का विमोचन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र आर्यसन्देश के ऋषि-बोधांक का विमोचन सुप्रसिद्ध आर्य नेता, स्वतन्त्रता सेनानी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० रामचन्द्रराव वन्दे मातरम् के कर-कमलों से नई दिल्ली में आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋषि-बोधोत्सव समारोह में २३ फरवरी को किया गया।

इस समारोह की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने की। श्री वन्दे मातरम् ने ऋषि-बोधांक की भव्यता तथा विषयों के चयन के लिए सम्पादक तथा सभा के अधिकारियों को बधाई दी।

ऋषि-बोधांक पर कुछ प्रतिक्रियाएँ

विख्यात साहित्यकार वैदिक विद्वान् आचार्य प्रवर प० क्षेमचन्द्र जी सुमन' कहते हैं—

—'आर्यसन्देश' का मैं नियमित पाठक हूँ। आर्य पत्र-पत्रिकाओं में इसने अपनी पहचान बना ली है। गत वर्ष में प्रकाशित इसके अनेक अक विशेषांक आकर्षक साज-सज्जा और उससे भी अधिक वैदिक विद्वानों के शोध-लेखों से पूरित रहे हैं, अतएव शुभ कामनाएँ स्वीकार करें।

—मुझे दु ख है कि प्राय सभी आर्य पत्र-पत्रिकाओ में प्रूफ की अशुद्धियाँ रह जाती हैं, और आर्यसन्देश भी इसका अपवाद नही। यदि आप प्रूफ देखने की व्यवस्था ठीक कर ले तो यह पत्रिका आर्यजगत् की शीर्ष पत्रिका बन जायेगी।

भारत सरकार के सेवानिवृत्त सूचना अधिकारी, हैदराबाद सत्याग्रह के प्रथम सत्याग्रही, वरिष्ठ पत्रकार श्री ब्रह्मदत्त स्नातक दूरभाष द्वारा अपनी प्रतिक्रिया इस प्रकार व्यक्त करते हैं—

—हाथ पर पलास्तर चढ़ा होने से मैं न तो आने वाले पत्रों के उत्तर ही दे पा रहा हूँ और न ही अपनी भावनाएँ लेखबद्ध कर पा रहा हूँ। हा! स्वाध्याय खूब चल रहा है।

आप द्वारा सम्पादित आर्यसन्देश का नवीनतम विशेषाक "ऋषि-बोधाक" पूरा पढ़ चुका हूँ। सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं, और साज-सज्जा का तो कहना ही क्या। सभी रचनाएँ मननीय हैं और अक सग्रहणीय है। सभी विद्वान् रचनाकारों को आर्यसन्देश के माध्यम से मेरी बधाई प्रेषित अवश्य करें। प० क्षितीश जी वेदालकार तथा प० देवनारायण भारद्वाज जी की रचनाओं ने मुझे विशेष प्रभावित किया है।

—अवकाश प्राप्त प्रिंसिपल एव पत्रकार श्री वीरभान जी 'वीर' लिखते हैं—

—आप साधुवाद के अधिकारी हैं, कि आर्यजगत् के विख्यात विद्वानो की भिन्न-भिन्न विषयों पर शोधपूर्ण रचनाओं को लिखवाकर, आर्यसन्देश के विशेषांकों का रूप दे रहे हैं—जो स्वाध्यायशील आर्यजनों के पारिवारिक पुस्तकालयो की धरोहर बनते जा रहे हैं।

आर्यसन्देश साप्ताहिक

के स्वामित्व के सम्बन्ध मे विवरण

फार्म-४

(प्रपत्र नियम ८)

१	प्रकाशन का स्थान	—नई दिल्ली-११०००१
२	प्रकाशन अवधि	—साप्ताहिक
३	मुद्रक का नाम	—सूर्यदेव
	राष्ट्रीयता	—भारतीय
४	प्रकाशक का नाम	—सूर्यदेव
	पता	—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१
५	सम्पादक का नाम	—सूर्यदेव
	राष्ट्रीयता	—भारतीय
६	पत्र का स्वामित्व किसके पास है	—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली

मैं सूर्यदेव घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक ५ मार्च १९९०　　सूर्यदेव

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी—

१०२ वें जन्म दिवस पर विशेष—

पं० अयोध्या प्रसाद वैदिक मिशनरी

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

अद्भुत वाग्मी, अपूर्व दार्शनिक तथा विश्व प्रचारक प० अयोध्या-प्रसाद का जन्म १६ मार्च १८८८ को बिहार प्रान्त के गया जिले की नवादा तहसील के आमुआ नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू वशीधरलाल तथा माता का नाम श्रीमती गणेशकुमारी था। पिता रांची के डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय में बेंच क्लर्क थे। वे अरबी तथा फारसी भाषाओ के अच्छे ज्ञाता थे। कहते हैं कि उन्होंने अंग्रेजी के वेबस्टर शब्द कोष को कण्ठस्थ कर रखा था। बाल्यकाल में अयोध्याप्रसाद को तान्त्रिक साधनों में दिलचस्पी पैदा हुई और वे श्मशान में रह कर विभिन्न प्रकार की तान्त्रिक साधनाएं करने लगे। तांत्रिको के बीभत्स क्रिया कलापों में रुचि लेने वाले पुत्र को देखकर पिता को बडी निराशा हुई।

कुल गत प्रथा के अनुसार पिता ने बालक की शिक्षा के लिए एक मौलवी की नियुक्ति की जिन से उन्होने उर्दू, फारसी तथा अरबी का अध्ययन किया। इन भाषाओ पर इनका असाधारण अधिकार हो गया। अब वे अरबी तथा फारसी मे धाराप्रवाह रूप से भाषण देने लगे। इन भाषाओ के अध्ययन ने अयोध्या-प्रसाद जी को हिन्दु धर्म से विरत कर दिया। उनका विश्वास इस्लाम की श्रेष्ठता में दृढ हो गया। इन दिनो वे 'गनीमत' नाम से उर्दू, फारसी तथा अरबी में काव्य रचना भी करते थे। प्रचलित प्रथा के अनुसार १६ वर्ष की आयु में इनका विवाह लोहरदगा के श्री गिरवरधारी लाल की पुत्री किशोरीदेवी के साथ १९०४ में सम्पन्न हुआ। वधू की आयु उस समय मात्र साढे नौ वर्ष की थी।

आर्यसमाज में प्रवेश—आर्यसमाज मे अपने प्रवेश सम्बन्धी संस्मरणों को सुनाते हुए पण्डित अयोध्याप्रसाद ने प० रमाकान्त शास्त्री को इस प्रकार बताया था—"मैं जिस कुल में पैदा हुआ था, उस पर इस्लाम की बडी छाप थी। फलस्वरूप मेरे पिता जी ने मुझे एक आलिम फाजिल मौलवी साहब के मकतब में उर्दू और फारसी पढ़ने के लिए भर्ती करा दिया था। एक दिन मेरे मामू साहब ने कहा, "अजुध्या, आज कल तुम क्या पढ़ रहे हो? बालक अजुध्या ने मौलवी साहब की बडाई करते हुए इस्लाम की खूबियां बताई और साथ ही हिन्दु धर्म की खराबियां भी। मामू कट्टर आर्यसमाजी थे। उन्होंने कहा, "अजुध्या एक बार तुम सत्यार्थप्रकाश को पढ लेते तो तुम्हारी आखें खुल जाती और तुम आर्यधर्म में कोई खराबी नहीं पाते।" अपने मामा की प्रेरणा से उन्होंने सत्यार्थप्रकाश पढ़ना प्रारम्भ किया। पहले इस ग्रन्थ का १४वां समुल्लास पढ़ा, तत्पश्चात् १३वां। इस प्रकार इस्लाम और ईसाइयत की सब त्रुटियां जान कर वे अपने मौलवी साहब से ही नाना प्रकार के प्रश्न पूछने लगे। मौलवी बडे चकराये। इस प्रकार सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से उन्हें आर्यसमाज तथा उसके प्रवर्तक का परिचय मिला। प० लेखराम लिखित 'हुज्जतुल इस्लाम' पढ कर उन्हें कुरान के अध्ययन की प्रेरणा मिली और वे तुलनात्मक दृष्टि से विभिन्न धर्मों के अध्ययन में तत्पर हुए।

१९०८ में उन्होंने प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् इण्टरमीडियेट की शिक्षा के लिए हजारीबाग के सेंट कोलम्बस कालेज मे प्रवेश लिया। यहा उनका क्रान्तिकारियों से सम्पर्क हुआ और वे शीघ्र ही सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन मे सम्मिलित हो गए। इस पर पिता ने उन्हें हजारीबाग से हटाकर भागलपुर भेज दिया जहा रह कर उन्होंने १९११ में इण्टरमीडियेट की परीक्षा उत्तीर्ण की। क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेते समय अयोध्याप्रसाद जी ने उत्तर भारत के अनेक नगरों का भ्रमण किया और आतंकवादियों की मण्डली में 'सिसिर जी' के छद्म नाम से प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार की गैर कानूनी गतिविधियों मे भाग लेने के कारण उनके पिता का रुष्ट होना स्वाभाविक ही था। पिता ने पुत्र की पढ़ाई का व्यय देना बन्द कर दिया। इस पर रांची के प्रसिद्ध आर्यनेता श्री बालकृष्ण सहाय ने पिता पुत्र के बीच समझौता कराने का प्रयत्न किया। इन्हीं की प्रेरणा से अयोध्याप्रसाद जी ने संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा से संस्कृत भाषा तथा शास्त्रों का विस्तृत अध्ययन किया। वे अपने संस्कृत ज्ञान तथा शास्त्र नैपुण्य के लिए शर्मा जी का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते थे।

पटना से संस्कृत का अध्ययन समाप्त कर १९११ में वे कलकत्ता आये। यहां वे हिन्दू होस्टल मे रहने लगे, जहां पजाब के प्रसिद्ध नेता डा० गोकुलचन्द नारंग तथा डा० राजेन्द्रप्रसाद जैसे लोग अपने छात्रकाल में निवास करते थे। वे पहले प्रेसिडेन्सी कालेज में भर्ती हुए, उसके पश्चात् सिटी कालेज में पढ़ने लगे। यहां रह कर उन्होंने इतिहास, दर्शन, तुलनात्मक धर्म जैसे विषयों का गम्भीर अध्ययन किया। अपने अध्ययन की भूख को शान्त करने के लिए वे कलकत्ता के विभिन्न धर्मस्थानों के पुस्तकालयों में जाते तथा महत्त्वपूर्ण ग्रंथों को स्वयं भी क्रय कर के पढते। कलकत्ता में पढने वाले बिहार के छात्रो ने 'बिहार छात्र सघ की स्थापना की। राजेन्द्र बाबू इस संस्था के अध्यक्ष थे, जब कि अयोध्याप्रसाद जी मंत्री। १९१५ ई० में उन्होंने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् एम० ए० और बी० एल० का पूर्वार्द्ध भी किया। कलकत्ता निवासकाल में वे आर्यसमाज के निकट सम्पर्क में आये। आर्यसमाज कलकत्ता में नियमित रूप से उनके भाषण होने लगे। अब वे इस आर्यसमाज के पुरोहित तथा उपदेशक के रूप में भी कार्य करने लगे। इनकी अपूर्व वाग्मिता, तर्क कौशल तथा गम्भीर स्वाध्याय से सभी लोग प्रभावित हुए। आर्य धर्म के अतिरिक्त उन्होंने बौद्ध, जैन, इस्लाम तथा ईसाइयत का भी विस्तृत अध्ययन किया था। १९२० में प्रारम्भ किये गये असहयोग आन्दोलन मे उन्होंने सक्रिय रूप मे भाग लिया। इसी वर्ष कलकत्ते के कालेज स्क्वायर मे सत्यार्थप्रकाश के समुल्लास में प्रतिपादित राजधर्म पर भाषण करने पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया और अदालत द्वारा डेढ़ वर्ष का कारावास दिया गया। राजनीतिक बन्दी के रूप में वे अलीपुर के केन्द्रीय कारागार में रखे गये। कारागार से मुक्त होने पर वे एक विद्यालय में मुख्याध्यापक का कार्य करने लगे। विश्वधर्म सम्मेलन में पं० अयोध्याप्रसाद की बडी इच्छा थी कि वे विदेशों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करें। इस्लामी देशों में धर्म-प्रचारार्थ जाने की भी उन्हें उत्कट अभिलाषा थी। विदेश यात्रा का अवसर उन्हें १९३३ में मिला जब वे विश्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने हेतु अमेरिका के शिकागो नगर मे गये। आर्यसमाज कलकत्ता तथा बम्बई से ही वे इस सम्मेलन में वैदिक धर्म के प्रवक्ता के रूप में सम्मिलित हुए थे। सेठ युगलकिशोर बिडला ने उनकी विदेश यात्रा के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की थी। जुलाई १९३३ में वे अमेरिका पहुंचे। धर्म सम्मेलन में 'वैदिक धर्म की महत्ता और विश्वशान्ति' विषय पर उनका प्रभावशाली भाषण हुआ। वैदिक शिक्षाओं को स्वीकार करने से ही विश्वशान्ति सम्भव है, इस धारणा का प्रबल युक्तियों के आधार पर प्रतिपादन करते हुए उन्होंने सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों के समक्ष वेदों की उदात्त विचारधारा को प्रस्तुत किया। पं० अयोध्याप्रसाद के भाषण का प्रभाव सम्मेलन पर इस रूप मे भी लक्षित हुआ कि सम्मेलन की पूरी अवधि में उसकी दैनन्दिन कार्यवाही का प्रारम्भ वेद मन्त्रों से तथा समाप्ति वैदिक शांतिपाठ से होती थी।

इसी सम्मेलन में पण्डित जी ने वैदिक अभिवादन 'नमस्ते' की बडी हृदयग्राही व्याख्या की। उन्होंने बताया कि आर्य लोग दोनों हाथ जोड कर तथा उन्हें हृदय के निकट लाकर, पुन नतमस्तक हो 'नमस्ते' का उच्चारण करते हैं। इन क्रियाओं का अभिप्राय यह है कि 'नमस्ते' के द्वारा हम अपने हृदय, हाथ तथा मस्तिष्क तीनों की प्रवृत्तियों का संयोजन करते हैं। हृदय आत्मशक्ति का प्रतीक है, भुजाएँ शारीरिक बल की द्योतक हैं तथा मस्तिष्क मानसिक शक्तियो का केन्द्र है। इस प्रकार नमस्ते के उच्चारण तथा उसके साथ थोडा मस्तक झुका कर दोनों हाथों को जोडते हुए हम इन भावों को व्यक्त करते हैं—

With all the physical force in my arms, with all my mental force in my head, and with all the love in my heart, I pay respect to the soul with in you

(शेष पृष्ठ ५ पर)

(पृष्ठ ४ का शेष)

पं० अयोध्या प्रसाद वैदिक मिशनरी

कहना नहीं होगा कि नमस्ते की इस अद्भुत किन्तु तुष्टिप्रद व्याख्या से सम्मेलन में उपस्थित पाश्चात्य जनसमूह बड़ा प्रभावित हुआ था।

उत्तर तथा दक्षिण अमेरिका में वैदिक धर्म का प्रचार करने के पश्चात् पण्डित जी ने डच गायना, ट्रिनिडाड आदि देशों में धर्म प्रचारार्थ भ्रमण किया। ट्रिनिडाड मे एक कट्टरपन्थी सनातनधर्मी ने उन्हें भोजन के लिए आमन्त्रित किया। यह जानकर कि पण्डित अयोध्याप्रसाद आर्यसमाज के प्रखर विद्वान् तथा शास्त्रार्थ कला निष्णात महारथी हैं, उसने द्वेषवश पण्डित जी को भोजन में विष दे दिया। यद्यपि भोजन के विष मिश्रित ग्रास को जिह्वा पर रखने मात्र से ही पं० जी को भोजन के विष सम्पृक्त होने का ज्ञान हो गया था, तथा उन्होंने अवशिष्ट भोजन को त्याग भी दिया, किन्तु तीव्र विष का घातक प्रभाव उनके शरीर पर पड़े बिना नहीं रहा। लदन आते-आते व बीमार पड़ गए तथा चिकित्सा हेतु उन्हें यहां अस्पताल में ६ मास तक रहना पड़ा। यद्यपि वे स्वस्थ हो गये, किन्तु उनकी हृदय क्रिया विष से आजीवन प्रभावित रही।

विदेश यात्रा से लौट कर प० अयोध्याप्रसाद ने कलकत्ता को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया। उन के जीवन के अवशिष्ट दिन धर्मप्रचार, स्वाध्याय, चिन्तन तथा मनन में ही व्यतीत हुए। देहान्त से पूर्व उन्होंने अपना पुस्तक सग्रह, जिस मे लगभग २५ हजार बहुमूल्य एव दुर्लभ ग्रथो का संग्रह था, महर्षि दयानन्द जन्म स्मारक ट्रस्ट टंकारा (गुजरात) को भेंट कर दिया। उन के इस पुस्तकालय का आनुमानिक मूल्य २ लाख रुपया आंका गया था। प० अयोध्याप्रसाद के जीवन के अन्तिम दिन सुखद नही रहे। दुर्बल स्वास्थ्य तथा हृदय रोग से ग्रस्त होकर वे अपने ८५ बहू बाजार स्थित निवास पर वर्षों कष्ट भोगते रहे। अन्तत ११ मार्च १९६५ को ७७ वर्ष की आयु प्राप्त कर उनका निधन हुआ।

कण कण का हो नव उत्थान

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

उठो ! करो ! नवयुग आह्वान,
मनुजता का छा जाय वितान,
प्रत्यावर्तन हो अवनति का—
कण कण का हो नव उत्थान।

अजंर का हो नव निर्माण,
मिले पतित को नूतन प्राण,
समस्तों को वसुन्धरा पर—
मिले अहर्निश अभिनव त्राण।

मिले धरित्री को नव सम्बल,
स्वच्छ बने सारा यह दलदल,
दिवस पुन आ गए ऊष्मा—
दूर हटा दो अब यह कम्बल।

करे पुरुष पुरुषार्थ निरन्तर,
पाप हटे भू तने सुचितर,
मानवता के गुण-गानों से—
आप्लावित हो वसुधा-अम्बर।

निर्मल सा हो मनुज समाज,
हटे घृणा-द्वेष का राज,
धर्म समन्वित पथ पर मानव—
प्रगति करे निर्भय हो आज।

मिटे मनुजता का उपहास,
बढ़े परस्पर शुचि विश्वास,
छा जाये अब दिग्दिगन्त में—
अन्तरतम का नव उल्लास।

आए उत्साहित नवजीवन,
प्रमुदित हो जन गण का अभिमन,
दिव्य गुणों की सरिता फैले—
मनुज करे मानवता वन्दन।

सभी निरोगी, सभी सुखी हों,
नहीं धरा पर मनुज दुःखी हों,
करें सभी कर्तव्य निरन्तर—
सभी सदा मनुजत्वसखी हों।

—मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

दिवगत आर्यश्रेष्ठी—

स्वामी परमानन्द

उत्तर प्रदेश के शाहजहापुर जनपद में एक सुन्दर उपनगर जलालाबाद है। इस उपनगर के चारों ओर दूर-दूर तक कोई आर्यसमाज मन्दिर अब से अनेक दशाब्दियों पूर्व नही था। अब से ७०-८० वर्ष पूर्व स्वामी परमानन्द जी ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर यहां पर आर्यसमाज की स्थापना की थी।

स्वामी जी का पूर्व नाम श्री ख्याली राम जी था। आप अपने नगर के बहुत ही प्रतिष्ठित एवम् ऐश्वर्य शाली सज्जन थे। अपने जीवन के आरम्भ काल में आर्यसमाज् के सम्पर्क में न आ सकने के कारण आप कुछ व्यसनी हो गये थे। पर बाद में आप शाहजहापुर जनपद के प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों तथा स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ हो गये थे।

श्री ख्यालीराम जी प्रसिद्ध कपडे के थोक व्यवसायी थे। व्यापार के काम से तथा देशभक्तो के साथ प्राय आपको देश भ्रमण का अवसर भी मिलता था। ऐसी ही किसी यात्रा मे आपका आर्यसमाज से सम्पर्क हो गया। बाद मे अपने नगर मे भी कई आर्यसमाजी विचारो के व्यक्ति मिल गए थे। सुन्दर सम्पर्क के कारण सारे दुर्व्यसन दूर कर श्री ख्यालीराम एक आर्य पुरुष बन चुके थे।

अब ख्यालीराम जी के नियमित रूप से तीन काम हो गये थे। अपने व्यवसाय का सचालन, देशभक्तो की सहायता एव आर्यसमाज का प्रचार। इनकी पत्नी अपनी सतानो को छोड कर स्वर्ग धाम गई। अनेक लोगो ने दूसरे विवाह की प्रेरणा दी। परन्तु उन्होंने स्वीकार नही किया।

वैराग्य भावना प्रबल हो उठी थी। सारे सासारिक कार्यों से उपराम होने लगे। महर्षि दयानन्द के सन्देश को जीवन मे उतारने की ठान ली। अपनी पुत्री के विधवा होने पर समाज की रूढ़ियो की उसके अवरोध को एक ओर रख कर उसका पुर्नविवाह कर दिया। अपने विशाल कोठीनुमा निवास को बेच दिया। इस धन से जलालाबाद में प्रमुख स्थान पर भूमि क्रय कर के आर्यसमाज मन्दिर बनवा दिया। स्वय अपनी दो पक्की दुकानें तथा गोदाम आदि आर्यसमाज के नाम कर दी। बाद में इनके साथी व शिष्यो ने भी सहयोग कर के मन्दिर-निर्माण मे सहयोग किया। आर्यसमाज मन्दिर मे इनके अतिरिक्त निर्माण निधि में यदि दूसरा शिलालेख किसी का है तो वे हैं स्व० महाशय दीनानाथ जी। इन्होंने भी एक दुकान तथा यज्ञशाला बनवा कर समाज को दान की थी।

उस समय आर्य जगत् के प्राण महात्मा नारायण स्वामी से सन्यास दोक्षा लेकर स्वामी परमानन्द बन गये। "शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सकिर" वेद मन्त्र को अपने जीवन मे साकार कर दिया। निर्धन अनाथों को आर्थिक सहायता एवम् स्थान-स्थान के आर्यसमाजो को अधिकाधिक दान देना उनका स्वभाव बन गया था। गुरुकुल वृन्दावन को कई सहस्र रुपये देकर एक निधि उन्होंने स्थापित की थी। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मुख्यालय पर कूप का निर्माण कराया था। उनके नाम का पत्थर कभी मैने वहा देखा था। इसी भाति अनेक आर्य सस्थाओं को सदैव प्रचुर धन दान करते रहे। अब से लगभग १८ वर्ष पूर्व ८४ वर्ष की अवस्था में स्वामी जी का देहावसान हो गया था। लेखक ने उनके चरणों मे बैठ कर प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की थी। अबोध बाल्यावस्था में जो भावनाएँ, स्वामी जी ने मेरे मन मस्तिष्क में भर दी थी—वे ही मेरा पथ-प्रदर्शन करती रहती हैं।

—देवनारायण भारद्वाज

उत्सव—

पाणिनि कला महाविद्यालय

आर्यजगत् की विख्यात, शिक्षण संस्था पाणिनि कला महाविद्यालय, तुलसीपुर, वाराणसी (उ० प्र०) का आगामी वार्षिकोत्सव ७, ८, ९ अप्रैल को विशेष समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

इसी सस्थान द्वारा पिछले दिनों भारतीय गणतन्त्र दिवस तथा वसन्तोत्सव-पर्व बड़े उल्लास के साथ मनाये गये। इन अवसरों पर यज्ञ, ध्वजोत्तोलन, खेल-कूद आदि के कार्यक्रम प्रशसनीय रहे।

प्राचार्या डा० प्रज्ञादेवी जी विद्यालय की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए प्रयत्नशील हैं।

श्री गोवर्धनदास काठपालिया को दुर्घटना में मृत्यु

आर्यजगत् के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री गोवर्धनदास जी काठपालिया का पिछले दिनो कार-दुर्घटना में निधन हो गया है। श्री काठपालिया विभाजन से पूर्व आर्यसमाज अनार कली लाहौर मे मन्त्री पद सुशोभित कर चुके है। आप एक लम्बे समय से वैदिक साधनाश्रम गाजियाबाद (उ० प्र०) मे अवैतनिक अधिष्ठाता के पद पर निस्वार्थ भाव से कार्य कर रहे थे। वहा की अनेक आर्यसस्थाओ मे आपका सक्रिय सहयोग रहा।

७६ वर्षीय श्री काठपालिया अपने पीछे पुत्र, पुत्रियो, पौत्र-पौत्रियो से भरा परिवार छोड गए हैं। २ मार्च को आर्यसमाज सी-३ पार्क, जनकपुरी मे आयोजित शाति-यज्ञ मे दिल्ली तथा गाजियाबाद की अनेक आर्य सस्थाओ के अधिकारी और कार्यकर्त्ता भारी सख्या मे उपस्थित हुए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव, वैदिक विद्वान् प्रो० रत्नसिह तथा अन्य अनेक वैदिक-विद्वानो ने इस अवसर पर पहुँच कर अपनी सम्वेदनाएँ प्रकट की।

आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'
व्यक्तित्व और कृतित्व

आर्यसस्कृति के सशक्त समर्थक, हिन्दी के सजग प्रहरी, सरस्वती के मूकसाधक, मूर्धन्य साहित्यकार विगत हिन्दी सेवियों को पुनर्जीवित करने वाले एव प्रबुद्ध समाज सेवी आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' निष्काम कर्मयोगी के सदृश विगत पाच दशको से विविध रूपो मे राष्ट्र-सेवा मे अविरत साधनारत है।

यह उनकी साहित्यिक साधना का ही सुफल है कि उनके विषय मे 'आचार्य क्षमचन्द्र 'सुमन' व्यक्तित्व और कृतित्व'—शीर्षक से रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से शोधकार्य सम्पन्न हो चुका है। इस शोधग्रन्थ में अनेकश ऐसे अन्वेषणात्मक सदर्भ है, जिन से हिन्दी-जगत को अवगत कराना नितान्त अनिवार्य है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना बनायी गई है। इस साहित्यिक-यज्ञ के लिए हमे आर्यजनो का सहयोग चाहिए। अत आप से निवेदन है कि इस पावन कार्य के लिए हमे अपना आर्थिक सहयोग देकर हमारा उत्साहवर्द्धन करे।

सहयोग राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पास चेक, मनी-आर्डर अथवा नकद सहयोगियो के सौजन्य का नामोल्लेख ग्रन्थ में साभार किया जायगा।

आर्यसमाज पालम गांव

आर्यसमाज पालम गाव, नई दिल्ली-४५ के मन्त्री श्री उदयश्रेष्ठ के अनुसार आर्यसमाज का १७वा वार्षिकोत्सव रविवार १८ मार्च को प्रात ९ बजे से मध्याह्न १ बजे तक मनाया जाएगा।

इस अवसर पर "हिन्दु-जागृति सम्मेलन का आयोजन किया गया है, जिस मे अनेक आर्य विद्वान् पधार रहे हैं।

पारिवारिक सत्संग

ऋषि बोधोत्सव के अवसर, धर्मपुरा, नई दिल्ली १५ ने २० फरवरी से २४ फरवरी तक पारिवारिक सत्सगो का आयोजन किया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन एवम् वद प्रवचनो का सुन्दर आयोजन हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प० चुन्नीलाल आर्य एवम् श्रीचन्द्रपाल जी ने वेद प्रचार किया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल माडल टाउन दिल्ली का वार्षिकोत्सव रविवार ११ फरवरी १९९० को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होने विद्यालय के छात्र-छात्राओ द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमो की प्रशसा करते हुए कहा कि हमारे विद्यालयो मे वैदिक धर्म और सस्कृति की सवृद्धि के लिए, कार्यक्रम किए जाते हैं, यह सन्तोष की बात है। उन्होने बच्चो द्वारा तैयार की गई प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं एवम् दानदाताओं को सम्मानित भी किया गया।

दिल्ली की आर्यसमाजों से विनम्र निवेदन

आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९९० को समाप्त हो रहा है। आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक आर्यसमाज के नियमो उपनियमो के अनुसार ११ मई १९९० तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियो, आर्य वीरदल के लिए अधिष्ठाता का तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियो का निर्वा न यदि गत वर्ष न किया हो तो कर लें। आपकी आर्यसमाज की ओर से प्रथम दस सभासदो पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों से समाज का सभासद रहा हो।

निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय मे १५ मई १९९० तक भिजवाने की कृपा करे।

१ १ अप्रैल १९९० से ३१ मार्च १९८९ तक का वार्षिक विवरण

(अ) यज्ञ, सस्कार, शुद्धिया, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराये गये विवाहो का तथा समारोहो का विवरण।

(आ) समाज के अधीन चल रही सस्थाओ, विद्यालयो, चिकित्सालय, पुस्तकालय, सेवा समिति, आर्य वीर दल इत्यादि का विवणर।

२ अप्रैल १९८९ से ३१ मार्च १९९० तक आय-व्यय विवरण।

३ सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार—

क्रम सख्या	सदस्य का नाम	पिता का नाम	पता	वर्ष मे प्राप्त सदस्यता शुल्क

४ सदस्यता शुल्क का दशाश, वेद प्रचार राशि और 'आर्यसन्देश' का वार्षिक शुल्क २५/-रुपये।

इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर, अपना तथा अपनी समाज का सहयोग प्रदान करे।

भवदीय

सूर्यदेव, महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, हनुमान रोड नई दिल्ली-१

आर्यसमाज दीवानहाल
होली मंगल मिलन समारोह

होली का पावन मगल मिलन समारोह आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली-६ की ओर से १० मार्च ९० को चादनी चौक पर स्वामी श्रद्धानन्द की विशाल प्रतिमा के नीचे बडे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

इस अवसर पर २ ३० बजे आर्यसमाज दीवानहाल की ओर से होली पर्व का मागलिक बृहद् यज्ञ, प्रसिद्ध विद्वानो के प्रवचन एव सगीत के विशेष आयोजन किये जा रहे है।

सभी धर्मप्रेमियो से आग्रह है कि इस अवसर पर अधिक से अधिक सख्या मे उत्सव मे सम्मिलित होकर समारोह की शोभा बढ़ाये।

आर्यसमाज दीवानहाल का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज दीवानहाल के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने एक वक्तव्य मे घोषणा की है कि आर्यसमाज दीवानहाल का १०५वा वार्षिकोत्सव आगामी ३०, ३१ मार्च व १ अप्रैल १९९० को लालकिला मैदान मे बडे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। विस्तृत कार्यक्रम की शीघ्र घोषणा की जायेगी। यज्ञ व वेदोपदेश का कार्य २९ मार्च से प्रारम्भ हो रहा है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज शाहबाद

आर्यसमाज शाहबाद दौलतपुर का वार्षिकोत्सव ९, १०, ११ फरवरी १९९० को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी स्वरूपानन्द के नेतृत्व में दिल्ली आर्य-प्रतिनिधि सभा की भजनमंडलियों ने वेद प्रचार किया।

सभा प्रधान डा० धर्मपाल और मन्त्री श्री मागेराम आर्य ने आर्य जनता का मार्ग दर्शन किया। दिल्ली देहात में आर्यसमाज का कार्य प्रगति पथ पर अग्रसर है।

शाहबाद दौलतपुर में महाशय श्री धर्मपाल प्रधान और श्री बलवान सिंह आर्य मन्त्री के सहप्रयासों से आर्यसमाज भवन का निर्माण किया गया है।

विघटनकारी तत्त्वों को सख्ती से कुचलने की केन्द्र सरकार से मांग

—डा० धर्मपाल प्रधान आ० प्र० सभा

नई दिल्ली। आर्यसमाज लाजपतनगर के ३५वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित "राष्ट्र रक्षा सम्मेलन" को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल ने पंजाब व जम्मू काश्मीर मे विघटनकारी तत्त्वो की बढती हुई गति विधियो पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए केन्द्र सरकार को इसे सख्ती से कुचलने की माग की। आपने राष्ट्रवादी सगठनो का आह्वान किया कि वे राष्ट्रहित मे एक जुट होकर अराष्ट्रीय तत्त्वों का डटकर मुकाबला कर।

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार १९९०

वैदिक धर्म वैदिक साहित्य एवम आर्यसमाज के प्रति समर्पित भाव से की गई प्रशसनीय सेवाओं के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास आर्यसमाज फुलेरा की ओर से २५०१ रुपये नकद दयानन्द स्वर्ण/रजत पदक उत्तरीय प्रशस्ति पत्र तथा अभिनन्दन पत्र प्रतिवर्ष ऋषि निर्वाण दिवस पर प्रदान किया जाता है। १९९० के पुरस्कार के लिए कोई भी आर्य विद्वान स्वयम अपना या अन्य विद्वान् का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियो सहित १५ अगस्त १९९० तक प्रस्तुत कर सकता है।

सम्पर्क सूत्र—भवरलाल शर्मा आचार्य

मन्त्री

आर्यसमाज फुलेरा

वैदिक-संस्कारों व आर्ष साहित्य को अपनाएँ

—सूर्यदेव

आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने बढते पश्चिमीकरण व अपसंस्कृति के विरुद्ध मोर्चा लेने के लिए आर्यसमाज को सजग होकर वैदिक संस्कारों आर्ष साहित्य व प्रेरणादायक सत साहित्य के प्रचार के लिए आगे आना है। आपने अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की कथित धर्मनिरपेक्ष नीति को राजनीतिक दलो द्वारा बढावा देने की कडी भर्त्सना की।

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मानव जीवन के गति मति स्थिति इति की प्रतीकात्मकता समझाते हुए आर्यसमाज को राष्ट्र के सजग प्रहरी की भूमिका के सामाजिक दायित्व के प्रति गतिशील रहने का आह्वान किया।

इस अवसर पर प० सुधाकु डा० महेश विद्यालकार नरेन्द्र अवस्थी आदि विद्वानों ने सम्बोधित किया।

६ फरवरी को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय विद्यालयो के छात्र छात्राओ गुरुकुलो के ब्रह्मचारियों दक्षिण दिल्ली की आर्यसमाजों के हजारो नर नारियों ने भाग लिया।

शोक समाचार—

महाशय जलसिंह

आर्यसमाज शालीमार बाग के सदस्य चौधरी धर्मसिंह दलाल असिस्टेन्ट सेक्रेटरी स्टेट ट्रान्सपोर्ट अथोरिटी दिल्ली के पूज्य पिता श्री जलसिंह जी का आकस्मिक निधन १० फरवरी १९९० को हो गया। शान्तियज्ञ २२ फरवरी १९९० को ६८२ कमल कालोनी माडल टाउन रोहतक मे हुआ।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार ने रोहतक पहुँच कर अपनी सम्वेदना प्रकट की।







आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S.O on 8 9 3-90 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

वैदिक राष्ट्रवाद सम्मेलन

आयसमाज कीर्तिनगर मे रविवार २५ फरवरी को वैदिक राष्ट्रवाद सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता वैदिक विद्वान प० वेदप्रकाश शास्त्री ने की तथा सयोजन गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक श्री सुभाष वद्यालकार ने किया।

इस अवसर पर प० वदप्रकाश श्रोत्रिय डा० धमपाल डा० महेश विद्यालकार, श्री के० नरेन्द्र आदि विद्वानो ने वैदिक राष्ट्रवाद तथा आधुनिक युग की आवश्यकताओ पर प्रकाश डाला।

इस सम्मेलन से पूव एक सप्ताह श्री प० वदप्रकाश श्रोत्रिय की वद कथा हुई तथा प० श्यामदेव के भजनोपदेश हुए।

आर्यसमाज कीर्तिनगर मे वाचनालय चिकित्सालय निदान केन्द्र आदि जनोपयोगी कायक्रम चलाए जा रहे है।

निर्वाचन सम्पन्न

आयसमाज बालोतरा

आर्यसमाज बालोतरा का वार्षिक निर्वाचन श्री रामेश्वरलाल सैनी की अध्यक्षता मे सवसम्मति से सम्प न हुआ

प्रधान—श्री रामस्वरूप आय
मन्त्री—श्री बृजमाहन पिथाणी
कोषाध्यक्ष—श्री भगवानदास चौहान

आर्यसमाज बीकानेर

आयसमाज गङ्गामचा अहीर जिला रेवाडी (हरियाणा) का वार्षिक निर्वाचन सवसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री जसवन्त सिंह
मन्त्री—मा० दयाराम आय
कोपाध्यक्ष—डा० महेन्द्र कुमार

आर्यसमाज नागदा

आयसमाज नागदा (म० प्र०) का वार्षिक निर्वाचन दिनांक ५ फरवरी को सम्पन्न हुआ।

प्रधान श्री सेवाराम आर्य
मन्त्री—श्री मोहनलाल आय
कोषाध्यक्ष—श्री रमेश कुमार आय

आर्यसमाज सत्यवती नगर

आयसमाज सत्यवती नगर दिल्ली ५२ का वार्षिक निर्वाचन ४ फरवरी को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—चौ० जयसिंह
मन्त्री—डा० धमवीर भारती
कोषाध्यक्ष—डा० श्रीमती सावित्री गुप्ता

आर्यसमाज निर्माण विहार

धम. ।पै

औषधालय का उद्घाटन

रविवार २५ फरवरी १९९० को ला० गोपीचन्द मित्तल के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सूर्यदेव जी महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प० यशपाल सुधाशु, प० जगतराम आर्य एवम रोशनलाल गुप्त ने अपने विचार रख और इस सामाजिक कार्य के लिए आर्यसमाज के अधिकारियो को साधुवाद दिया।

डा० वी० पी० कालिया जी ने अपनी अवैतनिक सेवाऐं औषधालय को अर्पित की।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ ... के लिए ... मुद्रित और प्रकाशित ...
वैदिक प्रेस गली न० १०, ..., दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अक २३ | रविवार १ अप्रैल १९९० | चैत्र सम्वत् २०४७ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सवत १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन का एक-एक क्षण

आर्यसमाज के लिए सर्मपित रहा है

दिल्ली, १८ मार्च । विलक्षण प्रतिभा के धनी, आर्यसमाज के मनीषी प० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे १८ मार्च को आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल, दिल्ली में बडे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल ने की।

मूर्धन्य पत्रकार व आर्यजगत् के सम्पादक पं० क्षितीश वेदालकार ने प० गुरुदत्त विद्यार्थी को अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जी ने अपने जीवन की अल्पायु मे आहुति देकर आयसमाज को एक नई दिशा दी। उन्होने आगे कहा कि प० गुरुदत्त विद्यार्थी एक महान् चिन्तक व वैज्ञानिक थे और उन्होने वेदो में वैज्ञानिक तत्त्वो की व्याख्या जन-साधारण के सामने रखकर एक अनुपम कार्य किया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने अपनी भावाजलि अर्पित करते हुए कहा कि प० गुरुदत्त विद्यार्थी बहुमुखी प्रतिभा के धनी एव अद्वितीय विद्वान् थे। प० गुरुदत्त द्वारा सम्पादित टर्मिनोलोजी आफ वेदाज' नामक पुस्तक आक्सफोर्ड एव जर्मन विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रमो के लिए स्वीकृत हुई थी और इसी से उनकी विद्वत्ता का परिचय मिलता है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति तथा पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने कहा कि प० गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन का एक-एक क्षण आर्यसमाज के लिए समर्पित रहा। सुप्रसिद्ध आर्य युवा विद्वान् प० यशपाल सुधाशु व श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया ने प० गुरुदत्त विद्यार्थी द्वारा समाज व राष्ट्र के प्रति की गई बहुमूल्य सेवाओ का विस्तृत विवरण देते हुए, उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की।

'आर्यसन्देश" के प० गुरुदत्त विद्यार्थी विशेषाक का विमोचन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक पत्र आर्यसन्देश के प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी विशेषाक का विमोचन आय केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धमपाल द्वारा आयसमाज दीवान हाल

(शेष पष्ठ ७ पर)

आर्यसमाज स्थापना दिवस का उपहार

सात हजार ईसाई वैदिक धर्म में लौटे

सलकिया वनवासी आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

रायगढ (म०प्र०) से १२० कि० मी० की दूरी पर सलकिया में १७ व १८ माच को वनवासी आर्य महासम्मेलन का विशाल आयोजन स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ दोनो दिन प्रात ८ बजे से साय ८ बजे तक निरन्तर चले शुद्धि महायज्ञ मे लगभग ७ हजार ईसाइयो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश किया। यह वनवासी लोग गरीबी और बेकारी के सकट काल मे प्रलोभन देकर ईसाई बनाए गए थे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने 'पुनन्तु मां देवजना पुनन्तु मनसा धिय।' के जयघोष के साथ उन्हें यज्ञोपवीत देकर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। यह अपूर्व आयोजन युवा सन्यासी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती तथा गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारियो के सतत प्रयत्नो से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सलकिया से लौलूगा तक एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिस मे वनवासी बन्धुओ ने भारी सख्या मे भाग लिया।

समारोह में आर्यसमाज के नेताओं ने मध्य प्रदेश सरकार से अनुरोध किया कि जिन ६ पादरियो का कार्यकाल ३ वर्षों से समाप्त हो चुका है, उन्हें तुरन्त भारत से निकाला जाये।

इस अभूतपूर्व जन-सभा को श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और श्री बाल दिवाकर हंस ने सम्बोधित किया। जनसमूह ने एक स्वर से "पादरियो भारत छोडो का नारा लगाया।

चार सूत्री कार्यक्रम

जनता के अनुरोध पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने आर्यसमाज के तीन सूत्रीय कार्यक्रम में 'विदेशी पादरियो भारत छोडो' जोडकर इसे अब चार सूत्रीय कायक्रम में परिणत कर दिया।

१ गोहत्या बन्द करो,
२ शराब के ठेके हटाओ,
३ अग्रेजी हटाओ – भारतीय भाषाएँ लाओ,
४ विदेशी पादरियो भारत छोडो।

सरगुजा जनपद के कुमार दलीप सिह जूदेव ससद सदस्य ने अपने ओजस्वी भाषण मे आर्य नेताओ को राष्ट्र रक्षा के इस महान कार्य मे पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। शुद्धि सस्कार में भाग लेने वाले वनवासी नर नारियो को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और कुमार जूदेव ने नव वस्त्र प्रदान किये। इस सम्मेलन से इस क्षेत्र के जगलो तथा पहाडो के वनवासी क्षेत्रो मे आत्म विश्वास और भारत के गौरव की पुनीत भावना का सचार हुआ। □

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मुन ३न्द्र १८

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज विकासपुरी

आर्यसमाज विकासपुरी का वार्षिकोत्सव रविवार २५ जनवरी १९९० को धूमधाम से मनाया गया। महर्षि दयानन्द की विश्व को देन' विषय पर विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार ने आर्यजनो का आह्वान किया कि वे आत्म विश्लेषण कर तथा महर्षि के बताए मार्ग का अनुसरण कर के, अपना तथा समाज का कल्याण कर।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डाक्टर धर्मपाल ने भी आर्य जनता को सम्बोधन किया। आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओ को सम्मानित भी किया गया। यह परम्परा बहुत ही सराहनीय है। आर्यसमाज विकासपुरी मे अनेक जनोपयोगी कार्य किए जा रहे है। इस आर्यसमाज का भव्य भवन भी लगभग तैयार हो चुका है।

आर्यसमाज चौक प्रयाग—

११४ वां उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज चौक, प्रयाग का ११४ वा वार्षिकोत्सव ८ फरवरी से ११ फरवरी तक स्वरूप रानी पार्क प्रयाग मे समारोहपूर्वक मनाया गया। ८ फरवरी को विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी। प्रतिदिन प्रात वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ।

मुख्य समारोह मे स्वामी मुनीश्वरानन्द (गाजियाबाद) श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री (रायबरेली) डा० महिपाल सिंह (बलिया) आदि विद्वानो के भाषणो द्वारा वैदिक धर्म के महत्व तथा आर्यसमाज के समाज सुधार कार्यक्रमो की विस्तृत जानकारी देकर [illegible] उन्नति मे सर्वात्मना लग जाने का आह्वान किया।

आर्यसमाज अजुहा बाजार—

६४ वां उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज अजुहा बाजार इलाहाबाद का ६४ वा वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्वामी मेधानन्द (बिन्दकी), डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी (नालन्दा), प० आशाराम आर्य (हरियाणा) प० वीरेन्द्र आर्य (गाजीपुर) आदि विद्वानो तथा उपदेशको के भाषण-प्रवचन हुए।

आर्यसमाज शकरपुर

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली ११००९२ का वार्षिकोत्सव रविवार ४ मार्च १९९० को ऋषि बोधोत्सव के रूप मे बडे समारोहपूर्वक मनाया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने भावोदगार व्यक्त करते हुए कहा कि यदि हमारे देश के पण्डितो ने समय रहते शुद्धि की उपयोगिता को स्वीकार कर लिया होता, तो ऐसी भयावह स्थिति हमारे देश की न होती। उन्होने बताया कि महर्षि दयानन्द एक बार स्वयम् कश्मीर गए थे तथा राजा रणवीर सिंह के अनुरोध पर उन्होने एक शुद्धि पत्रिका तैयार की थी, परन्तु उस समय पण्डितो ने शुद्धि-चक्र को स्वीकार न किया। आज भी समय है यदि देश को मुसलमान और ईसाई होने से बचाया जायेगा तो देश बच सकता है, अन्यथा नही।

इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह को डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, प० परमेश शर्मा, प्रो० रतनसिंह शाण्डिल्य ने सम्बोधित किया।

आर्यसमाज नवादा—

द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नवादा जिला खगडिया (बिहार) का द्वितीय वार्षिकोत्सव बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी (नालन्दा), प० जयप्रकाश आर्य (हरियाणा), प० अशोक विक्रम थापा (नेपाल), डा० चन्द्रदत्त सिंह (छपरा), श्रीमती धर्मशीला देवी (मुजफ्फरपुर) श्री रामनारायण चौधरी आदि ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित कर वैदिक धर्म की श्रेष्ठता और आर्यसमाज की उपादेयता पर विचार प्रस्तुत किये।

आर्यसमाज लश्कर—

६४वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज चित्रगुप्त गज, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०) का ६४ वा वार्षिकोत्सव दिनाक २६, २७ व २८ मार्च को उत्साहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर डा० ओमदत्त शर्मा, श्री दिवाकर विद्यालकार, प० आशानन्द आदि ने वैदिक सिद्धान्तो की ओजस्वी वाणी में मे व्याख्या की।

ओ३म् श नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्ष दृशये नो अस्तु।
श न ओषधीर्वनिनो भवन्तु श नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णु ॥

प्रथम आह्वान उषा में

—देवनारायण भारद्वाज

✱ ● ✓

जो सूर्योदय के साथ उठा, उसका ही जगना उत्तम है।
प्रिय उषा काल की सुन्दरतम, यह छाई छटा मनोरम है॥

आह्वान प्रथम की वेला है
सुख दृश्य लिये अलबेला है
कुछ अन्धकार कुछ है प्रकाश
दोनो का अनुपम मेला है।

उस द्यौ से चलकर धरती पर, रश्मियाँ कर रही सगम है।
प्रिय उषा काल की सुन्दरतम, यह छाई छटा मनोरम है॥

अब अन्तरिक्ष का अवलोकन
सब खोल रहा है सुख गोपन
वन वृक्ष वनस्पति ओषधियाँ
मनमोहक दृश्य लिये द्योतन।

इस उदयकाल मे विहस उठा, जग का सारा जड जगम है।
प्रिय उषा काल की सुन्दरतम, यह छाई छटा मनोरम है॥

सूर्य आ गया गगनागन मे
आलोक लोक ले प्रागण में
सूरज ही लोको का पति है
प्रभु प्रभा लिये है कणकण मे।

करता है जग मे सृजन यही, इससे ही शान्ति समागम है।
प्रिय उषाकाल की सुन्दरतम, यह छाई छटा मनोरम है॥

—जगन्नाथ निवास, रैदोपर नई बस्ती आजमगढ (उ० प्र०)

कोटि प्रणाम

मर्यादा पुरुषोत्तम तुम थे,
मर्यादाओ के अनुरक्षक।
सत्य धर्म के अहे प्रणेता,
मानवता के बने सुरक्षक।
विप्र धेनु सुर सन्त जनो को,
किया तुम्ही ने निभय।
दूर किया सारी धरती की
दानवता अन्याय, अनय।
निर्बल को दे नया सहारा,
नव युग का आह्वान किया।
जन जन मे जागृति ला करके,
चेतना का अनुदान दिया।

स्थापित कर मानवता का,
अनुपमेय सा मेरुदण्ड।
मार गिराया समस्त राक्षसो
को जो थे अति तीव्र उद्दण्ड।
रावण जैसे असुरो का वध-
करके, भू उद्धार किया।
वैदिक पथी बना कर सब को-
जगती का उपकार किया।
ऋणी तुम्हारा सदा रहेगा,
महिमण्डल सारा, हे राम!
आज तुम्हारे जन्मदिवस पर
युग के कवि का कोटि प्रणाम।

—मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

आर्यसमाज ओबरा—

रजत जयन्ती सम्पन्न

आर्यसमाज ओबरा सोनभद्र (उ० प्र०) की रजत जयन्ती दिनाक २३, २४, २५ एव २६ फरवरी को बडे समारोहपूर्वक मनायी गयी।

इस अवसर पर वैदिक प्रवक्ता स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती (मथुरा), इतिहास गवेषक, डा० देवेन्द्र सत्यार्थी (नालन्दा), वैदिक गीतो के सुमधुर गायक अहर्निश वैदिक धर्म प्रचारक श्री वीरेन्द्र आर्य (गाजीपुर) के शिक्षाप्रद प्रवचन, व्याख्यान और भजनोपदेश होते रहे। समारोह में उपस्थित जन समूह ने आर्यसमाजो मे नवचेतना एवम् नवजागृति लाने का सकल्प किया।

●

शक्ति, शील और सौन्दर्य के धनी मर्यादा पुरुषोत्तम राम

मर्यादा पुरषोत्तम राम को हम आदर्श महापुरुष के रूप में स्वीकार करते हैं। उनके सत्य और शील को अपने जीवन में अपनाना चाहते हैं। उनके त्याग और सौहार्द को आज भी प्रासगिक मानते हैं। जब हम अच्छे राज्य की बात कहते हैं तो रामराज्य हमारे मुख पर आ जाता है। महात्मा गाधी ने अनेक बार राम के महत्त्व को समझाने की कोशिश की है, यहां तक कि मरते समय भी उनके मुख से "हे राम" ही निकला था। आज इस बात पर पुन विचार करने की आवश्यकता है कि क्या राम का नाम लेना साम्प्रदायिक घोषित नहीं कर दिया गया है ? क्या इस धर्मनिरपेक्षता के समय में राम की कोई आवश्यकता है ? क्या हम अपने जीवन मे राम के सत्य, शील और मर्यादा को कोई स्थान देते हैं ?

यह प्रश्न कठिन है और वास्तव में रामत्व को हम जीवन से दूर कर रहे हैं। यह तो उचित ही है हम राम को स्मरण करे, हम उसके रामत्व को स्मरण करें। राम से बडा राम का नाम—गाधी के साथ भी अन्तत जो राम रहा वह सम्भवत राम नहीं रामत्व था। राम के गुणो को प्राप्त करने की अदम्य लालसा थी। राम का चरित्र और व्यक्तित्व ससार में रहकर जीने की क्षमता और करूणा प्रदान करता है। राम की सामान्यता और सामान्य धर्मनिष्ठा किसी को ससार को छोडने की प्रेरणा नही देती। राम ने सुग्रीव को राज्य दिया और राम ने विभीषण को भी राज्य दिया। उसने किसी को वैराग्य का सन्देश तो दिया ही नही। हनुमान् को उनका सब से बडा भक्त माना जाता है। उसे भी यही उपदेश दिया कि ससार को छोडो या संसार से पलायन मत करो। ससार की सेवा में ही मेरी आराधना मानो।

हमारे व्रत पर्व और उत्सवों का विशेष योगदान हमारे जीवन को व्यवस्थित बनाने में है। भारतीय जन समाज में वर्ष मे दो बार नवरात्र का आयोजन किया जाता है। चैत्र मे शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को वासतिक नवरात्र के रूप में मनाया जाता है और आश्विन मे शुक्ल प्रतिपदा से शारदीय नवरात्र। वासतिक नवरात्र को भगवान् राम की आराधना से जोडा गया। राम मर्यादा के प्रतीक हैं, और धर्म तथा सस्कृति के सवाहक। रामनवमी इसी चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन है। इसी दिन भगवान् राम ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया था। हमारा कर्तव्य है, उस महापुरुष का स्मरण करें और अपने जीवन की वृत्तियो को आदर्श बनायें तथा सत्य शील एवं मर्यादा के मार्ग का अवलम्बन करें।

महान् क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा

महान् क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा स्वतन्त्रता-समर के अमर सेनानी, सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान्, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्रोत महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। उनका जन्म ४ अक्टूबर १८५७ को गुजरात के कच्छ जिले में माण्डवी नामक ग्राम में हुआ था। वे प्रारम्भ से ही प्रतिभाशाली छात्र थे।

१८७४-७५ में महर्षि दयानन्द सरस्वती बम्बई आए। उनके विद्वत्ता पूर्ण भाषण की सर्वत्र धूम थी। श्याम जी कृष्ण वर्मा उनके दर्शनार्थ ही गये और उनके विलक्षण व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गये। आपने वेदों का स्वाध्याय किया और १८७७ से १८७८ तक आर्यसमाज के प्रचारक रहे। सन् १८७८ मे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सस्कृत विभागाध्यक्ष सर्व मोनियम विलियम भारत आए। वे श्याम जी कृष्ण के सस्कृत भाषा में दिये गये व्याख्यान से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें सहायक सस्कृत प्राध्यापक बनाकर इग्लैण्ड ले गये।

इग्लैण्ड में रहकर श्याम जी कृष्ण वर्मा अध्ययन-अध्यापन तक ही सीमित न रहे। उन्होंने वहा से एक मासिक-पत्रिका का सम्पादन किया और इण्डिया हाउस की स्थापना की। यही इण्डिया हाउस आगे चलकर देशभक्त क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का केन्द्र बना। ३१ मार्च सन् १९३० को उस महापुरुष का देहान्त हुआ जिसका जीवन अन्याय, शोषण पराधीनता और अन्धविश्वासो के विरुद्ध लडाई लडने में समर्पित रहा।

उनकी पुण्य तिथि पर हम अपने विनीत श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी

प० रामचन्द्र देहलवी का जन्म मध्य प्रदेश के नीमच शहर में १८८१ ईस्वी की रामनवमी के दिन हुआ था। और इसीलिए उनका नाम रामचन्द्र रखा गया। जीविका निर्वाह के लिए रामचन्द्र दिल्ली आए। यहा पर पहले नौकरी की और फिर अपने श्वसुर की दुकान पर काय करने लगे। रामचन्द्र देहलवी की पत्नी का निधन उस समय हो गया था, जब वे केवल ३६ वर्ष के थे। यद्यपि अनेक प्रस्ताव पुनर्विवाह के आए परन्तु वैदिक धर्म का प्रभाव उन्हे अकेले ही जीवन यात्रा के पथ पर साहस पूर्वक चलने की प्रेरणा देता रहा।

उन दिनों चादनी चौक के फव्वारे पर दो दिन मुसलमान और दो दिन ईसाई अपने-अपने धर्म का प्रचार करते थे। प० रामचन्द्र देहलवी ने धर्म के ऊपर किये गये इन कटाक्षों को सुना और उस से प्रेरित हो उन्होने भी उसी दिन से सोच लिया कि उन्हें भी वैदिक धर्म का इसी तरह प्रचार करना चाहिए। उन्होंने भी उसी स्थान पर प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। उनके व्याख्यानों में इतनी भीड होती थी कि यातायात में बाधा पडने लगी और उनसे आग्रह किया गया कि वे अपने व्याख्यानो के लिए गाधी ग्राउण्ड को अपना ले। बस यही पर १९१० से १९२५ तक उनके व्याख्यानो की धारा अबाधगति से चलती रही। उन्होने विधिवत् कुरान का अध्ययन किया और ईसाई-मत का भी। वैदिक धर्म के उत्कृष्ट प्रवक्ता तार्किक उच्चकोटि के शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी की छवि दिग्दिगन्त मे फैल गयी। हैदराबाद मे उनके व्याख्यानो ने अभूतपूर्व जागृति फैलाई। और निजाम सरकार ने तो उन्हे अपने राज्य से ही निष्कासित कर दिया था। अत्यधिक वृद्ध होने पर भी उन्होंने धर्म प्रचार के कार्य से मुह नही मोडा। २ फरवरी १९६८ में दिल्ली में उनका निधन हुआ। प० रामचन्द्र देहलवी ने अनेक ग्रन्थो की रचना की जो वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे अपनी विशिष्ट भूमिका को रेखाकित करते हैं।

प्रभु से प्रार्थना है, कि आर्यसस्कृति के प्रकाश पुञ्ज, आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न, वेद-सन्देश वाहक, शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी जैसे कर्मवीर विद्वान् नेता सदैव इस भारतीय वसुधरा पर अवतीर्ण होते रहे।

महाशय धर्मपाल

दानवीर महाशय धर्मपाल का ६६वा जन्मदिन इस वर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस में मिल गया है। महाशय धर्मपाल का जन्म २७ मार्च को स्यालकोट मे हुआ था। उनके पूज्य पिता उन्हे अगुली पकड कर समाज मदिर मे ले जाते थे। आयसमाज के सस्कार उन्हे घुट्टी में मिले थे। इसलिए महर्षि दयानन्द को ये अपना प्रेरक और गुरु मानते हैं।

सरल सहज स्वभाव, हसता मुसकराता चेहरा, साधारण परिधान, नम्र एव उदार व्यवहार सभी को प्रभावित करता है। उनका जीवन अनाथ दीन-हीन जनो के कल्याण मे लगा और मानव मूल्यो की स्थापना में सतत प्रयत्नशील है।

इस समय माता चन्ननदेवी नेत्र चिकित्सालय, जनक पुरी, चलता फिरता हस्पताल और अनेक विद्यालय जनता की सेवा मे समर्पित हैं। वे अपने नाम को अपने जीवन में सार्थक करते है। वे शाकाहारी, प्रतिदिन यज्ञ करने वाले, दान और सेवा और ईश्वर-भक्ति करने वाले ईश्वर भक्त हैं। प्रभु-भक्ति मे मस्त होकर अपनी सुधबुध विसार कर भजन गाना उनकी अपनी विशिष्टता है। उन्होने वेदप्रचार विभाग की स्थापना, महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट के अन्तर्गत की हुई है। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल स्वय धार्मिक और याज्ञिक हैं ही, उनका पूरा परिवार भी उनके पदचिह्नो पर चल रहा है।

"आर्यसन्देश" परिवार की ओर से उन्हे हार्दिक बधाई। और प्रभु से कामना है कि वे स्वस्थ और निरोग रहते हुए १०० वर्षों से भी अधिक जीयें तथा इसी प्रकार मानवता की सेवा करते रहें।

—सम्पादक

ऋषि-जन्म-भूमि टंकारा

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के तत्त्वावधान मे ऋषि बोधोत्सव २२ से २४ फरवरी तक बडी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव में उपस्थित विद्वानो मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य रामप्रसाद वेदालकार महात्मा आर्य भिक्षु आचार्य ओमप्रकाश शास्त्री, प० देवव्रत शास्त्री आदि प्रमुख थे।

उत्सव का आरम्भ २२ फरवरी को यज्ञोपरान्त विद्यालय के छात्रो के स्वागत गान से हुआ। मैनेजिग ट्रस्टी श्री ओकारनाथ ने स्वागत भाषण दिया। महात्मा आर्य भिक्षु जी का मार्मिक प्रवचन हुआ। सायकाल आचार्य रामप्रसाद वेदालकार की अध्यक्षता मे हिन्दी, गुजराती और सस्कृत श्लोक पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। तथा आचार्य रामप्रसाद वेदालकार का मार्मिक प्रवचन हुआ।

२३ फरवरी को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। लगभग २ मील लम्बी अनुशासन बद्ध आर्यों की पक्तिया श्रद्धा और उत्साह से उछलती गीत गाती महर्षि दयानन्द का जयकार करते हुए चल रही थी। यह शोभा-यात्रा आर्यसमाज टकारा महर्षि जन्म स्थान ऋषि बोध मन्दिर सहित टकारा की गलियो मे से होकर टकारा ट्रस्ट के महालय मे समाप्त हुई।

सायकाल श्री रमण जी भाई श म जी अतिथिशाला का उदघाटन महात्मा आर्य भिक्षु द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य भिक्षु जी का 'महर्षि दयानन्द और कार्ल म क्र्स' पर प्रवचन हुआ।

२४ फरवरी को यज्ञोपरान्त आचार्य ओमप्रकाश शास्त्री की अध्यक्षता मे वेद-सम्मेलन' किया गया जिसमे अनेक विद्वानो ने वदो के अनेक पक्षो का बडी निकटता से स्पर्श किया। दोपहर को उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियो का दीक्षान्त समारोह और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव सम्पन्न—

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस समारोह १० फरवरी १९९० को एम० डी० एच० के सभागार मे महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट के वेद प्रचार विभाग की ओर से धूमधाम से मनाया गया।

समारोह के अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि उन ऋषि ने समार के कल्याण के के लिए आत्मोत्थान के लिए मानव के मूल्यो की स्थापना के लिए, राष्ट्रोत्थान के लिए स्वराज्य प्राप्ति के लिए तथा स्वदेशी व्यापार के लिए देशवासियो के हृदय मे एक तडप जगाई थी।

इसी अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान प० रामचन्द्र राव वन्दे मातरम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल डा० रूपकिशोर शास्त्री डा० सुदर्शन कुमार वेदालकार आदि ने महर्षि के उपकारो को स्मरण किया तथा आर्यजनता से आग्रह किया कि वे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए आगे आएँ।

अभ्यागतो अतिथियो तथा आर्य जनता का आर्य केन्द्रीय सभा और ट्रस्ट के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने स्वागत किया।

दयानन्द बाल मन्दिर अमरोहा

दयानन्द बाल मन्दिर जूनियर हाईस्कूल अमरोहा जिला मुरादाबाद की ओर से महर्षि दयानन्द जन्मदिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर विद्यालय के छात्रो तथा शिक्षिकाओ द्वारा युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की विश्व को देन' विषय से सम्बन्धित भाषण प्रतियोगिता, गायन सास्कृतिक कार्यक्रमो का आयोजन किया। विद्यालय के प्रधान श्री वीरेन्द्र आर्य तथा प्रबन्धक श्रीमती डा० उर्मिला अग्रवाल ने पुरस्कार वितरण किये तथा महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन और कार्यों से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर शहर के विशिष्ट लोग उपस्थित थे।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्त्वावधान मे १५।३।९० को ऋषि-बोधोत्सव व सीताष्टमी पर्व प्रयाग निकेतन जवाहर नगर दिल्ली मे श्रीमती सरला मेहता की अध्यक्षता मे मनाया गया।

श्रीमती उषा शास्त्री ने कहा जब मनुष्य का जीवन यज्ञमय होता है तो उसका अहकार नष्ट हो जाता है और वह महान बनता है महर्षि दयानन्द महान समाज सुधारक, युगप्रवर्त्तक थे। आज के दूषित वातावरण मे राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए ऋषिवर के बनाए मार्ग पर चलना होगा। माता सीता को श्रद्धाञ्जलि देते हुए कहा योगी जहा योग मे रहकर प्रभु दर्शन करता है वैसे ही माता सीता ने अशान्ति मे मौन रहकर सब कष्ट पृथ्वी की भाति सहन किये।

डा० शशीप्रभा ने कहा कि महर्षि दयानन्द इतने उदात्त और इतने पावन थे कि जिससे हम भी आज पावन हैं। स्वामी जी और माता सीता के आदर्शों और चरित्रो को स्मरण कर अपने जीवन मे उतारे। माता सीता का तप त्याग अनुकरणीय है। यदि आज हम उनका अनुकरण करेंगी तो जीवन सार्थक बनेगा।

श्रीमती सरला जी मेहता ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि हमे आर्यसमाज के १० नियमो तथा सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। स्वामी जी के नारी जाति पर अनेको उपकार हैं। हमे उनका ज्ञान घर घर मे बाटना है तभी हम ऋण से उऋण होगी।

इस अवसर पर श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती सुशीला आदि विदुषी देवियो ने भी अपने विचार रखे।

अजमेर की आर्य शिक्षण सस्थाएं

आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर द्वारा सचालित अनेको शिक्षा सस्थाओ में सम्मिलित रूप से 'ऋषि बोध दिवस' समारोह पूर्वक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता आचार्य गोविन्दसिह जी ने की।

समारोह मे यज्ञ के पश्चात् अनेक छात्र छात्राओ ने ऋषि दयानद महिमा सम्बन्धी भजन, श्लोक, भाषण तथा अनेक शिक्षाप्रद घटनाएँ प्रस्तुत की। अध्यक्षीय भाषण मे आचार्य जी ने छात्रो एव अध्यापको को ऋषि दयानन्द के दिखाये गये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

दयानन्द स्कूल विवेक विहार

दयानन्द माडल स्कूल विवेक विहार म ४ मार्च १९९० को ऋषि बोधोत्सव स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामन्त्री श्री सूर्यदेव, वैदिक विद्वान प० यशपाल सुधाशु तथा प्रो० उत्तमचन्द 'शरर' ने महर्षि के उपकारो का स्मरण किया। इस अवसर पर प्रो० उत्तमचन्द 'शरर' का आर्य जनता की ओर से अभिनन्दन भी किया गया।

प्रारम्भ में विद्यालय के प्रधान श्री रामलाल शास्त्री ने अभ्यागतों का स्वागत किया तथा पूर्वी दिल्ली की प्रधाना श्रीमती ईश्वरदेवी धवन ने सभी का धन्यवाद किया। विद्यालय के मैनेजर श्री विश्वभरनाथ भाटिया और प्रिसिपल श्रीमती अदितिसिह ने सभी आगत महानुभावो के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

विश्वभारती अनुसधान परिषद्

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्वभारती अनुसधान परिषद ज्ञानपुर मे ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि लोगो को महर्षि दयानन्द सरस्वती के कर्मठ जीवन मे प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए। ऋषि दयानन्द ने जन जन मे वेदो का सन्देश दिया तथा अन्धविश्वास, पाखण्ड दूर करके ज्ञान का वास्तविक मार्ग बतलाया। भौतिकता के इस युग मे व्यक्ति शान्ति की खोज मे भटक रहा है। डा० द्विवेदी ने कहा कि वैदिक धर्म द्वारा ही व्यक्ति को शान्ति प्राप्त हो सकती है।

इस अवसर पर सस्था के अध्यक्ष डा० भारतेन्दु द्विवेदी, डा० विभु मिश्र, श्रीमती सविता, डा० प्रतिमा आर्य, श्री आर्येन्दु द्विवेदी ने भी समाज सुधारक श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन तथा कृतियो एव धार्मिक सुधारो पर विस्तार से प्रकाश डाला।

(शेष)

स्व० डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—

प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धाञ्जलि

नई दिल्ली प्रख्यात इतिहासकार, मूर्धन्य साहित्यकार एव आय विद्वान् डा० सत्यकेतु विद्यालकार को प्रथम पुण्य तिथि पर १६ मार्च को आर्यसमाज हनुमान् रोड, नई दिल्ली मे आयोजित श्रद्धाजलि सभा में उनके भव्य व्यक्तित्व व कर्तृत्व का स्मरण कर उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध पत्रकार प० क्षितीश वेदालकार ने भावाजलि अर्पित करते हुए कहा कि डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने भारतीय सस्कृति व वैदिक विचारधारा की नस पकडी थी और राजनीति का ऐसा नया सन्देश दिया था जो पण्डित जी जैसे राजनीति के धुरन्धर पण्डित ही दे सकते हैं। डा० साहब चोटी के उपन्यासकार थे। उन्होने इतिहास जैसे नीरस विषय को भी अत्यन्त सरल ढग से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि डा० सत्यकेतु एक व्यक्ति नही बल्कि एक सस्था थे, जिन्होने आर्यसमाज का इतिहास लिखकर अपार यश अर्जित किया है और जब तक पण्डित जी का यश जीवित है तब तक मृत्यु उन्हें हम से नही छीन सकती।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने डा० सत्यकेतु के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा० साहब को जब भी हम स्मरण करते हैं तो हमें एक नई ऊर्जा प्राप्त होती है। उन्होंने आगे कहा कि डा० सत्यकेतु द्वारा ७ खण्डो मे लिखित आर्यसमाज का इतिहास आर्य जगत् को एक अमूल्य धरोहर है। हम उनके कृतित्व से अपने को सुरक्षित अनुभव करते हैं। वे सदैव जनकल्याण की भावना से काम करते थे और उनके सुकर्मों की सुगन्धि सदैव आती रहेगी। डा० प्रशान्त वेदालंकार ने कहा कि डा० सत्यकेतु का व्यक्तित्व भव्य व विशाल था तथा उन्होंने गुरुकुल के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी। उन्होने यह भी कहा कि हमे आर्यसमाज को और अधिक प्रगतिशील बनाने के लिए उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

इस अवसर पर श्री सुभाष विद्यालकार, प्रो० वेदव्रत तथा श्रीमती आशारानी ने भी डा० सत्यकेतु द्वारा समाज व राष्ट्र के प्रति की गयी बहुमूल्य सेवाओ का स्मरण कर उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की।

आर्यसमाज दीवानहाल में—

मोरिशस के आर्य शिष्टमण्डल का स्वागत

लघु भारत के नाम से प्रसिद्ध देश मोरिशस से श्री रामरूप राममाहा प्रधान पुरोहित मडल, मारीशस के नेतृत्व मे भारत यात्रा पर आये ५० आर्य विद्वानो व विदुषियो के शिष्टमडल का १८ मार्च को आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित समारोह मे भव्य स्वागत किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश एव राजधानी की अनेक आर्यसमाजो एव शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो एव विद्वानो ने पुष्प मालाओ से शिष्टमडल के सदस्यो का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर शिष्ट मंडल को वैदिक साहित्य आर्यसन्देश के विशेषाक, वैदिक गीतो तथा भजनो का कसेट आदि भेंट किये गये।

श्री रामरूप रामसाहा ने अपने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि १० लाख की आबादी वाले छोटे से देश मोरिशस मे लगभग ५०० आर्यसमाज मन्दिर हैं और वहा आर्यसमाज का कार्य व प्रचार बहुत उत्साहपूर्वक होता है। उन्होने यह भी कहा कि अद्वितीय विद्वान् गुरुदत्त की बलिदान शताब्दी से हमे प्रेरणा लेकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। इस अवसर पर श्रीमती धनवन्ती रामचरण, प्रधाना आर्य-महिला सभा मोरिसस ने भी प्रेरक विचार प्रस्तुत किये।

कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने कहा कि मोरिशस मे जितने उत्साह व लगन से आर्यसमाज का प्रचार कार्य हो रहा है, उससे सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने मोरिशस की आर्यसमाजो द्वारा किये जा रहे प्रचार कार्य को एक अनुकरणीय उदाहरण बताया। इस अवसर पर मोरिशस शिष्ट मण्डल के साथ आये हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

आर्यसमाज गोरखपुर

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर (उ०प्र०) के तत्त्वावधान मे नगर आर्यसमाज साहबगज, आर्यसमाज बक्शीपुर, आर्यसमाज रेलवे कालोनी वेद मन्दिर आदि में सामूहिक रूप से एक शोभा यात्रा 'ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य मे निकाली जो नगर के प्रमुख मार्गो से होती हुई विस्मिल यज्ञशाला लालडिग्गी पर समाप्त हुई। इसमे भारी सख्या मे महिलाएँ पुरुष, विद्यालय के बच्चे अपने बैण्ड धुन के साथ सम्मिलित हुए।

शोभायात्रा मे नागरिको को सम्बोधित करते हुए जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प० द्विजराज शर्मा ने स्वामी दयानन्द के गुणों की चर्चा करते हुए सच्चे शिव की पूजा, छुआछूत उन्मूलन, नारी सम्मान' देश की अखण्डता के लिए स्वामी जी के अमर ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" नामक पुस्तक पढने की अपील जोरदार शब्दो मे की।

आर्यसमाज लुधियाना

२३ फरवरी, को प्रात ६.०० बजे आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार से प्रभात फेरी प्रारम्भ हुई जो कि चौडी सडक, डिवीजन न० ३, बेजमन रोड से होती हुई सी० एम०सी० चौक पर पहुँची जहा आर्यसमाज किदवई नगर के कार्यकर्ताओ ने जो कि नगर कीर्तन करते हुए वहा पहुँचे थे, आर्य नेताओ का स्वागत किया। उसके पश्चात् दोनो आर्यसमाजो की प्रभातफेरी कीर्तन करती हुइ आर्यसमाज कदवई नगर पहुँची।

ऋषि-बोधोत्सव का मुख्य समारोह यज्ञ से आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री रणवीर जी भाटिया महामन्त्री आय प्रतिनिधि सभा पजाब ने की।

आर्यकन्या गुरुकुल में स्वागत

प्रान्तीय आय महिला सभा दिल्ली की ओर से १६ मार्च को मौरिशस से आये भाई-बहिनो का आर्य कन्या गुरुकुल मे भव्य स्वागत किया गया।

समारोह मे गुरुकुल की छात्राओ ने अतिथियो का स्वागत-गान, वेद गान तथा पुष्पवर्षा से अभिनन्दन किया।

गुरुकुल की आचार्या तथा महिला सभा की सदस्याओ ने शिष्ट मडल के सभी सदस्यो का हार्दिक स्वागत किया। स्मरणीय है कि मोरिशस की दो बालिकाएँ इस गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर चुकी हैं।

गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी दिवस समारोह

आर्यसमाज लुधियाना

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में मुनिवर प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी के निर्वाण-शताब्दी दिवस के उपलक्ष्य मे १६ मार्च को एक श्रद्धाजलि समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यह यज्ञ जन-कल्याण एव विश्व शान्ति की भावना मे किया गया जिसमे आर्य जनता ने बढ-चढकर भाग लिया।

समारोह की अध्यक्षता श्री रणवीर भाटिया महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की। उन्होने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि आज युवको को गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे कमठ और समाजसेवी बनने की आवश्यकता है।

हम उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण करें और उनकी तरह महर्षि दयानन्द के कार्य को लगन और श्रद्धा के साथ करने का दृढ सकल्प लें। यही सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

इस अवसर पर अन्य विद्वानों ने ने भी गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन पर प्रकाश डाला।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली

नई दिल्ली, १८ मार्च। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली की ओर से स्पीकर हाल, नई दिल्ली मे मुनिवर प० गुरुदत्त विद्यार्थी की सौ वी पुण्यतिथि बडे समारोह पूर्व वातावरण में आयोजित की गयी।

समारोह मे प्रो० विजयकुमार मल्होत्रा ससद सदस्य ने एक और पाकिस्तान बनाने की साजिश से हिन्दुओ को सचेष्ट कर आह्वान किया, कि जब तक हम शुद्धि आन्दोलन को आगे नही बढायेंगे और हिन्दुओ को विधर्मियो से नही बचायेंगे तब तक भारतवर्ष को खतरा ही बना रहा है।

समारोह मे श्री रामचन्द्र विकल ससद सदस्य, प्रो० कैलाशनाथ सिंह ससद सदस्य, डा० धर्मपाल (प्रधान दिल्ली सभा), प० क्षितीश वेदालकार आदि ने युवापीढी को आर्य युवा विद्वान स्व० प० गुरुदत्त विद्यार्थी के अल्पायु के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने का आह्वान किया।

गुरुकुल गदपुरी—

५३वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद) के ५३ वें वार्षिकोत्सव पर २, ३ व ४ मार्च को सामवेद-पारायण-महायज्ञ श्री राम किशोर जी वैद्य 'वानप्रस्थी' की अध्यक्षता मे सपम्न हुआ।

इस अवसर पर भारत के प्रसिद्ध उपदेशको तथा भजनोपदेशको द्वारा वेदामृत पान कराया गया।

आयोजित पुरोहित-प्रशिक्षण-शिविर मे प्रशिक्षित पुरोहितो को सोमराज जी गुप्त निदेशक लायन्स क्लब फरीदाबाद ने अपने कर कमलो द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किए तथा प्रकाशित 'स्मारिका' का विमोचन किया। मुख्य अतिथि के रूप मे श्री गुप्ता ने फरीदाबाद जिले मे चल रहे इस गुरुकुल के अधिकारियो को साधुवाद दिया और संस्कृत के प्रचार मे कमी न आने देने पर जोर दिया। लायन्स क्लब की ओर से गुरुकुल के बाहर पानी की टंकी तथा विद्यापीठ मे बोर्ड, टाटपट्टी व औषधियां देने का वचन दिया।

डा० धमपाल प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने धारा-प्रवाह भाषण मे आर्यसमाज के प्रचार में विशेष योगदान की अपील की, जिससे देश के विकास मे प्रगति हो सके। वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी ने देश की रक्षा के लिए गो-सेवा और शराब-बन्दी की अपील की।

अन्त मे आगन्तुको तथा अतिथि वर्ग का धन्यवाद करते हुए विद्यापीठ के प्रधान डा० धर्मदेव शर्मा शास्त्री ने आश्वासन दिया कि हम सभी गुरुकुल वासी आर्यसमाज के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए आगे बढने में प्रयत्नशील रहेगे।

पं० जगत कुमार शास्त्री दिवंगत

आर्यजगत् के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् प० जगत् कुमार शास्त्री का लम्बी बीमारी के पश्चात् दिनाक २ मार्च को निधन हो गया है।

श्री शास्त्री की शिक्षा लाहौर मे हुई थी। वह दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय के स्नातक थे। काशी विद्यालय से उन्होने शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की थी। सस्कृत, हिन्दी, उर्दू और फारसी पर उनका असाधारण अधिकार था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री शास्त्री ने छुआछूत के विरुद्ध सदैव सघर्ष किया था। आर्यसमाज के आन्दोलनो मे उन्होने सक्रिय होकर भाग लिया था। लगभग ५० से अधिक सारगर्भित व मौलिक ग्रन्थ विभिन्न विषयो पर लिखे थे। आर्यसमाज के अनेक पत्र-पत्रिकाओ के भी वह सम्पादक रहे थे। श्री शास्त्री विनम्र निरभिमानी राष्ट्रभक्त गम्भीर विचारक और कर्मठ समाज सुधारक थे। आर्यसमाज की उन्होने जीवन पर्यन्त जो सेवा की थी उन के निधन से समूचे आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति हुई है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार दिवगत आत्मा की सदगति की कामना करते हुए उनके शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट करता है।

स्वामी रामेश्वरानन्द अस्वस्थ

आजन्म ब्रह्मचारी १०७ वर्षीय आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी महान् स्वतन्त्रता सेनानी भूतपूर्व ससद सदस्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल घरौण्डा करनाल गत दिनो से अस्वस्थ चल रहे हैं। स्वामी जी का उपचार पानीपत के प्रसिद्ध डा० आ० के० सिगला जी के निजी चिकित्सालय सिंगला नर्सिंग होम माडल टाउन, पानीपत मे हो रहा है।

स्वामी जी का सक्रिय जीवन स्वतन्त्रता सग्राम से आरम्भ हुआ। अग्रेजी शासन का विरोध करते हुए स्वतन्त्रता के लिए कांग्रेस में रह कर स्व० प० नेहरू जी के साथ जेल यात्रा की। आर्यसमाज के नेतृत्व मे हैदराबाद सत्याग्रह में जेल यातनाएँ सहीं। गोरक्षा आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए जेल यात्राएँ की। हिन्दी आन्दोलन के कर्णधार रहे। स्वतन्त्रता के पश्चात् राष्ट्रीय एकता के लिए आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे आमरण अनशन किया। भारतीय 'जनसघ' मे रहकर ससद सदस्य के रूप में जनकल्याण के कार्य किए। इस प्रकार अपना सारा जीवन जन कल्याण एवम् परोपकार करते हुए राष्ट्र को समर्पित किए हुए है।

प्रभु से प्रार्थना है कि स्वामी जी महाराज को शीघ्र स्वस्थ कर, दीर्घायु प्रदान करे।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज—

४५ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सान्ताक्रुज, बम्बई का ४५वा वार्षिकोत्सव दिनाक २१ जनवरी से २८ जनवरी तक बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन यजुर्वेद महायज्ञ सम्पन्न हुआ। प० अर्जुनदेव वेद शिरोमणि यज्ञ के ब्रह्मा रहे, महात्मा आर्यभिक्षु जी के उपदेश तथा श्री ओमप्रकाश वर्मा के मधुर भजन होते रहे।

२३ जनवरी को आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती लज्जा रानी गोयल की अध्यक्षता मे आयोजित हुआ। २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस समारोह श्री ओकारनाथ आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। रविवार २८ जनवरी को राष्ट्रीय एकता दिवस आयोजित किया गया।

इन अवसरो पर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, महात्मा आर्यभिक्षु, पण्डित अर्जुनदेव, कैप्टिन, देवरत्न पण्डित प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्रीमती लज्जा रानी गोयल, श्रीमती इन्द्र विश्नोई, श्रीमती सुमन वर्मा, श्रीमती ज्योति पटेल, श्रीमती सुमित्रा अमीन आदि ने वैदिक मान्यताओ की विशद व्याख्या कर उपस्थित जनसमूह को वैदिक धर्म के महत्त्व से परिचित कराया।

आर्यसमाज कुलटी—

६४ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प० बगाल के वर्द्धमान जिले के कुलटी नगर की आर्यसमाज का ६४वा वार्षिकोत्सव १५ मार्च से १६ मार्च तक बडी धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर श्री महेन्द्रपाल आर्य (कलकत्ता), डा० देवेन्द्र सत्यार्थी (नालन्दा), ठा० इन्द्रदेव सिंह "इन्द्र", श्रीमती विद्यावती द्वारा ओजस्वी भाषण हुए त[illegible] उपस्थित भारी जनसमूह ने वैदिक धर्म के प्रति दृढ़ आस्था बनाने [illegible] सकल्प लिया।

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य स्त्री समाज निजामुद्दीन

आर्य स्त्री समाज निजामुद्दीन (पूर्वी) का वार्षिक निर्वाचन श्रीमती शकुन्तला आर्या प्रधाना प्रातीय आर्य महिला सभा दिल्ली की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

प्रधाना—श्रीमती कृष्णा ठुकराल
मन्त्राणी—श्रीमती स्वराज्य चोपडा
कोषाध्यक्षा—श्रीमती कुसुम बहल

वेदप्रचार मण्डल उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली

वेदप्रचार मण्डल उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली के पदाधिकारियो का निर्वाचन आर्यसमाज विशाल एन्क्लेव, दिल्ली मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री विद्याप्रकाश वर्मा
मन्त्री—श्री हरिदत्त

पं० यशपाल सुधांशु सम्मानित

इसी अवसर पर आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक युवा विद्वान् प० यशपाल सुधाशु को उनके द्वारा की जा रही वेद-प्रचारार्थ सेवा के लिए, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से 'आर्यरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

शोक समाचार—

प्रेमचन्द श्रीधर को मातृ शोक

आर्यसमाज आदर्श नगर दिल्ली के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता एव आयजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प० प्रेमचन्द जी 'श्रीधर' की पूज्य माता जी का गत ८ मार्च को देहावसान हो गया है। श्रद्धाञ्जलि सभा प० जी के पैतृक स्थान मुरादाबाद में २० मार्च को सम्पन्न हुई।

आर्यसमाजों के आगामो

आयसमाज चूनामण्डी दिल्ली—

वेद कथा

आयसमाज चनामण्डी पहाड गज नई दिल्ली ५५ मे दिनाक ६ अप्रल से १५ अप्रल तक आयजगत के ओजस्वी वक्ता प० राजगरु शर्मा (म०प्र०) के ब्रह्मत्व मे प्रतिदिन प्रात काल यज्ञ तथा रात्रि में वेद कथा का आयोजन किया गया है।

१३ अप्रल को प्रात काल एक लाख रुपयो की राशि से बनायी जाने वाली भव्य यज्ञशाला का शुभारम्भ किया जाएगा।

आर्यसमाज तिलक नगर नई दिल्ली—

४०वा वार्षिकोत्सव

आयसमाज तिलक नगर (पजोकृत) नई दिल्ली ११००१८ के ४०व वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनाक ८ अप्रैल से १५ अप्रल तक स्वामी जगदीश्वरानन्द के ब्रह्मत्व मे प्रतिदिन प्रात काल यज्ञ तथा रात्रि मे वेदप्रवचन होगे।

१५ अप्रैल को पूर्णाहुति के पश्चात स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक सभा) श्री मदन लाल खराना ससद सदस्य डा० धमपाल (प्रधान आय प्रतिनिधि सभा) महाशय धमपाल (प्रधान आय केन्द्रीय सभा) श्री सूयदेव (महामन्त्री आय प्रतिनिधि सभा) सम्बोधित करगे

वदिक साधन आश्रम तपोवन—

४१वा वार्षिक महोत्सव

वदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून का ४१वा वार्षिक महोत्सव दिनाक ५ अप्रल से ९६ अप्रल तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर आचाय प्रमभिक्षु जी (मथरा) के ब्रह्मत्व म यज्ञ सम्पन्न होगा

समारोह म स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (बलापुर) आचाय रामप्रसाद वदालकार (कुलपति गरुकुल कागडी विश्वविद्यालय) श्री शिवाकात उपाध्याय (दिल्ली) श्री पन्नालाल पीयूष (उदयपुर) पधार रहे है।

आयसमाज श्रद्धानन्दपुरम—

चतुवर्षीय समारोह

आयसमाज अबन स्टेट (श्रद्धानन्द पुरम) सेक्टर ४ व ७ गडगाव का चतुवर्षीय धार्मिक समारोह दिनाक ० २१ व २२ अप्रल १९९० को समारोहपूवक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वद सम्मेलन आर्य महिला सम्मेलन तथा चरित्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया है। समारोह मे प्रो० रामप्रसाद वदालकार प्रो० उत्तमचद शरर आचार्य सत्यप्रिय प० शिवाकान्त उपाध्याय आदि विद्वान पधार रहे हैं। □

(पष्ठ १ का शेष)

गुरुदत्त का जीवन

मे किया गया उल्लेखनीय है कि आयसन्देश सग्रहणीय विशेषाको के प्रकाशन के लिए अद्वितीय काय कर रहा है और यह भव्य विशेषाक इस कडी का अनुपम योगदान है। विशेषाक वदिक विद्वानो की शोधपूण रचनाओ से परिपूण है।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धमपाल ने इस विशेषाक के लिए अन्य विद्वानो लेखको विज्ञापनदाताओ आदि द्वारा दिये गये बहुमूल्य सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

आय विद्वान सम्मानित

प० गरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य मे आयोजित समारोह मे आयजगत के प्रख्यात पत्रकार प० क्षितीश वदालकार तथा वदिक विद्वान प० यशपाल सुधाशु को दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की ओर से सम्मानित किया गया।

आथ९ ,   साप्ताहिक 'आर्यसन्देश' I, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77   Post in ND   Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डो० (सी०) ७५६   पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसस न० यू १३९

आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

आय केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे दिल्ली की आयसमाजो व शिक्षण मस्थाओ की ओर से आर्यसमाज का ११५वा स्थापना दिवस २४ मार्च को समारोहपूर्वक मनाया गया।

सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्यसमाज द्वारा गत ११५ वर्षों मे स्वतन्त्रता प्राप्ति समाज सुधार शिक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रो मे समाज व राष्ट्र के प्रति की गई आर्य-समाज की श्रेष्ठ उपलब्धियो का विवरण देते हुए पञ्जाब व कश्मीर की बद से बदतर होती जा रही स्थिति पर गहरी चिन्ता व्यक्त की। स्वामी जी ने सभी आर्यजनो को इस सकट की घड़ी में राष्ट्रीय-एकता व अखण्डता को बनाये रखने के लिए हर प्रकार के बलिदान देने के लिए तैयार रहने का आह्वान किया।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने शराब, मादक द्रव्यो आदि विश्वव्यापी बुराइयों के प्रति आर्यसमाज द्वारा सघर्ष को तेज करने का आह्वान किया। उन्होने कहा कि हम स्वय आर्य बनकर व बुराइयो को त्यागकर एक आदर्श उपस्थित करना चाहिए।

पत्रकार प० क्षितीश वेदालकार ने कहा कि आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाना हमारे लिए तभी साथक होगा जब हम जीवन मे आर्यत्व लाकर सच्चे मन से समाज व राष्ट्र-निर्माण काय मे और अधिक सहयोग दें।

सासद डा० रासासिह ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वतन्त्रता के सर्वप्रथम उदघोषक थे और उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करके एक मानव धर्म क्रान्ति की स्थापना की। इस अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्रीमती शकुन्तला आर्या आदि आर्य विद्वानो ने महर्षि दयानन्द के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हर प्रकार के त्याग व बलिदान करने का आह्वान किया।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न० १७, ... दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म्

आर्य सन्देश

वर्ष १ अंक ४ रविवार ८ अप्रैल १९९० चैत्र सम्वत २०४७ विक्रमी दयानन्दाब्द—१६५ सृष्टि सवत १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

वेदों के अनुसरण से ही विश्वशान्ति सम्भव

आर्यसमाज दीवानहाल का १०५ वां वार्षिकोत्सव उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न

दिल्ली १ अप्रैल। आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली का १०५ वा वार्षिकोत्सव आज बडे उत्साहपूर्वक एवम उल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। यजुर्वेदीय पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, महात्मा आर्य भिक्षु प० शिवाकान्त उपाध्याय प० महेन्द्र कुमार शास्त्री तथा प० यशपाल सुधांशु ने पञ्च-यज्ञो के महत्त्व और मनुष्य द्वारा यज्ञो को करते हुए जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए सारगर्भित सक्षिप्त प्रवचनो द्वारा प्रेरणा प्रदान की।

महात्मा आर्यभिक्षु श्री की अध्यक्षता मे आयोजित वेद सम्मेलन मे जहा डा० वाचस्पति उपाध्याय ने दिल्ली मे एक आदर्श वेद विद्यालय की स्थापना पर बल दिया यहा प० क्षितीश जी वेदालकार ने प्रत्येक आर्य को अपने घर मे अपने घर मे वेदो को रखने और उसके निरन्तर स्वाध्याय करने पर बल दिया। उन्होने वेदो के महत्व की अनुपम व्याख्या करते हुए आर्य समाज से वेदो का स्वाध्याय करने और अपने जीवन को महान बनाने पर बल दिया। इस सम्मेलन मे डा० महेश विद्यालकार प० प्रेमचद श्रीधर प० यशपाल सुधाशु व प० वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने सम्बोधित किया। सम्मेलन का सयोजन डा० रूप किशोर शास्त्री ने किया।

मध्याह्न मे ऋषि लगर के पश्चात राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी

(शेष पृष्ठ २ पर)

सरकार की मुस्लिम-तुष्टीकरण नीति की— स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा भर्त्सना

दिल्ली २९ मार्च। गृह मन्त्री मुफ्ती मुहम्मद सईद ने लोकसभा मे घोषणा की है कि कश्मीर की समस्या साम्प्रदायिक नही है। गृहमन्त्री की इस घोषणा पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इसे एकदम असत्य और जनता को बहकाने वाला बताया है।

गृह मन्त्री से उनका प्रश्न है कि 'अयोध्या मे रामजन्म भूमि मन्दिर के खुलने के समय कश्मीर मे मुस्लिम कट्टर पथितो द्वारा हिन्दू मन्दिरों के तोडे जाने और उन्हे अपवित्र किए जाने को वे क्या कहेगे ? मन्दिरो को नष्ट किए जाने के अतिरिक्त वहा बडे पैमाने पर हिन्दुओ की सम्पत्ति को लूटा और जलाया गया। यह दूसरी बात है कि केन्द्र मे तत्कालीन राजीव गाधी की सरकार ने स्वामी जी के आग्रह पर हिन्दुओं की सुरक्षा और मन्दिरो का पुनर्निर्माण कराया।

स्वामी जी का श्री मुफ्तीमुहम्मद से दूसरा प्रश्न है कि कश्मीर घाटी से हिन्दुओ और सिखो का भाग कर जम्मू तथा अन्य जगहो पर शरण लेने का क्या कारण है ? क्या राज्य के मुस्लिम कट्टर पथियो द्वारा फलाए गए आतकवाद की इस में कोई भूमिका नही है ?

लोक सभा मे श्री मुफ्ती का यह वक्तव्य उनकी अपनी घोर साम्प्रदायिक मनोवृत्ति पर लगाया हुआ धर्म निरपेक्षता का एक मुखौटा मात्र ही है। श्री मुफ्ती ने अपने बयान मे पाकिस्तानी प्रधान मन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो के उस कथन की भी चर्चा की है जिस मे उन्होंने कश्मीर विद्रोहियो को दस करोड रुपया देने की बात कही थी। परोक्ष रूप से इस पैसे का उपयोग भारत के विरुद्ध तोड फोड की कार्यवाही मे ही किया जाएगा। स्वामी जी का प्रश्न है कि पाकिस्तानी प्रधान मन्त्री द्वारा आतकवादियो को दी जाने वाला यह आर्थिक सहायता क्या भारत के विरुद्ध अघोषित युद्ध का प्रस्ताव नही है ?

आश्चर्य इस बात का है कि हमारे राजनेता जनता को इस प्रकार बेवकूफ बनाने मे क्यो अपना समय और शक्ति बर्बाद करते हैं ? हम अपने देश के सचार माध्यम के अधिकारियो से भी पूछना चाहते हैं कि इस समय जब कि पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध अघोषित युद्ध छेड रखा है पाकिस्तानी प्रधान मन्त्री बेनजीर भुट्टो की तथाकथित उपलब्धियो का गुण गान करना कहा तक उचित है ? क्या देश द्रोह नही है जिसके लिए उपयुक्त सजा मिलनी चाहिए ? इसके परिणामस्वरूप हमारे देश मे रहने वाले असभ्य पाकिस्तान समर्थको को नैतिक बल मिला है जिसका उपयोग वे हमारी ही जड काटने में करेगे।

स्वामी जी का कहना है कि सम्पूर्ण जम्मू कश्मीर राज्य को उस समय तक सेना के अधिकार में दे दिया जाय जब तक कि वहा पूर्ण शान्ति स्थापित न हो जाय। आम जनता की भी यही माग है।

सरकार द्वारा दिल्ली की जामा मस्जिद की मरम्मत के लिए ५० लाख रुपय की अनुदान राशि की स्वीकृति पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए स्वामी जी पूछना चाहते हैं कि क्या यह बहुसख्यक जाति के धन का मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए उपयोग नही है

□

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

(पृष्ठ १ का शेष)

में वेदो की महत्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों तथा आर्यसमाज के मन्तव्यो की विशद चर्चा करते हुए कहा कि वेदो के शाश्वत सिद्धान्तो का अनुसरण करने मे केवल भारतवर्ष की ही नही वरन समस्त विश्व की रक्षा सुनिश्चित हो सकती है विश्वशान्ति स्थापित हो सकती है। सम्मेलन को डाक्टर वाचस्पति उपाध्याय डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प० क्षितीश वेदालकार, प० कपिल देव शास्त्री ससद सदस्य महात्मा आर्यभिक्षु प० सच्चिदानन्द शास्त्री प० बाल दिवाकर हस आदि वैदिक विद्वानो ने राष्ट्र की सुरक्षा पर हो रहे बाहरी तथा आन्तरिक आघातो की विस्तृत चर्चा करते हुए सरकार से मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति त्यागने राष्ट्र की सीमा के साथ साथ सुरक्षा पट्टी बनाने तथा उस मे भूतपूर्व सैनिको को बसाने पजाब तथा कश्मीर राज्यो मे सैनिक शासन लागू करने और ढुलमुल नीति को छोडने का आह्वान किया।

रूसी हिन्दी-विद्वान् का स्वागत

इस अवसर पर रूस के लब्ध प्रतिष्ठित हिन्दी विद्वान श्री पियोतर ब ... नकोव का भावभीना स्वागत किया ... श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनका विस्तृत परिचय देते हुए उन्हे वेदो का सैट तथा वैदिक साहित्य भेट कर हैदराबाद के आर्य नेता प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम ने सत्यार्थप्रकाश का अग्रेजी अनुवाद Spot light on truth भेट किया।

'आर्यसन्देश' के विशेषाक का विमोचन

आर्यसमाज स्थापना दिवस के सन्दर्भ मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य साप्ताहिक पत्र "आर्यसन्देश" का समग्र क्राति अक का विमोचन श्री आनन्दबोध सरस्वती ने किया। स्वामी जी ने आर्यसन्देश विशेषाको को निरन्तर प्रकाशित करने और उनको सग्रहणीय सामग्री देने के लिए सभा के अधिकारियो को साधुवाद दिया। स्वामी जी ने विशेषाक की एक प्रति आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल को भेट की।

आर्य महिला सम्मेलन

शनिवार दिनाक ३१ मार्च को स्त्री आर्यसमाज की ओर से आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिस मे दिल्ली के कोने-कोने से आर्य विदुषी महिलाओ ने पहुँच कर कार्यक्रम को सफल बनाया। सम्मेलन मे श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती सरल महता श्रीमती प्रकाश आर्या श्रीमती कृष्णा चड्ढा श्रीमती प्रमशील महेन्द्र आदि ने वेदो की सार्वभौमिकता आर्यसमाज के मन्तव्यो तथा महर्षि दयानन्द के आदर्शों को सम्मुख रख कर नारी जाति को उन्नति के उच्चतम बिन्दु तक पहुँचने की प्रेरणा दी।

आर्यसमाज दीवान हाल के १०५ वे वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम २७ मार्च, आर्यसमाज स्थापना दिवस से प्रारम्भ हुआ। प्रति दिन प्रात काल यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा रात्रि में प० प्रेमचन्द जी श्रीधर द्वारा वेद व्याख्यानो का कार्यक्रम चला। आर्यसमाज मन्दिर को विद्युत दीपमाला से सजाया गया।

कार्यकर्ता सगोष्ठी

२७ मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस के पावन पर्व को आर्य कार्यकर्ता सगोष्ठी के रूप मे श्री सूर्यदेव प्रधान आर्यसमाज दीवानहाल तथा महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि की अध्यक्षता मे मनाया गया। गोष्ठी मे दिल्ली स्थित आर्यसमाजो स्त्री आर्यसमाजो तथा आर्यसस्थाओके वरिष्ठ अधिकारियो तथा कार्यकर्त्ताओ ने भाग लिया।

सगोष्ठी के सयोजक आचार्य यशपाल सुधाशु ने आर्य बन्धुओ का स्वागत करते हुए कहा कि आर्य समाज अपने प्रारम्भिक काल मे जिस गति से बढा और फला एव जिस शैली मे जनमानस को प्रभावित किया ऐसा उदाहरण किसी अन्य मत या पन्थ मे नही मिलता। हमारे वीर बलिदानियो के रोमाचकारी उदाहरण भी अद्वितीय है। परन्तु आज फिर इसे और अधिक गतिमान बनाने की आवश्यकता है।

□ गोष्ठी मे भाग लेते हुए प० जगतराम जी ने कहा आर्यसमाज के अधिकारियो को वैदिक सिद्धातो का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। अधिकारियो को सत्यार्थप्रकाश, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी आदि वरिष्ठ नेताओ के जीवनचरित भी पढने चाहिए।

□ आर्य परिवारो के बच्चो को भी समाज मे लाना चाहिए। इस के लिए देवियो को आगे आना होगा। यदि वे पूर्ण आर्य विचारो से ओत प्रोत होगी, तो पूरा परिवार ही आर्यमय बन जायेगा।

□ श्री हरवश कोहली का विचार था।

आर्यसमाजो के पक्के भवन बनते जा रहे हैं परन्तु आर्यजन कच्चे होते जा रहे है। हमे ईसाइयो तथा मुसलमानो के बढते हुए प्रभाव पर अकुश लगाना होगा। दक्षिण दिल्ली मे ईसाईयो द्वारा सचालित राजगार कार्यालय के माध्यम से आदिवासी गरीब लडकियो को ईसाईयत की शिक्षा देकर यहा के अमीर घरो मे नौकरिया दिलाई जाती है ईसाईयत का प्रचार किया जा रहा है।

आर्यसमाज को भी इस प्रकार के कार्यक्रम शुरू करने चाहिए।

● श्री रघुनन्दन गुप्त, ग्रेटर कैलाश (भाग-२) का सुझाव था।

आर्यसमाज को कश्मीर से धारा ३७० को समाप्त कराने के लिए कमर कसनी चाहिए।

□ पत्रकार श्री नरेन्द्र अवस्थी का विचार था।

आर्यसमाज को देश की ज्वलन्त समस्याओ के समाधान के समाधान मे अपनी पूरी भूमिका निभानी चाहिए इस से जनसामान्य आर्य समाज के साथ साथ चलेगा। और आर्यसमाज की जीवन्तता से जन-जन परिचित होगा।

श्री नवनीत लाल एडवोकेट का कहना था—

हमे आर्यसमाजो की सदस्य सख्या बढाने के चक्कर मे अधिक न पड कर अधिक प्रयास इस बात पर करना चाहिए कि आर्यसमाज के सदस्य और अधिकारी चरित्रवान और वैदिक सस्कृति के प्रति आस्थावान हो।

□ श्री बी० एन० शर्मा निर्माण-विहार ने कहा—

हमे सत्सगो में उपस्थिति बढाने के उपाय सोचने चाहिए।

हमे पारिवारिक सत्सगो के आयोजन करने चाहिए।

नवयुवको को आकर्षित करने के लिए उनके स्तर के आकर्षक कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

□ श्री शिवकुमार मदान, जनकपुरी का विचार था—

सदस्यता शुल्क शताश की सीमा मे कम कर क्योकि अधिकाश सदस्य शताश राशि नही देते।

प्रिंसिपल चन्द्रदेव ने कहा—

सदस्यो को साप्ताहिक सत्सगो मे सपरिवार सम्मिलित होना चाहिए।

□ श्रीमती प्रकाश आर्या का सुझाव था—

आर्य महिलाओ को सत्सग के लिए अपनी पडोसनो तथा महिलाओ को लाने का पुण्य कमाना चाहिए।

प्रिंसिपल ब्रजबाला भल्ला ने सुझाव दिया—

आर्य पर्वो उत्सवो तथा सत्सगो मे नि शुल्क साहित्य वितरण करना चाहिए।

□ आचार्य यशपाल सुधाशु, सयोजक ने एक और सुझाव की ओर ध्यान आकर्षित किया कि जब कोई वृद्ध आर्य दिवगत हो जाता है तो उसके परिवार का आर्यसमाज से सम्बन्ध समाप्त हो जाता है। हमारा कर्तव्य है कि हम उस परिवार मे अपना सम्पर्क बनाये रखे और परिवार के अन्य सदस्यो को सक्रिय सदस्य बना कर जोड रखे। अन्यथा धीरे धीरे हम सिमटते चले जाएँगे।

□ श्री रमेशचन्द्र ने कहा हमे आर्य बनने का कार्य अपने अपने घरो मे प्रारम्भ करना चाहिए

□ कुछ सदस्यो का विचार था कि ग्राम-प्रचार पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

□ कुछ ने कहा कि आर्यों को झगडो और मुकदमेबाजी मे न पडकर प्रेम और सौहार्द का वातावरण बनाना चाहिए।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री सूर्यदेव ने सभी उपस्थित आर्य भाई-बहनो का हार्दिक धन्यवाद किया तथा प्रार्थना की कि वे अपने अन्य उपयोगी सुझाव बाद मे लिख कर भिजवा देवें।



वैशाखी

वैशाखी पर्व सामाजिक और धार्मिक समरसता का प्रतीक है। यह देश की एकता एवम् अखण्डता को बनाए रखने वाला पर्व है। साथ ही यह अपने में गौरवशाली इतिहास की प्रेरक स्रोतस्विनी को भी आत्मसात् किये हुए है। इसे मेष सक्रान्ति, सवत् सारडी अथवा विष्णु चैत्राशु नामो से भी अभिहित किया गया है। यह चैत्र के उत्तरार्ध में एव वैशाख के पूर्वार्ध मे उस दिन पडता है जिस दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है। यह सयोग ही है कि अग्रेजी महीने के अनुसार भी इसकी तिथि वही होती है। इसका कारण है कि जो भी कलैण्डर सूर्य और पृथ्वी की गति से नियमित होते हैं, उनमे एकरूपता होती है।

यह उल्लास से मनाया जाने वाला पर्व है। रबी की फसल पककर खेतो में तैयार है और किसान मस्ती मे झूम उठते हैं। वे नाचते गाते, अपने इष्ट की वन्दना पूजा करते और निकट के जलस्थान में स्नान करते हैं। यह त्योहार किसी भी विशेष देवता से जुडा नही है। पंजाब और उत्तर पश्चिम भारत में यह विशेष रूप से मनाया जाता है। महाराष्ट्र के कोकण मलाबार क्षेत्र मे भी यह उत्सव मनाया जाता है। बौद्ध धर्म के अनुयायी मानते हैं कि इस दिन बोध गया में भगवान् बुद्ध को सम्बोधि प्राप्त हुई थी। सिखों के लिए इसका विशिष्ट महत्त्व है। इसी दिन सन् १६९९ मे गुरु गोविन्दसिंह ने आनन्दपुर में खालसा पन्थ की शुरूआत की थी। गुरु अमरदास ने भी इस दिन साध सगत को एक स्थान पर एकत्र होने का आदेश दिया था। सामान्यत सभी नये कार्य इस दिन प्रारम्भ किए जाते हैं।

भारत के स्वाधीनता सग्राम के साथ भी यह दिन जुडा हुआ है। सन् १९१९ में वैशाखी के दिन ही जलियावाला बाग में जनरल डायर (पजाब गवर्नर ओडिवियर) के हुक्म से अन्धाधुन्ध गोलिया बरसाकर सैकडो-हजारों निरपराध भारतीयो को मौत के घाट उतार दिया था। वे सरकार के विरोध में वहां पर एक जनसभा कर रहे थे। इस घटना ने देशवासियो मे एक नई जान डाल दी थी और उनका स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए उत्साह और अधिक बढ गया था।

१३ अप्रैल १७४९ को सरदार जस्सासिह आलूवालिया ने अहमदशाह अब्दाली का विरोध किया था और पजाब को अफगान साम्राज्य बनने से बचाया था। सन् १७७५ मे सिखो ने मुगलों से सघर्ष करके इसे मुस्लिम साम्राज्य होने से बचाया था। और १३ अप्रैल १८०१ को महाराजा रणजीतसिह का राजतिलक हुआ था।

यह दिन देश की एकता और अखण्डता बनाए रखने के लिए व्रत [illegible] दिन है।

—डा० धर्मपाल

गुरुकुल कागडी मे—

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल कागडी, हरिद्वार में नवीन सत्र के लिए ब्रह्मचारियों का प्रवेश प्रारम्भ है। ६ से ८ वर्ष तक के ब्रह्मचारी प्रविष्ट किये जायेंगे। आगामी उत्सव ९ से १४ अप्रैल के अवसर पर उनका उपनयन सस्कार एव वेदारम्भ सस्कार भी होगा।

श्याम सुन्दर स्नातक, आचार्य
गुरुकुल कांगडी

भगवती प्रकाशन ट्रस्ट से त्यागपत्र

श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के पत्र दिनांक २८ मार्च १९९० के अनुसार, उन्होंने श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित भगवती प्रकाशन ट्रस्ट से त्यागपत्र दे दिया है। इस ट्रस्ट की अध्यक्षता वे कई वर्ष पूर्व ही छोड चुके थे। जिन लोगों ने महर्षि दयानन्द के भाष्य सहित यजुर्वेद लेने के लिए अगाऊ धन दिया था, वे इस विषय में सीधे स्वामी जगदीश्वरानन्द से सम्पर्क करें।

ओ३म् श न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुण सुशस ।
श नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाष श नस्त्वष्टग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥

रुद्र का रौद्र रूप

—देवनारायण भारद्वाज

✳ ● ✳

हो प्रकट रुद्र ले रौद्र रूप, रक्षा हो जाये अवसर को।
द्वादश मासों की बात नही, है बात सभी सम्वत्सर की॥

जीवन के हेतु मरुत् आओ
और साथ मे विद्युत् लाओ
यह वायु प्राण है मरुत् त्राण
गुण दिव्य साथ मिल कर लाओ

प्राणो पर सकट आता है, देता वल वायु उपस्कर की।
द्वादश मासो की बात नही, है बात सभी सम्वत्सर की॥

हम मरुत् वायु से सुख पायें
वर्षानुवर्ष प्रभु गुण गायें
हो प्राण साथ प्रिय मरुत् नाथ
उत्पीडन सारे मिट जाये

भय-भ्रष्ट दुष्ट कर कष्ट नष्ट, दें रुद्र शान्ति शिव सहचर की।
द्वादश मासो की बात नही, है वात सभी सम्वत्सर की॥

यह सूय रश्मि सश्लेषक है
जग वस्तु रूप विश्लेषक है
मिल जाय रश्मि की राशि हमे
प्राणो की हर क्षण सेचक है।

ये गीत प्रशसा के सुनकर, दो शान्ति प्रेम के परिकर की।
द्वादश मासो की बात नही, है बात सभी सम्वत्सर की॥

—जगन्नाथ निवास, रंवोपुर नई बस्ती आजमगढ़ (उ० प्र०)

जलियांवाला बाग स्मृति दिवस पर—

वन्दन है

—राधेश्याम आर्य, वि०वाचस्पति

शोणित से है लिखा हुआ,
जिसका स्वर्णिम इतिहास।
'जलियांवाला बाग' हमारा,
लिये शहीदो का विश्वास।

अमर सपूतो के बलिदानो—
की जो अमिट कहानी।
जिसका कण-कण गौरव-अन्वित—
जो मानी, अभिमानी।

स्वतन्त्रता के पुण्य पव का,
जो निर्भय निर्माता है।
भारत मा का अनुपमेय—
निश्चय ही भाग्य-विधाता है।

मातृभूमि हित मर मिटने का,
जो देता पावन सदेश।
जिसके बलिदानो से अपना,
धन्य हुआ प्यारा स्वदेश।

ऊधमसिह जैसे सेनानी—
जिसकी लाज बचाते है।
अरि से ले प्रतिशोध सदा—
भूमण्डल को दहलाते हैं।

वही हमारा 'जलियावाला'—
भारत का अभिमान है।
महिमण्डल मे जिसकी गरिमा—
रहती सतत महान है।

अपराजेय शहीदो का है,
छिपा जहा अतुलित गौरव।
शौर्य-पराक्रम-त्याग भरा है,
बलिदानी वीरो का वैभव।

ब्रिटिश गोलियो से निर्भय हो,
बिना शस्त्र के ही सत्वर।
सीना तान दिया आगे बढ, बन
साहस की मूर्त्ति प्रखर।

मा के अमर सपूतो का इन—
युग-युग का बन्दन, अभिनन्दन।
जिनसे मिटता रहा युगो से—
क्रूर गुलामी का कटु क्रन्दन।

आवश्यकता है, आज आर्यसमाज को दिशाबोध हो !

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

आर्यसमाज के यशस्वी जीवन के ११५ वर्ष हो गए है, ऋषि की पावन काया के विछोह का भी एक शती से अधिक समय बीत गया है। इस अवधि मे विश्व मे ५००० से अधिक आर्यसमाजे और सहस्रो आर्य शिक्षणालय और सामाजिक सस्थाए कार्यरत हैं। क्या ये आकडे आर्यसमाज और महर्षि के अनुयायियो की सफलता के लिए पर्याप्त हैं ? क्या इन आकडो मे आर्यसमाज की उपलब्धि सन्तोषजनक कही जा सकती है ? जहा तक आकडो का प्रश्न है उन्हे आर्यसमाज के विस्तार और प्रभाव की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है परन्तु जब इसकी विश्व धर्मों एव अनुयायियों के प्रभाव मे तुलना की जाए तो ये आकड और उपलब्धि बहुत ही नगण्य जान पडती है। विश्व धर्मों मे सब से नया धर्म (मत) इस्लाम है। उसके सस्थापक मोहम्मद का निधन ६३२ ई० मे हुआ था परन्तु ७० वर्ष की अवधि मे इस्लाम हिन्द महासागर स अतलान्तक तक विस्तीर्ण हो गया था, उसकी आधी और तूफान के सामने फारसी साम्राज्य ने घुटने टेक दिए थे सोरिया, मिस्र अफ्रीका और स्पेन तक उसका व्यापक प्रभाव पडा था। महात्मा बुद्ध और पैगम्बर ईसा द्वारा प्रसारित बौद्ध एव ईसाई धर्म कुछ ही शताब्दियो मे यूरेशिया के व्यापक क्षेत्रो मे व्याप्त हो गए थे। उल्लेखनीय बात यह है कि इन दोनो ही महात्माओ ने अपने मन्तव्य, उपदेश एव चिन्तन को स्वय लेखबद्ध नही किया था, उनकी तुलना मे आर्यसमाज के प्रवर्तक ने अपने चिन्तन अवदान एव विचारो का बडा भाग स्वत लेखबद्ध कर दिया था। इसके बावजूद हम उनके विचारो को विश्व के विस्तीर्ण भागो मे तो क्या इस देश मे ही व्याप्त करने मे ही पूर्णतया समर्थ नही है।

हमे स्मरण रखना होगा कि महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थो तथा आर्यसमाज के माध्यम से विश्व को यद्यपि एक नवीन दृष्टि एव चिन्तन दिया है, तथापि उसका आधार वैदिक भारतीय वाङ्मय और सस्कृति, परम्पराए हैं। जहा उन्होने नवीनतम ज्ञान-विज्ञान का आत्मसात करने पर बल दिया, वहा उन्होने भारत के प्राचीनतम ज्ञान-विज्ञान, नीतिशास्त्र के सर्वोत्तम के नवनीत को अपना आधार बनाने पर विशेष आग्रह किया। महर्षि ने अपने ग्रन्थो, आर्यसमाज के निर्माण और अपने तेजस्वी, महान और त्यागपूर्ण जीवन की जो आहुति दी क्या उनके अनुयायियो और समाज का क्या यह दायित्व नही है कि उसे द्वीप-द्वीपान्तर और देश देशान्तर मे व्याप्त कर उसे एक सार्वभौम स्वरूप के रूप मे स्थापित्व किया जाए।

यह कार्य उसी स्थिति मे सम्भव है जब आर्यसमाज एवम आर्यजनता का सच्चा दिशाबोध हो। पिछली एक शताब्दी और एक दशक मे जो कार्य हुआ है वह अच्छा और उपयोगी है। परन्तु केवल उसी मे उलझे रहना आर्यसमाज और उसके अनुयायियो के लिए गरिमा का विषय नही है फलत उसे महर्षि और भारतीय सस्कृति के सन्देश को विश्व भर मे व्याप्त करने के लिए अपने सौ सालो की एक व्यवस्थित योजना बना कर उसे कार्यान्वित करने का सकल्प एव व्यवस्था करनी चाहिए।

इस बारे म पहला कार्यक्रम महर्षि प्रणीत ग्रन्थो विशेषतया सत्यार्थप्रकाश आदि के भारतीय एव विश्व भाषाओ मे विशेष लोकप्रिय सस्करण प्रकाशित कर पूर्ण किया जा सकता है। कई दशक पहले अमेरिका म आयोजित एक विश्व धर्म सम्मेलन मे बगाल के एक प्रमुख शिक्षा शास्त्री ने भारतीय हिन्दू धर्म के स्वरूप को सत्यार्थप्रकाश के अग्रेजी सस्करण मे उल्लिखित पहले दस समुल्लासो के आधार पर प्रस्तुत किया था। आज भी इन समुल्लासो के आधार पर एक आदर्श भारतीय नागरिक के चिन्तन शिक्षा प्रणाली, गृहस्थ वानप्रस्थ, सन्यास एव दूसरे आध्यात्मिक एव धार्मिक मान्यताओ का एक व्यवस्थित तर्कसगत स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है।

इसी प्रकार ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के आधार पर तथा महर्षि द्वारा प्रस्तुत आर्यसमाज के नियमो एव मन्तव्यो के आधार पर एक आदर्श मानव समाज और समाजव्यवस्था का एक स्वस्थ, सबल और प्रगतिशील आधार प्रस्तुत किया जा सकता है। यह कार्य भी प्रमुख भारतीय एव विश्वभाषाओ के माध्यम मे किया जाना चाहिए।

जिस प्रकार महात्मा बुद्ध, महावीर, ईसा और मुहम्मद की शिक्षाए लेखबद्ध की गई। उसी प्रकार महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के लक्ष्यो, मन्तव्यो और दृष्टिकोण को लोकप्रिय, सक्षिप्त, सारगर्भित रूप से भारतीय भाषाओ और विश्व भाषाओ के माध्यम से किया जाए तो उपयुक्त रहेगा।

ये सभी कार्य महत्त्वपूर्ण हैं, इन्हे एक नये दिशाबोध के साथ आर्यसमाज और आर्यजन उठा सके तो अच्छा होगा। इन्ही कार्यों के साथ आर्यसमाज और उसकी शिक्षण सस्थाओ को एक गम्भीर दायित्व उठाना चाहिए। यह दायित्व भारतीय वाङ्मय के सर्वोत्तम को आधुनिक लोकप्रिय स्वरूप मे प्रकाशित कर निभाया जा सकता है। इसी के साथ विश्व ज्ञान विज्ञान की नवीनतम उपलब्धियो का सक्षिप्त सारगर्भित सकलन एव आकलन होना चाहिए। यह दायित्व इतना बडा है कि इसमे अनेक सस्थाए और अग्रणी विद्वान् वर्षों तक कार्य कर सकते है।

इसी के साथ यह भी स्मरण रखना होगा कि विश्व-इतिहास मे यद्यपि भारत और भारतीय महापुरुषो का समुचित योगदान हुआ है परन्तु उसकी अभी तक यत्नपूर्वक उपेक्षा की गई है। सृष्टि के आरम्भ मे अराजक मात्स्य स्थिति को दूर कर मनु महाराज ने एक नई सामाजिक व्यवस्था स्थापित की थी। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध, उपगुप्त और सम्राट अशोक ने विश्व मे प्रेम, अहिंसा और सद्भावना के आधार पर मानव-जाति को एक नया सन्देश दिया था। सुवर्ण भूमि, इण्डोनेशिया, इण्डोचीन, द० पू० एशिया में आज भी श्रीकृष्ण की लीलाओ का व्यापक प्रचार-प्रसार है हमे विश्व इतिहास मे आचार्य चाणक्य के अवदान का भी समुचित मूल्याकन करना चाहिए, जिन्होने शास्त्र, शस्त्र और नन्द राजा के हाथो गई पृथ्वी का बुद्धि बल से उद्धार कर हिमालय से लेकर समुद्र पर्यन्त चक्रवर्ती साम्राज्य की प्रतिष्ठा की थी।

आज विश्व इतिहास में भारत और भारतीय महापुरुषो के योगदान का व्यवस्थित मूल्याकन होना ही चाहिए। अकगणित मे वैदिक गणित और शून्य का क्या योगदान है चिकित्सा क्षेत्र मे भारतीय शल्य चिकित्सको एव आयुर्विज्ञानियो ने क्या उपलब्धिया की थी। मानव-चिन्तन राजनीति, अर्थशास्त्र, कला, नौकावहन नृशास्त्र आदि अनेक क्षेत्रो मे भारत और भारतीयो की उपलब्धियो को अभी तक नकारा गया है या उनका बहुत ही उपेक्षापूर्वक उल्लेख है।

आर्यसमाज, आर्यजनो एवम आर्यसस्थाओ को इन सभी क्षेत्रो मे भारत और भारतीयो के योगदान का व्यवस्थित मूल्याकन कर उन्हे आधुनिक वैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। यह कार्य किसी एक या कुछ व्यक्तियो या एक दो सस्थाओ के लिए नही हो सकता। इसके लिए तो सार्वदेशिक सार्वभौम सयुक्त प्रयत्नो, सकल्पो एव दृढ भगीरथ प्रयत्नो की अपेक्षा है।

—अभ्युदय, बी० ७२, गुलमोहर पार्क नई दिल्ली १ ००४९

आर्यजगत मे—

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

वेदप्रचार मण्डल उत्तरी दिल्ली की ओर से २५ मार्च १९९० को आर्यसमाज विशाखा एन्क्लेव मे आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, गुरुकुल कागडी के पूर्व कुलपति डा० सत्यकाम वेदालकार वैदिक विद्वान् डा० महेश विद्यालकार, श्री खुशीराम गुप्ता, श्री महेन्द्रप्रताप एडवोकेट तथा श्री ब्रजभूषण तायल ने सम्बोधित किया। नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन श्री आर सी० मनचन्दा ने किया। श्री विद्याप्रकाश वर्मा ने अभ्यागतों का स्वागत किया। समारोह का सचालन मडल के मत्री प० हरिदत्त शास्त्री ने किया।

निजामुद्दीन श्मशान-भूमि आर्यसमाज की है

सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण नीति छोड़े और न्याय करे !

नई दिल्ली, ३० मार्च। गत १७ मार्च को निजामुद्दीन स्थित श्मशान घाट (जिसको क्षेत्रीय जनता दयानन्द घाट के नाम से जानती है, और जिसकी सम्पूर्ण व्यवस्था और सचालन आर्यसमाज लोधी कालोनी, जोर बाग नई दिल्ली करती है) को लेकर जो दगा अराष्ट्रीय साम्प्रदायिक और विघटनकारी तत्त्वो के कारण हुआ। वह आर्यसमाज की इस भूमि को शरारती तत्त्वों द्वारा हडपने की एक साजिश का परिणाम था। दक्षिण दिल्ली की ५० आर्यसमाजो के सगठन दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री रामशरणदास आर्य ने आज एक प्रेस-वक्तव्य मे यह जानकारी दी। उन्होने कहा सरकार को मुस्लिम तुष्टीकरण नीति और हर मामले मे चल रही सरकार की ढुल-मुल नीति के कारण ही ऐसी घटनाएँ हो रही है। अत सरकार को चाहिए वह न्याय का माग अनुसरण कर कार्यवाही करे—अन्यथा वह दिन दूर नही जब विदेशो से आये शरणार्थी लोग तो जोर जबरदस्ती से भारतभूमि पर कब्जा करते जायेंगे और भारत के मूल निवासी सरकार की धर्मनिरपेक्षता, मुस्लिम-तुष्टीकरण और ढुलमुलता के पाटो में पिसते रहेंगे। परन्तु सरकार यह ध्यान रखे कि आर्यसमाज के लोग इसे और अधिक सहन नही करेंगे।

आर्यसमाज लोधी कालोनी-जोर बाग के प्रधान श्री मदनगोपाल खोसला, मन्त्री श्री सत्यपाल और आर्य नेता श्री नवनीतलाल एडवोकेट सम्वाददाता सम्मेलनो के माध्यम से सारी स्थिति से देश की जनता को अवगत करा चुके हैं। यह भूमि १९५५ से आर्यसमाज के पास है, तथा हिन्दुओं के सभी सम्प्रदायो के मृतको के दाह-सस्कार यहाँ किये जाते हैं। जिन मृत बच्चों का दाह-कर्म नही किया जाता उनको मिट्टी मे दबाने की भी यही व्यवस्था है। समाज के अधिकारियो तथा क्षेत्रीय जनता के अनुसार सारे झगडे की जड प्यारे खा की है जो वहा पर अनधिकृत रूप से कब्जा जमाये हुए कबाडियो का मुखिया है। उन्होने पहले कूडा-कबाड इकटठा करना शुरू किया, फिर बॉस बल्लियाँ लगाकर गोदाम बनाने शुरू किये और फिर श्मशान भूमि के मुख्य द्वार से ही आने जाने का उपक्रम करने लगे। मना करने पर मारने पीटने की धमकियाँ दी जाने लगी। पुलिस मे अनेक बार शिकायत की गयी परन्तु कोई परिणाम नही निकला। इतना ही नही, प्रशासन की ढील का लाभ उठाकर, अवैध कब्जा करने वालो ने श्मशान भूमि के दक्षिण की ओर दीवार भी बनानी शुरू कर दी। पुलिस आई परन्तु अल्पसख्यक समुदाय के गैर कानूनी निर्माण को नही रोक सकी।

१७ मार्च को प्रात जब क्षेत्र के सभी वर्गों (जिनमे आर्यसमाजी, सनातनी, जैनी तथा सिख आदि सम्मिलित थे) के लोग श्रमदान (कार सेवा) द्वारा टूटी हुई दीवार के पुनर्निर्माण का कार्य शुरू करने पहुँचे तो वहाँ नाले के पास पहले से जमा आततायियो की भीड ने पत्थर और पेट्रोल बम फैंकने शुरू कर दिये। परिणामत दो व्यक्ति मारे गये और दजनो घायल हुए जिनमें पुलिस कर्मचारी भी सम्मिलित है।

आर्यजगत् को सभी सस्थाओ न भारत सरकार से जोर देकर माग की है, कि वह अल्पसख्यको के नाम पर ढुलमुल नीतियो को छोडकर न्याय के पथ पर चलकर राष्ट्रीय एकता का सबूत दे।

दिल्ली मे—

आर्यसमाज का दूसरा निःशुल्क कानूनी सहायता केन्द्र

२५ मार्च १९९०। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कानूनी समिति के तत्त्वावधान मे आज दूसरे निःशुल्क कानूनी केन्द्र का उद्घाटन आर्यसमाज बिरला लाइन्स, कमला नगर दिल्ली की व्यवस्था के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे आयोजित इस समारोह मे श्री रामफल बन्सल एडवोकेट मुख्य अतिथि ने इस केन्द्र का विधिवत उदघाटन किया।

डा० धर्मपाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कानूनी समिति के सदस्यो का धन्यवाद किया तथा श्री बन्सल को इस प्रकार के कार्यक्रमो को मार्गदर्शन देने का आग्रह किया। डा० धर्मपाल ने स्पष्ट किया कि विश्व मे शान्ति व कल्याण हेतु आर्यसमाज एक अपरिहार्य आन्दोलन है। हम सब को सगठित होकर जनजागृति का कार्य करना है। कानूनी समिति के संयोजक श्री विमल बधावन एडवोकेट ने कहा कि इस दूसरे निःशुल्क कानूनी सहायता केन्द्र के खुलने से आर्यसमाज के जनसम्पर्क को और बल मिलेगा। इस केन्द्र में समिति के सदस्य प्रत्येक शनिवार साय ५ से ७ बजे तक कानूनी सहायता के लिए उपलब्ध रहेंगे।

यदि सभी राज्यो तथा जिला स्तर की सभाएँ इस प्रकार के केन्द्र खुलवाने के प्रयत्न करें तो आर्यसमाज को एक नई शक्ति मिल सकती है और ऐसे केन्द्रो के माध्यम से युवा वग तथा अन्य समाज सेवको को आर्य दर्शन का अवसर मिल सकता है

अन्त में श्री जयप्रकाश आर्य, प्रधान आर्यसमाज ने भी कानूनी समिति के सदस्यो तथा अतिथियो का धन्यवाद किया।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति व्याख्यानमाला

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय में गुरुकुल के यशस्वी स्नातक, मूर्धन्य पत्रकार एव समाजसेवी प० इन्द्र विद्यावाचस्पति की जन्मशती के उपलक्ष्य में १३ मार्च १९९० को एक व्याख्यानमाला आयोजित की गयी। सीनेट हाल में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता पूर्व कुलपति आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने की। इस अवसर पर डा० रामनाथ वेदालकार, डा० धर्मपाल और डा० विजयेन्द्र स्नातक ने अपने लेख पढे। कुलपति आचार्य रामप्रसाद वेदालकार ने अभ्यागतो का स्वागत किया तथा कुल सचिव डा० वीरेन्द्र अरोडा ने सभी का धन्यवाद किया। इस व्याख्यान माला का सयोजन हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश ने किया।

मुख्य अतिथि डा० विजयेन्द्र स्नातक ने अपना मुद्रित शोध निबन्ध पढते हुए, प० इन्द्र जी को अद्भुत एव बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी की सज्ञा दी।

इस अवसर पर नगर के गण्यमान्य व्यक्ति एव साहित्यकार तथा पत्रकार उपस्थित थे।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय खरखौदा

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय खरखौदा जिला जींद (हरियाणा) मे चतुर्वेद पारायण महायज्ञ आचार्य अखिलेश्वर, सचालक वदिक आश्रम जम्मू कश्मीर के ब्रह्मत्व मे १५ मार्च से २५ मार्च तक आयोजित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री स्वामी स्वरूपानन्द और भजनोपदेशक प० सत्यदेव स्नातक, प० चन्द्रपाल जी २३ मार्च को इस यज्ञ मे सम्मिलित हुए। सभा प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को प्रचलित करने मे हरियाणा का विशेष योगदान है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कांगडी के पश्चात् सर्वाधिक गुरुकुलो की स्थापना यही पर की थी। यह प्रसन्नता की बात है कि कन्याओ के लिए यहा पर अनेक गुरुकुल चल रहे हैं। कुछ स्थानों पर तो उच्चतम शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षाओ का भी प्रबन्ध किया गया है।

आर्यसमाज शकरपुर

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली ९८ का वार्षिकोत्सव रविवार ४ मार्च १९९० को ऋषि बोधोत्सव के रूप मे मनाया गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने भावोद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि यदि हमारे देश के पण्डितों ने समय रहते शुद्धि की उपयोगिता को स्वीकार कर लिया होता, तो ऐसी भयावह स्थिति हमारे देश की न होती। उन्होने बताया कि महर्षि दयानन्द एक बार स्वय काश्मीर गए थे तथा राजा रणवीरसिंह के अनुरोध पर उन्होने एक शुद्धि पत्रिका तैयार की थी। परन्तु उस समय पण्डितो ने शुद्धि चक्र को स्वीकार न किया। आज भी समय है, यदि देश को मुसलमान और ईसाई होने से बचाया जाएगा, तो देश बच सकता है, अन्यथा नही।

इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह को डा० धर्मपाल श्री सूर्यदेव, प० परमेश शर्मा, प्रो० रतनसिह शाण्डिल्य ने सम्बोधित किया।

होलिकोत्सव पर मगल-मिलन

आर्यसमाज दीवानहाल

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली की ओर से घण्टाघर चादनी चौक पर होली के अवसर पर यज्ञ किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य-प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती और प० यशपाल सुधाशु ने आर्यजनता को सबोधित किया।

महर्षि दयानन्द विद्या-मन्दिर

महर्षि दयानन्द विद्यामन्दिर तिगॉव, जिला फरीदाबाद मे २६ मार्च १९९० को आर्यसमाज स्थापना दिवस आयोजित किया गया। अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के प्रधान श्री रामलाल मलिक तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने जनता को सबोधित करते हुए, महर्षि दयानन्द की समाज को देन से परिचित कराया। समारोह का सचालन मुख्याध्यापक श्री भूदेव साहित्याचार्य ने किया। लाला लच्छोराम जी ने अभ्यागतो का धन्यवाद किया।

आर्यसमाज बाकनेर

३९ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बाकनेर, दिल्ली का ३९ वा वार्षिकोत्सव २४ व २५ मार्च को सम्पन्न हुआ। दोनो दिन प्रात यज्ञोपरान्त प० देवेन्द्रनाथ शास्त्री, प० मूलचन्द गौतम, स्वामी अमृतानन्द सरस्वती तथा आर्ष गुरुकुल टटेसर के आचार्य कर्णसिह जी के प्रवचन हुए।

२४ मार्च को खेल-प्रतियोगिताओ का उद्घाटन डा० प्रशान्त वेदालकार ने किया। उन्होने युवको को आत्मिक और शारीरिक दोनो प्रकार की उन्नति के लिये प्रेरित किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय पहलवान श्री जगतसिह ने युवको को आशीर्वाद दिया।

रात्रि में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज के स्वर्णयुगीय इतिहास पर प्रकाश डालते हुए, युवको को आदर्श युवक बनने के लिए प्रेरित किया।

२४ व २५ मार्च को वालीबाल, कबड्डी, विभिन्न वर्गो की कुश्तियो, फुटबाल, दौड खोखो, निबन्ध भाषण-प्रतियोगिताओं का विशाल स्तर पर आयोजन किया गया। भारत केसरी श्री सत्यपाल ने युवा खिलाडियों के प्रदर्शन की भूरि-भूरि प्रशसा की।

अन्त में "आर्ययुवक सम्मेलन" की अध्यक्षता करते हुए चौ० तारीफ सिह ससद सदस्य ने आर्यसमाज के द्वारा किए गए राष्ट्रीय एव सामाजिक कार्यो की प्रशसा की तथा भविष्य मे भी इसी प्रकार सेवारत रहने की अपील की। इस अवसर पर बाकनेर के समाजसेवी चौ० दलीपसिह व प० हरद्वारीलाल तथा प० आशानन्द आर्य भजनोपदेशक को सम्मानित किया गया। विशिष्ट दानदाताओ का स्वागत किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओ के विजयी खिलाडियो तथा छात्रो को चौ० तारीफसिह जी ने पुरस्कार प्रदान किए।

योग प्रशिक्षण

आर्यसमाज बिरला लाईंस (कमलानगर), दिल्ली-७ में दिनाक १६ अप्रैल से एक सप्ताह तक योग शिक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। प्रतिदिन प्रात ५ ३० बजे से यज्ञ तथा योग शिक्षण मध्याह्न २-३० बजे से शका समाधान तथा रात्रि मे ७ ३० बजे से स्वामी सत्यपति परिव्राजक वेद व्याख्यान करेंगे।

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से महात्मा हसराज का जन्म दिवस १५ अप्रैल को प्रात ९ बजे से ताल कटोरा इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली मे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

यज्ञोपरान्त प्रात १० बजे से स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी महाराज की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा होगी। जिसमें भारत सरकार के अनेक मंत्रीगण, आर्य विद्वान् और सन्यासी महात्मा हसराज के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करेंगे।

आर्यसमाज घोण्डा

आर्यसमाज घोण्डा में शनिवार १० मार्च को प्रात होली मिलन के अवसर पर यज्ञ एव वेद प्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, उपप्रधाना श्रीमती ईश्वर देवी धवन, वेद प्रचार अधिष्ठाता, श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, श्री सुरेन्द्र कुमार हिन्दी, श्री विमल कान्त शर्मा डा० जगन्नाथ, श्री प्रणव प्रकाश शास्त्री एव मास्टर मनोहरलाल जी ने अपने विचार व्यक्त किए। यज्ञ के ब्रह्मा प० दिनेशचन्द्र आचार्य थे।

आर्यसमाज मोडल बस्ती

आर्यसमाज मोडल बस्ती मे शनिवार १० मार्च १९९० को होली मगल मिलन एव यज्ञ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती तथा भजनोपदेशक श्री सत्यदेव स्नातक श्री ज्योति प्रसाद, श्री चुन्नीलाल, श्री चन्द्रपाल तथा श्री गुलाब सिह राघव सम्मिलित हुए।

दूरदर्शन पर परिचर्चा

दिल्ली दूरदर्शन की ओर से २७ मार्च १९९० को दूरदर्शन '४' पर 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' एक परिचर्चा प्रसारित की गयी। इस २० मिनट के कार्यक्रम मे दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर विजयेन्द्र स्नातक, भाषा सवाद समिति दिल्ली के प्रधान सम्पादक डा० वेदप्रताप वैदिक और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने भाग लिया।

श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की ओर से आर्य नगर पहाड़गज में २७ मार्च १९९० को प्रात श्री चमनलाल ग्रोवर की अध्यक्षता में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। दिल्ली आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। श्री रामलाल मलिक ने अभ्यागतों का स्वागत किया। श्री डा० बलराम राणा ने समारोह का सयोजन किया।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P.S.O on 5 6-4-90 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

आर्यजगत् के आगामी कार्यक्रम

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ९०वां वार्षिकोत्सव

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के कीर्तिस्तम्भ गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का ९० वा वार्षिकोत्सव ९ अप्रैल से १४ अप्रैल ९० तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ, वैदिक प्रदर्शनी, वेद एव संस्कृत सम्मेलन राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है।

समारोह मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, महात्मा आर्य भिक्षु, प्रो० शेरसिह, डा० धर्मपाल, वीरेन्द्र एम०ए०, सूर्यदेव, डा० रामनाथ वेदालकार, डा० प्रशान्त वेदालकार श्रीमती प्रभात शोभा, डा० महावीर, प० मदनमोहन विद्यासागर, ओमप्रकाश, वर्मा भजनोपदेशक आदि विद्वान् पहुँच रहे हैं।

आर्यसमाज बाजार सीताराम

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली का ७० वा वार्षिकोत्सव रविवार ८ अप्रैल ९० को गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा आर्य कुमार सम्मेलन के रूप में मनाया जा रहा है। समारोह में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रो० बलराज मधोक, डा० महेश विद्यालकार, प० यशपाल सुधाशु तथा महन्त अवैद्यनाथ (ससद सदस्य) और सुश्री उमा भारती (ससद सदस्य) भी पधार रहे है।

आर्यसमाज पंखा रोड सी-ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली

आर्यसमाज पखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली-५८ का १० वाँ वार्षिकोत्सव १५ अप्रैल से २२ अप्रैल तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात ६ बजे से अथर्ववेद यज्ञ होगा।

मुख्य कार्यक्रम २० अप्रैल को साम्प्रदायिकता-विरोधी सम्मेलन, २१ अप्रैल को महिला सम्मलन, कवि सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिता तथा २२ अप्रैल को आर्य सम्मेलन के रूप मे होगा। ●

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ (हरियाणा) मे १८ अप्रैल से २९ अप्रैल तक सस्कृत-सस्कृति स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती तथा श्री स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती द्वारा जहा भारतीय सस्कृति से परिचय कराया जाएगा वहां वेद, दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, गीता आदि का स्वाध्याय किस प्रकार किया जाय, समझाया जायेगा। □

सेवा में—

३३६७- श्री पुस्तकाध्यक्ष जी,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी,
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ०प्र०)

'प्रखर'—वैशाख'२०४

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अक २१ | रविवार १५ अप्रैल १९९० | वैशाख सम्वत् २०४७ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६५ | सृष्टि सवत १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

बटाला (पंजाब) में रामनवमी-शोभायात्रा पर बम-विस्फोट में ४० मरे व सैकड़ों घायल

आर्य जनता में भारी क्षोभ

पंजाब व कश्मीर में सैनिक शासन की मांग

आर्यसमाज दीवानहाल में विराट् सर्वधर्म सभा आयोजित

दिल्ली, ५ अप्रैल। आर्यसमाज दीवान हाल मे आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सर्व धर्म सभा में सभी धार्मिक नेताओ ने पजाब और कश्मीर मे विस्फोटक स्थिति पर गहरी चिता व्यक्त करते हुए दोनो राज्यो को कम से कम १० वर्षों के लिए सेना के हवाले करने की माग की गई।

सभा मे रामनवमी की शोभा यात्रा के दौरान बटाला मे हुए। बम विस्फोट में मारे गए सभी व्यक्तियो के परिवारो को ५ ५ लाख रुपए तथा घायलो को प्रति व्यक्ति५० हजार रुपए मुआवजा देने की माग की गई। मृतको के परिवारो तथा घायलो को अभी तक किसी भी सरकार की आर्थिक मदद अथवा मुआवजा न दने के लिए सरकार की घोर निंदा की गई। सभा में बटाला मे मारे गए सभी मृतको के प्रति श्रद्धाजलि भी अर्पित की गई।

सभा को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनद बोध सरस्वती हैदराबाद के आर्य नेता पडित रामचन्द्र राव वन्देमातरम्, इद्रप्रस्थ श्व हिंदू परिषद् के महामन्त्री श्री वैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम' अखिल भारतीय सनातन धर्म प्रतिनिधि सम्मेलन के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री रामफल त्यागी, महासचिव श्री रमाकात गोस्वामी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्य दव श्री विमल देव भारद्वाज एडवोकेट श्री आर० एन० वत्स, श्री विजय शकर चतुर्वेदी, श्रीमती शिपा पाड ने भी सबोधित किया। सभा की अध्यक्षता सनातन धर्म महासभा के सभापति श्री प्रेम चन्द गुप्ता ने की।

सरकार मजबूती से काम करे

स्वामी आनन्द बोध ने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि दश के लिए त्याग और तपस्या करने वाले व्यक्तियो को महत्त्व नही दिया जाता है जब कि आतकवादियो के समाचारो और उनके चित्रो को सचार माध्यमो द्वारा प्रमुखता दी जाती है। उन्होने कहा कि कश्मीर से हजारो सिख और हिंदू पलायन कर चुके है। यह सब सरकार की कमजोरी है। उन्होने कहा कि यदि सरकार मजबूत होती तो आतकवादियों के हौंसले इतने बुलन्द नही होते।

सरकार वी० पी० सिंह नही इमाम बुखारी चला रहे है

इद्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद के महामन्त्री श्री शर्मा ने चेतावनी दी कि यदि पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण करने का प्रयास किया तो उसे भारतीय सेनाए मुह तोड जवाब देंगी। उन्होने यह भी कहा कि यदि युद्ध हुआ तो इस बार पाकिस्तान का नामोनिशान नही बचेगा।

उन्होने कहा कि नई सरकार वी० पी० सिंह नही चला रहे है बल्कि इमाम बुखारी चला रहे हैं। उन्होने कहा कि ६ बैसाखियो पर टिकी सरकार के आने के बाद से ही देश की स्थिति निरन्तर बिगड रही है और साम्प्रदायिक ताकते सिर उठा रही है।

कई वक्ताओ ने सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि वह मुस्लिम नेताओ की धमकियो से डरती है। कुछ मुस्लिम नेताओ द्वारा इस्तीफे देने की प्राय धमकी दी जाती है। वक्ताओं ने इसके जबाव मे हिंदू मासदो का आह्वान किया कि वे भी इस्तीफा दे दे।

हिन्द्-सिख भाई चारा

अखिल भारतीय सनातन धर्म प्रतिनिधि सम्मेलन के महामन्त्री श्री रमाकात गोस्वामी ने इस बात पर अफसोस व्यक्त किया कि पजाब का मूल स्वरूप समाप्त होता जा रहा है। उन्होने पजाब के निर्माण मे सनातन धर्म के नेताओ के यागदान की सराहना करते हुए कहा कि चद मुठ्ठी भर आतकवादी पजाब की पुरानी सस्कृति को समाप्त करने का कुत्सित प्रयास कर रहे है लेकिन उनकी इन साजिशो को सफल नही होने दिया जाएगा। हिन्दू-सिख भाईचारा कभी भी समाप्त नहीं हो सकेगा। उन्होने

(शेष पृष्ठ ५ पर)

कश्मीर में आतंक का साम्राज्य, हिन्दू-सिक्खों को मारा भगाया जा रहा है!

एच० एम० टी० के महाप्रबन्धक श्री एच० एल० खेरा का अपहरण और हत्या! और

धर्म निरपेक्ष सरकार मस्जिदों के सौन्दयकरण में व्यस्त!

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

ब्रह्मा—प्रत्येक यज्ञ में एक ब्रह्मा होता है। वह चारो वेदो का विद्वान् होता है। वर्तमान मे इस प्रकार का व्यक्ति तो दुर्लभ है। किन्तु इस नाम से पुकारे जाने वाले व्यक्ति का वेदो से थोडा बहुत परिचय तो होना ही चाहिए। वह वेद का विद्वान मालूम तो पड। उसे सस्कृत का विद्वान् तो होना ही चाहिए। साधारण हिन्दी जानने वाले वेद की शास्त्रीय व्याख्या तो दूर मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण तक करने मे असमर्थ व्यक्तियो को ब्रह्मा नाम से नही पुकारा जाना चाहिए। ऐसे व्यक्तियो को यज्ञ का सचालक, व्यवस्थापक या अधिष्ठाना अध्यक्ष नाम दिया जा सकता है। अन्यथा कालान्तर म वे पौराणिक पाधाओ जैसे बन कर रह जायेंगे।

ऋषि—मनुष्यो मे 'ऋषि का पद बहुत ऊचा है। इस शब्द का प्रयोग उन आप्त पुरुषो तक के लिए सीमित है जो समाधि प्रज्ञा द्वारा विविध सूक्तो, अथवा मन्त्रो के तत्त्वो का दर्शन करने अथवा वेदागो की रचना करके अध्येताओ का मार्ग प्रशस्त करते है। महर्षि यास्क ने निरुक्त मे 'ऋषिर्दर्शनात' (२।११) तथा ऋषीणा मन्त्रदृष्यो भवन्ति' (७।३) कहकर इसे स्पष्ट किया है। ब्रह्मर्षि हो 'राजर्षि' दोनो मे ऋषि पद सामान्य है और वह ऋषि कोटि के मानवो के लिए ही सुरक्षित रहना चाहिए।

वेदभाष्यकार—आजकल आर्यसमाज म वेदभाष्यकारो की बाढ सी आ गई है। जिन्हे साधारण सस्कृत भी नही आती वे चतुर्वेद भाष्यकार बन रहे है। महर्षि यास्क के अनुसार जो ऋषि नही और तपस्वी नही उसे वेदार्थ का ज्ञान नही हो सकता—'न ह्येषु प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसो वा (निरुक्त १३ १)। ऋषि दयानन्द ने स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषय मे लिखा है—

वेदो का भाष्य करने के विषय मे ऐसा समझना चाहिए कि जब तक सत्य प्रमाण, सुतर्क वेदो के शब्दो का पूर्वापर प्रकरणो का, व्याकरण आदि वेदागो, शतपथ आदि ब्राह्मणो पूर्वमीमासा आदि शास्त्रो और शास्त्रान्तरो का यथावत् बोध न हो और परमेश्वर का अनुग्रह, उत्तम विद्वानो की शिक्षा, उनके सत्सग से पक्षपात छाड के आत्मा की शुद्धि न हो तब तक वेदो के अर्थ का यथावत् प्रकाश मनुष्यो के हृदय में नही होता।"

इन शब्दों का दुरुपयोग न करें !

—विद्यानन्द सरस्वती
– डी- १८/१६ माडल टाउन, दिल्ली

ऋषि दयानन्द वेदभाष्य कैसे करते थे, इस विषय मे उनके सहायक प० ज्वाल दत्त ने बताया था —'स्वामी जी दो तीन बार वेद मन्त्र पढने के पश्चात हम को पदच्छेद' अन्वय लिखाते थे। फिर निरुक्त को देखते फिर पिछले और अगले मन्त्रो को पढवाते। जब यह सब कुछ हो जाता तो स्वामी जी पास वाले कमरे मे चले जाते, कमरे के दरवाजे बन्द हो जाते। भीतर स्वामी जी समाधि लगाते थे। घण्टे के बाद बाहर आकर सस्कृत मे भाष्य लिखवाते थे। उनकी समाधि का फल उनका वेदभाष्य है।"

अब वेदभाष्य करना बच्चो का खेल हो गया है। लोकैषणा से ग्रस्त लोग वेदभाष्यकार की उपाधि पाने के मोह मे वेदभाष्य करने मे जुटे हुए है और रातो रात वेदभाष्यकार बनते जा रहे हैं। छुटपुट मन्त्रो का अनुवाद करना अथवा सामान्य जनो के हितार्थ उनकी व्याख्या करना दूसरी बात है, किन्तु वेद भाष्य करना बहुत बडी बात है। ऋषि द्वारा निर्धारित योग्यता के अभाव मे सस्कृत के सामान्य ज्ञान के आधार पर वेदभाष्य में प्रवृत्त होना अनधिकार चेष्टा होगी।

परमहस—सामान्य कवि समय के अनुसार हस को दूध और पानी को अलग अलग कर देने वाला विशेष शक्ति सम्पन्न पक्षी माना जाता है। मनुष्यो मे सत्यासत्य मे विवेक करने वाले व्यक्ति की हस से उपमा दी जाती है परमहस उच्चतम कोटि का वह सन्यासी होता है जो भावात्मक समाधि की स्थिति मे पहुँच चुका हो और अपना सर्वस्व त्याग, सर्वत्र निस्पृह हो, राग-द्वेष, सुख दुख हानि-लाभ, मान अपमान आदि के द्वन्द्वो से ऊपर उठकर लोकोत्तर व्यक्तित्व प्राप्त कर चुका हो। 'ऋषि' के समान 'परमहस' भी सर्वोच्च उपाधियो मे से एक है, जिसका प्रयोग कोई स्वय अपने लिए नही करता। ऋषि दयानन्द ने इस शब्द का प्रयोग अपने गुरुवर श्री स्वामी विरजानन्द जी दण्डी के लिए किया है। आर्यसमाज में कोई दूसरा 'परमहस' नही हुआ।

आचार्य—आचार्य शब्द का प्रयोग उसके लिए होता है

१ जिसने व्याकरणाचार्य आदि परीक्षा उत्तीर्ण करके उपाधि अर्जित की हो, अथवा—

२ जो किसी गुरुकुल या कालिज मे आचार्य (प्रिंसिपल) रहा हो। अथवा—

३ जिसकी दार्शनिक, वैज्ञानिक अथवा तत्सम क्षेत्र में कोई विशिष्ट उपलब्धि हो।

जिनमें ऐसी कोई विशेषता न हो, उन्हे आचार्य कहना इस शब्द का अपमान करना है।

डाक्टर—किसी राजपत्रित (chartered) यूनिवर्सिटी द्वारा Ph D D Litt M D M B B S की परीक्षा मे उत्तीर्ण होने पर दी गई उपाधि प्राप्त करने वाले को डाक्टर कहा जाता है। यूनिवर्सिटियो द्वारा दी जाने वाली मानद उपाधि भी इसमे शामिल है। स्वयम् अपने आप अपने नाम के पहले 'डाक्टर शब्द का प्रयोग नही किया जाता। ऐसा वे ही करते हैं जो वास्तव में डाक्टर नही होते। कुछ लोग अज्ञानवश भी ऐसा करते हैं।

ओ३म् श न सोमो भवतु ब्रह्म श नो ग्रावाण शमु सन्तु यज्ञा।
श न स्वरूणा मितयो भवन्तु श न प्रस्व शम्बस्तु वदि ॥६

यज्ञ मण्डप

—देवनारायण भारद्वाज

सुखकारी हो यज्ञ हमारा, देती हो मोद यज्ञशाला।
यह वेदी और यज्ञमण्डप हो मन्दिर सुन्दर सुख वाला॥

यज्ञ हव्य सब सोम सुहाना
यह सोम हमे दे वस्तु सजाना
दे सोम शान्ति दे वस्तु कान्ति
दे हम को उत्तम सुख नाना।

यह सोम सृजक है पिता सौम्य आनन्द शान्ति देने वाला।
यह वेदी और यज्ञ मण्डप हो मन्दिर सुन्दर सुख वाला॥

यह वेद मन्त्र का उच्चारण
कर रहे यज्ञ का जो पारण
इस यज्ञ भूमि की सब ईंटें
अब करें हमारा सुख धारण।

इस मण्डप के दृढ स्तम्भ गणित, प्रिय वेदी की रचना वाला।
यह वेदी और यज्ञ मण्डप, हो मन्दिर सुन्दर सुख वाला॥

यह वेदी और यज्ञ आभा
शाकल्य सुरभि की सब शोभा
औषधियो की पोषक क्षमता
पल्लवित करे प्रभु की प्रतिभा।

परिवेश पूर्ण परमेश्वर का, दे हमे मनोहर श्रुतिशाला।
यह वेदी और यज्ञमण्डप, हो मन्दिर सुन्दर सुख वाला॥

—जगन्नाथ निवास, रैदोपुर, नई बस्ती, आजमगढ (उ० प्र०)

उत्तर प्रदेश और बिहार में हिन्दी

सम्पादकीय

दुनिया भर मे यह सौभाग्य हिन्दुस्तान को ही प्राप्त है, जहाँ अपनी ही म तृ भाषा अपन ने के लिए आन्दोलन करने पडते हो। जहाँ कि जिला स्तर की अदालतो से लेकर उच्चतम न्यायालय तक सब काम अग्रेजी मे होता है। वकील अग्रेजी मे जिरह करता है। न्यायधीश अग्रेजी मे फैसला सुनाता है और जन साधारण (मुवक्किल) मुह बाये कभी वकील की ओर दखता है और कभी न्यायाधीश की ओर। क्या देश की अदालतें इस बात से अनभिज्ञ है कि अग्रेजी मे अदालतो की कार्यवाही ६५ प्रतिशत से अधिक मुवक्किलो के पल्ले पडती ही नही हैं। क्या यह सब न्याय की सम्पूण प्रक्रिया का मजाक नही है। यही नहो केन्द्रीय तथा राज्यस्तर के प्राय. सभी सरकारी विभागो मे हिन्दी और हिन्दी वालो को 'अश्वेत व'अछूत' समझकर सौतेला व्यवहार किया जाता है इतना ही नही कुछ शहरी लोगो ने तो अग्रेजी को प्रतिष्ठाचिह्न का दर्जा द दिया है।

सुखद समाचार हे कि उत्तर प्रदेश के नये मुख्यमन्त्री श्री मुलायम सिह यादव ने पहले देश में फैलते जा रह महगे अग्रेजी-माध्यमी स्कूलो को बन्द करने की बात कही और उसके बाद उन्होने प्रदेश के सरकारी दफ्तरो से अग्र जी को हटाकर हिन्दी को अनिवाय बना दिया। श्री यादव न २५ मार्च को डाक्टर राममनोहर लोहिया की स्मृति मे आयोजित एक समारोह मे सरकारी कामकाज हिन्दी मे शुरू करने की घोषणा की साथ ही मुख्यमन्त्री के आदश पर राज्य के मुख्य सचिव श्री राज भागव ने २६ माच को सभी सरकारी विभागो को सारे काय हिन्दी मे ही करने के आदश दिये। यद्यपि १६५२ से ही उत्तर प्रदेश की भाषा हिन्दी कर दी गयी थी, लेकिन उस पर अमल नही हो सका। उस आदश को पुनर्जीवित करके श्री यादव ने निश्चित रूप से अपना जबरदस्त राजनीतिक इच्छा शक्ति का परिचय दिया है।

ठीक इसी प्रकार विहार के नये मुख्य मन्त्री श्री लालू प्रसाद यादव ने भी अग्र जो को विदायी देकर सम्पूर्ण सरकारी काय हिन्दी मे करने का निर्देश दे दिया है। यहा भी १६५० मे बिहार राजभाषा अधिनियम बनाकर हिन्दा को सरकारी कामकाज की भाषा बनाने का प्रयास हुआ था मगर च ल कछुए वाली ही थी।

इन सुखद समाचारों को पढकर भी हमे शक है कि इन आदेशो पर पूरी तरह से अमल हो भी पाएगा या नही। जिस प्रकार अग्र जो-अखबार, अग्रेजी माध्यम के स्कूल और कालेज, ईसाई-मिशनरियो के सगठन और अग्रेजी भक्त प्रशासानक अधिकारियो का वग बौखला रहा हे, वह किसा न किसी बहाने अग्रेजी का बोझ भारतीय जनमानस पर लादे ही रखगा। काले अग्रेज यह बर्दाश्त नही कर सकते कि उन्हे कल अनुवाद को और टाईपिस्टा के सामन खडा होना पडगा।

अब समय आ गया ह कि अन्य हिन्दा भाषी प्रदेशो—मध्य प्रदेश हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात की सरकार भी उत्तर प्रदेश और बिहार का अनुसरण कर एक झटके मे अग्रेजी का मोह त्याग कर राष्ट्र भाषा हिन्दो मे कार्य शुरू कर देव, फिर देखे कि अन्य प्रदेश भा धीरे-धीरे अपनी अपनी प्रादेशिक भाषाओ को लेकर अग्रेजी का मोह छोड देंगी।

जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं कि हमे इन नये आदेशो के पूरी तरह अमल होने पर शक है। अत. इन दोनो प्रदेशो के यादव मुख्यमन्त्रियो से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे इस विषय पर अफरसरशाही के साथ सघर्ष मे भी अपनी राजनीतिक इच्छा शक्ति को और दृढतापूर्वक सामने लायें—समस्त हिन्दी जगत् उनकी पीठ पर होगा। दोनो मुख्य मन्त्रियो को कुछ कठिन निर्णय तुरन्त लेने होंगे, जैसे—सरकारी दफ्तरो मे भरे हुए अंग्रेजी टाइपराइटरो और कम्प्यूटरो को नीलाम कर, नये हिन्दी टाइपराइटरो की आपूर्ति कराना। न अग्रेजी टाईपराइटर होगा, न अग्रेजी टिप्पणिया लिखी जायगी और न अग्रेजी आदेश ही। केवल इसी एक आदेश से ८० प्रतिशत कार्य हिन्दी मे होने लगेगा। सरकार के सभी प्रस्ताव बजट, विवरण, टिप्पणिया, तकनिकी कार्य मूल रूप मे हिन्दी मे ही तैयार करने के आदेश प्रसारित किये जाये। वरना अफसरशाही तो इस तरह के आदेशो को कई बार असफल कर चुकी है।

—सम्पादक

महात्मा हसराज जन्मदिवस पर—

कुछ ऐसे भी जन होते हैं

—सत्यभूषण शान्त' वेदालकार

कुछ ऐसे भी जन होते है,
जिनको अपनी परवाह नही।

विपदाएँ टूट, आह नही
जिनके अन्तर को पीडा की
कोई पा सकता थाह नही।
चहें ओर व्यग्य के बाण चल,
पर मन्द कही उत्साह नही॥

मानवता के प्रहरी जागृत
कुछ ऐसे भी मन होते हैं।
कुछ ऐसे भी जन होने हैं॥

जो करते है सब का मगल
ज्यो बीज रचे पादप गल गल।
मानव सेवा जिनका व्रत है
पल पल देवत्व समाहित है॥
वह हसराज थे मूर्तिमान,
उनकी गाथा मै क्या गाऊँ?
अति धवल शुभ्र महिमा मण्डित,
हिमगिरि के कण मैं क्या पाऊँ?

जो ठान लिया कर दिखलाया,
कुछ ऐसे भी प्रण होते है
कुछ ऐसे भी जन होते हैं॥

जन मानस मान सरोवर मे,
जा हस समान विचरते थे।
नप त्याग के मूर्तरूप मानो,
रसना से सुधारस भरते थे॥
शिक्षा का कार्य कायाकल्प किया
वैदिक सुमार्ग को अपनाया।
निज सस्कृति भाषा की सुनीति
का था प्रसार कर दिखलाया।

जिसने निज भरी जवानी के
स्वर्णिम सपनो को तोड दिया।
सर्वस्व त्याग कर विद्याहित
वटुको से नाता जोड लिया।
उन हसराज को कौन नही,
वन्दन कर शीश नवायेगा?
उनकी गरिमा महानता का,
यश वसुधा पर ना गायेगा।

केवल वे आर्यसमाज नहो
हैं सभी ऋणी उनको जानो॥
उनकी शिक्षाओ उपदेशो को,
धारण करने की ठानो।

बलि जिनकी प्रतीक्षा करती है,
कुछ ऐसे भी क्षण होते हैं।
कुछ ऐसे भी जन होते हैं॥

—१२, मुनीरका विहार, नई दिल्ली-११००६७

सभी हिन्दी प्रदेश अंग्रेजी हटाने की घोषणा करें !

—लक्ष्मीकात वर्मा

उत्तर प्रदेश के मुख्य मत्री ने एक बार फिर बडी दृढ़ता के साथ प्रदेश के सार्वजनिक कामो में अग्रेजी के प्रयोग का विरोध किया है। शिक्षा के माध्यमो के विषय मे भी अग्रेजी के प्रयोग को समाप्त करने और अग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलो की निन्दा की है। इस से अग्रेजी समर्थको और अग्रेजी से जुडे निहित स्वार्थ वालो मे एक प्रकार की बौखलाहट आ गई है। कई अग्रेजी अखबारो मे खबरे ऐसी छपी है जैसे मुलायम सिह ने अग्रेजी प्रेमियो के खिलाफ कोई जग छेड दी है। जहा अग्रेजी अखबारो की यह शरारत जारी है वही पब्लिक स्कूलो के ईसाई समर्थको ने भी खतरे की घण्टी बजा दी है।

भाषा के इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर जब भी कुछ करने की कोशिश की गई है तब अग्रेजी प्रेमी और ईसाई धर्म के नाम पर देश मे गुलाम मानसिकता को निरन्तर जीवित रखने वाले लोग सामने आ जाते हैं। सविधान के मौलिक अधिकारो से लेकर धर्मनिरपेक्षता, अल्पसख्यको के अधिकार की दुहाई दी जाने लगती है। ईसाई मिशनरी स्कूलो के पादरी भी एकजुट हो जाते हैं और उनकी हा मे हा मिलाने वाले वे अग्रेजी के प्रेमी भी उनके साथ हो लेते हैं।

ईसाई सस्थाए अग्रेजी साम्राज्यवाद की पोषक

भारतीय सस्कृति की पहचान भारतीय भाषाओ मे है, क्योकि मनुष्य अपनी मातृभाषाओ मे ही सस्कारित होता है। विदेशी भाषा के माध्यम से वह अपनी पहचान कभी भी स्थापित नही कर पाएगा क्योकि उनकी मातृभाषा के साथ मिट्टी, जातीय स्मृति, क्षेत्र, कुल की परम्परा का गहरा सम्बन्ध होता है वही इन समस्त तत्त्वो के अभाव मे विदेशी भाषा देशी मानस से जुडने में असमर्थ होती है। इस दृष्टि मे चाहे ईसाई धर्म हो या साम्यवाद हो इस देश में कभी पनप नहीं सकते जब तक कि इस देश की मातृ भाषा और देश की मिट्टी से जुड कर पुन सस्कारित न हों। ऐसा नही है कि यह बात ईसाई धर्म के प्रचारक पादरी लोग जानते न हो। सम्पूर्ण स्थिति का व्यग्य यह है कि भारत में ईसाई धर्म साम्राज्यवाद के धर्म के रूप मे स्थापित हुआ था। ब्रिटिश साम्राज्य समाप्त होने के बाद भी ईसाई सस्थाओ से वह साम्राज्यवादी तत्त्व गया नही और आज भी ये सस्थाए ब्रिटिश साम्राज्य वाद के हितो के सवर्धन मे लगी हुई है। दुर्भाग्य की बात यह है कि हमारे देश के प्रशासक मात्र धर्म निरपेक्षता के नाम पर इनके कार्यकलापों मे हस्तक्षेप करने का साहस नही कर पाते।

अग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल पूर्व फोर्ट विलियम कालेज में स्थापित परम्पराओ का निर्वाह करते हैं। इन स्कूलो का सम्बन्ध न तो ईसाई धर्म से है और न ईसाई सस्कृति मे। ये केवल अग्रेज और अग्रेजी के हितो की रक्षा करते हैं। इन स्कूलो के सचालक भारतीय पादरी आज भी यह समझते हैं कि यह देश कभी न कभी फिर से अग्रेजो की छत्रछाया मे आएगा और यह तभी सम्भव होगा जब पूरा देश धीरे-धीरे करके सस्कारहीन होकर ईसाई धर्म और ईसाई धर्म के प्रभाव में आएगा। आज उन्होंने अपनी ऐसी स्थिति बना ली है कि देश के प्रशासन तक को यह साहस ही नही होता कि वे इन सस्थाओ को छू सकेगा। जब कभी किसी ने भी साहस किया धर्म निरपेक्षता और अल्पसख्यको के हितो के नाम पर ऐसा आन्दोलन खडा कर दिया कि कोई भी कारवाई इन सस्थाओ के विरुद्ध सम्भव नही हो पाई। आज यदि मुलायम सिंह यादव उत्तर प्रदेश मे हिन्दी लाना चाहते हैं तो इन पब्लिक स्कूलो के विरुद्ध सख्त कदम उठाने पडेंगे। बिना ऐसा किए हिन्दी को प्रतिष्ठित कर पाना असम्भव होगा।

लादी गई भाषा

पूरे देश में अग्रेजी जानने वालो की सख्या मुश्किल से एक प्रतिशत है। उस एक प्रतिशत में से मुश्किल से दस पाच व्यक्ति ऐसे होगे जिनको अग्रेजी की भाषा प्रकृति का ज्ञान होगा। इसे जानने वालो मे से कुछ ऐसे होंगे जिनको अग्रेजी प्रेमी कहा जा सकता हैं। लेकिन हमारे देश के अग्रेजी अखबार जब कभी भी भारतीय भाषाओ को प्रतिष्ठित करने का प्रश्न उठा है, अग्रेजी प्रेमियो की दुहाई देने लगते हैं और हमारी सरकारें अभी तक इन दुहाई देने वालो के षड्यन्त्रों के कारण भारतीय भाषाओं को उचित स्थान नही दे पाती। अंग्रेजी भाषा के समर्थको मे एक बहुत बडा वर्ग उन नौकरशाहों का है जिनकी रोजी-रोटी अग्रेजी से जुडी है। यही कारण है जब कभी भी भारतीय भाषाओ को उनका उचित स्थान दिलाने का आन्दोलन होता है तो ये तथाकथित अग्रेजी प्रेमी और नौकरशाह एकजुट होकर तरह-तरह की बाधाएं उपस्थित करते है। यदि ईसाई पादरी अल्पसख्यक होने की दुहाई देते हैं तो अग्रेजी प्रेमी विश्व मानवता की बात करने लगते हैं और नौकरशाह राष्ट्रीय एकता की दुहाई देने लगते हैं। आज आजादी के चालीस वर्ष बाद भी यह हालत चल रही है।

आज आवश्यकता है कि सख्ती के साथ हिन्दी के कार्यक्रम को कार्यान्वित किया जाए। डा० लोहिया का कहना था कि यदि सरकार चाहे तो अग्रेजी भाषा एक दिन में समूचे भारतवर्ष से निष्कासित की जा सकती है। उनके इस तर्क के पीछे केवल एक ही अवधारणा थी कि सरकार की ओर से जो भाषा सम्बन्धी आदेश हो उनका सख्ती के साथ कार्यान्वियन कराया जाए। जब कभी भी किसी कार्यक्रम को नहीं करना होता है तो उस पर केवल बहस की जाती है और बहस का इतना लम्बा सिलसिला बढाया जाता है कि इसमे कर्म पीछे पड जाता है और गलत प्रकार के सैद्धान्तिक विकार सामने आजाते है। यही स्थिति जवाहरलाल नेहरू ने सविधान बनाते समय पैदा की थी और १९६६ मे ससद मे जब अग्रेजी को हटाकर हिन्दी को, राष्ट्रीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने की बात होती थी तो निहित स्वार्थ वालो ने विवाद को आगे कर दिया था और कर्म को पीछे धकेल दिया था।

नतीजा यह हुआ कि १९६७ में सिद्धान्तों की बखिया उधेडते-उधेडते भारतीय भाषाओ की श्रेणी में अग्रेजी को रख दिया। क्षेत्रीय भाषा अग्रेजी मान ली गई इसलिए अब जब कभी भी कोई अग्रेजी हटाने की बात पर बहस शुरू करता है तो मेरे जसा आदमी भयभीत हो जाता है क्योकि यह अब सिद्धान्त बन गया है कि जिस काम को न करना हो उस पर बहस कीजिए, नही तो न कीजिए। मुलायम सिंह यादव को चाहिए कि अग्रेजी हटाने की बात पर बहस बन्द करें और हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के कार्य में ठोस कदम उठाए और उसकी अवहेलना करने वालो को दण्डित करे।

हिन्दी का दुर्भाग्य यह है कि जितनी भी हिन्दी की स्वयसेवी सस्थाए हैं उनमे से अधिकाश सरकारी अनुदान पर जीवित हैं। उनका कोई भी सम्बन्ध सावजनिक स्तर पर बोली जाने वाली हिन्दी भाषा से नही है। वे सरकारी अनुदान लेती हैं। हिन्दी के नाम पर पाखण्ड रूप में अग्रेजी का विरोध करती हैं पर कर्म के स्तर पर किसी भी प्रकार गतिशील नही हो पाती हैं। क्योकि विवशता के साथ उनका निहित स्वार्थ बना रहता है इसलिए उस पर किसी प्रकार की आच आने नही देती। ये सस्थाए केवल हिन्दी के समर्थन में लच्छेदार भाषण देती हैं और अग्रेजी का विरोध भी करती हैं तो केवल उसी सीमा तक जहा सरकार का विरोध न हो।

राष्ट्र भाषा परिषद्, राष्ट्र भाषा प्रचार सभा, नागरी प्रचारिणी सभा आदि ऐसी सस्थाए हैं जो हिन्दी के नाम पर रोजी-रोटी कमाती हैं पर हिन्दी के प्रसार और विकास के लिए अग्रेजी को अपना शत्रु नहा मानती। इसलिए जब कभी भी सरकार को जरूरत होती है तो वह इन सस्थाओ का इस्तेमाल कर लेती है। इसलिए मुलायमसिंह जैसे मुख्यमन्त्री यदि ईमानदारी से अग्रेजी को हटाना चाहते हैं तो उन्हें इन सस्थाओं से भी सावधान रहना होगा क्योंकि नैतिकता के छद्म में वे कब क्या कदम उठाएँगी-कहना मुश्किल है।

चालीस वर्षों मे भारत सरकार ने सरकारी नौकरियो के लिए अग्रेजी को अनिवार्य बनाकर उसका रुतबा बढ़ाया है। सारे देश में सेवा आयोग में भी आज भी

अंग्रेजी हटाने की घोषणा करें !

अंग्रेजी बनी हुई है। परीक्षार्थी के मन में हमेशा यह डर बना रहता है कि यदि उसे अंग्रेजी नहीं आएगी तो वह आगे प्रगति नहीं कर पाएगा। इसलिए परीक्षार्थी के मन से यह भय निकालने के लिए आवश्यक है कि सेवा आयोगों से पूर्णतया अंग्रेजी को निष्कासित कर दिया जाए। यदि मुलायम सिंह यादव वास्तव में उत्तर प्रदेश में हिन्दी लागू करना चाहते हैं तो उनका दूसरा ठोस कदम यह होना चाहिए कि वे प्रदेश के आयोगों में अंग्रेजी को पूर्णतया पूर्णतया निष्कासित करें।

कमलापति त्रिपाठी ने हिन्दी में काम करने के लिए न जाने कितने आदेश जारी किए थे। हजारों की संख्या में हिन्दी की टंकण मशीन खरीद कर कार्यालयों में भेजी गई थीं। पर ये सारी फाइलों में लिखत-पढ़त तक सीमित थी। शायद ही किसी मन्त्री ने किसी भी सरकारी फाइल पर अंग्रेजी के नोटिंग ड्राफ्टिंग पर आपत्ति की हो नतीजा यह था कि सरकारी आदेश इन कार्यालयों में कूड़ादान में फेंक दिए गए थे और सारे अधिकारी अंग्रेजी में काम काज करते रहे और यदि मुलायम सिंह यादव केवल आदेश देकर सन्तुष्ट हो जायेंगे तो उनके आदेशों की भी वही दुर्दशा होगी जो पिछले मुख्यमन्त्रियों के आदेशों की हुई होगी

वास्तविकता यह है कि उत्तर प्रदेश का जो भी मुख्यमन्त्री होता है वह पद भार ग्रहण करने के साथ ही बहुत सारी घोषणाएँ कर देता है। पर कालान्तर में अंग्रेजी के समर्थकों का ऐसा कुचक्र चलता है कि उनके सामने मुख्यमन्त्रियों की चल नहीं पाती और हर मुख्यमन्त्री इन षड्यन्त्रकारियों के सामने आत्म-समर्पण कर देता है। क्योंकि वे ऐसी समस्याएँ उभार देते हैं कि भाषाओं की समस्या गौण लगने लगती है।

अंग्रेजी हटेगी डंडे से -

अंग्रेजी हटाने के पूर्व अंग्रेजी के समर्थकों को पहचानना जरूरी है जिसमें बहुत सी विदेशी संस्थाएं छिपे रूप से काम करती हैं। ब्रिटेन की भाषा सम्बन्धी कई ऐसी संस्थाएं हैं जो अनेक रूपों में अंग्रेजी की वरीयता को स्थापित करने में लगी हुई हैं। बड़े बड़े शहरों में इनकी शाखाएं हैं। इनके पुस्तकालय हैं और अंग्रेजी में शिक्षा देने की सुविधाएं हैं। बहुत-सी अमेरिकी संस्थाएं हैं जो अनेक रूपों में अंग्रेजी भाषा के संरक्षण में लगी हुई हैं। १९६६ ६७ में भाषा आन्दोलन पर जितनी भी हिंसात्मक कार्रवाइयां हुई थीं इन्हीं की वजह से हुई थी। इसलिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री को चाहिए कि इन समस्याओं से निपटने की कुशल रणनीति बना लें। वैसे अकेले मुलायम सिंह यादव इस काम को करने में तब तक सफल नहीं होंगे जब तक पूरे हिन्दी भाषी राज्यों के मुख्यमन्त्री एक साथ मिल कर अपने प्रदेशों में हिन्दी लागू करने का निर्णय नहीं लेंगे।

१९७७ में अपनी कमजोरियों के कारण जनता पार्टी इस कार्यक्रम को करने में असमर्थ रही। सौभाग्यवश १९९० में पुनः ऐसी स्थिति आई है कि जब हिन्दी प्रदेशों के मुख्यमन्त्री संयुक्त रूप से इस दिशा में संगठित और निर्णायक कदम उठा सकें। यह तभी हो सकता है जब व्यक्तिगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर प्रशासनिक स्तर पर दण्ड विधान नहीं बनेगा और न्यायिक स्तर पर इन समस्याओं का निराकरण नहीं होगा। नीतियां भयभीत लोगों द्वारा नहीं निर्धारित की जा सकती और जहां तक भाषाओं का सवाल है अंग्रेजी इस देश में डण्डे के बल पर लागू की गई थी इसलिए इसे देश से समाप्त करने के लिए भी डण्डे का प्रयोग करना होगा।

दैनिक जनसत्ता के २-४-९० के अंक से साभार

आर्यसमाज नजफगढ़

आर्यसमाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर २७ मार्च को आर्य समाज नजफगढ़ नई दिल्ली में प्रातःकाल प्रभातफेरी निकाली गयी।

यज्ञोपरान्त सभा आयोजित की गयी, जिसमें डा० महेश विद्यालंकार स्वामी मनीषानन्द, श्री नारायणसिंह आदि के उपदेश और व्याख्यान हुए।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष पद पर सह व्यवसायाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश की तदर्थ नियुक्त की गयी। २७ मार्च १९९० से उन्होंने अपना कार्यभार सम्भाल लिया है।

महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों का पालन हो

महर्षि दयानन्द जी ने पूना प्रवचन के तीसरे 'धर्माधर्म' विषयक व्याख्यान में वेदशालायें खोलने, वेदाध्ययन कराने का सत्परामर्श दिया था। रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत) द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन ग्रन्थ में ऋषि के इन मन्तव्यों पर पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी ने जो सम्पादकीय टिप्पणी दी है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है जिसे उद्धृत किया जा रहा है—

> यही आदेश ऋषि दयानन्द ने अपने अनुयायियों को अन्यत्र भी बहुधा दिया है और अंग्रेजी फारसी की पाठशालायें खोलने को मना किया है (द्र० ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन पृ० ४० २५९ ५०१ ६०९ ६०५ ८८४ ७८१ आदि सं० ३) परन्तु आर्यसमाज ने ऋषि दयानन्द के इस महान् आवश्यक आदेश का उल्लंघन किया और कर रहा है। इसका फल आर्यसमाज के नाश के अतिरिक्त कुछ न होगा।

उक्त टिप्पणी सम्पादक की हार्दिक वेदना प्रकट करती है। विगत वर्षों में आर्यसमाज ने कई बड़े कार्यक्रम समारोह सम्मेलन आयोजित किए हैं। कहा एवं माना जाता है कि यह समारोह किये गये कार्यों की समीक्षा एवं भविष्य की योजना निर्मित करने के उद्देश्य से किये जाते हैं। इन समारोहों एवं सम्मेलनों में यह बात कभी प्रमुखता से दृष्टिगोचर नहीं हुई कि ऋषि के शिक्षा विषयक इन विचारों के प्रकाश में हमने कोई सार्थक निर्णय लिया हो। आज भी पत्र पत्रिकाओं में अगणित लेख आर्यसमाज के उत्थान को दृष्टिगत कर लिखे एवं प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु यह निर्णय सर्वथा अस्पर्श्य बना हुआ है।

आज आर्यसमाज में ऐसे विद्वान जो संस्कृत अथवा वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता हैं गिनती के हैं। प्रायः बड़े बड़े आर्य नेताओं उपदेशकों का संस्कृत का भी समुचित ज्ञान नहीं है। संस्कृत के पठन पाठन की समुचित व्यवस्था न होने के कारण ही आर्यसमाज का वैदिक एवं इतर साहित्य लोकप्रिय नहीं हो पा रहा है। आगे चलकर स्थिति और प्रतिकूल एवम् अप्रिय होगी। इस पृष्ठभूमि में उक्त सम्पादकीय मनोवेदना यह सन्देश देती है कि हम भावी सम्मेलनों/कार्यक्रमों में महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को वर्त्तमान में किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करें। जो जो कार्य महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुकूल नहीं हैं उन्हें सुधारा जाए अथवा बन्द कर दिया जाए। सभी आर्य बन्धुओं का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से यह लेख प्रस्तुत है।

—**मनमोहन कुमार आर्य**
१९६ ब्लाक II चुक्खूवाला,
देहरादून २४८००१ (उ० प्र०)

(पृष्ठ १ का शेष)

कहा कि गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविन्द सिंह ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही अपना बलिदान दिया, अपने बच्चों तक को कुर्बान कर दिया। उनकी यह कुर्बानी कभी भी भुलाई नहीं जा सकती है।

उन्होंने आगे कहा कि यदि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपना धर्म सुधार आंदोलन न चलाया होता तो सनातन धर्म न रहता। इसी प्रकार सिख गुरुओं ने हिन्दू धर्म की रक्षा न की होती तो हिन्दू धर्म भी न बच पाता। श्री गोस्वामी ने कहा कि सनातन धर्म की एक भुजा सिख है तो दूसरी हिन्दू, इन्हें एक दूसरे से कभी अलग नहीं किया जा सकता।

संस्कृति की रक्षा के लिए संस्कृत आवश्यक

पंडित विमल देव भारद्वाज ने अपने देश और हिन्दू धर्म की संस्कृति की रक्षा के लिए संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया जबकि श्री प्रेम चंद गुप्ता ने साम्प्रदायिक सद्भाव बनाने के लिए सभी हिन्दू धर्मावलम्बियों को एक जुट होकर कार्य करने का सुझाव दिया।

प्रचार वाहन द्वारा वेद पचार

'सर्वेषा दानाना ब्रह्मदान विशिष्यते' दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली के कोने कोने मे वेद प्रचार धूमधाम से किया जा रहा है। श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के नेतृत्व मे महोपदेशक, भजनोपदेशक एव ढोलक वादक सप्ताह में तीन दिन बुधवार, बृहस्पतिवार एव शुक्रवार को नियमित रूप से दोपहर १ बजे से दो बजे तक भोजनावकाश के समय बोट क्लब, कृषि भवन, रामकृष्णपुरम, आई० टी० ओ०, निजामुद्दीन एव पुराना सचिवालय आदि स्थानो पर वेद प्रचार करते है। सभा के प्रचार वाहन मे दरियां, बाजा, ढोलक, लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर तथा वैदिक साहित्य विक्रय एव नि शुल्क वितरण की समुचित व्यवस्था है।

शुक्रवार एव शनिवार रात्रि मे पुनर्वास कालोनियो, झुग्गी झोपडी कालोनियो तथा ग्रामीण क्षेत्रों में वेद प्रचार किया जाता है। आर्यजनों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्रो में वेद प्रचार कराने के लिए सभा कार्यालय मे सम्पर्क करें।

—रामशरणदास, आर्य मन्त्री

ग्राम नाहरी में कुरीति-निवारण सम्मेलन

दिल्ली प्रान्तीय आय महिला सभा के तत्वावधान में गत ३ मार्च को ग्राम नाहरी, जिला सोनीपत (हरियाणा) मे कुरीति-निवारण सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली तथा आस-पास के ग्रामों मे भारी सख्या मे आर्य देवियां उपस्थित थी। कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर, दिल्ली की अध्यापिकाएँ तथा छात्राएँ भी भारी सख्या में पहुँची।

समारोह का आरम्भ प्रात-कालीन भव्य शोभा यात्रा के साथ हुआ, जिसका नेतृत्व श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, श्रीमती कृष्णा चड्ढा आदि विदुषी महिलाओ ने किया। सम्मेलन मे श्रीमती सरला महता, श्रीमती प्रेमशील महेन्द्रु, श्रीमती प्रकाश आर्या आदि ने भी इस अवसर पर विशेष उल्लेख कर अन्ध-विश्वास मिटाने, कुरीतियो को छोडने तथा घर घर मे वैदिक-धर्म का प्रचार फैलाने का आह्वान किया।

दीवानचन्द चिकित्सालय औचन्दी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रीय जनता की सेवा के लिए औचन्दी नामक ग्राम में दीवानचन्द गोकुल चन्द स्मारक आर्य चिकित्सालय का संचालन किया जा रहा है।

इस वर्ष चिकित्सालय में तीन नये अन्त कक्ष तथा एक प्रयोगशाला का निर्माण किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल २३ मार्च को चिकित्सालय में कार्य की प्रगति को देखने के लिए गए। चिकित्सालय के प्रभारी डा० हसराज ने भावी योजनाओ का परिचय दिया।

गुरुकुल कांगड़ी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल १३ मार्च १९९० को प्रात आश्रमवासियो के साथ यज्ञ मे सम्मिलित हुए। उन्होंने ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि एक बार जब रेम्जे मेक्डानेल्ड गुरुकुल में पधारे थे तो उन्होंने पूछा था कि आप ब्रह्मचारियों को नंगे पैर क्यों रखते हैं। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था कि ताकि वे कांटो के बीच भी अपनी राह निकालना सीख जाए। उन्होंने ब्रह्मचारियों से कहा कि यद्यपि आज यहा का आश्रम जीवन उतना कठोर नहीं है, पर जीवन मे सफलता के लिए प्रारम्भिक काल में कठिनाइयो का सामना करना ही श्रेयस्कर है।

उन्होने गुरुकुल आश्रम में घूम कर वहा की व्यवस्था भी देखी।

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ का प्रथम वार्षिकोत्सव २३, २४, २५ माच को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। इस समारोह में आयोजित वेदसम्मेलन मे श्री गजानन्द आर्य मन्त्री परोपकारिणी सभा, श्री सत्यानन्द आर्य, मन्त्री अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, प० यशपाल सुधाशु, आर्यसमाज दीवान हाल ने अपने विचार व्यक्त किए। आर्य वीर दल सम्मेलन में प० बाल दिवाकर हस तथा लाला वेदप्रकाश आर्य और किसान सम्मेलनों में श्री स्वामी दिव्यानन्द जी तीर्थ तथा धर्मरक्षा सम्मेलन में श्री सत्यप्रकाश जी ने अपने विचार व्यक्त किए। गुरुकुल के सचालक आचार्य धर्मपाल उत्साहपूर्वक वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सलग्न हैं।

शान्ति यज्ञ—

पं० पुरुषोत्तमदत्त शर्मा

प० पुरुषोत्तमदत्त शर्मा की स्मृति मे २३ मार्च १९९० को उनके निवास स्थान पर गणेश नगर गली न० २ शकरपुर में शान्ति यज्ञ हुआ। शोकसभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, आर्यसमाज दीवानहाल, कृष्णनगर, शकरपुर, निर्माण विहार तथा अन्य अनेक आर्यसमाजो के कार्यकर्ताओ ने उन्हें श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर पूर्व सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री हरिकिशनलाल भगत भी आए। प० पुरुषोत्तम जी शर्मा आर्यसमाज दीवानहाल के पूर्व मन्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करता है।

सामवेद यज्ञ एवं काव्य सन्ध्या

आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के महामन्त्री श्री सत्यानन्द आर्य के निवास स्थान पर २६ मार्च से २८ मार्च १९९० तक सामवेद यज्ञ का आयोजन प० यशपाल सुधांशु के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। २८ मार्च को श्री लालमन आर्य की स्मृति मे एक काव्य सन्ध्या का भी आयोजन किया गया। श्री सुरेन्द्र शर्मा, श्री हरिओम पंवार, श्री राकेश तिवारी, श्री सुरेन्द्र सार्थक, श्री ओम प्रकाश आदित्य तथा श्री जैमिनी हरियाणवी ने सशक्त कविताएं पढ़ी। श्री अरुण जैमिनी ने काव्य सन्ध्या का सयोजन किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने इस सुन्दर आयोजन तथा नवसदन 'सुक्षिति' के निर्माण पर उन्हे शुभकामनाए दी।

पुस्तक समीक्षा—

गृहस्थ जीवन

ससार मे दो तरह के जीवधारी हैं। एक है पशु पक्षी, जलचर नभचर और दूसरे हैं मनुष्य। इनमे पशुपक्षी भागयानि के प्राणी है। मनुष्य भोगयोनि और कर्मयोनि दोनो का प्राणी है। जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है पर फल भागने मे परतन्त्र है। मनुष्य भोग भोगता है साथ ही अपने पुरुषार्थ के द्वारा प्राप्तव्य के लिए प्रयत्नशील भी रहता है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने एक कविता मे लिखा था—भगवान फूल म उस दी गई सुगन्ध की रग की माग करता है। कोकिल म वह कुहू कु की अपक्षा करता है। वृक्ष से वह फल की आशा करता है पर ज मी म वह ज श करता है कि वह दुख से सुख प्राप्त करे अन्धकार स प्रकाश प्राप्त कर अस य स सत्य प्राप्त करे। भगवान मानव के लिए कठोर क्या है ? मानव के चारो ओर अन्धकार असत्य और मृत्यु है और परम मा उसमे अपक्षा करता है कि वह प्रकाश सत्य और अमरत्व को प्राप्त करे। इन्हे प्राप्त करन के लिए उसे कितना पुरुषार्थ करना पडगा ? यही इस पुस्तक मे बताया गया है। मनुष्यो मे भी गृहस्थ की जिम्मेदारी अधिक है। ब्रह्मचारी वानप्रस्थी सन्यासी उसी पर आश्रित है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे इस विचारणा का सुष्ठु प्रतिपादन किया है। सुखी गृहस्थाश्रम के लिए माता पिता का सामञ्जस्य समन्वय उनका स्वास्थ्य उनके कर्त्तव्य इस पुस्तक मे बताए गए है। परिवार को सुखी बनाने के लिए ये ग्यारह साधन है उत्तम स्वास्थ्य ज्ञानवान वरण धैर्य प्रसन्नता चरित्र निर्माण कलात्मकता कार्य मे रुचि मय पालन महानुभूति शक्ति सम्पदा उच्चादर्श। घर की देखभाल मे पले व्यक्ति ही सब से सुखी इन्सान है। इस पुस्तक का कलेवर बहुत ही सुन्दर है।

गृहस्थ जीवन —प० सुरेशचन्द्र वेदालकार
आर्यप्रकाशन ८१४ कुण्डवालान अजमेरी गेट दिल्ली ६
पृष्ठ ४८ मूल्य ३ ००

—मूलचन्द सम्पादक

पुस्तक समीक्षा—

त्यागवाद

भारत की सब से बडी विशेषता का परिचय देना हो तो उसे आध्यात्म और धर्म का देश कहा जा सकता है। आज के विश्व मे विज्ञान ब्रह्माण्ड के विनाश का साधन बन सकता है। ऐसी स्थिति मे भारत की संस्कृति धर्म और आध्यात्म ही विश्व को जीवन का सन्देश दे सकते है।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने इस छोटी सी पुस्तक मे वेदोपनिषद मे निहित इसी जीवन सन्देश को व्याख्यायित किया है। इस पुस्तक को पढने मे सभी पाठक को आध्यात्मिक जीवन के पाच मूल तत्त्वो—

ईश्वर की सत्ता और उसकी व्यापकता मे विश्वास ससार की क्षणभगुरता का ज्ञान त्यागपूर्वक भोग निष्काम कर्म और आत्मा के प्रतिकूल कार्य न करना—की जानकारी मिलेगी। पुस्तक मे गभीर विषय का विवेचन सरल और सुबोध भाषा शैली मे किया गया है।

[त्यागवाद स्वामी विद्यानन्द सरस्वती अनीता प्रकाशन हलवाई हट्टा पानीपत हरियाणा पृष्ठ ११२ मूल्य १५ ००]

—मूलचन्द गुप्त सम्पादक

R. N. No 32387/77 Post in N D P.S.O on 12, 13-4-90 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डो० (सो०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

वेद महोत्सव सम्पन्न

वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित प्रथम "वेद-महोत्सव" ५ मार्च मे १० मार्च १९९० तक रामलीला मैदान नई दिल्ली मे समारोहपूर्वक मनाया गया।

प्रतिदिन प्रात तथा साय चतुर्वेद द्वादश दैवतेष्टि महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ का ब्रह्मत्व महात्मा देवेश भिक्षु तथा सचालन प० आशुराम आर्य ने किया।

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समारोह का उद्घाटन और समापन किया वहा प्रतिदिन यज्ञ में तथा मध्याह्न के समय वेद-सगोष्ठियो में भी भाग लेते रहे।

वेद सगोष्ठियो मे श्रीस्वामी विद्यानन्द सरस्वती, प० युधिष्ठिर मीमांसक, डा० रघुवीर वेदालंकार, डा० कृष्णलाल, डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० वीरेन्द्र कुमार वर्मा, डा० सुधीर कुमार गुप्त, डा० सत्यपाल नारम डा० जियालाल काम्बोज, पण्डित अभिविनय भारती ने अपने-अपने शोधपत्र तथा विशेष व्याख्यान दिये।

वेद महोत्सव के सयोजक डा० रूपकिशोर शास्त्री के सयोजन मे सभी गोष्ठियां अत्यन्त प्रभावशाली तथा सफल रहीं।

वैदिक साधनाश्रम तपोवन के लिए—

विशेष बस यात्रा

वैदिक साधनाश्रम, तपोवन देहरादून के उपलक्ष्य में एक विशेष बस आर्यसमाज कृष्णानगर, दिल्ली से २४ अप्रैल को रात्रि १० बजे रवाना होगी।

हरिद्वार तथा ऋषिकेश में भ्रमण के पश्चात् २६ अप्रैल को सायकाल तपोवन पहुचेंगे। उत्सव के पश्चात् २४ अप्रैल को मध्याह्न २ बजे चलकर रात्रि को ८ बजे दिल्ली वापस आ जायेंगे।

प्रति सवारी किराया १२५ रु० रखा गया है। सीट सुरक्षित करवाने के लिए श्री डा० जगन्नाथ सरीन एफ १।१७, कृष्णनगर दिल्ली (दूरभाष-२२१३८४०) पर सम्पर्क करे।

वार्षिकोत्सव—

आर्यसमाज पालम

आर्यसमाज पालम गाव का वार्षिकोत्सव १८ मार्च १९९० को आयोजित किया गया। इस अवसर पर डा० सुरेन्द्र प्रकाश, श्री बैकुण्ठलाल शर्मा, श्री क्षेत्रपाल आर्य, श्री देवशर्मा, श्रीमती कृष्णा शर्मा, श्रीमती जनक भाटिया, श्री वीरभान नारंग तथा अन्य अनेक महानुभावों ने आर्य जनता का मार्गदर्शन किया। श्री उदय श्रेष्ठ ने समारोह का सचालन किया।

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस, गली न० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष 13. अंक 26 रविवार 22 अप्रैल 1990 वैशाख सम्वत 2047 विक्रमी दयानन्दाब्द १ ५ सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौं० १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

दिल्ली में बमों के धमाकों, निरपराधों की मौतों और जगह-जगह पर अग्निकांडों से आतंक व्याप्त

अप्रैल मास जहां भारतीयों के लिए प्रेरणा सुखदायी हो सकता है और सौहार्द के वातावरण का होना चाहिए था क्योंकि इन्हीं दिनों देशवासियों ने भगवान राम का जन्म दिवस मनाया महावीर जयन्ती मनाई, डा0 अम्बेडकर की जन्मशती मनाई बैसाखी का त्योहार मनाया और जलियां वाला बाग काण्ड को श्रद्धा से याद किया । परन्तु इस महान देश की विशाल राजधानी दिल्ली बमों के धमाकों से दहलती रही । यहां एक समय में दो दो पुलिस थानों में शक्तिशाली बम विस्फोट हुए । नागरिकों को ले जाती हुई बस में बम फटा जिसमें पचास से अधिक स्त्री पुरुष और बच्चे मरे और अनेक घायल बताये गये । धमाकों की यह गूंज अभी रुकी नहीं थी कि केन्द्रीय सरकार का एक अति महत्वपूर्ण भवन विज्ञान भवन जो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों के लिए 1956 में बनाया गया था जलकर ढेर हो गया यही नहीं दिल्ली के प्रमुख सदर बाजार से लगे गांधी मार्केट की सैकड़ो दुकानें जलकर राख बन गई । उधर आदर्श नगर में एक हजार से भी अधिक गरीब लोगों की झुग्गियां राख का ढेर बन गई । ये सभी अग्निकाण्ड एक ही दिन में हुए । विज्ञान भवन में आग के समय देश के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और गुप्तचर अधिकारियों की बैठक चल रही थी सन्तोष की बात है कि ईश कृपासे सभी सकुशल बच गये

दिल्लीमें हुए इन भीषण बम और अग्निकाण्डों से जहां अनेकों अमूल्य जाने गई और करोड़ो की सम्पत्ति का नुकसान हुआ वहां आम नागरिक आतंकित है और सरकार की विफलता पर बेचैनी महसूस कर रहा है

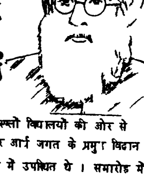
दिल्ली के इन भीषण काण्डों के साथ साथ देश भर में हुए जगह जगह बम काण्डों बड़े बड़े भवनों होटलों और चलती रेल गाड़ियों में हुए अग्निकाण्डों से भी देश का प्रबुद्ध नागरिक सरकार की ओर निहार निहारकर देख रहा है कि वह खोखले आदर्शवाद के नारों की जगह कुछ ठोस कदम उठायें ताकि जिससे देश की एकता और अखण्डता बनी रहे

महात्मा हंसराज दिवस सम्पन्न

आर्य समाज के महान त्यागी तपस्वी तथा शिक्षा हेतु समस्त जीवन समर्पित करने वाले महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस दिनांक 15 अप्रैल को स्थानीय तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती की अध्यक्षता में मनाया गया ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे प्रधान मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी ने कहा कि देश में समान शिक्षा प्रणाली होनी चाहिए । लेकिन इससे भी पहले यह आवश्यक है कि सामाजिक और आर्थिक असमानता दूर की जाये । उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था केवल डिग्री और डिप्लोमा धारकों की संख्या बढ़ा रही है । उन्होंने दुखी हृदय से कहा कि वर्तमान शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन बनकर रह गई है जबकि अतीत में इसका उद्देश्य ज्ञानार्जन था । प्रधानमंत्री जी ने शिक्षकों को विशेष रूप से याद दिलाया कि वे अपनी गतिविधियों और चरित्र की ओर विशेष ध्यान देवें क्योंकि शिक्षक की गतिविधियों का आकलन करके ही छात्र अपने चरित्र का निर्माण करता है ।

जब तक यहाँ बुराइयाँ है मूर्ति पूजा है, बाल विवाह है, विधवाओं का क्रन्दन है, आर्यसमाज की आवश्यकता है : हंसराज



आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और दयानन्द एंग्लो विद्यालयों की ओर से आयोजित महात्मा हंसराज के जन्म दिवस पर आर्य जगत के प्रमुख विद्वान कार्यकर्ता और विद्यालयों के बच्चे भारी संख्या में उपस्थित थे । समारोह में अनेक आर्य विद्वानों ने महात्मा हंसराज प्रेरणास्पद जीवन के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करते हुए उनके पद चिन्हों पर राष्ट्र को वैदिक मान्यताओं के अनुरूप ढालने का आह्वान किया ।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

धर्ममूर्ति महात्मा हंसराज

प्रसिद्ध हिन्दी लेखक पूज्य पं0 सन्त राम जी बी0ए0 पुरानी बसी (होशियारपुर) ने आर्य ज्योति" के 12-2-61 के ऋषि बोध अंक में सच्चा ऋषि बोध उत्सव" शीर्षक लेख द्वारा निम्न-लिखित शब्दों में धर्म का वास्तविक स्वरूप दिखा कर कड़वे सत्य का प्रकाश कर दिया- सामाजिक संबंधों को सुखद बनाने वाले नियमों का ही नाम धर्म है। स्वर्ग, नरक, देवलोक, पितृलोक, परमात्मा काला है या पीला, लम्बा है या चौड़ा, आत्मा जागता है या सोता ऐसी बातें संसार के व्यवहार को सुखद बनाने में कुछ अधिक सहायता नहीं देतीं।

उपर्युक्त शब्दों में वर्णित वर्तमान युग के मानव धर्म तत्व को स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी ने पहिचाना था। इसलिए देश, जाति, धर्म की सेवा के लिए वह आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए और सब कुछ उस पर न्योछावर कर दिया। महात्मा जी ने विद्यार्थी जीवन में आर्यसमाज के लिए जितना कार्य किया उतना एक लग्न वाला आर्यसमाजी समस्त जीवन में नहीं कर सकता। क्या आर्यसमाज के प्रचार के लिए Regenerator of Arya Vart द्वारा सहायक सम्पादक स्वर्ण धाराप्रवाह और प्रगतिशील विचार देकर देश के शिक्षित नवयुवकों को आकर्षित करना साधारण काम था। कितना स्वाध्याय उन्हें करना पड़ा होगा

लेखक के शीर्षक में महात्मा जी के नाम से पहले "धर्म मूर्ति" विशेषण के प्रयोग का आशय है उनके जीवन में मानव धर्मशास्त्र मनुस्मृति में बताये गये धर्म के दस लक्षण ओत-प्रोत थे। धर्म के पहिले लक्षण "धृति" का उदाहरण आधुनिक युग में उनसे अच्छा मिलना असम्भव सा दीखता है। धैर्य की कसौटी पर वह पूरे उतरे। पाठक उनकी विपत्तियों का वर्णन पढ़कर रोमांचित हो जाएंगे। परन्तु ईश्वर भक्त महात्मा जी ने उन सब संकटों का ऐसे डटकर सामना किया मानो कुछ हुआ ही नहीं। वे समुद्र की भांति गम्भीर और शान्त थे।

सन् 1914 के आरम्भ में महात्मा जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री बलराज को राजनैतिक अपराध में पकड़ लिया गया और कई मास बाद उन पर दिल्ली में अभियोग चलाया गया। श्री बलराज जी की माता उनके पकड़े जाने के थोड़े दिन के अनन्तर ही रोग ग्रस्त हो गयी थी। मृत्यु शैया पर तड़पती हुई माता के अपने प्यारे पुत्र को मिलने की उत्कृष्ट इच्छा प्रकट करने का चित्र एक कवि ने निम्नलिखित शब्दों में खींचा था।"

सह हो जाए किसी
सूरत निकलना जानका।
झूठ ही कोई कह दे
काश अब तो आए हैं।।

महात्मा जी की धर्मपत्नी (वास्तविक अर्थों में अर्धांगिनी) ने पुत्र वियोग में प्राण त्याग दिये। श्री बलराज को पहले आजीवन कारावास (काला पानी) और फिर अपील पर 7 वर्ष की कैद हुई। भाई मुलकराज पर आर्थिक संकट आ पड़ा और कनिष्ठ पुत्र निमोनिया द्वारा ग्रस्त हो गया। इन सभी मुसीबतों का सहन करना लाला हंसराज जी जैसे धीर, वीर उदात्त महापुरुष का ही काम था।

संस्कृत के एक कवि का वचन है-

उदेति सविता ताम्रस्ताम्रेवास्तमेति वा।
सम्पत्ती च विपत्ती च महतामेकरूपता।।

अर्थ- सूर्य उदय होते समय लाल और अस्त के समय भी भी लाल होता है वैसे ही सम्पत्ति और विपत्ति में महान पुरुष एक समान रहते हैं। सूर्य के दृष्टान्त के अनुसार महात्मा जी सुख दुःख में एक रूप होने के कारण भी महान आत्मा थे। उनके अनुपम धैर्य को देखकर उस दिव्य स्वरूप को कतिपय पत्रों ने "जीवित हरिश्चन्द्र" लिखा था।

इस लघु लेख में उस देवता के किस किस गुण का उल्लेख किया जाये। वह गुणों के भण्डार थे। उनका जीवन यज्ञमय था। एक एक क्षण अनाथों, विधवाओं, अकाल पीड़ितों, आपत्ति ग्रस्तों और धनहीन विद्यार्थियों की सेवार्थ अर्पण था। मेरा यह दृढ़ मत है कि आर्यसमाज से महात्मा हंसराज को पृथक कर देने से आर्यसमाज की स्थिति रघुनाथ के बिना रघुवंश के समान हो जाती है।

महात्मा जी की महानता का अनुमान पाठक इससे लगा सकते हैं कि उन्होंने अपने विद्यार्थी काल में मुख्याध्यापक ईसाई के आर्य संस्कृति व वैदिक सभ्यता पर मिथ्या दोषारोपण के उत्तर में "कलित हिन्द" के प्रमाण द्वारा उसे निराधार सिद्ध कर प्रधान शिक्षक को निरुत्तर कर दिया। फलस्वरूप वह हैड-मास्टर के कोप भाजन बनकर स्कूल से बहिष्कृत किये गए। ऐसे ही धर्माभिमानियों के संबंध में भर्तृहरि विरचित नीतिशतक का 18वाँ श्लोक निम्न प्रकार है-

अम्भोजिनीवन विलास निवास मेव। हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता।। न त्वस्य दुग्ध जल भेद विधौ प्रसिद्धां वैदग्ध्य कीर्तिमपहर्तु मसौ समर्थः।।18

अर्थ- विधाता अत्यन्त क्रुद्ध होकर हंस का कमल बन निवास और विलास नष्ट कर सकता है परन्तु दूध पानी को पृथक पृथक करने के चातुर्य के यश को हरने की शक्ति उसमें भी नहीं। भाव यह है कि महाजन संकटों के भय से कर्तव्यच्युत नहीं होते।

महात्मा मुन्शीराम जी के विरोधियों की भांति महात्मा हंसराज जी के प्रतिपक्षियों की संख्या भी पर्याप्त थी पर जहाँ महात्मा मुन्शीराम जी पत्रों द्वारा आक्षेपों का उत्तर देते और लघु पुस्तिकाओं के अतिरिक्त उन्हें "दुःखी दिल की पुरदर्द दास्तां" एक पोथा प्रकाशित करना पड़ा, वहां महात्मा हंसराज जी ने कड़ी से कड़ी आलोचनाओं की परवाह नहीं की। विरोध का नोटिस लेना तो एक ओर रहा उन्होंने एक बार प्रिंसिपल दीवानचंद जी एम0ए0 को कहा था कि मैं अपने आलोचकों को यह कहने का अवसर नहीं देना चाहता कि मैं उनके लेखों को पढ़ता हूं। है कोई ऐसा धैर्य मूर्ति [illegible] →

मुस्लिम तुष्टिकरण का एक और नमूना

राष्ट्रीय स्मारकों में नमाज़

भारतवर्ष में हजारों मंदिर, किले और अन्य भव्य भवनों की तरह अनेकों मस्जिदें और मकबरे भी हैं, जो भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्मारक घोषित किये हुए हैं, और इनकी देखभाल सरकार का पुरातत्व विभाग करता है। ऐसे स्थानों पर किसी भी प्रकार के धार्मिक कृत्यों पर पूर्ण प्रतिबन्ध है।

कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली के कुछ मुस्लिम संगठनों ने सफदरजंग हवाई अड्डे के पास बने मकबरे (जो राष्ट्रीय स्मारक है) में नमाज पढ़ने का आन्दोलन किया था। परन्तु केन्द्रीय सरकार उस आन्दोलन के आगे नहीं झुकी थी। अब जबकि दिल्ली या अन्य किसी प्रदेश से ऐसी कोई मांग भी नहीं उठायी गयी, अचानक ही हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार ने रमजान के अवसर पर ऐसी सभी मस्जिदों। मकबरों को नमाज के लिये खोल दिया है। ऐसी स्थिति में, राष्ट्र का विचारशील नागरिक यह सोचने पर मजबूर हुआ है, कि ये आदेश दिल्ली के इमाम श्री अब्दुल्ला बुखारी को प्रसन्न करने के लिये ही दिये गये हैं। इस निर्णय से जहां इन स्मारकों की सुरक्षा पर आंच आ सकती है, वहां उनके रखरखाव पर और अधिक धन खर्च हुआ करेगा।

इससे पूर्व माननीय प्रधान मन्त्री जी दिल्ली की जामा मस्जिद (जो राष्ट्रीय स्मारक घोषित नहीं है) की सुन्दरता बनाये रखने के लिये पचास लाख रूपयों के अनुदान की घोषणा कर, अपनी धर्म निरपेक्षता का प्रमाण दे चुके हैं।

देश का सामान्य नागरिक यह जानना चाहता है कि क्या सरकार को इस प्रकार के धर्मस्थानों, जो राष्ट्रीय स्मारक घोषित न किये गये हों, पर इतनी बड़ी राशि व्यय करने का नैतिक अधिकार है? और यदि है? तो फिर क्या यह धर्मनिरपेक्ष सरकार करोड़ों हिन्दुओं के आराध्य भगवान राम का मंदिर अयोध्या में अपने अनुदान से बनवायेगी और फिर इतना ही क्यों? सभी मत-मतान्तरों के धर्म-स्थलों की सुरक्षा और देखभाल का व्यय भी सरकार ही वहन करेगी-क्या यह सब सरकार के लिये सम्भव होगा? यदि नहीं? तब क्यों जनता के पैसों से यह घिनौनी तुष्टिकरण की नीति अपनाई जा रही है।

यदि सरकार इस प्रकार की साम्प्रदायिक मांगों के सामने झुकती रही, तो सारे देश में साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न हो सकता है और उसके लिये सरकार की जवाबदेही होगी।

ओ३म् शं नः सूर्य उरूचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ।।8।।
ऋ07/37/8।।

दिशाएं चमकाओ

—देवनारायण भारद्वाज

हे सूर्य ताप कुछ न्यून करो,
अति शीत ताप से शमन करो।
जिससे कल्याण हमारा हो,
हे सूर्य वही सन्तुलन करो ।।
हे सूर्य उदय तम हो जाओ,
जग के धन वैभव दिखलाओ
इस जग के हों व्यवहार सिद्ध
वे सभी दिशायें चमकाओ ।
देकर नयनों में ज्योति जतन,
सुख उन्नति का आकलन करो।
जिससे कल्याण हमारा हो,
हे सूर्य वही सन्तुलन करो ।।
सब पर्वत भी सुखकारी हों,
इनसे दृढ़तायें भारी हों
बहकर आयें रस सरितायें,
सुखकारी जल संचारी हों।
हो बाँध पास या हो प्रवास,
जल मंगलमय संकलन करो।
जिससे कल्याण हमारा हो,
हे सूर्य वही सन्तुलन करो ।।
सूरज ही दिशा बताता है,
सब जगत वस्तु दिखलाता है
पर्वत का बर्फ गला करके
ये नदियों में जल लाता है।
जल खींच रश्मि से सागर का,
इस धरती पर आगमन करो ।
जिससे कल्याण हमारा हो,
हे सूर्य वही सन्तुलन करो ।।

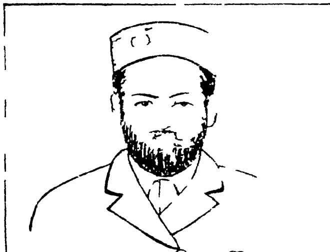
जगन्नाथ निवास, रैदोपुर, नई बस्ती,
आजमगढ़ (3050)

पृष्ठ 2 से

काल में। धन्य थे वह उदारमूर्ति जिन्होंने गुरुकुल छोड़ने के पूर्व महात्मा मुन्शीराम जी के गुरुकुल में पधारने के निमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार कर अपूर्व सरलता का परिचय दिया।

स्व0 स्वामी सर्वदानन्द जी से अनेक आर्यों ने शिकायत की थी कि महात्मा हंसराज जी ने — संन्यासी न बनकर आश्रम मर्यादा का उल्लंघन किया है। उनका यह उत्तर ध्यान देने योग्य है कि भगवां वेश धारण करके ही तो परिव्राजक नहीं बनता। यह शतप्रतिशत तथ्य है कि महात्मा जी का जीवन निष्काम ऋषि का सा था। मैं तो यह निःसंकोच कहने को तैयार हूं कि आर्यसमाज और अन्य संस्थाओं को त्याग की शिक्षा महात्मा जी ने ही दी। उन्होंने ही भारतीयों में साहस, उत्साह, बल और आत्म-विश्वास पैदा किया। लाहौर में सनातन धर्म कालेज स्थापित करने के उद्देश्य से बुलाई गई सभा में स्व0 महाराजा सर प्रताप सिंह जम्मू व कश्मीर ने महात्मा जी को सम्बोधित कर कहा था हंसराज जी। "एक हंसराज इनको भी दे दो "।

अद्भुत प्रतिभावान् पं० गुरुदत्त विद्यार्थी



पं० गुरुदत्त विद्या...

साहित्य ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित किया ...

... पूर्ण कार्यों ...

सम्पादक की टिप्पणी

पिछले दो माह फरवरी तथा मार्च 199? मे आर्य सन्देश अपने सभी साप्ताहिक ... के साथ साथ तीन विशेषांक ऋषि बोधांक (25 फरवरी), पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी स्मृति अंक (18 मार्च) तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस - समग्र क्रान्ति अंक (25 मार्च) आर्य जगत् को भेंट कर चुका है। सभी विशेषांकों का सार्वजनिक समारोहों मे वैदिक विद्वानों/नेताओं द्वारा विमोचन भी हुआ।

प्रसन्नता की बात है कि आर्य जगत् मे इन सभी विशेषांकों का भारी स्वागत हुआ। जहां देशभर से सैकड़ों प्रशंसा के पत्र मिले, वहां दिल्ली के आर्य बन्धुओं, विद्वानों और नेताओं ने दूरभाष के माध्यम से अथवा व्यक्तिगत रूप से मिलकर अपनी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। हम सभी के हृदय से आभारी है और विश्वास दिलाते है, कि भविष्य मे प्रकाशित होने वाले विशेषांक भी आपको पसंद आयेंगे।

आर्य सन्देश के विशेषांकों की सफलता का सम्पूर्ण श्रेय एकमात्र उन वैदिक-विद्वानों को जाता है- जो सन्तों की भांति निःस्वार्थ भाव से हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर, अपने शोधपूर्ण लेख और काव्य रचनायें भेज रहे हैं। हम सभी के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं।

3- अंक बहुत ही सुसज्जित, आकर्षक व संग्रहणीय है। आपके सभी अंक ऐतिहासिक घटनाओं से पूरित होते हैं। बधाई स्वीकार करें।

—देवीदास, पा. भालदार, विद्या-
वाचस्पति, आर्य ग्रंथालय,
तालेपुर, परतवाड़ा (अमरावती)

... प्राणों से ...

... गुरुदत्त ... के प्रमुख ...

... आयु के सभी विद्यार्थी ...

... जन समाज की आशा बनाकर ...

... विचार स्वीकार नहीं ...

... एवं आर्ष ग्रन्थों का अनुरागी ...

... 6 वर्ष का ... पीड़ित ...

... ने प्रवचनों ... आदि के माध्यम से वैदिक ...

... पंडित जी का सृजित साहित्य ...

... वर्ष के अवसर पर उनका समस्त साहित्य

विज्ञ पाठकों की प्रतिक्रियाएं

1- "आर्य सन्देश" का ऋषि बोधांक मिला यथानाम तथा गुण के अनुसार यह विशेषांक देखने को मिला। इसके प्रत्येक लेख के अपने आपमें ... लिए हुए हैं। अगर सच पूछा जाय तो विशेषांक यही अर्थ रखता है कि विशेषांक कुछ विशेषता लिए हुए हो और इस मायने में आप बिल्कुल ... मेरी ओर से बहुत बहुत धन्यवाद। आशा है कि आगे आने वाले विशेषांक भी अपने आप में विशिष्टता लिये होंगे। आर्य सन्देश के अन्य साधारण अंक भी महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के मन्तव्यों से ही जुड़े होते हैं। कोई भी लेख राजनीति अथवा एक दूसरे पर दोषारोपण करने वाला नहीं होता है। परमात्मा से प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिनोंदिन उन्नति करते हुए आर्यसमाज के मिशन के ... समर्पित रहे।

— रघुनाथ आर्य, ... 24-परगना ...

2 "आर्य सन्देश" का ... प्रशंसनीय प्रयास होता है, ... निकालने की योजना ... क्योंकि एक विशेषांक कोई अंक नहीं ... ज्ञान कोष होता है। मैं तो सम्पादक ... की ... के प्रति अभिभूत हूं।

— देवनारायण भारद्वाज, जगन्नाथ निवास, रैदोपुर नई बस्ती, आजमगढ़ (उ०प्र०)

3- आज प्रेषित "आर्य सन्देश" का ऋषि बोध पर्व विशेषांक प्राप्त हुआ। आर्य सन्देश के विशेषांकों की जितनी सराहना की जाय, कम है। कवर की साज-सज्जा मात्र को देखने से ही उत्कृष्टता का पता लगाना सरल हो जाता है। इसमें प्रकाशित विद्वान लेखकों और कवियों के लेख एवं कवितायें शिक्षाप्रद होती हैं। आर्य सन्देश अपने भव्य विशेषांकों के आधार पर देश के अन्य संस्थानों से प्रकाशित पत्रिकाओं को पीछे छोड़ता हुआ प्रगति-पथ पर निरन्तर अग्रसर है। मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि आर्य सन्देश अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त हो। विशेषांक की संग्रहनीयता उसके सम्पादक महोदय की प्रगतिशीलता का कारण हुआ करती है। अतः आपको जितना भी धन्यवाद अर्पित किया जाए, वह थोड़ा है।

विशेषांक प्राप्ति के दो दिन पश्चात 4 मार्च का अंक भी प्राप्त हुआ। आर्य युवा महासम्मेलन में उपस्थित मुख्य अतिथियों की जानकारी हुई। तथा अमरशहीद पं० लेखराम जी के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। पं० जी के जीवन से हमें तथा आर्यसमाज से प्रभावित युवकों को काफी शिक्षा प्राप्त हुई। इसी प्रकार से देश, धर्म पर कुर्बान होने वाले अन्य आर्यजनों से संबंधित लेख प्रकाशित करते हुए मार्गदर्शन करते रहें।

—सालमणि शर्मा आर्य
जिला बलिया, उ०प्र०

4- "आर्य सन्देश" का ऋषि बोधांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में बहुत सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के संबंध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय रहा है।

— राम कुमार आर्य, मन्त्री आर्य ... परिषद्, गोहाना (हरियाणा)

5- "ऋषि बोधांक" मिला। हृदय प्रसन्नता से भर गया। लेखों को पढ़ा, सभी लेख अतीव ज्ञानवर्धक संग्रहणीय हैं। आर्य जगत की सभी पत्र-पत्रिकाओं में आर्य सन्देश का विशेषांक सर्वोत्कृष्ट है।

यद्यपि पहले भी आर्य सन्देश के ग्राहक बनाये हैं, पुनरपि इस विशेषांक से और अधिकाधिक ग्राहक बनाने की प्रेरणा हुई। सभी ... बन्धुओं में इसका प्रचार करूंगा ... स्वव्यय से वार्षिक ग्राहक ...

—मनमोहन ... आर्य
196/...

गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी स्मृति अंक

1 गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी स्मृति अंक मिला। स्तुतिसुन्दर प्रयास है यह आपका। इस प्रकार दिवगत महानुभावों की स्मृति बनी रहेगी। पं० लेखराम स्वामी दर्शनानन्द, पं० गणपति शर्मा आदि अन्य आर्य नेताओं, विद्वानों का जीवन चरित्र भी इसी प्रकार प्रकाश में ला सकें तो अति उत्तम होगा।

— डॉ० रघुवीर वेदालंकार
बी-266, सरस्वती विहार, नई दिल्ली

2- "आर्य सन्देश" का गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी स्मृति अंक प्राप्त हुआ। आपने पं० गुरुदत्त विद्यार्थी की निर्वाण शताब्दी पर जो सामग्री इस अंक में दी है, वह इतनी ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक तथा सुरुचिपूर्ण है कि मैं उसे एक साथ पढ़ गया। इस अंक के लिये मेरी बधाई लें। कृपया इसे पुस्तकाकार रूप में भी प्रकाशित करें।

—डॉ० कमलकिशोर गोयनका
ए-98, अशोक विहार फेज-1, दिल्ली- 10052

4- आप द्वारा प्रकाशित पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी स्मृति अंक प्राप्त हुआ। आपकी सभा ने इस विशेषांक को प्रकाशित कर "विद्यार्थी जी" के बारे में आर्यजनों को विशिष्ट जानकारी दी है। इससे विद्यार्थी जी के ज्ञान, एवं कार्यों का भी बोध होता है। जो लेख हैं, वह उच्चकोटि के हैं। आपकी सभा इसी प्रकार से वैदिक प्रचार व प्रसार करती रहे, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

— हरिगोपाल सिंह चौहान, एडवोकेट
उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश, 44-सूर्य नगर, आगरा

आर्य जगत के समाचार

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर, जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) में नये छात्रों का प्रवेश एक जून 1990 से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी विज्ञान, समाज शास्त्र, आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी-माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी शुल्क के समुचित व्यवस्था, शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताएं हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कम से कम कक्षा पांच तथा प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री के पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कम से कम कक्षा-10 उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

हिन्दी के साहित्यकार और विद्वान सम्मानित

राजनिवास मे आयोजित "सम्मान अर्पण" समारोह मे आज दिल्ली के उपराज्यपाल एअर चीफ मार्शल (सेवानिवृत्त) [illegible] अर्जन सिंह ने हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकारों को सम्मानित किया। यह उल्लेखनीय है कि "हिन्दी अकादमी" प्रतिवर्ष हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा के लिए साहित्यकारों के [illegible] योगदान के सम्मान स्वरूप उन्हें सम्मानित कर[illegible] "सम्मान अर्पण" समारोह में बोलते हुए उपराज्यपाल [illegible] ने कहा कि "साहित्यकार [illegible] का भूखा नहीं होता है। यह तो समाज का कर्तव्य है [illegible] वह उसे समुचित आदर दे और उसकी सेवाओं [illegible] करे। हिन्दी अकादमी के इस कार्य की सराहना करते हुए उपराज्यपाल ने कहा कि इन साहित्यकारों का सम्मान करके हिन्दी अकादमी [illegible] कर्तव्य निभाया है। इस कार्य से हिन्दी [illegible] का ही मान बढ़ा है। उपराज्यपाल ने यह [illegible] मैं सभी साहित्यकारों को आदर पूर्वक बधाई देता हूं और उनसे यह अनुरोध भी करता [illegible] वे समय समय पर हिन्दी की सेवा के लिए [illegible] मार्गदर्शन भी करते रहें।"

आज सम्मानित किये जाने वाले साहित्यकारों में सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर को "शलाका सम्मान" समर्पित किया गया जिसमें 51,000/-रुपए की राशि, एक शाल, स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति-पत्र शामिल हैं। हिन्दी साहित्य की सेवा के लिए श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, →

साहित्यकार वैद्य गुरुदत्त को भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, भारतीय लेखक मंच (पंजीकृत) के तत्वावधान में हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, साहित्य शिरोमणि वैद्य गुरुदत्त की प्रथम पुण्य तिथि पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। आर्यसमाज के विख्यात सन्यासी व शिक्षाविद् स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने वैद्य गुरुदत्त को वेद-विज्ञान का आधुनिक मन्त्रद्रष्टा बताते हुए उन्हें मानवता व धर्म का प्रतीक तुल्य बताया। भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प्रो० बलराज मधोक ने वैद्य जी को राष्ट्रीयता का जागरूक प्रहरी, हिन्दू धर्म के अद्भुत व्याख्याकार बताते हुए आज उनके चिन्तन की बढ़ती लोकप्रियता व प्रासंगिता का उल्लेख किया। मंच के अध्यक्ष व वरिष्ठ पत्रकार श्री नरेन्द्र अवस्थी ने उनकी सिद्धान्तप्रियता सोद्देश्य लेखन व उन्हें वैदिक संस्कृति का उद्घोषक मानते हुए साहित्य जगत में उनकी उपेक्षा पर खेद प्रकट किया। गोष्ठी में श्री अशोक कौशिक, डा०सत्यपाल गुप्त, डा०सुरेन्द्र मोंगिया, हेम चन्द्र कौशिक, प्रेम चन्द शर्मा आदि ने अपने विचार प्रकट कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

काश्मीर और पंजाब में सैनिक शासन लागू करो

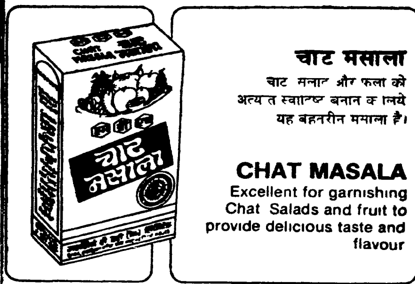
नई दिल्ली, 7 अप्रैल। आर्यसमाज किरन गार्डन के तृतीय वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि देश की एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिए आर्यसमाज शीघ्र ही एक जन-आन्दोलन चलायेगा। स्वामी जी ने सरकार से मांग की कि जम्मू कश्मीर और पंजाब को अविलम्ब सेना के हवाले कर देना चाहिए, जिससे देश की अखण्डता बनी रहे। स्वामी जी ने आगे कहा कि इस देश को स्वतन्त्रता बड़े बलिदानों के बाद मिली थी, जिसे कुछ आतंकवादियों के डर से खोने नहीं देंगे। उन्होंने सरकार की ढुलमुल नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि अपने ही देश में हिन्दू और सिख शरणार्थी बनकर एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जा रहे हैं। कितनी लज्जा की बात है।

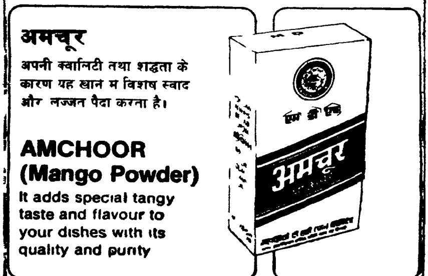
डॉ० ओम्प्रकाश, श्रीमती मन्नू भण्डारी, श्री कमलेश्वर श्री जगदीश चतुर्वेदी, श्री केदारनाथ सिंह, श्री रमेश बक्षी तथा श्रीमती नासिरा शर्मा को सम्मानित किया गया।

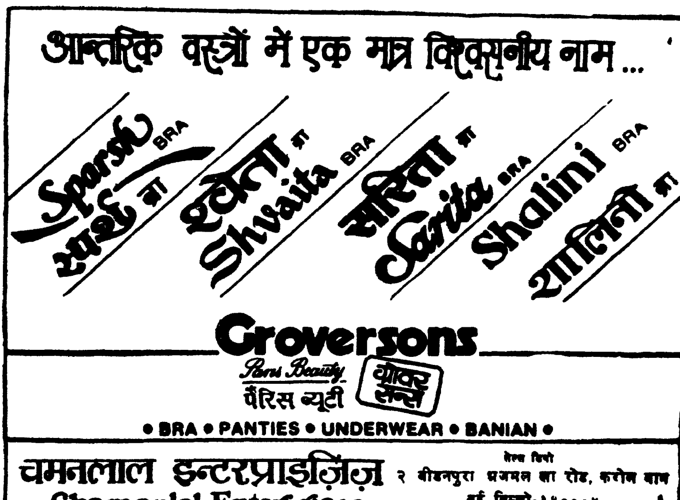
हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिए श्री लक्ष्मी चन्द्र जैन एवं डॉ० वेद प्रताप वैदिक को सम्मानित किया गया। इसी प्रकार राष्ट्र भाषा सेवा एवं प्रचार तथा प्रसार के लिए डॉ० पाण्डुरंग राव तथा श्री ब्रजकिशोर शर्मा को सम्मानित किया गया। इनमें से प्रत्येक की सेवा में 21,000/-रुपए की राशि, एक शाल, स्मृति-चिन्ह तथा प्रशस्ति-पत्र भेंट किये गये।

प्रो० विजयेन्द्र स्नातक ने योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सभी के प्रति आभार प्रकट किया।


लाखों लोगों की पसंद
एम डी एच दंत मंजन
23 जडी बूटियो से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि
आपके परिवार
के लिये पूर्ण दंत सुरक्षा
दातो का दर्द मुह की दुर्गन्ध
मसूडो की सूजन ठडा गर्म
पानी लगना मुह म छाले होना तथा
दातो की अन्य बीमारियो का घरेलू इलाज
एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
प्रतिदिन प्रयोग करें
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा॰) लि॰


चाट मसाला
चाट मसाले और फलो को
अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये
यह बेहतरीन मसाला है।
CHAT MASALA
Excellent for garnishing
Chat Salads and fruit to
provide delicious taste and
flavour


अमचूर
अपनी क्वालिटी तथा शद्धता के
कारण यह खान म विशेष स्वाद
और लज्जत पैदा करता है।
AMCHOOR
(Mango Powder)
It adds special tangy
taste and flavour to
your dishes with its
quality and purity


आन्तरिक वस्त्रों में एक मात्र विश्वसनीय नाम...
Sparsh BRA स्पर्श ब्रा
श्वेता ब्रा Shvaita BRA
सरिता ब्रा Sarita BRA
Shalini BRA शालिनी ब्रा
Groversons
Paris Beauty
पैरिस ब्यूटी
ग्रोवर सन्स
• BRA • PANTIES • UNDERWEAR • BANIAN •
चमनलाल इन्टरप्राइज़िज़
Chamanlal Enterprises
सेल्स डिपो
२ बीडनपुरा अजमल खां रोड, करोल बाग
नई दिल्ली-११०००५
फोन ५८२०१६ ५७१९२२४

आयसन्देश---दिल्ली आये प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S.O on 19,20-4-1990 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

वैदिक धर्म प्रचारार्थ -

छोटूसिंह एडवोकेट, पं० बाल दिवाकर हंस लन्दन पहुंचे

नई दिल्ली, 17 अप्रैल।

आर्य जगत् के दो वरिष्ठ नेता श्री छोटूसिंह एडवोकेट अलवर (राज०) उप-प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और श्री प० बाल दिवाकर "हंस" प्रधान-संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, वैदिक धर्म की पावन विजय वैजयन्ती फहराने के लिये 17 अप्रैल को प्रातः 5 बजे नई दिल्ली से वायुयान द्वारा लन्दन प्रस्थान कर गये।

ये दोनों महानुभाव आर्यसमाज मंदिर वन्देमातरम् भवन, लन्दन में ठहरेंगे और आर्यसमाज लन्दन के प्रधान श्री सुरेन्द्रनाथ जी भारद्वाज द्वारा निर्धारित कार्यक्रमानुसार यू० के० की विभिन्न आर्य समाजों के निरीक्षण के साथ साथ उनके द्वारा आयोजित जन-सभाओं को सम्बोधित करेंगे और लन्दन स्थित आर्य परिवारों से भी सम्पर्क स्थापित करके उन्हें "सर्वे भद्राणि पश्यन्तु" का सन्देश देंगे।

श्री हंस जी विशेषतः श्री भारद्वाज जी और सम्बन्धित आर्य सभासदों से मिलकर यह भी पता लगायेंगे कि लन्दन में और उसके आसपास की आर्यसमाजों में आर्य वीर दल शाखाओं का संचालन और विस्तार कैसे किया जा सकता है। जिससे "अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु" की उद्देश्य प्राप्ति करना सम्भव हो सके।

प्रस्थान से पूर्व सार्वदेशिक सभा की ओर से दोनों नेताओं को भावभीनी विदाई दी गयी।

सेवा में--

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तर प्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
... प्रेस गली नं० १७ कैलाशनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक २७ रविवार 29 अप्रैल 1990 वैशाख। सम्वत २०४७ विक्रमी दयानन्दाब्द १६५ सृष्टि सवत १ ९६ ९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश में ५० पौंड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

जयपुर में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समापन समारोह

7/5/90

जयपुर 7 अप्रैल 1990। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में 18 19 20 मई 1990 को जयपुर में राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समापन समारोह आयोजित किया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अध्यक्ष श्री छोटूसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में सर्व सम्मति से प्रो0 नेमिराम शर्मा को समारोह का स्वागत अध्यक्ष एवं श्री सत्यव्रत सामवेदी को संयोजक बनाया गया है।

राजस्थान महर्षि दयानन्द का प्रमुख कार्य क्षेत्र रहा है और राजस्थान की धरती महर्षि की निर्माणस्थली है इसलिए आर्य जगत के लिए यह समारोह विशेष आकर्षण का विषय बन गया है।

इस समारोह में देश विदेश के हजारों आर्य परिवारों ने समारोह में सम्मिलित होने की सूचना भेजी है। और इसे सफल बनाने के लिए आर्य जगत के मनीषी संन्यासी आर्य नेता तन मन धन से जुटे हुए हैं। समारोह में निम्नलिखित कार्यक्रमों को अन्तिम रूप देने की योजना है।

युवक संगठन राष्ट्र की चुनौतियों का सामना करने के लिए 5 हजार जुझारू नवयुवकों का संगठन बने जो देश की वर्तमान स्थिति पर चिन्तन और संघर्ष करें

शुद्धि कार्य पूर्वांचल मध्य प्रदेश केरल में धर्म परिवर्तन के लिए विदेशी ईसाई मिशनरियां करोड़ों रुपये खर्च कर रही है। आर्य समाज के मुट्ठी भर बलिदानी निहत्थे इन मिशनरियों का वीरतापूर्वक सामना कर रहे हैं और हजारों ईसाइयों की शुद्धि कर रहे हैं योजना है कि इन बलिदानियों को आर्थिक सहयोग देने के लिए 10 रुपये प्रति मास देने वाले एक लाख सदस्य बनाये जायें और शुद्धि कार्य के लिए 10 लाख रुपये मासिक आर्थिक सहयोग दिया जाये

पंजाब समस्या पंजाब कब्रगाह बन गया है निर्दोष व्यक्तियों की हत्या का सिलसिला अनवरत रूप से जारी है इस स्थिति से कैसे निपटा जाये इस कार्य के लिए पंजाब की समस्त आर्य समाजों के अध्यक्षों एवं मंत्रियों तथा आतंकवादियों का वीरतापूर्वक सामना करने वाले पंजाब के नेताओं को निमंत्रण दिया गया है

वेद प्रचार वेदों के आर्य विद्वानों का संगठन बनाकर समस्त भारतीय भाषाओं में चारों वेदों का महर्षि दयानन्द के भाष्य के अनुसार अनुवाद कराना

इसके अतिरिक्त संन्यासी सम्मेलन आर्य तोदान एवं गोपालन गोरक्षा सम्मेलन नारी उत्पीडन विरोधी सम्मेलन हिन्दी सम्मेलन आदि आयोजित किये जा रहे हैं

समारोह में वैदिक विद्वानों आर्य नेताओं तथा राष्ट्रीय नेताओं को आमन्त्रित किया गया है

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने आर्य परिवारों से अधिक से अधिक संख्या में समापन समारोह में सम्मिलित होने के लिए अनुरोध किया है

गुरुकुल काँगड़ी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का 90वां वार्षिकोत्सव 9 अप्रैल से 14 अप्रैल 1990 तक सोल्लास एवं समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं0 मदन मोहन विद्यासागर, हैदराबाद यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा थे। पं0 मदनमोहन विद्यासागर, पं0 श्यामसुन्दर स्नातक, महात्मा आर्य भिक्षु, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, डॉ0 महावीर, डॉ0 दीनानाथ तथा डॉ0 भारतभूषण के प्रवचन हुए। श्री ओ३म् प्रकाश वर्मा तथा श्री श्याम सिंह हितकर के भजनोपदेश हुए।

समारोह का शुभारम्भ 12 अप्रैल को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो0 शेर सिंह ने ध्वजारोहण करके किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह "ध्वज" त्याग, तपस्या और बलिदान का प्रतीक है। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए हमें हर प्रकार से सन्नद्ध रहना चाहिए। इस अवसर पर वैदिक प्रदर्शिनी का उद्घाटन गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने किया। अपराह्न में वेद एवं संस्कृत सम्मेलन डॉ0 रामनाथ वेदालंकार, भूतपूर्व आचार्य एवं उपकुलपति की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति मुख्य अतिथि थे। श्री श्यामसुन्दर स्नातक, डॉ0 भारतभूषण, डॉ0 महावीर, डॉ0 वेद प्रकाश, डॉ0 सत्यव्रत राजेश, डॉ0 प्रशान्त कुमार पं0 क्षितीश वेदालंकार ने वेदों की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त किए। (शेष पृष्ठ 8)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—यशचन्द गुप्त

■ अध्यात्म

धर्म कथा सुनते समय श्मशान मे शवदाह की ज्वाला देखते हुए, और रोग से सतप्त रोगी का कष्ट अनुभव करते हुए मानव हृदय मे जो ससार से विरक्त होने की बुद्धि पैदा होती है यदि वह मनोवस्था मस्तिष्क मे स्थिर हो जाए, क्षणिक न रहे तो मनुष्य ससार मायाजाल से शीघ्र ही मुक्ति पा ले।

मनुष्य के मन मे अच्छे विचार आते ही रहते है। उन्हे कार्य रूप मे परिणत करने मे आलस्यवश या रागवश देर लग जाता है। कभी-कभी वह अमल मे आए बिना रह जाते है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि जब जब शरीर निरोग है अपने मन मे आए कल्याण कार्य को पूरा कर ले। न जाने कब मृत्यु का निमत्रण आ जाए और अच्छे पुण्य कार्य करने के श्रेय से आत्मा वचित रह जाए।

इस ससार मे कुछ प्राणी बडे भोले और कुछ बडे चालाक होते है। मनुष्यो मे नाई का काम करने वाले बडे चतुर माने गए है पक्षियो मे कौआ बडा चतुर होता है चार पैर वाले प्राणियो मे गीदड बडा चतुर माना जाता है स्त्रियो मे मालिन सबसे अधिक चतुर चालाक होती है। समय के अनुसार चतुर चालाक लोगो का भेस बदलता रहता है।



आचार्य चाणक्य उवाच

शरीर मिट्टी के कच्चे घडे के समान क्षणभगुर है यदि घडे को यत्नपूर्वक काम में लायें तो वह बहुत दिनो तक चल सकता है परन्तु इस शरीर को अच्छी प्रकार रखने पर भी यह टूट जाता है शरीर की इस क्षणभगरता का बोध होने पर तथा परमात्मनिष्ठ हो जाने पर मनुष्य का मन जहा जहा जाता है उसके लिए वहीं समाधि बन जाती है

सत्य ही सब चराचर जगत का आधार है नित्य सत्य नियमो पर ही पृथ्वी टिकी हुई है पार्थिव लोक के सब कार्यकलाप सूर्य का उदय होना अस्त होना वायु का नियमपूर्वक चलना प्राणियो का सास लेने का आधार होना आदि सब प्राकृतिक कार्य शाश्वत सत्य नियमो के अनुसार स्वय चल रहे हैं सत्य से ही सबकी प्रतिष्ठा है सत्य ही ईश्वर है सत्य ही धर्म है

सच तो यह है कि परमेश्वर न तो किसी काष्ठ मे है और न ही पत्थर मे परमेश्वर तो भावना में है हृदय की सच्ची श्रद्धा मे ही परमेश्वर का निवास है श्रद्धापूर्वक कोई भी कल्याणकारी कार्य किया जाए उस कार्य में परमेश्वर की कृपा से सफलता अवश्य मिलती

सबकी अपनी अपनी आकाक्षाए होती है धनहीन धन की इच्छा करते हैं चार पैरो वाले पशु वाणी की इच्छा करते हैं मनुष्य स्वर्गारोहण की इच्छा करते हैं साधारण मनुष्य अत्र कर्म से मुक्त होने का प्रयास करते है इससे भी आगे बढने वाले साधक मोक्ष की आकाक्षा रखते है

प्रलयकाल के आने और दूसरे युग के शुरू होते ही सुमेरु पर्वत चलायमान हो जाता है कल्प के अत मे सातो समुद्र भी अपनी मर्यादा छोड देते हैं परन्तु स्थितप्रज्ञ धीर गभीर और श्रेष्ठ पुरुष अपनी प्रतिज्ञा से विमुख नहीं होते व जो निर्णय ले लेते हैं उस पर अडिग रहते हैं उनकी वाणी अन्यथा नहीं हो सकती भले ही कोई विघ्न बाधाओ का सामना ही क्यो न करना पडे

वेश्या धन के लोभ से ही पुरुष को अपनाती है निर्धन होने पर उसे छोड देती है प्रजा ऐसे राजा को अपनाती है जो शक्तिशाली हो अन्यथा उसे पदच्युत कर देती है पक्षी फलहीन वृक्ष का परित्याग कर देते है अतिथि भी भोजन के बाद गृहस्थी का घर छोड देते हैं इसलिए लोकप्रिय होने के लिए किसी न किसी प्रकार की शक्ति का स्वामी अवश्य होना चाहिए सबल के ही सब सहायक होते हैं निर्बल के नहीं

समय का मूल्य न समझ कर हम कितने ही दिनो का समय व्यर्थ गवा देते हैं वह समय यदि हम कोई भी नया ज्ञान प्राप्त करने में लगाए तो जीवन सफल हो जाए प्रतिदिन एक ऐसे श्लोक को अध्ययन मनन करने से भी नया ज्ञान प्राप्त हो सकता है जो जीने की राह दिखलाए पथ प्रदर्शक श्लोक के एक अश आधे या एक चरण का अध्ययन चिंतन भी दिन को सार्थक बना सकता है। इस अध्ययन से और योग्य स्थान पर ज्ञान देने से दिन सार्थक हो जाता है

विद्वान का आदर सर्वत्र होता है विद्या के कारण ही उसे गौरवान्वित पद मिलता है विद्या से आदर ही नहीं धन भी मिलता है ऊचा पद भी मिलता है और समाज में प्रचुर यश भी प्राप्त होता है अत विद्या द्वारा ज्ञान प्राप्त करने मे मनुष्य को कदापि प्रमाद नहीं करना चाहिए विद्या का पूजन अपने देश मे ही नहीं सर्वत्र होती है

एक ही पदार्थ को तीन व्यक्ति अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार अलग अलग रूपो में देखते हैं नारी की देह एक विरक्त योगी की दृष्टि मे अति कुरूप शव के समान हो जाती है कामाध व्यक्ति उसे सुन्दर नारी के रूप में देखता है और कुत्ता उसे मास पिण्ड के रूप में देखता है सुन्दरता पदार्थ मे नहीं देखने वाले की दृष्टि में रहती है

आत्मचिंतन बहुत उपयोगी है मनुष्य को विचार करते रहना चाहिए कि समय कैसा चल रहा है? मेरे मित्र कौन है शत्रु कौन है अपनी आय और व्यय का हिसाब भी ध्यान मे रखना आवश्यक है अपनी शक्ति और कमजोरी का अदाज लगाते रहना भी जरूरी है और इस हिसाब से अपने अनुकूल कार्य का निर्धारण करना भी उचित है

[illegible] भस्मलेपन या तीर्थाटन [illegible] वास्तविक [illegible] [illegible] जहा प्रभु [illegible] [illegible] जिस मनुष्य [illegible] [illegible] है [illegible] परमात्मा की प्राप्ति के लिए अन्यत्र जाने की क्या आवश्यकता

मनुष्य का कर्तव्य है कि वह शरीर के बाह्य सौन्दर्य को ही सुदरता न माने देह मे स्थित आत्मा को जानना और उसे पवित्र रखना उसका पहला धर्म है जैसे फूल मे सुगध तिल मे तेल काष्ठ मे अग्नि दूध में घी ईख में गुड रहता है वैसे ही आत्मा हृदयरूपी गुहा मे रहती है उसे जान कर ही मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप को जानता है

मन ही सुख दुख और भलाई बुराई का मूल है जिसने अपने मन को वश में कर लिया है या जिसका मन स्वस्थ है वही सुखी है मनुष्य के बधन और मोक्ष का कारण मन ही है विषय वासनाओ के जाल में फसा हुआ मन मनुष्य के बधन का कारण होता है जिस मनुष्य का मन विषय वासनाओं से अछूता है वह मोक्ष का भागी है अत प्रत्येक पुरुष को सर्वप्रथम मन को जानना चाहिए

मनुष्य केवल अपने ही कर्मों के परिणाम से कष्ट नहीं पाता अपनी परिस्थितियों से विवश हो कर भी सताप में जलता रहता है जिस गाव मे कोई नदी न हो वैद्य न हो वहा का निवास दुख देता है कुसस्कारी नीच व्यक्ति क्रोधी स्वभाव की पत्नी मूर्ख पुत्र और विधवा बनी कन्या भी दुखदाई रहते हैं। रोग पैदा करने वाला भोजन भी दुख का कारण बन जाता है। ये दुख ऐसे हैं जिन्हे धैर्यपूर्वक सहन करना पडता है इनका उपचार बडा दु साध्य है

कोई भी ऐसा कुल या परिवार नहा जो सर्वदा दोषरहित हो कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं जो किसी न किसी रोग से पीडित न हो किसी न किसी प्रकार के कष्ट से सभी सताए हुए है सदा सुखी रहने का सौभाग्य किसी को नहीं मिलता सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख का चक्र चलता ही रहता है अत सुख दुख दोनों को शाति सतोष के साथ झेलना चाहिए

स्नेह सब दुखो का मूल है जिसे किसी के प्रति प्रेम होता है उसी से भय भी होता है प्रीति दुखो का आधार है स्नेह के कारण तेल में दीपक की बाती भी जल जाती है पतगा दीपक की लौ में भस्म हो जाता है इसी प्रकार अपने माता पिता पति पत्नी पुत्र स्त्री और बधु बाधवो की परस्पर आसक्ति के कारण मनुष्य इस ससार चक्र में पिसता चला जाता है

महत्वाकाक्षी होना और यशस्वी होने की इच्छा तो स्वाभाविक है किंतु अतिशय लोभ मनुष्य के पतन का कारण भी बन जाता है [illegible] निश्चित उपलब्धि मुट्ठी में आई [illegible] छोड कर अनिश्चित लाभ की प्राप्ति के लोभ में [illegible] वचित रह जाता [illegible] [illegible] डावाडोल [illegible] लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती अत एक कदम आगे जमाने के बाद ही दूसरा कदम उठाना चाहिए अस्थिरता जीवन के लिए अभिशाप बन जाता है

भविष्य चाहे कितना ही सुदर क्यो न हो उस पर विश्वास नही करना चाहिए भूतकाल की चिंता भी नहीं करनी चाहिए जो कुछ भी करना है उसे स्वय पर और परमात्मा पर विश्वास रख कर वर्तमान काल में ही करना चाहिए बीती हुई बात का शोक नहीं करना चाहिए शोक धैर्य को नष्ट कर देता है शोक [illegible] कर देता है शोक के समान दूसरा [illegible] है भविष्य में क्या होगा इसकी चिंता भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि जो विधाता ने कपाल में लिख दिया है उसे कोई नहीं मिटा सकता वह तो होना निश्चित है बुद्धिमान एव ज्ञानी पुरुष वर्तमान को सफल बनाने के कार्य में जुटे रहते हैं।

[illegible]

— प्रस्तुति श्री

वेदों के अनुसरण से ही विश्वशान्ति संभव है।

सत्यार्थ प्रकाश

महाभारत से लेकर गत शताब्दी तक का समय "आर्य राष्ट्र" के पतन का समय है। निस्सन्देह, इस कालावधि में भी अनेक महान आत्मा आर्यावर्त की इस पुण्य भूमि पर जन्मीं, परन्तु महर्षि वेदव्यास के पश्चात महर्षि दयानन्द पर्यन्त किसी "ऋषि आत्मा" ने जन्म नहीं लिया, जो परमेश्वर कृत वेदों की पवित्र वाणी का साक्षात् प्रचार करता। आचार्य शंकर भी नवीन मतों।सम्प्रदायों की स्थापना में भटक गये।

वर्तमान युग में युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने पुनः वेदज्ञान का सन्देश दिया और पुनः वेदधर्म की स्थापना की।

जैसे राजर्षि मनु ने मानव "धर्मशास्त्र" बनाया, वैसे ही दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" बनाया है। इसे सत्य का प्रकाश किया है। क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, इसलिये इस सत्यार्थ प्रकाश में वस्तुतः "वेदधर्म" का प्रतिपादन है। इस महान ग्रन्थ में महर्षि ने अपने पूर्ववर्ती राजर्षि मनु कृत "मनुस्मृति" और ब्रह्मर्षि वेदव्यास के महाभारत अन्तर्गत "विदुर नीति" का आश्रय लिया है।

सत्यार्थ प्रकाश वैदिक वाङ्मय के सभी ग्रन्थों का सार प्रस्तुत करता है। इसे एक बार आद्योपान्त ध्यानपूर्वक पढ़ लेने पर कोई व्यक्ति किसी के जाल में नहीं फंस सकता है। ऐसा कोई प्रश्न या सिद्धान्त नहीं जिस पर सत्यार्थ प्रकाश में प्रकाश न डाला गया हो। ऐसा कोई अन्धविश्वास नहीं है जिसका उसमें खण्डन न किया गया हो। वैदिक धर्म के सभी मन्तव्यों की, वेदादि ग्रन्थों के प्रमाणों के आधार पर विशद् व्याख्यायें उसमें मिलती हैं। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने इसीलिए कहा था 18 बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने पर सदैव उसमें से नवीन-नवीन मार्गदर्शक ज्ञान उनको प्राप्त होते रहे।

सभी सम्प्रदायों में सत्यार्थ प्रकाश के कारण ही सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। प्रत्येक देश एवं समाज पर इसका व्यापक क्रान्तिकारी असर हुआ है। वस्तुतः हजारों नहीं लाखों नहीं वरन् करोड़ों मनुष्यों को सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा मिली है तथा भविष्य में भी मिलती रहेगी।

यद्यपि सत्यार्थ प्रकाश ग्यारह दशाब्दियों से भी पूर्व लिखा गया, परन्तु इसमें जिन मानव-मूल्यों की स्थापना की गयी है, वे शाश्वत सनातन हैं। अतः जितनी उपादेयता इस ग्रन्थ की पहले रही है, इस भौतिकवादी भागदौड़ के युग में कहीं उससे अधिक इसके प्रचार और प्रसार की आवश्यकता है।

आज के भूले-भटके मानव को कल्याण मार्ग की दिशा में अग्रसर होने के लिये सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करना उतना आवश्यक है, जितना कि जीवन के लिये भोजन।

आदर्श विवाह

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली-46 में 31 मार्च को डा० धीर सिंह चौहान तथा सुश्री तृप्ती बी०ए० बी०एड० का उल्लासमय वातावरण में आदर्श विवाह संपन्न हुआ। बागपत {उ०प्र०} निवासी डा० धीर सिंह एम.ए. और होम्योपैथिक डाक्टर हैं तथा शाहबाद दिल्ली में प्रैक्टिस करते हैं। उधर तरनतारन {पंजाब} के खत्री परिवार की तृप्ती पिता की आतंकवादियों द्वारा हत्या कर देने के पश्चात अपनी माता के साथ दिल्ली के एक सहायता शिविर में रह रही हैं। इस अवसर पर आर्यसमाज के अधिकारी और कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे।

ओ३म् शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु
वायुः ।। 9 ।। ऋ07/35/9/

प्रभु प्रकृति तुम्हारे सर्वधाम

–देवनारायण भारद्वाज

नाथ सृष्टि के सभी देवता, हमको सहकारी हो जायें।
हे नाथ तुम्हारे देव सकल, हमको सुखकारी हो जायें।।

अन्नादि भोग्य धन धान्य हमें,
दे पृथ्वी पोषण मान्य हमें,
तुम वायु प्राण के दाता हो,
दें मोद प्रशंसित साम्य हमें।

हो अन्न-प्राण से देह सबल, हमको हितकारी हो जायें।
हे नाथ तुम्हारे देव सकल, हमको सुखकारी हो जायें।।

हे व्यापक विष्णु सूर्य सुन्दर
बहु मेघ बुलाओ निज अन्दर
जो सुखकारी वर्षा करके
दे जीव सुपोषण भू अन्दर।

सुख मेघ गगन में छा जायें, जग के उपकारी हो जायें।
हे नाथ तुम्हारे देव सकल, हमको सुखकारी हो जायें।।

सब बात नहीं कुछ धरती की,
या गगन मेघ तक बढ़नी की,
धी लोक सुमंगल कारी हो,
यह विनती हमने विनती की।

प्रभु, प्रकृति तुम्हारे सर्वधाम, सुख शान्ति विहारी हों।
हे नाथ तुम्हारे देव सकल, हमको सुखकारी हो जायें।।

–जगन्नाथ निवास, रैदोपुर नई बस्ती, आजमगढ़ {उ०प्र०}

आध्यात्म-प्रधान अंक

आप द्वारा प्रेषित "आर्य सन्देश" का गुरुदत्त विशेषांक तत्पश्चात् समग्र क्रान्ति विशेषांक प्राप्त हुआ। गुरुदत्त जी के जीवन तथा कार्य सम्बन्धित कोई भी लेख अभी तक मुझे नहीं मिले थे, किन्तु इस अत्यन्त उत्कृष्ट पत्रिका की सदस्यता में मुझे गुरुदत्त विद्यार्थी जी के विषय में बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त हुईं। विशेष बात तो यह है कि पत्रिका प्राप्त कराने हेतु आप द्वारा समय का काफी ध्यान रखा जा रहा है। यह मेरे लिए और आर्य सन्देश के सभी सदस्यों के लिये प्रसन्नता का कारण है। साथ ही 1 अप्रैल का अंक भी प्राप्त हुआ। मुख्य पृष्ठ पर "आर्यसमाज स्थापना दिवस का उपहार-सात हजार ईसाई वैदिक धर्म में लौटे -यह सभी आर्यसमाजों, आर्य युवकों तथा वीरों के लिए हर्ष की बात है कि अपने से बिछुड़े हुए भाई पुनः अपने घर में आ रहे हैं। तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी द्वारा तीन-सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत –"विदेशी पादरियो-भारत छोड़ो", जोड़कर अब चार-सूत्रीय कार्यक्रम में परिणत कर दिया है। यह आर्यसमाज की सक्रियता और कार्यकुशलता का परिचय है। विशेषांकों की समस्त सामग्री वस्तुतः पठनीय एवं संग्रहणीय है। पूरा विशेषांक पढ़ जाने पर ऐसा प्रतीत होता है कि आपने विद्वानों के लेख कविताओं को संग्रह कर इसे "आध्यात्म प्रधान अंक" बना दिया है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि आपको शक्ति और सामर्थ्य दे, जिससे यह पत्रिका और अधिक साहित्यिक, ऐतिहासिक और वैदिक मान्यताओं से पूरित लेखों और कविताओं से भरपूर रहती हुई-आर्यजनों का मनोबल वर्धन करती रहे।

–सालमणि शर्मा "आर्य"

संन्यास ग्रहण

आर्य जगत् के विख्यात् विद्वान आचार्य विश्वश्रवा वेदाचार्य ऋषि बोधोत्सव के पावन पर्व पर दिनांक 23 फरवरी 1990 को संन्यास ग्रहण कर वेदर्षि व्यास योगी बने।

आँखों देखा हाल-गुरुकुल

प्रत्येक वर्ष बैसाखी पर, जो प्राय. 13 अप्रैल को होती है, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार एवं गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव हुआ करते हैं। आर्य पत्रों में गुरुकुल कांगड़ी के 90वें वार्षिकोत्सव का समाचार पढ़कर उत्सव में जाने का मन बना। 13 अप्रैल को एक मित्र श्री धर्मपाल सिंह के साथ देहरादून से स्कूटर द्वारा हम गुरुकुल कांगड़ी पहुंचे।

गुरुकुल कांगड़ी पहुंच कर देखा कि पण्डाल के बाहर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी एवं उनके कुछ ब्रह्मचारी विक्रयार्थ वैदिक साहित्य के साथ उपस्थित हैं। उनसे कुछ ही दूरी पर एक अन्य स्थान पर भी वैदिक साहित्य का विक्रय किया जा रहा था। यहां पहुंचकर हमें ज्ञात हुआ कि कुछ समय पश्चात यहां उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री बी0सत्यनारायण रेड्डी जी का अभिनन्दन किया जाना है। अतः समय व्यतीत करने के उद्देश्य से हम गुरुकुल महाविद्यालय पहुंचे। वहां पण्डाल में एक कार्यक्रम "विद्वत एवं आर्य किशोर परिषद् सम्मेलन" आरम्भ हुआ था। पण्डाल में श्रोताओं की उपस्थिति कम थी। वहीं हमें गुरुकुल महाविद्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका के सह-सम्पादक श्री माधव प्रसाद उपाध्याय मिले। उनसे गुरुकुल महाविद्यालय के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बताया कि गुरुकुल के अन्तर्गत चार विभाग शिक्षा विभाग, विद्या विभाग, आयुर्वेद विभाग एवं उपदेशक विभाग हैं। शिक्षा विभाग एवं विद्या विभाग में क्रमशः 300 व 200 ब्रह्मचारी/विद्यार्थी हैं। सरकारी नीति के परिणामस्वरूप आयुर्वेद विभाग इस वर्ष बन्द हो रहा है एवं उपदेशक विभाग भी शिथिल है एवं इसके भी बन्द होने की सम्भावना है। गुरुकुल महाविद्यालय से संस्कृत भाषा की एक पत्रिका "भारतोदय" प्रकाशित होती है। इसका एक हिन्दी संस्करण भी छापना प्रारम्भ किया गया है। हिन्दी संस्करण का प्रथम अंक इसी वार्षिकोत्सव पर स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया है, जिसका विमोचन भी दीक्षान्त समारोह में किया गया। 13 अप्रैल को ही प्रातःकाल की सभा में दीक्षान्त समारोह में उ0प्र0 के राज्यपाल महोदय महामहिम श्री बी0सत्यनारायण रेड्डी जी ने स्नातकों को दीक्षा प्रदान की थी। विद्वत एवं आर्य किशोर परिषद् सम्मेलन को रूचिकर न जानकर हम लौट पुनः गुरुकुल कांगड़ी पहुंचे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के बीच स्कूटर से मात्र पांच मिनट का समय लगता है। गुरुकुल कांगड़ी के पण्डाल में महामहिम राज्यपाल जी की प्रतीक्षा हो रही थी। कुछ ही क्षणों में राज्यपाल जी कुछ आमन्त्रिताओं मुख्यतः कुलाधिपति प्रो0शेर सिंह जी, कुलपति प्रो0 रामप्रसाद जी वेदालंकार, महाशय धर्मपाल, डा0धर्मपाल आदि के साथ सभा मण्डप पहुंचे। अभिनन्दन पत्र प्रो0 रामप्रसाद वेदालंकार जी ने भेंट किया। राज्यपाल जी से निवेदन किया गया कि आयुर्वेद विद्यालय गुरुकुल को सौंपा जाये। उ0प्र0 में समस्त सरकारी कार्य केवल हिन्दी में ही किये जाने के सरकारी निर्णय के लिए राज्यपाल जी की प्रशंसा की गयी एवं उनका आभार व्यक्त किया गया। अभिनन्दन के उत्तर में राज्यपाल जी ने गुरुकुल के कार्यकलापों की प्रशंसा की। गुरुकुल से संबंधित कई स्मृतियां उन्होंने श्रोताओं को सुनाई। उन्होंने बताया कि उनके बड़े भाई गुरुकुल के स्नातक थे एवं संस्कृत के बहुत बड़े पण्डित थे। आजादी के आन्दोलन के दिनों में उन्होंने एक पत्र निकाला था जोकि हाथ से ही लिखा जाता था। मुद्रण की सुविधा उस समय में नहीं थी। उन्होंने बताया कि उनका सर्वप्रथम लेख महर्षि दयानन्द जी पर था। इस पत्र की प्रति सम्प्रति उपलब्ध नहीं है। राज्यपाल जी इसके लिए प्रयासरत हैं। यदि उन्हें इसकी कोई प्रति मिल जायेगी तो उन्हें अतीव प्रसन्नता होगी। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की हर प्रकार की सम्भव सहायता का वचन भी आयोजकों को दिया।

इस कार्यक्रम की समाप्ति के तत्काल पश्चात "वैदिक प्रश्न मंच" कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। दूरदर्शन पर प्रदर्शित इसी प्रकार के कार्यक्रम का अनुकरण कर इस नूतन कार्यक्रम को तैयार किया गया था। दो-दो व्यक्तियों की पांच टोलियां बनाकर निर्धारित समय में प्रत्येक टोली से बारी बारी आर्यसमाज एवं वैदिक क्रियाओं पर प्रश्न किये गये। टोली संख्या-4 सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के कारण विजयी घोषित की गयी।

कार्यक्रम समाप्ती के पश्चात हम दोनों मित्र ज्वालापुर भ्रमण के लिए निकले। "आर्य वानप्रस्थ" एवं "विरक्त आश्रम" पहुंचे, जहां 15 अप्रैल से आरम्भ उत्सव की तैयारी हेतु अधिकारियों की बैठक चल रही थी। यहां की स्वच्छता एवं व्यवस्था हृदयग्राही थी। यहां से हरिद्वार होते हुए गुरुकुल कांगड़ी पहुंच कर भोजन ग्रहण किया। पश्चात गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर पहुंचे। वहां "कवि सम्मेलन" आरम्भ होने में कुछ समय शेष था। अतः पुन. गुरुकुल कांगड़ी आ गये। यहां आर्य जगत के यशस्वी सम्पादक पं0क्षितीश वेदालंकार जी का ओजस्वी उपदेश चल रहा था। भाषण का विषय "राष्ट्रभाषा हिन्दी" थी। कई अत्यन्त महत्वपूर्ण बातें इस भाषण में कही गयी जिनका उल्लेख किया जा रहा है।

थे। वे अंग्रेजी भाषा नहीं जानते थे, यही उनकी मौलिकता की कसौटी थी। अन्य सभी विद्वानों को पाश्चात्य जगत का उच्छिष्ट भोजी बताया। पण्डित जी का यह भाषण अत्यन्त रोमांचकारी एवं प्रेरणाप्रद था।

इस रात्रिकालीन प्रवचन श्रृंखला में श्री क्षितीश जी के पश्चात हरियाणा से निर्वाचित सांसद डॉ0 कपिल देव शास्त्री को भी अपने विचार रखने के लिए कहा गया। शास्त्री जी ने भी अपने संसदीय जीवन में अन्य समान विचारधारा वाले सांसदों के साथ मिलकर हिन्दी की रक्षा, उन्नयन एवं राष्ट्रभाषा को उचित

स्थान दिलाने के लिए संघर्षरत रहने का संकल्प व्यक्त किया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात ब्रिटिश महारानी ऐलिजाबेथ जब भारत आयीं थी, तो लालकिले पर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया था। पण्डित जवाहर लाल नेहरू जी ने उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किया था। उस अभिनन्दन पत्र में एक पंक्ति नेहरू जी ने हाथ से बढ़ाई थी जिसमें कहा गया था कि अंग्रेजों के भारत से जाने के पश्चात, भारत में अंग्रेजी का प्रयोग काफी बढ़ा है।

एक अन्य घटना का उल्लेख करते हुए पं० क्षितीश जी ने बताया कि आजादी से एक दिन पूर्व बी.बी.सी. के कुछ संवाददाता बंगाल में अनशन कर रहे महात्मा गांधी के पास गये और उन्हें भारत की स्वतन्त्रता के अवसर पर विश्व के लोगों के लिए कोई समुपयुक्त संदेश देने के लिए निवेदन किया। महात्मा गांधी जो उस समय मौनव्रत रखे हुए थे, एक कागज पर एक पंक्ति का संदेश दिया जिसमें कहा गया था कि "संसार से कह दो कि गांधी अंग्रेजी नहीं जानता।" एक और महत्वपूर्ण घटना बताते हुए पं० जी ने कहा कि इंगलैण्ड में आई.ए.एस. कालेज के एक अधिकारी भारत आये हुए थे। भारतीय विद्यार्थी भी उन्हीं के अधिकार क्षेत्र में आते थे। उन्होंने महात्मा मुंशी राम जी को एक भेंट में बताया कि भारत के जो विद्यार्थी आई.ए.एस. के लिए इंगलैण्ड जाते हैं वे बड़े परिश्रमी, मेधावी एवं अनुशासित होते हैं। यह सुनकर महात्मा जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) प्रसन्न हुए। अंग्रेज महाशय ने एक बात महात्मा जी को और कही कि सभी भारतीय विद्यार्थियों में मौलिकता का अभाव रहता है। इसे सुनकर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन्हें कहा कि आप समय निकालकर मेरे गुरुकुल कांगड़ी चलिए, वहां आपको इसका उत्तर मिल जायेगा।

पं० क्षितीश वेदालंकार जी ने बताया कि गुरुकुल स्थापना के आरम्भिक वर्षों में ही वहां भौतिक, रसायन, प्राणी, वानस्पति आदि विज्ञान विषयों की पुस्तकें हिन्दी में लिखी गयी थीं। विज्ञान विषयों का अध्यापन हिन्दी में ही किया जाता था। आज भी यही पुस्तकें विज्ञान की सर्वाधिक प्रमाणिक पुस्तकें मानी जाती हैं। उन्होंने इस प्रलाप को अयथार्थ बताया कि वैज्ञानिक अंग्रेजी शब्दों के पर्याय हिन्दी में नहीं है।

रूस में हुए एक विश्व सम्मेलन का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन में विश्व की सभी भाषाओं में सम्मेलन की कार्यवाही का अनुवाद सुनाया जा रहा था। हिन्दी में अनुवाद न होने के कारण एक भारतीय प्रतिनिधि द्वारा विरोध करने पर संबंधित अधिकारी ने प्रश्न किया "कि क्या भारत की अपनी कोई भाषा है"। पण्डित क्षितीश जी ने यह भी कहा कि स्वामी दयानन्द जी ही 19वीं शताब्दी के सर्वप्रथम मौलिक महापुरुष

गुरुकुल कांगड़ी के इस कार्यक्रम की समाप्ती के पश्चात लगभग 10 बजे रात्रि को हम महाविद्यालय पहुंचे जहां "कवि सम्मेलन" आरम्भ हुआ ही था। कवि सम्मेलन में अनेक राष्ट्रीयता-परक कविताओं का वाचन किया गया। पाकिस्तान से आशंकित युद्ध के खतरे पर भी वीर रस की कविताएं जिनमें पाकिस्तान को चेतावनी दी गयी थी, प्रस्तुत हुई। कुछ कविताएं श्रृंगार रस की थी जो मण्डप में उपस्थित गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के सामने वाचनयोग्य कदापि नहीं थी। भविष्य में आयोजकों को आर्यसमाज को मर्यादा, गरिमा विचारधारा को भी दृष्टिगत रखकर ही कविताओं का वाचन करना चाहिए। कवि सम्मेलन की समाप्ती रात्रि लगभग 1.30 बजे हुई जिसके पश्चात हमने वहीं पर शयन किया।

14 अप्रैल 90 को प्रात. उठकर हम देहरादून के लिए चले। मार्ग में वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार रूके। आश्रम में "पाखण्ड खण्डिनी पताका" का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इसकी अनुमानित लागत 5 लाख रूपये है। आश्रम में ही प्रातः कालीन सत्संग चल रहा था। वहां उपस्थित आचार्य जी ने आर्याभिविनय से वेदमन्त्र "भद्रं कर्णेभि श्रुयायाम् ...." की सारगर्भित एवं मनोहर व्याख्या सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। आचार्य जी को महर्षि दयानन्द जी के प्रति निष्ठा एवं समर्पण सराहनीय है। यहां से चलकर हम आचार्य श्री राम के आश्रम "शान्ति कुंज" आये। यह एक भव्य, सुविशाल एवं अत्यन्त सुव्यवस्थित आश्रम है। यहां पर प्राय. हर समय 1000 से 1500 तक आचार्य श्रीराम के मतानुयायी रहते हैं। इन श्रद्धालु अनुयायियों की निष्ठा एवं आश्रम के प्रति अनुराग, हम आर्यों के लिए भी अनुकरणीय हैं। आश्रम की स्वच्छता एवं यहां के सेवकों की कर्तव्यपारायणता भी सराहनीय है। आर्य समाज की संस्थाएं इनसे प्रेरणा लेकर बहुत कुछ शिक्षा ले सकती हैं।

निष्कर्ष.- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के वार्षिकोत्सवों में श्रोताओं को उपस्थिति निराशाजनक थी। आयोजकों को एक ओर जहां कार्यक्रमों की गुणवत्ता एवं रोचकता पर ध्यान देना चाहिये वहीं उसका पर्याप्त प्रचार कर अधिकाधिक आर्य जनता को प्रेरित कर कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित भी करना चाहिए। आर्य जनता भी उदासीनता छोड़कर आर्य जगत को इन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक संस्थाओं के कार्यक्रम में रूचि ले एवं कार्यक्रमों में यथासम्भव सम्मिलित हो। गुरुकुल कांगड़ी एवं गुरुकुल महाविद्यालयों के बीच यातायात हेतु सड़क बना दिये जाने से दोनों संस्थाओं को एक ओर अपनी भूमि गवानी पड़ी है, वहीं उनकी शान्ति भी भंग हुई है। ईश्वर हम आर्यों को प्रेरणा करे कि अन्य मतावलम्बियों की भांति हम भी पूर्ण श्रद्धा से आर्यसमाज के कार्यों में यथाशक्ति सम्मिलित हुआ करें।

-196, ब्लाक-2, चुक्खूवाला, देहरादून-248001 (उ०प्र०)

आर्यजगत के समाचार

आर्यसमाज मालवीय नगर

आर्यसमाज मालवीय नगर, दिल्ली-110017 का 35वाँ वार्षिकोत्सव 2 अप्रैल से 8 अप्रैल तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातःकाल आर्य परिवारों में यज्ञ, भजन तथा वेद-प्रवचनों का कार्यक्रम चला। रात्रि में वैदिक विद्वान प्रो० उत्तमचन्द जी शरर की प्रेरणास्पद वेदकथा सम्पन्न हुई।

मुख्य समारोह रविवार 8 अप्रैल को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी द्वारा ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। श्री सूर्य देव ने इस अवसर पर देश की वर्तमान विकट परिस्थितियों की विशद् जानकारी देते हुए कहा कि आर्यों को एकजुट होकर जहाँ वैदिक धर्म का प्रकाश घर घर पहुँचाना है, वहाँ राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिये शारीरिक और मानसिक रूप से सशक्त बनना होगा।

आर्य युवा विद्वान प० [illegible] "[illegible]" ने वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज की मान्यताओं की चर्चा करते हुए स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति को जागृत करने पर बल दिया। इस अवसर पर श्रीमती उषा शास्त्री, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया आदि ने अपने ओजस्वी भाषणों से उपस्थित जनसमूह को आर्यसमाज के मिशन के प्रति पूर्णतया समर्पित हो जाने के लिये प्रेरणा दी।

आर्यसमाज धापर नगर

आर्यसमाज धापरनगर, मेरठ-250001 में गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी दिवस, आर्यसमाज स्थापना दिवस, श्यामजीकृष्ण वर्मा स्मृति दिवस तथा श्रीराम जन्मोत्सव क्रमशः 18 मार्च, 27 मार्च, 31 मार्च व 3 अप्रैल को समाज मंदिर में बड़े उत्साहपूर्वक मनाये गये। वैदिक विद्वानों समयानुकूल इन प्रेरणास्पद दिवसों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए आर्यजनों का मार्गदर्शन किया।

आर्यसमाज काकड़वाड़ी

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा सर्वप्रथम स्थापित आर्यसमाज बम्बई (काकड़वाड़ी) का 116वाँ स्थापना दिवस तथा वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम पूरी गरिमा तथा सफलता के साथ 24 मार्च से 27 मार्च 1990 तदनुसार चैत्र कृष्ण 12 सम्वत् 2046 से चैत्र शुक्ल 1 सम्वत् 2047 तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती (प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर), प्रो० उत्तमचन्द शरर (पानीपत) एवं डा० वागीश शर्मा (आचार्य गुरुकुल एटा) के प्रभावपूर्ण व्याख्यानों को आर्यजनता ने बड़ी श्रद्धा से हृदयंगम किया।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (27 मार्च 90) को आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई तथा आर्यसमाज काकड़वाड़ी (बम्बई) के संयुक्त तत्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। विद्वान वक्ताओं तथा कर्मनिष्ठ आर्य नेताओं ने आर्यसमाज के कार्यक्रम को और अधिक शक्ति से गतिशील बनाने का आवाहन किया, जिससे अज्ञान, अन्याय में जकड़ी मानवजाति को दुःखों से मुक्ति दिलायी जा सके।

कालम-2 से नेपाल ←

गुरुकुल की आधारशिला श्री स्वामी सर्वानन्द सरस्वती के करकमलों से रखी गयी। सम्पूर्ण नेपाल में आर्यसमाज के प्रचारार्थ स्थापित इस आर्यसमाज एवं गुरुकुल का कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसे पूरा करने के लिये लाखों रुपए की आवश्यकता होगी।

इस पुण्य कार्य हेतु दानी आर्य सज्जनों को उदारतापूर्वक सहायता करनी चाहिये। सहायता राशि स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, दयानन्द मठ, दीनानगर, जिला-गुरदासपुर, पंजाब अथवा मंत्री आर्यसमाज वीराट नगर, नेपाल के पास भिजवायें।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पंखा रोड, सी-ब्लाक, जनक पुरी का दसवाँ वार्षिकोत्सव 14 अप्रैल से 22 अप्रैल 1990 तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य अखिलेश जी के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद महायज्ञ सम्पन्न हुआ। [illegible] लाल आर्य के भजनोपदेश हुए। 20 अप्रैल 1990 को स्वामी अग्निवेश की अध्यक्षता में साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलन आयोजित किया गया। वक्ताओं में प्रो० कैलाशनाथ सिंह प्रो० [illegible] सिंह, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रो० प्रशान्त वेदालंकार, एवं श्री महेन्द्रपाल सिंह आर्य प्रमुख थे। आर्य महिला सम्मेलन एवं कवि सम्मेलन भी आयोजित किये गये। रविवार 22 अप्रैल 1990 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में अभिनन्दन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। स्वामी जी महाराज ने आर्यसमाज द्वारा किये गये मानव कल्याण के कार्यों का विवरण देते हुए जनक पुरी आर्यसमाज के अधिकारियों की, आर्यसमाज के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं का सम्मान करने लिए प्रशंसा की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में प्रो० सत्यव्रत सामवेदी, श्री सुधाकर विद्यालंकार, डा० शिव कुमार शास्त्री, श्री सूर्य देव, तथा श्री राम कृष्ण सतीजा ने अपने विचार व्यक्त किये। आर्य वीर दल दिल्ली ओर से व्यायाम प्रदर्शन भी किया गया। आर्यसमाज के प्रधान श्री [illegible] मदान ने सभी अभ्यागत महानुभावों का धन्यवाद किया।

आर्यसमाज किशन गंज

आर्यसमाज किशन गंज (मिल एरिया) दिल्ली-110076 का वार्षिक निर्वाचन 15 अप्रैल को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ -

प्रधान	-	डा० एस० के० [illegible]
मन्त्री	-	श्री [illegible]
कोषाध्यक्ष	-	डा० रामचन्द्र [illegible]

आर्यसमाज नीलोखेड़ी

आर्यसमाज नीलोखेड़ी, करनाल (हरियाणा) का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हो गया है -

प्रधान	-	श्री हरदेव [illegible]
मन्त्री	-	श्री [illegible] चन्द, सिंह
कोषाध्यक्ष	-	श्री प्रताप चन्द्र

कश्मीर सहायता केन्द्र

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी०ए०वी०संस्थान की ओर से आर्यसमाज मंदिर मार्ग नई दिल्ली में "कश्मीर सहायता केन्द्र" की स्थापना की गयी है। इसके माध्यम से कश्मीर के विस्थापितों को खाद्य-सामग्री वस्त्र एवं आर्थिक सहायता दी जा रही है। बच्चों को स्कूलों में प्रवेश, निर्धन-छात्रों को पुस्तकें तथा स्कूल यूनिफार्म दी जा रही है।

महर्षि दयानन्द धमार्थ औषधालय

आर्यसमाज सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट सुजानगढ़ (जिला चुरू) राजस्थान के सौजन्य से ग्राम-कतुम्बी अलीपुर (जिला-नागौर) तथा ग्राम-मालासी (जिला चुरू) में 17 अप्रैल को महर्षि दयानन्द धमार्थ औषधालयों का क्रमशः उद्घाटन तथा शिलान्यास किया गया।

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट सुजानगढ़ के अन्तर्गत एवं सुव्यवस्था हेतु सात अन्य क्षेत्रों/ग्रामों में महर्षि दयानन्द धमार्थ होम्योपैथिक औषधालय जनसेवा में जुटे हुए हैं।

नेपाल में आर्यसमाज

अब से लगभग 48 वर्ष पूर्व नेपाल में श्री शुक्रराज शास्त्री को पेड़ पर लटकाकर फांसी दी गयी थी। उनका अपराध केवल एक था-नेपाल में वैदिक धर्म के सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं का प्रचार करना। समय बदला और उन्हीं शुक्रराज शास्त्री को नेपाल [illegible] वासियों ने शहीद के रूप में प्रतिष्ठित किया।

परिणामतः 25 मई 1989 को विराट नगर, नेपाल में आर्यसमाज ←

आर्यसमाजों के आगामी कार्यक्रम

आर्यसमाज शादीपुर खामपुर

आर्यसमाज शादीपुर खामपुर नई दिल्ली 110008 का 59वां वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। मुख्य समारोह रविवार 29 अप्रैल को आर्य सम्मेलन के रूप में मनाया जायेगा। समारोह में श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा, महाशय धर्मपाल प्रधान केन्द्रीय सभा, डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा श्री सूर्यदेव महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नन्दकिशोर शास्त्री आदि पधार रहे हैं।

आर्यसमाज पश्चिम पुरी

हमें हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज पश्चिम पुरी (जनता क्व) नई दिल्ली 110063 को समाज मन्दिर के लिये दिल्ली विकास प्राधिकरण से भूमि प्राप्त हो गयी है। आर्यसमाज इसी भूमि पर अपना उत्सव 23 अप्रैल से समारोह पूर्वक मना रही है।

मुख्य समारोह रविवार 29 अप्रैल को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के रूप में मनाया जाएगा जिसकी अध्यक्षता डा० सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा करेंगे।

वार्षिक निर्वाचन आर्यसमाज टैगोर गार्डन

प्रधान – श्री कवर लाजपत राय
मन्त्री – श्री यशपाल ओबराय
कोषाध्यक्ष – श्री प्रेमनाथ गोयल

वार्षिक निर्वाचन आर्यसमाज ग।,

प्रधान – श्री रामदुलारे ग०
मन्त्री – श्री प्रेम चन्द गुप्त
कोषाध्यक्ष – श्री टेकचन्द कथूरिया

झांको गगन के उस पार

शंकर मुनि "वानप्रस्थ"

झांको गगन के उस पार–ढूंढो सृजन के आधार ।

अगम व्यापक अलख अम्बर का स्वरूप निहार
वायु मन की अमित गति है अमित है विस्तार
क्या किसी ने अब तलक देखा इन्हें साकार ।। झां

कौन रंगता तूलिका से तितलियों के पंख
कौन रच देता तरू के सुघर सुन्दर पात
सुमन में शुभ गन्ध, मधुपों में मधुर गुंजार।। झांको

गगनचुम्बी गिरिवरों को है बनाया कौन ।
स्रोत निर्झर नदी नालों है बहाया कौन ।
चांद सूरज ग्रह सजाये, कौन कर साकार ।। झांको...

वायु, मन, आकाश के देखो नहीं आकार
तो जगत करता अजंमा का कहां अवतार
मनुज कृत पाषाण प्रतिमा, क्या सृष्टि के आधार।।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 26,27-4-1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

पृष्ठ ८ से शुक्रवार 13 अप्रैल 1990 को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी का शुभागमन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ। उन्होंने सीनेट हाल में गुरुकुल के अधिकारियों से बात की। वे पुस्तकालय तथा संग्रहालय देखकर बहुत ही प्रभावित हुए। समारोह स्थल पर महामहिम राज्यपाल महोदय का स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० शेर सिंह, पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् डा० धर्मपाल, श्री सूर्य देव, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार डा० विष्णुदत्त राकेश, डा० रणजीत सिंह, श्री वेदव्रत शास्त्री तथा अन्य महानुभावों ने स्वागत किया। राज्यपाल महोदय अपने भाषण में गुरुकुल के द्वारा की गयी राष्ट्र सेवा को स्मरण करके तथा अपने दिवंगत भाई को स्मरण करके पुरानी यादों में खो गए तथा भाव-विह्वल हो उठे। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में वैदिक प्रश्न मंच का आयोजन श्री आचार्य विद्यारत्न ने किया। रात्रि में आचार्य कपिलदेव शास्त्री सांसद, पं० क्षितीश कुमार वेदालंकार के भाषण हुए।

शनिवार 14 अप्रैल 1990 को पूर्णाहुति तथा वेदारंभ संस्कार संपन्न हुआ। अपराह्न में श्री सूर्यदेव महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आयोजित किया गया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह मुख्य अतिथि थे। उद्घाटन भाषण में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने राष्ट्रीय एकता के नियामक तत्वों पर प्रकाश डालते हुए चरित्र निर्माण पर बल दिया। इस अवसर पर डॉ० विष्णुदत्त राकेश, डॉ० महेश विद्यालंकार श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता, डॉ० जयदेव वेदालंकार तथा श्री सुभाष विद्यालंकार ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वैदिक प्रेस गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक २८ | रविवार ६ मई १९९० | सम्वत् २०४५ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सम्वत् १९ २९६९०९०
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश में ५० पौंड १० डालर | दूरभाष ३१०१५०

राष्ट्र के विख्यात् नेत्र चिकित्सक एवं महान् शिक्षाविद्
सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान पद्मभूषण
डा. दु:खन राम हमारे बीच नहीं रहे
-समस्त आर्य जगत् स्तब्ध तथा शोक मग्न

नई दिल्ली, 30 अप्रैल। भारी शोक के साथ यह दु:खद समाचार दिया जा रहा है कि देश के विख्यात् मनीषी विद्वान, नेत्र चिकित्सक, शिक्षाविद् और आर्यनेता डा० दु:खनराम का निधन हो गया है। आपके निधन से आर्यजगत का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र लुप्त हो गया है। जिसकी पूर्ति होना असम्भव है। आपके निधन का समाचार सुनते ही समस्त आर्यजगत मे शोक छा गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा, अन्य प्रांतीय सभाओं तथा देश की प्रमुख आर्य समाजो शिक्षण संस्थाओ मे शोक सभा मे आयोजित कर डा० दु:खनराम द्वारा राष्ट्र तथा आर्यसमाज के लिये की गयी महान सेवाओ को स्मरण किया गया, तथा उन्हे अश्रुपूर्ण श्रद्धांजली दी गयी।

डा० दु:खनराम का जन्म 90 वर्ष पूर्व बिहार के सासाराम शहर मे हुआ था। डा० साहब मे प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ-साथ आधुनिक जगत को चकाचौंध करने वाली प्रखर वैज्ञानिक बुद्धि का अद्भुत सामंजस्य था। अपनी शैक्षणिक योग्यता के साथ वैज्ञानिक प्रतिभा के कारण ही डा० साहब ने पटना मेडिकल कालेज का प्राचार्यपद, बिहार विश्वविद्यालय पटना का कुलपति पद तथा राज्य विधान सभा के प्रमुख सदस्य रूप मे ख्याति प्राप्त की। भारत वर्ष के प्रथम राष्ट्रपति भारतरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद के नेत्र चिकित्सक बने और चिकित्सा जगत् मे की गई महत्त्वपूर्ण सेवाओ के फलस्वरूप भारत सरकार द्वारा आपको पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

शैक्षणिक चिकित्सा सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्रो मे अमूल्य योगदान के साथ साथ डा० दु:खनराम की दिनचर्या सचमुच वैदिक मर्यादा के शत प्रतिशत अनुरूप रही। आप जीवन के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक वेदो के महत्त्व के सन्देश को जन साधारण से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पहुंचाने मे सफल रहे। बिहार आर्यप्रतिनिधि सभा के आप वर्षोंपर्यन्त प्रधान रहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान और प्रधान पदो को सुशोभित कर डा० साहब ने आर्यजगत का लम्बे समय तक मार्गदर्शन किया तथा वैदिक धर्म की अन्तर्जातीयता अन्तर्राष्ट्रीयता सार्वदेशिकता सार्वभौमिकता एवं शाश्वत स्वरूप का उल्लेखकर विदेशी राजनयिको को भी वैदिक धर्म के प्रति आकृष्ट किया।

डा० साहब ने जीवन पर्यन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा को अपना कार्यक्षेत्र बनाये रखा। विद्वानो एवं सन्यासियो की सेवाकर अपने आपको धन्य मानते रहे और प्रतिदिन सन्ध्या एवं हवन के द्वारा अपना जीवन यज्ञमय जीवन बनाने मे आरुढ रहे।

वैदिक विद्वान् पं. यशपाल सुधांशु
वेद प्रचारार्थ एक बार पुन: थाईलैंड की यात्रा पर

आर्य युवा विद्वान् प० यशपाल 'सुधांशु' को एक बार फिर थाईलैंड की आर्य जनता ने वेद प्रचारार्थ आमन्त्रित किया है। श्री सुधांशु 6 मई की प्रात बैंकाक पहुंच रहे हैं।

वैदिक विद्वान् प० सुधांशु की वाणी को परमात्मा का अपूर्व वरदान प्राप्त है। वे वाचस्पति हैं। उनकी वक्तृतायें दिल्ली की आर्य जनता को सम्मोहित करती हैं। उनका वैदिक-दुंदभी घोष सभी वर्गो मे आदरपूर्वक श्रवण किया जाता है। दिल्ली के विभिन्न अंचलो मे निरन्तर वेद व्याख्यान और उसमे हजारो श्रोताओ की उपस्थिति यह शक्ति प० सुधांशु की मधुर वाणी मे है।

प० सुधांशु का जन्म 2 मई, 1955 को ग्राम हमीरपुर जनपद सहारनपुर मे हुआ। उन्होने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार से विद्यावाचस्पति तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्या भास्कर की उपाधियां प्राप्त की। मेरठ विश्वविद्यालय से संस्कृत मे तथा पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी मे एम ए किया। वे संगीत विशारद भी है और आयुर्वेदरत्न भी। भारतीय-संस्कृति से सम्बन्धित सभी क्षेत्रो मे वे परम निष्णात है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प० सुधांशु आर्यसमाज दीवान हाल के धर्माचार्य हैं दिल्ली की अनेक आर्य संस्थाओ से जुडे हैं। उन्होने 'आर्यसन्देश" का चार वर्षो तक सफल संचालन किया, वैश्वानर-पत्रिका के यशस्वी सम्पादक कुछ समय तक सार्वदेशिक' साप्ताहिक के भी सहसम्पादक रहे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि प० यशपाल सुधांशु' जी की विदेश यात्रा पर अपनी शुभकामनायें सम्प्रेषित करती है। प० जी की लेखनी और वाणी का चमत्कार हमे विश्वास दिलाता है कि अनेक भाईयो-बहनो को वैदिक-धर्म मे दीक्षित करेगा।

एक बार पुन आर्यसन्देश' परिवार की ओर से शुभ कामनायें।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक मूलचन्द गुप्त

वेद मनन

अस्तेय

स्व. श्री वेदानन्द जी सरस्वती

वैदिक अध्यात्म प्रसंग में हम अस्तेय का स्वरूप पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं।

लौकिक दृष्टि से—

अस्तेय का स्वरूप है अस्तेय = 'न स्तेय'। स्तेय है चोरी करना और लूटना उसके प्रतिकूल है अस्तेय। जब कोई किसी की वस्तु चुराता या लूटता हुआ देखा जाता है तो वह पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है और दण्ड भागी बनता है।

शिष्ट मर्यादा में—

किसी की वस्तु चुराने या लूटने की भावना तो नहीं होती किन्तु स्वामी की स्वीकृति के बिना कोई किसी की वस्तु लेखनी (फाउन्टेन पैन) आदि उठा लेना है अपना कार्य करके लौटा देता है यह कृत्य लौकिक दृष्टि से ना स्तेय कर्म (चोरी) है और न ऐसा करने वाला पुलिस द्वारा दण्डनीय ठहरता है, परन्तु शिष्ट मर्यादा में वह स्तेय (चोरी-कर्म) समझा जाता है। जिस वस्तु पर अपना अधिकार नहीं उसे उसके स्वामी की अनुमति के बिना अपने उपयोग में ले लेना उसके स्वामित्व का अस्वीकार करना—न मानना एवं अपमान करना है। सम्भव है उसका स्वामी उस वस्तु को अपने उपभोग तक ही मर्यादित रखता हो दूसरों के उपभोग में आने देना उसे अनुकूल न हो तथा कदाचित उस समय में उस वस्तु से उसे कार्य लेना हो अथवा दूसरा व्यक्ति उपभोग कर चुकने के पश्चात् उस वस्तु को स्थानान्तर में रख दे तो स्वामी को आवश्यकता के समय वह वस्तु न मिले या खोजने पर विलम्ब से मिले तो उसको हानि पहुंचे तथा कभी भूल से वस्तु उपभोग में न लेने पर साथ भी चली जा सकती है। जो व्यक्ति स्वामी की बिना स्वीकृति के उपभोग में ले लिया करता है वह व्यक्ति सन्दिग्ध समझा जाता है। शिष्टजन उसे पास बिठाना अभीष्ट नहीं समझते। कारण कि यह सब व्यवहार शिष्ट-मर्यादा में स्तेयकर्म कहलाता है। प्रतिकूल इसके स्वामी को पूछ कर 'क्या मैं उसे उपयोग में ले सकता हूं?'' अनुमति प्राप्त कर उपयोग में लेता है तो यह शिष्टमर्यादा का अस्तेय है।

दार्शनिक अध्यात्म क्षेत्र में—

"स्तेयमशास्त्रपूर्वकं द्रव्याणां परतः स्वीकरणं तत्प्रतिषेधः—पुनरस्पृहारूपमस्तेयमिति" (योगदर्शन 2।30। व्यास) अर्थात् दूसरे से द्रव्यों—धन आदि का शास्त्र-विरुद्ध स्वीकार करना स्तेय है चोरी है और वैसा न करना अस्तेय है तथा दूसरे धन में स्पृहा लालसा रखना भी स्तेय है न रखना अस्तेय है। शास्त्र दूसरे वस्तु को मूल्य देकर लेने का आदेश देता है यह अस्तेय है इसके विपरीत लेना स्तेय है चोरी है। अपितु दूसरे के धन में स्पृहा लालसा रखना—मन में लेने की इच्छा रखना भी स्तेय है चोरी है और दूसरे के धन में स्पृहा लालसा न रखना अध्यात्मक्षेत्र का अस्तेय है।

वैदिक अध्यात्म में —

अस्तेय का और भी उत्कृष्ट स्वरूप दर्शाया गया है —

त्यक्तेन भुञ्जीथा (यजु०40।1)

'त्यक्तेन' त्याग से—वर्जन से और तच्चित्तरहितता से अर्थात् वर्जन = प्रतिदान से और तच्चित्तरहिता = निर्लेप भाव से भोग कर ऋषि दयानन्द ने भी त्यक्तेन का ऐसा ही अर्थ किया।

1—वर्जन अर्थात् प्रतिदिन में भोग करना। कहीं से या किसी से दूध आदि भोग वस्तु सेवन करना है तो प्रतिदान करना चाहिए। ब्राह्मण हो तो विद्या शिक्षा उपदेश का, क्षत्रिय हो तो रक्षा में भुजबल का, वैश्य हो तो धन का, शूद्र हो तो सेवा का प्रतिदान करना होगा, यह अस्तेय है अन्यथा स्तेय है। तथा—

इहैव सन्त प्रतिदद्म एनज्जीवा जीवेभ्यो निहराम एनत्।
अपमित्य धान्य यज्जघासाहमिदं तदग्ने अनृणो भवामि ।।
(अथर्व० 6।117।2)

अर्थ—(इह एव सन्त एनत् प्रतिदद्म) हम यहां ही रहते हुए इस ऋण को दें (जीवेभ्य-एनत्-निहराम) जिनसे लिया है उन जीवितों के प्रति इस ऋण को चुकावें (यत धान्यम् अपमित्य अहं जघास) जिस अन्न को भविष्य में बदले में चुकाना निश्चित करके ऋणरूप में मैंने खाया (अग्ने तत्-इदम्-अनृण—भवामि) हे सर्वज्ञ परमात्मन्! उससे मैं अनृण होऊं।

किसी से ऋण लेकर न देना वैदिक दृष्टि से स्तेय है, जिनसे ऋण लिया उसको जीते हुए लौटाना स्तेय से अपने को बचाना और अस्तेय में रखना है। स्वयं जीते को लौटाना अथवा स्वयं लेने वाले द्वारा न लौटाया जाकर सन्तानों द्वारा लौटाया जाना तो लोकव्यवहार मात्र है वास्तविक प्रतिनिवृत्ति नहीं अपितु स्तेय ही है।

2—तच्चित्तरहितता तो योगदर्शन प्रदर्शित अध्यात्म के अस्तेय से है बहुत उत्कृष्ट है। योगदर्शन का उत्कृष्ट अस्तेय है अस्पृहा लालसा न करना। स्पृहा या लालसा हुआ करती है परधन में किन्तु अपने धन में राग हुआ करता है तब वैदिक अध्यात्म में अस्तेय होगा अपने धन में राग न रखना, अपने धन में राग रखना वैदिक अध्यात्म में स्तेय है। अपने धन में राग भी न रखना वैदिक अध्यात्म में स्तेय है। अपने धन में राग रखने उसमें मन के बन्धन से मनुष्य में कृपणता (कंजूसी) और अदातृता (दान न देने की भावना) आ जाती है। कृपण और अदाता को वेद में नीच कहा गया है —

यश्च पणिरभुजिष्ठो यश्च रेवां अदाशुरिः।
धीराणां शश्वतामहं तदपागिति शुश्रुम ।। (अथर्व० 20।128।4)

अर्थात् जो व्यापारी अपने धन का भोग न करने वाला कृपण (कंजूस) हो और जो धनवान अदाता— दान न करने वाला हो वह धीर गम्भीर सज्जनों में नीच प्रसिद्ध होता है।

इस प्रकार कृपणता और अदातृता पाप है जो कि अपने धन में राग रखने से उत्पन्न होते है। राग है वैदिक अध्यात्म में स्तेय कर्म तब उस निष्पाप से पापवान् होकर समागम कैसे कर सकता है? परमात्मसंग के लिए वैदिक अध्यात्म के अस्तेय त्याग—तच्चित्तरहितता—अपने धन में रागरहितता का भी सेवन करना आवश्यक है।

ओइम्—शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ।।10।।ऋ०।7।35।10।।

प्रभात वेलायें

—देवनारायण भारद्वाज

ऐश्वर्य भोग्य मुक्ता प्रकाश, दे दिए सूर्य नें सारे हैं।
हे सूर्य नहीं उपकार एक, अनगिन उपकार तुम्हारे हैं।

यह सविता जग का निर्माता
है यही सुपोषक जग त्राता
कीटाणु और कृमि नाशक है
यही तिमिर को दूर भगाता।

निशा तिरोहित करके सूरज, ये लाता उषा-उजारे हैं।
हे सूर्य नहीं उपकार एक, अनगिन उपकार तुम्हारे हैं ।।

मधुरिम प्रभात की बेलायें
नित विभावरी होकर आयें
दें दृश्य सृष्टि के मन मोहक
ये मृदुल पुष्टि का सुख लाये।

सूरज तुमने दी उषा हमे, जीवन में किए उजारे हैं।
हे सूर्य नहीं उपकार एक, अनगिन उपकार तुम्हारे है।।

नभ मेघ सूर्य ने मंडराये
जल वृष्टि प्रजा इनसे पाये
खेतों का स्वामी प्रिय किसान
धरती में सोना उपजाये

कर भूमि शमन कृषि कर्म सघन, कृषि जायमाण रवि प्यारे हैं।
हे सूर्य नहीं उपकार एक, अनगिन उपकार तुम्हारे हैं ।।

जगन्नाथ निवास रैदोपुर नई बस्ती
आजमगढ़ (उ० प्र०)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

धधकता काश्मीर



भारत का स्वग काश्मीर ज्वालामुखी के मुख पर है। काश्मीर की घाटी मे सन्नाटा है स्थिति विस्फोटक बनी हुई है भय और आतक का वातावरण चारा ओर व्याप्त है। डल झील के किनारो पर मातम का सा दश्य उपस्थित है। देश विदेश मे आने वाले लाखो सेनानियो ने मुह फेर लिया है। सभी होटल मोटल और बाग वीरान लग रह हैं। विदेशी धन और बारूद के बल पर विदेशा मे प्रशिक्षित आतकवादियो की गतिविधियो के कारण उमगो के साथ प्रेम गीत गाने वाली वहाँ का सडको पर अकाल मृत्यु का ताण्डव नृत्य चल रहा है। भारत के राष्ट्रीय पर्वों को काले दिवस के रूप मे मनाना भारतीय ध्वजा और सविधान को चौराहो पर जलाना भारतीयो विशेष रूप से गैर मुस्लिमो को पलायन करने के लिए मजबूर करना—क्या यह राष्ट्र द्रोह नही है ? यदि है तो फिर केन्द्रीय सरकार राष्ट्र द्रोहियो से निपटने के लिये किस मुहूर्त की प्रतीक्षा कर रही है।

आयसमाज अपने जन्म काल से ही उन शक्तियो से टक्कर लेता रहा है जो राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की दुश्मन रही हैं। आयसमाज का उज्ज्वल इतिहास आर्य-बलिदानियो की गाथाओ से भरा हुआ है। आर्य समाज के शीषस्थ नेताओ ने समय समय पर सरकार को चेताया है विदेशी कुचक्रो से सावधान किया है साथ ही कठोर कायवाही करने पर बल दिया है। परन्तु सरकार की तुष्टिकरण नीति और कछुआ चाल ने कश्मीर घाटी को मौत की घाटी बनने दिया है।

अभी भी समय है। सरकार यदि राष्ट्रीय भावना को सर्वोपरि मानकर आर्य समाज की इन मागो को पक्के इरादो से लागू कर तो काश्मीर और वहाँ के निवासी पूणत राष्ट्रीय धारा मे जुड सकते हैं—

1—पाकिस्तान की सीमा के साथ साथ सुरक्षा पट्टी बनाकर अवकाश प्राप्त सैनिक परिवारो को वहाँ बसाया जाय।

2—पूरे राज्य मे सैनिक शासन लागू किया जाय।

3—राष्ट द्रोही तत्वो के समूलोच्छेदन के लिए प्रभावी कायवाही की जाय।

4—धारा 360 अविलम्ब समाप्त कर वहाँ के निवासियो को राष्ट्रीय धारा मे जोडा जाय।

सम्पादक

काश्मीर नहीं देगें

डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी

माँ का है मुकुट काश्मीर नही देगे कभी
काल हैं कर ल शत्रुओ के सब एक हैं
माँग हा काली विकराली भग रूप दुर्गे
हम कटिबद्ध भले दखते अनेक हैं।
रुद्र शिव प्ररणाय राम कृष्ण वशज हम
विश्व गुरु भारत का सनति हैं एक हैं।
आन रखन क लिए प्राण भी लगाते विश्व
विदित कुरुक्षेत्र म हम पाण्डव म एक हैं ।1।
बलिदान दिवस को मना के लक्ष्य रटन बस
और बलिदानियो को याद कर जाते हैं।
कायर विदेशी शत्रु था यह सब जान कर भी
देशद्रोहियो का अपने देश म बनाते हैं
अग भारती का काटने को रक्तपान किया
प्रजा की सुरक्षा छोड उसे ही मिटाते हैं
कहने का मनुज पशुओ से भी हैं दयाहीन
नाम के विरुद्ध हर कर्म दर्शाते हैं। 2।
जलियाँवाला बाग का जो काड दुहराते रह
अत्याचार शत्रुओ के सदा ही गिनाते हैं।
किन्तु हम राष्ट्रवादी राष्ट्र के ही घातक बन
उससे भी बड काड नित्य ही रचाते हैं
हिंसा के हैं ग्रास बने प्रजा के निरीह जन
स्वय का पुरुष रूप ही दिखाते हैं।
लाल भारती के बने हुए हैं कृतघ्न आज
शकन कसे ? सुपथ नही उन्हे दिखाते हैं ।3।
लूट अपहरण प्रपच छल बढ रहे
क्रूरता का नृत्य निर्बाध नित्य चलता है।
वन्दिता मनुजता के अश्रु पोछन के लिए
निष्ठावान सुन भ ड मे न आज मिलता है।
एकता अखडता के नारे बम गूज रह
माँ का अग काटने का घृणित हृदय पनपता है
छद्म रोग बन के आतकवाद फल रहा
जल रहा मानचित्र रक्षक न दिखता है 4।

प्रोफसर कालोनी
श्यामगज बरेली 243001

दिवगत आर्य श्रेष्ठी

जन्म दिवस 1 मई पर विशेष

प. जे.पी. चौधरी काव्यतीर्थ

खण्डन मण्डन प्रधान साहित्य के प्रगल्भ लेखक था उत्कृष्ट शास्त्रार्थी प० जे०पी० चौधरी का जन्म मिर्जापुर जिले के अन्तर्गत ग्राम मे श्री रामलगन चौधरी के यहाँ 1 मई 1881 को हुआ। सत्रह वर्ष की आयु मे आपने उर्दू मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की पुन 1900 ई० मे नामल शिक्षा प्रथम श्रेणी मे पास की। तदनन्तर आप मिशन हाई स्कूल मिर्जापुर मे अध्यापक का काय करने लग इसी बीच आपने फारसी विषय लेकर एट्रेंस परीक्षा उत्तीर्ण कर ली अब दह मध्य प्रदेश के चार राज्य मे शिक्षा विभाग के निरीक्षक का पद मिल गया। यहाँ से ये बिहार चले गए और राची के सट पाल हाई स्कूल म सस्कृत अध्यापन करने लग। चार वर्ष तक इस पद पर रहकर व जमन मिशन हाई स्कूल मे सस्कृत के प्रधानाध्यापक बन गए। यही से आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से ऋग्वेद की मध्यमा तथा काव्यतीर्थ परीक्षाय उत्तीर्ण कर ली तथा वाराणसी के डी ए वी कालज म सस्कृत के प्रवक्ता पद पर नियुक्त हो गए।

चौधरी जी का सस्कृत ग्रन्थो का स्वाध्याय अत्यन्त विशाल तथा गम्भीर था उपनिषद वेदान्त निरुक्त आदि के साथ साथ आपने आलोचनात्मक दृष्टि से अठारह पुराणो का विस्तृत अध्ययन किया था।

आयसमाज बुलन्दशहर काशी के नवयुवक सक्षम प्रचारक के पारित्र चौधरी जी के सम्पादन म प्रकाशित हुआ। इस पत्र के बन्द हो जाने पर आपने पखण्ड खण्डिनी प्रकाशित की इन पत्रो के माध्यम से चौधरी जी ने प० काशी के शास्त्री प० अखिलानन्द आदि सनातन पण्डितो द्वारा आयसमाज के सिद्धान्तो पर किय जाने वाले आक्षेपो का सप्रमाण खण्डन किया

चौधरी जी बनारस छावनी मे आन काशी गुरुकुल की स्थापना की और इस सस्था के माध्यम से सस्कृत का प्रचार किया गया। शास्त्रार्थ कला मे पूर्ण निष्णात थे। इनके अनेक शास्त्रार्थ प० अखिलानन्द तथा प० कालूराम आदि सनातन पण्डितो से हुए थे जिनमे सनातनी पण्डितो को मुँह की खानी पडी थी। उल्लखनीय शास्त्रार्थ है—26 मई 19 को बेतिया (बिहार) शास्त्रार्थ मृतक श्राद्ध विषय पर मढौरा (सारण) मे दि० 1 जुलाई 1924 को 28 मई 1929 को मगर जिले के वरियारपुर ग्राम म विधवा विवाह पर लक्ष्मणगानिला के रासडा ग्राम मे 20 जनवर 1931 को तथा आरा जिले के घबरहरा गाम म विधवा विवाह पर। बडहल गज

शेष पृष्ठ 5 पर

धर्म से ही साम्प्रदायिकता रूकेगी

□वैद्य महेन्द्र पाल सिंह आर्य

शास्त्रो मे स्थान स्थान पर धम की विशेष महिमा वर्णित है। परन्तु धम है क्या यह एक महान प्रश्न है ? कई कारणो से धम इतनी अस्पष्ट बात बनी हुई है कि इस पर आचरण कठिन हो जाता है। मन्दिर जाना नित्य स्नान करना देवता को बलि देना एकादशी इत्यादि का व्रत रखना सिर पर चोटी रखना अथवा विशेष प्रकार के कपड़ पहनना इत्यादि सब धम माने जाते हैं। कही कही दीवाली की रात को जुआ खेलना भी धार्मिक कृत्य समझा जाता है। इसके साथ ही किसी पथ अ चार विचार को भी धर्म का नाम दिया जाता है। बौद्ध धम वैष्णव धम शैव धम इत्यादि का पूजाविधि को भी धम ही माना जाता है।

इस प्रकार हिंदू जाति मे धम की भारी महिमा होते हुए भी इसके अर्थों मे अस्पष्टता विस्मयजनक ही है। इस अस्पष्टता का कारण हिंदुओ की अपने शास्त्रो से अनभिज्ञता ही मानना पड़गा। शास्त्रो मे तो धम की व्याख्या सवथा सरल और स्पष्ट शब्दो मे की गई है।

वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन
एतच्चतुर्विध प्राहु साक्षाद्धमस्य लक्षणम्।

मनु० ‐ 12

वेद स्मृति सदाचार और स्वस तोष ये धम के चार लक्षण हैं।

यह तो बताया है कि हिंदू शास्त्रो मे धम का स्रोत कहां है। आत्मसन्तोष और सदाचार भी धम के लक्षण हैं परन्तु जब भी इनके विषय मे स देह हो तो इसकी परीक्षा वेद और धम शास्त्रो से करनी चाहिए।

स्मति शास्त्र मे धम की व्याख्या स्पष्ट रूप मे की है—

चतुर्भिरपि च व तर्नित्यमाश्रमिभिद्विजै
दशलक्षणको धम सविनव्य प्रयनत ॥
धति क्षमा दमो स्तयशौचमिन्द्रियनि ह
धीर्विधा सत्यमक्रोधो दशक धमलक्षणम ॥

मनु०6 91 92

यह व्यापक धम की व्याख्या है जो समस्त समाज और प्रत्येक आयु के मानव के लिए एक समान है। हम शुद्ध अथवा द्विज कम से मानते हैं ज म से नही। ऊपर दस व्यापक धर्मों का वणन किया है। यह धम मनुष्य सवत्र और सबके द्वारा पालन करने के लिए हैं। इनके अतिरिक्त विशेष परिस्थिति काल और आयु म करने योग्य कर्मों को विशष धम कहा है। ये सामयिक हो जाते हैं उदाहरण स्वरूप भि न भि न देशो म विवाह का विधि भि न भि न है। कही अग्नि को साक्षी रखकर उसके चक्कर काट कर विवाह सम्प न होना है और कही यशु मरियम के सामने घुटने टेककर पादरी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करने म विवाह हो जाता है। किन्ही देशो म मजिस्ट्रेट के ने बचन मात्र से विवाह हो जाता है। य विवाह प्रक्रिया एक वि प धम है जो काल के अनुसार भि न भि न हो सकता है। ... मत्र मानजि स्था नथा ... कहलाते हैं। ... कुल तथा ... नुसार धम विशेष है ... [illegible] ... —धम का मूल है। इसका पथ ... कनून ... नहीं धम धरण करने ... है। ... यह है ... व्याक ... है उसमे ... का ... देन सपल ... अनुकूल ... हृदय ... करने वाले धम शास्त्र करते है। ... धम मूल हैं और ... जानने वालो का स्मृति ... शान भी धममूल है। ... का अथ धममूल मे प्रमाण समझना चाहिए।

आजकल रीति रिवाज को धम की सज्ञा दे दी गई है जो कि भ्रममूलक है। इसके साथ ही वर्णाश्रम म करने योग्य कम को भी धम ही कहा जाता है। इन सब धर्मों के विषय मे यह कहा जा सकता है कि काल अवस्था स्थान भद से धम भिन्न भिन्न होते हैं फिर भी व्यापक धम के विपरीत होना उचित नही। व्यापक धम वही है मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए होता है। राज धम व्यापक धम का उल्लघन नहीं कर सकता। जहाँ पर व्यापक धम का उल्लघन हुआ वही पर भ्रांति पैदा होती है और शका उत्प न होकर सशय उत्पन्न होता है। इन्ही कारणो से प्राचीनकाल से लेकर आज तक युद्ध होते रहे हैं।

आजकल जो धम का स्वरूप व्यापक रूप मे माना जाने लगा है वह सम्प्रदाय विशष का द्योतक है। सम्प्रदाय ने ही धम का स्वरूप ले लिया है। वास्तव मे धम को समझने के लिए पथ अर्थात मत विशष को समझना भी आवश्यक है पथ का शाब्दिक अथ माग है। किसी विशष काय की सिद्धि के लिए ग्रहण किया गया माग पथ कहाता इसी को उर्दू मे मजहब और अग्रजी मे रिलीजन कहते है। ईश्वर प्राप्ति मोक्ष प्राप्ति अथवा अन्य प्रकार के आत्म अभ्युदय के लिए जिस माग पर चला जाए उसको पथ अथवा मत कहते हैं। यह धम से सवथा भि न वस्तु है तथा भिन्न भि न व्यक्ति जो उन्नति के भि न भि न स्तर पर पहुचे होते हैं अथवा जो भि न भिन्न प्रकार के स्वभाव और प्रकृति वाले हैं अथवा भि न भिन्न आयु तथा मानसिक विकास वाल हैं वे भि न भिन्न पथ के अनुयायी हो सकते हैं। अत पथ सम्प्रदाय अनेक हो सकते हैं चाहे उनका गन्तव्य माग एक ही हो परन्तु धम मे भद नही हो सकता है। धम धारण करने योग्य व्यवहार का नाम है। इस भूतल पर रहते हुए सभी मानवो के लिए धम एक ही है। धम का सबध व्यवहार से है विचार से नही। पथ का सबध मुख्यत विचार से है। इन तथ्यो को न समझते हुए हम आज धम और सम्प्रदाय को एक शब्द मे व्यवहार कर रहे हैं जो सवथा छोड़ देने योग्य है। धम और सम्प्रदाय अलग अलग हैं।

आज देश मे जो विघटनकारी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं उसका मूल कारण एक ही है कि हमने सम्प्रदाय को ही धम मान लिया है। आज प्रजातत्र के युग मे भी साम्प्रदायिकता की भावना बढ़ती ही जा रही है। जातिवाद का घोष हमारे प्रजातत्र को मूल रूप से जकड़ हुए है। इसी कारण आज देश के विभिन्न प्रातो मे साम्प्रदायिक द्वष की भावना बढ़ती ही जा रही है। पजाब और कश्मीर तथा बिहार इनके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। कहा तो यह भी जाता है कि यह सब झगड़ दगे फसाद राजनतिक कारणो से हो रह हैं और बोट पाने की राजनीति हमारे ऊपर हावी हो रही है। ऐसे समय मे आवश्यकता इस बात की है कि धम के वास्तविक स्वरूप को समझा जाए और व्यापक धम के लक्षणो के आधार पर राज नियम बनाये जाएँ जि हे हमारे देश की लोकसभा अथवा विधानसभाए भी न बदल सक। हमारी लोकसभा और प्रातीय विधान सभाओ के जो राज नियम है वह व्यापक धम के आधार पर व्यापक धम के वास्तविक अथ को ही समझ कर बनाए जाए। यदि हमने धम के वास्तविक स्वरूप को समझ लिया और स म्प्रदायिकता की लहर से दूर रह तो ... परम्परा का निर ... कर सक। राज नियमो को सम्प्रदाय विधि से अलग कर जन जन की आकाक्षाओ की पूर्ति और स ... के आधार प बना सक और वसे ही आचरण कर सक तभी हम ... म हम साम्प्रदायिकता की बढ़ती हुई लहर को रोक सकग।

डा. त्यकेतु पुरस्कार

6 माच 1990 ... की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर ... की ओर स 1000/रु० का डा० स यकेतु स्मृति परस्कार ... घोषणा की गई

... इस पुरस्कार की घोषणा करते हुए विवेक प्रकाशन की सचालिका श्रीमती आशा रानी ने कहा है कि यह पुरस्कार प्रतिवष 16 माच को दिल्ली के स्कूलो मे समाजशास्त्र के सव श्रेष्ठ अध्यापक को दिया जायेगा।

पृष्ठ 3 का शेष

(जिला गोरखपुर) मे प० कालूराम शास्त्री से मूर्ति पूजा पर ।

प० ज पी चौधरी ने विभिन्न खण्डनात्मक ग्रन्थ लिखे हैं । इसके अतिरिक्त आपने वैदिक सिद्धान्तो की पुष्टि तथा सस्कृत शिक्षण पर भी ग्रन्थ रचना की है । इनके द्वारा रचित ग्र थो का विवरण इस प्रकार है —

1 अवतार वाद मीमासा (प० कालूराम शास्त्री लिखित अवतार मीमासा का खण्डन)
2 पुराण पर्यालोचन
3 पौराणिक तीर्थ मीमासक ।
4 मूर्ति पूजा प्रश्नोत्तरी
5 विधवा विवाह प्रश्नोत्तरी
6 गरुडपुराणोक्त व श्राद्ध वेद विरुद्ध हैं ।
7 गणेश महादेव के पुत्र नही हैं ।
8 सनातन धर्म रहस्य ।
9 शुद्धि प्रश्नोत्तरी
10 वैदिक वर्णव्यवस्था
11 ऋषि दयानन्द का सत्यस्वरूप
12 वेद और पशु यज्ञ—
13 यज्ञोपवीत शका समाधान ।
14 अछूतो का मदिर प्रवेश सनातन धर्मानुकूल है ।
15 महाभारत की रहस्यमय कथाये—
16 क्या अहिल्या पत्थर की बनी थी ? क्या हनुमान जी वानर थे ?
17 वैदिक धर्म शिक्षा—
18 सरल सस्कृत प्रवेशिका—दो भाग ।
अन्य ग्र थ महा राणा प्रताप अजय तारा विश्राम बाग ।

डा० भवानीलाल भारतीय
दयान द पीठ पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ

साहित्य समीक्षा

प० गुरुदत्त विद्यार्थी

मू० ले० लाला लाजपतराय अनुवादक डा० भवानीलाल भारतीय

प्रबुद्ध पाठको के समक्ष लाला लाजपतराय कृत प० गुरुदत्त विद्यार्थी के अग्रेजी जीवनचरित के हिन्दी अनुवाद का परिचय कराते हुए हमे अपार प्रसन्नता हो रही है । प० गुरुदत्त आर्यसमाज के विगत वैदिक विद्वानो मे शीर्षस्थ स्थान रखते हैं । केवल पच्चीस वर्ष की अल्पायु मे ही उन्होने आर्यसमाज और वैदिक धर्म की जो महती सेवा की वैसा करना दीर्घायु प्राप्त लोगो के लिये भी सम्भव नही हुआ ।

प्रस्तुत जीवनचरित का महत्व कुछ विशिष्ट कारणो से है सर्वप्रथम तो इस पुस्तक की प्राचीनता की ओर दृष्टिपात करे । इसका प्रकाशन आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व 1891 मे उस समय हुआ जब प० गुरुदत्त के निधन को एक वर्ष हो हुआ था । और पुस्तक के लेखक लाला लाजपतराय जी हिसार मे वकालत करते थे । प गुरुदत्त का जन्म 26 अप्रैल 1864 को हुआ था तथा उनका परलोकगमन 19 मार्च 1890 को हुआ था इस प्रकार उन्होने अपने जीवन के छब्बीस वर्ष भी पूरे नही किये । इस [illegible] के सम्बन्ध मे दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इसकी रचना देश के एक महान नेता और स्वतन्त्रता के [illegible] लाला लाजपत राय की लेखनी से हुई है [illegible] केवल [illegible] वर्ष हा [illegible] । पुन [illegible] केवल [illegible] दान [illegible] आर्यसमाज मे प्रवेश लगभग एक समय [illegible] एक ही दिन म हुआ था [illegible] म० पुरुषो को इस महान सस्था मे प्रविष्ट कराने वाले महापुरुष भी आर्यसमाज के पुरानी पीढी के सर्वमान्य नेता लाला साईदास ही थे । महात्मा मुन्शीराम जैसी एक अन्य हस्ती को आर्यसमाज मे लाने का श्रेय भी इसी महापुरुष को है ।

जीवनचरित लेखक के लिये आवश्यक है कि अपने कथा नायक के बारे में उसकी जानकारी भरपूर प्रामाणिक तथा अधिकृत हो लाला लाजपतराय के लिये प० गुरुदत्त के जीवन विषयक तथ्यो का सग्रह तथा उन्हें व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करना कोई कठिन कार्य नहीं था । वे स्वय ही ए वी कालेज लाहौर की स्थापना के आन्दोलन मे प० गुरुदत्त के निकट सहयोगी और साक्षी थे । यह अलग बात है कि आगे चलकर लाला लाजपतराय का सम्बन्ध आर्यसमाज के उस धडे के साथ हो गया जो कल्चर्ड दल के नाम से जाना गया और जो प० गुरुदत्त तथा उनके साथियो से कई बातो मे भिन्न मत रखता था तथापि लालाजी के लेखन की निष्पक्षता तथा सहृदयता का प्रमाण इस ग्र थ की एक एक पक्ति मे मिलता है ।

पुस्तक को पढने से कुछ अन्य ऐतिहासिक तथ्य सामने आते हैं । यद्यपि लाला लाजपतराय आगे चलकर भारत की राजनीति मे एक प्रकाशमान नक्षत्र की भाँति चमके किन्तु अपने युवाकाल मे जब वे आर्यसमाज आन्दोलन के अधिक निकट थे उस समय की शास्त्रीय अध्ययन मे उनकी गहन अभिरुचि का पता भी इसी पुस्तक के अध्याय सख्या 10 11 और 12 से लगता है । उन्होने प० गुरुदत्त रचित ग्र थो को न केवल गम्भीरता से पढा ही था अपितु वे उनके द्वारा किये गये ईश और माण्डूक्य उपनिषदो की व्याख्याओ की तुलना पश्चिमी लेखक आर्चिबाल्ड गफ ब्रह्मसमाज के सस्थापक राजामोहनराय तथा प० भीमसेन शर्मा द्वारा लिखित टीकाओ से करते हैं तथा प० गुरुदत्त कृत अर्थों की श्रेष्ठता शुद्धता एव प्रामाणिकता को भी सिद्ध करते हैं । यह एक ही तथ्य इस बात को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि पुरानी पीढी के आर्यसमाजी अपने धर्म ग्र थो और शास्त्रीय ग्र थो मे छिपे तथ्यो को आत्मसात करने के लिये कितने उत्सुक रहते थे

पुस्तक की एक अन्य विशिष्टता यह भी है कि यह लाला लाजपतराय की प्रथम प्रकाशित पुस्तक है । कालान्तर मे उनकी अनेक पुस्तके उर्दू एव अग्रेजी मे छपीं किन्तु प० गुरुदत्त के इस जीवनी लेखन ने ही आगे के उनके जीवनचरित लेखन के मार्ग को प्रशस्त किया था जिसके अन्तर्गत गैरीबाल्डी और मैजिनी जैसे इटली के देशभक्तो के अतिरिक्त श्रीकृष्ण शिवाजी तथा स्वामी दयानन्द जैसे भारतवर्षीय महापुरुषो के जीवन की रूप रेखाये भी उनकी मार्मिक लेखनी मे प्रसूत होकर पाठको के समक्ष आईं ।

आशा है आर्यजगत मे इस ग्र थ का सर्वत्र स्वागत होगा ।

डा० धर्मपाल

(प्रकाशक आर्य प्रकाशन कुण्डेवालान दिल्ली मूल्य —30 रुपये)

कश्मीर सहायता केन्द्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निम्न स्थानो पर कश्मीर के विस्थापितो की सहायतार्थ सहायता केन्द्र खोले गये हैं —

1 सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन आसफ अली रोड नई दिल्ली 110002 दूरभाष 3274771 320985

2 दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड नई दिल्ली 110001 दूरभाष 310150 311280

3 आर्यसमाज [illegible] दूरभाष 73 440

सभी [illegible] आर्यसमाज के [illegible] निवेदन है कि कश्मीर के [illegible] खाद्य सामग्री वस्त्र पुस्तके एव कापिया तथा अधिक सहयोग [illegible] दिये गये पतो पर भेजकर पुण्य के भागी बने धनराशि नकद मनिआर्डर चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजे ।

महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर

आर्य समाज तिलकनगर द्वारा सचालित महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलकनगर का वार्षिकोत्सव 15 अप्रैल 1990 को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सासद श्री मदन लाल खुराना, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा धर्मपाल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने सामयिक राष्ट्रीय परिस्थितियो पर अपने विचार व्यक्त किए तथा विद्यालय के छात्रो द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमो की प्रशसा की।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कर कमलो से विजेता छात्र छात्राओ ने पुरस्कार ग्रहण किये।

ग्राम रोजड़ी में वेदप्रचार

ग्राम रोजडी, (खण्डवा) के स्थानीय मेले मे आर्य समाज खण्डवा की ओर से वैदिक सत्सग के बाद वैदिक साहित्य वितरण कर वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। आर्यसमाज के प्रधान श्री मावजी भाई भानुशाली एव श्री पूरनचन्द आर्य, कन्हैया लाल जी खण्डेवाल ने अपने व्याख्यानो द्वारा सामाजिक कुरीतियो को हटाने पर बल दिया।

वैदिक पुस्तकालय एवं शोध संस्थान लखनऊ

श्रीमद्दयानन्द बालसदन मोतीनगर लखनऊ मे 10 मई 1990 को प्रात 8 बजे यज्ञ के पश्चात् 'स्वामी सत्यप्रकाश वैदिक पुस्तकालय एव शोध सस्थान" की आधार शिला रखी जायेगी। इसके साथ ही सस्कृत के प्रचार प्रसार के लिये "सस्कृत भवन" की भी आधार शिला स्थापित की जायगी। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर्य-नरेश डा० सजय सिंह (अमेठी) हैं, जिनके कर कमलो से यह कार्यक्रम सम्पन्न होगा। पूज्य स्वामी जी के साहित्य की प्रदर्शनी भी लगाई जायेगी।

'सस्कृत भवन" का शिलान्यास स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती जी द्वारा किया जायेगा। इस अवसर पर सस्कृत-प्रचार मे आजीवन समर्पित आन्ध्र प्रदेश वासी आचार्य प० धर्मानन्द शास्त्री भी सम्बोधित करेंगे। सुप्रसिद्ध उद्योगपति एव आर्य-नेता श्री सुशील कुमार अग्रवाल (लखीमपुर) कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे।

लखनऊ के लिए गौरव की बात है कि बालसदन अपने परिसर के अन्तर्गत 1500 वर्गमीटर भूमि मे सस्थान स्थापित कर रहा है। इसके लिए कई लाख रुपये मूल्य का साहित्य भी प्राप्त हो चुका है।

इस पुस्तकालय मे स्वामी जी का सम्पूर्ण साहित्य, अविकल पाण्डुलिपियाँ, वेदो के अनुवाद की पाण्डुलिपियाँ, एव महर्षि दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द, तथा महात्मा हसराज प्रभृत विद्वानो की हस्तलिपियाँ भी विशेष रूप से सग्रहीत की जायेंगी विभिन्न धर्मग्रन्थो पर शोध कर्ताओ समाज के चिन्तको तथा छात्रो आदि के लिए यह सस्थान अपना महत्वपूर्ण योग दान देगा।

प्रधानाध्यापक की आवश्यकता

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर द्वारा सचालित विरजानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लिए एक प्रधानाध्यापक योग्यता—एम०ए०बी०एड० एव पाच वर्ष तक सैकेण्ड्री स्कूल के प्रधानाध्यापक का अनुभव अथवा पाच वर्ष तक हायर सैकण्डरी कक्षाओ को पढाने का अनुभव आवश्यक। वेतन श्रृखला—2200-4000 में प्रारम्भिक वेतन रु०2948/। आर्य समाज से सम्बन्धित प्रार्थी को प्राथमिकता आवेदन मत्री के नाम 10/ के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करें।

देवबन्द में संस्कृत सम्मेलन

मुस्लिम जगत का विख्यात शिक्षण सस्थान दारुल उलूम की नगरी देवबन्द जिला सहारनपुर उ प्र मे प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले बाला सुन्दरी मेले मे अवसर आर्य समाज देवबन्द मे उत्साही कार्यकर्ताओ ने तीन दिवसीय क्षेत्रीय वेद प्रचार का आयोजन किया। नवसम्वत्सर एव आर्य समाज स्थापना दिवस पर एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, जिसका नगरी के विभिन्न भागों मे सभी समुदाय के लोगो ने स्वागत किया।

तीन दिवसीय कार्यक्रम का उक्त समारोह 'सस्कृत सम्मेलन" के रूप मे हुआ। दयानन्द बाल मन्दिर की छात्राओ ने जहा सस्कृत मे स्वागत-गान तथा 'आर्य राष्ट्र बनायेंगे " प्रस्तुत किया वहा शिव शिशु मन्दिर के छात्रो ने "जय भारतम्" सस्कृत नाटिका प्रस्तुत की। पाँचवर्षीय बालिका के गायत्री-मन्त्र के साथ 'हम बच्चे हैं भारत के " गीत ने उपस्थित जन समूह को विशेष आकर्षित किया। इस अवसर पर प्रो० विष्णुकान्त शुक्ल ने सस्कृत की आशुकविता रचना कर जन समूह को सस्कृत की सरलता बताई। प० विश्वम्भरदेव शास्त्री प० देवदत्त शास्त्री, स्वामी कौशलेन्द्र आदि विद्वानो ने ऐतिहासिक घटनाओ की चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार मुगलो ने नालन्दा के विशाल पुस्तकालय को जलाकर नष्ट किया था। तत्कालीन सस्कृत प्रेमियो ने सस्कृत के ग्रन्थो को किस प्रकार छिपाकर रखा और वैश्य समाज ने पुन सस्कृत पाठशालायें खोलकर प्रचार किया। विद्वानो ने कहा कि सस्कृत के बिना भारतीय-सस्कृति गूगी रहेगी, अत प्रत्येक भारतीय को सस्कृत अवश्य पढनी चाहिए।

इस अवसर पर क्षेत्रिय सस्कृत विद्वानो को प्रशस्ति-पत्र भेंट किये गये।

निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज धूरी

प्रधान—श्री चिरजी लाल
मन्त्री—श्री श्यामलाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सतीशपाल आर्य

आर्यसमाज भागलपुर

गत 8 अप्रैल को आर्यवीर दल का एक विशाल सम्मेलन आर्यसमाज मदिर भागलपुर के विशाल प्रांगण में सोल्लास सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन मे स्वामी आत्मानन्द श्री ब्र० नरेन्द्र लाल आर्य, डॉ० कस्तुरीलाल आर्य, ब्र० वीरेन्द्र, श्री शिवधनजी व श्री दिलीप जी ने सम्बोधितकर, आर्य नवयुवकों को आर्यसमाज के मन्तव्यो के प्रचार-प्रसार मे समर्पित भावना से जुडने का आह्वान किया।

श्री रामाज्ञा जी 'आर्यपुत्र' बौद्धिकाध्यक्ष पूर्वी उ० प्र० ने आगतजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

स्वामी विद्यानन्द अस्वस्थ

वैदिक विद्वान स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती पिछले दिनो से अस्वस्थ चल रहे हैं। चिकित्सको ने पूर्ण विश्राम का परामर्श दिया है। अत स्वामी जी आगामी तीन मास तक सामाजिक गतिविधियो मे भाग नही ले सकेंगे।

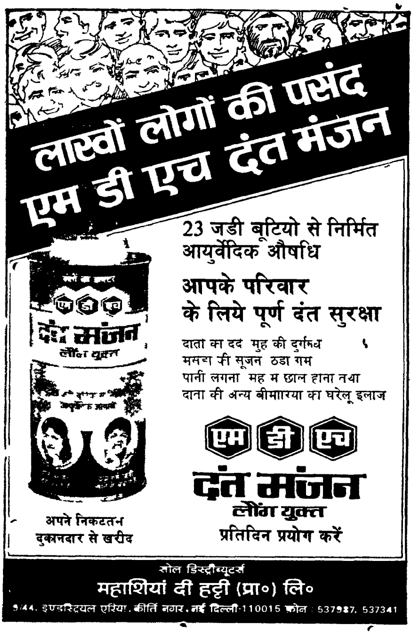
आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्यवीर दल परिमण्डल गोरखपुर का एक विशाल प्रशिक्षण शिविर 3 से 10 जून तक आर्यसमाज मदिर जनपद मऊ (उ० प्र०) के प्रागण मे आयोजित किया जा रहा है जिसके प्रशिक्षक अमेदमुनि (हाथरस) होगे।

इसी सम्बन्ध मे परिमण्डल के समस्त आर्यवीरो का एक सम्मेलन 20 मई को कोपागज, आजमगढ मे आहूत किया गया है।

स्त्री आर्यसमाज धूरी

प्रधाना—श्रीमती रुक्मिनी देवी
मन्त्राणी—श्रीमती कृष्णा आर्या
कोषाध्यक्ष—श्रीमती मधुरानी









आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 3, 4-5-90 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल

की ओर से

आर्यसमाज मंदिर डिफेंस कालोनी में

आर्यसमाज स्थापना दिवस

रविवार, दिनांक 6 मई 1990 को मनाया जा रहा है।

अध्यक्षता—श्री हीरालाल चावला, डी ए वी प्रबन्ध समिति करेंगे। श्री महाशय धर्मपाल मुख्य अतिथि होंगे।

प्रो० रासासिंह संसद सदस्य, प्रो० रतन सिंह, डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्री महेशचन्द्र मल्होत्रा प्रमुख वक्ता होंगे।

समारोह प्रातः 8 बजे यज्ञ से प्रारम्भ होगा तथा समारोह के पश्चात् 1-30 बजे ऋषि-लंगर होगा।

भोपाल वाला आर्य सीनियर हायर सैकण्डरी स्कूल, श्रीगंगानगर (राज.) आवश्यकता

प्रधानाचार्य (पुरुष) की आवश्यकता है। न्यूनतम योग्यता स्नातकोत्तर एवं बी०एड० डिग्री सहित 5 वर्ष का सैकण्डरी हायर सैकण्डरी कक्षाओं को पढ़ाने का अनुभव। आयु लगभग 50 वर्ष। असाधारण मामले मे आयु सीमा मे छूट देय। प्रशासनिक अनुभव एवं आर्य समाजी विचारो वाला व्यक्ति अधिक अनुकूल रहेगा। वेतनमान 2650-4500 एवं महगाई भत्ता राजकीय नियमानुसार। पूर्ण बायोडाटा पासपोर्ट साईज फोटो एवं शैक्षिक योग्यता एवं अनुभव प्रमाण पत्रो की प्रमाणित प्रतियों सहित आवेदन पत्र 14 मई 1990 तक प्रबन्धक के नाम भेजें। [illegible] वेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जावेगा।

प्रधान

सेवा में —

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा ट्रिबल आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी, आई०के० प्रिंटर्स भोजपुर दिल्ली-५३ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक २९ | रविवार १३ मई १९९ | सम्वत् २०४६ विक्रमी | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर

शताब्दी समापन समारोह

18, 19 व 20 मई, 1990 शुक्र, शनि तथा रविवार को

विभिन्न सम्मेलनों का भव्य आयोजन

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, महात्मा आर्य भिक्षु तथा पं. राजगुरु शर्मा के ब्रह्मत्व में प्रतिदिन यज्ञ। प्रस्तावित कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा—

दिनांक	समय	सम्मेलन	अध्यक्ष	प्रमुख वक्ता
18 मई	प्रात 8 45	वेद सम्मेलन	— स्वामी आनदबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	— श्री देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय (राज्यपाल राजस्थान) प्रा० रामप्रसाद वेदालंकार (कुलपति कागडी वि वि), डा० भवानीलाल भारतीय (चंडीगढ़) डा० कृष्णलाल (दिल्ली) डा० सत्यव्रत राजेश (हरिद्वार) डा० सच्चिदानन्द शास्त्री डा० निरूपण विद्यालंकार, डा० सुधीर कुमार गुप्त
	मध्याह्न 1100	शिक्षा सम्मेलन	—प्रो० वेदव्यास प्रधान डी ए वी प्रबन्ध समिति	—श्रीमती सुमित्रा सिंह (ऊर्जा एव शिक्षामन्त्री राज०), दत्तात्रेय आर्य डा० तुलसीराम, डा० रामप्रकाश डा० राम गोपाल डा० धर्मपाल, दिल्ली (सयोजक)
	रात्रि 8 00	हिन्दी सम्मेलन	—डा० वेदप्रताप वैदिक निदेशक, भाषा	— श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्यमन्त्री-राज०), स्वामी अग्निवेश, डा० विष्णुदत्त राकेश श्री पुष्पेन्द्र चौहान, श्री सूर्यदेव।
19 मई	प्रात 9 00	शुद्धि सम्मेलन	—स्वामी ओमानन्द सरस्वती अध्यक्ष परोपकारिणी सभा	—प्रो० शेर सिंह (कुलाधिपति-कागडी वि वि), स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प० पृथ्वीराज शास्त्री, प० जय प्रकाश आर्य
	मध्याह्न 2 00	महिला सम्मेलन	—श्रीमती कमला पूर्व राजस्व मन्त्री-राज	सुश्री उमा भारती (सासद), श्रीमती उज्ज्वला अरोडा (विधायिका), डाक्टर सावित्री शर्मा (बरेली) डा० सरोज दीक्षा (दिल्ली), श्रीमती कुसुम आर्या (वनस्थली) श्री मती शकुन्तला आर्या (दिल्ली)
	रात्रि 8 00	पजाब कश्मीर समस्या	—प० क्षितीश वेदालंकार सम्पादक-आर्य जगत	—श्री हरिदेव जोशी (पूर्व मुख्यमन्त्री राज०) श्री वीरेन्द्र (पजाब), डा० योगेन्द्र कुमार (जम्मू कश्मीर) श्री जीवन सिंह उमरागल, श्री हरिकिशन सिंह सुरजीत
20 मई	प्रात 9 00	युवक सम्मेलन	—कैप्टेन देवरत्न आर्य	—श्री शरद यादव (कपडा मन्त्री भारत), डा० चन्द्रभान (परिवहन मन्त्री-राज० स्वामी सुमेधानन्द, डा० बलबीर (रोहतक), डा० सुभाष वेदालंकार,
	मध्याह्न 2 00	सामाजिक क्रांति सम्मेलन	— श्री कैलाशनाथ सिंह सासद	—श्री अजीत सिंह (उद्योग-मन्त्री-भारत), श्री कुम्भाराम आर्य श्री रासा सिंह (सासद), श्री कपिल देवशास्त्री (सासद) श्री चिंतामणि
	रात्रि 8 00	राष्ट्र निर्माण मे आर्य समाज की भूमिका	—स्वामी इन्द्रवेश	—श्री सत्यनारायण रेड्डी (राज्यपाल-उ०प्र०), श्री दिनकर लाल महता (मुख्यन्यायाधीश राज०), डा० प्रशान्त वेदालंकार, डा० हर्षनारायण, डा० सुरेश चन्द्र त्यागी।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद मनन-

ईश्वर के दर्शन

—देवीदास आर्य मेरठ छावनी

एक बार एक नाई ने मुझसे प्रश्न किया कि क्या आपने कभी ईश्वर को देखा है? मैंने उत्तर दिया कि नहीं देखा। इस पर उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि जब आपने ईश्वर को नहीं देखा तो फिर आप हर समय ईश्वर 2 की रट क्यों लगाते रहते हैं? मैंने उत्तर दिया कि यह आवश्यक नहीं कि जिस वस्तु को हम देख न सकें उसके अस्तित्व से ही इन्कार कर दें। फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या आपने जीवात्मा को देखा है? जिस जीवात्मा के शरीर में रहने से आंख देखती हैं टांग चलती है कान सुनते हैं हाथ हिलते हैं किन्तु उनके शरीर से निकल जाने पर सब अंग बेकार हो जाते हैं। क्या आप उस जीवात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं या नहीं? उत्तर दिया कि हम जीवात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। इस पर मैंने निवेदन किया जब आप जीवात्मा को न देखते हुए भी उसके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं तो परम पिता परमात्मा को जो जीवात्मा का भी आत्मा है—देखने का प्रश्न ही कहां उत्पन्न होता है। हमारे शास्त्रकारों ने ईश्वर को न देख सकने के निम्नलिखित कारण बतलाये

(1) जो वस्तु अति सूक्ष्म होता है वह दृष्टिगोचर नहीं हुआ करती। मेंहदी के पत्तों में रंग तो है किन्तु देखा नहीं जाता। दियासलाई में अग्नि तो है किन्तु दिखलाई नहीं देती। दूध में घी तो है किन्तु दिखाई नहीं देता। गुड़ या चीनी में मिठास तो है किन्तु किसी ने भी उसे आज तक नहीं देखा। इसी प्रकार फूलों की सुगन्ध भी किसी को दिखाई नहीं देती। ईश्वर भी अति सूक्ष्म होने के कारण दिखलाई नहीं देता।

(2) जो वस्तु अति स्थूल (बहुत बड़ी) हो तो वह भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ करती। हिमालय पर्वत बहुत बड़ा है इसलिए दिखाई नहीं देता। कोई सज्जन कह सकता है वह तो सामने दिखलाई दे रहा है मैं निवेदन करूंगा कि हम उसके एक भाग को देख रहे हैं। समूचे पवन को आज तक न तो किसी ने देखा है न देख सकता है। परमात्मा चूंकि अति स्थूल है अतः दिखलाई नहीं देता तभी तो किसी कवि ने कहा है सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।

(3) आंखों में विकार हो तो भी कुछ दिखाई नहीं देता। ईश्वर को बाहर की आंखों से नहीं अपितु ज्ञान चक्षु से देखा जा सकता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है —

मिलता नहीं है इसलिए,
अज्ञानियों को वह।
खुल जायें ज्ञान चक्षु तो
वह है मिला हुआ।

(4) मन स्थिर न हो तो भी कुछ दिखलाई नहीं देता। कई बार यह बात अनुभव में आ चुकी है कि कभी कभी दो चार व्यक्ति बातचीत में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि पास से जाते हुए व्यक्ति को भी नहीं देखते। हमारा मन क्योंकि संसारी वस्तुओं में लगा हुआ है इसलिए प्रभु का अनुभव नहीं होता।

(5) बीच में आवरण पड़ा हुआ है तो कुछ भी दिखलाई नहीं देता। अपने कार्यालय, घर या दुकान पर बैठे हुए हम नहीं देख सकते कि दीवार के पीछे क्या हो रहा है। चूंकि हमारी बुद्धि पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है इसलिए हम ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते।

(6) जो वस्तु अति समीप होती है वह भी दिखलाई नहीं देती। हम बहुत सी वस्तुएं देख सकते हैं किन्तु हमारी आंखों में पड़ा हुआ सुरमा भी हमें नजर नहीं आता क्योंकि वह आंखों के अति समीप है। ईश्वर भी अति समीप होने के कारण दृष्टिगोचर नहीं होता।

(7) जो वस्तु अति दूर होती है वह भी दिखलाई नहीं देती। लन्दन और बर्लिन मास्को और वाशिंगटन चीन और जापान, अरब और ईरान हमसे बहुत दूर हैं अतएव वहां की कोई भी वस्तु दिखलाई नहीं देती। परमात्मा भी अज्ञानियों से दूर है इसलिए वह उसके अस्तित्व से इंकार कर देते हैं।

अज्ञानियों से रहा है
केवल वह दूर-दूर,
अज्ञान का है बुद्धि पर
परदा पड़ा हुआ।

लिखने का अभिप्राय यह है कि ईश्वर का साक्षात्कार करने के लिए यह बात अति आवश्यक है कि हम वेद शास्त्रों को पढ़ें योगाभ्यास करें महर्षि दयानन्द जैसे गुरु के चरणों में बैठें तो निस्सन्देह हमें ईश्वर के अस्तित्व की अनुभूति होगी। भगवान को ज्ञान चक्षु से देखना चाहो तो ऊंचे 2 पर्वतों के शिखर पर और कन्दराओं में देखो। सागर एवं नदियों की गहराई और उत्ताल तरंगों की कल 2 में देखो। आम, अंगूर सेब और तरबूज जैसे फलों के मिठास और स्वाद में देखो। चमेली और गुलाब जैसे फूलों की सुगन्ध और बनावट में उसकी अद्भुत चित्रकारी के दर्शन करो। चन्द्र और सूर्य की रश्मियों में प्रभु को देखो। अपने शरीर की अद्भुत रचना में देखो। उठते बैठते चलते फिरते, खाते पीते सोते जागते अपने मन मन्दिर में उसका ध्यान करो तो अनायास यह कहने लगोगे—

जिधर देखता हूं
उधर तू ही तू है।
कि हर शाये वस्तु में
जलवा तेरा हूबहू है।

ओ३म् शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥11॥ ऋ० 6।35।11॥अ० 19।13।?

हो कर्म प्रकट जब ज्ञानी में

—देवनारायण भारद्वाज

मानव विशेष या साधारण, सर्वत्र सभी सहयोग करें।
हो मनुज मनुज में प्रेम भाव सब आपस में सहयोग करें॥

देवता तुल्य विद्वान बड़े
जिनमें उत्तम हो ज्ञान गढ़े
पर ज्ञान न कोरा ज्ञान रहे
हो ज्ञान कर्म आचरण चढ़े।

प्रिय कर्मशील विद्वान सभी इस जग का सुख उपभोग करें।
हो मनुज मनुज में प्रेम भाव, सब आपस में सहयोग करें॥

हो ज्ञान हृदय का वाणी में
वाणी का कर्म कहानी में
पा जाय दिशा साधारण जन
हो कर्म प्रकट जब ज्ञानी में।

सब ज्ञान कर्म या धन दाता निज दान हमें दे योग करें।
हो मनुज-मनुज में प्रेम भाव, सब आपस में सहयोग करें॥

भूलोक की दृश्य शक्तियाँ
अन्तरिक्ष की भव्य शक्तियां
विद्वान हमें सब सिखलायें
देव लोक की दिव्य शक्तियाँ।

विज्ञानवान सब आयमान, हम सुखकारी उपयोग करें।
हो मनुज-मनुज में प्रेम भाव सब आपस में सहयोग करें॥

जगन्नाथ निवास रैदोपुर मईं/बस्ती
आजमगढ़ (उ० प्र०)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

सेनाएं नहीं आर्यवीर दल चाहिए



देश मे सेनाओ का जोर जिस तेजी से बढता जा रहा है वह चिन्ता का विषय है। इस समय देश मे कुल मिला कर 50 से अधिक सेनाएँ हैं।

जिन राज्यो मे कोई सेना नही है। ऐसे सगठनो की कमी नही है जो सैनिक अर्द्धसैनिक ढग से व्यवहार करते हैं। कई स्थानो पर तो ऐसे सगठन तोड-फोड और हिंसा की कार्यवाइयो मे इतना अधिक भाग लेते हैं कि सेनाओ के नाम से प्रचलित सगठन भी उतना नही कर सकते होगे। अन्तर केवल इतना ही है कि इन सगठनो के साथ 'सेना' शब्द लगा हुआ नही है।

सेना शब्द के प्रति यह आकर्षण किस बात की निशानी है? सबसे पहले तो यही कि अहिंसा के प्रति उनकी आस्था नही है और अपने किसी विशिष्ट प्रयोजन की सिद्धि के लिए वे वैधानिक रास्ता नही अपनाना चाहते, सेना शब्द से ही इस बात की ध्वनि निकलती है कि 'बैलट' (मतपत्र) के बजाय वे 'बुलेट' (बन्दूक की गोली) को अधिक महत्त्व देते हैं। जो लोग इस प्रकार की सेनाओ के सैनिक बनने की प्रतिज्ञा करते हैं उनसे कानून और व्यवस्था के प्रति वफादार रहने की कैसे आशा की जा सकती है। जो सेनाए किसी राजनीतिक दल से बधी हुई हैं उनका उद्देश्य तो स्पष्ट है—वे सारे देश को उस राजनैतिक दल के शासन के नीचे लाना चाहता हैं। जिन सेनाओ का सम्बन्ध किसी राज्य विशेष या भाषा-विशेष से है उनकी सकीर्णता को भी किसी मनमोहक नारे से छिपाया नही जा सकता। कुछ सेनाए कुछ व्यक्तियो के नाम पर ही बनाई गई हैं। उनके सामने भी समग्र राष्ट्र का सही चित्र उपस्थित हो इसकी कल्पना नही की जा सकती।

बात को स्पष्ट करने के लिए कुछ सेनाओ का नाम ले देना ही काफी है। लीजिए गिनिए—हिन्दू राष्ट्र सेना, हिन्दी सेना भूमि सेना, सुभाष सेना शान्तिसेना अन्ना सेना, विजय सेना, क्रातिसेना, भीमसेना, तमिलसेना, लचित सेना, शिवसेना, लालसेना इत्यादि। क्या इनमे से किसी भी सेना के सामने राष्ट्र की व्यापक समस्याए हैं? क्या इनमे से किसी ने भी अपनी सकीर्णता के खोल मे से निकल कर किसी भी समस्या पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करने का प्रयत्न किया है?

राष्ट्र मे व्याप्त भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी, अनैतिकता और अकर्मण्यता को मिटाने के लिए उक्त सेनाओ मे से किसी ने भी कभी कोई पग उठाया है। शराबखोरी तस्करी, जुआ और व्यभिचार की बढती हुई प्रवृत्ति को रोकने के लिए उन सेनाओ के सैनिकों ने क्या कभी अपनी कनिष्ठिका अगुलि भी हिलाई है? या ये सेनाए इन बुराइयो को बुराइया ही नही समझती?

बेकारी दूर करने के लिए, भिक्षावृत्ति समाप्त करने के लिए और जनता को आर्थिक मुक्ति दिलाने के लिए आन्दोलन करने वाले तो बहुत हैं पर जनता को आलस्य और कमजोरी से मुक्ति दिलाने के लिए किसकी आवाज सुनाई देती है? चाहें मन्त्री हो, या ससत्सदस्य हो अफसर हो या सरकारी कर्मचारी हो, सर्वत्र अधिकारों के लिए तो हाहाकार मचा हुआ है पर देश के प्रत्यक नागरिक का कुछ कर्त्तव्य भी हैं इसकी ओर कौन ध्यान दिलाएगा?

आज देश को ऐसे ही सगठन की आवश्यकता है जो देश की इस विकृत चिंतन धारा को बदलने का ठेका ले। किसी राज्य या राजनैतिक दल के स्वार्थों के पीछे राष्ट्रीय हितो का बलिदान करने को किसी को हिम्मत न हो—जो सगठन ऐसा कर सके, आज उसी की राष्ट्र को आवश्यकता है।

आर्यसमाज ऐसी ही सस्था थी—सब स्वार्थों और सकीर्णताओ मे ऊपर मानव को नैतिकता के उच्च धरातल, पर प्रतिष्ठित करने वाली सस्था को विशेष रूप से प्रेरित करने के लिए आर्यवीर दल की स्थापना इसी निमित्त की गई थी। पर आज आर्य जनता की उत्साह-शून्यता के कारण आर्यवीर दल भी।

आज देश को विघटन के पथ पर अग्रसर करने वाली तरह-तरह की सेनाओ की तो भरमार है पर समस्त देश को एकता के सूत्र मे बाधकर कुरीतियो पाखण्डो अन्धविश्वासो और अनैतिकताओ से बचाकर स्वर्णिम भविष्य की ओर ले जाने वाला आर्यवीर दल शिथिल पडा हुआ है।

पिछले दिनो स्थान-स्थान पर आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया है। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से नववर्ष भी प्रारम्भ हो गया है। क्यो न इस नए वर्ष मे समस्त आर्य जनता मिल कर आर्यवीर दल को इतना तेजस्वी, और क्रियाशील बना दे कि समस्त विघटनवादी स्वार्थी सकीर्ण और दूषित विचार धाराओ की समर्थक ये सेनाए उसके तेज के सामने फीकी पड जाए और देश मे वैदिक विचार धारा का प्रचार हो?

दिल्ली की आर्यसमाजो के अधिकारियो की सेवा में नम्र निवेदन

मान्यवर

सभा के पूर्व परिपत्र दिनाक 3 3 90 मे भी अनुरोध किया गया था कि आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष 31 मार्च 1990 को समाप्त हो रहा है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधान नुसार आर्यसमाज के नियमो उपनियमो के अनुसार 31 मई 1990 तक अवश्य आयोजित कर ले तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियो आर्यवीर दल के लिए अधिष्ठाता तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियो का निर्वाचन यदि गत वर्ष न किया हो तो कर ले आपकी आर्यसमाज की ओर से प्रथम दस सभासदो पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों मे समाज का सभासद रहा हो।

15 मई 1990 तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय मे भिजवाने का कष्ट करें।

1 1 अप्रैल 1989 से 31 मार्च 1990 तक का वार्षिक विवरण—

(अ) यज्ञ संस्कार, शुद्धिया अन्तर्जातीय विवाह दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराये गए विवाहो का तथा समारोहो का विवरण।

(आ) समाज के अधीन चल रही सस्थाओ विद्यालयो, चिकित्सालय पुस्तकालय सेवा समिति आर्य वीर दल आदि का विवरण।

2—1 अप्रैल 1989 से 31 मार्च 1990 तक का आय-व्यय विवरण।

3 सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार

क्रम सख्या	सदस्य का नाम	पिता का नाम	पता	वर्ष भर मे प्राप्त सदस्यता शुल्क

4—सदस्यता शुल्क का दशाश वेदप्रचार राशि और आर्यसन्देश का वार्षिक शुल्क 25/ रुपये।

आपने इस सम्बन्ध मे अभी तक कार्यवाही न की हो तो यथाशीघ्र कर ले तथा अपनी समाज का सहयोग प्रदान करें।

धन्यवाद

भवदीय
सूर्यदेव

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सोहनगज

आर्यसमाज सोहनगज सब्जी मण्डी दिल्ली का 40वा वार्षिकोत्सव 23 अप्रैल से 29 अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने वेद कथा द्वारा वेदामृत पान कराया।

उत्सव पर श्रीमती सुशीला जी आनन्द स्वामी स्वरूपानन्द श्री सत्यदेव स्नातक श्री भारती ने धाराप्रवाह प्रवचनो आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने के लिए मार्ग दर्शन किया।

निजामुद्दीन श्मशान की भूमि आर्यसमाज की सम्पत्ति है

—डा० धर्मपाल
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

निजामुद्दीन में श्मशान भूमि की दीवार को बनाते समय 17 मार्च को झगड़ा हो गया था। उपराज्यपाल ने इस दंगे की न्यायिक जांच के आदेश दिए हैं। सिक्किम उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति एम० एस० गुजराल को जाँच का दायित्व सौंपा गया है।

इस भूमि पर वक्फ बोर्ड ने अपना अधिकार जताया है और कुछ पुराने दस्तावेज भी दिखाए हैं। उन्होंने इस पर अपना अधिकार लगभग 100 वर्ष पुराना बताया है। आर्य समाज लोदी रोड जोर बाग के प्रधान श्री मदन गोपाल खोसला के पास 1927-28 के सिजरे की नकल उपलब्ध है। उनके पास 1971-72 का जमाबन्दी मौजा रिकार्ड भी है। उनके पास श्मशान भूमि में दफनाये गए बच्चों और बुजुर्गों की सूची भी है। दफनाना केवल मुसलमानों में ही नहीं होता। हिन्दू भी बच्चों और बूढ़ों का दाह संस्कार न करके उन्हें दफना देते हैं। इसलिए इस आधार पर इस भूमि को कब्रिस्तान नहीं माना जा सकता? श्री मदन गोपाल खोसला के पास पुलिस अधिकारियों तथा सार्वजनिक कार्य विभाग और दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ हुए पत्रव्यवहार की फाइलें उपलब्ध हैं। श्री खोसला ने बताया कि श्मशान भूमि के लिए सरकार ने 29 बीघा और 1 बिस्वा भूमि दी थी। यह भूमि वक्फ बोर्ड की नहीं है। वक्फ बोर्ड तो कहीं भी बोर्ड टांग देता है। आजकल आउटर रिंग रोड पर जहां सरकार पिछले पांच वर्षों से गहरी जमीन का भरत कर रही थी, वहां पर भी वक्फ बोर्ड ने अपने बोर्ड टांग दिए हैं। उन्हें कोई नहीं पूछता।

सार्वजनिक कार्य विभाग शाखा दो ने 1981 में यहां फ्लाई ओवर का निर्माण करते हुए वायदा किया था कि दाह संस्कार को आने जाने वालों की निगाहों से ओझल करने के लिए यहां पर एक चारदीवारी का निर्माण कराया जाएगा पर यह चारदीवारी उन्होंने नहीं बनवाई। हम तो यहां चारदीवारी बना रहे थे। श्री खोसला के पास ऐसे रिकार्ड मौजूद हैं जिसमें कार्यकारी अभियन्ता श्री आर० एल० के० गुप्ता का वह पत्र भी है जिसमें उन्होंने श्मशान भूमि की चारदीवारी गिराकर कुछ हिस्सा श्मशान भूमि का सड़क में सम्मिलित करने का प्रयास किया था।

यहां पर एक कबाड़ी ने पास की भूमि पर अपना सामान डालना शुरू कर दिया। 23 जुलाई 1989 को उसके खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट भी दर्ज कराई गई। इस पर पुलिस ने कोई ध्यान नहीं दिया। उस कबाड़ी के हौसले बढ़ते गए और वह रात में श्मशान भूमि के मुख्य द्वार से भी ट्रक लाने लगा।

आर्यसमाज के लिए यह आवश्यक हो गया था कि वह भूमि पर दीवारें बना दी जाएं। चन्दा एकत्र करके दीवारें बनवाना शुरू किया गया। पुलिस को अनेक बार सूचना दी गई। कुछ लोगों ने इसके पीछे राजनैतिक स्वार्थों को पूरा करने का भी प्रयास किया।

इस दंगे के बाद दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों ने मौका मुआइना करके जमीनों की नाप जांच की। उन्होंने कहा कि श्मशान भूमि के उत्तर की ओर वाले नाले श्मशान भूमि के मुख्य दरवाजे की ओर की 250 फुट भूमि एवं विकास का नियन्त्रण ... दिल्ली विकास प्राधिकरण को दी गई भूमि का हिस्सा है। उसके बाद 45 फुट श्मशान भूमि का हिस्सा है। बाद की 216 फुट श्मशान भूमि है। ... ओर पेट्रोल पम्प तक 442 फुट दिल्ली विकास प्राधिकरण की भूमि है। यह विडम्बना ही है कि विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को भी इस भूमि के ... की जानकारी नहीं है। यहां की भूमि के नक्शों में खसरा नम्बर 529 ... है क्योंकि वक्फ बोर्ड ने खसरा नम्बर 529 की 18 बीघा जमीन ... बताई है।

... इस खसरे के मन इन्तिजाम का किसी को जानकारी नहीं है। ... के कलम नं० 9 में 529/1 का जो क्षेत्रफल दिया है ... आर्यसमाज के रिकार्ड में भी मिलता है। ... यह भूमि ... बीघा ... नहीं है। यदि कुछ भूमि सड़क में गई मान लें तो ... श्मशान की 29 बीघा—इन दोनों का जोड़ कुछ ... कि ... दिल्ली विकास प्राधिकरण की 45 बीघा भूमि कहां गई?

वास्तविकता यह है कि बस्तियों के विस्तार के कारण पुराने नक्शे और जमीनों के रिकार्ड बेमानी हो गए हैं। श्मशान की भूमि का रिकार्ड फिर भी जमाबन्दी के रिकार्ड से मेल खाता है। इसलिए यह 29 बीघा 1 बिस्वा जमीन तो स्पष्ट ही आर्यसमाज द्वारा संचालित श्मशान की भूमि है। यहां पर शान्तिमय वातावरण बनाए जाने की आवश्यकता है। सरकार को चाहिए कि धार्मिक आस्थाओं से सम्बन्धित निर्णयों में किसी प्रकार की राजनीति को हस्तक्षेप न करने दें। •

प्रवेश-सूचना टंकारा

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज की जन्मभूमि एवं बोध स्थली में गत 25 वर्षों से श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा अन्तर-राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय चल रहा है, जिसमें नए सत्र हेतु छात्रों का प्रवेश 1 जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। छात्रों को बिना किसी भेद-भाव के शिक्षा, निवास, वस्त्र, भोजन, पाठय पुस्तकें व लेखन सामग्री आदि सभी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। भोजन में दूध एवं घी की उत्तम व्यवस्था है। प्रवेश के इच्छुक 16 से 20 वर्ष आयु के अविवाहित, मैट्रिक अथवा समकक्ष, निर्व्यसनी छात्र, विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश पत्र (नि:शुल्क) निम्न पते या पत्र व्यवहार करके मँगवा सकते हैं।

विद्याभास्कर ओमप्रकाश शास्त्री एम० ए०
प्राचार्य
अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा जिला राजकोट (गुजरात)
—363650

उठो आर्य वीरो

—मोहन लाल शर्मा "रश्मि"

अब यहां सत्य का प्रकाश जगमगा दो।
उठो आर्यवीरो! अब ये अंधेरा भगा दो॥
हमें आज फिर से समय ने पुकारा।
यह कह करके क्या फर्ज है तुम्हारा॥
एक हान का फिर से अब आई घड़ी।
देखते किस कदर हम पे आँखें गड़ी॥
सोये हुओं को चलो फिर से जगा दो।
उठो आर्य वीरो! ये अंधेरा भगा दो॥
कुचाली यहां फिर से हैं लगे सर उठाने।
बता दो उन्हें हम भी कुछ बैठे हैं ठाने॥
ये ध्वजा ओइम का कहीं झुकने न पाये।
शंखनाद वेदों का अब रुकने न पाये॥
राष्ट्र सेवा में 'रश्मि' सब शक्ति लगा दो।
उठो आर्य वीरो! अब ये अंधेरा भगा दो॥

907/ए० फतेगंज दाहोद (गुजरात) 389160

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग

22 अप्रैल से 29 अप्रैल तक वार्षिकोत्सव बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। 22 अप्रैल को विशाल शोभायात्रा निकाली गयी। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ तथा भजनोपदेश का कार्यक्रम चला तथा रात्रि में पं० प्रेमचन्द श्रीधर द्वारा व्याख्यान हुए।

रविवार को पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य सम्मेलन में डा० धर्मपाल श्री सूर्यदेव श्री प्रियतम दास रसवन आदि ने आर्य समाज की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

आर्यवीर दल क्षात्रशक्ति और ब्रह्मशक्ति के समन्वय का प्रचारक-प्रसारक और सर्जक है।

-पद्मभूषण डा. दु:खनराम

दसम आर्य महासम्मेलन (नवम्बर 1968) हैदराबाद मे आयोजित आर्यवीर दल सम्मेलन मे डा दु खनराम का अध्यक्षीय भाषण

आर्य वीरो, आर्य वीरांगनाओं एव आर्य जन !

हैदराबाद की इस विशाल एव चाकचक्यपूर्ण नगरी मे एक सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अवसर पर होने वाले आर्यवीर दल सम्मेलन का सभापतित्व का भार इसके सचालको ने मेरे ऊपर डाला और मुझे यहा आकर उस भार को वहन कर निर्भार होने का जो अवसर प्रदान किया उसके लिए उनका और आप सब का मैं बहुत आभारी हू। अनेक कार्यों और प्रवृत्तियो मे व्यस्त रहते हुए भी मैं अपने जीवन मे सदा ही भगवान् दयानन्द और आर्य समाज के कार्यों को प्राथमिकता देता आया हू, और उसी दृष्टिकोण को समक्ष रखते हुए सत्तर वर्ष का नवयुवक आर्य वीर मैं आप सबके समक्ष अपने कर्त्तव्यो के निर्वाहार्थ समुपस्थित हुआ हू। इसकी सम्पन्नता मे आप सबका पूर्ण सहयोग होगा ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।

स्थापना

१　आर्य वीर दल की प्रवृत्तियो का इतिहास कई दशको का है। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान के बाद देश मे एक अपूर्व जागृति और क्षोभ व्याप्त हो गया था। यद्यपि आर्यसमाज का रगमच इतना प्रभावशाली था कि देश मे ब्राह्मशक्ति उछाल का अनुभव कर रही थी परन्तु क्षात्रशक्ति का पर्याप्त ह्रास था। वैदिक धर्म 'यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह" की वेदोक्ति के अनुसार ब्राह्म और क्षात्र दोनो ही शक्तियो के साथ-साथ चलने मे समाज एव राष्ट्र का कल्याण मानता है। अत इस न्यूनता की पूर्ति के लिए स्वर्गीय महात्मा हसराज की अध्यक्षता मे एक प्रस्ताव द्वारा सार्वदेशिक आर्य वीर दल की स्थापना हुई। अब तक आर्य वीर दल के अनेको सम्मेलन हो चुके हैं।

सन् 1942 मे आर्य वीर दल का पुनर्गठन किया गया और इसकी बागडोर प्रधान सेनापति एव सचालक मेरे परममित्र श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ससत्सदस्य को सौंपी गई। योग्य पात्र में निक्षिप्त न्यास दिनो दिन बढता ही है— इस उक्ति के अनुसार इनके नेतृत्व मे आर्य वीर दल का कार्य कलाप विस्तार को प्राप्त हुआ। वस्तुत बात तो यह है कि इसी काल मे इसे आर्य वीर दल का वास्तविक रूप मिला सभी प्रान्तो मे इसकी शाखाओ का प्रचार और विस्तार हुआ। भारत को स्वतन्त्रता मिलने के समय सारे देश मे आर्य वीरो की सख्या एक लाख थी। पश्चाद्वर्ती काल मे प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ द्वारा प्रोत्साहन और सहयोग मे ह्रास पडने से इसके कार्य मे कुछ शिथिलता आ गई।

यह आर्य वीर दल की विशेषता है कि इसमे अधिकाश उन व्यक्तो ने भाग लिया जिनका आर्य समाज मे कोई सम्बन्ध नही था। परन्तु इसके अन्दर शिक्षा दीक्षा प्राप्त कर वे आर्य समाज के अनन्य भक्त बन गए। आर्य वीर दल ने समय समय पर सहस्त्रो की सख्या मे शिक्षण शिविर का आयोजन किया है। जिसमे आर्य वीरो को शारीरिक शिक्षण के साथ साथ आर्य समाज के सिद्धान्तो और उद्देश्यो की भी शिक्षा दी जाती है।

सेवा कार्य

भारत मे समय समय पर प्राकृतिक एव राजनैतिक उतार चढाव के कारण कई विपत्तिया आई। इन सभी विपत्तियो मे आर्य वीर दल सेवा कार्य मे अग्रणी रहा है। सन् 1942 मे मिदनापुर मे तूफान आया और 43 44 मे बंगाल मे भयकर अकाल पडा। आर्य वीर दल ने इसमे बहुत बडा कार्य किया। नवाखली के पैशाचिकी लीला सन् 46 मे घटी और सन् 47 मे भारत का विभाजन होने से पाकिस्तान की स्थापना हुई। ये दोनो ही घटनाएँ मानव की दानवी बर्बरता और पाशविकता की अपने ढग की बेमिसाल घटनाए है। इनमे जो हानि हुई है वह किसी से छिपी नही है। लाखो लोगो को बेघर बार होकर शरणार्थी बनना पडा और कितनो को अनाथ होना पडा। ऐसे सकट के अवसर पर आर्य वीर दल ने बहुत सराहनीय सेवा कार्य किया। सन 51 के आसाम का भूकम्प और हैदराबाद मे रजाकारो के सघर्ष के समय आर्य वीर दल ने अपनी सेवा भावना का बडा ही उदात्त परिचय दिया। पजाब के हिन्दी आन्दोलन और गोरक्षा आन्दोलन के अवसरो पर भी आर्य वीरो ने भाग लिया और कार्य किया। ये हैं प्राप्तियाँ और प्रगतियाँ जिनके साथ आर्य वीर दल खडा है।

आवश्यकता

कोई सस्था या सगठन केवल भूत की प्राप्तियो की प्रशसा पर तृप्त होकर ही नहीं जीवित रह सकता है। उसे तो इनके आधार पर अपने भविष्य को भी सोचना पडेगा। वर्तमान समय मे अराष्ट्रीयता, जातीयता, सम्प्रदायवाद अन्धविश्वास, भ्रष्टाचार और विदेशी संस्कृति का प्रभाव अपना सिर उठाये खडे हैं और भारत की उर्वर भूमि में अधिक पनप रहे हैं। ऐसी अवस्था मे यदि कोई इनसे लोहा ले सकने मे समर्थ है तो वह है केवल महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज। उसके अतिरिक्त किसी मे इनके निराकरण की शक्ति नही है। आर्य समाज के विस्तार के लिए आर्य वीर दल एक मेरु दण्डात्मक पृष्ठभूमि है जिससे युवक वर्ग इधर आकृष्ट होता है। युवक वर्ग जब तक समाज मे नहीं आवेगा समाज शिथिल होता जावेगा। हमे सोचना चाहिए कि हम आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल का अधिक से अधिक विस्तार करें कि युवक वर्ग को आर्य समाज के अचल मे ला सके।

यहाँ एक प्रश्न स्वभावत उठ खडा होता है कि आर्य वीर दल ही क्यों ? जब देश में अनेको सगठन कार्य कर रहे हैं फिर आर्य वीर दल की ही क्यो आवश्यकता है ? आइये हम इस पर भी थोडा सा विचार करें। भारतवर्ष वैदिक धर्म वैदिक संस्कृति एव वैदिक राष्ट्र की जितनी स्पष्ट कल्पना महर्षि दयानन्द ने की है उतनी किसी ने नही की। युक्ति और प्रमाण के साथ आर्य समाज की विचार धारा नवयुवको मे जितना सुलभ एव दृढ प्रचार पा सकती है उतना और कोई विचार धारा नहीं। ऋषि का जीवन एक क्रान्तिकारी जीवन था। समाज यदि भगवान् दयानन्द के उद्देश्यों की पूर्ति चाहता है तो उसे चतुर्मुखी सामाजिक क्रान्ति करनी पडेगी। यह क्रान्ति रक्तरंजित नही प्रेमसिक्त होगी अशान्तिमयी नहीं शान्तियुक्त होगी, वर्गयुद्धरूपी नहीं मानवीयतामयी होगी और होगी जाति, रक्त एव भौगोलिक बन्धनो से रहित। यह मानव को मानव बनाने वाली क्रान्ति है। आर्य समाज के नियमो मे इसका स्पष्ट भास मिलता है। इस महत्तम कार्य की पूर्ति मे दयानन्द के दृष्टिकोण को कार्यान्वित करने मे यदि कोई अत्यन्त निकट का और अमोघ साधन है तो वह आर्य वीर दल हो सकता है जो नवयुवको और वीरांगनाओ को सघटित कर आर्य समाज की शक्ति का बढायेगा। इसीलिए आर्य वीर दल की ही आवश्यकता है।

आर्य समाज का छठा नियम स्पष्ट घोषणा करता है कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस नियम मे तीनो उन्नतियो मे शारीरिक उन्नति का प्रथम स्थान दिया गया है। क्योकि यह क्षात्र शक्ति की प्रतीक है और शेष दो उन्नतियां क्षात्र और ब्रह्म शक्ति के सन्तुलन एव समन्वय पर आधारित हैं। आर्य वीर दल इस क्षात्र शक्ति के समन्वय का प्रचारक प्रसारक और सर्जक है।

कुछ सुझाव

आर्य वीर दल को प्रत्येक प्रान्त जिला और ग्राम तथा भारत के बाहर के प्रदेशो मे जहां पर आर्य समाजें है सगठित और सचालित किया जावे।

2　आर्य वीरांगना दल की भी स्थापना की जावे।

3　प्रत्येक आर्य समाज को अपने कोष मे एक निश्चित भाग अनिवार्य रूप मे इस कार्य के लिए रखना चाहिए। उसे आर्य वीर दल की शाखा स्थापित करनी चाहिए और व्यायामशाला खोलना चाहिये।

4 —प्रत्येक प्रान्तीय सभा को अपने यहां एक प्रान्तीय सचालक और एक शिक्षक अवश्य रखना चाहिए।

5—विदेशो मे आर्य समाज के आश्रम मे चल रहे आर्य वीर दलो और आर्य वीरांगना दलो का सुव्यवस्थित किया जावे।

6—आर्य शिक्षण सस्थाओ मे इसका प्रचार किया जावे।

7　आर्य समाज की स्थापना शताब्दी तक आर्य वीरो और आर्य वीरांगनाओ की सख्या 10 लाख तक पहुँचनी चाहिए।

मैंने आपका बहुत अधिक समय लिया। अन्य कार्यक्रम भी होने हैं अत और अधिक समय लेना उचित नहीं। मैं एक बार पुन आप सबका आभार प्रकट करता हूं और विराम लेने से पूर्व कहना चाहता हू कि आइये ! हम सब इस यजुर्वेदीय मन्त्र का चिन्तन करें और उसकी शिक्षा का अनुसरण करते हुए भगवान दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग मे चलते हुए इस महान कार्य के लिए कटिबद्ध हों —

यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह

त लोक पुण्य प्रज्ञेष यत्र देवा सहाग्निना ॥ यजुर्वेद 2-25 ।

॥ ओइम् शम् ॥

"पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न"

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय का 19वा वार्षिकोत्सव गत 7, 8, व 9 अप्रैल 90 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के वयोवृद्ध वैदिक विद्वान्, महावैयाकरण श्री प० युधिष्ठिर जी मीमासक (सोनीपत) प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री प० शान्तिप्रकाश जी (जयपुर) साप्ताहिक "आर्य-जगत्" के सम्पादक यशस्वी साहित्यकार श्री प० क्षितीश जी वेदालकार (दिल्ली) उत्तर प्रदेश सस्कृत अकादमी के भू० पू० अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी रस्तोगी (लखनऊ) एव मुरली मनोहर डिग्री कालेज बलिया के प्राध्यापक डा० सुद्युम्नाचार्य जी ने अपने उपदेशको व प्रवचनो से मार्गदर्शन दिया।

वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ 7 अप्रैल को प्रात ओ३म् ध्वजोत्तोलन से हुआ प्रतिदिन प्रात 6-30 से 10 30 बजे तक यज्ञ भजन व प्रवचन एव सायकाल 6-30 से रात्रि 11-00 बजे तक सामूहिक सन्ध्या, भजन एव विद्वज्जनो के प्रवचन तथा विद्यालयीय ब्रह्मचारिणियो के सस्कृत भाषण अष्टाध्यायी के सूत्रो के सूत्रपाठ एव अन्त्याक्षरी, व्यायाम व योगासन प्रदर्शन, वेदमन्त्रो का सस्वर पाठ कविता पाठ, गीत तथा भजन आदि भव्य मनोहारी सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

'स्वर्ग का नजारा", सासद स्तवनम् एव देवभूमि सगीतिका विषयक कार्यक्रम विशेष आकर्षण के केन्द्र रहे। इसी क्रम मे 'राष्ट्रीय उत्थान मे नारियो का योगदान" विषय पर बालिकाओ की वाक्प्रतियोगिता भी सम्पन्न हुई।

समारोह की सबसे बडी विशेषता यह रही कि स्वच्छता विभाग के एक कर्मचारी श्री श्यामलाल जी को स्नान कराकर उनको यज्ञोपवीत न देकर यज्ञ मे आहुतिया डलवाई गई तथा मध्याह्नोत्तर उनके साथ बैठकर सबने भोजन का आनन्द लिया। इस प्रकार के सम्मान से श्री जमादार सा० बहुत ही भावुक हो उठे।

विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए प्राचार्या सुश्री डॉ० प्रज्ञा देवी जी ने बताया कि इस विद्यालय म उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, उडीसा बिहार, हिमाचल कश्मीर आदि प्रान्तो की तथा नीदरलैण्ड मारीशस व नेपाल आदि देशो की 65 बालिकायें आर्ष पाठ विधि से शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। कन्याओ के सर्वांगीण विकास के लिए व्यायाम शिक्षण, सगीत विद्यादि का अभ्यास तथा गृह कला, सिलाई बुनाई आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। विद्यालय म शुद्ध गोदुग्ध व घृत के लिए अपनी गोशाला है। गुरुकुल का अपना प्रकाशन विभाग तथा पुस्तकालय व वाचनालय आदि सभी सुविधायें ज्ञानवर्द्धक हेतु हैं।

विद्यालय का उद्देश्य बालिकाओ की सख्या को सीमित रखकर उनके गुणवत्ता का यथेष्ठ विकास किया जाना है। कोई राजकीय सहायता ग्रहण न करते हुए उदार दानी महानुभावो पर निर्भर रहते हुए सभी व्यवस्थायें सुनियमित रीति से प्राचार्या सुश्री डॉ० प्रज्ञा देवी जी एव आचार्य प० मेधा देवी जी द्वारा सुचालित करना विद्यालय का अति साहसिक कार्य है।

विद्यालय की भावी योजना लगभग सात लाख रु० की लागत से भव्य "पाणिनि-मन्दिरम्" की स्थापना करना है, जिसमे महर्षि पाणिनि के लगभग चार हजार सूत्र दीवारो के प्रस्तर पर अकित होगे। प्राचार्या जी ने दानी महानुभावो से पखा, गोशाला सुधार, क्रीडा उपकरण, बायो गैस सयन्त्र, आल्मारी, पुस्तको आदि की आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु आकाक्षा व्यक्त की।

आर्यसमाज जनता क्वार्टर्स पश्चिमपुरी

वार्षिकोत्सव 23 अप्रैल से 29 अप्रैल तक धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रात यज्ञ एव व्याख्यान हुए तथा रात्रि मे वेद कथा हुई। शनिवार 28 अप्रैल को युवा सम्मेलन आयोजित किया गया। रविवार 29 अप्रैल को पूर्णाहुति के पश्चात् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री सूर्यदेव ने ध्वजारोहण किया।

मुख्य समारोह राष्ट्रीय एकता सम्मेलन" को डा० महेश विद्यालकार, प्रो० बलराज मधोक, सभा प्रधान डा० धर्मपाल ने सबोधित कर, राष्ट्र की सामयिक परिस्थितियो पर प्रकाश डाला तथा राष्ट्र पर आये सकटो से उबरने के लिए घनीभूत प्रयास करने पर बल दिया।

शोक समाचार

आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण (दिल्ली सभा के महोपदेशक) के सुपुत्र श्री विजयव्रत टण्डन का सडक दुर्घटना मे निधन हो गया।

आर्यसमाज करोलबाग, नई दिल्ली मे शातियज्ञ का आयोजन किया गया। डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव श्री अजय कुमार भल्ला, श्री हरिदत्त शास्त्री श्रीमती प्रकाश आर्या, श्रीमती शाति मलिक तथा अन्य अनेक महानुभावो ने दिवगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

•

श्री सुभाष आर्य (पूर्व महानगर पार्षद) की माता श्रीमती सोमावन्ती आर्या (धर्मपत्नी स्व० महाशय अचरज लाल आर्य का 30 अप्रैल को देहान्त हो गया है।

3 मई को शाति यज्ञ सम्पन्न हुआ। भारी सख्या मे राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक तथा आर्यनेताओ ने उपस्थित होकर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

•

श्री ऊधोदास आर्य (वरिष्ठ उपप्रधान आर्यसमाज दीवानहाल) के अनुज भ्राता श्री प्रेमप्रकाश आर्य का दिनाक 26 अप्रैल को अचानक निधन हो गया, जबकि उनकी सुपुत्री का विवाह दो दिन बाद (28 अप्रैल) होना था। श्री आर्य अपने अनुज भ्राता के अनुरूप ही आर्य सामाजिक कार्यों मे सदैव आगे रहते थे।

आर्यसमाज दीवान हाल मे आयोजित शोकसभा में दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी।

•

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा 'आर्यसन्देश' की ओर से दिवगत आत्माओ के प्रति विनीत श्रद्धाञ्जलि तथा परिवार के सदस्यो के लिए हार्दिक सवेदनायें।

आर्यसमाज शादीपुर खामपुर

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज शादीपुर खामपुर नई दिल्ली मे वार्षिकोत्सव के अवसर पर रविवार दिनाक 29 अप्रैल 1990 को आयोजित आर्यसम्मेलन की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल ने की।

समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अपने उद्बोधन मे सभी आर्यजनो से अनुरोध किया कि वे अपने जीवन मे आर्यत्व को धारण करें। वैदिक-सत्सगो मे जो सुनें, उस पर अमल करें। वेद के आदेश "मनुर्भव" का पालन करें। उन्होने यह भी आग्रह किया कि अपनी सतति को आर्य बनायें।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आह्वान किया कि वे सब वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार और राष्ट्रीय एकता तथा अखडता के के लिए स्वय को समर्पित कर दें।

समारोह को पूज्य स्वामी भीष्म जी, प० रघुराज शास्त्री, श्री रामलाल मलिक आदि ने सम्बोधित किया।

आर्यसमाज सेक्टर 7 फरीदाबाद

आर्यसमाज सेक्टर 7 फरीदाबाद का 10वा वार्षिकोत्सव 16 अप्रैल से 22 तक समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन यज्ञ भजन तथा वेदोपदेश का कार्यक्रम चला।

शनिवार 21 अप्रैल का महिला सम्मेलन का आयोजन श्रीमती नीलम भल्ला की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

रविवार 22 अप्रैल को समापन समारोह मे स्वामी सत्यपति परिव्राजक श्रीमती सुनीति आर्या, श्री गुलाब सिंह राघव ठा० राजसिंह ने बडे प्रभावी ढग से अपने विचार रखकर उपस्थित जनो को वैदिक-सिद्धान्तो का अनुसरण करने की प्रेरणा दी।

सिविल कोर्ट हैदराबाद द्वारा
आर्यप्रतिनिधि सभा आन्ध्र-प्रदेश की सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध याचिका रद्द

श्री रामचन्द्र राव कल्याणी आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र-प्रदेश ने दिनाक 25-8-89 को सिविल कोर्ट हैदराबाद मे यह अस्थाई स्थगन आदेश प्राप्त किया था कि उनकी सभा को भग करके तदर्थ समिति बनाने से सार्वदेशिक सभा को रोका जाये। उन्होने सार्वदेशिक सभा और सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को प्रतिवादी बनाया था।

इस केस मे माननीय न्यायाधीश श्री विनोद कुमार देश पाण्डेय ने दोनो पक्षो द्वारा प्रस्तुत तथ्यो को गम्भीरता पूर्वक सुनने के बाद सत्यासत्य की घोषणा करते हुए 30 मार्च 1990 के अपने आदेश मे इस स्थगन आदेश को रद्द करते हुए तथा याचिका को निरस्त करते हुए कुछ मुख्य टिप्पणिया इस प्रकार की।

1—दोनों पक्षों के तथ्यो से ऐसा लगता है कि वादी आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान तथा प्रतिवादी न० 2 'स्वामी आनन्दबोध सरस्वती' के बीच मुकाबले की भावना है। जबकि ऐसा कोई भी तथ्य सामने नही आया जिससे यह साबित होता हो कि प्रतिवादी न० 2 'स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती' सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए योग्य नहीं हैं।

2—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सभी राज्य स्तरी प्रतिनिधि सस्थाओ की नियन्त्रक सस्था है जिसमे नि सन्देह वादी अर्थात् आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश भी शामिल है।

3—आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश को भग करके तदर्थ समिति बनाने सम्बन्धी स्वामी जी के अनुमानित दौरे का जिक्र करते हुए माननीय न्याया-धीश ने कहा कि रिकार्ड मे कोई भी ऐसा तथ्य यह साबित नहीं करता कि प्रतिवादी सार्वदेशिक सभा वादी के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने वाली है। भविष्यत खतरो के केवल अनुमान के आधार पर किसी प्रकार का स्थगन आदेश किसी व्यक्ति को नही मिलना चाहिए।

4—विशेष रूप से जहा सस्था के हितों की बात आती है माननीय न्यायाधीश ने टिप्पणी करते हुए कहा कि सस्था के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए, अपने निजी हितों को नहीं।

सार्वदेशिक सभा की केन्द्रीय कानूनी समिति श्री नन्दकिशोर सिह एडवोकेट आन्ध्र प्रदेश का हार्दिक धन्यवाद करती है जिन्होंने अदालत मे इस मुक-दमे की पैरवी की।

[साभार- 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक]

वैदिक साधन आश्रम तपोवन
देहरादून में एक वर्षीय शिविर

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता मे योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर के प्रारम्भ मे स्वामी सत्यपति जी व दर्शनाचार्य ब्र० अर्जुन देव जी 16 मई से 15 जून 1990 तक रहेगे और शेष समय में शिविर का सचालन दर्शनाचार्य ब्र० आनन्द प्रकाश जी करेंगे।

इस शिविर मे योगदर्शन एव अन्य दर्शनों का अध्ययन कराया जाएगा इसके साथ सस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान भी कराया जाएगा। इसमे स्त्री-पुरुष सभी भाग ले सकते हैं।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१

R. N. No. 32387/77 Post in N D P S O on 3 4-5 90 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

शताब्दी समापन समारोह

18, 19, 20, मई, 1990

राजापार्क, जयपुर-302 004

राजस्थान की गुलाबी नगरी जयपुर मे यह समारोह अन्य समारोहो से विशिष्ट प्रकार का होगा। इस समारोह से

आर्य जगत को नई दिशा मिलेगी, इसमे लाखो आयजनो की तडप को अभिव्यक्ति मिलेगी।

निराशा के तमिस्रजाल से निकलकर ज्योतिर्मय मार्ग पर प्रयाण करेगे।

अज्ञान अन्धविश्वास जातिवाद पाखड, अराजकता कुशासन के विरुद्ध युद्ध का पाचजन्य फूकेंगे।

सास्कृतिक, सामाजिक आर्थिक धार्मिक एव राजनीतिक क्रान्ति का पथ प्रशस्त होगा।

हमारे देश का युवा समाज अगडाई लेकर खडा होगा।

आपको स्मरण होगा कि 17 अगस्त 1939 को आर्यसत्याग्रही विजयी होकर हैदराबाद जेलों से छूटे थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपने मुख-पत्र-आर्यसन्देश का बृहद विशेषांक

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह

अर्धशताब्दी स्मृति अंक

आगामी 19 अगस्त 1990 को प्रकाशित कर रहा है

आर्य जगत् के विद्वानों साहित्यकारो, इतिहासकारों कवियो नेताओं तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सेनानियों की मौलिक रचनायें 30 जून तक आमन्त्रित हैं।

सेवा मे—
श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तरप्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
ट्रिंगल आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी आई०के० प्रिंटर्स मोजपुर दिल्ली-५३ मे मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ : अंक ३० | रविवार २० मई १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश में ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

आर्यसमाज के विभिन्न आन्दोलनों के कर्मठ सेनानी—

महान् तपस्वी विद्वान् संन्यासी

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती दिवंगत

घरौण्डा, हरियाणा, 9 मई। आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान निर्भीक सन्यासी और स्वतन्त्रता सैनानी स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज भूतपूर्व ससदसदस्य का मगलवार 8 मई 1990 को 96 वर्ष की आयु मे निधन हो गया है। स्वामी जी महाराज विगत कुछ मास से अस्वस्थ चल रहे थे।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज वेदो के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होने पिछले छ दशको से भी अधिक समय तक आर्यसमाज और आर्य गुरुकुलो के प्रचार-प्रसार मे अपना जीवन अर्पित किया। स्वामी जी महाराज ने आयसमाज द्वारा चलाये गय विभिन्न आन्दोलनों हैदराबाद धर्मयुद्ध (1939), पजाब हिन्दी सत्याग्रह (1957), दिल्ली का गोरक्षा आन्दोलन (1966) आदि मे प्रथम पक्ति म रहकर सफल नेतृत्व किया था।

1961 मे जब पजाबी सूबे की माग को लेकर मास्टर तारा सिंह ने आमरण अनशन शुरू किया तो स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने भाषा के आधार पर बनाये जाने वाले पजाबी सूबे की माग के विरोध मे आमरण अनशन करने की घोषणा कर दी थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर स्वामी जी महाराज आर्यसमाज दीवान हाल मे 16 अगस्त 1961 को प्रात काल यजुर्वेद पारायण यज्ञ के पश्चात आमरण अनशन पर बैठ गये थे। अन्त में मास्टर तारासिंह के अनशन टूट जाने के बाद ही आपने 24 अगस्त को अपना अनशन समाप्त किया था। स्मरणीय है कि अनशन के दिनो में स्वामी जी को मारने के अनेक प्रयत्न किये गये और एक बार तो दिवानहाल पर शक्तिशाली बम्ब भी फेंका गया।

लोकसभा सदस्य—श्री स्वामी जी महाराज 1962 मे लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। ससद मे उनकी ओजस्वी वाणी, स्पष्टवादिता और क्रान्तिकारी राष्ट्रीय विचारो का आदरपूर्वक सुना जाता था। आपने ससद मे हिन्दी रक्षा, गोरक्षा मद्य निषेध, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली आदि विषयो पर सदैव आर्यसमाज का सबलपक्ष प्रस्तुत किया।

आचार्य भीष्म जी के शिष्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज गुरुकुल घरौण्डा के सस्थापक थे और अन्तिम क्षणो तक गुरुकुल मे रहकर आर्ष पाठविधि के अनुसार वैदिक ज्ञान का प्रकाश फैलाते रहे। भारत सरकार ने उन्हें गत वर्ष स्वतंत्रता सैनानी मानकर सम्मान पैंशन से सम्मानित किया था।

साहित्य—स्वामी जी ने वैदिक सिद्धान्तों पर अनेक छोटी-बडी पुस्तकें लिखी तथा अनेक पुस्तको का सपादन भी किया। जिनमे मुख्य हैं —सन्ध्या भाष्यम, देवयज्ञ सन्ध्यासुमन भ्रमोच्छेदक, शतायुष पुरुष, नमस्ते प्रदीप, महर्षि दयानन्द का योग महर्षि दयानन्द और राजनीति स्वकथित जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द तथा काशी शास्त्रार्थ।

अन्तिम सस्कार—गुरुकुल घरौण्डा की पवित्र भूमि पर पूर्ण वैदिक रीति म वेदमन्त्रो के बीच बुधवार 9 मई को साय 3-00 बजे पार्थिव शरीर का अतिम सस्कार किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, महामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान डा० धर्मपाल तथा अन्य अनेक आर्यजनों ने पहुँचकर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। अन्तिम सस्कार के समय दिल्ली, हरियाणा तथा निकटवर्ती क्षेत्रो से आये हजारों आर्यजनों तथा स्वामी जी के शिष्यों ने भी अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती के निधन से—

आर्यसमाज तथा राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति

आर्यसमाज दीवान हाल मे श्रद्धांजलि सभा—

दिल्ली 13 मई दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, की शिरोमणि सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा तथा आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए एक शोक-सभा का आयोजन आर्यसमाज मदिर दीवान हाल मे किया गया।

शोक सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। स्वामी जी महाराज शोक विह्वल होकर उन दिनों की यादो मे खो गये जब स्वामी रामेश्वरानन्द जी दीवान हाल मे अनशन कर रहे थे। तब एक दिन किसी दुष्ट ने दीवान हाल मे बम्ब फेंक दिया था, जिसे सावधानी से उठाकर एक पानी की बाल्टी मे श्री ओम प्रकाश त्यागी ने रख दिया था और दुश्मनो की चाल को असफल किया था। उस समय हम 24 घण्टे यहीं पर रहते थे रात को लगभग 12 बजे सेठ युगल किशोर बिरला आये और पूछने लगे कि बम्ब वाली घटना का आर्य भाईयो पर कोई विपरीत प्रभाव तो नहीं पडा, तो उस समय मैंने (रामगोपाल शालवाले) कहा था कि इससे हमारा उत्साह और ज्यादा बढ गया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि हम उस तेजस्वी श्रद्धानन्द को सदैव याद करते हैं, जिसने घण्टाघर पर गोरे सिपाहियो की संगीनों के सामने छाती खोल दी थी उसी प्रकार इतिहास मे स्वामी रामेश्वरानन्दजी

—शेष 5 पृष्ठ पर

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक – मूलचन्द गुप्त

वेद मनन-

महर्षि दयानन्द राजनीति के भी देवता थे

—स्वामी रामेश्वरानन्द

प्रिय सज्जनो ! महर्षि दयानन्द जी महाराज इस युग के सबसे बड़े महापुरुष थे। उनका अपना सारा जीवन तपोमय एवं परोपकारार्थ था। वे न केवल मानव की ही उन्नति चाहते थे अपितु प्राणिमात्र का भला चाहते थे। अत उन्होंने आर्यसमाज के षष्ठ नियम मे स्पष्ट लिखा कि "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" तथा नवम नियम मे भी स्पष्ट लिखा है कि—"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।" श्री स्वामी जी सत्य के इतने पक्षपाती थे कि चतुर्थ नियम में "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" लिखा। तथा राजा से रंक तक सब बालकों को विद्या मे पूर्ण चाहते थे। इसलिए उन्होंने यह नियम बनाया कि "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।" महर्षि जी व्यक्ति की स्वतन्त्रता के पुजारी होते हुए भी प्रत्येक सामाजिक सर्वहितकारी नियम-पालन मे सबको परतन्त्र रखने के पक्षपाती थे। इसलिए दसवें नियम मे लिखा है कि—"सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहें।" ये सब भाव ऋषिराज के वेदों के ही आधार पर थे। इसलिये उन्होने तीसरे नियम मे स्पष्ट लिखा कि —"वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

महाभारत से स्वामी जी के जन्मोदय तक इस भू-मण्डल पर जितने भी ईश्वर के अवतार, गुरु, आचार्य खुदा, उसका बेटा और खुदा के पैगम्बर आदि बनकर आये उन्होने अपने पृथक्-पृथक् मत-मतान्तर चलाकर एक दूसरे के प्राणो के प्यासे और शत्रु बनाकर खड़े कर दिये। यद्यपि वेद मे सभी मनुष्यो का एक धर्म माना है- -

समानी प्रपा सह नाभिमिवाभित। —अथर्व॰ 3।30।6

हे मनुष्यो ! आप लोगों की एक ही पानीयशाला हो जहाँ से सब समानरूप से जल पी सकें। तुम लोगों का परस्पर प्रेम से एक-साथ ही अन्न का भोजन हो, इसी कारण तुम लोगों को मैं एक ही बन्धन मे बांधता हूँ।

सहृदय सांमनस्यमविद्वेष आतमिवाघ्न्या।—3।30।1

मै प्रभु तुम सबको एक हृदय वाला एक चित्त वाला तथा परस्पर द्वेष-भाव से रहित करता हूँ। हे गृहस्थी लोगो ! जिस प्रकार उत्पन्न हुए बच्चे के प्रति प्रेम से खिचकर गाय दौड़ी हुई आती है उसी प्रकार तुम एक-दूसरे के पास मिलने के लिए प्रेम से खिचकर जाओ।

मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन् वदत भद्रया। अथर्व॰ 3।30।3

भाई भाई से और बहिन से द्वेष न करें और बहिन अपनी बहिन से और भाई से द्वेष न करे। हे प्रजाजनों ! सब एकत्र होकर एक-दूसरे के अनुकूल एकचित्त और एक ही उद्देश्य मे सयुक्त होकर कल्याण और सुखप्रद रीति से एक-दूसरे के प्रति वाणी बोला करो।

सगच्छध्व सवदध्व उपासते। ऋ॰ 10।191।1

सब मिलकर चलो, सब समान परस्पर प्रीति से बोलो, एक वस्तु को एक प्रकार से जानो। जिस प्रकार तुमसे पहले सज्जनपुरुष चलते रहे हैं उसी मार्ग पर चलो, नवीन मार्ग पर मत चलो।

समानो मन्त्र समिति समानी हविषा जुहोमि। —ऋ॰ 10।191।3

हे मनुष्यो ! तुम्हारा एक ही विचार, एक सभा, समान मन और एक-सा ही स्मरण हो, इत्यादि वेद-वाक्यों के आधार पर मनुष्यमात्र की समानता व एकता मानी इन्हीं भावो से प्रेरित होकर स्वामी जी ने इन मत-मतान्तरों का खण्डन किया। वस्तुत स्वामी जी ही सर्वहितैषी बनकर आये, इसलिये उन्होंने मत-मतान्तरों का खण्डन किया है। ऋषिराज ने अपने भाव अपनी पवित्र कृति सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में स्पष्ट लिखा है यथा—"यह सिद्ध बात है कि पांच सहस्र वर्षों से पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था। क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्या अन्धकार के भूगोल मे विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन मे जैसा आया वैसा मत चलाया। इन सब मतों में चार मत जो वेदविरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी सब मतों के मूल हैं। ये क्रम से एक के दूसरा, तीसरा और चौथा चला है। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र से कम नहीं है। इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सबको परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिए यह ग्रन्थ बनाया है। जो-जो इसमे सत्य मत का मण्डन और असत्य मत का खण्डन किया गया है वह सबको जानना ही प्रयोजन समझा गया है।

"क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि व विरोध करने मे नही है। किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने का है।"

"मनुष्य-जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय कराने के लिए है न कि वाद-विवाद विरोध करने-कराने के लिये। मत-मतान्तर के विवाद से जगत् में जो-जो अनीष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे उनको पक्षपात रहित विद्वजन जान सकते हैं। जब तक इस मनुष्यजाति में परस्पर मिथ्या मत-मतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना-कराना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध जाल में फँसा रखा है।"

—(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास एकादश-अनुभूमिका)

इत्यादि लेख से स्पष्ट है कि स्वामी जी महाराज सब मनुष्यमात्र का एकमत चाहते थे। जब तक सब एक एकमत न होंगे तब तक सच्चा सुख और मनुष्य जीवन की सफलता कदापि प्राप्त नहीं हो सकती। दुःख और दुर्भाग्य का विषय है कि ससार तो दूर रहा आर्यावर्त के नर-नारी भी ऋषि दयानन्द को उनके वास्तविक रूप मे न समझ-समझा सके।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवा॥—मनु 2।20

अर्थात् इन (कुरुक्षेत्रादि) देशों में उत्पन्न ब्राह्मण से पृथिवी के सम्पूर्ण मनुष्य अपने-अपने कामों की शिक्षा पावें।

यतिवर स्वामी जी महाराज लिखते हैं—

"सृष्टि से लेकर पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल मे सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देश मे माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे, क्योंकि कौरव-पाण्डव पर्यन्त यहाँ के राज्य और राजशासन में सब भूगोल के सब राजा चाहते थे।"

इत्यादि सैकड़ो प्रमाण आप इसी पुस्तिका की भूमिका में पढ़ेंगे कि जहा पर ऋषिराज अखण्ड ब्रह्मचारी, प्रकाण्ड महावैदिक विद्वान् सिद्धयोगी, तपोधन, परोपकारी, कर्मठ, ज्ञानी, त्यागी-तपस्वी, निःस्वार्थ दीर्घद्रष्टा थे, वहां वे राजनीति के भी देवता थे।

योग के बिना मानव, भटक रहा

—स्वामी सत्यपति

योग ऐसी विद्या है जिससे समस्त देश व विश्व को एक सूत्र में बांधा जा सकता है। इसी योगाभ्यास, में अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए मनुष्य अज्ञान, अधर्म व दुःखों से मुक्त हो जाता है। इसके माध्यम से इन्द्रिय दमन, झूठ, छल-कपट, हिंसा त्यागकर वह मानवमात्र को अपनी आत्मा के समान समझकर पाप नहीं करता है। दैनिक जीवन में सर्वहितकारी कार्यों को निष्काम भाव से यम-नियमों का पालन व "ओ३म" का जप करते हुए शुद्ध खान-पान रखना योग साधक के लिए अनिवार्य है। ये उद्गार आर्यसमाज बिड़ला लाईन्स में चल रहे" क्रियात्मक योग प्रशिक्षण कार्यक्रम" में स्वामी सत्यपति जी महाराज ने अध्यक्षता करते हुए कहे।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि पातञ्जलि के बताये योग को छोड़ कर चमत्कारों-आडम्बरों के माध्यम से लोगों को भ्रमित किया जा रहा है, जिसका विपरीत प्रभाव पड रहा है। वास्तव में अष्टांग योग पालन से नित्य-आनन्द की प्राप्ति ही योग की सच्ची अनुभूति है।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आर्यावर्त आर्यों का है ।



हम अपने स्वर्णिम इतिहास के आधार पर उज्जवल भविष्य के लिए वर्तमान मे रहते हैं। इसलिए यदि किसी जाति का भविष्य बिगाडना हो तो उसके अतीत के इतिहास को बिगाड कर यह काम बडी सरलता से किया जा सकता है। यद्यपि अतीत को पूर्णतया मिटाना किसी प्रकार भी सरल नही होता परन्तु उसके सुन्दर स्वरूप को विकृत कर उसके प्रति द्वेष घृणा उत्पन्न करना सम्भव है।

अंग्रेजो के भारत आने का उद्देश्य इस देश पर केवल शासन करना न था अपितु ईसाइयत का प्रचार कर, इस देश को भी ईसा भूमि बनाना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होने सर्वप्रथम यहाँ के लोगो मे फूट डालने की राजनीति अपनाई और यहा की सस्कृति और इतिहास को बिगाडने का बीडा उठाया। उन्होने वेद मे आये आर्य ' और ' दस्यु" शब्दो के वास्तविक अर्थों को न समझकर जान बूझकर यह सिद्ध करने की कोशिश की कि आर्य नाम स पुकार जाने वाले लोग भारत के मूल निवासी नही हैं बल्कि यहा के असली मालिक वे हैं जिन्हे आदिवासी अथवा पिछडी जातिया कहा जाता है और उत्तर भारतीय आय लोग विदेशी हैं अक्रान्ता हैं—जिन्होन दक्षिण के लोगों को उत्तर से खदेडा था। यह सब दक्षिण के लोगो क मन मे उत्तर भारतीयो के प्रति घृणा उत्पन्न करने का प्रयास था।

यह धारणा पाश्चात्य विद्वानो की कोरी कल्पना क सिवाय कुछ भी नही है। इस धारणा के न तो पुष्ट ऐतिहासिक प्रमाण ही हैं और न ही भाषा शास्त्रीय आधार पर यह सिद्ध होता है।

पहले मुसलमानो ने भारतीय इतिहास को नष्ट किया फिर अंग्रेजो ने उसे विकृत किया और स्वतन्त्रता के बाद एक ओर साम्यवादी लोग तो दूसरी ओर भारत की तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकारें अपने अपने ढग से भारत के स्वर्णिम इतिहास और सस्कृति को तोडने मरोडने मे सलग्न हैं।

सौभाग्य से पिछले दिनो भारतीय इतिहास सकलन योजना समिति द्वारा आयोजित इतिहास दिवस पर एक विशेष सभा म भारत के प्रसिद्ध इतिहासवेता डा० एन० आर० वगड पाण्डे ने निश्चय पूर्वक महर्षि दयानन्द की मान्यताओ का समर्थन करते हुए कहा कि "आर्य" बाहर से नही आये अपितु आर्य भारत मे रहने वाले उन लोगों को कहते हैं जो सभ्य लोग थे।

वेद मे आये आर्य और दस्यु शब्द गुणवाचक हैं जातिवाचक नही। आय वह है—जो श्रेष्ठ है, कुलीन है, सज्जन, सभ्य और साधु प्रकृति के हैं। इसके विपरीत अनार्य अर्थात् अनारी, अनाडी, मूर्ख, कम समझ या असभ्य के लिए प्रयुक्त होता है जिसे दूसरे शब्दों मे दस्यु कहा जा सकता है।

चुनाव सम्पन्न—

आर्यसमाज बीकानेर

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ—
प्रधान—श्री बहादुरमल
मन्त्री—श्री उदय शकर व्यास
कोषाध्यक्ष—श्री सोहनलाल

जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर

अध्यक्ष—श्री प० द्विजराज शर्मा
महामन्त्री—श्री रमेश प्रसाद गुप्त
कोषाध्यक्ष श्री जवाहरलाल शर्मा

विद्वान शिल्प की शाला

ओ३म् शं न सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्त शमु सन्तु गाव । शं न ऋभव सुकृत सुहस्ता शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥ 12॥ऋ० 7।35।12॥ अ० 19।11।1।

वेदो की विद्या के पालक, विद्वान शिल्प की शाला है।
विद्वान सुकर्मठ हाथो से, करते निर्माण निराला हैं॥

वेदो का सत्य ज्ञान जाने
उनका नित विज्ञान बखाने
वही पालना सुख से करते
विज्ञ क्रिया से करें खजाने

नित नूतन आविष्कार किए श्रुति से विज्ञान निकाला है।
विद्वान सुकर्मठ हाथो से करते निर्माण निराला हैं॥

यही अश्व को वश मे करते
यान बना कर यात्रा करते
यही गाय की सेवा द्वारा
जग मे दुग्ध पोषण क त

भाँति भाँति की सब सामग्री, विद्वान बनाने वाला है।
विद्वान सुकर्मठ हाथो से करते निर्माण निराला हैं॥

अपने सुन्दर शिल्प ज्ञान म
भवन बनाये आसमान म
हैं पितुतुल्य य हितकारी
सब भूत भविष्यत वर्तमान म।

विद्वान सहायक होते हैं, देते जीवन की ज्वाला हैं।
विद्वान सुकर्मठ हाथो से करत निर्माण निराला हैं॥

देवनारायण भारद्वाज
जगन्नाथ निवास रैवोपुर नई बस्ती
आजमगढ (उ० प्र०)

श्री सुभाष विद्यालंकार कुलपति बने

श्री सुभाष विद्यालकार को गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया गया है। गुरुकुल कागडी के सचालन मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का सह दायित्व है।

श्री सुभाष विद्यालकार गुरुकुल कागडी के ही स्नातक हैं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय तथा अन्य विश्वविद्यालयो से अपनी शिक्षा पूरी की। वे दिल्ली उच्च न्यायालय म विगत दस वर्षों से वकालत कर रहे थे। वे 1978 80 मे दिल्ली प्रशासन के जनसम्पर्क एव सूचना निदेशक भी रहे। वे केन्द्रीय सूचना सेवा के सदस्य के रूप मे आकाशवाणी मे भी हे और कई सरकारी पत्रिकाओ का सम्पादन भी किया।

हम विश्वास है कि श्री सुभाष जी के नेतृत्व मे गुरुकुल का प्राचीन गौरव पुन स्थापित हो सकेगा वहा पर अनेकानेक ज्ञान विज्ञान के अधुनातन पाठ्यक्रम प्रारभ किए जाएगे तथा शिक्षा का स्तर ऊँचा उठेगा तथा शैक्षणिक वातावरण का निर्माण होगा। हम सभी की हार्दिक शुभकामनाए।

डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र—

(पत्रो के भावों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं)

आर्यसदेश के विशेषांक

आप विशेषाक निकालने मे सिद्धहस्त हो गये हैं। आपके सभी विशेषाक अत्यन्त सुन्दर और सारगर्भित होते हैं। उनका आकार भी साधारण पुस्तक से दूने आकार का होने से अक सहज मे सग्रहणीय हो जाता है। बधाई।

मेरे सामने 18 मार्च का प० गुरुदत्त विद्यार्थी स्मृति अंक है। मुख्य पृष्ठ पर प० गुरुदत्त का सुन्दर एवं आकर्षक रंगीन चित्र है। अन्दर तीन महत्त्वपूर्ण लेख हैं (1) क्षितीश वेदालकार का "प्राच्य और पाश्चात्य विज्ञान एवं दो गुरुदत्त' (2) राजेन्द्र जिज्ञासु का "मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी", और (3) त्रिलोकचन्द विशारद का मुनिवर पडित गुरुदत्त'। लेख खोजपूर्ण व सरस है। पुन धन्यवाद व बधाई।

—डॉ० गगा प्रसाद विद्यार्थी
175 जयनगर, जबलपुर सिटी

आर्यसन्देश का प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी स्मृति अक आद्योपान्त पढा। विशेषाको की परम्परा मे यह अक ज्ञानवर्धक, सग्रहणीय, अनूठा एव सुन्दर तथा अपूर्व है। आपका प्रयास स्तुत्य है। इस विशेषाक परम्परा से आर्य सन्देश शीघ्र ही आर्य जगत का सबसे लोकप्रिय पत्र बन जाएगा ऐसी आशा करता हू।

श्री त्रिलोक चन्द्र विशारद' लिखित जीवन-वृत, प० क्षितीश वेदालकार का प्राच्य और पाश्चात्य विज्ञान पर शोध लेख प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु की शोधपूर्ण जानकारी और डा० भारतीय जी द्वारा व्यक्तित्व कृतित्व पर विशेष लेख विशेष रूप से प्रशसनीय है। डॉ० भारतीय ने अपने लेख मे प० जी के निर्वाण शताब्दी के काय मे उनके ग्रन्थो का एक सुन्दर सम्पादित संस्करण छपने की आवश्यकता प्रतिपादित की है। काश कोई भक्त प्रकाशक इसे कार्यरूप दे सके। शताब्दी वर्ष पर यही उनको वास्तविक श्रद्धाजलि होगी।

इस सग्रहणीय विशेषाक के लिये पुन बधाई।

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ईश कृपा से आयसन्देश परिवार मे ऋषि के सपनों को साकार करने की शक्ति दिनोदिन व्यापक रूप से बढती रहे इन्हीं आकाक्षाओं के साथ मैं आपको सूचित करता हू कि आप द्वारा सम्पादित डा० सत्यकेतु स्मृति अक ऋषि निर्वाण अक श्रद्धानन्द बलिदान अक, ऋषि बोधाक गुरुदत्त स्मृति अंक, आर्य समाज स्थापना दिवस पर समग्र क्रांति अक पाकर पढ चुका हू। सभी विशेषाक साज-सज्जा और ऐतिहासिक लेखों तथा कविताओ से भरपूर हैं।

'आर्य सन्देश" के ग्राहक बनाने मे मैं सचेष्ट हू। आशा है, जल्दी ही शुल्क और सूची भेजगा।

—शीतल प्रसाद आर्य शिव मदिर के पास
मठ कालेज रोड, लार बाजार देवरिया (उ०प्र०)

आर्यसन्देश के प० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी पर 'स्मृति अक" तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस पर समग्र क्रान्ति अक' प्राप्त हुए। य दोनो विशेषाक काफी सुन्दर, आकर्षक, शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक लेखो से ओत-प्रोत हैं। इन दोनो अको मे प० गुरुदत्त जी और आर्यसमाज के सबध मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली, जिससे ज्ञानवृद्धि हुई और वास्तविक स्थिति का बोध हुआ। ये दोनों विशेषाक सर्वप्रकार से उत्तम और सग्रहणीय हैं।

— राम कुमार आर्य जलधर जोशी
चौहान, सोनीपत (हरियाणा)

आपके द्वारा सुसम्पादित 'आर्यसन्देश को 'आर्यसमाज का स्थापना दिवस'— समग्र क्रांति अक हस्तगत हुआ एतदर्थ साधुवाद। आपका श्रम, निष्ठा एव वैदुष्य श्लाघनीय है।

—डा० महाश्वेता चतुर्वेदी बरेली

धर्म से साम्प्रदायिकता रुकेगी

आयसन्देश के अक 6 मई म धर्म से ही साम्प्रदायिकता रुकेगी' पढा। इस सम्बन्ध मे धर्म पर अलग से एक ट्रेक्ट—'क्या कभी हमने सोचा है?" आपकी सेवा म भेज रहा हू। सच्चाई यह है कि हिन्दू विद्वान भी अनजाने मे रिलिजन मत, सम्प्रदाय व मजहब को धर्म समझने लगता है जबकि इनका धर्म से दूर का भी वास्ता नहीं है रिलीजन मत, सम्प्रदाय व मजहब रूढीवादिता से बंधे हैं। मुसलमान वह है। जो बाईबिल व ईसा मे अधविश्वास रखता हो। ईसाई वह है जो बाईबिल व ईसा मे अधविश्वास रखता है। परन्तु केवल आर्य (हिन्दू) वह है, जो केवल परमात्मा प्रदत्त ज्ञान-'वेद" का अनुसरण करता है। अत यदि सभी मानव ईश्वर के ज्ञान अर्थात वेदानुकूल धर्म का आचरण करें तो साम्प्रदायिकता स्वत ही समाप्त हो जायेगी।

—विपिन स्वरूप गोयल पटवारी जी
सस्थान करोलबाग नई दिल्ली 5

धधकता कश्मीर

अक—मैं आपका सम्पादकीय 'धधकता कश्मीर' विचारोत्तेजक और सराहनीय है। इस समस्या पर प्रकाश डालकर राष्ट्रीय स्तर पर इसे सुलझाने हेतु सलाह प्रस्तुत करने के लिये आप मेरी हार्दिक बधाइयाँ स्वीकार करें।

इस प्रसग मे उल्लेख करना चाहूँगा कि कश्मीर में पुन व्यवस्था और शांति स्थापना के लिये संविधान की धारा 370 को समाप्त करना या संशोधित करना आवश्यक है। किन्तु वहाँ सैनिक शासन लागू करने की बात अब अव्यावहारिक ही नहीं बल्कि अनुचित है। ऐसे गम्भीर विषय पर आपको सतर्क रहना चाहिए।

पत्रिका के निखार और वाण्या सौष्ठव के लिये इसके 'प्रूफ पठन' पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। इसमे प्रश्नोत्तर स्तम्भ भी आरम्भ करें तो अच्छा हो।

—राधाकान्त भारती, अनुसधानकर्ता और पत्रकार
N 525, सेक्टर-9 आर के पुरम्, नई दिल्ली

अंक 26 तथा 27

आर्य सन्देश के अक-26 और 27 दोनों हमें 30 अप्रैल को मिले हैं, जबकि ये अंक नियमानुसार 22 और 29 अप्रैल तक मिल जाने चाहिये थे। कृपया 'आर्यसन्देश' समय पर भिजवाया कीजिये।

कृपया यह भी नोट करें कि इन दोनो अकों की छपाई भी साफ नहीं है, जबकि मेटर बहुत अच्छा था। मैंने फोन पर भी आपके कार्यालय को सूचित कर दिया है।

—लोकनाथ खन्ना
1345-मुखर्जी नगर, दिल्ली-9

आज मैंने एक पत्र एव 150/ रुपयो का ड्राफ्ट साधारण डाक से भेजा है। यह राशी, मेरे द्वारा बनाये गये छ नये सदस्यो का शुल्क है। कृपया प्राप्ति से अवगत करायें।

आज ही आर्य सन्देश के अक 26 व 27 दृष्टिगोचर हुए। मुद्रण देखकर लगता कि प्रैस मे अव्यवस्था है, जिसके शीघ्र दूर होने की आशा की जाती है। जो सामग्री इस अक मे आपने दी है, वह सामयिक एव महत्त्वपूर्ण है, परन्तु मुद्रण की त्रुटियो के कारण, जो निखार आता, वह नहीं आ सका है।

भविष्य मे भी आर्यसन्देश के ग्राहक बनाना जारी रहेगा।

भविष्य मे दिल्ली आना हुआ तो आपके दर्शन करूगा। मार्च मास के आरम्भ मे कार्यालीय कार्य से दिल्ली आया था। सभा कार्यालय भी गया था। वहा के मधुर सस्मरण स्मृति महल पर अंकित हैं।

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

बडी प्रसन्नता हुई 22 अप्रैल का अक पढकर वैसे तो इस वर्ष के सभी अक सराहनीय रहे परन्तु 22 अप्रैल के अक ने जिस प्रकार से सचेत किया है, यह समय की आवश्यकता है।

आज देश म जिस प्रकार हर कार्य राजनैतिक दृष्टिकोण से किया जा रहा है उससे कुर्सीवाद बढ रहा है और देश का हित पिछड रहा है। मात्र वोटो की राजनीति चल रही है जिस पर रोक लगा सकता है सजग प्रहरी और वह भूमिका आर्य समाज को छोड और कोई नही निभा सकता अत आवश्यकता है आपकी लेखनी को कट्टर राष्ट्रवाद, जनहित और सत्य कहने की ओर चलते रहने की। क्योकि आज की राज-

—शेष अगले पृष्ठ पर

ओ३म् ही ...

ओम् ही तन मे ओम् ही मन मे
ओम् मेरा जीवन धन है।
ओम् ही मेरे मन का स्वामी
ओम का ही आराधन है॥

जब जब दुःख का सिन्धु मिला प्रभु
तब-तब तुझे पुकारा है,
अनुनय विनय सुनी प्रभु मेरी
तूने मुझे उबारा है।
भव सागर के घटाटोप मे तू ही भवभय भजन है॥

घनी घटाएँ दुविधाओ की
जब घिर घिर कर आती हैं
तेरी ही करुणा किरणों में—
आत्म शान्ति मिल जाती है।
जीवन की हर एक उलझन मे तू ही जीवन दर्शन है॥

जन्म मरण से बँधा हुआ जब—
जब जीवन झूला झूलें
तब तब तू सावन बन आया
मेरा पुलकित मन फूलें
नित्य नाचते मन मयूर का तू ही सघन गगन घन है॥

ओम् पिता है, ओम् ही माता
ओम् दुःखो का त्राता है,
ओम ही मेरा सच्चा साथी
विश्व विधाता भ्राता है।
ओम ही है सर्वस्व हमारा, ओम् ही सत्य सनातन है॥

—रमेश चौहान आर्य
P 3 P&T आवाससमूह रतलाम (म०प्र०)

कृषि मंत्रालय के अंतर्गत-पशु हत्यायें और मांसाहार की योजनायें

आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि दूरदर्शन समाचार पत्रो म ज्ञात होता है कि भारत सरकार के कृषि मत्रालय मास उत्पादन पर बहुत जोर दे रहा है। इस मत्रालय के अन्तर्गत नये-नये बूचडखाने बनाने की योजनायें बनायी जा रही है। इन बूचडखानो का निर्माण इसलिए किया जा रहा है कि अधिक से अधिक पशुओं को मारा जा सके। कृषि मत्रालय की यह योजना भारत वर्ष मे मासाहार को प्रोत्साहन की दिशा म एक कदम मालूम होता है।

महर्षि दयानन्द ने मासाहार को मानव आहार नहीं बतलाया है। उनका मासाहार के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट था कि मासाहार करने से मनुष्य मे राक्षसी मनोवृत्ति जन्म लेती है और देश का पशुधन नष्ट होता है। पशुधन के नष्ट होने से जन-मानस को दूध, दही, घी जैसी स्वास्थ्य-वर्धक वस्तुयें उपलब्ध नहीं होगी, प्राकृतिक आपदाए बढती है। देश दरिद्रता के चगुल मे फस जाता है। आज सभी वैज्ञानिक इस बात को स्वीकार करते हैं। भारत सरकार के पर्यावरण मत्रालय की स्थापना का उद्देश्य भी यही है।

दुर्भाग्य से भारत सरकार के कृषि मत्रालय के अधिकारी पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव मे आकर, कृषि भाइयो को प्रोत्साहन न देकर, बूचडखानो को बनाने में लगे हुए हैं। आज हमारे किसानो भाईयो को बीज और हल जोतने के लिए यह मत्रालय सहायता न दकर करोडों रुपये बूचडखानो के निर्माण मे लगा रहा है। आठवी पचवर्षीय योजना के अतर्गत अनगिनत नये बूचडखानो की योजनायें निर्मित की गयी हैं। इन योजनाओं को सरकार तभी समाप्त करेगी जब तक की इन योजनाओ का विरोध भारतवर्ष के सभी धर्मावलबी नाग नहीं करते हैं। अत आपसे सविनय निवेदन है कि आप अपनी सभी शाखाओ से निवेदन करें कि वे सभी सस्थायें कृषि मत्रालय को बूचडखाने न बनाने के लिए प्रेरित करें। सभी सस्थायें अपना प्रतिनिधिमण्डल बनाकर माननीय श्री देवी लाल जी, कृषि मंत्री भारत सरकार को स्वयं मिलें और उन्हें इस मत्रालय मे शिक्षा भ्रमित अधिकारियों को पुन कृषि का कार्य करने के लिए कहें। उन्हें स्पष्ट रूप से प्रेरित करें कि आगामी पचवर्षीय योजना मे नये बूचडखाने न बनें और मासोत्पादन की सभी योजनायें रदद करें।

—डा०बी०सी० जैन
महासचिव, पशु कल्याण समिति, भारत
एन 15 ग्रीन पार्क विस्तार, नई दिल्ली

पृष्ठ 1 का शेष

को भी याद किया जायेगा जिसने 7 नवम्बर 1966 को गरजती हुई आवाज में कहा था कि पार्लियामेंट को घेर लो और लोग उनकी आवाज पर पार्लियामेंट की ओर बढ चले थे। उनकी नेतृत्व शक्ति सदा याद की जायेगी।

इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध पत्रकार प० क्षितीश वेदालकार, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव, आर्य केन्द्रीयसभा के प्रधान महाशय धर्मपाल हरियाणा विधान सभा के अध्यक्ष श्री वेदपाल, डा० प्रशान्त वेदालकार सनातनधर्मी नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती प्रकाश आर्या आदि ने श्री स्वामी रामेश्वरानन्द श्री सरस्वती द्वारा की गयी आर्यसमाज तथा राष्ट्र की सेवाओ को स्मरण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

शोक सभा मे दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण सस्थाओ गुरुकुलो एवं अन्य धार्मिक तथा सामाजिक सगठनों के व्यक्ति भारी सख्या मे सम्मिलित हुए।

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश

की ओर से 12 मई से 20 मई तक

अग्रवाल धर्मशाला, नजफगढ़ नई दिल्ली मे

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

नवयुवको के चरित्र निर्माण तथा उनमे राष्ट्रीय एकता एव वैदिक-सस्कृति के भावो को जाग्रत करने के लिए आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से एक विशाल शिविर का आयोजन किया गया है।

शिविर मे प्रतिदिन व्यायाम, सध्या यज्ञ उपदेश, बौद्धिक-प्रशिक्षण प्रश्नोत्तरी, मनोच्चारण आदि कार्यक्रम आयोजित होगें। शिविर का उदघाटन 13 मई रविवार 10 30 बजे होगा।

शिविर मे प्रशिक्षण के इच्छुक आर्यवीर अविलम्ब सम्पर्क करें।

आर्यसमाजो तथा आर्य धन श्रेष्ठियो से प्रार्थना है कि वें इस शिविर के सचालनार्थ अपनी अपनी सहयोग राशि भिजवा कर यज्ञ और पुण्य लाभ प्राप्त करे।

भवदाय
प्रियतम दास रसवन्त अधिष्ठाता

शेष पृष्ठ 4 का

नीति धर्म निर्पेक्ष की आड मे दिशाहीन समाज को जन्म दे रही है। कथनी और करनी मे बहुत अन्तर आ गया है। जब तक देश मे राष्ट्रीयता की भावना जागृत नहीं होती और विद्वान् मनिषियो का सम्मान नहीं होता, कभी सुधार आ नही सकता, मात्र आर्थिक प्रगति से हमारी कठिनाईयो अथवा दुर्दशा का निदान सम्भव नही आर्यसमाज द्वारा चरित्र उत्थान का पाठ पढाना होगा।

राम प्रकाश
के० डी०-78 ए अशोक विहार नई दिल्ली-51

भ्रांति निवारण

— प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प० लेखराम जी की मासिक दक्षिणा— एक आर्य बन्धु ने मेरी नई कृति 'मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी' ध्यानपूर्वक पढ़के एक पत्र लिखा है। इसमें कहीं छपा है कि पं० लेखराम जी की मासिक दक्षिणा 50 रुपये थी। मेरी ही एक अन्य पुस्तक में छपा है कि पण्डित जी की मासिक दक्षिणा तीस रुपये तक थी। उनका प्रश्न है कि 50 रु० क्या ठीक है।

मेरा उत्तर है कि प्रश्न कर्त्ता बंधु का प्रश्न ठीक है। श्री पण्डित लेखराम जी के जीवन चरित्र मे मैंने जो कुछ भी इस विषय मे लिखा है सो सप्रमाण है। नई पुस्तक में मुद्रण दोष से 50 रु० छप गया है। सारी पुस्तक के प्रूफ पढ़ने का मुझे अवसर न मिला।

लोटा या सोटा ?—एक अन्य आर्य बंधु ने मेरी इसी पुस्तक के प्राक्कथन के पृष्ठ तीन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी द्वारा अजमेर के आर्य सभासद श्री जेठमल जी के नाम के साथ 'लोटा' शब्द छपने पर एक शङ्का भेजी है। पुस्तक के भीतर सोटा ठीक छपा है। 'लोटा' को प्रूफ की अशुद्धि समझा जावे।

प्राक्कथन के पृष्ठ दो पर मुंशी कन्हैयालाल जी अलखधारी के साहित्य के साथ अग्रेजी' शब्द छप गया है। अग्रेजी की बजाए उर्दू होना चाहिए। आगे के पृष्ठों मे यह स्पष्ट लिखा ही है। मुद्रण दोष से ऐसा हो ही जाता है। इसका हमें खेद है।

आर्य सन्देश का प० गुरुदत्त विशेषांक—आर्य सन्देश के प० गुरुदत्त विशेषाङ्क पर देश के सदूरास्थ नगरों व अहिन्दी भाषी प्रदेशों से हमे भी लम्बे लम्बे पत्र प्राप्त हुए हैं। जबलपुर से श्रीमान विद्यार्थी जी, बगाल से श्री रघुनाथ जी आर्य ने अत्यन्त भावपूर्ण पत्र लिखे। हम उनके स्नेह व प्रमभाव के लिए उन्हें धन्यवाद व बधाई देते हैं। ऐसे पत्रों में एक आर्य बंधु श्री गुप्त जी ने एक शङ्का भेजी है। आपने लिखा है कि मेरे लेख में छपा है कि पण्डित गुरुदत्त जी ने बीस जून सन् 1880 के दिन आर्य समाज मे प्रवेश किया। तब पण्डित जी मुलतान मे थे। इसी अक मे श्री डा० भारतीय जी ने लिखा है कि श्री प० गुरुदत्त जी लाहौर मे रहते हुए आयसमाज में लाने का श्रेय ला० साईंदास जी को दिया है। इनका प्रश्न यह है कि सत्य क्या है ? तथ्य क्या है ?

यह प्रश्न भी अच्छा है। हमारा निवेदन यह है कि भारतीय जी ने अनजाने मे ही ऐसा लिख दिया है। इसी अङ्क में श्री त्रिलोक चन्द्र जी विशारद लिखित पण्डित जी की पुस्तिका (लेखरूप मे छपी है) मे भी वही कुछ छपा है जो मैंने लिखा है। मैंने प० गुरुदत्त जी पर अपनी पुस्तक में पुरानी छपी प्राय सभी जीवनियों व सेंकड़ों लेखो का मथन करके ही यह तथ्य दिया है। ला० लाजपत राय लिखित पण्डित जी के उर्दू व अग्रेजी जीवन चरित्र में भी यही छपा है कि गुरुदत्त लाहौर आन से पूर्व ही आर्य समाज के सम्पर्क में आ चुके थे। वह आर्यसमाज के सभासद बनकर मुलतान मे अच्छी प्रसिद्धि व प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे। सौभाग्य से श्री भारतीय जी ने लाला लाजपतराय लिखित पण्डित जी की जीवनी का हिन्दी अनुवाद भी कर दिया है। उसमें लाला जी ने जो लिखा है वही सत्य है, वही तथ्य है। हमने आर्य सन्देश मे अपने लेख में उसी सत्य का प्रकाश किया है। पाठक नोट कर लें।

यह भ्रामक विचार है—एक आर्य बंधु श्री जाधव ने मराठा बाग से लिखा है कि 'आर्य जगत' के महात्मा हंसराज विशेषाङ्क में किसी प्रिंसिपल आर्य वीर भल्ला ने लिखा है कि डी० ए० वी० सस्थाओं ने अनाथालय खोले हैं। प्रश्नकर्त्ता ने लिखा है कि मेरे द्वारा लिखित महात्मा हंसराज जी की जीवनी में डी०ए०वी० मैनेजिंग कमेटी द्वारा खोले गये किसी अनाथालय की चर्चा नहीं। ऐसा क्यों ?

फिर पूछा है कि डी० ए० वी० द्वारा स्थापित अनाथालय कहाँ-कहाँ है ?

इन दोनों प्रश्नों का उत्तर वह बंधु उस लेख लेखक से ही पूछते तो अच्छा होता। हाँ ! आर्य जनता स्नेहवश मेरे लेख को प्रामाणिक मानकर उसमे ऐसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को न पाकर मुझसे यदि ऐसा पूछती है तो मुझे भी स्पष्टीकरण देना होगा।

किसी प्रिंसिपल ने क्या लिखा है। यह मुझे पता नहीं। न ही मुझे पता करने की आवश्यकता है। किसी प्रिंसिपल के पास पढ़ने लिखने का समय ही कहाँ है ? स्वाध्याय करने वाले अध्यापक, प्राध्यापक और प्रिंसिपल अब भाग्य से ही मिलते है। किसी प्रिंसिपल को अपनी बात कहने व लिखने से कोई रोक भी नहीं सकता। उन्हें तो वेदों मे इतिहास, युद्ध और आर्यों का बाहर से भारत मे आना, मांस खाना, वेद में असख्य रब व रबनियाँ (God and Godesses) सब कुछ दिखाई देते हैं जो वैदिक विद्वानों को भी पता नहीं।

रहा यह प्रश्न कि मैंने ऐसे किसी अनाथालय की चर्चा क्यों नहीं की सो मेरी विनती यह है कि राष्ट्रपति भवन व ससदभवन को सेठ बिड़ला या टाटा या हाजी मस्तान जैसे अरब पतियों की सम्पत्ति घोषित करने का अधिकार नहीं रखता। इतिहास वह नहीं हो सकता जो हम चाहते हैं। इतिहास का तो अर्थ ही यही है कि ऐसा हुआ। सो जैसा इतिहास है मैंने वैसा ही लिखा है। आज तक किसी भी इतिहास लेखक ने यह नहीं लिखा कि डी० ए० वी० संस्थाओं ने कोई अनाथालय खोला। आर्यसमाज ने अनाथालय स्थापित किए। डी० ए० वी० वाले खोलेंगे तो हम भी लिख देंगे। सत्य के ग्रहण करने में मुझे क्या आपत्ति है ? हाँ ! किसी के तुष्टिकरण के लिए मैं झूठ नहीं बोल सकता। धर्म सेवा—स्वार्थसिद्धि व झूठ का क्या मेल ?

—वेद सदन, अबोहर-152116

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल

आर्यसमाज राजोरी गार्डन नई-दिल्ली के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का सचालन किया जा रहा है। इस विद्यालय में पारस्परिक शिक्षण के साथ-साथ वैदिक धर्म की शिक्षा भी दी जाती है। गत वर्ष अनेक सामाजिक, धार्मिक, सास्कृतिक एव खेल-कूद कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्य युवा महासम्मेलन के अवसर पर इस विद्यालय के छात्र-छात्राओ ने अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने 1 मई को विद्यालय की गतिविधियों को देखा तथा अध्यापक वग को सम्बोधित भी किया। विद्यालय के उपप्रधान श्री जगदीश आय, मन्त्री श्री नन्दकिशोर भाटिया तथा प्रिंसिपल श्रीमती नीलम मित्र ने विद्यालय की प्रगति के सम्बन्ध में भावी योजनाओं की रूपरेखा भी प्रस्तुत की। विद्यालय की उल्लेखनीय गतिविधियो की परिचायका एक स्मारिका भी प्रकाशित की गयी।

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द मनोवाछित देश का सुप्रसिद्ध शिक्षणालय श्री आर्ष गुरुकुल चित्तौडगढ, अरावली की सुन्दर पहाड़ियों में गभीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल मे अविस्थित है। शिक्षा सर्वथा नि शुल्क है। यहा लगभग सभी प्रान्तों के बालक बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहाँ की आश्रम प्रणाली सुनियोजित एव अनुपम विशेषता सहित उल्लेखनीय है। यहाँ सुयोग्य एव विद्वान् गुरुजनों की देखरेख में बालकों का सर्वांगीण विकास मुखरित होता है वेद, वेदांग, सस्कृत, साहित्य व्याकरण, दर्शन, उपनिषद, आदि की पढाई को प्रमुखता दी जाती है। पहली से आठवी तक यहां सस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय इगलिश, गणित, विज्ञान, भूगोल, सामाजिकज्ञान, हिन्दी, वाणिज्य आदि विषय पाठ्यक्रम मे समाहित हैं। आर्ष पाठविधि एव आर्ष व्यवहार विधि से मन्वित यह गुरुकुल-शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त है।

सपूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बन्ध, आर्षपद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया से मध्यमा, शास्त्री व आचाय कक्षा तक की पढाई व परीक्षा का समावेश है। विगत वर्षों से यहां का परीक्षा परिणाम उत्तम रह रहा है।

सत्र 1 जुलाई से प्रारम्भ होता है तथा नवीन बालकों का प्रवेश 27-जून से अधिग्रहण है प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता—श्री गुरुकुल चित्तौडगढ, राजस्थान 212001 से पत्र-व्यवहार करें।

मळनाथ भंजन में—

आर्यवीर दल शिविर

गोरखपुर परिमडल आर्यवीर दल का प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर 3 जून से 10-जून तक आर्यसमाज मळनाथ भजन में आयोजित किया जा रहा है। आवास तथा भोजन की नि शुल्क व्यवस्था। प्रशिक्षण के इच्छुक 1 जून तक नाम भेजें।

ज्वालापुर में—

युवक निर्माण योग साधना शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली की ओर से 9 जून से 17 जून तक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में आर्य युवक निर्माण तथा योग साधना में शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में युवकों को व्यायाम तथा योग प्रशिक्षण के साथ साथ वैदिक सिद्धांतों से भी परिचित कराया जायेगा।

आवश्यक नियमों/निर्देशो के लिए श्री चन्द्रमोहन आर्य से दूरभाष 519247 पर सम्पर्क करें।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 17, 18 5-90 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा अन्तर्गत आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर।

श्री राम पंचायती मन्दिर

उद्घाटन समारोह सम्पन्न

20 मई 1990 तक आयोजित किया गया है। इस शिविर में 107 आर्यवीर प्रशिक्षण ले रहे हैं।

इन आर्यवीरों में राष्ट्र देश, धर्म और जाति के लिए सदैव तत्पर रहने की भावनाएं प्रबुद्ध करने के लिए श्री सुरेन्द्र सिंह आज़ाद, श्री हरीसिंह, प० ओउमवीर शास्त्री, डा० ज्ञान प्रकाश तथा श्री प्रियतम दास रखवत विभिन्न शारीरिक एव बौद्धिक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। यह जानकारी आर्यवीर दल के मन्त्री श्री श्यामसुन्दर सिरमानी ने दी।

रविवार 13 मई को शिविर का उद्घाटन समारोह आर्यसमाज नजफगढ़ के प्रधान श्री रघुनाथ सिंह जी की अध्यक्षता मे हुआ।

इस अवसर पर दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्य वीरो का आह्वान किया कि जन्म लेना उसी का सफल है जो अपने वंश धर्म और देश को समुन्नत करे। अत आर्यवीरो को अपने आपको किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

ग्राम सभा के प्रधान माननीय श्री दीपचन्द जी ने ध्वजारोहण किया और आर्यवीरों को त्यागी एवं तपस्वी बनने की प्रेरणा की। श्री प्रियतमदास रखवत डा० [illegible], श्री ओमवीर शास्त्री, डा० [illegible], पं० [illegible] शास्त्री, श्री सुरेन्द्र कुमार हिन्दी तथा अन्य स्थानीय महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिविर समापन समारोह

रविवार, 20 मई 1990 प्रातः 10 बजे

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के संरक्षण में होगा। समारोह की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल करेंगे।

इस अवसर पर श्री० तारीफ सिंह संसद सदस्य, श्री [illegible] दिवाकर 'हंस' (प्रधान संचालक-सार्वदेशिक आर्यवीर दल) स्वामी धर्ममुनि (वानप्रस्थ आश्रम) स्वामी मनीषानन्द, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, श्रीमती सरला महता, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, श्री जयप्रकाश आर्य, श्री रामनाथ सहगल आदि उद्बोधन देंगे।

आर्यवीर दल व्यायाम तथा शस्त्र-प्रदर्शन करेंगे।

प्रियतम दास रखवत

अधिष्ठाता आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तरप्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
ट्रिनल आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी, आई०के० प्रिंटर्स मोजपुर दिल्ली-५३ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५१

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ · अंक ३१	रविवार २७ मई १९९०	विक्रमी सम्वत् २०४७	दयानन्दाब्द—१६६	सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे	वार्षिक २५ रुपये	आजीवन सदस्य २५० रुपये	विदेश मे ५० पौंड १०० डालर	दूरभाष ३१०१५०

वैदिक शिक्षा पद्धति ही भावी नागरिकों का समुचित निर्माण कर सकती है–

–स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

जयपुर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर का शताब्दी समापन समारोह 18, 19 व 20 मई 1990 को आर्य वैदिक विद्यालय के प्रागण में समारोह पूर्वक सपन्न हुआ।

"शिक्षा सम्मेलन' के अध्यक्ष श्री आनन्दबोध सरस्वती के कहा कि राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान करने के लिए राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को प्रतिक्षण जागरूक रहना होगा। उन्ह यह शिक्षा देने के लिए वैदिक शिक्षा पद्धति ही एकमात्र सही व्यवस्था है। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार की ऊर्जा एव शिक्षा मन्त्री श्रीमती सुमित्रा सिंह ने कहा कि भारत वर्ष की शिक्षा पद्धति मे महर्षि दयानन्द सरस्वती एव उनके अनुयायियो का योगदान अप्रतिम है। सम्मेलन के सयोजक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल न कहा कि आयसमाजो द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओ मे शिक्षा प्राप्त अनेक लोगो ने अपने अपन क्षेत्र मे महान् योगदान दिया है। राष्ट्र के निर्माण मे भी उनकी भूमिका विशेष सराहनीय है। इस सम्मेलन मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के अग्रेजी विभाग क पूव अध्यक्ष डा० तुलसी राम, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, राजस्थान विश्वविद्यालय के टैगोर आचार्य रामगोपाल शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

शताब्दी समापन समारोह का उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय ने किया। उन्होने कहा कि पुर्नजागरण के काल मे राजा राममोहन राय, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा अरविन्द और स्वामी विवेकानन्द का नाम पहली पक्ति मे आता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का कार्यक्षेत्र विशालतम था। उन्होंने केवल आध्यात्मिक क्षेत्र मे ही कार्य नही किया, बल्कि राजनैतिक एव सामाजिक क्षेत्रो मे भी महान कार्य किया। बगाल म श्र केशव चन्द्र सेन के परामर्श पर ही उन्होने हिन्दी भाषा मे बोलना प्रारम्भ किया था। हिन्दी भाषा के लिए महर्षि दयानन्द ने जो कार्य किया उस काय का निरन्तर आगे बढाए जाने की आवश्यकता है।

'वेद सम्मेलन' की अध्यक्षता स्वामी ओमानन्द सरस्वती न की। इस सम्मेलन के सयोजक प्रो० सत्यव्रत सामवेदी ने राष्ट्रीय आवश्यकताओ को रेखाकित करते हुए आर्यसमाज की भूमिका और वर्तमान सदर्भो मे इसकी महती आवश्यकता पर बल दिया। इस सम्मेलन मे प्रो० रामप्रसाद वेदालकार (उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय, हरिद्वार), डा भवानी लाल भारतीय (अध्यक्ष दयानन्द पीठ पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ) डा० सुधीर कुमार गुप्त (जयपुर) डा० निरूपण विद्या लंकार (मेरठ) डा० ब्रह्मानन्द शर्मा, (जयपुर) ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

समारोह का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ। जिसमे स्वामी दीक्षानन्द जी, प० राजगुरु जी शर्मा और स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने अपने आर्शीवचन प्रदान किये। सम्पूर्ण समारोह के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली थे। ध्वजारोहण श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने किया। दोपहर बाद एक विशाल शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया। रात्रि मे डा० वेदप्रताप वैदिक मुख्य सपादक भाषा, दिल्ली की अध्यक्षता मे हिन्दी सम्मेलन सपन्न हुआ।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आर्य वीर दल दिल्ली का प्रशिक्षण शिविर संपन्न:

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर 12 मई से 20 मई 1990 तक बग्वाल धर्मशाला नजफगढ, नई दिल्ली मे आयोजित किया गया।

समापन समारोह से 20 मई 1990 को मुख्य अतिथि सासद चौ० तारीफ सिंह ने कहा कि राष्ट्र की स्वाधीनता मे आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मुझे इन आर्य वीरों द्वारा प्रदर्शित कार्यक्रमों को देखकर अतीव प्रसन्नता हुई है। यह युवक ही आने वाले युग के कर्णधार होंगे तथा आर्यसमाज एव वैदिक धर्म की मान्यताओं का प्रचार प्रसार करेंगे। समापन समारोह की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान एम०डी०एच० के स्वत्वाधिकारी श्री महाशय धर्मपाल ने की। उन्होंने प्रशसनीय कार्य करने वाले आर्य वीरों को पुरस्कृत भी किया। श्री महाशय धर्मपाल ने कहा कि संगठित रूप से किया गया कार्य ही लक्ष्य की प्राप्ति मे सहायक होता है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि इन युवा वीरो को शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा दी गयी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्य वीरो का आह्वान किया कि वे समाज मे व्याप्त बुराईयो से लड़ने के लिए अपने आपको तैयार करें। सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन से ही राष्ट्र का कल्याण सभव है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द सरस्वती ने परेड, पी०टी०, दण्डबैठक, आसन, भाला, लाठी, फरसा, कराटे, तलवार, छुरी आदि के प्रदर्शन की मुक्त कण्ठ से प्रशसा की। श्री सुरेन्द्र सिंह आजाद और श्री नारायण सिंह ने सुन्दर मधुर स्वर लहरी से आर्य वीरों को प्रगति के प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी। प्रान्तीय आर्य महिला सभा की मन्त्रिणी श्रीमती कृष्णा चड्ढा, श्री प्रियतम दास रसवन्त (अधिष्ठाता आर्य वीर दल), सचालक डा० ज्ञान प्रकाश और बौद्धिकाध्यक्ष श्री ओमवीर शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने उल्लेखनीय कार्य के लिए आर्य वीर दल के कार्यकर्ताओं की प्रशसा की उन्होने कहा कि राष्ट्र की रक्षा करने के लिए सत्य, ऋत, तप, दीक्षा, उग्रता, ब्रह्म और दान की आवश्यकता होती है। हम अपनी राष्ट्रीय प्रार्थना मे भी ब्राह्मण, धर्म और क्षत्रीय धर्म की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। शास्त्रो एव शस्त्रो का ज्ञान ही राष्ट्र की रक्षा करने मे आर्य वीरो को सक्षम बना सकता है। इन आर्य वीरो को इसी दिशा मे प्रशिक्षित किया गया है।

इस प्रशिक्षण शिविर के आयोजन मे आर्यसमाज नजफगढ के प्रधान चौ० रघुनाथ सिंह एवं उनके साथियो ने विशेष सहयोग दिया। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी, स्वामी निर्मला नन्द जी, स्वामी मनीषानन्द जी महाराज ने भी आर्शी वचन कहे। प्रीतिभोज का आयोजन श्री महाशय धर्मपाल जी की ओर से किया गया। इस अवसर पर आर्य वीरो को पुरस्कृत भी किया गया।

✱

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव   सम्पादक –मूलचन्द गुप्त

महर्षि दयानन्द के विचारों के परिप्रेक्ष्य में—

भाषा एवं लिपी की उत्पत्ति का काल निर्धारण

—मनमोहन कुमार आर्य

आज विश्व म अनेक भाषाएं हैं जिनकी उत्पत्ति का अपना-अपना काल है। यह भी प्राय निर्विवाद है कि सस्कृत सवप्र चीन भाषा है। आयसमाज की मान्यता है कि वेदो का आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ मे हुआ। यह कथन उचित ही है कि मानव एव वेदो की उत्पत्ति का काल एक ही है।

इससे पूर्व कि आगे लिखा जाये, एक घटना का उल्लेख किया जाता है जिसकी प्रेरणा स्वरूप यह विचार लेखबद्ध किये जा रहे हैं। इन पक्तियो के लेखक के कार्यालय मे एक तार्किक मनोवृत्ति के बन्धु हैं जिनसे आर्यसमाज की मान्यताओ के सम्बन्ध म प्राय वार्तालाप होता रहता है। एक बार इन बन्धु से भाषा एव लिपि की उत्पत्ति एव सस्कृत की सर्वप्राचीनता पर वार्ता हुई। इन्हें आर्यसमाज के दृष्टिकोण के अनुरूप समझाने का यथासम्भव प्रयास किया गया परन्तु वह मतैक्य नही हुये। समय 2 पर इस विषय पर चर्चा होती रहती है। इसी के परिणामस्वरूप एतद् विषयक कुछ विचार लेखबद्ध है।

पश्चिम के प्राय सभी विद्वान भाषा एव लिपि की उत्पत्ति को मात्र कुछ सहस्र वर्ष ही मानते हैं। इन विद्वानो को महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण विदित नही था। यह विद्वान ऋषि कोटि के व्यक्ति भी नही थे। ईश्वर सम्बन्धी इनके विचार भी वास्तविकता के विपरीत हैं। ईश्वर एव जीव का ज्ञान, सृष्टियोत्पत्ति का प्रयोजन जिसको नही होगा वह व्यक्ति भाषा एव लिपि की उत्पत्ति के रहस्य की सत्यता को प्राप्त नही हो सकता। स्वामी दयानन्द इन सबसे न केवल पूर्णरूपेण परिचित ही थे अपितु विश्व को एतद्विषयक ज्ञान उन्ही की देन है। वह योगी थे एव परमात्मा का साक्षात्कार भी उन्होने किया था। सृष्टियोत्पत्ति की पृष्ठभूमि, ईश्वरीय ज्ञान वेदों की उत्पत्ति, मानव की उत्पत्ति, अन्य चराचर प्राणि जगत की उत्पत्ति आदि विषयो का ऐतिहासिक ज्ञान भी महर्षि दयानन्द की ही देन है। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एव पूनाप्रवचनो म व्यक्त महर्षि दयानन्द के विचारो को ध्यानपूर्वक पढा जाये तो सृष्टि की आदि भाषा एव लिपि की उत्पत्ति के काल का सरलता से निर्धारण किया जा सकता है। यहा पर सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास से एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है —

प्रश्न—वेद सस्कृत भाषा मे प्रकाशित हुए और वे अग्नि आदि ऋषि लोग उस सस्कृत भाषा को नहीं जानते थे फिर वेदो का अर्थ उन्होने कैसे जाना?

उत्तर— परमेश्वर ने जनाया। और धर्मात्म योगी महर्षि लोग जब-जब जिस-जिस के अर्थ की जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप मे समाधिस्थ हुए तब-तब परमात्मा ने अभीष्ट मन्त्रों के अर्थ जनाये। जब बहुतों के आत्माओ मे वेदार्थ प्रकाश हुआ तब ऋषि मुनियो ने वह अर्थ और ऋषि मुनियों के इतिहासपूर्वक ग्रन्थ बनाये। उनका नाम ब्राह्मण अर्थात् "ब्रह्म" जो वेद उसका व्याख्यान ग्रन्थ होने से "ब्राह्मण" नाम हुआ। और—

ऋषियों मन्त्रदृष्टय., मन्त्रान्सम्प्रादु ॥

(निरुक्त)

जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस-जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, किया और दूसरों को पढाया भी, इसीलिए उस अद्यावधि उस 2 मन्त्र के साथ ऋषिनाम स्मरणार्थ लिखा जाता है। जो कोई ऋषियो को मन्त्रकर्ता बतलावें उनको मिथ्यावादी समझें। वे तो मन्त्रों के अर्थ प्रकाशक हैं।"

स्वय महर्षि दयानन्द जी की भी यह जीवन घटना प्रसिद्ध है कि जब महाराज जी पण्डितो को वेद भाष्य लिखवाया करते थे उस समय कभी कभी मन्त्र का अर्थ उन्हे स्पष्ट नही होता था तब महर्षि एकान्त मे जा, समाधिस्थ होकर अभीष्ट मन्त्र का अर्थ अपने आचार्य परमात्मा से समझ आते थे और आकर पण्डितो को मन्त्रार्थ लिखवाया करते थे।

महर्षि दयानन्द जी के अनुसार सृष्टि, वेद, मानव सम्वत् 1,96,08,53,089 वष है। इतने काल पूर्व ही मानव की उत्पत्ति इस पृथ्वी पर हुई थी। वेद का आविर्भाव भी मानव उत्पत्ति के साथ साथ हुआ था। सत्यार्थ प्रकाश से जो उद्धरण दिया गया है उसके अनुसार परमात्मा ने आदि चार ऋषियों को वेदों के ज्ञान को उक्त ऋषियों को बताया भी। इससे स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि भाषा की उत्पत्ति भी वेदो की उत्पत्ति के साथ 2 ही हुई। उक्त उद्धरण में ही महर्षि कहते हैं कि वेद ज्ञान के आविर्भाव के तत्काल बाद "ऋषि मुनियो ने वह अर्थ और ऋषि मुनियो के इतिहासपूर्वक ग्रन्थ बनाये।" इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रन्थों की रचना भी अल्पकाल मे ही आरम्भ हो गयी थी। महर्षि के इन युक्तियुक्त एव बुद्धिसगत विचारो से यह भी स्पष्ट है कि लिपि का उद्भव भी वेदोत्पत्ति के साथ 2 हो गया था।

उक्त आधार पर यह निश्चित है कि भाषा की उत्पत्ति आज से 1,96,08,53 089 वर्ष पूर्व सृष्टि, वेद एव मानव की उत्पत्ति के साथ 2 हुई। यह आदि भाषा सस्कृत थी एव लिपि देवनागरी अक्षर थे जिनमे वर्तमान मे वेदो को सहिता बद्ध किया हुआ है।

196, ब्लाक दो, चुक्खूवाला,
देहरादून 248001 (उ०प्र०)

यदि पाठक इस विषय पर पक्ष विपक्ष मे अपने विचार सूचित करेंगे तो हम उनके आभारी होंगे।

—सम्पादक

ओ३म् श नो अज एकपाद देवो अस्तु श नोऽहिर्बुध्न्य श समुद्र।
श नो अपा नपात्पेरुरस्तु श न पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥
ऋ०म० 6। सू०35। म० 13 ॥

नभ मेघ महा हितकारी

देव नारायण भारद्वाज

सुख सन्देश भाव हमको, सब विश्व शक्ति अनुकूल रहें।
विद्वान् बनें सब सुख निधान यह जग मे बनकर फूल रहें॥

हो सूरज दिव्य गुणों वाला
दे हमे ऊर्जा उजियाला
नभ मेघ महा हितकारी
हो पानी बरसाने वाला।

जल सागर के हो सुखकारी, सम्यक समुद्र के फूल रहें।
विद्वान् बनें सब सुख निधान, यह जग मे बनकर फूल रहें॥

जिसके जल पावन पूत रहें
ले विद्युत धार सपूत बहें
जल प्रचुर बनायें बहु विद्युत
सतति मे हर्ष अकूत रहें।

सूर्य सिन्धु जल विद्युत ऊर्जा, जीवन परिमाण विपुल रहें।
विद्वान् बनें सब सुख निधान, यह जग मे बनकर फूल रहें॥

यह धरती रूप अनेक लिए
निर्माण प्रगति की टेक लिए
प्रिय दिव्य शक्ति दे विद्युत की
हो जगत भाव आलोक लिए।

सब देवजनों की विद्युत से, जग में विकसित सुख मूल रहें।
विद्वान् बनें सब सुख निधान, यह जग में बनकर फूल रहें॥

जगन्नाथ निवास रेवोपुर गई बस्ती
आजमगढ़ (उ०प्र०)

व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

1 जून से 8 जून 1990 तक

आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के सरक्षण में एवं आर्य वीर दल गाजियाबाद के तत्वावधान में 1 जून से 8 जून तक नवयुवको को व्यायाम प्रशिक्षण हेतु गुरुकुल महाविद्यालय पूठ में निवास शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें अनुभवी योग्य विद्वान् शिक्षकों द्वारा शारीरिक-बौद्धिक शिक्षण दिया जायेगा अत आप इस कार्यक्रम की सफलता के लिए अधिक से अधिक हर प्रकार का सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।

साप्ताहिक　ओ३म्　कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

ईसाईयों का भारत में षड्यन्त्र

अंग्रेजों के राज्य में ईसाई पादरियों ने लाखों भोले-भाले पिछड़े वर्ग के हिन्दुओ को ईसाई बनाया था। अंग्रेजों को भारत पर अपना शासन सुदृढ़ करने के लिए हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कराना हितकर था। किन्तु भारत स्वतन्त्र होने पर भी भारत सरकार ने ईसाई पादरियों को जैसे का तैसा बनाये रखा। उन्हें पहिले जैसी सुविधाए भी दी गई। इसी कारण धीरे-धीरे ईसाइयों ने असम के नागा क्षेत्र में नागा जाति के भारतीयों को ईसाई बनाकर भारत विरोधी बना डाला। जो नागा लोग भारत भक्त थे और अपने को भीम के पुत्र घटोत्कच के वशज मानते थे। वे भारत भक्त नागा ईसाई बनने के पश्चात् विदेशी पादरियों द्वारा भड़काये जाने पर भारत के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने लगे। यही स्थिति मिजोरम में भी बन गई।

अब नागालैण्ड और मिजोरम पूर्ण रूप से ईसाई राज्य बन चुके हैं। बल्कि कहना चाहिए कि यह दोनों राज्य ईसाई धर्म के ऐसे सुदृढ़ दुर्ग बन गए हैं कि अब वहाँ से असम के कई क्षेत्रों में अलगाववाद भड़काने के लिए षड्यन्त्र चलाए जाते हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि नागालैण्ड और मिजोरम कहने मात्र के लिए भारतीय राज्य हैं। वास्तव में तो दोनों राज्यों में यूरोपीय ईसाई चर्च का ही साम्राज्य है। जिनके पीछे यूरोप की बड़ी शक्तियां कार्य कर रही हैं। शक्तियो के प्रभाव का लाभ उठाकर बगलादेश और बर्मा के क्षत्रों में ऐसे अड्डे बनाए गए है जहाँ असम तथा अन्य क्षेत्रों के ईसाई प्रेरित उग्रवादी सगठनों को प्रशिक्षण एव हथियार प्राप्त कराये जाते हैं। मणिपुर, त्रिपुरा के विद्रोही गुटों को शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित किया जाता है। शस्त्रों का प्रशिक्षण दिलवाया जाता है। इन्ही केन्द्रों मे बोडो विद्रोहियों को और उल्फा विद्रोहियों को प्रशिक्षण आदि दिया जाता है।

नागालैण्ड मे एक शक्तिशाली सैनिक सगठन बनाया जा चुका है, जिसका नाम है—"नेशनल सोसियलिस्ट कौंसिल ऑफ नागालैण्ड" वास्तव मे यह चर्च की सेना है जिसे अत्याधुनिक शस्त्रास्त्रों से लैस किया गया है। पिछले वर्ष इस सैनिक सगठन ने असम की सीमा मे घुसकर एक हिन्दू ग्राम पर आक्रमण किया था। असम के उल्फा विद्रोहियों को शस्त्र इसी सगठन ने दिए।

यह सस्था भारत भर में विद्रोह की आग फैला रही है। झारखण्ड के 21 जिलों के बहुत बड़े क्षेत्र को भी ईसाई राज्य बनाने के प्रयत्न पिछले 40 वर्षो से चल रहे हैं।

हरिजनों से ईसाई बने लोगों के लिये भी हरिजनों को दी जाने वाली सुविधाओ की माग को लेकर ईसाई पादरियों ने आन्दोलन चला रखा है। यदि उनकी यह माग भारत की धर्म निर्पेक्ष सरकार द्वारा मान ली जाती है, तो हरिजन भाईयों को ईसाई बनाने के काम में ईसाई पादरियों को बड़ा लाभ होगा। अधिक सख्या मे लोग ईसाई बनने लगेंगे और भारत के ईसाई करण के सपनों को जल्दी साकार कर पायेंगे।

दुर्भाग्य से भारत की धर्मनिर्पेक्ष सरकारों ने विदेशी ईसाई पादरियो द्वारा किए जा रहे इन भारत विरोधी कार्यों को समाप्त करने का कभी प्रयास नही किया। अब समय आ गया है, कि हम आर्यजन उठ खड़े हों और अपने परिवारों से हजारों युवको को अपने देश हिन्दुस्थान और आर्य (हिन्दू) समाज की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने की सौगन्ध दिलायें, अन्यथा आने वाली पीढ़ियाँ हम पर हसेंगी।

सम्पादक

आर्यसमाज (गुरुकुल)

अशोक विहार फेस II

आर्यसमाज (गुरुकुल) अशोक विहार फेस-2, दिल्ली-52 की भव्य यज्ञशाला का विधिवत उद्घाटन 17 मई को श्री हरबस लाल सहगल (साधक) द्वारा सम्पन्न किया गया।

इस अवसर पर क्षेत्र के निवासी भारी सख्या में उपस्थित थे।

दोष-त्याग

अनुहव परिहव परिपाद परिक्षवम्।
सर्वैर्मे रिक्तकुम्भाम् परा तान्त्सवित सुव॥ (अथर्ववेद)

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

भले बुरे कर्मों की जग में जिस नर को पहचान नही।
व्यसनों का नहीं त्याग किया है पशु हैं वो इन्सान नही
गगा नहाने जाते हैं नहा कर व्रत करके आते हैं।
बैंगन, लौकी, पेठा की सब्जी आकर नहीं खाते हैं।
बकरा, मुर्गे, मीन, भेड सूअर तक चट कर जाते हैं।
फिर भी भला चाहते हैं ऐसा भोला भगवान नहीं।
व्यसनों का नही त्याग किया पशु हैं वो इन्सान नहीं। ॥1॥

एकादशी, पूर्णमासी व्रत किया खूब निभाया है।
सुबह से लेकर शामतलक अन्न न बिल्कुल खाया है।
गांझा सुलफा, चरस तम्बाकू पीकर समय बिताया है।
जिससे जगत रचाया है उस परमपिता का ध्यान नही।
व्यसनों का नहीं व्रत किया, पशु है वो इन्सान नहीं ॥2॥

फंसा रहा गर व्यसनो मे तो वृथा प्रभु गुण गाना है।
किया नहीं परहेज तो फिर बेकार दवाई खाना है।
चिड़ियों ने चुग खेत लिया तो फिर पीछे पछताना है।
यह नरतन अनमोल समय का ध्यान दिया नादान नही।
व्यसनो का नहीं त्याग किया पशु हैं वो इन्सान नहीं ॥3॥

अमेरिका मे—

विश्व हिन्दू सम्मेलन

आर्यसमाज मिशीगन अमेरिका के तत्वावधान मे आगामी वर्ष (1991) 12, 13, व 14 जौलाई को अमेरिका मे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस समारोह की सफलता के लिए वहाँ के अनक विश्वविद्यालयो, सामाजिक तथा सांस्कृतिक सगठनों का सहयोग भी आर्यसमाज को मिल रहा है।

समारोह मे विश्व के विभिन्न देशों से सस्कृत तथा हिन्दी के उद्भट् विद्वानों को आमन्त्रित किया जा रहा है। इस अवसर पर अनेक विचार गोष्ठियों, कार्य शालाओं, खुले अधिवेशनों के साथ साथ विश्व पुस्तक मेले का भी आयोजन किया जायगा।

विस्तृत जानकारी के लिये आर्यसमाज मिशीगन बाक्स न० 296, अलमा मिशीगन 48801, अमेरिका सम्पर्क करे।

"आचार्य उदयवीर शास्त्री अस्वस्थ"

गत दिनो अतिसार, ज्वर और शिर शूल की शिकायत पर आचार्य जी को अजमेर के नेहरू चिकित्सालय मे प्रविष्ट कराया गया था। डा० सतीश अरोड़ा के परिश्रम एव योग्यता से उपद्रवाह तो शान्त हुए परन्तु परीक्षण करने पर पेट मे बड़ी आंतों मे टयूमरका पता चला है। आचार्य जी की आयु और स्वास्थ्य को देखते हुए शल्य चिकित्सा सम्भव नहीं है अत चिकित्सकों ने विश्राम एव घर पर ही औषधि लेने के परामर्श के साथ चिकित्सालय से छुट्टी दे दी है। आचार्यजी की घर पर ही चिकित्सा चल रही है। आशा है ईश्वर की कृपा से आने वाले दिनो में आचार्य जी के स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार हो सकेगा।

— सम्पादक

वार्षिकोत्सव सम्पन्न—

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी दिल्ली का 11वां वार्षिकोत्सव 5 व 6 मई को वेद मन्दिर, भगतसिंह मोहल्ला, न्यू उस्मान पुर, दिल्ली-53 मे बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर आचार्य सत्यप्रिय, आचार्य दिनेशचन्द्र शास्त्री, श्रीमती सुनीति आर्या व ब्र० सुरेन्द्र सिंह ने यज्ञ, उपदेश, भजनोपदेश तथा व्याख्यानों द्वारा उपस्थित जनता को वैदिक धर्म की मान्यताओं से अवगत कराया। उत्सव पर आर्यवीरों ने विभिन्न प्रदर्शनों से जनता का मन मोहा वही नये लोगों को यज्ञोपवीत दिये गये।

दिवंगत आर्यश्रेष्ठी—

पुण्य तिथि, 11 मई के अवसर पर—

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

डॉ॰ धर्मेन्द्र नाथ वसु

आर्य जगत की त्रिवेणी मे सरस्वती के समान पवित्र, वैदिक वाङ्मय के विशिष्ट विद्वान, तार्किक शिरोमणि, प्रगल्भ लेखक, स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती का जन्म माघ कृष्णा दशमी सम्वत् 1918 वि॰ को लुधियाना जिले के जगरावां नामक ग्राम मे मौद्गल्य गोत्रीय ब्राह्मण प॰ राम प्रताप के यहां हुआ। इनकी माता का नाम हीरादेवी था। पहले इनका नाम नेतराम था, जो बाद में कृपाराम हुआ और सन्यास दीक्षा के बाद दर्शनानन्द कहलाये।

प्रारम्भिक शिक्षा के रूप मे इन्होंने अपने पिताजी से फारसी के गुलिस्ता, बोस्तां आदि ग्रंथ तथा व्याकरण सिद्धान्त कौमुदी का अध्ययन किया। ग्यारह वर्ष की अल्पायु मे ही इनका विवाह वैशाख कृ॰ पचमी स॰ 1929 वि॰ को पार्वती देवी के साथ हो गया। इनके दो पुत्र प॰ नृसिंह तथा प॰ अमरनाथ हुये।

इनके पिता प्रसिद्ध व्यवसायी एव ग्राम के धनाढ्य व्यक्ति थे। वे अपने पुत्र को भी निपुण व्यापारी बनाना चाहते थे किन्तु अल्हड़ और मनमौजी प्रकृति के कृपाराम ने व्यापार मे रुचि न ली, अपितु स्वतन्त्र विचारक होने तथा महर्षि दयानन्द के व्याख्यानो के कारण वे सासारिक विषयों के प्रति अनासक्त हो गये। ये ससार सरोवर में रहते हुए भी शतदल कमल के समान सदेह होते हुये भी विदेह से प्रफुल्लित रहे। इनकी स्वतन्त्र एवं आत्मकेन्द्रित प्रकृति के कारण इन्हे आजाद एव नित्यानन्द भी कहते थे।

प्रथम गृह त्याग एव पुन आगमन

कृपाराम ने विरक्त होकर गृहत्याग कर दिया और सन्यस्त होकर जम्मू कश्मीर के दुर्गम स्थानो का भ्रमण किया। वे नवीन वेदान्त के विचारो से प्रभावित थे किन्तु नवीन वेदान्त की आलोचना में स्वामी दयानन्द की युक्तियों और तर्कों को सुनकर वे बड़े प्रभावित हुये और निरन्तर स्वामी दयानन्द के व्याख्यानों में उपस्थित रहकर 37 व्याख्यान सुने। लगभग 1879 ई॰ के आस पास पजाब के विभिन्न नगरो का भ्रमण करते हुये इन्होंने स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुने, हरिद्वार, कुल्लू, कश्मीर आदि स्थानो का भ्रमण किया। तथा जग-ए-आजादी' नामक उर्दू पुस्तक लिखी। इन्ही दिनों दीनानगर (पजाब) म जब ये एक ईसाई पादरी से शास्त्रार्थ कर रहे थे, इनके चाचा वहां पहुंचे और घर चलने को कहा। अधिक आग्रह करने पर निम्न शर्तों के साथ उन्होंने घर चलना स्वीकार किया—

1—गेरुए वस्त्र नही उतारुगा।
2—घर मे नही बैठक मे रहूगा।
3—स्वामी दयानन्द के समस्त ग्रथ मगाने होंगे।

काशीवास एव प्रेस स्थापना—

इनके पितामह प॰ दौलतराम के दिवगत होने पर इन्हे उनके (प- दौलतराम) चलाये अन्नक्षेत्र की व्यवस्था को कहा गया। इसे इन्होने 'प्रेस स्थापना व पत्र प्रकाशन की शर्त के साथ स्वीकार किया और 10 नवम्बर 1889 को "तिमिर नाशक" प्रेस की स्थापना की और तिमिरनाशक पत्र प्रारम्भ किया, साथ ही विभिन्न बहुमूल्य शास्त्रग्रन्थो को भी मुद्रित एव प्रकाशित कर निर्धन छात्रो को सुलभ बनाया।

स्वामी मनीषानन्द जी का शिष्यत्व

इनकी तर्क शक्ति बड़ी प्रबल थी किन्तु गुरुमुख से विद्याध्ययन नहीं कर पाये थे जिसकी इन्हें प्रबल आकांक्षा थी। एक बार काशी के धुरन्धर विद्वान प॰ हरिनाथ (स्वामी मनीषानन्द) के एक शिष्य से उत्तर प्रत्युत्तर करते हुए कृपाराम को देखकर पडित जी बड़े मुग्ध हुए तथा पढ़ने की आकांक्षा देखकर उन्होंने इन्हे पढ़ाना स्वीकार किया और उनसे कृपाराम ने साढे चार दर्शनो (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग तथा आधा वेदान्त) का अध्ययन किया।

सस्कृत पाठशाला की स्थापना एव निर्धन छात्रों की सहायता

उस समय कट्टरपन्थी पडितो के कारण आर्यसमाजी एव ब्राह्मणेतर छात्रों को अध्ययनार्थ अत्यन्त कठिनाई पड़ती थी। अत उन्होंने स्वय विद्याध्ययन करने के साथ साथ एक सस्कृत पाठशाला की भी स्थापना की, जिसमे लब्धप्रतिष्ठ पण्डित काशीनाथ शास्त्री अध्यापन कार्य करते थे। इसके अतिरिक्त कृपाराम जी ने अनेक अन्य छात्रों का अन्न, वस्त्र आदि की भी व्यवस्था की। वे निर्धन छात्रों को सस्कृत ग्रन्थ अल्पमूल्य मे उपलब्ध कराने तथा कई बार तो महगी पुस्तकें नि शुल्क वितरित करने म भी बड़ी रुचि लेते थे।

सन्यास दीक्षा

प कृपाराम सन् 1901 की बसन्त ऋतु में राजघाट, गगातट (जि॰ बुलन्दशहर) पर, स्वामी अनुभवानन्द जी से विधिवत् सन्यास दीक्षा ग्रहण करके, "पाणिपात्री दिगम्बर" बन परमहस परिव्राजक के रूप में प्रविष्ट होकर स्वामी दर्शनानन्द हो गये।

सन्यास दीक्षा के बाद स्वामी दर्शनानन्द का कार्यक्षेत्र अति विस्तृत हो गया और सम्पूर्ण भारत मे भ्रमण कर वैदिक वैजयन्ती फहराने लगे। स्वामी जी सर्वतन्त्र उपदेशक थे।

अद्वितीय तार्किक होने के कारण स्वामी दर्शनानन्द जी के समक्ष शास्त्रार्थ मे कोई नहीं टिक पाता था। इन्होंने अनेक शास्त्रार्थ किये जिनके प्रमुख हैं

1 काशी के विद्वान महामहोपाध्याय प॰ शिवकुमार शास्त्री के ऋषि दयानन्द द्वारा देव शब्दों को 'विद्वान्' अर्थ मे प्रयुक्त करना अनुचित बताने पर अपने गुरू की सहायता से 'देव' शब्द को 'विद्वान' अर्थ में 150 स्थान पर सप्रमाण उद्धृत कर विजय प्राप्त की।

2 आगरा में एक यूरोपियन जेस फारनेम की मध्यस्थता में "वेद और कुरान मे कौन सी पुस्तक इल्हामी है ?" विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। जिसमे स्वामी जी विजयी रहे।

3 सन् 1904 मे प्रसिद्ध पादरी ज्वाला सिंह को शास्त्रार्थ मे पराजित किया।

4 गु॰ म॰ वि॰ ज्वालापुर के आचार्य गगादत्त जी, प॰ भीमसेन शर्मा (आगरा) तथा प॰ तुलसीराम की उपस्थिति में 19, 20, 21 फरवरी 1901 को प॰ भीमसेन शर्मा (इटावा) के साथ शास्त्रार्थ कर उन्हे निरुत्तर किया।

5 ताजपुर, जि॰ बिजनौर के जमींदार के नास्तिक दीवान की 14 युक्तियों का खण्डन करके ईश्वर सिद्धि पर सात प्रबल युक्तियां दीं जिनका प्रतिपक्षी से खण्डन न हो पाया।

6—स्वामी तथा प॰ भीमसेन शर्मा आगरा का शास्त्रार्थ 'प्रायश्चित' विषय पर आर्यसमाज बिजनोर के तत्वावधान में प॰ भीमसेन शर्मा (इटावा) व प॰ ज्वालाप्रसाद मिश्र (मुरादाबाद) के साथ हुआ।

7—व्याकरण केसरी प॰ बिहारीलाल के साथ 'श्राद्ध' विषय पर 1962 वि॰ में शास्त्रार्थ हुआ।

8- सन् 1903 ई॰ मे "वेद अथवा कुरान ईश्वरोक्त" विषय पर शास्त्रार्थ हुआ, जिसमें आर्यसमाज पक्ष का नेतृत्व स्वामी जी ने किया।

9- सनातन धर्मी प॰ जगत् नारायण को पेशावर मे स्वामी ने मैदान छोड़ने पर विवश कर दिया।

10—गुरुकुल महाविद्यालय मे 8 अप्रैल 1912 को स्वामी जी का सबसे प्रसिद्ध शास्त्रार्थ "वृक्षों मे जीव" विषय पर प॰ गणपति शर्मा के साथ हुआ।

11—जून 1912 में "ईश्वर सृष्टिकर्ता है" विषय पर जैन प॰ गोपालदास बरैया के साथ स्वामी का शास्त्रार्थ हुआ। स्वामी जी की विजय के साथ ही प॰ दुर्गादत्त शास्त्री व प॰ शम्भुदयाल ने जैनमत त्याग कर आर्यत्व स्वीकार किया।

पत्रकारिता

स्वामी जी ने अनेक पत्रों का प्रकाशन किया। जिसका सक्षिप्त विवरण निम्न है —

1—तिमिर नाशक (साप्ताहिक)	काशी	1889 ई॰
2—वेद प्रकाशक (मासिक)	मुरादाबाद	1894 ई॰
3—भारत उद्धार (साप्ताहिक)	जगरावां	
4—वैदिक धर्म (उर्दू साप्ताहिक)	मुरादाबाद	1897 ई॰
5—वैदिक धर्म (साप्ताहिक)	दिल्ली	1889 ई॰
6—वैदिक मैगजीन (मासिक)	दिल्ली	1899 ई॰
7—तालिबे इल्म (साप्ताहिक)	आगरा	1900 ई॰
8—गुरुकुल समाचार	बदायू	
9—आर्य सिद्धान्त (मासिक)	बदायू	1903 ई॰
10 मुबाहिसा (साप्ताहिक)	बदायू	1903 ई॰
11—ऋषि दयानन्द (मासिक)	लाहौर	1908 ई॰
12—वैदिक फिलासफी (मासिक)	रावलपिण्डी	1909 ई॰

साहित्यकार

स्वामी दर्शनानन्द जी पत्रकार व उपदेशक के साथ-साथ कवि भी थे। उनका हृदय अत्यन्त कोमल एवं भव्य भावनाओं से भरपूर था। "जग-ए-आजादी" उनकी प्रथम काव्यकृति है, जो उर्दू पद्य मे प्रकाशित हुई है। इसमें उन्होंने अपना उपनाम "आजाद नित्यानन्द" और "कृपाराम" भी लिखा है।

स्वामी जी कवि ही नहीं, अपितु सफल कहानीकार एव उपन्यासकार भी थे। इस प्रकार की आपकी रचनाओं मे—

सत्यव्रती महानन्द, धर्मवीर, क्षमा चन्द्रोदय, चाण्डाल चौकड़ी, विचित्र ब्रह्मचारी, कथा पच्चीसी आदि हैं।

इसके अतिरिक्त उन्होने वेदान्त दर्शन एव न्याय आदि पर अनेक भाष्य लिखे। उपनिषद्, मनुस्मृति श्रीमद्भगवद्गीता आदि पर भी स्वामी जी ने टीकायें लिखी। अपने जीवन काल में स्वामी दर्शनानन्द जी ने लगभग 250 छोटे बड़े ट्रैक्ट भी लिखे जो दर्शनानन्द ग्रन्थ सग्रह नाम से विभिन्न प्रकाशकों ने प्रकाशित किये।

साथ ही मूर्खता', 'नौजवानो उठो', 'उन्नीसवी सदी का सच्चा बलिदान', अकायद इस्लाम पर अक्ली नजर' (आठ भाग), 'हम निर्बल क्यो हैं ?' 'धर्मसभा से 64 प्रश्न', 'बे-समझो के स्वामी दयानन्द पर झूठे इल्जाम', 'अग्रेजी तालीम प्राप्ताओ मे वैदिक धर्म के प्रचार का आसान तरीका' 'आर्य धर्म सभा', 'क्या सस्कृत मृत भाषा है ?', 'भारत का दुर्भाग्य', 'अकल अजीर्ण', नि शुल्क शिक्षा' 'आत्मिक बल', 'ईश्वर विचार', 'भोदू जाट और पादरी साहब का शास्त्रार्थ', 'गुरुकुल, अकाल मृत्यु मीमासा', 'श्राद्ध व्यवस्था', आर्यसमाज और सनातन धर्म सभा के बीच प्रश्नोत्तर', हम रूहानी डाक्टर हैं', 'जीवात्मा द्रव्य है या गुण ?', 'धर्म शिक्षा', 'पाप और पुण्य', 'देह ब्रह्माण्ड का नक्शा है', 'स्वराज्य और शान्ति , पुनर्जन्मवाद' आदि स्वामी जी के मुख्य ट्रैक्ट हैं जो भारतवर्ष मे सभी धर्मों के मानने वालो मे सम्मान्य हैं। इस्लाम धर्म समीक्षा, जैन मत समीक्षा एव ईसाई मत समीक्षा के सदर्भ मे भी इन्होने लगभग 35-40 ट्रैक्ट लिखे।

गुरुकुलो की स्थापना

स्वामी दर्शनानन्द जी के जीवन काल की सबसे अनुपम देन गुरुकुलो की स्थापना करना है। इन्होने सर्वप्रथम सिकन्दराबाद मे 1898 ई० गुरुकुल की स्थापना की। इस गुरुकुल की स्थापना के लिए उन्हें प० गगा सहाय जी से भूमि प्राप्त हुई। प० मुरारीलाल शर्मा के रूप मे गुरुकुल सिकन्दराबाद को एक महान् सहायक प्राप्त हुआ।

इनके द्वारा 1903 ई० मे गुरुकुल बदायू की स्थापना की गई। गुरुकुल बदायू की स्थापना के दो वर्ष बाद स्वामी जी ने 1905 मे मुज्जफरनगर जिले के विरालसी गाव मे एक अन्य गुरुकुल की स्थापना की।

महाविद्यालय ज्वालापुर की स्थापना

स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुलो मे सर्वाधिक ख्याति प्राप्त गुरुकुल की स्थापना से दो वर्ष पश्चात् 1907 ई० मे हुई। बाबू सीताराम जी भूमि पर इस गुरुकुल की आधारशिला रखी गई। आचार्य गगादत्त शास्त्री, प० भीमसेन शर्मा (आगरा), प० पद्मसिंह शर्मा, प० दिलीप दत्त उपाध्याय, आचार्य हरिदत्त शास्त्री जैसे सस्कृत के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानो ने इस गुरुकुल मे अध्यापन कार्य किया।

इसके अतिरिक्त रावलपिण्डी के निकट गुरुकुल पोठोहार की स्थापना भी स्वामी जी ने ही की थी।

गुरुकुल प्रणाली के प्रथम प्रवर्त्तक एव प्रचारक के रूप मे स्वामी दर्शनानन्द जी चिरस्मरणीय रहेंगें।

महाप्रयाण

वैदिक धर्म प्रचार हेतु उत्तर भारत के विस्तृत भ्रमण, अनवरत ग्रन्थ-लेखन, शास्त्रार्थ आदि कार्यों ने स्वामी जी की वज्रकाया को जीर्ण-शीर्ण बना दिया। स्वामी प्राय. अजमेर आकर अना सागर स्थित दयानन्द साधु आश्रम मे रहते थे। एक बार अस्वस्थ होने पर डा० भट्टाचार्य ने उनकी चिकित्सा आरम्भ की। उस समय शय्या पर ही उन्होंने स्याद्वाद समीक्षा जैन सिद्धान्त के खन्डन में एक आलोचनात्मक ट्रैक्ट लिखा।

स्वामी जी भाग्यवाद में दृढ़ विश्वास रखते थे इसलिए अस्वस्थ होने पर भी उन्होने औषधि लेने से इन्कार कर दिया। आचार्य गगादत्त जी के अत्यधिक आग्रह के फलस्वरूप केवल सात दिन तक औषधि लेना स्वीकार किया तथा आठवें दिन औषधि बन्द कर दी। अस्वस्थता बढ़ती गई। मृत्यु की ओर अग्रसर उन्हे यदि कोई चिन्ता तो ऋषि दयानन्द के मिशन को पूरा करने की थी।

उन्होने अपने अन्तिम उद्गार इस प्रकार व्यक्त किये—'ऋषि दयानन्द के मैंने 37 व्याख्यान सुने और 37 वर्ष ही मैंने धर्म प्रचार का कार्य भी किया, फिर भी अफसोस यही है कि स्वामी जी के मिशन को पूरा नहीं कर सका'। और अन्त मे कहा—अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले। और 11 मई 1913 ई० को स्वामी दर्शनानन्द जी इस नश्वर पार्थिव शरीर का परित्याग कर ब्रह्मलीन हो गये।

आर्यसमाज मे ऐसा उद्भट विद्वान लेखक शास्त्रपटु नि स्वार्थ आर्य सिद्धान्तो का सेवक, वैदिक धर्म के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाला, ऋषि दयानन्द का भक्त शायद ही कोई हुआ हो। उन्होने आर्यत्व के प्रचारार्थ विशाल साहित्य का सृजन किया, जिसमे आर्य समाज के हित की बातें कूट-कूट कर भरी हुई है। स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना प्रत्येक भारतीय का परम पुनीत कर्तव्य है और उनके विचारो का प्रचार प्रसार तथा उनके गुरुकुलो का सफल सचालन ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। स्वामी जी के निधन पर प० नरदेव शास्त्री ने कहा था कि स्वामी दयानन्द के पश्चात आर्य जगत् मे जितना प्रचार हुआ है, उसके आधे के ऊपर प्रचार का श्रेय स्वामी दर्शनानन्द जी को ही है। कितने प्रेस खोले, कितने समाचार पत्र निकाले कितने ट्रैक्ट लिखे, कितने व्याख्यान दिये, कितने शास्त्रार्थ किये, कितने सहस्र मीलो घूमे। स्वामी दर्शनानन्द जी वास्तव मे उत्साह, जागृति और स्फूर्ति की ज्वलन्त मूर्ति थे।

उनकी मृत्यु से समाज म शोक छा गया। यहा तक कि उनके देहावसान पर उनके विरोधी व्यक्तियो एव पत्रो ने भी शोक सन्देश प्रकाशित किये। रुड़की के पादरी तथा प्रसिद्ध ईसाई विद्वान् ज्वालासिंह ने भी उनके स्वर्गवास पर शोक चिन्ह के रूप मे कई दिनो तक अपने हाथ म काला पट्टा बाधी।

ऐसे स्वामी जी को शत शत नमन।

(भारतोदय से साभार)

मौन चीख

—पिपरिया साहनी

अमरीका मे बनी 38 मिनट की साइलेंट स्क्रीम (मौन चीख) नाम की एक फील्म ने गर्भपात करने वाले लोगो को गहरी सोच मे डाल दिया है। इस फील्म के कारण वहा की जनता म प्रचड जागृति आयी है। इस फील्म म पूरे ब्योरे के साथ यथार्थ रूप से यह दिखाया गया है कि मा के गर्भ पल रहा भ्रूण अपनी हत्या के समय मरते मरते किस तरह चीखता है।

न्यूयार्क नगर के प्रसिद्ध डाक्टर नेल्सन ने इस फिल्म के बारे मे कहा है—'मा के गर्भ मे पल रहा भ्रूण भी, जिसका अभी जन्म भी नही हुआ है मानव समाज का ही एक सदस्य है। गर्भपात की तकनीक ने हमे पहली बार यह प्रतीति करा दी है कि हत्या करने वाले और करवाने वाले हत्यारे हैं। इस फिल्म मे दर्शको को यह देखने को मिलता है कि गर्भपात करने वाले डाक्टर का जब हथियार गर्भाशय मे रहने वाले भ्रूण के टकड़े टुकड़े कर डालता है। इस दृश्य को देखने वाले दर्शक सचमुच काप उठते हैं। इस फिल्म म प्रत्यक्ष रूप म यह दिखाया गया है कि बारह सप्ताह यानी तीन माह के भ्रूण को गिराते समय उसकी कैसी करुण स्थिति हो जाती है।

डाक्टर नेल्सन आगे कहते हैं 'भ्रूण को अपने ऊपर होने वाले खूनी हमले का पता चल जाता है, इसलिए शस्त्र क्रिया वाले हथियार के प्रहार से बचने के लिए अपनी दु खद स्थिति मे भी वह बचने का प्रयत्न करता है। भ्रूण के दिल की धड़कन बढ़ जाती है, क्योकि वह अनुभव करता है कि कोई उसकी हत्या करना चाहता है, भ्रूण अपना मुह खोलकर चीखता है।

'राईट आफ लाईफ' (जीवन का अधिकार) नाम की सस्था ने मानवता को जगाने वाली एक प्रभावशाली फिल्म के रूप मे इस फिल्म की बहुत सराहना की है।

मारल मेजारिटी' अर्थात् नैतिक बहुमत' नाम की सस्था के रेवेरेंड जेर फारवेल कहते हैं, 'इस फिल्म की मदद से हम गर्भपात के हत्यारे काम बद करवा सकेंगे।

अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति रेनाल्ड रीगन ने जनवरी 85 म यह फिल्म देखी थी। वे इससे बहुत प्रभावित हुए और उन्होने इस फिल्म की बहुत प्रशसा की। श्री रीगन ने कहा—'अमरीका की काग्रेस (लोकसभा) के जो भी सदस्य इसे देखेंगे, वे गर्भस्थ भ्रूण की हत्या को समाप्त करवाने के लिए तुरन्त तैयार हो जायेंगे।

पहले कुछ डाक्टर अज्ञानवश यह मानते थे कि पाच महीने के बाद ही गर्भस्थ भ्रूण मे प्राणो का सचार होता है, इसलिए पाच महीनो के अन्दर की हत्या, हत्या नही होती, किंतु 'साइलेंट स्क्रीम' फिल्म ने डके की चोट यह सिद्ध कर दिया है कि भ्रूण कितनी ही उम्र का क्यो न हो, उसमे प्राण तैयार हो चुके होते हैं इसलिए उसकी हत्या करना एक मनुष्य की हत्या करने के समान ही है।

हाल मे एक दैनिक समाचार-पत्र मे प्रकाशित हुआ कि बम्बई मे 50 गर्भवती माताओ ने अजन्मी भ्रूण कन्याओ का घात किया, वह इसलिए कि कन्या न होने पाये। क्योंकि जाच करने वाली मशीन से पता चल जाता है कि भ्रूण नर है अथवा मादा ? आखिर आज का मानव जान बूझ कर यह घोर हत्या क्यो करता है ? उसे हत्यारा नहीं तो और क्या कहेंगे ?

पश्चिमी देशो का अनुकरण करते हुए सन 1971 मे भारत ने भ्रूण-हत्या को वैध मान लिया था और भ्रूण हत्या करने वालो को इनाम देने और सम्मानित करने की एक नयी व्यवस्था खड़ी की गयी थी।

अब पश्चिम देशो का नेतृत्व करने वाले अमरीका मे इस महापाप के विरुद्ध वहा की जनता का पुण्य-प्रकोप प्रकट हुआ है और उसके एक प्रतीक के रूप मे 'सायलेंट स्क्रीम' फिल्म तैयार हुई है। वहा यह आवाज अब प्रचड होगी। क्या भारत के नर नारी भी भ्रूणपात के विरुद्ध अपनी आवाज उठायेंगे ?

('शाकाहार क्राति' से साभार)

शोक समाचार

पं. ईश्वरचन्द्र दर्शनाचार्य

आर्य जगत के अद्वितीय दार्शनिक विद्वान श्री प० ईश्वरचन्द्र जी दर्शनाचार्य का 21 मई को अकस्मात निधन हो गया है। माननीय पंडित जी बचपन से ही महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त रहे। आपने सनातन धर्म के प्रकाण्ड विद्वान माधवाचार्य के साथ शास्त्रार्थ करके उन्हे परास्त किया था। आप बहुत समय तक लाहौर उपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन में दर्शनशास्त्र पढ़ाते रहे। यह महान विभूति भारतवर्ष मे दर्शनशास्त्रों की महान प्रतिभा थी। पंडित जी वैदिक वाङ्मय के बेजोड़ विद्वान थे। आप संस्कृत, फारसी उर्दू, अंग्रेजी पाली प्राकृतिक आदि अनेक भाषाओं के विद्वान थे।

रविवार दिनांक 22 अप्रैल को आर्यसमाज सांताक्रुज मे तथा 24 अप्रैल को आर्यसमाज काकड़वाडी मे शोक सभाओं का आयोजन किया गया और श्री प० ईश्वर चन्द्र दर्शनाचार्य को श्रद्धांजली अर्पित की गयी।

०

दयानन्द शोध पीठ

पंजाब विश्वविद्यालय

1989-90 के शिक्षा वर्ष मे डा० भवानीलाल भारतीय जी के निर्देश मे निम्न शोधार्थियो ने शोध उपाधि प्राप्त की।

डा० श्रीमती कमला— ऋग्वेद मे नारी

डा० सुरेन्द्र कुमार— वैदिक आख्यानो का विकास क्रम

डा० सतीशचन्द्र शर्मा—मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति का तुलनात्मक अध्ययन।

डा० वेदपाल शास्त्री—स्वामी दयानन्द के साहित्य मे राजनीतिक विचार।

डा० देवेन्द्र नाथ शास्त्री— आजुष सूक्ति विमर्श।

डा० रामकृष्ण आर्य— स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो मे विवेचित आर्थिक विचार।

डा० कर्मसिंह शास्त्री—स्वामी दयानन्द के ग्रंथों मे विवेचन षड्दर्शनो के सदर्भ।

विशेष उल्लेखनीय है कि डा० देवेन्द्रनाथ शास्त्री 75 वर्षीय वयोवृद्ध शोधार्थी हैं और डा० रामकृष्ण आर्य कोटा के एक खाद कारखाने मे श्रमिक हैं।

सभी शोधार्थियो को हार्दिक बधाई।

•

आर्य विद्या मन्दिर केशवपुरम

आर्यसमाज केशवपुरम द्वारा सचलित आय विद्यामन्दिर केशवपुरम का वार्षिकोत्सव शनिवार 12 मई 1990 को समारोहपूर्वक आयोजित किया गय,।

समारोह की अध्यक्षता पूर्व महानगर पार्षद श्री साहिबसिंह वर्मा ने की। मुख्य अतिथि थे— सासद श्री रतिराम वर्मा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा क प्रधान डा० धर्मपाल और महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने भव्य समारोह के लिये आयोजको का साधुवाद किया।

बच्चो के कार्यक्रम अति भव्य एव मनोहारी थे। वे राष्ट्रीय चेतना से समन्वित थे और वैदिक मान्यताओ को सम्बोधित करने वाले थे।

प्रबन्धक श्री मनवीर सिंह राणा ने अभ्यागतो का धन्यवाद किया।

•

कला कक्ष का उद्‍घाटन

मस्दभावा आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल करोलबाग नई दिल्ली मे शनिवार 12 मई 1990 को वार्षिकोत्सव मनाया गया। समारोह के अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्यसमाज के द्वारा विभिन्न दिशाओ मे किये जा रहे कार्यों का विवरण देते हुए बालिकाओ का आह्वान किया कि वे ऋषि दयानन्द के उपकाएं का स्मरण करें तथा राष्ट्रीय विकास मे अपना योगदान करें।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल जी। वे सपरिवार यज्ञ मे सम्मिलित हुए। विद्यालय मे कलाकक्ष माननीय महाशय धर्मपाल जी सात्त्विक दान से निर्मित हुआ है। शेष कार्यों को पूरा करने के लिये श्रीमती लीलावती जी (धर्मपत्नी श्री महाशय धर्मपाल जी) ने घोषणा की।

इस अवसर पर इस कलाकक्ष का उद्‍घाटन श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने बच्चो को आशीर्वाद दिया तथा विद्यालय की उपलब्धियो के लिए सभी अधिकारियो एव अध्यापिकाओ का साधुवाद किया। प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री तीर्थराम आहूजा ने अभ्यागतो का स्वागत किया तथा प्रबन्धक श्री चमुदेव जी ने सभी का धन्यवाद किया। इस समारोह मे स्थानीय आर्यसमाजो के अधिकारी एव सदस्य भा बडी सख्या मे सम्मिलित हुए।

वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न—

आर्य स्त्री समाज

अशोक विहार फज I

प्रधाना— श्रीमती प्रेमशील

मन्त्राणी— श्रीमती निर्मल राय

कोषाध्यक्ष—श्रीमती राज मल्होत्रा

आर्यसमाज अशोक नगर

प्रधान—श्री गिरधारी लाल वैद्य

मन्त्री— श्री हरीश कुमार

कोषाध्यक्ष—श्री मिट्ठन लाल

आर्यसमाज परमानन्द बस्ती बीकानेर

प्रधान—डा जयकृष्ण

मन्त्री—डा शिवनारायण आर्य

कोषाध्यक्ष—सेठ छगनलाल आर्य

वेद प्रचार मडल दिल्ली देहात

प्रधान—श्री हरस्वरूप आर्य

मन्त्री—प उदय श्रेष्ठ

कोषाध्यक्ष—श्री श्याम सुन्दर गुप्ता

आवश्यकता

एक पुरोहित की आवश्यकता है आर्यसमाज बी एन पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली 52 मे, जो कर्म काण्ड एव संस्कारो मे निपुण हो। शीघ्र स्वय आकर समाज मन्दिर मे शनिवार एव रविवार प्रात 8 से 10 बजे तक सम्पर्क करें दूरभाष—7124914—711259। 7112142 सेवा सायं 7 बजे बाद उपलब्ध है।

देव राज कालरा, मन्त्री

प्रवेश सूचना

ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट मे प्रवेश आरम्भ है। सौम्य, शिष्ट, अनुशासन, प्रतिभाशाली तथा आजीवन वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक कम से कम 8 वी पास युवक तथा स्वास्थ्यशील, सदाचारी, प्रचार करने मे रुचि रखने वाले वानप्रस्थी प्रवेश के लिए आमन्त्रित हैं। पत्र व्यवहार निम्न पते पर शीघ्र करें।

प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति कुलाधिपति ब्रह्मकुटी वेद मन्दि वेदोपदेशक विद्यालय।

ब्रजघाट 245205 जि० गाजियाबाद (उ० प्र०)

(पृष्ठ 1 का शेष)

श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता मे शुद्धि सम्मेलन' आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के सयोजक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने गत वर्षों मे सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाये गये धर्म रक्षा महाभियान की उपलब्धियो का विस्तृत विवरण दिया। डा० आनन्द सुमन श्री प० जयप्रकाश आर्य श्री प० राजगुरु शर्मा ने वैदिक धर्म की विशेषताओं का परिचय दिया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने उद्‍घाटन भाषण मे बताया कि अनेक विद्वान् एव सुशिक्षित महानुभाव मुस्लिम एव धर्म ईसाई को छोड़कर वैदिक धर्म मे आये हैं। उन्होने वैदिक धर्म की शास्वत, सर्वव्यापक, सार्वभौम, एव सार्वकालिक मान्यताओं को वरियता दी है।

'महिला सम्मेलन' पूर्व राजस्व मन्त्री राजस्थान श्रीमती कमला जी की अध्यक्षता मे हुआ। इस सम्मेलन मे श्रीमती सुमित्रा बत्रा, श्रीमती सावित्री शर्मा, सुश्री कुसुम आर्या, डा० सरोज दीक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या ने अपने विचार व्यक्त किये।

'पजाब व कश्मीर समस्या सम्मेलन" प० क्षितीश वेदालकार की अध्यक्षता मे सपन्न हुआ। इस सम्मेलन म आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र, पजाब सरकार के पूर्व मन्त्री श्री जीवन सिंह, उपरांगल, ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर युवक सम्मेलन, सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन, तथा राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज की भूमिका विषय को लेकर एक खुला अधिवेशन भी आयोजित किया गया। इस अधिवेशन का सयोजन डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार ने किया। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटू सिंह, मन्त्री श्री ओमप्रकाश डावर, स्वागताध्यक्ष प्रो० नेतराम शर्मा, एव सयोजक प्रो० सत्यव्रत सामवेदी तथा उनके साथियों ने जयपुर की तपती ग्रीष्म ऋतु में इस समारोह का आयोजन करके अभिनन्दनीय कार्य किया है।

०

प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' कृत साहित्य

जीवनी स्वामी दर्शनानन्द	मूल्य—30 रुपये
जीवनी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी	—15/-
जीवनी स्वामी स्वतन्त्रतानन्द	—40/-
जीवनी लाला लाजपतराय	— 30/
जीवनी वीर हकीकत	— 5/-
जीवनी गंगा प्रसाद उपाध्याय	—20/-
तड़प वाले तड़पाती है जिनकी कहानी(भाग-1)	— 18/-
तड़प वाले तड़पाती है जिनकी कहानी (भाग 2)	—30/-
धर्म बोध-विवेक विहार	— 16/
बन्दीघर के विचित्र अनुभव	— 8/-
सुखी गृहस्थ	— 5/-
एकता का शखनाद	—6/-

विशेष जानकारी के लिये वृहद सूचीपत्र मगावे ।

मधुर प्रकाशन

आर्यसमाज मंदिर, 2804 बाजार सीताराम दिल्ली-110006

अन्न वितरण समारोह

आर्यसमाज अमरोहा (मुरादाबाद) मे आयोजित अन्न वितरण समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए चौधरी हरगोबिन्द सिंह जी, सासद ने कहा कि वर्तमान मे आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने से कमजोर लोगो की तन मन, धन से मदद करें। इसी से मनुष्यो को आत्मिक शान्ति मिलती है।

उन्होने कहा कि सरकार पिछडे तथा कमजोर वर्ग के लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिये अपने स्तर से प्रयास कर रही जो स मित साधनो की वजह स पर्याप्त नही है। इसलिय धार्मिक तथा सामाजिक सगठनो का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह समाज के सभी वर्गों मे समानता लाने के लिए आर्यसमाज के आदर्शों का अनुकरण करते हुए नि सहाय तथा गरीब लोगो की अपनी शक्ति के अनसार सहायता करें। उन्होने आर्यसमाज के कार्यों की मुक्त कण्ठ से प्रशसा करते हुए कहा कि मनुष्य को वस्त्र से पहले भोजन की आवश्यकता होती है। आर्यसमाज ने मनुष्य की इस प्रबल आवष्यकता को अनुभव करके जो बीडा उठाया है, वह सराहनीय है।

इससे पूर्व आर्यसमाज के प्रधान वीरेन्द्र कुमार आर्य ने कहा कि आर्यसमाज वर्ण व्यवस्था को जन्म से नही कर्म से मानती है। यदि समाज ऋषि दयानन्द के इस सिद्धान्त को स्वीकार कर ले तो समाज मे किसी प्रकार की विषमता न रहे। वयोवृद्ध समाज सेवी महाशय सत्य प्रकाश आर्य ने वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि जो व्यक्ति ससार का जितना उपकार करेगा, उसे ईश्वर की व्यवस्था से उतना ही अधिक सुख प्राप्त होगा। इस अटल सत्य को ससार की कोई शक्ति धूमिल नहीं कर सकती।

कार्यक्रम के सयोजक सत्य प्रकाश आर्य ने बताया कि अन्न वितरण समारोह का अगला कार्यक्रम 5 जून को होगा।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१

R N No 32387/ 7 Post in N D P S O on 24 25 5 90 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

देश की एकता और अखण्डता को हर कीमत पर सुरक्षित रखना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है—

-सूर्यदेव

दिल्ली 20 मई— आज न केवल पंजाब व कश्मीर बल्कि आसाम जैसे पूर्वी राज्यों में अलगाववादी व विघटनकारी ताकतें सक्रिय होकर राष्ट्र की एकता के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। अत देश की एकता व अखण्डता को हर कीमत पर सुरक्षित रखना हमारा सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। ये उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने 20 मई को आयोजित आर्यसमाज विवेक विहार के वार्षिकोत्सव के समापन समारोह के अवसर पर व्यक्त किये।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि यदि देश बचेगा तो आर्यसमाज भी बचेगा और वैदिक संस्कृति भी सुरक्षित रहेगी। आर्यसमाज न केवल एक राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का संगठन है अत हमें निष्ठा व प्रेमपूर्वक कार्य करते हुए आर्यसमाज को और अधिक सुदृढ़ करना चाहिए। श्री सूर्यदेव ने बच्चों में अच्छे संस्कार डालने के लिए उन्हें आर्यसमाजों में नियमित रूप से लाने की आवश्यकता पर भी बल दिया और यह भी कहा कि आर्य कुमार सभाओं को सशक्त किया जाये ताकि युवा शक्ति उत्साह पूर्वक वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार व राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके।

14 मई को आयोजित कवि सम्मेलन में पद्मश्री डा० श्याम सिंह शशि का भी सम्मानित किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री आचार्य क्षेम चन्द्र 'सुमन' ने की। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन महिला सम्मेलन भी आयोजित किये गये जिसमें अनेक आर्य विद्वानों व नेताओं ने आम जनता का सम्बोधित किया।

(विमल कान्त शर्मा)

सेवा में—

२३६७- श्री पुस्तकाध्यक्ष जी,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी,
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ०प्र०)

26 MAY 1990

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली 1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
ट्रिंगल बाट कम्पोजिंग एजेन्सी आई०के० प्रिंटर्स मौजपुर दिल्ली-५३ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १३ · अंक ३२ | रविवार ३ जून १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

जम्मू-कश्मीर में इस्लामी, अलगाववादी और आतंकवादी दबावों के आगे

भारत सरकार ने घुटने टेके

राज्यपाल श्री जगमोहन का त्यागपत्र स्वीकार

नये राज्यपाल श्री सक्सेना आतंकवादियों से संविधान के दायरे में वार्ता को तैयार

नई दिल्ली—25 मई। पांच महीने तक संवेदनशील राज्य जम्मू और कश्मीर का राज्यपाल रहने के बाद श्री जगमोहन ने आज अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। उनका त्यागपत्र राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए एक विशेष संदेश वाहक द्वारा मनाली पहुंचाया गया जहां राष्ट्रपति ने इसे स्वीकार कर उनके उत्तराधिकारी के रूप मे श्री गिरीश सक्सेना की नियुक्ति की स्वीकृति प्रदान की

प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने श्री जगमोहन को कश्मीर से बुलाने का फैसला अनेक प्रकार के दबावो मे आकर किया लगता है। एक ओर मीर वायज मौलवी फारूख की हत्या, उनकी अन्तिम यात्रा के समय चली गोलियां और फिर दुनियां भर मे दिखाई गई उसकी टी०वी० रिपोर्ट की पृष्ठभूमि मे इस्लामिक देशो की जबर दस्त प्रतिक्रिया और भारतीय दूतावासो से विरोध प्रगट करना वहां दूसरी ओर कांग्रेस (आई), नेशनल कान्फ्रेंस, और मुस्लिम लीग के लगातार शोर के अतिरिक्त सरकार समर्थक वामपंथी दलो ने जनता दल के नेता श्री चन्द्रशेखर के साथ मिलकर चेतावनी देना।

जानकार राजनीतिक सूत्रो के अनुसार यह सब एक बडे सुनियोजित षड्यन्त्र का परिणाम है, जो कश्मीर से श्री जगमोहन को हटवा कर पाकिस्तानी एजेन्टों और कश्मीरी अलगाववादियो को कश्मीर मे फिर से आने-जाने का रास्ता साफ करवाना चाहते थे। एक ओर मीर वायज की हत्या से लोग उद्वेलित थे। फिर उनके जनाजे के एक स्थान पर पहुंचते ही चारो ओर से एक साथ गोलियो का आना। फिर स्थिति से निपटने के लिये सुरक्षा बलो द्वारा गोली चलाना। और इस घटना की विभिन्न कोणों से टी०वी० रिपोर्ट का जल्दी ही विश्व पूरी दुनिया मे, विशेष रूप से मुस्लिम देशों मे दिखाया जाना जबकि श्री नगर मे किसी भी विदेशी टी०वी० टीम का जाना निषेध है। सूत्रों के अनुसार गोली चलाकर, गोली चलवाना और खून खराबे का फिल्मीकरण करके सारी दुनियां मे दिखाना एक सुनियोजित षड्यन्त्र का भाग था और श्री जगमोहन को हटवाने के लिये यह सुअवसर था।

सरकार के निर्णय का व्यापक विरोध

सरकार के साथ सहयोग कर रही भारतीय जनता पार्टी ने श्री जगमोहन को जम्मू कश्मीर के राज्यपाल पद से हटाये जाने के निर्णय को गलत बताते हुए इसकी निन्दा की है। और कहा है कि सरकार ने ऐसा करके राष्ट्र का अहित किया है। पार्टी के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि पाकिस्तान ने श्री जगमोहन के विरुद्ध मुहिम चला रखी थी और वामपंथी दलों ने शुरू से ही श्री जगमोहन की नियुक्ति का विरोध किया था। पार्टी के महासचिव श्री केदारनाथ साहनी ने कश्मीर के लिए, गठित सर्व दलीय परामर्श समिति से त्यागपत्र दे दिया है।

आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सरकार के निर्णय को "ऐतिहासिक भूल बताया है। उन्होंने कहा प्रश्न श्री जगमोहन के प्रशासन का समर्थन का नहीं है—प्रश्न कश्मीर को बचाने का है। श्री स्वामी जी ने कहा कि कश्मीर की समस्या का हल 'जयकार्यों' ढंग से नहीं हो सकता उसके लिये ठोस निर्णय, सुदृढ़ निश्चय और संकल्पों की आवश्यकता है।

कश्मीर और जगमोहन

पाकिस्तानी एजेन्टो के इशारो पर अलगाववादी तत्वो की योजना के अनुसार फारूख अब्दुल्ला सरकार के पतन से पूर्व एक विशाल प्रदर्शन के साथ सरकारी कार्यालयो, आकाशवाणी दूरदर्शन भवनो, राज्य सचिवालय आदि पर कब्जा करना था। इसके लिए काफी लम्बे समय से तैयारियां चल रही थी। हर सरकारी विभाग यहां तक की पुलिस मे आतंकवादियो के एजेन्ट घुस चुके थे योजना के अनुसार प्रशासन पर कब्जा करने और पुलिस को अपने साथ मिलाकर काश्मीर घाटी को आजाद घोषित करना था।

लेकिन डा० रुबिया-अपहरण काण्ड ने नई सरकार को एक दम चौकन्ना कर दिया था, परिणामस्वरूप फारूख सरकार गिरी और श्री जगमोहन को राज्यपाल के रूप मे वहां भेजा गया इस अप्रत्याशित परिवर्तन के कारण अलगाववादियो को अपनी नीति बदलनी पडी और लम्बे समय तक संघर्ष करने की योजना बनानी पडी। उधर जगमोहन विरोधी लाबी सरकार पर जगमोहन को वापिस बुलाने का लगातार दबाव बनाये रही।

कश्मीर घाटी मे भारत विरोधी ताकतें यद्यपि काफी वर्षों से बढ़ती आ रही हैं। परन्तु फारूख कांग्रेस सरकार के प्रशासन के समय में ताकतें अपने शिखर पर पहुंच गयी थी। और ताकतो का लाभ पाकिस्तान और कश्मीर के कट्टरपंथी गुटो ने उठाना शुरू किया। जगमोहन के प्रशासन की यदि समीक्षा की जाय तो पता चलेगा कि वहा की हालत म काफी सुधार आया है। सीमापार से हजारो पाक-प्रशिक्षित आतंकवादियो की घुसपैठ अगर सफल नही हो सकी तो इसका श्रेय जगमोहन की कार्यवाही को ही देना होगा। बताया गया है कि दस हजार कश्मीरी युवक सीमा पार करने के लिये तैयार हैं। इसी प्रकार भारत सरकार के अनुसार ही चार हजार आतंकवादी पहाडों पर बर्फ पिघलने की प्रतीक्षा मे हैं। जिन्हें रोका जाना है। श्री जगमोहन की कार्यवाहियो से श्री नगर और दूसरी जगहो मे जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट का जाल टूटा है। इसके अनेक कथित कमाण्डर मारे और पकडे गये हैं। अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तियो के हत्यारो और अपहरणकर्ताओं को पकडा गया है। सरकारी आदेशों और कर्फ्यू की ये अलगाववादी खुले आम धज्जियां उडाया करते थे, अब सख्ती से पालन होता है। उन स्कूलों को जिनके माध्यम से साम्प्रदायिक जहर फैलाया जाता था, बन्द किया गया।

इस सब के बावजूद ऐसा प्रतीत होता है कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जनमत को देखते हुए एक बली की आवश्यकता थी, और वह जगमोहन को देनी पडी।

नये राज्यपाल

नवनियुक्त राज्यपाल श्री गिरीश चन्द्र सक्सेना भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी और वह जनवरी 1986 में रिसर्च एण्ड एनालिसिस विंग (रॉ) के प्रमुख पद से सेवानिवृत्त हुए थे। बाद में वह एक वर्ष तक प्रधानमन्त्री के सुरक्षा सलाहकार रहे। इस वर्ष मार्च में उन्हें मन्त्रिमण्डल सचिवालय में नियुक्त किया गया था।

शेष 8 पृष्ठ पर

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—सुखचन्द गुप्त

वेद मनन-

गायत्री मन्त्र

—स्व० श्री चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण

ओ३म भूर्भुव स्व । तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो न प्रचोदयात ।।

'गायत्री' शब्द के दो अर्थ हैं । (1) गायत्री छन्द 24 अक्षरो का होता है, इस मन्त्र मे 24 अक्षर हैं इसलिए इसको गायत्री मन्त्र कहते है (2) 'गायत्री' का अर्थ किया गया है गातार' त्रायते यस्माद् गायत्री तेन गीयते यह गान करने वाले की, जप करने वाली की, रक्षा करती है, इसलिए भी इसको गायत्री कहा जाता है।

'ओ३म्' यह ईश्वर का मुख्य नाम है यह प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ मे बोला जाता है, इसके बहुत अर्थ हैं, उनमे से एक अर्थ है रक्षा करने वाला । परमेश्वर के सम्बन्ध मे हमे ऐसा अनुभव करना चाहिए कि वह सर्व व्यापक है, सब जगह है । हम चाहे कमरे मे बैठे हो, जगल मे हो, हवाई जहाज, बस या रेल मे सफर कर रहे हो, परमेश्वर हमारी हर स्थान पर रक्षा कर रहा है। दूसरे ईश्वर हमारी हर समय रक्षाकर रहा है। चौकीदार और पहरेदार कुछ घण्टों की डियूटी देकर थक जाते हैं और फिर सो जाते हैं परतु परमेश्वर हमारी हर समय रक्षा कर रहा है वह हमेशा जागा हुआ है। रात्रि को जिन्हे नीद न आती हो, वे ऐसा अनुभव करें कि प्रभु हमारी माता है, वह जगत्-जननी है। हम एक बालक की तरह उसकी गोद मे लेटे हुए हैं। वह हमे लोरियां दे रही है। हमे लाड लडा रही है। थपक-थपक कर सुला रही है तो हमे शीघ्र ही नीद आ जायेगी और हमे स्वप्न भी सुन्दर सुन्दर दीखेंगे। तीसरे वह हमारी हर तरह रक्षा कर रहा है। उसने हमारे शरीर की रक्षा करने के लिए तरह-तरह के फल, सब्जियाँ तथा अन्न उत्पन्न किये हैं। हमारे मन की रक्षा करने के लिए वह हर देश मे महान पुरुषो को उत्पन्न करता है। आत्मा की रक्षा के उसने वेदों का पवित्र ज्ञान सृष्टि के आरम्भ मे दिया है। जिस प्रकार उसने के रहने लिए पृथिवी श्वास लेने के लिए वायु, देखने तथा जीवन के लिए सूर्य को सृष्टि क आरम्भ मे उत्पन्न किया, उसी प्रकार इस पृथिवी पर हमे किस प्रकार रहना है, कैसे एक-दूसरे के साथ व्यवहार करना है। कैसे मनुष्य जीवन को सफल और उपयोगी बनाना है इस ज्ञान के लिए वेदो का पवित्र ज्ञान दिया है।

भूर्भुव स्व 'भू, भुव, स्व इन तीन शब्दो की बडी महिमा है। ये सन्ध्या के मन्त्रो मे तथा हवन मन्त्रो में कई स्थान पर आये हैं। इनके भी अनेक अर्थ हैं। एक अर्थ है भूरिति वै प्राण भू प्राण को कहते हैं। वह प्रभु हमारे प्राणो के प्राण हैं, वह हमे प्राणो के समान प्रिय होने चाहिये। 'भुवरित्यपान' भुव अपान को कहते हैं। ईश्वर हमारे दु खो को दूर करता है। वह हमे प्राण के समान प्रिय इसलिए है कि हमारे दु खो का नाशक है।

'स्वरिति व्यान' स्व व्यान को कहते हैं। सर्वत्र व्यापक होने से वह व्यान कहलाता है। यह हमारे दु ख इसलिये दूर कर सकता है क्योकि वह सर्वत्र व्यापक है। हमसे कही दूर नहीं है।

'भू र्भुव स्व' का दूसरा अर्थ—'भू' सत् को कहते हैं, 'भू सत्तायाम्' यह सब से पहली धातु (Root) है अर्थात् भू का अर्थ सत्ता है। भुव' 'चित' चेतनता को कहते हैं। 'स्व आनन्द को कहते हैं। ससार मे 3 ही पदार्थ हैं। प्रकृति जीव तथा ईश्वर। गायत्री मन्त्र मे इन तीनों का वर्णन अत्यन्त सक्षेप मे गूढ रूप से किया गया है। प्रकृति 'भू अर्थात् 'सत्' है। उसकी अपनी सत्ता है। यह जगत् स्वप्रवृत् नही है, जीती जागती सत्ता है। जीव (जीवात्मा) भूर्भुव है 'सत—चित' सच्चित है। जीवात्मा की सत्ता भी है परन्तु उसमे यह विशेषता है कि वह 'चेतन' है प्रकृति चेतन नहीं, जड है। ईश्वर स्व सत—चित—आनन्द सच्चिदानन्द है। उसकी सत्ता है वह मौजूद है 'चित' व सर्वज्ञ है परन्तु उसमे जीवात्मा से यह विशेषता है कि वह आनन्द स्वरूप है। जीवात्मा नहीं। यह तो आनन्द की खोज मे रहता है। इसलिए गायत्री हमे सिखाती है कि यदि हम आनन्द चाहते हैं तो हमे प्रभु की शरण मे जाना चाहिए। उसकी ओर झुकना चाहिए, प्रकृति की ओर नही। क्योंकि प्रकृति तो केवल भू सत् है। हम सच्चित हैं, प्रकृति से बढकर है परन्तु परमात्मा हम सबसे बढकर हैं वे सच्चिदानन्द हैं। आनन्द उन्हीं से मिल सकता है। जिस प्रकार मिठाई हलवाई की दुकान पर ही मिलती है, दर्जी की दुकान पर नही इसी प्रकार 'आनन्द' भगवान से ही मिल सकता है, प्रकृति से नही। प्रकृति का हमे उपयोग तो करना चाहिये, ससार के पदार्थों से लाभ उठाना चाहिये क्योकि यह शरीर भी प्रकृति से बना हुआ है परन्तु उपासना केवल हमे प्रभु की ही करनी चाहिये। उसी को सिर झुकाना चाहिये।

तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि (तत् सवितु) उस जगत के उत्पन्न करने वाले ऐश्वर्य के देने वाले (देवस्य) सब सुखों के देने वाले दिव्य देव का जो (वरेण्य भर्गः) वरण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य, जो पवित्र तेज है। (धीमहि) उसका हम ध्यान करें उसको हम धारण करें अर्थात् ईश्वर के जो पवित्र गुण हैं, उनका हम चिन्तन करें तथा अपने जीवन को श्रेष्ठ और पवित्र बनाने के लिये उनको धारण करें। ईश्वर के हम सब गुण तो धारण नहीं कर सकते। वह सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी सृष्टि कर्ता है। हम वैसे तो नहीं हो सकते हैं परन्तु हम उसका अनुकरण करते हुए किसी अश तक पवित्र, न्यायकारी, दयालु, उदार तथा दानी हो सकते हैं। ईश्वर की भक्ति का सही अर्थ यही है हम उसके अनुयायी बनें। उस जैसा बनने का यत्न करें। उसके गुणों को धारण करते चले जावें।

धियो यो न: प्रचोदयात्-हम उस प्रभु के पवित्र तेज को क्यों धारण करें तथा क्यो उसका ध्यान करें इसके लिये (य) जो वह सच्चिदानन्द स्वरूप, प्राणस्वरूप, दु खनाशक तथा सर्व व्यापक सविता देव है वह (नः धिय प्रचोदयात्) हमारी बुद्धियों को उत्तम प्रेरणा देवें। उसे अच्छे कार्यों और अच्छे मार्ग पर लगावे।

बुद्धि ही दुनिया में सबसे बडी चीज है। यह ठीक है तो सब कुछ ठीक है। यह बिगडी तो सब कुछ बिगड जाता है। गायत्री का महत्व इसलिये माना गया है कि इसमें सुबुद्धि की याचना की गई है। धन-वैभव, मकान-दुकान ठाठ-बाट, शान-शौकत सब बुद्धि से ही मिलते हैं परन्तु हमारी बुद्धि ठीक ही बनी रहनी चाहिये वर्ना यह सब खेल बिगड जाता है। बुद्धि ठीक होगी तो हम इन्हें प्राप्त कर अभिमान नहीं करेंगे, अकडेंगे नहीं किन्तु हम नम्र बनेंगे। इनका उपयोग करेंगे। दानशील बने रहेंगे परन्तु यह सब कुछ तब ही हो सकेगा यदि हमारा सम्बन्ध प्रभु से बना रहेगा। हम उसकी भक्ति और उपासना करते रहेंगे। इस प्रकार गायत्री मन्त्र मे प्रभु के स्वरूप का वर्णन, उसकी तथा इनके द्वारा बुद्धि की निर्मलता पर जोर दिया है। प्रभु के द्वारा हमारी बुद्धि पवित्र हो इस बुद्धि की पवित्रता द्वारा हम ससार के अन्य कार्य ठीक रीति से करते हुए प्रभु की ओर जाने वाले हों, उसकी भक्ति मे लीन होने वाले हों।

हमको सरताज बना जा

देवनारायण भारद्वाज

इन्द्रो विश्वस्य राजति। श नोऽअस्तु द्विपदे श चतुष्पदे ।।
यजु० 36/8

ऐश्वर्य सर्व के स्वामी हो, हे इन्द्र विश्व अधिराजा ।
दे आनन्द सब कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ।।

वह इन्द्र हमारा ईश्वर है
ऐश्वर्यवान जगदीश्वर है
पल-पल प्रकाश का दाता वह
सब का रक्षक राजेश्वर है।

सर्वोच्च राज राजेश्वर आ, रक्षा के हाथ बढा जा।
दे आनन्द-सब कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ।।

द्विपदे-चौपदे प्राणी सारे
पुत्र-मित्र या भृत्य हमारे
हाथी-घोडे पशु धेनु सर्व
हो सहयोगी सभी सुखारे।

अपना संरक्षण सबको दें, हे परम मान्य महाराजा।
दे आनन्द सब कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ।।

हे इन्द्र विश्व पर राज्य करो
सब मनुज धर्म सम राज करो
पशु प्राणी सबकी रक्षा कर
इनकें सुख का सब साज करो

सम्राट प्रजा के परिपोषक, हमको सरताज बना जा।
दे आनन्द सब कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ।।

जगन्नाथ निवास रैवोपुर नई बस्ती
आर्यनगर (उ०प्र०)

साप्ताहिक　ओ३म्　कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

फीजी में भारतीय दूतावास

फीजी की राजधानी सूवा मे भारतीय दूतावास के द्वारों पर 24 मई के दोपहर बाद ताले पड गये हैं। दूतावास से भारतीय ध्वज उतार लिया है। कारण वहा समर्पित अतरिम सरकार ने 23 मई को आदेश दिया था कि भारतीय दूतावास चौबीस घटों के अन्दर बन्द कर दिया जाय।

विचारणीय है, कि फीजी की कुल जनसख्या मात्र सात लाख पन्द्रह हजार है, जिसमे आधे से भी अधिक भारतीय मूल के लोग पिछली एक शताब्दी से भी अधिक समय से बसे हुए हैं, जिन्होंने अत्यधिक कठिन परिस्थितियो मे जी-तोड मेहनत मजदूरी करके उस देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती से खडा किया है। आज सूवा की सैनिक सरकार भारत पर वहा के विपक्ष को सहायता देने का आरोप लगा कर, राजनयिक सम्बन्ध तोडने पर कटिबद्ध है।

वास्तव मे यदि भारत सरकार ने कोई सक्रिय सहायता अथवा वहाँ की सरकार के विरुद्ध कोई अभियान चलाया होता, तो फीजी की सरकार को भारतीय दूतावास के विरुद्ध आँख उठाने की हिम्मत न हुई होती। विदेशों मे बसे भारतवासियो की ओर से आखें मूद रखने वाली हमारी धर्मनिर्पेक्ष सरकार का केवल इतना कसूर है कि राष्ट्रमडल मे उसे फिर से शामिल नही होने दिया।

अफसोस इस बात का है कि फीजी जैसा पिद्दी सा देश भारतीयो की आधी आबादी को नचाये जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे यदि अपनी स्थिति के अनुरूप हमारा दबदबा भी हो और हमारी विदेश नीति मे हमारी ताकत की अभिव्यक्ति होती हो तो विदेशो मे बसे भारतीयो और हमारे राजनयिकों के साथ इस प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं किया जा सकता। परन्तु हमारी विदेश नीति का यह हाल है कि अन्तर्राष्ट्रीय मचो पर भी फीजी में रह रहे साढे तीन लाख से अधिक भारतवासियो के सामान्य अधिकारो पर अनदेखी हो रही है। और हमारी सरकार गाहे-बगाहे विरोध-पत्र देने के अतिरिक्त और कोई ठोस कदम उठाने की स्थिति मे नहीं है।

लगभग दो करोड भारतवसी भारत के बाहर विभिन्न देशों मे बसे हुए हैं और वहा की अर्थव्यवस्था को मजबूत करन मे अपना जीवन खपा रहे हैं। ये लोग विश्व राजनीति मे भारतीय सस्कृति, सभ्यता और शक्ति के सच्चे सन्देश वाहक हो सकते हैं। मगर जब हमारी सरकार की निगाहो मे उनकी कोई गरिमा न हो तो दूसरे देशों से क्या आशा का जा सकती है। भारतवासियो (प्रवासी भारतीयो) के नाम पर हमारे यहा केवल यूरोप और अमेरिका मे बसे धनपति भारतवासियो का ख्याल रखा जाता है।

भारत सरकार को चाहिए कि सबसे पहले अपनी विदेशनीति पर नए सिरे से पुनर्विचार करें और फिर अन्तर्राष्ट्रीय मचों पर फीजी मे पनप रहे नस्लवाद के विरुद्ध विश्व जनमत तैयार करने मे कोई कसर न छोडे। इसके साथ ही फीजी में जब तक लोकतान्त्रिक सरकार की स्थापना न हो, तब तक सभी प्रकार के आर्थिक प्रतिबन्ध उस पर लगाये जायें।

साम्प्रदायिकता का भूत

देश की राजधानी दिल्ली में पिछले दिनो साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलन का बड़े विशाल स्तर पर आयोजन किया गया। राष्ट्रीय समाचार-पत्रो ने भी सम्मेलन में पधारे राजनीतिज्ञों और उनके द्वारा बताये गये रागो को बडी खूबसूरती के साथ भारत की निरीह जनता के सम्मुख रखा।

भारत का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप इसकी एकता और अखण्डता की गारन्टी है—यह बात देश का हर राजनीतिज्ञ महात्मा गांधी के युग से कहता चला आ रहा है। सत्ताधारी या सत्तापक्ष के सहयोगी राजनीतिज्ञों के अनुसार साम्प्रदायिक केवल वह हिन्दू है, जो गैर हिन्दुओं के सभी अपराधों, उनकी अराष्ट्रीय गतिविधियों, अलगाववाद, आतकवाद, लूटपाट, धार्मिक-कृत्यो में हस्तक्षेप, प्रलोभनों द्वारा धर्म-परिवर्तनों, विदेशी शक्तियो से साठ गाठ के विरुद्ध मुह खोल देता है। अथवा भारतीय सस्कृति, सभ्यता व आदर्शों की दुहाई हो।

दुर्भाग्य भारत वर्ष मे रह रहे हिन्दुओ का ही कहा जा सकता है, कि जो अपने ही देश मे अपनी सस्कृति, भाषा, वेषभूषा और अपने आदर्श महापुरुषो को अपनाने के लिए अपनी ही सरकार के आगे गिडगिडाने के लिए मजबूर हैं और इस देश की धर्मनिर्पेक्ष सरकार के नेता उन्हे दुत्कार रहे हैं, और धमकी दे रहे हैं कि शकराचार्य की तरह गिरफ्तार कर लेंगे।

उधर दूसरी ओर कुर्सी के भूखे ये नेतागण अब्दुल्ला बुखारी शहाबुद्दीनो व आजमखानों की चापलूसी कुछ इस तरह कर रहे हैं मानो यही सब राष्ट्रभक्त हैं, और इन्हीं के सहारे इनकी सरकार और सारा राष्ट्र चल रहा है।

समय परिवर्तन है—राजनीति के आकाओ को यह नहीं भूलना चाहिये।

—मूलचन्द गुप्त

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु, स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्व सुभूत सुविदत्र नो अस्तु, ज्योगेव दृशेम सूर्यम् ॥
(अथर्व० 1-31-4)

हे जगदीश्वर

प० तुलसीराम आर्य 'भजनोपदेशक'

कर प्राणी मात्र कष्ट त्राण, हे जगदीश्वर कल्याण करो।

(1)

अन्धे, खेले, युवा हुए हम,
जिन हाथो के पकड सहारे।
अर्पण कर तन, मन, धन, श्रम
कहलाते पितु-मातु हमारे ॥

हम हतज्ञान, हमारे हितकर, सब उनके व्यवधान हरो।
कर प्राणी मात्र का कष्ट त्राण, हे जगदीश्वर कल्याण करो॥

(2)

पा कर्मों का अधिकार सभी
जिस समाज में साथ रहे हैं।
लाभ-हानि, सुख दुख सब अपने,
बाट-बाट कर सग सहे हैं ॥

उसी समाज के प्राणीमात्र मे, प्रेम, प्रधी, प्रबोध भरो।
कर प्राणी मात्र का कष्ट त्राण, हे जगदीश्वर कल्याण करो ॥ 2 ॥

(3)

क्षीर दायी धेनु हमेशा,
बल, पौरुष, अमृत बरसाती।
माता-पिता सम प्यार लुटाकर,
आरोग्य भरी सरिता सरसाती ॥

गला घोट कर उस ममता का, मानव मत मदांध मरो।
कर प्राणी मात्र का कष्ट त्राण, हे जगदीश्वर कल्याण करो ॥ 3 ॥

(4)

तरुण कमनीय गात लिए,
शुभ देख सदा, शुभ कार्य करें।
रहें चक्षु आलोकित रवि, शशि से
नहीं तिमिर से भाग डरें ॥

रोग रहित रहें आर्य सभी, बन अमृत झरना रोज झरो।
कर प्राणी मात्र का कष्ट त्राण, हे जगदीश्वर कल्याण करो ॥ 4 ॥

113 ए किसोकरी (रिंगरोड)
नई दिल्ली-110014

पद्मश्री आचार्य पं० क्षेमचन्द्र जी 'सुमन' की लेखनी से—

यह समय अन्तर्निरिक्षण का है दोष-दर्शन का नहीं

पद्मश्री आचार्य प० क्षेमचन्द जी 'सुमन' एक ऐसे आर्य साहित्य मनीषी हैं जिनके कृतित्व से देश का कौना-कौना भली भांति परिचित है। और जिनके लिए यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि अपनी उपमा वे स्वय ही हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के सुयोग्य स्नातक, हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार 'सुमन' जी ने एक ओर जहा काव्य, निबन्ध, जीवनी, समीक्षा इतिहास, पत्रकारिता, साहित्येतिहास, सस्मरण आदि अनेक विधाओ पर लगभग 30 मौलिक ग्रन्थो का प्रणयन करके हिन्दी साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया है, वही दस खण्डों मे प्रकाश्य 'दिवगत हिन्दी सेवी' नामक सदर्भ ग्रंन्थ के प्रणयन द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य के सवर्धन के विकास का वास्तविक इतिहास प्रस्तुत करने का अभूतपूर्व अनुष्ठान प्रारम्भ किया हुआ है।

यद्यपि आचार्य जी का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अथवा अन्य किसी सभा और समाज की राजनीति से कोई लेना देना नही है, किन्तु देश और समाज के हित मे आर्यसमाज के अस्तित्व और उसके द्वारा किये जा रहे महत्त्वपूर्ण कार्यों के बीच आने वाली बाधाओ से उन्हें पीडा महसूस हुई है, और यह लेख उसी पीडा का प्रतिफल है।

सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी द्वारा पजाब सभा के मुख पत्र साप्ताहिक "आर्य मर्यादा" मे प्रकाशित उनका 'सार्वदेशिक सभा की परीक्षा की घडी" शीर्षक जो लेख 24 सितम्बर 1989 के अक मे प्रकाशित हुआ है, उसमे उन्होने सार्वदेशिक सभा के उन निर्णयो के प्रति अपनी असहमति प्रकट की है जो गोहत्याबन्दी, शराब बन्दी और अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को लाने के सम्बन्ध में किया था। अपने इसी लेख मे उन्होने यह भी सकेत किया है कि देश के सामने इन समस्याओ के अतिरिक्त बहुत से अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनकी ओर सार्वदेशिक सभा को ध्यान देना चाहिये। उनका यह विचार है कि सार्वदेशिक सभा निर्णय तो कर लेती है किन्तु उसका कार्यान्वयन समुचित रीति से नही हो पाता। उन्होने अपने उक्त लेख मे यह पीडा भी व्यक्त की है कि हम हिन्दी को अग्रेजी के स्थान पर लागू करना चाहते हैं परन्तु आज आर्यसमाज के ही अपनी सस्थाओ मे अग्रेजी को अधिक महत्व दिया जा रहा है। हमने छूत छात समाप्त करने के लिए अपनी ओर से पूरा जोर लगा दिया था परन्तु फिर भी आज हरिजन अपने को हिन्दू स्वीकार नही करते। जहा तक हमारी सरकार का सबध है, वह आर्यसमाज का कोई महत्त्व नही देती।"

इस सम्बन्ध मे मेरा निवेदन है कि श्री वीरेन्द्र जी जरा ठण्डे दिल से सोचें और आयसमाज के अतीतकालीन इतिहास पर दृष्टि डालें तो उन्हे यह नि सकोच स्वीकार करना पडेगा कि आर्य समाज ने केवल अपने बूते पर राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओ के समाधान के लिए अनेक लोकोपकारी योजनाए बनाई और उनका क्रियान्वयन भी किया था। उसने कभी भी शासन की ओर नही देखा बल्कि उसकी आलोचना ही की। शासन की नीति तो तुष्टीकरण की ही होनी है। आर्यसमाज सदैव मार्ग-दर्शक रहा है किसी भी शासन का अनुचर नहीं। ऐसी स्थिति मे वह सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से यह आशा कैसे करते हैं कि वे शासन के मुखापेक्षी हैं? उन्हें तो स्वत ही अपना मार्ग बनाना है। और मैं समझता हू कि इस दिशा मे सार्वदेशिक सभा का जब जब भी समय आया तब तब ही शासकों और समाज दोनों को इस सबध मे चेतावनी दी है।

बात यहा तक ही नही है। श्री वीरेन्द्र जी ने वर्ष 22 अक 4-5 और 6 के आर्य मर्यादा मे प्रकाशित अपने इस घर को आग लग गई घर के चिराग से शीर्षक लम्बे धाराबाहिक लेख मे अपनी पीडी व्यक्त करते हुए सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से त्याग पत्र देने की माँग करते हुए यह विचार भी प्रकट किया है कि। हमारा वैदिक यती मण्डल सार्वशिक सभा के कायभार को क्यों नही सम्भाल लेता? उन्होने लिखा है "उनकी स्थिति उस व्यक्ति की सी है जिसकी आखो क सामने उसका घर जल रहा हो और वह बैठा तमाशा देख रहा हो। क्या हमारे सन्यासी देख नहीं रहे हैं कि आर्य समाज की क्या स्थिति हो रही है? क्या इसमे उनका कोई कर्त्तव्य नहीं है? मैं जानता हू कि यती मण्डल के अध्यक्ष अद्धेय पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अनुभव इस विषय में बहुत कटु है, जब उनके अपने ही शिष्य ने उनके हाथ मे त्यागपत्र देकर बाद मे उसकी अवहेलना कर दी तो अब सभवत स्वामी जी समझते हैं कि वह किसकी ओर से क्या कहें। इसलिए मैं वैदिक यती मण्डल के अध्यक्ष व दूसरे सन्यासी महात्माओं से नम्र निवेदन करना चाहता हू कि अभी भी समय है कि वह आर्य समाज को बचायें"

मैं आर्यसमाज का एक अकिचन सा सेवक हू। मेरे जीवन का अधिकाश समय आर्य समाज की गतिविधियो को जानने और समझने और उनसे प्रभावित होने मे ही व्यतीत हुआ है। इतने पर भी मैं किसी सस्था का सक्रिय सदस्य नही हू। न मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की राजनीति से कोई लेना देना है। मैं तो देश और समाज के हित मे आर्य समाज के अस्तित्व और उसके द्वारा समय समय पर चलाए जाने वाले आंदोलनों को अत्यन्त अनिवार्य और आवश्यक मानता हू। मेरी यह भी मान्यता है कि आर्य समाज ही देश मे ऐसी सस्था है, जिसकी क्रान्तिकारी विचारधारा और उसके द्वारा प्रचारित विभिन्न कार्यकलापों के कारण ही अतीत काल मे देश मे जागृति हुई और आज भी इसका सगठन देश की किसी भी सास्कृतिक सस्था के मुकाबले इक्कीस ही ठहरता है, उन्नीस नहीं। इतिहास इसका साक्षी है जब जब आर्यसमाज के मच से देश की विभिन्न प्रवृत्तियो मे योग देने की पुकार हुई तब तब आर्य समाज पीछे नहीं रहा।

श्री वीरेन्द्र जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अध्यक्ष और उनके द्वारा किए जा रहे विभिन्न लोकोपकारी कार्यों मे क्या कमी अनुभव किया, जिसके कारण उन्हें यह सब लिखने को विवश होना पडा। मैं आर्यसमाज के विभिन्न वैचारिक आदोलनो को दूर से बड़ी तटस्थ दृष्टि से देखता रहा हू और मैंने यह अनुभव किया है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कभी भी किसी भी समय कोई ऐसा कार्य नहीं किया जिस पर उगुली उठाई जा सके। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पिछले 3-4 वर्षों के विवरण मेरे इस कथन के ज्वलन्त साक्षी हैं। यदि वीरेन्द्र जी भी अपने धाराबाहिक लेख को लिखने से पूर्व इन विवरणो का गभीरता से पारायण कर लेते तो उन्हें विदित हो जाता कि सार्वदेशिक सभा क्या क्या कार्य कर रही है।

जहा तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के त्यागपत्र का प्रश्न है उस संबध मे पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेश पर उन्होने तत्काल त्यागपत्र दिया था। किन्तु इस त्याग पत्र के उपरान्त स्वामी सर्वानन्द जी ने अपने 23-3-88 के पत्र में स्वामी आनन्दबोध जी को यह आदेश दिया था कि आर्य समाज के हित का ध्यान रखते हुए आप अपना कार्य पूर्ववत करते रहें। स्वामी जी का उक्त पत्र सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित हुआ था, श्री वीरेन्द्र जी ने भी उसे अवश्य देखा होगा।

जहाँ तक सार्वदेशिक सभा के कार्यों का प्रश्न है उनमें से कुछ का सक्षिप्त विवरण दे रहा हू इससे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और उनके सहयोगी सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ताओ की कर्मठता और कार्य कुशलता का सम्यक् परिचय मिल सके—

1—धर्मरक्षा महाभियान एक महान उपलब्धि है, आर्यसमाज के इस महाभियान ने देश में नई विचारधारा को प्रोत्साहन दिया और अनेक मौलवी और पादरी वैदिक धर्म मे प्रविष्ट हुए।

2—देश मे इस्लामी करण की लहर को रोकने के लिए मीनाक्षी पुरम का सम्मेलन दक्षिण भारत में आर्य समाज के मार्ग का मुख्य द्वार ही नहीं बना अपितु इस सम्मेलन ने पूरे भारत मे हरिजनों को अपने स्वाभिमान का अहसास कराया।

3—देश मे ईसाईकरण की लहर को रोकने के लिए आर्य समाज द्वारा आदिवासी क्षेत्रो मे वनवासी सम्मेलनों के जो लगातार आयोजन हो रहे हैं, वह सार्वदेशिक सभा और उसके प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कार्यों की मुख्य देन है। इन सम्मेलनो द्वारा कई हजार ईसाई शुद्ध हुए हैं।

4—कुछ वर्ष पूर्व पोप पाल की भारत यात्रा मे एक लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाने की योजना को रोका ही नहीं अपितु स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कालाहाण्डी में उसी दिन 2500 ईसाईयों को शुद्ध करके पोप पाल को उत्तर दे दिया।

5—राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के प्रस्ताव पर तत्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती इदिरा गाधी ने राष्ट्रपति भवन मे मस्जिद बनाने की अनुमति दे दी थी, इसे भी आर्य नेता रामगोपाल शालवाले ने रुकवाया था।

6—1938-39 के आर्य सत्याग्रह आदोलन को सरकार द्वारा स्वतत्रता आदोलन घोषित कराकर उसके सेनानियों को सम्मान पेंशन दिलाने का श्रेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सार्वदेशिक सभा को ही है।

7—मदुराई में दो लाख रुपये मे भूमि क्रय करके आर्यसमाज का प्रचार केन्द्र सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापित करना, कोई साधारण काम नही है।

8—आसाम, नागालैण्ड, राजस्थान और मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों मे दयानन्द सेवाश्रमों के माध्यम से सेवा सहायता कार्य हो रहे हैं।

9—दिल्ली में गौशाला की स्थापना करने के लिए कई एकड भूमि प्राप्त करना और उसके निर्माण की योजना का कार्यान्वयन बहुत बड़ा कार्य है।

10—वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु सार्वदेशिक सभा द्वारा नए नए साहित्य का प्रकाशन चारों वेदों की हजारों प्रतियों का वितरण।

11—देश की अन्य सामाजिक संस्थाएं व्यक्ति विशेष की कैंचियों तक सीमित हैं, किन्तु सार्वदेशिक सभा का संगठन शताब्दी की ओर बढ़ रहा है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियाँ

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

कहते हैं कि आपत्ति कभी अकेली नही आती अपितु अपने साथ अन्य अनेक आपत्तियों को लेकर आती है किन्तु अनुभव यह बतलाता है कि सौभाग्य के साथ भी कुछ दुर्भाग्य आपत्तिया चली आती हैं। ऐसा ही हुआ भारत मे सन् 1947 के पन्द्रह अगस्त को।

उस दिन विदेशी सत्ता यहा से गई और देश की बागडोर देशवासियों के हाथ मे आयी किन्तु स्वाधीनता का वह सौभाग्योदय अपने साथ दुर्भाग्य के कुछ ऐसे तत्त्व भी ले आया जो भारत के नेताओ और उनकी राजनीतिक व शासकीय अयोग्यताओं के कारण भारत राष्ट्र को अभिशाप रूप मे प्राप्त हुए। उन अभिशापों को भारत तब से लेकर अब तक भोग रहा है और पता नही भविष्य मे कब तक भोगता रहेगा ?

इस समय स्थिति यह है कि महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी की जय बोलते रहो, उनकी प्रशसा करते रहो और वर्तमान नेताओ को उन प्रशसाओ और जयकारों की ओट मे जी भर कर कोसते रहो। परन्तु वास्तविकता यह है कि उन्हीं महात्मा जी की कृपा के फल भारत राष्ट्र को भोगने पड रहे हैं। जिस मार्ग पर वे चलते रहे जिस प्रकार की गतिविधिया वह अपनाते रहे, वही मार्ग अपनाया उनके शिष्यो ने वही गतिविधियां अपनायी उनके उत्तराधिकारियो ने। भले ही उन्होंने उन्हे अनिच्छापूर्वक न चाहते हुए या उनके दूरगामी परिणामो को न समझते हुए अपनाया हो। हमारा अभिप्राय यह है कि चाहे राजनीतिक और प्रशासनिक अयोग्यता और अदूरदर्शिता के कारण अपनाया हो या उनकी ओट मे अपनी राजनीतिक महत्वाकाक्षा अर्थात् लोकेषणा और सासारिक भोगविलास की प्राप्ति के लिए अपनाया हो। इस समय स्थिति यह है कि प्रत्येक चुनाव के बाद केवल आकृतिया बदलती हैं व्यक्तित्व बदलते हैं किन्तु दृष्टिकोण नही बदलता अपितु और प्रत्येक बाद मे सत्ता म आने वाला व्यक्ति गांधीवाद के भूत को अपने से पहले सत्ताधारी से बढचढ कर प्रस्तुत करने और लागू करने का प्रयत्न करता है जिससे वह अधिकाधिक समय तक सत्ता मे रहकर अपनी मनोवाछित लोकेषणा और भोगविलास की प्राप्ति कर सके।

गाधी जी से अपनी सन्तपन की धुन मे सब से बडी भूल हुयी मुस्लिम तुष्टिकरण की, जिसके दूरगामी दु खद परिणामो की ओर तो उन्होंने कभी दृष्टिपात भी नहीं किया। वकील होने के कारण उनसे जो आशा की जा सकती थी उनकी गतिविधियों का विश्लेषण करके देखा जाय तो वह आशा पूरा हुयी नही पायी जाती।

बगाल मे मुस्लिम लीगी सरकार बनी और उसके मुख्य मन्त्री बने सोहरावर्दी ने बगाल को पाकिस्तान मे मिलाने की माग को लेकर डायरेक्ट ऐक्शन" अर्थात् 'सीधी कार्यवाही" की धमकी दी और उसे सत्य भी कर दिखाया। खुलकर हिन्दुओं की हत्यायें की गयी, हिन्दु नारियो को अपमानित तथा भ्रष्ट किया गया। इस काण्ड मे अकेले कलकत्ता नगर मे सोलह सदस्य हिन्दू मौत के घाट उतार दिये गये। जब गाधी जी से कलकत्ता जाने के लिये कहा तो उन्होंने यह कहकर कि अभी मेरे भगवान की प्रेरणा नही है जब भगवान की प्रेरणा होगी, तब जाऊगा, जाना अस्वीकार कर दिया। हिन्दू कब तक लुटता-पिटता रहता ? अन्त मे, "मरता क्या न करता" के अनुसार हिन्दु भी अपनी सी करने पर उतर आये और हिन्दु के हथियार उठाने के बाद जितने समय म मुसलमानों ने केवल पाच सौ हिन्दुओ की हत्या की, इतने समय में हिन्दुओ ने चार सहस्त्र से अधिक मुसलमानो को मौत की नीद सुला दिया तो गाधी जी को उनके भगवान की तुरन्त प्रेरणा हो गयी और इस इल्हाम के होते ही गाधी जी कलकत्ता आ पहुचे। गाधी जी दृष्टि मे उनकी वकालत और सन्तपन के माप से हत्या करना अपराध नही था और हत्यारा अपराधी नही था। हा, आत्म रक्षार्थ शस्त्र उठाना वह अवश्य अपराध और आत्म रक्षार्थ शस्त्र उठाने वालों को अपराधी मानते थे। यह हमारा निर्णय नही अपितु गाधी जी की स्वीकारोक्ति है। उन्होंने ऐसे ही एक अवसर पर हिन्दुओ को स्पष्ट शब्दों मे यह सम्मति दी थी कि यदि वह (मुसलमान) तुमसे झगडा करते है तो भी तुम उनसे मत लडो, वह तुम्हें मारते हैं तो तुम उनके हाथ से मर जाओ। पाठक ही निर्णय कर लें कि यह कानून की कौन सी धारा पर न्याय सिद्ध होता है और कहा का सन्तपन है ? भारतीय दृष्टिकोण का सन्तपन तो "शठें शाठ्य समाचरेत अर्थात् जैसे के साथ तैसा" तथा 'यथा-योग्य व्यवहार" की शिक्षा देता है। गाधी जी ने कलकत्ता जाकर अपनी न्यायकारिता तथा सन्तपन का परिचय पीड़ितों को न्याय दिलाने और उनके घावों पर मरहम लगाने में नहीं किया अपितु उस भीषण हत्याकाण्ड और अत्याचार के जनक और मुखिया उस महाहत्यारे पापी सोहरावर्दी को शहीद की उपाधि से सम्मानित करने में किया। सोहरावर्दी से उसे हुसन शहीद सोहरावर्दी बना दिया।

यह गाधी जी भी जानते थे और उनके शिष्य भी तथा भारत की सम्पूर्ण हिन्दू जनता के साथ-साथ ससार के अन्य देशों के निवासी भी भली भाति जानते हैं कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग के मुसलमानो के लिए पृथक पृथक गृह—राष्ट्र की माग की पूर्ति के लिए बनाया गया है तो फिर न्याय यह है कि समस्त मुसलमानों को पाकिस्तान चले जाना चाहिये था। भारत मे उन्हें रहने का न तो नैतिक अधिकार प्राप्त है और न वैधानिक और यह तथ्य है कि मोहम्मद अली जिन्ना ने सेना और पुलिस के बटवारे से पहले जनसख्या परिवर्तन की बात कही थी। कहना न्याययुक्त होगा कि वह गाधी जी और उनके सर्वाधिक प्रिय शिष्य जवाहरलाल नेहरू की अपेक्षा अधिक न्याय बुद्धि और सूझबूझ रखता था और डा० अम्बेडकर ने भी जिन्ना के इस सुझाव का समर्थन किया था किन्तु उस समय तो गाधी जी की आंधी चल रही थी और पृथ्वी पर पैर न रखकर वायुमण्डल मे विचरण करने वाले गाधी नेहरू ने जिन्ना का यह प्रस्ताव स्वीकार नही किया। जब कि यह दोनो भी यह भी भली भाति जानते थे कि सत्तानवें प्रतिशत मुसलमानो ने पाकिस्तान के पक्ष मे मतदान किया था। उनका यह मत पाकिस्तान की माग करने वाली मुस्लिम लीग को मिला था। मुसलमानो का शेष तीन प्रतिशत मत भी काग्रेस को नहीं मिला था। उस तीन प्रतिशत मे वह मत भी था जो खान अब्दुल गफ्फार खा की माग पर उस चुनाव मे प्रयुक्त नही हुआ था ता केवल एक या आधा प्रतिशत मत के आधार पर द्विराष्ट्र सिद्धान्त को स्वीकार कर अर्थात मुसलमानो को पृथक राष्ट्र मान लेने के पश्चात् भी भारत में ही रोके और बनाय रखना कदापि न्यायसगत नही है किन्तु गाधी जी का सन्तपन और उनके शिष्यो की उनके प्रति अन्ध भक्ति ने यह अभिशाप भी सदा सर्वदा के लिए भारत के सर पर मढ दिया।

फिर उसके बाद होना यह चाहिए था कि भारत को 'हिन्दू राष्ट्र घोषित कर दिया जाता। कारण अतीव स्पष्ट है कि जब द्विराष्ट्र सिद्धान्त के आधार पर बटवारा किया गया और मुसलमानो ने अपने लिए 'गृह राष्ट्र के रूप मे पाकिस्तान ले लिया तो शेष भाग तो द्विराष्ट्र सिद्धान्तानुसार हिन्दुओ का ही गृह राष्ट्र अर्थात् "हिन्दु राष्ट्र" रह गया और ऐसी स्थिति मे प्रथम तो मुसलमानो को यहा रहने का न तो वैधानिक अधिकार है और न नैतिक और इतने पर भी यदि उन्हें रक्खा गया या वह यहा रहे तो उनके लिए जनसख्या के आधार उतना भूभाग पाकिस्तान बनने वाले क्षेत्र मे से लिया जाना चाहिए था तथा उन्हे नागरिक अधिकार नही दिये जाने चाहिये थे। वह तो यहा विदेशी या दूसरी श्रेणी के नागरिक बनकर रहने के अधिकारी हैं किन्तु उन्हें दिये जा रहे हैं अल्पसख्यक होने के नाम पर विशेषाधिकार यह भारत राष्ट्र और यहा के वास्तविक नागरिको हिन्दुओ के साथ घोर अन्याय है और इसकी परिणति हिन्दू विनाश के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो सकती।

आपको स्मरण होगा कि 17 अगस्त 1939 को हजारों आर्यसत्याग्रही विजयी होकर हैदराबाद जेलों से छूटे थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपने मुख-पत्र-आर्यसन्देश का बृहद्-विशेषांक

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशताब्दी स्मृति अंक

आगामी 19 अगस्त 1990 को प्रकाशित कर रहा है

आर्य जगत् के विद्वानो, साहित्यकारो, इतिहासकारों, कवियो, नेताओं तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सेनानियो की मौलिक रचनायें 30 जून तक आमन्त्रित हैं।

सम्पादक

पृष्ठ 4 का शेष

12—देश विदेश मे पिछले कुछ वर्षों मे अनेक आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे हुए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा उप प्रधान प० वन्देमातरम् स्वय विश्वधर्म सम्मेलन मे भाग लेने जर्मनी गए थे।

13—अभी जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी को गिरफ्तार किया गया था, सार्वदेशिक सभा के प्रधान की चेतावनी के बाद सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया।

इस प्रकार के कार्यों की तालिका लम्बी है। सार्वदेशिक सभा, स्वामी आनन्द-बोध और सभा के अधिकारियो ने बहुत सारे लोकोपकारी कार्य किए हैं, जिन्हें भुलाया नही जा सकता है। आर्यसमाज का कोई व्यक्ति यदि अवैदिक कार्य करता है अथवा किसी मजार पर चादर चढा सकता है तो आर्यसमाज के प्रति उसकी सैद्धातिक निष्ठा को एक पलडे पर कैसे तोला जा सकता है।

यह अत्यन्त हर्ष और सौभाग्य की बात है कि आज देश जिन परिस्थितियो से गुजर रहा है और चारो ओर अराजकता का भीषण नर ताडव हो रहा है, उनके प्रति भी सार्वदेशिक सभा के अधिकारी अत्यन्त जागरुकता से उसके समाधान के प्रति भी सतत् प्रयत्नशील हैं और समय-समय पर शासन को भी सावधान करते रहते हैं।

मेरी सम्मति मे यह समय दोष दर्शन का नही, आत्म-निरीक्षण का है। जो अपील श्री वीरेन्द्र जी ने समस्त आर्य जगत से की है यदि उसके प्रति वह स्वय भी आत्म निरीक्षण करें तो इसका उत्तर वह स्वय पा लेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का त्रिशताब्द उनकी प्रेरणा और उपस्थिति म हुआ किन्तु आज तक त्रिशताब्द के आदेशो के अनुसार चल अचल सपत्तियो का बटवारा वह नहीं कर पाए और अब तो वह त्रिशताब्द के आदेशो को भी भूल रहें हैं। उन्हें स्वय इसके आदेशो के अनुसार कार्यान्वयन की पहल करनी चाहिए, जहाँ कोई मतभेद हो, उन्हें बैठकर पारस्परिक विचार विनिमय के द्वारा दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

जो अपेक्षा वह सार्वदेशिक सभा से करते हैं क्या वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के द्वारा उसका शुभारम्भ नही करा सकते ? सार्वदेशिक सभा ने अतीतकाल मे आर्य समाज के बहुत से आतरिक झगडो को सुलझाया था और जब जब भी आवश्यकता हुई देश के हित मे वह कैसा भी आदोलन छेडने से पीछे नही रहे। यह सार्वदेशिक सभा के सतत प्रयास का ही फल है कि गुरुकुल कागडी जैसी राष्ट्रीय सस्था को अराजकतावादी तत्वो से मुक्त कराया (जिसके लिए स्वामी आनन्दबोध ने आमरण अनशन भी किया था)। आज यह सस्था अपने पूर्व गौरव प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर है। इस सबके पीछे किसी एक व्यक्ति का नही अपितु समस्त आर्य जगत् की सद्भावनाए एव शुभकामनाए तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विवेकी अधिकारियो का सतर्कतापूर्ण निर्देश ही महत्वपूर्ण रहा है।

मैं जानता हू कि श्री वीरेन्द्र जी के परिवार का आर्य समाज के प्रति अटूट प्रेम है, दृढ आस्था है, और कदाचित् इसीलिए उन्होने यह लेखमाला लिखी है। यह समय खण्डन का नही मण्डन का है, दोष दर्शन का नही अपितु आत्म निरीक्षण का है। जबकि देश की सारी सस्थाए पारस्परिक मतभेदों के कारण विनाश के कगार पर खडी हैं, तब क्या कम आश्चर्य की बात नहीं है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विभिन्न राजनैतिक, सास्कृतिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए जन जागरण अभियान चलाने के साथ-साथ समय-समय पर शासन से भी लोहा लेती रहती है।

मेरा बन्धुवर वीरेन्द्र जी से यह अनुरोध है कि जिस आर्य समाज और गुरुकुल के निर्माण तथा विस्तार मे उनके स्वनामधन्य पिता महाशय कृष्ण ने अतीतकाल में अपना अमूल्य योगदान दिया था, उस गौरव की रक्षा के निमित वह आत्म निरीक्षण करें और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आलोचना करने की अपेक्षा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उस अतीतकालीन गौरव की पुर्नस्थापना करें जिसके लिए उनके पिता, सदा सर्वदा तैयार रहते थे। •

—पद्मश्री-क्षेमचन्द्र सुमन
अजय निवास, दिलशाद कालोनी, दिल्ली

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के नये कुलपति—

सुभाष विद्यालंकार

श्री सुभाष विद्यालंकार गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातकों मे से हैं। वे आदर्शवादी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका जो ध्येय एक बार बन गया, उसकी पूर्ति मे वे जुट जाते हैं। सासारिक सम्पत्ति, धन और मान के लिए अपने आदर्श और सकल्प का बलिदान उन्होंने नहीं सीखा है। भारतीय सूचना सेवा में जनसपर्क निर्देशक जैसे दिल्ली प्रशासन के प्रतिष्ठित और उत्तरदायित्वपूर्ण पदो पर वे कार्य करते रहे हैं। वे इस कार्य के लिए सर्वथा उपयुक्त थे। और उन्हें इस विभाग में प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता था, परन्तु उनसे किसी गलत प्रकार की अपेक्षा की गयी तो अपनी आत्मा की पुकार के विरुद्ध वे समझौता नहीं कर सके और उस पद से त्याग-पत्र देने मे उन्हें क्षण भर की देरी नहीं लगी। उनमें आत्मविश्वास की कमी नहीं थी। किन्हीं आपातकालीन स्थिति के लिए उन्होंने वकालत की डिग्री पहले ही प्राप्त कर ली थी। प्रसिद्ध विधिवेत्ता डा० लक्ष्मी मल सिंघवी के जूनियर के रूप में कानून के प्रेक्टिकल ट्रैनिंग ली और अपने पैरों पर स्वतन्त्र रूप से खड़े होकर आर्यसमाज की सेवा मे जीवन अर्पित किया। सुभाष जी को पद की आकाक्षा कभी नहीं रही। वे आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली से सम्बद्ध हैं। परन्तु वहा अधिकारी पद के चुनाव मे विवादास्पद स्थिति आने पर आपने दूसरे प्रत्याशियो को आदरभाव से चुने जाने दिया वे बहुत सरल प्रकृति के इन्सान हैं। अपना काम स्वय करने मे विश्वास रखते हैं। खानपान और रहन सहन बहुत सादा है।

यदि बीते दिनो पर दृष्टिपात करें तो गुरुकुल कागडी सस्था का कभी कितना नाम था—यह सोचकर आश्चर्य हो जाता है। आर्य जनता के लिए तो वह तीर्थ के समान था। वहां वार्षिकोत्सव के अवसर पर जो ज्ञान की गगा बहती थी, उसमें डुबकी लगाने दूर दूर से भारी सख्या मे लोग आया करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के युग मे न केवल साधारण जनता आती थी, अपितु महात्मा गांधी, सी० एफ० एन्ड्रयूस, भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड, इगलैंड के तत्कालीन प्रधानमन्त्री रैमजे मैक्डानेल्ड, मोतीलाल नेहरू, बाबू भगवान दास जैसी नामीगामी हस्तिया इस अद्भुत स्थान का दर्शन करने आती थीं।

गुरुकुल ने अनेक सुयोग्य स्नातक तैयार कर समाज की जो सेवा की है, वह अभूतपूर्व है। परन्तु धीरे-धीरे इस महान सस्था का ह्रास होता गया और यह स्थान लडाई-झगडो का केन्द्र बनकर रह गया। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का अध्यापक वर्ग वहा के कर्मचारी, कार्यालय के लोग 15 20 वर्षों से बहुत अशान्त वातावरण मे जिये हैं। उन्हे अपने पद पर बने रहने के लिए बहुत सघर्ष करना पडा है। इस काल मे जो कुलपति आये हैं, वे भी इस तूफान से अछूते नही रहे हैं। उन्हे अपने पद पर बने रहने के लिए अनेक ऐसे कार्य करने पडे जो सामान्य अवस्था मे वे कभी नहीं करते। उदाहरणार्थ एक कुलपति का छात्रो ने घेराव किया और उनके साथ दुर्व्यवहार किया। तब उन्होने अपनी सुरक्षा का एक ही रास्ता देखा और गुरुकुल के छात्रों के निवास और उनके भोजन की व्यवस्था एक झटके मे समाप्त कर दी। और इस प्रकार वहा का छात्रावास बन्द हो गया। कहा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का आदर्श कि ब्रह्मचारी आठों प्रहर गुरु के समीप निवास करता हुआ विद्याध्ययन करेगा और कहा यह स्थिति! परिणाम यह हुआ कि छात्रावास के अभाव मे योग्य विद्यार्थी गुरुकुल मे प्रवेश नहीं ले रहे हैं। और गुरुकुल के छात्रावासों मे पुलिस का स्थाई निवास बन गया है। वहा के आवासगृहों मे भी पुलिस अधिकारी स्थाई रूप से रहने लगे हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के युग मे जब भारत के तत्कालीन वायसराय गुरुकुल कागडी पधारे थे तब उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस को बुलाने का प्रश्न उठने पर स्वामी जी महाराज ने एक भी सिपाही वहा न आने दिया। उन्होंने कहा था कि हम अपने अतिथि की सुरक्षा में पूर्णतया सक्षम हैं। कालान्तर में जब इस क्षेत्र मे सुलतान डाकू का प्रकोप बढा तब भी गुरुकुल में पुलिस नही आई और अब तो यहा के चप्पे-चप्पे पर पुलिस के सिपाही दिखाई पडते हैं। गुरुकुल के छात्रावासों मे जहां हर समय यज्ञ हवन की आहुतियो से सुगन्धी व्याप्त रहती थी और विद्यार्थी पढने-पढाने में दत्तचित रहते थे यहा अब पी०ए० सी० रहती है। गुरुकुल का क्या हाल बन गया है।

गुरुकुल के अधिकारी प्राय वहा के अध्यापकों को छात्रो की कमी के लिए दोषी ठहराते हैं। उनका विचार है कि वहां के प्रोफेसर और अध्यापकगण योग्य नहीं हैं। मुझे अपने पति स्व० डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के साथ भारत के अनेक विख्यात विश्वविद्यालयों मे जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ और मैं वहां के अध्यापकवर्ग के सपर्क मे आई हू। मैं विश्वास के साथ कह सकती हू कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का अध्यापकवर्ग भारत के अन्य विश्वविद्यालयों के अध्यापकों से किसी भी प्रकार कम नहीं है।

आशा है सुभाष जी गुरुकुल मे नया उत्साह और प्रेरणा का वातावरण उत्पन्न कर सकेंगे। आर्य नेताओं ने बडी आशा के साथ इस सस्था को सुचारुरूप से चलाने का भार श्री सुभाष जी के सशक्त कन्धों पर डाला है। आशा है अपनी कार्य-कुशलता और योग्यता से सुभाष जी गुरुकुल का गौरव एक बार पुनः स्थापित करने मे समर्थ होंगे।

—सुशीला सत्यकेतु
ए०1/32, सफदरजग इन्क्लेव, नई दिल्ली-29


लाखों लोगों की पसंद
एम डी एच दंत मंजन
23 जड़ी बूटियों से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि
आपके परिवार के लिये पूर्ण दंत सुरक्षा
दांतों का दर्द, मुह की दुर्गन्ध मसूड़ों की सूजन, ठंडा गर्म पानी लगना, मुह मे छाले होना तथा दांतों की अन्य बीमारियों का घरलू इलाज
एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
प्रतिदिन प्रयोग करें
अपने निकटतम दुकानदार से खरीदें
सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन : 537987, 537341


चाट मसाला
चाट सलाद और फलों को अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये यह बहुरंगीन मसाला है।
CHAT MASALA
Excellent for garnishing Chat, Salads and fruit to provide delicious taste and flavour


अमचूर
अपनी क्वालिटी तथा शुद्धता के कारण यह खाने में विशेष स्वाद और लज्जत पैदा करता है।
AMCHOOR
(Mango Powder)
It adds special tangy taste and flavour to your dishes with its quality and purity
एम डी एच
अमचूर


आन्तरिक वस्त्रों में एक मात्र विश्वसनीय नाम...
Sparsh BRA स्पर्श ब्रा
श्वेता ब्रा Shvaita BRA
सरिता ब्रा Sarita BRA
Shalini BRA शालिनी ब्रा
Groversons
Paris Beauty
पैरिस ब्यूटी
ग्रोवर सन्स
• BRA • PANTIES • UNDERWEAR • BANIAN •
चमनलाल इन्टरप्राइज़िज़
Chamanlal Enterprises
सेल्स डिपो :
२, बीडनपुरा, अजमल खां रोड, करोल बाग
नई दिल्ली-११०००५
फोन : ५८२०१६, ५७२९१२४

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P.S.O on 31 1 6 90 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

(पृष्ठ 1 का शेष)

श्री सक्सेना को उग्रवादी कारवाइयो के साथ साथ इस बात की भी महत्त्वपूर्ण जानकारी है कि पंजाब और जम्मू कश्मीर में विद्रोही गतिविधियों को पाकिस्तान किस प्रकार सहायता कर रहा है। आपने कश्मीर मे पाकिस्तानी हस्तक्षेप का भी विश्लेषण किया है। और आप यह भी जानते हैं कि पाकिस्तानी कार्यवाही का उत्तर किस प्रकार दिया जा सकता है।

श्री सक्सेना ने कहा है कि उनका पहला कार्य घाटी की जनता के सहयोग और सदभावना से वहां शान्ति और सामान्य स्थिति को कायम करना होगा। उन्होंने आतंकवादियो से संविधान के दायरे मे रहकर वार्ता की पेशकश भी की।

कुछ राजनीतिक नेताओ का यह कहते रहना बचकाना लगता है कि पाकिस्तान को स्पष्ट शब्दो मे कह देना चाहिए या कह दिया गया है कि वह हमारी सीमाओ मे हस्तक्षेप न करें। स्पष्ट कह देने मात्र से ही यदि पाकिस्तान मान गया होता तो समस्या कभी की सुलझ गयी होती। शायद हमारे राजनीतिज्ञ नेता पाकिस्तान के मानस को समझना चाहते नहीं। पाकिस्तान का जन्म ही भारत के प्रति शत्रुता में हुआ है और यही उसका जीवन दर्शन है।

जम्मू बन्द

भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना समर्थित बन्द के आह्वान पर जम्मू तथा इसके उपनगरो मे सभी दुकानें तथा प्रतिष्ठान बन्द रहे। आगजनी की वारदातों मे अनेक मकान और दुकानें जलीं। विभिन्न क्षेत्रो में जलूस निकाले गये और प्रधान मन्त्री तथा रेल मन्त्री के विरुद्ध नारे लगाये गये।

अनेक स्थानों पर पुलिस ने गोलियाँ चलायीं, आंसू गैस के गोले और लाठी चार्ज किया।

कश्मीरी विस्थापितों का प्रदर्शन

कश्मीरी विस्थापित जो अपनी दयनीय स्थिति बताने के लिये प्रधानमन्त्री निवास जा रहे थे उस समय रोष में भर गये जब उन्हें जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन को हटाने की जानकारी मिली। कश्मीरी विस्थापितों ने सरकार के निर्णय की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि सरकार ने श्री जगमोहन को हटाकर कश्मीर मे कार्यरत विदेशी ताकतों के हौसले बुलन्द कर दिये हैं। उन्होंने गृहमन्त्री और रेलमन्त्री को दोषी ठहराते हुए उनके विरुद्ध नारे बाजी की।

पुलिस ने प्रदर्शन कारियो पर आंसू गैस छोड़ी, लाठी चार्ज किया और अनेक स्त्री पुरुषो और बच्चों को गिरफ्तार भी किया।

—सुभाष गुप्त

'अक्षर —कैलाश' २०४७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
विजय आर्य कम्पोजिंग एजेन्सी, आई०के० मित्तर्स जीवनपुर दिल्ली में मुद्रित

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ३३ | रविवार १० जून १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

सरकार को पाक-अधिकृत-कश्मीर की वापसी की मांग करनी चाहिए

पत्रकार सम्मेलन में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की मांग

चण्डीगढ 3 जून। आर्य समाज के सर्वोच्च नेता तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने जम्मू-कश्मीर, और पजाब की विभिन्न परिस्थितियो पर आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने आर्य समाज का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए निम्नलिखित विचार रखे —

1—जहा तक पाकिस्तान से बातचीत का सम्बन्ध है, सरकार को अमेरिका तथा सोवियत सघ की मध्यस्थता मे यह वार्ता कर लेनी चाहिए। परन्तु कश्मीर के विषय मे कोई समझौता न करें अन्यथा इसे देश की जनता स्वीकार नही करेगी। सरकार को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर की वापिसी की माग जोर दार शब्दों मे पाकिस्तान से करनी चाहिए।

2—पाकिस्तान से प्रशिक्षण प्राप्त आतकवादियो को रोकने के लिए यह आवश्यक है कि कश्मीर से कच्छ तक की पूरी सीमा पर कम से कम 5 किलोमीटर चौडी एक सुरक्षा पटटी बनायी जावे और इस पर भू०पू० सैनिको को उनके परिवारो सहित बसाया जाय तथा उन्हे मताधिकार और हथियार आदि रखने के लाइसेंस दिए जावे।

3—जनता का मनोबल बढाने के लिए राष्ट्रीय नेता तथा उच्च प्रशासनिक अधिकारी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रो का समय समय पर दौरा करें। ईमानदार राष्ट्रवादी, कार्यकुशल और कर्मठ अधिकारियो को इन क्षेत्रो मे भेजकर वहा के निवासियो और उनके परिवारो की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया जायें। इससे प्रशासन और जनता के बीच की खाई कम होगी।

4—सविधान के अनुच्छेद 370 को तुरन्त हटाया जाय।

5—देश और धर्म की रक्षा के लिए पाकिस्तान द्वारा पजाब मे चलाया जा रहा उग्रवाद समाप्त होना अनिवार्य है। हिन्दू और सिक्ख एक ही स्रोत की दो धारायें हैं। सिक्ख गुरुओ के बलिदान मुस्लिम कटटरतावादी मनोवृत्ति के ही परिणाम हैं। इसलिए यदि पाकिस्तान हमारे देश मे उग्रवाद को बढावा देने की अपनी नीति मे सफल हो गया तो सिक्खो को भी गुरु तेगबहादुर जी की शहीदी से लेकर गुरु गोविन्दसिंह जी पर हुए घातक हमले जैसे सकटो का एक बार फिर सामना करना पडेगा। इस्लामी नीति मे कोई परिवर्तन नही आया है। वह आज भी वही है जो अब से सैकडो साल पहले थी। अत सिक्ख भाई पाकिस्तान द्वारा चलाये जा रहे षडयन्त्र और उसकी भारत विरोधी कूटनीति के शिकार न हो। देश और धर्म की रक्षा के लिए हिन्दू सिक्खो ने मिलकर अनेको बलिदान दिए हैं। भविष्य मे भी उनका यह बन्धुत्व बना रहना चाहिए।

6—वी०पी० सिंह की सरकार की हिन्दू विरोधी नीति का घोर विरोध करते हुए स्वामी जी ने कहा कि अल्पसख्यको के हितो की रक्षा और धर्म निरपेक्षता की आड में सरकारी कार्यवाहियों द्वारा हिन्दू समाज को कमजोर किया जा रहा है। उदाहरण देते हुए उन्होने बताया कि सरकार ने केवल अल्पसख्यको को सतुष्ट करने के लिए—

- दिल्ली की जामा मस्जिद की मरम्मत के लिए 50 लाख रुपयों का सरकारी अनुदान दिया।
- सैकडो पुरानी खडहर पडी मस्जिदो को जो पुरातत्व विभाग के नियत्रण मे थी वक्फ बोर्डों को दे दिया गया और वहा नमाज पढने की इजाजत भी दे दी गई।
- जम्मू कश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन को सरकार ने सम्प्रदाय विशेष के दबाव मे आकर वहाँ से वापिस बुलाया।
- राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद को केवल मुस्लिम सम्प्रदाय की सतुष्टि के लिए आगे बढाया गया है।
- जो हरिजन (हिन्दू) धर्म परिवर्तन करके ईसाई या मुसलमान बन गए हैं, उन्हे अनुसूचित जातियो को प्राप्त होने वाली सुविधाओ के अधिकार का बनाये रखने का आश्वासन देकर सरकार न परोक्ष रूप से धर्म परिवर्तन को बढावा दिया तथा यही अधिकार अब नव बौद्धो को देकर के, उसने हिन्दू जाति के विघटन की प्रक्रिया को और तेज कर दिया है।
- मुफ्ती मुहम्मद सईद को गृहमंत्री बनाना, उनकी पुत्री रुबिया की रिहाई के लिए पाच कटटर मुस्लिम आतकवादियो को छोड देना, हिन्दुस्तान मशीन टूल कम्पनी के डायरेक्टर श्री खेडा को आतकवादियों के हमले से न बचाना यह सब मुस्लिम तुष्टीकरण की कार्यवाही नहीं तो और क्या है?

7—धर्मनिरपेक्षता शब्द पहले सविधान का अग नहीं था। यह सन् 1976 मे लगाई गई आपात् स्थिति की उपज है और इसे तभी से सविधान मे जोड दिया गया है।

8—सामरिक महत्त्व के लद्दाख क्षेत्र को केन्द्र शासित प्रदेश का दर्जा दिए जाने की माग का आर्यसमाज पूरा समर्थन करता है।

9—देश के समाजिक सास्कृतिक आर्थिक और नैतिक मूल्यो की पुर्नस्थापना के लिए आर्यसमाज निम्न पाच सूत्रीय कार्यक्रम पर विशेष रूप से अभियान चला रहा है—

(1) गोहत्या बन्दी कानून बनाना
(2) अग्रेजी हटाओ आन्दोलन
(3) शराब बन्दी
(4) भारत से विदेशी पादरियो का निष्कासन
(5) अस्पृश्यता निवारण

महाशय धर्मपाल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवस्थापक

नई दिल्ली, 31 मई आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान माननीय श्री महाशय धर्मपाल को गुरुकुल कागडी फार्मेसी, हरिद्वार का मानद व्यवस्थापक (डायरेक्टर) नियुक्त किया गया हैं। महाशय जी का इस व्यवसाय के सफल सचालन में एक लम्बा अनुभव है। विश्वास है, कि उनके निर्देशन मे यह फार्मेसी उत्तरोत्तर उन्नति करेगी।

महाशय धर्मपाल ने 28 अप्रैल को फार्मेसी का निरीक्षण करने के पश्चात् इसके निर्माण एव विक्रय विभाग के सुचारु रूप से सचालन के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये। महाशय जी ने आधुनिक तकनीक के आधार पर फार्मेसी मे निर्माण व विक्रय कार्यों के लिए दो विशेषज्ञो को काम सौंपा है। 28 मई को महाशय जी ने फार्मेसी का पुन निरीक्षण किया।

महाशय जी अपने व्यापार कार्य से समय निकालकर इस सस्था की उन्नति के लिए जो सहयोग दे रहे हैं, वह प्रशसनीय है। उल्लेखनीय है, कि फार्मेसी से प्राप्त आय गुरुकुल शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहन देने के लिए व्यय की जाती है, तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

वेद मनन-

तत्व ज्ञान की गंगोत्री

गायत्री मन्त्र

—स्व० श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

संसार मे शक्ति का प्रयोग अच्छे और बुरे, दोनो कामो मे किया जाता है। शुभ और मंगल कार्यों मे व्यवहार मे लाई जाने वाली शक्ति दक्षिणी कही गई है। इस प्रकार की शक्ति का प्रयोग दक्षिण मार्ग से किया जाता है। बुरे कामो को करने के लिए यही शक्ति वाम मार्ग से प्रयुक्त होती है। इसी आधार पर मन्त्र शक्ति को भी दक्षिण और वाम मार्ग मे विभक्त किया गया है। दक्षिण मार्ग मे जो अगणित मन्त्र हैं, उनमे गायत्री मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है। यह अनुपमेय है। परन्तु भौतिक दृष्टि से इसकी उच्चता की उपमा देनी हो तो कहना होगा कि माउण्ट एवरेस्ट या गौरीशंकर शिखर के समान उच्च है। वस्तुत भारतीय तत्वज्ञान का यह मन्त्र गंगोत्री है।

वेद चार हैं—ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद। यह विश्व व्यापी भारतीय संस्कृति के मण्डप के चार मूलाधार स्तम्भ हैं। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है। परन्तु ज्ञान शब्द का अर्थ इन्द्रियो के माध्यम से प्राप्त होने वाला मात्र नही है। अतीन्द्रिय ज्ञान का भी इसमे समावेश होता है। इन्द्रियो द्वारा प्राप्त होने वाला ज्ञान मर्यादित होता है। अतीन्द्रिय ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। इस असीम और विराट ज्ञान की जननी गायत्री मन्त्र है। इसी कारण ऋषि ने गायत्री मन्त्र "वेद माता" कहा है।

भारतीय तत्व ज्ञान मे मानव के दो जन्म बताये गये हैं। एक तो वह जब मानव मा के पेट से जन्म पाता है। दूसरा जन्म उसका जब होता है, जब वह गायत्री मन्त्र की दीक्षा पाता है। अत. गायत्री मन्त्र की दीक्षा प्राप्त व्यक्ति की संज्ञा है 'द्विज' अर्थात द्वि जन्मा। अर्थात दो बार जन्म पाया हुआ। जिन लोगों के इस प्रकार दो जन्म नही होते, उनको शूद्र कहा जाता है। शूद्र कोई जाति नहीं है। ब्राह्मण कुल उत्पन्न व्यक्ति को यदि गायत्री मन्त्र का दीक्षा नही दी गई या गायत्री मन्त्र का संस्कार नही हुआ तो वह शूद्र है क्योंकि वह ज्ञान शून्य है। भारत के प्रथम विधि-निर्माता मनु का यह विधान है। सब मनुष्य जन्म से शूद्र होते हैं। यथा —

'जन्मना जायते शूद्र '

मनु ने तो यहा तक कहा है कि जो द्विज वेदाध्ययन को छोडकर अन्यत्र श्रम करता है वह इस जन्म मे अपने कुल सहित शूद्र हो जाता है।

यो द्विज वेदानधीत्य
अन्यत्र कुरुते श्रम ।
स जीवन्नेव शूद्र-
त्व गच्छति सान्वयम् ॥

भारत मे जाति जन्म से नही मानी जाती थी। गुण-कर्म से मानी जाती थी। गीता मे कहा गया है —गुण कर्म से चारों वर्णों की रचना की गई है। यथा —

'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्ट
गुणकर्म विभागश ।"

उस काल का आज के समाज को स्मरण तक नहीं रहा है।

गायत्री ज्ञान की जननी है। यही नहीं वह एक रीति से काल की भी जननी है। जब होगा, काल ही गायत्री के वश मे होगा गायत्री कभी कालवश नही। गायत्री की इस महिमा को जैन विद्वान भी मानते हैं और संकटो से मुक्त होने के लिए गायत्री मन्त्र का विधिवत जप करने के परामर्श देते हैं। गायत्री की महत्ता इससे प्रकट है। गायत्री का उपासक भी कभी कालवश नही होता उसका काल पर अनन्य असाधारण प्रभुत्व होता है। गायत्री मन्त्र की शक्ति और उसके प्रभाव के प्रति श्रद्धा और निष्ठा सच्ची और हार्दिक होनी चाहिए। काल पर निरंकुश सत्ता चलाने की शक्ति उसको प्राप्त होती है। गायत्री माता की अनन्य शरण जाने का अर्थ है परमेश्वर की कृपा प्राप्त करना। परब्रह्म का भक्त कभी कष्ट मे नहीं होता।

'न मे भक्त. प्रणश्यति ।'

काल का दूसरा अर्थ मृत्यु है। गायत्री का साधक मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है। यही कारण है कि गंगा तट पर बारह साल का समय बिताते हुए ऋषि दयानन्द गायत्री मन्त्र का जाप करने का उपदेश देते थे। अनेकों को उन्होंने अपने हाथ से गायत्री मन्त्र लिखकर दिया।

गायत्री मन्त्र की शक्ति अपार है। क्योंकि इसके एक-एक अक्षर में आज के भौतिक विज्ञान की अपेक्षा भी अधिक श्रेष्ठ ज्ञान निहित है। गायत्री से प्राप्त होने वाले विज्ञान के सम्मुख आज का विज्ञान नगण्य है। यह एक श्रद्धालु का विश्वासमात्र नहीं है, परन्तु यह एक यथार्थ सत्य है। श्रीपाद शास्त्री किंजवडेकर सदृश वैदिक विद्वान इसको यथार्थ सत्य मानते हैं।

गायत्री मन्त्र व्यष्टिको समष्टि की ओर ले आता है। व्यक्ति समाज का एक घटक है, अवयव है। अवयव अवयवी के मध्य क्या सम्बन्ध होता है? अवयव अवयवी का पूरक सहायक होता है। उसका स्वतन्त्र अस्तित्व नही होता। शाखाओ और पत्तो का वृक्ष के सिवाय क्या कोई महत्व है? यही बात व्यक्ति की है। व्यक्ति स्वत पूर्ण नहीं है। उसकी प्रत्येक गतिविधि परतन्त्र है। उसका अस्तित्व पूर्णत प्रकृति पर निर्भर है। प्रकृति स्थूल सूक्ष्म शक्ति पर निर्भर है। व्यक्ति का सब व्यवहार श्वास-उच्छ्वास, बोलना, चालना निद्रा खान-पान इस अव्यक्त शक्ति के ऊपर निर्भर हैं। प्राण शक्ति विचार शक्ति व शब्द शक्ति की बराबर आपूर्ति प्रकृति से न होती रहे, तो मनुष्य एक सेकेण्ड जीवित न रहे। इसी कारण से सन्ध्या मे दोनो समय इस मन्त्र का पाठ किया जाता है—

'तच्चक्षुर्देवहित पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्, पश्येम शरद शत, जीवेम शरद शत, शृणुयाम शरद शत, प्रब्रवाम शरद शतमदीनास्याम शरद शत, भूयश्च शरद शतात्।

श नो वात पवता श नस्तपतु सूर्य ।
श न कनिक्रदद्देव पर्जन्योऽअभि वर्षतु ॥

यजु० 36/10

मेघो की मधुरस वर्षा

—देवनारायण भारद्वाज

ये चक्षु देखते तुमको हैं, निज दृश्य इधर भी करता।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की हे नाथ करो अब वर्षा ॥

तन प्राण हमारा विकसा दो
सुखकारी वातास बहा दो
मन्द वायु शीतल सुगन्धमय
जीवन मे संचार करा दो।

स्पर्श सुखद ले साथ बहे ये, वायु हमे दे अब हर्षा।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा ॥

यह सूर्य सुमन साधन विशेष
हो तप्त सदा ये अग्नि वेश
निज ताप ज्योति की ऊर्जा से
दे सूर्य हमें सुख निर्निमेष।

यह सूर्य सृष्टि का सम्पोषक, दे हमको शुभ उत्कर्षा।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा ॥

ये मेघ मोद के साधन हैं
इनसे पाती धरती धन है
मेघों की शब्द गर्जना से
जग का सम्यक सम्वर्द्धन

मेघों की मधुरस वर्षा से, हो वृष्टि-सृष्टि सुख कर्षा।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा ॥

जगन्नाथ निवास रैदोपुर नई बस्ती
आजमगढ़ (उ०प्र०)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

विश्व पर्यावरण दिवस



हमारे पर्यावरण पर मडराते खतरों के बारे मे बहुत कुछ लिखा गया है। इसे बिगाडने के मनुष्य के प्रयासों से सावधान रहने की बात भी कई बार कही गई है। लेकिन प्रकृति से मनुष्य की छेडछाड पर जितनी चिन्ता व्यक्त की जाती है, इतनी उसकी रक्षा करने पर कोई ध्यान नही देता। ओजोन की छतरी मे छेद, ग्लेशियरों का पीछे खिसकना, वनो की अन्धाधुन्ध कटान, हवा मे घुलती जहरीली गैसें—ये सभी हमारे सामने गभीर खतरें हैं। हमारी सरकार, हमारे सरकारी अधिकारी, हमारे सभी उच्च वर्गीय लोग पर्यावरण को बिगाडने मे लगे हैं। बांध बनाने के विरुद्ध प्रतिदिन प्रदर्शन होते हैं। विकास आवश्यक है। विकास अनिवार्य है। विकास अपरिहार्य है। लेकिन विकास किसी की जान लेकर नही किया जा सकता।

सूर्य इस ससार की आत्मा है। सूर्य की किरणें प्राकृतिक महोषधि हैं। परन्तु इसकी गर्मी विषाक्त प्रभाव छोडे तो क्या होगा? सूर्य की किरणें कैंसर जैसे रोगो से लडने की क्षमता समाप्त कर दे तो क्या होगा? समुद्र के किनारे बसे शहरों का क्या होगा यदि इसी गति से पहाडो की बर्फ पिघल कर समुद्र के स्तर को ऊँचा उठाती रही। ये प्रश्न हमारे सामने हैं। पर इसमे सूर्य का क्या दोष है।

वेदो मे सूर्य के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाली अनेक ऋचाएं उपलब्ध है। आवश्यक हैं कि हम ऋचाओ को पढें, जानें मनन करें तथा तदनुसार आचरण करें।

सूर्यस्त्वाधि पतिमृर्त्यो रुदायच्छतु रश्मि मि।

(अथर्ववेद, 5।30।15)

अधिष्ठाता सूर्य अपनी प्रखर किरणो से तुम्हे मृत्यु से बचाए। वेदों की यह उक्ति आध्यात्मक रूप से तो सत्य है ही, यह वैज्ञानिक रूप से भी सच है।

प्रदूषण अवश्यम्भावी है। आदि मानव के सामने तो कोई समस्या नही होनी चाहिए थी, पर उस समय भी प्रदूषण था। इसलिए मलमूत्र को गढ्ढे मे दाबने की बात हमारे ग्रथो मे प्राप्य है। यह प्रदूषण एयर कंडीशनरो, कारखानों की चिमनियो, वाहनो आदि ने और भी ज्यादा बढा दिया है। प्रकृति मे विद्यमान वृक्षो (औषधियों-वनस्पतियों) मे जो विष (प्रदूषण) हो जाए, तो उसे सभी दिव्य जल मिलकर दिव्य शक्तियों द्वारा दूर करें, ऐसी कामना एक वेदमन्त्र मे प्राप्य है—

यच्चक्षुषमसी भवति यन्नदीषु यदोषधीभ्य परिजायते विषम्। विश्वेदेवो निरितस्तत्सूवन्तु मा मौ पद्येन रपसा विदत्सरु॥

मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह जितना प्रदूषण फैलाता है, उतना अपने कार्य-व्यापारों तथा यज्ञादि के द्वारा दूर भी करें। यज्ञादि प्रदूषण-निवारण के श्रेष्ठतम साधन हैं। यज्ञ जो करेगा, उसकी रुचि वनस्पतियो की रक्षा, पशुपालन, सादगी तथा अहिंसा की ओर अवश्य ही प्रवृत्त होगी।

इसलिए प्रदूषण रहित विश्व की कल्पना हम यज्ञादि तथा वृक्षारोपण, पशु-पालन, आदि के द्वारा ही कर सकते हैं।

डा० धर्मपाल

संपादक के नाम पत्र—

साम्प्रदायिकता का विरोध हर स्तर पर हो!

24 मई, 1990 को राजधानी दिल्ली मे धर्म को न मानने वाले वामपन्थियों की पेबन्द पर-ब-पर तथा जनता दल के कतिपय नेताओं ने एक साम्प्रदायिकता विरोधी बैठक का आयोजन किया था। परस्पर विरोधी सिद्धान्तों वाले राजनीतिक दलों की यह बैठक केवल राममदिर तथा बाबरी मस्जिद तक ही सीमित रही, जबकि साम्प्रदायिकता की आग काश्मीर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कामरूप तक फैली हुयी है। यह देश व्यापी आग किसी को दिखाई नहीं दी? अफसोस, काश्मीर मे फैली उस साम्प्रदायिक आग पर किसी नेता ने प्रकाश नही डाला जिसके कारण एच० एम० टी० के जनरल मैनेजर श्री खेडा, उपकुलपति श्री हक तथा उनके सहयोगी की निर्मम हत्याए कर दी गयीं?

पाकिस्तान से प्रशिक्षण तथा हथियार लाकर सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों तथा अमनपसन्द लोगों को दिन दहाडे गोलियो से भूनते अराष्ट्रीय तत्वों की कट्टरपथी साम्प्रदायिकता के खिलाफ बोलने का साहस कोई नहीं कर सका? राष्ट्रीय तिरंगे और भारतीय सविधान की होली जलाने वाली साम्प्रदायिकता के विरुद्ध सब मौन साधे रहे?

भारत की जागरूक जनता जो राजीव सरकार को हटाकर श्रीमान् वी०पी० सिंह को प्रधान मन्त्री बना सकती है, वह इस देश के उन नेताओं को भी पहचानती है जो साम्प्रदायिकता के पोषक हैं। सैय्यद शहाबुद्दीन को तरजीह देने वाले माननीय चन्द्रशेखर को भी लोग जानते हैं। यही हाल उस जमात मे बैठे अनेक नेताओ का है। यदि राष्ट्रीय स्तर पर साम्प्रदायिकता का विरोध करना है तो हर स्तर पर और पूर्णतः खुलकर ही विरोध किया जाना चाहिए? उस साम्प्रदायिकता का भी विरोध होना चाहिए जो प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करे पूर्वांचल के वन प्रदेशों मे राष्ट्र विरोधी तत्त्वों का निर्माण कर रही है? उस साम्प्रदायिकता की भी निंदा होनी चाहिए जो परिवार नियोजन का विरोध करती है और राष्ट्र को बढती आबादी और बेरोजगारी के बोझ से दबाती है?

—ब्रजभूषण दुबे
30, गोराचद रोड कलकत्ता 700014

दिवंगत आर्यश्रेष्ठी—

पुण्य तिथि, 16 जून पर विशेष—

मुन्शी समर्थदान

प्रो० भवानीलाल भारतीय

स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्ता मुन्शी समर्थदान राजस्थान के सीकर जिले के ग्राम नेठवा के निवासी चारण मगलदान के पुत्र थे। सिढायच गोत्र के चारण थे। इनका जन्म 1858 ई० मे हुआ था। समर्थदान बहुभाषा विद् थे। उर्दू, फारसी, हिन्दी, सस्कृत तथा स्वल्प अंग्रेजी भी जानते थे। स्वामी दयानन्द से इनका सम्पर्क 1935 वि० मे हुआ। जब स्वामीजी ने वेदभाष्य लेखन तथा प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया तो उन्हे समर्थदान की सेवाओ की आवश्यकता हुई। प्रारम्भ मे वेदभाष्य बम्बई के निर्णय सागर प्रेस मे छपता था, अतः मुन्शी समर्थदान को इसकी व्यवस्था देखने बम्बई भेजा गया। 1879 ई० मे मुन्शीजी बम्बई पहुच गये और वहाँ वेदभाष्य के मुद्रण का कार्य देखने लगे। कुछ समय पश्चात् स्वामीजी ने वैदिक यन्त्रालय के नाम से काशी मे निजी प्रेस की स्थापना की, तो मुन्शीजी वेदभाष्य मुद्रण की व्यवस्था से मुक्त हो गए। उन्होने बम्बई मे लगभग एक वर्ष तक रह कर वेदभाष्य का काम देखा था। उनके सरल और निष्कपट व्यवहार से स्वामीजी अत्यन्त प्रसन्न हुये थे और उन्होंने 4 मई, 1881 को एक प्रशस्ति-पत्र लिखकर मुन्शीजी को दिया, जिसमे इन्हें धार्मिक, निष्कपटी, सच्चा, उद्योगी, परिश्रमी, चतुर सभ्य, सुशील, श्रेष्ठ और चाल चलन का बहुत अच्छा' जैसे विशेषणों से अलकृत किया है।

2 जुलाई, 1882 को मुन्शी समर्थदान को वैदिक यन्त्रालय का प्रबन्धक नियुक्त किया गया। इस समय यन्त्रालय प्रयाग मे था। मुन्शीजी की देखरेख मे स्वामीजी के लगभग सभी ग्रन्थ छपे। स्वामीजी का मुन्शीजी से विस्तृत पत्र-व्यवहार होता था। इसमे वे यन्त्रालय तथा स्वग्रन्थो के मुद्रण सम्बन्धी निर्देश तो मुन्शीजी देते ही थे, स्वय के कार्यक्रमों तथा विभिन्न स्थानों पर अपने उपदेश कार्य की सफलता आदि का सकेत भी इन पत्रों में मुन्शीजी को देते रहते थे। इससे स्वामीजी का मुन्शीजी के प्रति विश्वास तथा प्रेम का भाव प्रकट होता है। स्वामीजी के परलोक गमन तक मुन्शीजी ही वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्ता के पद पर रहे। मार्च, 1886 मे वे इन कार्य से मुक्त हो गये।

प्रारम्भ मे स्वामी दयानन्द को ग्रन्थो के प्रकाशनादि की व्यवस्था के कार्यों मे उपयुक्त सहायक व्यक्ति नहीं मिले थे। बम्बई मे सर्वप्रथम वेदभाष्य का मुद्रण कार्य उन्होंने हरिश्चन्द्र चिन्तामणि को सौंपा था और काशी मे यन्त्रालय स्थापित होने पर उसके प्रथम प्रबन्धकर्ता मुन्शी बख्तावर सिंह बनाये गये थे। आर्थिक मामलो मे गोलमाल करने के कारण इन दोनों को ही स्वामीजी ने पृथक कर दिया था। किन्तु मुन्शी समर्थदान के सम्बन्ध में उनका अनुभव कभी निराशाजनक नहीं रहा। वे हिसाब के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्यसमाज और कश्मीर

—विश्वम्भरदेव शास्त्री

प्राय सुनने मे आता है कि अंग्रेजों के प्रभाव के कारण महाराजा कश्मीर ने अपने राज्य मे आर्य समाजियो के आने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। एक समय पादरियो ने षड्यन्त्र रचा और महाराजा की अध्यक्षता मे शास्त्रार्थ का आयोजन किया जिसमे यह निर्णय किया जाना था कि जो पक्ष हार जायेगा वह दूसरे पक्ष के मत को स्वीकार कर लेगा। बेचारे कश्मीरी पण्डित पादरियो के उत्तर देने मे असमर्थ रहे। वातावरण ऐसा हो गया कि राजा के साथ साथ उसकी प्रजा भी पादरियों के चक्कर मे फस गई। ऐसी विकट स्थिति मे एक छोटे कद का मानव सभा के मध्य खड़ा हो गया और महाराज से पादरियों के पूछे प्रश्नो का उत्तर देने की आज्ञा मागी। स्वीकृति मिलने पर पादरियो के सभी प्रश्नो के उत्तर इस ढग से दिये कि सभी सुनकर दग रह गये। पादरियो की बोलती बन्द हो गई। राजा सहित सब धर्म-परिवर्तन से बच गये। वे तार्किक शिरोमणि विद्वान् थे—प० गणपति जी शर्मा, जो अपना चमत्कार दिखाकर एक मन्दिर मे विश्राम करने चले गये। ढूढ करवाने पर महाराज से उन्होंने एक ही पुरस्कार मागा कि कश्मीर राज्य मे आर्यसमाज के प्रवेश पर लगा प्रतिबन्ध हटा दिया जाये। तब से आर्यसमाज का प्रचार भारत के मुकुट कश्मीर मे होने लगा।

वह सस्कृत के विद्वानों का गढ आज पुन मौलवियो, पादरियो और आतकवादियो के पाप कर्मों से भस्म हो रहा है। भारत के अग-भग होने के समय से ही पाकिस्तान उस पर आँख लगाये बैठा है। तभी से साम्प्रदायिक दगे करवा कर वहाँ के अल्पसख्यकों को निकालने मे तुले हुये हैं। वर्तमान गृहमन्त्री श्री मुफ्ती मोहम्मद के अनुसार वहाँ साम्प्रदायिक विवाद नहीं है। गृहमन्त्री का यह कथन यदि सत्य है तो वहाँ के रहने वाले अल्पसख्यक हिन्दू लोग अपने घरो को छोडकर, प्राण बचाकर क्यो भाग रहे हैं, और वहा का रहने वाला मुसलमान क्यों नही भाग रहा है ?

राजनैतिक तुष्टीकरण की दुर्बलता का लाभ उठाकर कश्मीर की कश्मीरी भाषा की सारस्वत लिपि को समाप्त कर दिया है। लिपि की समाप्ति से भाषा और सस्कृति दोनों समाप्त हो जाती हैं। उर्दू को अनिवार्य भाषा घोषित कर दिया है। इस समय भी वहाँ के ग्रामों मे उर्दू बोलने का प्रचलन नहीं है। कश्मीरी न जानने वाला वहाँ मूक ही रहता है।

मैं सन 1986 मे दो बार-कश्मीर घाटी गया और गतवर्ष तक जून मे जाता रहा। मुख्य स्थान था श्री नगर से लगभग 35 किलो मीटर मानसबल क्षेत्र सैनिक स्कूल। इसी के निकट हिन्दुओ का प्रसिद्ध तीर्थस्थल क्षीर भवानी है। जिसमे जून में एक बडा मेला लगता है।

यहा से श्रीनगर जाने मे बडी कठिनाई होती है। एक दिन प्रात काल स्कूल की बस श्रीनगर गई, तो मै भी इस उद्देश्य से कि रविवार को आर्यसमाज के सत्सग में पहुँच जाऊँगा, बस मे चला गया।

आर्यसमाज हजूरीबाग पहुँच गया। वहाँ श्री नेमपाल जी शास्त्री से भेंट हुई। परिचय होने पर ज्ञात हुआ कि वे स्व० कुवर सुखलाल जी 'आर्य मुसाफिर' के गाँव के उनके ही साथी हैं। कई वर्षों से यहाँ आर्यसमाज और आर्यविद्यालय का सरक्षण कर रहे हैं। उन्होने जम्मू कश्मीर में आर्य समाज के प्रचार प्रसार के विषय में जो विवरण दिया वह निम्न प्रकार है—

कश्मीर घाटी श्रीनगर में पाँच आर्य समाजें है सबके अपने अपने विद्यालय भी हैं।

आर्यसमाज की सभी सस्थाओ में हिन्दी माध्यम से पढ़ाई होती है।

1—आर्यसमाज हजूरीबाग प्रसिद्ध है। कुछ समय पूर्व साम्प्रदायिक दगाकर यहाँ पाकिस्तानी समर्थक मुसलमानों और सरदारो का रूप बनाये आतकवादियों ने घाटी से हिन्दुओं को भगाने का षड्यन्त्र रचाया श्रीनगर और अनन्त नाग के अनेको मन्दिरों को जलाया तथा तोडा गया, लूट मार मचाकर अल्प सख्यकों को सताया गया। विशेष रूप से हजूरी बाग आर्यसमाज पर उनकी क्रूर दृष्टि थी, क्योंकि समय समय पर आतकवादियों के भय से लोग इसमे आकर अपने प्राण बचाते थे। अत. इस आर्य समाज को जलाने का काम वहीं के पुलिस कर्मियों को साथ लेकर किया गया था। शास्त्री जी का परिवार अग्नि की लपेट में आ गया। उनका अमूल्य पुस्तकालय भस्म हो गया। बहुमूल्य वस्तुयें तथा सोने के अलकार लूट लिये गये। शास्त्री जी घर पर नहीं थे। उनके पुत्र ने साहस किया और किवाड़ तोड़कर पीछे से निकल गये थे। अमूल्य साहित्य भस्म हो गया। इस समाज के तत्वावधान में आर्य कन्या हायर सैकण्डरी स्कूल चल रहा है। 50,60 कमरे तथा दो महाकक्ष [illegible] 1989 में पुन [illegible]

2—आर्यसमाज वजीरबाग इसका भी अपना भवन तथा कन्या विद्यालय है।

3—आर्यसमाज करण नगर मन्दिर के साथ कन्या पाठशाला चल रही है।

4—आर्यसमाज रैनावारी मुस्लिम बाहुल्य बस्ती मे है। शिक्षा की दृष्टि से इसका अपना महत्त्व है। इसमे डी०ए०वी० स्कूल चल रहा है। हिन्दी माध्यम से सभी विषय पढाये जाते हैं।

5—आर्यसमाज महाराज गज मे निरन्तर सत्सग होते रहते हैं। महिलाओ का विशेष अधिकार रहता है। आर्य सन्यासियो और प्रचारको का विशेष सम्मान होता है। शिक्षा की दृष्टि से यहाँ कक्षा 8 तक ही विद्यालय है। हिन्दी, सस्कृत का प्रचार सभी विद्यालयो मे है।

1—जम्मू मे आर्यसमाज का विशेष प्रचार है। यहा 13 आर्य समाजें हैं। जम्मू-तवी में 6 समाजे हैं।

2—पुरानी मण्डी आर्यसमाज सबसे पुरानी है। यहाँ भी सभी आर्यसमाजो मे शिक्षण सस्थायें हैं। साप्ताहिक, कहीं-कहीं दैनिक सत्सग होता है। जम्मू-कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा का एक भवन-दयानन्द मार्ग जम्मू मे है। उससे कुछ दूर ढाल पर रघुनाथ जी का भव्य मन्दिर है। इसमें एक कक्ष वेद मदिर के लिये है, जिसमे नियमित रूप से वेद पाठ होता है।

3—ऊधमपुर—जम्मू से श्रीनगर जाते समय 40 किलोमीटर दूरी पर यह स्थान है। वैष्णव देवी का क्षेत्र है। यहा से कटरा तक बस चलती है। यहाँ से यात्री पैदल चढ़ाई पार कर वैष्णवेवी के मन्दिर तक जाते हैं। ऊधमपुर में आर्यसमाज का एक वानप्रस्थ आश्रम है। गर्मियो मे कुछ वानप्रस्थी पजाब और उत्तरप्रदेश से आकर यहाँ रहते हैं। जब कश्मीर सरकार ने गीता और सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, तब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर लगभग 3000 सत्याग्रही यहाँ एकत्रित हो गये थे। जैसे हैदराबाद निजाम ने आर्य सत्याग्रहियों के सामने घुटने टेक दिये थे—उसी प्रकार यहाँ भी फारुखी-सरकार को आर्य समाज के सामने झुकना पडा था।

4—रणबीर सिंह पुरा यह आर्यसमाज स्यालकोट की ओर है। सीमा प्रान्त होने तथा सैनिक शिविर के नाते बहुत जागृत समाज है। इसे प्रत्यक समय सावधान रहना पडता है।

5—अखनूर—सैनिक क्षेत्र होने के कारण विशेष कर्मठता से आर्यसमाज का प्रचार चलता है। वैदिक शिक्षा प्रचार के लिए विद्यालय भी चलाता है।

6—राजौरी—आर्यसमाज राजौरी पुञ्छ में प्रचार के साथ साथ शिक्षण सस्था भी चल रही है।

7—साम्बा—साम्बा आर्य समाज मन्दिर प्रचार कार्य मे तत्पर है। आर्य समाज की ओर से एक विद्यालय भी चल रहा है।

8—कठुआ—यह ऊधमपुर से आगे बैष्ण पार करने पर आता है। रमणीक स्थान है। यहाँ आर्यसमाज मन्दिर के साथ साथ विद्यालय भी चल रहा है।

इस प्रकार जम्मू-कश्मीर मे लगभग 45 आर्यसमाजें महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

ईसाइयों के कुचक्र मे फँसे पजाब को स्वामी दयानन्द ने 1877 के पश्चात् आकर बचाया। पजाब केसरी लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे देश भक्त राष्ट्र को दिये। वही पजाब आज उग्रवादियों का खिलौना बन रक्त रंजित हो रहा है। भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् आतकवाद के हाथों निरीह लोगों को क्यों सौंपा गया ? भारतवर्ष को दुर्बल बनाने के लिये तथा उसको और बलहीन बनाने का पजाब तो एक बहाना था—वहाँ से कश्मीर को पूर्ण पाकिस्तान बनाना और वहा अल्पसख्यकों को न रहने देना मुख्य लक्ष्य था। आतंकवादी दोनों राज्यो को पृथक करने की धुन में हैं।

अनन्त नाग एक ऐतिहासिक नगर कश्मीर मे है। इसमें अनेकों मन्दिर तथा प्राचीन स्थापत्य के अवशेष हैं। पाकिस्तान समर्थकों ने इसका नाम इस्लामाबाद रखा हुआ है। वह वासी अनन्त नाग का नाम नहीं लेते केवल इस्लामाबाद कहते हैं। अनन्तनाग से 15 कि मी दूर "मटन" ग्राम का हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। यहाँ कश्मीरी पण्डितों का प्रभाव है। [illegible] काल मे सब यहीं एकत्रित हो जाते हैं। मार्तण्ड नाम से मटन बन गया है। मटन की चोटी पर मार्तण्ड-मन्दिर के अवशेष अभी भी हैं। इसको [illegible] मुक्तापीड ने 724 से 762 में बनवाया था।

शेष 6 पृष्ठ पर

गतांक से आगे—

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियाँ

धर्म निरपेक्षता

भारत के राजनीतिक नेताओ का कहना है कि हम धर्मनिरपेक्ष हैं, भारत धर्मनिरपेक्ष है, यह नितान्त मिथ्या कथन है। न तो भारत के नेता ही धर्मनिरपेक्ष हैं और न इन लोगों की परिभाषानुसार भारत ही धर्मनिरपेक्ष है। भारत तो वर्तमान स्थिति मे नितान्त "मुस्लिम राष्ट्र" है या कम से कम वह भूभाग तो अवश्य है, जिसे भारत के यह तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता अपनी धर्मनिरपेक्षता की चादर मे लिपटकर अपनी राजनीतिक महत्वाकाक्षा की पूर्ति के लिये यहा रह रहे मुसलमानों के साथ मिलकर दारुल इस्लाम मे परिवर्तित कर देने के लिए प्रयत्नशील है। कारण स्पष्ट है कि हिन्दुओं को मूर्ख बनाने के लिए यह लोग ससार मे अपनी उदारता का ढोल पीटने के लिए स्वय को और भारत को धर्मनिरपेक्ष भले ही कहते हैं किन्तु पक्ष प्रत्येक मूल्य पर मुसलमानो का ही लेते हैं।

गाधी जी तो भारत मे बसे मुसलमानों को ही नहीं अपितु पाकिस्तान को प्रसन्न करने के लिए भी भारत की अस्मिता को न केवल स्वय ठुकराते रहे अपितु अपने जीवन के अन्तिम क्षणो तक पाकिस्तान के चरणो मे डालते रहे और इसका प्रमाण है अरबो रुपया भारत का बटवारे के समय का पाकिस्तान पर शेष रहते भी आमरण अनशन करके पचपन करोड राशि का ड्राफ्ट भारत से पाकिस्तान को और दिला दिया। इन्हीं महात्मा जी की अदूरदर्शिता के परिणामस्वरूप पाकिस्तान मे लाखों हिन्दुओं की हत्या हुई। पता नहीं कितने शिशुओं और महिलाओ को बलात् मुसलमान बना लिया गया और कितनी महिलाओं के सतीत्व भग हुए और अकेले पाकिस्तान के रावलपिण्डी नगर की सडको पर ही तेरह सहस्त्र हिन्दू महिलाओं को निर्वस्त्र करके उनका जलूस निकाला गया, परन्तु धर्मनिरपेक्षता के इन पुजारियो को लेशमात्र भी लज्जा न आयी। न महात्मा जी आमरण अनशन करने रावलपिण्डी गये और न एक दिन की भूख हडताल करके उन्होने अपनी मुस्लिम-तुष्टीकरण की नीति पर पश्चाताप के आसू बहाये।

फिर उसके बाद ..

पहले तो गाधी जी मुख्य और परम शिष्य श्री जवाहरलाल नेहरू कश्मीर के भारत मे विलय को तैयार नही थे तथा विलय की कश्मीर के तात्कालिक महाराजा हरिसिंह द्वारा प्रेषित दस्तावेज को लेकर आये कश्मीर राज्य के तात्कालीन प्रधानमन्त्री (दीवान) श्री मेहरचन्द महाजन को अपमानित कर अपने निवास से बाहर निकाल दिया था जब श्री महाजन यह कहकर चल दिए कि 'कश्मीर का विलय भारत मे नही तो पाकिस्तान मे होगा, अब मेरा हेलीकॉप्टर दिल्ली से श्रीनगर नही, कराची (पाकिस्तान की तात्कालिक राजधानी) जायगा। मैं श्रीनगर पर बम्बार्डमैण्ट होकर उसे बरबाद नही होने दूगा। तब शेख अब्दुल्ला के कहने पर—जो उस समय वहा उपस्थित था—नेहरू जी विलय को तैयार हुए। अब्दुल्ला ने ही दौडकर महाजन को रोका था। और फिर उसके बाद——

कश्मीर का विलय भारत मे किया तो, किन्तु धारा 370 जोड़कर कश्मीर की विशेष स्थिति बनाकर शेख अब्दुला को मुख्यमन्त्री नहीं, प्रधानमन्त्री बनाकर उसका भारत से पृथक ध्वज, पृथक विधान और पृथक प्रधान (सदर-ए-रियासत) बनाकर तथा महाराजा हरिसिंह को उनकी राष्ट्रभक्ति भारत मे कश्मीर के विलय की निष्ठा के दण्ड स्वरूप उनके कश्मीर आने पर प्रतिबन्ध लगाकर। भारत की सेनाओं ने पाकिस्तानी सेनाओं को खदेड मारकर भगा दिया और अन्तिम मोर्चा गिलगित का लेश शेष था, तब कश्मीर का प्रश्न सयुक्त राष्ट्र परिषद् में ले जाकर तुरन्त युद्धबन्दी के आदेश कर कश्मीर के तिहाई भाग को पाकिस्तान के हाथों मे सौंप दिया कश्मीर का विलय भारत मे हो चुका था, फिर उसे सयुक्त राष्ट्र परिषद् में ले जाने की क्या आवश्यकता थी? यदि युद्धबन्दी की घोषणा शीघ्रता मे न की गई होती तो कश्मीर के जिस भाग पर अब तक पाकिस्तान का अधिकार है, वह भी तभी पाकिस्तानियों से मुक्त करा लिया जाता।

इस समय कश्मीर में जो कुछ हो रहा है, वह न होता यदि कश्मीर की पृथक स्थिति बनाये रखने के लिए धारा-370 सविधान में न जोड दी गई होती। इसी धारा-370 के परिणामस्वरूप बने नागालैण्ड और मिजोरम पजाब समस्या भी इसी धारा की देन है। भारत मे कभी झारखण्ड की मांग उठती है, तो कहीं गोरखालैण्ड की। कहीं बोडो आन्दोलन खडा हो रहा है, तो कहीं उत्तराखण्ड—यह सब इसी धारा के अस्तित्व का परिणाम है, सच तो यह है कि यह धारा पृथक्करण की जननी है किन्तु भारत के एक के बाद एक आने वाले सभी राजनीतिक नेता इसे अवश्य बनाये रखना चाहते हैं। पता नहीं इससे राष्ट्र की किस समस्या का हल करना चाहते हैं? इससे तो भारतीय शासनारूढ नेताओ का मूर्खता ही प्रमाणित होती है। यहाँ के नेता अपने पास तो इतनी बुद्धि रखते नही किन्तु दुराग्रही स्वभाव के कारण अन्य किसी की मानने को तैयार भी नही होते, तथ्य यह है कि यह लोग राजनीतिक तथा प्रशासनिक रूप से तो नितान्त अयोग्य है, साथ ही अपने अहकारी स्वभाव के कारण दुराग्रहपूर्वक इस धारा को सविधान से नहीं हटा रहे। भारत के इन नेताओं को राष्ट्रीय एकता की लेश मात्र भी चिन्ता नही। यह लोग घडियाली आसू बहाते हैं और अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की समाज के दो सकूल लोकैषणा तथा भोग-विलास पूरे करने मे लगे हैं।

पाठकगण ध्यान दें कि भारत मे कश्मीर का निष्ठापूर्वक विलय करने वाले महाराजा हरीसिंह को तो कश्मीर से बाहर बम्बई में ही अपना जीवन बिताने और समाप्त करने का बाध्य कर दिया, किन्तु हैदराबाद के तात्कालिक निरकुश शासक आसफशाह को जिसने खुलकर देशद्रोह का अवलम्बन लिया और शस्त्र-सज्जा के साथ अपने रजाकार सैनिको को भारतीय सेना से युद्ध के लिए मैदान मे उतारा, जिसने तीन दिन जमकर भारतीय सैन्य से लडाई लडी, उसी को हैदराबाद का राजप्रमुख बनाया। जिसे आजीवन जेल के सीखचों मे बन्द रखा जाना चाहिए था उसे राजप्रमुख के पद पर शोभायमान कर पुरस्कृत किया और जिस महाराजा हरिसिंह को भारत का सम्मानित राष्ट्रपति पद देना चाहिये था उसे उसकी जन्मभूमि कश्मीर के दर्शनों तक लिये तरसते हुए तडप तडपकर बम्बई मे प्राण छोडने को बाध्य कर दिया।

चाहे जवाहरलाल नेहरू हो या उनकी पुत्री इन्दिरा गाधी अथवा अन्य कोई—है सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे। न्याय नैतिकता को दूर फेंककर और धर्मनिरपेक्षता की शपथ ले-लेकर अपना मुस्लिम तुष्टिकरण की ओर साम्प्रदायिकता तथा राष्ट्रघातिनी पगडण्डी पर ही यह सब चलते हैं। मुस्लिम लीग से बार-बार समझौते करना और प्रत्येक पग पर राष्ट्रद्रोही मुसलमानों को महत्त्व प्रदान कर पूरे मुसलमान समुदाय को राष्ट्रद्रोह के लिए प्रोत्साहित करना इन नेताओ का मुख्य कर्तव्य बना हुआ है। नेहरू जी के दौहित्र और इन्द्रा जी के पुत्र श्री राजीव जी प्रधानमन्त्री तो विदेशो मे जाकर "जिस दिन भारत के मुसलमान बगावत पर उतारू होकर सडको पर निकल आयेंगे, भारत की सेनायें उनका मुकाबला नही कर सकती।' शहाबुद्दीन का विदेशो मे दिया गया यह बयान मा के दूध की भाति गटागट पी गये। यदि कोई राष्ट्रभक्त वीर पुरुष उस समय प्रधानमन्त्री होता तो सैयद शहाबुद्दीन का परमिट स्थगित करा उसे तुरन्त भारत बुलाकर जेल के सीखचो म बन्द करता और उस पर देशद्रोह का अभियोग चलाकर उसे जीवन भर के लिए कारागार वासी बना देता।

दूसरा राष्ट्रद्रोही मौलाना ओबेदुल्ला खा आजमी—जिसने कहा था कि—हम किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं। हाईकोर्ट तो दूर की बात है, सुप्रीम कोर्ट भी अगर "मुस्लिम पर्सनल लॉ" को चैलेन्ज करेगी तो हम सुप्रीम कोर्ट का भी हर फैसला जूते की नोक पर रखेंगे।" भारत के तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने अपनी साम्प्रदायिक और राष्ट्रघातिनी मनोवृत्ति का परिचय उस दिन दिया, जब भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपने पूर्ण बहुमत के बल पर ससद मे निश्चय करा के राष्ट्र के स्वाभिमान को एक राष्ट्रद्रोही के जूते की नोक पर रखकर उडवा दिया। जब कि ओबेदुल्ला खां को उसके इस राष्ट्रीय अपमान से भरे और राष्ट्रद्रोह पूर्ण बयान पर जेल की हवा खिलानी चाहिये थी।

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद उ०प्र०

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला, जिला नैनीताल, उ० प्र० मे 18 जून से 24 जून तक योग शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर मे अनेक महात्मा, विद्वान तथा योगाचार्य पधार रहे हैं।

साधक अपने पहुँचने की सूचना आश्रम मे भेजें।

श्री क्षितीश जी वेदालंकार

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित

20 मई, रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान शताब्दी-समापन समारोह के अवसर पर संस्कृत विद्या सभा, जयपुर की ओर से प्रख्यात पत्रकार, निर्भीक वक्ता, स्वतन्त्रता सेनानी प० क्षितीश वेदालंकार को आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत ने श्री क्षितीश जी को 1000/— रुपये नकद तथा जोधपुरी साफे का मोर भेंट किया।

प० क्षितीश वेदालंकार की महान सामाजिक सेवाओं को उद्धृत करते हुए सम्मान-पत्र भेंट किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सत्यव्रत सामवेदी ने की।

अब से पूर्व यह पुरस्कार गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय के नाम से दिया जाता रहा है इस बार भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित था।

श्री हरीबगस बसन्ती देवी लाहोटी

होम्योपैथिक चेरिटेबल औषधालय

श्री हरी बगस बसन्ती देवी लाहोटी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा नवनिर्मित होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन आगामी रविवार 10 जून को श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कर कमलों द्वारा सम्पन्न किया जाएगा।

इस अवसर पर औषधालय भवन, गांधी चौक, सुजान गढ़, राजस्थान में होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया है, जिसमें नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कॉलिज और अस्पताल के प्रिंसिपल डा० वी० के० गुप्ता मुख्य वक्ता होंगे।

श्री रामाज्ञा 'आर्यपुत्र' अस्वस्थ

युवा आर्य नेता एवं सार्वदेशिक आर्य वीर दल (पूर्वी उ० प्र०) के बौद्धिकाध्यक्ष श्री रामाज्ञा जी 'आर्यपुत्र' आर्यवीर दल तथा आर्यसमाज के प्रचारार्थ लगातार यात्राओं के कारण गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गये हैं। आशा है, ईश्वर कृपा से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर पुनः प्रचार कार्य में जुट गये।

—सम्पादक

पी. डी. चौधरी दिवंगत

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी के अधिष्ठाता एवं डी० ए० वी० शिक्षण संस्थान फिरोजपुर के निदेशक तथा भूतपूर्व प्रिंसिपल श्री पी० डी० चौधरी का असामयिक निधन गत 26 मई को हो गया है।

प्रिंसिपल चौधरी ने सेवा निवृत्त होने के पश्चात् अंतिम क्षणों तक आर्य अनाथालय तथा डी० ए० वी० संस्थाओं की सेवा कर इन संस्थाओं को उच्च शिखर तक पहुँचाने में विशेष योगदान दिया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना करता है।

विश्वम्भर प्रसाद शर्मा दिवंगत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य तथा कर्म० आर्य कार्यकर्ता पं० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा का निधन 16 मई को भोपाल में अपने सुपुत्र डा० कांति कुमार के निवास पर हो गया है।

श्री शर्मा लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान एवं ख्याति प्राप्त लेखक थे। आपकी भारतीय संस्कृति में अगाध निष्ठा थी। आप वैदिक धर्म प्रचारक, देशभक्त, गौसेवक और समाज सेवी थे। आपके निधन से आर्य जगत् की अपार क्षति हुई है।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है।

गुरुकुल प्रभात आश्रम

भोला झाल, मेरठ (उ० प्र०)

प्रवेशारम्भ

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश हेतु 21 जून को प्रवेश परीक्षा का आयोजन हो रहा है। यह परीक्षा प्रातः 9 बजे लिखित तथा मध्याह्न 2 बजे मौखिक इन दो चरणों में पूर्ण होगी। परीक्षार्थी में पञ्चम कक्षा उत्तीर्ण 10 से 11 वर्षीय प्रतिभाशाली बालक ही भाग ले सकेंगे।

ब्रह्मचारी पुनीत सम्मानित

22 मई को आर्यप्रतिनिधि सभा आश्रम के प्रधान डा० नारायण दास जी गुरुकुल प्रभात आश्रम में पधारे और वहां की गतिविधियों को देखकर सराहा। इस अवसर पर आश्रम के ब्रह्मचारी पुनीत द्वारा सात सौ श्लोकों से युक्त गीता का कंठस्थीकरण सुनकर डा० नारायण दास अति प्रसन्न हुए तथा उन्होंने अपनी ओर से 151 रुपयों का नकद पुरस्कार ब्रह्मचारी को उत्साहवर्धनार्थ प्रदान किया।

आश्रम की कुल परम्परा का यह द्वितीय ब्रह्मचारी है, जिसने सम्पूर्ण गीता स्मरण की हुई है।

वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली

प्रधान—श्री सरदारी लाल शर्मा
मन्त्री—श्री त्रिलोकी नारायण मिश्र
कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश आहूजा

आर्यसमाज कलकत्ता

(19-विधान सारणी, कलकत्ता-6)
प्रधान—श्री दलिया रामगुप्त
मन्त्री—श्री सत्यपाल वेदालंकार
कोषाध्यक्ष—श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद जायसवाल

आर्यसमाज मुलुण्ड कालनी

(आर्यसमाज गली, हिन्दुस्तान चौक, बम्बई-82)
प्रधान—श्री मेघराज गुप्त
मन्त्री—श्री शिवदत्त सिंह
कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली

प्रधान—श्री महेन्द्र प्रताप
मन्त्री—श्री विद्यासागर कालड़ा
कोषाध्यक्ष—श्री हरबंस लाल

आर्यसमाज लुधियाना

(महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना)
प्रधान—ज्ञानी गुरदयाल सिंह आर्य
मन्त्री—श्री रोशन लाल शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री बलदेव राज सेठी

(पृष्ठ 4 का शेष)

यह श्रीनगर की प्राचीन वास्तुकला का अनुपम है। यह देवरी पत्थरों का बना है। बड़े-बड़े चौकोर शिलायें चारों ओर बिखरी पड़ी हैं। उन पर नाना प्रकार के देवताओं के चित्र बने हैं। तत्कालीन पानी के बड़े बड़े घड़े आदी में बन्द कर सुरक्षित हैं। इसको पाण्डवों का मन्दिर भी कहते हैं। एक लेख भी लिखा है जो देवनागरी में तो है किन्तु स्पष्ट पढ़ा नहीं जाता। जिस गांव में यह है वह रणवीर पुरा नाम से प्रसिद्ध है। इसमें सरकारों का आधिपत्य है। यहाँ से 10,12 कि.मी. दूरी पर नाग बस्ती है। इसमें स्वामी विवेकानन्द केन्द्र है। अनन्तनाग प्रसिद्ध स्थान है। जो अनन्तनाग जिले में पड़ता है। कन्याकुमारी से कश्मीर को अखिल करने वाली चोटी है। बड़ा रमणीक-एकान्त शान्त वातावरण योग साधना का स्थल और कहाँ मिलेगा। गत जून में मैं वहां था—आगे न जाने उसकी क्या दशा हो गई होगी।

देश दलों से यही आग्रह है कि इस परीक्षा की घड़ी में सावधान रहने की आवश्यकता है। विशेष रूप से आर्यसमाज को भारतीय संस्कृति एवं मानव-संस्कृति की रक्षा के लिये सरकार को सावधान करना चाहिये। कहीं ऐसा न हो जाय कि चाणक्य की "छठे साठ्य समाचरेत्" की उपेक्षा राजनीति का दिवाला न निकाल बैठे।

आतंकवाद को समाप्त करने के लिये तुष्टीकरण की नीति को छोड़कर उसकी जड़ को समाप्त कर दें। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को मुक्त कराया जाय तथा 370 धारा भी समाप्त किया जाय। तभी पंजाब और कश्मीर बचेंगे।

साहित्य समीक्षा—

चतुर्वेद गंगा लहरी

आर्य जगत के सुधी विद्वान विद्यामार्तण्ड डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पूर्व कुलपति एवं कुलाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा राज्य सभा के भूतपूर्व मनोनीत सदस्य से सम्पूर्ण आर्य जगत् भली भांति परिचित है। संसार भर के आर्य पत्रों एवं पत्रिकाओं में उनके लेख समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। उन्होंने 50 से भी अधिक ग्रन्थ आर्य जनता को दिए हैं। समाज शास्त्र एवं मनोविज्ञान के ग्रन्थों पर उन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक मिले हैं। 'वैदिक विचार धारा का वैज्ञानिक आधार' ग्रन्थ पर उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किया गया था। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने माननीय विद्वान पंडित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से प्रेरणा करके उनके सम्बन्ध में एक अमूल्य अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया था।

प्रस्तुत ग्रन्थ उनके अपने पूर्व ग्रन्थ 'ग्लिम्प्सेज ऑफ वेदाज' का संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण है। पहले ग्रन्थ केवल अंग्रेजी में था। इस ग्रन्थ को हिन्दी भाषा भाषियों को भी ध्यान में रखकर लिखा गया है। इसमें चारों वेदों से लगभग 410 वेदमन्त्रों को चुना गया है तथा उनकी अंग्रेजी और हिन्दी में समकालीन संदर्भों में विद्वतापूर्ण व्याख्या की गई है। इस ग्रन्थ में वेदविषयक दस मौलिक लेख भी समाविष्ट किए गए हैं। इनमें से कुछ लेख पाठक पहले भी पढ़ चुके हैं और इनसे अभिभूत हुए हैं। अब सभी लेख एक साथ संकलित कर दिए गए हैं। आदरणीय पंडितजी इस आयु में भी वैदिक धर्म एवं आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं, यह हमारा परम सौभाग्य है।

मूलचन्द गुप्त, सम्पादक

(चतुर्वेद गंगा लहरी—डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-प्रकाशक-विजयकृष्ण लखनपाल डब्ल्यू-77-ए, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली 48, मूल्य-95 00)

आर्यवीर दल की स्थापना

देश, जाति एवं धर्म की रक्षा विवेकपूर्ण एवं साहसपूर्ण निर्णय लेने वाले व्यक्ति ही कर सकते हैं। जो ब्रह्मज्ञान एवं क्षात्र धर्म का विवेक रखते हो ऐसे युवकों का निर्णय करना ही आर्य वीर दल का उद्देश्य है। आर्य संस्कृति वेदावृत है तथा वेद मानव मात्र के कल्याण के पोषक हैं। ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम सेक्टर 9 मे आर्यवीर दल स्थापना समारोह के अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहे इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान श्री हरबंसलाल कोहली, आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री प्रियतम दास रसवन्त ने विस्तार से आर्यवीरो की कार्य शैली को रेखांकित किया। संस्थापक श्री राजेन्द्र देव आर्य, प्रबन्धक श्री विजय तुरा तथा संयोजक श्री फूलसिंह जी आर्य ने अपने कार्य क्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने युवा वीरो को शपथ दिलाई तथा आशीर्वाद दिया।

(पृष्ठ 3 का शेष)

सच्चे तथा स्वामीजी के मिशन के प्रति निष्ठावान थे। 17 मार्च, 1883 को मुन्शी जी के नाम लिखे पत्र में स्वामीजी ने उन्हें 'उत्तम पुरुष' कहा है। सत्यार्थप्रकाश के मुद्रण के समय जब मुन्शीजी अनेक महत्त्वपूर्ण संशोधनीय बातों की ओर स्वामीजी का ध्यान आकृष्ट करते थे तो स्वामीजी उन्हें स्वयं ही यथोचित संशोधन और परिवर्तन करने के लिये लिख देते थे। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण में जो पाद टिप्पणियां दी गई हैं वे मुन्शी समर्थदान द्वारा ही लिखी गई हैं।

वैदिक यन्त्रालय की सेवा से मुक्त होकर मुन्शीजी अजमेर आ गये और 1945 वि० में उन्होंने राजस्थान समाचार नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। राजस्थान के कई देशी राज्यों के नरेश मुन्शीजी का बड़ा आदर करते थे और अनेक मामलों में इनसे परामर्श भी लेते थे। 1907 ई० में इन्हें अपने पत्र का प्रकाशन आर्थिक कठिनाइयों से बन्द करना पड़ा। मुन्शी समर्थदान ने आर्य समाज परिचय तथा धर्मरक्षा नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं। जीवन के अन्तिम वर्षों में ये वैद्यक से जीविका निर्वाह करने लगे थे। 17 जून, 1914 को इनका निधन हो गया। ०

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P.S O on 7, 8-6-1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

धर्म निरपेक्ष सरकार का एक और कारनामा, धर्म परिवर्तन के बाद भी सुविधायें मिलेंगी

दिल्ली 30 मई 90

नव बौद्धो को अनुसूचित जातियो के समान आरक्षण तथा अन्य सुविधायें देने सबधी बिल पास होने के बाद केन्द्रीय श्रम मन्त्री श्री पासवान ने कहा कि यही सुविधायें हिन्दुओ से ईसाई और मुसलमान बने लोगो को भी देने के लिए सरकार विचार करेगी।

इस-वक्तव्य पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा पूर्व सासद श्री आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि देश मे पहले ही साम्प्रदायिकता सीमायें पार कर चुकी है और इस वक्तव्य से श्री पासवान ने एक नई साम्प्रदायिकता को जन्म देने की कोशिश की है। वी०पी० सिंह सरकार का यह बड़ा भारी षड्यन्त्र है, जिससे बहुत जल्दी हिन्दू जाति देश मे अल्पसख्यक बन जायगी। स्वामी जी ने खेद व्यक्त किया कि भारतीय जनता पार्टी भी गैर जिम्मेदार नेताओ द्वारा चलाई जाने वाली राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से अपना समर्थन वापस क्यों नही लेती?

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने वक्तव्य मे कहा कि अनुसूचित जातियो को मिलने वाला आरक्षण केवल हिन्दू समाज की व्यवस्था का अग है। इस्लाम और ईसाइयत मे जात-पात की सामाजिक व्यवस्था नहीं है। जब कोई व्यक्ति हिन्दू धर्म से इस्लाम या ईसाई धर्म मे प्रवेश करता है तो वह अनुसूचित जाति का कैसे रह सकता है?

स्वामी जी ने सुप्रीम कोर्ट के उन फैसलो का उल्लेख किया जिनमें यह कहा गया है कि धर्मान्तरण के बाद पुरानी जाति की सुविधाए नहीं मिल सकती।

सरकार को चेतावनी देते हुए स्वामी जी ने घोषणा की कि यदि इस तरह का कोई कदम उसने उठाया तो आर्य समाज राष्ट्रव्यापी और उग्र आंदोलन करेगी।

आर्य समाज बिन्दापुर

A-38/H अनूप नगर (उत्तम नगर) नई दिल्ली-59

प्रधान—श्री हरदेव लाल
मन्त्री—श्री प० अशोक कुमार
कोषाध्यक्ष—श्री चौ० विनय सिंह

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तरप्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
टूंगल आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी, आई०के० प्रिंटर्स मोतीपुर दिल्ली-५१ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ३४ | रविवार १७ जून १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश में ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

४० बनवासी युवकों को
वैदिक धर्म का प्रशिक्षण

नई दिल्ली 10, जून "धर्मान्तरण रोको—देश बचाओ" कार्यक्रम के अंतर्गत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 40 बनवासी युवको का 25 दिन से चल रहे प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह आज आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली म सम्पन्न हुआ। विगत मास इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सार्वदेशिक सभा ने उड़ीसा, मध्यप्रदेश आदि राज्यो के आदिवासी क्षेत्रो मे हिन्दू धर्म से ईसाई बने सात हजार भाइयों को वैदिक-धर्म मे दीक्षित किया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सार्वदेशिक सभा के निर्देशन मे अनेक वर्षों से शुद्धि-कार्यक्रम निरंतर चल रहा है और आर्यसमाज के हृदय मे जो तड़प है उसी के कारण वह आदिवासी व दूरदराज के क्षेत्रों मे कार्य कर रहा है। डा० धर्मपाल ने पेट्रोडालर के बल पर हो रहे धर्म-परिवर्तन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाजियो को तन, मन, धन से सक्रिय होकर इस दिशा मे और काम करना चाहिए।

दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि धर्म-परिवर्तन के कारण देश की एकता व अखण्डता को गम्भीर खतरा पैदा हो गया है। आवश्यकता है, कि बलात-धर्म-परिवर्तन को रोकने के लिए सरकार तत्काल कानून बनाये। उन्होंने याद दिलाया कि सन 1977 मे पूर्व सासद श्री ओमप्रकाश त्यागी ने लोकसभा मे बलात-धर्मपरिवर्तन रोकने के बारे मे एक प्रस्ताव पेश किया था परन्तु वह व्यापक समर्थन न मिलने के कारण स्वीकार नही हो सका था आज उसी बिल को लागू किये जाने की आवश्यक है।

प्रख्यात् पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार एव सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आदि सभी वक्ताओ के उदगारो का मूल स्वर यही था कि आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसी राष्ट्रीय सस्था है जो निःस्वार्थ भाव से देश की एकता एव अखण्ता को बनाये रखने के लिए धर्म परिवर्तन पर रोक लगवाना चाहती है तथा लोभ-लालच के बल पर विधर्मी बने भाइयो को पुनः वैदिक धर्म मे दीक्षित करने के लिए देश के विभिन्न भागो मे सक्रिय होकर शुद्धि-अभियान चला रही है।

उल्लेखनीय है कि इन चालीस आदिवासी युवको को आर्य समाज रानी बाग नई दिल्ली मे सध्याहवन, आर्यसमाज के मूलभूत सिद्धान्त आदि के बारे मे गहन प्रशिक्षण श्री प० पृथ्वीराज जी शास्त्री ने दिया।

०-०

श्री वीरेन्द्र वर्मा पंजाब के राज्यपाल बने

नई दिल्ली 8 जून। राज्यसभा के सदस्य श्री वीरेन्द्र वर्मा की आतकवाद की आग से झुलस रहे पजाब के राज्यपाल पद पर नियुक्ति की घोषणा से पजाब के राज्यपाल की खोज का महत्वपूर्ण कार्य पूरा हो गया है। श्री वर्मा को श्री निर्मल कुमार मुखर्जी के स्थान पर भेजा गया है।

श्री वर्मा पजाब के राज्यपाल के साथ साथ चडीगढ के प्रशासक भी होंगे। आपकी नियुक्ति से पजाब के वर्तमान माहौल मे नए प्रयोग का दौरा प्रारम्भ होगा—ऐसी आशायें लगायी जा रही हैं। राजनैतिक क्षेत्रो मे यह महसूस किया जा रहा था कि पजाब मे राज्यपाल के पद पर प्रशासकीय अनुभव वाला राजनीतिक व्यक्ति ही सफल हो सकता है।

श्री वीरेन्द्र वर्मा पजाब राज्य के 24 वें राज्यपाल होगे तथा राष्ट्रीय मोर्चा सरकार द्वारा नियुक्त वे दूसरे राज्यपाल है।

राज्यपाल मनोनीत किये जाने के बाद उन्होंने कहा कि वे पूरा प्रयास करेंगे कि पजाब मे लोकतान्त्रिक प्रक्रिया बहाल हो। वे वहाँ के लोगों का विश्वास जीतने का पूरा प्रयास करेंगे। और इसके लिये हर सम्भव पहल भी करेंगे। उन्होंने विश्वास पूर्वक कहा कि वह कानून-व्यवस्था को बनाये रखने के लिए प्रशासन को और अधिक चुस्त बनाने का कार्य सबसे पहले करेंगें।

18 सितम्बर 1916 को शामली, जिला मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश मे जन्मे श्री वीरेन्द्र वर्मा एक सम्पन्न कृषक परिवार तथा विख्यात् आर्यसमाजी परिवार से सम्बन्धित है। चौ० चरणसिंह जी के कट्टर समर्थक श्री वर्मा जी उत्तर प्रदेश विधान सभा के 1952 से 1980 तक सदस्य रहे तथा प्रदेश के गृहमन्त्री, कृषि मन्त्री, सहकारिता मन्त्री आदि महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे।

अप्रैल 1984 मे लोकदल की ओर से राज्यसभा में आये और इसी वर्ष अप्रैल में पुनः जनता दल की ओर से राज्यसभा मे आये थे।

श्री वर्मा जी अपने अध्ययन काल से ही खेल-कूद मे विशेष रुचि लेते रहे हैं। भारतीय शैली की कुश्तियो के उत्थान मे आपका महत्त्वपूर्ण योगदान है। राष्ट्रीय स्तर का कुश्ती दगल आपके निर्देशन मे पिछले तीस वर्षों से शामली मे आयोजित किया जा रहा है।

०-०

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद मनन-

तत्व ज्ञान की गंगोत्री

गायत्री मन्त्र

—स्व० श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

(गतांक से आगे)

प्रकृति से मनुष्य अहर्निश शक्ति प्राप्त करता है। अत साधक की प्रार्थना है अग्निहोत्र की अग्नि मेरी सब भयो से रक्षा करे रात के अंधेरे को दूर करने वाला सूर्य मृत्यु पाश को दूर करे और उदित ऊषा की किरणें मर्यादा मे स्थित पर्वत स्वास्थ्य को बढावें और हजार गुण शक्ति सम्पन्न हुई इन्द्रिया स्व स्व विषय ग्रहण करने की चेष्टा करें। यथा —

अग्नि मा गोप्ता परिपातु विश्वत, उद्यन् सूर्यो नुदता मृत्युपाशान्।
व्युच्छन्ति उषस पर्वता ध्रुवास सहस्र प्राण मयि आयतन्ताम् ॥

(अथर्व० 17।1।30)

मनुष्य को अपनी बुद्धि और प्रज्ञा का गर्व करना अकारण है। क्योकि उसको निमिष मात्र म नही करने की शक्ति प्रकृति मे है। हम विचार करते हैं यह विचार करने की शक्ति हम मे कहा से आई ? अन्न खाने से यह शक्ति प्राप्त होती है। ऋषि कहते हैं —

अन्न वै प्राणिना प्राण ।

प्रश्न यह है कि जिस अन्न से विचार करने की शक्ति प्राप्त हुई वह अन्न कैसे बना ? मनुष्य अनाज उपजाता है यह उसका मिथ्या अभिमान है। अन्न उपजाता है—सूर्य प्रकाश वायु वर्षा और बीज मे निहित जीवन शक्ति और सवर्धन शक्ति एव खाद का समयक योग होने से। हम जो कुछ करते हैं। वह पचमहाभूतो के सह काय से करते हैं। मानव शरीर मे आदान प्रदान की शक्ति है। यदि यह शक्ति न हो तो वह टिका नही रह सकता। कल्पना कीजिये वातावरण म प्राण द्रव्य की कमी हो जाए। नासिका का कार्य श्वासोच्छ्वास का है। नाक जब श्वास न ले सकेगी तब क्या प्राणी जीवित रह सकेगा।

अव्यक्त से सहकार्य का स्रोत सदा व्यक्त की ओर प्रवाहित होता है। फलत व्यक्ति व्यक्त रह सकता है। अव्यक्त पर अवलम्बित व्यक्ति का स्वतन्त्र अस्तित्व सर्वथा नही है। जैसे वृक्ष के बिना शाखा जल के बिना जलबिन्दु सूर्य के बिना प्रकाश चाद के बिना चाँदनी फूल के बिना सुगन्ध वायु के बिना ध्वनि का अस्तित्व नही है इसी प्रकार अव्यक्त से पृथक व्यक्ति का भी कोई अस्तित्व नही है। विज्ञान का यह सिद्धान्त है कि व्यक्ति सदा अव्यक्त के अधीन है।

व्यक्ति अनेक व्यक्तियो के सहकाय से कार्य करता है। वह अनन्त व्यक्तियों से बना समाज है। व्यक्ति उसका केवल एक घटक है। व्यक्ति का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नही है। अत व्यक्ति का सब कार्य समाज के लिए होना चाहिए। साधक का तो यह प्रयत्न रहता है कि उसके श्वास उच्छ्वास का उपयोग भी विश्व के लिए है। अब जो कुछ भी किया जाय समाज के वास्ते किया जाय। समाज के कल्याण और मगल मे ही व्यक्ति का हित समाहित है। यह सत्य ज्ञान और उदात्त सन्देश देने वाला एकमात्र गायत्री मन्त्र है। गायत्री मन्त्र मे कुछ भी नहीं मागा गया है। केवल प्रेरणा करने वाली विशुद्ध बुद्धि की ही माग की गई है।

धियो योन प्रचोदयात्

विश्वभर के इतिहास मे इतना धार्मिक, सम सत्र और सर्वसमावेशक मन्त्र दूसरी नही है ? अत गायत्री मन्त्र की इतनी महिमा है कि यह सर्वश्रेष्ठ मन्त्र शक्तियो से आज तक माना जाता रहा है। क्या यह मान्यता ही इसकी महत्ता बताने के लिए पर्याप्त नहीं है ?

मनुष्य के विनाश का क्या कारण है। उसकी बुद्धि का नाश। बुद्धि का नाश होने पर ही मनुष्य का नाश हो जाता है। गीता मे कहा गया है —

बुद्धिनाशात् प्रणश्यति

जीवन का आधार बुद्धि है और उस बुद्धि को प्राप्त कराने वाला मन्त्र यह गायत्री मन्त्र है, अत सबको इसकी उपासना करनी चाहिए। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पर जो विपत्ती आती है उसका मूल कारण बुद्धि है। यह बुद्धि यदि विकल्प रहित और विवेक युक्त रही, तो अपने आप कल्याण होगा। गायत्री मन्त्र का जप जन्म जन्मान्तर से बुद्धि पर जमा हुए कुसस्कार विमुक्त बुद्धि को जब निखिल बुद्धि का निर्मल प्रकाश चिदाकाश से मिलने लगता है तब प्रसुप्त शक्ति जाग्रत होने लगती है। जप भी एक यज्ञ है, यह विस्मरण न करना चाहिए। क्योंकि गीता मे कहा गया है—

यज्ञाना जप यज्ञोऽस्मि

अत गायत्री मन्त्र का जप करना यज्ञ करने के समान है। यज्ञ समाज के हित के लिए किया जाता है। अपने लिए नही। क्या यह भी बताने की आवश्यकता है ?

गायत्री मन्त्र की एक और विशेषता है। इसमे किसी से भी परम पिता परमात्मा से भी याचना नही की गई है। यह केवल प्रसुप्त पौरुष व सामर्थ्य को जागृत करके पुरुषार्थ करने की प्रेरणा करता है। ईश्वर प्रदत्त शक्ति के बल पर मानव विश्व ब्रह्माण्ड को पादाक्रान्त कर सकता है। यह बात एक मात्र गायत्री मन्त्र ही कर सकता है। स्वपुरुषार्थ से प्राप्त ऐश्वर्य ही सच्चा ऐश्वर्य है। दया और कृपा से प्राप्त ऐश्वर्य के बल पर जीना सम्मानपूर्ण जीवन नही है। दया और कृपा पर जीवन यापन करना विवशता और भीति का सूचक है। यह अवाञ्छनीय जीवन है। परमात्मा द्वारा प्राप्त सर्वशक्ति का यह दुरूपयोग है। परमात्मा को गौरव मागना पसन्द नही है। विषम परिस्थिति से सतत सघर्ष कर उसको मात देने वाले वीराग्रमणी परमात्मा को सब की सहायता भी अपने आप प्राप्त हो जाती है। पुरुषार्थ उद्यम, साहस और शौर्य की मानव के हृदय मे चिर प्रतिष्ठा करने वाला यह गायत्री मन्त्र-सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है।

गायत्री मन्त्र की उपासना से ही मनुष्य यथार्थ ज्ञान प्राप्त करन की बुद्धि प्राप्त करता है। केवल मनोमय कोश ही नही अपितु पचकोश एकमात्र गायत्री की उपासना से विकसित हो सकते हैं। इस मन्त्र की एक और विशेषता है। गायत्री की साधना की इस देश मे लाखो वर्षों से अव्याहत रूप से हो रही है। ऋषियो मुनियो ब्रह्मर्षियों की इस अव्याहत उपासना की सारी परम्परा हिमालय के समान अकेले गायत्री मन्त्र के ही साथ है। अत इस मन्त्र मे विलक्षण शक्ति का निर्माण हो गया है।

यदि एक ही विचार अगणित मनो मे बार बार प्रकट हो तो वह विलक्षण शक्तिमान बन जाता है। यही कारण है कि विधि युक्त गायत्री की उपासना करने से शीघ्र सिद्धि होती है। क्योकि अगणित जनो की आत्म शक्ति इसी गायत्री मन्त्र पर केन्द्रित हुई है।

इस दृष्टि से भी गायत्री का अनन्य असाधारण महत्व है। क्या हम सब भी विभक्त भारत को सयुक्त करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए गायत्री मन्त्र की उपासना न करेंगे ?

अहानि श भवन्तु न श रात्री प्रतिधीयताम्।
श न इन्द्राग्नी भवतामवोभि श न इन्द्रावरुणे रातहव्या ॥

यजु० 36।11

दिन प्रकाश दे निशि विकास

देवनारायण भारद्वाज

यह आयु व्यर्थ नहिं जाये दो नाथ स्वय सदर्शन।
अपने जीवन का क्षण क्षण, पाजाय नाथ उत्कर्षन ॥

आनन्द दिवस मे पाये हम
सब रजनी सुखी वितायें हम,
दिन रात आपके पथ पर प्रभु
बढ़ते ही बढ़ते जायें हम।

दिन प्रकाश दे निशि विकास, हो सुखी सदा सहवर्तन ॥
अपने जीवन का क्षण क्षण पाजाय नाथ उत्कर्षन ॥

हे नाथ आपकी सूर्य विभा
अथवा ये प्रकटी अग्नि प्रभा,
आधार हमारी रक्षा का
सन्मार्ग दिखाये प्रिय प्रतिभा।

हे काल पते रक्षा का प्रिय करो नाथ सम्वर्द्धन।
अपने जीवन का क्षण क्षण, पाजाय नाथ उत्कर्षन ॥

वायु चन्द्र शुचि यज्ञ हव्य से
पूर्ण आयु बल मति भव्य से
हो जगत युद्ध पुरुषार्थ सिद्ध
राज-प्रजा हों सुखी द्रव्य से।

बल विद्या शान्ति बढाओ, जीवन में हो सुख वर्षण।
अपने जीवन का क्षण क्षण, पाजाय नाथ उत्कर्षन ॥

ब्रह्मप्रसाद निवास रैदोपुर नई बस्ती
आजमगढ़ (उ० प्र०)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

पंजाब के राज्यपाल



पजाब व जम्मू कश्मीर के राज्यपालों की जो दुर्गति पिछले कुछ वर्षों से हो रही है, उससे यह माना जा रहा था, कि कोई भी स्वाभीमानी महत्वपूर्ण व्यक्ति पजाब के राज्यपाल के पद पर आना नहीं चाहता।

पिछले दिनों पजाब के राज्यपाल श्री निर्मल कुमार मुखर्जी को हटाने का सकेत मिलते ही, श्री मुखर्जी ने अपना त्यागपत्र सरकार को भेज दिया था, परन्तु तब तक सरकार उनके उत्तराधिकारी का चयन नहीं कर पायी थी। अनेक नाम उभरे जिनमे यशवन्त सिंह, पी के कौल, रवीन्द्र वर्मा, जे एम कुरेशी, एन वसत, श्याम सुन्दर महापात्र पूर्व महालेखाकार श्री टी एन चतुर्वेदी और श्री बी जी. देशमुख के नाम राजनैतिक गलियारो तथा समाचार-पत्रों मे खूब उछाले गये।

अतगोत्वा राज्यपाल के सदस्य राजनीति के पुराने खिलाडी, जनता दल के वरिष्ठ नेता श्री वीरेन्द्र वर्मा की राज्यपाल पद पर नियुक्ति की घोषणा से पजाब के राज्यपाल की खोज का कार्य पूरा हो गया है यद्यपि पिछले डेढ़ दो महीने से श्री वीरेन्द्र वर्मा के नाम की चर्चा थी, परन्तु तब वे वहाँ जाने के अनिच्छुक थे। परन्तु अब उनका कहना है कि—"राष्ट्रीय हित मे मैंने राजनैतिक छोडकर यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार की है।"

राज्यपाल नियुक्त किये जाने के बाद श्री वर्मा ने अनौपचारिक वार्ता में बताया कि वे पजाब में जनसेवक की भूमिका निभायेंगे, राजनीतिज्ञ की नहीं। वे दलगत राजनीति के क्षेत्र से दूर रहकर पजाब के लोगों की सेवा करेगे। उनका कहना है कि वे पजाब मे सभी वर्गों और समुदायों के लोगो का विश्वास जीतने का प्रयास करेंगे। हिन्दू-सिख एकता के लिए रचनात्मक पग उठायेंगे। राजनिवास मे शानशौकत की जिन्दगी के बजाय गांवो मे जायेंगे और वहाँ के लोगो की दिक्कतों को समझकर आवश्यक कदम उठायेंगे।

भारतीय-सस्कृति के कट्टर समर्थक श्री वीरेन्द्र वर्मा पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी शामली के एक विख्यात् किसान परिवार, जो महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन आर्यसमाज की सेवाओ के लिए कई पीढ़ियों से समर्पित रहा है, से सम्बन्धित है। इन पक्तियों का लेखक जब श्री वर्मा जी से उनके शयन कक्ष में मिला, तो कक्ष में वर्मा जी की चारपायी के सिरहाने की ओर दीवार पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक बड़ा सा चित्र, शीशे के फ्रेम में जड़ा हुआ लगा हुआ था। वर्मा जी ने मेरी जिज्ञासा को भांप कर कहा कि आप हमारे पूरे परिवार और विशेषकर हमारे ताऊजी स्व० चौ० मामराज सिंह और पिताजी स्व० श्री० रघुवीर सिंह द्वारा आर्यसमाज के लिए की गई सेवाओं से भली भांति परिचित हैं। मैं यद्यपि पचास वर्षों से सक्रिय राजनीति मे रहा हूँ। फिर भी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के हिन्दू जाति पर किये गये उपकारों को सदैव याद रखने के लिए उनका यह चित्र अपने साथ रखता हूँ।

श्री वर्मा जी कहा उन्होंने अपने राजनैतिक जीवन में कुर्बानी देकर इस भारी जिम्मेवारी को स्वीकार किया है। परन्तु वे भारतीय सस्कृति, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता से किसी प्रकार का समझौता नहीं करेंगे।

आशा है, वर्मा जी पजाब के हिंसामय वातावरण को समाप्त कर वहाँ प्रेम और भाई-चारे का वातावरण तैयार करने मे सफल होंगे।

—मूलचन्द गुप्त

जन्म भूमि श्रीराम की

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सुविख्यात है पुरी अयोध्या, जन्मभूमि श्रीराम की।
यहाँ पर कहाँ बाबरी मस्जिद, आ टपकी इस्लाम की॥

छाया है आतंक देश मे, सियार शेर सम गुरति हैं।
हो रहे अत्याचार प्रबल, अति दीन दुखीजन चिल्लाते हैं॥

राष्ट्र शक्तियां सुस्त हो रही, इस भारत सुखधाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या, जन्मभूमि श्रीराम की॥1॥

यह भारत सरकार राम मन्दिर पर रोक लगाती है।
रामकृष्ण के होकर वशज जरा शर्म नहीं आती है॥

राम मर्यादा पुरुषोत्तम बिन, कीमत नहीं एक छदाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या, जन्मभूमि श्रीराम की।2॥

उखाड फेंकों हृदय भूमि से, अहकार खर पतवार।
स्नेह सूत्र मे बंध जाओ, लो सद्विचार निज हृदयधार॥

राम नाम की ध्वनि गुंजा दो देर नही शुभ काम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या, जन्मभूमि श्रीराम की।3॥

यही समस्या बनी रही तो, फिर भविष्य मे हल क्या होगा।
तन के उजले मन के काले, इनसे कार्य सफल क्या होगा॥

जब सूख गई सारी खेती, फिर बर सात है कौन काम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या, जन्मभूमि श्रीमाम की।4॥

सावधान राम भक्तो, सीधेपन से काम नही चलना।
टेढी उगली किये बिना, हाँडी से घी नही निकलता॥

बढे चलो निर्भय होकर, क्या बाट तको परिणाम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या, जन्मभूमि श्रीराम की॥5॥

हम आर्यवीर ! श्रीराम तुम्हारे सतपथ पर कदम बढायेंगे।
पूरी होगी अभिलाषा, फिर से आर्यावर्त्त बनायेंगे॥

कहे 'स्वरूपानन्द' तुम्हें, सौमन्य राम-घनश्याम की।
सुविख्यात है पुरी अयोध्या, जन्मभूमि श्रीराम की॥6॥

आर्यसमाज फिरोजपुर छावनी

(लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी)

प्रधान—श्री द्वारका नाथ वर्मा
मन्त्री—श्री देवराज दत्त
कोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र छाबड़ा

गतांक से आगे—

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियाँ

इससे पहले—

इससे पहले सन् 1977 मे जनता पार्टी की सरकार बनी, जिसके प्रमुख थे श्री मोरारजी देसाई। उन्होने अपने प्रधानमन्त्रित्व मे अल्पसख्यक आयोग बनाया। प्रश्न होता है इस आयोग की क्या आवश्यकता थी ? सरकारी नेताओ का उत्तर है, अल्पसख्यको के अधिकारो की रक्षा के लिये। अल्पसख्यको के कौन से अधिकारो का हनन हो रहा है ? और कौन हनन कर रहा है ? हाँ यह बात अवश्य है कि उन्हें राष्ट्र की विधि-व्यवस्था पर वरीयता देनी है, उन्हे विधि-व्यवस्था से मुक्त करना है, उन्हें राष्ट्रहित पर कुठाराघात करने राष्ट्रीय कानूनो का उल्लघन करने और राष्ट्र-द्रोह करने और ऐसा सब कुछ करके भी गर्वपूर्वक दनदनाने की छूट देनी है। क्योकि अपनी राजनीतिक महत्त्वाकाक्षा की नमाज के दो सकूअ उन्हे चाहिए—उनकी लोकाषंणा की कामना और भोग विलास की इच्छापूर्ति।

ध्यान रखिये अल्पसख्यक और बहुसख्यक की गणना धार्मिक मान्यताओ के आधार पर ही की गयी है। धार्मिक मान्यताओ को आधार बनाकर आरक्षण और सुविधाये प्रदान करना धर्मनिपेक्षता नहीं अपितु निश्चित और सुनिश्चित रूप से धर्म सापेक्षता, धार्मिक पक्षपात् तथा साम्प्रदायिकता है। इस प्रकार की साम्प्रदायिक और मजहबी सरकार से कभी भी न्याय नैतिकता और राष्ट्रीयता के आचरण की आशा नही की जा सकती।

सन 1980 मे जब भारत की प्रधानमत्री इन्दिरा जी थी। दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी ने बयान दिया कि 'मुसलमान भारत का वफादार नही हो सकता, वह केवल एक देश अरब का वफादार है क्योकि वह इस्लाम के पवित्र पैगम्बर हजरत मोहम्मद का जन्म देश है।' मैने तभी इन्द्रिराजी को पत्र लिखा। प्रधानमन्त्री कार्यालय से मेरी डाक प्राप्ति की सूचना का पत्र मुझे भेजा गया। इससे आगे सरकार की जब कोई अन्य प्रतिक्रिया नही प्रकट हुयी तो मैंने कम से कम दस समाचार-पत्रो को वह पत्र भेजा। बडे-बडे राष्ट्र-भक्ति और हिन्दू राष्ट्र के रक्षक होने का दम भरने वाले पत्रो ने भी उसे प्रकाशित नही किया ससद मे बैठे हुए मुसलमानो मे से एक ने भी बुखारी के उस बयान का प्रतिवाद नही किया। मुसलमानों की तो बात छोडिय हिन्दू राष्ट्रवाद के गीत गाने वाले किसी एक सासद ने भी भारत के गृहमन्त्री से उस बयान के विषय मे न तो कोई प्रश्न किया और न 'ध्यान दिलाओ" प्रस्ताव प्रस्तुत कर सरकार से इस विषय मे उसकी प्रतिक्रिया ही जाननी चाही।

इस सबके बाद अब

अब तो भारत के प्रधान मन्त्री बनने के बाद श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी सबसे पहले मुसलमानो की भारत के साथ गैर वफादारी की घोषणा करने वाले इमाम अब्दुल्ला बुखारी के दरबार मे उन्हें सलाम करने पहुँचे। आप इमाम साहब के दरबार मे खडे रहे और बुखारी साहब सिंहासनारूढ बैठे रहे। इन्होने तो भारत के सम्मानीय सवैधानिक तथा सरकार प्रमुख के पद की गरिमा तक सुरक्षित नही रक्खी और इस प्रकार भारत राष्ट्र और उसकी राष्ट्रीय दस्तावेजी धरोहर उसके सविधान की अस्मिता को भारत यही पर रहते हुए भारत का खाकर भारत-द्रोह करने को प्रत्येक समय तैयार रहने वाले व्यक्ति के चरणों मे डाल दिया। इन्हे, यह तो ध्यान रहना चाहिये कि यह अब केवल विश्वनाथ प्रताप नाम व्यक्ति नही अपितु एक सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र के प्रधानमन्त्री भी हैं। प्रिय पाठक गण क्या प्रधानमन्त्री के पद की गरिमा को इन्होन इस कृत्य द्वारा अपमानित नही किया है ? इन्हीं बुखारी साहब ने कुछ वर्ष पहले कहा था—"पाकिस्तान को भारत के मुसलमानो के विषय मे बोलने का हक है।' प्रधान मन्त्री महोदय कहते हैं कि "पाकिस्तान को भारत के घरेलू मामले मे बोलने का कोई अधिकार नहीं।" कोई विश्वनाथ प्रताप सिंह से पूछे कि "प्रधानमन्त्री जी, जब आपके धर्मगुरु बुखारी साहब पाकिस्तान को भारत के मुसल-मानों के बारे मे बोलने का अधिकार मानते हैं तो फिर आपके इस झुठलाने का क्या अर्थ ? आपको इन्हीं बुखारी जी ने तो सैयद शहाबुद्दीन और ओबेदुल्ला खा को राज्य सभा का सदस्य बनाने को कहा था और आपने भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को जूते की नोक पर उडाकर भारत राष्ट्र का घोर अपमान करने वाले इस देशद्रोही को राज्य सभा का सदस्य बनाया। इन्हीं बुखारी साहब की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही तो आपने पचास लाख रुपये जामा मस्जिद की मरम्मत के लिये प्रदान किय हैं।

दूसरी ओर कश्मीर में आपके कृपापात्र गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद क्या क्या खेल खेल रहे हैं ? क्या आप इस विषय मे सावधान हैं ? क्या खुलम-खुल्ला गृहमन्त्री जी पर उग्रवादियों से उनके सम्बन्धों के आरोप नहीं लग रहे हैं और क्या आपके पास तक यह सूचनायें नहीं पहुच रहीं ? यह क्या आप नहीं जानते कि गृहमन्त्री मे अपनी लडकी को बचाने के लिए पाँच उग्रवादियों को जेल से मुक्त करा दिया और तीन उच्चाधिकारियो को मुक्त न करा सके, उनका मारा जाना पसन्द किया किन्तु उनके बदले उग्रवादी मुक्त नही किये। क्या कश्मीर घाटी मे आधी रात को हिन्दुओं के दरवाजे पीटते हुए यह नहीं कहा जाता कि—"पण्डिताइनो को हमारे हवाले कर खुद हिन्दुस्तान भाग जाओ। बच्चों की चिन्ता मत करो, हम इनका खतना कर अपने मे मिला लेगें। तुम अपने पैसे जम्मू एण्ड कश्मीर बैंक' मे जमा कर रफू हो जाओ।

क्या आपको यह पता नही कि कश्मीर घाटी के हिन्दुयुवकों को जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रण्ट के झण्डे तले आने को कहा जा रहा है ? और हिन्दू युवतियो को देखकर आवाज लगायी जाती है कि किसी गुलाम कादिर की, किसी मौहम्मद रसूल की हो जाओ ?" क्या आपको यह पता है कि कश्मीरी पण्डिताइनो के सुहाग चिन्ह 'डेमूर' को पहन कर निकलने वाली युवती का सिर कलम कर देने वाले आतकवादी को पच्चीस सहस्त्र रुपये पुरस्कार की घोषणा "जम्मू-कश्मीर' लिबरेशन फ्रण्ट ने की हुई है ?

क्या आपको यह पता है कि लखनऊ पहुँचे श्री बी०लाल—जिनकी दुकान कश्मीर घाटी मे बम से उडा दी गयी—उनका कहना है कि हम महीना भर इन्तजार करेंगे। भारत सरकार ने न बसाया, न मदद की तो वापस कश्मीर जाकर जे के एल एफ के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे और जैसा वे कहेंगे—हम करेंगे।" क्या इसका यह अर्थ नही है कि वापस जाकर जीवित रहने के लिये इन्हें इस्लाम ग्रहण करना पडेगा ? और कम से कम मैं ऐसा मानने को तैयार नहीं हूँ कि आप ऐसा ही चाहते भी है या हिन्दुओं को मुसलमान बनवाकर भारत को दारूल इस्लाम मे परिवर्तित कराने की आपकी योजना या कम से कम ऐसी इच्छा है। परन्तु अभी तक की आपकी रीति-नीति यह अवश्य सिद्ध करती है कि आप गाधी जी के मुस्लिम तुष्टीकरण के तो प्रबल पोषक हैं ही, जिसकी परिणति हिन्दू विनाश के अतिरिक्त अन्य कुछ हो ही नही सकती और हिन्दू विनाश का अर्थ है, भारत-भारतीयता का सर्वनाश।

आपके गृहमन्त्री जी तो स्पष्ट शब्दो मे कह चुके हैं कि "हम कश्मीर से भागकर आने वालो को अधिक आर्थिक सहायता करके उनके कश्मीर घाटी से पला-यन को प्रोत्साहन नहीं देना चाहते।" क्या इसका यही अर्थ नही है कि वह या तो जान बचाने को वहीं इस्लाम ग्रहण करें और यदि कल्मा न पढें तो काफिर होने के नाते वाजिबुल कत्ल समझकर मार डाल जायें। आप बुरा मानें या भला किन्तु वस्तु स्थिति यह है कि आपके पूज्य बुखारी जी इस समय मि० मौहम्मद अली जिन्ना का खेल खेल रहे हैं और आपके गृहमन्त्री मौला अब्दुल कलाम आजाद की भाँति कश्मीर घाटी को इस्लामिस्ताद बनाने की नीति पर चल रहे हैं।

आपको यह तो पता होगा ही कि गत 26 जनवरी को कश्मीर घाटी मे पाकिस्तानी झण्डा फहराने की योजना थी। इसी कारण से 20, 21 और 22 जनवरी की रातों को बारह बजे एकाएक सारे मुस्लिम धर्म स्थानो से लाउडस्पीकरो द्वारा आह्वान किया गया कि—"सारे कश्मीरी मुसलमान घर छोड सडकों पर आ जायें और कश्मीर को आजाद करालें।" तत्काल हिन्दू घरों के सामने नारे लगाये गये—"भारतीय कुत्तो वापस जाओ। हम आजादी चाहते हैं। खून का बदला खून से लेंगें। छीन के लेंगें आजादी। हम पाकिस्तान बनायेंगे। पण्डिताइनो को हमें सौंपों, हम उन्हें पाक कर देंगें।"

यह सूचना भी आपको मिल गयी होगी कि जब कश्मीरी मामलो के प्रभारी जार्ज फर्नाण्डीज कश्मीर गये थे तो आतकवादियो ने आदेश प्रसारित कर दिया था कि कोई उनसे मिलने न जाय। वह दिन भर अकेले बैठे रहे, कोई भी मिलने नहीं आया। वह स्वय बाहर नहीं निकल सके। पता नही उन्होने आपको यह बताया या नहीं और यह भी पता नहीं कि गृहमन्त्री महोदय के विभाग ने भी इस विषय की सूचना कश्मीर घाटी से दिल्ली भेजी है या नहीं ? वह भी आपको पता नहीं चला होगा कि श्री जगमोहन के भी फर्नाण्डीज महोदय हाथ बाँध आये हैं।

फर्नाण्डीज के आने से पहले श्री जगमोहन ने सकीना नामक आतकवादी महिला को बन्दी बनाया था। सकीना ने बी०एस०एफ० के एक कमाण्डर को गोली मारी थी। जार्ज साहब ने वहाँ पहुँचकर सबसे पहला काम सकीना को छुडवाने का किया। सकीना आतकवादी सगठन दुख्तर-ए-मिल्लत की सदस्या है। क्या आप अपने द्वारा बनाये श्री प्रभारी अधिकारी जी से इस विषय में पूछने का साहस जुटा पायेंगे।

पाठकगण ! उपर्युक्त प्रश्न तो मैंने प्रधान मन्त्री जी से कर डाले हैं किन्तु पहले तो मुझे विश्वास नहीं होता कि मेरे प्रश्न ही उनके सामने तक आ पायेंगे और यदि किसी प्रकार उनके पास तक वह प्रश्न आ सके तो मैं कोई अब्दुल्ला बुखारी तो हूँ नहीं कि वह मेरे पास आवेंगें। मैं जानता हूँ कि मेरे जैसे राष्ट्रभक्ति के अपराधी

(शेष 5 पृष्ठ पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऐतिहासिक काशी-शास्त्रार्थ

—डा० आनन्द प्रकाश, वाराणसी

विद्या की पुरी काशी प्राचीनकाल से विद्या की खान समझी जाती थी। उसके कोने-कोने मे विद्यावारिधी और गली-गली मे महामहोपाध्याय रहते थे। जब तक काशी अपराजिता थी तब तक पौराणिक धर्म को भी हारा हुआ नही मान सकते थे। ऐसे पौराणिक गढ मे कार्तिक सुदी द्वादशी सम्वत् 1926 को एक ओर जहाँ सतपथ गामी कोपीनधारी दयानन्द था—विद्या ही जिसका शास्त्र था, सत्य ही जिसका गढ था और परमात्मा ही जिसका सहायक था। वही दूसरी ओर सनातन धर्म का जय-कारा लगाने वाले हजारों पोंगा पण्डितों और गुण्डों के साथ आये अनेक मूर्तिपूजक दिग्गज विद्वान् थे। कहने को शास्त्रार्थ था, परन्तु वास्तव मे वर्षा ऋतु के कारण बने सैकड़ो प्रचण्ड नालो से एक चट्टान की टक्कर थी। हरेक पण्डित चाहता था कि येन-केन-प्रकारण दयानन्द निरुत्तर हो जाय, परन्तु प्रत्युत्पन्नमति दयानन्द किसी के आग नही झुका।

देश देशान्तर मे इस शास्त्रार्थ का समाचार आग की तरह फैला और स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की पाडित्य-कीर्ति का सौरभ समस्त दिशाओ मे फैल गया।

प्रस्तुत लेख मे विद्वान् लेखक डा० आनन्द प्रकाश जो काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय के प्रोद्योगिकी सस्थान मे रीडर हैं और महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा के सस्थापक मन्त्री भी हैं, ने काशी-शास्त्रार्थ के सम्बन्ध मे जो विचार प्रस्तुत किया हैं, उससे आर्य समाजियो को एक नई दिशा मिलेगी—ऐसी आशा है।

काशी नगरी मे दुर्गाकुन्ड के समीप स्थित आनन्दबाग, वह ऐतिहासिक स्थल है जहाँ पर आर्यसमाज के सस्थापक, वेदोद्धारक, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 120 वर्ष पूर्व, कार्तिक शुक्ला द्वादशी सम्वत् 1926 विक्रमी बुद्धवार तदनुसार 16 नवम्बर सन् 1869 ईसवी को अपने जीवन का सबसे बडा शास्त्रार्थ किया था, उस शास्त्रार्थ की अध्यक्षता तत्कालीन काशी नरेश श्रीमान महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह ने की थी और राष्ट्रीय समाचार पत्रो मे प्रकाशित विवरणो के अनुसार साठ हजार की सख्या मे विशाल मानव समुदाय, उस सवाद को सुनने के लिए उपस्थित था। काशी नरेश ने जिन तीन-सौ प्रतिष्ठित जनो को विशेष रूप से आमन्त्रित किया था उनमे से कई अपने समय के ख्याति प्राप्त साहित्यकार, पत्रकार एव समाज सुधारक थे। कई सौ व्यक्तियों पूना जयपुर, कलकत्ता, पटना आदि दूरस्थ स्थानो से भी पधारे थे। जहाँ अपना पक्ष पस्तुत करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती अकेले थे वहा प्रतिपक्ष की ओर से अपने-अपने विषय के सर्वश्रेष्ठ विद्वान समझे जाने वाले—स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती दक्षिणात्य प० बाल शास्त्री, श्री माधवाचाय श्री वामनाचार्य, राज पुरोहित प० ताराचरण तर्करत्न प्रभृति 40 पडितगण उपस्थित थे। राज्य शक्ति और अपार धन वैभव का आश्रय तो इन पडितो को प्राप्त था ही। जब शास्त्र चर्चा मे पडितगण पराजित हो गये तो उन्होने कुटिलता उदण्डता और पशुबल का सहारा लिया। इस सकट की भीषण स्थिति मे, वहाँ पर शांति व्यवस्था के लिए नियुक्त शहर कोतवाल रघुनाथ प्रसाद जी ने स्वामी जी की प्राण रक्षा की। आर्यसमाज, अपने प्रवर्तक की प्राण रक्षा करने के लिए कोतवाल, रघुनाथ प्रसाद जी का सदा ऋणी रहेगा। काशी शास्त्रार्थ मे विजय प्राप्त कर महर्षि ने अपनी और अपने मन्तव्यो की अपराजेयता सिद्ध की और उन्हें विश्व-प्रसिद्धि प्राप्त हुई इस शास्त्रार्थ का विवरण अनेक पुस्तको और समाचार पत्रो की रिपोर्टों से प्राप्त होता हैं, जो कल्पनातीत और अत्यन्त स्फूर्तिदायक है।

काशी शास्त्रार्थ, भारत के धर्मक्षेत्र मे अद्भुत क्रांति उत्पन्न करने वाला महा-समर था जिसमे अविचल ईश्वर विश्वासी दयानन्द एकमेव परमात्मा के विश्वास और अपने अद्वितीय ज्ञान बल के सहारे ही अकेला विचार-सग्राम मे उतरा था। उस समय आर्यसमाज की स्थापना नहीं हुई थी आदित्य ब्रह्मचारी, ज्ञान-सूर्य परमहस वेद दयानन्द मात्र कोपीन धारण करते थे, सस्कृत मे ही सम्भाषण करते थे और अवैदिक मत-सम्प्रदायो का खडन करते हुए भ्रमण कर रहे थे। महर्षि चाहते थे कि काशी नगरी का विद्वत् समुदाय, उनके द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक क्रांति मे सहयोगी बनें तथा विश्व भर में वैदिक धर्म की पुनंस्थापना का संकल्प करें। इसी पुनीत भावना से सत्यधर्म का निश्चय कराने और पाषाण-पूजा को वेद-विरुद्ध सिद्ध करने के लिए अपनी अद्वितीय काशी यात्रा मे स्वामी जी ने इस शास्त्रार्थ का आवाहन किया था। इस शास्त्रार्थ के उपरान्त भी स्वामी जी पाँच बार और काशी पधारे। जो लोग इस शास्त्रार्थ में स्वामी जी के पराजित होने का असत्य प्रचार करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि काशी शास्त्रार्थ के उपरान्त भी स्वामी जी हर बार काशी आगमन पर शास्त्रार्थ की चुनौती देते रहे। महर्षि दयानन्द की उस ऐतिहासिक विजय से प्रेरणा, प्राप्त कर, सदा उनके मिशन के प्रति अपने समर्पण को दोहराते रहना, आर्यों का परम दायित्व है।

इस काशी शास्त्रार्थ स्थल (आनन्द बाग) मे पत्थरों द्वारा निर्मित बारादरी, जहाँ पर महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ के समय, काशी नरेश एव पडित-मडली के साथ बैठे थे, आज भी विद्यमान है। इस उद्यान के एक भाग मे एक सुन्दर यज्ञशाल का निर्माण हो चुका है, जिसमे दैनिक तथा साप्ताहिक सत्सग होता है। काशी शास्त्रार्थ स्थल के नाम पर एक आर्यसमाज तथा महिला आर्यसमाज भी पिछले अनेक वर्षों से कार्य कर रहा है। गत् 25 वर्षों से इस स्थल पर कार्तिक शुक्ला द्वादशी का महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति समारोह" का आयोजन भी जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्वावधान मे किया जा रहा है। अमेठी के भू०पू० राजा राजर्षि रणन्जय सिंह जी का इस स्थल के प्रति बहुत लगाव था। वे इस स्थल को 'महर्षि दयानन्द के कीर्ति स्थल" के रूप मे विकसित देखना चाहते थे। इस स्थल पर कार्य का प्रारम्भ वास्तव मे उन्ही की प्रेरणा और मार्ग दर्शन से आरम्भ हुआ।

परन्तु इतनी प्रगति से सन्तुष्ट न रहते हुए काशीशास्त्रार्थ से जुड़ा प्रेरणा और इस स्थल के ऐतिहासिक महत्व के अनुरूप उच्चस्तर के कार्यक्रमो का आवश्यकता अनुभव की गयी। देश विदेश से पधारने वाले ऋषि दयानन्द के भक्त, जो इस काशी शास्त्रार्थ के महान् सदेश से अवगत हैं और शास्त्रार्थ के उपरान्त महर्षि के प्रति पौराणिको द्वारा किये गये अभद्र व्यवहार से परिचित हैं, इस स्थल पर पहुँचकर भाव विह्वल हो जाया करते हैं। उनमे से अनेक यह सुझाव देत रहे कि एक उच्चस्तरीय सस्था का गठन कर, वैचारिक कार्यक्रमो का सचालन तथा काशी शास्त्रार्थ की स्मृति मे "दयानन्द कीर्ति भवन' का निर्माण कराया जाय। कई वर्षो के गम्भीर विचार विमर्श तथा व्यापक सम्पर्क के उपरान्त जनवरी सन 1987 मे एक सस्था का गठन किया गया, जिसका नाम 'महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा' रखा गया और शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी महाराज इसके सस्थापक प्रधान बने। प्रारम्भिक वर्षों मे अनेक अप्रत्याशित कठिनाइयो का सामना करना पडा। पर्याप्त सघर्ष के उपरान्त गत् 29 मार्च 90 को इस सस्था का पजीकरण हो गया। (सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण सख्या 650 है।)

इस सस्था के मुख्य ध्येय को इन शब्दो म स्थापित किया गया है —'युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कार्तिक शुक्ला द्वादशी सम्वत 1926 विक्रमी तदनुसार 16 नवम्बर सन् 1869 ईसवी को काशी स्थित आनन्द बाग (दुर्गाकुण्ड) मे इतिहास प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया जिसका उद्देश्य सद्धर्म की पुनस्थापना तथा ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान कराना था। इस शास्त्रार्थ म उनकी अपराजेयता सिद्ध हुयी और उन्हे विश्व प्रसिद्धि मिली। उस ऐतिहासिक घटना की स्मृति से सतत् प्रेरणा प्राप्त कर महर्षि द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक क्रांति को चिरस्थायी रखना और आर्यसमाज के अन्तर्गत् शास्त्रार्थ परम्परा को शक्ति प्रदान करना, इस सस्था का प्रमुख उद्देश्य है।" सभा के अन्तर्गत अनेक वैचारिक कार्यक्रमो का सूत्रपात किया जा चुका है। शास्त्रार्थ स्थल का वह भाग, जहाँ पर बैठकर महर्षि ने शास्त्रार्थ किया था, के अधिग्रहण का प्रयास भी चल रहा है। आर्यजगत् को इस सभा का सक्षिप्त परिचय देना, इस लेख का उद्देश्य है। आर्यजनो से प्रार्थना है कि वे अपन अमूल्य सुझाव इस पते पर भेजने की कृपा करें—

—सम्पादक

श्री यज्ञदत्त गौतम, प्रधान
महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा,
पी० 3/2, लेन न० 13, रवीन्द्रपुरी, वाराणसी

(पृष्ठ 4 का शेष)

की वहाँ पहुच भी सम्भव नहीं। सच्चाई यह है कि भारत के यह नेता किसी राष्ट्र-भक्त की सुनना नही चाहते। यह तो केवल और केवल मात्र राष्ट्र-द्रोहियो की ही सुनते हैं, क्योंकि वह इनकी मुसीबतो और परेशानियो का कारण बन जाते हैं और कोई देशभक्त ऐसा कोई कार्य कर नहीं सकता, जिससे सरकार और राजनेताओं की परेशानि बढ़े। सबसे बडी खेद की बात यह है कि यह नेता यह नहीं जानते कि जातीय जीवन क्या होता है और जाति का मार्ग-दर्शन किस प्रकार होता है? इनके तो केवल दो ही सूत्र हैं जिनकी प्राप्ति की महत्वकांक्षा इनकी नमाज है और यह दोनो सूत्र इनकी नमाज के दो सजदा हैं। ऐसे ही नेताओं पर उर्दू का निम्न शेर चरितार्थ होता है—

"कौम क्या चीज है? कौमो की इमामत क्या है?
इसको क्या जानें ये दो सजदा के इमाम?"

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष,
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

आबू पर्वत पर नया सूर्योदय

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय

आबू-पर्वत 27 मई

आज प्रात सामवेद परायण यज्ञ तथा ध्वजोतलन के साथ स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के विधिवत् प्रारम्भ करने की घोषणा की। सन्यासियों ब्रह्मचारियों वानप्रस्थियो, सद्गृहस्थों के तुमुल जय घोष से आबू पर्वत की श्रृंखलायें गुन्जायमान हो उठी। जो आबू पर्वत प्राचीन समय मे ऋषियों की तपस्थली थी, आज उसके पुरातन गौरव को पुन प्रतिष्ठित करने का अवसर था।

उद्घाटन समारोह का प्रारम्भ गुरुकुल की नव निर्मित यज्ञशाला में वेदों के विद्वान् स्वामी व्रतानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य प० भीमसेन जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण द्वारा प्रारम्भ हुआ। प्रात एव सायकाल वेद मन्त्रों के उद्घोष और प्रवचनों से अरावली की पर्वत माला गुन्जायमान होती रही। उत्सव का कार्यक्रम दिनाक 26, 27, एव 28 मई को सम्पन्न हुआ। उत्सव का प्रारम्भ नक्की झील के सुरम्यतट पर स्थित आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण मे हजारों आर्य नर नारीयों की उपस्थिति में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने ध्वजारोहण से किया। समारोह में प्रतिदिन स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी ओमानन्द जी महाराज दीक्षानन्द जी महाराज के प्रवचन एव भजनोपदेश से आध्यात्मिक एव धार्मिक वातावरण में हजारों लोगो ने लाभ उठाया।

गुरुकुल के उद्घाटन समारोह के अवसर पर ध्वजोत्तोलन करते हुए स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने बताया इस ससार मे वास्तविक धर्म के प्रचार का और ससार को सुखी करने का मूल आर्षशिक्षा प्रणाली है आर्ष शिक्षा से ही मनुष्यों में मानवीय मूल्यों का विकास होता है। अन्य शिक्षा तो मनुष्य को मनुष्यता से दूर करती है। और शोषण की प्रवृत्ति को बढाती है।

गुजरात के मुख्य सचेतक लेखराज बच्याणी ने गुरुकुल के लिए शुभ कामना व्यक्त करते हुए गुरुकुल के लिये राज० सरकार से मिलकर सड़क निर्माण करवाने की घोषणा की और बताया कि यह स्थान गुजरात और राजस्थान के लिये प्रेरणा और प्रकाश का केन्द्र बनेगा। स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने बताया कि वर्तमान शिक्षा भोगवादी प्रवृत्ति की ओर ले जाती है। जबकि आर्ष शिक्षा त्यागवाद की ओर मनुष्य को प्रवृत्त करती है।

गुरुकुल के प्रारम्भिक सत्र मे 25 छात्रो को रखने की व्यवस्था की गई है। 29 मई को प्रात· गुरुकुल भूमि मे ब्रह्मचारियों का उपनयन एव वेदारम्भ सस्कार सम्पन्न हुआ। कुरुकुल चित्तौड़गढ़ के सुयोग्य वैदिक विद्वान प० भीमसेन जी वेदवागीश की देखरेख में विद्यार्थियों के अध्ययन का कार्य प्रारम्भ हो गया है।

इस गुरुकुल की स्थापना ने गुरुकुल के श्रद्धानन्द युग को फिर एक बार साकार कर दिया।

28 लेखकों को साहित्यिक-कृति पुरस्कार

नई दिल्ली 23 मई।

दिल्ली के उपराज्यपाल एयर चीफ मार्शल (रि0) श्री अर्जन सिंह द्वारा हिन्दी अकादमी, दिल्ली की ओर से राजनिवास मे आयोजित आज एक समारोह में वर्ष 87-88 के लिए 28 लेखकों को उनकी कृतियों के लिए पुरस्कार भेंट किए गए इस अवसर पर उन्होने लेखकों को बधाई देते हुए कहा — 'समाज की छवि में निखार लाने और उसे नया रूप देने मे साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए साहित्यकारों का सम्मान करने तथा उनकी कृतियों को पुरस्कृत करने से हमारा ही मान बढ़ता है। " इस समारोह में उपराज्यपाल द्वारा कहानी को 5, कविता की 6, 5-उपन्यास, 3-हास्य-व्यग्य और 9 विविध विषयों पर लिखी गई कृतियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर उपराज्यपाल द्वारा अकादमी की ओर से प्रकाशित पुरस्कृत लेखको की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। उपराज्यपाल द्वारा प्रत्येक पुरस्कृत लेखक को 11, 101/— रू0 की पुरस्कार राशि तथा एक प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया।

समारोह को हिन्दी वरिष्ठ साहित्यकार प्रो० विजेन्द्र स्नातक, श्री अक्षय कुमार जैन, श्री भीष्म साहनी तथा हिन्दी अकादमी के सचिव डा० नारायणदत्त पालीवाल जी ने सम्बोधित किया।

रोहतक में वेद शिक्षा शिविर

दयानन्दमठ रोहतक में 3 जून को वैदशिक्षा शिविर का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने किया। यह शिविर 17 जून तक चलेगा। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य कार्यकर्ताओं को चारों वेदों का संक्षिप्त परिचय, वेदमन्त्रों का शुद्ध उच्चारण, सध्या, दैनिक यज्ञ आदि मन्त्रों की व्याख्या, वैदिक सिद्धान्तों पर शका समाधान तथा वैदिक सस्कारों का शिक्षण देंगे।

हिन्दी बाल साहित्य के 16 लेखक पुरस्कृत

नई दिल्ली, 31 मई।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित आज एक समारोह में वर्ष 87-88 के लिए बाल साहित्य के 16 लेखकों को पुरस्कृत किया गया। ये पुरस्कार लेखकों को उनकी चुनी गई कृतियों और पाण्डुलिपियों के लिए दिऐ गए, पुरस्कार स्वरूप हर लेखक को 2100/—रू० की राशि का चैक और प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया। पुरस्कार समारोह हिन्दी के वरिष्ठ लेखक और पत्रकार श्री अक्षय कुमार जैन के सान्निध्य में आयोजित हुआ तथा समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध लेखक-समालोचक प्रो0 विजयेन्द्र स्नातक ने की।

दिवंगत आर्यश्रेष्ठी—

संतराम बी०ए०

श्री सन्तराम बी-ए का अपने जीवन का एकमात्र ध्येय था कि वे इस समाज से जाति-पाँति के भेद-भाव को पूरी तरह मिटा दें। उन्होंने इस धारा पर आकर, मानवमात्र के कल्याणार्थ अनेक कार्य किए पर उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य था—

वास्तव में जन्मना जाति न मानने का जो विचार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रारम्भ किया था, सामाजिक ऊच-नीच के भेद-भाव को मिटाने का तथा क्षेत्रीयता एवं प्रान्तीयता के भेद-भाव को मिटाने का एक मात्र सवाहक साधन हो सकता है। हमारे राष्ट्रीय नेता विश्व नागरिकता की बातें उठाते तो हैं परन्तु वे इस पर आचरण कहाँ कर पाते हैं। वे तो राष्ट्र को भी हिन्दुस्तानी, पंजाबी, राजस्थानी, मराठी तथा मद्रासी में बाँटते रहते हैं। यह प्रान्तीयता का विषधर हमें तब तक डसता रहेगा, जब तक हम उस देवदयानन्द की मान्यताओं को अपने जीवन में नहीं उतारेंगे।

सन्तराम बी-ए के इस दिशा मे किए गये प्रयास स्पृहणीय हैं। उन्होंने अपने उद्देश्य के मार्ग में बाधक बड़े से बड़े आदमी से भी सम्बन्ध-विच्छेद कर लिए थे। उन्होंने न भाई परमानन्द की परवाह की थी और न ही लाला लाजपत राय की। उन्होंने महात्मा गाँधी तक के विचारों का विरोध किया था।

श्री सन्तराम जी इस विषय मे कितने दुराग्रही थे यह इस बात से पता लगता है। 1918 में लाहौर के पास पट्टी में उन्होंने एक कृषि फार्म चलाया। वहां पर सवर्णों के साथ, हरिजनों, मुसलमानों और सिक्खों को भी काम पर लगाया। वे रोटी बनाने का काम सामूहिक रूप से सभी स्त्रियो को देते थे। इससे सवर्ण तो नाराज हुए ही, सिक्ख और मुसलमान भी नाराज हुए। पर उन्होंने परवाह न की। कुछ सवर्ण काम छोड़कर चले गये। पर वे अपने सिद्धान्तों पर अटल रहे। उनके फार्म पर सभी को समान रूप से कुँए पर चढ़ने का अधिकार था।

1930 के आस पास आर्यसमाजों के उत्सवों पर एक जाति तोड़ो सम्मेलन भी हुआ करता था। महात्मागाँधी जन्मना जाति मानते थे। यह अलग बात है कि बाद मे उनके बेटे ने अन्तर्जातीय विवाह किया।

सन्तराम जी हिन्दी और साहित्य की भी समान रूप से सेवा की। 1914 में उन्होंने पजाब से 'उषा' तथा 1933 में 'युगान्तर' नामक पत्रिकाएं शुरू कीं। 1952 मे होशियारपुर की 'विश्वज्योति' पत्रिका के सह सम्पादक बनें। उन्होंने सामयिक ज्वलन्त प्रश्नों पर अनेक लेख लिखें।

प० सन्तराम जी की स्मृति में हमारी प्रणामांजलि

—डा० धर्मपाल

शोक समाचार—

श्रीमती शान्ति देवी

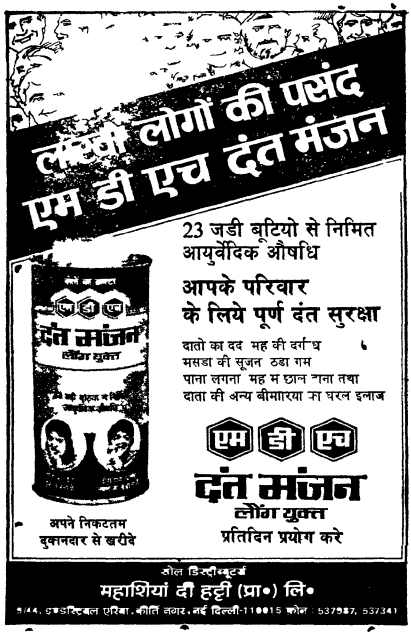
आर्यसमाज शालीमार बाग बी-एन-पूर्वी में माता श्रीमती शान्तिदेवी जी की शोकसभा रविवार 10 जून 1990 को सम्पन्न हुई। माता जी का देहान्त 7 जून को हृदय गति रुकने से हो गया था। माता जी आर्यसमाज की अनन्य भक्त निष्ठावान, धर्मप्रेमी तथा सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित महिला थी। उनके कर्मठ कार्य केवल शालीमार बाग तक ही सीमित न थे, अपितु वे जब सोनीपत में थी और जब अशोक विहार में थी, उस समय भी रातदिन आर्यसमाज का तथा वैदिक धर्म का कार्य करती थी। उनके मन में आर्यसमाज के लिए सच्ची तड़प थी।

माता जी अपने पीछे भरा पूरा पुत्र- पौत्रों तथा दौहित्रों का सम्पन्न परिवार छोड़कर गयी है। उन्होंने आर्यसमाज के कार्यों के साथ साथ पारिवारिक दायित्वों को पूरी निष्ठा से निभाया। श्री रवीन्द्र, श्री मनीष तथा बहन श्रीमती राज तथा उनके सभी परिजनों के साथ साथ आर्यसमाज के सभी सदस्य भी शोक विह्वल थे।

शोक सभा में स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, व सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० महेश विद्यालंकार डा० धर्मपाल' श्रीमती प्रेमवती महेन्द्रू, श्री रामगोपाल जी (सोनीपत) तथा अन्य अनेक आर्यजनों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर परिवार की ओर से अनेक संस्थाओं को दान भी दिया गया तथा प्रतिवर्ष एक वैदिक विद्वान को आर्यसमाज शालीमार बाग के वार्षिकोत्सव पर माता जी की स्मृति में पुरस्कृत करने का संकल्प किया गया।


चाट मसाला
चाट सलाद और फलों को अत्यन्त स्वादिष्ट बनाने के लिये यह बहतरीन मसाला है।
CHAT MASALA
Excellent for garnishing Chat Salads and fruit to provide delicious taste and flavour
एम डी एच
चाट मसाला
अमचूर
अपनी क्वालिटी तथा शुद्धता के कारण यह खाने में विशेष स्वाद और लज्जत पैदा करता है।
AMCHOOR
(Mango Powder)
It adds special tangy taste and flavour to your dishes with its quality and purity
एम डी एच


लाखों लोगों की पसंद
एम डी एच दंत मंजन
23 जडी बूटियो से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि
आपके परिवार के लिये पूर्ण दंत सुरक्षा
दातो का दर्द मुह की दुर्गन्ध मसूडो की सूजन ठंडा गर्म पानी लगना मुह में छाले आना तथा दातो की अन्य बीमारियो का घरेलू इलाज
एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
प्रतिदिन प्रयोग करे
अपने निकटतम दुकानदार से खरीदे
सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी (प्रा॰) लि॰
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन : 537987, 537341


आन्तरिक वस्त्रों में एक मात्र विश्वसनीय नाम...
Sparsh BRA
स्पर्श ब्रा
श्वेता ब्रा
Shvaita BRA
सरिता ब्रा
Sarita BRA
Shalini BRA
शालिनी ब्रा
Groversons
Paris Beauty
पैरिस ब्यूटी
ग्रोवर सन्स
• BRA • PANTIES • UNDERWEAR • BANIAN •
चमनलाल इन्टरप्राइजिज़
Chamanlal Enterprises
सेल्स डिपो
२ बीडनपुरा अजमल खां रोड, करोल बाग
नई दिल्ली-११०००५
फोन ५८२०१६, ५७१९२२४

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,] १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P.S.O. on 14, 15-6-1990 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

आवश्यकता

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के आवासीय विद्यालय मे निम्न पदों को भरने के लिए आर्यसमाजी विचारधारा के योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है —

1 आश्रमाध्यक्ष (एक पद) आयु-40 से 45 वर्ष
वेतन 600/=प्रतिमास, योग्यता-स्नातक,
भोजन एव आवास नि शुल्क

2 अधिष्ठाता (चार पद)
योग्यता हाई स्कूल पास, आयु 40 वर्ष से 50 वर्ष
वेतन 400/=रु प्रतिमास
भोजन एव आवास नि शुल्क

केवल शाकाहारी एव धूम्रपान न करने वाले व्यक्ति ही निम्न पते पर प्रार्थना-पत्र विज्ञापन के 15 दिन बाद तक ही मान्य होंगे। साक्षात्कार के लिए प्रमाण-पत्रो सहित 25-6-90 को मुख्य कार्यालय मे उपस्थित हो।

कैप्टन देवराज
सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश

आश्रम पद्धति से चलने वाले गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में 6 वर्ष से 10 वर्ष तक की आयु के बालकों का प्रवेश 2 जुलाई से 31 जुलाई तक होगा।

गंगा के तट पर विद्यालय का विशाल प्रांगण बालकों के खेल-कूद तथा व्यायाम के लिए आदर्श स्थान है। योग्य अध्यापकों द्वारा उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूल में पढ़ाये जाने वाले सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्मशिक्षा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। शिक्षा निःशुल्क है। पूर्ण जानकारी के लिए 10/—रु० का पोस्टल आर्डर भेजकर नियमावली प्राप्त करें।

कैप्टन देवराज
सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तरप्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
ट्रिमस आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी, आई०के० प्रिंटर्स पीतमपुरा दिल्ली-३४ में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ३६ | रविवार २४ जून १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

सरकार की नीयत ही हिन्दी के विकास में सबसे बड़ी बाधा है

-ज्ञानी जैल सिंह

विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद् के तत्वावधान मे आज दिल्ली विश्वविद्यालय के टैगोर हाल मे एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका विषय था "विज्ञान व सामाजिक विज्ञान आदि विषयो मे हिन्दी माध्यम" एवं 'विश्व-विद्यालय प्रशासन और हिन्दी।" संगोष्ठी का उद्घाटन भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने किया।

इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण मे ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि हिन्दी के विकास मे सबसे बड़ी बाधा सरकार की नीयत खराब होना है। उन्होने भारत के प्रधानमन्त्रीको भी इस बात के लिये आलोचना की कि वे विदेशी अतिथियो के सामने अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। इससे स्पष्ट है कि हिन्दी के लिए सरकार दोमुही नीयत पर चल रही है।

जनप्रतिनिधियो को आडे हाथो लेते हुए ज्ञानी जी ने कहा कि चुनाव के समय नेता भारत की जनता से वोट लेने के लिए हिन्दी और भारतीय भाषाओ में भाषण करते हैं। लेकिन सत्ता मे आते ही हिन्दी को भूलकर अंग्रेजी के जाल मे फस जाते हैं। यह देश के लिए चिन्ता की बात है।

उन्होने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि आजादी के 43 वर्ष बाद भी अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त नहीं की गई। शासन मे अंग्रेजी का बोल बाला है। उच्च पदों पर परीक्षाओ मे हिन्दी की उपेक्षा कर अंग्रेजी की अनिवार्यता संघ लोक सेवा आयोग मे आज भी बरकरार है।

पूर्व राष्ट्रपति ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायमसिंह यादव की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि वे पहले ऐसे राजनीतिज्ञ हैं, जिन्होने राष्ट्र भाषा के उत्थान के सख्त कदम उठाकर साहस का परिचय दिया है। ऐसा ही साहस प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह भी दिखा दे तो यह इस सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। उन्होंने हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश हरियाणा और बिहार के मुख्यमन्त्रियो द्वारा हिन्दी के लिए किए गये प्रयासो को सराहा और उन्हें बधाई दी।

श्री जैलसिंह ने जनता का आह्वान किया कि वह अपने चुने हुए जनप्रतिनिधियो से जवाब मांगे कि वे अंग्रेजी को छोडकर हिन्दी को आगे क्यों नहीं लाते और 96 प्रतिशत भारतीय भाषियों को 4 प्रतिशत अंग्रेजीदा लोगो से बड़ा संघर्ष करना होगा तभी हिन्दी प्रचार और प्रसार सफल होगा।

दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री उपेन्द्र बक्शी ने इस अवसर पर कहा कि आलंकारिक हिन्दी की अपेक्षा आम बोलचाल की हिन्दी के प्रयोग से हम हिन्दी का विकास तेजी से कर पायेंगे।

परिषद् के महामन्त्री डा० प्रशान्त वेदालंकार और अध्यक्ष डा० विजयेन्द्र स्नातक ने परिषद् की गतिविधियो और योजनाओ पर प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र मे विज्ञान और सामाजिक विज्ञान आदि विषयो मे हिन्दी माध्यम पर चर्चा का विषय प्रवर्तन डा० जगदीश चन्द्र मूना ने किया। वक्ताओ मे डा० बी० एस० यादव, श्री विश्वम्भर प्रसाद गुप्त बन्धु, डा० आर० बी० जैन प्रमुख थे। सभी का कहना था कि हिन्दी माध्यम मे पारिभाषिक शब्दो की कोई समस्या नहीं है। इस सत्र के अध्यक्ष डा० सत्यप्रकाश जी ने विज्ञान की मौलिक पुस्तकों के लेखन पर बल दिया। इस सत्र का आयोजन प्रिंसिपल मोहनलाल व श्री विद्यारत्न ने किया।

द्वितीय सत्र मे अध्यक्षता डा० रामेश्वर प्रसाद मिश्र ने की और 'विश्व-विद्यालय प्रशासन और हिन्दी" विषय पर जिन वक्ताओ ने अपने पत्र पढे उनमे सर्वश्री सूबेसिंह राणा, डा० महेशचन्द्र अग्रवाल, श्री विजय मल्होत्रा थे। इस सत्र के संयोजक हिन्दी अकादमी के सचिव डा० नारायणदत्त पालीवाल और डा० कृष्णलाल थे।

एक दिवसीय संगोष्ठी मे खचाखच भरे हाल मे अनेक विश्वविद्यालयो के आचार्यों, प्राचार्यों और छात्रो ने भाग लेकर संगोष्ठी को सफल बनाया। इनमे डा० तुलसीराम, श्री वसन्तराव ओक, श्री पवन चौधरी, श्री दयानन्द वत्स, डा० रमेशदत्त शर्मा, श्री जयपाल विद्यालंकार आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

संगोष्ठी का समापन दिल्ली विश्वविद्यालय के समकुलपति डा० के० डी० गंगराडे ने किया। उन्होने हिन्दी का वातावरण बनाने के लिए अथक परिश्रम करने का परामर्श दिया।

०—०

आपको स्मरण होगा कि—

17 अगस्त 1939 को आर्य सत्याग्रही विजयी होकर हैदराबाद की जेलों से छूटे थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

अपने मुखपत्र "आर्य सन्देश" का वृहद विशेषांक

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह

अर्धशताब्दी स्मृति अंक

आगामी 19 अगस्त 1990 को प्रकाशित कर रहा है

यह विशेषांक 20 × 30 साईज के आठवें भाग पर 250 पृष्ठों का होगा, जिसमे आप आर्यसमाज के सबसे पहले और सबसे बड़े आन्दोलन "हैदराबाद आर्य सत्याग्रह" की पृष्ठ भूमि, सत्याग्रह का इतिहास, शहीदो के जीवन वृत्त सर्वाधिकारियो के जीवन-वृत्त सत्याग्रहियो के संस्मरण, विद्वान लेखकों एव इतिहासकारों के शोध लेख एव वीर-रस की काव्य रचनायें पायेंगे। यह विशेषांक एक सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

आर्य जगत के दानियो, उद्यमियो तथा आर्य समाजों के अधिकारियो से निवेदन है कि वे यथाशक्ति विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग करें।

विज्ञापन दरें— पूरा पृष्ठ—एक हजार रुपया—
आधा पृष्ठ—छः सौ रुपया—
चौथाई पृष्ठ—तीन सौ पचास रुपया—

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—यशपाल सुधांशु

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार—249404

डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी

प्रवेश सूचना सत्र-1990-91

निम्नांकित पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु निर्धारित फार्म पर प्रार्थना पत्र आमंत्रित किये जाते हैं

क्रम स०	पाठ्यक्रम	अवधि	प्रवेश योग्यता
1	विद्याविनोद (इण्टर) 10+2	2 वर्ष	संस्कृत तथा अंग्रेजी सहित मैट्रिक या समकक्ष अंग्रेजी सहित पूर्व मध्यमा, विद्याधिकारी (गु०का० वि०वि०) विशारद (पंजाब) विद्या० रत्न, प्राज्ञ) महर्षि दयानन्द वि०वि० रोहतक
2	अलंकार (बी०ए०) वेदालंकार/ विद्यालंकार	3 वर्ष	संस्कृत तथा अंग्रेजी सहित इण्टर या समकक्ष अंग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा, विद्याविनोद (गु० का० वि० वि०) विशारद (पंजाब/रोहतक
3	बी०एस-सी० गणित, बायो० तथा कम्प्यूटर ग्रुप	3 वर्ष	इण्टरमिडिएट विज्ञान सहित अथवा उसके समकक्ष परीक्षा) गणित तथा बायो० ग्रुप के लिए द्वितीय श्रेणी तथा कम्प्यूटर ग्रुप के लिये प्रथम श्रेणी)
4	एम०ए० वेद, संस्कृत प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व हिन्दी, अंग्रेजी मनोविज्ञान गणित, दर्शन	2 वर्ष	त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत, बी० एस सी०, बी०ए०, बी०काम०, अलंकार, विद्याभाष्कर, शास्त्री, आचार्य, साहित्यरत्न (इलाहाबाद)
5	एम०एस-सी० (माइक्रोबायोलोजी, गणित तथा मनोविज्ञान)	2 वर्ष	त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत बी एस-सी (बायो.ग्रुप) न्यूनतम 50% प्राप्तांक बी एस-सी. (गणित ग्रुप) द्वितीय श्रेणी तथा मनोविज्ञान के लिए बी एस-सी
6	पी-एच०डी० वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी, प्राचीन, भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, अंग्रेजी मनोविज्ञान, गणित, वनस्पति विज्ञान, तथा जीव विज्ञान।	4 वर्ष	सम्बन्धित विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में 55% तक 50% से अधिक परन्तु 55% से न्यून प्राप्तांकों पर दक्षता परीक्षा देनी होगी। संस्कृत एवं अंग्रेजी का हाई स्कूल स्तर का ज्ञान आवश्यक।
7	वैदिक यज्ञ विधान (कर्मकाण्ड डिप्लोमा)	1 वर्ष	अलंकार, शास्त्री, बी ए अथवा समकक्ष परीक्षा
8	स्नातकोत्तर डिप्लोमा (कामर्शियल मेथड्स आफ कैमिकल एनैलिसिस)	1 वर्ष	बी एस-सी (रसायन) 50% प्राप्तांक (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत)
9	स्नातकोत्तर डिप्लोमा (कम्प्यूटर साइन्स एण्ड एप्लीकेशंस)	1 वर्ष	एम ए / एम एस-सी / बी ई 55% प्राप्तांक स्नातक स्तर पर गणित अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ा हो तथा हाई स्कूल से स्नातक तक न्यूनतम द्वितीय श्रेणी प्राप्त की हो।
10	योग प्रमाण-पत्र	1 वर्ष	इण्टरमिडिएट, विद्याविनोद या समकक्ष
11	अंग्रेजी में दक्षता प्रमाण-पत्र, पाठ्यक्रम	3 मास	इण्टरमिडिएट (अंग्रेजी) स्तर की लिखित परीक्षा के आधार पर
12	संस्कृत "प्रवेश" प्रमाण-पत्र-पाठ्यक्रम	1 वर्ष	हाई स्कूल अथवा समकक्ष परीक्षा
13	संस्कृत "प्रवीण" प्रमाण-पत्र-पाठ्यक्रम	1 वर्ष	हाई स्कूल (संस्कृत) अथवा समकक्ष परीक्षा

1—सामान्य सूचना —

1—जूनियर रिसर्च फैलो के लिए जिन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण की है, अध्येतावृत्ति अनुदान आयोग के नियमानुसार दी जायेगी।

2—विद्याविनोद तथा अलंकार पाठ्यक्रमों में निःशुल्क शिक्षा तथा प्रत्येक छात्र को 60 रु० मासिक छात्रवृत्ति। एम०ए० (वैदिक साहित्य) में सभी छात्रों को 100 रु० मासिक तथा एम०ए० (दर्शन, संस्कृत) के छात्रों को 40 रु० मासिक योग्यता छात्रवृत्ति दी जायेगी।

3—अलंकार पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी छात्रायें प्रिन्सिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय 47 सेवक आश्रम रोड, देहरादून (द्वितीय परिसर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) से सम्पर्क करें।

4—सैनिक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कर्मचारी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा संचालित स्थानीय शिक्षा संस्थाओं के शिक्षक तथा मान्यता प्राप्त गुरुकुलों के स्थायी शिक्षक व्यक्तिगत रूप से एम०ए० तथा एम० एस-सी० (गणित) परीक्षा मे बैठ सकते हैं।

5—महिलायें व्यक्तिगत उम्मीदवार के रूप में एम०ए० (मनोविज्ञान) को छोड़ कर सभी विषय एम० एस-सी० केवल गणित तथा (पी०एच-डी०) वनस्पति, जीव विज्ञान तथा मनोविज्ञान को छोड़कर अन्य विषयों) के लिये आवेदन कर सकती है। महिलाओं के लिये किसी पाठ्यक्रम में नियमित प्रवेश की सुविधा नहीं है।

6—एम०ए० में प्रवेशार्थी छात्र/छात्राओं को जिन्होंने हाई स्कूल स्तर पर अंग्रेजी का अध्ययन नहीं किया, उन्हें अंग्रेजी प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा।

7—एन०सी०सी०, एन०एस०एस० तथा खेल/क्रिड़ा की समुचित व्यवस्था है।

8—अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों के लिये भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण।

2—प्रवेश प्रक्रिया :—

1—पाठ्यक्रम क्रम संख्या 3 तथा 8 में प्रवेश, योग्यता क्रम से किये जायेंगे। पाठ्यक्रम क्रम संख्या 9 में प्रवेश योग्यता क्रम तथा प्रवेश परीक्षा के आधार पर होगें। इन पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थियों का साक्षात्कार भी लिया जायेगा।

2—पी-एच०डी० के अतिरिक्त अन्य पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु विवरण पत्रिका तथा संक्षिप्त पाठ्यक्रम एवं आवेदन पत्र 10 रु० नकद देकर अथवा 15 रु० बैंकड्राफ्ट (कुलसचिव के पक्ष में भेज कर आचार्य, वेद/कला महाविद्यालय) कला विषयों के लिये तथा प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय) विज्ञान विषयों के लिये) अथवा कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं। पी-एच डी में पंजीकरण हेतु प्रवेश फार्म तथा नियमावली उपरोक्त प्रकार धनराशि भेजकर कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।

3—आवेदन पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि :— 20 जौलाई 1990

पी-एच०डी०-30 सितम्बर तथा 31 दिसम्बर 1990

(डा० वीरेन्द्र अरोड़ा) कुल सचिव

ओ३म् श नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शयोरभि स्रवन्तु न

॥17॥ य० 36/11 ॥

जल दिव्य गुणों के

—देवनारायण भारद्वाज

सब ओर नाथ हो कृपा साथ, मृदु जीवन-धन को बरसाओ।
अब और नहीं तुम तरसाओ, हे ईश्वर पानी बरसाओ॥

जल दिव्य गुणों के धारी हों
हम सबको ही हितकारी हों
दें हमको हर्ष अभीष्ट श्रेष्ठ
जग जीवन के सुखकारी हों।

बस एक दिशा दो दिशा नहीं, जल सभी दिशाओं में आओ।
अब और नहीं तुम तरसाओ, हे ईश्वर पानी बरसाओ॥

जल को ही पीकर प्राण बचें
आचमन जगत निर्माण रचें
मानव पशु पादप सब प्राणी
इससे कृषि कर्म महान रचें।

भू अन्तस्तल में तब आओ जब सागर से तुम उड़ जाओ।
अब और नहीं तुम तरसाओ, हे ईश्वर पानी बरसाओ॥

यदि प्यास नहीं मिट पायेगी
जीवन कालिका मिट जायेगी
जल मधुर प्रदान करो प्यारे
यह संस्कृति तब बच पायेगी।

हर ओर देव तुम मुस्काओ, प्रभु जीवन रस को सरसाओ।
अब और नहीं तुम तरसाओ, हे ईश्वर पानी बरसाओ॥

—एफ-42, मानसरोवर कालोनी,
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001.

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

इन सैट-एक डी-सफल प्रक्षेपण



भारतीय वैज्ञानिकों की ऐतिहासिक सफलता का प्रतीक

भारतीय अन्तरिक्ष अनुसधान सगठन और फोर्ड एरोस्पेस कारपोरेशन के वैज्ञानिको के संयुक्त दल ने इन सैट-एक डी को सफलतापूर्वक भू-स्थैतिक कक्षा में पहुचा दिया। वैज्ञानिकों ने हसन मे मुख्य नियत्रण सुविधा से उपग्रह के सौर आवरण को खोल दिया। इस सम्पूर्ण कार्य मे केवल छः घन्टे का समय लगा। इनसैट-एक डी के पाँचों सौर पैनलों को खोलने मे भी सफलता मिल गयी है। यह प्रसन्नता की बात है कि उपग्रह की सभी कार्यप्रणालियाँ सामान्य रूप से काय कर रही है। उपग्रह को इस प्रकार स्थित किया गया है कि सौर पैनल सूय की ओर रहे जिससे की पूर्ण सौर ऊर्जा लगभग एक किलोवाट, नियमित रूप से प्राप्त की जा सके।

भारतीय सचार उपग्रह इनसैट एक-डी को 12 जून को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया था। इस उपग्रह को अमेरिका मे फ्लोरिडा स्थित केप केनेवरल से एक डेल्टा राकेट के द्वारा छोडा गया था। यह उपग्रह पृथ्वी से लगभग सवा दो सौ किलोमीटर की ऊँचाई पर पृथ्वी की कक्षा मे स्थापित है। इनसैट एक श्रृंखला का यह चौथा उपग्रह जुलाई के पहले सप्ताह मे पूरी तरह कार्य करना शुरू कर देगा।

इस इनसैट के सफल प्रक्षेपण से देश की वैज्ञानिक एव तकनीकी उपलब्धियो के प्रति राष्ट्रीय जागृति एव गौरव की भावना मे वृद्धि हुई है। इसकी आवश्यकता का आकलन इस बात से किया जा सकता है कि दर सचार और मौसम के वैज्ञानिक केवल इस लिए काम करते रहे क्योंकि इनसैट 1—'बी' अपनी आयु पूरी करने के बाद काम कर रहा था। इनसैट एक-ए और एक-सी तो काल बाह्य हो ही चुके थे और यदि 'एक-बी' काम न कर रहा हो तो भारी मूल्य चुकाकर हमे दूसरे देशों से सूचनाएँ लेनी पड़ती। तेरह साल पहले आन्ध्र मे तूफान आया था। उस समय दस हजार लोग मारे गए थे। उस समय तूफान की पूर्व सूचना पाने का हमारे पास कोई साधन न था। अब की बार तूफान आया। वैज्ञानिक तकनीकी उपलब्धियों के कारण हमें इसकी पूर्व जानकारी थी तो अबकी बार लाखो लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहले पहुँचा दिया गया।

यह इनसैट बन-डी-जहाजों की उडानों और खेती की समृद्धि के लिए मौसम सम्बन्धी जानकारी भेजेगा, करोडो भारतीयों को एक साथ दूरदर्शन क कार्यक्रम दिखाएगा तथा सुदूर एव भीतरी इलाकों को परस्पर दूरसचार से जोड़े रखेगा।

यह हमारे वैज्ञानिकों की गौरव पूर्ण उपलब्धि है जिससे राष्ट्र की समुन्नति परिलक्षित होती है।

—डा० धर्मपाल

नेपाल "हिन्दू-अधिराज्य" बना रहे

[कांची कामकोटि पीठम् के पूज्य जगद्गुरु शकराचार्य श्री स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज, गोरक्ष पीठाधीश्वर महत अवैद्यनाथ जी (ससद सदस्य), विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष श्री विष्णुहरि जी डालमिया, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती, बोध गया महाबोधि मन्दिर के भदन्त ज्ञानजगत जी, इन्टर नेशनल सिख ब्रदरहुड के अध्यक्ष बख्शी जगदेव सिंह जी तथा जैन मुनि गुलाबचन्द जी निर्मोही द्वारा 4 जून को दिया गया सयुक्त वक्तव्य]

नेपाल के मुसलमानों तथा ईसाइयो की ओर से लगातार इस बात के जो प्रयत्न हो रहे हैं कि वह देश हिन्दू अधिराज्य न रहे, उस सम्बन्ध में प्रकाशित हुए समाचारों से भारत के हिन्दुओं को बहुत क्षोभ हुआ है।

नेपाल ने कभी भी किसी धर्म के अनुयायियों के प्रति कोई भेदभाव नहीं बरता है। यद्यपि नेपाल हिन्दू अधिराज्य रहा है, इसमे रहने वाले ईसाइयों मुसलमानों तथा अन्य धर्मावलम्बियो को अपने-अपने विश्वास के अनुसार पूजा-पाठ करनेकी पूरी स्वतन्त्रता रही है।

ससार मे कई देश हैं जो इस्लामी राष्ट्र है या जहा उनके राष्ट्र का धर्म इस्लाम है। उनमे ऐसे अनेक देश हैं, जिनम हिन्दुओ को मन्दिर बनाने, धार्मिक साहित्य बाहर से मगवाने, धार्मिक प्रवचन करने तथा सार्वजनिक स्थानों पर या घरो के अन्दर भी अन्य धार्मिक गतिविधियाँ करने की अनुमति नही हैं। कई मुस्लिम देशो म हिन्दू मृतको के शव का दाह सस्कार नही करने दिया जाता। नेपाल के मुसलमानो को चाहिए कि नेपाल मे किसी भी प्रकार के परिवर्तन की माग करने से पहले वे मुस्लिम देशो मे हिन्दुओ के प्रति होने वाले भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाए।

ससार भर के करोडों हिन्दुओं के लिए नेपाल एक अनुपम राष्ट्र है। समस्त हिन्दू इस बात पर गर्व करते हैं कि ससार मे कम से कम एक ऐसा राष्ट्र है जो उसके सविधान के अनुसार हिन्दू अधिराज्य है। यदि नेपाल ने स्वय को धर्म-निरपेक्ष राज्य घोषित करना पसन्द किया तो वह अपनी वर्तमान प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति खो बैठेगा और इसके बदले उसे कुछ प्राप्त नहीं होगा।

नेपाल के तथा बाहर के देशों के मुस्लिम तथा ईसाई सगठन नेपाल पर इस बात का दबाव डाल रहे हैं कि वहां धर्मान्तिरण पर लगी रोक हटा दी जाय। यह रोक नेपाल में चिर काल से चली आ रही है, इसके होने पर भी ईसाई लोग अपनी जनसख्या को जो सन् 1950 मे 10 के लगभग थी अब बढ़ाकर 40000 से अधिक कर चुके हैं। यदि धर्मान्तिरण पर लगी वर्तमान रोक हटा दी गई तब वे लोग कहर ढा देंगे।

नेपाल में मुसलमानों की सख्या 1950 में कुल जनसख्या का लगभग 1 प्रतिशत थी, अब वह 4 प्रतिशत है। यह वृद्धि बाहर से बडे पैमाने पर हुई घुसपैठ के कारण विशेषत बगलादेश से आए बिहारी मुसलमानों के कारण हुई है।

यह सर्व विदित है कि ईसाई मिशनरियाँ गरीब तथा भोली-भाली अनपढ़ जनता को अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर उनका धर्मान्तिरण करने का प्रयत्न करती हैं। भारत के जिन भागों मे विशाल पैमाने पर धर्मान्तिरण हुए हैं, वहा कठिन परिस्थितियाँ पैदा हुई है जो देश की अखण्डता के लिए खतरा बन रही हैं। यदि नेपाल म मिशनरियों को धर्मान्तिरण की खुली छूट दी गई तो अन्तत-गत्वा नेपाल को भी भारत जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

गोहत्या पर प्रतिबन्ध नेपालियों के लिए धर्म सिद्धान्त की बात रही है। कृषि प्रधान देशों में गऊ का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दू गऊ का आदर धार्मिक आधार पर भी करते हैं। आशा है कि इस सम्बन्ध मे नेपाल के सविधान मे इस समय जो व्यवस्था है, आगे उसे कायम रखा जायेगा।

यदि नेपाल ने उस देश का अहित चाहने वाले तत्वों के प्रयासों का दृढ़ता से तथा साहसपूर्वक सामना किया तो भारत तथा अन्य देशों के हिन्दू नेपाल का एक जुट होकर भरपूर साथ देंगे। नेपाल देश अपने सभी लोगों के साथ, उनकी जाति या धर्म के आधार पर कोई भेदभाव किए बिना, न्यायोचित् अच्छा व्यवहार करता रहे, किन्तु उसे किसी वर्ग विशेष को अनुचित रूप से तुष्टि करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

भारत के हिन्दू सगठन नेपाल से आग्रह करते हैं कि जनता की इच्छाओं के अनुसार वहाँ जिस प्रकार का भी सविधान बने, नेपाल को 'हिन्दू अधिराज्य" बने रहना चाहिए तथा उसमे धर्मान्तिरण तथा गऊ वश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध जारी रहना चाहिए।

माँ मीरायती द्वारा वेदप्रचार

माँ मीरायति आर्यवान प्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार में रहती है। उनकी रुचि पठन-पाठन एव वेद प्रचार में है। वे गत लगभग 3० वर्षों से वाणी एव लेखनी के द्वारा आर्यसमाज एव वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे सलग्न हैं।

वे पिछले दिनो आर्यसमाज हरिद्वार आर्यसमाज ज्वालापुर आर्यसमाज रुड़की व्यास आश्रम, योगधाम, वेदमन्दिर ज्वालापुर, आर्यसमाज मॉडल टाउन दिल्ली जयपुर, अजमेर, माउण्ट आबू, आदि स्थानों पर वेदप्रचारार्थ गयीं।

22 मई से 25 मई तक आर्यसमाज हरिद्वार का वार्षिकोत्व हुआ। महिला सम्मेलन माँ मीरायति की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। माँ मीरायति को शॉल एव प्रशस्ति पत्र तथा दक्षिणा देकर सम्मानित भी किया गया।

उन्होंने इस वर्ष साधनापथ, पावनवाणी, दिव्य ज्योति, महर्षि दयानन्द, सुरक्षा नारी, श्रद्धानन्द की अमर कहानी का प्रण्यन भी किया।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह 18 मई से 20 मई तक जयपुर में सम्पन्न हुआ। माँ मीरायति ने महिला सम्मेलन की अध्यक्षता की।

दिवंगत आर्यश्रेष्ठी—

पुण्य तिथि, 26 जून पर विशेष

पडित गणपति शर्मा

—आचार्य क्षेमचद 'सुमन'

श्री शर्मा जी का जन्म राजस्थान प्रदेश के चूरू नामक नगर मे सन् 1873 में हुआ था। आपके पूर्वज जयपुर राज्य के सीकर नामक जिले के नानी ग्राम के निवासी थे। आपके पिता भानीराम वैद्य पाराशर गोत्रीय पारीक ब्राह्मण थे। वे चूरू मे पौरोहित्य कार्य के साथ-साथ चिकित्सा का कार्य भी किया करते थे। पण्डित गणपति शर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा चूरू मे ही उनके निरीक्षण मे हुई थी और फिर धीरे-धीरे उन्होने छोटी-सी अवस्था मे ही व्याकरण तथा साहित्य में अच्छी प्रवीणता प्राप्त कर ली थी। आप आर्य समाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अन्यतम शिष्य पडित कालूराम जी के उपदेशो को सुनकर आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रति अनुरक्त हुए थे। क्योंकि आपके पिता भी अनन्य आस्तिक तथा ईश्वर भक्त थे अत उनका प्रभाव पडित गणपति शर्मा के जीवन पर भी पडा था।

शर्मा जी की गणना आर्य समाज के प्रमुख वक्ताओं में की जाती थी। 'वेदों को अपौरुषेयता' और 'ईश्वर सिद्धि' आपके भाषणों के प्रमुख विषय थे। आपके पाण्डित्य-पूर्ण भाषणों को सुनकर बडे-से-बडे नास्तिक भी ईश्वर की सत्ता में विश्वास करने को विवश हो जाते थे। आपके अकाट्य तर्कों और प्रबल युक्तियों के समक्ष आपके विरोधी अपनी पराजय सहज भाव से स्वीकार कर लेते थे। आप कल्पना कीजिए कि उस युग में ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों के अभाव में 15-15 हजार श्रोताओं की मण्डली को घटो तक अपनी ओजस्वी भाषा के धाराप्रवाहिक भाषण से वे ऐसा मन्त्र-मुग्ध कर लेते थे कि उसे समय बीतने का पता ही न चलता था। आपकी प्रखर वाग्मिता और शास्त्रार्थ-पटुता की धाक थोड़े ही दिनो में देश व्यापी हो गई थी। बडे-बडे पण्डित, पादरी और मुल्ला आपके पाण्डित्य के समक्ष विनत हो जाते थे।

क्योंकि आप विचारों में आर्य समाजी थे अत कभी-कभी अन्य विधर्मी लोगों के अतिरिक्त आपको सनातनी पण्डितों से भी शास्त्रार्थ करने को विवश हो जाना पड जाता था। आपके ऐसे कई शास्त्रार्थ झालरा-पाटन, धार और देवास राज्य में हुए थे। अपनी इसी ललक को पूरा करने की दृष्टि से एक बार आप स्वामी दयानन्द सरस्वती के विद्वान शिष्य पण्डित ज्वालादत्त शर्मा को साथ लेकर काशी के सुप्रसिद्ध सनातन धर्मी पण्डित महामहोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री से शास्त्रार्थ करने के लिए वहाँ पहुँच गए थे। काशी जाने पर पता चला कि शास्त्री जी अपने गांव गए हुए हैं। फलस्वरूप आप उनके गाँव में ही जा पहुँचे और उनसे अपनी इच्छा प्रकट की। पण्डित शिवकुमार शास्त्री ने मूर्ति पूजा तथा श्राद्ध आदि पौराणिक विवादास्पद विषयों को छोडकर किसी और विषय पर शास्त्रार्थ करने की इच्छा व्यक्त की। परिणामस्वरूप शास्त्रार्थ तो नहीं हो सका, पर पण्डित गणपति शर्मा के वैदुष्य का सिक्का काशी के विद्वानों पर जम गया।

आपके द्वारा किये गए शास्त्रार्थों मे कश्मीर, रोहतक, कोटा और अजमेर के शास्त्रार्थ विशेष महत्व रखते हैं। सन् 1912 में स्वामी दर्शनानन्द और आपके बीच हुआ 'वृक्षों में जीव का सत' विषयक शास्त्रार्थ भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह शास्त्रार्थ गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालपुर के वार्षिक उत्सव के अवसर पर हुआ था और इस शास्त्रार्थ का विस्तृत विवरण प्रख्यात हिन्दी समीक्षक पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने अपने द्वारा सम्पादित 'भारतोदय' पत्र में प्रकाशित किया था। आपने प्राख्यात विद्वान् महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा पाण्डेय को भी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिक उत्सव पर शास्त्रार्थ के लिए आमन्त्रित किया था, किन्तु असमय में ही आपका देहावसान हो जाने के कारण यह शास्त्रार्थ न हो सका था। आपके द्वारा किये गए महत्वपूर्ण एव उल्लेखनीय शास्त्रार्थों मे झालावाड मे इटावा निवासी पण्डित भीमसेन शर्मा से हुआ शास्त्रार्थ भी प्रमुख है। कश्मीर में प्रसिद्ध ईसाई पादरी जानसन से किया गया शास्त्रार्थ भी अपनी विशिष्टता के लिए सदा याद किया जाता है। आपकी एक-मात्र कृति 'ईश्वर-भक्ति विषयक व्याख्यान' ही आजकल प्रकाशित रूप से उपलब्ध है।

जिन दिनों स्वामी दर्शनानन्द अजमेर में वहां के जैन विद्वानों से शास्त्रार्थ कर रहे थे तब स्वामी जी ने अपने सहयोग के लिए उनका स्मरण किया था। किन्तु खेद है कि आसामयिक देहावसान हो जाने के कारण आप वहाँ नही पहुच सके थे। आपके निधन पर प्रख्यात कवि श्री नाथूरामशकर शर्मा ने अपनी श्रद्धांजलि इस प्रकार अर्पित की थी

भारत का रत्न, भारत का बडभागी भक्त
शंकर प्रसिद्ध सिद्ध सागर सुमति का।

मोह तम हारी ज्ञान पूषण प्रताप ओज,
दूषण विहीण शिरोभूषण विरति का॥

लोक-हितकारी पुण्य कानन-विहारी वीर,
धीर धर्म धारी अधिकारी शुभ गति का।

देश लो विचित्र चित्र, बाँच लो चरित्र मित्र,
नाम लो पवित्र, स्वर्गगामी गणपति का॥

आपका असामयिक अवसान केवल 39 वर्ष की आयु मे 27 जून सन् 1912 को जगरावाँ (पंजाब) में हुआ था।

पुण्य तिथि, 14 जून पर विशेष—

श्री घनश्याम सिंह गुप्त

—आचार्य क्षेमचद 'सुमन'

श्री गुप्त का जन्म मध्यप्रदेश के छत्तीस गढ़ अचल के दुर्ग नामक नगर मे 22 दिसम्बर सन् 1885 मे हुआ था। आपके पूर्वज नागपुर के भोंसले सरदारों के प्रधान सूबेदार थे और उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध डटकर मोर्चा लिया था। आपने 20 वर्ष की छोटी-सी आयु में राबर्टसन कालेज जबलपुर के नियमित छात्र के रूप में बी॰ एस॰ सी॰ की परीक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण करके स्वर्ण-पदक प्राप्त किया था। बंग-भग के दिनो में आपने जहाँ ब्रिटिश सरकार की कार्यवाही का विरोध किया था वहाँ अनेक साथी छात्रों को भी उकसाया था और सन् 1907 में आपने कालेज में हड़ताल भी कर दी थी। आप छात्र-जीवन से ही देश की राजनीतिक हलचलों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे थे और प्राय सभी आन्दोलनों में आपने डटकर कार्य किया था। इसके लिए आपने अनेक बार कारावास की नृशस यातनाए भी भोगी थीं।

सन् 1923 में जब सी॰ पी॰ तथा बरार असेम्बली का निर्वाचन हुआ था। तब आप उसमें निर्विरोध निर्वाचित हुए थे। इसी प्रकार सन् 1926 में भी आपने अपने विरोधी प्रत्याशी को भारी बहुमत से हराया था। आप जहाँ सन् 1926 से सन् 1929 तक विधान सभा में कांग्रेस पार्टी के नेता रहे वहां स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त 'मध्यप्रदेश विधान सभा' के 15 वर्ष (सन् 1937 से 1952) तक अध्यक्ष भी रहे थे।

आपका जहाँ देश का राष्ट्रीय जागरण में प्रमुख योगदान था वहा सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्षेत्र में भी आपकी सेवायें उल्लेखनीय रही हैं। बी॰ एस॰ सी॰ की उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त आप कुछ दिन के लिए देश के उच्चकोटि के नेता और सुधारक महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के निमंत्रण पर उनकी शिक्षा सस्था 'गुरुकुल कांगड़ी' में भी विज्ञान के प्राध्यापक बनकर गए थे। अपने इस शिक्षण-काल में आप वहाँ के छात्रों में बहुत लोकप्रिय हो गए थे।

आपने जहाँ छत्तीसगढ़ की जनता को राष्ट्रीय क्षेत्र में अभिनन्दनीय सेवा की थी वहाँ सामाजिक उत्थान और शैक्षणिक जागृति की दिशा में पीछे नहीं रहे थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के अध्यक्ष के रूप में आपने जहाँ सारे प्रदेश का मार्ग-प्रदर्शन किया था वहाँ 'तुलाराम आर्य कन्या पाठशाला दुर्ग' के सचालन में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान था। आप जहाँ अनेक वर्ष तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' में मध्यप्रदेश की आर्य समाजों के प्रमुख प्रतिनिधि रहे वहाँ कुछ वर्ष तक उसके अध्यक्ष के रूप मे समस्त आर्य-जगत् का सफल नेतृत्व किया था। हिन्दी पत्र कारिता में 'समाचार-प्रेषण' करने वाली देश की अद्वितीय सस्था 'हिन्दुस्तान समाचार' के आप प्रथम अध्यक्ष रहे थे। जिन दिनों आप 'विधान निर्मात्री परिषद्' के सदस्य थे तब विधान के हिन्दी रूप के निर्माण के लिए जो समिति बनाई गई थी आप उसके भी सम्मानित सदस्य थे। आपके साथी अन्य सदस्यों मे सर्वश्री प्रो॰ सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, राहुल सांकृत्यायन, जयचन्द्र विद्यालंकार, मोतूरि सत्यनारायण तथा डॉ॰ रघुवीर आदि के नाम विशेष महत्व रखते हैं। जिन दिनों आप मध्यप्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष थे तब आपकी ही प्रेरणा पर डॉ॰ रघुवीर ने नागपुर मे रहकर 'हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली' के निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य किया था। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा निर्मित 'सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति' के भी अध्यक्ष थे, जिनके तत्वावधान में सन् 1957 से 1959 तक पजाब में 'हिन्दी सत्याग्रह' सचालित हुआ था।

आपका निधन 14 जून सन् 1976 को हुआ था।

राष्ट्रीय जागरण और महर्षि दयानन्द

—भगवान देव 'चैतन्य' एम० ए० साहित्यालकार

गुलामी से बडा अभिशाप कोई और नही हो सकता है। यह गुलामी ही समस्त दु खो का कारण है। वह गुलामी चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक किसी राष्ट्राध्यक्ष की हो या अन्य थोथी धार्मिक और सामाजिक मान्यताओ की। इन विभिन्न प्रकार की गुलामी की जजीरो को तोडकर मुक्त होना ही सबसे बडा वरदान है। जहा तक भारतवर्ष का प्रश्न है—अपने ज्ञान और शौर्य के कारण यह समस्त विश्व का गुरु रहा। इसे कभी चरमोत्कर्ष प्राप्त था। मगर ज्यो-ज्यो ज्ञान को झूठी मान्यताओं तथा खोखले आडम्बरो ने और शौर्य को आलस्य एव प्रमाद ने अपने पजो मे समेट लिया तभी से यह पतन के गर्त की ओर अग्रसर हुआ। एक समय वह भी आया कि राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता पूरी तरह छिन्न-भिन्न हो गई और इस राष्ट्र को परतन्त्रता के शिकजे मे जकड जाना पडा। मुगलो और अग्रेजो का शासन हमारी बची-खुची उत्कृष्ठ मान्यताओ और परम्पराओ को समाप्त करने के लिए काफी था। इस राष्ट्र के मूल निवासी की स्थिति निरन्तर गुलामी का बोझ ढोते ढोते एक ऐसे कीडे के सदृश हो गई जिसकी रीढ की हड्डी ही न हो। खडा होना तो दूर रहा वह तो सही ढंग से रेंगने के योग्य भी नही रहा था। बीच-बीच मे भारतभूमि पर इक्के-दुक्के लीक से हटकर वीर पुरुष भी हुए जिन्होने यदा-कदा इस परिस्थिति से उबारने का प्रयास भी किया मगर राष्ट्र और राष्ट्र के नागरिको को ऐसी पतनावस्था स ऊपर उठाने के लिए किसी ढुल-मुल निति की नहीं बल्कि एक विधिवत् योजना की आवश्यकता थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती एक ऐसे ही दिव्य महापुरुष थे जिन्होने बडी गहराई से भारत की इस पतनावस्था का अध्ययन करके कारगर उपाय भी हमारे समक्ष रखे। उन्होने अपनी दृष्टि बहुत पीछे दौडाई और पाया कि हमारे पतन का आरम्भ महाभारत के अपार नरसहार से हुआ क्योकि उस समय बडे बडे विद्वान और शूरवीर मार गए' जिनके अभाव मे हमारे धर्म ने धीरे धीरे ढोग की चादर ओढ ली। धर्म से नैतिकता और सच्चरित्रता का निष्कासन होकर उसमे आडम्बर एव दिखावे का समावेश हुआ। जब व्यक्ति इन गुणो से विहीन हो जाता है तो व्यक्तिगत और सामाजिक पतन होना स्वाभाविक है। इसी पतन ने धीरे-धीरे ऐसा दीन-हीन बना दिया कि हम अपना सर्वस्व खोकर मानो अपने ही कन्धो पर अपनी ही लाश लिए नाम मात्र का जीवन जीने पर बाध्य हो गए। महर्षि को जब कारण का पता लगा तो वे इसके निवारण के लिए मन, वचन और कर्म से जुट गए। उन्होने सर्वप्रथम इस राष्ट्र की प्रगाढ निद्रा मे सोई हुई जनता को जगाने का सकल्प लिया। धर्म ग्रन्थ के आचार-व्यवहार से जुडी एक कडी है जब उसकी चतुर्थिक उन्नति का आधार है। उसी टूटी कडी को कसने का बीडा महर्षि दयानन्द ने उठाया और राष्ट्र मे एक नई चेतनता की लहर पैदा की। एक कुशल चिकित्सक के समान उन्होने पहले रोग के कारण का पता लगाया और फिर उपचार मे जुट गए। महर्षि द्वारा प्रस्तुत यह धार्मिक जागरण ही राष्ट्रीय जागरण का सबसे प्रमुख कारण बना। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जी के शब्दो मे "महर्षि दयानन्द उन महापुरुषो मे से थे जिन्होने आधुनिक भारत का निर्माण किया। उनके आचार सम्बन्धी पुर्नरुत्थान के कारण ही यह सभव हुआ।" नेताजी के इन शब्दो मे वह सच्चाई है जिसे आज विस्मृत किया जा रहा है। धर्म व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के प्रत्येक क्रिया-कलाप का एक अभिन्न अग है। इसीलिए इसके पुर्नरुत्थान ने जागरण के चतुर्दिक दरवाजे खोल दिए। महर्षि दयानन्द के इसी प्रयास ने उन्हे समाज-सुधारको की पक्ति मे सर्वोच्च स्थान प्रदान किया। समाज और राष्ट्र के लिए उनके योगदान का योगी अरविन्द के इन शब्दो से पता चलता है—"यदि सभी समाज सुधारको को पर्वत श्रृखलाए मान लिया जाए तो दयानन्द समस्त गिरि शिखरों के मध्य एक ऐसे सर्वोच्च शिखर है जो अपनी दिव्यता एव भव्यता के कारण अपने आप मे ज्योतिर्निमंय है और चहुँ ओर प्रकाश बिकीर्ण कर रहा है।"

महर्षि ने केवल छुट-पुट सुधार नही किया बल्कि उनकी दृष्टि भारतीय जर्जर समाज के अमूलचूल परिवर्तन पर थी सन् 1857 की सैनिक क्रांति म इनकी सक्रिय भूमिका रही है इस बात के अब तक पर्याप्त प्रमाण मिल चुके हैं। यह ठीक है कि समय से पूर्व ही इस क्रान्ति का प्रस्फुटन हो जाने तथा अपने ही भीतर के कुछ राष्टद्रोही गद्दारों के कारण यह क्राति असफल रही मगर महर्षि दयानन्द इस असफलता से निराश व हताश नही हुए, बल्कि विधिवत दुगने उत्साह से वे कार्य क्षेत्र मे कूद पडे। उनकी कार्यपद्धति बहुमुखी थी। उन्होने धार्मिक जगत मे तहलका मचा दिया। भाग्य क भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठे अकर्मण्य लोगों को उन्होंने कर्मवाद का पाठ पढाकर अगडाई लेने पर बाध्य किया। केवल अपनी मुक्ति के लिए जगलो की राह पकडने वाले ब्रह्मवादियो के समक्ष उन्होने त्रैतवाद का अमर वैदिक उपदेश रखा कि परमात्मा जीवात्मा और प्रकृति ये तीन अनादि तत्व हैं। जीवात्मा परमात्मा का अश नही बल्कि वह कर्म करने मे स्वतन्त्र है। व्यक्ति चाहे तो अपने लिए स्वय स्वर्ग का निर्माण कर सकता है। उन्होने अध्यात्मिकता एव भौतिकता का समन्वय करके एक सर्वसमर्थ्य वैदिक धर्म को हमारे समक्ष रखा। पण्डे-पुजारी चौंके मगर महर्षि ने सभी कुरीतियो और कुनीतियो को उखाड फेंका। उनके जीवन का एक-एक क्षण राष्ट्र और समाज को समर्पित था इसके लिए उन्हें बडे से बडा कष्ट सहना पडा मगर वे अपने जीवन तक की परवाह किए बिना निरन्तर उन बुराइयो को जडमूल से उखाडने के लिए जूझते रहे जिन्होने हम पशु बना रखा था। पोगापन्थियो के चगुल मे फसकर धर्म अपने वास्तविक स्वरूप और बुद्धिवाद को खो चुका था। महर्षिने विज्ञान और बुद्धिवाद का इसमे पुन समावेस करके एक नई दिशा दी। जड मूर्ति के समक्ष आखें बन्द करके बैठे लागो को उन्होने चेतनता का वह अमर सन्देश दिया। कि निराश और हताश भारतीय जनता अपनी रीढ की हड्डी मे हलचल अनुभव करने लगी तथा कलान्तर मे धीरे-धीरे कमर कसकर हर स्थिति मे जूझने के लिए तैयार हो गई।

डा० पट्टभि सीतारमैया अपने कांग्रेस के इतिहास मे लिखते हैं—"स्वतन्त्रता सग्राम मे 85 प्रतिशत से अधिक आर्य समाजियो ने अपना बलिदान दिया है।' यही नही लोकमान्य तिलक का कथन है—"दयानन्द स्वराज्य के प्रथम सन्देश वाहक थे।" इसी बात को दादा भाई नौरोजी इस प्रकार कहते हैं—'मुझे स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो से स्वराज्य की लडाई मे बडी प्रेरणा मिलती है।' महर्षि दयानन्द मे राष्ट्र-प्रेम कूट-कूटकर भरा हुआ था। उन्होने वाइसराय नार्थब्रुक को साफ शब्दो मे कहा था कि "मैं नित्य प्रात साय परमेश्वर से प्रार्थना करता हू कि मेरा देश पराई दासता से मुक्त हो।" अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे इन्होने स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि बताया। उनके द्वारा स्थापित "आर्यसमाज' उन दिनो स्वतन्त्रता सग्रामियो का पर्यायवाची बन गया था। एक सुप्रसिद्ध अग्रेज ने लिखा है—"किसी भी आर्यसमाजी की खाल को खुरचकर देखो तो अन्दर छिपा हुआ क्रातिकारी देश भक्त दयानन्द दिखाई देगा।" चाहे वह राष्ट्रीय क्रान्ति हो, सामाजिक क्रान्ति हो या धार्मिक क्रान्ति हो, उसके पीछे महर्षि दयानन्द का तेज और तप कार्य कर रहा था। राष्ट्रीय जागरण के सभी पहलुओ की पृष्टभूमि उन्होंने कटटरता के साथ तैयार की और उसे कार्यरूप भी दिया। सरदार पटेल जी ने इसी भाव को इस प्रकार व्यक्त किया है—'मेरी दृष्टि मे वे सच्चे राजनीतिज्ञ थे। चालीस वर्षों से कांग्रेस का जो कार्यक्रम रहा है वे सब कार्य साठ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने देश के लिए रखा था। सारे देश मे एक भाषा, खादी, दलितोद्धार, स्वराज्य की घोषणा आदि सब दयानन्द ने देश को दिया।" महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुँमुखी जागरण के आद्यप्रवर्तक थे यह एक ध्रुव सत्य है।" भूतपूर्व लोकसभा अध्यक्ष अनन्त शयनम आयंगर ने क्या खूब कहा है।" गाँधी जी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे। वे हमारी राष्ट्रीय प्रवृतियो और स्वतन्त्रता आन्दोलन के आद्य प्रवर्तक थे।

—190/एस-3 सुन्दरनगर (हि प्र)—174402

दो कवित्त

(1)

सर्वधर्म भावना की घोषणाये गुजित सी,
एकता और सगठन की बात समझते हैं।
किन्तु रथ यात्रा न निर्विघ्न हो पाई,
आर्यजन आहत और मूक चहु पाते हैं।
लुप्त हुए हजरत के बाल को स्वदेश मे ही,
आकाश-पाताल, एक करवाते हैं।
सर्वधर्म भावना की घोर यह बिम्डवना सी,
अपनी ही पुण्यभू, न बोल कुछ पाते हैं।

(2)

बलिदान पूर्व को मनाते, लीक पीटते हैं,
और बलिदानियो को याद कर जाते हैं।
डायर विदेशी शत्रु था, यह सभी जानकर भी,
देशद्रोहिता को अपने देश मे बढाते हैं।
अग भारती का काटने को रक्तपात किया,
प्रजा की सुरक्षा छोड उसको मिटाते हैं।
कहने को मानव हैं, पशु से भी दीन-हीन,
नाम के विरुद्ध हर कर्म दर्शाते हैं

—डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली।

जन्म दिवस, 26 जून पर विशेष

कुंवर चाँदकरण शर्मा

क्षेमचन्द 'सुमन'

श्री शारदा जी का जन्म 26 जून सन् 1888 को राजस्थान के अजमेर नामक नगर के एक प्रख्यात माहेश्वरी वैश्य परिवार मे हुआ था। आपके पारिवारिकजन मूलत डीडवाना के निवासी थे, जो मेडता के निकट आलानियावास नामक ग्राम मे रहने लगे थे। वहाँ से ही आपके पितामह रामरतन शारदा अजमेर जाकर वहा के मदारगेट के भीतर वाले 'सराय गणपतपुरा' नामक मोहल्ले मे जाकर स्थाई रूप से बस गये थे। आपके पिता आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित 'परोपकारिणी सभा' और उसके 'वैदिक प्रेस' के प्रमुख अधिकारी थे अत श्री चाँदकरण शारदा उनके पास आने वाली पत्र-पत्रिकाओ को पढकर ही साहित्य की ओर अग्रसर हुए थे। जब आप सन् 1906 मे मैट्रिक मे पढते थे तब अपने अन्य सहपाठी छात्रो के सहयोग से आपने एक 'वाचनालय' की स्थापना भी की थी। प्रयाग विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त आपने गवनमेंट कालेज अजमेर से सन् 1910 मे बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इस परीक्षा में सर्वाधिक अक प्राप्त करने के कारण आपको कालेज की ओर से 'कर्नल पिन्हे स्वर्ण पदक' भी प्रदान किया गया था।

क्योंकि उन दिनो अजमेर में स्नातकोत्तर स्तर के अध्ययन की कोई व्यवस्था नहीं थी अत आपने आगरा आकर एम० ए० की कक्षाओं मे प्रवेश ले लिया। अपने इस अध्ययन-काल में आपने नगर की 'आर्यमित्र सभा' नामक सामाजिक सस्था की सदस्यता स्वीकार कर ली और उसके माध्यम से आपके मानस में 'वैदिक धर्म' और 'आर्य सस्कृति' के प्रति अनन्य अनुराग उत्पन्न हो गया। पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण आपने इस सस्था के माध्यम से नगर के अनेक युवकों को आर्यसमाज के सुधार वादी आन्दोलन की ओर सहज ही आकर्षित कर लिया था। एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त आप वहाँ से ही एल एल० बी० की परीक्षा देकर अजमेर चले गए और वकालत को अपने व्यवसाय के रूप में अपना लिया।

वकालत करते हुए आपने समाज-सेवा के विभिन्न क्षेत्रों मे भी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और थोडे ही समय मे नगर मे आपका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान बन गया। सन् 1910 मे जब प्रयाग मे सर विलियम वेडर बर्न की अध्यक्षता मे भारतीय राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) का पच्चीसवा अधिवेशन हुआ था तब आप उसमे उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए थे। इसके उपरान्त आप न केवल अजमेर, मध्यभारत और राजस्थान की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के कई वर्ष तक अध्यक्ष रहे, प्रत्युत अमृतसर, दिल्ली, बम्बई तथा कलकत्ता आदि नगरो मे हुए काग्रेस के अनेक वार्षिक अधिवेशनों मे भी आपने सक्रिय रूप से भाग लिया था। सन् 1921-22 के असहयोग आन्दोलन मे भी आप पीछे नहीं रहे और अपनी अच्छी चलती हुई 'वकालत' को छोड़कर 6 मास का कारावास भी भोगा। स्वदेशी वस्तुओ के व्यवहार और प्रचार की दिशा मे भी आपका अनन्य योगदान रहा था। प्रातीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहने के अतिरिक्त आप कई वर्ष तक अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के भी सदस्य रहे थे। श्रीमती एनी बेसेण्ट के द्वारा सचालित 'होमरूल लीग' की विभिन्न प्रवृत्तियो मे भी आपका सक्रिय सहयोग रहा था।

आपका विवाह आर्यसमाज के प्रख्यात नेता शिक्षा शास्त्री और दार्शनिक मास्टर आत्माराम अमृतसरी की सुशिक्षित पुत्री श्रीमती सुखदादेवी से 27 जून सन् 1917 को हुआ था। इस परिवार के सम्पर्क ने श्री शारदा के व्यक्तित्व मे और भी प्रखरता उत्पन्न कर दी तथा आपका कार्य-क्षेत्र काग्रेस के साथ साथ आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन भी हो गया। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती सुखदा देवी ने जहाँ आपकी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे सच्चे सहयोगी के रूप मे भाग लिया वहाँ आर्यसमाज के द्वारा प्रवर्तित अनेक आन्दोलन में वे पीछे नहीं रहीं। आप महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन से इतने प्रभावित हो गए थे कि आपने विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त अपनी सभी डिग्रियां यह कहकर विश्वविद्यालय को लौटा दी थीं कि "इन गुलामी के चिन्हों को अपने नाम के साथ जोडे रखना मैं राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतिकूल समझता हू।" आपका यह पत्र श्री मोतीलाल नेहरू के सरक्षण मे प्रयाग से प्रकाशित होने वाले अग्रेजी के दैनिक पत्र 'दि इण्डिपेण्डेण्ट' के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित हुआ था। आपने जहां कांग्रेस के माध्यम से राजस्थान के सभी देशी राज्यों में अभूतपूर्व जागृति की थी वहां आर्यसमाज के सुधारवादी आन्दोलन मे भी आपका अनन्य योगदान रहा था। इस सन्दर्भ में आपका देश के अनेक उच्च-कोटि के नेताओं से अत्यन्त निकट का सम्पर्क हो गया था। देशी राज्यों में राजनीतिक जागृति उत्पन्न करने के पावन उद्देश्य से आपने सर्वश्री गणेशशकर विद्यार्थी, विजय सिंह 'पथिक' और जमनालाल बजाज के सहयोग से दिल्ली के चाँदनी चौक बाजार के 'मारवाडी पुस्तकालय' में राजपूताना मध्यभारत सभा' की स्थापना की थी, जिसके माध्यम से आपने देशी राज्यों की प्रजा की राजनीतिक आशाओं-आकांक्षाओं की पूर्ति करने का साहसिक अभियान चलाया था।

जब पण्डित जवाहरलाल नेहरू के प्रयास से 'अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्' की स्थापना हुई तो आपको उसकी शाखा 'मारवाड प्रजा परिषद्' का अध्यक्ष बनाया गया। आपके साथ मन्त्री के रूप में लोकनायक श्री जयनारायण व्यास ने कार्य किया था। जब सन् 1933 मे 'दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी' का उत्सव अजमेर मे मनाया गया था तब उस अवसर पर आयोजित 'प्रवासी सम्मेलन' की अध्यक्षता आपने ही की थी। 'परोपकारिणी सभा' की अनेक प्रवृत्तियो से सम्बद्ध होने के साथ-साथ आप 'आर्य प्रतिनिधि सभा' राजस्थान व मालवा' तथा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' से भी यावज्जीवन जुडे रहे और उनके विभिन्न पदो पर रहकर समाज की सेवा की। हैदराबाद (दक्षिण) मे वहा के निजाम द्वारा आर्यसमाज के कार्यों में डाली जाने वाली बाधाओं के निराकरण के लिए जब आर्यसमाज की ओर से सन् 1939 में 'आर्य सत्याग्रह' प्रारम्भ किया गया तब आप उसके 'द्वितीय सर्वाधिकारी' बनाए गए थे। इस सत्याग्रह के 'प्रथम सर्वाधिकारी' आर्यजगत् के प्रख्यात् नेता महात्मा नारायण स्वामी थे। 'सत्यार्थ प्रकाश' के 'चौदहवें समुल्लास' पर प्रतिबन्ध लगाने के विरोध मे जब सिन्ध में सत्याग्रह करने की घोषणा हुई तब भी आप महात्मा नारायण स्वामी, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, लाला खुशहालचन्द 'खुरसन्द' (बाद में आनन्द स्वामी) तथा स्वामी अभेदानन्द आदि आर्य नेताओं के साथ कराची गए थे। इसी प्रकार जब पजाब मे राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रतिष्ठित कराने की दिशा में आर्यसमाज की ओर से अभियान चलाया गया तब भी आप पीछे नही रहे थे। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज की विभिन्न सस्थाओं के सचालन तथा सवर्धन मे भी आपका प्रशसनीय सहयोग सदैव बना रहता था। जब महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म-भूमि टकारा' मे एक 'स्मारक ट्रस्ट का निर्माण सन् 1951 में किया गया तब आप उसके भी मन्त्री चुने गये थे। इस सम्बन्ध में ट्रस्ट' की आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए आप धन-सग्रहार्थ दक्षिण अफ्रीका भी गए थे। अपने जीवन के उत्तरार्ध में आपने सन्यास ग्रहण करके अपना नाम 'स्वामी चन्द्रानन्द' रख लिया था।

आप जहाँ कुशल सगठन, अद्भुत समाज-सुधारक और दूरदर्शी नेता थे वहाँ आपने अपनी लेखनी के द्वारा भी साहित्य और समाज की अभिनन्दनीय सेवा की थी। आर्य जगत् की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे प्रेरणाप्रद लेखादि लिखने के अतिरिक्त आपने राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार मे भी अत्यन्त उल्लेखनीय कार्य किया था। आप अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से सचालित हिन्दी परीक्षाओ के भी लगभग 20 वर्ष तक अजमेर केन्द्र के सचालक रहे थे। आपकी यह धारणा थी कि इस समय तो सबसे पहले जनता के सामने दो ही बातें रखनी चाहिएँ—

एक तो 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' का सारे देश मे प्रचार हो और दूसरे वह कचहरियो और शासकीय कार्यों की भाषा होकर शिक्षा माध्यम भी बने। आपने यावज्जीवन हिन्दी की सेवा के लिए अथक प्रयास किया और अपनी लेखनी से अनेक ग्रथ-रत्न प्रस्तुत किये। आपके द्वारा लिखित ग्रथों मे 'कालेज होस्टल', आर्यसमाज और असहयोग', 'माडरेटों की पोल', 'दलितोद्धार', 'शुद्धि', 'शुद्धिचन्द्रोदय', विधवा विवाह करो', शारदा एक्ट', 'हिन्दू सगठन', 'सन्ध्या', 'सृष्टि की कहानी' तथा 'नोआखाली का भीषण हत्याकाण्ड' आदि उल्लेख्य हैं। आप अपनी 'आत्म कथा' तथा 'दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के स्मरण' भी लिखना चाहते थे। खेद है कि आप अपनी इस इच्छा को पूर्ण नही कर सके। पत्रकार के रूप मे भी आपने हिन्दी की प्रशंसनीय सेवाएँ की थी। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा' के मुखपत्र साप्ताहिक 'आर्य मार्तण्ड' का आपने अनेक वर्ष तक सम्पादन किया था। आपके सम्पादन काल में प्रकाशित उसके अनेक विशेषांक आपकी ऐसी प्रतिभा तथा योग्यता के उत्कृष्ट प्रमाण हैं। इस उपलक्ष्य में आपका अभिनन्दन भी किया गया था। आपने अजमेर में नारी शिक्षा की प्रबल समर्थिका श्रीमती गुलाब देवी 'चाची जी' को समर्पित किये गए अभिनन्दन ग्रथ का सम्पादन भी किया था। आप अनेक वर्ष तक 'अजमेर पत्र-कार परिषद् के अध्यक्ष भी रहे थे।

आपका निधन 4 नवम्बर सन् 1957 को हुआ।

वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न—

आर्यसमाज पखा रोड 'सी' ब्लाक

सी-3 पार्क, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

प्रधान—श्री विद्यासागर मदान
मन्त्री—वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री हरिकृष्ण लाल गुलाटी

आर्यसमाज गुड़गांव छावनी

जैकबपुरा, गुड़गांव (हरियाणा)—122001

प्रधान—श्री हिम्मत राय
मन्त्री—श्री पदम चन्द आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री जगदीश चन्द्र आर्य

गुरुकुल होशंगाबाद में—

आर्यवीर दल शिविर का समापन

विगत दिनों गुरुकुल होशंगाबाद मे चल रहे आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० के अन्तर्गत आर्य वीर दल के शिविर का समापन समारोह श्री सीताराम शर्मा विधायक इटारसी की अध्यक्षता मे तथा सम्मानीय श्री ब्रजमोहन मिश्रा अध्यक्ष विधान सभा (म० प्र०) के मुख्य आतिथ्य मे सम्पन्न हुआ।

पूरे प्रदेश से लगभग एक सौ आर्य वीरो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी श्री रमेशचन्द्र जी, श्री गुप्ताजी, माता कौशल्या देवी, मावजी भाई भानुशाली, मधुकर हर्णेजी विधायक होशंगाबाद ने समारोह मे उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का सचालन लक्ष्मीनारायण भार्गव मन्त्री आर्य समाज बम्बवा ने किया।

श्री निशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय

अयोध्या (फैजाबाद) में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान की पावन नगरी अयोध्या के निकट स्थित आर्ष प्रणाली पर सचालित श्री निशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या मे नवीन ब्रह्मचारियों की प्रवेश परीक्षा 8, 15, 22 जुलाई 1990 ई० को होगी।

गुरुकुल मे वेद-वेदागों के साथ ही सस्कृत, हिन्दी, विज्ञान, सामाजिक विषय, इतिहास, अर्थशास्त्र, अग्रेजी आदि विषयो का कक्षा 1 से 16 तक सुयोग्य अध्यापको द्वारा शिक्षण की व्यवस्था है। प्रवेशिका से आचार्य तक "सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय" वाराणसी से "क" वर्गीय मान्यता प्राप्त है।

अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता से पत्र व्यवहार करें तथा सक्षिप्त नियमावली मगायें।

आर्यसमाज गोविन्द भवन

दयानन्द वाटिका, सब्जी मण्डी दिल्ली 6

प्रधान—श्री इन्द्रजीत गांधी

मन्त्री—श्री अजीत कुमार मदान

कोषाध्यक्ष—श्री रविन्द्र नाथ धर

आर्यसमाज विश्वेश्वर पुरम

हीरक जयन्ती समारोह सम्पन्न

दिनांक 7, 8 एव 9 अप्रैल 1990 को आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानन्द भवन, विश्वेश्वरपुरम बेगलूर की स्थापना की हीरक जयन्ती का आर्यसमाज एव कर्नाटक आर्यप्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे स्थानीय स्वामी श्रद्धानन्द भवन मे समारोहपूर्वक मनाया गया।

तीन दिन चले इस उत्सव मे विद्वत सम्मेलन, धर्मरक्षा सम्मेलन, युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, आर्य महा सम्मेलन एव आर्यसमाज के पदाधिकारियो का सम्मेलन आयोजित किये गये।

प्रथम दिन मध्याह्न, आर्यसमाज से एक भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। यह जुलूस विश्वेश्वरपुरम से प्रारम्भ होकर, बसवनगुडी के गान्धी बाजार होता हुआ, शकरपुरम एव चामराजपेठ के मुख्य मार्गों से गुजर कर वापस श्रद्धानन्द भवन पहुँचा।

दूसरे दिन, अर्थात् दिनाक 8 अप्रैल 1990 को 'सत्यार्थ प्रकाश' के नूतन प्रथम कन्नड सस्करण का ग्रन्थ-विमोचन कर्नाटक उच्च न्यायालय के सेवा-निवृत्त मुख्य न्यायधीश माननीय श्री डी एम चन्द्रशेखर ने किया।

इसके पूर्व कर्नाटक के दो वैदिक विद्वान् प० सुधाकर चतुर्वेदी (90) एव प० उपेन्द्र भूपाल (60) को, उनके द्वारा कन्नड भाषा मे वैदिक साहित्य की वृद्धि सम्बन्धी सेवाओ के कारण सम्मानित किया गया।

तीसरे दिन अर्थात दिनांक 9 अप्रैल 1990 को 'काशी शास्त्रार्थ' के प्रथम कन्नड सस्करण का ग्रन्थ-विमोचन अबोहर (पजाब) के प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा किया गया।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१

R N No 32387/ 7 Post in N D P S O on 21, 22 6 1990 Licensed to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

सम्पादक के नाम पत्र

चेतावनी

जब तक इस देश का बहुसंख्यक हिन्दू इस देश का मूल समस्याओ की ओर ध्यान नही देगा चाहे कितने ही हिन्दु राजनैतिक सामाजिक व धार्मिक दल हो तब तक इस देश के हिन्दु अनाथ और परेशान ही रहगा चाहे किसी भी दल की सरकार सत्ता मे हो।

• अलगाववाद

जिसके कारण आज सारे प्रदेश केन्द्र से अलग तथा विशेष अधिकार माग रहे हैं।

कश्मीर की धारा 370 जिसके कारण कश्मीर एक छोटा पाकिस्तान बन गया है। इसी कारण पजाब और सभी प्रदेशो मे अशान्ति व झगडे हैं।

देश के बहुमत को अल्पमत करने की साजिश—

मुसलमानों को 4 विवाह करने की छूट देकर बहुमत मे लाना, तथा केशधारी हिन्दू (सिख) को तीन फुट की कृपाण रखने की छूट देना।

• आरक्षण के नाम पर हिन्दुओं को बांटकर अल्पमत करना—

हमारे हिन्दु भाइयो को हरिजन कहकर विशेषाधिकार देना और अब तो उन्हे धर्म परिवर्तन के बाद भी सुविधायें देते रहना मानकर—हिन्दुओ को अल्पमत में लाना सुनिश्चित कर लिया है।

भाषा के नाम पर झगडे —

सभी प्रदेशो की भाषाओ को अलग-अलग रखने के लिए सभी प्रदेशो की भाषाओ की लिपी एक न होना। यदि सभी भाषाओ की लिपि एक, जो देवनागरी है, कर दें तो भाषा के नाम पर झगडे समाप्त हो सकते हैं। जैसे—योरुप, चीन, रूस मे सभी भाषाओ की लिपी एक है। यहाँ देवनागरी लिपी इसका स्थान ले सकती है।

धर्म निर्पेक्ष के नाम पर धोखा—

सरकार धर्मनिर्पेक्ष होने का दावा करती है किन्तु अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक शब्दो का प्रयोग कर इनके लिए अलग-अलग सुविधायें या कानून बनाती है जैसे—हिन्दुकोड बिल जो केवल हिन्दुओ पर ही लागू है इसी प्रकार गरीब हिन्दुओं को सहायता न देकर, जाति-विशेष को अधिकाधिक सहायता और सुविधायें देना।

जब तक ये अनावश्यक है प्रावधान बने रहेंगे, भ्रष्टाचार व काला धन कभी भी समाप्त नहीं होगा। जब तक ये 6 कारण हैं, देश मे अशान्ति, मारकाट, झगडे भ्रष्टाचार बढता ही रहेगा।

—[illegible]

3314-15, बीडनपुरा, करौलबाग, दिल्ली-5

'ब्रह्म'—वैशाख'२०४६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
ट्रिमस आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी, मौजपुर दिल्ली-५३ मे मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १२ अंक ३६ | रविवार १ जुलाई १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१ १५०

स्वामी वेदर्षि व्यास योगी का सार्वजनिक अभिनन्दन

चण्डीगढ, 3 जून । चण्डीगढ के सभी आर्य समाजो की ओर से विश्व वेद परिषद के तत्वावधान मे स्वामी वेदर्षि व्यास योगी का अभिनन्दन किया गया। वैदिक विद्वान आचार्य विश्वश्रवा व्यास "वेदाचार्य" ने पिछले दिनो अमेरिका मे सन्यास ग्रहण किया था। उनका परिवर्तित नाम स्वामी वेदर्षि व्यास योगी है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे देश देशान्तर तथा भारतवर्ष की स्थिति पर प्रकाश डाला और यह बताया कि अब तक आर्य समाज ने क्या किया अब क्या कर रहा है और अब क्या करने का प्रोग्राम है। इन विषयो पर बहुत प्रभावी ढग से स्वामी जी का भाषण हुआ।

डा० भवानीलाल भारतीय ने आचार्य जी के अभिनन्दन समारोह म उद्घाटन भाषण देते हुए आचार्य जी के वैदिक साहित्य क अपूर्व पाण्डित्य, ऋषि दयानन्द मे भक्ति और स्वामी जी की प्रत्येक बात के समर्थन की आलौकिक प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशसा की।

आचार्य जी ने अपने डेढ घण्टे के विस्तृत भाषण म अनेक वैदिक समस्याओ का समाधन किया और बताया कि मेरे वेद गुरू पडित मधुसूदन ओझा (जयपुर) ने मुझे प्रेम पूर्वक समझाया कि पुराणो मे आकाश और धरती का इतिहास मिला हुआ लिया है, आकाश का इतिहास अलग है धरती का इतिहास अलग है। आकाश के गौतम अहिल्या और है धरती के गौतम अहिल्या और हैं। इस प्रकार धरती के वशिष्ट और हैं और वेद म जिन विशिष्ट का वणन है वे और हैं। वेद की अयोध्या नगरी दूसरी है धरती की अयोध्या नगरी दूसरी है। वेद की गगा जमुना, सरस्वती शरीर के अन्दर की इडा, पिंगला सुषुम्णा नाडिया है और धरती का गगा जमुना सरस्वती और हैं। सवत्र नाम की समानता है। अपने भाषण के अन्त म आचाय जी न आर्य जगत से अपील की कि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व म समाप्त आय जगत कार्य करे। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का सारा जीवन आय समाज मे ही बीता है उनको आय समाज का चलाने का बहुत पुराना अनुभव है। और अब व घर द्वार छोडकर सन्यासी बनकर 24 घण्टे सावदेशिक सभा म रहकर आय समाज का ही काम करते हैं। आर्य समाज मे ऐसा दूसरा व्यक्ति और कौन है अत मैं आर्य जगत से अनुरोध करता हू कि उनके नेतृत्व म काम करें और वे सबका साथ लेकर चलें। अन्त म सबको धन्यवाद के साथ आचार्य जी का अभिनन्दन समारोह समाप्त हुआ।

जोधपुर मे—

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास की बैठक सम्पन्न

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास की बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव न्यास के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द स्मृति भवन रातानाडा जोधपुर मे 19 जून को सम्पन्न हुई। इस बैठक मे श्री प० बाल दिवाकर हस प्रधान-सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, श्री रतनलाल एडवोकेट कार्यकर्ता प्रधान न्यास, श्री रमेशचन्द्र भाटिया एव आर्य समाजो के अनेक प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास के विकास और सुरक्षा आदि के सन्दर्भ मे विस्तृत चर्चा हुई। बाहर दीवारी को ऊचा करने और अन्य विकास दायित्वो को सम्हालने हेतु एक उप-समिति का गठन किया गया।

चौपासनी मार्ग पर स्थित सार्वदेशिक सभा की भूमि पर, (किरायेदारो से भूमि खाली कराकर) महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति मे औषधालय और कन्या पाठशाला बनवाने हेतु एक उप समिति श्री रमेशचन्द्र भाटिया की अध्यक्षता म बना दी गई। इस अचल सम्पत्ति के लिए श्री दाऊलाल सोनी को मुख्त्यार-आम बनाया गया जो सम्पत्ति के सम्बन्ध मे वैधानिक दृष्टि से साधिकार प्राप्त व्यक्ति होगे।

दिल्ली से जोधपुर मेल द्वारा जोधपुर पधारने पर स्टेशन पर श्री स्वामी जी और श्री हस जी का भव्य-स्वागत किया गया।

"श्री सुभाष विद्यालंकार का स्वागत"

"आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा अपने पूर्व मन्त्री एव प्रतिष्ठित सदस्य श्री सुभाष विद्यालकार के गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त होने पर उनके सम्मान मे रविवार १ जुलाई, 90 को प्रात 10 30 बजे स्वागत समारोह का आयोजन किया गया है।"

कांश ! हम भी ऐसे दीवाने बन जायें

15 फरवरी 1988 की बात है। समय रात्रि 8 30 बजे। स्थान नई दिल्ली का कोटला फिरोजशाह मैदान। मैदान मे भारी वर्षा के कारण जगह-जगह पानी और कीचड भरा था। अगले दिन प्रात 8 बजे ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम बृहद यज्ञ से प्रारम्भ होता था। आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सूर्यदेव, मंत्री श्री रामशरण दास, प० यशपाल सुधांशु श्री नन्दलाल आदि पण्डाल खडा कराने की व्यवस्था कर रहे थे। इससे पूर्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल मैदान का निरीक्षण करें और आवश्यक निर्देश देकर जा चुके थे। पानी और कीचड के गड्ढो को भरने के लिए मलबे के ट्रकों को मगवाने के आदेश दिये जा चुके थे। परन्तु कार्यकर्ता किसकी प्रतीक्षा करें। एक बडा टब, बाल्टी और जग लाया गया और आर्यसमाज दीवान हाल के श्री लक्ष्मी चन्द, श्री ईश्वर, श्री खेमचन्द जुट गये। जग भर-भर कर टब मे डाल रहे थे और एक वृद्ध ऋषि भक्त टब से पानी की बाल्टी भर-भर कर पण्डाल की सीमा से दूर फेंक कर आ रहे थे। लक्ष्मीचन्द फावडे से कीचड साफ कर रह थे।

कार्यकर्त्ताओ के इस उत्साह और लग्न को देखकर गर्व महसूस हो रहा था। मैंने जब उस वृद्ध ऋषि भक्त से परिचय जानना चाहा, तो वे मेरे प्रश्न को टाल गए और कहने लगे कि जब दस दीवाने इकट्ठे हो जाए तो ऋषि का कोई कार्य अधूरा नही रह सकता। उन्होने अपने जीवन का सार बताया कि गुप्त दान दो, चुपचाप काम करो और पीछे रहो।

काश ! ऐसा दीवानापन हम सब मे आ जाए, तो वेद प्रचार कार्य कहाँ का कहाँ पहुच जाए।

—विमल कान्त शर्मा
मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

आर्यबनें ! आर्यावर्त बनायें !!

—भोलानाथ दिलावरी, पूर्व प्रधान—केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर

क्या आप हृदय से "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम" अपना परम लक्ष्य मानते है ?

"कृण्वन्तो-विश्वमार्यम" आर्यों को वेदाज्ञा हैं। महर्षि इस को परम लक्ष्य मान आयु भर प्रयत्नशील रह और इसके लिए हर प्रकार के कष्ट झेले और जीवनोत्सर्ग किया। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि पूर्व काल की तरह ससार भर मे आर्यों का बोलबाला हो और आर्य 'चक्रवर्ती राज्य" बने। उनका मानना था कि बिना आर्य राज्य बने सर्वत्र सुख, शान्ति एव समृद्धि न हो सकेगी।

प्रश्न उठता है कि क्या हम "आर्य" लक्ष्य को हृदय से मानते हैं ? हृदय से मानने का अर्थ होता है हर समय लक्ष्य समक्ष और इसके प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशीलता और स्वार्थ परित्यागता। आओ। हम अपने हृदय का निरीक्षण करें और वास्तविकता जान अपनी कमी कमजोरियो को दूर करें।

हृदय निरीक्षणार्थ निम्न प्रश्नो का स्वय उतर लें और अपना मार्ग प्रशस्त करे।

1 क्या हम अपने को 'आय' कहने, कहलाने मे "गर्व" अनुभव करते हैं ?

2 क्या हम समस्त आर्य सन्तान हिन्दू मात्र मे "आर्यत्व" जाग्रत करने इनमे एकात्मता लान के हृदय से इच्छुक हैं ?

3. क्या हम हृदय से अपने देश को "आर्यावर्त" और यहा "आर्य राज्य" बनाना चाहते हैं ?

यदि उपरोक्त प्रश्नो का उत्तर आपको "हा" मे मिले तो आज से ही निम्न सकल्प 'प्रभु प्राथना" के रूप मे अपनाने और अपने घर अपनी समाज, अपने स्कूल, पाठशाला म नित्य बोले या बुलवाए। यह हमारा "कृण्वन्तो विश्वमायम' की ओर पहला महत्वपूर्ण पग होगा। ध्यान रहे, हम सफल तब ही होग यदि हम सतत लगातार इसे कार्य रूप देंग।

"प्रभु-प्रार्थना" रूप मे हमारा सकल्प निम्न प्रकार होना चाहिए—

हे परम पिता परमात्मन ! आपकी महान कृपा से हमे आर्य कुल मे जन्म मिला। इस नाते आपने हमे सत्य सनातन वेद ज्ञान का अधिकारी बनाया।

हम आपका प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए प्रतिज्ञा लेते हैं कि (1) हम सच्चे अर्थो मे आर्य बनेंगे। समस्त आर्य सन्तान हिन्दु भाव को जाग्रत कर उनमे एकात्मकता, सत्य सनातन आर्य धर्म पर चलने को प्रेरित करेंग।

(2) आप की आज्ञा "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम' का तन, मन, धन से पालन करेंग।

(3) सब प्रथम अपने देश का फिर स सच्चे अर्थ मे 'आर्यावर्त" बना यहाँ स्वच्छ आय राज्य" स्थापित करेंगे।

(4) समस्त ससार मे वेद ज्ञान, आर्य सस्कृति फैला भूमडल पर पूर्वकाल की भाति चक्रवर्ती आर्य राज्य स्थापित करन की ओर अग्रसर होगे।

प्रभो ! हमे इन लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए शक्ति दो। हम आपको विश्वास दिलाते हैं एव प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम हर चुनौती का अपना सर्वस्व बलिदान कर दृढता से मुकाबला करेंगे और आपके आशीर्वाद से अवश्य सफल मनोरथ होंगे।

आर्यो ! आर्य सन्तान हिन्दू अपने देश मे 70-75 करोड हैं बहुमत मे हैं फिर भी यह छोटे-छोटे अल्पसख्यक सम्प्रदाय हमारे देश को टुकड़े-टुकड़े करने पर तुले बैठे हैं। खुले रूप से अपने-अपने 'स्तान" बनाने मे तोप, तलवार, बन्दूक का प्रयोग कर रहे हैं। आओ-आर्यत्व जाग्रत कर समस्त हिन्दु मात्र मे एकात्मता लावें और देश की रक्षा कर इसे "आर्यावर्त" बना यहा आर्य राज्य स्थापित करें।

"आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली का वार्षिक महोत्सव"

महर्षि दयानन्द के स्वप्नो को साकार करने वाली गौरवमयी इस आर्ष एव अध्यात्मिक सस्था का 34 वा वार्षिक उत्सव माननीय अनेक विद्वानो एव राजनेताओं के सान्निध्य म दिनाक 30 जून एव 1 जुलाई 1990 ई० तदनुसार शनिवार, रविवार को धूमधाम से मनाया जा रहा है। आर्य सज्जनो से प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर पधार कर धर्म लाभ उठाये।

डा० कपिलदेव द्विवेदी पुरस्कृत

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० कपिलदेव द्विवेदी को उ० प्र० सस्कृति अकादमी ने उनकी पुस्तक "भक्ति कुसुमाजलि" पर पुरस्कृत किया है। इस पुस्तक मे भक्ति-भावना से ओतप्रोत 100 गीत सस्कृत मे दिए गए हैं। जिनका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। पुरस्कार स्वरूप आपको दो हजार रुपये तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व आपकी आधा दर्जन से अधिक पुस्तकें पुरस्कृत की जा चुकी हैं।

डा० द्विवेदी सस्कृत तथा हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों मे से हैं, जिनके 70 से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। वेदामृतम् 'ग्रथमाला" अत्यन्त प्रकाशित हो चुके हैं। वेदामृतम् "ग्रथमाला" अत्यन्त लोकप्रिय हुई है। डा० द्विवेदी विश्वभारती अनुसधान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी) के निदेशक भी हैं।

प० गुरुदत्त विद्यार्थी स्मारिका

आगामी 6 व 7 अक्तूबर को केन्द्रीय आर्य सभा, चण्डीगढ के तत्वावधान मे आर्य समाज के महान् विद्वान प० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प० गुरुदत्त विद्यार्थी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर विशद प्रकाश डालने वाले लेखो से युक्त एक भव्य-स्मारिका के प्रकाशन की योजना है।

आपसे निवेदन है कि निम्न विषयो मे से किसी एक अथवा तत्सम्बद्ध किसी अन्य विषय पर अपना विद्वता पूर्ण लेख स्मारिका सम्पादक श्री भवानीलाल भारतीय को आर्य समाज सेक्टर 22-ए, चण्डीगढ 31 अगस्त, 1990 तक भेज दें।

1 प गुरुदत्त जीवन एव व्यक्तित्व
2 प गुरुदत्त का साहित्य
3 प गुरुदत्त एक शिक्षा शास्त्री के रूप मे
4- पं गुरुदत्त और आर्य समाज
5 प गुरुदत्त और पाश्चात्य वैदिक विद्वान आदि।

सुखमय शान्ति

—देवनारायण भारद्वाज

द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष, शान्ति पृथवी शान्ति राप शान्ति रोषधय शान्ति। वनस्पतय शान्तिर्विश्वे देवा शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वं, शान्ति शान्ति रेव शान्ति सा मा शान्ति रेधि ॥
यजु 36/17/
अर्थ 19/9/14 ॥

आनन्द शान्ति के दाता, यह जगत शान्ति पा जाये।
जब जगत शान्ति यह पाय, तब हमे शान्ति मिल पाये ॥

सब लोको के ऊपर भाये
यह द्यो लोक शान्त हो जाये
यह वायु आदि युत अन्तरिक्ष
निरुपद्रव प्रशान्ति को पाये।

यह भूमि, भूमि के साधन, सब नित्य शान्ति को पायें
जब जगत शान्ति यह पाये, तब हमे शान्ति मिल पाये ॥

यह जल और वस्तुऐं जल की
सब ओषधियाँ तृण निर्मूल की
प्रिय वृक्ष वनस्पति सारे ही
हमे शान्ति दें विश्व विमल की।

विद्वान शान्ति यह पायें, जो वेद शान्ति को गाये।
जब जगत शान्ति यह पाये, तब हमे शान्ति मिल पाये ॥

गुण सूर्य किरण इन्द्रिय वारा
स्थूल सूक्ष्म सब जगत प्रसारा
सब जीव शान्ति सुख नित पायें
हो शान्त क्रोध सबका सारा

हो स्वय शान्ति सुख वाली, हम प्रगति शान्ति तब पायें।
जब जगत शान्ति यह पाये, तब हमे शान्ति मिल पाये ॥

—एफ-42 मानसरोवर कालोनी
राजघाट मार्ग, अलीगढ़-202001

आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर

आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर, बौमरमऊ (उन्नाव) का तृतीय, वार्षिकोत्सव विगत् 13, 14 व 15 जून को बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री रामावतार शर्मा, प० युगुल किशोर त्रिपाठी, स्वामी महावीर आर्य, प० सीता राम आदि के उपदेशामृत का पान कर सुधी आर्यजनों ने स्वयं कृत-कृत किया।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

फिजी और भारत



भारत का फिजी के लिए चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। फिजी मे भारतीय मूल के 48 % लोग हैं, मलयेशियन मूल के लोग 46 % है, परन्तु वहाँ की ससद के 70 स्थानों में से मलयेशियन मूल के लोगों को 38 तथा भारतीय मूल के लोगो को केवल 27 सीटें दिए जाने की बात कही जाए तो इसका जो परिणाम होना चाहिए, वही होगा। भारत की प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही थी। नस्ल भेद के आधार पर इस प्रकार के पक्षपात को भारत ने स्वीकार नही किया। भारत ने दृढ़ता दिखाई और फिजी को राष्ट्रमण्डल में पुन प्रवेश नही मिला। भारत का यह स्पष्ट मत कि अन्तर्राष्ट्रीय मचों पर फिजी की रगभेदी नीति का पर्दाफाश किया जाएगा, स्वागत योग्य है। इस घोषणा से फिजी सरकार का चिढ़ना भी स्वाभाविक है। फिजी सरकार ने भारतीय दूतावास को बन्द कर दिया। इस निणय के विरुद्ध सम्पूर्ण फिजी मे हड़ताल रही। बाजार, स्कूल, कालेज, व्यावसायिक सस्थान, प्रतिष्ठान बन्द रहे। भारत सरकार ने फिजी की सशक्त भर्त्सना की तथा प्रजातन्त्र की पुर्नस्थापना के लिए तथा रगभेद नीति के विरुद्ध अपना समर्थन देने के निश्चय को दुहराया।

भारत ने सदा ही रगभेद नीति का विरोध किया है। अफ्रीका, फिलिस्तीन, नामीबिया, दक्षिण अफ्रीका मे भारत की नीति से इसका स्पष्ट परिचय मिलता है। बावाण्ड्रा की सरकार को भारतीय मूल के लोगो ने चुना था। उसे अपदस्थ कर्नल राबुका ने किया। यदि बावाण्ड्रा अपनी निर्वासित सरकार बताते हैं तो भारत को चाहिए कि इसे मान्यता दे तथा अन्य देशों से भी इसे मान्यता दिलाए। भारत के बुद्धिजीवियों का भी कर्तव्य है कि वे खुलकर अपनी बात कहें। जो भारतीय दूसरे देशों मे रहते हैं, वे भी इसके महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। इन्हें चाहिए कि वे सयुक्त राष्ट्र सघ, राष्ट्र मडल एव मानव अधिकार आयोग तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय सगठनों के समक्ष प्रदर्शन करके, फिजी सरकार की रगभेद नीति के विरुद्ध अपनी आवाज उठाए। भारत वर्ष में आर्यसमाज प्रारम्भ से ही इस दिशा मे प्रयत्नशील है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रत्येक स्तर पर अपनी आवाज उठाते रहे हैं। वर्तमान सरकार को भी बाध्य किया जाना चाहिए कि वह विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगो की रक्षा करें। यदि आज चूक गए तो कल यही स्थिति मौरीशस, सुरीनाम तथा अन्य देशो मे भी हो सकती है। आज फिजी मे भारतीयों को ईसाई बनाने पर जोर दिया जा रहा है, कल यह अन्य देशों में भी होगा। आर्यसमाजों का विस्तार इन सभी देशों मे है। वहाँ पर भी आर्यसमाजों को इस दिशा मे अपनी आवाज बुलन्द करनी चाहिए।

—डा० धर्मपाल

'आर्य सन्देश'

सम्पादक के नाम पत्र

आपका सम्पादन आर्य सन्देश के लिये विशेषांकों का इतिहास कीर्तिमान बना रहा है। बधाई स्वीकारें।

—डा० सरस्वती मोहन ''मनीषी''
पूर्व सम्पादक-''आर्य सन्देश''
डी ए वी कालेज, अबोहर (पजाब)

आर्य सन्देश का दिनांक 3 जून का अक मिला। रुचिकर लेखों से समलकृत होने के कारण पूरा पत्र एक साथ, एक बार मे ही आद्योपांत पढ गया। श्री वीरेन्द्र जी के आर्य मर्यादा में प्रकाशित लेखों के उत्तर में सार्वदेशिक सभा की जो उपलब्धियाँ दर्शायी गयी है, वह निर्विवाद हैं। इस लेख मे श्री वीरेन्द्र जी को दोष दर्शन की प्रवृति त्याग कर आत्मनिरीक्षण करने की सलाह दी है। मेरी सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना है कि वह भी आत्मनिरीक्षण कर समय-2 पर आर्य विद्वानों द्वारा, आर्य समाज के हित में दिये गये सुझावों को अपनायें एव प्रादेशिक सभाओं एव समाजों के विवादों को न्याय बुद्धि से हल करायें। मेरी प्रार्थना है कि मेरे विचारों को अन्यथा न लें। सभा अधिकारियों को सभा की गरिमा बनाये रखने का यथा सम्भव प्रयत्न भी करना चाहिए।

अन्य लेखों मे आपका सम्पादकीय, सुभाष विद्यालकार एव अन्य लेख भी ज्ञान वर्धक हैं। हैदराबाद सत्याग्रह विशेषांक की घोषणा से अवर्णनीय हार्दिक प्रसन्नता हुई है। इसकी प्रेरणास्वरूप प० नरेन्द्र जी की कृति "हैदराबाद के आर्यों की साधना और सघर्ष" का दूसरी बार पारायण चल रहा है।

कृपया पत्र मे प्रयुक्त कागज कुछ अच्छी क्वालिटी का प्रयोग करें, जिससे इन्हें दीर्घकाल तक सुरक्षित रखा जा सके।

—मनमोहन कुमार आर्य, 196-चुक्खूवाला, देहरादून

लिपि का आरम्भ

कृपया आर्य सन्देश के अक-27 मई 1990 के लेख "भाषा एव लिपि की उत्पत्ति का काल निर्धारण,"-लेखक श्री मनमोहन कुमार आर्य के सदर्भ मे मेरे विचार निम्न प्रकार हैं—

जब परमात्मा ने वेद का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ मे दिया तभी लिखने की कला लिपि का ज्ञान भी दिया।

1 श्री रामचन्द्र के समय, अब से लाखों वर्ष पूर्व, त्रेता मे लिपि विद्यमान थी। सीताजी की मुद्रिका पर 'राम' नाम अकित था।
2 हड़प्पा-मोहनजोदरो मे खुदाई से प्राप्त मुद्राओं पर भी अक्षर अकितमिलते हैं।
3 सबसे बडी साक्षी वेद का ही निम्नलिखित मन्त्र इस बात का प्रमाण है कि वेद के समय ही लिपि का ज्ञान भी परमात्मा ने दिया। उस समय ताडपत्रों और भोज-पत्रो पर लिखा जाता था—

उत त्व पश्यन् न ददर्श वाचम्
उत त्व शृण्वन् न शृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्व विसस्रे
जायेव पत्ये उशती सुवासा। ऋग्वेद 1,171,4)

अर्थ—कोई वेद वाणी को देखते हुए भी नहीं देखता। कोई सुनते हुए भी नही सुनता। किसी के लिए वह अपना रहस्य खोल देती है जैसे कामयमाना जाया पति के लिए।

इस मन्त्र में वाणी को सुनते हुए भी नही सुनता—इसे सब समझ सकते हैं क्योंकि वाणी सुनी ही जाती है। लोग सुनकर भी उसे अनसुना कर देते हैं। किन्तु वह वाणी कौन सी है जिसे कोई देखते हुए नही देखता ? वह तो वाणी की लिपि ही है जो देखी जाती है। उसे पढकर भी लोग नही समझपाते और उस पर आचरण नही करते।

इस प्रकार 'देखते हुए भी नही देखता' से वेद के प्रकट होने के साथ ही लिपि रूप मे उसका लिखा जाना सिद्ध होता है।—

वीरेन्द्र सरस्वती, अध्यक्ष विश्ववेद परिषद, सी 817 महानगर, लखनऊ-6

आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव

बहुत वर्षों पहले मैंने आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव पर जाना बन्द किया हुआ था किन्तु कुछ विद्वानों के कहने और अनेक आर्यसमाजो के अधिकारियों व नेताओं के आग्रह पर पुन आर्यसमाजों के उत्सवों के कार्यक्रम स्वीकार करने प्रारम्भ कर दिये थे, परन्तु अब पुन पूर्ववत् परिणाम पर ही पहुचा हूं कि उत्सवों पर जाना समय और सामर्थ्य का दुरुपयोग करना है। अपवादों की बात मै नहीं कहता किन्तु सामान्यतया उत्सवों पर कार्यकर्तागण सभी वक्ताओ के (चाहे दस हो या बारह) प्रत्येक बैठक मे भाषण कराना चाहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वक्ता जो कहना चाहता है, वह कह नही पाता, केवल मच पर उपस्थित लिखा देता है।

न चाहते हुए भी अनेक स्थानो पर कार्यकर्ताओं को यह सुझाव भी दिया कि आपके पास दस या बारह वक्ता है तो कुछ को प्रात कालीन सभा मे बुलवाइये, कुछ को मध्याह्न की सभा मे और कुछ को सांयकालीन सभा मे समय दीजिए। परन्तु लगता ऐसा है कि जैसे कोई सनक सवार हो, बुलवायेंगे प्रत्येक वक्ता को, प्रत्येक सभा मे। पहले तो स्वय ही अधिक वक्ता बुला लेते हैं फिर यदि कोई अनाहूत आ जाय तो उसे भी सम्मिलित कर लेते हैं।

आजकल यात्रा कितनी कठिन हो गयी है, यह सभी जानते हैं। यात्रा की यातना भोग कर पहुचो तो ठहरने की सुविधाजनक व्यवस्था नहीं। एक-एक कमरे में अनेकानेक व्यक्ति ठहरे होते हैं परिणामस्वरूप न पढने की सुविधा होती है और न लिखने की। सम्पूर्ण समय पडे रहने तथा बक-झक करने और सुनने मे समय विनष्ट हो जाता है और तत्पश्चात् सभा स्थल पर वही पन्द्रह-बीस या तीस मिनट।

इसके अतिरिक्त एक त्रासदी यह भी है कि ऐसे वक्ता बुला लिए जाते हैं और प्राय उन्हीं को प्रमुखता दी जाती है जो सिद्धान्त विरुद्ध अनर्गल प्रलाप करते रहते हैं। यदि उनके भाषण की अनर्गलताओं का निराकरण और प्रतिवाद करना चाहो तो कार्यकर्ता यह कह कर कि—आर्यसमाज के विषय मे जनता पर बुरा प्रभाव पडेगा रोकते हैं। ऐसे कार्यकर्ताओं से कोई पूछे कि क्या इन सिद्धान्त विरुद्ध अनर्गल भाषणों से आर्यसमाज का प्रचार होगा ? यह तो श्रोताओं को आर्य समाज के विषय में भ्रान्ति मे डालने तथा श्रोताओं के सामने आर्यसमाज का भ्रान्तचित्र उपस्थित करने का घृणित और दुष्प्रयत्न है। ऐसे कार्यकर्ताओं को या तो यह समझा जाय कि वह वास्तव मे आर्यसमाजी हैं ही नही अपितु आर्यसमाज मे घुसकर आर्यसमाज की जड़े काट रहे हैं और या फिर इतने बुद्धिहीन हैं कि न तो आर्यसमाज को समझते हैं और न समझना ही चाहते हैं। किसी वक्ता का कभी कोई तर्क पसन्द आ गया या आर्यसमाज की कोई एक दो मान्यता पसन्द आ गयी होती है, बस इतने ही आर्यसमाजी हैं और अब आर्यसमाज के अधिकारी बने तो तीन दिन के लिए उत्सव के नाम पर लोकेषणा पूर्ति और स्व मन मना लेने की प्रक्रिया पूर्ण कर लेते हैं।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि उन्हीं विद्वानों को आमन्त्रित करें जो भ्रान्त-भाषण न करने वाले हों और भाषण के विषय से पूर्ण लाभ करते हों।

वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक सस्थान, नजीबाबाद

वैदिक विद्वान्-डा. रामनाथ वेदालंकार सम्मानित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक, तथा वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् डा० रामनाथ वेदालंकार को उनके द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार एवं विकास-कार्य में एक भव्य समारोह में पच्चीस हजार रुपये के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उत्तर प्रदेश के बरेली जनपद के फरीदपुर ग्राम में महाशय जी के नाम से विख्यात स्वतन्त्रता सेनानी लाला गोपालराम जी के यहाँ 7 जुलाई, 1914 को जन्मे डा० वेदालंकार का संपूर्ण जीवन गुरुकुल, आर्यसमाज तथा वेद सेवा के लिए समर्पित है। सन् 1936 में वेदालंकार उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने जयपुर रियासत के अंतर्गत ठिकाना खूड के ठिकानेदार तथा महाराजा जयपुर के ए डी सी ठाकुर जयसिंह के अनुरोध पर खूंड में शिक्षा-प्रसार हेतु गुरुकुल की स्थापना की तथा कुछ समय तक उसका संचालन किया। 1938 से 1976 तक आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वेदानुसंधानकर्त्ता, वेदोपाध्याय, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष, कुलसचिव, वेद एवं कला महाविद्यालय के अध्यक्ष, आचार्य एवं उपकुलपति के पदों पर कार्यरत रहे। अगस्त, 1976 में आपको तीन वर्ष के लिए पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में नवस्थापित महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ के प्रथम प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। वहाँ से सेवानिवृत्त होने के बाद से आप निजी स्तर पर शोध एवं लेखन में व्यस्त हैं।

आपने अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की है। वेदार्थ की विविध शैलियों एवं प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के प्रयोजन से लिखी गयी वेदों की वर्णन शैलियां "एवं वेदभाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियाएं" तथा महर्षि दयानन्द के विविध ग्रन्थों में प्रतिपादित उनके विचारों को प्रकाश में लाने वाली 'महर्षि दयानन्द के शिक्षा, राजनीति और कला-कौशल संबंधी विचार" शीर्षक आपकी शोधपूर्ण कृतियां वैदिक साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। इसी शृंखला में आपने संस्कृत भाषा में वैदिक शब्दार्थ विचार नाम से एक अनुपम ग्रन्थ का प्रणयन किया है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि सामान्यतया एक ही अर्थ में प्रयुक्त होने वाले "अज', "असुर", "वृषभ" आदि शब्द वेदों में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं। इसमें से प्रथम श्रद्धानन्द शोध प्रतिष्ठान गुरुकुल कांगड़ी से तथा शेष महर्षि दयानन्द अनुसंधान पीठ चण्डीगढ़ के तत्त्वावधान में प्रकाशित हुई है। "वैदिक वीर गर्जना" (200 वीर रस पूर्ण वेदमंत्रों पर आधारित उद्बोधक उदात्त रचना), "वैदिक सूक्तियां" (अथर्ववेद की एक सहस्र सूक्तियों का अर्थ सहित संग्रह) "यज्ञमीमांसा" (अग्निहोत्र दर्पण), "वैदिक प्रार्थना-पुष्पांजलि' (वैदिक निबन्ध संग्रह), "वेदमंजरी" (365 वेदमंत्रों की भावभीनी प्रवाहमयी व्याख्या) और "वैदिक नारी" (वेदवर्णित नारी के सर्वांगीण उज्ज्वल चरित्र का चित्रण) आप द्वारा प्रणीत अन्य रचनाएं हैं। आपने स्वामी दयानन्द की भाष्यशैली को आधार मानते हुए "सामवेद" का सरल एवं सुबोध भाषा में संस्कृत-हिन्दी भाष्य तैयार किया है जो पूर्वार्चिक एवं उत्तरार्चिक दो भागों में मुद्रणाधीन है।

"अर्थ" एवं "यश" की लालसा से नहीं, वरन् 'स्वान्त सुखाय" तथा वेदों में निहित ज्ञान को वेदप्रेमियों तक पहुंचाने के उद्देश्य से साहित्य-सृजन में व्यस्त आचार्य वेदालंकार को इस अनवरत वेद-सेवा के लिए इससे पूर्व बम्बई आर्यसमाज द्वारा इक्कीस हजार रुपये के पुरस्कार से तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा 'विद्यामार्तण्ड' की मानद उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। आपकी "यज्ञमीमांसा" शीर्षक कृति वर्ष 1981 में संस्कृत ग्रन्थ अकादमी उत्तर प्रदेश द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है।

हम सब जानते ही हैं कि हमारा देश अभी भी अंग्रेजी का गुलाम है। हमारी केन्द्रीय सरकार अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त होने के लिए विचार भी नहीं कर रही है। लेकिन कुछ प्रांतीय सरकारें उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा ने भाषाई गुलामी से स्वतंत्र होने के लिए प्रयत्न प्रारंभ कर दिए हैं, किन्तु शेष प्रांतों को एवं केन्द्र सरकार को विदेशी भाषा की गुलामी से स्वतंत्र होने के लिए प्रेरित करना होगा। हमें जनता की मानसिकता को भी बदलना होगा कि वह दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी को हटाकर केवल अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को ही व्यवहार में लाने का अभ्यास करें। इसके लिए संपूर्ण देश में एक साथ निरंतर प्रचार संघर्ष करने की तैयारी करने के लिए इन्दौर में अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

हमारी मातृभाषाएं तमिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बंगला, असमिया, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, कश्मीरी, उर्दू, संस्कृत और हिन्दी अपने सपूत बेटे, बेटियों से 42 वर्षों से आशा लगाये हुए हैं कि अब तो हमें अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त हो जाना चाहिए। हम तो अपने पूर्वजों के बलिदान का लाभ उठाकर राजा बन स्वतन्त्रता का सुख भोग रहे हैं। हमारी मातृभाषाएं अंग्रेजी की दासी बनकर गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुई हैं। इस दासत्व के कलंक से हमारी मातृभाषाओं को स्वतंत्र कराना हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कराने और हमारी मातृ-

करें।

भूले पद

(1)

अधर्म अन्धेरा वेद-रविको आच्छादित किया,
वैदिक प्रकाश को न पाते तरसाते है,
सर्व अधिकारी आज, मानुष कहाने वाले,
रोक बैठे वेद विद्या, नहीं दरशाते हैं ।।
स्वयं नहीं वेद-पढ़े, भेद का प्रकोप बढ़ा,
ईश्व-आदेश को न—नहीं परसाते हैं।
वीरान बनाया देश, वेद विद्या बिना,
वेद सुधा बिना पढ़े, कौन ? बरषाते है।।

(2)

बीत चले युग कई, भ्रान्तियों बढ़ाते रहे,
वेदों के आधार कोई, गति न बनाई है।
वेद-विद्या ही ने निज, ग्रन्थों को बनाय चले,
गुरुकुल पढ़े नहीं, रही पढ़ताई है।
स्वार्थ को बनाय रखा, वेद का आदेश भूला
ऊँच बन बैठे झूठ ऊँचता दिखाई है।।
दूर-दूर चले गये, ईश्वर के प्यारे पुत्र'
'घनसार' दुखी देश, अविद्याये, छाई है।

(3)

देश को रुलाया पंथ-वाद निज पंथ थोप,
वेद पथ छोड़े सारे, फंस गये मंत्र मे।
एक की न एक माने, परस्पर बढ़ावे वाद,
भला-बुरा जाने नहीं, प्रीति नहीं तंत्र में ।।
सत्य औ असत्य कैसा-किया न विचार निज,
स्वार्थ के पिपासी आज, पड़ा मन्द गत में।
'घनसार, सार नहीं, जीवन अमूल्य पाये,
वेदज्ञान बिना नहीं, रम्य सत रतनें ।।

(4)

विद्या बिना नर पशु-बने खोई सारी गति,
वही है व्यवहार आज, भार सिर ढोते हैं।
मानुष कर्म, सो भूले' डोल रहे अविद्या में,
अज्ञान घमण्ड बिच, खाते रहे गोते हैं।।
वैदिक सुधर्म-कर्म, भूल गये जानते न,
अहर्निश भ्रम विषु-बीजन को बोते हैं।
जैसी रही भावना सो, बनाय रखी भावना,
वैसा ही विचार मन्द, पाप-बीज बोते हैं।

कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज.)

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी —

दिल्ली निवासी आर्यसमाज के एक अज्ञात साहित्यकार

श्रीजगन्नाथ भारतीय

डा० भवानीलाल भारतीय

श्री जगन्नाथ 'भारतीय' स्वामी दयानन्द सरस्वती के समकालीन थे। उनका विशेष जीवनवृत्त उपलब्ध नहीं होता। परन्तु उनके द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ परोपकारिणी सभा के अजमेर स्थित पुस्तकालय मे विद्यमान हैं। श्री भारतीय को स्वामी दयानन्द के दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ था तथा वे अपने को वैदिक मत का अनुयायी मानते हैं। स्वामी जी के निधन के पांच वर्ष पश्चात् 1945 वि० मे जगन्नाथ भारतीय ने उनकी एक लघु जीवनी लिखी। इनके अधिकांश देहली से प्रकाशित हुए हैं। इससे अनुमान होता है कि ये दिल्ली के निवासी थे। इनके उपलब्ध ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है—

1—महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का जीवन चरित्र यह 6 पृष्ठों मे प्रकाशित स्वामी जी की एक लघु जीवनी है। बाबू रामचन्द्र के प्रबंध से रसिक काशी यन्त्रालय देहली मे सवत् 1945 वि (श्री मद्दयानन्दाब्द-5) में मुद्रित होकर यह पुस्तक प्रकाशित हुई। पुस्तक यद्यपि छोटी है तथापि इसका महत्व इस दृष्टि से और भी अधिक है कि स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् लिखी गई और प्रकाशित उनकी यह प्रथम जीवनी है। भूमिका के अन्त मे लेखक ने पुस्तक समाप्ति की तिथि 1 अगस्त 1888 अंकित की है।

जगन्नाथ भारतीय ने भारतेन्दुकाल मे लोकप्रिय नाटक शैली को अपना कर कुछ रचनायें लिखी हैं। उनके द्वारा लिखित ये नाटक शैली की अपेक्षा विषय वस्तु को ही प्रधानता देते हैं। निम्न रचनायें नाटक हैं—वर्णव्यवस्था नाटक—मिरजा आलम बेग के प्रबन्ध से स० 1944 वि० में देहली से प्रकाशित यह पुस्तक वर्णव्यवस्था पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण को रूपक शैली मे प्रस्तुत करती हैं। दो अंकों मे समाप्त होने वाला यह नाटक निम्न नान्दी पाठ से आरम्भ होता है —

वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुष व्याप्यस्थित रोदसी ।
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्य विषय शब्दोयथार्थाक्षर ॥
अन्तर्यश्चमुमुक्षुभिर्नियंमत प्राणादिभिमृ ग्यते ।
स स्थाणु स्थिर भक्तियोग सुलभी निश्रेयसायास्तुव ॥

सूत्राधार और नटी की प्रस्तावना के पश्चात् प्रथम अंक प्रारम्भ होता है। नाटक की कथा साराश इस प्रकार है —एक राजा के समक्ष भोजनदास नामक जन्म का ब्राह्मण नौकरी के लिए आता है। राजा अपने मन्त्री के परामर्श स विद्वानो की सभा बुलाकर उक्त व्यक्ति का निर्णय कराता है। भोजन भटट नामक एक पेटार्थी ब्राह्मण तो उक्त भोजनदास को निरक्षर होने पर भी ब्राह्मण ही मानता है, परन्तु पुरुषोत्तम शास्त्री नामक एक सुपठित विद्वान वर्णव्यवस्था का शास्त्रीय विवेचन करने के उपरान्त यह व्यवस्था देता है कि यह व्यक्ति अपठित—निरक्षर होने के कारण ब्राह्मण नहीं अपितु शूद्र है। द्वितीय अंक मे एक जन्मना अब्राह्मण किन्तु शस्त्र पठित सदाचारी व्यक्ति के विषय मे पडित गण व्यवस्था देते हैं कि यह व्यक्ति ब्राह्मण है। इस प्रकार वर्ण व्यवस्था को गुण, कर्म तथा स्वभाव पर आधारित सिद्ध करना, लेखक का उद्देश्य है। यह लेखक की पुस्तक सख्या 23 है।

2—नवीन वेदान्त नाटक—नाटक शैली, में लिखा गया यह लघु ग्रन्थ सस्कृत के प्रसिद्ध नाटक 'प्रबोध चन्द्रोदय' की रूपक प्रधान शैली का अनुकरण करता है। इसमे अद्वैत वेदान्त की निस्सारता प्रतिपादित की गई है। पुस्तक रामचन्द्र वैश्य मेरठ द्वारा 1947 वि० मे प्रकाशित हुई।

3—समुद्र यात्रा नाटक—विलायत आदि देशों की यात्रा करने से धर्म नही होता इस विषय की पुष्टि मे अनेक प्रमाण दिए गए हैं। श्री भारतीय द्वारा रचित अन्य सैद्धान्तिक ग्रन्थ—

1—पोप लीला—(असतमत खण्डन) ब्रजभूषण यंत्रालय मथुरा से मार्च 1887 ई० में प्रकाशित पुराणी, जैनी, कुरानी आदि मतों की आलोचना।

2—धर्माधर्म परीक्षा

3 —मत प्रकाश—भारत मे प्रचलित विभिन्न मत मतान्तरों का परिचात्मक तथा आलोचनात्मक निरुपण 1943 वि० में दिल्ली में छपी।

4—सतमत परीक्षा—वेद और इजील में कौन-सा ग्रन्थ अपौरुषेय हैं। इसकी मीमांसा की गई है।

5—वेद ब्राह्मण विषय व्याख्यान—जो मिती ज्येष्ठ बदी 8 रविवार स० 1944 वि० को आर्यसमाज देहली में जगन्नाथ भारतीय ने दिया। पुस्तक सख्या 16 कैसर हिन्द प्रैस देहली में 1887 ई० में छपा।

6—स्त्री धर्म प्रबोधिनी

7—वैश्य यज्ञोपवीत व्यवस्था—(मीमांसा वैश्यों के यज्ञोपवीत अधिकार का निरुपण।

8—नित्य कर्म पद्धति—मिर्जा आलमबेग के प्रबन्ध से देहली मे से० 1944 वि० (1887 ई०) में छपी पुस्तक सख्या 25)

9—दिनचर्या—सवत् 1946 वि० मे प० गुरुदत्त शुक्ल ने हनुमत प्रेस कालाकांकर से छाप कर प्रकाशित की। इसके आवरण पृष्ठ पर भारतीय पुस्तकालय तथा भूमिका मे भारतीय आफिस देहली का उल्लेख होने से अनुमान होता है कि जगन्नाथ भारतीय किसी पत्र के सम्पादक अथवा प्रकाशक भी रहे होंगे। 5 पृष्ठों की यह लघु पुस्तिका लेखक की 31 वीं पुस्तक है।

10—मनुष्य धर्म संहिता—मनुष्य मात्र के लिए निवृत्ति मार्ग का उपदेश।

11—सत्यमत निरूपण।

12—तीर्थ यात्रा।

जगन्नाथ भारतीय के स्फुट ग्रन्थ —

13—महाजनी प्रकाश—3 भाग

14—लघु ज्योतिष सार

15—शरीर रत्न

16—गुलदस्त-ए-हिन्द

17—भारत अष्टोत्तरी (एक सौ आठ वर्ष की जन्त्री (पचाग)

18—भारतोदय (सूर्य के उदय अस्त का विचार)।

लेखक द्वारा तैयार किये जा रहे आर्य साहित्यकार कोश मे अन्य ऐसे सैकड़ों साहित्यकारों का जीवन एव कृतित्व का विवरण दिया जा रहा है, जिनको आज हम भुला बैठे हैं।

हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं ईसाईयों को क्यों ?

डा० कैलाश चन्द्र

हरिजनो से ईसाई बने लोगों के लिये भी हरिजनों को दी जाने वाली सुविधाओं की माग को लेकर ईसाई पादरियों ने आन्दोलन चला रखा रखा है। यदि उनकी यह माग मान ली जाती है तो हरिजन भाइयों को ईसाई बनाने के काम मे ईसाई पादरियो को बहुत लाभ होगा। अधिक मात्रा मे लोग ईसाई बनने लगेंगे। भारत के ईसाईकरण के सपनों को जल्दी साकार कर पायेंगे।

भारत से सविधान निर्माताओं ने हिन्दू समाज के हरिजन वर्ग Scheduled Castes को कुछ विशेष सुविधाए तथा अधिकार कुछ वर्षों के लिए इस कारण दिये थे कि हरिजन वग शताब्दियों मे असपृश्य माने जाते रहे और हिन्दू समाज मे इनको बराबर का दर्जा नही मिलता रहा। परन्तु ईसाई समाज अथवा अन्य किसी गैर हिन्दू समाज मे छुआ छून नही है। कोई भी हरिजन जब ईसाई धम स्वीकार कर लेता है तो वह हरिजन नही रहता। भारन के सवि ्रान के अनुसार हरिजन वग मे ईसाई लोग सम्मलिन नहीं हैं। ईसाई बन जाने के उपरान्त भी हरिजनो वाली सुविधाए दिये जाने से इस प्रावधान का उद्देश्य ही समाप्त हो जायेगा।

यदि ईसाईयों की माग मान ली गई तो हरिजन समाज को हानि होगी क्योंकि उन को मिलने वाली सुविधाओ को ईसाई भी बाट लेंगे यह भी खतरा है कि हरिजनों को मिलने वाली सुविधाओं का 80 प्रतिशन भाग ईसाईयों के हाथ मे चला जाये, जैसे कि आदिवासियो को मिलने वाली सुविधाओ का 80 प्रतिशत से अधिक भाग ईसाई बन चुके लोगों के हाथ मे आ रहा है कारण यह है कि ईसाई वर्ग बहुत सगठिन है। उनके बडे बड़े कार्यालय हैं जिसमें ऊँचे वेतन प्राप्त बहुत पढ़े लिखे लोग कार्यरत हैं। किन्तु दूसरे आदिवासी असगठित और कम शिक्षित हैं इसलिए अपने अधिकारों से वचित रह जाते हैं।

भारत की जनसख्या में हिन्दू 85 प्रतिशत के लगभग हैं। जो धन आदिवासियों तथा हरिजनों के लिये व्यय होना है वह प्राय· हिन्दुओं से ही टैक्स के रूप में प्राप्त होता है। ईसाईयो को भी हरिजनों वाली सुविधाए देने से तो हिन्दुओं का धन ईसाईयों के हाथ अनायास ही चला जायेगा।

भारत के एक करोड साठ लाख ईसाईयों मे आधे हरिजन वर्ग से धर्मान्तरण किये गये मिजोरम हैं। आधे प्राय आदिवासी हैं। आदिवासियों को मिलने वाली सुविधाए तथा विशेषाधिकार इन ईसाईयों को भी प्राप्त हैं। यदि हरिजनों को मिलने वाली सुविधाए और विशेष अधिकार उन ईसाईयों को जो पहले हरिजन थे, दे दिये गये। तो भारत में समस्त ईसाई समाज तो विशेषाधिकार रखने वाला समाज बन ही जायेगा। दूसरी ओर हिन्दू समाज अपने ही देश मे द्वितीय श्रेणी का नागरिक बन कर रह जायेगा।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

लाहोटी होम्योपैथिक औषधालय का उद्घाटन

—हरीबगस बसन्ती देवी

सुजानगढ 10 जून।

लाहोटी परिवार की ओर से अनेक सामाजिक कार्य सुजानगढ मे चलते रहते है। पुरुषार्थ पु ज स्वर्गीय सेठ श्री हरीबगस लाहोटी एव उनकी धर्मपरायण धर्मपत्नी स्व० बसन्ती देवी लाहोटी की स्मृति मे होम्योपैथिक चैरेटेबल औषधालय सुजानगढ मे बनवाया गया है और उसे भारत के सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक डा० वी० के० गुप्त (दिल्ली) के परामर्श से औषधियो के साथ चिकित्सा सम्बन्धी आवश्यक कक्षो से सुसज्जित किया गया है। दस जून को प्रात औषधालय भवन मे यज्ञानुष्ठान के पश्चात् श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने तुमुल जयघोषो के मध्य औषधालय का विधिवत् उदघाटन किया।

इस अवसर पर गाँधी बालिका विद्यालय, गाँधी चौक, सुजानगढ मे श्री ब्रह्म प्रकाश जी लाहोटी के सयोजक मे होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर सगोष्ठी सम्पन्न हुई। डा० वी० के० गुप्ता का होम्योपैथिक चिकित्सा पर सारगर्भित एव गवेषणापूर्ण भाषण हुआ। समारोह मे श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एव श्री बालदिवाकर हस प्रधान सचालक आर्यवीर दल ने भी प्रभावशाली विचार रखे और जन सामान्य को वेदधर्मानुयायी बनकर वेद पढने की सलाह दी। साथ ही लाहोटी परिवार को शुभ-प्रवृत्तियो मे धन लगाने के लिये बधाई दी।

कानपुर मे तीन विधर्मी हिन्दू बने

आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर मे आर्यसमाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने दो मुस्लिम व एक ईसाई युवती को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म की दीक्षा देकर वैदिक धर्मी बनाया।

श्री आर्य ने 24 वर्षीय एम० ए० तक शिक्षित ईसाई युवती कु० लविनीरीन को शुद्ध कर उसका नाम छवि रखा तथा एक सिन्धी युवक अविनाश बालचन्दानी के साथ विवाह करा दिया।

इस प्रकार मुस्लिम युवती कु० आजम का नाम अनुराधा रखा गया एव रामकुमार नामक युवक से विवाह कराया गया।

तीसरी शुद्धि एक 23 वर्षीय मुस्लिम युवक कमर इकबाल की गयी उसका नाम सागर प्रसाद रखा गया।

कन्या गुरुकुल हरद्वार मे प्रवेश आरम्भ

हरद्वार मे आश्रम पद्धति से चलने वाली इस सस्था मे 5 वर्ष से 10 वर्ष तक की आयु की बालिकाओ का प्रवेश प्रारम्भ है।

पवित्र गगा के किनारे स्थित सस्था के विशाल प्रागण मे कन्याओ को खेल-कूद तथा व्यायाम के साथ साथ योग्य तथा अनुभवी अध्यापिकाओ द्वारा उ० प्र० शासन द्वारा निर्धारित पाठयक्रम के अतिरिक्त सस्कृत तथा धर्म शिक्षा अनिवार्य रूप से पढाई जाती है। शिक्षा पूर्णत नि शुल्क है। सुरक्षित छात्रावास उत्तम भोजन व्यवस्था तथा याज्ञिक वातावरण सस्था की विशेषता है। पूर्ण जानकारी के लिए दस रुपए मनिआर्डर द्वारा भेज कर नियमावली मगाएँ।

आचार्या

कन्या गुरुकुल हरद्वार-249408

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

मऊ। आर्यसमाज मऊनाथ भजन के तत्वावधान मे आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर 3 से 10 जून 1990 तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर मे आठ जन-पदो से चौंसठ आर्य युवको ने भाग लिया।

शिविर के समापन दिवस पर प्रात 4 बजे से 6 बजे तक आर्य युवको ने पूर्ण गणवेश मे नगर की प्रमुख सडको पर प्रभात फेरी निकाली। प्रभात फेरी के पश्चात् समापन समारोह, दीक्षान्त समारोह तथा पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सायकालीन पुन एक भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी।

आर्ययुवक निर्माण शिविर सम्पन्न

केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् दिल्ली की ओर से 9 से 17 जून 1990 तक आर्य युवक निर्माण शिविर एव योगसाधना शिविर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) मे आयोजित किया गया।

शिविर मे महात्मा आर्यभिक्षु, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, देवेन्द्र शास्त्री आदि ने आर्य युवकों का पथ-प्रदर्शन किया। शिविर मे 75 आर्य युवको तथा योग-साधको ने भाग लेकर लाठी, जूडो कराटे, योगासन दण्ड बैठक, स्तूप आदि का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया।

17 जून को समापन समारोह की अध्यक्षता आचार्य हरीगोपाल शर्मा (गुरुकुल ज्वालापुर) ने की तथा मुख्य अतिथि श्री रामनाथ सहगल ने आर्यजनता से युवको को मुक्तहस्त से सहयोग करने की अपील की।

शिविर-समापन के अवसर पर दिल्ली फरीदाबाद, गाजियाबाद से बसो द्वारा सैकडो आर्यजनो ने पहुचकर प्रशिक्षित युवको का उत्साहवर्धक किया। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने 2100 रुपये का चेक केन्द्रीय युवक परिषद् को भेंट किया।

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मॉडल टाउन

आर्यसमाज रोड, मॉडल टाउन, दिल्ली-9

प्रधान—डा० ओ० पी० क्षीर

मन्त्री—श्री श्रीनिवास गुप्त

कोषाध्यक्ष—श्री जे० सी० पुरी

आर्य समाज सान्ताक्रुज

विट्ठल भाई पटेल मार्ग, सान्ताक्रुज (पश्चिम) बम्बई-54

प्रधान—श्री रामचन्द्र आर्य

मन्त्री—श्री विश्वभूषण आर्य

कोषाध्यक्ष—श्री कस्तूरी लाल मदान

पाकिस्तान और उर्दू

पाकिस्तान मे सिंधी, पजाबी, बलोच पश्तोन भाषाए चलती है। उर्दू यद्यपि राष्ट्रभाषा है पर वह किसी की भी भाषा नही है सिवाय महाजिरो (शरणार्थी) के।

पाकिस्तान के एक उच्च पदस्थ अधिकारी ने एक भारतीय मित्र से कहा कि 'हमारे देश मे रेडियो तथा टी वी पर ऐसी कठिन उर्दू चलती है जो बोलचाल की भाषा ही नही। इसलिए जब कहा जाता है कि "अब उर्दू मे खबरें सुनिए" तो लोग मजाक करते हैं।

"अब खबरो मे उर्दू सुनिये।'

—नित्यनूतन से साभार

(शेष पृष्ठ 5 का)

भारत म जो आदिवासी क्षेत्र ईसाई बहुत हो गए वहा ईसाई राज्य बन गए। जैसे नागालैंड और मेघालय। नागालैंड और मिजोरम वास्तव मे भारत की धरती पर विदेशी मिशनरियो के अधीन पोप के राज्य हैं। वे अपने आपको अब भारतीय ही नही मानने बल्कि वहा भारत के विरुद्ध एक बडी शक्ति खडी हो रही है भारत विरोधी सशस्त्र सगठन बन गए हैं जो आसाम के अन्य क्षेत्रो में विद्रोह भडका रहे हैं। बोडो या। उनका उग्रवादियो को हथियार और प्रशिक्षण देते हैं। उन्हे गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण दिया जाता है।

भारत सरकार द्वारा इन दोनो राज्यो को अन्य राज्यो की अपेक्षा बहुत अधिक धन राशि दी जाती रही। इन दोनो राज्यो को कश्मीर की भाँति बल्कि और भी अधिक विशेषाधिकार प्राप्त हैं। और यह सारे अधिकार सुविधाए तथा धन भारत विरोधी गतिविधियो मे ही लग रहे हैं। जो कि तुरन्त बन्द होना चाहिए।

भारत मे पहिले ही ईसाई जनसंख्या का प्रतिशत लगातार बढता जा रहा है यदि यह प्रक्रिया अधिक तेज हो गई तो हिन्दू समाज सर्वनाश की ओर ही अग्रसर होगी।

अत हरिजनों को मिलने वाली सुविधाए ईसाईयो को नहीं मिलनी चाहिये क्योकि—

1 सविधान निर्माताओ ने सोच समझ कर केवल हिन्दू समाज के ही पिछडे वर्ग को सुविधाए दी थी। ईसाईयो को भी यह सुविधाए देना असवैधानिक है। सविधान की भावना के विरुद्ध है। जबकि इन्हें पहले ही विदेशों से अरबो डालर प्राप्त हो रहे हैं।

2 ईसाईयों मे अस्पृश्यता नही है और ईसाई बनने के उपरान्त कोई भी व्यक्ति हरिजन नहीं रहता।

3 हरिजनों को मिलने वाले धन तथा सविधानों को ईसाई बाटना चाहते हैं, इस से हरिजन समाज को हानि होगी। हरिजनों के प्रति अन्याय होगा।

4 ईसाईयों को हरिजनों वाली विशेष सुविधायें और अधिकार प्राप्त हो जाने से, ईसाईयों के लिए धर्म परिवर्तन कराना सरल हो जाएगा।

5 हिन्दू समाज का धन ईसाईयों की जेब से चला जाएगा।

6 ईसाई जगत का नियन्त्रण विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों के हाथ मे होने के कारण ईसाईयों को मिलने वाले धन का दुरुपयोग भारत विरोधी कार्यों में होता है। हिन्दू अपने धन का ऐसा दुरुपयोग नही होने देंगे।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

1	नैनिक शिक्षा (भाग प्रथम द्वितीय) प्रत्येक		1 50
3	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		2 00
4	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक—		3 00
10	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक—		4 00
12	नैनिक शिक्षा (भाग द्वादश)		5 00
13	धर्मवीर हकीकतराय	वैद्य गुरुदत्त	5 00
14	फ्लैश आफ ट्रुथ	डा० सत्यकाम वर्मा	2 00
15	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	,	2 00
16	एनाटोमी आफ वेदान्त	स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	5 00
17	आर्यों का आदि देश	,	2 00
18	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद		25 00
19	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स		2 00
20	सत्यार्थ वै वेन्त	,	5 00
21	द्वैतसिद्धि	, ,,	5 00
22	आयसमाज आज के सन्दर्भ मे—डा० धर्मपाल डा गोयनका		20 00
23	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—	प सच्चिदानन्द शास्त्री	5 00
24	हसता चल हसाता चल	स्वामी स्वरूपानन्द शास्त्री	6 50
25	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रस्ट)		50/-रु सैकडा
26	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		50/ रु सैकडा
27	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		50/ रु सैकडा
28	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		50/-रु सैकडा
29	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या) डा- रघुवीर		50/ रु सैकडा

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तको पर 15 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक् नही लिया जाएगा। पुस्तक प्राप्ति स्थान—

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आयसन्देश—दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ००१

R N No 3 87/ 7 Post in N D P S O on 26 29 6 1990 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ५८ पूर्व भुगतान बिना भजने का लाइसेंस न० य १३९

पुस्तक समीक्षा—

सामवेद सहिता

श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा ने मनोयोगपूवक इस पुस्तक मे सामवेद सहिता का कवितान्तर प्रस्तुत किया है। वेदो की भाषा वैदिक सस्कृत है। इस भाषा से अनभिज्ञ सामान्य जन इन मन्त्रो की आत्मा तक पहुच सके उनके लिए यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी होगी। परम पिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ म चार ऋषियो के माध्यम से चारो वदो का ज्ञान दिया। ऋक यजु साम और अथव के चार ऋषि हैं—अग्नि आदित्य वायु और अग्निए। ऋग्वद—ज्ञानकाण्ड यजुर्वेद कमकाण्ड और सामवद उपासना काण्ड कहलाता है। ज्ञान कम और उपासना य तीन मनुष्य जीवन के लिए पुरुषाथ से सिद्धि के उपादान माग हैं। उपासना काण्ड होने के कारण सामवद का विशेष महत्त्व है। साम का अथ है समता आत्मा और परमात्मा को समान स्तर पर लाना। ज्ञानपूण मनुष्य सत्कम करता हुआ ही उपासना के द्वारा ही इस समत्व को पा सकता है। आधुनिक मनोविज्ञान मे भी कोनशन कोग्निशन और विलिग इसी अभिप्राय को सम्पुष्ट करते हैं।

[सामवद सहिता—श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा 14 जैन मन्दिर राजा बाजार नई दिल्ली 1 वैदिक प्रस कैलाश नगर दिल्ली 31 मूल्य 100 रुपये]

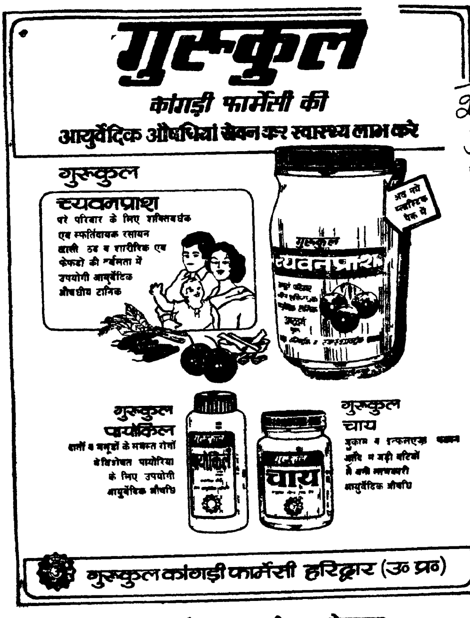
—मूलचन्द गुप्त

आर्यसमाज डिफेस कालोनी नई दिल्ली

आर्यसमाज डिफस कालोनी का विवाद अब शान्त हो गया है। श्री महाशय धमपाल प्रधान आय केन्द्रीय सभा को इस विवाद का समाधान करने का कार्यभार सौंपा गया था। उन्होने 24 जून 1990 को शान्ति पूव वातावरण मे सभी पक्षो की बात सुनने क पश्चात निर्वाचन कराया। श्री कनल डी आई एस साहनी को प्रधान निर्वाचित किया गया श्री कनल साहनी ने आर्यसमाज मन्दिर की व्यवस्था का कायभार तत्काल प्रभाव से सभाल लिया। यह भी निणय लिया गया कि आर्यसमाजो के सचालन म तथा आर्य सभासदो को चुनने मे भविष्य मे आयसमाज के नियम-उप नियमो के अनुसार ही कार्यवाही होगी।

प्रत्येक आय सभासद का कतव्य है कि वह सदाचारी हो आय का शताश सदस्यता शुल्क दे तथा उसकी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगों मे न्यूनतम उपस्थिति 25 प्रतिशत अवश्य हो।

आशा है कि डिफस कालोनी मे चल रही सभी सस्थाए सुचारु रूप से कार्य करेंगी।



सेवा में—

2367- श्री पुस्तकाध्यक्ष जी,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी,
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ०प्र०)

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली 1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा टाइम्स आर्ट कम्पोजिग एजेन्सी मौजपुर दिल्ली-५३ मे मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ३७ | रविवार ८ जुलाई १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपए | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

महाशय धर्मपाल आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान निर्वाचित

आर्य केन्द्रीय सभा का वार्षिक अधिवेशन एव निर्वाचन रविवार 1 जुलाई 1990 को आर्यसमाज हनुमान रोड के सभागार मे शान्ति एव सद्भाव के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। वार्षिक रिपोर्ट आय व्यय तथा बजट, एव गत साधारण सभा के अधिवेशन की कार्यवाही की सम्पुष्टि के पश्चात् महाशय धर्मपाल जी को प्रधान एव डॉ शिवकुमार शास्त्री को महामत्री सर्व सम्मति से चुना गया।

कार्यकारिणी तथा अतरग सभा के गठन का अधिकार महाशय धर्मपाल जी को दिया गया। आर्य केन्द्रीय सभा के सविधान मे कतिपय आवश्यक सशोधन भी स्वीकृत किए गए।

निर्वाचित अधिकारियो को बधाई देते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने कहा कि आर्यसमाज के सामने महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। जम्मू और काश्मीर के विस्थापितो के लिए और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ धर्मपाल ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि सुप्रसिद्ध उद्योग पति एव दानवीर श्री महाशय धर्मपाल जी आर्यकेन्द्रीय सभा का नेतृत्व कर रहे हैं। सभी उपस्थित आर्यजनो का स्वागत करते हुए डा धर्मपाल ने कहा कि आर्यसमाज की छवि को उभारने मे आर्य केन्द्रीय सभा का विशेष दायित्व है और इसे आप सभी के सहयोग से पूरा किया जा सकता है।

डॉ धर्मपाल ने बताया कि कल सामाजिक विज्ञान अनुसधान परिषद के सभागार म एक सगोष्ठी आयोजित की गयी थी। जिसमे उन्होने भी अपना शोधलेख—'विदेशो मे स्थापित आर्यसमाजो का हिन्दी के विकास मे योगदान" प्रस्तुत किया। उनके लेख में तो आर्य समाज, गुरुकुल कागडी, डी ए वी तथा सन्यासियो, प्रचारकों के नाम बार बार आए ही, यह सतोष का विषय है कि अन्य विद्वानो ने भी आर्यसमाज की उत्कृष्ट भूमिका की सराहना की। यह तभी सभव है, जब सब मिलकर काय करें। उन्होने यह भी बताया कि गत वर्ष उनके प्रयास से साहित्य अकादमी न एक पुस्तक प्रकाशित की थी—'महर्षि दयानन्द सरस्वती।' उनके प्रयास से इस वष भी एक पुस्तक की योजना स्वीकृत हो चुकी है। आगामी वर्ष मे प इन्द्र विद्या वाचस्पति पर एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया जाएगा। इस मोनोग्राफ को सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो विजयेन्द्र स्नातक लिखेंग। पिछले वर्ष हिन्दी अकादमी दिल्ली ने भी एक सगोष्ठी—'महर्षि दयानन्द की हिन्दी सेवा' आयोजित की थी।

दूरदर्शन और आकाशवाणी पर भी कई परिचर्चाए तथा अन्य कायक्रम प्रसारित किए गए। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर दूरदर्शन पर प्रसारित परिचर्चा मे डॉ धर्मपाल डा वेदप्रताप वैदिक तथा डा सत्यकाम वर्मा ने भाग लिया था। आर्यसमाज स्थापना दिवस पर प्रसारित दूरदशन परिचर्चा मे डॉ धमपाल डा विजयेन्द्र स्नातक और डा वेदप्रताप वैदिक ने भाग लिया था। प इन्द्र विद्यावाचस्पति पर डा धर्मपाल की परिचर्चा प्रसारित हुई। डा महेश विद्यालकार की वार्त्ता श्री स्वामी श्रद्धानन्द पर प्रसारित हुई।

भविष्य मे भी ये सभी काय सभी आर्यजनो के सहयोग से सम्पादित किए जा सकते हैं। सामाजिक कार्यों मे सभी का सहयोग परमावश्यक हैं।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपने गौरव को पुनः प्राप्त होगा

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा सस्थापित गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, जो वैदिक सस्कृति साहित्य का उच्चतम शिक्षा के अध्ययन के लिए एकमात्र शिक्षा सस्थान था, और जो भारतीय ही नही विदेशी शिक्षा-शास्त्रियो की भी ईर्ष्या का कारण था विगत कुछ कार्यों से राजनीतिज्ञों और स्वार्थी लोगो का आश्रय स्थल बन गया था। अब इसी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक श्री सुभाष विद्यालकार के कुलपति पद पर आसीन होने से यह आशा बध गयी है कि यह विश्वविद्यालय एक बार पुन अपने खोये हुए गौरव को पुन प्राप्त करेगा। यह उदगार श्री सुभाष विद्यालकार के कुलपति नियुक्त होने के उपलक्ष्य मे आयोजित स्वागत समारोह के अवसर पर सभी वक्ताओ द्वारा दिए गए विचारो ध्वनित हो रहे थे।

रविवार, दिनाक 1 जुलाई 1990 को आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली द्वारा अपने पूर्व मन्त्री, उपप्रधान एव प्रतिष्ठित सदस्य श्री सुभाष जी विद्यालकार के गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त होने पर उनका हार्दिक अभिनन्दन किया गया। समारोह मे सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल महामन्त्री श्री सूर्यदेव आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा तथा दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजो के अधिकारी और कार्यकर्ताओ ने श्री विद्यालकार को अपनी शुभकामनायें दी।

श्री सुभाष जी ने स्वागत के लिए धन्यवाद करते हुए विश्वास दिलाया कि उन्हें परमात्मा से गुरुकुल माता की सेवा करने के लिए प्रेरणा प्राप्त हुई है अत वे वर्तमान की विषम परिस्थितियो मे भी गुरुकुल विश्वविद्यालय की खोयी हुई ख्याति को पुन स्थापित करने के लिए अपना पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

श्री वीरेन्द्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित

जालन्धर, 25 जून—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक साधारण अधिवेशन 24 जून 1990 को दोआबा कालेज जालन्धर मे सम्पन्न हुआ। जिसमे पजाब की भिन्न-भिन्न आर्यसमाजों के प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

श्री वीरेन्द्र जी को एक बार फिर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का प्रधान चुन लिया गया और इसके साथ ही एक अन्य प्रस्ताव के द्वारा सभा के शेष अधिकारी व अन्तरग सदस्यों, को मनोनीत करने का सर्वसम्मति से उन्हें अधिकार दिया गया।

इस अवसर पर आदरणीय मीरायति जी और आर्य समाज के सुप्रसिद्ध गायक श्री सत्यपाल जी 'पथिक' को सभा की ओर से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही आर्य गर्ल्ज सी० सै०, स्कूल लुधियाना की उन दो कन्याओ को भी पारितोषिक दिये गये जो अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा मे प्रथम व तृतीय स्थान पर आई थीं।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्य समाज के मन्तव्यों को पूरी तरह न समझने वाले अज्ञानी तथा अलग-अलग सम्प्रदायों को मानने वाले बहुत से लोग आर्य समाज को भी एक सम्प्रदाय कह डालते हैं। दुःख की बात यह है कि कुछ आर्य समाजी भाई भी जो किसी कारण आर्य समाज के संगठन से कटे हुए हैं या अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर पाये हैं। वे भी सीधे न कहकर घुमा फिराकर यह कहने से नहीं हिचकते कि विश्व के कई देशों मे फैला हुआ हजारों शाखाओं वाला आर्यसमाज का संगठन साम्प्रदायिक हो गया है। इसीलिये सभी मतों के अनुयाईयों को मिलाकर एक नये भारतीय आर्यसमाज का गठन करना चाहिये।

इसलिए कई प्रकार के लोगों द्वारा आर्यसमाज के सम्बन्ध मे जो भ्रम जान-बूझकर या अनजाने फैलाया जा रहा है उसका प्रतिकार करना और वस्तुस्थिति सबके सामने रखना आवश्यक जान पड़ता है।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने "स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश" में स्पष्ट शब्दों मे लिखा है —"मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल मे सबको एकता मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोडना और छुडवाना मुझको अभीष्ठ है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचारित मतो मे से किसी एक मत का आग्रही होता।

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में महर्षि लिखते हैं.—

"क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं, वैसे भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं" "स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश" में मनुष्य किसको कहते हैं यह स्पष्ट किया है।

"मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुख और हानि लाभ को समझें।—जहां तक हो सके वहां तक न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।"

महर्षि सारे जगत का पूर्ण हित चाहते थे, इसलिए उनकी यह हार्दिक इच्छा थी कि विभिन्न मतों के विद्वान "पक्षपात छोड सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात जो जो बातें सबके अनुकूल सब मे सत्य है उनका ग्रहण जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें जो जगत का पूर्ण हित होवे।"

इस पृष्ठभूमि मे आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने की थी। इसलिए यह सबको समझ लेना चाहिये कि यही नही आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नही है, बल्कि आर्यसमाज साम्प्रदायिकता और सम्प्रदायवाद का डटकर विरोधी है। आर्य समाज जन्म के आधार पर जात-पांत ऊंच-नीच या मजहब आदि का भेद भाव नही मानता है। आर्यसमाज की मान्यता है कि जन्म से ही न कोई ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्रादि होता है और न ही हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी पारसी आदि। जन्म के आधार पर लोगों को वर्गों और सम्प्रदायों मे बांटना मानव समाज का सबसे बडा अभिशाप है। मानव की अधिकतर समस्याओं का मूल जन्म के आधार पर लोगो को वर्गों और सम्प्रदायों में बांटता है। सब बच्चों को समुचित शिक्षा के द्वारा मानव समाज के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप मे विकसित होने का समान अवसर मिले।

आर्य समाज का नियम

आर्य समाज के दस नियम स्वामी दयानन्द ने सोच समझकर बनाये थे ताकि इन नियमों का पालन करने वाले आर्यसमाज के सदस्य अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझकर ऐसा आचरण करें जिससे मानव समाज मे वैमनस्य की जगह प्रेम, स्पर्धा की जगह सहयोग बढ़े और सबकी उन्नति में ही वे अपनी उन्नति देखें और समझें। जो इन नियमों का हृदयगम करेगा वह साम्प्रदायिक तो हो ही नहीं सकता, वह सम्प्रदायो के द्वारा मानव समाज को बांटने का विरोध करेगा और जो सर्वमान्य सिद्धान्त हैं उनके द्वारा सबको मिलाकर मानव समाज का दुख दर्द समाप्त करने में लग जायेगा।

आर्यसमाज का सदस्य बनने के लिए किसी विशेष जाति या सम्प्रदाय मे जन्म लेना आवश्यक नही है। सदस्यता के फार्म मे इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं है। वह किसी भी तथाकथित जाति या सम्प्रदाय में जन्मा हो, बिना भेदभाव के आर्य समाज का सदस्य बन सकता है, यदि वह नियमों का पालन करे। आर्य समाज का द्वार सबके लिए खुला है। इसलिये आर्यसमाज मे ऐसा संगठन बनाने की बात करना जिसमे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सम्प्रदायों के लोग भर्ती हो सकें, व्यर्थ का ढोंग है। आर्य समाज राजनैतिक दल तो है नहीं कि इसमें सभी सम्प्रदायों के लोग साम्प्रदायिक भावनायें रखते हुए भी शामिल हो सकें और फिर अन्दर बैठकर अपने-अपने सम्प्रदायों की लड़ाई लड़ते रहें। आर्यसमाज तो एक सार्वभौम संगठन है और सब प्रकार के भेदभाव भुलाकर मानव समाज की सेवा करने में विश्वास रखता है। यह संगठन किसी जाति विशेष, सम्प्रदाय विशेष या देश विशेष का नहीं हो सकता। सभी क्षेत्रों में काम करने के लिये उसकी शाखायें तो सब जगह खुलनी चाहिये परन्तु वह है विश्वकल्याण के लिए विश्व व्यापी संगठन। यह संगठन बना हुआ है, काम कर रहा है। उसके काम में कमी हो सकती है, उसमें अधिक से अधिक कर्मठ लोग शामिल होकर काम करें और महर्षि के मन्तव्यों के अनुसार काम करें। आर्यसमाज की शिक्षा संस्थायें सम्प्रदायिकता से बहुत ऊपर रही हैं। कन्या गुरुकुल देहरादून से 10 मुस्लिम कन्याए स्नातिका बनकर निकली हैं। दयानन्द कालेज जालन्धर में शिक्षा प्राप्त करने वाले रहमत अली पाकिस्तान में छुआछूत के विरुद्ध आन्दोलन चला रहे हैं। लाहौर में 1988 में उन्होंने मुझे बताया जब मैं उनके घर पर भोजन करने गया।

शुद्धि आन्दोलन का स्वरूप

प्रश्न उठता है कि शुद्धिआन्दोलन के रहते सम्प्रदायों मे सौमनस्य कैसे उत्पन्न होगा। मानव समाज का यह दुर्भाग्य है कि वह सम्प्रदायों और मतमतान्तरों मे बट गया है। हर सम्प्रदाय अपने आपको बढ़िया और दूसरों को घटिया बताता है। परन्तु तथाकथित हिन्दू सम्प्रदाय ऐसा है कि उसके तथाकथित धर्माचार्य छुआछूत ऊंच-नीच के भेदभाव को अपने धर्म या सम्प्रदाय का अंग मानते हैं। वे अपने सम्प्रदाय के भी अधिकतर लोगों को अपवित्र मानते हैं और दूसरे सम्प्रदायों के लोगों को भी। यदि तिरस्कृत होने के कारण या भय अथवा प्रलोभन के कारण कुछ लोग हिन्दू सम्प्रदाय को छोडकर दूसरे सम्प्रदाय में चले जाते हैं, तो वे उनको हमेशा के लिए अपवित्र मान लेते हैं और उसकी "शुद्धी" किसी हालत में सम्भव नहीं। आर्यसमाज असत्य और पाखंड तथा सम्प्रदायों के लोगों को पवित्र, अपवित्र और घटिया, बढ़िया नहीं मानता। कोई व्यक्ति किसी सम्प्रदाय में चला जाये तो वह उनके लिये बढ़िया और दूसरों के लिए घटिया हो जाता है या अपवित्र माना जाता है। अपवित्रता का दाग मिटाने के लिए "शुद्धि" शब्द का उपयोग किया गया है। तथाकथित छोटी जाति के लोग किसी भी सम्प्रदाय में जायें वह जाति उसका पीछा नहीं छोडती। तिरस्कृत होकर सम्मान की आशा में दूसरे सम्प्रदाय में जाये और वहां भी चैन न मिले तो यदि फिर पुराने सम्प्रदाय और समाज मे जाना चाहे उसका रास्ता पाखण्डी धर्माचार्यों ने बन्द कर दिया था, वह तथाकथित अपवित्र को "पवित्र" बनाने का "शुद्धी" का रास्ता आर्यसमाज ने खोल दिया। आर्यसमाज एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय मे चले जाने का इसलिये स्वागत नहीं करता क्योंकि इससे साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक वैमनस्य को बढ़ावा मिलता है जो आरम्भ में ही कहे गये महर्षि के मन्तव्यों के सर्वथा विरुद्ध है।

"आर्य सभा" या "भारतीय आर्यसमाज" नये नये नामों से संगठन खड़ाकर आर्यसमाज के स्वरूप को बिगडने का ही प्रयास है। ऐसे संगठनों से महर्षि के मन्तव्यों को मानने वाले किसी भी आर्यसमाज में सदस्य को नाता नहीं जोडना चाहिये और ऐसे प्रयासों की निन्दा करनी चाहिये।

ओइम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥19॥ यजु० 36।24॥

सौ वर्ष या अधिक जियें

देव नारायण भारद्वाज

प्रभु सूर्य और उसकी संस्तुति कर दर्शपर्श तल्लीन जियें।
सौ वर्ष जिएं या अधिक जिएं, पर होकर के स्वाधीन जियें॥

उदय हो रहा शुद्ध दशा मे
पहले से ही पूर्व दिशा मे
दी दृष्टि इसी रवि ने सबको
दृश्य दीखते निशा-उषा मे।

हो ईश सूर्य तब विश्वपूर्ण, हम होकर के भयहीन जिएं।
सौ वर्ष जिएं या अधिक जिएं, पर होकर के स्वाधीन जिएं॥

प्रभु सूर्य विश्व सब मन भावन
सौ वर्षों तक देखें पावन
सौ वर्षों तक इनको जी ले
सौ वर्ष सुने श्रुति का गायन

सौ वर्ष बोल व्याख्यान करें गुणगान ईश लवलीन जिएं
सौ वर्ष जियें या अधिक जियें पर होकर के स्वाधीन जियें॥

हों नहीं दीन सौ वर्षों में
या अधिक आयु के वर्षों में
उत्कर्ष-हर्ष के साथ जियें
कर विजय सभी संघर्षों में।

हम जितना भी जीवन पायें प्रभु में कर हृदय विलीन जियें।
सौ वर्ष जियें या अधिक जियें, पर होकर के स्वाधीन जियें॥

एफ-42 मालवादोवर कालोनी
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001

साप्ताहिक   ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

विराट दृष्टि अपनायें



संस्कृत साहित्य में शिक्षा दी गई है कि कुल का हित उपस्थित होने पर व्यक्ति को अपने निजी स्वार्थ त्याग देने चाहिए। जब ग्राम या नगर का व्यापक हित उपस्थित हो तो उसके सम्मुख एक परिवार या अनेक परिवारों को अपने स्वार्थों की तिलांजलि दे देनी चाहिए। जब एक प्रदेश का प्रश्न हो तो एक या अनेक गांवों के संकुचित हितों की उपेक्षा कर देनी चाहिए। इसी तरह जब सम्पूर्ण राष्ट्र के वर्तमान या भविष्य का प्रश्न उपस्थित हो तो एक प्रदेश या अनेक प्रदेशों के हितों को गौण स्थान देना चाहिए। इसी प्रकार जब सम्पूर्ण मानवता का प्रश्न हो तो एक देश के संकुचित स्वार्थ को महत्ता नहीं दी जा सकती।

इस समय देश के सम्मुख अनेक प्रश्न हैं, अनेक समस्याएं हैं। छोटे-छोटे दल एवं प्रदेश अपने पृथक अस्तित्व एवं स्वार्थ के लिए बड़े हितों की निरन्तर उपेक्षा कर रहे हैं। देश के पूर्वोत्तर, पश्चिमोत्तर एवं दक्षिणी भागों में अलगाववादी शक्तियां सिर उठा रही हैं। आज विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में जो किताबी शिक्षा दी जा रही है, वह अर्थकारी विद्या है। उसका एक मात्र लक्ष्य पैसा है। सारे दल, सब प्रदेश भोग, सुख एवं स्वार्थ पूर्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। हरेक को अपनी-अपनी पड़ी है, किसी को देश-धर्म एवं मानवता की परवाह नहीं है। स्थिति बड़ी भयावह है।

स्वभावतः जिज्ञासा होती है कि स्थिति के सुधार के लिए क्या किया जाए? समस्याओं के समाधान एवं स्थिति के सुधार के कुछ तात्कालिक एवं अस्थायी उपाय हो सकते हैं। देश में सुदृढ़ केन्द्रीय शासन की प्रतिष्ठा से अलगाववादी प्रवृत्तियों का अन्त हो सकता है। पिछले कुछ वर्षों मे केन्द्र मे शासन बदलते रहने से केन्द्रीय सत्ता उतनी सुदृढ़ नहीं है, जितनी कि वह आज से पन्द्रह वर्ष पहले थी। जल्दी या देर में केन्द्रीय शासन सुदृढ़ होगा, परन्तु उससे भी बड़ा प्रश्न भावात्मक एकता और विराट या बड़ी इकाई के लिए छोटी इकाई के संकुचित हितों के त्याग का है। इस तरह की भावना एवं वृत्ति उसी स्थिति में जाग्रत हो सकती है जब माता की घुट्टी से छोटे बड़े शिक्षणालयों मे व्यक्ति, परिवार, गांव, प्रदेश के संकुचित हितों के स्थान पर देश, मातृभूमि एवं मानवता के प्रति उत्सर्ग की भावना ओत प्रोत की जा सके। यह कोई छोटा कार्य नहीं है। यह कार्य आर्यसमाज जैसी लोकोपकारी, राष्ट्र एवं समाज मे परिवर्तन की अलख जगाने वाली संस्थाओं द्वारा ही किया जा सकता है। पिछली शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके भक्तों ने संकुचित स्वार्थों के स्थान पर स्वदेश, स्वधर्म एवं मानव जाति के कल्याण का बीड़ा उठाया था। वही काम अब आर्यसमाज को अग्रसर करना होगा।

इस समय सम्पूर्ण मानवता एवं पृथ्वी तल के संहार का प्रश्न भी मुंह बाए खड़ा है। पूंजीवादी और साम्यवादी राष्ट्र आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों के अनन्त भण्डार बढ़ाते जा रहे हैं। उनकी एक आकस्मिक टक्कर से पृथ्वी पर सर्वनाश की विभीषिका ताण्डव-नृत्य कर सकती है। आधुनिक मानव अपनी संहारक शक्तियों से कब भस्मासुर-सरीखा स्वयं अपने को नष्ट कर डाले, यह कहा नहीं जा सकता। आज की भोगवादी पश्चिमी संस्कृति एवं सभ्यता विनाश के कगार पर अवस्थित है। वह स्वतः भस्म न हो जाए, उसके जो नवीन वैज्ञानिक प्रगति के तत्त्व हैं, वे सुरक्षित हों, उनके साथ पूर्व के अध्यात्म, चिन्तन एवं दार्शनिक तत्त्वों का सार भाव समन्वित हो सके, इसके लिए आज के मानव को "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा" त्याग एवं परोपकार पूर्वक जीवन व्यतीत करने का व्रत संकल्प करना होगा।

आज दिल्ली में लघुभारत समाया हुआ है। यह लघु भारत विशाल भारत विराट मानवता के कल्याण के लिये प्रवृत्त हो सके, इसके लिए प्रारम्भ से ही आज के बच्चों, बाल एवं युवा वर्ग में नई प्रेरणा एवं सन्देश देना होगा। आर्यसमाज का इस सम्बन्ध में विशेष दायित्व है। समाज के नेतृवृन्द, लेखकों एवं शिक्षकों को पुरानी एवं नई पीढ़ी में संकुचित वृत्ति छोड़कर विराट दृष्टि अपनाने और उसे कार्यान्वित करने की प्रेरणा देनी चाहिये, तभी स्थिति का स्थायी समाधान सम्भव है।

हर डगर पर हमने दीपक ही जलाए

हर डगर पर हम ने दीपक ही जलाये,
बढ़ते तूफानों का कब मातम किया है?

घुप अंधेरे मे खुली थी आंख अपनी, विष भरे वातावरण में सांस ली है।
कंटकों ने मार्ग में पग-2 पे रोका, और निशा काली धरोहर में मिली है।
किन्तु हम कब कण्टकों से रुक सके हैं? कब हमारे धैर्य ने है हार मानी?
पत्थरों में भी खिलाये फूल हमने—विश्व मे चाहे कोई मौसम रहा है॥
काल ने हो क्रुद्ध ली अपनी परीक्षा—सत्य का सम्बल लिये बढ़ते रहे हम।
अपने पौरुष ने सदा तूफान मोड़े—तेज झंझावात से लड़ते रहे हम।
विजय (हैदराबाद) नगर हो या पटियाले की धरती आर्यों के रक्त से रंजित है अब तक।
शौर्य गाथाएं निनादित आज भी हैं, जिनका स्वर ऊंचा कभी मध्यम रहा है।
आज फिर पाखंड का है बोल बाला, सत्य है सहमा हुआ सा बे सहारा।
वेद की मशाल लिए हम चल पड़े हैं, आओ जिसको साथ देना हो हमारा।
तम उजाले को चुनौती दे रहा है आओ वेदा लोक से जग जगमगाए
अब कहां विश्राम आओ तम से जूझें, सत्य का पथ तो सदा दुर्गम रहा है।

सम्पादक के नाम पत्र —

उच्चतम न्यायालय और हिन्दी

संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा बनाये जाने का निर्णय किया था। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के 42 वर्ष पश्चात् भी भारत के उच्चतम न्यायालय में भारत की राष्ट्र भाषा के व्यवहार पर रोक लगी हुई है। कोई न्यायाधीश राष्ट्र भाषा का प्रयोग नहीं कर सकता न ही किसी अधिवक्ता को हिन्दी के प्रयोग की अनुमति है। प्राचीन काल से महान् संस्कृति और विशाल साहित्य की धरोहर का अभिमान रखने वाले भारत वर्ष मे अपनी राष्ट्र भाषा मे व्यवहार की भी अनुमति भारत के उच्चतम न्यायालय मे न हो, यह भारत का राष्ट्रीय अपमान है। अंग्रेजों की गुलामी का यह कलंक धो डालने के लिए भारत माता के सपूतों को संघर्ष करना चाहिए। राष्ट्र के प्रति हमारी उदासीनता और उपेक्षा वृत्ति के कारण ही हमारे देश में अनेक समस्याएं तथा अशान्ति उत्पन्न हो गई हैं और देश म देशद्रोह सिर उठा रहा है। जबकि देश भक्ति पैरों तले कुचली जा रही है

राष्ट्र भाषा के प्रति निष्ठा के बल पर संसार के अनेक देश उन्नति के शिखर पर पहुंच गये। किन्तु हमारे देश ने विदेशी भाषा को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाए रखने के कारण, देश की 90 प्रतिशत से अधिक जनता पशुओं की तरह बे-जुबान गूंगी बना दी गई है। उनका राष्ट्र के विकास मे कोई योगदान नहीं हो पाता ऐसा नहीं है कि हिन्दी मे न्यायालय का कार्य हो नहीं सकता। जब इलाहाबाद पटना, जयपुर के उच्चन्यायालयों में हिन्दी में काम चलता है तो दिल्ली के उच्चन्यायालय में और उच्चतम न्यायालय में राष्ट्रभाषा में क्यों काम नहीं चलाया जा सकता? वास्तव में भारत की न्यायपालिका को अंग्रेजों की गुलामी में दबाए रखने की हठधर्मी ने राष्ट्र भाषा और न्याय दोनों का गला घोंटा है। राष्ट्र को उन्नत बनाने की इच्छा शक्ति को क्षति पहुंचाई है। वादी एवं प्रतिवादी अपना-अपना पक्ष विदेशी भाषा में प्रस्तुत नहीं कर पाते। वकील भी प्रायः ठीक ठीक और प्रभावी रूप में तर्क नहीं दे पाते। फिर भी न जाने अपनी भाषा से घृणा क्यों?

यदि सरकार दिल्ली के उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायायालय में राष्ट्र भाषा पर लगी रोक को तुरन्त नहीं हटाती तो देश के देशभक्त नर-नारियों को संघर्ष करना पड़ेगा। राष्ट्र भाषा पर लगी पाबन्दी को हटाये बिना देश की स्वतन्त्रता अधूरी है। पूर्ण स्वराज्य हमारा अधिकार है और उसे प्राप्त करना हमारा परम कर्तव्य।

डॉ० कैलाश चन्द्र
संकट मोचन आश्रम, रामकृष्ण पुरम, सैक्टर-6 नई दिल्ली-22

सम्पादक के नाम पत्र—

आर्य सन्देश के विशेषांक

मैं आर्य संदेश का ग्राहक हूं। यहां इण्टर कालिज में अध्यापक तथा एक छोटा मोटा आर्य उपदेशक हूं। लेखन कार्य भी करता हूं। 'आर्य सन्देश समय से नियमित रूप से मिल रहा है। इसके लिए आपको धन्यवाद। आर्यसंदेश के वर्ष मे इतने अधिक विशेषांक एवं इतने बढ़िया विशेषांक शायद भारत वर्ष मे कोई आर्य पत्रिका प्रकाशक नहीं प्रदान करता है। इसके लिए आपको धन्यवाद।

डा० कस्तूरी लाल आर्य
प्रधान, आर्यसमाज बार बाजार, देवरिया, उ० प्र०

केन्द्रीय शिक्षा राज्यमन्त्री श्री चिमनभाई मेहता का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आगमन

भारत सरकार के शिक्षा राज्यमन्त्री माननीय श्री चिमनभाई मेहता विश्वविद्यालय मे 16 जून को पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति एव अध्यापकों से विश्वविद्यालय के विकास तथा शिक्षा से सम्बद्ध मामलों पर विचार विमर्श किया और आश्वासन दिया कि इस विश्वविद्यालय के विकास के लिए भारत सरकार समुचित सहायता देती रहेगी। उन्होंने कहा कि इस समय देश के हर क्षेत्र में चरित्रवान नागरिको का अभाव है। गुरुकुल की शिक्षा मे चरित्र निर्माण पर सदैव बल दिया जाता रहा है, इसलिये देश एव समाज को गुरुकुल से विशेष आशायें एव अपेक्षाए हैं। माननीय शिक्षा राज्यमन्त्री महोदय ने कहा कि विश्वविद्यालय मे ऐसे पाठ्यक्रम शुरू किये जाने चाहिये जो आजीविका के लिये सहायक होने के अतिरिक्त निरक्षरता दूर करने मे भी सहायक बन सकें।

5 मई 1990 को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के नव नियुक्त कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार ने अपने पद का कार्यभार सभाल लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय की वर्तमान समस्याओं पर विश्वविद्यालय के अध्यापकों और अन्य अधिकारियों से विचार विनिमय किया और उनसे अनुरोध किया कि वे 8वीं पञ्चवर्षीय योजना के लिये अपने विभिन्न प्रस्ताव प्रस्तुत करें। कुलपति विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय मे भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति शास्त्र तथा प्राणि शास्त्र मे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिये प्रयत्नशील हैं। विज्ञान महाविद्यालय के गणित विभाग तथा माइक्रोबाइलोजी विभाग मे स्नातकोत्तर शिक्षा पिछले कुछ वर्षों से दी जा रही है। गणित विभाग में वैदिक-गणित पढ़ाने की व्यवस्था करने के भी प्रयत्न किए जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय का नया सत्र 10 जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। कुलपति ने आदेश दिए हैं कि शिक्षा सत्र का शुभारम्भ बृहद् यज्ञ से होगा। इस यज्ञ मे विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एव समस्त कुलवासी उपस्थित होंगे तथा प्रतिदिन प्रात वैदिक प्रार्थना के साथ अध्ययन अध्यापन प्रारम्भ होगा। विश्वविद्यालय मे यह प्रथा पहले भी प्रचलित थी किन्तु पिछले अनेक वर्षों से इसका परिपालन नहीं आ रहा था। नए शिक्षा सत्र मे ऐसे हर सम्भव प्रयत्न किए जायेंगे जिनसे विश्वविद्यालय में शिक्षा से सम्बन्धित सभी सुविधाए और अध्यापकों का मार्गदर्शन विद्यार्थियो को दिन भर प्राप्त होता रहे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष से भेंट

विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार ने 21 जून को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो० यशपाल से विश्वविद्यालय की वर्तमान परिस्थितियों और आगामी योजनाओं के बारे में विचार-विमर्श किया। प्रो० यशपाल ने आश्वासन दिया कि विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य के अध्ययन-अध्यापन तथा अनुसंधान के लिए एव इस विश्वविद्यालय को वैदिक ग्रंथों, भारतीय विद्या एव योग का विशिष्ट अध्ययन एव अनुसधान केन्द्र बनाने के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यथाशक्ति सहयोग देगा। प्रो० यशपाल के निर्देशों के अनुसार इस सम्बन्ध में 8वीं पञ्चवर्षीय योजना के प्रस्ताव तैयार किए जा रहे हैं जिन पर विश्वविद्यालय के अधिकारी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिकारियों के साथ निकट भविष्य में ही विचार विमर्श करेंगे।

विश्वविद्यालय का नया शिक्षा सत्र प्रारम्भ होने से पहले ही वित्त समिति और कार्य परिषद् की बैठकें भी की जा चुकी हैं जिनमें महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये हैं। उक्त दोनों बैठकें विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून मे 12 एव 13 जून 1990 को आयोजित की गई। इन बैठकों मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मत्रालय भारत सरकार के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इन प्रतिनिधियों ने द्वितीय परिसर की समस्याओं और आवश्यकताओं का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण एव आकलन किया।

पुस्तकालय और पुरातत्व सग्रहालय

पिछले दिनों पुस्तकालय में कम्प्यूटर यूनिट ने भी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। इसके कारण पुस्तकालय की सुविधाओं को और अधिक बढ़ाया जा सकेगा। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एव पुरातत्व सग्रहालय को देखने के लिये इस मास अनेक गणमान्य व्यक्ति गुरुकुल पधारे, जिनमें उत्तर प्रदेश के महालेखाकार श्री ज्योतिस्वरूप मलहोत्रा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उप सचिव तिलकराज केम शिक्षा मत्रालय की उपसचिव श्रीमती शोभना जोशी, महालक्ष्मी शुगर मिल के महाप्रबन्धक श्री राव तथा हरिद्वार विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री एच० सी० श्रीवास्तव के नाम उल्लेखनीय हैं।

अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षा देने वाले परीक्षार्थियों ने भी गर्मियो की छुट्टियों मे पुस्तकालय का विशेष लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त दून स्कूल एव वेलहम स्कूल, देहरादून के कुछ छात्र अपने ग्रीष्मकालीन प्रोजेक्ट पूरे करने के लिये अध्ययन हेतु पुस्तकालय मे आए।

समाधान हो सकता है

प्रो० वेदव्यास जी से नम्र निवेदन—

आर्यसमाज वेद की प्रचारक सस्था है, जिसके सस्थापक ने अपना हर मन्तव्य वेदों को मान्यता के अनुकूल मानने का आदेश दिया है। ऋषि दयानन्द वेदों को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार करते हैं और आर्यसमाज के सदस्य बनने के लिए इस मान्यता को स्वीकार करना लाजमी है। यह भी सच है कि आर्यसमाज प्रजातन्त्र मे विश्वास रखता है। प्रबन्ध सम्बन्धी सभी कार्य सर्व सम्मत्ति अथवा बहुमत के आधार पर होते हैं, सामाजिक सर्वहितकारी नियमों के पालन मे सदस्य परतन्त्र होता है, यह परतन्त्रता उस पर लादी नहीं गई अपितु समाज हित के लिए व्यक्ति को समष्टियज्ञ में स्वय अर्पित एक आहुति है।

दुर्भाग्य से ऐसे सुदृढ आधारों पर स्थित समाज मे आज विगठन का कीड़ा लग गया है, और यदि गम्भीरता से प्रयास किया जाए, तो इसे समाप्त भी किया जा सकता है।

पिछले दिनो आर्यसमाज के शीर्षस्थ गति मडल को एक विज्ञप्ति देखने को मिली जिसमे मडल को आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास से कुछ गिला है। विज्ञप्ति मे दिये उद्धरणो से पता लगता है कि सभा के प्रधान प्रो० साहब को वेद सबधी वे मान्यताएँ स्वीकार नहीं जो ऋषि दयानन्द को मान्य हैं, और जो आर्य समाज का आकार हैं। मैं ही नही समूचे आर्यसमाज इस विवाद से परेशान है क्योंकि प्रो वेदव्यास जी प्रादेशिक सभा के प्रधान हैं। जो समाज वेदों को सर्वोपरि ईश्वरीय ज्ञान मानता है, उसी सस्था के प्रधान यदि इसके विरोध में लेख लिखें, तो समाज कैसे चल सकेगा।

प्रो० वेदव्यास जी एक सुयोग्य व्यक्ति है शिक्षा क्षेत्र में उनका अपना स्थान है। उनकी शालीनता से भी आर्यजन परिचित हैं वर्षों से वे प्रादेशिक सभा के निर्विवाद प्रधान हैं मैं समझता हूँ ऐसा योग्य व्यक्ति किसी समाज के लिए इस प्रकार की आपाधापी पसन्द नहीं कर सकता शिक्षित व्यक्ति यदि किसी समाज का अधिकारी होता है तो उसके मन्तव्यों को स्वीकार करने के पश्चात् होता है। प्रो० वेदव्यास जी आर्यसमाज के वेद सम्बन्धी मन्तव्य से अनभिज्ञ नहीं हो सकते। अत लगता है कि यदि मडल द्वारा दिए उद्धरण उनके आर्यसमाज के अधिकार पर आने से पूर्व के होंगे। यदि ऐसा है तो प्रो साहब का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि वे इसे स्पष्ट रूप से आर्य जगत् मे प्रसारित करें ताकि समाज व्यक्ति के विवाद से बचे।

और यदि उनके विचार वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानने के आज भी नहीं है तो उनका नैतिक कर्त्तव्य बन जाता है कि समाज के अधिकार को शालीनता पूर्वक समाज को लौटा दें। ऐसी आशा प्रो साहब जैसे पढ़े लिखे अनुभवी व्यक्ति से हर आर्य कर सकता है। प्रो साहब के दो साथी श्री रामनाथ जी सहगल तथा श्री दरबारी लाल जी स्वय वेदों के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द के मन्तव्य से सर्वथा सहमत हैं यह दोनों महानुभाव जो प्रो साहब से स्पष्टीकरण द्वारा इस विवाद को समाप्त करा सकते हैं।

आर्य बन्धुओं को स्मरण होगा कि इससे पूर्व भी प्रादेशिक सभा के वैदिक विद्वान प विश्व बन्धु जी का वेद तथा इतिहास के विषय मे प्रबल मत भेद रहा, शास्त्रार्थ हुवे सौभाग्य से तब महात्मा हंसराज जी जीवित थे, उनके व्यक्तित्व तथा सद् प्रयासों से वह विवाद शान्त हुआ परन्तु तब प विश्वबन्धु जी सभा के प्रधान नहीं थे, प्रो वेदव्यास जी सभा के प्रधान हैं अत उन पर दायित्व भी बढ़ जाता है।

आर्यसमाज के मन्तव्यों पर मत भेद हो सकता है इसके लिए समाज में मस्तिष्क पर कोई बन्धन नहीं परन्तु उस मतभेद के रहते कोई समाज का अधिकारी तो दूर सदस्य भी नहीं रह सकता और वह आर्यसमाज के विद्वान से शास्त्र चर्चा भी कर सकता है, आखिर आर्यसमाज के विद्वान वेद के सर्वथा विरोधी ईसाई आदि मतों से शास्त्रार्थ करता आये हैं इसकी कोई रुकावट नहीं, परन्तु ऐसा व्यक्ति समाज का अधिकारी नहीं बन सकता।

मैं समझता हूँ एक प्रो वेद व्यास जी भाई सहगल जी इस विवाद को शीघ्र समाप्त करा देंगे क्योंकि इससे पूर्व कि समूचे घर को आग लग जाए, सुलगती चिन्गारी को बुझा देना ही उपयुक्त है।

आर्य प्रादेशिक सभा तथा उसके अधिकारियों ने समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में जो सेवाएँ की हैं वे अविस्मरणीय हैं आशा है अब भी वे समाज के अनुशासन में सहायक हो कर अपने तथा प्रादेशिक सभा के नाम को उज्ज्वल करेंगे।

राष्ट्रीय चिंतन के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

डा० गगाराम गर्ग
वानप्रस्थाश्रम, हरिद्वार

पाश्चात्य विचारकों की यह सामान्य धारणा है कि एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीपों में राष्ट्रीयता का जो सूर्य उदय हुआ, उसका श्रेय यूरोपीय साम्राज्यवाद को है। साम्राज्यवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप ही इन देशो में राष्ट्रीयता की जो लहर आई, उसी ने स्वतन्त्रता आंदोलन का रूप धारण किया। साथ ही उनके द्वारा यह भी युक्ति दी जाती है कि इन देशों के राष्ट्रीय चिंतन पर पश्चिमी साहित्य और चिंतन का प्रभाव है। भारतीय राष्ट्रीयता के उन्नायकों में राजा राममोहन राय से लेकर जवाहरलाल नेहरू तक सब में एक बात समान थी कि वे किसी-न-किसी रूप में पाश्चात्य चिंतन से प्रभावित थे। उन्हें पाश्चात्य साहित्य तथा वहा की बौद्धिक परंपरा का यथेष्ठ ज्ञान था। यह बात महात्मा गांधी पर भी लागू होती है, यद्यपि उन्होंने अपने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे 'अहिंसा' के सिद्धान्त को एक नई दिशा प्रदान की। पर यह बात महर्षि दयानन्द पर लागू नही होती। उनके चिंतन पर पाश्चात्य प्रभाव न के बराबर था। उनकी राष्ट्रीय चिंतन का उद्गम था उनका अपना भारतीय साहित्य और संस्कृति का अध्ययन। इस दृष्टि से देखा जाये तो महर्षि दयानन्द आधुनिक विचारकों में निराले ही थे।

आधुनिक विचारकों का मत है कि किसी भी राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि उसकी ऐतिहासिक पहचान हो, उसकी अपनी विशेष संस्कृति हो, उसकी अपनी एक भाषा हो, उसका अपना निश्चित भौगोलिक क्षेत्र हो और उसका स्वतन्त्रा का इतिहास हो। दयानन्द ने राष्ट्र की जो परिभाषा की है, उसमे सभी तत्व विद्यमान हैं और सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि उन्होंने यह परिभाषा कांग्रेस की स्थापना से 10 वर्ष पूर्व अर्थात 1875 में अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे की थी।

दयानन्द की राष्ट्रीयता को सबसे महत्वपूर्ण देन यह है कि उन्होने भारतीय संस्कृति का आधार वेदों को माना है। वेदों के बिना भारतीय संस्कृति की पहचान नहीं हो सकती। वैदिक काल भारत का स्वर्णयुग था और यदि भारत को अपनी खोई हुई सांस्कृतिक धरोहर को प्राप्त करना है तो उसे वेदों का अध्ययन करना ही पड़ेगा। जब तक भारत वासियों को इस बात का अहसास नही हो जायगा कि उनका अतीत महान था और उनका एक समय चक्रवर्ती राज्य था, तब तक उन्हें राष्ट्रीयता प्रेरणा नहीं मिल सकती। वैदिक स्वर्ण युग मे धर्म का स्वरूप भागीरथी के समान शुद्ध और स्वच्छ था। आचार व्यवहार उत्तम था। विज्ञान अपनी उन्नति के शिखर पर था और एक-छत्र राज्य था। प्रत्येक दृष्टि से भारत उन्नति के शिखर पर था। जब दयानन्द ने "वेदों की ओर" का नारा दिया, उनका अभिप्राय भारत को अतीत के गड्ढे मे धकेल देना नहीं था, बल्कि अतीत से प्रेरणा लेकर आगे बढने का था। उनका विचार था कि जो जाति अपने स्वर्णयुग से प्रेरणा लेती रहेगी, वह दास न रह सकेगी। वह परोक्ष रूप से भारतवासियो मे उस संकल्प और इच्छा शक्ति का मन्त्र सम्प्रेषण कर रहे थे जिसे बाद में महात्मागाधी ने अपने असहयोग आंदोलन से जागृत किया। यदि महर्षि 20 वर्ष और जीवित रह जाते तो भारतवासी इतने जागरूक हो जाते कि उनको दास बनाए रखना असम्भव था। महर्षि के इस गूढ़ चिंतन को महर्षि अरविंद ने समझा था और अंग्रेज विचारक भी समझने लगे थे कि दयानन्द वेदों के नाम पर 'भारत, भारतवासियों का है' यह सन्देश भी दे रहे हैं। इस थोड़ी-सी जाग्रति का यह परिणाम हुआ था कि आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे बढ चढ़कर भाग लिया। इससे संसार के महान् क्रान्तिकारी चिंतकों मे दयानन्द की गणना होती है। आज पत्र-पत्रिकाओं में बहुत से लेख पढ़ने को मिलते हैं कि महर्षि ने स्वयं भी 1875 की क्रांति मे भाग लिया था। लिया था तो अच्छी बात है, पर उन्होंने न भी लिया हो तो भी उनकी राष्ट्रीय चिंतन को जो उपर्युक्त देन है वह क्रांति में भाग लेने से कई गुणी बडी है।

जिस समय तत्काल बुद्धि जीवी 'सुराज्य' और 'स्वराज्य' में भेद स्थापित नहीं कर पा रहे थे अर्थात् राजा राममोहन राय कह रहे थे कि ब्रिटिश शासन विधाता का वरदान है, प्रिंस द्वारकानाथ टैगोर (रवीन्द्र नाथ टैगोर के दादा) कह रहे थे कि यह भारत हित में ही है कि हमारा सम्बन्ध अंग्रेज लोगों से हो गया है और प्रसन्न कुमार टैगोर की उक्ति थी कि हिन्दू राज्य की अपेक्षा अंग्रेजी शासन श्रेयकर है। उस समय महर्षि दयानन्द ने कहा कि दूसरे के शासन मे माता-पिता का न्याय और स्नेह न हो, वह अपने स्वराज्य का मुकाबला नहीं कर सकता।

किसी राष्ट्र के लिए एक भाषा का होना अनिवार्य है। यद्यपि दयानन्द की अपनी मातृभाषा गुजराती थी और प्रारम्भ में वे संस्कृत में ही संभाषण करते थे, पर उन्होंने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया। राष्ट्र को जोड़ने के लिये कोई तो कड़ी चाहिये। और यह कर्म हिन्दी के सिवाय कोई अन्य भाषा नहीं कर सकती।

किसी भी राष्ट्र के लिए निश्चित क्षेत्र अपेक्षित है। उन्होंने हिमालय से लेकर विंध्याचल तक प्रदेश को आर्यावर्त माना। विंध्याचल का विस्तार रामेश्वरम और कन्या कुमारी तक का था।

वेद, उपनिषद, रामायण, और महाभारत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। प्रत्येक भारतवासी को इन पर गर्व करना चाहिये चाहे उसका धर्म कोई भी हो। राष्ट्रीय एकता मे इन ग्रन्थों का बडा भारी योगदान है। महर्षि दयानन्द ने इस बात को समझा था। उसे न समझने से आज भी राष्ट्रीय एकता की दुहाई दी जा रही है।

एक मात्र आशा की किरण-आर्यसमाज

गगा प्रसाद "विद्यार्थी"

भारत देश में इस समय जितना अधिक भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी, तस्करी आतंकवाद, मँहगाई, असुरक्षा की भावना और मानसिक अशांति जन सामान्य मे है उतनी पहिले कभी भी न थी। जनता कसमसाती तो है पर प्रभावकारी ढंग से कर कुछ भी नहीं पाती। ऐसी परिस्थितियों मे आर्य समाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है जिसके प्राय सभी सदस्य इन पाखण्डों और पापपूर्ण व्यवहारों से पृथक् हैं। यदि कहीं कोई काली भेड दिखलाई परे तो निश्चय ही वह नकली आर्य समाजी है और ध्येय निष्ठ व्यक्ति नहीं है।

आर्यसमाज का अब तक का रिकार्ड और अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है। देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति की लडाई में 80 प्रतिशत से भी अधिक योगदान आर्यसमाजियो का ही था। यह तथ्य देश के इतिहास कारों ने भी स्वीकार किया है। क्रान्तिकारियों का जन्म व उद्भव आर्य समाजियों द्वारा हुआ था। इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे यह आशा करना अनुचित न होगा कि यदि एक बार देश का शासन आर्य समाज के बलिष्ठ हाथो मे आ जाए, तो ये समस्त बुराइयां मिटाने में बहुत अधिक समय नहीं लगेगा। इसके लिए तुर्की के कमाल आतातुर्क की तरह सभी सुधारवादी क्रान्तिकारी कानून बिना किसी पक्षपात के पूर्ण दृढता से लागू करने होंगे। कुछ लोग ऐसा सोच सकते हैं कि बिल्ली के गले मे घंटी कौन व कैसे बांध पाएगा। परन्तु मुझे वीर नायक सुभाष चन्द्र बोस के वे शब्द याद आते हैं जिनमे उन्होंने कहा था कि लीडर जनता को लीड (Lead) करता है (नेता नेतृत्व करता है) वह जनता या बहुमत द्वारा नियन्त्रित नही होता वह स्वयं अपनी नीतिया बनाता व कार्यान्वित करता है और बहुमत उसका अनुसरण करता है। इस विषय मे महात्मा गांधी, सरदार पटेल और रफी अहमद किदवई को भी रखा जा सकता है। वे अपनी नीतियां स्वयं बनाते व कार्यान्वित करते थे बहुमत उनका समर्थन करने को मजबूर होता था। वे अपने कार्यों व नीतियों का ढिंढोरा नही पीटते थे, करके दिखला देते थे।

जैसे डाकू से सभी डरते हैं वैसे ही कठोर शासन का सभी सम्मान करते हैं या करना पडता है। कुवर सुखलाल जी कहा करते थे कि सचाई वह नही है जो मानी जाती है वह तो मजबूरन मनवा ली जाती है। परन्तु जो शासन अपने व्यक्तियो या अपने दल के प्रति पक्षपात करता है। उसका शासन शिथिल हो जाता है और भ्रष्टाचार उत्पन्न हो जाता है। पुलिस और मजिस्ट्रेट भी अपनी जान बचाने के लिए दल के लोगो से डरने लगते हैं। सरकार की ढुलमुल प्रीतिया ही पिलपिले पन और भ्रष्टाचार को जन्म देती है। महात्मा गांधी का स्वप्न था कि स्वराज्य मिलते ही कलम की एक नोंक से शराब और गौ हत्या रोक दी जाएगी पर क्या ऐसा हुआ ! काम न करने के बहाने हजार हैं। और काम करने का तरीका एक ही है कि उसे कर डालो। संविधान मे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी मानी गई परन्तु 40 वर्ष बाद भी अंग्रेजी का ही बोलवाला है जबकि अच्छी तरह या मातृभाषा के रूप मे अंग्रेजी जानने वाले सम्पूर्ण देश मे एक प्रतिशत भी व्यक्ति नही हैं। अर्थात् सरकारें 1 प्रतिशत से भी कम लोगो के हित के लिए 99 प्रतिशत से अधिक के हितों का बलिदान कर रही है। तमिलनाडु मे सभी काम तमिल भाषा म और पश्चिम बंगाल मे सभी काम बंगला भाषा मे करने मे कोई दिक्कत नहीं है, पर दिक्कतो के पहाड खडे किए जा रहे हैं। स्वतन्त्रता से पहिले गुरुकुल कागडी मे सभी ज्ञान विज्ञान हिन्दी में पढ़ाया जाता था और हैदराबाद मे उर्दू मे तब उनको दिक्कतें न थीं अब अनेक प्रकार की दिक्कतें उत्पन्न कर दी गई हैं।

हम इस बात की चिन्ता करते हैं कि संसार मे कुछ देश बहुत अमीर हैं और कुछ बहुत गरीब। परन्तु हम इस बात की चिन्ता नहीं करते कि भारत के कुछ लोग दिनानुदिन बहुत अमीर होते जाते हैं और सामान्य नागरिक बहुत गरीब। एम एल ए एम पी तो अपनी तनख्वाहें और भत्ते इत्यादि लगातार बढ़ाते रहते हैं क्योंकि इनको बढ़ाना उनके ही हाथ में है। जब उनके सभी भाई बन्दों का लाभ है तो विरोध कौन करे। संगठित कर्मचारी भी लड-भिड़कर कुछ प्राप्त कर लेते हैं परन्तु सामान्य व्यक्ति क्या करें। सरकार मँहगाई घटाने के लिए पेट्रोल, डीजल पोस्टेज, गेहूँ, चावल इत्यादि सभी वस्तुओं का भाव बढाती रहती है क्योंकि इससे जिनका लाभ होता है उनका धन व वोट पार्टी को चाहिए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

विदेशों की हिन्दी को देन

भारतीय साहित्य के विचार मंच 'समवेत' की ओर से 'विदेशों की हिन्दी को देन' विषय पर एक संगोष्ठी सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के समिति कक्ष में आयोजित की गई। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती ने की। तथा पद्म श्री डा० वेदेन्द्र शास्त्री ने इसका उद्घाटन किया। डा० ओमप्रकाश सिंहल ने कार्यक्रम का परिचय दिया। श्री हरिप्रकाश त्यागी प्रो० मैथिली प्रसाद भारद्वाज (चण्डीगढ) कुमारी लता बंसल, डा० उषा सिंहल, डा० ब्रजभूषण विश्वेश, डा० पूरन चन्द टण्डन, डा० सतीश कुमार भार्गव, डा० कृष्ण बिहारी मिश्र, डा० सजीव ठाकुर ने अपने लेख पढ़े।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० सुरेशचन्द्र गुप्तनेकी। डा० उमाकान्त गोयल, डा० गार्गी गुप्ता, डा० धर्मपाल, डा ओमप्रकाश सिंघल, श्रीमती सन्तोष खन्ना, डा तिलकराज बड़ेरा, प्रो ब्रह्मदेव शर्मा ने अपने शोध लेख पढ़े। इस सत्र मे सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो विजयेन्द्र स्नातक भी सम्मिलित हुए। डा धर्मपाल के लेख की स्थापना थी कि विदेशों में स्थापित आर्यसमाजों की भूमिका, विदेशों में हिन्दी के विकास में विशेष रूप से सराहनीय है। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय तथा डी-ए-वी संस्थानों के जो विद्वान विदेशों में गए, उन्होंने हिन्दी के विकास मे अपूर्व सहयोग दिया। डा स्नातक ने विदेशी विद्वानों के कर्तव्य की समीक्षा करते हुए, प्रवासी भारतीयों के विशिष्ट योगदान को रेखांकित किया।

निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज नरेला दिल्ली-40

प्रधान—चौधरी लायकराम
मन्त्री—मा पूर्णसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सूरजभान

आर्य समाज तिहाड नई दिल्ली 18

प्रधान—श्री रोशनलाल शर्मा
मन्त्री—श्री कृष्ण कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री लाजपत

आर्य समाज पीपाडनगर राजस्थान

प्रधान—श्री शंकरलाल आर्य
मन्त्री—श्री चम्पालाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री मदनलाल आर्य

आर्यसमाज नौरोजी नगर नई दिल्ली

प्रधान—श्री कैलाश चन्द्र वार्ष्णेय
मन्त्री—श्री मनोहर लाल चौधरी
कोषाध्यक्ष—श्री वेद प्रकाश सैनी

शोक समाचार

हकीम नानक चन्द जी आर्य

आर्यसमाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ता, कट्टर प्रचारक करोल बाग क्षेत्र के प्रख्यात् समाजसेवी, आयुर्वेदिक चिकित्सक हकीम नानक चन्द जी आर्य का महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला, नैनीताल में आयोजित "योगसाधना शिविर" से मारुति वैन द्वारा वापिस आते हुए, एक गहरे खड्डे में गिरने से निधन हो गया है। उनके साथ उनके पौत्र श्री दिवाकर का भी निधन हो गया। उनकी धर्मपत्नी डा सी के. अग्रवाल गम्भीर रूप से घायल हुयी।

श्री नानक चन्द जी ने आर्यसमाज के आन्दोलनों तथा रचनात्मक कार्यों बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। इनके निधन पर दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों, संस्थाओं तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने शोक सम्वेदना प्रकट की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य सन्देश परिवार दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए परमपिता से प्रार्थना करता है।

(पृष्ठ 5 का शेष)

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुद्धिमत्ता व परिश्रम से अधिक से अधिक धन कमाने व उपभोग का अधिकार तो हो परन्तु गरीब व असहाय जनता को चूसकर नहीं। फिर प्रत्येक लाभ की सीमा निश्चत होनी चाहिए जो 15 से 25 प्रतिशत से अधिक किसी भी हालत में न हो और कोई भी व्यक्ति अगली पीढ़ियों के लिए धन व सम्पत्ति एकत्रित करके न रख सके। यदि सज्जनता से साम्यवाद नहीं लाया जाएगा तो एक दिन वह खूनी क्रान्ति भी ला सकता है। समय से पूर्व चेतने में ही बुद्धिमत्ता है।

—175 जयनगर, जबलपुर (म. प्र)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा वेद प्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती की प्रेरणा से आर्यसमाज पाण्डव नगर का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। पर्याप्त समय से निष्क्रिय आर्यसमाज को प्राणवान् करने में श्री प्रमोद सिंह त्यागी तथा श्री तरुण कुमार शास्त्री तथा उनके सहयोगियों ने सहयोग दिया। इस अवसर यज्ञ, भजन एव उपदेश का प्रबन्ध किया गया। सभा के वेद प्रचार विभाग के सहयोगियों ने पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने बताया कि वेदप्रचार विभाग सक्रिय आर्यसमाजों के माध्यम से तो प्रचार कार्य करता ही है बल्कि पिछड़ी कालोनियों पुनर्वास कालोनियो तथा ग्रामीण क्षेत्रों मे प्रचार वाहन के माध्यम से प्रचार कार्य कर रहा है। दोपहर का वेदप्रचार कार्य सरकारी कार्यालयों के निकट किया जाता है। उन्होंने आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन किया कि वे अपने निकटवर्ती क्षेत्रों में वेदप्रचार करने में सहयोग प्रदान करें।

सुरेश चन्द्र वेदालंकार अस्वस्थ

गोरखपुर। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान, सशक्त लेखक और प्रसिद्ध वक्ता प० सुरेश चन्द्र वेदालंकार ने लगभग 35 पुस्तकें लिखी हैं और उनके कई सौ लेख आर्य पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित हो चुके हैं।

प० जी पिछले कई मास से अस्वस्थ चल रहे हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि प० जी शीघ्र स्वस्थ होकर पूर्ववत् आर्यसमाज की सेवा करते रहें।

—सम्पादक

विवाह सम्बन्ध सेवा

आर्यसमाज (मुलतान) देवनगर, 26 बी/9 देशबन्धु गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली-5 में विवाह योग्य युवक-युवतियों के विवाह सम्बन्ध कराने की सेवा प्रारम्भ की गयी।

विवाह सम्बन्ध के इच्छुक प्रार्थी प्रतिदिन सांय 5 से 7 बजे तक तथा रविवार को प्रात 9 बजे से आर्यसमाज मन्दिर में श्री डा रघुबर दयाल जी से सम्पर्क कर सकते हैं।

वेद अर्थात् जो-जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस-उस का हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। जिस लिए हमको वेदमान्य है, इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही मानकर सब मनुष्यों को, विशेष आर्यों को एकमत होकर रहना चाहिए।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

पुस्तक समीक्षा—

आत्मकथा महात्मा नारायण स्वामी

आर्य जगत के अग्रगण्य सन्यासी महात्मा नारायण स्वामी जी की आत्मकथा यह तृतीय सस्करण है। यह पुस्तक कई वर्षों से अप्रकाशित थी। महात्मा नारायण स्वामी जी ही वह आदर्श आर्य नेता थे। जिन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली और आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश को बद्धमूल किया था। आर्यसमाज के हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता का श्रेय आपको ही है। कठिन परिस्थितियो के होने पर भी आपने आन्दोलन का सफल नेतृत्व किया था।

आपकी आत्मकथा आर्यसमाज की गतिविधियो को जानने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। महात्मा नारायण स्वामी का जीवन और चरित्र प्रत्येक व्यक्ति के लिए आदर्श एव अनुकरणीय हैं। पुस्तक की छपाई अत्युत्तम है।

डा द्विवेदी ने आत्मकथा सुलभ कराकर आर्य जगत् को बहुत उपकृत किया है। कागज, छपायी एव साज-सज्जा को देखते हुए पुस्तक का मूल्य कुछ कम ही है। प्रचार के लिए ऐसा करना उपयुक्त है। यह पुस्तक प्रत्येक परिवार के लिए सग्रह योग्य है।

सम्पादक—डा कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

पृष्ठ संख्या—256

मूल्य— 8 50

प्रकाशक —विश्व भारती अनुसधान परिषद् शान्ति निकेतन, ज्ञानपुर, (वाराणसी)

—मूलचन्द गुप्त

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति

विनिबन्ध

साहित्य अकादमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली की ओर से हिन्दी साहित्य के निर्माता' शृखला के अन्तगत प इन्द्र विद्यावाचस्पति पर एक लघु पुस्तिका का प्रकाशन स्वीकृत हो गया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा धर्मपाल ने साहित्य अकादमी के सचिव डा इन्द्रनाथ चौधरी को एक पत्र लिखकर प इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा साहित्य एव पत्रकारिता के क्षेत्र मे किए गए मौलिक योगदान की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया था तथा अनुरोध किया था कि वे प जी के जन्म शताब्दी वर्ष मे उन के ऊपर एक पुस्तिका का प्रकाशन अवश्य कराएँ। डा विजयेन्द्र स्नातक तथा प विष्णु प्रभाकर की सस्तुति पर साहित्य अकादमी ने इस योजना को स्वीकार कर लिया है।

आर्य जगत को यह जानकर सन्तोष होगा कि इसी प्रकार की एक पुस्तिका 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' इसी शृखला के अन्तर्गत पहले से ही प्रकाशित हो चुकी है। इस विनिबन्ध को प विष्णु प्रभाकर ने लिखा था। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी साहित्यिक क्षेत्र मे भी आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को सम्मिलित कराने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं।

—मूलचन्द गुप्त

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१

R N No 32387/ 7 Post in N D P S O on 5, 6 7-1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

साप्ताहिक आर्यसन्देश' ८ जुलाई १९९०

आपको स्मरण होगा कि—

17 अगस्त 1939 का आर्य सत्याग्रह विजयी होकर हैदराबाद की जेलो से छूटे थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

अपने मुख पत्र "आर्य सन्देश" का बृहद विशेषांक

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह

अर्ध शताब्दी स्मृति अंक

आगामी 19 अगस्त 1990 को प्रकाशित कर रहा है

यह विशेषांक 20 × 30 साईज के आठवें भाग पर 250 पृष्ठो का होगा जिसमे आप आर्यसमाज के सबसे पहले और सबसे बड़े आन्दोलन "हैदराबाद आर्य सत्याग्रह" की पृष्ठ भूमि, सत्याग्रह का इतिहास शहीदो के जीवनवृत्त सर्वाधिकारियो के जीवन वृत्त सत्याग्रहियों के संस्मरण विद्वान लेखकों एव इतिहासकारों के शोध लेख एव वीर रस की काव्य रचनायें पायेंगे। यह विशेषांक एक सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

आर्य जगत के दानियो, उद्योगपतियों तथा आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे यथाशक्ति विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग करें।

विज्ञापन दरें—पूरा पृष्ठ—एक हजार रुपया
आधा पृष्ठ—छ सौ रुपया
चौथाई पृष्ठ—तीन सौ पचास रुपया

सेवा में—

पुस्तकाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी,
हरिद्वार (उ०प्र०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा टाइम्स आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी, नीवपुर दिल्ली-५३ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १: अंक ३८ | रविवार १५ जुलाई १९९० | विक्रमी सम्वत २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपय | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश में ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

सार्वदेशिक सभा का महत्त्वपूर्ण निर्णय

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन 23 से 26 दिसम्बर को होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में राष्ट्र के सम्मुख खड़ी ज्वलन्त समस्याओ पर विचार किया जाएगा।

--स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की 8 जुलाई 1990 को आर्यसमाज दीवानहाल के सभागार मे सम्पन्न बैठक म ऐतिहासिक निर्णय लिया गया कि आगामी 23, 24, 25 व 26 दिसम्बर 1990 को नई दिल्ली मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।

वैदिक-धर्म, आर्य सस्कृति एव राष्ट्र के सम्मुख समय-समय पर आने वाली समस्याओ के समाधान का प्रयत्न करने तथा आय समाज के सामने प्रस्तुत चुनौतियो का साहस के साथ मुकाबला करने के लिए समय समय पर आर्य महासम्मेलनो का आयोजन किया जाता रहा है। ऐसा पहला सम्मेलन दिल्ली मे 1927 मे हुआ था। इसके बाद अनेक सम्मेलन राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सफलतापूर्वक किए गए।

आर्य समाज का इतिहास त्याग एव बलिदान का इतिहास है। राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन म आर्य समाज की भूमिका निस्सन्देह उल्लेखनीय है । हैदराबाद आर्य सत्याग्रह आर्यसमाज के तेज एव ओजस्विता की वैजयन्ती है। गौरक्षा आन्दोलन हिन्दी रक्षा सत्याग्रह, ईसाईयत के प्रचार का विरोध धर्मरक्षा महाभियान, त्रिसूती कार्यक्रम आदि सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा की पताकाए हैं। आर्य मैरिज वैलिडेसन एक्ट, शारदा एक्ट तथा धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक आर्य समाज के वर्चस्व के प्रतीक हैं। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघो तथा आर्यवीर दल की शाखाओ का विस्तृत वितान, आर्यसमाज के कार्यों को दिगन्त तक गुञ्जायमान कर रहा है।

दिल्ली, बरेली, अजमेर शोलापुर, कलकत्ता, मेरठ हैदराबाद, अलवर, डरबन, मौरीशस, लन्दन मे हुए आर्य महासम्मेलनो की विशिष्ट परम्परा इस बात की परिचायक है। आर्य समाज ने विश्वशान्ति, सम्प्रदायवाद, नैतिक शिक्षा, मद्यनिषेध, अंग्रेजी हटाओ भारतीय भाषाए लाओ पजाब-कश्मीर, वैदिक धर्म मानव मात्र के लिए, चरित्र निर्माण गोरक्षा आदि सार्व भौम महत्व के विषयो पर विचार किया है तथा सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन का सतत् संग्राम किया है। आर्य समाज मानव मात्र के लिए समानता का पक्षधर है। अन्तराष्ट्रीय स्तर पर फिजी, नेपाल केन्या, दक्षिण अफ्रीका आदि स्थानो पर भारतीय मूल के लोगो के साथ जो दुर्व्यवहार हो रहा है, आर्य समाज, उसके निराकरण के लिए सक्रिय है।

आर्य समाज का सर्वोपरि लक्ष्य ऐसे धर्म का प्रचार और प्रसार करना है, जो युग की भावनाओ के अनुरूप है, जो जटिलताओ से रहित, विशुद्ध एकेश्वर वादी है, जिसका अन्ध विश्वासो एव अन्य अनुष्ठानो से कोई सम्बन्ध नही है। जो सभी मे भ्रातृत्व एव सह-अस्तित्व की भावना को बल प्रदान करता है। आर्य समाज आध्यात्मिक मूल्यो, शान्तिवाद, शाकाहार और चक्रवर्ती राज्य पर आधारित समाज निर्माण का प्रतिपादन करता है।

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नवयुग का निर्माण किया।

आर्यसमाज के विगत इतिहास का अवलोकन करने तथा भावी कार्यक्रमो के लिए श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मलन की घोषणा की है।

आशा है समस्त आर्यजगत इस सम्मेलन के लिए तन-मन-धन से सहयोग करेगा।

महाभारत के पात्रो का अश्लील चित्रण करने वाली एलेन आरोन की लिखित पुस्तक

"सम्राट" पर प्रतिबन्ध की मांग

महर्षि वेद व्यास कृत महाभारत को भारतीय (हिन्दू) वांङमय का अनुपम महाकाव्य माना जाता है, जिसे ससार के अनेक देशो मे प्रसिद्धि प्राप्त है। इसी महाभारत मे योगीराज श्री कृष्ण और जगत् प्रसिद्ध गीता का उपदेश भी है। जिसे ससार के सन्तो, महात्माओ और विचारको ने मानव कल्याण का अद्वितीय ग्रन्थ माना है। हिन्दुओ के लिए रामायण और महाभारत समान रूप से पूज्य और पवित्र हैं। और इनकी गणना हिन्दुओ के धार्मिक ग्रन्थो मे की जाती है।

बहुत दुःख की बात है कि ऐसे पवित्र और सर्वमान्य महाकाव्य के पात्रो को ऐलेन आरोन ने अपनी पुस्तक "सम्राट" मे बहुत ही कामुक एवं हीन चरित्र व्यक्तियो के रूप मे प्रस्तुत करने का दुष्प्रयत्न किया है। विशेषकर द्रोपदी के चरित्र को बहुत ही अश्लील रूप मे चित्रित किया है। द्रोपदी का पाँचो पाण्डव भाइयो के साथ विवाह की कथा नितान्त काल्पनिक और निराधार है। उसका विवाह ज्येष्ठ भ्राता होने के कारण केवल युधिष्ठिर के साथ ही हुआ था। अन अन्य भाइयो के साथ उसके यौन सम्बन्धो का कोई प्रश्न ही नही था। लेकिन लेखिका ने उसी दन्त कथा को आधार मानकर अपनी हीन कल्पना की उडान से उन पर कीचड उछाली है। इस प्रकार का चरित्र हनन तो शायद सलमान रुश्दी ने अपनी पुस्तक "शैतान की कविता" में भी नही किया होगा जिसके लिए मुस्लिम कट्टर पन्थियो ने उसे मौत की सजा का फतवा दिया है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने हिन्दुओ के आराध्य महापुरुषो के चरित्र हनन के इस प्रकार के घृणित प्रयासो की ओर ध्यान दिलाते हुए भारत के प्रधान मन्त्री तथा गृहमन्त्री को पत्र लिखकर माग की है कि इस पुस्तक के प्रकाशन और बिक्री पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाए अन्यथा हिन्दू सगठनो को मिल कर इसके आन्दोलन करने पर बाध्य होना पडेगा

प्रधान सम्पादक—सूर्य देव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

पंजाब की भयानक स्थिति

सामयिक चर्चा

पजाब मे आये दिन हिन्दुओ की हत्याए हो रही हैं। बटाला मे रामनवमी की शोभायात्रा पर बम फेंका गया। 40 हिन्दू मारे गए और 50 से अधिक जख्मी हुए। दूसरे ही दिन पानीपत मे बस मे हुए बम विस्फोट से 12 लोग मारे गए और अनेको घायल हुए। इससे पहले 13 मई 1988 को पानीपत मे ही हिन्दुओं की बारात के 16 बारातियों को सिख उग्रवादियों ने गोलियो से भून दिया था। होशियारपुर मे होली के दिन होली के रग मे मस्त तथा चण्डीगढ मे सत्सग मे भाग लेते हुए हिन्दुओ को मौत के घाट उतार दिया गया। एक दजन से अधिक हिन्दू पजाब मे आतकवादियों द्वारा फांसी पर लटकाये जा चुके हैं।

हिन्दुओ मे विश्वास दृढ होता जा रहा है कि सरकार उनकी जानमाल की रक्षा करने मे पूर्णतया असफल हो गई है और पजाब के बारे मे सरकार की कोई स्पष्ट नीति नही है। सिख उग्रवादी फैसला करते हैं कि किसे मरना है तथा किसे जीना है। पजाब मे आम नागरिक एक बलि के बकरे की तरह अपनी कुर्बानी के दिन व बारी की प्रतीक्षा मे दिन काट रहे हैं।

उग्रवादियों को सरकार का कोई भय नहीं है। शासन के लिए अपराधियों पर सरकार का भय होना आवश्यक है। इसके विपरीत सरकार की ढुलमुल नीति के कारण आतकवादियों का भय सरकार तथा सभी दलों के नेताओं पर छा गया है।

कौन नही डरा हुआ है? भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जेलसिह फरीदकोट मे अपने गाव जाकर बसने से डरते हैं और अपनी जान बचाने के लिए दिल्ली मे बस गए हैं। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी इतने भयग्रसित हैं कि उन्हे अपनी रक्षा के लिए एक करोड रुपए वार्षिक से कम सुरक्षा व्यवस्था मे सतोष नहीं है। भूतपूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड अपने क्षेत्र अबोहर, फाजिल्का से चुनाव लडने से डर गए और राजस्थान से लडे। अबोहर मे जाकर बसने की तो बात क्या? भूतपूर्व गृहमन्त्री श्री बूटासिह कडी सुरक्षा व्यवस्था के बिना पजाब मे प्रवेश नही कर सकते। पजाब मे चुनाव लडने की हिम्मत नही रखते और चुनाव लडने के लिए राजस्थान मे जाते हैं। श्री सिमरनजीत सिंह मान ने ऐलान किया कि वह तीन फुटी कृपाण लेकर ही लोकसभा की सदस्यता की शपथ लेंगे। लोकसभा के अध्यक्ष श्री रविराय इससे इतने विचलित हुए कि वे श्री मान को कृपाण सहित सदस्यता की शपथ दिलाने के तरीके ढूंढने मे लग गए। कितना भय का वातावरण है?

सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व मान्यताओं को एक ओर रखकर श्री मान को कृपाण सहित न्यायालय मे प्रवेश की आज्ञा दे दी। यह सुविधा सुप्रीम कोर्ट मे आज तक किसी अन्य नागरिक को नहीं मिली।

पजाब मे किसी उग्रवादी के खिलाफ मुकदमा नही चलाया जा सकता। न्यायधीस को अपनी जान का डर है और गवाहो को अपनी मौत का। स्वतन्त्र न्याय कैसे करें? अत्याचारी को दण्ड कौन दे? पजाब मे सिख उग्रवादियो के विरुद्ध भारतीय दण्ड सहिता ही प्राय निरस्त हो चुकी है। आतकग्रस्त निरीह नागरिक न्याय मागते हैं। उन्हें न्याय मिलने की आशा नही है।

समाचार पत्र स्पष्ट लिखने से डरते हैं। उग्रवादियों के भय से उग्रवादियो की गोली के शिकार लोगों के नाम लिखने के बजाय उन्हें अल्पसख्यक व बहुसख्यक लिख कर अपनी जान बचाने का रास्ता ढूढ लेते हैं। उग्रवादियों ने शासन व न्यायालयों से उनके अधिकार छीन लिए हैं। खालसा पचायतें लोगों से फिरौती ब कर वसूल करती हैं तथा उनके मुकदमे सुनती हैं। फैसला देती हैं और सजाए सुनाती हैं। इस परिस्थिति मे क्या सरकार सलाह देगी कि पजाब के हिन्दू अपनी रक्षा के लिए स्वय शस्त्र धारण करें।

सरकार की ढुलमुल नीतियों के कारण पुलिस व अर्धसैनिक बलों का मनोबल गिर गया है। उनमे से अधिकतर जवानों मे अपने कार्य के प्रति उदासीनता आ गई है। एक ओर पजाब मे निरीह नागरिकों की हत्याएं प्रतिदिन बढ रही हैं, दूसरी ओर सरकार समस्या से खिलवाड कर रही है कोई भी निर्णय करने मे असमर्थ है। आये दिन सर्वदलीय समितिया बनती हैं, निर्णय कुछ नही हो पाता। पिछले दस वर्षों से पजाब मे हिन्दुओं का कत्लआम जारी है। देशवासी कब तक प्रतीक्षा करें? सरकार का कर्त्तव्य है कि वह कानून व व्यवस्था स्थापित करे। हरमिन्दर साहब मे बार-बार मत्था टेकने से समस्या का हल न हो पाएगा। सरकार व राजनैतिक दलों को चाहिए कि पजाब की समस्या को एक राजनैतिक समस्या का रग देकर लोगो को बेवकूफ बनाना बन्द करें। समस्या राजनैतिक नहीं अपितु शासन व व्यवस्था की है। समस्या सिखों की नही है। पजाब में वास्तविक समस्या तो हिन्दुओं के जीवन, मृत्यु और भविष्य की है।

सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि पजाब में सरकार की शासकीय प्रभुसत्ता को लागू करने के लिए पजाब में हिन्दुओं का सबल अस्तित्व आवश्यक है। सरकार को चाहिए कि पजाब मे कश्मीर जैसी परिस्थिति न आने दे। जैसे आज कश्मीर मे हिन्दुओं के अभाव मे सरकार को पाव रखने को जगह नहीं मिल रही है।

यदि पजाब को बचाना है तो सरकार को चाहिए कि वह अकालियो से साठ-गाठ का नाटक बन्द करे और राष्ट्रीय भावना को सर्वोपरि मानकर, पूरे राज्य मे सैनिक शासन लागू करे और राष्ट्रद्रोही तत्वो के समूलोच्छेदन के लिए पक्के इरादे से प्रभावी कार्यवाही करें। अन्यथा यह खून की बीमारी अन्य राज्यो मे फैल सकती है।

चपल-चचल मन

देवनारायण भारद्वाज

ओइम् यज्जा ग्रतो दूर मुदैति दैव तदु सुप्तस्य तथै वैति।
दूरङ्गम ज्योतिषां ज्योतिरेक तन्मे मन शिव सकल्प मस्तु॥

यजु० 38/1

आगे पीछे दौड लगाओ, पर प्रभु का ही करो अनुगमन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तमन॥
जग का प्रकाश तुम रखते हो
तुम दौड भाग मे रहते हो
जन शयन जागरण दोनो में
तुम दूर दूर तक चलते हो।
दिव्य ज्योतियों मे एक ज्योति, तुम करो इन्द्रियों का ज्योतन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तमन॥
इन्द्रिय देह या अग्नि दिवाकर
तुम से हो ये ज्योति उजागर
बिना तुम्हारे दिखे नहीं कुछ
देखें जितना जोर लगाकर।
हो थिर और नियन्त्रित दो, जग-आत्म-हर्ष या प्रभु दर्शन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तमन॥
चपल चचला अति भय गति है
पजन भजन या पाप कुगति है
सब भूत भविष्यत वर्तमान
विदित तुम्हारी क्षमता अति है।
तज गल्प जल्प के सब विकल्प, मन बनो वशी सकल्प सदन।
शुभ सकल्प बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

भारद्वाज परिवार की आजमगढ़ से विदाई

अपनी राजकीय सेवा के क्रम मे श्री देवनारायण भारद्वाज का परिवार एक वर्ष दस मास पूर्व आजमगढ मे आया था। आर्यसमाज, महिला आर्यसमाज आर्य कुमार सभा एव आर्यवीर दल की गतिविधियो मे इस परिवार का पूर्ण योगदान रहा। श्री भारद्वाज के अलीगढ़ स्थानान्तरण के फलस्वरूप स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर मे दिनांक 17 जून 1990 को अपरान्ह 4 बजे एक भव्य विदाई समारोह मे श्री भारद्वाज को भावभीनी विदाई दी गई। डी ए वी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प रघुनाथ मिश्र विद्यालकार, डा शशि भूषण प्रशान्त, डा स्वामीनाथ गुप्त, प सीताराम शास्त्री, श्री कपिलदेव राय, पूर्व प्रधान श्री रामप्रसाद, महिला समाज, आर्य कुमार सभा तथा आर्यवीर दल के सचालक श्री रवीन्द्र ने माल्यार्पण के साथ साथ अपनी हार्दिक भावाजलि भी अर्पित की। महात्मा अक्षयमुनि जी ने अपने आशीर्वाद के द्वारा श्री भारद्वाज को समाज सेवा मे इसी भांति रत रहने का उपदेश दिया। इस अवसर पर श्री भारद्वाज को अगवस्त्र ऋग्वेद सहिता श्री गोविन्ददास मत्री जिला सभा द्वारा तथा उपप्रधान श्री शुभनारायण गुप्त द्वारा मानपत्र प्रस्तुत किया गया।

अन्त मे श्री भारद्वाज ने इस विदाई समारोह को दीक्षान्त समारोह की सज्ञा देते हुए वैदिक धर्मप्रचार एव समाज सेवा के प्रति अपना मार्मिक सकल्प व्यक्त किया और परम प्रभु की कृपा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

इसी प्रकार श्री देवनारायण भारद्वाज की धर्मपत्नी श्रीमती दर्शन देवी प्रधाना महिला आर्य सभा आजमगढ़ एव उनकी पुत्री कु० प्रतिभा के सम्मान मे महिला आर्य समाज आजमगढ द्वारा विदाई समारोह आयोजित किया गया जिसमें उन्हें माल्यार्पण एव वस्त्र भेंट कर सामूहिक-जलपान करके प्रेम-पूर्वक विदाई दी गई।

श्री भारद्वाज, उनकी धर्मपत्नी और सुपुत्री सभी कर्मठ आर्य हैं। आप जहां भी स्थानान्तरित होकर जाते हैं, आर्यसमाज के सगठन को मजबूत बनाने और वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार मे समर्पित हो जाते हैं।

आर्यजगत् की प्राय सभी पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख और कवितायें गत 25 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रहे हैं। आर्यसदेश परिवार की प्रभु से कामना है कि यह परिवार जहां-जहां भी रहे पूर्ववत् आर्यसमाज की सेवा करते रहें।

—सम्पादक

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

हिन्दू राष्ट्र-नेपाल



चिन्ता का विषय है कि नेपाल के बनने वाले नए सविधान मे नेपाल को हिन्दू अधिराज्य न रखकर धर्म निरपेक्ष राष्ट्र घोषित करवाने के प्रयत्न चल रहे हैं, इस ससार मे नेपाल ही एक मात्र हिन्दू राज्य है जबकि ईसाई तथा मुस्लिम बहु सख्या वाले अनेक राष्ट्र 'ईसाई राष्ट्र' अथवा मुस्लिम राष्ट्र' हैं अथवा ईसाईयत या इस्लाम उनका राष्ट्र धर्म माना जाता है।

हिन्दू स्वभाव से ही सर्व धर्म-समभाव की भावना रखते हैं और किसी अन्य धर्मावलम्बी के प्रति भेदभाव नही बरतते। अत हिन्दू राष्ट्र होते हुए भी नेपाल मे ईसाईयो या मुसलमानो को अपने धर्म तथा विश्वास के अनुसार धार्मिककृत्य करने अथवा अपनी धार्मिक मान्यताओ का पालन करने की स्वतन्त्रता रही है। इसके विपरीत अनेक मुस्लिम देशो मे हिन्दुओ के प्रति बडा भेदभाव बरता जाता है। वहा हिन्दुओ को मन्दिर बनाने, धार्मिक साहित्य मगवाने, सार्वजनिक स्थानो पर या घरो के अन्दर भी पूजा-पाठ करने या धार्मिक कृत्य करने की भी अनुमति नही होती। कुछ मुस्लिम देशो मे हिन्दू लोग अपने मृत सम्बन्धियो का दाह सस्कार भी नही कर सकते। आश्चर्य की बात है कि जो व्यक्ति नेपाल के सविधान मे परिवर्तन लाकर उसे धर्म-निरपेक्ष बनाने की बातें करते हैं उन्होने मुस्लिम देशो मे हिन्दुओ के विरुद्ध होने वाले भेदभाव के बारे मे कभी कोई आवाज नही उठाई है।

इससे अधिक भयावह स्थिति क्या होगी। कि सयुक्त राष्ट्र और अमरीका नेपाल पर आवश्यक दबाव डालकर यह प्रयत्न कर रहे हैं कि वहा धर्मान्तरण के लिए पूरी छूट दी जाए। नेपाल मे चिरकाल से धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध है। इस प्रतिबन्ध को उठाने के लिए ईसाइयो द्वारा प्रयत्न किया जा रहा है। इस प्रतिबन्ध के होते हुए भी ईसाईयो की जो जनसख्या सन् 1950 मे 10 थी वह बढकर अब 40 हजार से अधिक हो चुकी है। यदि धर्मान्तरण पर से प्रतिबन्ध हटा दिया गया तो ईसाई मिशनरी गरीब तथा भोली-भाली जनता को विभिन्न प्रलोभन देकर ईसाई बनाने का काम बहुत बडे पैमाने पर करने लगेंगे। इनमे नेपाल का अपनी अखण्डता बनाए रखना कठिन हो जाएगा और वहा उसी प्रकार की विषम परिस्थितिया पैदा हो जाएगी जो भारत के उन भागो मे पैदा हुई हैं, जहा व्यापक रूप मे धर्मान्तरण हुए हैं। अत यह नेपाल के अपने हित मे होगा कि वह धर्मान्तरण पर चिरकाल से चले आ रहे प्रतिबन्ध को हटाने की कोई बात स्वीकार न करें।

गोवश का कृषि आधारित देशो के लिए बडा महत्त्व है। ससार के समस्त हिन्दू गऊ का सम्मान धार्मिक आधार पर भी करते हैं। नेपाल मे गऊ हत्या पर बहुत पहले से प्रतिबन्ध रहा है तथा गऊ वश की हत्या करने वाले अपराधी को कठोर दण्ड देने की व्यवस्था रही। इस प्रतिबन्ध को हटवाने के लिए भी प्रयत्न किए जा रहे हैं। वे प्रयत्न भी किसी भाति उचित नही हैं।

नेपाल की जनता एव सरकार को चाहिए कि उपयुक्त विषयो मे नेपाल की जो मान्यताए रही हैं, उन पर दृढ रहे। जनता की इच्छाओ के अनुसार वहा जिस प्रकार का भी सविधान बनाया जाए, उसमे नेपाल को 'हिन्दू राष्ट्र" बने रहना चाहिए। तथा उसमे धर्मान्तरण तथा गोवश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध जारी रहना चाहिए।

पर्यावरण और ओजोन परत

वायुमण्डल मे खतरनाक गैसो की मात्रा बढने से वायु मण्डलीय कवच ओजोन परत क्षत हो गयी है। इससे वातावरण मे गर्मी बढ गयी है और ऋतुओं का क्रम बदल गया है गर्मी के कारण बर्फ पिघल रही है। पानी को नदियों व नहरो के द्वारा नियन्त्रण में नहीं रखा जा रहा है। इससे समुद्र की सतह भी ऊपर उठ रही है। ओजोन की परत को क्षति पहुचाने वाली गैसें मुख्यत क्लोरो फ्लोरो कार्बन गैस और ग्रीन हाउस गैस हैं। भारत के ऊपर भी दूसरा दुष्प्रभाव निरन्तर बढता जा रहा है। यदि समय रहते समुचित प्रबन्ध न किए गए तो काफी कठिनाई आएगी। पर्यावरण का सबसे बडा दुश्मन पेट है जो प्राकृतिक पर्यावरण के साथ साथ सामाजिक पर्यावरण को भी प्रदूषित करता है। ओजोन की परत को जो क्षति पहुंची है। उसके लिए भारत जिम्मेदार नही, बल्कि विश्व के उन्नत देश इसके लिए जिम्मेदार हैं। इस जिम्मेदारी मे भारत की कुछ हिस्सेदारी हो सकती है। माट्रियल प्रोटोकोल मे भारत सम्मिलित हो गया है अब सभव है कि इस दिशा मे कुछ सही किया जा सके। भारत इस माट्रियल सधि पर आँख मूदकर हस्ताक्षर तो नहीं करेगा। ओजोन की छतरी को अमीर देशो ने ज्यादा नुकसान पहुचाया है वहीं पर ज्यादा प्रशीतन उद्योग है। इसका खामीयाजा भी उन्हें ही ज्यादा भुगतना चाहिए। परन्तु जो नुकसान होगा वह भारत मे ही समान रूप से होगा। यदि आज प्रशीतन उद्योग को भारत बन्द कर दे अथवा चीन बन्द कर दे तो जो क्षति होगी उसे कौन पूरा करेगा। यह भरपाई अमीर देशो को करनी चाहिए। यह सन्तोष की बात है कि लन्दन की बैठक मे अमीर देशो ने भारत और चीन के तर्कों को समझा है। और सोलह करोड डालर की प्रारम्भिक राशि से एक अन्तर्राष्ट्रीय कोष बनाने का निर्णय लिया है जिसमे से चार-चार करोड भारत और चीन को मिलेगा।

भारत की पर्यावरण राज्य मन्त्री श्रीमती मेनका गाँधी ने अपने पक्ष को पर्याप्त तार्किक ढग से रखा। यह सतोष की बात है कि वे इस दिशा मे प्रयत्नशील हैं। रासायनिक हथियारो पर रोक भी इसी से जुडा प्रश्न है। श्रीमती गाँधी को चाहिए कि भारतीय संस्कृति और वैदिक दर्शन के अध्येताओ से भी पर्यावरण प्रदूषण समाधान हेतु सम्मतिया आमन्त्रित करें। हमारे प्राचीन ग्रन्थो मे प्रदूषण रोकने की विधिया उपलब्ध हैं। जो मनुष्य जीवन को नियमित एव नियन्त्रित करती हैं। भारतीय आयुर्विज्ञान तो प्रत्येक को गुणकारी एव लाभकारी मानता है। सम्भव है कि सरकारी प्रयासो से ही यह पर्यावरण की समस्या हल हो सके।

शहीदों के नाम

डा० महाश्वेता चतुर्वेदी

गीत हैं अर्पित उन्हें जो प्रिय सुवासित फूल बनते,
रक्त को अपना बहाकर के नया इतिहास लिखते।

लौटना पीछे नही जो जानते हैं
लक्ष्य जो अपना सदा पहचानते हैं
गोलिया निर्भीक खाते और खिलाते,
रिपु समक्ष जिनको प्रलय चहु भागते हैं,

कर्म के तरु हैं सघन, रक्षामयी जो छाह बनते,
गीत हैं अर्पित उन्हें, जो प्रिय सुरभिमय फूल बनते।

विघ्न बाधायें जिन्हें प्रतिपल जगाती,
राह नूतन, सहचरी बनकर दिखाती,
नित्य जल थल और नभ तक डोलते पग,
शिखर माला मे जिन्हें प्रतिपल बुलाती।

जो सुदर्शन चक्र बनकर, शत्रु का उपहास करते,
रक्त को अपना बहाकर के नया इतिहास लिखते।

जो सुरथ के सारथी बनकर विचरते
जो विजय के स्वप्न हैं साकार करते,
जो करालो और काली के सुसेवक,
शक्ति को जो मुडमाला भेंट करते।

मन, वचन और कर्म से, जो एकता का गान करते,
रक्त को अपना बहाकर के नया इतिहास लिखते।

जो शिवा, राणा, कर्मी बन्दा रहे हैं,
सिह शिशु, कर्तार हैं, गारा कड़े हैं,
सूर्य की ऊर्जा समाहित कर चले जो,
नागपाशी जाल जो सारे कड़े हैं।

जो मनुजता के लिए सर्वस्व अपना त्याग करते
गीत हैं अर्पित उन्हें, जो प्रिय सुरभिमय फूल बनते।

शान्ति वन का दूर जो आतक कर दें,
क्रूर हिंसा गोलिया भी नष्ट कर दें,
जो घृणा की बोलिया नानक चमन मे,
देशद्रोही जाति को ही दूर कर दें।

राष्ट्र के बदले नहीं, जो स्वर्ग भी स्वीकार करते,
गीत है अर्पित उन्हें, जो प्रिय सुरभिमय फूल बनते।

रुद्र के विषपान की सौगन्ध जिनको,
राम शर सन्धान की सौगन्ध जिनको,

(शेष पृष्ठ 5 पर)

विदेशों में स्थित आर्यसमाजों का हिन्दी के प्रचार में योगदान

—डॉ० धर्मपाल
प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

भारतीय साहित्य के विचार मच 'समवेत' की ओर से 'विदेशो की हिन्दी को देन' विषय पर एक साहित्यिक सगोष्ठी गत 30 जून को सामाजिक विज्ञान अनुसधान परिषद नई दिल्ली के समिति कक्ष मे आयोजित की गई। दूसरे सत्र जिसकी अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० सुरेश चन्द्र गुप्त ने की और सुप्रसिद्ध विद्वान डा० विजयेन्द्र स्नातक विशिष्ट अतिथि थे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान डा० धर्मपाल ने अपना शोध निबन्ध 'विदेशो मे स्थापित आय समाजो का हिन्दी के विकास मे योगदान" प्रस्तुत किया था। यह सतोष का विषय है कि सगोष्ठी मे उपस्थित अल सभी विद्वानो ने डा० धर्मपाल द्वारा स्थापित मान्यता 'हिन्दी के उन्नयन मे आर्यसमाज की उत्कृष्ट भूमिका' की भूरी-भूरी प्रशसा की। प्रस्तुत लेख उसी शोध निबन्ध का सार है।

—सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना 1875 मे की थी। उन्होने आर्यसमाज के, जो 28 नियम पहले बनाए थे, उन्हें बाद मे सशोधित करके 10 तक सीमित कर दिया था। यद्यपि इन नियमों मे स्वामी जी ने हिन्दी अथवा अन्य किसी भाषा की चर्चा नही की जो स्वाभाविक ही था। इन नियमो मे मानवमात्र के कल्याणार्थ मनुष्य के व्यवहार की बात को ध्यान मे रखा गया। उसके धार्मिक विश्वासों एव आस्थाओ को ध्यान मे रखा गया था तथा मनुष्य के वैयक्तिक एव समाजिक जीवन मे उन्नयन को ध्यान मे रखा गया

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो आय समाजो के सचालनार्थ नियम एव उप-नियम बनाए, उनमे हिन्दी भाषा को विशेष स्थान दिया गया। महर्षि दयान द सरस्वती लोकोपकार की शिक्षा को ग्रहण करने मे उद्यत रहते थे। इसीलिए उन्होने बाबू केशवचन्दसेन की इस सम्मति का कि वे हिन्दी भाषा मे अपने व्याख्यान दिया करें, तुरन्त मान लिया था तथा भविष्य म तदनुसार ही आचरण किया। एक बार पूना प्रवास के समय उन्हें कठिनाई आई थी। उस समय के पण्डितो ने कहा कि स्वामी जी को सस्कृत का ज्ञान ही नही है। उस दिन फिर से उन्हें अपना भाषण पहले सस्कृत म और बाद म हिन्दी म करना पडा।

हिन्दी भाषा के उन्नयन के लिए उन्होने हण्टर कमीशन" क सामने अनेक ज्ञापन पत्र भिजवाए थे। उत्तर भारत के आय समाजो की इस सूची इस उद्देश्य स भेजी गयी थी कि कमीशन के ऊपर उनका समुचित प्रभाव रहे।

उन्ही के जीवन काल से आयसमाज ने सम्पूर्ण देश मे हिन्दी क विकासार्थ कार्यक्रमो का आयोजन करना प्रारम्भ कर दिया था। हिन्दी के विकास के लिए अनेक विद्यालयो महाविद्यालयो, विश्वविद्या पीठो, तथा विश्व विद्यालयो की स्थापना की। गुरुकुलो की स्थापना की। आज आर्यसमाज की डी ए वी सस्थाए इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण योगदान कर रही हैं।

आर्यसमाज का कार्य ज्यो ज्यो भूमण्डल पर बढता गया, त्यो त्यो, हिन्दी का प्रचार-प्रसार भी विश्वभर म बढता गया।

विदेशो मे धर्म प्रचार के साथ साथ आर्यसमाज ने हिन्दी प्रचार का कार्य भी प्रारम्भ किया। आर्यसमाज का सबसे अधिक कार्य अफ्रीका मे हुआ है। पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका मे भारतवासियो के विशेष रूप से बसने के कारण आर्यसमाज का काय क्षेत्र भी उन्हीं प्रदेशो मे रहा है।

सन् 1833 ई० से दास प्रथा के उठ जाने से उपनिवेशो मे बसे हुए अग्रेजो को अपने कृषि क्षेत्रो और उपवनो मे काम करने वाले मजदूरो का अभाव खटकने लगा। इसकी पूर्ति क हेतु उन्होने भारतवर्ष की ईस्ट इ डिया कम्पनी की सरकार से सहायता की प्रार्थना की। फलस्वरूप कम्पनी सरकार ने एक शर्त बन्दी की प्रथा प्रचलित की जो (Indentured System) के नाम से प्रसिद्ध है।

सर्वप्रथम 1834 ई मे भारतीय मजदूर मोरिशस और तत्पश्चात फीजी, जमेका, ब्रिटिश गायना, ट्रिनडाड आदि स्थानो को भेजे गए। सन 1857 ई के विद्रोह के पश्चात महाराणी विक्टोरिया की घोषणा से यह आशा थी कि सभवत इस प्रथा का अन्त हो जाय परन्तु नेपाल निवासी अग्रेजो के प्रयत्न से इसकी पुनरावृत्ति हुई और सन् 1860 ई मे मजदूरो का प्रथम जत्था जहाज द्वारा नेपाल पहुचाया गया।

विदेश मे सामाजिक और धार्मिक स्थिति

विदेश जाकर पाच वर्ष के अनन्तर अधिक सख्या मे मजदूर वही बस गए बहुत से स्वदेश लौट आए। यहा आने पर उन्हें स्थिति का ज्ञान हुआ। रूढिवाद और परम्परा की श्रखलाओ मे बध हुए हिन्दुओ मे उन्हें विधर्मी समझा और जाति से बहिष्कृत किया। विवश हो कितने ही मजदूर पुन अफ्रीका गये और वहा ईसाई और मुसलमान मत को स्वीकार कर लिया। इन उपनिवेशो मे हिन्दुओ की बडी हीन अवस्था थी। वे अपनी सस्कृति भाषा, धर्म, इतिहास सब भूलने लगे। उनका उद्धार करने वाला और चेतावनी देन वाला कोई न रहा।

मुसलमानो और ईसाईयो ने हिन्दुओ का सामाजिक, धार्मिक और सास्कृतिक सभी स्थितियो पर आश्चयजनक प्रभाव डाला। कभी धन कभी जमीन और कभी युवतियो के आकर्षण से हिन्द अपने धर्म को त्याग अधिक सख्या मे विधर्मी होने लगे। जो हिन्दू अपने धर्म पर आरूढ रहे वे भी अज्ञानता और अन्धविश्वास से ग्रसित थे। और मन्दिरो मे पशुओं के बलिदान किया करते थे।

भाषा की समस्या

भाषा की दृष्टि से उनकी दशा बडी ही शोचनीय थी। शर्त बन्द मजदूर के रूप मे मुख्यत उत्तर प्रदेश बिहार और मद्रास प्रान्त से स्त्री पुरुष भेजे गए थे। इसके अतिरिक्त गुजरात और पजाब से कुछ व्यवसायी वहा पहुचे। यद्यपि मद्रासियो की सख्या अधिक थी परन्तु हिन्दी मे विचारो का आदान प्रदान सरल होने के कारण स्वभावत वह सबके बोलचाल की भाषा हो गई। प्रारम्भ मे ऐसी ही दशा थी परन्तु शनै शनै वहा के निवासियो पर अग्रेजी का भूत चढने लगा और वे इसे अपनाते गए। तीसरी पीढी के लोगो म अग्रेजी का इतना प्रचार हो गया कि उन्होने इसे अपने घर की साधारण बोलचाल की भाषा बना ली और हिन्दी को भूलने लगे।

प्रथम आर्यप्रचारक भाई परमानन्द का आगमन

भारतवर्ष मे 19 वी शदी के अन्त और 20 वी शती के प्रारम्भ म आर्य-समाज बडे वेग से प्रगति कर रहा था। कुछ आर्यसमाजी सज्जन अफ्रीका भी पहुचे और उन्होने वहा की दशा पर बहा शोक प्रकट किया परिणाम स्वरूप दक्षिण अफ्रीका के कुछ आर्य सज्जनो न निनम लाल मोहकम चन्द वर्मन का नाम विशेष उल्लेखनीय है, लाहौर कालेज के प्रिंसीपल महात्मा हसराज जी से किसी प्रचारक को भजने के लिए प्रार्थना की। महात्मा हसराज जी ने इस प्रार्थना पर ध्यान देकर भाई श्री परमानन्द जी को वहा भेजा।

द्वितीय आर्य प्रचारक स्वामी शकरानन्द

आर्यसमाज के दूसरे प्रभावशाली प्रचारक स्वामी शकरानन्द जी थे। उन्होने स्थिति का सूक्ष्मता से अध्ययन कर अपना कार्यक्रम निश्चित किया 'जाति के इस वैद्य' ने उसकी नाडी को पकडकर रोग को ठीक तरह से परख लिया था।

स्वामी जी हिन्दी और अग्रेजी के उद्भट वक्ता थे। उन्होने अनेक व्याख्यानो द्वारा आध्यात्मिक विषयो के साथ साथ मातृभाषा की महत्ता और उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला एव अनेक सस्थाओ की नीव डाली।

श्री भवानीदयाल जी सन्यासी का हिन्दी कार्य

दक्षिण अफ्रीका मे हिन्दी का व्यापक प्रचार श्री भवानीदयाल जी सन्यासी द्वारा हुआ। नेटाल की आर्यसमाजो को सगठित एव सुव्यवस्थित रूप देकर व्यक्तिगत और सस्थागत रूप से हिन्दी सेवा करन का श्रेय सन्यासी जी को है।

सबसे प्रथम उन्होने ट्रान्सवाल मे हिन्दी-प्रचार का कार्य किया। यहीं उन्होने ट्रान्सवाल हिन्दी-प्रचारिणी सभा, हिन्दी-रात्रि पाठशाला और हिन्दी फुटबाल क्लब की स्थापना की। हिन्दी रात्रि-पाठशाला मे सन्यासी जी के अभाव म उनकी पत्नी श्रीमती जगरानी देवी जी और अनुज श्री देवीदयाल जी भी अध्यापन-कार्य किया करते थे। सन 1915 ई० मे जब वे ट्रान्सवाल से नेटाल आकर डरबन मे निवास करने लगे तो हिन्दी-प्रचार-कार्य प्रचलित रक्खा उन्होने लिखा है —

पाच साल मैंने नेटाल और ट्रान्सवाल मे लगातार हिन्दी-प्रचार का काम किया। इस दरम्यान मे जर्मिस्टन, न्यूकासिल, बेनहाउजर, हार्टिमस्पूट, ग्लेंको, बर्नसाइड, लेडीस्मिथ, विनेन जेकब्स आदि शहरों और कस्बो मे हिन्दी-प्रचारिणी-सभायें और हिन्दी पाठशालायें खुल गईं। इन सभाओं को एक केन्द्रीय मडल के अन्त-

गंत सगठित करने के विचार से दक्षिणीय अफ्रीका-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मैंने स्थापना की, जिसका पहला वार्षिकाधिवेशन लेडीस्मिथ मे और दूसरा पीटर मेरित्स-बर्ग मे बडी धूम-धाम से हुआ था।"

डरबन नगर के क्लेरस्टेट मे सन्यासी जी ने एक हिन्दी आश्रम बनवा कर उसके अन्तर्गत हिन्दी पुस्तकालय, हिन्दी विद्यालय और हिन्दी मुद्रणालय की भी व्यवस्था की। उन्होने इस आश्रम से एक "हिन्दी' साप्ताहिक पत्र निकालने का भी प्रयत्न किया परन्तु अनेक बाधाओ के उपस्थित हो जाने से वे कृतकार्य न हो सके।

"धर्मवीर" का सम्पादन

यद्यपि सन्यासी जी स्वय पत्रसचालन न कर सके परन्तु उन्होने हिन्दी-सेवा यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित रक्खा। श्री गल्लाराम गधीलामल भल्ला नाम के एक आर्यसमाजी सज्जन ने सन् 1916 के प्रारम्भ से अमर शहीद प लेखराम जी की पुण्य स्मृति मे "धर्मवीर" नाम से एक साप्ताहिक पत्र निकाला। उर्दू-भाषा-विज्ञ होने के कारण भल्ला जी को पत्र सम्पादन मे बडी कठिनाई होती थी। उनके सहकारी श्री मेहरचन्द जी, भल्ला जी के उर्दू लेख को हिन्दी रूप प्रदान करते थे तब प्रेस म छपता था। इस प्रकार जनता को शुद्ध हिन्दी क स्थान पर उर्दूमयी भाषा के दर्शन नागरी वर्णमाला मे होते थे। इस अभाव को दूर करने के लिए भल्ला जी न सन्यासी जी को सम्पादन काय के लिए आमन्त्रित किया और उन्होने भी हिन्दी सेवा के विचार से आर्थिक हानि उठा कर भी इस कार्यभार को सभाल लिया। लगभग दो वर्ष तक काय करने के पश्चात् भल्ला जी मतभेद होने क कारण सन्यासी जी को सम्पादक पत्र से सम्बन्ध विच्छेद करना पडा।

"धर्मवीर" के सम्पादन-काल मे सन्यासी जी ने हमारी कारावास कहानी" "शिक्षित और किसान' "नैपाली हिन्दू' सत्याग्रही गाधी" और वैदिक धर्म आर्य सभ्यता" नामक हिंदी पुस्तको की भी रचना की। इसके पश्चात भी उन्होने हिन्दी की अनेक महत्व पूर्ण पुस्तकें लिखी जिनमे दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास" "दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव' "शकरानन्द सदर्शन' 'प्रवासी की आत्मकथा" आदि प्रसिद्ध हैं।

'हिन्दी पत्रिका"

दक्षिण अफ्रीका ही नही अपितु पूर्वी अफ्रीका और अन्य उपनिवेशो म हिन्दी प्रचार और भारतवासियो मे जागृति उत्पन्न करने का श्रेय सन्यासी द्वारा सचालित "हिन्दी" पत्र को है। इसी पत्र के द्वारा उन्होन सन् 1925 ई० मे महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म शताब्दी मनाने का प्रचार किया जिसके फलस्वरूप दक्षिण अफ्रीका के नेटाल प्रदेश के डरबन नगर मे यह महोत्सव बडे समारोह पूवक मनाया गया। अपनी पत्नी श्रीमती जगरानी देवी की इच्छानुसार हिन्दी" पत्र उन्होने मई सन 1922 ई० म निकाला और नवम्बर सन 1925 ई० मे एक शिष्ट मडल के साथ भारत जाने के कारण उन्ह बाध्य होकर इसे स्थगित कर देना पडा। इतन अल्पकाल म भी इस पत्र ने सामाजिक और राजनैतिक कार्यों के साथ हिन्दी प्रचार का जो कार्य अफ्रीका आदि विदेशो मे किया वह कभी भुलाया नही जा सकता। 'प्रवासी भारतीयो म तो वह ऐसी लोक प्रिय हुई कि नेटाल के सिवा ट्रान्सवाल केप रोडेसिया मोजम्बिक टागानिगा यगाडा केनिया, मोरिशस, फिजी डमरारा, ट्रिनिडाड जमेका ग्रनेडा सुरीनाम आस्ट्रेलिया कनाडा, न्यूजीलैंड आदि उपनिवेशो मे उसकी काफी खपत होने लगी। हिन्दी अपने समय म प्रवासी भारतीयो की मुख पत्रिका बन गई थी। उसमे प्राय स्वर्गीय सी० एफ० एड्रूज प० बनारसीदास चतुर्वेदी राजा महेन्द्र प्रताप, डाक्टर तारकनाथ दास, श्री हनरी पोलक डाक्टर सुधीन्द्र बोस प्रभृति प्रवासी समस्या के विशेषज्ञो के लेख निकलते थे"

उपर्युक्त आर्यसामाजिक विद्वानो क प्रचार और प्रयत्न के फलस्वरूप नेटाल मे अनेक आर्य सस्थाओ और आर्यसमाजो की स्थापना हुई। प्रारम्भ मे आर्यसमाज के अनुकूल वातावरण न होने से विभिन्न नामो से अनेक सस्थाये स्थापित की गईं। उन सस्थाओ मे आर्यसमाज के सिद्धान्तो की ही चर्चा एव तदनुकूल कार्यवाहिया होती थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा नेटाल की स्थापना और हिन्दी काय

सन् 1925 ई० मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मशताब्दी महोत्सव पर वहाँ के आर्य कार्यकर्ताओ ने एक प्रस्ताव द्वारा 22 फरवरी 1925 ई० को शिवरात्रि के दिन आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना की। सन 1925 ई से लेकर सन् 1947 ई तक इस सभा के अन्तर्गत 6 वैदिक परिषदें हुईं। इन परिषदो मे हिन्दी भाषा की उन्नति और प्रचार के विषय मे भी विचार विमर्श हुए और शीघ्र ही ये विचार कार्यान्वित किये गये। तीसरी परिषद, जो सन् 1926 ई मे हुई थी, के निर्णयानुसार सभा और उससे सम्बन्धित सभी सस्थाओ मे हिन्दी मे ही कार्य होता है। चौथी परिषद (सन् 1939 ई) मे प्रत्येक सस्था से मातृ भाषा मे पढाने की व्यवस्था का आग्रह किया गया। पाँचवी एव छठी परिषद मे जो क्रमश सन् 1942 ई और सन् 1947 ई मे हुईं, स्त्रियों को हिन्दी पढाने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ एव मातृभाषा पर निबन्ध पढे गए।

हिन्दी सम्मेलन और हिन्दी सघ की स्थापना

आर्य प्रतिनिधि सभा नेटाल के प्रयत्न से 24-25 अप्रैल सन् 1948 ई मे एक हिन्दी सम्मेलन की आयोजना की गई। 'इस सम्मेलन म हिन्दी प्रचार के लिये "हिन्दी शिक्षा सघ नाताल नाम की स्वतन्त्र सस्था की स्थापना हुई। मतमतान्तरो के भेदभावो को छोडकर इसमे सबका सहयोग लिया गया। इस सम्मेलन मे हिन्दी शिक्षा सघ की नीति क रूप म मुख्यतया तीन बातें स्वीकार की गई (1) नाताल की सभी हिन्दी पाठशालाओ को सघ म सम्मिलित किया जाव (2) सभी पाठशालाओ मे एक जैसी पाठ विधि और परीक्षा प्रणाली चालू की जावे (3) हिन्दी भाषा की शिक्षा के अतिरिक्त हिन्दी मे भारत वर्ष का इतिहास, भूगोल धर्म शिक्षा तथा सामान्य गणित भी सिखाया जावे। इन्ही आधारो पर 'हिंदी शिक्षा सघ म सम्मिलित हैं।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओइम प्रकाश त्यागी ने दक्षिण अफ्रीका मे आर्यसमाज के सगठन के साथ साथ हिंदी के विकाश म भी योग दिया। उन्होने कई बार दक्षिण अफ्रीका की यात्रायें की। 1975 म आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीकी की स्वर्ण जयन्ती मनायी गई।

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री आचार्य कृष्ण (स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती) इसमे सम्मिलित हुए। इस अवसर पर श्री लालबहादुर नानू ने एक अनाथाश्रम खोला।

श्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती और श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने दक्षिण अफ्रीका मे धर्मप्रचारार्थ निमत्रणो को स्वीकार किया। साथ ही हिन्दी के उन्नयन के लिए भी कार्य करते रहे हैं।

इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा मे 30 बडी सस्थाएँ सम्मिलित है। इनमे स्प्रिंगफील्ड और अबोका की क्रमश नागरी प्रचारिणी सभायें हैं।

प नूरदेव वेदालकार ने वेद निकेतन सस्था और वेद ज्योति पत्रिका के माध्यम से कार्य किया।

पूर्वी अफ्रीका

भारतीयो का आगमन

ब्रिटिश पूर्व अफ्रीका म केनिया प्रदेश अन्य प्रदेशो की अपेक्षा भारत से निकट है। यहाँ भारतवासी शर्तबन्द मजदूर क रूप मे नही आय। यहा पर भारतीय मजदूर मुख्यत पजाब प्रान्त से ही आए इसके अतिरिक्त गुजराती भी यहा आये। दक्षिण अफ्रीका मोरिशस फिजी आदि उपनिवेशो की भाँति यहाँ केवल मजदूर ही नही आये अपितु क्लर्क उच्च पदस्थ कर्मचारी और इजीनियर भी आये तथा स्वतन्त्र रूप से व्यायसाय करने वाले व्यक्ति भी आये।

प्रारम्भिक दशा

दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयो के विपरीत यहा आने वाले गुजरातियो और पजाबियो न अपनी मातृभूमि से सम्पर्क बना रक्खा। पजाबियो के आगमन से मुख्य उर्दू का ही प्रचार यहा प्रारम्भ म हुआ। प्रसिद्ध आर्य प्रचारक उषर्बुध जी के अनुसार 'आने वालो म कुछ सख्या आर्यसमाजियो की भी थी किन्तु उन दिनो हिन्दी प्रचार का प्रबल पक्ष पोषक होने हुए भी आर्यसमाज का साहित्यादि उर्दू मे ही था गिने चुने विद्वान हिन्दी के पडित थे। सामान्य आर्यसमाजी हिन्दी म खने आदि का प्रयत्न ता करते ही थे।

(पृष्ठ 3 का शेष)

दिव्य गीता गान की सौगन्ध जिनको
सिद्ध भैरव-गान की सौगन्ध जिनको।
भारती के भाल पर जो हैं तिलक का रूप बनते।
गीत हैं अर्पित उन्हें, जो प्रिय सुरभिमय फूल बनते।
स्वप्न अलको के नही जिनका बुलाते
जो विजय की माग को केवल सजाते।
प्रेरणा भुजपाश होकर बाधती है,
जो समर पदचाप को पायल बनात।
भूलकर श्रृगार को जो अग्निपन्थी वीर बनते,
गीत हैं अर्पित उन्हे जो प्रिय सुरभिमय फूल बनते।

प्रोफेसर कालोनी, श्यामगज बरेली—243005

भूल सुधार

आर्य सन्देश के रविवार 8 जुलाई 1990 के अक मे पृष्ठ 3 पर 'हर डगर पर हमने दीपक ही जलाए' शीर्षक कविता के रचियता प० उत्तम चन्द शरद' एम ए का नाम प्रेस की भूल से छूट गया है। इसी प्रकार इसी अक के पृष्ठ '4' पर 'समाधान हो सकता है शीर्षक टिप्पणी के लेखक भी 'प उत्तम चन्द शरद' हैं। उनका नाम यहा पर भी छूट गया है। इस भूल के लिए पाठकगण कृपया क्षमा करें।

—सम्पादक

प्रारम्भ मे उर्दू के प्रचलित हो जाने पर भी आर्यसमाजियो ने आते ही भिन्न वातावरण उत्पन्न कर दिया। पूर्वी अफ्रीका मे आर्यसमाज के प्रसिद्ध महोपदेशक प सत्यपाल जी ने लिखा है ' तब भारतीय मजदूरों के साथ ही भारतीय क्लर्क, व्यापारी इस देश को भरने लगे। उनमे ही देश मे प्रेरणा लेकर आये हुए आर्य समाजी भी आये और आते ही उन्होने सत्सग प्रारम्भ कर दिये काम के बाद सारा समय भजनो को गाकर बाजार फिरने, प्रात साय सत्सग और सध्या करन मे व्यतीत होने से नया युग प्रारम्भ हुआ। 1903 मे आर्य सत्सगों का लिखित विवरण अब भी उपलब्ध है उनसे पता लगता है कि तब तक के आय क्या भावनायें रखते थे।

(1) सारे अफ्रीका खड को आर्य बनाना।

(2) इस देश में आर्य भाषा को ही मुख्य भाषा बनाना।

(3) इन कौलियों को भारत का हिस्सा बनाना।

कतिपय आर्य समाजियो ने प्रारम्भ मे विचार किया कि भारत से विद्वान उपदेशको को आमन्त्रित कर देश मे आय समाज की स्थिति दृढ हो जाए फलत पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने पडित पूर्णानन्द जी को भेजा। पडित जी तीन बार सन् 1904, 1908 और 1922 ई मे अफ्रीका आये। पडित जी ने आते ही हिन्दी और सस्कृत के अध्ययन के लिए मुम्बासा, नैरोबी और कम्पाला मे साय काल की पाठशालाए प्रचलित की।

सन् 1912 ई से लेकर 1918 ई तक पूर्वी अफ्रीका के आर्य समाज का इतिहास सकट काल का है। भारत वर्षीय आर्यसमाजो पर अग्रेजी सरकार की कोप-दृष्टि मुख्यरूपेण सन 1912 से सन् 1914 तक रही अत अफ्रीका मे भी अग्रेज सरकार का दृष्टिकोण वैसा ही क्यों न हो ? प्रथम विश्व युद्ध-काल मे तो मुम्बासा आर्यसमाज के अनेक सदस्यो को फांसी और लम्बा कारावास दण्ड मिला। शनै शनै स्थिति म परिवतन हुआ आर्य समाज ने अपनी स्थिति दृढ करना प्रारम्भ किया।

आर्य प्रचारक

प पूर्णानन्द जी के पश्चात प महाराणी शकर, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, प बालकृष्ण, प मणिशकर, प्रो ईश्वरदत्त, डाक्टर भगतराम, ठाकुर प्रवीणसिह, प रविदत्त और प माथुर शर्मा प्रो रामदेव, प चमूपति प मदन मोहन विद्यासागर महात्मा आनन्द स्वामी डा सत्यदेव विद्यालकार आदि महोपदेशक और प्रचारक पूर्वी अफ्रीका गए। प सत्यपाल जी सिद्धान्तालकार ने तो अफ्रीका को अपना घर ही बना लिया है। हिन्दी-प्रचार के लिए उनका त्याग और तप सराहनीय है।

केनिया

आर्यसमाज और अन्तर्गत स स्थाए

सबसे पूव केनिया की राजधानी नैरोबी नगर मे 3 अगस्त सन 1903 ई मे आर्य समाज की स्थापना हुई। इस समाज के 3 लाख शिलिग मूल्य के बड़े भव्य भवन हैं। इसके अन्तर्गत हिन्दी-प्रचारक सस्थाओं मे एक पुस्तकालय है जिसमे हिन्दी, उर्दू गुरुमुखी, गुजराती और अग्रेजी सब मिलाकर लगभग 2000 पुस्तकें हैं। वाचनालय मे भी उपर्युक्त भाषाओं के पत्र भारत मे आते हैं। आर्य युवक सभा, आर्य वीरदल, स्त्री समाज आदि मे तो हिन्दी का कार्य होता ही है इसके अतिरिक्त आर्य कन्या पाठ शाला और हिन्दी रात्रि पाठशाला भी है नैरोबी की इस कन्या पाठशाला का आरम्भ तो सन् 1908 ई से ही हो गया था परन्तु 1918 ई से यह सुचारु रूप से चल रही है। इन समय लगभग 1400 कन्याए शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। यह पूर्वी अफ्रीका की प्रथम सस्था है जिसका शिक्षण माध्यम हिन्दी है।

आर्यसमाज नैरोबी ने सन् 1936 ई से एक सायकाल पाठशाला खोली जो अत्यन्त सफल रही। 1943ई से यह पाठशाला वर्धा की राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की परीक्षाओ का केन्द्र बना दी गयी। इसमे सहस्रो विद्यार्थी लाभ उठा चुके हैं। यह पाठशाला प सत्यपाल जी के व्यक्तिगत पुरुषार्थ से चल रही है।

यहाँ की आर्य स्त्री समाज ने भी हिन्दी की उन्नति के लिए प्रयत्न किया है। अधिवेशन की कार्यवाही तो हिन्दी में होती ही है इसके अतिरिक्त इस सस्था की ओर से पजाब की रत्न, भूषण, प्रभाकर परीक्षाओं के लिए भी केन्द्र चल रहा है।

पत्र-पत्रिकाऐं

प्रथम विश्व युद्ध के अनन्तर सन् 1921 ई मे "आर्यवीर" नाम का पत्र आर्यसमाज नैरोबी की ओर से प्रारम्भ हुआ परन्तु दो वर्ष के पश्चात समाप्त हो गया। कभी-कभी साइक्लोस्टाइल की सहायता से प्रचार-पत्रिकायें निकलती रही।

आर्य समाज किसिमु

नैरोबी के पश्चात किसिमु आर्यसमाज का स्थान है। इसकी स्थापना सन् 1910 ई मे हुई है। इसका मन्दिर 30 सहस्त्र शिलिंग लागत का है। इसके अतिरिक्त आर्य कन्या पाठशाला और श्रद्धानन्द पथिकाश्रम के भव्य-भवन भी हैं। इस समाज के अन्तर्गत पुस्तकालय और स्त्री आर्यसमाज भी हैं।

इन सभी सस्थाओं द्वारा हिन्दी प्रचार विभिन्न प्रकार से होता है। प ईश्वर दास जी ने किसिमु में हिन्दी प्रचार किया।

मुम्बासा केनिया का मुख्य बन्दरगाह है। यहाँ भी आर्यसमाज मन्दिर बना हुआ है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सन् 1929 मे यहाँ आकर प्रचार कर गये हैं। यहाँ गुजरातियों की सख्या अधिक होने के कारण गुजराती भाषा को हिन्दी की अपेक्षा अधिक महत्व प्राप्त है। कुछ वर्षों से अनन्त शास्त्री जी हिन्दी-प्रचार कार्य कर रहे हैं। वे राष्ट्र-प्रचार समिति एव पजाब विश्वविद्यालय की परीक्षायें दिलवाते हैं।

आयसमाज टागा जजीबार, मोम्बासा, मे हिन्दी का सवर्धन किया गया।

युगांडा

आर्यसमाज कम्पाला

युगाडा प्रदेश की राजधानी कम्पाला है। यद्यपि यहाँ सन् 1908 ई० मे प० पूर्णानन्द जी के प्रयत्न से आर्यसमाज स्थापित हुआ था परन्तु कुछ समय पश्चात शिथिल हो गया। सन् 1913 मे इसका पुनरुद्धार हुआ किन्तु युद्ध काल पुन शिथिलावस्था को प्राप्त हुआ सन् 1920 से पुनर्जीवन मिला और सन् 1928 मे आर्य मदिर भी तैयार हो गया। कम्पाला आर्यसमाज के अन्तर्गत सन् 1939—से एक कन्या पाठशाला चल रही है जिसमे छात्राओं को हिन्दी भी पढ़ाई जाती है।

उपदेशकों द्वारा प्रचार

"सन् 1913 ई मे श्री प० महाराणीशकर जी उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई यहाँ पधारे। उनके उपदेश का यह प्रभाव होता था कि आर्य हिन्दू, खोजे, मुसलमान सभी इनके अमृत रूपी उपदेशों से अपनी धर्म पिपासा को तृप्त करने के लिए इनके व्याख्यानों मे भाग लेते थे।

पडित जी के अतिरिक्त श्री ठा० प्रवीण सिह, पं० ईश्वरदत्त जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, प्रो० रामदेव जी, डा० भगत राम जी, प० बालकृष्ण जी तथा प मणि शकर जी ने भी यहाँ प्रचार किया। इस समाज के अन्तर्गत एक छोटा-सा पुस्तकालय भी है जिसमे हिन्दी की भी पुस्तकें है।

जिजा, लौगाजी और मुबाली आर्यसमाज के भी मन्दिर हैं। जिजा के मदिर का निर्माण लगभग 4 वर्ष पूर्व हुआ है। इसकी लागत अनुमानत 2 लाख शिलिंग है। लौगाजी का मदिर पूर्ण रूपेण सेठ नानजी कालिदास मेहता द्वारा बनवाया गया है। मुबाली आर्यसमाज की स्थापना सन् 1928 ई० में हुई। समाज मदिर के साथ ही यहाँ एक पाठशाला भी चल रही है।

आर्यसमाज जजीबार और हिन्दी की स्थिति

जजीबार पूर्वीय अफ्रीका के तट पर एक छोटा सा द्वीप है।

यहाँ गुजरातियों की जनसख्या अधिक है। सन् 1913 ई० मे प० महाराणी शकर गुजराती भाषा में ही प्रचार करते थे। केनिया और युगांडा जाने वाले लगभग सभी आर्योपदेशक यहां से होकर गये। निश्चित रूप से आर्यसमाज ने हिन्दी के लिए उल्लेखनीय कार्य किया।

टांगानिका

आर्यसमाज दारूस्सलाम

टांगानिका प्रदेश का मुख्य नगर बन्दरगाह और राजधानी दारूस्सलाम है। यहां आर्यसमाज का प्रारम्भ तो सन् 1911 ई० से ही हो गया था। परन्तु नियमपूर्वक स्थापना और प्रारम्भ सन् 1919 ई० से हुआ। इस समाज के अन्तर्गत देवकुवर आर्य कन्या पाठशाला है जिसमे 700 लडकियाँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इसके अतिरिक्त आर्यवीर दल, पुस्तकालय और एक वाचनालय भी इसी समाज के अन्तर्गत हैं। पुस्तकालय में सस्कृत, हिन्दी और गुजराती की पुस्तकों के अतिरिक्त कुछ उर्दू की पुस्तकें भी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा और स स्थायें

इसके अतिरिक्त टबोरा, मुवाजा, डोडोमा, मनसीओ तथा अन्य अनेक स्थानो पर आर्यसमाज स्थापित हैं जिनमें नियमानुसार अधिवेशन होते रहते हैं।

सन् 1920 ई मे आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका की स्थापना हुई। इसकी स्थापना से आर्य समाज का सगठन दृढ हो गया और सन् 1945 ई तक पूर्वी अफ्रीका की लगभग सभी सस्थायें इसके अन्तर्गत हो गई।

मौरिशस

आरम्भिक दशा

अफ्रीका महाद्वीप के पूर्व हिन्द महासागर में मौरिशस नामक एक द्वीप है। भारतवासियों में यह मिर्च के टापू के नाम से भी प्रसिद्ध है। सन् 1834 ई. में भारतीय मजदूर शर्तबन्द होकर आये। शर्त की अवधि समाप्त हो जाने पर अधिकतर मजदूर यहीं बस गये। प्रारम्भ में इन प्रवासियों की दशा अत्यन्त हीन और दयनीय थी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

1	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम द्वितीय) प्रत्येक	1 50
3	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)	2 00
4	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक—	3 00
10	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक—	4 00
12	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)	5 00
13	धर्मवीर हकीकत राय वैद्य गुरुदत्त	5 00
14	फ्लैश आफ ट्रुथ डा० सत्यकाम वर्मा	2 00
15	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश „	2 00
16	एनाटोमी आफ वेदान्त स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	5 00
17	आर्यो का आदि देश „	2 00
18	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद „	25 00
19	दी ओरीजन होम आफ आयन्स „	2 00
20	चत्वारो वै वेदा „	5 00
21	द्वैतसिद्धि „	5 00
22	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे —डा० धर्मपाल डा० गोयनका	20 00
23	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका— प० सच्चिदानन्द शास्त्री	5 00
24	हसना चल हसाता चल स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती	6 50
25	दयानन्द एन्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)	50/ रु- सैकडा
26	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)	50/-रु० सैकडा
27	मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम (ट्रैक्ट)	50/-रु सैकडा
28	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)	50/-रु. सैकडा
29	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या) डा० रघुवीर	50/-रु सैकडा

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तको पर 15 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा। पुस्तक प्राप्ति स्थान— दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001

आयसन्देश—दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११ ००१

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 1 7 1990 entitled to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ८५६ पर्व भुगतान बिना भजने का लाइसेंस न० य १३६

पुस्तक समीक्षा

जीवात्मा

दुर्भाग्यवश शताब्दियो से वैदिक मन्त्रो के अर्थों से हम वचित रहे और परिणामत हमने अपने तत्वज्ञान के अनेक पक्षो के विषय मे भ्रामक धारणायें बना लीं। हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऋणी है कि उन्होंने वैदिक ज्ञान भण्डार की लुप्त हुई कुंजी को मानव मात्र के लिए ढूढ निकाला। आर्यो का विशेष कर्त्तव्य है कि उस कुंजी के सहारे वेद मन्त्रो की अधिकाधिक गहराई मे पहुँचते हुए अध्यात्म साधना मे लीन हो जायें।

जीवात्मा मानव शरीर मे किस स्थान पर है अभी तक विवादास्पद बने हुए इस विषय को लक्ष्य मानकर गुरुकल वृन्दावन के पूर्व आचार्य वीरेन्द्र परमार ने पर्याप्त समय वेद वैदिक साहित्य तथा अन्य अपेक्षित ग्रन्थ व आयुर्वेद आदि के अध्ययन अनुशीलन और मन्थन करने के अनन्तर श्री नवनीत प्राप्त किया है उसने इस विषय को विवादहीन बना दिया है।

जीवात्मा पुस्तक कितनी महत्वपूर्ण हो सकती है इसका प्रमाण पुस्तक के प्रारम्भ मे दिये गए महामहोपाध्याय श्री प० युधिष्ठिर जी मीमांसक आचार्य उदयवीर जी शास्त्री तथा डा० फतेह सिंह जी के आशीवचन हैं। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने भूमिका लिखी है।

'जीवात्मा' पुस्तक विद्वान लेखक ने यह सिद्ध किया है कि प्राचीन ... और आप्त पुरुषो द्वारा प्रयुक्त हृदय शब्द मस्तिष्क के लिए प्रयुक्त किया गया ... का आवास है।

श्री वीरेन्द्र सिंह परमार ने इस पुस्तक को लिखकर धर्म दर्शन और संस्कृति का जो सत्कार्य किया वह स्तुत्य है।

(जीवात्मा—लेखक श्री वीरेन्द्र सिंह परमार प्रकाशक श्रीमती महादेवी धर्मार्थ न्यास 28 य० बी० जवाहरनगर दिल्ली 110007 पृष्ठ संख्या 96, मूल्य 40 रुपये)

—मूलचन्द गुप्त

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली 1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
दिवस आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी मौजपुर दिल्ली ५३ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७६६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ३६ | रविवार २९ जुलाई १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपए | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश में ५० पौंड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

विदेश मंत्रालय का सार्वदेशिक सभा प्रधान के नाम पत्र

फिजी के लोकतांत्रिक आन्दोलन को भारत सरकार द्वारा समर्थन

नई दिल्ली 14 जुलाई 1990

विदेश मंत्रालय के सचिव डा. मधुप मोहता ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के नाम अपने पत्र द्वारा सूचित किया है कि स्वामी जी के विदेश मंत्री को लिखे गए पत्र के बाद विदेश मंत्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल ने संसद के दोनों सदनों में यह वक्तव्य दिया कि भारत सरकार फिजी में भारतीय मूल के लोगों की समस्या के प्रति सजग है तथा पूरी तत्परता से उनके मानवाधिकारों के संरक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भरसक प्रयास कर रही है। श्री गुजराल ने कहा कि इस आज के युग में फिजी की इस गैरकानूनी सरकार की जातिवादी नीतियां स्वीकार नहीं हो सकतीं जातीय भेदभाव तो दक्षिण अफ्रीका से भी पलायन कर रहा है और फिजी में भी यह बहुत दिन नहीं टिक सकता। यह गैरकानूनी सरकार लोगों में फूट डालकर शासन करने की पुरानी युक्ति को अपना कर सत्ता में बनी रहना चाहती है अतः यह जरूरी है कि विश्व समुदाय इन घृणास्पद प्रथाओं के विरुद्ध अपनी आवाज उठाये।

श्री गुजराल ने यह भी कहा कि भारत लोकतन्त्र और जातीय समरसता के लिए फिजी के बहादुर लोगों के संघर्ष में लोकतान्त्रिक आन्दोलन के प्रति विश्व जनमत जागृत करेगा और उसे अपना समर्थन देता रहेगा।

हम जातीय भेदभाव के विरुद्ध उसका रूप चाहे कुछ भी हो और चाहे वह कहीं भी बरता जाए जब भी मौका मिलेगा अपनी आवाज बराबर उठाते रहेंगे।

जद के कद की हद !

वर्तमान राष्ट्रीय सरकार (जनता सरकार) की स्थिति आज जितनी अनिश्चित है उतनी कभी किसी सरकार की नहीं रही। पिछले कुछ दिनों से वर्तमान सरकार के विभिन्न पक्षों द्वारा एक दूसरे को दुलत्ती मारना और एक दूसरे को पटकी देना इन नेताओं का व्यसन बन गया है और देश की मासूम जनता अवाक् होकर इन नेताओं का नाटक देख रही है और राष्ट्र की इस अनिश्चित स्थिति पर आंसू बहा रही है।

बंगलौर में बैठकर 21 दिनों तक राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की राजनीतिक चिकित्सा द्वारा श्री देवीलाल उप प्रधानमंत्री ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि वे राजनीति के पक्के खिलाड़ी हैं। उनकी इस दक्षिण भारत यात्रा की अनेक उपलब्धियां हो सकती हैं परन्तु उनकी इस नारद यात्रा के उद्देश्य और उपलब्धि का नजारा देश की जनता के सामने है। महम में चुनाव के दौरान हुई हिंसक घटनाओं के कारण राष्ट्रीय मोर्चा सरकार राजनीतिक दलदल में ऐसी फंसी कि श्री देवीलाल जी के सुपुत्र श्री ओमप्रकाश चौटाला को अंततः त्यागपत्र देना पड़ा।

श्री चौटाला का इस्तीफा श्री देवीलाल जी की गहरी नाराजगी का कारण बन गया। भारतीय प्रेस और उन्होंने मूल्यों पर आधारित राजनीति करने वाले राष्ट्रीय नेताओं पर एकाएक प्रहार करना शुरू कर दिया। समाचार-पत्रों पर सेन्सर लगाने तक की बात कही जाने लगी। मूल्यों पर राजनीति करने वाले नेताओं को बेईमान और धोखेबाज बताया जाने लगा। लेकिन शीघ्र ही श्री देवीलाल जी ने समझ लिया कि इन हथकण्डों का कोई विशेष प्रभाव नहीं हो रहा है बल्कि वे स्वयं उपहास का पात्र बन रहे हैं। उन्होंने पुत्र के त्यागपत्र रूपी जख्म पर मरहम लगाने के लिए दक्षिण भारत में बैठकर चिन्तन किया और फलस्वरूप प्रधानमंत्री के विश्वस्त सहयोगियों को कमजोर करने की नीतियां बनाई जाने लगीं। एक ओर श्री रामकृष्ण हेगड़े को त्यागपत्र देने के लिए मजबूर किया गया। दूसरी ओर श्री बोमाई ने चौटाला को जनता दल का महासचिव बनाकर राष्ट्रीय राजनीति के क्षितिज पर उतारने की चेष्टा की। और उसी दिन हरियाणा के मुख्यमंत्री को श्री चौटाला के समर्थन में त्यागपत्र देने की भूमिका तैयार की जाती है। और अन्त में श्री चौटाला एक बार फिर राज्य के मुख्यमंत्री बनकर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

देश के प्रबुद्ध नागरिक यह समझने लगे हैं कि जनता दल (जद) में नेताओं की ऊंचाइयां (कद) की कोई सीमा (हद) नहीं है। यही कारण है कि जनता दल का हर स्वयंभू नेता स्वयं को सर्वोच्च अथवा अपने तथाकथित ग्रुप का सरदार मानता है। नतीजा वही हुआ कि पिछले दिनों हर दिन दो चार केन्द्रीय मंत्री त्यागपत्र देते रहे और अपना विरोध प्रकट करते रहे और नाटक की हद तब हो गई जब प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को भी पेशकश करनी पड़ी।

घटनाक्रम अभी अपने यौवन पर है और हर दिन नए समझौते और विरोध की कहानियां सामने आ रही हैं। एक ओर जहां सारा राष्ट्र जम्मू कश्मीर पंजाब पूर्वांचल प्रदेशों तथा तमिल शरणार्थियों की समस्याओं से आहत है वहीं दूसरी ओर हमारे राष्ट्रीय नेता जिन्हें पिछली जनता सरकार का कटु अनुभव भी है फिर भी उन्हीं चरण सिंह राजनारायण के नाटकों का पुनर्मंचन कर देशवासियों के बीच उपहास का पात्र बनने में आनन्द आ रहा है।

ईश्वर राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार और पार्टी के अग्रज नेताओं को सद्बुद्धि और शक्ति दें कि वे आपसी खींचातानी और अपने निजी स्वार्थों को तिलाञ्जली देकर महान् भारत के राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि मानकर राष्ट्र और राष्ट्र की जनता के कल्याण की ही सोचें अथवा इतिहास उन्हें क्षमा नहीं करेगा।

सम्पादक

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

राष्ट्रीय पत्रकारिता का यह ओजस्वी पुरोधा !

पिछले वर्ष मुझे समाचार मिला था कि क्षितीश जी के कतिपय पत्रकार मित्र उनके 74 वें जन्म दिवस के अवसर पर उन्हें एक स्मारिका भेंट करना चाहते हैं। साधारणतया ऐसी स्मारिकाएं 25 वें, 50 वें, 60 वें, 75 वें, 80 वें, जन्म दिवस पर या इन वर्षों की पूर्ति पर भेंट की जाती है। भला 74 वां भी कोई सम्मान वर्ष होता है। पर व्यक्ति के लिए तो अपना प्रत्येक जन्म दिवस आत्मीयता की भावना रखता है। मुझसे जब किसी ने निवेदन किया, तो मैंने अटपटा सा एक शीर्षक दिया —"मेरे क्षितीश ! हीरा हो, किन्तु कीचड़ में फंसे।" क्षितीश जी के सम्पर्क में इतने दिनों से हूं। मैं समझता था कि इनके विषय में बहुत जानता हूं, जिसे मुहावरे में कहना चाहिए—इनकी नस नस पहचानता हूं। पर इस स्मारिका को देखकर, जिसका सम्पादन भाई वीरेन्द्र कुमार आर्य ने किया और जिसका प्रकाशन सजधज के साथ "नया युगपुरुष" अजमेर ने किया, मुझे ऐसा लग रहा है कि प्रतिदिन के परिचित क्षितीश को समझने-बूझने में मुझे धोखा ही हुआ है। क्षितीश जी का एक स्वरूप पत्रकारिता का है। पर उन्होंने किसी संस्था से पत्र कारिता का पाठ्यक्रम नहीं सीखा। मैं अपने कई परिचितों को जानता हूं जिन्होंने विश्वविद्यालय के स्नातक होने के अनन्तर पत्रकारिता को जीवन का लक्ष्य बना लिया। पर क्षितीश जी की पत्रकारिता उनके कर्मयोग का सहज परिणाम है। अफ्रीका के जंगलों में पत्रों और पत्रकारों ने जीवन में बड़े बड़े काम किए। व सुप्तव्यक्तियों को बीहड़ वनों और भूमियों में ढूंढ निकाला। विश्व समाचारों की प्राथमिकता पर विदेशी समाचार पत्र जितना धन व्यय कर सकते हैं। वह हमारी कल्पना के बाहर की बात है हमारे देश की पत्रकारिता सम्भवतया अभी उस श्रेणी की नहीं है।

पत्रकारिता आज एक समुन्नत शृंखला का नाम है—प्रेस के कार्यालय में बैठा हुआ सम्पादक मण्डल, जो अग्रलेख भी लिखता है, समाचारों का चयन भी करता है, उसकी भाषा भी सवारता है, संवादों का शीर्षक बनाता है और प्रात काल जब समाचार पत्र छपकर बाजार में आता है, वह स्वयं यह जानना भी चाहता है कि उसकी सम्पादनकला की जनता पर क्या संवेदना हुई। सम्पादन कला का अत्यावश्यक यह अंग भी है, जो दूर से संवाद इकट्ठा करता है और टेलेक्स या टेलिप्रिन्टर द्वारा उन्हें सम्पादक के कार्यालय में भेजता है।

प्रत्येक समाचार पत्र या पत्रिका के कतिपय स्थायी स्तम्भ होते हैं—

(1) वर्गीकृत विज्ञापन (2) बड़े बड़े नगरों के राज्य सबंधी या जन सामाजिक समाचार, (3) बाजार के भाव (4) खेल कूद के विवरण-आमोद-प्रमोद (5) लोकप्रिय विज्ञापन और औद्योगिक विवरण, (6) आतंकवाद, शान्ति और क्रान्ति के समाचार (7) अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक और शासनिक नीति, (8) फलित ज्योतिष (फलित ज्योतिष स्वतन्त्र भारत की देन है)।

क्षितीश जी स्वयं कहते हैं—'1947 के देश विभाजन के बाद मेरी पत्रकारिता प्रारम्भ हुई।' देश विभाजन का उत्तरदायित्व कांग्रेसी सरकार और अंग्रेजों पर था। इसीलिए क्षितीश जी आज तक हिन्दुत्व के पक्षधर हैं। गुरुकुल कांगड़ी के वे 1926 में विद्यार्थी बने थे। स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या या बलिदान हो गया था। उसी वर्ष क्षितीश गुरुकुल में प्रविष्ट हुए। 1939 में हैदराबाद का सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। 1939 अगस्त में जेल से छूटकर क्षितीश वापिस आये—"आर्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति" पुस्तक लिखी। आत्माभिमानी तो थे ही—जीविका के सम्बन्ध में पिता की सहायता किञ्चित्मात्र भी उन्हें स्वीकार नहीं थी। जनगणना के अवसर पर, प्रवृत्ति के विरुद्ध भी, उपदेश स्वीकार की। कार्य क्षेत्र मध्यप्रदेश और विदर्भ बना। देश-विभाजन के दुर्दिन आए—'अर्जुन' और 'हिन्दुस्तान' जैसे समाचार पत्रों से क्षितीश जी की पत्रकारिता प्रारम्भ हुई। टेलिप्रिण्टरों के अभाव में तारों के बण्डलों के आधार पर ही समाचारों का सम्पादन आरम्भ हुआ। बाद में "अर्जुन" को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने खरीद लिया। मुझे याद है—उस समय की पत्रकारिता में ख्याति गणेश शंकर विद्यार्थी, कृष्णदत्त पालीवाल, विष्णुराव पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी, इन्द्र विद्यावाचस्पति और आर्य समाज में 'आर्य मित्र' के सम्पादक पं० हरिशंकर शर्मा की थी। ये युग हिन्दुत्व के थे।—कांग्रेस में भेद उत्पन्न होते जा रहे थे। इस क्रान्ति काल के अवसर पर हिन्दुओं की प्रवृत्ति मुस्लिम विरोध की ओर मुड़ चुकी थी।

जब से भिण्डरांवाले ने अपने विचारों द्वारा सिक्खों को हिन्दुओं के विरुद्ध उकसाना आरम्भ किया, देश के सामने एक नयी समस्या उभरकर ऊपर आई, जो आज भी उतनी ज्वलन्त है, जितनी इन्दिरा के जीवन काल में थी।

क्षितीश जी का व्यक्तित्व और उनकी पत्रकारिता इन सब परिस्थितियों का सहज परिणाम है। आर्य समाज, मुस्लिम विरोधी मनोवृत्ति, हिन्दुत्व पोषक राष्ट्रीयता—यह सब पाकिस्तानी मनोवृत्ति का स्वाभाविक परिणाम था। 1952 से 1979 तक "हिन्दुस्तान" में कार्य करते करते क्षितीश जी को कटु और मधु दोनों अनुभव हुए तभी शीर्ष स्तम्भों पर और अनेक विधाओं में लिखने का अवसर मिला। रविवासरीय संस्करण का भी भार संभाला।

क्षितीश जी के कुछ ललित अग्रलेखों का संकलन भी तीन पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुआ है।

क्षितीश जी आजकल 'आर्य जगत' (साप्ताहिक) के सम्पादक हैं। "आर्य जगत" का सम्पादन मानो आग से खेलना है। "आर्य जगत आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का पत्र है। जब से क्षितीश जी ने उसे संभाला है, इसमें जान आ गई है। डी० ए० वी० संस्थाओं से इसका सम्बन्ध है आर्य समाज का यह सर्वोत्तम पत्र है। आर्य जगत की गति विधियों का यह प्रवर्तक और मार्ग दर्शक है। विद्वानों का भी, दार्शनिकों का भी कर्मकाण्डियों का भी और सक्रिय राजनीति से उपेक्षित होने पर भी राष्ट्रीय गतिविधियों को स्पष्ट और ठीक ठीक जनता के समक्ष रखने वालों का भी। क्षितीश जी की विश्व व्यापी गतिविधियों की पकड़ भी उल्लेखनीय है। क्षितीश जी का सबसे उत्कृष्ट गुण उनकी ईमानदारी है और उन्हें दूसरों की ईमानदारी भी पसन्द आती है।

मेरी आयु 85 वर्ष की है, जीवन की सन्ध्या स्पष्ट सामने दीख रही है। आर्य समाज कर्मकाण्ड के दलदल में फंसता जा रहा है। रूढ़िवादिता अज्ञात छिद्रों से इस उदात्त संस्था के भीतर प्रवेश कर रही है। सत्ताधारी अपनी अपनी संस्थाओं को जोरों से पकड़े हुए हैं। भविष्य की न इन्हें सूझ है और न चिन्ता। संसार की एक मात्र उदात्त संस्था को इस प्रकार जर्जरित होते हुए देखकर आश्चर्य होता है और दुःख भी क्षितीश जी ऐसे पत्र के जाने माने सम्पादक हैं। उन्हें सम्भल कर इस संस्था का नेतृत्व करना है—वे प्रयत्नशील हैं और जागरूक हैं। "आर्य जगत" के संचालकों ने उन्हें सम्पादकोचित स्वातन्त्र्य की छूट दे रखी है। यह स्वातन्त्र्य ही उनका सम्बल है और सब लोग उनका सम्मान करते हैं।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

पुस्तक का नाम—राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा

सम्पादक—वीरेन्द्र कुमार आर्य। परामर्शदाता मंडल क्षेमचन्द्र सुमन, जय प्रकाश भारती, डा० श्याम सिंह शशि, डा० वेद प्रताप वैदिक, राशा सिंह तथा अन्य।

पृष्ठ संख्या-260, मूल्य-125 रु०। छपाई-सफाई, साज सज्जा उत्तम।

मिलने का पता—(1) 'नया युगपुरुष' केसर गंज, अजमेर (2) आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

ओ३म्-येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीरा। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव सङ्कल्प मस्तु॥

यजु० 34/2

कर्माधार हमारे मन

देवनारायण भारद्वाज

हो ज्ञान सहायक पथ दर्शक, हो कर्माधार हमारे मन।
शुभ संकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन॥
तुम से ही हमको ज्ञान मिले,
तुम से ही कर्म प्रयाण मिले,
तुम से ही कर्म यज्ञ मय हो,
तुम से हो कर्म विधान मिले।
कर्म-धर्म या यज्ञ मर्म में, आ साथ निभाओ मेरे मन।
शुभ संकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन॥
धीर मनीषी धैर्य शक्ति से,
करें नियन्त्रित तुम्हें युक्ति से,
बाहर से तुम्हें खींच लायें,
और मिलायें ध्येय भक्ति से।
मानव शरीर की क्रियायें, मन से ही होती संचालन।
शुभ संकल्पवान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन॥
इस शरीर को सही दिशा हो,
अन्धकार की मेट निशा हो,
कल्याण मार्ग की ओर चलो,
हमको उद्यम और उषा दो।
होकर शरीर के सहयोगी, इसमें ही जाओ बन उत्तम।
शुभ संकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन॥

—एफ-42 मानसरोवर कालोनी,
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

हमारी शतुर्मुर्ग सरकार



पिछले दिनो राष्ट्रीय समाचार पत्रो सुप्रसिद्ध पत्रकार डा० कैलाश चन्द्र के वक्तव्य प्रकाशित हुए थे। इसमे उन्होने लिखा था कि भारत के प्रधान मन्त्री श्री वी० पी० सिंह ने जामा मसजिद के पुनरुद्धार के लिए 50 लाख रुपये दिए। पता लगा है कि वहाँ पर एक सुरग है जो जामा मसजिद से लाल किला तक जाती है। यह सुरग कश्मीरी आतकवादियों के लिए खादी जा रही है। इस कार्य के लिए शाही इमाम को अरब देशो ने भी सहायता की है। यह प्रश्न विचारनीय है कि क्या सरकारी अनुदान का उपयोग साम्प्रदायिकता के सवर्धन के लिए तथा राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता को तोडने के लिए किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित है कि भारत सरकार पर शाही इमाम का प्रभाव है। प्रभाव होना कोई बुरी बात नही है। परन्तु प्रभाव का उपयोग-प्रयोग मानव कल्याण के लिए होना चाहिए न कि साम्प्रदायिक जातीय एव क्षेत्रीय प्रान्तीय विद्वेष फैलाने के लिए। डा० कैलाशचन्द्र ने श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की राष्ट्र निष्ठा पर भी प्रश्न चिन्ह लगाया है। आज इस बात की आवश्यकता है कि हम अपने नेताओ की धर्म निरपेक्षता का सही विश्लेषण करें। कश्मीर मे हिन्दुओ के साथ जो सुलूक हो रहा है, उसको शक्ति देने वाली नियामक हस्तियाँ कहाँ से उन गतिविधियो को नियत्रित कर रही हैं यह भी विचारनीय प्रश्न है। जो धमकियाँ आज कश्मीर मे मिल रही है वह धमकियाँ पिछले कई वर्षों मे पजाब से मिल रही हैं। हमारी सरकार शुतुर्मुर्ग की तरह आँखे बन्द करके, रेत मे चोच दबाए सोच रही है कि हमे कोई नही देख रहा है। भारत सरकार फिजी के लिए, नेपाल के लिए, दक्षिण अफ्रीका के लिए, कुवैत के लिए ईरान के लिए तो आँसू बहा सकती है, पर उसे दिल्ली मे आए विस्थापित हिन्दू, पजाबी, कश्मीरी दिखाई नही दे रहे हैं, उसे श्रीलका के तमिल दिखाई नही दे रहे हैं।

मूलचन्द्र गुप्त

हरिजन समस्या

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता। वास्तव मे, हमारे देश मे जातीयता प्रान्तीयता धार्मिक असहिष्णुता, साम्प्रदायिकता सकीर्णता की समस्याए शाश्वत हैं। जब कभी सवर्णों के अधिकारो पर चोट लगी उन्हे हरिजनो को त्रास देने मे तत्पर पाया गया। यहा तक कि सरकारी कर्मचारी भी इसमे पीछे नही रहे। अन्त्यज वर्णोत्पन्नता को धर्मान्तिरण भी सुधार नही पाया। अन्य धर्मों मे उन्ही को सम्मान मिला, जो उच्च वर्ण मे जन्मे थे। यद्यपि हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ गुण कर्म स्वाभावानुसार विभाजन की बात कहते हैं। पर ये बातें मात्र शाब्दिक रह गयी हैं। व्यवहार मे कुछ और है।

पिछले दिनो दिल्ली के नबीकरीम दुलारे के तोताराम जाटव के बेटे की बारात हरियाणा के कालडावास गाँव मे गयी थी। दूल्हा के घोडी पर चढने का गाँव के ऊँची जाति के लोगो ने विरोध किया। बारातियो के न मानने पर उन्हें मारा और पीटा भी। पूरी घटना का विवरण तो राष्ट्रीय समाचार पत्रो मे छप चुका है। आवश्यकता यह जानने की है कि भारत को स्वाधीन हुए चालीस से अधिक वर्ष हो गए। जब हम स्वाधीनता की लडाई लड रहे थे, उस समय हमारा यह नारा था कि स्वतत्र भारत मे सबको समानता का अधिकार दिया जाएगा। ये सब नारे आज थोथे (यूटोपिया) सिद्ध हो रहे हैं। क्या किसी को समानता का अधिकार मिल पाया। जार्ज ऑरवैल के उपन्यास "दि एनीमल फार्म" मे इस नव समाजवादी व्यवस्था का बडा ही अच्छा चित्रण है। एक जमीदार से एक कृषि फार्म को पशुओ ने छीन लिया। कहिए कि प्रशासन आभिजात्य मनुष्य से हटकर सामान्य पशु के हाथ मे आ गया। वहाँ पर कई नियम सिद्धान्त बनाए गए। उनमे एक सिद्धान्त था—सब पशु समान है। व्यवस्था बहुत अच्छी चल निकली। कुछ दिन बाद, जिन पशुओ के हाथ मे प्रशासन था उन्होने सोचा कि वे तो विशिष्ट हैं। उन्हे विशेष सुविधाए मिलनी चाहिए। उस पशु-ससद मे उन्होने अपनी सुविधाए बढाली और ऊपर दिए गए नारे को इस प्रकार सशोधित कर दिया— सब पशु समान हैं। पर कुछ पशु दूसरो की अपेक्षा ज्यादा समान हैं।

इस कथा का तात्पर्य स्पष्ट है कि राजकीय व्यवस्था बदल जाने के बाद भी सामन्तीय व्यवस्था मे कोई अन्तर नही आता। हरिजनो को अधिकार देने की बात केवल मच पर की जाती है। हरिजन नेता भी मचीय अवधारणा को भुनाने मे लगे हैं। वे समान अधिकार की बात करते हैं पर पचतारा होटलो मे रहते हैं और मर्सिडीज मे घूमते है, तथा विदेशी हवाई यात्राए करते हैं।

आज भी उच्च जाति जन्मा लोगो का ही प्रत्येक सगठन मे प्रभुत्व है। वह सगठन चाहे सरकारी हो या गैर सरकारी। सरकार ने हरिजनो का जो पदोन्नति की सुविधा दी है उससे असतोष बढा है। और साथ ही बढी है। समय पाते ही विद्वेष को मूर्त रूप देने की भावना बारात पर अत्याचार सभवत् ऐसी ही किसी मानसिक विकृति का प्रदर्शन है।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति और जनजाति आयोग के चैयरमैन और सासद श्री रामधन इस घटना से बहुत दुखी हैं और वे इसकी सी-बी आई जाच की माँग कर रहे हैं। यह माँग उन्हे करनी भी चाहिए। इस घिनोनी घटना के पीछे जो सामाजिक घिनौनापन है उसके लिए चिन्ता करना स्वाभाविक है। इसके निदान का प्रयास भी स्वाभाविक हैं। पर क्या वे इस दिशा मे वास्तव मे प्रयत्नशील हैं अथवा केवल मचो से बडी-बडी राजनैतिक बातें कह कर ही वे अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं। पिछले दिनो आगरा मे भी तो जाटवो के साथ ऐसा ही अन्याय हुआ है। वहाँ के सामाजिक राजनैतिक प्रतिनिधि क्यो चुप हैं? क्या इसके पीछे की परिस्थितियो का विश्लेषण किसी ने किया है। वहाँ के हरिजनो ने घोषणा कर दी कि वे सब मुसलमान बन जाएगे। क्या मुसलमान बनकर उनकी समस्या सुलझ जाएगी। वहा पर भी तो सैयद हैं। क्या वे सबको समानता का अधिकार देंगे। एक और नई समस्या जन्म ले रही है। आरक्षण का विरोध देश के अलग अलग कोनो से आना प्रारम्भ हो गया आरक्षण की व्यवस्था इसलिए की गयी थी कि जो सदियो से दलित रहे हैं वे समानता प्राप्त कर लें। पर जब वे समानता मागते हैं तो उन्हे प्रताडित किया जाता है। यह कैसा न्याय है कि मारे भी और रोने न दें।

वैदिक सामाजिक व्यवस्था यह है कि गुण कर्म स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था निर्धारित की जाए। मनुस्मृति मे भी इस अवधारणा को मान्यता मिली है 'शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्। क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च। (मनु 10-65) अर्थात शूद्र कुल मे उत्पन्न व्यक्ति गुण कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हो सकता है।

अब आवश्यकता इस बात की है, जो भी घिनौनापन है, उसे बदल दिया जाए सभी को समानता दी जाए, सारा समाज शोषण मुक्त हो। हमारा कर्म मानवता मय हो। सभी लोग निडर होकर आपस मे मिलकर चलें—सगच्छध्वम् सवदध्वम्, सबोमनासि जानताम्।'

डा धर्मपाल

नारी उत्पीड़न

दूरदर्शन पर प्रतिदिन दिखाया जाता है कि बेटे को बेटी की अपेक्षा ज्यादा सुविधाए दी जाती हैं। मा को वह भोजन नही दिया जाता, जो अन्य सदस्यों को। सास बेटे की सुसराल से आए लड्डू अपनी बहू को नही देती क्योकि उसने बेटा नही जना बल्कि बेटी पैदा की है। यह भेद-भाव कब तक चलता रहेगा। हम तो यह उद्घोष किया करते थे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'। कहाँ गया हमारा यह उदघोष। सब समाप्त हो गया। सभी को बेटा चाहिए। दी स्वोर्ड आफ टीपू सुलतान के कई धारावाहिक मे पुत्रेष्णा इतनी बलवती है कि वह हैदर को दूसरा विवाह करने के लिए विवश कर देती है। 42 वर्षीय पिता ने अपनी दो अबोध बच्चियो की मिटटी का तेल डालकर हत्या कर दी। कानपुर की तीन बहनो ने फासी लगाकर आत्म हत्या कर ली। शराब के नशे मे चूर पिता ने अपनी पुत्री के साथ बलात्कार किया। लूत की दोनो बेटियो ने अपने पिता को शराब पिलाई थी। क्या वही अन्तिम व्यवस्था पुन इस ससार मे नही लौट रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनी के एक अधिकारी ने अपनी पाच वर्षीय बेटी को चडीगढ के एक पार्क मे छोड दिया था। ये सारे समाचार हमारे राष्ट्रीय समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुए हैं। ये हमे क्या बताते हैं। यही कि बेटियो को आज भी सम्मान जनक स्थान अपने परिवार मे नही मिलता।

दक्षेस (सार्क) दक्षिण ऐशियाई क्षेत्रीय सहयोग परिषद ने इस वर्ष को बालिका वर्ष के रूप मे मनाने का निर्णय लिया है। भारत भी इस परिषद का प्रभावी सदस्य है। भारत मे लडकियो की मृत्यु दर अधिक है। यहाँ की जनसख्या का अनुपात 1000 933 है। कई स्थानो पर लडकियो को जन्म लेते ही मार दिया जाता है इसका प्रमुख कारण यह है कि बालिका को दूसरी श्रेणी का नागरिक समझा जाता है। उसे वे सुविधाएँ नही मिलती जो लडके को मिलती है।

पिछले दिनो दिल्ली के सफदर जग अस्पताल मे एक सर्वेक्षण किया गया था। उसके अनुसार बेटे को हल्का सा कुछ हो जाए, एक दम अस्पताल लाया जाता है, बल्कि नर्सिंग होम मे दाखिल करा दिया जाता है इसके विपरीत लडकी को गलत

(शेष पृ० 7 पर)

गतांक से आगे—

विदेशों में स्थित आर्यसमाजों का हिन्दी के प्रचार में योगदान

आर्य समाज का आरम्भ—

आर्यसमाज की नींव डालने वाले यहाँ प्रारम्भ मे दो आर्यवीर थे प्रथम श्रीराम शरण मोती अथवा मोती मास्टर और द्वितीय श्री खेमलाल जी। आर्यसमाज से इनका सम्पर्क बडे विचित्र ढग से हुआ। मोती मास्टर को लाहौर की अग्रेजी "आर्य पत्रिका" के कुछ पन्ने रद्दी मे मिले जिन्हें पढ़कर वे आकृष्ट हुए और 'आर्य पत्रिका' के ग्राहक बने और आयसमाजी बन गये। श्री मणिलाल जी के प्रोत्साहन से 17 अप्रैल सन् 1910 ई० मे पोर्ट लुईस मे नियमित रूप से आर्यसमाज की स्थापना हुई और इसके अधिवेशन होने लगे।

आर्यसमाज का सगठन और हिन्दी

सन् 1912 ई० मे श्री स्वामी मगलानन्द जी पुरी मौरिशस पहुँचे और उसके पश्चात डा चिरजीव भारद्वाज जी का वहाँ आगमन हुआ। वे इगलैंड के शिक्षित एक दक्ष डाक्टर थे। उनके आगमन से आर्यसमाज का कार्य सुचारु रूप से चलने लगा। आर्य-समाज की उन्नति से ब्राह्मणो को बहुत धक्का लगा उन्होने डाक्टर महोदय का घोर विरोध किया यहाँ तक कि उनके घर पर धरना देने की भी धमकी दी गई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने उनके विषय मे लिखा है

"वे झुकना नहीं जानते थे। वे तो शेर की भाँति सीधा चलने वाले मर्द थे। उन्होंने पोर्ट लुइस का मकान छोडकर बकुआ में आकर मकान लिया और अपने को तथा परिवार को आयसमाज के अर्पण कर दिया। वे प्रतिदिन साय को लोगों को हिन्दी पढाते थे और रात्रि को घर से निकलकर व्याख्यान देते थे। उनकी धर्म पत्नी सुमगली देवी जी लडकियो और स्त्रियों को पढ़ाती थी और अनेक बार बाहर जाकर व्याख्यान भी देतीं। मौरिशस के लिये एक स्त्री का व्याख्यान देना नई बात थी और इसी प्रकार डाक्टर जी का व्याख्यान देना भी नई बात थी "

उपयुक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि डाक्टर भारद्वाज जी ने मौरिशस के इतिहास मे एक नवीन युग उपस्थित कर दिया। उन्होने ब्राह्मणत्व की पाखडमयी दीवार ध्वस्त कर दी, उनकी देवी जी के व्याख्यान से स्त्री-शिक्षा का महत्व प्रकट हुआ और हिन्दी शिक्षा द्वारा उन्होंने मातृभाषा की महत्ता और उपादेयता सिद्ध कर दी। उन्नीसवीं शती के प्रथम चरण मे मौरिशस जैसे अनजान द्वीप मे अशिक्षित रूढ़िवादी और अन्ध विश्वासी श्रमजीवियो के मध्य उनके सर्वमान्य ब्राह्मण देवता के विरुद्ध डट कर काम करना बडा ही असाधारण कार्य था। इससे डाक्टर महोदय की दृढ़ता, चारित्रिक उच्चता और जीवन का परिचय मिलता है। मौरिशस के वर्तमान आर्यसमाज का भव्य भवन बैरिस्टर मणिलाल जी और डाक्टर भारद्वाज जी की डाली हुई सुदृढ नींव पर आधारित है।

आर्यसमाज को पूर्ण रूपेण सगठित करने के दृष्टिकोण से डाक्टर भारद्वाज जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने विशेष सहयोग दिया। प० काशीनाथ किश्टू श्री सतकाम बूलेल प विष्णु दयाल आर्य कवि वेदप्रचारिणी सभा आर्य परोपकारिणी सभा की स्थापना सन् 1912 ई० मे की। पारस्परिक मतभेद के कारण सन् 1928 ई० मे आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी प्रयत्न से सन् 1950 ई० मे दोनों सभायें एक हो गई और उनका नाम आर्य-सभा रक्खा गया।

आर्यप्रचारक

डा० भारद्वाज जी के अतिरिक्त अनेक आय उपदेशकों ने मौरिशस में प्रचार किया। जिनमे श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी विज्ञानानन्द जी, श्री मेहता जैमिनि, प नारायण दत्त जी सिद्धान्त भूषण स्वामी सत्यप्रकाश, श्री ओइमप्रकाश त्यागी, स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी, डॉ दुक्खनराम प्रसिद्ध हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने दसरी बार सन् 1950 ई मे मौरिशस जाकर पारस्परिक मतभेद मिटाकर आर्य-समाज को एक सूत्र मे बाँधने के साथ ही हिन्दी प्रचार को भी बडा प्रोत्साहन दिया भारतीय बच्चों को हिन्दी प्रारम्भ से पढाई जाय इसके लिए इन्होंने आन्दोलन किया। आयसमाज और आर्य महोपदेशको के प्रयत्न से मौरिशस के कुछ युवक हिन्दी की उच्च शिक्षा ग्रहण करने भारत आये। भारत से शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात अब वे अपने द्वीप मौरिशस म हिन्दी प्रचार करने लगे हैं।

आर्यसमाज द्वारा हिन्दी-प्रचार का एक अन्य रूप

आर्यसमाज के प्रचार और कार्य के फलस्वरूप जिस प्रकार भारतवर्ष मे सनातन धर्मियो ने अनेक सस्थायें खोली और आर्यसमाज की भांति प्रचारादि करना प्रारम्भ किया, इसी प्रकार मौरिशस मे भी कुछ सनातनधर्मी सज्जनो ने यही कार्य प्रणाली अपनाई। इससे आर्यसमाज की कुछ हानि तो न हुई परन्तु यह लाभ अवश्य हुआ कि इस प्रकार हिन्दी का प्रचार हो गया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने लिखा है —

स्वामी नारायणानन्द मौरीशस मे 1952 मे गए।

"आर्य सिद्धान्तों के साथ-साथ मुझे कुछ बातों का विशेष रूप से प्रचार करना पडा, जैसे आर्यभाषा (हिन्दी) का। जब मैं 1914 मे मोरीशस गया था, उस समय आर्यसमाजो मे हिन्दी पाठशालायें खोली थीं। उस समय उनका अभिप्राय यह था कि आर्य सत्यार्थप्रकाश पुस्तक को पढ़ सकें। इसके पश्चात् सनातनधर्मियों ने भी पाठशालायें खोली। इसका फल यह हुआ कि भारतीयों को हिन्दी आ गई ।"

संस्थायें

"इस समय मौरीशस में 350 आर्यसमाज और 200 विद्यालय खोले हैं जिनमे हिन्दी पढ़ना लिखना सिखाया जाता है।" इसके अतिरिक्त आर्यसमाजो में उपदेशादि हिन्दी मे होते रहते हैं। भारत से जाने वाले सभी उपदेशक और सन्यासी गण हिन्दी के प्रचार और प्रयोग पर बल देते रहते हैं। 1965 में डी ए वी कालिज खोला गया। जिसमें हिन्दी अनिवार्य विषय है।

पत्र

सबसे प्रथम "हिन्दुस्तानी" नामक पत्र हिन्दी में श्री मणिलाल जी बैरिस्टर द्वारा सचालित किया गया था। भारत जाते समय बैरिस्टर महोदय ने "हिन्दुस्तानी प्रेस" आर्यसमाज को प्रदान किया। आर्य परोपकारिणी सभा द्वारा आरम्भ मे "आर्य पत्रिका" नामक साप्ताहिक पत्र निकाला पश्चात् इसका नाम "जागृति" पड़ा। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से "आर्यवीर" नामक पत्र निकलता था। दोनों सभाओं के एकीकरण के पश्चात आर्य सभा की ओर से अब "आर्योदय" निकलता है। वैदिक जर्नल 1971 से नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है। प नरदेव वेदालकार सम्पादन कर रहे हैं।

अन्य साहित्य

"आर्योदय" के सम्पादक पडित आत्माराम विश्वनाथ जी ने हिन्दी मे अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें "मोरिशस का इतिहास" "हिन्दू मोरिशस" प्रसिद्ध हैं। पडित जी ने हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों की भी रचना की है।

फीजी

प्रारम्भिक दशा

फीजी एक द्वीप समूह है जो आस्ट्रेलिया महाद्वीप से पूर्व और न्यूजीलैंड से उत्तर की ओर है। यह लगभग 250 भागों में विभक्त है परन्तु मनुष्यों का निवास लगभग 80 द्वीपों पर है शेष उजाड है। सबसे पूर्व शर्तबन्द मजदूर सन् 1979 ई मे फीजी पहुचे और सन् 1916 तक वे आते रहे। दक्षिण अफ्रीका और मौरिशस की भाँति हिन्दुओं की दशा यहा भी अच्छी न थी। उनकी अज्ञानता, अशिक्षा और मूर्खता से लाभ उठाकर ईसाई प्रचारक उन्हें अधिकाधिक संख्या में विधर्मी बना रहे थे।

(पृष्ठ 2 का शेष)

पर्यटन प्रेमी क्षितीश जी के एक लेख का मैंने विशेष आनन्द लिया—"जब मैंने वेरियर एल्विन का पीछा किया।" यह कहानी 1940 की है। हैदराबाद जेल से मुक्ति होने के दिनो की कहानी। (निजाम की ट्रेन मे) एक साहित्यिक कृति है। वेरियर एल्विन उन दिनों मध्य प्रदेशी गोण्डों के लोकगीत और लोक कथाओं के सग्रह में तल्लीन थे। मैं अपने पाठको से कहूगा—यदि क्षितीश जी के एक और पहलू को आप देखना चाहते हैं तो पुस्तक मे इस लेख को अवश्य पढ़ें यह उनका एक नया रूप है जिसे पाठक प्राय नही जानते।

"राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा" पुस्तक को मैं प्यार से पूरी पढ़ गया हू। मैं नहीं समझता था, कि मेरे प्रतिदिन के परिचित क्षितीश का व्यक्तित्व इतना अद्भुत है। उससे ईर्ष्या करने को मन चाहता है। आप उसके मन्तव्यों को स्वीकार करें या न करें, वह जैसा है, वैसा ही हो सकता था।

परिस्थितियो से वह सदा जूझता आया है और साहस के साथ आगे बढ़ता गया है।

देश के सामने आज बडी उलझनें हैं। इन उलझनों के बीच मे हम अन्धे हो गए हैं। समस्या देश की नहीं है—मानवता के बीच मे उभरती दानवता की है। विघटन के कगार पर खडा हुआ यह देश मानो क्षितीश को सम्बोधन करके कह रहा है—'धरती के हे पुत्र क्षितीश (क्षिति+ईश)! धरती के हे कण! आशीष तुम्हें है। अस्त व्यस्त सत्रस्त जगत में पत्रकारिता उभरेगी, उन्नत होगी—अजर अमर बन् पत्रकारिता के हे पुरोधा।'

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्यसमाज साकेत

डी० ब्लाक, मार्ग-7, साकेत, नई दिल्ली-17

प्रधान—डा० पूर्ण सिंह डबास

मन्त्री—श्री राजेन्द्रपाल गुप्त

कोषाध्यक्ष—श्री मनमोहन आहूजा

आर्य समाज सत्यपुरा, वाराणसी

प्रधान—श्री जगतनारायण आर्य

मन्त्री—श्री श्रीराम शास्त्री

कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धदेव आर्य

विगत आर्य श्रेष्ठी

पं० भीमसेन विद्यालंकार

पंजाब मे जिला गुरदास पुर के श्री हरगोबिन्दपुर गाँव के सदस्य लाला बिशनदास के घर पर जम्मू मे भल्ला क्षत्रिय परिवार के पं० भीमसेन विद्यालंकार का जन्म 22 अक्तूबर 1900 को हुआ था। लाला बिशनदास जी हरगोबिन्दपुर गाँव की आर्यसमाज के संस्थापक प्रधान थे। उन्होंने ही महात्मा मुंशी राम (स्वामी श्रद्धानन्द) के गुरुकुल खोलने के प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया था तथा हर सभव सहयोग दिया था। हरगोबिन्दपुर मे एक छात्रावास युक्त कन्या महाविद्यालय भी उनके प्रयास से ही खोला गया। यह प्रयास आर्य कन्या महाविद्यालय जालंधर से भी पहले उन्होंने किया था।

इसी समृद्ध परम्परा वाले परिवारमे उत्पन्न पं० भीमसेन जी ने गुरुकुल कांगड़ी से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की और कुछ वर्ष वहीं पर अध्यापन कार्य भी किया। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द के लोकोपकारी कार्यों मे श्रद्धा एव निष्ठापूर्वक भाग लिया। बाद में वे लाहौर मे प्राध्यापक रहे। सरदार भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण, किशोरीलाल आदि क्रान्तिकारी उनके शिष्य थे।

1924-25 मे वैदिक अर्जुन (दिल्ली) के सम्पादक बने। इसके बाद वह पुन लाहौर चले गए। और वहाँ से 'सत्यवादी' का सन् 1925 मे प्रकाशन आरम्भ किया। 1927-28 मे उन्होंने सर्वेन्ट ऑफ पीपुल्स सोसाइटी' द्वारा राजीष पुरुषोत्तम दास टण्डन के निरीक्षण मे प्रकाशित 'वन्देमातरम्' (1927-28) तथा पंजाबकेसरी (1929) का सम्पादन किया। लाहौर कांग्रेस के समय 1929 में उन्होंने पंजाब केसरी का दैनिक संस्करण भी निकाला। अर्जुन के सम्पादन काल में वे एक साल जेल में भी रहें। उनको यह सजा शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी के दण्डित होने का रोमांच पूर्ण समाचार प्रकाशित करने के लिए मिली थी।

वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन पंजाब के मंत्री भी रहे। उन्हे सरदार पटेल की अध्यक्षता में एक राष्ट्रभाषा सम्मेलन भी आयोजित किया था। उन्होंने लैला मजनू, हीररांझा आदि लोककथाओं को सर्वप्रथम देवनागरी हिन्दी से प्रकाशित कराया।

वे 1933-37 में मासिक अलंकार के सम्पादक रहें। 1934-52 मे उन्होंने आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के मुखपत्र 'आर्य' का सम्पादन किया। वे 1934 से 1952 के दौरान 17 वर्ष तक इस समय के मंत्री रहे।

उन्होंने नमक सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए गोण्डा जेल की छ मास तक यातनाएं भी भोगीं। पं० जी अंग्रेजी दिल्ली के अतिरिक्त गुजराती, पंजाबी, मराठी के भी सुयोग्य विद्वान थे। उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यास शैली पर भी अनेक पुस्तकों का प्रणयन किया।

उनके परिवार के सदस्य—श्रीमती वेदकुमारी (पत्नी), श्री रामपाल विद्यालंकार (प्रधान आर्य समाज मालेर कोटला), श्री अजयभल्ला (प्रधान आर्यसमाज करोल बाग दिल्ली), श्रीमती शान्ता मल्होत्रा (प्रिंसिपल, आर्य गर्ल्स कालेज अम्बाला छावनी) सुश्री उमा भल्ला (प्रिंसिपल, गवर्नमैन्ट कालेज पंचकुला), अनिलकुमार' और अरुण कुमार यथाशक्ति आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के अतिरिक्त मानवता के आयामों को विस्तार देने मे संलग्न हैं।'

डा० रामपाल

विगत आर्य श्रेष्ठी

महाशय जगन्नाथ जी भारतीय आर्योपदेशक

—प्राध्यापक राजेन्द्र, जिज्ञासु'
वेद सदन, अबोहर 152116

एक जुलाई 1990 के 'आर्यसंदेश' के अंक मे श्री डा० भवानी लाल जी भारतीय का श्री जगन्नाथ जी भारतीय के साहित्य पर लेख मेरी दृष्टि मे आया। मैंने इस लेख को बड़ी रुचि से पढ़ा। पाठकों के ज्ञानवर्द्धन के लिए मै भी श्री जगन्नाथ जी के सम्बन्ध मे कुछ लिखना आवश्यक और उपयोगी समझता हूँ।

श्री डा० भारतीय जी ने लिखा है श्री कि जगन्नाथ भारतीय ने ऋषि के दर्शन किए थे और वह स्वय को वैदिक धर्म के अनुयायी मानते थे। पाठक इसके साथ यह भी नोट कर लें कि श्री जगन्नाथ न केवल एक साहित्यकार और वैदिक धर्म मे आस्था रखने वाले पुरुष थे प्रत्युत वह एक जाने माने आर्य धर्मोपदेशक थे। उनको आर्य सिद्धान्तों का बहुत गहरा ज्ञान था और उनकी लेखन शैली बड़ी साहित्यिक व प्रभावशाली थी। यदि मैं यह कह दूं कि उनकी शैली उस काल के अनेक विख्यात् हिन्दी लेखकों से अधिक साहित्य है तो इसमे कुछ भी अत्युक्ति नहीं है। वह खड़ी बोली में लिखते थे।

उनका साहित्य हिन्दी पठित जनता मे तब ऐसे ही चाव से पढ़ा जाता था जैसे उर्दू पठित जनता धर्मवीर प० लेखराम व प० कृपाराम शर्मा के साहित्य को पढ़ती थी। उस युग में नाटक आदि बहुत रुचि से पढ़े जाते थे जैसे आज उपन्यास में पाठकों की अधिक रुचि है। जगन्नाथ जी नाटक वार्तालाप व संवाद शैली में आर्य सिद्धान्तों को हृदयगम कराने में बड़े सक्षम थे। उस युग के अनेक जाने माने आर्य विद्वान सन्यासी, प्रचारक, समाजो के प्रधान व मन्त्री उनके साहित्य को पढ़कर पक्के व सच्चे आर्य बने। हरियाणा व देहली क्षेत्र तथा उ० प्र० के पश्चिमी जिलों के पुराने महारथियो मे से कोई विरला ही होगा जिसने जगन्नाथ जी का 'धर्म निर्णय' नहीं पढा होगा।

लगता है कि मान्य श्री भारतीय जी ने इसी पुस्तक को 'धर्म अधर्म परीक्षा' लिख दिया है। भारतीय जी ने इसका यही नाम सुना होगा। पुस्तक का नाम 'धर्म निर्णय' मे। आर्यसमाज के कितने ही दीवानो पर इस पुस्तक ने ऐसा गूढ़ा रंग चढाया कि वे इस अनूठी पुस्तक का यदा कदा पारायण करते ही रहते थे। उनके लिए यह कुलियात आर्य मुसाफिर, स्वामी दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह व उपनिषद् प्रकाश से कम न थी।

दूर क्यों जावें, हम अपने पाठकों को यह बताना चाहते हैं कि गुरुकुल झज्जर के स्वामी ओमानन्द जी पर वैदिक धर्म का रंग चढ़ाने वाले आर्य साहित्य मे 'धर्म निर्णय' भी एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। आज भी स्वामी ओमानन्द जी से आप महाशय जगन्नाथ जी व उनके साहित्य की बात छेड दें तो आप देखेंगे कि किस प्रकार तरंगित हृदय होकर वे अपने यौवन के दिनों को याद करने लग जाते हैं। स्वामी ओमानन्द जी भाव विभोर होकर अपने ऊपर इस पुस्तक का प्रभाव सुनाते हैं। स्वामी ओमानन्द जी ने जिन पुस्तकों का जीवन में विशेष प्रसार किया उनमें "धर्म निर्णय" भी एक है। इन्होंने अपने जीवन मे यह पुस्तक सहस्रों पाठको तक पहुँचाई है।

यह भी स्मरण रहे कि 'धर्म निर्णय' चार भागों मे छपी थी। चारों भाग मिलकर एक सहस्र पृष्ठों के लगभग होंगे। जगन्नाथ जी के लिए ऋषि दयानन्द की विचार धारा केवल समाज सुधार तक ही सीमित नहीं थी। यह वेदोक्त ईश्वर का स्वरूप, ईश्वरीय ज्ञान की नित्यता आदि सृष्टि मे अनादि वेद ज्ञान का अविर्भाव, ईश्वर उपासना क्यों व कैसे, कर्मफल सिद्धान्त, त्रैतवाद, पुनर्जन्म, मुक्ति, मुक्ति से लौटना वर्णाश्रम व्यवस्था, आर्ययोग पद्धति आदि सब मूल सिद्धान्तों के एक दृढ़ अनुयायी व प्रचारक थे।

उन्होंने किसी सभा के सहारे प्रचार किया या अपनी लग्न से ही धर्म प्रचार के लिए समर्पित रहे, यह निश्चयपूर्वक कहना तो कठिन है परन्तु, हमारा अध्ययन हमें यही बताता है कि वह किसी सभा की ओर से नहीं प्रत्युत स्वय स्फूर्ति से ही धर्म प्रचार मे लगे रहते थे। उस काल मे था ही यही दृश्य। क्या किसान और क्या दुकानदार, क्या वैद्य और क्या बाबू और क्या अध्यापक सब समाजी धर्म प्रचार करना अपना कर्तव्य व सौभाग्य समझते थे। श्री प० लेखराम जी व श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी किसी उपदेशक विद्यालय के स्नातक तो थे नहीं। बाद के उपदेशक अपने अपने विद्यालयों मे पण्डित लेखराम जी का साहित्य पढकर विद्वान् बने।

आज आर्यसमाज के नगर कीर्तनों मे नारे ही नारे होते है। 'जय ऋषि की' छुआ छात मिटाने को ऋषि दयानन्द आए थे। नारी शिक्षा दिलवाने को ऋषि दयानन्द आए थे। और बस! अभी कल की बात है मैने अपनी आंखो से देखा व कानो से सुना। महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज जैसे त्यागी तपस्वी कर्मठ पूज्य पुरुष देहली के श्रद्धानन्द बलिदान पर्व की शोभा यात्रा मे झूम झूम कर प्रभु भक्ति, वैदिक धर्म व आर्य जाति के बलिदानियों के भजन गा गाकर प्रेम व उत्साह का एक स्वर्गीय दृश्य उपस्थित कर देते थे। श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी व वैद्य प्रह्लाद दत्त जी का देहली वालों ने प्रेमरस से भजन गीत कितनी बार सुना! जगन्नाथ जी के युग के आर्य पुरुष तो गाया करते थे —

परिव्राजकाचार्य स्वामी दयानन्द।
पधारा है परलोक डंके बजाना॥

यह भजन नगर कीर्तनों मे गाया जाता था इसी का परिणाम था कि जगन्नाथ जी स्वय आध्यात्मिक प्रवृत्ति के आर्य पुरुष थे। सध्या यज्ञ, योग को जीवन का श्रृंगार मानते थे। तब आर्यसमाजी अपने एकेश्वरवाद के लिए जाना पहचाना जाता था। योग प्रचार की इन्हें धुन थी।

जीवित व्यक्तियो का वृत्त जान लेना जितना सरल है, उतना ही कठिन और श्रम साध्य है दिवगत व्यक्तियो का भूला बिसरा जीवनवृत्त संकलित करना।

"आर्यसन्देश" के 1 जनवरी 1989 अक से हमने उन 'दिवगत आर्य श्रेष्ठियों" जिन्होंने मानव मात्र के कल्याण हेतु वैदिक मान्यताओं के आधार पर अपने उपदेशो से, भाषणों से, साहित्य और सेवा से आर्यजगत् को आलोकित किया है, का संक्षिप्त व्यक्तित्व एव कृतित्व अपने सुधी पाठकों के सम्मुख लाने का सतत् प्रयास किया है।

हमें प्रसन्नता है कि इस "श्रेष्ठ आर्यजनो के स्मरण-यज्ञ" में आर्यजगत् के विख्यात् विद्वानों और साहित्यकारों का भरपूर सहयोग मिल रहा है।

—सम्पादक

थाईलैंड और सिंगापुर में हिन्दी कविता की गूंज

पिछले दिनो थाईलैंड की राजधानी बैंकाक और सिंगापुर मे बसे भारतीयों ने हिन्दी के लोकप्रिय कवियों को बुलाकर तीन कवि सम्मेलनो का बड़ा ही सफल आयोजन किया। उन कवि सम्मेलनो का सफल संचालन करके लौटे सुप्रसिद्ध हास्य कवि और 'मंगलदीप' के सम्पादक श्री रामरिख मनहर ने बताया कि विदेश में बसे भारतीयों मे हिन्दी कविता के प्रति जैसा लगाव, जैसा उत्साह उन्होंने देखा, वह उनकी कल्पना के परे था।

सरकार वैदिक विद्वान संतराम बी. ए. पर डाक-टिकट जारी करे

बम्बई से प्रकाशित होने वाले 'विश्व हिन्दी सेवी समाचार' के सम्पादक तथा सुविख्यात् विद्वान् आचार्य अखिल विनय हिन्दी के महान साहित्यकार तथा वैदिक विद्वान स्व० श्री संतराम जी बी० ए० को राष्ट्र की ओर से सम्मानित करने के लिए उन पर डाक टिकट निकलवाने की दिशा में प्रयत्नशील है।

अमेरिका में वैदिक विश्वविद्यालय

अमेरिका के भारतीयों मे, एशियाई लोगों मे तथा स्वय अमरीकी लोगों मे भारतीय भाषाओ और भारतीयसस्कृति के प्रति निरन्तर बढती रुचि के कारण अमेरिका मे वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना सम्भव हुई है।

इससे पूर्व वहा वैदिक स्कूल आफ अमेरिका के नाम से हिन्दी, सस्कृत और वैदिक तत्त्व ज्ञान की शिक्षा देने के लिए एक पत्राचार-पाठ्यक्रम चलता था। यह स्कूल फरवरी 1987 मे शुरू हुआ और पिछले तीन सालो मे ही इसके हिन्दी और सस्कृत के पाठ्यक्रम मे लगभग 150 छात्र भर्ती हो गए। इस स्कूल के द्वारा प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें इतनी लोकप्रिय हुई कि उनका दूसरा सस्करण प्रकाशित करना पड़ा। कार्य और प्रतिष्ठा के विस्तार के साथ वही स्कूल उन्नति करते हुए वैदिक विश्वविद्यालय का रूप ले चुका है। यह सस्था अन्य देशो मे भी अपने केन्द्र खोलने का प्रयत्न कर रही है।

सस्था की एक विशेषता यह होगी कि इसके कार्यकर्त्ता निस्वार्थ भाव से ज्ञान की उपासना की दृष्टि से ही अपना सब कार्य करेंगे और धन, नाम या ख्याति से दूर रहेंगे। अमेरिका मे कोई भी व्यक्ति, किसी भी समय, हिन्दी, सस्कृत और हिन्दुत्व के सम्बन्ध मे इस सस्था से निस्सकोच जानकारी प्राप्त कर सकता है जैसा कि आजकल अनेक विश्व विद्यालयों और कालेजों के छात्र फोन से या व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करते रहते हैं।

इसके प्रशासक हैं जिस फ्रक्फील्ड और कुलपति हैं प० सत्यपाल वेद शिरोमणि।

लिपिक की आवश्यकता

कम से कम इण्टरमीडिएट एव हिन्दी टकण मे 40 शब्द प्रति मिनट का अभ्यास अनिवार्य। कार्यालय तथा वित्तीय विषय का अनुभव वांछनीय।

आवेदक साय 4 से 6 बजे तक सम्पर्क करें। मन्त्री, आर्यसमाज, 15 हनुमान रोड नई दिल्ली-1

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय

करतारपुर —144801, जिला जालन्धर (पजाब)

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री मे प्रवेश आरम्भ

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री श्रेणियो के लिए 31 जुलाई 1990 तक प्रवेश खुला है। भोजन, दूध, पुस्तकें, छात्रावास व मनोरजन की सर्वथा नि शुल्क सुविधा के साथ ही हिन्दी टाइपिंग तथा सगीत सिखाने का प्रबन्ध। प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास। विद्याधिकारी तथा विद्यावाचस्पति उत्तीर्ण छात्रों को शास्त्री कक्षा मे सीधा प्रवेश मिल सकेगा। स्थान सीमित है। प्रवेश लेने वाले शीघ्रता करें।

—नरेश कुमार शास्त्री एम० ए० आचार्य

आर्य कुमार सभा किंग्जवे—

41 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य कुमार सभा किंग्जवे, दिल्ली-9 के 41 वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित समारोह मे प विजय शकर शास्त्री ने युवको का आह्वान किया कि राष्ट्रीय एकता के लिए उन्हें जाति बधनों को नकारना होगा और अपने जीवन के समक्ष अपने माता-पिता तथा गुरुजनों आदि के उत्तम कार्यों को आदर्श के रूप में रख कर एक स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु जुट जाना चाहिए।

इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में अनेक युवकों को यज्ञोपवीत धारण कराकर देश और समाज-सेवा का व्रत दिलाया गया। तथा यज्ञोपवीत की महिमा पर प्रकाश डाला गया।

अत मे आर्य कुमार सभा के सस्थापक श्री इकबाल राय वेदी के निधन पर श्रद्धांजलि दी गई।

मथुरा में—

वैदिक मिशनरी शिविर सम्पन्न

वेद मन्दिर मथुरा में गत 3 जुलाई से 8 जुलाई तक वैदिक मिशनरी साधना शिविर का आयोजन किया गया था जो काफी सफल रहा। इसमें 30 आर्यवीरों व 40 प्रौढ व्यक्तियों ने वैदिक मिशनरी शिविर मे भाग लिया। आर्य गुरुकुल मथुरा के आचार्य स्वदेश जी (नैष्ठिक ब्रह्मचारी) शिविर के अध्यक्ष थे। आर्य वीरदल के कार्यक्रमों का सचालन श्री अभेद मुनि जी ने किया।

शिविर मे गणमान्य व्यक्तियों ने पधार इसकी शोभा बढ़ाई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने शिविर मे अपने विचार प्रकट किए और उप प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश की ओर से प्रकाशित "स्मारिका" का विमोचन किया। अन्य गणमान्य व्यक्तियों मे गुरुकुल, कालवा के आचार्य श्री बलदेव जी, गुरुकुल वेदव्यास, उड़ीसा के प्रधान श्री श्रीचन्द जी सिहल एव दिल्ली के श्री श्याम सुन्दर जी आर्य भी थे।

समापन समारोह मे दिल्ली से श्री सत्यानन्द आर्य श्रीमती पुष्पा आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री योगेन्द, श्री राजेश, ने विशेष रूप से भाग लिया। श्री ईश्वरचन्द जी आर्य की पुण्य स्मृति मे उनके भाई श्री ओमप्रकाश आर्य ने आर्य गुरुकुल में ब्रह्मचारियों के लिए स्थिर निधि हेतु 21,000/- रुपए प्रदान किए। वैदिक मिशनरी गुरुकुल मे प्रथम वर्ष मे ही अपने बनने पर उसको दीक्षा दी गई। ब्रह्मचारी आदित्य ने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर वेद एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी को स्नातक प्रचार एव प्रसार के लिए आपको प्रस्तुत किया।

शिविर आचार्यत्व श्रद्धेय प्रेमभिक्षुजी ने किया।

तपोवन आश्रम देहरादून में—

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद की ओर से तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर तपोवन आश्रम देहरादून मे 15 मई 1990 मगलवार के दिन प्रात चार बजे से आरम्भ हुआ।

इस अन्तर्राष्ट्रीय शिविर में 8 प्रशिक्षणार्थी विदेशी थे तथा चालीस प्रशिक्षणार्थी भारतवर्ष के कोने-कोने से आए थे।

पूर्व शिविरों की उपेक्षा इस शिविर मे आर्य जगत् मे विशेष उत्साह की लहर पायी गई। लगभग दस प्रशिक्षणार्थियों को हम स्वीकृति नहीं दे पाए क्योंकि इनके प्रार्थना-पत्र बहुत विलम्ब प्राप्त हुए थे।

एक मास की अल्पावधि में साधारण स्तर से उठा उन्हें एक सन्तोषजनक स्तर ला खड़ा करना साधारण कार्य नही है। उच्चारण के दोष, उसमे फिर वेदमन्त्रों का पाठ शुद्ध रीति से कराने के अभ्यास मे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। दीर्घकालिक जो अशुद्ध उच्चारण के अभ्यास पड जाते हैं उन्हें फिर शुद्ध करना भी एक जटिल कार्य है।

सस्कारों की विधि का क्रियात्मिक प्रशिक्षण भी दिया गया। पुत्रेष्टि यज्ञ एव तुष्टि यज्ञ के विधान व सिद्धान्त भी सिखलाए गए।

पुरोहित ने यह श्रद्धापूर्वक सकल्प किया कि— हम महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज द्वारा निर्दिष्ट सस्कार विधि के अनुकूल ही कर्मकाण्ड की विधि का प्रचार व प्रसार करेंगे। सस्कारों एव यज्ञों के प्रशिक्षण के अतिरिक्त ध्यान, योग एव शारीरिक आसनो का अभ्यास भी कराया गया।

इसके अतिरिक्त "सत्यार्थ प्रकाश" के सातवें, आठवें, नौवें समुल्लास तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के महत्वपूर्ण विषय भी पढ़ाए गए। जिसमें आर्य समाज के मुख्य मौलिक सिद्धान्तों का ज्ञान भली-भांति हो सके। प्रतिदिन एक घंटे से डेढ़ घण्टे तक का समय शका समाधान के लिए दिया जाता था।

प्रतिदिन यज्ञ करने कराने के लिए पृथक्-पृथक् प्रशिक्षणार्थियों को अवसर दिया जाता था जिससे सभी को क्रियात्मक प्रशिक्षण का अवसर सुलभ हो।

दिल्ली के एक पुरोहित महोदय ने प्रेरणाप्रद वातावरण से प्रेरित होकर वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण कर ली।

प्रशिक्षण के अन्तिम चरण मे निकटवर्ती क्षेत्र हरिद्वार ज्वालापुर ऋषिकेश एव मसूरी की सामूहिक यात्रा भी की। मसूरी मे आर्यसमाज के नूतन भवन की शिला न्यास विधि सम्पन्न कराई।

पुरोहित आर्य जगत के प्रचार प्रसार की सबसे बडी इकाई है। हमे हर ग्राम और नगर मे प्रशिक्षित पुरोहितो का जाल फैला देना चाहिए।

क्योंकि सस्कारों के बिना मनुष्य का सही निर्माण नही हो सकता। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की यह एक तत्कालिक अल्पकालिक योजना है जिससे सुखद परिणामों से आर्य समाजो मे नवजीवन का सचार होगा।

वार्षिक निर्वाचन—

रामगली आर्यसमाज मंदिर

डी-13, हरिनगर घटाघर, नईदिल्ली-64

प्रधान—श्री ओम् प्रकाश खन्ना

मन्त्री—श्री ओम प्रकाश सैलानी

कोषाध्यक्ष—श्री रामशरण दास गुप्त

आर्यसमाज नांगलराया

नांगलराया, नई दिल्ली-110046

प्रधान—श्री सूरजभान गुप्त

मन्त्री—श्री रघुराज शर्मा शास्त्री

कोषाध्यक्ष—श्री देवदत्त शर्मा

आर्य कुमार सभा किंग्जवे, दिल्ली

प्रधान श्री भवन चन्द्र

मन्त्री—श्री धीरज मलिक

कोषाध्यक्ष—श्री प्रवीण कुमार

(पृष्ठ 3 का शेष)

बिगड जाने पर ही अस्पताल लाया जाता है। उसे जनरल वार्ड मे रखा जाता है।

भ्रूण परीक्षण ने भी लडकियो के साथ बडा अत्याचार किया है। लडकियों की शिक्षा के क्षत्र मे भी बहुत बडी असमानता है। लडकियो की शिक्षा और जीवन का मन्तव्य विवाह माना जाता है। एक एम एस सी प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण छात्रा भी इस भयावहता से आक्रान्त दीख पडती है।

कुछ क्षेत्रो मे समान काय के लिए समान मजदूरी भी नही मिलती है। यह वैज्ञानिक सत्य है कि निरन्तर काय करते रहने की क्षमता स्त्री मे अधिक होती है। पुरुष थोडा काम करके विश्राम चाहता है। स्त्री बुनने का, कताई का बीनने का, सेंवई बनाने का काय निरतर बिना किसी विश्राम के करती रह सकती है। सडक के किनारे पडे सिकलीगर लोहे के औजार बनाते हैं। वहा पर घन चलाने का भारी काम स्त्री करती है। उसके शरीर मे पुरुष की अपेक्षा लोच अधिक होता है।

आवश्यकता इस बात की है कि माता पिता तो अपने व्यवहार को ठीक करे ही, लडकियाँ और महिलायें भी अपने अधिकारो को पाने के लिए सघर्ष करें। वीमेंस लिबरेशन जैसे आन्दोलन वहा तक ठीक हैं जहा तक नैतिकता एव सामाजिकता का उल्लघन नही होता। नारियाँ सदाचारणी हो उच्छृखल नही। परन्तु उनके अधिकार उन्हें अवश्य ही मिलने चाहिए। क्या करना है कि हम उन्हें समानता का अधिकार नही दे पाते। वे भी हमारी सामाजिक एव आर्थिक व्यवस्था का समान एव अविभाज्य अग हैं।

डा० धर्मपाल

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१

R N No 32387/ 7 Post in N D P S O on 19 20 7 1990 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

"हमारा जीवन दर्शन"

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी मे आयोजित विशेष उत्सव दिनांक 24 जून को आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान प्रो० उत्तमचन्द शरर ने मानव जीवन दर्शन के क्रम मे वेद शास्त्रों के उद्धरणो के साथ ही शेर वो शायरी के लिए प्रसिद्ध अपनी ओजपूर्ण वाणी से विस्तृत भाषण मे जीवन संघर्ष सामाजिकता और संगठन पर विशेष रूप से विवेचन किया।

उन्होने बताया कि जीवन संघर्षमय है और प्रतिक्षण इसमे से होकर गुजरना है। यहा फूल और कांटा दोनो ही है। फूल चुनना है तो कांटो से गुजरना ही पड़ेगा। यही नही बल्कि अतिवेगवान पथरीली नदी है जिसे पार करने का सामर्थ्य और क्षमता भी चाहिए। हमे उठकर और सचेत होकर उत्साह आशा विश्वास और दृढ निश्चय के साथ निर्भय होकर कर्तव्य पथपर आरूढ होना है तथा बराबर आगे लक्ष्य की ओर बढना है। हमारे यहा तो मृत्यु को एक पड़ाव बदलाव अथवा नव जीवन की भूमिका माना गया है। इस क्रम मे मायूस अथवा पछताये वें जिनका कयामत की प्रतीक्षा मे कब्र मे सोये सोये पसलियो का दर्द दुःख रहा है।

इस क्रम मे शरर जी ने बताया कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है उसे संगठित और सामाजिक होना चाहिए क्योकि सर्वहितकारी सामाजिक न्याय सर्वोपरि है। व्यक्ति समाज से बड़ा नही। यदि उसे समाज से अलग कर दिया जाय तो उसका कोई महत्व नही। ऊँच नीच का भेद भी उचित नहीं। भगवान शंकराचार्य के ज्ञान-चक्षु काशी मे एक चाण्डाल के ही स्वल्प शब्दो को सुनकर खुल गए थे। हमे नही भूलना चाहिए कि छत तभी तक ऊँची है जब तक कि उसके नीचे की दीवार मे चुनी हुई इटें संयुक्त है। इसलिए शरीर रूपी संगठित समाज मे सभी अंगो का अपना-अपना महत्त्व है। मशीन का छोटा पुर्जा भी बिगड जाय तो बाधकता उत्पन्न हो जाती है। शरीर मे यदि आँख को कुछ विशिष्टता प्राप्त है तो इसीलिए कि शरीर के किसी अंग मे चाहे पैर हो अथवा सिर दर्द होने पर उसमे आँसू आ जाते हैं। हममे एक दूसरे के दुःख दर्द समझने की अनुभूति होने के साथ ही अहं का त्याग और परमार्थ के लिए उद्यत रहने की भावना होनी चाहिए। हमारी संस्कृति साहित्य, ऋषि महर्षि और आप्तजनो का जीवन चरित्र हमारे लिए मार्गदर्शन और प्रेरणा स्रोत है।

उन्होने आगे कहा कि सुपथ पर चल कर ही सम्पत्ति का अर्जन और उपभोग श्रेयस्कर है अन्यथा शोषण छल छद्म और येन केन प्रकारेण सम्पत्ति जुटाने वाले को जीवन का वास्तविक सुख कहां?

अन्त मे उन्होने लोगो को आर्यसमाज के श्रेयस्कर संगठन में सम्मिलित होने का आह्वान करते हुए श्रेष्ठ कर्मों के सम्पादन हेतु प्रेरित किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा टिंगल आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी भोजपुर दिल्ली ५३ मे मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ३ अक ४० रविवार २९ जुलाई १९९० विक्रमी सम्वत २०४७ दयानन्दाब्द—१६६ सृष्टि सवत १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश म ५० पौंड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

वेदों का ज्ञान सदैव सार्थक रहेगा–

-डा. शंकर दयाल शर्मा

उपराष्ट्रपति, भारत

नई दिल्ली 19 जुलाई। उपराष्ट्रपति डा० शकर दयाल जी शर्मा ने आज कहा कि वेदो का ज्ञान केवल आज की परिस्थितियो मे ही नही अपितु सदैव सार्थक रहेगा। उपराष्ट्रपति जी ने आज अपने निवास पर आयोजित एक समारोह मे स्व० प० वीरभद्र राव वन्देमातरम् द्वारा लिखित पुस्तक जर्नी आफ दी सोल" का विमोचन करते हुए उक्त बात कही।

उपराष्ट्रपति महोदय ने कहा कि वेदो मे मानव कल्याण तथा आर्यसमाज ने सामाजिक सुधार आन्दोलन मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आम लोगो की यह धारणा है कि वेद और आर्यसमाज केवल आध्यात्मिक उत्थान की बातें करते हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि ये व्यावहारिक भी हैं।

पुस्तक के लेखक आन्ध्र प्रदेश के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी तथा वैदिक विद्वान प० वीरभद्र राव 'वन्देमातरम' को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए डा० शर्मा ने कहा कि प० राव जैसे व्यक्ति वेदो से प्रेरणा लेकर ही स्वतन्त्रता सग्राम मे कूदने को प्रेरित हुए। वे लोग स्वतन्त्रता सग्राम को समाज के पुर्ननिर्माण का अवसर समझते थे। श्री शर्मा ने कहा कि वैदिक गणना पद्धति से आज के कम्प्यूटर तक की जाच की जाती है। उन्होने आगे कहा कि आज सबसे बडी आवश्यकता इस बात की है कि हम लोग योग साधना एव वैदिक-चिन्तन द्वारा अपनी आत्मा को पहचानें।

पुस्तक के सम्बन्ध मे चर्चा करते हुए डा शकर दयाल शर्मा ने कहा कि यह पुस्तक हमे घृणा द्वेष आदि से ऊपर उठकर प्राचीन भारतीय सस्कृति के अनुरूप निर्लिपित भाव से आगे बढने की प्रेरणा देती है। उन्होने उपस्थित आर्य नेताओ से अपेक्षा की कि पुस्तक के तेलगू एव हिन्दी सस्करण भी अवश्य प्रकाशित किए जायें। उन्होने आर्यसमाज का आह्वान किया कि वह अपनी श्रेष्ठ परम्पराओ के अनुरूप वेद एव हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए और अधिक बढ चढ कर कार्य करें।

समारोह के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि प० वीरभद्र राव वन्देमातरम' न केवल एक भाषा विद थे अपितु एक महान सत भी थे जिन्होने अपने ज्ञान और अनुभवो के द्वारा यह पुस्तक लिखकर मानव समाज एव राष्ट्र की अमूल्य सेवा की है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा धर्मपाल ने उपराष्ट्रपति महामहिम डा शकर दयाल शर्मा का स्वागत करते हुए कहा कि मनुष्य को त्याग, तपस्या एव साधना द्वारा आत्मा का उन्नयन करना चाहिए। हमे अपनी आत्मा का पहचानने का प्रयास करना चाहिए, जिससे दुखो से दूर होकर जीवन को सुखमय बनाते हुए भवसागर से पार हो सकें।

इस अवसर पर भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री एव सासद श्री पी शिवशकर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो शेरसिंह तथा अनेक वैदिक विद्वान् और आर्य नेता उपस्थित थे।

आपको स्मरण होगा कि —
17 अगस्त 1939 को आर्य सत्याग्रही विजयी होकर हैदराबाद की जेलो से छूटे थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

अपने मुख पत्र "आर्य सन्देश" का बृहद विशेषांक

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह

अर्धशताब्दी स्मृति अंक

आगामी 19 अगस्त 1990 को प्रकाशित कर रहा है

यह विशेषाक 20×30 साईज के आठवें भाग पर 250 पृष्ठो का होगा, जिसमे आप आर्यसमाज के सबसे पहले और सबसे बडे आन्दोलन "हैदराबाद आर्य सत्याग्रह" की पृष्ठ भूमि, सत्याग्रह का इतिहास शहीदो के जीवनवृत्त सर्वाधिकारियों के जीवन वृत्त सत्याग्रहियों के सस्मरण विद्वान लेखकों एव इतिहासकारों के शोध लेख एव वीर-रस की काव्य रचनायें पायेंगे। यह विशेषाक एक सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

आर्य जगत के दानियो, उद्योगपतियों तथा आर्यसमाजों के अधिकारियो से निवेदन है कि वे यथाशक्ति विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग करें।

विज्ञापन दरें—पूरा पृष्ठ—एक हजार रुपया
आधा पृष्ठ—छः सौ रुपया
चौथाई पृष्ठ—तीन सौ पचास रुपया

स्वामी समर्पणानन्द जन्म दिवस

समारोह

वेद विद्या विशारद प बुद्धदेव जी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती) के जन्म दिवस पर। अगस्त 1990 बुद्धवार अपरान्ह 4-45 बजे श्री स्वामी विरचित

शतपथ ब्राह्मण भाष्य का लोकार्पण

महामहिम डा. शंकर दयाल शर्मा

उपराष्ट्रपति भाषण, करेंगे।

इस अवसर पर श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी सर्वानन्द सरस्वती स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित, प्रो शेर सिंह, डा वाचस्पति उपाध्याय, डा धर्मपाल सम्बोधित करेंगे।

प्रधान सम्पादक—सूर्य देव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

संसार विष वृक्ष के दो मीठे फल

चमन लाल एम ए
उपप्रधान आर्यसमाज अशोक विहार

परमात्मा को हमारे धर्मग्रन्थो मे शनक्रत कहा है। नाना प्रकार की अदभुत सृष्टि रचना उसकी विचित्र लीला का प्रतीक है। वेद की ऋचा देवस्य पश्य काव्य न ममार न जीर्यते। इसकी पुष्टि कर रही है। भक्त यथार्थ इस रचना के रहस्य को समझने के लिए इसकी गहराई मे जाता है त्यो-त्यो वह कुछ चकित अवाक सा रह जाता और इसमे नव रचना का अनुभव करते-करते कभी ऊबता नही। और यह सब उस दयालु कृपालु पिता ने जीव के हित मनोरजन निमित्त बनाई। परन्तु महाभारत मे महात्मा विदुर ने एक प्रसग मे इस ससार को एक घना भयकर जगल कहा है। इसमे कितने ही रोग शोक, अग्निकाण्ड भूकम्प बाढ और लडाई झगडे के भयकर पशु घूमते रहते हैं। इसमे काम क्रोध लोभ मोह और अहकार के सर्प रेंगते हैं। बुढापा एक भयानक स्त्री के रूप मे लोगो का पीछा कर रहा है। मनुष्य जीवन की जिस शाखा से लिपटा है उसे दिन रात के दो सफेद और काले चूहे काट रहे हैं और भयानक सर्प के रूप मे मृत्यु प्रतीक्षा कर रही है। इन सबके बीच मे यहाँ मनुष्य आशा निराशा के साथ इधर उधर दुखी हुआ विचरण कर रहा हैं और कही भी उसे शान्ति प्रतीत नही होती इसी बात को पडित शिरोमणि विष्णु शर्मा ने अपने पच तन्त्र नामक जगत प्रसिद्ध ग्रन्थ मे इस ससार को एक विष वृक्ष की उपमा दी है। इस पर अनेक विषैले फल लगे है। जो उन फलो को खा लेता है वह पागल की तरह व्यवहार करने लगता है और हाहाकार मचाने लगता है और न स्वय सुख पाता है और न दूसरो को सुख की नींद सोने देता है। जो व्यक्ति इस विष वृक्ष की छाया मे आ जाता है वह ही आकुल व्याकुल विह्वल हो जाता है। किसी से पूछो वही अपने को दुखी कहेगा। इसीलिए गुरुनानक देव ने कहा है 'नानक दुखिया सब ससार।' सब जगह बेचैनी ही बेचैनी है। साख्य दर्शन के निर्माता महामुनि कपिल ने भी कहा है 'कोऽपि कुत्रापि सुखीति न' कही भी कोई भी सुखी नही दीख पडता। यहाँ सुखी दिखाई देते हुए के भी हृदय मे दुख की ज्वाला है प्रत्येक आख मे आसू है।

ससार की इस वास्तविकता को नोबल पुरस्कार विजेता महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने बहुत ही मार्मिक शब्दो मे बडी सुन्दरता से ऐसे व्यक्त किया है।

नदीर ए पार कहे छाडिया पुकार
जे सुख जगते श शकल ओ पार
ओ पार कहे छोडया दीर्घ श्वास
शुखेर शकल खानी परे पार।

अर्थात नदी का किनारा पुकार पुकार कहता है कि ससार मे जितना भी सुख है वह सब का सब नदी के दूसरे किनारे पर है मैं ही दुखी हू सुख तो दूसरी ओर है। परन्तु दूसरा किनारा भी दुखी मन से कहता है कि सुख का भण्डार तो परले किनारे पर है मेरे पास तो कुछ भी नही—सब दुख ही है। इस दुखमय ससार मे सुख कहाँ। परन्तु वेद भगवान तो ललकार कर कहता है कि मानव को यहा नाचने और हसने के लिए भेजा है —

प्राञ्चो अगाम नृत्ये हसाय किसी और प्रसग मे आगे इससे भी उत्साहवर्द्धक बात कही है कि सौ वर्ष तक वीर होकर आनन्द आमोद प्रमोद का जीवन बताने वाले हो—

'शत हिमा सर्व वीरा मदम' यद्यपि यह दो विपरीत धारणायें हैं तो भी वेद के कथन मे सच्चाई है इसको स्पष्ट करते हुए महान विद्वान् विष्णु शर्मा ने कहा है कि यद्यपि इस ससार मे दुख ही दुख है परन्तु इस ससार के विष वृक्ष पर दो मीठे फल भी लगे है जो लोग उनका सेवन करते हैं वे आनन्द प्राप्त कर लेते हैं। वे दो मीठे रसीले फल सत्सग और वेद का स्वाध्याय है। "ससार विष वृक्षस्य द्वे एव रस वत्फले काव्यामृत रस स्वाद सगम सुजने सह" ससार के विषयो के विषैले फल खाकर जो दुख शय्या पर पडे से रोकर नरक भोग रहे हैं उन्हे वेद अमृत रस का पान और सज्जनता का सग ही उनके जीवन मे सुख की लहर बहा सकता है। ससार के घोर दुख के अगारो मे जलते प्राणियो के सुख शान्ति प्राप्त करने का यही उपाय है। वेदो ने सुखी जीवन बिताने के लिए सब बुरे चाल चलन छोडने की बात की है — अनिक्रा-मन्तो दरितापदानि। बात एक ही है कि बुरे चाल-चलन को छोडकर श्रेष्ठो की सगति करके वेदानुकूल जीवन चर्या बनाने मे ही सब सुख निहित है।

अत कवियो ने और अनेको नीतिकारो ने अपने अपने तौर पर सत्सग के महत्त्व पर बडे सुन्दर विचार प्रकट किये है। हमारे धर्मग्रथो मे भी ऐसे महत्वपूर्ण विचारो की कुछ कमी नही है। सत्सग की जितनी स्तुति की जाए उतनी ही थोडी है। इसके लाभो की कामना करते हुए महान तपस्वी भर्तृहरि ने अपनी नीति शतक मे लिखा है—

जाड्या धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम ।
मानोन्नति दिशति पापमपा करोति ।
चेत प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति ।
सत्सगति कथय किं न करोति पु साम् ।।

अर्थात सत्सगति मानव को क्या कुछ नही देती—यह बुद्धि की जडता को हर लेती है वाणी को सत्य मे सिंचन करती है पापो को दूर भगा देती हैं चित्त को प्रसन्न करती है और चहुओर कीर्ति यश को विस्तृत करती है। कवियो का कहना है कि सत्सग की किसी से भी तुलना नही की जा सकती। ससार के सब धनधान्य और निकटतम सम्बन्ध का भी महत्व नही है। कहा भी है

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरये तुला इक अग।
तुले न ताहि सकल मिली जो लाभ सत्सग।।

एक नीतिकार ने तो इसकी महिमा को व्यक्त करने मे सचमुच कमाल ही कर दिया।

सतां ही सग सकल प्रसूते अर्थात मानव जीवन को उत्तमता से बिताने के लिए सत्सगति से सब कुछ प्राप्त हो जाता है। यह सफल कामनाओ को पूर्ण करने का एक मात्र साधन है और वासनापूर्ण ससार सागर से पार होने का इससे बढिया कोई नाव भी तो नही है। इतिहास मे ऐसे प्रमाणो की कुछ कमी नही है जहा सत्सगति ने पाप दुर्गुण लिप्त लोगो के जीवन की दशा को ही बदल दिया। शराबी कबाबी और स्त्री गामी महता अमीचन्द और महानास्तिक घोर पतन का जीवन बिताने वाले मुशीराम महर्षि दयानन्द जी का थोडी ही सी सगति से हरि बन गए। महता अमीचन्द ने बडे सुन्दर भक्ति के भजन लिखे और एक सद्गृहस्थ का सा जीवनयापन करने लगा। उधर पतित मुशीराम महर्षि की सगति से स्वामी श्रद्धानन्द के रूप मे मानव जाति के मूर्धन्य होकर भारत के क्षितिज पर बृहस्पति बन कर चमके और गुरु पदवी प्राप्त करके हमारे सामने एक आदर्श स्थापित कर गए।

आज देश की जो दैनीय अवस्था है—अनाचार अत्याचार भ्रष्टाचार और मार काट की जो भयानक दौर चल रहा है यह सब कुसगति के प्रमाण हैं। यदि सत्सगति की सुगन्ध इन भूले भटके लोगो को कही से आ छूती तो सच जानिए कि आज देश की कायापलट हुई दिखाई देती। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यदि देशवासी सत्सगति से भी अमृत रस का थोडा सा भी पान कर लेते तो यहाँ राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के स्वप्न के रामराज्य के ही सुख और आनन्द की सुगन्ध शीतल शान्तिप्रद समीर को ही बहते हुए पाते परन्तु दुर्भाग्यवश सत्सग का पवित्र मार्ग छोडकर कुसगति का मार्ग अपनाकर इस दुर्दशा को प्राप्त हो गये हैं—जिसका इस महान भारत ने कभी स्वप्न मे सोचा भी नही था।

अत देश को पुन गौरवान्वित करने के लिए और मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए और मानव जीवन को सत्सगति के मीठे रसीले फल चखाने की आदत डाले। क्योंकि इस वर्तमान पतन की अवस्था से छुटकारा पाने के लिए सुजनो का सग ही एक अचूक औषधि है।

अत नीतिकारो के तथा कथित दुखमय, वासनापूर्ण ससार को वेद के सुख शान्ति और आनन्दमय ससार बनाने मे दो मीठे फल वेद के स्वाध्याय और सुजनों की सगति को अपने जीवन का अग बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करना चाहिए। अविलम्ब इसकी ओर ध्यान देने की नितान्त आवश्यकता है।

ओ३म यत्प्रज्ञान मुत चेतो धृतश्च यज्ज्योति रन्तरमृत प्रजासु। यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मन शिव सकल्प मस्तु ।।22।।

यजु 34।3।।

ज्ञानाधार मन

देवनारायण भारद्वाज

हर काम उजागर करते हो, पर छिपकर रहते तन मे मन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।
मन सर्व ज्ञान के साधन हो
आधार चेतना उपवन हो
तुम श्रेय शक्ति हमको देते
करते सब ज्योति प्रकाशन हो।
यह करते हो उपकार सभी पर रहते हो तुम मन गोपन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।
सभी प्रजाओ के शरीर मे
समस्त निर्धन या अमीर मे
होकर अमर जी रहे हो मन
नाशवान इस तन कुटीर मे।
बिना तुम्हारे सम्पन्न नही, होता कार्य हमारा शोभन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।
उत्तम कर्म तुम्ही करवाते
और क्रिया की विधि बतलाते
स्वस्ति मार्ग की ओर ले चलो
इसी लिए हम साथ बुलाते
तुम और कहीं मत जाओ रे तुम साथ हमारे आओ मन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।।

एफ 42 मानसरोवर कालोनी, राजघाट मार्ग
अलीगढ-20200

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

अंग्रेजी हटायें



हमारी भारतीय भाषाए तेलुगु, मलयालम, तमिल, कन्नड, मराठी, गुजराती, बगाली, असमिया, सस्कृत पजाबी, सिन्धी, उर्दू उडिया एव हिन्दी को अपने-अपने प्रात मे प्रतिष्ठित करना एव राष्ट्रभाषा-सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी को प्रतिष्ठित करना आर्य समाज के अग्रेजी हटाओ हिन्दी लाओ आन्दोलन का उददेश्य है।

अग्रेजो की गुलामी से हम मुक्त हुए किन्तु हमारी भाषाओ को अभी भी अग्रेजी भाषा की चेरी बनकर अपना अस्तित्व बचाना पड रहा है। कुछ प्रान्तो मे तो अग्रेजी हटाकर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का कार्यारभ हो चुका है किन्तु अभी भी देश पर अग्रेजी भाषा का शिकजा जकडा हुआ है। शासकीय क्षेत्र, शैक्षणिक क्षेत्र निजी सस्थानो, कारखानो और जन सामान्य के दैनिक व्यवहार मे अग्रेजी को हटाना है।

भाषणो से, शासकीय प्रयासो से लेख लिखन, गोष्ठियाँ करने, औपचारिक सम्मेलनो से 'हिन्दी दिवस मनाने' से अभी तक हम देश को अग्रेजी भाषा की गुलामी से मुक्त नही करा पाये हैं। देश पर अग्रेजी भाषा का लदा रहना "राष्ट्रीय कलक" है। अभी भी हमारे मध्य अग्रेजी की पैरवी करने वाले विद्यमान है। उनके मन मे भी यह भावना भरनी होगी कि अग्रेजी हटाना राष्ट्रभक्ति का कार्य है। यदि सख्त शब्दो मे कहें तो अग्रेजी भाषा को बनाये रखने का विचार देशद्रोह समझा जाना चाहिय।

भक्ति संगीत

पिछले दिनो लोकसभा मे एक महत्वपूर्ण घोषणा की गयी। सूचना एव प्रचार मन्त्री श्री पी० उपेन्द्र ने लोकसभा मे बताया कि विभिन्न धर्मग्रन्थो, तथा श्रुतियों से भक्ति सगीत का आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर प्रसारण किया जाए। उन्होने यह भी बताया कि अभी भी आकाशवाणी के कुछ केन्द्रो से वैदिक ऋचाओ को प्रसारित किया जाता है। दूरदर्शन के कुछ केन्द्रो से शास्त्रीय तथा अर्धशास्त्रीय सगीत को प्रसारित किया जाता है।

उन्होने एक प्रश्न के उत्तर मे यह बताया कि अभी सरकार के सामने ऐसा कोई प्रस्ताव विचाराधीन नही है कि प्रात कालीन सभाओ मे आकाशवाणी अथवा दूरदर्शन पर वैदिक मन्त्रो को प्रसारित किया जाए।

माननीय मन्त्री जी से यह अपेक्षा तो की ही जा सकती है कि यदि ऐसा कोई प्रस्ताव नही है तो वे ऐसा प्रस्ताव लाए। धार्मिक सामाजिक सगठनो का भी यह कर्त्तव्य है कि वे मन्त्री महोदय को इस दिशा मे कार्य करने के लिए जाग्रत करें। एक पुरानी कहावत है कि बिना मांगे तो माँ भी बच्चे को दूध नही पिलाती।

भारत धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। भारत धर्म विहीन राष्ट्र नही है। यहाँ के कण कण मे धार्मिकता ओतप्रोत है। धर्म का सामान्य अर्थ भी यही है कि वे कार्य किए जाए, जो अपना, समाज का तथा मानवमात्र कल्याण करने वाले हो मनु महाराज के बताए धर्म के दस लक्षण भी हमे यही बताते हैं कि हम किसी प्रकार खुदी' को बुलन्द करें। इस लिए यह आवश्यक है कि प्रात कालीन सभाओ मे उन धार्मिक मन्तव्यो को स्थान दिया जाए जो सार्वभौमिक सार्वकालिक तथा सार्वजनीन हों। इस कसौटी पर वैदिक मन्त्र खरे उतरते हैं। वेदो का प्रभाव सार्वभौमिक है। वे मानव मात्र के कल्याण के लिए हैं। अत वैदिक मन्त्रो का आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर प्रसारण भ्रातृत्व एव सह अस्तित्व की विचारधाराओ को वाछित आयाम प्रदान करेगा।

मूलचन्द गुप्त

गोवा में प्राईमरी शिक्षा के माध्यम रूप में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त

गोवा सरकार ने यह निर्णय लिया है कि गोवा प्रान्त के सभी सरकारी तथा गैर स्कूलो की प्राईमरी शिक्षा का माध्यम 'कोकणी' अथवा 'मराठी' होगा। 'कोकणी' और 'मराठी' को प्राईमरी शिक्षा के माध्यम के रूप मे शैक्षणिक सत्र 1990-91 से प्रारम्भ किया जा रहा है। अग्रेजी की अनिवार्यता को पूर्णत समाप्त कर दिया गया है। इस सक्रमण काल मे सरकार द्वारा निर्धारित प्रक्रिया को अपनाया जाएगा। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि दिल्ली प्रदेश मे हिन्दी भाषा की सामयिक उपयोगिता एव प्रासगिकता को सेंट जेवियर पब्लिक स्कूल के प्रशासको ने बहुत पहले समझ लिया था। वहाँ पर शिक्षा का माध्यम हिन्दी है।

सरकारी तथा गैर सरकारी स्तरो पर यह प्रयास किया जाना चाहिए कि शिक्षा उस माध्यम से दी जाए जो बालक की मातृभाषा हो। बालक जो अभिव्यक्ति मातृभाषा मे दे सकता है, वह किसी भी अन्य भाषा मे नही।

महात्मा गाधी ने हिन्दी भाषा के प्रवर्तन तथा शराब के निषेध की बात, कलम की नोक से करने की घोषणा की थी, पर स्थिति आज बदतर होती जा रही है। सामाजिक सगठनो का दायित्व है कि वे सक्रिय होकर इस दिशा मे प्रयास करें।

पिछले लगभग दो वर्ष से सघ लोक सेवा आयोग की प्रतियोगिता परीक्षाओ मे अग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने के लिए सघर्ष पूर्ण सत्याग्रह आन्दोलन चल रहे हैं। इस आन्दोलन को पहली सरकार के नेताओ का भी आश्वासन मिला था, तथा इस सरकार के नेताओ का भी। धार्मिक सगठनो एव सामाजिक सगठनो का भी सहयोग इस आन्दोलन को मिलता रहा है। परन्तु हमारी सरकार इस ओर से उदासीन ही है। स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, सम्पूर्णानन्द, राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गाधी, राममनोहर लोहिया तथा अन्य अनेक राष्ट्रीय नेता भारतीय भाषाओ तथा विशेष रुप से हिन्दी भाषा के प्रवर्तन का स्वप्न देखा करते थे। वह स्वप्न आज तक भी साकार नही हो पाया है। समझौता वादी नीतियाँ सदा ही इसका मार्ग अवरुद्ध करती रही हैं।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री इस दिशा मे बधाई के पात्र हैं। उन्होने अपनी लोहिया वादी अवधारणा का सशक्त परिचय दिया है। हमे विश्वास है कि उत्तर प्रदेश का प्रशासन अन्य प्रान्तों के लिए मार्ग दर्शक का कार्य करेगा। दक्षिणी प्रान्तों में भी हिन्दी का विरोध नहीं है। विरोध यदि कहीं है तो वह हमारी मानसिकता मे है, जिसे दूर करने का अब समय आ गया है।　　—मूलचन्द गुप्त

एक जंगल में नयी बस्ती बसा दी तूने

डॉ० सारस्वत मोहन 'मनीषी' का नाम आर्य जगत् और साहित्यक जगत् के लिए अपरिचित नही है। आग के अक्षर, आधा कफन बूद-बूद वेदना और कलम नहीं बेचेंगे जैसे चार सशक्त काव्य सकलनो का प्रणेता 'कविर्मनीषी' स्वयभू नहीं है बल्कि जनता के प्यार-दुलार ने उसे इस ऊचाई तक पहुचाया है और मौलिक कृतित्व के आधार पर मान्यता दी है। "आग के अक्षर" मोहन की पहली रचना भले ही रही हो पर उसने हरियाणा प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सर्वप्रथम काव्य पुरस्कार प्राप्त किया है और पुस्तक का बहुत ही कम समय मे दूसरा सस्करण प्रकाशित होना भी अपने आप मे कम आश्चर्य जनक नही है। बूद बूद वेदना" हिन्दी की एक सौ बारह गजलो का अनोखा सकलन है। जिसे 'हरियाणा साहित्य अकादमी' और 'भाषा विभाग पजाब ने सन् 1985 का सर्वश्रेष्ठ काव्य सकलन घोषित कर पुरस्कृत कियाहै। 'अधा कफन' आर्यसमाज और भारतीय सांस्कृति जीवन मूल्यो की एक अमर धरोहर है। जिसका आनन्द और स्वाद कोई काव्यासिक ही ले सकता है। बूद-बूद वेदना और 'आधाकफन' अब अप्राप्य है जिससे इस युवा कवि की लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है। 'कलम नही बेचेंगे' मनीषी कवि की खुद्दारी का एक जीवित दस्तावेज है जिसका उद्घोष है—

"जेल मे ही डालो चाहे गोलियों से भून भी दो,
कवि हैं कबीर की कलम नही बेचेंगे।"

वर्तमान मे देश का यह लाडला कवि डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पजाब) के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग मे वरिष्ठ प्राध्यापक है। आर्यसमाज और बुद्धिजीवियो को जान कर यह आश्चर्य और चिन्ता होगी कि आतकवाद की आग 'मनीषी' का दरवाजा भी खटखटा रही है पर यह दयानन्द का दीवाना यही कहता है—

"काम अधूरे छोडे से, पूरे कर जाऊगा।
जिस दिन मेरा कवि मर जाय, मैं मर जाऊगा।"

हृदयहीन एव स्वार्थी मदान्ध व्यक्तियो को इस अनोखे कवि के जीवन की परवाह भले ही न हो पर यदि वह असमय ही नाम शेष हो जाता है तो उसकी पक्तिया अनगिन आँखो को गगा-जमुना बना देंगी—

(शेष पृष्ठ 5 पर)

गतांक से आगे —

विदेशों में स्थित आर्यसमाजों का हिन्दी के प्रचार में योगदान

—डा० धर्मपाल

यदि आयसमाज का प्रकाश ऐसे समय वहाँ न पहुचता तो फीजी द्वीप से हिंदू सस्कृत, आय सभ्यता और हिन्दी भाषा का समूलोच्छेदन हो जाता।

आर्यसमाज की स्थापना

1904 ई० मे सबसे पूर्व सामाबूला नामक स्थान पर आर्यसमाज की स्थापना हुई। सन् 1912 ई० से फीजी के हिन्दुओं ने अपने त्योहारो का मनाना प्रारम्भ किया। कुछ आर्योपदेशो के पहुचने से फीजी मे आर्यसमाज की प्रगति तीव्र हो गई। अनेक स्थानों पर नये आर्य समाजों की स्थापना हुई। सन् 1916 ई० मे सूबा और द्रासा नामक स्थानों पर आर्य सम्मेलन हुए और पाठशाला सचालनार्थ धन एकत्र हुआ। इसी वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा की भी स्थापना हुई।

आर्य प्रचारक और हिन्दी

प्रारम्भ मे सन् 1913 ई० मे स्वामी राममनोहरानन्द ने फीजी मे आर्यसमाज का अच्छा कार्य किया। तत्पश्चात सन् 1919 ई० से आर्यसमाज के जो प्रचारक वहाँ गए उन्होंने आर्यसमाज की नीव दृढ की। गुरुकुल वृन्दावन के अध्यापक प० गोपेन्द्र नारायण जी का कार्य उल्लेखनीय रहा है। उन्होंने समाप्तप्राय गुरुकुल की नींव दृढ की आर्यसमाज को सगठित किया और अनेक बालक-बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के हेतु गुरुकुल, डी ए वी कालेज और कन्या महाविद्यालय जालधर आदि शिक्षणालयों मे भेजा। "गोपेन्द्र जी के ही उद्योग से प श्री कृष्ण शर्मा आर्य मिश्नरी, प अमीचन्द्र विद्यालकार, ठाकुर कुन्दन सिह, श्री सरदार सिह आदि प्रचारकों ने भारत से वहां जाकर प्रवासी हिन्दुओं के सुधार और उद्धार के कार्य मे पर्याप्त परिश्रम किया। श्री मेहता जैमिनि जी ने भी अपने उपदेशो से प्रवासी भारतीयों को लाभ पहुँचाया।

स्त्री प्रचारिकाओं मे प अमीचन्द्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती मर्वनी देवी जी तथा ठाकुर सरदार सिह जी आर्य की धर्मपत्नी श्रीमनी दयावनी देवी जी का नाम उल्लेखनीय है।

सस्थायें और हिन्दी

फीजी मे अनेक आर्यसमाजों ने विशाल मन्दिर बनवा कर अपनी सस्था को स्थायित्व प्रदान किया है जिनमें मुख्यत सूबा लुगकी, नौसोरी, नान्दी आदि आर्य समाजी हैं। आर्य समाजों के अन्तर्गत कन्या पाठशालायें सफलता पूर्वक चल रही हैं जिनमे सामाबूला विशंशी, सूबा, रगरग आदि अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इन सस्थाओं द्वारा हिंदी का प्रसार हो रहा है।

फिजी मे भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को जनता का सहयोग मिला। सन् 1929 ई में एक महोत्सव के अनन्तर गुरुकुल नसोवा की स्थापना हुई। प्रारम्भ मे इसके आचार्य श्री गोपेन्द्र नारायण जी थे। उन्होंने यहाँ का कार्य सचालन बडे यत्न पूर्वक किया। गुरुकुल का वार्षिक व्यय 10000 रु है।

प ब्रह्मदत्त स्नातक भी फिजी मे गए और उन्होंने भारतीय सस्कृति के साथ साथ हिन्दी भाषा का भी प्रचार किया।

पत्र

प श्री कृष्ण शर्मा तथा प विष्णु दत्त जी के सहयोग से फीजी में "वैदिक सन्देश" नाम का एक पत्र भी निकला जो कुछ दिनों के पश्चात् बन्द हो गया।

सुरीनाम

आर्य प्रचारक और सस्थायें

दक्षिण अमेरिका के उत्तर मे तथा फ्रेंच और ब्रिटिश गायना के मध्य मे यह प्रदेश स्थित है।

जब "सत्यार्थ प्रकाश" के अध्ययन से कुछ जागृति उत्पन्न होने लगी थी तभी सन् 1929 ई मे श्री मेहता जेमिनी जी वहाँ पहुचे और एक सप्ताह तक प्रचार करके ब्रिटिश गायना चले गए। मेहता जी के पश्चात् श्री प अयोध्या प्रसाद जी ने प्रचार किया। प जी के व्याख्यानों का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा और पारामारीबो में आर्यसमाज की स्थापना हो गई। प सत्याचरण शास्त्री ने भी वहां आकर अच्छा प्रचार किया।

हिन्दी कार्य

सुरीनाम मे भी आर्य सज्जनो ने हिन्दी प्रचार का कार्य किया सबसे पूर्व "श्री शीतलप्रसाद दुबे ने वहाँ के कुछ उत्साही कार्यकर्ताओं के सहयोग से "भारतोदय" नाम की एक सभा बनाई और हिंदी में एक पत्र भी निकाला जो दो चार अक के बाद बद हो गया।" यह सब प्रयत्न वस्तुत आर्यसमाज के प्रचार के कारण था। इस प्रकार शनै-शनै हिन्दी का प्रचार बढने लगा। प गिरजादयाल जी शर्मा ने वैदिक सस्कारों के प्रचलित करने मे स्तुत्य काय किया है।

ट्रिनिडाड

प्रारम्भिक दशा

ट्रिनिडाड का उपनिवेश ब्रिटिश गायना के निकट ही है। यहाँ के भारतीयों की सख्या डेढ़ लाख है। सन् 1845 ई मे शर्तबन्द मजदूर सर्वप्रथम इस क्षेत्र मे आए। उनकी अवनति दिन प्रतिदिन होती गई यहाँ तक कि भारतीयों के घर मे हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी बोली जाने लगी। बच्चे और स्त्रियां सभी विदेशी भाषा को अपनाने लगी। नाच रग और मदिरा पान मे लिप्त होकर उन्होंने विदेशी सस्कृति अपना ली। पठित व्यक्ति लगभग सभी ईसाई हो जाते थे।

आर्य प्रचारक सस्थाएँ और हिन्दी कार्य

श्री मेहता जैमिनि जी सन् 1928 ई मे यहाँ आए और उन्होंने अनेक व्याख्यान अंग्रेजी और हिन्दी मे दिये जिसका वहां की जनता पर अच्छा प्रभाव पडा। इसके पश्चात् प गिरजादयाल जी ने वहाँ प्रचार किया। सन् 1934 ई मे प अयोध्या प्रसाद जी का आगमन हुआ उनके व्याख्यानो का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। "लगभग डेढ हजार मनुष्य आर्यसमाज मे प्रविष्ट हुए। छगुआनस, प्रिंसेज टाउन, सेंट जोसेफ आदि नगरों मे आर्यसमाज की स्थापना हुई। छगुआनस को प्रचार का केन्द्र बनाया गया। यहाँ समाज मन्दिर भी बना। नवदीक्षित आर्यों ने इस मन्दिर के निर्माण मे जिस त्याग और तत्परता का परिचय दिया वह आर्य समाज के प्रति उनके प्रेम का प्रत्यक्ष प्रदर्शन है।'

बर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा बर्मा के माध्यम से हिन्दी भाषा के उन्नयन पर विशेष बल दिया गया। प गगाप्रसाद उपाध्याय, प चन्द्र दत्त साहित्यरत्न, श्री रामदास क्षेत्रपाल, डा ओइमप्रकाश ने हिन्दी के प्रचार के लिए कार्य किया। रगून, माडले, में डी-ए-वी कालेजों की स्थापना भी की गयी। सेन्ट्रल आर्यसमाज के साथ-साथ जेयावाडी तथा मैतिकिना मोगोक, थौह, कालों, मेयमो, तयेगान, शिवपुर येनानग्याग और आमटू में भी आर्यसमाजो की स्थापना की गयी।

बैंकाक (थाईलैंड) सिंगापुर

श्री रामदेव सिह, श्री इन्द्रदेव सिह और श्री पलकधारी सिह के प्रयास से 'प्रचारिणी' की स्थापना की गयी। यहाँ की आर्यसमाज पहले उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा से सबधित हुई। आगे चलकर य स्वतत्र अस्तित्व में आई। डा मगनराम सहगल, स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती, प० गगाप्रसाद उपाध्याय, महात्मा आनन्द स्वामी प० नन्दलाल वानप्रस्थी, प० यशपाल सुधाशु, प० सत्यपाल पाठक ने अपूर्व सहयोग दिया। श्री योगेन्द्र कृष्णपुरी ने सिंगापुर मे आर्यसमाज की स्थापना में सहयोग दिया बैंकाक डी-ए-वी कालेज भी खोला गया।

सूरीनाम

प० प्यारे लाल, प० कौलासर शुक्ल, प० बगो गिरधारी, बाबू मघु सिंह, आदि ने आर्यदिवाकर महासभा के माध्यम से हिन्दी के उन्नयन के लिए कार्य किया। सूरीनाम के निवासी मूलत बिहार और उत्तर प्रदेश से हैं। बाबू महातम सिंह, श्री जगन्नाथ लक्ष्मन आदि ने इस दिशा मे अच्छा कार्य किया।

आर्यसमाज ने भारत में और विदेशों मे महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा के उन्नयन के लिए भी आर्यसमाज की भूमिका सदैव स्मरणीय रहेगी। भारतवर्ष मे तो हिन्दी भाषा के सवर्धन के लिए कार्य किया है, बल्कि विदेशों मे भी किया। इस सदर्भ मे उपर्युक्त विवेचन के अतिरिक्त कुछ पत्र पत्रिकाओं का आकलन करना उचित रहेगा। 1916 म डर्बन से 'धर्मवीर' नामक हिन्दी साप्ताहिक प्रकाशित हुआ। 1922 में हिन्दी नामक मासिक पत्रिका निकाली गयी थी। दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'आर्य मित्र' मासिक निकाला था। केन्या से 'प्रतिनिधि' निकाला गया और नैरोबी से आर्यवीर नामक पत्र निकाला गया। मारीशस मे आर्य पत्रिका, आर्यवीर तथा आर्योदय और ट्रिनिडाड से आर्यसन्देश प्रकाशित हुए। सुरीनाम और फिजी से वैदिक सन्देश, बर्मा में प्राची प्रकाश' निकाले गए।

निःसन्देह आर्यसमाज की भूमिका, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन के साथ साथ हिन्दी भाषा एव साहित्य के सवर्धन के लिए भी स्मरणीय रहेगी।

अंग्रेजी की अनिवार्यता का अंत किया जाये

युगलकिशोर चतुर्वेदी

सुदूर इंगलैंड देश से आई ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल मे उसके कानून मन्त्री के पद पर प्रतिष्ठित लार्ड मैकाले ने अपनी कलम की एक नोक से भारत में अब तक प्रचलित संस्कृत, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साथ फारसी' अरबी, उर्दू की शिक्षण-संस्थाओं को दी जाने वाली सरकारी सहायता अथवा अनुदान को समाप्त कराकर उनके स्थान पर अंग्रेजी भाषा के स्कूल, कालेज तथा विश्वविद्यालय कायम करा दिये, जिनमे उपर्युक्त भारतीय भाषायें गौण तथा वैकल्पिक और अंग्रेजी मुख्य और अनिवार्य भाषा करार कर दी गई थी। इसी प्रकार सरकारी सेवाओ तथा उनकी अन्य संस्थानों तथा प्रतिष्ठानों मे अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगो को नौकरियां दी जाने लगी फलत थोड़े ही काल मे अंग्रेजी का सर्वत्र प्रचार होकर उसी को जीवकोपार्जन का साधन माने जाने लगा। जिसके कारण यह लोकोक्ति प्रसिद्ध हुई -

संस्कृत पढ़े मिले न भीख,
बहतर अंग्रेजी लो सीख।

लगभग ऐसी ही बेकदरी अरबी, फारसी, उर्दू की हुई है। तभी तो यह कहावत प्रचलित हुई—

पढ़े फारसी बेचे तेल,
यह देखो कुदरत के खेल।

अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ वहीं की सभ्यता और संस्कृति सर्वत्र व्याप्त होने लगी। अंग्रेज शासकों का यह प्रचार था कि ज्ञान-विज्ञान तथा नई तकनीक आदि अंग्रेजी भाषा की शिक्षा द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। भारतीय-भाषाओं से तो अज्ञान और अन्ध विश्वास की ही वृद्धि हो रही है। वे अपनी भाषा, सभ्यता और संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ और भारतीय भाषा, सभ्यता और संस्कृति को निकृष्ट बनाकर उसका घोर अपमान करने लगे थे। इस दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए गत शताब्दी के मध्य में आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने "मनुस्मृति' के इस श्लोक के आधार पर कि—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मन ।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्याम सर्वमानवा ॥

अर्थात् विश्व के सभी लोग जगद्गुरु भारत मे आकर यहाँ के ऋषि, मुनियो और विद्वान ब्राह्मणो के चरणों में बैठकर शिक्षा ग्रहण करे।

स्वामी जी ने केवल यह आह्वान मात्र ही नही विदेशियों को यहा आकर शिक्षा पाने के लिए आह्वान किया था। उन्होंने स्वय और उनके सर्वत्र ऐसे गुरु और महाविद्यालय आदि स्थापित किये, जिनमें वर्ण माला से लेकर उच्चातिउच्च परीक्षायें हिन्दी और संस्कृत के माध्यम से ही होने लगी थीं और वे सर्वथा सफल भी सिद्ध हुई थी।

उस समय आशा तो यह की गई थी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर सर्वत्र संस्कृत और भारतीय भाषाओं का राजकाज तथा अन्य क्षेत्रों में उपयोग होने लगेगा, परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा हुआ नहीं। आज भी हमारी छाती पर अंग्रेजी भाषा ही मूग दलती हुई धड़ल्ले से सर्वत्र चल रही है। और स्वयं हमारे शासक उसको प्रोत्साहित कर रहे हैं। जैसा कि वर्तमान शिक्षा नीति से सिद्ध होता है। आज भी संस्कृत, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाए दासी बनी हुई है और हमारी दीर्घकालीन दासता की द्योतक अंग्रेजी पटरानी बनी राज कर रही है।

अब तक कांग्रेस दल के जो शासक रहे अथवा अन्य राजनीतिक दलो के जो शासक है, वे सभी महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता और अपना नेता तो मानते हैं, परन्तु उनके आदर्शों पर आचरण नहीं करते।

महात्मा गांधी ने संस्कृत के सम्बन्ध मे ये विचार प्रकट किये थे-"मेरी राय में धार्मिक कार्यों मे संस्कृत का उपयोग करना छोड़ा नहीं जा सकता। अनुवाद कितना ही शुद्ध क्यो न हो, किन्तु वह मूल मत्रों का स्थान नहीं ले सकता हिन्दू बालक की शिक्षा संस्कृत के प्रारम्भिक ज्ञान, के बिना अधूरी मानी जानी चाहिये। संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य का अध्ययन यथेष्ठ मात्रा मे न चलता रहा तो हिन्दू धर्म का नाश हो जायेगा।"

यग इण्डिया 13 5 26

ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान शिक्षा नीति वैदिक धर्म का नाश करने पर ही तुली हुई है। यदि हमको अपनी भाषा, सभ्यता और संस्कृति तथा धर्म की रक्षा करनी है, तो आजकल प्रचलित अंग्रेजी की अनिवार्यता का अन्त करा देना चाहिए।
('लोक शिक्षक' 15 जौलाई से साभार)

"जय हिन्दी जय भारती"

जो भारत के भाग्य-भाल की, चमक रही शुचि बिन्दी है।
कोटि-कोटि जन जननी-भाषा हिन्दी है॥
　　संस्कृत माँ की पावन पुत्री, जिसकी पावन परिभाषा।
　　आँचल मे हैं रही सँजोए मानवता की अभिलाषा॥
'छन्द' स्वरों सग जो गूजी है, लेकर तूफानी इतिहास।
पाली से अपभ्रंश-प्राकृत तक, जिसका क्रमश हुआ विकास॥
　　जिसके वीर स्वरो को सुनकर, चढ़ते शीश जवानों के।
　　जिसके गजन से उर हिलते त्यागो के बलिदानों के॥
जगनिक की ओजस्वी वाणी, से जो हुई विभूषित हैं।
इस धरती का कण-कण जिसके, जयगानो से पोषित है॥
　　प्राण फूकती निष्प्राणो म, आदि काल की गाथाएँ।
　　जिसके अन्तस् अभिषिञ्चित, कन्नी हे पद्मनी व्यथाएँ॥
है पाथेय बनी जिसको रज, जिसमे भूषण का गजन।
तुलसी की जिसमे आभा है, अमर शहीदों का सजन॥
　　अजस्र धार मे जिसकी मिलती, सूर काव्य की धारा है।
　　मनुष्यता मे सपोषित जो' वह साहित्य हमारा है॥
मीरा के सगीत मधुरतम जिसमे होते हैं झकृत।
दास कबीरा की वणी से, जो अविचल है रही अलकृत॥
　　दयानन्द से ऋषियो ने है, जिस हिन्दी को दुलराया।
　　गाधी ने अरविन्द तिलक ने, जिसको माँ का रूप बताया॥
जिसमे अवगुण्ठित है अविरल, सदा सफलता शुचि सत् शान्ति।
जिसमे मिली निराला की है, मगलमय उद्भावक क्रान्ति॥
　　पन्त महादेवी-दिनकर हैं, जिसके जाग्रनम प्रहरी।
　　जिसका जय सगीत सुनाती, गगा-गोदावरि लहरी॥
महावीर व राम हरिश्चन्द्र जिसके रक्षक जय शकर।
भरे उसी के भण्डारों को, गुप्त केशव-श्यामसुन्दर।
　　लगभग चौदह बहनें उसकी, बहुत बड़ा परिवार है।
　　उसकी रक्षा हित कोटिक जन, कटि बाँधे तैयार हैं॥
वह हिन्दी है भारत गौरव, मातृ भूमि की शान है।
वही हमारी हिन्दी प्यारी, भारत की अभिमान है॥
　　वही हमारी भाषा वह, कोटि जनो की अभिलाषा।
　　जिसमे सचित सदियो से है, नवल नवलतम मधुवाशा॥
सिन्धु हिमालय के अन्तर मे, जिसकी गरिमा गर्वित।
जिसकी लयकारो से कपता, अरिदल होया मर्दित॥
　　आहुति सी जो चढ़ी देश की स्वतन्त्रता की ज्वाला में।
　　वीरो का इतिहास चमकता, जिसकी महिता माला मे॥
वही राष्ट्र-भाषा है उसकी, सारे जग की कल्याणी।
जिसमे गूजेगी अब भूपर, वेदों की मगलमय वाणी॥
　　उसी ! भव्य ! हिन्दी की आओ, चले उतारें आरती।
　　अस्सी कोटि मनुज है गाओ, जय हिन्दी ! जय भारती।

(पृष्ठ 3 का शेष)

"आज भले डोली हूँ कल अर्थी हो जाऊंगा।
मुझे ढूढते रह जाओगे जब खो जाऊँगा।"

कवि सम्मेलनों के माध्यम से पूरे देश मे राष्ट्रीय की आँच को तेज करता यह कवि जब मच से काव्य पाठ करता है तो बड़े-बड़े नामधारी तथा कथित चुटकुलेबाज कवियों की बोलती बन्द हो जाती है। फिर हर श्रोता के होंठों पर होता है—

देशद्रोहियों के लिए जेल चाहिए।
भारत को फिर से पटेल चाहिए॥
या
"कायर ही समझौता करता है हत्यारों से।
दिल्ली का दिल डरा हुआ है कुछ गद्दारों से।"

लिखने को तो इस कवि पर पूरा शोध प्रबन्ध लिखा जा सकता है। पर स्वामी दयानन्द के लिए निवेदित गजल की दो अमर पंक्तियां (मनीषी रचित ही) कवि के परिचय के लिए काफी हैं—

"एक जगल में नई बस्ती बसा दी तूने
जोंक पत्थर पे नही लगती लगा दी तूने।"

आर्यसन्देश के सुधी पाठकों को जानकर प्रसन्नता होगी कि "आर्यसन्देश" के पूर्व सम्पादक मनीषी जी जिन्हें माँ सरस्वती का अभूतपूर्व वरदान मिला है, ने प्रति सप्ताह अपनी एक सशक्त काव्य रचना प्रकाशनार्थ भेजने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है।

आइये इस कड़ी की प्रथम रचना "मानसिकता मन्थरा का अवलोक करें।

—सम्पादक

मानसिकता मन्थरा

डा० सारस्वत मोहन 'मनीषी'

जुट गये दुमदार देखो जुड़ गया दरबार है।
रोग कैसे दूर होगा हर दवा बीमार है।
दफ्तरों में हर समय चर्चा यही चर्चित रहे,
सात दिन सप्ताह के बस एक ही इतवार है।
हर कोई निन्यानवे के फेर मे व्यापार मे
इक भिखारी सो रहा, सपने मे दिखती कार है।
मन्त्रियों की बेटियाँ तक अब सुरक्षित हैं नहीं,
झोपड़ी की बात ही क्या, वाह क्या सरकार है।
संगठन है रेत का घर याकि टूटी नाव-सा
अब नहीं कोई सिपाही हर कोई सरदार है।
काम में तो किन्तु लेकिन या परन्तु प्रधान है,
भूलते कर्त्तव्य को पर याद हर अधिकार है।
देखते थे पहले तो वे अब है बागी आपकी,
देखना तो वक्त को है कौन सा खुद्दार है।
जान साँसत मे टँगी है, पूछते सब क्या है ये,
क्या कोई बदलाव है या फिर वही परिवार है।
एक जैसे हैं 'मनीषी' फूल भी अब शूल भी,
मानसिकता मन्थरा के द्वार भी दीवार है।

—कल्पना कालोनी, डी० ए० वी० परिसर, अबोहर-152116 (पंजाब)

दीक्षान्त समारोह

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का 90वां दीक्षान्त समारोह दिनांक 11 अगस्त, 1990 को प्रातः 9 बजे विश्वविद्यालय भवन में आयोजित होगा। माननीय चिमन भाई जी, मेहता, शिक्षा राज्य मंत्री, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप मे दीक्षान्त भाषण देंगे। इस अवसर पर एम० ए० एम० एस० सी०, बी० एस० सी० अलंकार तथा पी० एच० डी० परीक्षा 1989 मे उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को उपाधियां प्रदान की जायेंगी।

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर नई दिल्ली-60

कक्षा 8 से 12 तक को पढ़ाने के लिए एक अंग्रेजी अध्यापिका, एम० ए० बी० एड०, एक विज्ञान अध्यापिका, एम० एस० सी० (भौतिकी), बी० एड०, एक होस्टल वार्डन और एक पाचिका की आवश्यकता है। सम्पर्क करें—श्रीमती कृष्ण चड्ढा-मन्त्रिणी, अथवा श्रीमती शान्ति देवी—आचार्या, दूरभाष-588518

1552 बवासीर रोगियों का निःशुल्क इलाज

दयानन्द पब्लिक वेलफेअर ट्रस्ट एवं सत्यनारायण गुलाबी देवी लाहोटी चेरिटेबल ट्रस्ट रायपुर के संयुक्त तत्वावधान मे छत्तीसगढ़ मे पहली बार रिंग पद्धति से आयोजित निःशुल्क बवासीर निर्मूलन शिविर मे डा० के एम चितानिया गांधीनगर (गुजरात) द्वारा क्रमशः रायपुर 421, खरोरा 73, बलौदा बाजार 43, भिलाई 159, दुर्ग 312, धमतरी 370, बिलासपुर 174=कुल 1552 रोगियों का सफलता पूर्वक उपचार किया गया।

'नवम्बर दिसम्बर' 90 मे पुनः निःशुल्क बवासीर निर्मूलन शिविर लगाने का विचार है जो व्यक्ति या संस्था अपने यहाँ शिविर लगवाना चाहे वे दयानन्द पब्लिक वेलफेयर ट्रस्ट जेलरोड (कचहरी चौक) रायपुर से सम्पर्क करें।

वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज ग्राम इटावा

जनपद—मु० नगर (लक्ष्मी नगर) उ० प्र०-251309
प्रधान—श्री नत्थू सिंह आर्य
मन्त्री—श्री मदन पाल राठी आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सुशील राठी आर्य

आर्यसमाज जगदीशपुर (प० चम्पारण)

प्रधान—श्री नथुनी सिंह आर्य
मन्त्री—श्री दामोदर प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री रामनारायण सिंह आर्य

आर्यसमाज विश्वकर्मा नगर (चम्पारण)

दिनांक 8 जौलाई 1990 को आर्यसमाज विश्वकर्मा नगर लाल सरैया वेद मन्दिर का शिलान्यास श्री मदन प्रसाद जायसवाल, विधायक (बेतिया) के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। शिलान्यास के पश्चात् आर्यसमाज का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ

प्रधान—श्री रामऔतार शर्मा
मन्त्री श्री हरिनारायण शर्मा
कोषाध्यक्ष श्री गणेश शर्मा

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली-92

प्रधान—श्री ओम प्रकाश कौशिक
मन्त्री— श्री धर्मेन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री रामनिवास कश्यप

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की वैदिक धर्म की पुस्तकें

एकादशोपनिषद् (भूमिका-डा राधाकृष्णन)	—95/-
उपनिषद् प्रकाश	—85/-
गीता भाष्य (भूमिका-श्री लालबहादुर शास्त्री)	—65/-
संस्कार चन्द्रिका	85/-
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	40/-
चतुर्वेद गंगा लहरी	9ण/-

विशेष विवरण तथा प्राप्ति के लिए पुस्तक विक्रेता पत्र-व्यवहार करें।

विजय कृष्ण लखनपाल
W-77A ग्रेटर कैलाश-I
नई दिल्ली-110048

इन्दौर में

11, 12 व 13 अगस्त को

अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन

अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ, आन्दोलन, श्रीद्धानन्द भवन, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर (म प्र) की विज्ञप्ति के अनुसार "अंग्रेजी हटाओ" सम्मेलन का बृहत आयोजन आगामी 11, 12 व 13 अगस्त 1990 को नेहरू प्रांगण (स्टेडियम) छावनी, इन्दौर में किया जा रहा है।

समारोह की अध्यक्षता श्री ज्ञानी जैलसिंह जी (पूर्व राष्ट्रपति) तथा उद्घाटन श्री मुलायम सिंह यादव, मुख्यमन्त्री उत्तर प्रदेश करेंगे।

तीन दिन तक चलने वाले इस समारोह मे अनेक सम्मेलनों गोष्ठियों का आयोजन किया गया है, जिनके प्रमुख वक्ताओं मे डा. प्रभाकर माचवे, डॉ० वेद मूर्ताय वैदिक, डा न चन्द्रशेखरन् श्री भगवत झा आजाद (पूर्व मुख्यमन्त्री, बिहार), श्री बनारसी दास गुप्त (पूर्व मुख्यमन्त्री, हरियाणा) होंगे।

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ

स्थापना दिवस एवं वेदारम्भ महोत्सव —

महाभारत कालीन गंगा किनारे स्थित प्राचीन तीर्थ स्थल पूठ (पुष्पावती) में स्थापित गुरुकुल महाविद्यालय पूठ का आगामी श्री कृष्ण शताब्दी पर्व पर दिनांक 12,13, व 14 अगस्त 1990 को स्थापना दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार महोत्सव मनाया जा रहा है।

9 अगस्त से सामवेद पारायण यज्ञ एवं योग साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। 12 अगस्त को जिला परिषद् अध्यक्ष उद्घाटन करेंगे।

इस अवसर पर आर्य जगत् के महात्मा, विद्वान्, एवं उपदेशक आशीर्वचन प्रदान करेंगे।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वदिक साहित्य

1	नतिक शिक्षा भाग प्रथम द्वितीय) प्र येक	1 50
3	ननिक शिक्षा (भाग तनाय)	2 00
4	नातक शिक्षा (भाग चतुथ से नवम) प्रत्येक—	3 00
10	नतिक शिक्षा (भाग दशम एकादश) प्र येक—	4 00
	ननिक शिक्षा भाग द्वादश)	5 00
3	धमवीर हकीकत राय वद्य गवदत्त	5 00
14	फ्लश आफ ट्र थ डा० सत्यकाम वर्मा	2 00
15	स याथ प्रकाश स दभ	2 00
16	एन गामी आफ व ात स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	5 00
17	अ यों का आदि दश	2 00
18	प्रस्थानत्रयी और अद्वतवाद	25 00
19	दी ओराजन होम आफ आय स	2 00
0	च वारो व वदा	5 00
1	द्वतसिद्धि	5 00
	आयसमाज आज के स दभ म —डा० धमपाल डा० गोयनका	20 00
?	ऋग्वदादिभाष्यभमिका— प० सच्चिदान द शास्त्री	5 00
4	हसता चल हसाता चल स्वामी स्वरूपान द सरस्वती	6 50
5	ध्यान द एण्ड दा वदाज (ट्रक्ट)	50/ रु सैकडा
26	पूजा किसकी ? (ट्रक्ट)	50/ रु० सकडा
27	मर्यादा परुषोत्तम श्री राम (ट्रक्ट)	50/ रु सैकडा
28	योगीराज श्रीकृष्ण का स दश (ट्रक्ट)	50/ रु सकडा
29	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या) डा० रघुवीर	50/ रु सैकडा

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तको पर 15 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भजने वाले से डाक व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा। पुस्तक प्राप्ति स्थान— दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड नई दिल्ली 110001

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Post in N D P.S O on 26, 27-7 1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

चुनाव सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

दिनाक 1 जुलाई 90 को आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे आय केन्द्रीय सभा दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इमी अधिवेशन मे आगामी वर्ष के लिए सर्व सम्मति से महाशय धर्मपाल जी को प्रधान चुना गया। उन्ही को अन्य अधिकारियो तथा अतरग सदस्य चुनने का अधिकार दिया गया। महाशय धर्मपाल जी द्वारा श्रेणित सूची के अनुसार अधिकारियो तथा अनरग आदि का गठन इस प्रकार किया गया—

प्रधान—महाशय धर्मपाल, **उपप्रधान**—श्री सूर्यदेव श्री सत्यानन्द आर्य, श्री विशम्भर नाथ भाटिया, श्री हीरालाल चावला, **महामन्त्री** शिवकुमार शास्त्री, **मन्त्री**—श्री अजय सहगल श्रीमती कृष्णा चड्ढा श्री विमल कान्त शर्मा, श्री हरीश कालडा, **कोषाध्यक्ष**—श्री ओमप्रकाश कपूर, लेखा निरीक्षक-श्री सुदेश मित्र।

प्रतिष्ठित सदस्य—श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, डा धर्मपाल, श्री रामनाथ सहगल, श्री राजसिह भल्ला, श्री वेदप्रकाश महता श्री लाजपत राम आर, श्री दरबारी लाल वर्मा, श्री चमन लाल ग्रोवर, श्री राम विलास खुराना श्री प० यशपाल 'सुधांशु' श्रीमती ईश्वर देवी धवन, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, श्रीमती आदर्श कोहली, श्रीमती व्रजबाला भल्ला श्रीमती सुदर्शन महाजन।

वग प्रतिनिधि—वैद्य इन्द्र देव, श्री प्रियतम दास रसवन्त, श्री ज्ञानचन्द चौधरी, श्री त्रिलोकी नाथ महेश्वरी श्री केवल कृष्ण सेठी श्री देवेन्द्र आर्य, श्री नरेश आर्य, श्री नन्द किशोर भाटिया, श्री व्यास देव महता, श्री योगेन्द्र नाथ उप्पल, श्री राजेन्द्र गुप्त प्रेम सिह शर्मा श्री मागे राम आर्य श्रीमती रामचमेली गुलाटी और श्रीमती सरला माल।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का वार्षिक निर्वाचन गत 24 जून को लाला इन्द्रनारायण की अध्यक्षता मे निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

श्री कृष्ण लाल सूरी (प्रधान) श्री लखीराम कटारिया, श्री हरबंस लाल कोहली, श्री हरबस सिह खेर, श्रीमती सुशील त्यागी (उपप्रधान), श्री रामसरन दास आर्य (महामन्त्री) श्री भूपसिह, श्री सत्यपाल सैनी (मन्त्री), श्री गणेश दास ग्रोवर (कोषाध्यक्ष) और श्री देसराज जुनेजा (लेखा निरीक्षक)

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तरप्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
टाइम्स आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी, मोजपुर दिल्ली-५३ में मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ : अंक ४१ | रविवार ५ अगस्त १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द—१६६ | सृष्टि सवत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन सदस्य २५० रुपये | विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

महात्मा चुन्नी लाल जन्म दिवस समारोह सम्पन्न--

पुरुषार्थी पुरुष ही धन-वैभव-यश का भोग करते हैं ।

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती



वैदिक भक्ति मार्ग की सबसे बडी सुन्दरता यही है कि वह पुरुषार्थ से आरम्भ होता है। केवल भारत मे ही नही अन्य देशो मे भी भक्ति पुरुषार्थ का नाश करती रही है। भक्त लोग कहते हैं कि यदि भाग्य मे होगा तो मिलेगा पर वैदिक भक्ति मार्ग यह बात नही सिखाता। यहाँ तो कहा गया है कि पूर्व जन्म सचित कर्म प्रारब्ध है, और इस जन्म मे किए गए काय पुरुषार्थ हैं ये कार्य ही भावी जीवन को और भी उन्नति की ओर ले जाने मे सहायक होते हैं। आदरणीय महाशय चुन्नी लाल जी इसी पुरुषार्थ के प्रतीक थे। उन्होने अपने व्यापार को इसी पुरुषार्थ से आगे बढ़ाया। वे महाशय थे। महाशय वे होते हैं, जिनके विचार ऊँचे होते हैं, जो परहित मे लग होते हैं, जो बेइमानी और धोखे बाजी नहीं करते। महाशय चुन्नीलाल जी ऐसी ही पवित्रता, सच्चरित्रता एव सत्यनिष्ठा के प्रतीक थे। इसी प्रकार श्री महाशय धर्मपाल जी भी उन्हीं के मार्ग पर चल रहे हैं। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने महाशय चुन्नीलाल ट्रस्ट के वेदप्रचार विभाग की ओर से एम० डी० एच सभागार मे 24 जुलाई 1990 को आयोजित महाशय चुन्नीलाल जन्मदिवस समारोह मे व्यक्त किए। श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस अवसर पर आर्यसमाज द्वारा किए जा रहे, कार्यों का भी लेखा-जोखा प्रस्तुत किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि धन की तीन गतिया होती हैं—दान, भोग और नाश। नाश धन की निष्कृष्टतम गति है। जो व्यक्ति लम्पट, दुराचारी, दुर्व्यसनी होते हैं, उनका धन नष्ट हो जाता है। जो व्यक्ति सामान्य है, स्वार्थी है, जिनकी दृष्टि केवल अपने तक सीमित है पर अनुशासित हैं, वे अपने धन का उपभोग व्यक्तिगत सुख एव ऐश्वय के लिए करते हैं। यह स्थिति क्षम्य है। परन्तु जो व्यक्ति अपने धन का उपयोग सुपात्रो का दान देने मे करते हैं, जो व्यक्ति मानव मात्र के कल्याण के लिए ट्रस्टो का निर्माण करते हैं, तथा गरीबो की सेवा करते हैं वे लोग प्रणम्य हैं। महाकवि विद्यापति ने कहा था कि जो व्यक्ति धनवान होकर भी कजूस हैं वह दयनीय हैं। वास्तव मे उन्होने, ऐसी ही दशा को देखकर कहा होगा। या तो धनी पैसे का भोग कर ले, अथवा लोकहित के लिए दान कर दें। ये ही स्थितिया उचित हैं। नही तो उसके धन का नाश हो जाएगा। श्री महाशय धर्मपाल जी तथा उनके परिवार के लोग लोकोपकार के कार्य मे लगे हैं। यह हम सभी आर्यजनो के लिए परम सन्तोष की बात है। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, श्री सूर्यदेव ने कहा कि निर्धनो की सेवा परमात्मा की सेवा है। युवा विद्वान् डॉ० महेश विद्यालकार ने कहा कि श्री महाशय चुन्नीलाल जी सदैव वेद का अध्ययन करने वाले छात्रों की सहायता किया करते थे। हमे भी उनके मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। इस अवसर पर प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री ने महाशय जी की दान शीलता की प्रशंसा करते हुए, गुरुकुल खेडा खुर्द के लिए किए गए उनके कार्यों के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। श्री महाशय धर्मपाल जी ने आभार व्यक्त करते हुए परमात्मा से प्रार्थना की कि मैं लोकोपकार के मार्ग पर चलता रहूँ तथा मेरे बच्चे भी मेरे कार्य मे सहायक हो।

गुरुकुल काँगड़ी विश्व विद्यालय में वन महोत्सव

प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रेडरिक एगेल्स ने कहा था कि प्रकृति पर अपनी मानवीय विजय के कारण हमे आत्म प्रशसा मे विभोर नही हो जाना चाहिए, क्योकि वह हर ऐसी विजय का बदला लेती है। यही बात पर्यावरण की है। हमने अनेक बाँध बनाए। अग्नि, वायु पानी पर नियन्त्रण कर लिया, पर क्या हम वास्तव मे विजयी हुए। नही। आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणो ने हमे सुख-सुविधाए तो दी पर साथ ही ओजोन मे छेद जैसी विभीषिकाएँ भी दे दी हैं। सूर्य की गर्मी का प्रभाव हमारे ऊपर बढ़ गया है। इन सब प्रदूषणो का एक मात्र उपाय है कि हम पुन प्रकृति की गोद मे लौट चलें। हम अपनी पृथ्वी को सुजला, सुफला, शस्य श्यामला बनाएं। ये विचार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष श्री एस. के खन्ना ने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा आयोजित वनमहोत्सव' के दौरान वृक्षारोपण करते हुए व्यक्त किए इससे पहले विश्वविद्यालय के सीनेट हाल मे आयोजित अभिनन्दन समारोह मे उन्होने वैदिक धर्म एव भारतीय सस्कृति के उन्नयन के लिए गुरुकुल कांगडी द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशसा की। इस अवसर पर श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रोफेसर शेरसिंह, डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, श्री सुभाष विद्यालकार श्री वीरेन्द्र अरोडा डा० रणजीत सिंह, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री वेदव्रत शर्मा ने भी वृक्षारोपण किया।

गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय के सीनेट हाल मे आर्य विद्या सभा की बैठक हुई। इस बैठक मे यह विचार किया गया कि हरिद्वार मे कन्याओ के उच्च शिक्षा के लिए कोई भी संस्था नही है। साथ ही हरिद्वार की जनता पर्याप्त समय से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से अनुरोध करती रही है कि यहा पर लडकियो के लिए भी उच्च शिक्षा की व्यवस्था हो। अन्त मे यह निणय लिया गया कि गुरुकुल कांगडी के अगभूत महा विद्यालय के रूप मे कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की भाँति यहाँ पर भी एक कन्या महाविद्यालय खोल दिया जाए। इस सम्बन्ध मे आवश्यक कार्यवाही करने के लिए गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार को पूर्ण अधिकार दिए गए।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष श्री एस० के० खन्ना तथा आर्य विद्या सभा के अन्य माननीय सदस्यो ने विश्वविद्यालय पुस्तकालय तथा पुरातत्व सग्रहालय का भी निरीक्षण किया। यह बात उल्लेखनीय है प्राच्य विद्याओ के पुस्तकागार के रूप मे इस पुस्तकालय की अपनी विशेष ख्याति है तथा यहाँ का सग्रहालय भी इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस वर्ष गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय को उदारता पूर्वक अनुदान दिया है। पिछले दिनो जो बाधाएँ आयी थी, वे सभी समाप्त हो गई हैं। हमे विश्वास है कि विश्वविद्यालय अपने प्रशस्त मार्ग पर आगे बढ चलेगा।

प्रधान सम्पादक—सूर्य देव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गत अंतरंग बैठक दिनांक 8 जुलाई 1990 में पारित

प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा किसी भी व्यक्ति के द्वारा चाहे वह आर्य समाजी हो अथवा गैर आर्य समाजी, आर्य समाज के नाम पर किसी भी नए सगठन की स्थापना करने का विरोध करती है।

इस सम्बन्ध में यह तर्क प्रस्तुत करना कि सार्वदेशिक सभा इस समय देश के समक्ष उपस्थित खतरों का सामना करने मे निरन्तर असमर्थ रही है और इसके लिए एक नये सगठन की आवश्यकता है, एक दम निरर्थक और आधारहीन है। इस प्रकार के प्रयास आय समाज को खण्डित करने की एक कुटिल चाल मात्र ही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सब आर्य समाजियों को चेतावनी देती है कि वे इस प्रकार की चालों से सावधान रहें, और ऐसे किसी भी प्रयत्न को आरम्भ में ही कुचल दें।

आर्य समाज से निष्कासित व्यक्तियों द्वारा की जा रही विघटनकारी गतिविधियाँ विचार के अनन्तर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने अपनी सभा के 24-12-89 के निश्चय की जानकारी देते हुए निम्न निश्चय सार्वदेशिक सभा की पुष्टि के लिए प्रस्तुत किया—

निश्चय स० 11 (ब)

आर्यसमाज से निष्कासित व्यक्तियों द्वारा की जा रही विघटनकारी गतिविधियाँ विचार के अनन्तर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने अपनी सभा के 24-12-1989 के निश्चय की जानकारी देते हुए निम्न निश्चय सार्वदेशिक सभा की पुष्टि के लिए प्रस्तुत किया—

निश्चय स० (10) सभा द्वारा कतिपय निष्कासित व्यक्तियो का समय (6) वर्ष मार्च 90 में समाप्त हो रहा है। विचारार्थ विषय प्रस्तुत हुआ। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि उपरोक्त निष्कासित व्यक्तियों में जिनका आचरण इस बीच सभा के हित मे नहीं रहा है और सभा के विरुद्ध चल रहे वादों मे वे निरन्तर लिप्त रहे हैं और सभा को हानि पहुचाने में लगे हुए हैं, उनको आगामी 6 वर्षों के लिए और निष्कासित किया जाता है। अत कैलाशनाथसिंह वाराणसी, श्री क्षेमसिंह जी आर्य (लखनऊ) एव होरीसिंह (बिजनौर) आगामी छ वर्ष के लिए निष्कासित किए गए।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

श्रावण पर्व

कवि कस्तूरचन्द "घनसार"

तरुणापन श्रावण घन गाजे, मानव-जीवनोत्थान विराजे !
गर्जे वैदिक ज्ञान सुहावन, मयूर-मुमुक्षु के मन-भावन !!

सरिता बह विचार सुधारा धर्म-कर्म दो कूल सुखारा !
मानसून, जल, मन्त्र सुभाते, विशद-ज्ञान जागृत बरसाते !! 1

नहाते नर-मल ताप निवारे, बह समीर शीतयुत प्यारे !
हरियाली हर घर हर्षादी, मिटे टाप जग के प्रमादी !!

दादुर दक बिच रटन लगावे, ज्यों वटु वेद मन्त्र धुन लावे !
भरे सरावर जल मन ज्ञाना, वह गुरुवर, विधिवेद विधाना !! 2

कृषि करे जन सुकृत खेती, शुभ सस्कार बीज भर सेती !
भक्ति-बाग, वर ज्ञान विचारा, बढ़े पाप वैदिक जल प्यारा !!

सारग-जीव, पपैया बोले, सारग गर्जे देख पख खोले !
सारग सुखद-सुधा सम बरषे, जनगण, मोर देख मनहरषे !! 3

विश्व, महि-सुख हो हरियाली, ब्रह्मवेत्ता सन बैठ खुशाली !
इन्द्र वेद, जल झड़ी लगावे, विविध-विटप जन-मन विकसावे !!

औषधियें रस-अमृत बनती, रोग-असाध्य हो जिन हनती !
वैदिक-रीति सुबूटी फलती, कर्म-लता-दुख वेली जलती !! 4

ज्ञान-वारि वर झड़ी लगे हैं, सोते युग से जीव-जगे हैं !
दम्पत्ति देवी-देव कहावे, बन यजमान आहुति लगावे !!

कर्म-भूमि, ऋषि वतन सुखारा, बहती रहे अमृत सुख-धारा !
श्रवण प्यारा त्यौहार मनावे, घर-घर वेद-ऋचायें गावें !! 5

मानव सादर बोल नमस्ते, मिले परस्पर हँसते हँसते !
वेद कथा, सुने हर्ष बढ़ावे, आदर्श जीवन, आर्य बनावे !!

वन-तज आते ऋषिवर पुरमें, साम वेद, गाते मधुर स्वर में !
धर्म-नीतियुत चले चलावें, प्रीति रीतियुत व्यवहार बढ़ावें !! 6

आर्य बनें सब विश्व जभी हों, पूर्ण शान्ति मिलेंगे तभी हों !
"घनसार" भावना हों जब पूरण, तब ऋषि ऋण से होवें अनृण !!

ऋषिवर के ये भाव रहा था, वेद सुखी हित कष्ट सहा था !
याद दिलाई-वेद विद्या को, मेट दही दुख तमअविद्या को !! 7

कवि कुटीर, पीपाड़ शहर, राज.

मन यज्ञ कर्म सहयोगी

—देवनारायण भारद्वाज

येनेदं भूत भुवन भविष्यत्परिगृहीत ममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मन शिव सकल्प मस्तु ॥ 23 ॥
यजु० 34/4 ॥

सातों होता तुम्हें बुलाते, इस यज्ञ कर्म मे आओ मन।
शुभ सकल्पवान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

सब काल कड़ा तुमने अकड़ा
भूतकाल को तुमने जकड़ा
वर्तमान मे तुम्ही रमाते
और भविष्यत को पकड़ा।

हर समय बढ़ाते रहो यान, हर समय तुम्ही से रहे मिलन !
शुभ सकल्पवान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

मरण धर्म से रहित सितारे
तुम फिरते हो मारे मारे
रह कर इस देह विनाशी मे
करते कर्म अमर उजियारे।

अग्नि होत्र से अश्वमेध तक, सब कर्म श्रेष्ठ करवाते मन !
शुभ सकल्पवान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

सातो होता तुम से चलते
यज्ञ कर्म मे आहुति धरते
नेत्र, नाक, दो कान, एक मुख
होता साथ तुम्हारे चरते।

इन महान होताओं से तुम, करवाओ अब यज्ञायो जन।
शुभ सकल्पवान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

एफ-42 मानसरोवर कालोनी, रामघाट मार्ग, अलीगढ़

स्वामी अग्निवेश का आर्य सम्मेलन

हर फटे में टांग अड़ाने वाले, मौसम बदलने के साथ ही विचार व दृष्टिकोण बदलने वाले जो पहले भी आर्य राष्ट्र का सपना सजोकर आर्यसभा को जनता पार्टी की झोली में डालकर शिक्षामन्त्री का इनाम ले चुके हैं। दैनिक पत्र के नाम से इकट्ठी की गई राशि डकार गए।

अब आर्यसमाज की नई-नई परिभाषाएँ गढ़कर आर्य सम्मेलन को साम्यवादी दृष्टिकोण में रंगकर प्रस्तुत करने का जबरदस्त नाटक कर बैठे। क्या तर्क की कसौटी पर उनके चिन्तन को आर्यसमाजियों ने परखने का प्रयास किया।

श्री निवासपुरी, नई दिल्ली

साप्ताहिक　ओ३म्　कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आर्य समाज संगठित है।



पिछले दिनों कुछ राष्ट्रीय समाचार पत्रों मे आर्यसमाज दो खण्डों में बँटा। इस शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित हुआ था। समाचार पत्र वालों को जैसा कि पत्रकारो का स्वभाव होता है, कुछ नया चाहिए। उन्हें मावलकर हाल में 14-15 जुलाई को आयोजित कार्यक्रम मे अवश्य ही कुछ नवीनता दिखलाई दी। आर्यसमाज सौ वर्ष से भी पुराना सगठन है। उसके सुनिश्चित नियम, सिद्धान्त एव सविधान हैं। यह सार्वभौम सगठन है। नगर नगर म आर्य समाजें हैं। उनके प्रतिनिधि प्रान्तीय सभाओं का गठन करते हैं तथा प्रान्तीय सभाओं तथा विदेशो की आर्य समाजो/प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा के सदस्य होते हैं।

समाचार पत्रो मे यह समाचार दे देना कि राष्ट्रीय स्तर पर आर्यसमाज दो खडो में विभाजित हो गया है, बेमानी है। जो लोग मावलकर हाल में इकट्ठे हुए थे, वे आर्य समाजों के प्रतिनिधि नहीं थे, वे प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि नहीं थे, वे सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि भी नहीं थे। वे लोग वहाँ पर अपनी व्यक्तिगत स्थिति में गए थे। वे किसी नए सगठन को बनाने गए थे। वे पुराने सगठन को दो खडों में विभाजित करने वाले कौन होते हैं ?

भारतीय आर्यसमाज की स्थापना उन्होंने की। प्रत्येक व्यक्ति को नया सगठन खड़ा करने का अधिकार है, पर वह आर्यसमाज जैसे पूर्व प्रचलित स्थापित नाम का दुरुपयोग करे, यह अधिकार उसे कहा से मिल गया ?

कुछ कुण्ठाग्रस्त लोग जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए आगे आते हैं, उन्हें इस पवित्र सस्था के मच का दुरुपयोग नही करना चाहिए। उस अधिवेशन में भी बताते हैं कि तपोपूत सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने अपनी सुष्ठु शैली मे आर्यसमाज की मान्यताओं एव आधार भूत धारणाओ को प्रस्तुत किया था, परन्तु वहा तो विशेष प्रयोजनों से जुड़े उच्छृखल लोग जमा थे। उन्होने उनकी बात पर ध्यान न दिया। हाँ जो स्वामी जी से सहमत थे, वे वहाँ से बाहर आ गए।

जब भारतीय आर्यसमाज की स्थापना की घोषणा हुई तो वहाँ पर केवल गिने-चुने व्यक्ति रह गए। प्रारभ में बताते हैं कि 700 प्रतिनिधि थे, पर दिन ढलते, सारा हाल खाली हो गया। जो बाहर आए, उन्होंने अपने को ठगा सा महसूस किया। जो अन्दर थे, वे किकर्तव्य विमूढ़ थे।

अनेक बार नई सस्थाएं बनाने के प्रयास किए गए। पुरानी चलाना तो कठिन है। वे नई कहाँ से चलाएंगे। पुरानी तो सभाल नहीं पाए, नया कहाँ से सम्भालेंगे। एक पुरानी कहावत है कि तुम सबको कुछ समय के लिए मूर्ख बना सकते हो कुछ को ज्यादा समय के लिए मूर्ख बना सकते हो, पर सबको सारे समय के लिए मूर्ख नही बना सकते। आर्य सभा बनाई गई थी। घोषणा की गयी थी कि हरियाणा का राज्य दयानन्द को थाली मे परोसकर भेंट करेंगे। कहाँ गया, वह थोथा नारा। सघर्ष के लिए, क्रान्ति के लिए उच्छृखल समूह नही, सगठित शक्ति चाहिए।

आर्यसमाज एक पवित्र सगठन है। क्षुद्र स्वार्थी तत्वो से सावधान रहने की आवश्यकता है।

—सम्पादक

टंकारा की टंकार

—डा० सारस्वत मोहन "मनीषी"
प्रवक्ता स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
डी० ए० वी० कालेज, अबोहर (पजाब)

जब तक अम्बर में तारे हैं धरती पर अगारे।
तब तक नहीं भूल पायेंगे हम एहसान तुम्हारे।

सध्या की अल्पना लगाई तुमने पहली बार।
यज्ञ-हवन की धूम मचाई तुमने पहली बार।
पाखण्डों से लड़ी लड़ाई तुमने पहली बार।
विधवाओं की माँग सजाई तुमने पहली बार।
सच्ची सीधी राह दिखाई तुमने पहली बार।
बजर को बाँटी अमराई तुमने पहली बार।
शखासुर की पीठ टिकाई तुमने पहली बार।
बकरी भी शेरनी बनाई तुमने पहली बार।

जब तक फूलों मे सुगन्ध है मकरन्दी मधुधारे।
तब तक नहीं भूल पायेंगे हम एहसान तुम्हारे।

दीन हीन मानस को फिर से दिया शब्द सधान।
अमृत बाँटा नवयुग के शकर ने कर विषपान।
कुद कंठ को, बधिर कर्ण को बाँटी वैदिक तान।
सत्य अर्थ का सूर्य उगाया हिन्दी का अह्वान।
राजा भिक्षुक सभी चकित थे ऐसा अनुपम दान।
पश्चिम की छाती बैठाया फिर पूरब का गान।
तुम न अगर आते तो बचता कभी न हिन्दुस्तान।

जब तक सूरज चाँद रात दिन जीवित साँझ सकारे।
तब तक नहीं भूल पायेंगे हम अहसान तुम्हारे।

टंकारा की मृदुल मौर्वी ने की जब टकार।
अधकार का अन्त तमसकर भागा हाहाकार।
तुम आये तो लगा हुआ था दुष्टों का दरबार।
ठकुर सुहाती तुम्हें न आई तोड चले तलवार।
तुम सचमुच ही नीलकठ थे विष पी सत्रह बार।
देखा मेल सिह श्वानी का दिया सिह फटकार।
साँस-साँस से सत्यरथी तुम अधरों से ललकार।
वाणी से उद्बोधन नयनों मे था केवल प्यार।

जब तक पारस नाम रहेगा तुलसी है गुणधारे।
तब तक नहीं भूल पायेंगे हम एहसान तुम्हारे।

तुम्हें देखकर मुग्ध रह गया निर्माता का मन्त्र।
गायत्री का कवच देह पर कर न सका कुछ तन्त्र।
प्रतिभा मे तुम वर रुचि थे या सचमुच आर्य सुमन्त्र।
अपने बल पर लड़े न खेले बन औरों के यन्त्र।
सुन्दरतम कृति एक ओइम की तुम चेतना सयंत्र।
रात-रात भर जागे रोये देख देश परतन्त्र।
जन मानस तैयार किया जिससे हो राष्ट्र स्वतन्त्र।
किन्तु दीप असमय बुझ गया हुआ ऐसा षड्यन्त्र।

जब तक आंसू नयन-नयन में धरती मेघ पुकारे।
तब तक नहीं भूल पायेंगे हम एहसान तुम्हारे।

आर्य समाज की सदस्यता-एक प्रश्न

रघुबीर वेदालकार
रामजस कालेज दिल्ली

ऐसा कई बार कहा जाता है कि महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सदस्य एक मुसलमान भी थे। भगत शहीद भगत सिह तथा उनके दादा जी आदि को भी आर्यसमाजी बतलाया जाता है। कदाचित् इसके आधार पर ऐसा आभास होने लगता है कि मुसलमान सिख आदि भी आर्यसमाज के सदस्य बन सकते हैं। सम्भवतः इसी धारणा को आधार मानकर आजकल स्वामी अग्निवेश जी आदि एक ऐसे भारतीय आर्यसमाज की स्थापना का उद्यम कर रहे हैं जिसके सदस्य मुसलमान, सिख आदि भी बन सकते हैं। भारतीय आर्यसमाज की स्थापना होनी चाहिए या नही करनी देनी चाहिए या नहीं यह अलग प्रश्न है तथा आयसमाज के नेताओ को इस विषय में सचेष्ट होना चाहिए।

मेरा मूल प्रश्न है कि क्या मुसलमान, सिख आदि भी आर्यसमाज के सदस्य बन सकते हैं या नहीं। हिन्दू, मुसलमान या सिख होना केवल बाह्य चिन्हों यथा चोटी दाढ़ी आदि तथा वेशभूषा पर निर्भर नही करता अपितु इन सबकी अपनी अपनी कुछ मान्यताएँ हैं उनको स्वीकार करके ही उन सम्प्रदायो/तथाकथित धर्मों मे दीक्षित हुआ जा सकता है अन्यथा नहीं। मुसलमान को कुरान तथा मोहम्मद साहब में विश्वास करना ही पड़ेगा। एक सिख को गुरु ग्रन्थ साहब तथा सिख पन्थ की मर्यादाओं को सर्वश्रेष्ठ मानना ही होगा। इसके विपरीत एक आर्यसमाजी के लिए आर्यसमाज के दस नियमो के प्रति निष्ठा व्यक्त करनी ही चाहिए। यह अलग बात है कि आज कुछ आर्यसमाजी महर्षि दयानन्द के अनुसार वेद को परमेश्वर की वाणी स्वीकार नहीं करते। आर्यसमाज के नियमों में ऐसा कुछ लिखा भी नहीं है। वहाँ तो

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्रावणी के उपलक्ष मे—

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है

—यशपाल आर्य बधु

आर्यसमाज के यशस्वी सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् 1877 ई० मे बम्बई मे प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के अनन्तर सन् 1877 ई० में लाहौर आर्यसमाज की स्थापना के अवसर पर आर्य समाज के वतमान दस नियमों को व्यवस्थित कर यह उद्घोष किया था कि —"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। महर्षि के इस उद्घोष ने ससार को चौका दिया क्योंकि इससे पूर्व किसी ने भी इस प्रकार से वेदों को सत्य विद्या का पुस्तक होने का दावा नही किया था। विपरीत इसके कतिपय अज्ञ० स्वार्थी और मिथ्यावादी लोगो ने तो इन्हे भाण्ड, धूत और निशाचरो की कृति तक कह डाला था। (1) वेद के मर्म को न समझने के कारण एव उनके गौरव को समाप्त करने के कारण मैक्समूलर जैसे पाश्चात्य लोगों ने इन्हें गडरियो के गीत एव बच्चो की बिलबिलाहट आदि अत्यन्त उपेक्षित एव अपमान जनक शब्दों से अभिहित करने का दुस्साहस किया था (2) पर वास्तविकता यह है कि वेद सर्व-विद्या निधान हैं। मनु को सुस्पष्टोपित है कि 'सर्वज्ञनमयो हि ह (3) और सर्व वेदात्प्रसिध्यति। (4) महर्षि दयानन्द की भी यत्र-तत्र सर्वत्र ऐसी ही मान्यता दृष्टि-गोचर होती है। अब देखना यह है कि महर्षि की इस मान्यता मे कितना सार है।

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है इसकी विवेचना करने से पूर्व यह जान लेना भी अत्यन्त आवश्यक है कि वेद किन पुस्तकों का नाम है। यह इसलिए कि ऐसे लोगों की भी कमी नही कि जो वेदो की इयत्ता चार सहिताओं तक ही सीमित नहीं रखते अपितु ब्राह्मण ग्रथों उपनिषदों आदि को भी वेद ही मानते हैं। महर्षि दयानन्द के सम्मुख भी ऐसी परिस्थित उत्पन्न हो गई थी। वह तब जब राजा शिव प्रसाद ने उनसे प्रश्न किया था कि-आप वेद किसको मानते है ? तब महर्षि का सुस्पष्ट उत्तर था कि—'सहिताओं को।' इस पर राजा ने फिर पूछा कि—क्या आप उपनिषदों को वेद नहीं मानते, ?' महर्षि ने कहा कि— मैं वेदों मे एक ईशावास्य को छोड के अन्य उपनिषदो को नहीं मानता। किन्तु अन्य सब उपनिषद ब्राह्मण ग्रथों में हैं, वे ईश्वरोक्त नहीं है।' महर्षि के इस कथन पर राजा ने पुन प्रश्न किया कि—'क्या आप ब्राह्मण ग्रथों को वेद नहीं मानते ?' महर्षि का उत्तर था कि —'नही, जो ईश्वरोक्त है, ।' वही वेद होता है, जीवोक्त को वेद नहीं कहते। जितने ब्राह्मण ग्रथ हैं, वे सब ऋषि मुनि-प्रणीत और सहिता ईश्वर प्रणीत हैं।' (5) स्पष्ट है कि वेद की इयत्ता के सम्बन्ध मे लोगो मे भ्रान्तिया विद्यमान थीं और अब भी हैं। इसलिए हमे प्रथम इस बात का निर्णय करना पडा कि सब सत्य विद्याओं का पुस्तक जो वेद है, वह अन्तत है कौन सा। इतिहास साक्षी है कि गत तीन हजार वर्षों से देश-विदेश के किसी भी विद्वान् को यह सन्देह नहीं हुआ कि ब्राह्मण ग्रथ वेद नही, महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम आधुनिक युग को इस तथ्य से अवगत कराया। वैसे भी ब्राह्मण ग्रथ वेद नहीं हो सकते क्योंकि उन्हीं का नाम इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशसी आदि है। वे ईश्वरोक्त नहीं हैं, किन्तु महर्षि लोगों के किए व्याख्यान हैं।। (6) इसमें महर्षि यह तर्क देते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थों आदि को भी वेद माने तो वेद सनातन कभी नहीं हो सकता क्योंकि ब्राह्मण पुस्तकों मे बहुत से ऋषि-महर्षि और राजा आदि के इतिहास लिखे हैं और इतिहास जिसका होता है, वह उसके जन्म के पश्चात् ही लिखा जाता है। वेदों मे किसी का इतिहास नहीं किन्तु विशेष जिस-जिस शब्द से विद्या का बोध होवे उस-उस शब्द का प्रयोग 2 किया है। किसी मनुष्य की सज्ञा वा विशेष कथा का प्रसग वेदो मे नहीं।' (7) इसलिए महर्षि कहते हैं कि—'जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओ से युक्त ऋक् सहितादि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्यों को सत्यासत्य का ज्ञान होता है, उनको वेद कहते हैं।' (8) इस तर्क के उत्तर मे कि जैसे ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रथों में याज्ञवल्क्य, मैत्रेय, गार्गी और जनक आदि के इतिहास लिखे हैं। वैसे ही (त्रायुष जगदग्ने) इत्यादि वेदों मे भी पाए जाते हैं। इससे मत्र और ब्राह्मण भाग ये दोनो बराबर होते हैं, फिर ब्राह्मण ग्रन्थों को वेदो मे क्यों नहीं मानते हो ? महर्षि लिखते हैं कि ऐसा भ्रम मत करो, क्योंकि जगदग्नि और कश्यप ये नाम देहधारी मनुष्यो के नहीं हैं। इसका प्रमाण शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि—'चक्षु का नाम जमदग्नि और प्राण का नाम कश्यप है।' (9)

महर्षि ने वेदो मे लौकिक इतिहास का निषेध किया है। इतिहास भी एक विद्या है और यह विद्यालयों मे पढाया भी जाता है, किन्तु इसे हम सत्य विद्या नहीं कह सकते। इसीलिए वेदों में इसका सर्वथा अभाव भी है। वेद ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में उस समय प्रादुर्भूत हुआ था कि जब मानव का इतिहास अभी प्रारम्भ ही नहीं हुआ था। स्पष्ट है कि इतिहास मानव की उत्पत्ति के साथ प्रारम्भ होता है और उसके साथ-साथ ही समाप्त भी हो जाता है। अत इतिहास को नित्य नहीं कह सकते क्योंकि उसकी उत्पत्ति अथवा आदि है और जिसका आदि होता है उसका अन्त भी अवश्य ही होता है। इस कारण नित्य न होने से इतिहास को दार्शनिक भाषा में सत्य भी नहीं कह सकते भले ही लौकिक दृष्टि से वह सत्य ही क्यों न हो, किन्तु दार्शनिक भाषा में हम उसे सत्य कदापि नहीं कह सकते। सत्य वही होता है कि जो अपरिवर्तनशील ही सदा एक रस रहने वाला हो एव जिसकी उत्पत्ति एव अन्त न हो। वेद इसी प्रकार की सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद सदा एक रस बने रहते हैं। यहाँ तक कि यह पूर्व कल्पो मे ऐसे ही थे और आग की कल्पों मे भी सदैव इसी रूप में एक रस रहेंगे। इनमे किंचिन्मात्र भी कोई परिवतन नही होता। इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द का कथन है कि—'जैसे इस कल्प की सृष्टि मे शब्द अक्षर, अर्थ और सम्बन्ध वेदो में हैं, इसी प्रकार म पूर्व कल्प मे थे और आग भी होग, क्योंकि जो ईश्वर की विद्या है, सो नित्य एक ही रस बनी रहती है, उनके एक अक्षर का भी विपरीत भाव कभी नहीं होता। सो ऋग्वेद से लेके चारों वेदों की सहिता अब जिस प्रकार की है कि इनमे शब्द, अथ, सम्बन्ध, पद और अक्षरो का जिस क्रम से वर्तमान है इसी प्रकार का क्रम सब दिन बना रहता है, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है, उसकी वृद्धि, क्षय, और विपरीतता कभी नही होती, इस कारण से वेदो को नित्य स्वरूप ही मानना चाहिए।' (10)

फिर वेदो मे इतिहास का भ्रम कैसे हुआ ? इसका वर्णन कुछ तो हम पूर्व कर चुके हैं कि जमदग्नि कश्यप आदि नामो को देखकर वेदो मे इतिहास का भ्रम हुआ पर वेद मे इतिहास मानने वाले यह भूल जाते हैं कि वेद के शब्द रूढ न होकर यौगिक हैं। डा कपिल देव शास्त्री के अनुसार—वेद के शब्दो को योगिग मानने का तात्पय है कि वेद मे कोई सज्ञावाचक शब्द नही है। वहाँ गौतम, वसिष्ठ, विश्वामित्र इत्यादि ऋषियों के नाम के रूप मे प्रतीत होने वाले शब्द तथा वृत्त, अहि नमुचि इत्यादि राक्षसों के नाम के रूप मे मिलने वाले शब्द किसी के नाम मे स्वीकार नही किए जाने चाहिए अपितु इन्हें विशेषण के रूप मे ही स्वीकार किया जाना चाहिए। स्वय वेद मन्त्रों मे ऐसे अनेक प्रयोग पाये जाते है जिनसे शब्दो की यौगिकता स्पष्ट हो जाती है। इस कारण वेदों मे अनित्य इतिहास की सत्ता नहीं मानी जा सकती।' (11) महर्षि जब लाहौर में थे तो एक दिन पण्डित रामरक्खा ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि सामवेद में भारद्वाजादि ऋषियो के नाम आए हैं और इससे यह सन्देह होता है कि वे बहुत पीछे ऋषियों ने बनाये। इस पर स्वामी जी ने बहुत से मन्त्र पढ़कर सुनाये जिनमें भारद्वाजादि नाम आते हैं और कहा कि इन स्थानो पर यह नाम किसी मनुष्य के नही हैं प्रत्युत्त इनके इन स्थानों पर विशेष अर्थ हैं। साथ ही समस्त मत्रों का अर्थ सुनाया और कहा कि इस प्रकार की भूलें वेद के वास्तविक अर्थ न जानने के कारण होती हैं क्योंकि लोग साधारणतया प्रकट अर्थ लेते हैं। यह ऋषियों के नाम नहीं हैं प्रत्युत ऋषियों के नाम इन स्थानो से रखे गए हैं।'(12)

सृष्टि के प्रारम्भ मे जब वेद का आविर्भाव हुआ तो उस समय ज्ञान-विज्ञान तो दूर मनुष्य के पास अपनी भाषा तक नहीं थी। ईश्वर ने मानव को वेद का ज्ञान भाषा सहित दिया था। फिर इसी ज्ञान और इसी भाषा से मानव ने सभी वस्तुओं के नाम रखने प्रारम्भ कर दिए। वेद चूंकि मानव-धर्म पुस्तक है और उस धर्म पुस्तक से अपने बच्चों के नाम रखने की जो प्रथा चली वह आज तक जारी है। सुप्रसिद्ध आर्य दार्शनिक पण्डित उदयवीर जी शास्त्री का यथार्थ कथन है कि—"हर एक जाति अपने अपने धर्म ग्रथों को देख कर अपने बालकों के नाम रखती है, क्या आदिम आर्यों का कोई अन्य तरीका होता ?'13 डा० स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती आर्यों की इस परिपाटी को नामधेय यज्ञ की सज्ञा देते हैं और लिखते हैं कि—"वेद के शब्दों को स्वीकार करके इन्हीं के आधार पर उन्होंने अपने समग्र परिचित पदार्थों को नाम देना आरम्भ किया। यह नामधेय यज्ञ कई हजार वर्षों तक चला होगा।"(14) वैदिक धर्मावलम्बियों में तो यह परिपाटी अभी तक प्रचलित है। इसी आधार पर आचार्य उदयवीर जी शास्त्री लिखते हैं कि —'गुरुकुल के विद्यार्थियों के नाम वैदिक ऋषियों के से हैं। कल्पना करो कि उनमे से कुछ बहुत प्रसिद्ध होने से सहस्रों वर्षों तक याद रहें। कुछ हजार वर्षों के बीतने पर यदि यह कहा जावे कि वेदों में इतिहास है क्योंकि उसमें मनुष्यों के नाम आये हैं तो यह मूर्खता होगी। हमने वेदों को देखकर नाम रखे—वेद कारण है और नाम कार्य है - इस सम्बन्ध को उलटा देने से ही भ्रम हुए।' (15) इस सम्बन्ध मे डा० विमला का यही कथन है कि—'दयानन्द के सिद्धान्तानुसार तथाकथित नाम विशिष्ट गुणों, स्थितियों आदि के द्योतक योगिक पद हैं। महर्षि वेद-मन्त्रों में हर प्रकार के व्यक्तिगत इतिहास का प्रतिषेध करते हैं। क्योंकि मत्र किसी भी व्यक्ति के सम्बन्ध में क्रमबद्ध एव अविरुद्ध क्रमबद्ध इतिहास उपलब्ध नही।' (16)

जहाँ तक वेदों का सम्बन्ध है हम यह कह सकते हैं कि वेदों में राजा का तो न उल्लेख है पर राजा विशेष का नहीं, इसी प्रकार उसमें पर्वत और नदियों का भी उल्लेख मिलता है पर किसी पर्वत विशेष अथवा नदी विशेष का

(शेष पृष्ठ 6 पर)

श्री स्वामी अग्निवेश जी से-

—प्रो० उत्तम चद, 'शरर' पानीपत

स्वामी अग्निवेश जी का मैं पुराना साथी हू। उनके साथ कुछ दिन जेल में भी काटे हैं, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के चुनाव मे उस जमाने मे मैं उनका साथी था, अत उनसे कुछ कहने का अधिकार रखता हूं। वैसे वे मुझे भुला चुके होंगे, परतु मैं कह सकता हूं।

कभी हममे तुममें भी राह थी, तुम्हे याद हो कि न हो।

मेरी उनसे प्रार्थना केवल इतनी है कि अब यदि वे आयसमाज का हित चाहते हैं तो अपने प्रत्येक नये आन्दोलन के साथ आर्यसमाज का नाम न जोडा करे। ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के अपने नियम हैं। कुछ अनुशासन हैं, कुछ सिद्धात हैं, जिनकी सीमा से बाहर उसे घसीटना समाज का हित नही, उसकी छवि बिगाडने वाली बात है। एक उदाहरण लें, हम आर्य लोग सरकार के उस कानून को उपयुक्त मानते हैं जिसके द्वारा तथाकथित अछूत किसी मदिर मे प्रविष्ट हो सकता है। हम छूतछात तो स्वीकार नही करते परन्तु ध्यान मे रहे कि हम मूर्ति पूजा को भी पाखड तथा देश के पतन का बडा कारण मानते हैं। अत हरिजन बन्धुओं के साथ सर्वदा सहमत होकर भी आर्यसमाज उन्हें मदिर मे मूर्ति पूजा करने का नहीं ले जा सकता। हमारी तो इच्छा है कि जो वहां पूजन करन वाल सवर्ण हैं, वे भी इस दुबलता को त्याग दें और पतन की इस खाई को समाप्त कर दें। जिसके कारण आज भी हिन्दू स्त्रियां मस्जिदो मे कबरो पर सर पटक रही हैं। स्वामी अग्नि वेश जी द्वारा मन्दिर प्रवेश आन्दोलन, उनका निजी आन्दोलन कह ले, आर्यसमाज का नाम न जोडें। आखिर सडक पार कराने के पुण्य को लेने के लिए किसी वृद्धा को जबरदस्ती तो सडक पर नहीं घसीटा जा सकता ?

मै स्वय आयसमाज मे राजनीतिक विग की स्थापना के पूरे पक्ष म हूं परन्तु इस सत्य को स्वीकार करता हूं कि यह काय हमारी सामूहिक शक्ति की अपेक्षा रखता है। इक्के-दुक्के व्यक्ति यदा-कदा कोई आन्दोलन करके आर्यसमाज का अनुशासन तो भग कर सकते हैं, परन्तु अपनी राजनैतिक सभा को चला पायेंग, यह असम्भव है। आज अच्छी-अच्छी पार्टियां दम तोड रही हैं। अब आयसमाज के नाम पर सियासी जमात जिसमे कोई मिया जी भाषण दे जायें अथवा सरदार जी, सफल नही हो सकती। स्वामी अग्निवेश जी के साथ मैं सहमत हू कि वर्तमान नेता समाज की राजनीति के पक्ष मे नहीं हैं, मैने नेताओं के विचार सुने हैं, उनके तर्कों से मैं सहमत नही हूं। परतु उनकी ईमानदारी पर भी मुझे सदेह नही है और जब तक हम एक मत न हों, पार्टी गठित करना और फिर विफलता में नाम कमाना कहां तक उपयुक्त है।

स्वामी अग्निवेश जी के उत्साह का मैं प्रशसक हूं काश ! कि यह उत्साह आर्य समाज के सगठन का विरोध न करते हुए किसी निर्माणात्मक काय म लग सके। मैं स्वामी जी के शुद्धि सब धी दृष्टिकोण से सर्वथा असहमत हूं। यह दृष्टिकोण उन्हें राजनीति मे सर्वप्रिय बनाने के लिए उपयुक्त होंगे, परन्तु दयानन्द का बताया सत्य सब समयों मे सत्य है, वह एक ऋषि का वचन है। मैं अपनी इस धृष्टता के लिए स्वामी जी से क्षमा चाहता हूं। मैं भी पूजीवाद के विरोध मे हूं परन्तु हर तहरीर को दयानद के दृष्टिकोण से देखना अपना धर्म मानता हूं।

श्री अग्निवेश जी का नया हथकण्डा

भारतीय आर्यसमाज की स्थापना

प्रो० राजेन्द्र मिश्रा
नई सूरजनगरी अबोहर

कभी पढ़ा था कि—

आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास ॥

स्वामी दयानन्द के नाम पर गैरिक वस्त्रों में वेश सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव

जनता मे नया उत्साह, नई प्रेरणा जगी थी कि ये वेश सम्प्रदायी शकर के अवतार पैदा हुए हैं। नास्तिकों का, जैनियों का बौद्धों का और चार्वाकों का तथा इस्लाम और इसायत के साथ साथ मार्क्स के कम्यूनिज्म को जड से समाप्त कर ये वेश वर्ग महर्षि दयानन्द वाले आर्यसमाज का झण्डा ऊचा करेंगे। कुछ दिनों तक जनता ने इन्हें बहुत सम्मान दिया।

वेश सम्प्रदाय जनता के बीच में

शकर के अवतार समझ कर पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की बागडोर इनको सौंपी गई। जनता जय-जयकार के साथ यह आशा लगाये रही कि ये लोग आर्यजनता के शुभ चिन्तक हैं, ये अवश्य कल्याण करेंगे। इन्होंने भी देखा कि अब तो अगूरों की बेल हमारे हाथ आ गई है।

पंजाब आर्य प्रतिनिनिधि सभा, गुरुकुल कांगडी तथा विद्या सभा के कर्ता-धर्ता और उसके भाग्य विधाता ये ही वेश-भगवान थे। उस समय की कोई एक घटना हो तो लिखें इन लोगों ने इतने उत्पात मचाये कि विवश हो, उसी आर्य जनता ने, जिन्होंने इनको भाग्य विधाता माना था, सभी सभाओं से निष्कासित कर दिया।

गु० कु० इन्द्रप्रस्थ के पर्वतीय आंचल को बेचकर लाखो
इसी चक्कर के अन्त मे शक्तिवेश की हत्या भी हुई।

राजनीति के चक्कर में

आर्यसमाज को राजनीति पार्टी बनाने की लालसा मे ये वेश सम्प्रदायी बारा-बाट हो गए जैसे गधे के सिर से सींग—एक कांग्रेस मे गया, एक ले गया, एक गया जनता दल में और भूल गये राजार्य सभा को। इस प्रकार के नाओ से य गुट सदा के लिए छिन्न-भिन्न हो गया।

अन्त शाखता ब्रह्म शैवा

श्री अग्निवेश ने पजाब आर्य प्रतिनिध सभा का अधिकार पाते ही मुक्तसर की अकाली काफ्रेंस मे कहा— सिक्खो! दिल्ली के लाल किले पर झण्डा गाढ दो। भटिण्डा के एक अकाली समाचार पत्र ने श्री अग्निवेश के इस भाषण को सर्वोत्तम बताया था। उग्रवाद का बीज यही तो भाषण था। पजाबियो को हरयाणा के विरुद्ध भडका कर खूब धन बटोरा। बुद्धिमानों के सम्मेलन मे महर्षि का उपहास उडाने वाले कामरेड अग्निवेश ही थे। उसमे आर्यसमाज को मुकदमे बाजी मे घसीटने वाले पजाब सभा के कार्यालय पर धावे बोलने वाले वेश पार्टी को खेलने-कूदने तथा तोड फोड करने का खुला समय मिल गया। क्या ये आर्यसमाज का विध्वस नही है ?

समय-समय की नौटकी और समय-समय का राग

श्री अग्निवेश नौटकी करने मे बहुत ही कुशल हैं और राग अलापने मे भी किसी से कम नही। देवराला (राजस्थान) काण्ड मे बहू तो जल मरी या जलाई गई। ऐसे अवसर पर आपको नौटकी सूझी। इस काण्ड के नाम खूब पैसा और वाह-वही प्राप्त की और इधर हिन्दू समाज म दुधारी तलवार चलवा कर दो गुट बना दिए। यदि सरकार ने हस्तक्षेप न किया होता तो श्री अग्निवेश स्वय भाग जाते और जनता कट मरती ऐसे फूट के बीज बो दिये थे आपने।

अब पता चला शबाना आजमी इनकी कौन है ?

आज पजाब मे और काश्मीर मे हिन्दुओ पर जो बीत रही है या ब्लू स्टार के समय पर जब देश मे विष के बीज बोए गए थे, तब आप और आपकी शबाना आजमी किसी विधवा या अनाथ के आसू पोछने कभी नही जा सके। इधर अपनी इस छिपी प्रेयसी को लेकर मेरठ पदयात्रा करने चले। शबाना की ही जय-जयकार सुनी जा रही थी पर आपको तो किसी ने घास भी नही डाली। यह आपके गैरिक वस्त्रों का ही प्रभाव था। एक दिन आप सन्यासी वेश भूषा उतार कर पैंट बूशर्ट पहन कर आर्यसमाज का प्रचार भी कर रहे थे।

सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को

आर्यसमाज के नाम से श्री अग्निवेश ने अवसर पाकर और जयपुर के आर्य सम्मेलन पर प्रेस काफ्रेंस मे भारतीय आर्यसमाज का नारा बुलन्द किया। सब पार्टियों मे घूमने के पश्चात् निराश होकर आज फिर से आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द का नामलेवा अवतार बनकर आए हैं। जनता ने इनके आन्तरिक काले दागो को देख लिया। ये ऊपर से तो काले है ही स्वभाव से।

आज इनको फिर आय समाज की याद आई और चले फिर एक नया षड्यन्त्र बनाकर। जनता को मार्गभ्रष्ट करने मे ये अतिकुशल हैं और इधर आयसमाज के अनेक प्रबुद्ध और दिव्य द्रष्टा ने इनकी पोल खोलनी प्रारम्भ की 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक पत्र मे। अनेक पत्र छपे 'सार्वदेशिक' मे। आबू पर्वत मे होने वाली बैठक मे भी इस भारतीय आर्यसमाज के जनक श्री अग्निवेश की अच्छी-खासी खिचाई की गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक मे श्री स्वामी दीक्षानन्द जी ने भारतीय आयसमाज के स्रष्टा नये दयानन्दी की चर्चा की। अब इस वेश-सम्प्रदाय की उखाड पछाड होने के बाद इनके आसन डोल गये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जब इनसे भारतीय आर्यसमाज के बारे मे स्पष्टीकरण मांगा जयपुर की प्रेस कार्फ्रेस का, जिनमें इन्होंने घोषणा की थी कि आर्य समाज के नेता लोग शिथिल हो गए हैं। अतएव मैं "भारतीय आर्यसमाज" की स्थापना करूगा और सम्मिलित होगे इसमे—ईसाई, मुसलमान, सिक्ख, जैनी और बौद्ध आदि-आदि।

क्या महर्षि दयानन्द का ऐसा ही आर्यसमाज था। जिसके समानान्तर ये नवीन दयानन्दी "भारतीय आर्यसमाज" की स्थापना करेंगे। क्या वास्तव मे स्वामी दयानन्द के आर्यसमाज के अतिरिक्त इनका आर्यसमाज वास्तविक स्वरूप वाला आर्यसमाज होगा।

अग्निवेश जी के थोथे नारे और बेकार की बयान बाजी से चार दिन तुम तो रोटी खालोगे पर इस नाटक-नौटकी से दयानन्द मिशन को कुछ हानि अवश्य पहुचाओगे ही। उस तप पूत स्वामी दयानन्द के आर्यसमाज की भट्टी मे तपकर निकले, जो त्यागी और तपस्वी थे। स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, प० गुरुदत्त विद्यार्थी और हजार-हजार प्राणों की आहुति देने वाले आर्यों का आर्यसमाज है। जब ये आर्य चाहेंगे तो तुम्हें फूक से से उड़ा देंगे। गिरगिट की तरह बदलने वाले वेश-सम्प्रदायी आर्यसमाज के वास्तविक स्वरूप को पहचानेंगे।

दयानन्द के सेवको ! आज इन चुनौतियों को स्वीकार करो और छद्मवेशी वेशों को समूल नष्ट कर दो। ये रूस और चीन के पैसे पर पलने वाले चाटुकार हमें क्या मार्क्स का दर्शन समझायेंगे। आर्यगण ! अपने विवेक से सोचो और प० लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द के पथ पर अग्रसर होंगें या इन कम्युनिष्ट लुटेरों के साथ चलोगे।

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
नई सूरज नगरी, अबोहर 152116

आर्य प्रतिनिधि दिल्ली द्वारा वेद प्रचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठिता, श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के नेतृत्व मे 18 जुलाई से 22 जुलाई तक पलवल, गोवर्धन, भरतपुर डीग मथुरा एव वृन्दावन आदि स्थानों पर वेद प्रचार की व्यवस्था की गई। स्वामी के साथ प० सत्यदेव स्नातक, प० चुन्नी लाल, प० ज्योती प्रसाद, प० अशोक कुमार ने भी इस प्रचार आयोजन मे विशेष सहयोग दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित "पूजा किसकी," महर्षि दयानन्द सरस्वती," "भगवान श्री रामचन्द्र" आदि पुस्तकें वितरित की गई।

बरसाना, मथुरा के वरिष्ठ भजनोउपदेश श्री जोरावर सिंह तथा प्रभावती स्नातिका ने इस वेदप्रचार भावना की भूरि-भूरि प्रशसा की। कोसी कलां के श्री अशोक कुमार आर्य ने इस सुन्दर आयोजन का स्वागत किया। डीग, मथुरा के श्री अशोक कुमार आर्य ने स्वामी जी से अनुराध किया कि वे समय-समय पर धर्मप्रचार के लिए यहा पर आते हैं। वृन्दावन के श्री वेदप्रकाश आर्य ने भजन मडली का आदर-सत्कार किया तथा आभार व्यक्त किया। तपोभूमि के सम्पादक आचार्य प्रेमभिक्षु ने इस आयोजन में अपने वक्तव्यों से वैदिक ध्वजा को समुन्नत किया। वेद मदिर की ओर से गुरुकुल मथुरा के विशाल सभागार मे आचार्य स्वदेश जी नैष्ठिक तथा आचार्य प्रेमभिक्षु का वेदों पर आधारित व्याख्यान हुआ। इस अवसर पर जिला मथुरा के सभी अधिकारी उपस्थित थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक महानुभावों में वैदिक धर्म प्रचार प्रसार के साथ-साथ भारतीय धर्म एव सस्कृति के प्रतीक अनेक स्थानों का श्रद्धापूर्वक भ्रमण भी किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ग्रामीण क्षेत्रो में इस प्रकार के आयोजन के लिए कृत सकल्प है।

21वीं सदी का भारत

स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य मे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद पहाडगज के तत्त्वावधान मे "11वी सदी का भारत" विषय पर भाषण-प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

प्रतियोगिता शनिवार, दिनाक 11 अगस्त को सायकाल 6 से रात्रि 9 बजे तक चिन्योट भवन, गली न०-6, मुलतानी डाण्डा, पहाडगज, दिल्ली मे होगी। समारोह के मुख्य अतिथि श्री कालकादास ससद सदस्य होंगे।

आर्यसमाज सेक्टर-7 फरीदाबाद

श्रावणी पर्व के अवसर पर 1 अगस्त से 5 अगस्त तक आर्यजगत् के विद्वान् महात्मा आर्य भिक्षु जी वैदिक प्रवचन करेंगे।

आगामी 15 सितम्बर से 30 सितम्बर तक स्वामी सत्यपति श्री परिव्राजक द्वारा योग-साधना शिविर का सचालन किया जाएगा।

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली

वेद प्रचार सप्ताह के सदर्भ मे दिनाक 7 अगस्त से 13 अगस्त 1990 तक प्रतिदिन रात्री 8 बजे से 9 बजे तक वैदिक विद्वान् प्रो उत्तमचन्द शरार वेद प्रवचन करेंगे। प्रवचन से पूव स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती भजनोपदेश करेंगे।

मगलवार 14 अगस्त प्रात पूर्णाहूति के पश्चात् "योगेश्वर श्री कृष्ण महर्षि दयानन्द की दृष्टि मे', विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा।

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, न्यू उस्मानपुर, दिल्ली-53 का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री ओम प्रकाश मदान
मन्त्री—श्री कृष्ण आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री रविन्द्र कुमार आर्य

(शेष पृष्ठ 4 का)

उसमें कहीं भी कोई उल्लेख नहीं। यही कारण है कि यह वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है। यदि वेद में राजा विशेष, पर्वत विशेष अथवा नदी विशेष या किसी व्यक्ति विशेष का उल्लेख होता तो फिर वेद भी सत्य विद्याओं का पुस्तक न रहता। यही वेद की विशेषता है कि उसमें अनित्य इतिहास का अत्यन्त अभाव है। वेद में जो-जो विद्याएं हैं, वे सभी की सभी सत्य विद्यायें ही हैं। तभी तो वे विद्यायें भी बीज रूप में हैं। इस सम्बन्ध मे महर्षि साधिकार कहते हैं कि 'जितनी सत्य विद्या ससार में हैं, वे सब वेदों से निकली है।' (17) अब यहां कोई यह प्रश्न भी कर सकता है कि ईश्वर ने सब विद्याओं का मूल ही क्यों दिया, विस्तार क्यों नहीं? तो इसका उत्तर उतना ही है कि मनुष्य अपनी बुद्धि और पुरुषार्थ का सदुपयोग कर सके। महर्षि दयानन्द ने भी इसी प्रकार का एक प्रश्न उठाकर उसका जो समाधान प्रस्तुत किया है—वह इस प्रकार हैं —"अब यदि कोई पूछे कि ईश्वर ने सब विद्याओं के मूल तत्त्व ही क्यों प्रकाशित किए और साद्यन्त विद्या का और कला का क्यों विवरण नही किया? तो उससे मेरा यह कहना है कि जैसे ईश्वर ने मनुष्य मात्र के बुद्धि व्यापार का उसी तरह बुद्धयुन्नति का भी अवकाश रखा।" (18) इस प्रकार वेद चू कि सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है अत वे सभी विद्यायें जिनसे मनुष्य जीवन के सत्य को प्राप्त कर सकता है, वेद में निहित हैं। महर्षि दयानन्द की तो यहा तक घोषणा है कि "मैंने वेद के एक-एक मन्त्र पर पूर्ण विचार किया है, उनमे कोई भी बात युक्ति विरुद्ध नहीं है।"(19) ऐसा प्रमाण पत्र कोई वेद-वेत्ता ऋषि ही दे सकता है, अन्य कोई नहीं। अत यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। उसमें असत्य का लेशमात्र भी नहीं। न उसमे लौकिक इतिहास है, और न ही सृष्टिक्रम के विपरीत कोई बात है। यह नित्य, निभ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान है मिथ्या वेद ईश्वर का ज्ञान है तो सृष्टि उसकी रचना अथवा कर्म। ज्ञान का कर्म के विपरीत होना, उसका होना है। ज्ञान का सृष्टि क्रम के अनुकूल होना उसका सत्यपना है ईश्वर का कर्म प्रत्यक्ष है, ज्ञान को उस कर्म के साथ मिलान करके देख लो यदि खरा उतरे तो समझ लो कि वह सत्य ज्ञान है, और यदि खरा न उतरे तो उसे मिथ्या घोषित कर देना। वेद इसीलिए सत्य विद्याओं का पुस्तक है उसमें कोई भी बात सृष्टिक्रम के विपरीत दृष्टिगोचर नहीं होती जैसे ईश्वर की सृष्टि में कोई बात सत्य नियम के विरुद्ध नहीं होती, वैसे ही उसके ज्ञान म भी सृष्टि रचना के सत्य सनातन नियमों के विरुद्ध कोई बात कहीं नहीं।[20] इसीलिए उसे सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा जाता है।

वेद ही ससार में सब सत्य के भण्डार है।
वेद ही है शान्ति दाता ज्ञान पारावार है॥

सदर्भ

1) त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्डधूर्त निशाचरा। (चार्वाक) सत्यार्थ प्रकाश द्वादश समुल्लास,

2) मैक्समूलर —i remed you again that the Veda contains a great deal of what is childish & feelish," (quotein in Vedic Hinduism, Page 87 Madras Christian Socitey).

3) मनुस्मृति 2/7
4) मनुस्मृति 13/97
5) भ्रमोच्छेदन
6) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका वेद सज्ञा विचार, पृष्ठ 85
7) सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास,
8) आर्योद्देश्य रत्नमाला,
9) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद्र सज्ञा विचार, पृष्ठ 86,
10) तत्रैव वेदनित्यत्व विषय, पृष्ठ 28,
11) विश्व-ज्योति, दयानन्द निर्वाण शताब्दी विशेषांक (अक 1 पृष्ठ 34-35)
12) दयानन्द शास्त्रार्थ सग्रह, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली-7- पृष्ठ 109)
13) आर्योदय वेदाक श्रावण सम्वत 2024 पृष्ठ 56
14) परोपकारी महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी विशेषांक 1983 पृष्ठ 47
15) आर्योदय वेदांक श्रावण सम्वत् 2024 पृष्ठ 56,
16) सायण तथा दयानन्द के वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 2/9
17) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ब्रह्मविद्या विषय, पृष्ठ 95)
18) पूना प्रवचन, पांचवां प्रवचन, वेद विषयक।
19) दयानन्द चरित्र,
20) वेदों वाला ऋषि, पृष्ठ 32-33।

आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद 224403

समस्त आर्यजगत में 6 अगस्त 1990, मंगलवार को

श्रावणी-उपाकर्म सामूहिक यज्ञोपवीत, संस्कृत रक्षा दिवस

समारोह पूर्वक मनाये जायेंगे।

(पृष्ठ 3 का शेष)

वेद को सत्य विद्याओ की पुस्तक कहा गया है। इस पर प्रत्येक अ यसमाजी को विश्वास करना ही चाहिए। वद विषयक मा यता मे मतभद होने के कारण ही वद मूर्ति प० दामोदर सातवलेकर आयसमाज की परिधि से बाहर ही रह। मरा अभिमत है कि आयसमाजी को महर्षि दयान द क ऊपर माहम्मद साहब की भाति विश्वास करना जरूरी नही कि तु दयान द क बनाए आयसमाज क दस नियमो पर विश्वास करना जरूरी है। इन पर विश्वास किये बिना श्रष्ठ शुद्ध जीवन व्यतीत करते हुए वह आर्य तो हो सकता है आयसमाजी नही। यदि कोई सिख या मुसलमान भी कुरान तथा गुरु ग्र थ साहब आदि पर विश्वास करते हुए श्रष्ठ जीवन यतीत करता है तो वह आय व की परिधि म तो आ जायेगा कि तु आयसमाजी नहा कहलाया जा सकता। इसे ही यदि स्पष्टता से कहूँ ता किसी सिख अथवा मुसलमान आदि के लिए आर्यसमाज का सदस्य बनना उसी प्रकार असम्भव है जैसे किसा भी आयसमाजी क लिए मुसलमान अथवा सिख कहलाया जाना। कारण स्पष्ट है—एक व्यक्ति दो मान्यताओं को नही ढो सकता। या तो उसे वद एव वद मे प्रतिपादित परमेश्वर पर विश्वास करना होगा या फिर कुरान मुहम्मद साहब तथा गुरुग्र थ साहब पर विश्वास करना होगा। दोनो मा यताएँ साथ साथ नहीं चल सकती। यदि एक मुसलमान मुहम्मद साहब कुरान तथा उसक आदेशो मे निष्ठा व्यक्त नही करता उनको मानने से इकार कर दता है तो उसे मुसलमान मानना हा गलत है। मुस्लिम पहनावा पहनने से उदू जबान बोलने मात्र से वह मुसलमान नही हो जायेगा। प० लेखराम भी मुसलमानो जैसी वष भषा धारण करते थे। अ य व्यक्ति भी इसी प्रकार आर्यसमाजी अथवा आयसमाज क सदस्य हो सकते हैं किन्तु इसक लिए उनको आय समाज क विपरीत मा यताओ से अपना विश्वास हटाना ही होगा। और यदि किसा ने मुस्लिम अथवा सिख मान्यताओ को छोड दिया तो आप किस आधार पर उसे सिख या मुसलमान मानेंगे ? इन मा यताओ मे विश्वास करते हुए वह आयसमाज क सिद्धा तो क प्रति विश्वास व्यक्त नही कर सकता।

अन्त मे पुन मूल प्रश्न एव उसक उत्तर को स्पष्ट करता हू कि एक व्यक्ति मुस्लिम सिख ईसाई यहाँ तक कि वतमान हि दू मा यताआ को भा स्वाकार करत हुए आयसमाज का सदस्य नही बन सकता। स्वामी अग्निवश जी आदि द्वारा जिस भारनाय आयसमाज की स्थापना का उद्यम किया जा रहा है उसक अनुसार अन्य मजहब वाले भी भ रतीय आयसमाज क सदस्य होग। य तो वतमान आयसमाज एव उसक सिद्धा ता से बहुत दूर चले जाना होगा।

इस लखनख क माध्यम से मैं सभाओ क अधिकारियो तथा आयसमाज क विद्वा मे भी अनरोध क रहा हू कि उक्त प्रश्न पर विचार करक अपनी व्यवस्था देने क कृपा कर।

आर्यों के काम करो।

कविरत्न प्रकाश चन्द्र

आय कहलाते हो तो आर्यों के काम करो।
श्रष्ठ व्यवहार स दुनियाँ मे अपना नाम करो॥

द न दुखिया अनाथ विधवा बहाये आसू।
शम की बात है यदि तुम कही आराम करो॥

स्नेह के सूत्र म ब ध जाओ यदि भला चाहो।
आपस ब र विनाश की रोकथाम करो॥

शान्तिप्रद वेद का उपदेश प्रम से प्यारो।
देश प्रदेश प्रात नगर ग्राम ग्राम करो॥

स य पथ का है प्रदर्शक प्रकाश आयसमाज।
अपना कमजारियो से मत इसे बदनाम करो॥

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N No 32387/77 Post in N D P S O on 2 3-8-1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

विवगत आर्य श्रेष्ठी—

आचार्य राम देव

आचार्य रामदेव उच्च कोटि के विद्वान, दार्शनिक तत्व वेदवेत्ता [illegible] और धर्माचार्य थे, वे अपनी धुन के पक्के और उपयुक्त [illegible] थे उनकी [illegible] मे महान् शक्ति थी उनकी रुचि सासारिक भोगो के प्रति न [illegible] उनका [illegible] तो देश धर्म और जाति की सेवा के लिए था। जब स्वामी श्रद्धानन्द [illegible] कागडी के लिए कार्यकर्ताओ का आह्वान किया तो वे भी आगे आये। उन्होंने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के लिए लम्बे समय तक काम किया तथा कन्या गुरुकुल देहरादून के लिए तो उन्होने अपना जीवन ही लगा दिया। उनका जन्म का नाम रामदास था परन्तु उन्होने अपने नाम रामदेव को ही सार्थक किया। नारी जाति को अशिक्षा लोकाचार, परम्परागत रूढियो तथा अन्धविश्वास की चारदीवारी से उन्मुक्त कर विशुद्ध आर्य सस्कृति के जागरूक वातावरण मे लाकर खडा करना उनके जीवन का लक्ष्य था। महर्षि दयानन्द सरस्वती का उन पर विशेष प्रभाव था। उनके समय मे लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति चल रही थी, निश्चित है कि इस पद्धति से भारतीयता की भावना ही नष्ट होना स्वाभाविक था। उस युग की एक आवश्यकता थी कि ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा हो जो युग वाहिनी आर्य सभ्यता तथा सस्कृति से ओत प्रोत हो महर्षि दयानन्द सरस्वती भी यही चाहते थे। गुरुकुल कागडी इसी भावना का साकार आदर्श था। महात्मा मुन्शीराम के साथ आचार्य रामदेव भी थे पर क्या इससे हमारे उद्देश्य की पूर्ति हो सकती थी।

इन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए आवश्यकता थी कि कन्याओ के लिए भी वे ही सुविधाएं दी जायें जो लडको के लिए दी गई थी। दिल्ली के दानी सेठ रघुमल की ओर से कन्या गुरुकुल खोलने की घोषणा तथा एक लाख रुपये दान की घोषणा की गई। इस समाचार से आचार्य जी का हृदय प्रसन्नता से खिल उठा। 1923 मे दीपावली के दिन दरियागज की कोठी मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सरक्षण म एक कन्या गुरुकुल प्रारम्भ किया गया। इसी कन्या गुरुकुल को बाद मे देहरादून ले जाया गया इस गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली पाठय विधि के निर्माण मे आचार्य जी का विशेष योग था। कन्या गुरुकुल की पाठय विधि आचार्य जी की विद्वता प्रतिभा और उदारता का प्रतिबिम्ब है। यह प्राचीनता और आधुनिकता का अद्भुत सम्मिश्रण है। आदर्श और व्यवहार का मधुर सामजस्य है।

आचार्य जी ने शिक्षा के अतिरिक्त आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए भी निरन्तर कार्य किया। वे आर्यसमाजो के उत्सवो मे बडे सहज स्वभाविक शैली में विद्वतापूर्ण भाषण देने की क्षमता रखते थे। 1936 मे आचार्य राम देव जी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान और सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान बनगए थे।

यदि गुरुकुल कांगडी के पुस्तकालय को देखा जाए तो अनेक ग्रथ ऐसे मिलेंगे जिसमे आचार्य जी के लगाए चिन्ह दृष्टिगोचर होते हैं। वे स्वाध्यायशील थे। उन्होंने वेदो और ब्राह्मण ग्रथों के मूल पाठ के साथ साथ अग्रेजी अनुवाद भी पढे थे। अग्रेजी अनुवाद के माध्यम मे उन्होंने बौद्ध और जैन साहित्य का विशेष अध्ययन किया था।

आचार्य जी का व्यक्तित्व बहुत गौरवपूर्ण था। उनका रहन-सहन भी बहुत सादा था उनके वस्त्र कीमती तो नहीं थे पर वे साफ सुथरे होते थे।

आर्यसमाज के क्षेत्र मे उनके योगदान को सदैव याद किया जाएगा। महान् पुरुषो के जीवन मे आने वाली पीढियो के लिए ज्योति स्तम्भ का कार्य करते हैं। आचार्य रामदेव भी ऐसे ही ज्योति स्तम्भ थे। महात्मा नारायण स्वामी ने लिखा है, अग्रेजी भाषा के अध्यापक राम देव से उनका परिचय गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव पर हुआ था। उन्होंने अपने भाषण मे कहा था कि राज्य और प्रबन्ध सम्बन्धी मामलों मे ब्राह्मण को क्षत्रिय के अधीन रहना पडेगा। बस पंडित अखिलानन्द और पडित तुलसी राम इसी बात से उनके घोर शत्रु बन गये परन्तु वे पीछे नहीं हटे। उन्होंने मौलाना मौहम्मद अली, शौकत अली जैसे लोगों को मु हतोड जवाब दिया क्योंकि उनकी विद्वता अपार थी।

उनकी लेखन शक्ति भी उनके व्यक्तित्व का परिचय देती है। परिणामतः भारत वर्ष का इतिहास, आर्य और दस्यु 'फाउन्टेन हैड आफ रिलीजन" उनकी विद्वत्ता का सशक्त प्रमाण है।

कन्या गुरुकुल देहरादून तो उनका वास्तव मे स्मारक है। उनकी सुपुत्री दमयन्ती कपूर उसी त्याग और तपस्या से इस सस्था का सचालन कर रही हैं। शब्द के प्रचलित अर्थों म भले ही वे शहीद न हो पर मैं उन्हें शहीद ही मानता हू। उन्होंने आर्य समाज के लिए अपने आप को शहीद कर दिया।

उनकी स्मृति मे सादर विनत श्रद्धाजलि। —डॉ० धर्मपाल

सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथ
ट्रिगल आर्ट कम्पोजिंग एजेन्सी मोजपुर दिल्ली-५३ मे मुद्रित। रजि० न० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ४२ रविवार १२ अगस्त १९९० विक्रमी सम्वत् २०४७ दयानन्दाब्द—१६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक २५ रुपये आजीवन सदस्य २५० रुपये विदेश मे ५० पौंड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश की आजादी में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

– डा० शकर दयाल शर्मा उपराष्ट्रपति, भारत

नई दिल्ली, 1 अगस्त। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश की आजादी मे बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। दासता की जजीरों मे जकडे राष्ट्र मे उन्होंने आत्म-विश्वास पैदा करके एक नवचेतना का सचार किया था, यह उद्गार डा० शर्मा ने प० बुद्ध देव विद्यालकार द्वारा लिखित "शतपथ ब्राह्मण भाष्य" के मावलकर हाल नई दिल्ली मे आयोजित विमोचन समारोह मे व्यक्त किये।

डा० शर्मा ने आगे कहा कि वेदो का ज्ञान आज भी सार्थक है। वेद आध्यात्मवाद एव भौतिकवाद के समन्वय का सदेश देते हैं। वेदो के अनुसार यज्ञो मे हिंसा का कोई प्रावधान नहीं है। डा० शर्मा ने कहा कि सच्चा वैदिक धर्मी कभी भी कठमुल्ला नही हो सकता क्योंकि उसका चिन्तन तर्क पर आधारित होता है।

महामहिम उपराष्ट्रपति ने कहा कि पाश्चात्य विद्वानो का मत है कि कम्प्यूटर के लिए संस्कृत सर्वोत्तम भाषा है और आज कम्प्यूटर के परिणामो की जाँच वैदिक गणित से की जा रही है। इस सदर्भ मे डा० शर्मा ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि आज की नौजवान पीढ़ी सस्कृत एव वेदज्ञान से दूर होती जा रही है। इस लिए आर्यसमाज को सस्कृत एव वेदों का और अधिक प्रचार-प्रसार करना चाहिए। डा० शर्मा ने यह भी कहा कि शतपथ ब्राह्मण भाष्य की छोटी-छोटी पुस्तकें भी निकाली जानी चाहिए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प० बुद्ध देव विद्यालकार न केवल सस्कृत व वेदो के प्रकाण्ड विद्वान थे, अपितु वे एक महामानव भी थे, जिन्होंने "शतपथ ब्राह्मण भाष्य" जैसे ग्रन्थ लिखकर समाज व राष्ट्र की अमूल्य सेवा की है। स्वामी जी ने आर्यसमाज को एक क्रान्तिकारी आन्दोलन बताया और कहा कि सन् 1535 मे एक भविष्य दृष्टा ने यह भविष्यवाणी की थी कि सन् 2000 के बाद समस्त विश्व मे वेदों का ही प्रचार-प्रसार होगा।

पूर्व केन्द्रीय मत्री, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने वेद आदि शास्त्रो के वैज्ञानिक चिंतन पर जोर दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल न प० बुद्ध देव विद्यालकार को अदभुत प्रतिभा का धनी बताते हुए उन्हें श्रद्धाजलि अर्पित की और कहा कि प० बुद्ध देव विद्यालकार के साहित्य सृजन कार्य को हमे आगे बढ़ाना चाहिए।

सम्पूर्ण शोध सस्थान के सस्थापक स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने सस्थान की गतिविधियों का परिचय देते हुए कहा कि प० बुद्ध देव विद्यालकार की सस्कृत वेदादि शास्त्र, साहित्य आदि मे अत्यन्त गहरी पैठ थी श्रीमती प्रभात शोभा पडित ने अपने पिता प० बुद्धदेव विद्यालकार के मार्मिक सस्मरण सुनाते हुए उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। डा० वाचस्पति उपाध्याय ने प० बुद्ध देव को विलक्षण प्रतिभा का धनी बताते हुए उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डाला। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने प० बुद्ध देव विद्यालकार द्वारा लिखित भगवत गीता की प्रति महामहिम उपराष्ट्रपति को भेंट की।

इससे पूर्व गान्धर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली की छात्राओं ने ईशवदना एव वैदिक राष्ट्रपति द्वारा सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। समारोह मे दिल्ली के अतिरिक्त हरियाणा, पजाब, उत्तर प्रदेश राजस्थान आदि राज्यो की प्रतिनिधि सभाओ एव समाजो के प्रमुख नेता, पदाधिकारी, सन्यासीवृन्द एव गौतम नगर गुरुकुल आदि कई गुरुकुलो के भारी सख्या मे ब्रह्मचारी भी उपस्थित थे।

अत मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत विद्या-मार्तण्ड ने अध्यक्षीय भाषण मे प० बुद्धदेव विद्यालकार को वेद विशारद एव बहुमूल्य प्रतिभा का धनी बताया। सुश्री कुसुम लता ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मच सचालन दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान –डा० धर्मपाल ने अत्यन्त कुशलता से किया।

तथ्यकथित मत

आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भाजपा का विरोध

दैनिक हिन्दुस्तान के 2 अगस्त 1990 के नगर सस्करण के पृष्ठ 2 पर उपर्युक्त शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित हुआ है। यह समाचार नितान्त भ्रामक तथा तथ्यो से परे है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का कोई भी वार्षिक अधिवेशन नहीं हुआ। अत भा ज पा का विरोध करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष डा० धर्मपाल ने किसी सभा को सम्बोधित किया और न ही कोई वक्तव्य दिया। इस समाचार मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के हवाले से कहा गया है कि श्री स्वामी अग्निवेश आर्यसमाज के जुझारू नेता हैं तथा वे इनके साथ निकलकर भा ज पा के नेताओं के विरुद्ध प्रदर्शनों का नेतृत्व करेंगे। श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने ऐसा कोई वक्तव्य नही दिया। श्री स्वामी अग्निवेश तथा उनके साथियो को आर्य-समाज से आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब से निष्कासित किया हुआ है। इस प्रकार आर्यसमाज से उनका कोई सम्बन्ध नही है। ऐसे भ्रामक वक्तव्यो पर आर्यसमाज के सदस्य न विश्वास करें और न ही उन्हें किसी प्रकार का सहयोग दें।

—सम्पादक

स्वराज्य के लिए आर्यजनता ने भारी बलिदान दिये

अब स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए आइये हम सब

- ☐ आर्य संस्कृति एवं आर्यभाषा के प्रसार की शपथ लें।
- ☐ विदेशी वस्तुओं और विदेशी भाषा से राष्ट्र को बचायें।
- ☐ पुण्यभूमि भारत में गोहत्या और मद्यपान की समाप्ति करायें।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—[illegible] गुप्त

जीवन के कुछ बीते क्षण

—उत्तम चन्द 'शरर'

मेरा जन्म मुलतान (पाकिस्तान) के एक छोटे से कस्बे मे सीनपुर मे हुआ। पिताजी जमींदार थे और विचारो की शह से ईस्लामी रगत मे रगे हुए थे। भक्ति के लिए चटाई (मुसल्ला) बिछाकर दोनों घुटने टेकर वजू (अगस्पर्श) करते थे और शेखसादी की गुलीस्तान के पद्यो से ईश्वर की वदना करते थे। घर मे [illegible] की कमी न थी अत सब चलता था। मैं जाने क्यों बचपन से अपितु शैशवास्था से आर्यसमाज के नाम से विशेष प्रभावित था। कुछ बडा हुआ तो जहाँ मदरसे म पढने लगा वहाँ कस्बे की रात्रि के दैनिक आर्यसमाज की सभा म जाना भी मेरे जीवन का अभिन्न अग हो गया। मुझे याद है कि पिताजी जब मृत्यु शय्या पर थे घर मे आने-जाने वालो का ताता बन्धा था, परन्तु मैं छुपकर समाज मे चला गया। सम्भवत यह मेरे पूर्व जन्म के सस्कार थे।

आयु के बढने के साथ आर्यसमाज के प्रचार की धुन सिर पर सवार हुई अपनी क्लास मे भी विधर्मियो से छेड जैसा स्वभाव जैसा हो गया। शायद छठी क्लास मे था कि कादिरबख्श जो मेरे साथ पढता था मुझसे पूछ बैठा कि आप हिन्दू आवागमन (तनासुख) को मानते हैं। मैंने हा की उनसे पूछा कि क्या तुम्हारी दादी जीवित है। मैंने कहा वह तो कबकी ससार से चली गयी, तब वह बोला कि कल्पना करो वह घोडा बन गयी मैंने कहा यह सम्भव है तब उसने कहा कि सयोगवश वह घोडा तुम्हारे ही घर मे आ गया, मैंने कहा यह भी हो सकता है, तब वह एकदम ठहाका मारकर बोला कि यदि तुमने उस पर सवारी कर ली तो दादी पर सवारी कर ली। प्रश्न सुनकर मैं अवाक रह गया। अब शास्त्रों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि आर्य-दर्शन मे मृत्यु के साथ सम्बन्ध टूट जाता है और आत्मा का कोई रिश्तेदार है ही नही।

पिताजी मेरे आर्यसमाजी क्रियाकलाप से अत्यन्त दुखी थे। समाज के सत्सग से लौटने पर वे प्राय मुझे पीट देते थे। मैं बचकर निकलता था मेरे आर्यसमाजी विचारो को दूर करने के लिए वे मुझे सनातन धर्म की एक सस्कृत पाठशाला मे प्रविष्ठ करा आए। यह पाठशाला मेरे ग्राम से दस मील दूर अलीपुर तहसील मे थी। आचार्य प० दीनदयाल जी शास्त्री थे जो कठोर पौराणिक थे, उनका यह नियम बन गया कि अध्ययन से पूर्व एक पुस्तक "आर्यसमाज का मौत" (कालूराम शास्त्रीकृत) सब विद्यार्थियो को स्वय सुनाते थे। विद्यार्थियो म केवल मै ही आयसमाजी था शेष सब पौराणिक थे ऋषि दयानन्द को अपशब्दो से याद करना तो दैनिक कृत्य था, परन्तु खेद है कि शास्त्री जी के प्रपाठ का परिणाम उल्टा हुआ। मैं उनके प्रश्नो को सुनता और उनका उत्तर नगर के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री मनोहर लाल शहीद से पूछा करता। शहीद जी एक अच्छे तार्किक आर्य थे। परिणाम स्वरूप मैं पौराणिको के सभी प्रश्नो को वर्ष भर म समझ पाया। और उनके पास जाने से सस्कृत का ज्ञान भी हो गया। अत अधूरे ज्ञान से ही सही स्थान स्थान पर पौराणिको को चैलेन्ज करन लगा और इसके साथ मेरे ग्राम सीतपुर का वातावरण भी मेरे भाषणो से गरमा गया। नगर निवासियो ने मेरे शिक्षक महोदय को भाषण के लिए बुलाया। उनका विचार था कि गुरू के सामने तो यह लडका न बोलेगा परन्तु मैंने उनके नियोग पर हो रहे भाषण को टोका कि यह मनु ने लिखा है। पण्डित जी बोले तुम्हे लज्जा नही आती की गुरु से उलझ रहे हो। मेरे मुख से निकला कि अर्जुन भी तो द्रोणाचार्य से उलझा था। सभा मे शोर सा मच गया और सभा समाप्त ही कर दी गयी।

अपने समाज मे एक तपस्वी आर्य बन्धु के जीवन ने मुझे बर्बस अपनी ओर खींचा वह थे महाशय धर्मवीर जी। आजन्म ब्रह्मचर्य का व्रत लिए हुए सत्यवादी, समाजसेवी सादा और तपस्वी। वे दैनिक समाज मे पानी का घडा भरकर रख देते थे (हमारे यहा पर तब चपरासी नही रखे जाते थे, सब कार्य मन्त्री स्वय करता था) चटाईयाँ बिछा देते लैम्प जलाकार रख देते सत्सग मे कथा कहते और पुन स्वय सारा सामान बन्द कर सबसे अन्त मे जाते थे। सर्दी-गर्मी कोई भी ऋतु उनकी दिन-चर्या मे बाधक नहीं होती थी। एक बार चुनाव हुआ धर्मवीर जी ने कहा कि मैं इस वर्ष मन्त्री पद नही लूगा, हमने कहा इससे तो समाज बन्द हो जाएगा, आपके बिना कौन समाज खोलेगा पानी भरेगा, सफाई करेगा, बीच मे वे हमे टोककर बोले तो आप क्या समझते हैं कि मैं यह सब मन्त्री होने के कारण करता हूँ। यदि ऐसा है तो मैं ईमानदार आर्य नही, मुझे आत्मनिरीक्षण करने दो कि क्या मैं यह सब सेवा मन्त्री के नाते करता हू अथवा मन्त्री न रहकर भी करता हू आप निश्चिन्त रहें सारा कार्य मैं स्वय करूगा परन्तु मन्त्री किसी और को चुन लीजिए ताकि मैं अपनी ईमानदारी को परख सकू सभा मे सन्नाटा छा गया और मेरा मस्तिष्क मन्त्री धर्मवीर जी की इस समस्या के सम्मुख नत हो गया। काश! आज हम ऐसा आदर्श अपना देखें।

जीवन की गाथा लम्बी है, घटनाओं से भरा जीवन किस-किस को कहूँ और किसे छोडू, यदि पाठकों ने चाहा तो शेष फिर कभी।

ओइम्-यस्मिन्नृच साम यजूंषि यस्मिन्-प्रतिष्ठता रथनाभा विवारा।
यस्मिश्चित्त सर्वमोत प्रजानां तन्मे मन शिव सकल्प मस्तु ॥ 24 ॥

य० 34। 5॥

चेतना प्राण मन

—देवनारायण भारद्वाज

कर रहे [illegible] का अर्चन, वैदिक विचारों [illegible]।
शुभ संकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

जग को ऋग्वेद ज्ञान देता
यजुर्वेद विधि कर्म सुचेता
सामवेद से प्राप्त उपासन
वेद सुजीवन सूत्र प्रणेता।

मूर्तियों से मिलन कराते मन्द, जग मे लाते हो सजीवन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

भू-अन्तरिक्ष द्यो लोक ज्ञान
वेदों के वर्णित विधि विधान
तुम से ही हमको मिल पाते
इस जगती के चेतना प्राण।

सारी चिन्ता और चेतना, तुम से ही होते सब चिन्तन।
शुभ सकल्पवान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

रथ-नाभि मध्य जैसे आरे
ओत प्रोत दे रहे सहारे
धागे के ताने बानों मे
जैसे बुन जाय वस्त्र सारे।

हो रहे कर्म मे ओत प्रोत, कृत कृत्य तुम्हारे आलिगन।
शुभ सकल्प वान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

—एफ,-42 मानसरोवर कालोनी,
रामघाट मार्ग अलीगढ-202001

वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम—

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली

यजुर्वेद पारायण यज्ञ दिनाँक 7 अगस्त सोमवार से प्रारम्भ हो चुका है, पूर्णाहुति मगलवार 14 अगस्त की प्रात 10 बजे होगी। प्रतिदिन रात्रि म महात्मा आर्य भिक्षु जी द्वारा वेद-व्याख्यान दिये जा रहे हैं।

मगलवार 14 अगस्त को योगीराज श्री कृष्ण का जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर अनेक नेतागण तथा विद्वान् सम्बोधन करेंगे।

आर्य समाज विशाखा एन्क्लेव

आर्य समाज, विशाखा एन्क्लेव, उत्तरी पीतमपुरा मे 14 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर विशेष समारोह का आयोजन किया गया है। समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती होगे।

वेद प्रचार केन्द्र

समस्त आर्य जगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय-ब्रजघाट को वेद प्रचार केन्द्र बनाने का निश्चय किया गया है। जिसमे वेद प्रचार के लिए जीवन समर्पित उपदेशक, भजनोपदेशक, वानप्रस्थी और सन्यासी स्वाध्याय और प्रचार के लिये विश्राम कर सकते हैं। भोजन व्यवस्था नि शुल्क होगी।

विद्यालय में प्रवेश प्रारम्भ है। उपदेशक बनने के इच्छुक योग्य विद्यार्थी और वानप्रस्थी शीघ्र पत्र-व्यवहार करें।

कुलाधिपति — अधिष्ठाता
पं [illegible] शास्त्री — वेदानन्द वैदिक
विद्यार्थासंमति

ब्रह्मकुटी वेदमन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट,
जिला—गाजियाबाद उ० प्र०

सम्पादकीय

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रेरणा स्रोत



महर्षि दयानन्द सरस्वती

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वराज्य विषय के विचारो से आर्य जगत् भलीभाँति परिचित है। 'स्वराज्य' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग महर्षि दयानन्द ने किया था। जबकि दादा भाई नौरोजी को तो यह शब्द 1906 मे याद आया। स्वामी जी के एतद् विषयक विचार उनके ग्रन्थो मे यतस्तत विकीर्ण हैं। 1857 मे तो स्वामी जी ने स्वय यहाँ से वहाँ घूम घूमकर जन-जागरण का कार्य किया था। यह क्रान्ति असफल हुई थी, पर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होने मनोयोग पूर्वक इस विफलता के कारणो का विश्लेषण किया तथा स्वराज्य प्राप्ति को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती 'यथाराजा, तथा प्रजा' के सिद्धान्त मे विश्वास करते थे। उनकी मान्यता थी कि यदि राजा लोग स्वाधीनता के महत्त्व को एक बार समझलें तो देश को स्वाधीन कराने मे अधिक कठिनाई का सामना नही करना पड़ेगा। अपने जीवन की सन्ध्या मे उन्होने रात-दिन यही कार्य किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पूना' मे 50 व्याख्यान दिए थे। इनमे से 15 व्याख्यानो को श्री महादेव गोविन्द रानाडे ने लिपि बद्ध कराया था। इन व्याख्यानों मे हैं छ. व्याख्यान भारत वर्ष के प्राचीन गौरव एव वर्तमान दुर्दशा के सम्बन्ध मे है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की इस व्याकुलता को आज कितने आयसमाजी समझ पाते हैं। आर्यसमाज के समारोह, उदघाटन विमोचन वार्षिकोत्सव श्रावणी के अवसर पर वेदकथाओ का आयोजन, मात्र परम्परा का निर्वाह मात्र रह गए हैं। कितने लोग हैं जो इनके प्रति सवेदन शील हैं ? अधिकारी सोचते हैं कि क्या फर्क पड़ता है कि कौन आया कौन गया। सभी कार्यक्रमो का निश्चित उददेश्य होना चाहिए। साप्ताहिक "आर्यसन्देश" का एक उद्देश्य है कि अपने पाठकों को समय समय पर वर्तमान सन्दर्भों के प्रति सचेत करना। हम गीत गाते हैं कि हम थे। अरे ! हम आज क्या हैं ?

हमारे नेताओ मे होड़ लगी है कि लाल किले पर झण्डा कौन फहराएगा। कोई इस बारे मे नहीं सोचता कि मनुष्य को सच्चरित्र होना चाहिए, उसे सत्यवादी होना चाहिए। उसे परोपकारी होना चाहिए उसे राष्ट्रवादी होना चाहिए।

क्या आज कोई रानाडे की विद्वता व बहुमुखी प्रतिभा, देश भक्ति चरित्र व विशेषताओ से प्रभावित होकर, अपने को समुन्नत करने का प्रयास करता है ? जब रानाडे के सम्पर्क मे गोखले आए तो उन्होने रानाडे को अपना गुरू माना और उन्ही के बताए मार्ग का अनुसरण किया। रानाडे पहले से ही महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग का अनुसरण कर रहे थे।

1916 मे गांधी भारत आए। वे अनेक राष्ट्रीय नेताओ से मिल। उन्हें गोखले की नीतिमत्ता एवं कुशलता ने प्रभावित किया। उन्हे उनके प्रति 'प्रथम दर्शन मे आसक्ति हुई थी। उन्होने गोखले को अपना गुरू माना। महात्मा गाधी ने गोखले के लिए लिखा था—'राजनीतिक कर्मी मे मैं जो-जो गुण चाहता था, उन सभी गुणों के निधान मुझे वही लगते थे। स्फटिक जैसे निर्मल, मेमने जैसे मृदुल, सिंह जैसे सूरमा, और अतिशयता के कारण दोष बन जाने की सीमा तक पहुँची हुई अहेतुर उदारता के धनी। इसमे मेरा कुछ भी आता जाता नही कि इसमे से वे कुछ भी न रहे हो मेरे लिए तो इतना ही काफी था कि मैं उनमे किसी भी से दोष का पता नही पा सका जिसपर कि मैं असार आपत्ति या या कुतर्क करता। मेरे लिए तो वे राजनीतिक क्षेत्र के सर्वाधिक सर्वथा पूर्ण पुरुष रहे हैं और रहेंगे।'

इस प्रकार देखते हैं कि महात्मा गाधी की परम्परा पीछे की ओर राष्ट्रीय भावना के क्षेत्र मे श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज तक जाती है और उनके माध्यम से यह गुरू विरजानन्द (1779-1868) और उनके भी गुरू स्वामी पूर्णानन्द तक पहुँचती है। गुरू पूर्णानन्द ने 5 अक्टूबर 1855 को गढ गगा के मेले पर एक सभा मे कहा था—'मुल्क को फिरगी कै भरोसे मत छोडो वे बेदीन हैं।" वे राजा नही, बल्कि तिजारती लुटेरे हैं।' स्वामी पूर्णानन्द के गुरू थे स्वामी ओमानन्द। पर उनके विचार लिपि बद्ध उपलब्ध नही हैं।

राष्ट्रीय आन्दोलन की यह वैचारिक परम्परा सुदीर्घ है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इसे सभालकर रखना सीख पाए तथा इसे सभालकर रख सकें।

—डॉ० धर्मपाल

स्वाधीनता–दिवस:

डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

(1)

स्वाधीनता-दिन स्याद्,
जनता-हिताय नित्यम्।
सुख गौरवाभिवृद्धि,
लोक श्रेयेदवसम्॥ स्वाधीनता०॥

(2)

वीरै स्व रक्त-दानै
धीरै स्व-देह दानै।
भक्तै स्व देश भक्तै,
लब्ध स्वराज्यमेतत्॥ स्वा०॥

(3)

आत्माहुति प्रदत्ता,
यै राष्ट्र-धर्म हेतो।
स्वार्थं विहाय, सर्वे
ते देव तुल्य वन्द्या॥ स्वा०॥

(4)

राष्ट्राय गौरव स्यात
तेषा स्वदेश-भक्ति।
स्वार्थार्पणेन सर्वे
स्युर्देशभक्ति-युक्ता॥ स्वा०॥

(5)

भागीरथ-श्रमेण
स्वाधीनतेयमाप्ता।
रक्ष्या च पोषणीया
निज-जीवनार्पणेन॥ स्वा०॥

(6)

देशा समेऽपि लोके,
स्वातन्त्र्य-लाभ-तुष्टा।
रक्षन्ति रक्तदानै,
स्वातन्त्र्यमेव नित्यम्॥ स्वाधीनता०॥

(7)

स्वार्थं विहाय गर्ह्यं
रक्षन्तु देशभक्ता।
भक्ता विरक्त-भावा
स्वातन्त्र्यमेव शश्वत॥स्वा०॥

(8)

स्वाधीनता सुखाना
मूल गुणोच्चयानाम्।
शक्तेर्धृतेश्च शान्ते
मानस्य गौरवस्य॥ स्वा०॥

(9)

राष्ट्र-प्रकर्ष-हेतु,
पतिताऽर्ति-नाश-हेतु।
हीनाऽऽर्त-शोक-त्राता
धान्यादि-वृद्धि हेतु॥ स्वा०॥

(10)

धन-धान्य-शान्ति-तुष्टा,
वस्त्रान्न-वास-हृष्टा।
पुष्टाश्च भारतीया.
स्युर्देशप्रेम-पूता॥ स्वा०॥

स्वाधीनता दिवस पर विशेष—

अमर शहीद ऊधम सिंह

डा० भारतेन्दु 'द्विवेदी'
अध्यक्ष, विश्व भारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर (वाराणसी)

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अपने प्राणों की बलि देने वाले अमर शहीद ऊधम सिंह का जन्म संगरुर नाम जिले के सुनाम नामक कस्बे में 26 दिसम्बर 1899 को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री टहल सिंह था। दो वर्ष की अवस्था में ही ऊधम सिंह मातृ प्रेम से बिछुड़ गये। ऊधम सिंह के दो भाई थे, चचल सिंह एवं साधू सिंह। चचल सिंह साधु हो गया था, उसने घर से अपना सबन्ध छोड़ दिया था। साधू सिंह और वीर ऊधम सिंह बड़े प्रेम से रहते थे कुछ वर्षों बाद ऊधम सिंह के पिता का स्वर्गवास हो गया था। चचल सिंह ने दोनों भाइयों को अनाथालय में भर्ती कर दिया। अब दोनों भाई साथ-साथ पढ़ते और काम सीखते थे। परन्तु देवयोग से ऊधम सिंह को इस संसार मे अकेले ही रहना था। 17 वर्ष की अवस्था में वह अपने भाई साधू सिंह से बिछुड़ गये। साधू सिंह की मृत्यु से ऊधम सिंह को अत्यधिक आघात पहुँचा। अब ऊधम सिंह इस संसार मे अकेला था।

ऊधम सिंह हसमुख व्यक्ति था, परन्तु वह प्राय विचार मग्न रहता था। एक दिन एक ज्योतिषी मित्र मडली की ओर से गुजरा। एक मित्र ने उस ज्योतिषी को बुला लिया और सबने अपना हाथ क्रमश दिखलाया। अब ऊधम सिंह की बारी थी। परन्तु वह अपने विचारों में मग्न थे। एक मित्र तारा सिंह ने कहा 'साहब बहादुर, आप भी पंडित जी को अपना हाथ दिखला दीजिए।'

ऊधम सिंह ने हसते हुए कहा, में हाथ तो नहीं दिखाउंगा। हां, यदि ज्योतिषी जी मेरा पैर देखना चाहें, तो देख सकते हैं।

ज्योतिषी ने ऊधम सिंह की ओर देखकर कहा—"बहुत अच्छा साहब बहादुर अपना पैर ही दिखाइये।" ऊधम सिंह ने जूते और मौजे उतार कर अपना पैर ज्योतिषी की ओर बढ़ा दिया। ज्योतिषी ने गभीर स्वर मे कहा—"बाबू साहब! आप बुरा तो न मानेंगे? मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा है। इस समय आपकी रेखाए देखी हैं। इसलिए जो कुछ रेखाए देखी हैं, बतानी हैं, वही कह सकता हू। ऊधम सिंह ने उत्तर दिया कि मैं सब कुछ सुन सकता हू।

उस महान ज्योतिषी ने विनम्रता पूर्वक कहा "बाबू साहब! आपके पैर देखने से मालूम होता है कि आप दो बार विदेश जाएंगे। परन्तु दूसरी बार वहां से वापस नहीं लौटेंगे। आपके हाथों द्वारा किसी का वध होगा। इस कारण आपको फासी की सजा मिलेगी।

ऊधम सिंह प्रसन्नता से हस पड़े। उनके अन्य साथी अवाक रह गये। क्योंकि इस बात के रहस्य को ऊधम सिंह जानते थे।

जलियांवाला बाग और ऊधम सिंह—राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के लिए सरकार ने रोलेक्ट एक्ट पारित किया। भारतीयों ने इसका विरोध किया। महात्मा गाधी ने इस एक्ट को काला कानून कह कर 30 मार्च 1919 से देश व्यापी आन्दोलन प्रारम्भ किया। अमृतसर की जनता ने सरकार की दमन प्रक्रिया समाप्त करने के लिए और गाधी जी के आन्दोलन को सफल बनाने के लिए जलियांवाला बाग मे बैसाखी के मेले के दिन एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया। इस सभा मे 20 हजार व्यक्ति सम्मिलित हुए। इस सभा मे देशभक्त वीर ऊधम सिंह भी सम्मलित हुआ।

उस समय पजाब में माइकेल औड्वायर प्रशासन का मुख्य अधिकारी था। और जनरल डायर सेना का कमाण्डर था।

जनरल डायर ने अपने सैनिकों के साथ बाग को चारों ओर से घेर लिया। मुख्य द्वार पर मशीनगन फिट कर ली। विशाल सभा को बिना किसी प्रकार की चेतावनी दिए मशीनगन से भूनना प्रारम्भ कर दिया। डायर जनरल जनता को अच्छी तरह देख रहा था। जहां पर व्यक्तियों की सख्या अधिक थी उसी ओर बराबर गोलियों की बौछार हो रही थी। 1650 राउंड गोलियां चलायी गयीं। किसी को भागने का अवसर न मिल पाया।

इस अवसर पर ऊधम सिंह भी स्त्री के मृत पति को ढूढने में घायल हो गये। इस गोली वर्षा मे कितने ही निर्दोष स्त्री-पुरुष और बच्चों को भून दिया गया। ऊधम सिंह ने इस दृश्य को देखकर खून का बदला खून से लेने की प्रतिज्ञा की।

इस घटना की रात्री में पूरे शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया। जिन घायलों को बचाया जा सकता था, चिकित्सा व्यवस्था न हो सकने के कारण बचाया न जा सका। कांग्रेस की जाच समिति के अनुसार इस काण्ड में 1200 मरे और 3600 घायल हुए।

सरकारी हण्टर जांच समिति के सम्मुख क्रूर एवं निर्दयी जनरल डायर ने अपना बयान देते हुए कहा "मैंने यह फैसला किया था, कि अगर मैं गोली चलाऊंगा तो फिर जम कर अच्छी तरह चलाऊंगा, जिससे कि पूरा असर पड़े।

बयान देकर लौटते समय ट्रेन में अपनी बड़ाई करते हुए कहा 'उस समय पूरा शहर मेरे रहम पर था। एक बार मेरी इच्छा हुई कि उस विद्रोही शहर को में राख के ढेर में बदल दू। फिर मुझे तरस आ गया।"

इस प्रकार की घटनाओं से ऊधम सिंह के हृदय पर तीव्र आघात पहुचा। उन्होंने भारत वर्ष के इस अत्याचार को समाप्त करने और अपने जीवन की आहुति देने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली।

सर वेलेंटाइन ने इस जलियांवाला बाग की घटना का वर्णन करते हुए कहा है—"यह ब्रिटिश भारत के इतिहास मे एक काला दिन था। ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारी इस आन्दोलन को कुचलने का अथक प्रयत्न कर रहे थे परन्तु इन प्रयत्नों ने भारतीय जनता मे स्वाधीनता के लिए मर मिटने की भावना जागृत कर दी।" मैजनी ने ठीक कहा है—"Ideas ripen uickly when qnrrished by the blood of marlyrs"

ऊधम सिंह का भारत छोड़ना—ऊधम सिंह ने अनाथालय छोड़ दिया। अनेक सघर्षों का सामना करते हुए अफ्रिका पहुचे। अफ्रिका से वे अमेरिका चले गये। अमेरिका में रहने वाले भारतीयों को सगठित किया। भारत की स्वतन्त्रता के लिए साधनों को एकत्र करने मे लग गये।

गर्म दल की ओर से भारत लौटने का निर्देश मिला। ऊधम सिंह 25 भारतीय और एक अमेरिकी महिला के साथ अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर भारत लौटे। अमेरिकी महिला ऊधम सिंह के त्याग और आदर्श को देखकर प्रभावित हो गयी थी और ऊधम सिंह के क्रान्तिकारी कार्यों मे सहयोग देने लगी थी।

एक दिन ऊधम सिंह अपने दो साथियों एव अमेरिकी महिला के साथ लाहौर से बाहर जा रहे थे। मार्ग पर पुलिस ने घेर लिया। ऊधम सिंह ने सांकेतिक भाषा में कहा कि कोई अपना सबन्ध नहीं बतलाएगा। पुलिस ने ऊधम सिंह को गिरफ्तार कर लिया। अन्य व्यक्ति पुलिस की आखो मे धूल झोक कर साफ बच गए। ऊधम सिंह के पास से 4 अमेरिकी पिस्तौल और 400 गोलिया मिली। ऊधम सिंह को 4 वर्ष की कठोर सजा हुई। परन्तु ऊधम सिंह का मन इस प्रकार की घटनाओं से जरा भी विचलित नहीं हुआ।

1932 मे वे जेल से मुक्त हुए। परन्तु अब भी पुलिस और सी०आई० डी० उनके पीछे लगी हुई थी। सी० आई० डा० की आँखों मे धूल झोंक कर एम० एम० सिंह के नाम से पासपोर्ट प्राप्त किया। वे यूरोप तथा अन्य देश होते हुए लदन पहुँचे।

लदन मे विचार मग्न रहते और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए तत्पर रहते थे। वे कभी-कभी पजाब मे रहने वाले हरनाम सिंह हलवाई के पास बैठकर विचार-विमर्श किया करते थे।

ऊधम सिंह अग्रेजों की गतिविधियों पर हमेशा नजर रखते थे। 13 मई 1940 को कैक्स्टन हाल मे प्रमुख राजनीतिज्ञों का सम्मेलन आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन मे भारत के प्रशासनिक अधिकारी भी थे। ऊधम सिंह इस सम्मेलन मे उपस्थित थे। औड्वायर ने जलियावाला बाग में किए गए कुकृत्यो को बहुत ही अच्छा कार्य बताते हुए अपनी खूब बड़ाई की। साढ़े चार बजे सभा समाप्त हुई।

ऊधम सिंह के लिए यह सुअवसर था। उन्होंने आगे बढ़कर 5-6 फायर किये। औड्वायर को दो गोलियां लगी और उसकी घटना स्थल पर मृत्यु हो गयी। पजाब के भूतपूर्व गवर्नर लुईडेन का एक हाथ टूट गया था। बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर लार्ड लिमिगटन और भारत के मत्री लार्ड जैटलैण्ड घायल हुए। गोली की आवाज सुनकर भगदड़ मच गयी। ऊधम सिंह दरवाजे की ओर से भागे। बीच में दो व्यक्तियों ने पकड़ लिया। पुलिस ऊधम सिंह को गिरफ्तार कर लिया। उनके पास एक अमेरिका रिवाल्वर, 25 राउण्ड गोली और 1 चाकू पकड़ा गया। गिरफ्तार होने पर ऊधम सिंह ने अपना नाम राम मुहम्मद सिंह आजाद बतलाया।

अब ऊधम सिंह को किसी बात की चिन्ता न थी। वे अपने उद्देश्य को पूरा कर चुके थे। ओल्ड बैली सैंट्रल क्रिमिनल्स कोर्ट में ऊधम सिंह पर मुकदमा चलाया गया। यह मुकदमा नहीं वरन् एक नाटक था।

मजिस्ट्रेट ने पूछा, तुमने ओड्वायर की हत्या क्यों की।' ऊधम सिंह ने गरजते हुए कहा—'मैंने अंग्रेजी साम्राज्य में लोगों को भूख से मरते देखा है। मैंने उसका हिंसात्मक विरोध किया है। मुझे इस बात का दुःख नहीं है। अपने देश के लिए करना मेरा परम कर्तव्य था। मुझे इसकी परवाह नहीं कि मुझे मृत्यु दण्ड या आजीवन कारावास या कालापानी की सजा दी जाएगी। मुझे मृत्यु का भय नहीं।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

रूसी विद्वान बारान्निकोव की पीड़ा—

'प्रयाग'–इलाहाबाद क्यों ?
'लक्ष्मणपुरी'-लखनऊ क्यों ?

— शिवकुमार गोयल

सोवियत संघ के प्रसिद्ध विद्वान डा० प्योमा बारान्निकोव अपने भारतीय स्वर्गीय पिता डा० एस बारान्निकोव की जन्मशताब्दी के सिलसिले मे हाल ही में भारत आए हुए थे। उन्होंने चित्रकूट में हुए रामायण सम्मेलन तथा अन्य कार्यक्रमो में भाग लिया था।

स्व० डा० एस० बारान्निकोव एक ऐसी भारतभक्त विभूति थे जिन्होने सबसे पहले रूस मे हिन्दी का प्रचार किया तथा तुलसीदासकृत श्री रामचरित मानस का रूसी भाषा में अनुवाद किया। तानाशाह स्टालिन के युग में जब उन्होंने 'श्री रामचरित मानस' को विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्रेरक ग्रंथ कहा तो उन्हें 'प्रतिक्रियावादी' तथा 'दकियानूसी' जैसी उपाधियाँ देकर घोर उपेक्षित ही नहीं किया गया अपितु मानसिक यातनाएं भी दी गई। किन्तु वे श्री रामचरित मानस तथा हिन्दी के प्रचार प्रसार में जुटे रहे थे।

डा० प्योमा बारान्निकोव भी हिन्दी तथा रामचरितमानस के प्रचार प्रसार में सक्रिय हैं। हाल ही 'सृजन' की ओर से उनका अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर श्री बारान्निकोव ने अपने भाषण मे कहा कि जब वे हिन्दुस्तान के हिन्दी हृदय उत्तर प्रदेश के नगरों मे गए तथा वहां उन्होंने विदेशी भाषा अग्रेजी के पट्ट देखे तो उन्हें भारी दुख हुआ। हिन्द की भाषा हिन्दी है और हिन्दी ससार की सर्वश्रेष्ठ-वैज्ञानिक भाषा है। स्वाधीनता के 44 वर्ष बाद भी विदेशी भाषा का प्रयोग किया जाना हिन्दुस्तानियों की मानसिक गुलामी का ज्वलत उदाहरण है। उन्होंने भावुक होकर कहा—"हिन्द ही हिन्दी है और हिन्दी ही हिन्द है। जो हिन्दी विरोधी है वह भारत-भक्त कदापि नहीं हो सकता।"

उन्होंने कहा कि वे अपने पिता को जन्मशताब्दी के सिलसिले मे चित्रकूट, प्रयाग तथा लखनऊ गए। प्रयाग मे सगम के पावन तट पर स्नान कर उन्हे अपार शांति मिली। किन्तु उन्हे उस समय अपार पीडा हुई जब पता चला कि प्राचीन नगरी 'प्रयाग' का नाम कुछ विदेशी हमलावरो ने 'इलाहबाद' कर दिया था। भगवान श्रीराम के आदर्श भाई लक्ष्मण जी के नाम पर बसो लक्ष्मणपुरी का नाम बदलकर लखनऊ किया गया। श्री बारान्निकोव ने कहा -"प्राचीन नगरो के नाम हमलावरो द्वारा बदल दिए गए परन्तु स्वाधीनता के बाद उन्हें पुन प्राचीन नाम दे दिए जाना चाहिए था। मैं विदेशी हू — यदि हिन्दुस्तान का नागरिक होता तो मै सबसे पहला प्रस्ताव रखता —'इलाहबाद' का नाम 'प्रयाग' तथा 'लखनऊ का नाम लक्ष्मणपुरी' किया जाए।

समारोह के बाद चाय-पान के समय जब मैंने श्री बारान्निकोव से कहा—"इन नामों के साथ-साथ विदेशी हमलावरों ने श्रीराम जी की जन्मभूमि को तोड़कर मस्जिद में बदल दिया था। इस बारे मे क्या विचार है ?" तो वे गम्भीर हो उठे। उन्होंने स्पष्ट कहा 'भारत की महिमा भगवान श्रीराम से है, न किसी विदेशी हमलावर से। अत करोड़ों व्यक्तियो के प्रेरणा-स्रोत श्रीराम की जन्मभूमि राम-भक्तों की धरोहर है। उस पर विदेशी दासता बने रहने का कोई औचित्य नहीं हो सकता।'

इन शब्दों को सुनकर मैं सोचता रहा कि रूस जैसे देश के एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान की आँखें तो हमारी भाषायी तथा सास्कृतिक दासता को देखकर नम हो जाती हैं किन्तु भारतीयों को क्या कहे जो 'धर्म-निरपेक्षता' के नाम पर विदेशी भाषा तथा विदेशी दासता के इन प्रतीकों पर गर्व करते हैं तथा उन्हें शर्म नहीं आती।

('पाचजन्य' से साभार)

वीरों का इतिहास

—ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति परमाणु
ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय (हि० मा०)
रावत भाटा कोटा

वीरो का इतिहास हृदय-सिंहासन पर धरना होगा,
अन्तरतम के विस्फारित नयनों से उसे पढ़ना होगा।

त्याग और बलिदान, क्रूर हाथों की निमम मारें,
दिखलाई पड़ते थे बासर मे जब नभ के तारे,
मानस मे उन सब भावों को एक-एक भरना होगा। 1।

सत्तावन का समर शौर्य वीरत्व अगना का वह,
यौवन की सरिता में लहू की धारा थी जब गई बह,
अगारो से युक्त राह पर अवसर पर चलना होगा। 2।

शिवा, प्रताप का राष्ट्रप्रेम मुगलों से लोहा लेना,
मातृभूमि के लिए निछावर जीवन का कर देना,
स्वर्णधरा के लिए वही उत्साह-प्रेम रखना होगा। 3।

स्वतत्रता की आग पुन जब भारत में भभकी,
दीवानों के रग-रग मे चिनगारी उसकी धधकी,
उसकी रक्षा-हेतु कमर कसकर उद्यत रहना होगा। 4।

जेलों की यन्त्रणा और युवकों की निर्दय फाँसी,
पशुवत जीवन जीने को मजबूर थे भारतवासी,
अमर शहीदों की वीरकथा प्रात साय कहना होगा। 5।

सजा मिली काले पानी की निर्जन टापू हुए सजन,
गोली, बेंतमार खा-खाकर किए थे अत्याचार शमन,
वह सारा बलिदान स्वच्छ मन से स्मरण करना होगा। 6।

बिस्मिल बोस, आजाद, भगत के जीवन की कुर्बानी,
जलियावाला बाग की दारुण हत्या की वह कहानी,
देश-धर्म के लिए प्राण उन जैसे ही तजना होगा। 7।

रक्षा, शान्ति, एकसूत्रता, स्वतत्रता-फुलवारी,
निर्भयता, आनन्द, कल्पना स्वर्गिक सुख की मारी,
इसके लिए समस्त दुराचारो से डट लड़ना होगा। 8।

(शेष पृष्ठ 4 का)

बुढ़ापे तक मरने के इतजार से क्या फायदा ? जवान रहते हा मर जाना चाहिए यही ठीक है और मे यही कर रहा हू।'

कोर्ट ने फासी की सजा सुना दी जो कि पहले से निश्चित कर रखी थी। 12 जून 1940 को इस भारतीय वीर को पेंटन विल जेल मे फासी की सजा दी गयी। इस भारतीय शहीद की अस्थियां 34 वर्षो तक लदन के एक जेल मे रखा गया। 34 वर्षों बाद 19 जुलाई 1974 को ऊधम सिंह का अस्थि कलश भारत आया। जनता ने अस्थि-कलश का भव्य स्वागत किया। देश के विभिन्न नेताओं ने एव जनता ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

डैनियल वेबस्टर की निम्न पक्तियां ऊधम सिंह की जीवन पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती हैं—Let our object be, our country, our whole country and nothing our country,

ऊधम सिंह को मौत की चिन्ता नही वरन् देश की चिन्ता थी भारत को ऐसे वीरों पर गर्व है। इन शहीदों का नाम भारतीय इतिहास मे लिखे जाने पर भारतीय इतिहास सूय के समान तेजवान हो उठता है। देश ऐसे वीरो का देवताओं की भांति सम्मान करता है।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥
'स्वदेश', सन् 1920 से साभार

स्वराज्य के लिये आत्म-बलि हम न करेंगे।
जिस स्वदेश में जियें, उसी पर सदा मरेंगे॥
'स्वदेश', सन् 1920 से साभार

फिरौती

डा० सारस्वत मोहन "मनीषी"
प्रवक्ता

आँगन सविधान ससद दुकान मकान फिरौती मे ।
माँगेंगे तो दे देंगे ये हिन्दुस्तान फिरौती में ।

अरे 'विश्व के नाथ, बहुत लाशें हैं तेरे कन्धों पर,
चमन नहीं ऐसे में तो मिलता श्मशान फिरौती मे ।

एक रूबिया जाती लेकिन कह वतन की बच जाती,
अब किस किस को लोगे देकर खालिस्तान फिरौती में ।

पूरी शल्य क्रिया के बिना नही नासूर ठीक होगा,
एक-एक कर चला जाएगा सब समान फिरौती में ।

नीति शिवा की प्रण राणा का लक्ष्मी की ललकार लिए,
जो चलता निर्भय उसको मिलता उद्यान फिरौती मे ।

नया सूर्य उगने पर भी अधेरा बढ़ता जाता है,
साथ-साथ गोली के अब तो बढ़ा समान फिरौती में,

बुलेट और बैलेट की सन्धि हो गई तुम क्या कर लोगे,
'साहब' को 'आनन्द' दे रहा 'पुर' अभिमान फिरौती में ।

चार मरे तो हुआ न कुछ भी जीवित कई हजार अभी,
'सत सिपाही, ने न दिया अपना सम्मान फिरौती में ।

गये देखने वाले तुम भी क्या देखोगे क्या जाने,
सबकी दृष्टि 'मनीषी, तुम पर लगी समान फिरौती में ।

—3-कल्पना कालोनी, डी ए वी परिसर,
अबोहर, पजाब

दिवगत आर्य श्रेष्ठी—

स्मृति दिवस 14 अगस्त के अवसर पर—

श्री अर्जुन देव बगाई

आपका जन्म सन् 1902 ई० मे झग (पाकिस्तान) मे हुआ । पिता श्री रामदित्ता मल सुशिक्षित आर्य थे और इन्स्पैक्टर ऑफ स्कूल के पद पर कार्यरत थे। अर्जुनदेव जी की शिक्षा डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर मे हुई और पजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने बी०ए० एव एल-एल०बी० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। वे पजाब के आर्य समाजो से सम्बद्ध मुकद्दमों की उत्साह व लगन के साथ पैरवी किया करते थे। पजाब हाईकोर्ट मे जब सत्यार्थप्रकाश की जब्ती को लेकर मुकद्दमा चला, तो श्री अर्जुनदेव बगई, रायबहादुर दीवान बद्रीराम, जो इस मुकद्दमे मे आर्यसमाज के सीनियर वकील थे, के साथ सम्बद्ध होकर मुकद्दमे मे पैरवी को तत्पर रहे।

आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। वे सभा की ओर से मिण्टगुमरी, लाहौर, टोबा टेकसिंह और झकाडा में अनेक आर्य-सस्थाओं के व्यवस्थापक थे । अपने भाई श्री सन्तलाल विद्यार्थी के साथ वे जीवन-पर्यन्त आर्य-समाज के कार्यकलाप मे उत्साहपूर्वक भाग लेते रहे । हैदराबाद के सत्याग्रह मे उनका सक्रिय योगदान था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी वेदानन्द, पण्डित चमूपति, पण्डित बुद्धदेव, महाशय कृष्ण, पण्डित विश्वम्भरनाथ, लाला नारायणदत्त, प० ठाकुरदत्त (अमृतधारा), जस्टिस मेहरचन्द्र महाजन, सर गोकुलचन्द नारग और सर बख्शी टेकचन्द सदृश आर्य नेताओं के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था, और वे इनके सहयोगी थे ।

भारत के विभाजन के समय 14 अगस्त 1947 को लाहौर में उन्पर आततायियों ने आक्रमण कर दिया और लाहौर में ही वे असमय में दिवगत हो गए ।

आपके पुत्र, पुत्री और पौत्र आदि सभी आर्यसमाज के लिये समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं। आपके पुत्र श्री प्राणनाथ बगाई IC, M I G फ्लैट जे-ब्लाक अशोक विहार नई दिल्ली-52 में रह रहे हैं।

श्रीमती केसरबाई जी भी समाज के कार्यों में उन्हें सहयोग देती रहती हैं।

श्री ओमप्रकाश राजपाल—6 दिसम्बर 1930 ई० को पना आकिल (सिन्ध पाकिस्तान) में जन्म। प्रारम्भ से ही आर्यसमाज के कार्य में रुचि और उसके कार्यकलाप मे उत्साहपूर्वक योगदान। भारत के विभाजन के पश्चात् बिहार में बस गये और रक्सौल को अपना कार्यक्षेत्र बनाया । रक्सौल आर्यसमाज के प्रधान तथा बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा के सदस्य हैं। नेपाल मे वैदिक धर्म के प्रचार के लिए विशेष उत्साह है। आर्यसमाज के सभी आन्दोलनों—हिन्दी सत्याग्रह, गोरक्षा अभियान आदि मे इनका सक्रिय योगदान रहा है ।

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक—जन्म नाम बलवन्त सिह । शेरकोट (जिला बिजनौर, उत्तर प्रदेश) के एक कृषक परिवार में जन्म। युवावस्था में आर्यसमाज से सम्पर्क और श्री किशनस्वरूप आर्य द्वारा सत्यार्थप्रकाश की प्राप्ति । उससे प्रभावित हो अन्य वैदिक साहित्य तथा सस्कृत भाषा का अध्ययन एव शेरकोट आर्यसमाज के कार्यकलाप मे उत्साह के साथ योगदान प्रारम्भ। आर्यसमाज शेरकोट के विविध पदो पर कार्य करने के साथ-साथ बिजनौर-गढवाल जनपदीय आर्योपप्रतिनिधि सभा के उपदेशक विभाग के अधिष्ठाता भी (1951 ई०)। क्योंकि वह उपदेशक के कार्य में रत थे, जो ब्राह्मणोचित कार्य है, अत सन् 1952 में क्षत्रियोचित नाम बलवन्त सिह को बदलकर वेदव्रत नाम स्वीकार कर लिया। सन् 1957 ई० मे पजाब में हिन्दी सत्याग्रह मे भाग लेने के कारण जब राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री जेल चले गये, तो उनका सब कार्यभार वेदव्रत जी ने सभाल लिया और राजस्थान में सत्याग्रह के लिए स्वयसेवक भरती करने तथा धन एकत्र करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। 20 जुलाई सन् 1959ई० को सन्यास आश्रम की दीक्षाग्रहण कर स्वामी वेदमुनि परिव्राजक नाम से विख्यात हुए, और अपना जीवन वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। अत्यन्त निर्भीक प्रचारक तथा विधर्मियों की उग्र आलोचना के लिए सदा तत्पर। इसी कारण मुसलमानों तथा पौराणिकों द्वारा अनेक बार हमले तथा हत्या के प्रयत्न। वैदिक धर्म तथा आर्य सस्थाओं पर "सरिता" द्वारा किये जाने वाले अनर्गल आक्षेपों का उत्तर देने के लिए "पुण्यलोक" पत्रिका का प्रकाशन। स्वामी जी की सत्यार्थप्रकाश पर अगाध श्रद्धा। युवावस्था में 19 बार उसका पाठ सन् 1955 ईसवी में बीसवी बार पढ़कर उसके वास्तविक महत्त्व का बोध, एव उसके प्रचार के लिए सतत् प्रयत्नशील। नजीबाबाद मे "वैदिक संस्थान" की स्थापना, जो वैदिक साहित्य के प्रकाशन तथा प्रचार और आर्यसमाज की गतिविधि का महत्वपूर्ण केन्द्र है।

प० महादेव जाँगिड—राजस्थान के नागौर जिले के जूमरी गाँव म जन्म। पिता पण्डित मूलचन्द जाँगिड धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। 18 वर्ष की आयु में महादेव जी अर्थ-उपार्जन के लिए जोधपुर आ गये। वहाँ वह आर्यसमाज के सम्पर्क मे आये और सत्यार्थप्रकाश पढ़कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के श्रद्धालु अनुयायी तथा आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता बन गये। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए तन-मन-धन से समर्पित। उनका सारा परिवार आस्थावान् आर्यसमाजी है और सब कोई समाज के कार्यों में उत्साह के साथ भाग लेते हैं।

प० [illegible] जाँगिड—सन् 1926 ई० में ग्राम पायली (जिला नागौर राजस्थान)

×

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य

1	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम द्वितीय) प्रत्येक	1 50
3	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)	2 00
4	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक—	3 00
10	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक—	4 00
12	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)	5 00
13	धर्मवीर हकीकत राय वैद्य गुरुदत्त	5 00
14	फ्लैश आफ ट्रुथ डा० सत्यकाम वर्मा	2 00
15	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश ,, ,,	2 00
16	एनाटोमी आफ वेदान्त स्वा० विद्यानन्द सरस्वती	5 00
17	आर्यों का आदि देश ,, ,,	2 00
18	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद ,, ,,	25 00
19	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स ,, ,,	2 00
20	चत्वारो वै वेदा ,, ,,	5 00
21	द्वैतसिद्धि ,, ,,	5 00
22	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे —डा० धर्मपाल, डा० गोयनका	20.00
23	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका— प० सच्चिदानन्द शास्त्री	5.00
24	हसता चल, हसाता चल स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती	6 50
25	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)	50/-रु० सैकडा
26	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)	50/-रु० सैकडा
27	मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम (ट्रैक्ट)	50/-रु० सैकडा
28	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)	50/-रु० सैकडा
29	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या) डा० रघुवीर	50/-रु० सैकडा

नोट—उपरोक्त सभी पुस्तकों पर 15 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा। पुस्तक प्राप्ति स्थान— दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

R. N. No 32387/77 Post in N D P S O on 9, 10 8 1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३६

श्रावणी पर वैदिक ग्रन्थों पर भारी छूट

1 'भूमिका भास्कर' भाग 1 2 — 300.00
ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का विस्तृत भाष्य
लेखक—विद्यानन्द सरस्वती

2 आर्यों का आदिदेश और उनकी सभ्यता
विद्यानन्द सरस्वती

3 वैदिक पीयूषधारा—देवेन्द्र कुमार कपूर 15 00

375 00

15 सितम्बर तक ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजने वालों को रु० 375.00 की बजाय डाक व्यय सहित पूरा सेट केवल दो सौ पचास रुपये (रु० 250 /-) में भेजा जायेगा।

पता—इन्टरनेशनल आर्यन फाउन्डेशन
302 कैप्टन विला, माउन्ट मेरी रोड,
बान्द्रा (प०) बम्बई-400050

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार-(उत्तरप्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली। फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
दिग्दर्शन प्रेस कंपोजिंग एजेन्सी जोनपुर दिल्ली ३० में मुद्रित। रजि० नं० डी (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यसन्देश

वर्ष १३ अंक ४४ | रविवार अगस्त ९९० | विक्रम सम्वत् ०७ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् ९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक— रुपये | आजीवन ५० रुपये | विदेश में १० पाउण्ड १०० डालर | | १५०

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह अर्धशताब्दी समापनसमारोह सम्पन्न

आर्यसन्देश के विशेषांक का लोकार्पण

नई दिल्ली १७ अगस्त १९९० दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आज विट्ठलभाई पटेल हाउस के सभागार में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह (सन् १९३९) की ठीक ५१ वर्ष पूर्ण होने पर बलिदानी आर्यवीरों को पूर्ण श्रद्धा के साथ स्मरणकर उन्हें आर्यजगत की ओर से श्रद्धाञ्जलि भेंट की गयी तथा उनके बलिदानों से प्रेरणा लेने का सकल्प किया गया।

समारोह की अध्यक्षता हैदराबाद के वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान माननीय श्री पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने की। उन्होंने हैदराबाद के तत्कालीन निजाम के क्रूर नृशंस अत्याचारों का सजीव चित्रण कर उपस्थित आर्य जनसमूह को भाव विभोर कर दिया। आपने इस अवसर के लिए प्रकाशित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र आर्य सन्देश के विशेषांक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशती स्मृति अंक का लोकार्पण किया तथा कहा कि अंक में संकलित ऐतिहासिक सामग्री के कारण यह विशेषांक प्रबुद्ध आर्यजनों तथा इतिहासकारों के लिए ऐतिहासिक दस्तावेज बन गया है।

आर्यजगत् के सम्पादक और हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के प्रथम जत्थे के नायक श्री पं० क्षितीश वेदालंकार ने सत्याग्रह के तत्कालीन वातावरण का उल्लेख करते हुए कहा कि उस समय अधिकांश राजनीतिक नेता आर्यसमाज के इस सत्याग्रह को साम्प्रदायिक समझते थे। इसीलिए आर्यसमाज का सत्याग्रह शुरू होते ही स्टेट कांग्रेस का सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया था। पर आर्यसमाज का यह सत्याग्रह इतना अनुपम इतना दूरगामी इतना अहिंसक और हिन्दू संगठन शक्ति का इतना परिचायक था कि सब राजनीतिक नेता चकित रह गये। स्वयं अहिंसात्मक सत्याग्रह के प्रवर्तक महात्मा गांधी ने इस सत्याग्रह को अपने लिए ईर्ष्या की वस्तु माना और आर्यसमाज के राष्ट्रीय तथा असाम्प्रदायिक रूप की प्रशंसा की।

उन्होंने इस समय के दो विशिष्ट संस्मरण सुनाते हुए कहा कि जो निजाम सारे भारत में इस्लामी राज्य की स्थापना करके स्वयं उसका खलीफा या शहंशाह बनना चाहता था उसके सारे षडयन्त्र को सत्याग्रह ने विफल कर दिया। राजनीतिक दूरदर्शिता का तकाजा यह था कि हैदराबाद के भारत संघ में विलय के पश्चात् इस रियासत के इस्लामी चरित्र को बदला जाता। सरदार पटेल ने हैदराबाद, भोपाल, जूनागढ़ आदि मुस्लिम रियासतों में यही नीति अपनाई और उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त की। यदि कश्मीर में पंजाब से आए शरणार्थियों को बसा दिया जाता तो कश्मीर का इस्लामी चरित्र पर अंकुश लग जाता। पर नेहरू जी में यह दूरदर्शिता नहीं थी। इसी का दण्ड अब इस देश को आतंकवाद के रूप में भुगतना पड़ रहा है।

स्मरणीय है कि जनवरी १९३९ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्यसमाज ने एक प्रचण्ड अहिंसक आन्दोलन हैदराबाद रियासत द्वारा मानवाधिकारों का ध्वंस करने के विरुद्ध किया था जो आठ मास तक चला जिसमें हजार आर्यवीरों ने निजाम की जेलों में घोर यातनाएं झेलीं और अनेक युवकों ने अपना बलिदान दिया था और अन्ततः आज से ठीक ५१ वर्ष पूर्व १७ अगस्त १९३९ को उस्मान अली को विवश होकर और अपनी हठधर्मिता का त्याग कर आर्य सत्याग्रहियों का ससम्मान छोड़ना पड़ा था और आर्यसमाज की मांगों को मानना पड़ा था।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् द्वारा सहन की गयी निजामी क्रूरता की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्हें जिन्दा शहीद बताया।

समारोह में हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह, कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार, सांसद श्री सोमपाल सिंह, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की संरक्षिका श्रीमती कृष्णा चड्ढा, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आदि ने भी हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण देकर आर्य नेताओं तथा सत्याग्रह सेनानियों को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

सभा मन्त्री श्री सूर्यदेव ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया तथा प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्य सत्याग्रह की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित विद्वानों, नेताओं, आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं का स्वागत तथा आभार व्यक्त किया।

समस्त आर्यजगत में वेदप्रचार सप्ताह

श्रावणीपर्व, संस्कृत दिवस, हैदराबाद विजय दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी तथा स्वतन्त्रता दिवस के आयोजनों की धूम

प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर बृहद् यज्ञों से सुवासित

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

ईश्वर प्रार्थनोपासना

मन्त्रों का काव्यानुवाद

—आचार्य रविदत्त 'गौतम'
एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत)

**१. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रन्तन्न आ सुव ।**

(यजु० ३० । ३)

जगसर्जक शुद्धस्वरूप वरद प्रभु विनय नम्र स्वीकार करो ।
सब दुर्गुण दुख व दुर्व्यसनो के दुरितो से उद्धार करो ।
जो श्रेय भरे गुण कर्म स्वभाव है मन मन मे सचार करो ।
इन भद्र सुखो के वैभव म जन जीवन के भण्डार भरो ।

सत्प्रेरक पोषक परमपिता सब दुरित हमारे दूर करो ।
और भद्र सुखो के वैभव से जन जीवन के भण्डार भरो ।
हो अतुल शक्ति के धाम तुम्ही करुणामय बन सब क्लेश हरो ।
सद्भाव सुगन्धित हम सब के शुभ मानस मन्दिर मे विचरो ।

**२. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।**
(यजु० १३ । ४)

ज्योति सन्धारक ज्योति पुञ्ज था सृष्टि पूर्व सबका सविता ।
उत्पन्न सभी सचराचर का वह रक्षक पालक परमपिता ।
धारण कर भू द्यौ अन्तरिक्ष जो है सबका नियमन करता ।
सबकी नियमित प्रचलित परिधि म शक्ति स्रोत सबमे भरता ।

उस सुख स्वरूप परिशुद्ध प्रभु की भक्ति विशेष करे हम सब ।
सब योग यज्ञमय शुभकर्मो का नित नैवेद्य धरे हम सब ।

**३. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।**
(यजु० २५ । १३)

जो आत्म-ज्ञान तनु बल देकर करता जीवन के दुरित दमन ।
जिसकी महिमा को विश्व देव करते ह प्रति पल नम्र नमन ।
प्रत्यक्ष सत्य जिसका शासन और न्याय करे स्वीकार सदा ।
जिसकी छाया है मोक्ष रूप विस्मृति मृत्यु दुख द्वार सदा ।
उस सुख स्वरूप श्रुति ज्ञान प्रकाशक प्रभुवर को हम प्राप्त करे ।
परिशुद्ध आत्म अन्तर्मन से नित उसकी आज्ञा मे विचरे ।

**४. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।**
(यजु० २३ । ३)

जो प्राणवान् निष्प्राण जगत का महामहिम इक शासक ह ।
जो मानव पशु और प्राणि वर्ग का स्रष्टा देह विकासक है ।
जिसकी करुणा सब जीव जगत् पर शान्ति सुखा की वर्षक है ।
उत्तम कर्मों से प्राप्य वही प्रभु हम सबका सरक्षक है ।

**५. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।**
(यजु० ३२ । ६)

वह सूर्य आदि सब ज्योति लोक और सौम्य मही धारण कर्ता ।
स्वर्गीय सुखा के दिव्य स्रोत उस मोक्ष धाम का है भर्त्ता ।
इस नभ अनन्त की परिधि मे जो लोक अनेक बनाता है ।
अपने अनुपम कौशल मे सबको खग समान भरमाता है ।
उस सुखद वरद वरणीय प्रभु का सब मिल प्रतिपल ध्यान करे ।
अपना सब कुछ अर्पित करके अनुपम स्नेहामृत पान करे ।

**ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥**
(यजु० ३४ । ६)

मन वेग वान

—देवनारायण भारद्वाज

है अश्व शक्ति मे शक्ति बडी, अति वेग वान है सचालन ।
शुभ सकल्पवान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥
कुशल सारथी बैठ पीठ पर
अपने हाथ लगाम खीच कर
जिधर चाहता उधर घुमाता
बली अश्व को सहज जीत कर ।
वैसे ही मन, मनुज पीठ पर, कर ले तो हो सहज नियन्त्रण ।
शुभ सकल्पवान बन जाओ, मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥
वश करते सभी मनुष्यो को
कृश-सबल दीर्घ या ह्रस्वा को
चाह जहा उन्हे भटकाते
ज्यो गुरु लोभी निज शिष्या को ।
तुमसे नही नियन्त्रित हो, बैठ तुम्ही पर करे सन्तरण ।
शुभ सकल्पवान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥
तुम बडे शीघ्र गामी अविकल
अति अस्थिर धावक मन चञ्चल
निश्चय ही बलवान बहुत हो
किन्तु मनीषी करते अविचल ।
हे प्यारे नाथ कृपा करना, दुर्जन नही बने मन मज्जन ।
शुभ सकल्पवान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन ॥

—एफ-४७ मानसरोवर कालोनी
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००१

**६. प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।**
(ऋग्० १० । १२१ । १०)

हे विश्वनाथ ! जो जड चेतन जग मे पदार्थ है मूर्तिमान् ।
तेरे सन्मुख सब नतमस्तक सर्वोपरि तू करुणा निधान ।
हम करे कामना जिस जिसकी तेरे आश्रय मे ह भगवान् ।
उस पुण्यभरे वैभव स हम सब बने पिता शाश्वत धनवान् ।

**७. स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।**
(यजु० ३२ । १०)

आनन्द कन्द प्रभु हम सबके सद्बन्धु पिता व विधाता है ।
वे सकल लोक के नाम धाम और जन्म कर्म के ज्ञाता है ।
जहा मुक्त देवगण सत्व निष्ठ प्रमुदित स्वच्छन्द विचरते है ।
जिस शाश्वत सात्विक मोक्षधाम की सभी कामना करते है ।
उस अक्षय सुख के स्रोत प्रभु की हम उपासना किया करें ।
करके उसका सान्निध्य लाभ प्रेमामृत प्रतिपल पिया करे ।

**८. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।**
(यजु० ४० । १६)

हे ज्योतिर्मय ! सद्ज्ञान रूप ! तुम सर्व सुखा के दाता हो ।
तुम विश्व ज्योति विद्या निधान सबके सर्वस्व विधाता हो ।
हम पुण्य मार्ग से ही प्रभुवर ऐश्वर्य राज्य सब प्राप्त करे ।
निज मन के कोने कोने से दुष्पाप के भाव समाप्त करे ।
तुम प्रेरक सुपथ प्रदर्शक बन प्रभु हम सबका उद्धार करो ।
बहु नम्र नमस्कृति हम सबकी हे परमपिता स्वीकार करो ।

—७३७, डा० मुखर्जी नगर, दिल्ली-११०००९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आर्य सन्देश



पिछले एक वर्ष में आर्य सन्देश ने डा० सत्यकेतु स्मृति अंक, ऋषि निर्वाण अंक, श्रद्धानन्द बलिदान अंक, ऋषि बोध अंक, आर्यसमाज स्थापना अंक, गुरुदत्त स्मृति अंक और अब हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्द्धशताब्दी स्मृति अंक आर्यजगत् को भेंट किया है। हमें प्रसन्नता है कि आर्य विद्वानों, लेखकों, कवियों, कार्यकर्त्ताओं और हमारे सुधी पाठकों ने इन सभी विशेषांकों को अपना असीम प्यार दिया है।

जैसा कि प्रायः होता है, प्रेस मालिकों ने हमारे इस अभियान के मार्ग में समय-समय पर अनेक व्यवधान खड़े किए। यहां तक हुआ, जो चाहा, जहां चाहा छाप दिया। फलस्वरूप अनेक लेखकों और पाठकों को जहां असुविधा हुई वहां हमें आत्मग्लानि का अनुभव हुआ। हमें प्रसन्नता है कि आर्यजगत की प्रमुख संस्था सार्वदेशिक प्रेस जिसने कई दशकों तक आर्य सामाजिक साहित्य के प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, ने आर्य सन्देश को नियमित रूप से प्रकाशित करने का भार स्वीकार कर लिया है।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशती स्मृति अंक

आर्य सन्देश का १९ अगस्त १९९० का अंक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशती स्मृति अंक के रूप में प्रकाशित कर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने वचन को पूरा कर दिया है। २३६ पृष्ठों के इस विशेषांक का लोकार्पण १७ अगस्त १९९० को विट्ठलभाई पटेल हाउस के सभागार में समारोहपूर्वक किया गया तथा विशेषांक सभी ग्राहकों, विद्वानों, लेखकों तथा आर्य संस्थाओं को उसी दिन डाक द्वारा भेज दिया गया।

विशेषांक कैसा बना, यह राष्ट्र के कोने कोने में बैठे हमारे विज्ञ पाठकों की प्रतिक्रियाओं से पता लगेगा। फिलहाल दिल्ली के अनेक आर्य विद्वानों, लेखकों और कार्यकर्त्ताओं ने व्यक्तिगत रूप से मिलकर अथवा दूरभाष के माध्यम से अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। हम सभी के आभारी हैं।

क्षमा याचना

श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डा० कपिलदेव द्विवेदी, श्री ओमप्रकाश भवर, श्री सर्वेन्द्र शास्त्री, आचार्य वेदभूषण, कु० प्रतिमा देवदर्शनी, श्रीमती भगवती ओबराय, श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, श्री पन्नालाल पीयूष, श्री भगवानदेव चैतन्य, श्री गंगाप्रसाद विद्यार्थी, श्री नन्दलाल निर्भय के लेख, संस्मरण, काव्य-रचनाओं के अतिरिक्त स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय, लाला देशबन्धु गुप्त, प्रो० सुधाकर, पण्डित रामचन्द्र राव वन्देमातरम् द्वारा की गयी उल्लेखनीय सेवाओं का विवरण तथा अन्य अनेक तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं के विवरण जो हम तैयार कर चुके थे, समयाभाव तथा विशेषांक के पृष्ठों की निश्चित सीमा के कारण प्रकाशित नहीं कर सके। अतएव सभी विद्वान लेखकों और कवियों से हम क्षमा चाहते हैं। यदि व्यवस्था बनी, तो यह सामग्री किसी अन्य उचित अवसर पर पाठकों को भेंट करेंगे।

—मूलचन्द गुप्त

श्रीमती शकुन्तला आर्या का स्पष्टीकरण

दिनांक ७-८-९० को दीवान हाल में प्रान्तीय आर्य महिला सभा की अधिकारिणियों की विशेष बैठक हुई, इसमें प्रान्तीय आर्य महिला सभा की अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या ने कहा, कि मैंने तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का किसी भी रूप में समर्थन नहीं किया। समाचार पत्रों में जो कुछ आया है, मैं नहीं समझती ऐसा क्यों दिया गया। मेरा भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा से कोई सम्बन्ध नहीं और न रहेगा। —कृष्णा चड्ढा, सभा मन्त्रिणी

आंधियों मे दीपक जलाओ साथियो।

—डा० सारस्वत मोहन 'मनीषी'

दिल से अन्धेरे को भगाओ साथियो।
आंधियो मे दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश मे न जाओ साथियो।
बातियां को खून मे डुबाओ साथियो।

वायदा करो तो पूरा होना चाहिए। मांग भरदो तो नहीं रोना चाहिए।
यदि आग लगी आपके पड़ौस में। चैन की न नींद कभी सोना चाहिए।
बेटी न किसी की भी सतानी चाहिए। टी०वी०फ्रिज हेतु न जलानी चाहिए।
इतनी समझ हमें आनी चाहिए। लड़की न लकड़ी बनानी चाहिए।

डोलियां न अर्थियां बनाओ साथियो।
उतना ही खाओ जो कमाओ साथियो।

प्यास न बुझा सके वो पानी नहीं है। विश्व भूल जाए वो कहानी नहीं है।
खून का नाम तो रवानी नहीं है। हार मान बैठे वो जवानी नहीं है।
नीतिहीन बातें सब छोड़ दीजिए। टूटी हुई माला फिर जोड़ दीजिए।
वेदना में अमृत निचोड़ दीजिए। क्षमा की कलाइयां मरोड़ दीजिए।

गिरे हुए दीन को उठाओ साथियो।
सस्ता के जीत को बचाओ साथियो।

लक्ष्य पै न पहुंचे वो तीर नहीं है। खून पीता हो जो वो अमीर नहीं है।
सत्य बेचता हो वो फकीर नहीं है। झूठ बोलता हो वो कबीर नहीं है।
प्यार के बिना तो जिंदगी अनाथ है। साथ छूट जाए वो भी कोई साथ है।
व्यर्थ में झुका रहे वो कैसा माथ है। उन्नति का नाम नहीं फुटपाथ है।

प्रेम की फुहार में नहाओ साथियो।
वेदना को वन्दना बनाओ साथियो।

जनता को लूटे वो सिपाही नहीं है। लिखन से मुकरे वो स्याही नहीं है।
रास्ते को दोष दे वो राही नहीं है। प्यास को बढ़ाए वो सुराही नहीं है।
सांच को यहां कभी भी आंच नहीं है। आंच में जले वो सांच नहीं है।
पत्थर तो पत्थर है कांच नहीं है। पक्षपाती जांच कोई जांच नहीं है।

फैशन की पुड़ियां न खाओ साथियो।
पुरखों के पुण्य को बचाओ साथियो।

दिल से अंधेरों को भगाओ साथियो। आंधियों में दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश में न जाओ साथियो। बातियां को खून में डुबाओ साथियो।

प्राध्यापक डी० ए० वी० कालेज,
अबोहर १५२११६ (पंजाब)

सम्पादक के नाम पत्र—

दूरदर्शन की तुष्टिकरण नीति

आजकल दूरदर्शन के प्रसारण प्रायः राष्ट्र की मुख्य धारा से कोसों दूर होते हैं। एक विशिष्ट वर्ग के तुष्टिकरण के लिए ही अधिकांश कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। भारत के राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त या जयशंकर प्रसाद और महाकवि निराला जिनकी एक एक पंक्ति में राष्ट्रीय स्वाभिमान छलकता था, दूरदर्शन की दृष्टि में बहुत परे हैं। बस गालिब और उसके साथी फारसी अरबी का गल्बा दूरदर्शन पर छाया रहता है।

भारत में मुस्लिम शासकों के सीरियल भी चलते रहते हैं। ८ जून को रामपुर के नवाबों पर सीरियल था। उनकी प्रशंसा के पुल बांधे गये जबकि सब जानते हैं कि पाकिस्तान के बड़े नेता साहबजादा याकूब खान जो पाकिस्तान में विदेश मन्त्री रहे और भारत को खाक में मिलाने के ही स्वप्न देखते हैं। वे रामपुर के खानदान के ही चिराग हैं। रामपुर के नवाबों के पुस्तकालय का जिकर किया गया। यह नहीं कहा गया कि यह पुस्तकालय भारतीय नहीं बल्कि पाकिस्तानी अधिक दीखता है।

तुष्टिकरण की यह नीति दूरदर्शन में सर्वत्र दिखाई पड़ती है। जो भी नाटक दिखाये जाते हैं उनमें हिन्दू महात्माओं को धोखेबाज, तिलकधारी तथा मन्दिर में पूजा करने वाले को बेईमान, धोती पहनने वाले को गरीबों का खून

(शेष पृष्ठ ५ पर)

दिवंगत आर्य श्रेष्ठी—श्री पं० अमरनाथ जी 'प्रेमी'

—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, अबोहर १५२११६

आर्य पत्रो मे यह सक्षिप्त सूचना पढकर बडा दुःख हुआ कि जून मास के अन्तिम सप्ताह मे श्री पण्डित अमरनाथ जी 'प्रेमी' चल बसे। वर्तमान पीढी को तो यह पता ही नही कि अमरनाथ जी 'प्रेमी' कौन थे? वह कई वर्ष से पक्षाघात के रोग से खाट पर पडे हुए थे।

श्री अमरनाथ जी 'प्रेमी' अपने समय के आर्यसमाज के सबसे लोकप्रिय भजनोपदेशको मे से एक थे। कलकत्ता से लेकर श्रीनगर और अमृतसर तक उनकी बडी माग थी। कोई भी बडा समाज ऐसा न था जो प्रेमी जी को अपने उत्सव पर बुलवा कर अपने को गौरवान्वित न समझता हो। आर्यसमाज दीवान हाल, आर्यसमाज करोलबाग और आर्यसमाज हनुमान रोड के उत्सव उनके बिना होते ही न थे। गुरुकुल कागडी वार्षिकोत्सव पर उन्हे सुनने के लिए सब उत्सुक होते थे। प्रेमी जी एक अच्छे गायक तो थे ही, आप एक अच्छे कवि भी थे।

उनकी रचनाए आज भी लोकप्रिय है। एक भजन देश-भर मे गाया जाता है —

बीहड वन मे विचर रहा था,
सच्चे शिव का मतवारा।
छोड दिया था टकारा॥

यह गीत श्री प्रेमी जी की रचना है। उनके चुने हुए गीतो का एक सग्रह फिर से छपना चाहिए।

श्री प्रेमी जी को श्री पण्डित शान्ति प्रकाश जी, महाशय चिरजीलाल जी प्रेम, पण्डित मुनीश्वर देव जी, पण्डित शिवकुमार जी शास्त्री पण्डित हरिदेव जी सिद्धान्त भूषण जैसे बडे-बडे दिग्गज विद्वानो के साथ सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त रहा। उन्हे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज स्वामी आत्मानन्द जी महाराज प० श्री बुद्धदेव जी विद्यालकार के साथ प्रचार करने का गौरव प्राप्त रहा। वह बहुत स्वाभिमानी उपदेशक थे परन्तु बडे विनम्र थे। बडे स्वच्छता प्रेमी थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के जिन उपदेशको का धोती कुर्ता बडा उजला और चमकता दिखाई देता था, आप उनमे से एक थे।

उनमे सेवा-भाव कूट-कूटकर भरा हुआ था। ईसाई लोग अपने मिशनरियो के छोटे-छोटे कार्यो का बडा प्रचार करते है और हम इस दिशा मे बडे कजूस है। प्रेमी जी की सेवा की एक घटना मैं यदा-कदा सुनाया करता हू। मै कालेज का विद्यार्थी था। महाशय चिरञ्जीलाल जी प्रेम और श्री अमरनाथ प्रेमी लेखरामनगर कादिया प्रचारार्थ पधारे। उन दिनो वहा एक दस वर्ष की आयु का लडका कही से आ टपका। बडा गन्दा। गला-सडा शरीर। मैले वस्त्र और नाक बहती रहती। मक्खिया उस पर भिनभिनाती रहती। देखकर ही जी घबराने लगता।

प्रेमी जी उसे पकडकर आर्यसमाज मन्दिर मे ले आए। प्रेम जी व प्रेमी जी ने उसके गन्दे वस्त्र न जाने कैसे उतारे। उसे अच्छी तरह स्नान कराया। हाथ से नल चलाकर प्रेमी जी ने कई बालटिया जल उस पर डाला। उसकी मैल उतरी तो नाई को बुलवाया। नाई अब भी उसे हाथ लगाने से झुकवाता था। प्रेमी जी ने उसके बाल आप काटे। उसे नये वस्त्र लेकर पहनाए। अब तो उस लडके का रूप-रग ही बदल गया। सब रोग भाग गये। स्वास्थ्य निखरने लगा। वह बोलने लगा। भाग दौड करने लग गया। एक हलवाई ने उसे नौकर रख लिया। वह हलवाई का काम भी सीख गया। उसका नाम महेन्द्र रखा गया। यह नाम सम्भवत प्रेमी जी ने ही दिया था। वह लडका अब भी कादिया या आसपास मे कही रहता होगा। उसे घूमते-फिरते देखकर लोग आर्योपदेशक प्रेमी जी की परोपकार की प्रवृत्ति का स्मरण करते हुए उनकी चिरकाल तक प्रशसा करते रहे।

उनमे सेवा भाव तो था ही, कृतज्ञता का भी भाव बहुत बडा था। एक बार उन्होने मुझे एक घटना सुनाई। गुरदासपुर जिला मे बहुत बाढ आ गई। प्रेमी जी के घर का भी कुछ भाग गिर गया। उन्हे सीमेण्ट कही से न मिला। सभा के अगले कार्यक्रमो पर जाना था। अब घर मे परिवार के लिए सिर छुपाने का स्थान नही तो प्रचार पर कैसे जावे।

आप दीना नगर दयानन्द मठ मे गये और पूज्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी से कहा कि मुझे कही से कुछ सीमेण्ट दिलवाए। उस समय मठ मे ब्रह्मचारियो के लिए कुछ कमरे बन रहे थे। स्वामी जी ने कहा, "आपको एक दो चार पाच जितने थैले सीमेण्ट चाहिए यहा से उठवाले।

प्रेमी जी ने सीमेण्ट ले लिया और स्वामी जी महाराज से पैसे पूछे।

स्वामी जी ने कहा पैसे किस बात के? यह मठ किसका है? यह तो धर्म का काम है। गृहस्थो के दान से सीमेंट यहा आया है। आप भी तो समाज का काम कर रहे है। आप प्रचार नही करेगे तो फिर समाज की हानि होगी। इस लिए सीमेंट के पैसे हम नही लेगे।'

प्रेमी जी ने मुझे कहा कि मेरे बहुत कहने-सुनने पर भी पूज्य स्वामी जी नही माने। बडी कृतज्ञता से आपने कहा, "देखो हमारे पूज्य स्वामी जी हम उपदेशको का कितना ध्यान रखते है। स्वामी जी के इस सहयोग से मेरे सारे परिवार पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा है।'

'आर्य सन्देश' के पाठक यह सुनकर प्रसन्न होगे कि श्री प्रेमी जी अपने पीछे आर्य सन्तान छोडकर गये है। उनका ज्येष्ठ पुत्र प्रिय राजेश भी वैदिक धर्म मे पूरी श्रद्धा रखता है। उसमे भी समाज सेवा का बडा भाव है। वह कुछ मास पूर्व देहली के आर्यसमाज नया बास मे रुका था। बडा सुशील युवक है।

एक बार आर्यसमाज हनुमान रोड के उत्सव की समाप्ति पर प्रेमी जी एक दो उपदेशको के साथ रात्रि को बाहर निकले। मैं भी साथ था। यह याद नही कि हम लोग किस प्रयोजन से बाहर निकले। सडक के एक मोड पर कुछ रुके ही थे कि किसी युवक ने मेरा उपहास उडाया। श्री प्रेमी जी ने बडे मीठे शब्दो मे उसको ऐसा झकझोरा कि उसे अपनी भूल पर बहुत पश्चाताप हुआ।

उनकी लोकप्रियता के कई दृश्य मेरी आखो के सामने घूम रहे है। आर्य समाज पठानकोट का उत्सव था। महलो की उपस्थिति थी। नवयुवक बहुत आये प्रेमी जी की जब बारी आती तो श्रोता एकदम झूम उठते। युवक तो विशेष रूप से उन्हे ही सुनना चाहते थे। पाश्चात्य शिक्षा पर व्यग्य कसते हुए उन दिनो आर्य भजनोपदेशक निम्न गीत बहुत गाया करते थे —

कालेज मे गुजारा नही होता माई लार्ड

कालेज के लडको की अनुशासनहीनता पर ही चोट थी और वही इस गीत को सुन-सुनकर आनन्द ले रहे थे। उनमे एक विशेषता यह थी कि वह हल्के-फुलके गीत भजन नही बोलते थे। उनकी अपनी रचनाओ का स्तर भी अच्छा था और वह प्राय पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालकार, कविरत्न प्रकाश जी, ठाकुर उदयसिंह जी व श्री पण्डित देशराज जी के भजन गाया करते थे।

उनका कण्ठ अच्छा था। अच्छा ही नही बहुत अच्छा था। सगीत का अच्छा ज्ञान था। ऋषि दयानन्द जी महाराज के जीवन की बडी प्रेरक घटनाए सुनाया करते थे। उनके व्याख्यान मे निरर्थक चुटकले भी कभी नही सुने थे।

उनमे एक और बडा गुण था कि वह जहा कही जाते वहा आर्य वीर दल, कुमार सभा या आर्य युवक (जो भी वहा हो) के आर्य वीरो और आर्य कुमारो से बडा स्नेह करते और उन्हे बडा प्रोत्साहन देते थे।

कर्मयोग का अटल नियम टाले नही टलता। ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार वह अपने किन्ही पूर्व कर्मो का फल भोगने के लिए पक्षाघात के गन्दे रोग का शिकार हो गये और कई वर्ष यह दुःख उन्हे भोगना पडा। जब कभी कोई आर्य बन्धु उन्हे कुछ सहायता भेजता तो स्नेह व कृतज्ञता से वह बहुत रोते थे। परमात्मा उनकी प्रवृत्ति के अनुसार उन्हे फिर मानव चोला देकर महर्षि के अधूरे कार्य को पूरा करने का अवसर देगे। हम उस गुण सम्पन्न अपने प्रिय आर्य बन्धु और उपदेशक को आर्य जगत् की ओर से श्रद्धाजलि भेट करते है।

पण्डित चन्द्रसेन आर्योपदेशक दिवंगत

वैदिक मिशनरी प० चन्द्रसेन आर्य का विगत २१ जुलाई, १९९० को हृदय गति रुकने से देहावसान हो गया है।

दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय लाहौर से प्रशिक्षित पण्डित जी ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा मे महोपदेशक का कार्य किया। आप हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सैनानी भी रहे।

सोनीपत (हरियाणा) निवासी पण्डित जी अपने पीछे अपनी पत्नी, दो पुत्र, चार पुत्रिया तथा पौत्र-पौत्रियो से भरा परिवार छोड गये है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसन्देश परिवार परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करता है।

भेदभाव की आत्मघाती नीति

—प्रो० शैलनाथ चतुर्वेदी, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

भारत मे समाज व्यवस्था को दिशा निर्देश देन का काम राजनीतिक सत्ताधारियो को कभी नही सौपा गया। यह कार्य ऋषि मुनि, साधु सन्त या समाज-सुधारक करत रहे हैं। स्मृतिकार बुद्ध कबीर, नानक आदि को राजनीति से कुछ भी लेना देना नही था। १९वी शती म राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती या महात्मा फुले आदि का राजनीतिक सत्ता से कोई सम्बन्ध नही था। गाधी जी का राजनीतिक आन्दोलन उनकी व्यापक सामाजिक मान्यताओ के सन्दर्भ मे ही देखा जाना चाहिए। डा० अम्बेडकर और डा० हेडगेवार जैसे लोग मूलत सामाजिक समस्याओ क विषय मे ही चिन्तित थे। किन्तु आज समाज व्यवस्था को निर्देश देने का कार्य वे लोग हाथ मे लेना चाहत ह जिन्हे समाज के भावी स्वरूप की कोई चिन्ता नही है और जिनके लिए सत्ता केन्द्रित राजनीति ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। यही नही, वे ही शिक्षा, सामाजिक व्यवहार आदि के क्षेत्रो म नियामक बने हुए है। एक नमूना आपके सामने है।

केन्द्रीय श्रम एव कल्याण मन्त्री श्री रामविलास पासवान न घोषणा की है कि पिछडी जाति के छात्रो के लिए प्रशिक्षण सस्थान खोले जाएगे। उधर उत्तर प्रदेश के श्रममन्त्री आजम खा अल्पसख्यको को शिक्षा देन हेतु आई० टी० आई० स्कूल खोलने जा रहे है। अन्य राज्यो के बार म मै नही जानता, उत्तर प्रदेश की काग्रेस सरकार ने अनेक नगरो मे हरिजन छात्रावास बनाये है। इन राजनीतिक नेताओ और दलो ने या तो अपनी योजनाओ का समाज व्यवस्था पर प्रभाव समझा ही नही है अथवा वे सब कुछ समझते हुए भी ऐसी योजनाए चला रहे है। दोनो ही स्थितियो मे यह विषय उन सभी लोगो के लिए चिन्ता का कारण होना चाहिए जो भारतीय समाज के वर्तमान और भविष्य के सम्बन्ध मे सोचते-विचारते है।

इन योजनाओ के विषय म विचार करन का मुख्य मुद्दा यह है कि हम भारत मे कैसा समाज बनाना चाहते है। क्या हम चाहते है कि भारतीय समाज की भाषायी, साम्प्रदायिक या जातीय इकाइयो मे अलगाव बना रहे और उनके बीच की दूरिया कम न हो? क्या हम ऐसे समाज की रचना करना चाहते है जिसमे यह इकाइया राष्ट्रीय धारा से कटकर केवल अपन हित का ध्यान रखे? क्या इन इकाइयो को अपनी पहचान और अस्तित्व इसलिए बनाये रखना चाहिए कि चुनाव के अवसर पर वे अपनी उचित-अनुचित मागे पूरी कराने के लिए दबाव डालती रहे? क्या राजनीतिक दलो को यह छूट दी जानी चाहिए कि वे इन इकाइयो के अलगाववाद को पानी देते रह, जिससे वे मुख्य धारा से कभी न जुड सके और वोट बैंक का काम करती रहे। यदि ऐसा नही होना चाहिए तो हम विभिन्न जातीयो, सम्प्रदायो के लिए अलग-अलग शिक्षा सस्थान या छात्रावास कैसे स्वीकार कर सकते है। प्रयत्न तो इस बात का होना चाहिए कि विभिन्न वर्गों के बच्चे, नवयुवक, नवयुवतिया एक दूसरे के सम्पर्क मे आए, एक-दूसरे को समझे और अपने को व्यापक भारतीय समाज का घटक माने। वे भारतीय समाज के अविच्छिन्न अग होने मे गौरव का अनुभव करे। शोषित, पीडित या किसी भी प्रकार पिछडे वर्गों—परिवारो को भरपूर सहायता/आरक्षण देने का समर्थन हर सुबुद्ध व्यक्ति करेगा, किन्तु उन्हे क्षुद्र और तात्कालिक लाभ के लिए अलग-थलग रखना भारतीय सामाजिक व्यवस्था के लिए आत्मघाती होगा।

इस सन्दर्भ मे एक अनुभव का उल्लेख प्रासगिक होगा। उन दिनो मै विश्वविद्यालय के एक छात्रावास का अभिरक्षक था। छात्रावासियो के लिए यह सूचना निकाली गयी कि वे निर्धारित तिथि तक भोजनालय के लिए धनराशि जमा कर दे। तिथि बीत जाने पर ज्ञात हुआ कि एक अल्पसख्यक समुदाय के सदस्यो ने धनराशि जमा नही की है। जब उन्हे बुलाकर कारण पूछा तो पता चला कि कुछ छात्रो ने उनके भोजनालय मे सम्मिलित होने का विरोध किया था, जिसके कारण कार्यालय ने उनकी धनराशि जमा करने से इन्कार कर दिया। मैने एक सूचना निकाली कि जिन छात्रो को आपत्ति है वे मुझसे मिलकर इस प्रश्न पर विचार विनिमय कर ले। किन्तु कोई छात्र न आया। तब मैने छात्रो से व्यापक राष्ट्रीय सन्दर्भ मे इस प्रश्न की चर्चा की और आपत्ति करने वाले छात्रो को उनके दृष्टिकोण के दुष्परिणामो का उल्लेख करते हुए यह घोषित कर दिया कि जिसे यह व्यवस्था स्वीकार न हो वह छात्रावास छोड दे। अगले दिन से बिना भेदभाव के सभी छात्र भोजनालय मे एक साथ भोजन करने लगे। मुझे लगता है कि यदि छात्रावास की व्यवस्था किसी राजनीतिक दल या नेता के पास होती तो वह अल्पसख्यक वर्ग के छात्रो के लिए अलग भोजनालय खोल देता।

सामाजिक समस्याओ का समाधान यदि राजनीतिक नेताओ या दलो पर छोड दिया गया तो यह निश्चित है कि विभिन्न वर्गों के सम्बन्ध बिगडते जाएगे और भारत की एकता नारो मे ही रह जायेगी। अत यह आवश्यक है कि जिन्हे भारतीय समाज मे भाषाओ, सम्प्रदायो, वर्गों आदि की विभिन्नता मे एकता का सूत्र दिखायी देता है वे इन भेदभावी प्रयासो क विरुद्ध मुखर हो।

मन्दिर नीचे मस्जिद ऊपर नहीं रहेगी

—कैलाशचन्द्र त्रिपाठी

"मन्दिर मस्जिद कहीं बने पर जन्मभूमि कैसे बदलेगी?
मेरा प्रण है मन्दिर नीचे, मस्जिद ऊपर नही रहेगी।
　तन, मन, धन से जुट जाए और एक नया इतिहास बनाए।
　जन-जन के मन-मन मे ऐसी जगमग ज्योति जगावे॥
　उद्यत हू यह कहने को भी यदि भारतीय कहलावे।
　तो उसी पुराने मन्दिर का अब नव निर्माण करावे॥
प्रकृति हुई प्रतिकूल नही तो, मातृभूमि कैसे बदलेगी?
मेरा प्रण है मन्दिर नीचे, मस्जिद ऊपर नही रहेगी।
　खम्भे या वे बनी हुई प्रतिमाए क्या कहती है?
　वही अयोध्या है और वही वही सरयू बहती है।
　किसको है यह ज्ञात नही, कि ये कृतिया किसकी है?
　यही प्रार्थना है मेरी यहां मिले उसे जिसकी है॥
राम भूमि ही क्या, मथुरा काशी मे भी दीवार बनेगी।
मेरा प्रण है मन्दिर नीचे, मस्जिद ऊपर नही रहेगी॥
　छोटी सी उपमा ले ले, क्या जल-बिन कमल खिलेगे?
　मय जग मे क्या हम सब प्राणा राम बिना जी लेगे?
　जन्मभूमि को शीघ्र समर्पित कर दो तब सम्मान करेंगे।
　बहुत प्रतिक्षा की, सोचा और अब केवल बलिदान करेंगे॥
किसी रुकावट के आने पर, अब तो खूनी धार बहेगी।
मेरा प्रण है मन्दिर नीचे, मस्जिद ऊपर नही रहेगी॥

—ग्राम मखमेलपुर पोस्ट बीबीपुर (सूरजपट), जिला मऊ

(शेष पृष्ठ ३ का)

चूसने वाला दिखाते हैं। जबकि मुस्लिम पात्र को समाज सेवी लोगो का भला चाहने वाला, उदार चरित्रयुक्त दिखाया जाता है।

दूरदर्शन द्वारा हिन्दू समाज की एकता को तोडने के भी उपाय किये जाते है। वर्ग-विद्वेष भडकाने वाले कार्यक्रमो की भरमार होती है। कही पिछडे वर्ग पर सवर्णों द्वारा अत्याचार तो कही किसी ठाकुर जमीदार द्वारा उनके मजदूरो और खेती जोतने वाले छोटे किसानो पर अमानुषिक जुल्मो की कहानी।

हजार वर्षों से भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशी आक्रान्ताओ के द्वारा किए गये क्रूर नरसहारो को यदि दूरदर्शन पर दिखाया जाए, गौरी, गजनवी, खिलजी और मुगलो की अत्याचारी सेनाओ से लोहा लेने वाले भारतीय वीरो के इतिहास को यदि दिखाए, अग्रेजी दास्ता के फन्दे मे भारत माता को मुक्त कराने के लिए प्राणो को न्यौछावर करने वाले क्रान्तिकारियो तथा अग्रेजीयत और अग्रेजी के चगुल से देशवासियो को छुटकारा दिलाने के निमित्त जीवन भर तपस्या करने वाले मनीषियो के कर्तृत्व को यदि दूरदर्शन पर लाया जाए और विश्व के अनेक देशो मे फैली भारतीय सस्कृति की झलक यदि दूरदर्शन से प्रसारित हुआ करे तो पिछडे राष्ट्रो की श्रेणी मे गिरा पडा हमारा देश फिर से प्राचीन गरिमा को प्राप्त कर उन्नति के शिखर छूने लगे। किन्तु जिन लोगो ने आजकल दूरदर्शन अपने हाथो का खिलौना बना रखा है, उनके स्थान पर देश भक्ति की दृष्टि रखने वाले कलाकार और अधिकारियो को जब तक स्थान नही मिलता दूरदर्शन मे किसी सुधार की आशा करना व्यर्थ है। —डा० कैलाशचन्द्र सकट मोचन आश्रम, सैक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-२२

समस्त आर्य जगत मे—वेदप्रचार सप्ताह, श्रावणीपर्व, जन्माष्टमी, स्वतन्त्रता-दिवस समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज शालीमार बाग बी० एन० (पूर्वी)

आर्यसमाज शालीमार बाग बी० एन० पूर्वी मे ७ अगस्त से १२ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह आयोजित किया गया। वेदकथा के लिए आमन्त्रित विद्वान आचार्य रामप्रसाद वेदालकार का स्वागत करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि यह आर्यसमाज शालीमार बाग के अधिकारियो एव सदस्यो का सौभाग्य है कि वेदो के उद्भट विद्वान एव गुरुकुल कागडी विश्व-विद्यालय के उपकुलपति, वेद एव कला महाविद्यालय के प्राचार्य आचार्य रामप्रसाद जी के श्रीमुख से वेदवाणी का हम श्रवण कर सकेगे। आचार्य ओ३मवीर शास्त्री, श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री, डा० परमानन्द जी के भी वेद प्रवचन हुए।

इस अवसर पर आर्यसमाज मे एक आरोग्य केन्द्र की स्थापना स्वर्गीय श्रीमती सुशीला ग्रोवर के सात्विक दान से की गयी। आरोग्य केन्द्र का उद्घाटन श्रीमती दयावती बनाती ने किया। डा० चन्द्र आहूजा जी की सेवाए प्रतिदिन प्रात ८ से ६ तथा साय ५ से ६ बजे उपलब्ध होगी। प्रत्येक रविवार डा० प्रेम तनेजा प्रात ६ से १२ तक रोगियो को देखेगे।

वेदकथा सप्ताह कार्यक्रम के सयोजक वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार ने समय समय पर अपनी अमृतवाणी से आयोजनो को लाभान्वित कराया तथा आर्यसमाज के अधिकारियो का इस आयोजन के लिये धन्यवाद किया। श्री ओ३म् दत्त प्र...ज प्रधान ने सभी अभ्यागतो का स्वागत एव धन्यवाद किया।

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली

इस समाज मे २७ जुलाई से १४ अगस्त तक बृहद पारायण यज्ञ का आयो... किया गया। ६ अगस्त को श्रावणी पर्व मनाया गया। ७ अगस्त से प्रतिदिन प्रात एव रात्रि को प्रो० उत्तमचन्द 'शरर' द्वारा वेद प्रवचन होते रहे। रविवार १२ अगस्त को हैदराबाद आर्य सत्याग्रह दिवस मनाया गया, जिसमे प्रो० उत्तमचन्द 'शरर' तथा प्रो० वाचस्पति उपाध्याय ने सत्याग्रह के इतिहास पर प्रकाश डाला।

मगलवार १४ अगस्त को प्रात पूर्णाहुति के पश्चात दिल्ली के विभिन्न स्कूलो के छात्र-छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता "योगेश्वर श्रीकृष्ण महर्षि दयानन्द ... दृष्टि मे' विषय पर हुई।

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली

६ अगस्त श्रावणी उपाकर्म, सस्कृत दिवस तथा हैदराबाद सत्याग्रह दिवस के रूप म मनाया गया तथा वेदप्रचार सप्ताह के अन्तर्गत प्रतिदिन प्रात काल यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा रात्रि मे वैदिक विद्वान् पण्डित आर्यभिक्षु जी ने वेद व्याख्यान किये तथा श्री गुलाबसिंह 'राघव' ने भजनोपदेश किये।

१४ अगस्त को पूर्णाहुति के पश्चात योगीराज श्रीकृष्ण जन्मदिवस बडे समारोहपूर्वक मनाया गया।

महर्षि दयानन्द शिक्षा समिति, खण्डवा

खण्डवा १५ अगस्त ६०। महर्षि दयानन्द शिक्षा समिति के तत्वावधान म आयोजित स्वाधीनता समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री आर० आर० मोहतो, उपायुक्त विक्रयकर ने कहा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व से ही भारतीय स्वतन्त्रता के मूर्धन्य जन नेताओ ने यह प्रयत्न किया कि भारतीय जनता उस सास्कृतिक गुलामी से मुक्त हो, शिक्षा राष्ट्रीय जीवन के अनुरूप ढले। विदेशी प्रभाव समाप्त हो, भारतीय सस्कृति पनपे। विदेशी शासन के फलस्वरूप आयी बुराईयो से मुक्ति मिले।

आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर पलवल

आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर, पलवल मे वेद सप्ताह का आयोजन १२, १३, १४ अगस्त को हुआ। इसमे आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य प्रेमभिक्षु जी (...युरा) पधारे।

पूज्य आचार्य जी ने परिवारो के वैदिकीकरण पर विशेष बल दिया। चारित्रिक तथा राष्ट्रवादी विचारधारा की पवित्र जाह्नवी प्रवाहित की। दुर्गुण छोडकर सद्गुण धारण करने का सकल्प करवाया।

१४ अगस्त को योगिराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आचार्य जी ने आर्यसमाज का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा कि आर्यसमाज श्रीकृष्ण के चरित्र की पूजा करता है, चित्र की नही। काश! हम उनके गुणो पर चिन्तन करके उन्हे धारण करने का सकल्प ले पाते तो आज राष्ट्र का कायाकल्प हो जाता।

आर्यसमाज नीलोखेडी

आर्यसमाज मन्दिर नीलोखेडी (हरियाणा) मे वेदप्रचार सप्ताह समारोह-पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती के व्याख्यान तथा श्री शिवपाल सिंह (अलीगज, एटा) के भजनोपदेश को आर्य जनता ने श्रद्धा-पूर्वक श्रवण किया।

आर्यसमाज परशुरामपुरी

आर्यसमाज मन्दिर परशुरामपुरी, जलालाबाद जि० शाहजहापुर (उ० प्र०) मे ३१ जुलाई से ६ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह बडी धूमधाम से मनाया गया। आर्यजगत के विद्वान स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी वेदभिक्षु के वेद-व्याख्यान तथा श्री रोहनसिंह जी 'आनन्द' व श्री सूबेदार सिंह जी आर्य के प्रवचनो से सम्पूर्ण नगर आर्यमय वेदमय हो गया।

बाल ज्योति आर्य स्कूल

डा० बलदेव कौशल बाल ज्योति आर्य पब्लिक स्कूल ए-४, पश्चिम विहार मे स्वतन्त्रता दिवस एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह आयोजित किया गया। प० यशपाल सुधाशु के ब्रह्मत्व मे यज्ञ हुआ। समारोह के अध्यक्ष श्री ऋषिदेव कपूर, आई० ए० एस० आयुक्त, दिल्ली नगर निगम ने राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए, ध्वज की रक्षा का व्रत लिया तथा उपस्थित आर्यजनो से आग्रह किया कि वे राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान के लिये सगठित होकर सेवाए दे।

समारोह का उद्घाटन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि हमे बडी कठिनाई तथा त्याग एव तपस्या के बाद स्वतन्त्रता मिली है। हमे अपने देश की स्वाधीनता की रक्षा करनी है तथा इसे विकास के उच्चतम सोपान पर ले जाना है। यह तभी सम्भव है जब हम वेदो के मार्ग पर चले।

श्रीमती प्रमोद कपूर ने विद्यालय म पुस्तकालय का उद्घाटन करते हुए कामना की कि इस विद्यालय के छात्र अध्ययन मे कभी प्रमाद न करे।

इस अवसर पर डा० शशिप्रभा, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, श्रीमती सरला मेहता श्री के० एल० वाही, श्रीमती ब्रजबाला मल्ला आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। विद्यालय के बच्चो ने मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किये। विद्यालय की अध्यक्षा श्रीमती प्रकाश आर्या ने सभी अभ्यागतो का धन्यवाद किया।

बिरला आर्य कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल

बिरला आर्य कन्या सीनियर सकेण्डरी स्कूल कमला नगर दिल्ली मे स्वतन्त्रता दिवस समारोह का आयोजन ८ अगस्त, १६६० को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल की अध्यक्षता मे किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज को फहराते हुए क्राउन इण्डस्ट्रीज के प्रबन्ध निदेशक श्री एस० एम० मवेरी ने युवा छात्राओ का आह्वान किया कि वे अपने को इस योग्य बनाए कि वे राष्ट्र-निर्माण मे सहयोगी हो सके। प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह सामाजिक गतिविधियो मे भाग लेकर, मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए कार्य करे। श्री मवेरी ने इस अवसर पर विद्यालय को इक्कीस हजार रुपये की धनराशि भी दान मे दी।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आशा व्यक्त की कि आर्यसमाज की इस सस्था मे शिक्षा प्राप्त करके ये छात्राए, अपने चरित्र का निर्माण करती हुई अपने कर्त्तव्य से कभी पीछे नही हटेगी। इस अवसर पर अनेक मनोहारी शैक्षिक एव सास्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गए।

प्रधानाचार्या श्रीमती आदर्श कोहली ने विद्यालय की प्रगति का विवरण दिया। विद्यालय के प्रधान श्री अहलूवालिया, मैनेजर श्री साही जी आर्यसमाज के प्रधान श्री जयप्रकाश जी ने अभ्यागतो का स्वागत किया।

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गाडन नई दिल्ली मे १३ ८-१९९० को स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाया गया। दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा क प्रधान डा० धर्मपाल न ध्वजारोहण करते हुए आशा व्यक्त की कि यह नई पीढी इस ध्वज को सदा सदा इसी शान से लहराती रहेगा। हमारी पिछली पीढी ने त्याग तपस्या और अनेक यातनाओ के बाद इस स्वतन्त्रता को प्राप्त किया है। पर आज भी देश म अनक पाखण्ड चल रहे हैं सभी को समानता नही मिली है। हमारा कत्तव्य है कि हम सभी को समता का अधिकार द। उन्होन बताया कि राष्ट्रीय चेतना मे महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनक अनुयायियो एव आयसमाज के कायकत्ताओ का विशेष योगदान है।

इस अवसर पर नन्ह मुन्न बालको न अनक सास्कृतिक कायक्रम प्रस्तुत किये। सभा क महामन्त्री श्री सूयदेव न बालका म पुरस्कार वितरित किये। उन्होंने आशा व्यक्त की कि य बालक वैदिक धम तथा आयसमाज क लिए काय करते हुए राष्ट्र को उन्नति क माग पर ले जाएगे।

श्री जगदीश आय श्री नन्द किशोर भाटिया श्रीमती रामचमेली आदि आयजना ने बच्चो क कार्यक्रमो की भूरि भूरि प्रशसा की तथा अभ्यागतो का स्वागत किया। प्रिन्सिपल श्रीमती नीलम मिश्र न विद्यालय का विवरण दिया तथा सभी का धन्यवाद किया।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन

आयसमाज नारगपुरी कन्हैया नगर त्रिनगर केशवपुरम् के सयुक्त तत्वावधान मे केशवपुरम् के महर्षि दयान द उद्यान म राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन मे यज्ञोपरान्त महर्षि दयानन्द सरस्वती की सूक्तियो वेदमन्त्रा आयसमाज के नियमा तथा सगठन-सूक्त से सयुक्त खचित एक शिलालख का अनावरण स्थानीय पूव महानगर पाषद श्री साहिबसिंह वर्मा न किया। मुख्य अतिथि डा० धमपाल प्रधान दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा न स्वाधीनता दिवस को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप मे मनाने के लिए विभिन्न आर्यसमाजो के अधिकारियो एव प्रतिनिधियो का साधुवाद किया। डा० धमपाल न कहा कि इस दिशा मे प्रयास करने वाले सवप्रथम श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज थे। उन्हाने १८७७ मे दिल्ली दरबार के समय विभिन्न धर्मावलम्बिया तथा सामाजिक कायकर्त्ताओ को एक साथ मिल बैठकर एक माग खोजने के लिये आमन्त्रित किया था। अधिकाश विवाद साम्प्रदायिक सकीणताआ तथा क्षेत्रीय प्रान्तीय विघटनकारी प्रवृत्तियो के कारण होते है। यदि सबन उस समय मिलकर एक पूजा पद्धति तथा जाति पाति रहित वर्णाश्रम व्यवस्था को स्वीकार कर लिया होता तो आज इस देश में वह न होता जो आज जम्मू-काश्मीर पजाब आसाम और अन्य स्थानो पर हो रहा है। काश! हम अब भी वैदिक धम के अनुसार अपन जीवन को ढाल पात। वेद का स देश सावभौम, सावजनान एव सावकालिक है।

इस अवसर पर अन्य वैदिक विद्वाना न भी विचार व्यक्त किय।

स्वतन्त्रता दिवस समारोह पर काव्य-सन्ध्या

केन्द्रीय आय युवक परिषद् दिल्ली की ओर स दिनाक १३ अगस्त १९९० की सान्ध्य वेला मे 'काव्य-सन्ध्या' का भव्य आयोजन महाशय धमपाल, वरिष्ठ उपप्रधान दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे किया गया।

काव्य गोष्ठी म वैदिक विद्वान् प्रो० उत्तमचन्द 'शरर', प्रो० सत्यपाल बेदार के गीत भजन और कविताओ तथा डा० सुरेशचन्द्र त्यागी, डा० चन्द्र सगर श्री प्रकाशवीर 'व्याकुल' पण्डित गुलाबसिह राघव का वैदिक सिद्धान्ता से पूरित वीर रस की रचनाओ को श्रोताओ द्वारा विशेष रूप से सराहा गया।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 23, 24-8-1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

यज्ञ भवन, जवाहर नगर, दिल्ली में चतुर्वेदी पारायण यज्ञ

वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष्य म आगामी २९ अगस्त स ९ सितम्बर ९० तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ श्री पण्डित लक्षपति जी शास्त्री की अध्यक्षता मे आयोजित किया जा रहा है। प्रतिदिन प्रात ८ ३० बजे से यज्ञ भजन वेदोपदेश तथा सायकाल ३ ३० से ५ बजे तक भजन तथा उपदेश होगे। ९ सितम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति तथा ऋषि लगर होगा।

आर्यसमाज नारनौल, हरियाणा का हीरक जयन्ती समारोह

हरियाणा की विख्यात् आर्यसमाज नारनौल (जिला महेन्द्रगढ) अपना हीरक जयन्ती समाराह आगामी ५ ६ व ७ अक्तूबर १९९० को बडे समारोहपूर्वक मना रहा है।

इस अवसर पर आर्यजगत क विख्यात् विद्वान् सन्यासी नेता, उपदेशक भजनोपदेशक और कार्यकर्त्ता पधार रहे ह।

आर्यसमाज बिड़ला लाईन्स में संगीत शिक्षा

आर्यसमाज मन्दिर बिडला लाईन्स कमला नगर दिल्ली ७ म वाद्यसगीत तथा सगीत विद्या की शिक्षा देने क लिए कक्षाए प्रारम्भ की गई हे। सगीताचार्य पण्डित जगदीश जी विद्या वाचस्पति क निर्देशन मे कक्षाए चल रही है।

आर्य भजना गीता तथा वेदादि का सस्वर गायन प्रशिक्षण लेने हेतु आर्य समा न्दिर में पधार।

डा. कपिलदेव द्विवेदी विदेश यात्रा पर

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी को अमेरिका तथा कनाडा मे विभिन्न विश्वविद्यालयो ने वेद तथा भारतीय सस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न विषयो पर व्याख्यान देने हेतु आमन्त्रित किया है।

डा० द्विवेदी भारतीय सस्कृति के प्रचारार्थ अमेरिका कनाडा, सूरीनाम गुयाना तथा त्रिनिदाद भी जाएगे। इन देशा मे विभिन्न विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक सस्थाओ ने आपके प्रमुख शहरो में कार्यक्रम रखे हैं। विदेश यात्रा का उद्देश्य विश्व मे वेद का प्रचार करना है।

डा० कपिलदेव द्विवेदी वेद सस्कृत साहित्य व्याकरण तथा भाषा विज्ञान क अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति क विद्वानो मे से एक हैं। आपके ७० से भी अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं तथा अनेक पुस्तको पर आपको पुरस्कृत तथा सम्मानित किया जा चुका है।

डा० द्विवेदी तीन मास की इस यात्रा पर ३ सितम्बर को दिल्ली से न्यूयार्क प्रस्थान करेंगे।

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य विख्यात वैदिक विद्वान तथा ऋषि मिशन के लिये समर्पित युवा मनीषी प० गुरुदत्त विद्यार्थी की निर्वाण शताब्दी समारोह दिनाक ६, ७ अक्तूबर को केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ़ के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान वक्ता तथा गायक पधारेंगे।

सेवा में—

१ श्रीजी,
२ पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

'कवर' '१०७९'

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रका—
सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५९

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ४५ | रविवार, २ सितम्बर १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

अपनी असफलताओं को छुपाने के लिए—

सरकार वर्ग-भेद का संघर्ष पैदा कर रही है

नई दिल्ली, २६ अगस्त। राजधानी की सभी आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में पारित प्रस्ताव में कहा गया है कि देश की एकता और अखण्डता एवं राष्ट्रीय हितों का ध्यान में रखते हुए आरक्षण जाति के आधार पर नहीं बल्कि आर्थिक आधार पर किया जाना चाहिए। सभा की अध्यक्षता डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने की।

महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि आर्यसमाज प्रारम्भ से ही दलितों, अछूतों एवं कमजोर वर्गों के उत्थान एवं कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहा है। आर्यसमाज जाति के आधार पर नहीं, कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था में विश्वास करता है और अनुसूचित जातियों में जन्मे व्यक्तियों को तो आर्यसमाज में पुरोहित जैसे सम्मानजनक पदों पर सुशोभित किया है।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि वर्तमान सरकार ने बढ़ती हुई महंगाई एवं अन्य अनेक असफलताओं को छुपाने के लिए गलत नीतियों के द्वारा आरक्षण जैसी समस्याएं पैदा करके एकता और अखण्डता का खतरा पैदा कर दिया है। उन्होंने केन्द्रीय मन्त्री श्री रामविलास पासवान एवं श्री शरद यादव के वक्तव्यों को गैर जिम्मेदार एवं संघर्ष भड़काने वाले बताया।

युवा सचेतना के लिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से—

७वां आर्य युवा महासम्मेलन

युवा शक्ति को संगठित करने के लिए तथा उन्हें देश धर्म संस्कृति सभ्यता के उन्नयन के लिए निश्चित पथ पर अग्रसर करने कराने हेतु गत छह वर्षों में निरन्तर दिल्ली में आर्य युवा महासम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है।

इस वर्ष आर्य युवा महासम्मेलन के अन्तर्गत निम्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं -

६ अक्तूबर ९० को प्रातः ११ बजे	रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिता
१३ अक्तूबर, ९० को	बिरला आर्य कन्या सीनियर सकेण्डरी स्कूल वाद विवाद प्रतियोगिता
२० अक्तूबर, ९० को	सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग खेल-कूद प्रतियोगिता
२७ अक्तूबर, ९० को	रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल राजा बाजार भाषण प्रतियोगिता
२ नवम्बर, ९० को	सत्यभामा आर्य कन्या सीनियर सेकेण्डरी स्कूल करौल बाग संगीत प्रतियोगिता
५ नवम्बर ९० को	रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सेकण्डरी स्कूल कृष्णा नगर बालीबाल प्रतियोगिता (बालिकाओं के लिए)

मुख्य समारोह १० नवम्बर १९९० को प्रातः ९ बजे तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली में होगा। जिसमें उपर्युक्त सभी प्रतियोगिताओं में विजयी बाल-बालिकाओं आर्यवीरों-वीरांगनाओं को पुरस्कार दिए जाएंगे। इस अवसर पर विख्यात आर्य संन्यासी, विद्वान और नेता सभा को सम्बोधित करेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

२३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से २३, २४, २५ व २६ दिसम्बर, १९९० को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में मनाया जाएगा। इस महासम्मेलन में देश विदेश के लाखों आर्यों के भाग लेने की सम्भावना है। इस अवसर पर उच्च-कोटि के विद्वान् आमन्त्रित किए जा रहे हैं।

सभी आर्य बन्धुओं तथा समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे इस सम्मेलन के लिए तन-मन-धन से सहयोग दें तथा अधिक से अधिक संख्या में इस महासम्मेलन का लाभ उठाने के लिए अभी से तैयारी कर लें।

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वैचारिक बोध के लिए—

आर्ष ग्रन्थो का स्वाध्याय करें



—आचार्य यशपाल 'सुधांशु'

पर्वता की धवल उत्तुंग शिखर पर बिखरता हुई वनो की ऊंची चोटियो को बीधता हुई या महानगरो की गगनचुम्बी इमारतो पर फिसलती हुई सूरज की किरण जैसे ही धरती को जागरण का बोध कराती है कण कण जल थल स्वर्णिम हो जाता है और सूर्य प्रभा के तीखा होते ही जीवन की दौड़ शुरू हो जाती है। अलसाई अखडियो को मलते हुए जब हम उठते है शाश्वत से जीवनचर्या प्रारम्भ हो जाती है। सबसे पहले इच्छा होती है अखबार की सुर्खियो पर दृष्टि डालने की। मोटे काले अक्षरो मे राजनीति के दाव पेच हिलती डुलती कुर्सिया विश्व की अस्त्र शस्त्र संग्रह की अ धी दौड़ बारूद यूरेनियम के आघात को सहती धरती या फिर चोर बाजारी धोखाधडी अपहरण की वारदात धधकती सुलगती दहेज की वेदी पर सुहागिने इन सबका समर्थन वाले अखबारो का स्वाध्याय हमारा दिनचर्या का एक अग सा बन गया है। मनुष्य समुदाय या समाज मे जीने वाला प्राणी है इसका जीवन कुछ एक विचारो पर टिका है। जैसे विचार व्यक्ति के है उन्ही के आधार पर वह अपने महल बनाया करता है चाहे वह काल्पनिक ही क्यो न हो अत विचार आचार का आचार व्यवहार को जन्म देता है जैसे हमारे विचार है वैसा ही होता है हमारा व्यवहार। विचार उपजते पठन पाठन श्रवण श्रावण से। तो स्पष्ट हो है कि प्रात हो हमारे विचार भूमि पर उगते है नागफनी और बबूल के काटे। ... हम अनुप्राणित होते रहते है क्योकि हमारा सारा ही चिन्तन अखबारो हो गया है। अखबार तो हमारे सूने देवालय पर उतर आए है भारत ऋषि मुनियो की धरती है इस धरती पर उनकी वाणी उनके विचार (मन्त्र) आज भी जीवित है सदा रहेगे ये अमर विचार। सदा ही मनुष्य समाज को दिशा प्रदान करते रहेगे। अमर ग्रन्थ के अगाध सागर मे कुशल तैराक की तरह जो भी डुबकी लगाएगा अमूल्य रत्नो का अधिकारी बन जाएगा और यह डुबकी ज्ञान के सागर मे लगाई जा सकती है स्वाध्याय के द्वारा जिसे ऋषियो ने मनुष्यो को अनिवार्य नैतिक कर्म माना है। इससे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ व संन्यासी कोई भी आश्रम नहीं बच सकता। संन्यासी की अग्निहोत्र से मुक्ति है पर स्वाध्याय से नहीं। महर्षि याज्ञवल्क्य कहते है यदि कोई व्यक्ति सुगन्धित तेल लगाकर अलंकृत होकर गुदगुदे आसन पर लेटा स्वाध्याय करता है वह मानो चोटी से नाखून तक का श्रम तप कर रहा है। महर्षि मनु स्वाध्याय को परम तप कहते है। देव दयानन्द वेद स्वाध्याय को परम धर्म कहते है। योगदर्शनकार स्वाध्याय को योग कहते है। छान्दोग्य का ऋषि कहता है धर्म तीन कन्धो पर आधारो पर टिका है—यज्ञ अध्ययन दान। अत धर्म का ज्ञान अध्ययन के द्वारा ही मिल सकता है। स्वयं वेद ... पावमानी अध्येत्यृषिभि सम्भृत रस। तस्मै सरस्वती दुहे क्षीर सर्पिर्मधूदकम्॥ ऋ० ९ ६७। ३२। जो व्यक्ति अग्नि वायु आदित्य आदि ऋषियो के द्वारा एकत्र मन्त्र रूपी ज्ञान को अधिग्रहण करने के लिए स्वाध्याय अध्ययन करता है उसे अनेक मधुर ज्ञान धाराओ का आनन्द प्राप्त होता है। अत स्पष्ट है स्वस्थ विचारो के लिए उत्तम ग्रन्थो अर्थात आर्ष ग्रन्थो का स्वाध्याय किया जाए।

वैदिक विद्वान पं० यशपाल 'सुधांशु'

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आर्यजगत के विख्यात युवा विद्वान प० यशपाल सुधांशु थाईलैण्ड तथा अन्य देशो की सफल वेदप्रचार यात्रा पूरी कर पिछले दिनो भारतवर्ष लौट आए है। विदेशो मे आप जहां भी गए आपका वैदिक दुन्दुभी घोष सम्मानपूर्वक श्रवण किया गया और पुन पधारने का आग्रह भी हुआ।

सरस सौम्य मुखमुद्रा प्रवाहपूर्ण शैली ललित पाण्डित्य प्रभावात्मक कथन पौराणिक आख्यानो का वैज्ञानिक विवेचन आपकी अपनी विशिष्टताए हैं। आपने चार वर्षों तक आर्य सन्देश का सफल सम्पादन भी किया है। अब आप अपने नए आवास मे रहने लगे है। पता इस प्रकार है

आचार्य यशपाल सुधांशु
बी० डब्ल्यू०/८७ डी शालीमार बाग नई दिल्ली ५२
दूरभाष ७२२१७११

ओ३म् स न पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शं राजन्नोषधीभ्य ॥
(ऋ० ९।११।३ साम० उ० आ० ३)

मीत कर दो पुनीत

—देवनारायण भारद्वाज

तन को जब शुद्ध बनाएगे मन मे पावनता लाएगे।
जब हम पवित्र हो जाएगे, कल्याण तभी हम पाएगे॥

हे इन्दु हमे कर दो पुनीत
बन जाय सभी मेरे सुमीत
सब ओर शान्ति हो और कान्ति
इस जगत मे मधु हो अभय गीत।

हम तभी शुद्ध हो पाएगे जब साधन शुद्ध बनाएगे।
जब हम पवित्र हो जाएगे कल्याण तभी हम पाएगे॥

प्रिय माताए पोषण करती
ये गौए दुग्ध हमे वरती
गति अश्व यान सुख दान करो
नभ ही हसती है धरती।

जब इनको हम सुख लाएगे तब स्वय सुखी हो जाएगे।
जब हम पवित्र हो जाएगे कल्याण तभी हम पाएगे॥

हो राजन या साधारण जन
पा जाए अन्न के सब साधन
रसपान कराए औषधिया
दे जाए आयु के सुख आसन।

शासक शासित जग जाएगे सुख शान्ति तभी सब पाएगे।
जब हम पवित्र हो जाएगे कल्याण तभी हम पाएगे॥

—एफ ४२ मानसरोवर कालोनी
रामघाट मार्ग अलीगढ २०२००१

आर्य समाजो के नाम परिपत्र—

आदर्श सामाजिक व्यवस्था

आप जानते है कि विश्व मे कई प्रकार की सामाजिक व्यवस्थाओ का अनुभव भिन्न भिन्न देशो ने किया है जैसे नाजी फासिस्ट पूजीवाद साम्यवाद। परन्तु किसी एक या अन्य कारण से ये सभी व्यवस्थाए बहुत थोड़े समय मे अन्त को प्राप्त हुई। इसके विपरीत वर्णाश्रम धर्म पर आधारित एक सामाजिक व्यवस्था जिसे भारतीय वर्ण आश्रम व्यवस्था भी कहा जाता है का वैदिक उपदेश हुआ। जिसमे कार्य दक्षता के आधार पर समाज के चार वर्णो की घोषणा हुई—ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य शूद्र और साथ ही यह उपदेश दिया कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने गुण कर्म और स्वभाव के अनुसार किसी भी एक वर्ण मे दक्षता प्राप्त करे। इस प्रकार सभी नागरिक अपनी व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नति के लिए पुरुषार्थ करे।

कुछ ऐतिहासिक कारणो से इस व्यवस्था मे शनै शनै विकृतिया आना प्रारम्भ हो गई। इन विकृतियो के विरोध तथा वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के मूल रूप को उजागर करने के उद्देश्य से ही आगामी ९ सितम्बर रविवार को एक राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन स्पीकर हाल कान्स्टीटयूशन क्लब रफी मार्ग दिल्ली मे किया गया है जिसमे मारीशस ट्रिनीडाड के उच्चायुक्तो के अतिरिक्त कई विद्वान अपने विचारो को एक प्रस्ताव रूप मे रखेंगे। गोष्ठी का समय २ ३० बजे से साय ६ बजे तक होगा।

अत आपसे अनुरोध है कि आप स्वय या किसी सदस्य को भेजकर अपनी समाज का प्रतिनिधित्व अवश्य कराए जिससे इस गोष्ठी के प्रस्तावो के कार्यान्वयन मे आप सहयोगी हो सकें।

डा० धर्मपाल
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

साप्ताहिक　ओ३म्　कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

संसद की गरिमा



हमारे महान राष्ट भारतवष की ससद का इन दिनो इतना राजनीतिकरण हो चुका है कि उसमे विषय की गम्भीरता की परवाह कम का जान लगी है और छोटा तथा अनावश्यक बात बडा और मह वपूण मुद्दा स ज्यादा मह वपूण हो गई है। श यकाल का समय तो शायद तू तू मै म के लिए हो गया है।

आरक्षण के प्रश्न पर श्री वी पी सिह की अल्पमत वाला सरकार दुविधा मे फसी हुई है। उन पर पक्ष और विपक्ष के सदस्या की ओर से आरोप लगाए जा रह है। इनमे तीन मुख्य है—(१) आरक्षण की घो णा राजनातिक कारणा स जल्दबाजा में की गई है। (२) जनता दल के आ तरिक सकट दूसरे शब्दा म श्री देवीलाल को उपप्रधान म त्री पद स हटान स पिछड वग के गुस्मे को शा त करन के लिए ब्रह्मास्त्र का उपयोग किया गया है (३) वोट बक की राजनीति का उपयोग किया गया है। इन आरोपो मे कितना स य या स याश है—यह राज नीतिज्ञ ही जान ! इस गम्भीर प्रश्न पर राजधानी दिल्ला हा नही बल्कि पूरे उत्तर भारत मे भारी प्रतिक्रिया हुई है और देश का छात्र तथा युवा वग सडक पर उत र आया है। सडक पर उठी यह आवाज ससद मे भा पहुच चुकी है। आरक्षण पक्ष के एक नायक श्री रामविलास पासवान जो के द्रीय सरकार के वरिष्ठ म त्रा भा है ससद की गरिमा को भूलकर जब जोश मे ज्यादा बोल गए तो भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष तथा सासद श्री लालकृष्ण आडवाणी का यह कहकर सरकार को उसका सामाए दिखानी पडी—यह अल्पमत सरकार है। श्री पासव न का यह कहना कि लोकसभा मे बैठे ५४० ससद सदस्य देश नही ह जो फसला सुना सक कि पिछडी जातिया के लिए आरक्षण होना चाहिए या नहा तो फिर ससद सदस्य और ससद क्या है ? एक ओर यह अल्पमत सरकार केवल १४० सदस्यो के बूत पर सारे देश में जाति और वग भेद का सघष पैदा करने वाला निणय कर सकती है। दूसर ओर यह भी चाहती है कि शेष ४०० सदस्य मूक दशक बने रहकर केवल समथन में हाथ उठा द।

प्रश्न आरक्षण के पक्ष या विपक्ष का नही है। प्रश्न ससद सदस्या क सम्मान तथा ससद की गरिमा का है। भारतीय ससद देश के ८५ करोड लोगा के भविष्य की निर्मात्री है जहा उनकी आकाक्षाम्रा क प्रतिरूप म ५४० सम्माननीय सदस्य देश की जनता की आवाज उठात है। यदि इस देश का जनता के भाग्य का निणय ससद नही करेगी तो फिर कौन करेगा

राष्ट को सर्वोपरि मानन और नतिक मूल्या पर आधारित राजनीति मे विश्व स प्रकट करने वाले श्री विश्वनाथ प्रताप सिह को अपने सहयोगी मन्त्रिया और सदस्यो को ससद का मयादा के प्रति सचत करना चाहिए तथा ससद का गरिमा को उच्चतम मह व एव सम्मान देन क लिए आवश्यक है ससद स क्षमा मागना चाहिए। साथ ही ससद मे कैसा व्यवहार अपेक्षित है इस पर पक्ष और विपक्ष के नेताम्रा को गम्भीरतापूवक विचारना चाहिए। —मूलच द गुप्त

सम्पादक के नाम पत्र—

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशती अ ंक

हैदराबाद सत्याग्रह विशेषाक आज ह मिला है। सरसरी दष्टि से इसका स्वाद चख गया हू। आपने इसमे पयाप्त श्रम किया है। विशेषाक पठनीय तो है ही सग्रहणीय भी है। आय जगत मे आप इस काय के लिए सदैव स्मरणीय रहेगे ऐसा मेरा विश्वास है। बधाई स्वीकार।

२० अगस्त १९९०　　—डा० सारस्वत मोहन मनीषी
अबोहर पजाब

राजनीति की परिभाषा

—डा० सारस्वत मोहन 'मनीषी'
प्राध्यापक डा ए व कालेज अबोहर

आज देश के अम्बर पर ता छाया गहन कुहासा है।
लटो और खसूटो राजनीति की यह परिभाषा है।

कुछ तो हमको लट लिया सतालिस की अ जादा न।
लेकर नाम सदा गाधी का लटा नकल खादी न।
कांटो से तो बच निकले थ फला की गुटब दी न।
वृक्षो और कम्रारो को मारा जालिम नमब दी ने।

रोज विदषक और मदारी करता नया तमाशा है।
लटो और खसूटो राजनीति की यह परिभाषा है।

भानुमती के कुनबे के कुर्सी के अ धे रग ने।
जनता का भटठा बठाया शिखण्डियो के भगड ने।
पूण चमन का दम घौटा था चलती हवा विषली न।
कमर तोड दी जनता की रोज रोज की रली न।

जनता का शासन जनता के प्राणो का ही प्यासा है।
लटो और खसूटो राजनीति की यह परिभाषा है।

देवी की पहचान हुई थी नारग और मस्तान स।
शुद्ध शा ति की ममता हमन देखी कब्रिस्तान से
उनकी नजरो मे भी मानव अधिक नही था ि ल स
जनता शासन की पहचान हुई थी रगे बिल्ल स।

वादे कालपात्र बन बठे आश्वासन इक भामा है।
लटो और खसूटो राजनीति की यह परिभाषा है।

पुन लटेरो के हाथा मे आई घर की त त्री है।
चोरी का अब डर कसा जब चोरो की रखवाली है।
सार दुखी हुए बैठे कस कह ह खुशहाला है।
कलिया कसे हस बताओ हुआ कसाई माला ह।

हम ता सीधा समझ रहे थे उलटा पड गया पासा है
लटो और खसूटो राजनीति की यह परिभाषा है।

लडती है बिल्ला आपस म ब दर उनका बाट रह।
अ धे अपना को रेवडिया भर भर झोली बाट रहे।
जिस डालो पर बठे है पगले उसको भा काट रहे
अधिक कहू क्या य हजरत भा थूक थूक कर चाट रह।

आसू पीला मम का खालो आशा यहा निराशा है।
लटा और खसूटो राजनाति की यह परिभाषा है

सत्ता तो वेश्या ह भया न एक की ता है
मै हा कब कहता हू एसा सारी दुनिया कहती है।
यही हाल यदि रहा तो उलझन बहुत बडी हो जाएगी
पाच साल म पहन पहले खाट खडी हो जाएगी।

राजनीति की मथुरा के मोहन का झठ दिलासा है
लटा और खसूटो राजनाति का यह परिभाषा है।

उनमे भी कुछ लाल रह थ इनम भा कुछ लाल है
उनमे भा कुछ सान रह थ इनमे भी कुछ सान रह
वे भा कुछ कुछ डाल रह थे ये भा कुछ कुछ ड न ह
उनमे भजनलाल थे काफा इनम देवीलाल ह

रामराज्य आने का तो अब फूटी पड गई आशा है।
लटो और खसूटो राजनीति की यह परिभाषा है।

हैदराबाद आय सत्याग्रह अधशती समापन समारोह के अवसर प आपने जो विशेषाक निकाला है वह आपके अनथक परिश्रम का फल है। सक खोज पूण लेख पठनीय हैं। आपका प्रयास प्रशसनीय है और आप साधुवाद क अधिकारा है।

—वीरभान जी प्रब धक
दयान द आदश विद्यालय तिलकनगर नई दिल्ली

मेरे आर्यसामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा. भवानी लाल भारतीय, चण्डीगढ़

[यह 'आर्यसामाजिक विकासयात्रा' क्यो लिखी गई है, इसमे क्या है, किस उद्देश्य से लिखी गई है -इत्यादि बाते इतनी सुस्पष्ट हैं कि उनके विषय मे कुछ भी लिखने की आवश्यकता नही है।

विख्यात् वैदिक विद्वान और साहित्यकार डा० भवानी लाल जी भारतीय ने, जिनका जीवन आर्यसामाजिक-साहित्य के उन्नयन मे लगा है, इस आत्मचरित्र-लेखमाला मे अपने जीवन के उतार-चढाव और अनुभवो का सुन्दर, सजीव चित्रण किया है। इसमे वैदिक और पौराणिक स्थितियो का सुन्दर दिग्-दर्शन है।

आशा है, सुधी पाठक इस लेखमाला का स्वागत करेगे ही, वे इसमे कोई न कोई दिव्य सन्देश भी पाएगे। —सम्पादक]

मेरा जन्म आषाढ कृष्णा ३ स० १९८५ वि० तदनुसार ६ जून, १९२८ (सरकारी रिकार्ड तथा परीक्षाओ के प्रमाणपत्रो मे १ मई, १९२८) को राजस्थान के इतिहास प्रसिद्ध नागौर जिले के अन्तर्गत परबतसर नामक ग्राम मे हुआ। आज मैंने अपनी आयु के ६२ वर्ष पूरे कर लिए है। मेरे जन्म के समय परबतसर भूतपूर्व जोधपुर (राज मारवाड) रियासत का एक परगना मुख्यालय था, जहा का प्रशासक हाकिम कहलाता था। मेरा जन्म जिस कुल मे हुआ वह साम्प्रदायिक आस्था की दृष्टि से शाक्त मत का अनुयायी था। प्रति वर्ष चैत्र तथा आश्विन के नवरात्रो मे मेरे घर पर देवी की पूजा साडम्बर होती थी। सात दिनो तक दुर्गा सप्तशती की कथा तथा आठवे या नवे दिन हवन होता था, जिसमे सप्तशती के श्लोको के उच्चारण के साथ यज्ञाग्नि मे आहुतिया डाली जाती थी।

कुल परम्परागत रीति से शाक्त होने के साथ-साथ मेरे पिता मुन्शी फकीर चन्द जी माथुर (जो परबतसर मे वकालत करते थे) शिवोपासक भी थे। प्रति वर्ष श्रावण के प्रत्येक सोमवार को हमारे यहा रुद्राभिषेक पूर्वक शिवार्चन होता और प्रस्तर के शिवलिंग को पचामृत (जल, दूध, दही, घृत और शहद) से स्नान कराया जाता था। यह अनुष्ठान प्राय ग्राम के एक पण्डित दुर्गालाल कराते थे।

नवरात्रो की पूजा ग्राम के सुपठित कथावाचक और कर्मकाण्डी प० रामपाल व्यास कराते। स्वभाव से अत्यन्त विनम्र, पौराणिक पूजा अर्चा मे कुशल प० रामपाल जी के व्यक्तित्व को मैं आज भी भूल नही पाया हू, कारण कि वे जिन जिन मन्त्रो श्लोको और इतर सस्कृत वाक्यो को नवरात्र की पूजाओ के प्रसग मे उच्चरित करते थे प्राय ज्यो-के-त्यो मेरे स्मृति पटल पर उसी समय अकित हो गये थे और आज आधी सदी बीत जाने पर भी उन मन्त्रो श्लोको और अन्य वाक्यो को मै विस्मृत नही कर पाया हू। विस्मृत होने का तो कोई कारण ही नही है क्योकि कालान्तर मे धार्मिक साहित्य के अध्ययन के कारण वे सभी सन्दर्भ यथा प्रसग पुन पुन स्मृत होते रहे—

प० रामपाल जी व्यास के द्वारा उक्त (कहे गये) शास्त्रीय वचन जो मेरे बाल सुलभ मन मे उसी समय अकित हो गये थे, निम्न है—

आशीर्वादात्मक मन्त्र

१ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा (यजु०)।

२ भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा (यजु०)।

३ स्वस्ति साम्राज्य भोज्य स्वराज्य पारमेष्ठ्यराज्य महाराज्यमाधिपत्यमय समन्तपर्यायीस्यात् सार्वभौम सार्वभुष आन्तादा परार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। (ऐतरेयब्राह्मण)।

इसीप्रकार सप्तशती के अनेक श्लोक जिनमे 'नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनम' वाले अनेक श्लोक जयन्ति मगला काली भद्रकाली कपालिनी दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते और रूप देहि जय देहि यशोदेहि द्विषो जहि वाले श्लोको की गणना की जा सकती है। प० रामपाल जी आचमन के समय यह श्लोक बोलते थे —

अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्था गतोऽपि वा।
य स्मरेत पुण्डरीकाक्ष स बाह्याभ्यान्तर शुचि ॥

शिवोपासना के प्रसग मे पुष्पादन्ताचार्य का महिम्न स्तोत्र तथा यजुर्वेदोक्त 'तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु' वाले मन्त्र भी स्मृति मे यथावत् रहे। एक बिल्व-'शिवार्पणम्' कहकर शिव पिण्डी पर बिल्व पत्रो को समर्पित करना भी ज्यो-का-त्यो याद रहा। प० रामपाल जी आशीर्वाद वाक्य निम्न प्रकार बोलते और बुलवाते थे 'भो ब्राह्मणा स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु" इस पर उपस्थित लोग कहते "स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति"। तो धार्मिक क्रियाकाण्ड और पूजा अर्चा के यही सस्कार कालान्तर मे आर्यसमाज के कर्मकाण्ड मे अभिरुचि के रूप मे यथावसर जागृत हुए और याज्ञिकक्रिया पद्धतियो मे मेरी रुचि यथावत् बनी रही। मेरे कनिष्ठ पितामह मुन्शी देवीलालजी पच देवोपासना के प्रतीक (शिव, विष्णु (बालमुकुन्द), गणेश, देवी आदि) की मूर्तियो का षोडशोपचार पूजन नित्य प्रात करते थे। इन्ही पितामह के ससर्ग मे बालकाल का अधिकाश समय व्यतीत हुआ, अत मूर्तिपूजा के अगभूत-देवप्रतिमाओ के स्नान, आचमन, चन्दन-लेप, धूप-दान नीराजना, निर्माल्य (प्रसाद) आदि से अन्तरग परिचय हो गया। परन्तु इन सबमे आस्था की अपेक्षा कौतूहल वृत्ति ही अधिक थी।

आर्यसमाज से परिचय

परिवार और ग्राम की बात छोडिए, मारवाड रियासत के जिस पूर्वी भाग मे मेरा जन्म हुआ और जहा मेरा शैशवकाल व्यतीत हुआ, उसके आसपास कही भी आर्यसमाज का वातावरण नही था। मेरे ग्राम के अधिकाश निवासी ब्राह्मण या वैश्य (माहेश्वरी) थे। इनमे वैष्णव और शैव सम्प्रदायो की ही आस्थाए मुख्यत प्रचलित थी। अधिकाश माहेश्वरी रामानुज मतानुयायी श्री वैष्णव थे। ब्राह्मणो मे शिवपूजा प्रचलित थी। जोधपुर के मूल निवासी किन्तु परबतसर मे वकालत करने वाले श्री पोकरदास जी व्यास वल्लभमतानुयायी वैष्णव थे। उधर मेरे घर का वातावरण शाक्त आस्थाओ से परिपूरित था। इस प्रकार के वातावरण तथा परिपार्श्व को देखते हुए मेरे मन मे आर्य सामाजिक आस्थाओ का उद्भव, पल्लवन और विकास हुआ, इसे क्या कहा जाये ?

१ क्या यह ईश्वर की अनुकम्पा थी ?

२ क्या इसे पूर्व सस्कारो का उदय कहा जाए ?

३ अथवा यह मेरे मन की ही ग्रहणशील वृत्ति का परिणाम था। शायद तीनो ही कारण रहे होगे।

मेरा ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की ओर झुकाव क्यो और कैसे हुआ ? मुझे स्मरण आता है कि जब मै प्राइमरी स्कूल की तीसरी कक्षा मे पढता था, हमारे इतिहास के पाठ्यक्रम मे एक पुस्तक पढाई जाती थी 'सरल ऐतिहासिक कहानिया' जिसके लेखक थे प० गोकुल प्रसाद पाठक। इसमे अनेक महापुरुषो के सक्षिप्त बालोपयोगी जीवनवृत्त निबद्ध किए गए थे। इनमे मुझे जो सर्वाधिक अच्छे लगे और जिनसे मै प्रभावित हुआ वे थे—स्वामी दयानन्द, कबीर, मार्टिन लूथर और राजा राममोहन राय। कहना नही होगा कि ये सभी महापुरुष अपने समय के प्रख्यात सुधारक तथा क्रान्तिकारी धर्म नेता थे। उपर्युक्त चारो मे से भी मुझे स्वामी दयानन्द की जीवन-गाथा ने अत्यधिक प्रभावित किया। स्वामी जी की जीवनी मे उल्लिखित शिवलिंग पर चढाए निर्माल्य का चूहे द्वारा भक्षण और परिणामस्वरूप मूलशकर की जड पूजा मे विरक्ति मुझे सर्वाधिक क्रान्तिकारिणी घटना प्रतीत हुई। मै इस पुस्तक (सरल ऐतिहासिक कहानिया) तथा मूलशकर के जीवन की इस अविस्मरणीय घटना को ही अपने आर्यसमाजी जीवन का प्रवेशद्वार मानता हू। एक बार मेरे बडे भाई (श्री बजरग लाल माथुर) किसी कार्यवश अजमेर गए। वे अपने साथ पण्डित (बाद मे डाक्टर) सूर्यदेव शर्मा का लिखा एक ट्रैक्ट लेकर आए, 'आर्यसमाज की आवश्यकता'। अत्यन्त आकर्षक तथा प्रभावपूर्ण ढग से लिखे गए ट्रैक्ट का मैंने बचपन मे धर्म ग्रन्थ की भाति अनेक बार पाठ किया था। इसमे विद्वान लेखक ने अनेक प्रमाण देकर आर्यसमाज की आवश्यकता को सतर्क ढग से प्रस्तुत किया है। इसे आर्यसमाज अजमेर ने किसी प्रीति भोज के अवसर पर प्रकाशित और वितरित किया था। इस पुस्तिका के लेखक की दृष्टि मे आर्यसमाज की आवश्यकता निम्न कारणो से है—(१) भारतीय संस्कृति की ओर लोगो को आकृष्ट करना। (२) साम्यवाद और नास्तिकता की लहर से बचाना। (३) युवको को फैशनपरस्ती से बचाना। इस ट्रैक्ट मे पाश्चात्य वेशभूषा पर एक

व्यंग्यात्मक श्लोक पैरोडी शैली मे लिखा गया था। उसे बार-बार पढ़कर मै स्वय का मनोरंजन तो करता ही था, बच्चो को भी उसे सुनाकर उनके मनो-विनोद मे सहायक होता। यह श्लोक अभी तक मुझे यथावत् स्मरण है—

कोट च बूट च पतलून दिव्य।
चुरुटा मुखे चचलअद्वितीय॥
लेडी गुलाम शुभ कर्म हीन।
बाबू जन मध्यमाम प्रवीणम्॥

मैंने इस ट्रैक्ट की सहायता लेकर आर्य कुमार सभा के अधिवेशनो म अनेक बार भाषण दिए है।

ग्राम के पौराणिकता प्रधान वातावरण म आर्यसमाज का कही नामो-निशान भी नही था। तथापि इस गाव म दो व्यक्ति ऐसे थे जो स्वय को आर्य-समाजी कहते थे, अथवा ग्रामवासी उन्हे आर्यसमाजी समझते थे। ये थे—(१) श्री दानमल जी सिंहवी जो जन्मना ओसवाल जैन थे। (२) श्री लाखनसिंह गार्ड। ये शायद उत्तर प्रदेश के निवासी थे और मकराना परबतसर वाच रेलवे लाइन पर रेलवे गार्ड के रूप मे कार्यरत रहे। मेरा इन गार्ड महाशय से कोई सीधा सम्पर्क नही रहा किन्तु श्री दानमल जी से दीर्घकाल तक सम्पर्क रहा। प्रथम तो इस कारण कि वे मेरे सहपाठी स्व० दलपतसिंह के पिता थे। द्वितीय जब म जोधपुर के सरदारपुरा मोहल्ले मे रहता था, तो इनसे प्राय भेट हो जाती थी। उन्ही दिनो मैंने दयानन्द और आर्यसमाज के प्रसग मे सत्यार्थप्रकाश का नाम सुना। शायद उसकी एक प्रति श्री दानमल जी के पास थी, जिसे मै पढने के लिए ले तो आया किन्तु उसमे वर्णित और विवेचित अनेक धार्मिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक विषय मेरे कुछ भी पल्ले नही पडे। हा, एक बात तो खूब याद रही। यह ११वे समुल्लास का प्रसग है जिसे मैने रुचिपूर्वक पढा था—धूर्त और चालाक लोग किस प्रकार प्रथम तो मूर्ति को धरती मे गाड देते है और फिर किसी धनिक श्रीमान को यह कहकर बहकाते और फुसलाते है कि अमुक देवता ने मुझे स्वप्न म दर्शन देकर कहा है कि अमुक स्थान पर धरती पर मैं दबा पडा हू। तू मुझे वहा से निकाल और अमुक धनी व्यक्ति को कहकर मेरा मन्दिर बनवा तथा मेरी मूर्ति की वहा प्रतिष्ठा कर आदि। मूर्तिपूजा द्वारा फैलायी गयी इन प्रवचनाओ के कारण जडपूजा से मेरी विरक्ति की कोई सीमा नही थी। १९३९ के हैदराबाद आर्यसत्याग्रह के समय मेरी आयु ११ वर्ष की थी और मैं पाचवी श्रेणी का विद्यार्थी था। मेरे ग्राम के श्री रामानन्द बग, जो अब वहा वकालत करते है, उन दिनो नागपुर विश्वविद्यालय के छात्र थे। उन्हे कही से आर्यसत्याग्रह विषयक कुछ प्रचारात्मक ट्रैक्ट मिले। उन्होने उन ट्रैक्टो को ग्रामवासियो को वितरित किया। २-३ ट्रैक्ट मेरे हाथ म भी आए। मैंने इन्हे पढा और सत्याग्रह की गतिविधियो से परिचित हुआ। उस समय सत्याग्रह की सहायता करने का भी विचार आया किन्तु मुझे तो जेब खर्च के नाम पर भी कुछ नही मिलता था, जिसे सत्याग्रह सहायता के रूप म भेज पाता। वर्षों तक ये ट्रैक्ट मेरे पुस्तक सग्रह मे रहे, फिर इधर-उधर हो गए।

आर्यसमाज की ओर झुकाव हो जाने पर भी अन्यान्य धार्मिक कृत्यो समारोहो, उत्सवो, व्रतो और त्यौहारो के प्रति पूर्णतया विरक्ति नही हुई किन्तु इनके प्रति आसक्ति भी नही थी। हा एक प्रकार की जिज्ञासा अथवा संस्कार जन्य नैकट्य की अनुभूति अवश्य होती थी। मेरे पिताजी गोरखपुर से प्रकाशित होने वाले कल्याण के ग्राहक थे। साधारण अको के अतिरिक्त इस बीच हम शक्ति अक, योगाक, वेदान्ताक सन्त अक तथा रामचरित मानसाक मिले। इन अको म प्रकाशित सरल लेखो को पढने से भी अधिक आकर्षण था कल्याण मे प्रकाशित रग बिरगे चित्रो का। कल्याण मे नवदुर्गाओ के प्रकाशित चित्र कौतूहलवर्धक थे। खास तौर से बगला, धूमावती और छिन्नमस्ता के चित्र। योगाक मे प्रकाशित एक लेख जड योग ने मुझे खासतौर से प्रभावित किया जिसमे पाश्चात्य भौतिकता प्रधान सभ्यता की विभीषिका को रोमाचक शैली म वर्णित कर समाज म व्याप्त विषमताओ का यथार्थ चित्रण खीचा गया था। इस जडोपासना प्रधान सभ्यता पर रुद्र के कोप के प्रतीक-शकर के तीसरे नेत्र के खुलने को दर्शाने वाला एक प्रभावपूर्ण चित्र भी हमे लुभाता था। कल्याण के प्रख्यात चित्रकारो विनयकुमार मित्र (B K Mitra) तथा जगन्नाथ के नामो मे मैं सुपरिचित हो गया था। वेदान्त अक मे पुरी के तत्कालीन शकराचार्य स्वामी भारती कृष्णतीर्थ का लेख (शीर्षक स्मरण नही) पढ़ा जिसमे उन्होने स्वामी दयानन्द के सहिता प्रमाणवाद (केवल वेद की चार सहिताओ को ही प्रमाण मानने) के सिद्धान्त पर आपत्ति की थी। मानस अक मैं दिये मास पारायण के क्रम के अनुसार मैंने एक बार सम्पूर्ण रामचरितमानस का पाठ ही कर डाला था। पुन अध्यापकीय जीवन मे मानस के विभिन्न प्रसगो को पढाने का तो अवसर मिला ही था।

१९४० से १९४२ तक मिडिल स्तर का अध्ययन [illegible] खाना के नगर मकराना (नागौर) मे रहा। यहा का वातावरण भी सनातनधर्मी मान्यताओ से ही परिपूर्ण था, किन्तु कुछ सहपाठियो का आर्यसमाज के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख था। जोधपुर के लेखक श्रीनाथ मोदी ने ज्ञानमाला शीर्षक एक ट्रैक्ट माला का प्रकाशन किया था। इस ग्रन्थावली म स्त्री शिक्षा अछूतोद्धार बाल विवाह-निषेध, नशानिवारण आदि समाज सुधार क विषयो पर रोचक सामग्री प्रकाशित की गई थी। १६ पेजी इन छोटे छोटे ट्रैक्टो का बार-बार पारायण करने से इनकी विषय-वस्तु मुझे कण्ठाग्र भी हो गई थी। इसके आधार पर मै प्राय अपने स्कूल की साप्ताहिक सभाओ म प्रभावशाली ढग से बोलता। अत एक प्रगल्भवक्ता के रूप म आगे चलकर उभरने की शायद यह प्रारम्भिक तैयारी ही थी। एक बार समीपवर्ती किशनगढ़ रियासत के रूपनगर कस्बे के बाजार मे मैंने इन्ही विषयो पर अपना लिखित व्याख्यान दिया था।

मेरे पितामह मुन्शी राजमल जी उर्दू और फारसी के ज्ञाता थे। उनकी सगृहीत पुस्तको मे उर्दू का बडे आकार का सत्यार्थप्रकाश भी था जिसकी हमारे परिवार म प्राय गर्वपूर्वक चर्चा की जाती। कई वर्षो तक यह मेरे निजी पुस्तक सग्रह म रहा। १९४२ म मै हाई स्कूल की पढाई के लिए जोधपुर गया। यहा ही सबसे पहले आर्यसमाज से मेरा साक्षात् परिचय हुआ। इससे पूर्व तो वह मेरे कल्पना लोक का एक मधुर स्वप्न ही था। मै अपनी मामी के घर सरदारपुरा की पाचवी सडक पर रहता था। दूसरी सडक पर आर्यसमाज मन्दिर था। मै इसके वार्षिकोत्सव मे प्रथम बार सम्मिलित हुआ। यहा का सारा वातावरण ही मेरे लिए रोमाचक, प्रमोदजनक तथा उत्साहवर्धक था। वार्षिकोत्सव म स्वामी विश्वानन्द जी के प्रवचन प० कालीचरण शर्मा मौलवी आलिम फाजिल के तर्क पूर्ण व्याख्यान, प० प्रकाशचन्द्र कविरत्न के रसमय भजन तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तब युवा भजनोपदेशक प० सुरेन्द्र शर्मा के फडकते हुए भजनोपदेशो ने मेरे लिए एक नवीन ससार का द्वार खोल दिया। सत्यार्थप्रकाश कहा से प्राप्त हो सकता है, इसका मुझे पता नही था अत मैंने एक पोस्टकार्ड मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान अजमेर के नाम इस आशय का लिखकर भेज दिया कि वे मुझे वी० पी० से एक प्रति सत्यार्थप्रकाश भेज दे। उस समय मै ग्रीष्मावकाश मे अपने पिताजी के पास था। वी० पी० से पुस्तक परबतसर ही आई। सात आना मूल्य था और दस आना वी० पी० का व्यय लग गया। सत्यार्थप्रकाश का यह आर्डर मैने पिताजी की गैर जानकारी म ही भेज दिया था किन्तु उन्होने खुशी-खुशी एक रुपया एक आना देकर वी० पी० छुडा ली। सत्यार्थ प्रकाश के साथ वैदिक पुस्तकालय का सूचीपत्र भी था। ऋषि दयानन्द की सभी पुस्तके उस समय बेहद सस्ती थी, मैंने चुनकर संस्कारविधि से लेकर स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश और स्वीकार पत्र तक की पुस्तक वी० पी० स भेजने के लिए पुन वैदिक पुस्तकालय अजमेर को आर्डर भेज दिया। इस बार पुस्तको का कुल मूल्य कुछ अधिक था। अत जब वी० पी० आई तो पिताजी ने उसे छुडा तो लिया परन्तु कुछ नाराज भी हुए कि मैने उनसे बिना पूछे ही आर्डर भेजा था। इन पुस्तको के वे सारे प्रसग मैने रुचि से पढे जो मेरी समझ म आने वाले थे। मेरे परिवार म शाक्त मत की आस्थाए थी, किन्तु पिता और पितामह आर्यसमाज की विचारधारा के प्रशसक थे अत उन्हे इस बात की प्रसन्नता थी कि यह सन्तान एक अच्छी विचारधारा की ओर ही झुकी है। रात्रि होते ही गाव मे अन्धेरा हो जाता और हम लोग अपने पिताजी के दफ्तर म (वही हमारा निवास स्थान था) शय्यासीन होने लगते। उस समय पितामह हमको निर्गुण भजन सुनाने के लिए कहते। 'अजब हैरान हू भगवन्' जय जगदीश हरे तथा प्रकाशजी का भजन अति निकट विकट सकट का ठठ सिर पर है परवाह ही नही जब रक्षक जगदीश्वर है। आदि भजनो को हमसे सुनकर वे प्रसन्नता प्रकट करते। उनकी सम्मति म आर्य समाज का निर्गुणवाद वैष्णवो के पाखण्डपूर्ण साकार भक्तिवाद से श्रेष्ठ था।

जोधपुर मे मौसी के घर पर रहते हुए श्रीकृष्ण मुरारी माथुर के सम्पर्क म आया। अध्ययन की दृष्टि से वे हमसे वरिष्ठ थे। आर्यसमाज के उत्सवो म जाकर व्याख्यान सुनने मे उनकी गहरी रुचि थी। मैं भी उनके साथ नगर आर्यसमाज जोधपुर के वार्षिकोत्सव मे व्याख्यान सुनने अपने घर से काफी दूर सोजती गेट स्थित वैदिक कन्या पाठशाला के प्रागण मे जाता। वहा से लौटते-लौटते रात के ११ बज जाते। उस समय चौपासनी रोड पूरी तरह सुनसान होती किन्तु आर्य समाज के व्याख्यानदाताओ के रुचिकर व्याख्यानो का आकर्षण सर्वाधिक प्रबल था। यह उत्सव प्रति वर्ष दीपावली पर होता। अनेक वर्षों तक आचार्य विश्वश्रवा इसमे नियमित रूप मे आते रहे। उनका व्याख्यान एक वेद मन्त्र को प्रस्तुत करने के साथ आरम्भ होता। उदाहरणार्थ वे कहते -

(शेष पृष्ठ ९ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

ऋग्वेद म एक मन्त्र प्राता है—इडा सरस्वती मही तिस्रोदवीययोभुव । तीन देविया कल्याणकारिणी है और इसके बाद वे मन्त्र वर्णित इला सरस्वती और मही को आधार बनाकर मातृभाषा मातृभूमि और मातृसस्कृतिकी प्रभावपूण व्याख्या करन ।

मरदारपुरा म दो तीन वर्षो तक रहकर भी वहा की सामाजिक गति विधियो म पूरे तौर पर जुड नही सका । इसका एक कारण तो यह था कि यहा आर्यकुमार सभा की कोई गतिविधि नहा थी और प्रौढ पुरुषो के बीच आर्यसमाज के प्रति अपनी अभिरुचि का प्रकट करन म मुझे सकोच होता था । किन्तु स्वामी दयानन्द क प्राय सभी ग्रन्था (वेदभाष्य और वेदागप्रकाश को छोडकर) को पढ कर मै अपन को कटटर आयसमाजी मानने लगा था और आ बैल मुझे मार की तरह जिस-तिस से मूर्तिपूजा को लकर भिड जाना । मेरे एक सहपाठी रोशन प्रकाश आय थे । उन्हे स्वय को आय लिखते देखकर मुझे प्रसन्नता हुई । इस बीच हिन्दी साहित्य की कथा उपन्यास तथा अन्यान्य विधाओ के ग्रथो के अध्ययन मे मेरी अभिरुचि निरन्तर बढती रही । रायल क्लब के पुस्तकालय मे माधवाचार्य लिखित पुस्तक 'बुद्धदेव का जूता' पढ़ा तो इस पौराणिक पण्डित की उद्दण्डता पर बडा क्रोध आया । --क्रमश

आवश्यकता

प्रथमा से शास्त्री तक पढाने के लिए अवकाश प्राप्त ४ सस्कृत अध्यापको तथा २ अग्रेजी अध्यापको की आवश्यकता है ।

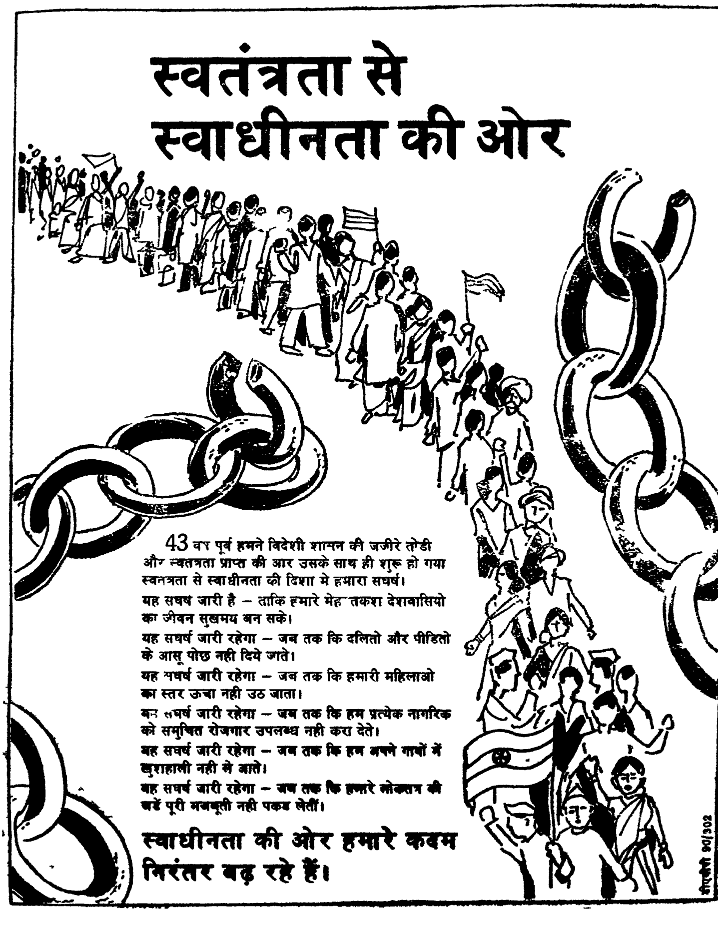
वेतन ५०० रुपये से १२०० रुपये प्रतिमाह दिया जाएगा । गुरुकुल मे रहने वालो को प्राथमिकता दी जाएगी तथा भोजन, दूध आदि नि शुल्क होगा ।

शीघ्र आवेदन करे ।

आचार्य प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री प्रबन्धक

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय

खेडा खुर्द दिल्ली ११००८२



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

१	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम द्वितीय) प्रत्येक	१ ५०
[illegible]	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)	२ ००
४	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक	२ ०
[illegible]	नैतिक शिक्षा (भाग दशम एकादश) प्रत्येक	४ ००
१[illegible]	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)	५ ००
१[illegible]	धर्मवीर हकीकत राय वैद्य गुरुदत्त	५ ००
१[illegible]	फ्लैश आफ ट्रुथ डा० सत्यप्रकाश वर्मा	[illegible] ००
[illegible]	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश , ,	२ ००
१[illegible]	एनाटामी आफ वेदान्त स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	५ ००
१७	आर्यों का आदि देश	२ ००
१८	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	२५ ००
१९	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स ,	२ ०
२०	चत्वारो वै वेदा , ,	५ ००
२१	द्वैतसिद्धि , ,	५ ०
२२	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे डा० धर्मपाल डा० गोयनका	२० ००
२३	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प० सच्चिदानन्द शास्त्री	५ ०
२४	हसता चल, हसाता चल स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती	६ ५०
२५	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (टैक्ट)	५० रु० सैकडा
२६	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)	५० रु० सैकडा
२७	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)	५० रु० सैकडा
२८	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)	५० रु० सैकडा
२९	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या) डा० रघुवीर	५० रु० सैकडा

नोट उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक व्यय पृथक नही लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 30 31 8 1990 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३६

आर्य कन्या सदन, दिल्ली

सर्वश्रेष्ठ संस्था घोषित

बाल कल्याण कार्यों मे सर्वोत्तम कार्य करने पर दिल्ली प्रशासन द्वारा वर्ष १९८९-९० के लिए आर्यजगत की विख्यात संस्था आर्य अनाथालय की शाखा आर्य कन्या सदन को सर्वश्रेष्ठ संस्था घोषित किया गया है।

६ अगस्त को आयोजित एक भव्य समारोह मे दिल्ली प्रशासन के मुख्य सचिव श्री विजय कपूर आई० ए० एस० ने पुरस्कार स्वरूप इस संस्था को पचास हजार रुपये तथा एक प्रशस्ति पत्र भेंट किया। इस अवसर पर आर्य अनाथालय तथा सम्बन्धित संस्थाओ के अधिकारीगण भारी संख्या मे उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि आर्य अनाथालय की स्थापना विख्यात राष्ट्रीय आर्य नेता निर्भीक संन्यासी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सन् १९१८ मे दरियागंज स्थित पटौदी हाउस मे की थी जहां आज ७५० से अधिक अनाथ बालक बालिकाओ को संरक्षण प्राप्त है।

आर्य अनाथालय, दिल्ली

६६वां उत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली १९ अगस्त। अनाथ निराश्रित बालक बालिकाओ के लालन पालन और शिक्षा क्षेत्र मे राष्ट्रीय महत्व की आर्य संस्था आर्य अनाथालय के ६६वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास उपमंत्री श्रीमती ऊषासिंह ने आर्य अनाथालय आर्य बालगृह तथा आर्य कन्या सदन द्वारा निराश्रित बच्चों के कल्याणार्थ किए जा रहे कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा की। उन्होने देश की समाज सेवा संस्थाओ से अपेक्षा की कि वे सरकार द्वारा बाल विकास के कार्यक्रमो को प्रभावी रूप से लागू करने मे खुले मन से सहयोग करें।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए निगमायुक्त श्री ऋषि देव कपूर आई० ए० एस० ने कहा कि आर्य अनाथालय अपनी तरह की एक श्रेष्ठतम संस्था है जो अन्य संस्थाओ के लिए एक आदर्श है। यहां के सभी बालको के हृदयो मे राष्ट्रीयता से ओत प्रोत विचारो को फलते फूलते देखकर श्री कपूर ने संस्था के अधिकारियो की भूरि भूरि प्रशंसा की।

सेवा मे—

२३६७- श्री पुस्तकाध्यक्ष जी,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी,
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा
सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १३, अक ४६ | रविवार, ६ मितम्बर, १६६० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १६७२६४६०६१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपय | आजीवन २५० रुपय | विदेश म ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

जातीय आधार पर आरक्षण
सामाजिक विषमताओं में वृद्धि कर रहा है।

—डा० धर्मपाल
प्रधान दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज जन्म के आधार पर किमी जाति की बात को स्वीकार नही करता। यहा पर गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था पर बल दिया गया है। वैदिक धर्म मे कही पर भी जन्म के आधार पर किसी को अछूत अथवा पिछडा वा अगडा कहने की बात को नही माना गया। ये जातिया समय के प्रवाह मे फलस्वरूप बनती चली गयी और एक ऐसा समय आया जब जन्म को ही आधार माना जाने लगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुन इस विषय को सामाजिक व्यवस्था को बदलने के उद्देश्य से उठाया और वे स्वय तथा बाद मे उनके अनुयायी, आर्यसमाज के सिद्धान्तो मे आस्था रखने वाले लोग इस दिशा मे सफल भी हुए, परन्तु जब जाति के आधार पर आरक्षण की सुविधा दी जाने लगी, तो वही लोग पुन अनुसूचित कहलाने की दिशा में प्रवृत्त हो गए। आर्यसमाज के गुरुकुलो मे किसी को पता भी न होता था कि वे किस जाति मे जन्मे हैं, पर जब वे जीवन-यापन के लिए बाहर निकले तो सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओ के लोभ को वे भी सवरण न कर सके। किसी का नाम लिखना उचित नही है, पर अपनी बात को कहने के लिए नामो का स्मरण आवश्यक है। श्री रामचन्द्र 'विकल' सासद सुनाया करते है कि उनके दादा के समय एक हरिजन ने प्रश्न उठाया कि मेरी बेटी के साथ विवाह कौन करेगा, तो उन्होने कह दिया कि यह लडका सामने खडा है, इसके साथ विवाह कर दीजिए। यह आर्यसमाज का आदर्श था। कुछ दिन बाद वही हरिजन आरक्षण की सुविधा लेने लगे। प्रसिद्ध आर्यनेता श्री पृथ्वी-सिह आजाद ने कहा कि हमारे साथ रोटी-बेटी का व्यवहार नही हो रहा है। इस पर श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित ने कहा कि निश्चय ही आपके साथ रोटी बेटी का व्यवहार होगा, पर आप आर्यसमाजी तो बनिए। वे बोले कि मै तो आर्यसमाजी हू। श्री दीक्षित ने कहा कि आप राजनीति मे तो हरिजन है क्योकि आरक्षित स्थान से चुनाव लडते है। आपको सबके बराबर स्थान दिया जा रहा है, पर आप उस स्थान को कुछ सुख-सुविधाओ के कारण ठुकरा रहे है। आर्यसमाज आपको जो देना चाहता है, वह आप ले ही नही रहे। निश्चय ही आर्यसमाज तो गुण कर्म स्वभाव के अनुसार जाति का निर्धारण करना चाहता है, पर हमारे हरिजन भाई आरक्षण की चकाचौंध से भ्रमित हो गए है। एक बार किसी शास्त्रार्थ के दौरान विपक्षी ने कहा कि हम आपकी वर्णव्यवस्था को तब मानेगे जब आप इन हरिजनो के घर का दूध पीलेगे। श्री रघुवीर सिह शास्त्री वहा पर थे। उन्होने दो युवको की ओर वही पर इशारा किया और वे गटागट दूध पी गए और आर्यसमाज की जय का नारा लग गया। इसी प्रकार श्री ब्रह्मानन्द दण्डी कहा करते थे कि मैं अपने शिष्यों को ब्राह्मण बनाने की कोशिश कर रहा हू पर ये अब भी जब विवाह आदि की बात चलती है, तो अपनी जन्मना जाति की ओर उन्मुख होते हैं। देश मे जो हरिजनों ने सामाजिक-आर्थिक पिछडापन भोगा है, आर्यसमाज तो उन्हे समान अधिकार देना चाहता है, पर वे लेना ही नही चाहते क्योकि सरकार उन्हे जो सुविधाए दे रही है, वे ज्यादा लुभावनी है। इस प्रकार सरकार ही उन्हे आरक्षण देकर ऊपर नही उठने देना चाहती।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक वक्तव्य ध्यान देने योग्य है—"जो कोई जन्म से वर्णव्यवस्था माने और गुण कर्म के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिए कि जो कोई अपने वर्ण को छोड नीच अत्यन्त अथवा क्रिश्चियन, मुसलमान हो गया हो, उसको भी ब्राह्मण क्यो नही मानते ? तब यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म को छोड दिया, इसलिए वह ब्राह्मण नही है, इससे यह भी सिद्ध होता है कि जो ब्राह्मणादि उत्तम कर्म करते हो, वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण मे और उत्तम वर्णस्थ हो के नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण मे गिनना ही अवश्य चाहिए।" यह वक्तव्य निश्चय ही किसी भी नृशास्त्र-समाजशास्त्र के सिद्धान्तो पर खरा उतरेगा। सामा-जिक व्यवस्था का यही नियम है और यही होना भी चाहिए, जो जैसा क[illegible]म वैसा ही वर्ण मिले। हम कम फल मे विश्वास करत है—'अवश्यमेव भोक्त[illegible]म् कृत कर्म शुभाशुभम्'। जब हम भगवान् श्रीकृष्ण के इस उपदेश को अन्य जन्म के लिए सत्य मानते है तो यहा क्यो नही मानते। हमारे सिद्धान्त तो सर्वत्र एक समान ही होने चाहिए। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के आठवे अध्याय मे 'चातुर्वर्ण्य मया सृष्ट गुण कर्म विभागश की सुन्दर व्याख्या की है—'ब्राह्मण क्षत्रिय विशा शूद्राणा च परतप, कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवैर्गुण।' ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रो के स्वभाव और गुणो से उत्पन्न हुए 'कर्माणि प्रविभक्तानि कर्म विभाग किए है। आगे चलकर भगवान् कृष्ण ने विभिन्न वर्णों की विशेषताए भी बताई है। यहा विस्तारभय से उनको देने की आवश्यकता नही है। परन्तु एक श्लोक बहुत ही प्रासगिक है जो आर्यों के लिए भी ग्राह्य है --

शूद्रो ब्राह्मण तामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रिया ज्जातमेवन्तु विद्या द्वैश्यान्त थैव च ॥ १०। ६५

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को, वैसे ही विद्या आदि की प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय व वैश्य भी ब्राह्मणत्व को, और अच्छे गुणो तथा उच्च वर्णों के कर्त्तव्य कर्मों को छोडकर शूद्रत्व को प्राप्त होते है।

कुछ लोग मनुस्मृति की दुहाई देते हैं कि वहा पर जन्मना जाति व्यवस्था की बात कही है। यह भी नितान्त भ्रामक है। मनु का विधान इस प्रकार है—लोकाना तु विवृद्ध्यर्थं मुख बाहूरुपादत। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र च निरवर्तयत्। (१।३१) ऐसी ही मान्यता वेदो मे भी प्राप्य है। 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद बाहू राजन्य कृत, उरू तदस्य यद्वैश्य पद्भ्या शूद्रो अजायत। (यजु० ३१।११) इस प्रकार मनु के विचार निश्चय ही वैदिक हैं। यदि कही पर कुछ अकथनीय है, तो वह प्रक्षेप है। मनुस्मृति के अध्याय-१ के ८८, ८६, ६०, ६१ श्लोको के पढने से

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

तू प्यार का दरिया है, मगर एक बून्द के प्यासे हम।

—महात्मा रामकिशोर वैद्य

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति। सर्वभूतेषुचात्मान ततो न विचिकित्सति॥ यजु० ४०। ६॥ अर्थ—हे मनुष्या (य) विद्वान्जन (आत्मन्) परमात्मनि (एवसर्वाणि) अखिलानि (भूतानि) प्राण्यप्राणिरूपाणि (अनुपश्यति) विद्याधर्मयोगाभ्यामानन्तर समीक्षत। (य) विद्वान्जन पुन (सर्वभूतेषु) सर्वेषु-प्रकृत्यादिप (आत्मानम) अतति सवत्रव्याप्रोतित च समोक्षते-सतत तदनन्तर (नविचिकित्सति) न सशयप्राप्राति। भावार्थ हे मनुष्यो जो सवव्यापक न्यायकारी सवज्ञ सनातन सबक द्रष्टा परमात्मा को जानकर सुख-दु ख हानि-लाभ मे, अपन समान सब प्राणियो को जानकर धार्मिक होन हे वही मोक्ष को भोगत है।

कसी बिडम्बना है कि प्यार की एक बूद के लिए यह मानव तरस रहा है भटक रहा है। जल से थल पर आया बाग म गया माली से पूछा ऐ माली-बागवा नख्ले मुहब्बत मे असर हैं कि नही। कोई इस बाग मे उलफत का शजर है कि नही। बागबान चुप है। फिर यह दौड आया लोगो की भीड मे। उनम एक पुराने परिचित प्रेमी को पहचाना मगर विश्वास नही पडता पूछता है, सच बता तेरे खुदा तुझको है मेरी कसम। वो तेरी प्यार की पहली सी नजर है कि नही। उदास निराश हो जाता है। सोचता है कुछ वर्षो मे यह प्रेम कैसे नही रहा। जिस बज्म मे चलता था कभी जामे मुहब्बत। उस बज्म की ममसूमफ्जिा देख रहा प्यार पान कर

इस मन्त्र मे कुछ विशेष द्रष्टव्य—(१) तीन बाते—(क) देखने वाला—जीवात्मा (ख) जिसे देखा जा रहा है वह परमात्मा (ग) जिसमे देखा जा रहा है वह प्रकृति। (२) कैसे देखे ? उत्तर—विद्या—सद्विद्या वेद विद्या के ज्ञान से धर्मानुसार और योगाभ्यास के पश्चात्—उस न्यायकारी सर्वज्ञ सनातन प्रभु को सब प्राणियो मे सर्वव्यापक होने से देखता है तभी वह व्यक्ति सुख-दु ख, हानि-लाभ मे दूसरो क साथ अपने जैसा बर्ताव प्रेमपूर्वक कर पाता है। He who after realising himself sees all creaturs in that pervading Atma And also that Atma in all creaturs his doubts are totally removed परन्तु स्वामी शकराचार्य ने 'ईशावास्योपनिषद' मे भाष्य करते हुए लिखा, य परिव्राट् मुमुक्षु सर्वाणिभूतान्यव्यक्तादीनि स्थावरान्तरानि आत्मन्येवानु पश्यति' ऐसा ठीक लिखकर अपने पूर्व अद्वैतवाद के विचारो मे जकडे रहन का कारण आत्मव्यतिरिक्तानि न पश्यतीत्यर्थ अर्थात् आत्मा से भिन्न नही देखता—ऐसा लिख दिया सो ठीक नही है। महर्षि दयानन्द द्वारा स्पष्ट त्रित्ववाद है। अस्तु। हम तो मुख्यतया एक प्रेम के विषय मे कह रहे हैं कि प्रेम प्राणीमात्र से वह करेगा जिसे ईश्वर से प्रेम होगा।

Love is God and God is love

आइन्स्टीन ने व्यग्य भाषा मे कहा, "आज इन्सान, इन्सान के इतना पास आ चुका है कि बीच मे खुदा का कचूमर ही निकल गया। परन्तु हे मनुष्य थोडा सा और बढा तो तेराही कचूमर निकल जायेगा। अत प्रभु प्रेमी ही मानव प्रेमी हो सकता है। प्रभु प्रेमी का हृदय द्रवित रहता है —

"बना हो मोमदिल जिसका वो पत्थर मे खुदा देखे।
मगर जब दिल ही पत्थर हो तो पत्थर मे भी क्या देखे

—सी-४५, डी० टी० सी० कालोनी,
हरिनगर डिपो, नई दिल्ली-६४

(पृष्ठ १ का शेष)

य स्पष्ट हो जाता है कि चारो वर्णों के गुण धर्म अलग हैं और ये जन्म के आधार पर नही बल्कि गुणो और कर्मो के आधार पर व्याख्यायित किए जाते हैं।

जो हमारे सनातनी भाई महाभारत रामायण, पुराण व अन्य ग्रन्थो की बात मानते है, वे भी यदि खुली आखो तथा खुले मन से इन ग्रन्थो का अध्ययन करे तो वे पाएगे कि वहा पर भी जाति जन्म स नही, अपितु वर्णव्यवस्था कर्म के आधार पर मानी गई है। 'इन्द्रो ब्राह्मण पुत्र क्षत्रिया कर्मस्य कारणम् (महाभारत शान्तिपर्व ४३। ११), 'गणिका गर्भसम्भूतो वशिष्ठश्च महामुनि। तपसा ब्राह्मणो जात सस्कारस्ते न कारणम्॥ (भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व ४३। २८), शूद्रोऽपि आगम सम्पन्नो द्विजो भवति सस्कृत। (ब्राह्मपुराण ५३। २२३) 'कर्म प्रधान विश्व रचिराखा। जो जस करहि सो तस फल चाखा॥ (गोस्वामी तुलसीदास)। 'जन्मना जायत शूद्र. सस्काराद् द्विज उच्यते।'

ओ३म् अभय न: करत्यन्तरिक्षमभय द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभय पश्चादभय पुरस्तादुत्तरादधरादभय नो अस्तु॥८७॥
अ० १९। १५। ५॥

सर्वत्र अभय

—देवनारायण भारद्वाज

सब इधर उधर या यहा वहा, हर कही नाथ अभ्युदय करो।
हर कही व्याप्त हो रहे आप, हे ईश्वर हमको अभय करो॥
पृथ्वी से ऊपर अन्तरिक्ष
द्यो लोक दिव्य आलोक दक्ष
नीचे ऊपर सभी ओर हो
निर्मित सुन्दर कल्याण कक्ष।
करो अभय सचरण हमारा, हे नाथ साथ अब सदय करो।
हर कही व्याप्त हो रहे आप, हे ईश्वर हमको अभय करो॥
पृष्ठ भाग अदृश्य हमारा
और सामने का विस्तारा
आगे पीछे सभी ओर हो
शुभ सुन्दर रक्षक उजियारा।
प्रभु नष्ट करो दुख दुष्ट कष्ट मृदु मोद पूर्ण नव निलय करो।
हर कही व्याप्त हो रहे आप, हे ईश्वर हमको अभय करो॥
तुमसे यह आशा जगाई है
हे नाथ पुकार लगाई है
हर अभय भावना हमको दो
इसमे ही बसी भलाई है।
प्रभु हमको अभय पराक्रम दो, भय पर जीवन वय विजय करो।
हर कही व्याप्त हो रहे आप, हे ईश्वर हमको अभय करो॥

—एफ-४२, मानसरोवर कालोनी
रामघाट मार्ग, अलीगढ-२०२००१

अच्छा तो यह रहता कि उपर्युक्त सस्कृत पक्तियो की सही व्याख्या करते हुए, अपने विषय का प्रतिपादन किया जाता पर स्थान की सीमाए हैं और इस लेख का आवश्यक पहलू है कि हमारी सरकार क्या करना चाहती है।

हमारे इतिहास मे ऐसे नाम अनेक है जो निम्न कुल मे उत्पन्न होने पर भी ऊचे स्थान को प्राप्त हुए विदुर दासीपुत्र थे, पर वे महामन्त्री थे। सुदामा जन्म से ब्राह्मण थे, पर वे आर्थिक रूप से पिछडे थे। फिर भी वे मागना नही चाहत थे। वे आरक्षण नही चाहते थे। वाल्मीकि का स्थान कितना ऊचा था ? भक्त शिरोमणि रविदास की आराधना की जाती है। ऐसे नामो की लम्बी सूची बनेगी।

साम्प्रदायिक जातीयता का विरोध महात्मा गाधी ने भी किया था। १९३३ मे अग्रेज सरकार ने विभिन्न साम्प्रदायिक वर्गों को एसेम्बली मे प्रतिनिधित्व देने के लिए 'कम्यूनल एवार्ड' के नाम से सुझाव रखा था। गाधी जी ने इसका विरोध किया था। वे यरवदा जेल मे थे। उन्होने वही भूख हडताल शुरू कर दी। यह वास्तव मे ब्रिटिश सरकार की शरारत थी। वे हिन्दुओ के पिछडे वर्गो को तथा सिखो को भी मुसलमानो और ईसाइयो की भाति प्रतिनिधित्व देना चाहते थे गाधीजी ने इस बात को पहचाना था। वे मानते थे कि इससे देश कमजोर होगा। यह अवश्य है कि इससे शासक सबल होगा।

सम्भवत यही मनोविज्ञान अब भी कार्य कर रहा है। लोगो को टुकडो मे बाट देने से वर्तमान शासक सबल हो सकता है। बी० पी० मण्डल ने इतनी जातिया गिनाई हैं, जिनकी कल्पना करना भी मुश्किल है। सम्भवत सरकारी रिकार्ड मे भी उनका अस्तित्व नही है। आश्चर्य यह है कि सभी राजनीतिक पार्टिया इसको अपनाने से कतरा रही हैं। साथ ही इसका विरोध करने से भी कतरा रही है। इसका एकमात्र कारण, उनकी दृष्टि वोट बैंक पर लगी होना है।

आर्यसमाज के कुछ नेता भी जब तक आर्थिक स्थिति का निर्धारण नही हो जाता, जातीय आधार पर ही आरक्षण देने की बात करते है। यह सामाजिक न्याय नही है। सामाजिक न्याय तो महर्षि दयानन्द के दर्शन मे है जहा पर वे सभी के लिए समान शिक्षा व्यवस्था की बात कहते हैं और बाद मे योग्यता के आधार पर कार्य व्यापार चयन की बात कहते हैं। वे राजा और रक सभी के लिए समान वातावरण एव समान शिक्षा व्यवस्था की बात कहते हैं। उन्होने स्त्री और शूद्रो के लिए वेद-वाक्य उद्धृत करके उनके अध्ययन की वकालत की है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

राष्ट्रीय अवकाश



भारत की केन्द्रीय सरकार ने एक लम्बे समय से वर्ष मे १६ राष्ट्रीय अवकाश देने की नीति निर्धारित की हुई थी। इनमे तीन राष्ट्रीय पर्व—गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस तथा गाधी जयन्ती हैं। ग्यारह विभिन्न धार्मिक पर्व हैं, जिनमे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि धर्मो, मतो के पर्व सम्मिलित हैं तथा शेष दो क्षेत्रीय उत्सवो के लिए निश्चित है।

यद्यपि सारी दुनिया विकास की गति को बढाने के लिए राष्ट्रीय-अवकाशो को कम कर रही है, परन्तु हमारी सरकार अपनी राष्ट्रीय नीति को बदल कर, यहा भी तुष्टीकरण की नीति को अपना कर एक बार पुन धार्मिक अलगाव और जातिवाद को बढाने पर तुल गयी है। पिछले दिनों मुस्लिमो के पैगम्बर मोहम्मद के जन्म दिन को राष्ट्रीय अवकाश घोषित कर, सरकार ने एक ओर जहा मुस्लिम सम्प्रदाय को प्रसन्न करने की कोशिश की है, वहा दूसरी ओर अन्य धर्म, मत वालो को अपने-अपने भगवानो, देवताओ और अवतारो के जन्म दिनो के अवसर पर राष्ट्रीय अवकाश की माग करने का अवसर प्रदान किया है। इसी सन्दर्भ में भारतीय जनता पार्टी की यह माग कि रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी तथा महा-शिवरात्री को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाय, न्यायोचित ही कही जायगी। परन्तु सरकार इस पर विचार करेगी ऐसी उम्मीद बहुत कम है।

—मूलचन्द गुप्त

सम्पादक के नाम पत्र—

आर्यसन्देश

● आर्य सन्देश का हैदराबाद सत्याग्रह अक पढकर हृदय प्रफुल्लित हो उठा। आपके अदम्य और साहसपूर्ण उत्साह की प्रशसा के लिए शब्द नही है। इतनी खोजपूर्ण सामग्री जुटाकर आपने सम्पादको की श्रेणी मे अपना मस्तक ऊचा किया है। वास्तव मे यह ऐतिहासिक अक पाठको के लिए संग्रहणीय है। इतने अल्पकाल मे आपने वास्तव मे गागर मे सागर ही भर दिया है। आशा है भविष्य मे भी आर्यसन्देश विशेषाको की श्रेणी मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता रहेगा। मगलकामनाओ के साथ—

२२ अगस्त, ६० —ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
कुलाधिपति, ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर,
ब्रजघाट, गाजियाबाद, उ० प्र०

● मैं आचार्य गुरुकुल मटिण्डु 'आर्यसन्देश' का पाठक हू। जब से हम आपके 'आर्यसन्देश' के ग्राहक बने है, हमारे पास आपकी पत्रिका नियमित रूप से आ रही है। इसके लिए आपको धन्यवाद।

आर्यसन्देश के वर्ष मे इतने अधिक विशेषाक शायद भारतवर्ष मे कोई आर्य पत्रिका प्रदान नही करता है, इसलिए भी आपको धन्यवाद।

—आचार्य हरबीर शास्त्री
गुरुकुल मटिण्डु, खरखौदा

● 'आर्यसन्देश' का हैदराबाद सत्याग्रह अर्द्धशताब्दी स्मृति अक प्राप्त हुआ। अक देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। हैदराबाद सत्याग्रह सम्बन्धित साहित्य की कमी को इस विशेषाक ने पूरा कर दिया है। हमारी बधाई स्वीकार करे।

—चम्पालाल आर्य
म॰॰ी, ॰ार्यसमाज, पीपाड़ शहर, राजस्थान

भारत को फिर से पटेल चाहिए

—डा० सारस्वत मोहन 'मनीषी'
प्रवक्ता, डी ए वी कालेज, अबोहर (पजाब)

दिल टूटता है उसे मेल चाहिए सूनी-सी पटरिया हैं रेल चाहिए।
देश-द्रोहियो के लिए जेल चाहिए भारत को फिर से पटेल चाहिए।

सूनी आज दरिया चिनाब हुआ है गेहू पिटा शासक गुलाब हुआ है।
फाइलो मे बन्द इन्कलाब हुआ है नया देख लो नवाब हुआ है।
कुछ मठाधीश तो महन्त हो गए कविता की कामिनी के कत हो गए।
गोद-कैंचिया ले कवि पन्त हो गए कातिल-लुटेरे आज सन्त हो गए।

ऊट की तो नाक मे नकेल चाहिए।
भारत को फिर से पटेल चाहिए।

जवानो का खून आज पानी हुआ है फैशन का नाम ही जवानी हुआ है।
राजनीति गिद्धो की रखैल हो गई बछडा मरा तो गाय बैल हो गई।
बगिया का कहा मधुमास खो गया वीरता का कहा इतिहास खो गया।
रामराज ससद मे बन्द हो गया जाने कहा बगाली सुभाष खो गया।

लाठी गोलियो का नही खेल चाहिए।
भारत को फिर से पटेल चाहिए।

रक्षक है भक्षक सिपाही चुप क्यो राह लूटती है आज राही चुप क्यो।
भक्तो को पुजारियो ने खूब ठगा है देश के भविष्य पे सवाल टगा है।
गगा तेरा पानी आज मैला हो गया ताण्डव करेगा कौन शिव सो गया।
सास-सास दु ख की सहेली हो गई आस जमीदार की हवेली हो गई।

बाज मडराता है गुलेल चाहिए।
भारत को फिर से पटेल चाहिए।

सविधान काटा-फाडा कच्चा हो गया झूठा है जो यहा खूब सच्चा हो गया।
धर्म कोई चिडिया का बच्चा हो गया सारा देश मानो आज जच्चा हो गया।
राष्ट्र आज जलता तिरगा हो गया गाय और सूअर से दगा हो गया।
नेता और देश का लफगा हो गया द्रौपदी ढकी तो कृष्ण नगा हो गया।

दीपक बुझेगा तो तेल चाहिए।
भारत को फिर से पटेल चाहिए।

धूप और छाव मे लडाई हो गई झोपडा की भूख स सगाई हो गई।
शहीदो का खून स्याही चाट रही है एक बूद सागर को डाट रही है।
आजादी क्या आई है कमाल हो गया भामाशाह देख लो कगाल हो गया।
आख आसुओ से मालामाल हो गई धोती फटी इतनी रूमाल हो गई।

झोपडी को नही काकटेल चाहिए।
भारत को फिर से पटेल चाहिए।

आख-आख आज तो शिकारी हो गई सादगी स्वतन्त्रता जुआरी हो गई।
हिन्दी फुटपाथ की भिखारी हो गई खादी मेरे देश की मदारी हो गई।
जिन्दा लाश जिन्दगी हमारी हो गई देह आज आत्मा पे भारी हो गई।
आख मीचने से युद्ध टलता नही शासन शिखण्डियो से चलता नही।

गुड्डे-गुड्डियो का नही खेल चाहिए।
भारत को फिर से पटेल चाहिए।

फूल आज तेज शमशीर हो गए शासक यहा के बनवीर हो गए।
सारा देश आज तो सराय हो गया भारत समूचा पन्ना धाय हो गया।
एक परिवार का ही चक्र घूमता लोकतन्त्र रावणो के पाव चूमता।
भेडियो से देश को बचाना चाहिए क्रान्ति गीत ऐसा कोई गाना चाहिए।

बगिया को नही विष-बेल चाहिए।
माली कोई दूसरा पटेल चाहिए।

● हैदराबाद सत्याग्रह विशेषाक बहुत सुन्दर निकला है।

२१ अगस्त, ६० —डा० भवानी लाल 'भारतीय'
चण्डीगढ

● हैदराबाद आर्य सत्याग्रह स्मृति अक पाकर मेरा हृदय गद्गद् हो गया। परमात्मा आप पर अपने आशीर्वादो की बौछार करे।

—वीरेन्द्र वीर सम्पादक—'वेद रश्मि'
एच-१६६, ए० जी० कालोनी, भुवनेश्वर (उडीसा)

आर्यसमाज किस ओर

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद, उ० प्र०

गत कुछ वर्षों से आर्यसमाज के मच पर एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान् वैज्ञानिक सन्यासी का पदार्पण हुआ है। क्योंकि यह अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक है अतएव जो चाहें कहे, उन्हे पूर्णाधिकार प्राप्त हैं। उनकी पवित्र वाणी से प्रकट होने वाला प्रत्येक शब्द न केवल वैदिक ऋचा है अपितु उससे भी उत्तम और पवित्र है, उस क्वालिफाइड डाक्टर की भाति जिसका हाथ रोगी के शरीर पर जहा पड जाता है, वही नाडी हो जाती है।

उन्होने आधुनिक युग प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के दृष्टिकोण के विरुद्ध अघोषित युद्ध छेड रखा है किन्तु इतने पर भी आर्यबन्धुओ की आखें नही खुलती। आर्य नेताओं का उनके इस महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज विरोधी अघोषित वैचारिक युद्ध की ओर ध्यान न देना, उनका मौन समर्थन है। कहा भी है "मौन सवीकार लक्षणम्।" आर्य पत्रकार बन्धुओं से भी मेरा नम्र निवेदन है कि या तो वह उनके इन सिद्धान्त विरोधी अनर्गल विचारो को प्रकाशित करना बन्द कर दे और या उनके लेखों तथा वक्तव्यो के अनर्गल विरोधी सन्दर्भों पर टिप्पणी लेख के प्रारम्भ मे ही प्रकाशित कर दिया करे।

किसी आर्य पत्र के सम्पादक को व्यक्तिगत सम्मति देने का तो मै इसलिए साहस नही कर पा रहा हू क्योकि पिछले दिनो एक पत्र के सम्पादक को मैंने उनकी कुछ भूलो पर पत्र लिख दिया तो उन्होंने अगले ही अक मे मुझे सन्यास के अयोग्य, मूर्ख तथा क्रोधी लिख मारा। इससे यह भी पता चला कि वह व्यक्ति किसी आर्यसमाज की सर्वात्मना समर्पित मिशनरी तथा सन्यासी की भावना को समझने की लेशमात्र भी योग्यता नही रखता और न उसमे सत्य को ग्रहण करने की नैतिकता है किन्तु उसने वह टिप्पणी मेरे विरुद्ध लिखकर अपने को बडा भारी मनोवैज्ञानिक, भाषा वैज्ञानिक तथा शास्त्रीय दृष्टि से आश्रम-व्यवस्था मर्मज्ञ सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।

इस प्रकार का अवसर पुन न आये, इस कारण सामूहिक रूप से सभी आर्य पत्रकार बन्धुओं के सामने सन्यासी होने के नाते मैंने यह भिक्षा की झोली पसारी है कि वह यह सिद्धान्त तथा आर्यसमाज की अस्मिता-रक्षा की भिक्षा मुझे प्रदान कर दे।

मेरा किसी व्यक्ति से व्यक्तिगत विरोध तथा वैमनस्य नहीं है किन्तु जब एक व्यक्ति निरन्तर सिद्धान्त विरुद्ध अनर्गल उलजलूल बातें करे तो उसे कब तक सहन किया जा सकता है? मेरा अभिप्राय यह है कि बाहर की ही समस्याए हमारे सामने पर्याप्त हैं। हम उन्हीं के लिए अहर्निश सघर्षरत रहते है किन्तु हमारे भीतर से ऐसी बातें उभर कर आ रही हैं, जो विरोधियो के लिए हमारे विरुद्ध अस्त्रो का कार्य करें एतदर्थ यह आवश्यक है कि पहले घर का कूडा-कचडा, मकडी-जाला आदि साफ किया जाये।

एक ओर तो हम विधर्मी व राष्ट्र विरोधी तत्वों से लोहा लें और दूसरी ओर आर्य जाति के आपसी भेदभाव पूर्ण प्रकारो—जन्म, जातीयता आदि—तथा अन्धविश्वासो व निराधार भ्रान्त मान्यताओ मे लडें, तीसरी और पश्चिम के शीतयुद्ध—भारत मे आर्य विदेशी आक्रमणकारी हैं, आर्य सभ्यता नितान्त अर्वाचीन, केवल कुछ सहस्र वर्ष की है, वेद ऋषियो की रचना और असगतियों का पिटारा हैं। प्राचीनकालीन आर्य जगली थे और रामायण-महाभारत उपन्यास है, इतिहास ग्रन्थ नही इत्यादि विषयो पर सघर्ष करें और चौथी समस्या बनकर आर्यसमाज में अवतरित हो गये स्वनामधन्य श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी।

सन्यास लेकर आर्यसमाज के मच पर पहुचते ही उन्होने प्रलाप भरा कि वृक्षा मे जीव नही है, उनमें केवल प्राण है। वनस्पतिया उनकी दृष्टि में मोटरगाडियों न ` माइकिलो आदि की भाति ही प्राण वायु को अपने भीतर धारण किए हुए ं। .फर उन्होने अजमेर शताब्दी मे वेद सम्मेलन के अध्यक्ष पद से जो भाषण दिया है यदि आर्यसमाज के अतिरिक्त किसी अन्य समाज मे उसकी मान्यताओं के विरुद्ध इस प्रकार का विषाक्त भाषण किया जाता तो उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप प्रबल व्यापक विरोध होता किन्तु इसे आर्य बन्धुओ की सहनशीलता कहा जाये या वर्तमान समय के आर्यसमाजियो की सिद्धान्तविहीनता तथा सिद्धान्त अनभिज्ञता कि किसी ने कान तक न हिलाया और वेद की ऋचा, ऋषि वाक्य या माता का दूध समझकर गटागट पी गये। कुछ समय पश्चात् श्री राजवीर शास्त्री ने दयानन्द सन्देश मे इस पर लेखनी उठायी।

कुछ दिन बाद जब श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने बडप्पन का परिचय यह घोषणा करके दिया कि, "मैं न माला पहनता हू न पहनाता हू" तो मुझे उनके इस मिथ्यावाद के विरुद्ध लेखनी उठाकर आर्य पत्रो के पाठकों के समक्ष उनकी इस घोषणा की पोल खोलने को बाध्य होना पडा। तत्पश्चात् दिल्ली के एक परिवार मे वर्ष-गांठ के अवसर पर वह भाषण कर रहे थे वहां मैं पहुचा तो उन पर जो बीती, वह तो वही जानते है, या परमपिता परमात्मा और कुछ थोडा-सा मैं जानता हू, वहा उपस्थित अन्य किसी को एतद्विषयक कुछ आभास भी सम्भवत नहीं हुआ। जब उन्हू पुष्पमाला पहनाई जाने लगी तो हाथ हिलाकर मना करने लगे। पहनाने वाला आगे बढा और पुरोहित जी तथा परिवार सज्जनों ने युवक को आगे बढकर पहना देने को कहा तो बोले, "हैं—हैं—जब अब मैंने पहननी छोड दी तो—।"

अभी पिछले दिनो नया राग फिर अलाप बैठे कि यज्ञ से वृष्टि नही होती और कृषि पर यज्ञ का कोई प्रभाव नही होता। समादरणीय श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज (प्रभात आश्रम जनपद मेरठ) ने उसका सुन्दर उत्तर दिया तथा मुझे भी लेखनी उठाने को बाध्य हुआ तथा तत्पश्चात् आचार्य वेदभूषण जी का भी एक महत्वपूर्ण लेख अनेक पत्रो मे प्रकाशित हुआ।

पाठको ने आर्य पत्रो मे पढा ही होगा कि अब एक ओर तो उन्होंने रमाबाई को विवाह की सम्मति न देने पर महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज की गलती निकालनी प्रारम्भ की है तथा दूसरी ओर कर्मकाण्ड के अन्तर्गत दैनिक अग्निहोत्र के अतिरिक्त सोलहो सस्कारो मे पूर्णाहुति का विधान नहीं है, यह आलाप कहो या प्रलाप प्रारम्भ कर दिया है।

आर्य जगत् इन महामहिम महाराज जी से सावधान हो जाये तथा आर्यसामाजिक क्षेत्र के पत्रकारों से मेरा पुन करबद्ध निवेदन है कि वह आर्यसमाज की दशा पर दया करते हुए इतनी अनुकम्पा और बनाये रखे कि या तो उनके लेखो और वक्तव्यो को प्रकाशित ही न करें, यदि प्रकाशित करें तो उनमें वर्णित अनर्गलताओ पर सम्पादकीय टिप्पणी लेख के प्रारम्भ में ही दे दिया करें और यदि कोई पत्रकार बन्धु उनके अधिक पक्ष मे हो तो अब तक की उनकी उपर्युक्त अभिव्यक्तियो पर उनसे हमारे शास्त्रार्थ की व्यवस्था करें।

यह तो सम्भव है कि ऋषिवर देव दयानन्द की किसी बात को हम न समझ पाये हो किन्तु ऋषिवर की स्थापनाओ और मान्यताओ के विरुद्ध इस प्रकार के अनर्गल प्रलाप हम नही सहन कर सकते। स्वामी सत्यप्रकाश जी भी सावधान हो जाये! ऋषिवर देव दयानन्द को पीछे फेंकने और स्वय को आधुनिक महर्षि सिद्ध करने के उनके काल्पनिक मिथ्या स्वप्न,—जब तक एक भी गुरुवर देव दयानन्द का शिष्य पृथ्वीतल पर जीवित है।—कदापि सत्य सिद्ध नही हो सकेगा। अलमतिविस्तरेण।

सम्पादक के नाम पत्र—

● वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता। आपकी सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य हेतु सर्वज्ञ परमात्मा से प्रार्थना करता हू। आर्यसन्देश अपने नियत समय से प्राप्त कर हर्ष होता है। गत २२ जुलाई के अक के सम्पादकीय पृष्ठ पर 'हरिजन समस्या' तथा 'नारी उत्पीडन' के अन्तर्गत हरिजन भाईयों एव मातृशक्ति के उत्पीडन सम्बन्धी समस्याओ को पढ़कर हृदय विदीर्ण हो जाता है। इन सबका एक ही कारण है मानव के अन्दर मानवता का अभाव तथा परमात्मा को सर्वव्यापक न जानना। यदि व्यक्ति परमात्मा की सत्ता पर विश्वास रखता तो नारी के ऊपर होने वाले अत्याचार नष्ट हो जाते तथा सर्वव्यापकता को जान लेने से, जिस वर्ग को आज हम हरिजन कहकर तिरस्कृत करते हैं, हम यह मानने पर विवश होते कि इसके अन्दर भी परमात्मा है। ऐसे विचार प्रकाशित करने का एकमात्र पत्र 'आर्यसन्देश' है।

श्रीमान् सम्पादक जी से निवेदन है कि मैंने जोरावर 'आर्य' नामक एक उत्साही युवक को आर्यसन्देश का ग्राहक बनने पर विवश कर आज ही वार्षिक शुल्क २५ रुपये एम० ओ० द्वारा भेज रहा हू। कृपया श्री जोरावर आर्य जी को सदस्य रूप मे स्वीकार करे तथा आगामी अक यथाशीघ्र जोरावर जी तक पहुंचाने की कृपा करें।

—लालमणि शर्मा 'आर्य'
पकरी (बलिया)

राष्ट्र-प्रेम

—डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

"जिसको न निज भाषा तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नही है पशु निरा है और मतक समान है॥'

कविवर गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही की ये पक्तिया आज के सन्दर्भ मे कितनी सार्थक दीख पडती है, जबकि आज भारत राष्ट्र साम्प्रदायवाद, भाषावाद और क्षेत्रवाद की लपटो मे झुलसा जा रहा है। राष्ट्र एक भावात्मक सगठन है वह कोरी भौगोलिक इकाई नही है। कोई भी विशिष्ठ भूखण्ड जिसकी प्राकृतिक सरचना समान हो, उस पर बसने वाले लोग, जिनमे आपस मे भाई-चारे की भावना हो और उनकी धर्म और सस्कृति तथा भाषा और साहित्य की परम्पराए जहा पर समान हो वही पर राष्ट्र का सच्चा स्वरूप उभरता है—इसी बात को लक्ष्य करके तो राष्ट्र कवि 'दिनकर' ने कहा था

'जहा कही एकता अखण्डित, जहा प्रेम का स्वर ह,
देश-देश मे खडा वहा भारत जीवित भास्कर है।'

अपने देश से भला किसको प्रेम नही होगा। जिस मिट्टी मे लोट-लोटकर आदमी बडा होता है, जिसके अन्न-जल से उसका लालन-पालन होता है, जिसकी शीतल शान्त सुवासित समीर मे वह श्वास प्रश्वास लेता है, उसमे वह कैसे विरत हो सकता है। मनुष्यो की तो बात क्या पशु-पक्षी भी अपने आश्रयदाता वन-विहारो से अटूट अनुराग रखते है। एक कहानी आती है कि एक बार एक बीहड वन मे आग लग गई। सारे वृक्ष तड-तड करके जलने लगे। वहा दो पक्षी भी एक वृक्ष पर बैठे झुलसे जा रहे थे, तभी एक शिकारी ने उनको यह चेतावनी दी—

"आग लगी इस वृक्ष मे जलते जाते पात,
तुम काहे को जल रहे जब पख तुम्हारे साथ।"

इस बात को सुनकर उन पक्षियो ने क्या उत्तर दिया,—

"फल खाये छाया लही गन्दे कीने पात,
धर्म हमारा यही यही जलें इसी के साथ।"

स्वदेश-प्रेम की भावना भारतीय साहित्य और जनता मे सदैव से विद्यमान है। वेदो मे स्वदेश प्रेम का उज्ज्वल स्वरूप मिलता है। वहा पर भूमि को माता कहा गया है और समय पडने पर मातृभूमि के लिए बलिदान देने का उपदेश दिया गया है। रामायण का प्रसग भी आप देख सकते हैं। जब भगवान् राम रावण को मारकर लका पर विजय पा लेते है तो लक्ष्मण उनको लका मे राजा के रूप मे समालीन होने की प्रार्थना करते हैं। उस समय श्रीराम द्वारा दिया गया उत्तर स्वर्णिम की नीतियो मे लिखा जाने योग्य है। उन्होने कहा था—

"अपि च स्वर्णमयी लका लक्ष्मण महय न रोचते।
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥"

मध्यकाल मे भी भारत के अन्दर देश प्रेम का प्रवाह सतत रूप से बहता रहा है। चाहे उस समय मे छोटे-छोटे लोकतान्त्रिक गणराज्य रहे थे लेकिन उनमे भी स्वदेश प्रेम की कमी नही थी। आज हम केवल भौगोलिक या राजनीतिक एकता को ही देश की एकता का मूल-बिन्दू मान बैठे हैं जबकि वास्तव मे ऐसा नही है। जरूरत तो भावात्मक एकता की है। आज जरूरत जायसी, रहीम और रसखान की है। जिन्होने देश-प्रेम की धारा मे बहकर यहा के महापुरुषो मे और यहा की शस्यश्यामला वसुन्धरा मे प्रगाढ़ प्रीति जताई थी। रसखान कवि का कृष्ण के और और भारत की ब्रजभूमि के लिए अनुपम अनुराग का एक उज्ज्वल उदाहरण हम देख सकते हैं—

मानुष हो तो वही रसखानि बसौ ब्रज गोकुल गाव के ग्वारन,
जो पशु हो तो कहा बस मेरो, चरो नित नन्द की धेनु मझारन।
पाहन हो तो उही गिरी को जो धरयो कर क्षेत्र पुरन्दर धारन,
जो खगा हो तो करहो बसेरो मिली कालिन्दी फूल कदम्ब की डारन।

लेकिन आज स्वदेश-प्रेम के स्थान पर विदेश-प्रेम पनप रहा है, रसखान के सवैये की तर्ज पर एक परोडी मे इसकी झलक देखिये—

मानुष हो तो ही कवि चोच बसौ लन्दन सीटी के किसी द्वारे,
जो पशु हो तो बही बुल डाग बनो चल चूट कार मे पूछ निवाये।
जो खगा हो तो करो बसेरो किसी ऐक मे टेम्स नदी किनारे,
पाहन हो तो थियेटर हौल को बैठे मिस जहा पाव पसारे।

जिस देश मे मनुष्य बसता है उस देश के प्राचीन इतिहास, उस देश की गौरवशाली परम्परा और तो क्या नदी नालो तक से उसका प्रेम हो जाता है। वह मनुष्य चाहे कभी विदेशी क्या न रहा हो लेकिन भारत भूमि की यह विशेषता रही है कि चाहे कोई यहा पर पहले आक्रान्ता भी बनकर आया हो उसको भी इसने अपने स्नेहिल आचल की शीतल छाया दी है। एक दिन जो लोग आक्रान्ता और आततायी बनकर आये थे वही कालान्तर मे भारत भूमि के आंचल का मधुर रसपान कर अपने पुत्रो की तरह स्नेह के सहभागी बन गये क्योकि उन्होने इस भूमि को केवल योगभूमि नही अपितु कर्मभूमि और मातृभूमि माना था और यहा के गिरि कन्दरा शैल-शृखला और नदियो के प्रति भी अपना प्रगाढ प्रेम प्रकट किया था।

एक बार रहीम खान-खाना अकबर के साथ गगा-स्नान के लिए हरिद्वार गये तो अकबर ने उनको कहा कि खान खाना! हिन्दू इस गगा को सकल वरदायिनी मानते हे आप इससे क्या वर मागना चाहोगे? इस पर रहीम ने जो भावनापूरित प्रत्युत्तर दिया था वह देखते ही बन पडता है रहीम ने भक्तिभाव से भर कर कहा था—

अच्युत् चरन विहारिणी शिव सिर मालती माल,
हरि न बनैयो सुर सरि कीजो इन्दव भाल।"

अर्थात् हे गगा मैया! मुझे तुम विष्णु मत बनाना क्योकि तुम उनके चरण कमलों मे अहर्निश विहार करती हो, मैं तो शकर बनकर ही तुमको सदैव अपने शीश पर धारण करना चाहता हू। यह है देशभक्ति का उज्ज्वल उदाहरण। जिस देश मे मनोहारी ऋतु चक्र हो, गगा-यमुना जैसी सुजला नदिया हो, भला उस देश से किसको पावन प्रेम न होगा। देश प्रेम मे रहित व्यक्ति के लिए कितना सही कहा है—

भरा नही जो भावो से बहती जिसमे रसधार नही
हृदय नही वह पत्थर है स्वदेश का जिसमे प्यार नही।

आधुनिक काल मे भी स्वदेश प्रेम की भावना अविरल रूप से हमारे जन-मानस मे प्रवाहित रही है। स्वदेश की भावना मे भरकर ही तो वीरो ने अपना बलिदान दिया था। हस हस कर फासी के फदो को चूमा था। यह देश-प्रेम की ही तो भावना थी जो उनको सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए प्रेरित करती थी। वीर क्रान्तिकारी देश-प्रेम से भरकर ही तो चुनौती के ऐसे तराने गाया करते थे—

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है
देख लेंगे जोर कितना बाजूये कातिल मे है।

जिस व्यक्ति के हृदय मे देश प्रेम का समुद्र ठाठे न मार रहा है वह कभी भी आत्मोत्सर्ग नही कर सकता।

देश प्रेम की इसी पुनीत भावना से ओत-प्रोत होकर असख्य अज्ञात वीर-वीरागना राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर हस-हस कर अपना अमर बलिदान दे गये। कितनी उन्नत और उदार भावना थी उन शहीदो को, जो यह शाहब स्वतन्त्रता सघर्ष मे कूद पडे—

मुझे तोड लेना वन माली उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ जावे वीर अनेक।

यह मातृभूमि के प्रति प्रेम भावना का उमडता हुआ ज्वार ही था। जिसने उज्ज्वल आत्मोत्सर्ग की बलवती प्रेरणा दी थी।

इस देश के हिन्दू-मुसलमान, सिख-ईसाई सभी लोगो ने स्वदेश प्रेम की भावना से भरकर स्वतन्त्रता का सघर्ष किया था। रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्र-शेखर आजाद और सरदार भगतसिंह तथा अशफाक उल्ला खा मे एक जैसी राष्ट्र निष्ठा थी, इसीलिए उन्होने देश के लिए मृत्यु का वरण किया था। उन लोगो की बलिदानी भावना की एक कवि ने कितनी सुन्दर अभिव्यक्ति की है जो हमारे लिए आज भी प्रेरणादायक हो सकती है—

कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो,
भगवान भारतवर्ष मे शतबार मेरा जन्म हो।

हिन्दू और अन्य सभी कन्धे से कन्धा मिलाकर आजादी के लिए लडे थे, इकबाल ने गर्व के साथ गाया था—

"सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा,
बुलबुले हैं हम यह गुलिस्ता हमारा।
हिन्दी ह हम हिन्दोस्ता वतन है हमारा।'

इन्ही राष्ट्र प्रेम की भावनाओ से भरकर आजादी के लिए लडा गया था। हमने स्वतन्त्रता को स्वराज्य के रूप मे देखा था। इसीलिए तो गाधी जी ने स्वदेशिता आन्दोलन चलाया था। अग्रेजी कपडो की होली जलाई गई थी। अग्रेजी भाषा मे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यजगत में वेदप्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज गन्नौर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गन्नौर शहर जि० रोहतक (हरियाणा) का आगामी वार्षिकोत्सव १४, १५ व १६ सितम्बर, ६० को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलनो का आयोजन किया जा रहा है, जिनमे आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान् सन्यासी तथा उपदेशक भाग लेगे।

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हनुमान रोड का ६६वा वार्षिकोत्सव २१ से २८ अक्तूबर तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा। इस अवसर पर हैदराबाद दक्षिण के प० मदनमोहन जी विद्यासागर द्वारा वेद-कथा एव पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा (वार्षिक अधिवेशन)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक २८ अक्तूबर ६० रविवार को सभा के मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक मे होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर सभा तथा इससे सम्बन्धित आर्य शिक्षण सस्थाओ के वार्षिक वृत्तान्त आय-व्यय तथा बजट स्वीकार किये जाएगे और सभा के लिए आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी तथा अन्तरग सदस्यो आदि का निर्वाचन किया जायेगा।

आर्यसमाज पंखा रोड नई दिल्ली

आर्यसमाज 'सी' ब्लाक पखा रोड, जनकपुरी मे वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन दि० ६ से १४ अगस्त, ६० तक किया गया। इस आयोजन के अन्तर्गत प्रतिदिन प्रात काल अथर्ववेद के मन्त्रो से बृहद् यज्ञ श्री मोहनलाल वशिष्ट के ब्रह्मत्व मे किया गया। मन्त्रोच्चारण गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो ने किया। पूर्णाहुति १४ अगस्त, ६० श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन सम्पन्न हुई।

रात्रि मे प्रतिदिन श्री विजय भूषण आर्य के भजनोपदेश हुए और वैदिक विद्वान् प्रो० रतनसिह जी द्वारा वेद प्रवचन हुए। १४ अगस्त, १६६० को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमे प्रो० रतनसिह, डा० महेश विद्यालकार, श्री ब्रह्मदत्त स्नातक और श्री विजयभूषण आर्य प्रमुख वक्ताओ मे थे।

आर्यसमाज, सैक्टर-७, फरीदाबाद में १५ दिवसीय योग प्रशिक्षण-शिविर

आर्यसमाज, सैक्टर-७, फरीदाबाद (हरियाणा) मे श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक, आचार्य दर्शन योग विद्यालय आर्य वन क्षेत्र रोजड (गुजरात) की अध्यक्षता मे १६ सितम्बर से ३० सितम्बर, ६० तक १५ दिन के योग प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे महिलाए भी भाग ले सकेगी।

शिविर मे योग दर्शन के सूत्रो का अध्यापन तथा 'क्रियात्मक योग-साधना' सिखाने के साथ-साथ यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार आदि अगो पर तथा विवेक, वैराग्य अभ्यास, जपविधि, ईश्वर समर्पण व स्वस्वामिभाव सम्बन्ध को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषया पर विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा।

आर्यसमाज पंजाबी बाग नई दिल्ली

वेदप्रचार सप्ताह के अन्तर्गत, आर्यसमाज पजाबी बाग नई दिल्ली मे 'वेदो की आध्यात्मिकता तथा ऋषि दयानन्द का आध्यात्मिक दृष्टिकोण' विषय पर एक सप्ताह तक वैदिक विद्वान आचार्य श्री यशपाल 'सुधाशु' के सारगर्भित प्रवचन हुए। इस अवसर पर श्री प० सत्यपाल 'मधुर' ने भजनोपदेश किया।

उल्लेखनीय है कि यह कार्यक्रम प्रतिदिन भिन्न-भिन्न आर्य परिवारो मे पारिवारिक सत्सगो के रूप मे चला, जिनमे आर्यसमाजी श्रोताओ के साथ-साथ सिख, जैन, सनातनी बन्धुओ ने भी श्रद्धापूर्वक सम्मिलित होकर वेद प्रवचनो का श्रवण किया।

आर्यसमाज अमर कालोनी नई दिल्ली

आर्यसमाज अमर कालोनी मे वेदप्रचार का समारोह १३ अगस्त से १८ अगस्त तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के भजनोपदेशक प० सत्यदेव स्नातक एव श्री ज्योतिप्रसाद ने मनोहारी भजन प्रस्तुत किए। भजनोपदेश के पश्चात प० यशपाल जी 'सुधाशु' ने 'प्रभुभक्ति और आर्यसमाज' तथा 'श्रीकृष्ण जीवन-दर्शन' पर ओजपरक व्याख्यान दिए।

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली

आर्यसमाज कीर्तिनगर मे ६ अगस्त से १२ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह का कार्यक्रम समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर "सच्चे सुख का मार्ग" विषय पर आयोजित प्रवचनमाला मे वैदिक युवा विद्वान प० यशपाल 'सुधाशु' ने कहा—दार्शनिक मान्यता है कि मनुष्य सुख, सुविधा और सुरक्षा की तलाश मे अपनी यात्रा प्रारम्भ करता है, परन्तु उसे सुख का केवल क्षणिक रसास्वाद मिलता है और उसके बदले वह दुख अधिक उठाता है। इसी तरह सुविधा के लिए साधनो को एकत्रित करने मे अपनी समस्त शक्ति लगा देता है और उन साधनो से कुछ आराम जरूर मिल जाता है परन्तु सन्तुष्टि नही और न ही तृप्ति ही मिल पाती है। इस सबसे हटकर सच्चे सुख का मार्ग क्या है? इस सम्बन्ध मे वेद और उपनिषद क्या कहते है—वेदो के प्रमाण तथा उपनिषदो की दृष्टि से आचार्य जी ने "सच्चे सुख का मार्ग' विषय पर गहराई से प्रकाश डाला, जिसे आर्यजनो ने बडी श्रद्धापूर्वक श्रवण किया।

आर्यसमाज फीरोजपुर छावनी

आर्यसमाज जी० टी० रोड फीरोजपुर छावनी मे 'वेदप्रचार सप्ताह' १३ अगस्त से १६ अगस्त १६६० तक सोत्साह मनाया गया। प्रतिदिन यजुर्वेद शतकम् मे से मन्त्रो की आहुति के साथ पाठ किया गया। प० निरजन देव जी, महोपदेशक एव श्री प० जगत वर्मा जी भजनोपदेशक के सुमधुर भक्ति सगीत कार्यक्रम को लोगो ने मन्त्र मुग्ध होकर सुना। १४ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एव १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस बडी धूमधाम से मनाया गया एव उक्त दिवसों के महत्व पर स्थानीय विद्वानो ने प्रकाश डाला तथा अपने विचारो से जनता को अवगत कराया।

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक का दिल्ली प्रवास

वेदवागीश, व्याख्यान वाचस्पति पूज्यपाद श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक सस्थान नजीबाबाद नवम्बर और दिसम्बर मास मे दिल्ली मे प्रवास करेंगे। जो आर्यसमाजे इस अवधि मे वेदकथा का आयोजन करना चाहे, वह शीघ्र ही पत्र-व्यवहार कर कार्यक्रम निश्चित कर ले।

(पृष्ठ ५ का शेष)

शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालयो और महाविद्यालयो का बहिष्कार किया गया था। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे अपनाकर उसका प्रचार-प्रसार किया गया था। आज उस हिन्दी की दयनीय दशा को देखकर तरस आता है। जिस हिन्दी मे भारत माता की जय बोलकर स्वतन्त्रता का सघर्ष किया गया था, आज वही स्वभाषा स्वदेश मे स्वराज्य आने पर भी वनवास भोग रही है। हिन्दी की इस दारुण दशा को देखकर किसी कवि ने ठीक ही तो कहा है—

"भगा सी कह परम पुनीता,
हिन्दी बनी वनवासिनी सीता।'

आज सम्पर्क भाषा के स्थान पर अग्रेजी को बिठाकर अपने ही देश मे अग्रेजी को रानी बना दिया गया है और हिन्दी को दासी बनाकर रख छोडा है। यह हमारी स्वदेश भक्ति की कमी का ही तो प्रमाण है।

महात्मा गाधी ने अग्रेजी कपडो का बहिष्कार करके स्वदेशी वेशभूषा अपनाने पर जोर दिया था। खादी को अपनाया गया था। लेकिन आज तो खादी चन्द पेशेवर राजनीतिक लोगो का आवरण मात्र बनकर रह गई है। पहले जो लोग खादर मे छुपा करते थे अब खद्दर पहनकर खुले फिरते हैं। आज हम इपोर्टिड वस्त्रो को उत्तम समझते है। इसी प्रकार से विदेशी वस्तुओ से हमे लगाव हो रहा है यह राष्ट्र भक्ति का ही अभाव तो है। यदि हमे अपने देश से प्यार है तो उसकी प्रत्येक वस्तु से प्यार होना चाहिए और इस भावना से अपनाना होगा—

"जिये तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष,
निछावर कर दे हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारत वर्ष।"

सनातन धर्म कालेज, पलवल-१२११०२
(हरियाणा)

यज्ञोपवीत संस्कार समारोह सम्पन्न

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय खेड़ा खुर्द के ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार समारोह श्री महाशय धर्मपाल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों की आर्य समाजों के अधिकारी तथा सदस्यगण भारी संख्या में सम्मिलित हुए।

गुरुकुल की सुन्दर व्यवस्था देखकर महाशय धर्मपाल जी ने ग्यारह हजार रुपये देने की घोषणा की। आर्यसमाज पटेलनगर ने १५५१) श्री के०के० भीगरन ने ५०१) श्रीमती सोनादेवी ने ५०१) तथा अन्य अनेक सज्जनों ने सौ-सौ रुपये भेंट किए।

आर्यसमाज हिण्डोन सिटी

आर्यसमाज हिण्डोन सिटी (राजस्थान) में रक्षाबन्धन पर्व से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक चले यजुर्वेद पारायण यज्ञ में पं० ज्ञानेन्द्र कुमार आर्य द्वारा वेदपाठ तथा श्री सत्यपाल सरल द्वारा भजनोपदेश किया गया। समापन समारोह के पश्चात सामूहिक प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गाय।

निर्वाचन सम्पन्न—

आर्यसमाज तिलकनगर नई दिल्ली

प्रधान — श्री यशपाल कले
मन्त्री — श्री बलदेव राज
कोषाध्यक्ष — श्री हरदेव ग्रोवर

आर्यसमाज बी-ब्लाक जनकपुरी

(आर्यसमाज मन्दिर बी-२/आर-३ जनकपुरी नई दिल्ली ५८)

प्रधान — श्री धीरेन्द्रकुमार खटटर
मन्त्री — श्री लभूराम
कोषाध्यक्ष — श्री शान्तिस्वरूप कपूर

(पृष्ठ ८ का शेष)

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों ने कभी सोचा भी नहीं था कि स्वतन्त्रता के बाद ये वर्तमान शासक पुनः देश को इस प्रकार जातियों को स्वार्थों के शृंखला में बांट देंगे। ये अपनी राजनीति को चमकाने के लिए वर्ग युद्ध का आमन्त्रण देंगे और देश की एकता को पुनः खंडित करने की दिशा में उद्यत होंगे।

जन्मना जाति के आधार पर किसी प्रकार का आरक्षण न्याययुक्त नहीं है। जाति के आधार पर किसी को पिछड़ा मानना भी उचित नहीं है। आपातकाल में जब झुग्गी वालों का पुनर्वास कालोनियों में बसाया गया तो भी यही कहा गया था कि इन पर रहम की नहीं बल्कि समान सम्मान देने की आवश्यकता है। जो उस समय यह कहते थे वे ही आज फिर रहम दिखाना चाहते हैं।

सभी को समान मानना इस सामाजिक व्यवस्था का अंग होना चाहिए। अयोग्य को स्थान न देकर उन्हें योग्य बनाने का प्रयास करना चाहिए। योग्य बनने के लिए सभी प्रकार के आरक्षण देने चाहिए। ●

वार्षिक चुनाव सम्पन्न—

आर्यसमाज अनाज मण्डी शाहदरा

प्रधान — श्री सीताराम आर्य
मन्त्री — श्री आनन्द प्रकाश शर्मा
कोषाध्यक्ष — श्री योगेश्वर सवज्ञ

आर्यसमाज रामाकृष्णापुरम्

सैक्टर ९ रामाकृष्णापुरम् नई दिल्ली

प्रधान — श्री हरबंस लाल कोहली
मन्त्री — श्री फूलसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष — श्री हरबंस लाल कपूर

आर्यसमाज कृष्णानगर दिल्ली

प्रधान — श्री ज्ञानचन्द चौधरी
मन्त्री — श्री हरचरण सिंह सहगल
कोषाध्यक्ष — श्री जनकराज ऋषि

R N No 32387/77 Post in N D P S O on 6, 7-9-1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

पुस्तक समीक्षा—

वैदिक धर्म एवं संस्कृति

[डा० धर्मचन्द्र विद्यालकार प्रवक्ता, सनातनधम कालेज पलवल हरियाणा, अमर ज्योति प्रकाशन, मेरठ, पृ० ८४, मूल्य १० रु०]

वैदिक धर्म की मान्यताओ एव सस्कृति क सम्बन्ध मे समय समय पर मनीषी विद्वानो ने गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है। वैदिक धर्म एव सस्कृति नामक इस लघु पुस्तिका मे लेखक न उन सभी प्रश्ना का यथा साध्य उत्तर दिया है जिनको लेकर जन सामान्य भ्रमित है। आज का सामान्य व्यक्ति मात्र आडम्बर को धर्म समझ बैठा है। लेखक ने धर्म का सही रूप मे परिभाषित किया है। भारतीय चिन्तन परम्परा का आदि स्रात वेद है। जो वेद सम्मत है, वही सावकालिक और सार्वभौमिक है। वेद विज्ञान की कसौटी पर खरा है। इस लघु पुस्तिका में आठ अध्याय है—धर्म क्या है?, भारतीय सस्कृति का स्वरूप, समाजोन्मुख परिवार सापेक्ष आर्य सस्कृति, वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था व्यक्ति और समाज, विद्यार्थी जीवन, सती प्रथा, सन्तुलित जीवन।

मुझे विश्वास है कि लेखक की प्रतिभा एव मौलिक चिन्तन स, आधुनिक समस्याओ का समाधान खोजने मे सुधी पाठको को अवश्य ही लाभ पहुचेगा और वे इस तनाव के जीवन मे कुछ क्षणा के लिए शान्ति अनुभव कर सकेंगे।

श्री धर्मचन्द्र विद्यालकार की शैली सुललित, सरस एव प्रवाहपूर्ण है। इसमे शब्दो का आडम्बर बिल्कुल भी नही है।

—डा० धर्मपाल



सेवा में—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन ३१०१५० के लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित। रजि० न० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वप ३ अक ७ ... मित ... ि क्रम सम्वत ०४७ दयानन्दाब्द १६६ सृष्टि स वत १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपय आजीवन २५० रुपय विदश मे ५० पौण्ड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

जातीय आधार पर आरक्षण से—

हिन्दू समाज को टुकड़ों में बांटने का षड्यन्त्र

'आदर्श सामाजिक व्यवस्था' संगोष्ठी में आर्य नेताओं के विचार

नई दिल्ली, ६ सितम्बर '९० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान मे आयोजित 'आदर्श सामाजिक व्यवस्था' सगोष्ठी के अध्यक्ष पद से बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आज वोटो की राजनीति के कारण, जातीय आधार पर सरकारी नौकरियो मे आरक्षण की घोषणा, हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों को टुकडो मे बाटने का सुनियोजित षड्यन्त्र है, जिसका प्रत्येक राष्ट्रवादी व्यक्ति को मुकाबला करना है। स्वामी जी ने धर्म ग्रन्थो के उदाहरण देते हुए कहा कि प्राचीन काल मे जाति गुण, कर्म के आधार पर निश्चित की जाती थी, न कि जन्म के अनुसार। आर्यसमाज भी केवल गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर ही जाति निर्धारण मे विश्वास रखता है। उन्होंने सरकार से माग की कि आरक्षण का लाभ केवल गरीब को ही मिलना चाहिये, चाहे वह किसी भी जाति से सम्बन्ध रखता हो।

सर्वोच्च न्यायालय के विख्यात अधिवक्ता श्री लक्ष्मीमल सिघवी ने कहा कि सौमनस्य एव विश्वबन्धुत्व की भावना वैदिक-सस्कृति की ऐसी अनमोल धरोहर है, जिससे एकता और मनुष्य की गरिमा भी स्थापित होती है। उन्होने कहा कि आरक्षण जिस नीयत से लागू किया जा रहा है उससे सरकार पर एक बडा प्रश्न चिह्न लग गया है। उनके अनुसार वैदिक व्यवस्था ही आदर्श सामाजिक व्यवस्था हो सकती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने गीता एव मनुस्मृति के अनेक उदाहरण देकर बताया कि पहले गुण, कर्म, स्वभाव के द्वारा ही जाति का निर्धारण होता था। उन्होन कहा कि अयोग्य को योग्य बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए एव योग्य तथा प्रतिभावान के लिये आरक्षण का प्रावधान होना चाहिये।

इस अवसर पर मौरिशस के उच्चायुक्त श्री आनन्दप्रिय निवर ट्रिनीडाड के उप-उच्चायुक्त श्रीचन्द्र दत्त सिह श्री नूरी राजेश्वर राव (विख्यात न्यायविद) श्री प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् (हैदराबाद) श्री छोटूसिह एडवोकेट (राजस्थान), श्री प० राजगुरु शर्मा (मध्य प्रदेश), श्रीमती सुषमापाल मल्होत्रा आदि ने भी वैदिक समाज व्यवस्था का जोरदार शब्दो मे समर्थन किया।

इस सगोष्ठी मे दो प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से स्वीकार किय गये। प्रथम प्रस्ताव के अनुसार एक ऐसी आदर्श सामाजिक व्यवस्था के निर्माण पर बल दिया गया, जिसका ढाचा वर्गरहित हो जो सभी राष्ट्रो मे एकता, शान्ति तथा आपसी भाई चारे को बढावा दे तथा शोषणरहित हो। ऐसी व्यवस्था केवल 'वैदिक वर्णव्यवस्था' ही हो सकती है। दूसरे प्रस्ताव के अनुसार मण्डल-आयोग की सिफारिशो को जातिगत विद्वेष की भावना फैलाने वाला प्रशासकीय कार्यदक्षता से खिलवाड करने वाला तथा गृह युद्ध की सी स्थिति पैदा करने वाला बताया गया। प्रस्ताव मे सरकार से माग की गयी कि वह जातिवाद को बढावा न देकर केवल योग्यता व समान अवसर को प्राथमिकता देवे।

आर्यों की दिव्य भावना

—पं० प्रकाशचन्द्र 'कविरत्न'

न करते हम किसी से बैर ना तकरार करते हैं।
हम हिन्दी राष्ट्र भाषा को हृदय से प्यार करते है॥

जहा हम चाहते है मान हिन्दी राष्ट्र भाषा का।
वहा हम गुरुमुखी का भी उचित सत्कार करते है॥

न रोके से रुकेगा ये हमारा हिन्दी आन्दोलन।
उचित मागे नही वे जब तलक स्वीकार करते है॥

रहे दोनो परस्पर प्रेम से सिख हिन्दू भारत मे।
यही हम प्रार्थना भगवान से सौ बार करते हैं॥

[पजाब मे हिन्दी की रक्षार्थ आर्यसमाज द्वारा चलाये गये 'पजाब हिन्दी सत्याग्रह'—१९५७ के समय लिखी गयी कविरत्न स्व० श्री प० प्रकाशचन्द्र जी की इस कविता मे 'हिन्दी' तथा 'हिन्दू-सिख' एकता का चित्रण आज भी प्रेरणास्प्रद है। —सम्पादक]

"मेरी आखे तो उस दिन को देखने को तरसती है जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रत्येक भारतवासी हिन्दी का व्यवहार करेगा।"

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

हिन्दी दिवस पर विशेष—

हिन्दी

—डा० सारस्वत मोहन 'मनीषी'

भारत मा की झोली मे फिर भरना है उल्लास हमे।
हिन्दी की जय के नारो से गुंजवाना आकाश हमे।

हिन्दी को अपनायेंगे तो जग हमको अपनायेगा।
भाषाई झगड़े समाप्त हो देश स्वर्ग बन जायेगा।
भारत पुत्रो, उठो ! न सोओ, सोने का यह वक्त नही।
वरना दुनिया कह देगी तुममे महर्षियो का रक्त नही।

पतझड़ के गीत आगन मे लाना है मधुमास हमे।
हिन्दी की जय के नारो मे गुंजवाना आकाश हमे।

दुलहन को गहरा खतरा है बाराती, बारातो से।
कब तक प्यास बुझा पायेंगे अश्को की बरसातो से।
ऊपर से शुभचिन्तक दिखने वाले कुछ गद्दारो से।
सावधान रहना है हमको इन विष भरी बहारो से।

नही खेद से, शुद्ध रक्त से लिखना है इतिहास हमे।
हिन्दी की जय के नारो से गुंजवाना आकाश हमे।

हिन्दी का विरोध जो करता अपनी मा का दुश्मन है।
अपनी मा, मा ही होती, है वेश्या किसकी दुलहन है।
अपनी कुटिया को ठुकराकर कोठी मद मे फूल गए।
व्हिस्की के लालच मे पावन पुण्य दुग्ध को भूल गए।

अग्रेजी को भारत से अब देना है बनवास हमे।
हिन्दी की जय के नारो मे गुंजवाना आकाश हमे।

चले गए अग्रेज यहा से अग्रेजी क्यो बाकी है।
अपने ही शासन मे जालिम जगेजी क्यो बाकी है।
भारत की एकता मर रही हिन्दी को सजीवन दो।
माग रही है भारत माता हिन्दी को तन, मन, धन दो।

हिन्दी के अमृत से सबकी मिट बुझानी प्यास हमे।
भारत की झोली मे फिर से भरना है उल्लास हमे।

हिन्दी से क्यो नफरत करते ऐसी भी क्या उलझन है।
कितने ही पैसे वाला हो लेकिन वह तो निर्धन है।
सभी रानिया मे पटरानी देवनागरी हिन्दी है।
कौन कहे पैरो की जूती यह माथे की बिन्दी है।

जिए मरे हिन्दी की खातिर देना है विश्वास हमे।
हिन्दी की जय के नारो मे गुंजवाना आकाश हमे।

ओ३म् अभय मित्रादभयमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥

करो सभी से अभय

—देव नारायण भारद्वाज

अपने साथी और सहायक प्रभो ! अभय व्यवहार बढाये।
सभी दिशाये सुख वर्षाये, और अभय जीवन मे लाये ॥

सब मित्र मधुर व्यवहार करे,
प्रिय हमे अभय सुख हार बरें,
सबम शत्रु से सावधान,
हम अभय जगत सचार करे।

भय हीन हमारा जीवन हो निर्द्वन्द्व भ्रमण कर सुख पाये।
सभी दिशायें सुख वर्षाये और अभय जीवन मे लाये ॥

प्रभु परिचित जन से अभय करो,
और अपरिचित से अभय करो,
भय रहित रात्रि मे हो जायें,
प्रभु दिवस मध्य भी अभय करो।

हो अन्धकार या हो प्रकाश, हम कही नही डरने पाये।
सभी दिशाये सुख वर्षायें, और अभय जीवन मे लाये ॥

मित्र अमित्र अपरिचित परिचित,
रात्रि-दिवस जग तिमिर-प्रकाशित,
दिशा-दिशान्तर मित्र मधुर बन,
हमको करे हृष्ट आकर्षित।

ये सभी मित्र बनकर आये, हम निर्भय निश्चिन्त बनाये।
सभी दिशाये सुख वर्षाये, और अभय जीवन मे लायें ॥

—एफ-४२, मानसरोवर कालोनी
राजघाट मार्ग, अलीगढ-२०२००१

सम्पादक के नाम पत्र—

● हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के ५१ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रकाशित आर्यसन्देश का भव्य, विशालकाय विशेषाक प्राप्त हुआ। आद्योपान्त पढा। देश एव मुख्यत आर्यजगत मे व्याप्त अशान्ति एव किकर्त्तव्यविमूढ अवस्था मे यह विशेषाक आशा की किरण है। जो कविताए इसमे प्रकाशित की गई हे उनमे विशेषाक मे चार-चाद लग गए है। मेरी आर्यसन्देश के श्री सम्पादक जी एव प्रकाशकगणो को हार्दिक बधाई एव धन्यवाद। इस विशेषाक को पढकर पुन आर्यसन्देश के नये ग्राहक बनाने का विचार एव प्रेरणा मन मे उत्पन्न हुई है जिसे शीघ्र ही कार्यान्वित करूगा। विगत एक वर्ष मे प्रकाशित भव्य एव उत्कृष्ट विशेषाको के कारण आर्यसन्देश, आर्यजगत का सर्वाधिक उत्कृष्ट एव लोकप्रिय साप्ताहिक पत्र बन गया है।

मेरी सम्मति मे साहित्य का प्रभाव किसी भी कार्यक्रम अथवा सम्मेलन से कही अधिक होता है। इस दृष्टि से सार्वदेशिक सभा द्वारा बृहत् साहित्य प्रकाशन योजना स्तुत्य है। विश्वास है कि आप भी इस अवसर पर एक विस्तृत भव्य विशेषाक एव अन्य दुर्लभ एव अप्राप्त साहित्य का प्रकाशन करेगे। पण्डित देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी विरचित महर्षि दयानन्द जी का जीवन-चरित्र सम्प्रति अप्राप्य है। इसके प्रकाशन के बारे मे आर्य साहित्य मण्डल लि०, अजमेर से पत्र-व्यवहार किया। उन्होने सूचित किया है कि इसके निकट भविष्य मे प्रकाशन की सम्भावना नही। महर्षि दयानन्द को मानने एव समझने मे जीवन-चरितो का अपना विशेष स्थान है। यह जीवन-चरित्र अन्य जीवन-चरितो की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। आप इसे कृपया स्वय, सार्वदेशिक सभा अथवा अन्य प्रकाशको को प्रेरणा कर प्रकाशित कराने की कोशिश करे। यह वर्ष गुरुदत्तजी की निर्वाण का शताब्दी वर्ष भी है। डा० भवानीलाल जी भारतीय ने भी अनुपलब्ध गुरुदत्त ग्रन्थावली के प्रकाशन की आवश्यकता प्रतिपादित की है। यदि कोई प्रकाशक इसे भी प्रकाशित कर सके तो वर्तमान शताब्दी वर्ष मे वह भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य होगा।

—मनमोहन कुमार आर्य
१९६-ब्लाक-२, चुक्खूवाला, देहरादून-२४८००१ (उ० प्र०)

● आर्यसन्देश मे 'शरद' जी के विचार पढने को मिले, प्रसन्नता हुई। श्री शरद ओजस्वी वक्ता तथा ख्याति प्राप्त आर्य विद्वान् है। अतएव उनका जीवन-वृत्त लेखमाला के रूप मे चलता रहे तो अत्युत्तम। ऐसे आर्य श्रेष्ठियो के परिचय देते रहने मे भी आपके पत्र की अपनी एक और विशेषता बनती जा रही है।

ओ टकारे की ज्वलित ज्योति,
तू कभी नही बुझने वाली।
तुझसे जगमग यह जगती तल,
तुझसे भारत गौरवशाली ॥

—रामाज्ञा 'आर्यपुत्र', बौद्धिकाध्यक्ष
आर्यवीर दल (पूर्वी उ० प्र०), भागलपुर देवरिया

आर्यवीर दल गुरुकुल कर्तारपुर का निर्वाचन

सरक्षक	श्री देवदत्त शास्त्री
प्रधान	ब्र० अनन्त कुमारार्य
मन्त्री	ब्र० विमल प्रकाशार्य
कोषाध्यक्ष	ब्र० आशीष सामन्त

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

जय हिन्दी ! जय हिन्द !



हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा बने कैसे ? देशवासी तो हिन्दी को भूलते जा रहे है। अंग्रेजी के व्यामोह से बुरी तरह ग्रस्त है। आने वाली पीढी पब्लिक स्कूलो (इनमे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल भी सम्मिलित है) के जाल मे फस कर भारत को पूरी तरह इगलैण्ड-अमेरिका बनाने पर उतारू है। सरकार और जनता दोनो ही हिन्दी से अपना काम निकाल रहे है। लोग हिन्दी मे वोट माग-माग कर कुर्सियो पर जा बैठते है और कुर्सियो पर बैठते ही "अंग्रेजी-अंग्रेजी" पुकारने लगते है तथा हिन्दी वालो को पिछडा मानने लगते है। देश की लगभग नब्बे प्रतिशत जनता हिन्दी से पूर्ण परिचित है, लेकिन स्थिति यह है कि हिन्दी केवल भाषणो मे कहने के लिए राष्ट्रभाषा है, व्यवहार मे नही ! सरकारी कामकाज तो अंग्रेजी मे ही होता है और हिन्दी केवल अनुवाद की भाषा बनकर रह गयी है।

इससे बढकर विडबना और क्या होगी कि हमारा अपना सविधान है, अपनी ससद है अपनी सरकार है, अपना झण्डा है, परन्तु राष्ट्रभाषा अपनी नही है। अंग्रेजो को भारत छोडे ४३ वर्ष से अधिक हो चुके है परन्तु हम आज भी अंग्रेजियत के गुलाम बने हुए है।

हमे सोचना है, हिन्दी चलेगी तो लोकतन्त्र चलेगा। हिन्दी चलेगी तो समाजवाद चलेगा। हिन्दी किसी विशेष जाति धर्म या प्रदेश से जुडी नही है, अत हिन्दी के प्रचार प्रसार से धर्म-निर्पेक्षता बढेगी, अलगाववाद दूर होगा और देश की अखण्डता अक्षुण्ण होगी। इसके साथ ही यह निश्चित जानिये कि हिन्दी चलेगी तो उर्दू चलेगी, पजाबी चलेगी, गुजराती और मराठी चलेगी, असमिया और बगला चलेगी फिर दक्षिण भारत की सभी भाषाओ का अभ्युदय क्यो न होगा। परन्तु यह सब कब होगा ? जब यह विदेशी-दुल्हन अंग्रेजी हमारा घर खाली करेगी !

हमारे पूर्वजो ने हमे स्वराज दिया अब हमे "हिन्दी दिवस" पर अपने देश को स्वभाषा देने के लिए दृढ सकल्प लेना होगा। —मूलचन्द गुप्त

पजाब मे हिन्दी रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग करने वाले—

अमर शहीद वीर सुमेरसिंह

—पं० इन्द्रसेन 'विश्वप्रेमी'

फिरोजपुर की जेल मे कैरो ने दिया मार तुझे।
तूने मृत्यु से प्यार किया है फूलो का उपहार तुझे॥

चौबीस अगस्त की शाम को यहा खूनी काण्ड हुआ था।
जलिया वाले बाग से बढकर अत्याचार किया था॥
पाइप से सिरको फोड दिया और दी लाठी की मार तुझे॥१॥ तूने

हरदीपसिंह कैरों ने था जब तुझ पर ऐसा वार किया।
उफ न की तू मौन रहा हिन्दी पर जीवन वार दिया॥
भारत माता की गोद मे अब मिलेगा मा का प्यार तुझे॥२॥ तूने

प्यारे वीर सुमेरसिंह जी तेरा महा बलिदान हुआ।
भारत के नर नारी को तेरी शक्ति का ज्ञान हुआ॥
नत मस्तक होकर श्रद्धा से सब करते नमस्कार तुझे॥३॥ तूने

इस सोई हिन्दू जाति को तूने ही ओज प्रदान किया।
करो की नादिर शाही का चूर चूर अभिमान किया॥
शहीदों मे तेरा नाम अमर और ईश्वर का प्यार तुझे॥४॥ तूने

फूकों से नहीं बुझेगी ज्वाला जाग पडा है देश महान।
देश का बच्चा २ होगा हिन्दी भाषा पर बलिदान॥
विजय का डका बजके रहेगा मिलेगी जय जय कार तुझे॥५॥ तूने

मा-बाप का नाम अमर किया और ग्राम भी तेरा अमर हुआ।
हिन्दी रक्षा आन्दोलन को कितना ऊचा सम्मान मिला॥
"विश्व प्रेमी" इस कविता द्वारा देत हैं सत्कार तुझे॥६॥ तूने

दयानन्द शिष्य की पीड़ा (१)

—डा० सारस्वत मोहन 'मनीषी'

दयानन्द गुरुवर आकर देखो अपनी फुलवारी को।
चूहे कुतर-कुतर कर खाने जात वैदिक क्यारी को।

सत्य-प्रकाश चले थे करने, अब प्रकाश ही झूठ बना।
टूट चुकी तलवार तर्क की, जीवन टूटी-मूठ बना।
जाने क्या-क्या घपले करते, शर्म न हमको आती है।
अपने गर्हित कर्म देखकर, लज्जा खूब लजाती है।
वेदो मे इतिहास बताते, फिर भी पच प्रधान बने।
वेद ईश का ज्ञान नही है, कहते फिरते तने-तने।
मासाहार, शराब और मैथुन के खूब वकील बने।
हम ऊचे कितने नीचे, है आज चील या गिद्ध बने।

हम कितने लायक हैं, गाली देत हैं महतारी को।
दयानन्द गुरुवर आकर देखो अपनी फुलवारी को।

हिन्दी सस्कृत हवन यज्ञ, विद्यालय से निष्कासित है।
चोटी सध्या और जनेउ, देखो कितनी शापित है।
वैरीगुड गुड-मा पूजित है, व्यर्थ नमस्ते नमक बनी।
सर मैडम सॉरी यस नो थैंक्यू, मन्दिर की महक बनी।
जहा देश हिन्दी गाता हम अग्रेजी को गाते है।
आर्य बनाना था लेकिन अब हम अग्रेज बनाते है।
हस्ताक्षर पर सिगनेचर का, शासन है क्या कारण है।
अग्रेजी की औषध से हो, होता पाप निवारण है।

सदाचार को शूल मिले, पूजा जाता अभचारी को।
दयानन्द गुरुवर आकर, देखो अपनी फुलवारी को।

झगडे झगडे और सिर्फ झगडो मे जीवन बीत रहा।
रगडे रगडे और सिर्फ रगडो मे ही घट रीत रहा।
सरस्वती के मन्दिर मे, लक्ष्मी को पूजा जाता है।
केवल धन का लाभ मिले, शिक्षा से इतना नाता है।
अग्रेजो के दत्तक पुत्र, बने है फर्ज निभाते है।
'शोभा' उनकी होती, हम केवल 'यात्री' रह जाते है।
नित्य ढिढोरा पीट रहे है, त्यागी होने का।
'पद्म विभूषण' दे दो इनको, रोगी भोगी होने का।

देखोगे तो रो दोगे चेलो की मारा मारी को।
दयानन्द गुरुवर आकर, देखो अपनी फुलवारी को।

नयी-नयी बन रही समाजे, नयी-नयी दूकाने भी।
जुडे साथ मे विद्यालय भी, श्रम से जुडी थकाने भी।
कुछ अधिकारी चट छली अपने-अपने मतलब लाये।
देने को ठन ठन गोपाला, लेने को सब कुछ आये।
पुत्र-पुत्रिया पुत्रवधू और रिश्तेदार खपाने को।
जोड-तोड एडी-चोटी का, नौकरिया लगवाने को।
एक बार कुर्सी मिल जाये, फिर न छूटने पायेगी।
मर कर ही कुर्सी छूटती, पर नही लालसा जायेगी।

गले लगाया बेईमानी बेशर्मी गद्दारी को।
दयानन्द गुरुवर आकर, देखो अपनी फुलवारी को।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे, ज्ञान झाडते देखे हैं।
अनपढ पडित जी कहलाते, गला फाडते देखे है।
सिर्फ चरण है नही, आचरण फिर भी पूजे जाते है।
सिह हाथियो के जगल मे, चूजे हुक्म चलाते है।
गीता की झूठी कसमे खाते है, फिर भी दूध धुले।
है आश्चर्य नाव कागज की, बरसातो मे भी न घुले।
वेद प्रचार नाम होता है, आत्म प्रचार कराते है।
आग लगा देते पहले, फिर आग बुझाने जाते है।

दुमदारो से मिले न फुर्सत, दरबारा दरबारी को।
दयानन्द गुरुवर आकर देखो, अपनी फुलवारी को।

(क्रमश)

७५वें जन्म-दिवस पर—

आर्यसमाज के प्रेरणा-स्तम्भ : आचार्य क्षेमचन्द 'सुमन'

—डा० इन्द्र सेंगर

भारतीय सस्कृति के उन्नायक, राष्ट्रीयता के उपासक, हिन्दी के अग्रदूत, अध्यात्मवेत्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी अविरत साधना से तितीक्षा की पावन धरती पर अपने चिन्तन का जो बीज बोया था, वह आज भी कल्पतरु के रूप मे फूल-फल रहा है। वह है आर्यसमाज—जैसा पावन एव विशाल सस्थान। जिसने मानव को समाज को राष्ट्र को विश्व को नई सोच दी, देखने के लिए नयन दिए और राष्ट्र को एक ऐसी वाणी दी जो आज पूरे देश मे तो क्या विश्व मे राष्ट्रसघ की भाषा बनने के लिए भी सक्षम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा पल्लवित और पुष्पित कल्पतरु ने हिन्दी-जगत को ऐसे अनेकश मनीषी दिए है जिन पर आर्यसमाज को गर्व एव गौरव है। ऐसे मनीषियो मे आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' का नाम भी उल्लेखनीय है।

आपका जन्म गाजियाबाद जनपद के अन्तर्गत बाबूगढ नामक ग्राम मे प्राचीनता के अनन्य उपासक एव विशुद्ध एक आर्यपरिवार मे १६ सितम्बर, १९१६ ई० को हुआ। ऐसे परिवार मे जन्म लेना निश्चय ही एक सुखद सयोग और सौभाग्य की बात थी, जिसने सुमन जी के सस्कारो के निर्माण मे अनुपम योगदान किया। आर्यसमाज की छत्रछाया मे खेलता हुआ सुमन जी का जीवन वैदिक सस्कृति का सुधा-पान करने के साथ-साथ ज्ञानादित्य की रश्मियो से अपना जीवन-पथ आलोकित करता गया। जिस समय साइमन कमीशन का अगद-चरण भारत मे जम गया था, उस समय आप पावन जान्हवी-सुता के किनारे महामहिम स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की चरण-छाया मे पोषित शिक्षा-केन्द्र गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे उच्च शिक्षा लेने के लिए प्रविष्ट हुए। यह सन् १९२६ ई० की बात है। आपकी प्रतिभा निरन्तर बहुमुखी होती गई और अपनी प्रतिभा के बल पर १९३२ ई० मे आप सर्वप्रथम महाविद्यालय के छोटे ब्रह्मचारियो की आर्य किशोर सभा के मन्त्री बन गए। उसी वर्ष आपने आर्य किशोर सभा के हस्तलिखित मासिक मुखपत्र 'किशोर मित्र' के 'दीप मालिका अक' का भी सम्पादन किया था। यह आपकी प्रतिभा का ही चमत्कार था कि इस अक के सौन्दर्य और सौष्ठव से प्रभावित होकर अनेक विद्वानो ने उस अक की मुक्त कण्ठ से सराहना की थी।

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर जैसी सस्था मे शिक्षार्जन करने का सुपरिणाम यह हुआ कि सुमन जी के सस्कारो मे वैदिक-परम्परा के प्रति निष्ठा, आस्था और दृढ-विश्वास गहराई तक सम्पृक्त हो गया, जिसकी अभिव्यक्ति भविष्य मे चलकर क्रमश एक निर्भीक एव राष्ट्रवादीवक्ता, सजग लेखक और सशक्त सपादक के रूप मे परिलक्षित होती है। सुमन जी ने समय-समय पर आर्यसमाज के विभिन्न आयोजित सम्मेलनो मे विभिन्न पदो से जो अभिभाषण दिए है, वे अपने आप मे एक अमूल्य निधि है। इन सबमे उनका निर्भीक वक्तृत्व झलकता है। सुमन जी अपने भाषणो मे श्रोताओ पर ऐसा प्रभाव छोडते हैं कि प्रत्येक श्रोता सहज रूप से उनके मत का अनुसरण करने के लिए प्रेरित हो उठता है। दिनाक ५ फरवरी, १९३८ ई० को 'आर्य किशोर सभा' गुरुकुल के महाविद्यालय, ज्वालापुर के 'रजत जयन्ती उत्सव' के स्वागताध्यक्ष पद से बोलते हुए सुमन जी ने कहा "आर्यसमाज मनुष्य की सरलता, पवित्रता और स्वतन्त्रता के लिए विश्वबन्धुत्व के मधुर, प्रेममय सन्देश को लेकर खडा हुआ है। वह केवल एक अमर, एक व्यापक ज्ञानमय चेतन तत्व को जगन्नियन्ता मानकर आनन्दमय जीवन की प्राप्ति के लिए उपदेश देता है और सबका हित-साधन व परोपकार ही आर्यसमाज की धार्मिक साधना है।"

यह सर्वविदित है कि आर्यसमाज केवल धार्मिक सस्था ही नही है प्रत्युत इसने देश की आजादी के लिए किये गए आन्दोलन मे भी अपने क्रान्तिकारी एव विकराल रूप का परिचय दिया था। इसका श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को है। आचार्य सुमन जी ने ४ नवम्बर, १९६३ को बिहार राज्य द्वादश आर्य सम्मेलन, पटना के अन्तर्गत आयोजित 'कवि सम्मेलन' के अध्यक्ष पद से दिए गये वक्तव्य मे इसी रहस्य का अनावरण करते हुए इस प्रकार कहा था—"आर्यसमाज देश की उन क्रान्तिकारी सस्थाओ मे से एक है जिसने बहुत थोडे समय मे इतना बडा कार्य कर दिखाया जो सदियो तक लगे रहने पर भी पूरा नही हो पाता। यदि इस सन्दर्भ मे मै यहा तक कह देने की स्वतन्त्रता आप से चाहू तो आप मुझे क्षमा करेगे कि भारत की स्वतन्त्रता की लडाई का मार्ग निर्देश करके उस दिशा मे आगे बढने का साहस ही सर्वप्रथम आर्यसमाज ने हममे उत्पन्न किया था। इसके स्वनाम-धन्य सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने हाथ में उन्ही कार्यों को लिया था, जिन्हे बाद मे भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) और उसके अनन्य सूत्रधार महात्मा गाधी ने अपनाया था।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार म महर्षि दयानन्द सरस्वती के अन्यतम योगदान की सराहना करते हुए उपर्युक्त भाषण में आगे चलकर सुमनजी ने कहा कि, "कुछ लोग अहिन्दी भाषियो की असुविधा की दुहाई देकर हिन्दी के विकास का मार्ग अवरुद्ध कर रहे हैं। ये लोग भूल जाते है कि राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा महात्मा गाधी की मातृभाषा हिन्दी नही थी तो भी उन्होने हिन्दी के लिए जो भी कुछ किया उसी से इसे राष्ट्रभाषा का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हो सका।' इतना ही नही सुमन जी ने हिन्दी के पक्ष मे अपने सशक्त समर्थन का जयघोष दक्षिण भारत में भी उस समय किया जब वे ११ दिसम्बर, १९६० ई० को हिन्दी महाविद्यालय हैदराबाद मे अपने सम्मान मे आयोजित समारोह मे बोल रहे थे। उन्होंने खुले शब्दो मे हिन्दी के सम्मान और महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा— "भाषाओ को लेकर सघर्ष करना ओछी बात है। मातृभाषा तो अपनी मा की तरह ही पूज्यनीय है। उसका अनादर कैसा? जिस तरह हम अपने किसी मित्र की मा का अनादर नही करते उसी तरह किसी दूसरे की मातृभाषा का भी हमको अनादर नही करना चाहिए। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे अगीकार करने वाले बगला भाषी श्री केशवचन्द्र सेन थे, जिन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना 'सत्यार्थप्रकाश' देव वाणी सस्कृत के स्थान पर हिन्दी मे लिखने के लिए प्रेरित किया था। अत यह कहना कि हिन्दी लादी जा रही है—सर्वथा गलत है।'

२४, २५ और २६ अगस्त, १९७३ को मारीशस की राजधानी पोर्टलुई मे आयोजित १२वें सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अन्तर्गत 'हिन्दी कवि सम्मेलन' के अध्यक्ष पद से बोलते हुए सुमन जी ने कहा—"आर्यसमाज के माध्यम से इस द्वीप मे सास्कृतिक जागरण और हिन्दी प्रचार का जो कार्य हुआ उसका सुपरिणाम यह भी है कि आज मारीशस एक स्वतन्त्र देश के रूप मे उभर कर सामने आया है। एक समय ऐसा था जब 'हिन्दी' और आर्यसमाज' ही यहा के राष्ट्रीय जागरण के मेरुदण्ड थे। मारीशस मे हिन्दी भाषा और उसके साहित्य को लोकप्रिय बनाने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वास्तव मे सम्मान किसी व्यक्ति के कार्य की, उसके योगदान की स्वीकृति ही है। जिन आर्यजनो ने आत्म प्रचार से दूर रहकर लगभग आधी सदी तक राष्ट्रीय-पत्रकारिता, हिन्दी-साहित्य के उन्नयन के साथ-साथ वैदिक मान्यताओ का अहर्निश प्रचार-प्रसार किया हो, उसे हम सम्मान न दे पाए तो इसे कृतघ्नता ही कहा जायेगा। आर्य सामाजिक क्षेत्र मे इस रवैये के कारण बहुत हानि हुई है। जिनके पास धन-साधन या शिष्य-मण्डली होती है या जुटा ली जाती है, उनके आये दिन जहा-तहा नेताओ की तरह स्वागत समारोह, अभिनन्दन समारोह होते रहते है। इनके अभिनन्दन ग्रन्थ भी छप जाते हैं, भले ही इन ग्रन्थो को दीमक चाटे। परन्तु मिशनरी बनकर काम करने वाले भीड मे ओझल रह जाते हैं।

१६ सितम्बर को दो विख्यात् आर्य विद्वान् और मूर्धन्य *हिन्दी-साहित्यकारो* का ७५वा जन्म दिवस हैं—पद्मश्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' और श्री क्षितीश वेदालकार का। आप दोनो ने हिन्दी भाषा के उन्नयन, हिन्दी पत्रकारिता मे मापदण्डो की स्थापना, वैदिक तथा सामाजिक साहित्य सृजन के साथ-साथ अपनी वक्तृत्व कला

"अगर मेरे हाथो मे तानाशाही सत्ता हो, तो मैं आज से ही विदेशी जबान के जरिये हमारे लडके-लडकियो की शिक्षा बन्द कर दू और सारे शिक्षको और प्रोफेसरो से यह माध्यम तुरन्त बदलवा दू। मैं पाठ्य-पुस्तक की तैयारी का इन्तजार नही करूगा। वे तो भाषा-परिवर्तन के पीछे-पीछे चली आएगी।"

—महात्मा गाधी

७५वें जन्म-दिवस पर—

आचार्य क्षितीश वेदालंकार

—पद्मश्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

क्षितीश भाई के सम्बन्ध मे कुछ लिखना मुझे ऐसा लगता है जैसे मै अपना गुण-गान अपने आप ही करने लगू। मेरी और उनकी इतनी घनिष्ठ 'आत्मीयता है कि मै उनको अपने से अलग समझने की कल्पना कर ही नही सकता। हमारी यह 'आत्मीयता' दिन, सप्ताह मास या वर्ष की सीमा मे आबद्ध नही की जा सकती। हम लोग जब गुरुकुल मे प्रविष्ट हुए थे, तब से ही वे मेरे हमदम' मेरे 'दोस्त बन गये है।

प्रारम्भ मे जब वे उत्तर भारत की सुप्रसिद्ध शिक्षण-सस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) मे श्री रामचन्द्र देहलवी जी के परामर्श पर प्रविष्ट हुए थे तब उनका नाम 'छोटेलाल था। हमारे गुरुकुल के आचार्य स्वामी शुद्धबोध तीर्थ जी ने उनका नाम 'छोटेलाल से बदल कर क्षेत्रपाल' रख दिया था। वे अभी कठिनाई से एक वर्ष हमारे साथ न रह पाये थे कि उनके पिता ने उन्हे गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे प्रवेश दिला दिया। कुरुक्षेत्र से आठवी कक्षा तक का अध्ययन समाप्त करके वे इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल मे चले आये और वहा से नवी तथा दसवी कक्षा उत्तीर्ण की। तदनन्तर क्षेत्रपाल जी उच्चतम अध्ययन के लिये गुरुकुल कागडी' चले आये।

इस लम्बे समय मे मेरा उनसे कोई सम्पर्क न हो सका। किन्तु 'कागडी' मे आते ही हम दोनो का जो पुन सम्मिलन हुआ, तो वह इतना घनिष्ट से घनिष्टम होता गया कि वह स्नेह-सूत्र हमे आज भी आत्मीयता के पावन बन्धन मे आबद्ध किये हुए है। गुरुकुल कागडी और हमारी सस्था (ज्वालापुर) इतने पास-पास है कि कदाचित् कोई अभागा दिन बीतता होगा जब हम आपस मे न मिल पाए हो। उन दिनो गुरुकुलो की प्राय सभी प्रकार की सास्कृतिक और साहित्यिक हलचलो मे हम दोनो की महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी।

यह बात कदाचित् बहुत कम लोग जानते हैं कि क्षितीश जी गुरुकुल से स्नातक भी 'क्षेत्रपाल' नाम से ही हुए थे और बाद मे कार्यक्षेत्र मे अवतीर्ण होने पर वे 'क्षितीश कुमार' बने जो मेरे निकट अब 'क्षितीश भाई है। इस सन्दर्भ मे एक मनोरजक सस्मरण यह भी है कि क्षितीश भाई जब दिल्ली के 'दैनिक हिन्दुस्तान' मे कार्य करते थे तब उनके साथ गुरुकुल के एक और स्नातक सतीश जी भी कार्यरत थे। मैं जब कभी उनके कार्यालय मे 'क्षितीश भाई' से दूरभाष पर वार्तालाप करने के लिये उन्हे फोन पर बुलाता तो प्राय उनके स्थान पर लोग 'सतीश जी' को बुला देते थे। मेरे लिए जब यह समस्या गम्भीर रूप धारण कर गई तब सुविधा की दृष्टि से मैंने क्षितीश को 'छत्तीस और सतीश' को 'सैंतीस' बुलाना शुरू कर दिया था। यह सस्मरण आज भी हमारे बीच स्नेह की ऐसी गुदगुदी पैदा करने का माध्यम बना हुआ है कि लोग सुनकर एक बार तो अकचका जाते हैं। 'क्षितीश भाई' के पारिवारिक जनो को तो मैं अब भी कभी-कभी टेलीफोन पर इसी सम्बोधन से अभिहित करके विचित्र असमजस की स्थिति मे डाल देता हू।

गुरुकुलीय जीवन के वे मनोरजक दिन हमे आज भी निरन्तर प्रेरणा और प्रोत्साहन देते रहते है। उन दिनो हमारी इन दोनो सस्थाओ के बहुत से कार्यक्रम ऐसे होते थे जिनमे हम सभी छात्र सोत्साह सम्मिलित हुआ करते थे। क्षितीश भाई' भी इन कार्यक्रमो मे बढचढ कर भाग लेते थे। उन दिनो हम दोनो की इतनी प्रगाढता हो गई थी कि एक दूसरे के कार्यक्रमो को सफल बनाना जैसे हमारा पवित्र दायित्व ही बन गया था। उन दिनो के मेरे कार्यकलाप का यथार्थ चित्रण क्षितीश भाई ने मेरे जीवन की अर्धशती-पूर्ति पर समर्पित एक व्यक्ति—एक सस्था' नामक अभिनन्दन-ग्रन्थ मे जिन शब्दो मे किया है उनमे आप मेरे इस कथन की सार्थकता का सहज अनुमान लगा सकेगे। उन्होने लिखा था 'क्षेमचन्द्र सुमन' अपने सहयोगियो के सामने सबसे पहले कवि के रूप मे प्रकट हुए। अपने आपको 'फैशनेबल और विद्रोही प्रकृति का सिद्ध करने की प्रवृत्ति वाले विद्यार्थी ही उस वातावरण मे हिन्दी कविता करने का साहस करते थे, क्योकि सस्कृत मे श्लोक' या निबन्ध की रचना करना वहा नियम था और हिन्दी की रचना करना अपवाद। गुरुकुल की गोष्ठियो मे या सभाओ मे, जिनमे छात्रो के साथ उनका अध्यापक-वर्ग भी अवश्य सम्मिलित होता था, वे रचनाए सुनाई जाती।

ऐसी ही एक सभा का दृश्य मेरी आखो के सामने तैर रहा है। पग धरती सिर आसमान-घास का खुला मैदान। दरिया बिछी है। श्रोताओ के रूप मे अध्यापक और छात्र आगे पीछे यथास्थान बैठे है। सभापति के लिये भी किसी मेज और कुर्सी की आवश्यकता नही, एक ऊची चौकी रख दी गई है। इसी पर पालथी लगाकर बैठे वे वक्ताओ को क्रम-क्रम से बुलाते हैं। सहसा अपना नाम सुनकर बिना किसी नाज-नखरे के महाकवि क्षेमचन्द्र 'सुमन' उठते हैं। ऊबड खाबड शक्ल, ऊबड-खाबड वेश। श्रोताओ मे काना-फूसी, पट्ठे ने क्या नाम रखा है—सुमन! जैसे ससार मे सबसे सुन्दर यही हो। 'भाई इनका क्या दोष है? गुरुकुल मे दर्पण रखना-देखना तो मना है, है न? इस बेचारे ने कभी शीशे मे अपनी शक्ल देखी ही नही। हो सकता है यह अपने आपको सर्वसुन्दर ही समझता हो।' (यह मानना होगा कि गुरुकुल मे भी सौन्दर्य बोध की वृत्ति सर्वथा समाप्त नही हो जाती।) तभी कविता के शब्द कानो मे पडने शुरू होते है—न लहजा, न लय, न स्वर! शक्ल और वेश की तरह आवाज भी ऊबड-खाबड।"

मेरा ऐसा बेबाक चित्रण 'क्षितीश भाई जैसा कोई 'हमदम दोस्त ही कर सकता था। ऐसी एक नही, अनेक घटनाए मेरी और उनकी जीवन-यात्रा से गुंथी हुई है। गुरुकुलीय जीवन की समाप्ति के अनन्तर बहुत दिन तक कभी कोई ऐसा सुयोग नही मिल सका, जब हमने साथ-साथ इतने दिन बिताए हो। हा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सौजन्य से अगस्त सन् १९७३ मे एक ऐसा स्वर्णिम अवसर हमे अवश्य प्राप्त हुआ जब क्षितीश भाई और मैंने मारीशस मे आयोजित आर्य महासम्मेलन मे सम्मिलित होने के लिये अकबर नामक जलपोत से वहा की यात्रा की। उस यात्रा के प्रसग मे व्यतीत हुए १५ २० दिन हम दोनो के जीवन की अक्षय-निधि बन गए हैं। क्षितीश जी को वहा पर विशिष्ट वक्ता और पत्र प्रतिनिधि के रूप में आमन्त्रित किया गया था और मैंने उक्त महासम्मेलन के अन्तर्गत आयोजित 'हिन्दी कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। उस यात्रा मे हम दोनो ने साथ-साथ रहकर गुरुकुलीय जीवन की अनेक सुखद स्मृतियो का भरपूर आनन्द लिया।

मुझे यह भी भली-भाति स्मरण है कि गुरुकुलीय जीवन मे क्षितीश जी ने जहा कविताए किजल्क उपनाम से लिखी थी वहा 'चक्र-चरण' नाम से अनेक यात्रा-सस्मरण भी लिखे थे। यह 'क्षितीश कुमार नाम भी स्नातक बनने के उपरान्त इसी सन्दर्भ मे अपनाया गया था, जो आज उनकी प्रमुख पहचान बना हुआ

(शेष पृष्ठ ७ पर)

की धाक भी समस्त आर्य जगत् तथा हिन्दी जगत् पर जमायी है। आपकी रचनाये और ओजस्वी भाषण समस्त आर्य जगत् मे सत्प्रेरणा के स्रोत है, उनमे वैदिक सिद्धान्तो का विषयानुकूल परिपाक है, जो शिथिल शिराओ मे रक्त का सचार करते हे।

यह एक सुखद सयोग है कि आर्य-जगत् तथा हिन्दी-जगत् के ये दो जाज्वल्यमान नक्षत्र एक ही दिन १६ सितम्बर १९१६ को जन्मे और दोनो की राशि भी एक है। दोनो की शिक्षा हरिद्वार मे हुई। एक की गुरुकुल कागडी मे तो दूसरे की महाविद्यालय ज्वालापुर मे। दोनो का आरम्भिक जीवनयायावरी रहा। दोनो निर्भीक पत्रकार और विख्यात् साहित्यकार है। दोनो राजधानी दिल्ली मे रह रहे हैं, और सतत् साहित्य-सृजन के लिए समर्पित हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसे दूरदर्शी, प्रखर राष्ट्रवादी चिन्तक, आर्य साहित्यकार चिरायु प्राप्त करके चिरकाल तक समाज का मार्गदर्शन करते रहे।

—मूलचन्द गुप्त

"वे लोग बेवकूफ है जो अग्रेजी के चलते समाजवाद कायम करना चाहते हैं। वे भी बेवकूफ है जो अग्रेजी के चलते जनतन्त्र को लाने की सोचते हैं। असलियत मे अग्रेजी के चलते यहा ईमानदारी का आना असम्भव है। थोडे से लोग अग्रेजी के जादू से करोडो को धोखा देते हैं।"

—डा० राममनोहर लोहिया

आचार्य क्षेमचन्द 'सुमन'

(पृष्ठ ४ का शेष)

मे जो भूमिका आर्यसमाज और उसके नेताओ ने समय-समय पर प्रस्तुत की है, उसका ज्वलन्त इतिहास ही यहा की साहित्यिक चेतना का मूल आधार है। उसके नेताओ न अपनी भावनाओ के प्रकटीकरण का माध्यम हिन्दी को बनाकर साहित्य-लेखन की जो नीव डाली थी, वास्तव मे उसी पर यहा की साहित्यिक तथा सर्जनात्मक चेतना का भव्य प्रासाद खडा है।

इस प्रकार हम देखते है कि सुमन जी ने अपने भाषणो के द्वारा राष्ट्रीय एकता, सौहार्द और विश्वबन्धुत्व तथा राष्ट्रभाषा की प्राय उन सभी मान्यताओ का प्रचार-प्रसार किया है जिनमे महर्षि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित सिद्धान्तो की पावन सलिला प्रवाहित दीख पडती है।

सन् १९३७ ई० मे सुमन जी के गुरुकुलीय जीवन के समाप्त होने पर शीतल प्रसाद 'विद्यार्थी' ने शान्ति प्रेस, सहारनपुर से 'आर्य' नामक एक सामाजिक क्रान्तिकारी सचित्र साप्ताहिक पत्र निकालने का विचार सुमन जी के सामने प्रस्तुत किया। सुमनजी ने उनके अनुरोध का सहर्ष स्वागत करते हुए एक वर्ष तक उसका सफल सम्पादन किया परन्तु आर्थिक विषमता के कारण वह पत्र बन्द हो गया। सुमन जी के लेखन का सजग और प्रेरक रूप उस समय हिन्दी पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुआ जब हैदराबाद आर्यसत्याग्रह (१९३८-३९) जोरो पर था। उन दिनो सुमन जी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख पत्र 'आर्य मित्र' (साप्ताहिक) आगरा के यशस्वी सम्पादक थे। आपकी कुशाग्र लेखनी ने तब अनेकश प्रेरणा-दायक और ओजस्वी लेख लिखकर हैदराबाद मे चल रहे आर्यसम ज के विशालकाय सत्याग्रह की विजयी गाथा को देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से जन-मानस तक पहुचाया था और जन जन को देश की सस्कृति की रक्षा के लिए खुल कर दान देन और अपने को मातृभूमि पर निछावर कर देने की भरसक प्रेरणा भी प्रदान की थी। 'आर्य मित्र' आगरा के अक अप्रैल, १९३९ मे प्रकाशित 'सात्त्विकदान' नामक लेख मे इसी प्रकार की प्रेरणा से ओत-प्रोत उनकी कलम का स्वर इस प्रकार है—" दानवीरो! खोलिए अपनी थैलियो के मुँह, माताओ और बहिनो! दीजिये अपनी दयालुता का परिचय। उस धर्म रक्षा के प्रवृत्त आर्य सत्याग्रह के लिए हम अपनी झोली पसार कर आपसे भीख माग रहे हैं।" इतना ही नही आपने जनता-जनार्दन को बलिदान के लिए प्रेरित करते हुए 'आर्य मित्र' आगरा के अक मई, १९३९ मे अपने 'बलिदान की पुकार' नामक लेख द्वारा जनता-जनार्दन मे जो बलिदानी भावना का शख फूका था, उससे आपकी निर्भीकता और राष्ट्रीयता एव आर्यसमाज के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना का अनुमान लगाया जा सकता है। उनके उपर्युक्त लेख का एक अश इस प्रकार है—"आर्य सत्याग्रह को सफल बनाने एव ससार मे अपना अस्तित्व स्थापित करने के लिए प्रत्येक युवक के हृदय-मन्दिर मे बलिदान की प्रज्वलित ज्योति जगानी होगी, जिससे वह वीर हकीकत व बन्दा-वैरागी की भाति अपने जीवन की आहुति दे निजाम सरकार की पक्षपातपूर्ण शासन प्रणाली के विरुद्ध सचालित अहिंसात्मक धार्मिक सत्याग्रह सग्राम रूपी यज्ञ को पूर्णत सफल बनाए। उदयोन्मुख राष्ट्र मे भी शहीद जन्म धारण किया करते है और शहीदो का जन्म धारण करना ही किसी राष्ट्र की उन्नति का शुभ चिह्न है। ऐसे ही वीर देश और धर्म की बलिवेदी पर सहर्ष बलिदान हो जाते है। भारत म आर्य सत्याग्रह की वर्तमान प्रगति वीर शहीदो के बलिदान का ज्वलन्त उदाहरण है। इन शहीदो का बलिदान विश्व के इतिहास मे सदैव अमर रहेगा।" इसी प्रकार के उद्गार आपने कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले 'जागृति' के जून, १९३९ अक मे प्रकाशित अपने लेख 'आर्य सत्याग्रह और युवक' मे इस प्रकार व्यक्त किये थे—"स्वाधीनता देवी को जिस मन्दिर मे प्रतिष्ठित कर देशवासी उसकी अर्चना करत है, उसकी नीव युवको के बलिदान से ही भरी जाती है। युवको की युवक वृत्ति का उनसे यह अधिकार पूर्ण तकाजा है कि वे बिना किसी सकोच एव तरफ-दारी के अपने को धर्म की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दे।" इसी प्रकार का आवाहन आपने इसी पत्र के अन्य अक मे प्रकाशित 'निजाम की जेले' नामक लेख मे किया था—"आर्यसमाज के दिल मे एक कसक है, वेदना है और है मृत के भीषण अत्याचारो की मार्मिक स्मृति। इसके लालो की गर्दनो पर छुरी और तलवारें रखने वाले कोई और न थे। लेखराम का एक-एक शोणित बिन्दु आज हैदराबाद की भूमि को रग रहा है। प्रात स्मरणीय अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान म सीचे हुए पेड गुरुकुल कागडी एव स्वामी दर्शनानन्द जी के कलरो से बने हुए महाविद्यालय ज्वालापुर और गुरुकुल वृन्दावन के सैकडो ब्रह्मचारी निजामशाही की यन्त्रणाओ मे न जाने कहा जल रहे हैं।'

सुमन जी ने एक ओर जहा युवको को देश पर निछावर होने के लिए प्रेरित किया वहा दूसरी ओर उन्हे निजाम द्वारा किये गये अत्याचारो और नृशस हत्याओ से भी निर्भीकता से अवगत कराते रहना अपना धर्म समझा। २ अगस्त, १९३९ ई० को आगरा से प्रकाशित 'आगरा पच मे आपने अपने 'निजाम की जेले' नामक लेख मे निजाम की नृशस करतूतो का काला चिट्ठा इस प्रकार व्यक्त किया था—"जेलो के अधिकारी सत्याग्रही आर्यवीरो के साथ निर्दयता एव बर्बरता पूर्ण व्यवहार तथा अमानुषिक अत्याचार करते हैं। आर्यवीर परस्पर मिल-जुल नही सकते, उन्हे अलग-अलग तग कोठरियो मे बन्द रखा जाता है। उनको भाति-भाति के कष्ट देकर असह्य यन्त्रणाए दी जाती है जिनके परिणामस्वरूप लगभग १३ आर्यवीर, निजाम की नृशसता के कारण जेलो मे शहीद हो चुके हैं।"

आर्यसमाज के इस आन्दोलन को विफल करने की साजिश से देशद्रोहियो ने जब आर्यसमाज को एक साम्प्रदायिक सस्था कहकर इसको बदनाम करने का असफल प्रयास किया तो सुमन जी ने 'जागृति के १९३९ के अक मे अपने 'मानसिक पतन' नामक लेख मे इसका जो प्रत्युत्तर दिया वह इस प्रकार है—"आज जो आर्य समाज को साम्प्रदायिक कहकर बदनाम किया जा रहा है, उसके ही प्राण, १९वी शताब्दी के भाग्य विधाता भगवान् दयानन्द सरस्वती ने गगा के शीतल तट पर तपस्या करने वाले वीरव्रती ने आज से ८० वर्ष पूर्व भारत को 'स्वराज्य' शब्द से परिचित कराया था। उसके प्राण इस गुलाम जलवायु मे तडपते थे, इसलिए उसने भारतीय देशी नरेशो के उद्धार का बीडा उठाया था और काठियावाड की उस ज्योति के प्रकाश मे आपके भाग्य विधाता महात्मा गाधी ने स्वाधीनता पथ के दर्शन किये थे। उसने मात्र भाषा की न केवल शिक्षा ही दी थी अपितु आज इस साहित्योन्नति के युग मे भी चमकाने वाले 'सत्यार्थप्रकाश' को हिन्दी मे लिखकर उसकी अमूल्य सेवा की थी।'

इसके साथ ही सुमन जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती और उसके सिद्धान्तो से सम्बन्धित 'वन्दना के स्वर' नामक काव्य सग्रह का सम्पादन करके नूतन साहि-त्यिक अनुष्ठान किया था। 'हिन्दी साहित्य को आर्यसमाज की देन और स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज' उनकी दो पुस्तके भी आर्यसमाज के लिए पर्याप्त महत्व रखती हैं।

साराशत यह कहना असमीचीन नही होगा कि आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' निर्भीक वक्ता सजग लेखक और कुशल एव सशक्त सम्पादक के रूप मे विद्यार्थी जीवन से ही समय समय पर आर्यसमाज के लिए अपना अमूल्य एव अनन्य योगदान देकर जन-मानस, समाज और राष्ट्र को राष्ट्रीय एव सास्कृतिक सचेतना से प्रेरित करते रहे हैं। आर्यसमाज आपकी सेवाओ पर गर्व करता है। मैं आर्यसमाज की ओर से उनके ७५वे जन्म दिवस के पावन अवसर पर उनकी दीर्घायु की कामना करता हू।

– ३०/१०६, पचशील गली-७, विश्वासनगर,
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

"हिन्दी के बिना मुझे स्वराज्य की कल्पना ही अधूरी लगती है।"

—महात्मा गांधी

गांधी अंग्रेजी नहीं जानता

स्वतन्त्रता मिलने वाले दिन १५ अगस्त १९४७ को जब कुछ अ ग्रेज पत्रकार महात्मा गाधी से कलकत्ता मे मिले और स्वतन्त्रता दिवस पर सन्देश देने के लिए कहा तो गाधी जी ने तपाक से उत्तर दिया—

"दुनियां से कह दो, गांधी अंग्रेजी नहीं जानता।"

काश! हमार देश के नेता गाधी जी के इस कथन को अपना मार्ग दर्शक बनाते और अ ग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करत।



आचार्य क्षितीश वेदालंकार

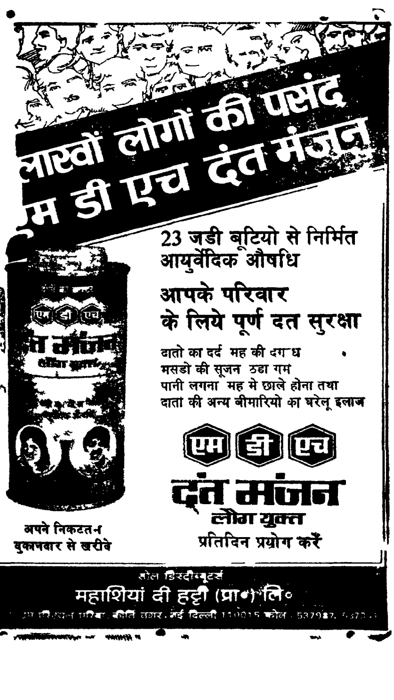
(पृष्ठ ५ का शेष)

है स्नातक होने के अनन्तर क्षितीश जी ने पहले उप ...

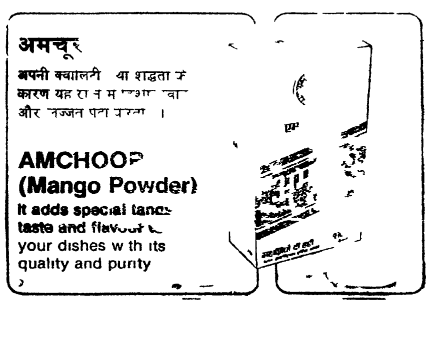
बाद म पत्रकारिता को पूर्णत अपनाकर अपनी लेखनी का वह करिश्मा दिखलाया कि हिन्दी के पाठक उनकी लेखन शैली के मुरीद हो गये। ये गम्भीर से गम्भीर और सहज सरल हल्के हास्य व्यंग्य के लेख लिखने के तन सिद्ध हस्त है कि उनकी रचना पूर्णत मुखरित और विकसित अभिप्रेत होती है। विभिन्न सामयिक राजनीतिक धार्मिक और सामाजिक घटनाओं के अनुशीलन परिशीलन म भी उनकी लेखनी अपनी पूर्ण तेजस्विता दिखलाती है। वे जितने सुन्दर लेखक है उतने ही प्रखर वक्ता भी है। उनके भाषणों म जनता एमी मन्त्र मुग्ध हो जाती है कि यह पता ही नही चलता कि उनके भाषण का इतना लम्बा समय पलक झपकने जैसे प्रतीत हो गया। वास्तव म वे लेखनी और वाणी दोनो के ऐसे सफल आराधक है कि यह निर्णय करना जरा कठिन हो जायेगा कि वे अच्छे लेखक है या अच्छे वक्ता। दोनों ही विशेषताओं का मणि काञ्चन संयोग उनके व्यक्तित्व की ऐसी विरल विशेषता है जो कदाचित किसी दूसरे व्यक्ति मे कठिनाई से ही दिखायी देगी।

मै तो साहित्य अकादमी की सेवा से निवृत्त होने के बाद अपनी दिवंगत हिन्दी सेवी नामक विशाल महत्वाकांक्षी योजना की आपूर्ति की दिशा म संलग्न हो गया और इस प्रसंग म मैंने समस्त देश की धरती को कई बार नापा अपने ग्रन्थ के दो खण्ड प्रकाशित करने के उपरान्त जब मै तीसरे खण्ड के लिये सामग्री एकत्रित करने की दृष्टि से यात्रा पर निकला हुआ था तभी १८ अगस्त १९८४ को अकस्मात जमशेदपुर (बिहार) म मेरी तबियत खराब हो गई और मैं बीच म ही अपने यात्रा क्रम को भंग करके वापिस दिल्ली लौट आया। तभी से मै निरन्तर अस्वस्थ चल रहा हू। मेरी इस दीर्घकालीन अस्वस्थता का समाचार क्षितीशभाई के लिए कितना त्रासदायक रहा होगा इसका अनुमान पाठक उनके एक पत्र की इन पंक्तियों से सहज ही लगा सकते है— हम लोग एक दूसरे का स्वास्थ्य समाचार जानकर प्रेरणा ग्रहण करते रहते है। इसलिए जब कभी भी तुम्हारे अस्वस्थ होने का समाचार सुनता हू तो अन्दर से कोई तार कुल बुलाने लगता है। इसलिये तुम्हारे स्वस्थ रहने से तुम्हारा ही नही मेरा भी स्वार्थ जुड़ा हुआ है। इसलिए मै तुम्हारे स्वस्थ रहने की प्रार्थना करता रहता हू।

(शेष पृष्ठ ८ पर)







आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77   Pos ı N D P S O o l3 14 9 1990   L c ed to p> t w hout prepayment Licence No U 139
दिल्ली पास न रजि० न० ड० (सा०) ७५८   पूव भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

भगवान के नाम बदल डाले

इन्दौर म पिछले दिना आयोजित अखिल भारतीय अ ग्रेजी हटाओ आन्दोलन के उद्घाटन समारोह क अवसर पर बोलते हुए भूत व राष्टपति ज्ञानी जैलसिह न दुखी हृदय स कहा कि अ ग्रेजो ने न केवल भारतीय सस्कृति को प्रभावित किया वरन हिन्दुओ क भगवानो क नाम भी बदल डाल ।

उन्होने कहा कि अ ग्रेजो पढ लिखे लोग भगवान राम को रामा कृष्ण को कृष्णा तथा बुद्ध को बुद्धा कहने लग ।

(शेष पष्ठ ७ का)

इस बीच क्षितीश भाई दैनिक हिन्दुस्तान की सेवा स निवृत्ति पाकर आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक मुख पत्र आय जगत् क सम्पादन मे सलग्न हो गय । आय जगत् के माध्यम मे उन्ह अपनी भावनाओ के प्रकटीकरण के लिए उचित मच मिला और उन्होने इसके लिए अपनी लेखनी का समुचित सदुपयोग किया । इस काल मे उनके सम्पादकीय लेखो की इतनी धूम रही कि देखते ही देखते अल्प समय म आय जगत ने लोकप्रियता के शिखर को छू लिया । पत्र की इस लोकप्रियता म सम्पादक क्षितीश जी की प्रखर लेखनी तथा सूझ बूझ का बहुत बडा हाथ है । समय समय पर उन्होने अपने पत्र के जहा अनेक उल्लेखनीय विशेषाक प्रकाशित किय वहा दश की समसामयिक राजनीति क ज्वलन्त प्रश्नो का समुचित समाधान भ अत्य त निर्भीकता से प्रस्तुत किया । इस प्रसग म उनकी तूफान के दौर से पजाब नामक पुस्तक विशेष महत्व की है । वे दश की राजनीतिक घटनाओ का विश्लेषण करने म इतने दक्ष है कि उनकी उपमा किसी और से नही की जा सकती । अपनी उपमा वे स्वय हैं रामरावणयो युद्ध रामरावणयोरिव ।

यह प्रसन्नता की बात है कि क्षितीश भाई आज भी उसी ताजगी और तत्परता स अपने मिशन मे पूर्णत बद्ध परिकर है । उनके लेखन भाषण और व्यवहार मे कहीं भी वृद्धत्व छू तक नही गया । यह भी एक सयोग ही कहा जायेगा कि मेरी और उनकी राशि एक होने के साथ साथ जन्म दिन की तारीख भी (१६ सितम्बर १९१६) एक ही है । मेरी यह हार्दिक आकाक्षा है कि क्षितीश भाई शतायुषी बनें पूर्ण तन्मयता और उत्साह से अपने मिशन की सम्पूर्ति मे सलग्न रहे । अन्य सभी मित्रो के साथ मैं भी प्रतिवर्ष सदाबहार व्यक्तित्व के धनी क्षितीश भाई का जन्म दिन इसी प्रकार मनाता रहू ।

सेवा मे—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार—(उत्तर प्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० क लिए श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा
सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित । रजि० न० डी० (सी०) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ४८ | रविवार सितम्बर १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

लाला दीवानचन्द ने देश, धर्म, और जाति में प्राण संचार करने वाली संस्था आर्यसमाज को पल्लवित करने में विशिष्ट योगदान दिया था

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

लाला दीवानचन्द आवल का १०६ वां जन्म दिवस समारोह आर्यसमाज दीवान हाल के भव्य सभागार मे रविवार २३ सितम्बर १९९० को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे मनाया गया। भारतीय संस्कृति हमे त्याग, तप और दान की प्रेरणा देती है। इसी भावना के अनुरूप स्वर्गीय लाला दीवानचन्द जी ने जीवन पर्यन्त अपनी सात्विक कमाई में से आर्यसमाजो, गुरुकुलो, शिक्षण संस्थाओ अनाथो और विधवाओ को भरपूर दान और सहयोग दिया। उनका नाम केवल आर्य जगत् मे नही बल्कि सभी स्थानो पर देश और विदेश मे भी श्रद्धा से लिया जाएगा। लाला दीवानचन्द जी ने आर्यसमाज को पल्लवित करने मे विशेष योगदान दिया था। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे व्यक्त किए। श्री स्वामी जी ने कहा कि आज फिर से आर्यसमाज को ऐसे ही सर्वस्व त्यागी दान दाताओ की आवश्यकता है। उन्होने बताया कि २३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली के प्रसिद्ध रामलीला मैदान मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। यह आर्य महासम्मेलन आर्यसमाज मे ऊर्जा का सचार करेगा तथा विश्व को नई सामाजिक दृष्टि प्रदान करेगा।

इस अवसर पर अनेक शिक्षण संस्थाओ एव समाजसेवी संस्थाओ से सम्बद्ध, आर्य एज्युकेशन ट्रस्ट एव आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस के प्रधान सुप्रसिद्ध दानवीर लाला इन्द्र नारायण जी ने लाला दीवानचन्द आवल का स्मरण करते हुए कहा कि आर्यसमाज दीवानहाल का उच्च शिखर देश को एक नई प्रेरणा देता है। धन की गति की श्रेष्ठता ऐशो आराम के साधन जुटाने मे नहीं है, बल्कि यह लाला दीवानचन्द जी की तरह ईमानदारी और परिश्रम से प्राप्त धन को देश, जाति और धर्म की रक्षा के लिए खर्च करने मे है। आर्यसमाज दीवान हाल, आर्यसमाज हनुमान रोड, दीवानचन्द आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सोदी रोड, सत्यप्रभा आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल, दीवानचन्द नर्सिंग होम, दीवानचन्द औषधालय, औचन्दी, दीवानचन्द ट्रस्ट, सत्यप्रभा ट्रस्ट, आदि संस्थाए स्वर्गीय लाला दीवानचन्द के स्मारक हैं।

श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि औचन्दी ग्राम में लाला दीवानचन्द गोकुलचन्द स्मारक चिकित्सालय की प्रबन्ध व्यवस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन है। हमे इस बात की प्रसन्नता है कि हम ग्रामीण जनता की सेवा के लिए इस चिकित्सालय को चला रहे हैं। यह तभी तो सभव हो सका, जब लाला दीवानचन्द ने अपने दान के द्वारा इस चिकित्सा की स्थापना की थी। सर्वप्रथम यह अस्पताल सैदपुर जिला जेहलम में स्थापित किया गया था। पाकिस्तान बनने पर उसे दिल्ली मे स्थानान्तरित किया गया।

प० महेन्द्र कुमार शास्त्री ने उन क्षणो को स्मरण किया, जब उन्हें लाला जी को देखने का सुअवसर मिला था। उन्होने बताया कि लाला जी ने दान नहम

(शेष पृष्ठ २ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
२३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से २३, २४, २५ व २६ दिसम्बर १९९० को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली मे मनाया जाएगा। इस महासम्मेलन में देश विदेश के लाखो आर्यों के भाग लेने की सम्भावना है। इस अवसर पर उच्च-कोटि के विद्वान् आमन्त्रित किए जा रहे हैं।

सभी आर्य बन्धुओ तथा समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वे इस सम्मेलन के लिए तन-मन-धन से सहयोग दें तथा अधिक से अधिक संख्या में इस महासम्मेलन का लाभ उठाने के लिए अभी से तैयारी कर लें।

डा० धर्मपाल
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

 सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

विराजतेऽयं गुरुदत्त विज्ञः

(श्रद्धांजलिः)

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

विज्ञान - वारानिधिपारदृष्टि
सत्यार्थभक्तो भुवि लब्धकीर्तिः।
यतेर्दयानन्दवरस्य शिष्यो
वेदार्थविज्ञो विदुषां वरेण्यः ।।१।।

१ श्री गुरुदत्त विद्यार्थी विज्ञान-वेत्ता, आर्षदृष्टि, सत्यार्थप्रकाश के भक्त, यशस्वी, महर्षि दयानन्द के शिष्य, वेदार्थवेत्ता और विद्वन्मूर्धन्य थे।

सोऽयं कृती ज्ञानमवाप्य शास्त्रे,
पाश्चात्य - पौरस्त्य - बुध-प्रणीतैः।
स्वकीयया सूक्ष्म-निवेश-दृष्टया
सर्वं रहस्यं सहसा समाप ।।२।।

२ उन्होने पाश्चात्य और पौरस्त्य विद्वानो के द्वारा बनाए गए शास्त्रो का गहन ज्ञान प्राप्त किया और अपनी सूक्ष्म दृष्टि से सभी शास्त्रो का रहस्य शीघ्र ही प्राप्त कर लिया।

पाश्चात्यविज्ञैर्यदिहात्र दोषाः
वेदादिशास्त्रेषु निरीक्षितास्ते।
सर्वेऽपि दोषा गुणिना वरेण
अपाकृता युक्ति प्रमाण-पूर्वम् ।।३।।

३ पाश्चात्य विद्वानो ने वेद आदि शास्त्रो पर जो आक्षेप लगाए थे और दोष दिखाए थे, उन सभी आक्षेपो का उन्होने युक्ति और प्रमाणपूर्वक निराकरण किया।

प्रणीय ग्रन्थान् विविधान् मनोज्ञान्
वेदेषु वैज्ञानिक तत्त्व-जातम्।
स्फुटीचकार प्रतिभा-विशेषाद्
वैज्ञानिक साधु समर्थितं तत् ।।४।।

४ उन्होने अनेक सुन्दर ग्रन्थो की रचना की और अपनी विशिष्ट प्रतिभा से वेदो के वैज्ञानिक तथ्यो को स्पष्ट किया है। इन तथ्यो का वैज्ञानिको ने भी समर्थन किया है।

व्याख्याय सत्ताविधिभेद वेदे
भिन्नादि - सच्चार्थं निरूपितमाह।
जलस्य वायोर्गुण धर्मभेदान्
विज्ञानदृष्ट्या विशदीचकार ।।५।।

५ उन्होने वैदिक सत्ता विज्ञान लिख और वेद के मन्त्रो के उद्धरण के साथ वायु और जल के गुण धर्मों की विस्तृत व्याख्या की है।

मैक्समूलर मोनियर च विज्ञ
वेदार्थबोधे नितराम् अशक्तम्।
अज्ञानमूलं च तदर्थमाह
युक्तिप्रमाणैश्च समार्थयत् तत् ।।६।।

६ उन्होने युक्ति और प्रमाण पूर्वक यह सिद्ध किया है कि श्री मैक्समूलर और मोनियर विलियम वेदो का ठीक ठीक अर्थ समझने मे असमर्थ रहे है और उन्होने जो वेदो का अर्थ किया है वह अशुद्ध है।

जीवात्मनोऽस्तित्व - गुण-प्रभेदान्
गृहस्थधर्मं च व्यवेचयत् सः।
नियोगपुष्टिं सतुरां चकार
अध्यात्मयोग विशदं विवव्रे ।।७।।

७ उन्होने जीवात्मा के अस्तित्व और उसके गुणो को प्रमाण पूर्वक सिद्ध किया है। उन्होने विभिन्न ग्रन्थो मे 'गृहस्थ धर्म', नियोग और आध्यात्मिक तत्वो का विशद विवेचन किया है।

किं जीवनं तस्य किमस्ति लक्ष्यं
कोऽस्त्यपवर्गः, किमु सृष्टिरेषा।
क ईश्वरः, केन पथा तदाप्तिः
सर्वं समासेन विवेचितं तत् ।।८।।

८ उन्होने अन्य ग्रन्थो मे संक्षेप मे इन विषयो का विवेचन किया है—जीवन क्या है? उसका क्या लक्ष्य है? मोक्ष क्या है? सृष्टि क्या है? ईश्वर का क्या स्वरूप है? और उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

दुर्दैवयोगात्तु अकाल एव
मृत्युं गतः कीर्तिशरीरशिष्टः।
विद्वद्वरेण्यो धृतिमान् यशस्वी
विराजतेऽयं गुरुदत्त विज्ञः ।।९।।

९ दुर्भाग्य से उनकी असामयिक मृत्यु हुई और वे अपने यशस्वी शरीर से शेष है। श्री गुरुदत्त विद्यार्थी विद्वानो मे अग्रगण्य वीर और यशस्वी थे।

श्रद्धाञ्जलिं सादरमेव तस्य
पादारविन्देषु समर्प्यतेऽयम्।
वाग्मी कृती ज्ञानविभास्वरोऽयं
शश्वद् भवे स्यात्तु यशो लभेन ।।१०।।

१० उनके चरण कमलो मे यह श्रद्धांजलि सादर समर्पित है। वे उच्चकोटि के वक्ता, पवित्रात्मा और ज्ञान के पुञ्ज थे। इस संसार मे उसका यश चिर-स्थायी रहेगा।

—कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार तथा निदेशक 'विश्वभारती' अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर (वाराणसी)

लाला दीवानचन्द आवल

(पृष्ठ १ का शेष)

कमाने या काम निकालने के लिए नही दिया था, उन्होने किसी के मांगने पर या किसी के डर से भी नही दिया था। उन्होने अपने यश और कीर्ति को स्वयं देखने और सुनने के लिए भी नही दिया था। उन्होने दान सात्त्विक भावना से और बहुजन हिताय तथा बहुजन सुखाय दिया था। डा० महेश विद्यालंकार ने कहा कि लाला दीवानचन्द आवल को युगो युगो तक स्मरण किया जाएगा। उनके प्रत्येक कार्य मे देश की रक्षा के लिए भामाशाही वृत्ति थी। वे दुश्मनो से देश को बचाना चाहते थे। वे भारत को स्वतन्त्र देखना चाहते थे परन्तु वे इससे भी ऊपर मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाना चाहते थे। आर्यसमाज वेद का उपदेश देता है। आर्यसमाज वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करता है और वेद मनुष्य को सच्चा मानव बनने की प्रेरणा देता है। धर्म मनुष्य को बांटता नही है। धर्म मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है। इस जीवन के कार्य मे लाला दीवानचन्द आवल ने अपना नीय योगदान दिया था। आज देश मे चारो ओर वर्ग संघर्ष का वातावरण बना हुआ है। हमारी कामना है कि परमात्मा उन्हे सद्बुद्धि प्रदान करे। पंजाब मे आतंकवादी और वदनार मे आन ज्यादा बहुत ज्यादा नही है पर वे दुष्ट है। उन्होने सभी को डराया हुआ है वे जो चाहे करा लेते हैं। अंग्रेजी परस्त भी तो ज्यादा नही है, वे भी जो चाहे करा लेते है। हमे आर्यसमाज के नियमो को पढ़ना होगा और उसी के अनुरूप आचरण करना होगा। तभी हम सही सामाजिक व्यवस्था को बना सकते हैं। वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था ही उन्नति का एकमात्र उपाय है।

आओ हम लाला दीवानचन्द आवल के कृतित्व से प्रेरणा ले।

झंडा बदला, शिक्षा क्यों नहीं बदली

पन्द्रह अगस्त १९८० के दिन विनोबा जी ने जो भाषण दिया, उसमे कहा था जिस तरह आजाद भारत मे एक क्षण के लिए भी अंग्रेजो का झंडा बर्दाश्त नही किया जा सकता है। आजादी आयी तो झंडा बदला। फिर शिक्षा क्यो नहीं बदली? झंडे की ही तरह अंग्रेजी सल्तनत की शिक्षा को एक क्षण के लिए भी बर्दाश्त नहीं करना चाहिए

—विनोबा

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

जातीय आधार पर आरक्षण राष्ट्रीय एकता के लिए घातक है



भारत वर्ष मे आर्य समाज तथा अन्य समाज सुधारवादी आन्दोलनो का यह लाभ हुआ था कि कागज पर किसी की जाति नही लिखी जाती थी। स्कूल मे दाखिले के फार्म मे जाति का नाम नहीं लिखा जाता था। जनगणना फार्मो मे भी जाति का कालम नहीं होता था। हम किसी से उसकी जाति नही पूछते थे। रेल-यात्रा में लोग साथ साथ चलते थे, साथ खाते थे। किसी का ध्यान इस बात की ओर नहीं जाता था कि पानी पिलाने वाला किस जाति का है और खाने-पीने की सामग्री बेचने वाला किस जाति का है।

इसके अतिरिक्त रोटी-बेटी का रिश्ता भी प्रारम्भ हो गया था। अन्तर्जातीय विवाह, अन्तर्प्रान्तीय विवाह, अन्तर्राष्ट्रीय विवाह तो आज सामान्य बात हो गए हैं। जातीय जडता वाले हमारे समाज मे अन्तर्जातीय विवाह होना एक चमत्कारिक परिवर्तन है। समाज शास्त्रीय दृष्टि से भी इसका विशेष महत्व है।

हमें आश्चर्य इस बात का है कि समाज में जिस परिवर्तन को सभी चाहते थे, उसमें रोक लगा दी गयी है और यह रोक ~.जनतिक कारणों से लगाई गई है। राजनैतिक दलों के लोग अपने सिद्धातों के आधार पर नहीं बल्कि जातियों के घोडों पर चढ़कर कुर्सी प्राप्ति तक यात्रा कर रहे हैं। कुर्सी पाने पर उसे पक्का करने के लिए भी जाति अश्वमेध के घोडे को विचरण के लिए छोड रहे है। पाश्चात्य देशो ने आधुनिक टैक्नोलोजी के घोडे पर चढकर विशिष्टता प्राप्त की है, पर हम जिस राह को छोड़ चले थे, उसी पर पुन अग्रसर हो रहे है।

पूरे देश में हाहाकार मचा है। आत्मदाह कोई आसान बात नही होती। अपने आपको युवा छात्र मौत के मुह में धकेल रहे है। सारा का सारा तन्त्र विफल हो गया है। चौराहो पर लगी मूर्तिया तोडी जा रही है। राष्ट्रीय नेता वर्ग युद्ध के लिए आह्वान कर रहे है।

सरकारी पदों की भर्ती को लेकर स्वय महात्मा गाधी का भी यह मानना था कि जो लोग देश की सरकारी सेवाओ मे आने की इच्छा रखते है उनके लिए आवश्यक है कि पदो के लिए वाछित परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हो, क्योंकि दायित्व से भरे उच्च पदो पर ऐसे ही लो गसेवा करने के पात्र हो सकते हैं। ये विचार गांधी जी ने 'मेरे सपनो का भारत' मे प्रकट किए हैं। प० जवाहरलाल नेहरू ने भी जातीय आधार पर आरक्षण देने का विरोध किया था। २७ जून १९६१ को उन्होंने मुख्यमन्त्रियों को एक पत्र लिखा था। उन्होंने लिखा था—'लेकिन फिर भी मैं किसी भी प्रकार के आरक्षण विशेषकर नौकरियो में, के बिल्कुल पक्ष मे नही हू। मैं किसी भी दूसरे दर्जे या अक्षमता का सख्त विरोध करता हू। पिछड़े वर्गों का वास्तविक मार्ग उन्हें केवल अच्छी शिक्षा का अवसर दिलाना है। लेकिन यदि हम जातीय व साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण देते हैं तो हम मेधावी व योग्य छात्रो को पीछे छोड जाते हैं। मुझे यह जानकर हैरत होती है कि पदोन्नतियां भी जाति या सम्प्रदाय के आधार पर होती हैं। यह मात्र भूल नहीं, बल्कि गम्भीर खतरा है।

आश्चर्य है कि आज देश की सरकार क्यो समाज की गति को उलट देना चाहती है। आर्य समाज ने जाति विहीन समाज की अभिकल्पना की है। यहां पर वर्णाश्रम व्यवस्था की विचारणा है। मण्डल कमीशन की रिपोर्ट का ज्यों का त्यों क्रियान्वयन आर्य समाज तथा अन्य सुधारवादी आन्दोलनकारी सस्थाओ द्वारा किए गए कार्य को पीछे धकेलने का दुष्प्रयास है। — डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र—

आर्यसन्देश का हैदराबाद सत्याग्रह विशेषाक प्राप्त कर अतीव हर्ष हुआ।

"शोधपूर्ण सामग्री पूरित विशेषाक अभिराम,
सग्रहणीय, सुसम्पादित प्रेरक है और ललाम।"

—डा० महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

डा० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति : वैदिक व्याख्यान

आर्य समाज हनुमान रोड मे स्व० डा० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति की ओर से वैदिक सगोष्ठी का सफल आयोजन हुआ।

सगोष्ठी मे मुख्य अतिथि भारत सरकार मे सस्कृत के विशेषाधिकारी, दरभगा व सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालयो के पूर्व कुलपति डा० रामशरण शर्मा थे। उन्होंने अपने सारगर्भित भाषण मे आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी वैदिक साहित्य की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि भारतीय साहित्य मे कही ऊच नीच की भावना नही है। रामायण और महाभारत की अनेक छोटी कही जाने वाली जातियो से पात्रो का नाम लेकर उन्होने बताया कि उनका सम्मान किसी भी अन्य पात्र मे कम नही था। भारतीय प्रजा ज्ञान के विविध क्षेत्रो मे अपनी चरम सीमा पर थी।

डा० शर्मा ने कहा कि आज देश भर के विश्वविद्यालयो मे सस्कृत के पाठ्यक्रमो मे एकरूपता होनी चाहिए तथा उसमे वेद को अनिवार्य विषय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

इसी सगोष्ठी के मुख्य वक्ता पजाब विश्वविद्यालय की महर्षि दयानन्द पीठ के आचार्य एव अध्यक्ष आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय थे। आपने वैदिक ज्ञान के विस्तार मे आर्यसमाज के योगदान विषय पर अपना शोधपूर्ण लेख पढा। महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायियो ने वेद व वैदिक साहित्य के पठन-पाठन मे नयी वैज्ञानिक दृष्टि देकर लेखन के क्षेत्र मे अभूतपूर्व कार्य किया। आज भी अनेक विद्वान व आर्य सस्थाए वैदिक साहित्य के पठन-पाठन मे लगी हुई हैं।

सगोष्ठी की अध्यक्षता गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक के वेदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री मनोहर विद्यालकार ने की। उन्होने कहा कि जहा आर्य समाज का वैदिक ज्ञान के क्षेत्र मे शोधपूर्ण कार्य है वहां रेशम मे लपेटकर रखे वेदों को जन-सामान्य के हाथो मे पहुचाने मे भी आर्य समाज की भूमिका उल्लेखनीय है। उन्होने डाक्टर के लिए पण्डित प्रवर शब्द का प्रयोग करने की प्रेरणा भी दी।

सगोष्ठी का प्रारम्भ करते हुए डा० प्रशान्त वेदालकार ने बताया कि किस प्रकार अपने पिता स्वतन्त्रता सेनानी व गुरुकुल कांगडी के सुयोग्य अध्यापक स्व० प० वासुदेव जी विद्यालकार की प्रेरणा से डा० प्रह्लाद तथा उसका सारा परिवार वैदिक ज्ञान के सवर्द्धन मे लगा हुआ है। डा० प्रह्लाद की ३२ वर्षों की अल्पायु में आकस्मिक मृत्यु के उपरान्त वैदिक सगोष्ठी के रूप मे उनका स्मृति पर्व मनाकर हम उसको यह मानकर श्रद्धाजलि देते हैं, मानो उन्ही के सुनिश्चित कार्य को ही हम आगे बढा रहे है।

सगोष्ठी के सयोजक दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के आचार्य तथा अध्यक्ष तथा डा० प्रह्लादकुमार स्मारक समिति के महामन्त्री डा० कृष्णलाल ने स्व० डा० प्रह्लाद के वैदुष्य व उनके ग्रन्थो का परिचय दिया। साथ ही समिति के प्रेरक कार्यक्रमो—प्रतिवर्ष वैदिक व्याख्यान, उन व्याख्यानो का प्रकाशन, दिल्ली विश्वविद्यालय के वेद विकल्प, एम फिल पी-एच० डी० के छात्रो को दी जाने वाली छात्रवृत्ति आदि का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि अभी डा० प्रह्लाद की अप्रकाशित सामग्री का प्रकाशन भी होना है। उन्होंने अब तक छात्रवृत्ति प्रदाता दानियों का परिचय देकर उपस्थित सज्जनो से इस कार्य मे मुक्त हस्त से दान देने की प्रेरणा दी।

सगोष्ठी मे प्रो वेदव्रत, डा देवेन्द्र कुमार, डा० केवलकृष्ण मित्तल, श्रीकृष्ण सेमवाल, डा० शिवकुमार शास्त्री तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक प्राध्यापक प्राध्यापिकाए एव शोध छात्र उपस्थित थे।

अन्त में आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने कहा कि आर्य समाज में वैदिक कार्य को बढ़ाने की दृष्टि से इस प्रकार की वैदिक सगोष्ठियो का विशेष महत्व है। उन्होने दिल्ली विश्वविद्यालय मे दयानन्द पीठ स्थापित करने की प्रेरणा दी।

वार्षिकोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिनांक ४ नवम्बर' ९० रविवार को प्रात ११ बजे सभा के मुख्य कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ गोहाना मार्ग रोहतक में होना निश्चित हुआ है।

— वेदव्रत शास्त्री
(सभा-मन्त्री)

आर्य वीर दल एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का

सातवां आर्य युवा महासम्मेलन

दिल्ली स्थित स्कूलों के छात्र-छात्राओं के लिए खेलकूद, चित्रकला, संगीत, वाद-विवाद, भाषण, निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओं का स्वर्णिम अवसर

प्रतियोगिताओं मे भाग लेकर भारी पुरस्कार प्राप्त करें

पुरस्कार वितरण समारोह

(शनिवार, दिनाक १० नवम्बर, १९९० प्रात ९-०० बजे तालकटोरा स्टेडियम)

चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिता

दिनाक ६ अक्टूबर, १९९०, दिन शनिवार
समय प्रात ११ बजे
स्थान रतनचन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल, वाई-ब्लाक सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३

चित्रकला

वर्ग

कक्षा १ से ५	सूर्योदय
कक्षा ६ से ८	ऋषि का आश्रम
कक्षा ९ से १२	महापुरुष का चित्र

निबन्ध

कक्षा १ से ५	हिन्दी भाषा का महत्व
कक्षा ६ से ८	वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था
कक्षा ९ से १२	सघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ का माध्यम एव भारतीय भाषाए

नियम व पुरस्कार

१ चित्रकला तथा निबन्ध का समय एक-एक घण्टा रहेगा।
२. प्रत्येक प्रतियोगिता मे ३ तथा कुल १८ पुरस्कार दिये जायेगे।
३ प्रतियोगी पेन, पेंसिल, रग अपने साथ लायेंगे।
४ छात्र छात्राओ की सख्या का कोई बन्धन नही।

सयोजिका श्रीमती अनीता कपिला प्रिंसिपल दूरभाष ६७७०६३

वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनाक १३ अक्टूबर, १९९०, दिन शनिवार
समय प्रात ११-०० बजे
स्थान बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल बिरला लाईन्स, कमला नगर, दिल्ली-११०००७

वर्ग	प्रतियोगिता विषय
कक्षा १ से ५	आर्य समाज का उद्देश्य ससार का उपकार करना है।
कक्षा ६ से ८	यज्ञ पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त करने में सहायक हैं।
कक्षा ९ से १२	आरक्षण देश की उन्नति मे बाधक है।

नियम एवं पुरस्कार :

(१) एक विद्यालय से अधिकतम दो छात्र/छात्राए (एक पक्ष तथा एक विपक्ष) मे भाग ले सकते है।
(२) एक छात्र/छात्रा को तीन मिनट का समय दिया जाएगा।
(३) प्रत्येक वर्ग मे ३ तथा कुल ९ पुरस्कार दिये जायगे।

सयोजिका श्रीमती आदश कोहली प्रिंसिपल दूरभाष २९१०२१९

खेल-कूद प्रतियोगिता

दिनाक २० अक्टूबर, १९९०, दिन शनिवार
समय प्रात १०-०० बजे
स्थान सहदव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली-११००२६

छात्र-छात्रा दोनों के लिए अलग-अलग

वर्ग	प्रतियोगिता
१ से १० वर्ष तक	१०० मीटर दौड
१० से १४ वर्ष तक	८०० मीटर दौड, ऊची कूद, लम्बी कूद
१४ से १७ वर्ष तक	४०० मीटर दौड १५०० मीटर दौड तथा ऊची कूद लम्बी कूद भाला फेंकना, गोला फेकना

नियम व पुरस्कार

(१) एक विद्यालय से प्रत्यक प्रतियोगिता मे केवल दो छात्र/छात्राए भाग ले सकते है।
(२) छात्र-छात्राओ को अपने विद्यालय का आयु प्रमाण-पत्र साथ लाना होगा।
(३) प्रत्येक प्रतियोगिता मे ३ तथा कुल ३० पुरस्कार दिये जायेगे।
(४) प्रतियोगी छात्र-छात्राओ की सूची १५ अक्टूबर ९० तक सभा कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे पहुचनी अनिवार्य है।

सयोजिका श्रीमती बृजबाला मल्ला, प्रिंसिपल दूरभाष ५३२१९१

खेल-कूद प्रतियोगिताएँ
(आर्य वीर दल)

दिनाक २० अक्टूबर १९९०, दिन शनिवार
समय १०-०० बजे
स्थान सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

प्रतियोगिताएँ

४०० मीटर दौड	लम्बी कूद
८०० मीटर दौड	ऊची कूद
१५०० मीटर दौड	भाला फैंकना
३ किलोमीटर दौड	गोला फैंकना

नियम व पुरस्कार

- केवल १८ से २५ वर्ष आयु के आर्य वीर भाग ले सकेंगे।
- एक आर्य वीर दल शाखा से केवल दो युवक भाग ले सकेंगे।
- प्रत्येक प्रतियोगिता में ३ तथा कुल २४ पुरस्कार दिये जायेगे।

सयोजक शिक्षक आर्य वीर दल, दूरभाष ३१०१५०

वालीबाल प्रतियोगिता

(केवल बालिकाओ के लिए)

दिनाक २७ अक्टूबर १९९० दिन शनिवार
समय प्रात ११ बजे
स्थान रत्नदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल कृष्णानगर, दिल्ली-५१

नियम एवं पुरस्कार

विजेता टीम क विद्यालय को शील्ड दी जाएगी। प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाली टीमो की सभी सदस्याओ को पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र दिये जायगे।

सयोजिका श्रीमती सुशीला गोयल, प्रिंसिपल, दूरभाष २२१३४८३

समूह-गान प्रतियोगिता

दिनाक ३ नवम्बर, १९९० दिन शनिवार
समय प्रात ११ बजे
स्थान सत्यभामा आर्य कन्या सीनियर सै० स्कूल करोल बाग, नई दिल्ली।

वर्ग

कक्षा १ से ५	—प्रथम वर्ग
कक्षा ६ से ८	—द्वितीय वर्ग
कक्षा ९ से १२	—तृतीय वर्ग

नियम एवं पुरस्कार

- एक विद्यालय प्रत्येक वर्ग मे केवल एक बार भाग ले सकता है।
- समूह गान मे अधिकतम ११ छात्र-छात्राए भाग ले मकन है।
- भक्तिरस अथवा वीररस का कोई वैदिक गीत समूह गान के रूप मे प्रस्तुत करना है।
- प्रत्येक वर्ग मे ३ तथा कुल ९ पुरस्कार दिए जायगे।

सयोजिका श्रीमती सावित्री गावा, प्रिंसिपल, दूरभाष ५७२१५४३

भाषण प्रतियोगिता

दिनाक ५ नवम्बर १९९०, दिन सोमवार

समय प्रात ११ बजे

स्थान रघुमल आर्य कन्या सीनियर सै० स्कूल, राजा बाजार, निकट—मद्रास होटल, नई दिल्ली-११०००१

वर्ग	प्रतियोगिता
कक्षा १ से ५	—माता का महत्व
कक्षा ६ से ८	—राष्ट्ररक्षा
कक्षा ९ से १२	—वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था

नियम एवं पुरस्कार

- एक विद्यालय से प्रत्येक प्रतियोगिता मे केवल दो छात्र-छात्राए भाग ले सकतीं हैं।
- प्रतियोगी को केवल ३ मिनट का समय दिया जाएगा।
- प्रत्येक वर्ग मे ३ तथा कुल ९ पुरस्कार दिये जायेगे।

सयोजिका श्रीमती चन्द्रा किनरा प्रिंसिपल, दूरभाष ३४३०३७

पुरस्कार वितरण समारोह

आर्य युवा महासम्मेलन

शनिवार, १० नवम्बर, १९९० प्रात ९ बजे

स्थान ताल कटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

- वेद गायन
- पी० टी०, योग, शस्त्रादि प्रदर्शन
- पुरस्कार वितरण

अध्यक्ष **स्वामी आनन्दबोध सरस्वती**

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

मुख्य अतिथि—

स्वागताध्यक्ष **श्री महाशय धर्मपाल**

प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा

उद्बोधन—

१ श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती   ४ श्री बाल दिवाकर हस

२ प्रो० शेरसिंह   ५ प० क्षितीश वेदालकार

३ डा० वाचस्पति उपाध्याय

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

निवेदक

डा० धर्मपाल	**सूर्यदेव**	**प्रियतमदास रसवन्त**
प्रधान	महामन्त्री	अधिष्ठाता आर्य वीर दल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

विशेष :

—दिल्ली स्थित विद्यालयो के प्रिंसिपल महोदया से निवेदन है कि वे अपने विद्यालयो की टीमो तथा प्रतियोगियो की सूची आवश्यक जानकारी के साथ सम्बन्धित सयोजक के पास शीघ्र भिजवाए।

—प्रत्येक प्रतियोगिता मे सर्व प्रथम आने वाले छात्र-छात्रा को शील्ड प्रदान की जाएगी।

—प्रत्येक प्रतियोगिता मे विजयी प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय को पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र दिए जायेंगे।

—सभी पुरस्कार विशाल समारोह "आर्य युवा महासम्मेलन" मे दिनाक १० नवम्बर १९९० को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली मे समारोह पूर्वक दिए जायेंगे।

—सभी प्रतियोगिताओ मे निर्णायको का निर्णय सर्व मान्य होगा।

आरक्षण से देश गृह युद्ध की ओर

सत्ता और वोटो की राजनीति के मायाजाल मे आज सारा देश उलझकर रह गया है। पूर्व उपप्रधान मन्त्री श्री देवीलाल की बर्खास्तगी और ९ अगस्त को प्रस्तावित बोट क्लब की किसान रैली के जवाब मे प्रधान मन्त्री श्री विश्व नाथ प्रताप सिंह ने अपनी छवि को निखारने और स्वय को दलित वर्ग का मसीहा सिद्ध करने हेतु मण्डल आयोग रिपोर्ट को लागू करने मे पूर्व सरकार का समर्थन करने वाली दो बडी राजनीतिक पार्टिया वामपथी और भाजपा के नेताओ से भी परामर्श की आवश्यकता नही समझी। यहा तक कि केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के सदस्यो मे भी रिपोट के क्रियान्वयन के लिए राय नही ली गई। वास्तविकता तो यह है कि सत्ता के महा सफर मे अपनी व्यक्तिगत विजय और आगामी चुनावो की राजनीति के लिए राजा साहब ने इस ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया है।

आरक्षण बढाने से जातिवाद को बढावा मिलेगा और प्रतिभाओ का ह्रास होगा। रिपोट मे ३७०० से अधिक जातिया बताई गई है। उन जातिया का चयन किस आधार पर किया गया, यह रिपोट मे नही है। श्री मण्डल आयोग ने केवल व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर इतना अधिक सख्या मे जातियो का उल्लेख कैसे कर लिया, यह आश्चर्यजनक है। आरक्षण को भले ही कोई राष्ट्र के लिए अत्यधिक सामाजिक सिद्ध करे, लेकिन जिस ढग से इसे लागू किया गया है, उससे राजा साहब अपने को ईमानदार दूरदर्शी नेता सिद्ध नही कर सकते, इसे राजनैतिक बदनीयती करार दिया जाएगा। उनके मन्त्रिमण्डल के तेजतर्रार श्रम कल्याण मन्त्री कहते हे कि लोक सभा मे बैठे ५४० सदस्य देश नही है जो इस पर फैसला सुना सके कि पिछडी जातियो के लिए आरक्षण होना चाहिए या नही यदि ससद देश नही तो उनके गणित के हिसाब से मानना होगा कि इस देश की २०-२५ करोड जनता भी देश नही है। श्री रामविलास पासवान ५४० सदस्या को तो देश नही मानते पर अपने १४० सदस्यो के बल पर सारे देश मे जाति सघर्ष पैदा कर सकने वाला निर्णय ले सकते है। और यह भी चाहते हे कि शेष सासद उनके समथन मे हाथ उठा दे। क्या यह तानाशाही सोच नही ?

क्या हम जनता दल की अल्पमत सरकार को यह अधिकार दे सकते है कि देश के बीच गृह युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न कर दे। आरक्षण का आधार यदि आर्थिक हो तो इसका विरोध करने की तुक ही नही। आरक्षण देश की एकता व अखडता मे दरार डालने की साजिस न बन जाए, क्योकि आरक्षण समथको को भी सडको पर उतर आने के लिए भडकाया जा रहा है आज समूचा राष्ट्र सकट के दौर से गुजर रहा है, अलगावाद, आतकवाद, महगाई व सीमाओ पर शत्रु की गिद्ध दृष्टि ऐसी विषम स्थितियो मे मण्डल आयोग रिपोर्ट लागू करने की आखिर क्या जल्दबाजी थी? मण्डल आयोग की सिफारिशो मे किसीको मतभेद हो सकता है। मगर आरक्षण जरूरतमन्दाको मिले चाहे वे किसी भी जाति या धमके हो इस मुद्दे से कोई असहमत नही हो सकता। धम व सम्प्रदाय के बजाय अब उपद्रव कही जाति के आधार पर न होने लगे—यही अन्देशा है। ये उपद्रव देश को गृह युद्ध की ओर धकेल देगे। ऐसी अवस्था मे यदि पाकिस्तान ने हमला कर दिया तो देश कभी दयनीय स्थिति मे फस जाएगा।

सविधान-निर्माताओ ने आरक्षण को आवश्यक नही वरन मजबूरी की सज्ञा दी परन्तु आज ४० वर्ष के पश्चात् मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू करने का निर्णय सरकार की कमजोरी को ही दर्शाता है। विडम्बना यह है कि सरकार अपनी मजबूरी को अपनी शक्ति मान बैठी है। वोटो की घिनौनी राजनीति का ही दुष्परिणाम है कि सभी आम चुनाव जाति सम्प्रदाय के आधार पर ही लडे जाते है। चुनाव में टिकट देते समय प्रत्याशी की योग्यता, समाज सेवा कम, उस जाति के वोटो की सख्या पर अधिक ध्यान दिया जाता है। यह वोट बेंक की दूषित राजनीति का ही परिणाम है कि राष्ट्र की स्वाधीनता के ४३ वर्षो के पश्चात भी सम्पूर्ण देश मे ऊच-नीच छूआछूत, साम्प्रदायिकता जैसी सामाजिक कुरीतिया विद्यमान है।

आरक्षण का आधार क्या हो, इस पर राष्ट्रीय बहस की आवश्यकता है। गत ४० वर्षो का सर्वेक्षण किया जाए और इस सुलगते प्रश्न का उत्तर दिया जाए क्या आरक्षण का लाभ उन लोगो तक पहुच सका जिन्हे वास्तव मे इसकी आवश्यकता थी या केवल कुछ अवसरवादी परिवारो तक ही इसका लाभ पहुचा है। २७ प्रतिशत आरक्षण १७४३ पिछडी जातिया मे ठीक ढग से बट पाएगा ? क्या ऊची जाति मे जन्म लेना अभिशाप हो जाएगा, भले ही आर्थिक दृष्टि से वे कितने ही गरीब हो ?

आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' सम्मानित

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन" को उनकी दीर्घकालीन साहित्य-सेवाओ के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान द्वारा इक्कीस हजार रुपये का सस्थान सम्मान' प्रदान किया गया है। "सुमन" जी ने एक ओर जहा काव्य, निबन्ध, जीवनी, समीक्षा इतिहास पत्रकारिता साहित्येतिहास, सस्मरण आदि अनेक विधाओ पर लगभग तीस मौलिक ग्रन्थो की रचना करके हिन्दी साहित्यकार के भण्डार को समृद्ध किया है वही दूसरी ओर अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थो और पत्र-पत्रिकाओ को सम्पादित करने का श्रेय भी उन्हे प्राप्त है। दस खण्डो मे प्रकाश्य 'दिवगत हिन्दी सेवी' नामक सन्दर्भ ग्रन्थ के प्रणयन द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य के सवर्द्धन तथा विकास का वास्तविक इतिहास प्रस्तुत करने का जो अभूतपूर्व अनुष्ठान 'सुमन' जी ने प्रारम्भ किया है, वह उनकी अक्षयकीर्ति का स्तम्भ है।

सम्पूर्ण हिन्दी जगत मे 'सुमन जी ही एक मात्र एसे मनीषी है जिन्हे देश के प्रत्येक जनपद और नगर के साहित्यकारो और पत्रकारो का आद्यन्त इतिहास कण्ठस्थ है। 'सुमन जी की इसी अप्रतिम प्रतिभा के कारण उन्हे हिन्दी भाषा और साहित्य का 'मोबाइल विश्वकोश" कहा जाता है।

'सुमन' जी हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा 'विशिष्ट साहित्यकार' के रूप में सम्मानित हो चुके हैं और भारत सरकार के सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय द्वारा 'भारतेन्दु पुरस्कार' भी उन्हे प्राप्त हो चुका है। इसके अतिरिक्त सस्कृति मन्त्रालय की ओर से आपको अमेरिटस फैलोशिप भी प्रदानकी जा चुकी है।

आरक्षण और जातिवाद

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आयोजित वेद सम्मेलन मे महिला सभा की बहिने मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू करने की घोषणा की कड़े शब्दो मे भर्त्सना करती हैं, प्रस्ताव मे जातिवाद आधार पर आरक्षण को प्रधान मन्त्री श्री वी० पी० सिंह द्वारा उठाया गया यह कदम क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थो की चर्म सीमा है। इससे देश में गृह युद्ध का सा माहौल बन गया है।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा की यह दृढ और उपयुक्त माग है कि आरक्षण जातिवाद पर आधारित न हो कर आर्थिक आधार पर होना चाहिए।

कृष्णा चड्ढा
सभा मन्त्रिणी

वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज मालवीय नगर मे निम्न अधिकारी चुने गए—

प्रधान	—	—	श्री धर्मवीर शास्त्री
महामन्त्री	—	—	डी० आर० जुनेजा
कोषाध्यक्ष	—	—	श्री चुनी लाल वैध

—आर्यसमाज चैनपुरा जोधपुर (राजस्थान) का चुनाव निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ।

प्रधान	—	—	श्री कान सिंह भाटी
मन्त्री	—	—	श्री मोहन लाल गहलोत
कोषाध्यक्ष	—	—	श्री सोहन सिंह भाटी

भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन एवं वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज चूनामण्डी पहाडगज नई दिल्ली ५५ मे भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन श्री प्रो० राम प्रसाद जी वेदालकार के करकमलो द्वारा हुआ। इससे पूर्व दो दिन तक दार्शनिक विषयो पर प्रो० रत्नसिंह के मार्मिक प्रवचन हुए। २ सितम्बर रविवार को यज्ञशाला मे विशाल यज्ञ के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। उसके बाद प्रो० राम प्रसाद जी, प्रो० रत्नसिंह जी, डा० छवि कृष्ण जी, प्रेमचन्द जी श्रीधर, डा०धर्म धर्मपाल जी,प०चन्द्रशेखर जी, स्वामी स्वरूपानन्द जी, स्वामी शान्तानन्द जी, श्री गुलाब सिंह 'राघव' के मार्मिक प्रवचन एव मधुर भजन हुए। डा० धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे वार्षिक चुनाव बड़े प्रेम से हुआ। आर्य-जनो की विशाल उपस्थित दर्शनीय थी। सभी दानी महानुभावो का स्वागत हुआ। निम्न अधिकारी चुने गए —

प्रधान—श्री प्रियतमदास रसवन्त।
मन्त्री—श्री शामदास सचदेव।
कोषाध्यक्ष—श्री अरुण कुमार मलिक।

आरक्षण की सुविधा

ईसाई पादरियो ने इस माग को लेकर आन्दोलन चला रखा है कि हरिजनो को मिलने वाली सुविधाए तथा आरक्षण उनको भी मिले जो ईसाई बन चुके हैं। यदि केन्द्रीय सरकार यह मान लेती है तो ईसाई पादरी बहुत बडी सख्या में हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन करने में सफल हो जायेंगे। दूसरी ओर अनुसूचित जाति के लोग हरिजनो के लिए निर्धारित इन सुविधाओ के ८० प्रतिशत भाग से वचित रह जायेंगे, क्योकि ईसाई समाज अत्यधिक सगठित होने के कारण इन सुविधाओ का अधिकाश भाग प्राप्त कर लेगा। अत हरिजन बन्धु बहुत घाटे मे रह जायेंगे।

यह पग सविधान की भावना के विरुद्ध होगा क्योकि हिन्दू जाति मे छूआ-छूत होने के कारण ही हरिजनो के आरक्षण आदि का प्रावधान किया गया था। ईसाई समाज मे छूआछूत की बीमारी नही है अत' अनुसूचित जातियो में ईसाई नही है।

भारत के ईसाई समाज का लगभग आधा भाग जन-जाति वर्ग का है तथा शेष आधा हरिजन वर्ग से ईसाई बना है। जन-जाति को तो पहले से ही आरक्षण की तथा अन्य सुविधाए प्राप्त हैं। यदि ईसाइयो के शेष आधे भाग को अनुसूचित जाति की सुविधाए मिल गई तो भारत के लगभग सम्पूर्ण ईसाई तो प्रथम श्रेणी के नागरिक तथा हिन्दू अपने ही देश मे द्वितीय श्रेणी के नागरिक बनकर रह जायेंगे।

—डा० कैलाश चन्द्र

श्री कृष्ण जन्मोत्सव

आर्य समाज मन्दिर, शकरपुर दिल्ली–११००९२ मे वेदप्रचार सप्ताह एव श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व दिनाक १२ ८-९० से १४-८-९० तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमे चतुर्वेद शतक यज्ञ तथा स्वामी स्वरूपानन्द जी, श्री ब्र० राज-सिंह आर्य श्री रत्न सिंह शाण्डिल्य के द्वारा वेद प्रचार एव श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला गया श्री चुन्नी लाल एव श्री इन्द्रदेव जी की मधुर वाणी मे भजन सुनने को मिले। श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार के लिए साहित्य वितरित किया गया। प्रधान श्री ओम प्रकाश कौशिकद्वारा धन्यवाद करने के पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी

आर्य केन्द्रीय सभा चण्डीगढ की ओर से ६ व ७-१० ९० को प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह पूर्वक मनाई जा रही है। आर्य परिवारो को चण्डीगढ ले जाने हेतु देहली से स्पेशल बसे चलाई जा रही है। यह बसें दोपहर एक बजे आर्य समाज, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से चलेंगी और १४-१०-९० रात्री देहली वापिस आयगी। यात्री चण्डीगढ के साथ-साथ देखेंगे चिन्तापूर्णी, ज्वालाजी, कागडा डिलहौजी, चम्बा और वैष्णो देवी। किराया बस ५७५/-रु० प्रति यात्री है। चण्डीगढ मे निवास और भोजन की व्यवस्था आर्य समाज मे होगी शेष रास्ते के व्यय यात्री स्वय करेंगे। चलने वाले भाई-बहिन ठा० यशपाल जी सह प्रबन्धक यात्रा से आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, फोन ३४३७१८ पर सम्पर्क करे।

राम चन्द्र आर्य प्रबन्धक, आर्य यात्रा
८६६ भीम नगर, गुडगावा फोन ०१२७२-२४०४७, २२१६२

सत्यधर्म का प्रचार

आर्य समाज मन्दिर (राधेश्याम भवन) बुराडी ग्राम के तत्वावधान में सत्यधर्म प्रचार, जन जागरण एव भजनो का सुमधुर विशाल कार्यक्रम १५ सितम्बर, १९९० से १४ अक्तूबर १९९० तक होगा समय नित्य रात्रि ८ बजे से १० बजे तक हुआ करेगा। प्रवचन ब्र० राजसिंह आर्य द्वारा होंगे। भजन प० चुन्नीलाल जी, प० सत्यदेव जी, श्री गुलाबसिंह राघव जी स्वामी शान्तानन्द जी एव स्वामी कर्मानन्द जी द्वारा होंगे। वेद प्रचार के कार्यक्रम एक मास तक विभिन्न स्थानों पर रखे गए हैं।

समापन समारोह कार्यक्रम

१४ अक्तूबर प्रातः ९ बजे तक यज्ञ, भजन यज्ञ उपदेश। १० बजे से एक बजे दोपहर तक राष्ट्र को आर्य समाज की आवश्यकता विषय पर व्याख्यान होंगे। अध्यक्षता . श्री आनन्दबोध सरस्वती प्रधान (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा होंगे)। वक्ता श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती, श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी श्री रामचन्द्र जी विकल, श्री एच० के०एल० भगत सांसद डा० धर्मपाल जी, प्रधान दिल्ली प्रतिनिधि सभा।

ब्र० राजसिंह आर्य (निवेदक)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य

१	नतिक शिक्षा (भाग प्रथम द्वितीय) प्रत्येक	१ ५०
३	नतिक शिक्षा (भाग नतीय)	२ ००
४	नतिक शिक्षा (भाग चतुथ स नवम) प्रयेक	३ ००
१०	नतिक शिक्षा (भाग दशम एकादश) प्रयेक	४ ००
१२	नतिक शिक्षा (भाग द्वादश)	५ ००
१३	धमवीर हकीकत राय वद्य गुरुदत्त	[illegible] ००
१४	फलश आफ द थ डा० म यप्रकाश वर्मा	२ ००
१५	सत्याथ प्रकाश स देश	२ ००
१६	एनाटामी आफ वेद न स्वामी विद्यान द सरस्वता	५ ००
१	आर्यों का आदि देश	२ ००
१८	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	२५ ००
१९	दी ओरीजन होम आफ आय म	००
२०	च वारो व वेदा	५ ००
१	द्वतसिद्धि	५ ००
२२	आयसमाज आज के स दभ म डा० धमपाल डा० गोयनका	२० ००
२३	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प० सच्चिदान द शास्त्री	५ ००
४	हसत चल हसाता चल स्वामी स्वरूपान द सरस्वती	६ ५०
२५	दयान द एण्ड दा वदाज (टकट)	५० रु० सैकडा
२	पूजा किसकी ? (टकट)	५० रु० सैकडा
२७	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रकट)	५० रु० सैकडा
२८	योगीराज श्रीकृष्ण का स देश (टकट)	५० रु० सैकडा
२९	आर्योद्देश्य रत्नमाला (सुगम व्याख्या) डा० रघुवीर	५० रु० सैकडा

नोट उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाल स डाक व्यय पथक नही लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान   दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

सार्वदेशिक—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Post in N D P S O on 27, 28-9-1990 Licenced to post without prepayment Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

वेदकथा

वैद्य कन्हैयालाल जी द्वारा आर्यसमाज बाग कड़ा मे चतुर्वेदशतक पारायण यज्ञ प्रात ७ से ८ ३० तक और वेदकथा साय ७ से ८-३० बजे तक के आयोजन २९ सितम्बर से ४ अक्तूबर १९९० तक किये जा रहे हैं। जिसकी पूर्णाहुति ४ अक्तूबर को होगी।

प० जैमनी शास्त्री जी प० प्रमप्रकाश शर्मा, सत्यदेव स्नातक एव अन्य विद्वानो के भी प्रबल अमृतमय विचार सुनने को मिलगे।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा का गठन

दक्षिण दिल्ली की प्रमुख आय समाजो के अधिकारियो ने एकजुट होकर गत २ सितम्बर ९० को आर्यसमाज ग्र टर कैलाश पाट २, मे उसके मन्त्री श्री रघुनन्दन जी गुप्त की अध्यक्षता मे एक विशेष बैठक का आयोजन कर सर्व सम्मति से "दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा' का गठन किया। आयोजको के अनुसार यह सभा वेद प्रचार के काय को प्रमुखता देगी। सभा का मुख्य उद्देश्य घर घर मे वद का प्रचार करना होगा। वेद मन्त्रो के आधार पर छोटी छोटी पुस्तिकाए प्रकाशित कर घर घर वितरित की जायगी। नव गठित सभा का सब सम्मति से निर्वाचन भी सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्य समाज जगपुरा विस्तार के उपप्रधान श्री कृष्णलाल जी सिक्का को प्रधान आर्यसमाज लाजपत नगर के प्रधान श्री पुरुषोत्तम लाल शास्त्री को महामन्त्री आर्य समाज डिफेन्स कालोनी की श्रीमती सरला पाल जी को उपप्रधान, श्री रतनलाल जो महदेव को उपप्रधान मन्त्री आर्य समाज ग्र टर कैलाश पाट २ के श्री रघुनन्दन गुप्त जी को उपप्रधान आयसमाज सरोजनी नगर के श्री रोशनलाल गुप्त जी को मन्त्री आय समाज श्रीनिवासपुरी श्री नरेन्द्र अवस्थी (पत्रकार) को प्रचार मन्त्री एव आयसमाज गोविन्दपुरी के श्री गगा शरण जी को कोषाध्यक्ष करतल ध्वनि से निर्वाचित घोषित किया गया।

न्यायालयों में स्वभाषा प्रयोग

आर्यसमाज के कानूनी समिति के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री जगन्नाथ शेट्टी द्वारा ससद भवन मे आयोजित हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी मे तथा हिन्दी के प्रोत्साहन की आवश्यकता पर भाषण देने पर हार्दिक स्वागत करते हुए उच्चतम न्यायालय तथा सभी उच्च न्यायालयों से माग की है कि हिन्दी तथा अ य १४ भारतीय भाषाओ के प्रोत्साहन के लिए प्रयत्न कर। श्री वधावन ने कहा कि न्यायालयो मे स्वभाषा मे मुकद्मे दाखिल करने की माग आर्यसमाज द्वारा की जा रही है। क्योकि बहस के लिए तो किसी प्रकार क कानून या सरकारी आदेश की आवश्यकता नहीं होती है अत न्यायाधीशो का स्वभाषा मे बहस को प्रोत्साहन देना चाहिए। उन्होने कहा कि हिन्दी को देश की सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित करने के साथ साथ अन्य भारतीय भाषाओ के विकास का भी समुचित प्रबन्ध किया जाये। स्वभाषाओ का विकास व प्रचलन पूर्ण रूप से न होने के कारण ही हमारे देश की प्रतिभा शक्ति दब कर रह गई है।

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० डी० न० (सी०)७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष ३ अंक ४६ | रविवार ७ अक्तूबर १९९० | विक्रमी सम्वत २०४७ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

भारतमें पूर्ण रूपेण स्वाधीन राष्ट्रीय सरकार की स्थापना ही लक्ष्य

महर्षि दयानन्द के सुयोग्य शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा का उद्घोष

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जीवन, भव्य एव उदात्त था। वे महर्षि के सच्चे अनुयायी थे। उनकी विचारधारा का मूलाधार था—भारत भारतीयों के लिए है। १९०८ मे उन्होंने अपने असहयोग आन्दोलन को इस प्रकार परिभाषित किया था—भारतीय द्वारा सैनिक भरती का बहिष्कार, अंग्रेजों की स्वामी भक्ति का प्रचार करने वाले स्कूलो, कालेजो का बहिष्कार, भारतीय वकीलो द्वारा न्यायालयो का बहिष्कार राष्ट्रीय पंचायतें की स्थापना भारतीय को सरकारी सिक्योरिटियो मे धन नहीं लगाना चाहिए।

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा मे विचारों की यह दृढता और कर्तव्य निष्ठा, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती के सानिध्य से ही प्राप्त हुई थी। उनके विचारो की यह निर्भीकता और गम्भीरता हमे ऋषि दयानन्द की उनके ऊपर अमिट छाप का स्मरण कराती है।

४ अक्तूबर को उनका जन्मदिवस है। इस अवसर पर हम उनका सादर स्मरण करते है।

वैदिक यति मण्डल का सर्वसम्मत प्रस्ताव

नई दिल्ली के गुरुकुल गौतम नगर मे वैदिक यतिमण्डल की एक आवश्यक बैठक श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे २३-९-९० को हुई जिसमे स्वामी अग्निवेश एव स्वामी इन्द्रवेश द्वारा निर्मित तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध मे विचार किया गया और सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुआ—

> आर्य समाज संगठन से निष्कासित स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश को तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन का अधिकार नहीं है।

अविकल प्रस्ताव—आर्य समाज के संविधान के अनुसार बिना सार्वदेशिक सभा की अनुमति के कोई भी नया संगठन नहीं बन सकता। जहां तक स्वामी अग्निवेश एव स्वामी इन्द्रवेश का सम्बन्ध है, वे सार्वदेशिक सभा से पहले ही निष्कासित हैं अत उन्हे आर्य समाज के संगठन मे हस्तक्षेप करने का कोई भी अधिकार नही है। इसलिए उनके द्वारा स्थापित संगठन सर्वथा अवैधानिक एव आर्यसमाज के लिए घातक है अत उसे अमान्य घोषित किया जाता है।

—स्वामी सुमेधानन्द
मन्त्री वैदिक यतिमण्डल

आर्य सन्देश का भव्य विशेषांक

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण अंक एवं पं० शिवकुमार शास्त्री स्मृति अंक

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस के अवसर पर आर्य सन्देश का भव्य विशेषांक प्रकाशित किया जाएगा। इस अंक में महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश के साथ-साथ आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान पं. शिवकुमार शास्त्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित लेख भी होंगे। आर्यजगत् के विद्वानों एवं लेखकों एवं कवियों से विनम्र निवेदन है कि वे अपनी रचनाएं तुरन्त भेजें। दानी महानुभावो एवं विज्ञापन दाताओं से सानुरोध प्रार्थना है कि वे अपनी सहयोग राशि एवं विज्ञापन सामग्री तत्काल भेज दें। १४ अक्तूबर का अंक प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। सधन्यवाद.

सूर्यदेव
प्रधान सम्पादक

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद मनन

दम्पति

—पं० देवनारायण भारद्वाज

समञ्जन्तु विश्वे देवा समापो हृदयानि नौ।
स मातरिश्वा स धाता समु देष्ट्रीदधातु नौ।।
ऋ० १०-८५-४७

सुनो उपस्थित देव देवियो, उक्ति आत्म अधिकार कही है।
पति पत्नी के अमर प्रेम का, कोई पारावार नही है॥

जल भिन्न भिन्न दो स्रोतो का,
मिलकर अभिन्न हो जाता है।
त्यो पति पत्नी दो देह रहे
पर हृदय एक हो जाता है।

पति पत्नी है प्राण परस्पर, इनके प्राणाधार यही है।
पति पत्नी के अमर प्रेम का, कोई पारावार नही है।

परमेश जगत का स्वामी ज्यो,
करता है सुन्दर जग धारण।
एक दूसरे के पालन का
त्यो पति पत्नी बनते कारण।

एक दूसरे बिना अधूरा, ऐसा एकाकार कही है।
पति पत्नी के अमर प्रेम का, कोई पारावार नही है।

ज्यो वक्ता निज श्रोतागण से
अति प्रीति प्रवचन प्रति करते।
अन्त काल तक सुने सुनायें,
सद प्रीति यही दम्पत्ति करते।

बल शान्त एक रस दम्पत्ति सा, कोई मृदु ससार नही है।
पति-पत्नी के अमर प्रेम का, कोई पारावार नही है॥

आर्यसमाज के तीसरे नियम में प्रयुक्त 'सब' पद की प्रमाणिकता

—मनमोहन कुमार आर्य

आर्य समाज का तीसरा नियम है "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" हमारे एक स्वाध्याय शील मित्र ने हमे सूचित किया कि इस नियम मे सत्य विद्याओ से पूर्व प्रयुक्त "सब" पद के प्रक्षिप्त होने के सम्बन्ध मे उन्हे कुछ प्रमाण मिले हैं। वह आगे अध्ययन कर रहे हैं। उन्हे आशा है कि निकट भविष्य मे वह इस पद की प्रक्षिप्तता पर और प्रमाण प्राप्त कर लेगे।

इस विषय पर हमारा अध्ययन किन्चित नही था, अत हम इसके पक्ष अथवा विपक्ष मे कुछ नही कह सके। समय-समय पर उक्त मित्र से वार्तालाप होता रहा एव इस पद के प्रक्षिप्त होने के विषय मे वह अपने अनुकूल विचारो से अवगत कराते रहे। कुछ समय पूर्व हमने रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन का अध्ययन आरम्भ किया। इस अध्ययन के बीच हमे महर्षि दयानन्द जी का एक पत्र दृष्टिगोचर हुआ जिससे तीसरे नियम मे प्रयुक्त "सब" पद के प्रक्षिप्त होने पर प्रकाश पड़ता है। स्वाध्यायशील पाठको एव आर्य बन्धुओ के लिए उपयोगी समझकर इसका उल्लेख कर रहे हैं।

यह पत्र महर्षि ने दानापुर के बाबू माधोलाल जी को दिनाक १ अप्रैल, १८७८ को लिखा था जिसे पत्र और विज्ञापन मे पृष्ठ सख्या ९२ पर मुद्रित किया गया है। इस पत्र में महर्षि लिखते हैं" केवल इसी देश से विद्या और सुख सारे भूगोल मे फैला है, क्योकि वेद ईश्वर की सब सत्य विद्याओ का कोष और अनादि है।" यहा सत्य विद्याओ से पूर्व प्रयुक्त "सब" पद एव इस पत्र पर महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो के प्रसिद्ध गवेषक, अनुसधानकर्ता विद्वान प० युधिष्ठिर मीमासक की पाद टिप्पणी से इसके प्रक्षिप्त होने के भ्रम का निवारण हो जाता है। पाद टिप्पणी मे पडित जी ने लिखा है – "कई लोग आर्य समाज के तीसरे नियम 'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" इसमे "सब" पद को प्रक्षिप्त मानते है, वे वस्तुत भ्रान्त हैं। यह इस वाक्य से, तथा पूर्ण सख्या १०६ (प्रारम्भिक सन्दर्भ) के "सर्व सत्यविद्याकोशेषु वेदेषु" वाक्य से स्पष्ट है। अत तृतीय नियम मे उल्लिखित "सब" पद ऋषि दयानन्द का ही रखा हुआ है, यह निश्चित है।"

'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' एक अनुपम ग्रन्थ है। इसके स्वाध्याय से महर्षि द्वारा अपने ग्रन्थों में उल्लिखित कई स्थलो का स्पष्टीकरण होता है। जिन आर्य-स्वाध्यायशील बन्धुओ ने इसे न पढ़ा हो उन्हें इसका स्वाध्याय करने का परामर्श है।

आर्यसमाज और आरक्षण?

—प. भगवती प्रसाद, सिद्धांत भास्कर
प्रधान-नगर आर्य समाज, जयपुर

आरक्षण के कारण भारत मे धधक रही भीषण ज्वाला।
तोड फोड हडतालो मे विध्वस देश मे कर डाला॥
रेल बस, मोटर कारे आगे चल न ही पाती है।
पत्थर वर्षा होने उन पर या आग लगा दी जाती है॥
इसलिए राज्य सरकारो ने विद्यालय आदि बन्द करे।
लाठी व गोली चलाने से कितने हा टाइन से युवक मरे॥
अविवेकपूर्ण आरक्षण मे यह दुखद दशा हो गई है।
सम्प्रदायवाद व जातिवाद की भीषण आग जलाई है॥
कश्मीर, असम पजाब और लका मे आग तो रहा धधक।
यह बुझ न सकी आरक्षण की गई भीषण ज्वाला और भड़क॥
पथ भ्रष्ट राजनेताओ के झगड़ो से जनता परेशान।
छिड रहा परस्पर युद्ध यहा महाभारत जैसा ही महान्॥
जाति आधार पे लडने को दुर्योधन बन गये पासवान।
धृतराष्ट्र बन है वा पी सिंह इस भारत के मन्त्री प्रधान॥
शकुनि की नीति चला रहे श्री ताऊ जी नेता किसान।
कौरव दल मे है घिरा हुआ अभिमन्यु रूपी हिन्दुस्तान॥
दुखी द्रौपदी रूपी भारत कृष्ण-कृष्ण पुकार रही।
यह दशा देख जो मौन उन्हे वह बार-बार धिक्कार रही॥
जाति धर्म के नाम पर क्या फिर से भारत को काटोगे?
यह तो अनेक है फिर इसको कितने टुकडो मे बाटोगे?
इस भाति देश विभाजन के सब ही प्रबन्ध है कर डाले।
अपनी सरकार से अपने देश रक्षा के पड गये हैं लाले॥
तज आर्थिक आधार जाति आधार पे होगा आरक्षण।
तो इसके कारण हो सकता है भारत का फिर से विघटन॥
यह आरक्षण की राजनीति है केवल वोटो के कारण।
सत्ता न हाथ से छिन जावे इस देश का चाहे हो विघटन॥
आरक्षण के कारण अयोग्य ऊचे पद तक पा जाते है।
योग्य युवक सेवा के लिए दर-दर की ठोकर खाते हैं॥
यह सहन नही होगा युवको का जीवन घाती आरक्षण।
प्रत्येक क्षेत्र मे युवको का योग्यता अनुसार होवे चयन॥
ऋषि दयानन्द ने जन्म-जातिगत सब अधिकार मिटाया है।
गुण-कर्म योग्यता के बल पर ही अधिकार बताया है॥
सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि कोई भी हो विद्यार्थी जन।
सबको समान सुविधाए हो चाहे धनवान हो या निर्धन॥
"भास्कर" इस ही सिद्धान्त से भारत का जन-जन उन्नत होगा।
गुण-कर्म-योग्यता के कारण ही बलशाली भारत होगा॥

१४३०, प० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश

विजयादशमी

भारतीय चेतना की उदात्तता का प्रतीक



भारतीय जन मानस में राम का स्थान श्रद्धा समन्वित है। हम उनके गुणो का सादर स्मरण करते हैं वे शक्ति शील और सौन्दर्य के प्रतीक हैं। सपूर्ण कथानक मे उनकी मर्यादाओ का आकलन कही पर भी उन्हे उस श्रद्धा के उच्चतम सोपान से स्खलित नहीं होने देता। रामकथा का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नही है बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व मे व्याप्त है। अनेक देशा मे लोग अपने नाम के प्रारम्भ मे अथवा बाद मे 'राम' शब्द का प्रयोग करते हैं। राम का 'रामत्व' महान है यह उदात्त है। राम कथा की लोकप्रियता का भी यही कारण है। मानव समाज मे जिस उदात्त एव मानवीय मूल्यो की प्रतिष्ठा है वे सभी इस राम कथा मे विद्यमान है।

हमारा समाज सदा से, युगो से अनाचार, शोषण, अत्याचार, दमन, आतक और यातनाओ से पीड़ित रहा है। ऐसी स्थिति मे जीवन मे सामान्य मूल्यो की प्रतिष्ठा नही हो पाती। वह निराश हो जाता है। फिर उसकी दृष्टि किसी एक पुरुष की ओर जाती है। समाज अपनी आकाक्षाए और आशाए ऐसे ही लोकोत्तर पुरुष में केन्द्रित कर देता है। इन्ही आकांक्षाओ, आशाओ, जनभावनाओ एव सामाजिक आवश्यकताओ का परिणाम रामकथा है।

ऐसे ही महापुरुष राम की विजय से सम्बद्ध उत्सव विजयादशमी है। राम सदृश महापुरुष की ओर प्रत्येक युग की आकाक्षापूर्ण दृष्टि रहती है। ऐसा ही महापुरुष समाज को नेतृत्व दे सकता है तथा सामाजिक कुरीतियो से छुटकारा दिला सकता है। आज भी सामाजिक दुरवस्था की स्थिति है। आज भी समाज के कल्याण के लिए उन्हीं सदृश सगठन कौशल की आवश्यकता है। बुराई का सामना करने के लिए उन्होने समाज के सभी अगो को सगठित एव प्रशिक्षित किया था। उन्हीं के सहयोग से वे अन्यायी अत्याचारी रावण का सहार कर सके।

भारत में अनेक लोक कथाओ के साथ भी राम का नाम जुड़ा है। वस्तुस्थिति यह है कि हम नाटकीय न्याय म विश्वास करत है। अच्छे को अच्छा फल मिले और बुरे का हश्र बुरा हो। भारतीय जनमानस को परम्परा एव सस्कार मे बुराई का विरोध करना विरासत मे मिला है। परमात्मा मे हम कामना करतेहै कि हमे ऐसी शक्ति प्राप्त हो कि हम बडे से बडे अत्याचारी का विरोध कर सके।

— डा० धर्मपाल

मत दुनियां को बहकाओ तुम

—पं. नन्दलाल निर्भय, सिद्धांत शास्त्री

अय कुर्सी के दीवानो अब, मत दुनिया को बहकाओ तुम।
मानव चोला, है अनमोला मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥
वे महर्षि दयानन्द योगी मानवता के थे दीवाने।
वेदो के थे विद्वान महा वे देश भक्त थे मर्दाने ॥
निर्भीक सत्य पथगामी थे ऋषि ईश भक्त थे मस्ताने।
वे राज विधर्मी हिला गए, गाकर स्वतन्त्रता के गाने ॥
यदि भला आप चाहो अपना, ऋषि के सद्गुण अपनाओ तुम।
मानव चोला है अनमोला मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥
इस दुनिया मे पाखण्डवाद दिन रात रहा है बढ भारी।
अज्ञान अविद्या की कीचड मे फसे हुए है नर-नारी ॥
ईश्वर को भूल बहुत ज्यादा, है दुखी आज दुनिया सारी।
रावण के वशज पनप गए ना रहे राम से बलधारी ॥
सत्ता के लालच मे आकर, वृथा मत पाप कमाओ तुम।
मानव चोला, है अनमोला मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥
इस भारत की भोली जनता ने तुम पर था विश्वास किया।
तन-मन-धन से की मदद बडी, था सुनो तुम्हारा साथ दिया।
सम्मान दिया तुमको पूरा, बदले मे कुछ भी नही लिया।
तुम धोखा देते रहे हमे हमने था कडवा घूट पिया ॥
विश्वास घात करना छोडो, सच्चे मानव बन जाओ तुम।
मानव चोला है अनमोला मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥
तुम इन्द्रवेश, तुम अग्निवेश निज नाम सार्थक कर जाओ।
वेदो के सच्चे पथिक बनो, मत इधर-उधर धक्के खाओ ॥
तुम स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम वीर लाजपत बन जाओ।
भारत को जग मे चमकाओ, कुविचार तजो आगे आओ ॥
बन धर्मवीर, बन कर्मवीर, अपना कर्त्तव्य निभाओ तुम।
मानव चोला है अनमोला मत इसको व्यर्थ गवाओ तुम ॥

ग्राम, पोस्ट-बहीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

● दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा हैदराबाद सत्याग्रह अर्धशताब्दी समारोह समापन के १७ अगस्त के कार्यक्रम मे साप्ताहिक आर्य सन्देश की स्मारिका एक उत्तम प्रयत्न था। यह कार्य तो स्वय सार्वदेशिक सभा को करना चाहिए था, क्योकि उसके तत्वावधान में ही १९३९ में यह सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ था। एक वर्ष तक चले इस शताब्दी समारोह मे श्री घनश्याम सिंह गुप्त, लाला देशबन्धु गुप्त, पडित नरेन्द्र जी आदि की महती सेवाओ का उल्लेख तक नही किया गया। समापन समारोह मे भी पूर्व नेताओ का विस्मरण व आत्म स्तुति ही देखन को मिली। यह परिवर्तन रोके जाने की आवश्यकता है।

समारोह म दयानन्द ब्राह्मविद्यालय, गुरुकुल वृन्दावन जैसी सस्थाओ एव प्रादेशिक सभा क योगदान का उल्लेख न होना उसे एकागी बनाता है। अन्तर्राष्ट्रीय एव ४ जत्थे भेजने वाले गुरुकुल वृन्दावन के योगदान का उल्लेख प्रसिद्ध साहित्यकार डा० विजयेन्द्र स्नातक से (जिनके भाई श्री राजेन्द्रसिंह भी स्वाधीनता सेनानी हैं) कराया जा सकता था। इसी प्रकार प्रादेशिक सभा के अधिकारी को आमन्त्रित किया जाना उचित रहता।

स्मारिका (पृष्ठ १६१-१६२) के एक लेख मे यह पढकर तो सचमुच रोना आ गया कि उक्त सत्याग्रह की सफलता का श्रेय सार्वदेशिक सभा को नही।

—ब्रह्मदत्त स्नातक सी बी-३३२ बी जनकपुरी, दिल्ली

सम्पादक के नाम पत्र

● मैंने 'आर्य सन्देश' का हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशती स्मृति अक देखा है। इसके लिये आपको बधाई देने के लिये यह पत्र लिख रहा हू। बहुत उच्च कोटि का अक आपने निकाला है। यह केवल हैदराबाद सत्याग्रह का इतिहास ही नही आर्य समाज के इतिहास को एक स्मृति है। बहुत उच्चकोटि के लेख आपने दिये हैं। यह एक ऐसा अक है जो प्रत्येक आर्य समाज को अपने पास रखना चाहिए। ताकि आने वाली पीढी को भी पता चल सके कि हैदराबाद मे आर्य समाज ने जो सघर्ष किया था वह क्यो किया गया था। इसके लिये जो परिश्रम किया गया है उसके लिये इसके सम्पादक और आप सब बधाई के पात्र हैं। कृपया इस अक की दस प्रतिया हमे भिजवा दें। साथ ही बिल भी भेज दे ताकि इसका जो भी मूल्य हो उसका भुगतान किया जा सके।

—वीरेन्द्र, सभा प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (रजि)
गुरुदत्त भवन, किशनपुरा चौक जालन्धर शहर-१४४००४

● इस वर्ष आर्य सन्देश का विशेषाक, जिसको पढकर अत्यन्त प्रसन्नता बढी। आपकी श्रद्धा पुरुषार्थ सराहनीय है। ईश्वर आपको सदैव श्रद्धा बल-बुद्धि से भरपूर रखें।

आर्य सन्देश विशेषाक को पढा प्रेम अति छाया।
सम्पादक जो धन्य है आपको, आर्य सन्देश बताया ॥
कितना विशद भावयुत अपना भव्य भाव दिखाया।
श्रद्धा सबल आपकी सुदृढ, अक विशेष रचाया ॥

—कवि कस्तूर चन्द 'घनसार'
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज)

प्रधानमंत्री वी०पी० सिंह ठीक भी हैं, गलत भी हैं
बिलकुल ठीक सिर्फ आर्य समाज है

(डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार)

प्रधान मत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा उनके पुष्ट-पोषक बिल्कुल ठीक कहते है कि किसी मनुष्य को जाति के कारण मानवता के अधिकारो से वचित नही किया जा सकता। अगर किसी को सदियो तक इन अधिकारो से वचित रखा गया है तो उसका उन अधिकारो के लिये आन्दोलन करना सर्वथा उचित है। इतना ही नही कि उसका उन अधिकारो को पाने के लिये आन्दोलन करना उचित है, अपितु उसका यह मागना भी उचित है कि अब तक समाज ने उसके साथ जो अत्याचार किये है उनका इसे मुआवजा मिलना चाहिए। मुआवजे का अर्थ है दूसरो की अपेक्षा कुछ अधिक रियायतें। यहा तक तो श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा उनके पृष्ठ पोषक ठीक हैं।

परन्तु जब प्रधानमत्री कहते है कि अगर किसी पद के लिये समाज के किसी कार्य के लिये दो उम्मीदवार हो एक उस पद के लिये शिक्षा आदि की दृष्टि से योग्य हो दूसरा शिक्षा तथा सस्कृति की दृष्टि से सर्वथा अयोग्य ही नही कुछ ही अयोग्य हो, परन्तु इन छात्रा मैं से एक उच्च-जाति का हो, दूसरा निम्न-जाति का हो तो निम्न जाति वाले को प्राथमिकता दी जानी चाहिये, तब श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह गलत तथा अनुपयोगी बात कहते है। अगर मडल-कमीशन ने भी यह बात कही है तो कमीशन ने भी गलत बात कही है सही बात तो यह है कि जिससे व्यक्ति का भी भला हो समाज का भी भला हो अगर अयोग्य व्यक्ति को उसके साथ की गई ज्यादतिया के बदले के कारण सामाजिक सस्थानो मे थाप दिया जायेगा तो उस व्यक्ति का निम्न जन-जाति होने के कारण तो भला हो जायेगा, परन्तु जिस समाज का वह अश है और जिसकी सेवा के लिये वह चुना गया है उसका भट्टाबोल जायेगा। इसलिए मै कहता हू कि प्रधानमत्री ठीक भी है और गलत भी। ठीक इसलिए है क्योकि जो कदम वे उठाना चाहते है उससे निम्न जाति के लोगो के साथ अब तक किये गये भेदभाव दूर हो जायेगे गलत इसलिए हैं क्योकि इस भेद-भाव को दूर करने के लिये जो रियायतें वे उन्हे देना चाहते हैं उन्हे पाने के लिये समाज के ये दो वर्ग सदा के लिये पक्के हो जायेगे,। जैसे अब तक समाज मे छूतअछूत, उच्च निम्न बने हुये है, जात-पात बनी हुई है वह सदा के लिय स्थिर होजायेगी। यह मोटी सी बात आज के राजनीतिज्ञो की समझ मे नहीं बैठती येजात पात को हटाने के स्थान मैं जात-पात को स्थिर करने मे लगे हुए हैं। समाजदो वर्गों मैं बाट कर उन्हे परस्पर भिडाने के मार्ग पर अनजाने चल पडे हैं।

अगर मनुष्य ने मनुष्य पर जन्म के कारण भेद भाव को उत्पन्न कर दिया है तो जन्म की जाति पर प्रहार करना उचित है। यह भेद-भाव जन्म के आधार को स्थिर कर देने से दूर नही हो सकता है। जैसा हमने कहा, श्री वी० पी० सिंह ठीक भी हैं गलत भी है, बिल्कुल सही दृष्टिकोण केवल आर्य समाज का है। आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या है। आर्यसमाज का दृष्टिकोण यह है कि सारे झगडे की जड ही जात-पात है। इसे ठोकर लगाओ तब झगडा अपने आप मिट जायेगा, तुम तो जात पात को बढावा दे रहे हो उसकी नीव इतनी पक्की कर रहे हो कि आज जो अपने को अछूत नही कहते वे भी अपने को अछूत कहने लगेंगे। उन्हे तो अधिकार चाहिए। छूत-अछूत मे क्या रखा है। यही सही दृष्टिकोण है जो आर्य-समाज का है।

मुझे आज वह दिन याद आ रहा है कि जब गुरुकुल विश्वविद्यालय काएक स्नातक जो जन्म से निम्न वर्ग का होने के कारण पार्लियामेट का सदस्य चुना गया था, मेरे पास आकर कहने लगा कि गुरुकुल विश्व विद्यालय के वाइस चासलर होने की हैसियत से मैं उसे सर्टीफिकेट दे दू। कि वह जन्म से निम्न-जाति का है। मैंने कहा ऐसा बेढगा सर्टीफिकेट क्यो माग रहे हो। हमने तो तुम्हे वेदादि शास्त्र पढाकर ब्राह्मण बनाया है। तुम ब्राह्मण होकर अछूत बनाना चाहते हो? उसने उत्तर दिया कि वह निम्न जाति के कोटा में से लड़कर चुना गया है परन्तु प्रतिपक्षी ने अदालत मे उसके विरुद्ध केस दायर कर दिया है कि आर्य समाज जन्म की जाति को नही मानता, इसलिये वह पार्लियामेन्ट की सदस्यता का अधिकारी नही है।

वी० पी० सिंह, और काग्रेस आई भी इसी रास्ते पर चल रहे हैं, सब लोग अधिकार लिप्सु हैं, सब रिजर्वेशन चाहते हैं, छूत-अछूत कोई नही है, सब रियायतो के भूखे हैं। आप उन्हे अधिकार दें, बस अधिकार दे। उन्हे अछूत कह कर रियायतें दे, सब अपने को अछूत कहने लगेगे। गुण्डा कह कर रिजर्वेशन दे सब अपने को गुण्डा कहने लगेगे।

इस समय जो स्थिति है उसका इलाज सिर्फ यह है कि जन्म की जात पात को समाप्त किया जाये। 'जाति-पाति न पूछे कोई, हर को भजे तो हरि को होई'—यही आर्यसमाज का नारा है। यही भविष्य मे होने वाला है। समाजशास्त्र का यह पुराना नियम है कि सामाजिक-रचना मे जो विसगति होती हैं उन्हे दूर करने के लिये समाज की रचना मे उथल-पुथल मचती रहती है और वे विसगतियो दूर कर नवीन समाज का निर्माण होता है। उसके बाद उसकी रचना म फिर कुछ विसगतिया जन्म लेती है फिर समाज मे उथल-पुथल मच कर समाज का पुनर्निर्माण होता रहता है। आज हमारे समाज का जो रूप है वह इन विसगतिया को दूर करते करते बना है। आज समाज बहुत बदल चुका है। उथल-पुथल जारी है। जन्म की जात-पात इन्ही विसगतियो मे से एक विसगति है। बर्षों गुजर गये, महर्षि दयानन्द ने भारत में चली आ रही जन्म की जात पात के विरुद्ध आवाज उठाई थी। यह हमार सामाजिक रचना की एक बडी भारी विसगति थी। यह हमारी राजनीति मे उठे बवडर से दूर होकर रहेगी। इस विसगति से दूर होने का रूप वही होगा जो हो रहा है। एक जात दूसरी जात को खायेगी। अन्त मे सब जाते मिट कर फिर मिल जायेगी और सिर्फ एक जाति मानव-जाति रह जायेगी।

योरुप मे यह हुआ, अफ्रीका मे यह हुआ, भारत मे यही होगा और होकर रहेगा। समय आयेगा जब न एन्टी रिजर्वेशन होगा, न 'प्रो० रिजर्वेशन' रहेगा, ऋषि दयानन्द का सोचा हुआ विचार "शूद्रो ब्राह्मणता मेति ब्राह्मणश्च शूद्रताम" ही आयेगा क्योकि जीवित समाज का यही रुख है। समता की यह स्थिति कैसे आयेगी यह कहा नही जा सकता, परन्तु यह कहा जा सकता है कि जन्म-जात भेद-भाव मिट कर रहेगा, मिट कर रहेगा, मिट कर रहेगा। किसी तरह का 'रिजर्वेशन' नही रहेगा, सारा समाज एक हो जायेगा। समाज मे जो उथल-पुथल हो रही है, जो उखाड-पछाड हो रहा है वह परमात्मा की देन है। क्योकि इसी से समाज का भला होने वाला है, इसी से अन्त में ऋषि दयानन्द का स्वप्न पूरा होने वाला है।

लखटकिया पुरस्कार ठुकराने वाले पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी

प्रो. भवानीलाल भारतीय

साहित्य प्रेमियो मे 'भैया साहब' के नाम से विख्यात प० श्री नारायण चतुर्वेदी का छियानवे वर्ष की आयु मे ११ अगस्त को निधन राष्ट्रभाषा के क्षेत्र मे होने वाली एक ऐसी रिक्तता है जिसका पूरा होना कठिन है। वे अपने युग के प्रख्यात लेखक प० द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी के पुत्र थे। उच्च शिक्षित तथा इगलैण्ड से शिक्षा मे डिप्लोमा प्राप्त चतुर्वेदी जी उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग मे उच्च पदो पर रहने के पश्चात् आकाशवाणी के उपमहानिदेशक भी रहे किन्तु देशवासी उन्हे एक कृती साहित्यकार के रूप मे ही अधिक जानते हैं। उनके साहित्यकारों के सस्मरण, हिन्दी साहित्य के आदि काल का इतिहास आदि चर्चित ग्रन्थ हैं। गम्भीर समीक्षात्मक लेखक के अतिरिक्त उन्होने ललित निबन्ध लेखन में भी अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की। 'राजभवन की राजदानी' उनके ऐसे ही निबन्धो का सग्रह है।

राजकीय सेवा से अवकाश लेकर चतुर्वेदी जी ने हिन्दी की प्रख्यात साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' का सम्पादन लगभग दो दशक तक बडी कुशलता से किया। उनके सम्पादनकाल मे सरस्वती ने अपने उसी स्तर को बनाये रखा, जो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महात्मा गांधी : एक पुनर्मूल्यांकन

डा. धर्मचन्द्र विद्यालंकार

इतिहास में कई महान् व्यक्तियों का ठीक से मूल्यांकन नहीं हो पाता है। वे महान् पुरुष चाहे अपने समय के कितने ही महान जन-नायक या लोक-नेता क्यों न रहे हों, लेकिन कई बार उनकी महानता पर पर्दा डालने के असफल प्रयास भी किये जाते हैं। ऐसा उस व्यक्ति की तत्कालीन परिस्थितियों की अनदेखी करने पर ही होता है। दुनिया के महान् से महान् लोगों का बाद में अवमूल्यन किया गया। चाहे वे चीन के माओत्से तुंग रहे हों या रूस के ख्रुश्चेव, तत्कालीन परिस्थितियों को बिना देखे ही आज उनके अवमूल्यन के प्रयास उनके अपने ही देश में भी और बाहर भी किये जा रहे हैं। धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत कुछ यही हो रहा है। आज स्वामी दयानन्द जैसे महान् धर्म प्रतिष्ठापक और समाज सुधारक के बारे में भी लोगों में भ्रान्तियां फैलाई जा रही हैं कि उन्होंने समाज में अनास्था और अश्रद्धा का प्रचार किया आदि आदि। यह सब किसी भी समकालीन सामाजिक परिवेशगत अवस्थितियों का सही विश्लेषण न कर पाने की वजह से ही होता है। ऐसा ही बहुत कुछ ठीक महात्मा गांधी के साथ भी हुआ है। उसी पर हमें विचारना है। अस्तु।

राजनैतिक क्षेत्र में तो महात्मा गांधी को अप्रासंगिक बनाया और बनाया ही गया, लेकिन धार्मिक क्षेत्र में तो उन्हें हिन्दू मात्र का विरोधी ही घोषित कर दिया गया। इसका मुख्य कारण कदाचित यह रहा कि हमने कभी उनकी राष्ट्रीय भूमिका पर गम्भीरता से विचार नहीं किया। महात्मा पर प्राय यह आरोप कट्टरपंथी हिन्दुओं की ओर से लगाया गया, कि गांधी जी तो हिन्दुओं के विरोधी हैं, और मुसलमानों के समर्थक हैं, इसीलिये वे मुसलमानों को सन्तुष्ट करने के लिए हिन्दुओं का गला घोंटते रहे। ऐसे लोग तो महात्मा गांधी के वधकर्ता गोपाल गोडसे को भी शहीद बतलाते हैं, हत्यारा नहीं। बताइये इससे बढ़कर और क्या दुर्भावना एक महामानव के प्रति हमारी हो सकती है।

आज एक बार फिर हमें महात्मा गांधी का पुनर्मूल्यांकन उनके सामयिक सामाजिक और राजनैतिक तथा धार्मिक सन्दर्भों को सामने रखकर करना होगा। गांधी जी के लिए स्वराज्य-प्राप्ति महत्तम लक्ष्य था, और उसी के लिये वे सर्वाधिक संघर्षरत थे। यद्यपि उनके जीवन दर्शन के समाज सुधार जैसे और भी कई अनुक्रम थे, लेकिन राष्ट्रीय अस्मिता की पुनर्प्राप्ति उस युग का और उनका परम उद्देश्य था। अंग्रेज बड़ी होशियार और चतुर प्रबंधक जाति थी। उसके पास शासन करने का एक मात्र मूल—मन्त्र, 'फूट डालो और राज करो' था। इसी के अन्तर्गत उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाने का व्यापक कार्यक्रम बनाया। अपने शासन के पूर्वार्द्ध काल में उन्होंने हिन्दी और फारसी (उर्दू) का विवाद उत्पन्न किया। जिसके अन्तर्गत हिन्दी को अपदस्थ कर कोर्ट कचहरी और तहसीलों की भाषा के स्थान पर एक विदेशी भाषा-फारसी को पदासीन किया। अंग्रेजों के परम भक्त सर सैय्यद अहमद खां जैसे लोगों ने इस भाषायी सम्प्रदायवाद की आग को और भी हवा दी। 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत ही अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया। ऊपर से तुर्रा यह दिया कि बंगाल का हिन्दू वहां के मुसलमानों का शोषण करता है, अत. उन्हें उनके शोषण से मुक्त करने के लिए ही हमने बंगाल का विभाजन किया है। और आश्चर्य की बात यह है कि यद्यपि ऐसा कुछ नहीं था, उसके बावजूद भी कुछ मन्दबुद्धि मुसलमानों ने इसको स्थापित सत्य मानकर बंग-भंग को समर्थन दिया। लेकिन बंगाल का प्रत्येक हिन्दू इसका विरोधी था।

अंग्रेजों की नीति यह थी कि हिन्दू और मुसलमान दोनों इस देश की बड़ी जातियां हैं। कांग्रेस के मंच के माध्यम से ये राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होकर अपनी स्वतन्त्रता के लिए सशक्त संघर्ष कर रही हैं, क्यों न इनमें से एक को अपनी ओर मिला कर इनकी तोप का मुंह दूसरी ओर फेर दिया जाय। ये आपस में ही लड़ने मरने लगें और हमें (अंग्रेजों को) यह कहने का मौका मिल जाये कि तुम हिन्दुस्तानी लोग तो कभी इकट्ठे रह ही नहीं सकते, पीछे भी तुम ऐसे ही रहे हो और अब भी ऐसे ही हो, इसीलिए तुम गुलाम ही रहो और भूतकाल में भी रहे हो। अंग्रेजों की इस चाल को अगर किसी ने ठीक से समझा, तो वे महात्मा गांधी थे। उन्होंने इसीलिए हिन्दू-मुस्लिम एकता पर इतना जोर दिया। उनका मानना था कि एक बार मिलकर वे कैसे भी इस अंग्रेज लुटेरे से मुक्ति प्राप्त करें। वे मुसलमानों को विदेशी नहीं मानते थे, क्योंकि अधिकांश भारतीय मुस्लिम परिवर्तित हिन्दू ही थे। बल्कि वे अंग्रेजों के शासन से मुसलमानी शासनकाल को अच्छा समझते थे, क्योंकि मुसलमान शासक अंग्रेजों की तरह भारत का धन-माल लूट कर विदेश नहीं ले गये। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे फिर से भारत पर मुसलमानी शासन कायम करना चाहते थे। लेकिन साम्प्रदायिक सद्भाव के वे सबल समर्थक थे।

यदि महात्मा जी को हिन्दुओं की तनिक भी चिन्ता न होती और मुसलमानों से इतना अतिरिक्त अनुराग होता, तो काकनाडा कांग्रेस (१९२३) के अधिवेशन में वे अली बन्धुओं द्वारा प्रस्तावित सुझावों का तुरन्त अनुमोदन कर देते। विरोध क्यों करते? वहां पर शौकत अली खां जो तत्कालीन कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे, उन्होंने यह प्रस्ताव रखा था कि यदि कांग्रेस वास्तव में ही कौमी एकता चाहती है तो एक तो मुसलमानों को गोकशी का वैधानिक अधिकार मिलना चाहिये, क्योंकि वह उनका मजहबी हक है। दूसरे यह कि हिन्दू हरिजन और पिछड़े वर्ग के लोगों से अच्छा बर्त्ताव नहीं करते, उन्हें हिन्दू नहीं समझते, अतएव इन्हें मुसलमान और ईसाइयों में बांट लेने पर हिन्दुओं को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। शौकत अली के इस घिनौने प्रस्ताव का जहां स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपतराय और प० मदन मोहन मालवीय ने प्रतिवाद किया था, वहीं पर महात्मा गांधी ने भी इसको स्वीकृति नहीं दी थी, और इसीलिए यह पारित भी नहीं हो सका था।

यह एक ऐसी घटना थी, जिसने राष्ट्रीय एकता (कौमी एतहाद) की कलई खोलकर रख दी थी। इससे प्रेरणा लेकर जैसे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि सभा के माध्यम से शुद्धि का चक्र चलाया तो महात्मा गांधी ने भी हरिजनों को अपनाने के लिए अछूतोद्धार का अभियान चलाया। जिसके अन्तर्गत अछूतों को हरिजन (भगवान के आदमी) नाम देना और उनके साथ बैठकर खाना खाना, और भजन, कीर्तन आदि करना, जिससे कि हिन्दू जाति अटूट और अविभाज्य बनी रहे। इससे बढ़कर हिन्दू समाज के उपकार का क्या कार्यक्रम हो सकता था और उनसे बड़ा हिन्दू हितैषी भी कौन हो सकता था? नोआखाली में हिन्दुओं पर हुए अत्याचारों की उन्होंने कटु भर्त्सना की थी। बल्कि हिन्दुओं की असह्य वेदना से विह्वल होकर एक बार तो वे कृष्ण जी की तरह अपनी अहिंसा की प्रतिज्ञा को भी तोड़ने के लिए उतारू हो गये थे उस अवसर पर "यंग-इण्डिया" में प्रकाशित उनके विचार कितने सटीक थे। उनका कहना था कि—

'यदि हिंसा और कायरता में से मुझे एक चुनने का अवसर दिया जाये, तो मैं तब हिंसा का वरण करूंगा न कि अहिंसा का।" उन्होंने हिन्दुओं को खुले शब्दों में कहा था कि अत्याचारियों के हाथ-पैर काट डालो, उनका नाम-निशान मिटा डालो। अत वे अहिंसा के ऐसे अन्धे पुजारी नहीं थे, जैसा कि उन्हें समझा जाता है।

एक दो अवसर ही ऐसे आये, जब कि उन्होंने हिन्दुओं की खुलकर हिमायत नहीं की थी। जैसे कि आर्यसमाज द्वारा चलाया गया हैदराबाद का सत्याग्रह आदि। उस समय हिन्दुओं का उनसे अवश्य मोहभंग भी हो गया था। लेकिन यह उनकी राजनैतिक मजबूरी थी। जिसके चलते उन्होंने मुसलमानों को राष्ट्रीय संघर्ष की मुख्य-धारा से जोड़ने की हर कोशिश की। उनके लिए हिन्दुओं की बुराई तक मोल ली। लेकिन बात ऐसी हुई कि मुर्गी तो अपनी जान से गई पर मियां को स्वाद नहीं'। जिन अल्पसंख्यक मुसलमानों के लिए उन्होंने हिन्दुओं के सभी आरोपों को सहन किया, उन मुसलमानों ने भी उन्हें कभी भलाई नहीं दी। साम्प्र-

(शेष पृष्ठ ७ पर)

डा० रघुवीरसिंह शास्त्री का जीवन चरित

आर्य समाज के महाधन अनेक शिक्षण-सस्थाओ के जनक एव प्रबन्धक, सार्वदेशिक सभा और आर्य-प्रतिनिधि सभा पजाब के मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उपप्रधान गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति, आर्य महाविद्यालय किरठल के आचार्य, ससद सदस्य सम्राट आर्योदय जागृत-हरियाणा, आर्य मर्यादा और सार्वदेशिक पत्रो के सम्पादक स्वर्गीय प० रघुवीरसिंह शास्त्री का जीवन-चरित लिखने का दायित्व डा० सुरेन्द्रसिंह कादियाण, एम०ए०, पी० एच० डी० को सौपा गया है।

शास्त्री जी के निकट-सम्पर्क मे रहने वाले समस्त महानुभावो से प्रार्थना है कि शास्त्री जी के बारे मे अपने सस्मरणात्मक लेख डा० सुरेन्द्रसिंह को यथाशीघ्र भिजवाने का प्रबन्ध करे। कृपया इस बात का ध्यान रखे कि जो भी सस्मरण भेजे जाए उनसे शास्त्री जी की प्रतिभा, उनके गुणो व क्षमता पर समुचित प्रकाश पडना चाहिए। सामग्री सक्षेप मे भेजी जाए लेकिन वह ठोस हो।

आर्योदय, जाग्रत हरियाणा और सार्वदेशिक आदि पत्रो की उनके सम्पादन काल की पुरानी फाइले यदि किसी सभा सस्था या सज्जन के पास हो तो कृपया सूचित करे। आवश्यक सामग्री का चयन करने के बाद ये फाइले आभार सहित लौटा दी जावेगी अथवा व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर वाछित सामग्री नोट कर ली जाए गी।

उपर्युक्त विषय पर समस्त पत्र-व्यवहार सहयोग व रचनाए आदि भेजने का सम्पर्क सूत्र निम्न प्रकार है —

— डा० सुरेन्द्रसिंह कादियाण
एम०ए०, पी०एच०डी०
वाई ४५४/४५५ कैम्प न० १
नागलोई, दिल्ली-११००४१

आर्य समाज और आरक्षण

आर्य समाज के नेता व सुप्रसिद्ध समाज सुधारक डा० प्रशान्त वेदालकार ने प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह द्वारा मण्डल आयोग के अनुसार २७ प्रतिशत पिछडी जातियो के लिए आरक्षण की बात को बिना राष्ट्रीय बहस के जल्दबाजी मे राजनीतिक स्वार्थ से दिया गया वक्तव्य कहा है। डा० वेदालकार ने कहा कि आरक्षण से इन जातियो का विकास असम्भव है।

वस्तुत इन सभी पिछडी जातियो के बच्चा के निवास, स्वास्थ्य व शैक्षणिक विकास की एक बृहद् योजना से ही इन जातियो का विकास हो सकता है। प्रधानमन्त्री ने पिछडी जाति के लोगो के आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य के विकास की कोई क्रान्तिकारी योज्ना प्रस्तुत नही की।

वस्तुत प्रधानमन्त्री ने सवर्ण युवको को आन्दोलन करने के लिए स्वय बाध्य किया है। आरक्षण से जनता के किसी वर्ग के हितो की हानि होती है तो उस हानि की पूर्ति का उपाय पहले ही सोचना चाहिए था और यदि आरक्षण से योग्यता के अभाव के कारण कार्य के स्तर मे कमी आती है तो उसके स्थान पर उनके विकास की अन्य योजनाओ पर विचार अपेक्षित है।

डा० प्रशान्त वेदालकार ने यह भी कहा कि जब तक आरक्षण की व्यवस्था से पिछडी जातियो के समृद्ध, शिक्षित और सस्कारी लोगो को हटाया नही जायेगा तब तक आरक्षण का लाभ सब को प्राप्त नही हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति को दो बार से अधिक आरक्षण की सुविधा देने से सभी के विकास की सभावना कम है।

भव्य वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज पीपाड नगर मे दिनाक ११-९-९० से १५-९-९० तक भव्य वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी चन्द्रदेव जी सरस्वती (ककरखेडा मेरठ) भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी सरल (देहरादून) स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती (ब्यावर) एव श्री देवी प्रसाद जी आर्य (बाडमेर) के प्रात एव साय भजन व प्रवचन होते रहे।

समारोह की विशेषता यह थी कि पाचो दिन के कार्यक्रम तो प्रात दैनिक यज्ञ, प्रवचन एव भजनो का कार्य-क्रम आर्य समाज मन्दिर मे एव साय कालीन कार्यक्रम पाचो दिन तक नगर के प्रमुख मोहल्लो मे रखा गया जिसका बहुत अच्छा प्रभाव पडा। श्रोताओ की उपस्थित प्रतिदिन बहुत भारी सख्या मे होती थी।

आर्य समाज मन्दिर अशोक विहार-३ दिल्ली-५२ के निर्माण हेतु अपील

आर्य समाज मन्दिर अशोक विहार-३ दिल्ली ५२ का निर्माण ६०० वर्गगज मे करना है। जिस पर तीन मन्जिल बननी है। इस निर्माण पर लगभग २२ लाख रुपये व्यय होने का अनुमान है। सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि चैक या ड्राफ्ट आर्य- समाज मन्दिर अशोक विहार फेज १ दिल्ली के नाम भेजे।

पत्र व्यवहार—ए-१०३ अशोक विहार-३ दिल्ली पर करे।

—भगवतसिंह भल्ला, प्रधान

वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज बम्बईकी ११५वी वार्षिक सर्वसाधारण सभा दिनाक १६-९-१९९० को सम्पन्न हुई जिसमे आगामी वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

(१) श्री किशनचन्द जी अग्रवाल	मैनेजिंग ट्रस्टी
(२) श्री डा० अश्विनिभाई व पटेल	ट्रस्टी
(३) श्री केवलभाई एन मकवाणा	ट्रस्टी
(४) श्री गणपतराय जी आर्य	प्रधान
(५) श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय	मन्त्री
(६) श्री करसनदास जे राणा	कोषाध्यक्ष

पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी

(पृष्ठ ४ का शेष)

उनके पूर्ववर्ती सम्पादक प० देवीदत्त शुक्ल आदि के सम्पादन काल मे रहा। स्मरण रहे कि आज से ९० वर्ष पूर्व प्रकाशित 'सरस्वती का सम्पादन काशी नगरी प्रचारिणी सभा के सस्थापक आचार्य श्याम सुन्दरदास अपने कतिपय सहायको के साथ करते थे और तीन वर्ष पश्चात् ही आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने रेलवे की अपनी अच्छी-खासी नौकरी को लात मार कर हिन्दी प्रेमी बगाली बाबू हरिकेशव देव घोष (इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद के सस्थापक) के आग्रह पर इसके सम्पादन का गुरुतर दायित्व स्वीकार किया था। श्री द्विवेदी को आधुनिक हिन्दी के सस्थापक स्तम्भ के रूप मे मान्यता प्राप्त है। भैया साहब ने भी आचार्य द्विवेदी जी की परम्परा का पूरी तरह पालन किया।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसका समुचित स्थान दिलाने वालो मे चतुर्वेदी जी का स्थान बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन सेठ गोविन्ददास तथा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कोटि मे गिना जाता था। १९८४ मे उन्हे केन्द्रीय सरकार ने पद्म भूषण से सम्मानित किया। जब उन्होने अनुभव किया कि सरकार साहित्यकारों को सम्मानित तो करती है किन्तु राष्ट्रभाषा को उसका न्यायपूर्ण स्थान देने मे सकोच करती है तथा उर्दू को द्वितीय भाषा के रूप मे थोप रही है तो उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिये गये एक लाख के 'भारत भारती, पुरस्कार को ठुकरा दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मै एक साधारण आर्थिक स्थिति के माता पिता की सन्तान हू। मैने अपने जीवन मे कभी एक लाख रु० इकट्ठा नही देखा। इस दृष्टि से इस प्रलोभनीय राशि का पुरस्कार मुझे स्वीकार करने में सकोच नहीं होना चाहिए था। किन्तु राष्ट्रभाषा को उचित सम्मान न देने वाली सरकार से पुरस्कार लेना मैं किसी भी दृष्टि से उचित नही समझता। इनके इस स्वाभिमान और त्याग के देश स्तब्ध रह गया। आदमी हो तो ऐसा। अन्त मे जनता ने ही अपनी ओर से सवा लाख रु० एकत्र करके उनके चरणो मे अर्पित किया।

चतुर्वेदी के निधन से द्विवेदी काल का अन्तिम देदीप्यमान नक्षत्र भी अस्त हो गया। दिवगत विभूति के प्रति सश्रद्ध विनम्र श्रद्धाजलि !

—पजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ

विशेषांक संग्रहणीय रहा

● आर्य सन्देश का "हैदराबाद-सत्याग्रह स्मृति अक' प्राप्त हुआ। विशेषाक वास्तव मे काफी सुन्दर एव आकर्षक बन पाया है। हैदराबाद-सत्याग्रह के सम्बन्ध मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। अत पत्रिका का यह अक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा सग्रहणीय रहा है। आपके कुशल प्रकाशन के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य, मन्त्री-आर्य युवक परिषद खोहाला (रोहतक)

महात्मा गांधी

(पृष्ठ ५ का शेष)

दायिक सोच वाले मुसलमानो ने उन्हे कदापि अपना नेता स्वीकार नही किया और न ही कांग्रेस को कभी अपनी पार्टी माना। बल्कि वे अंग्रेज परस्त साम्प्रदायिक संगठन मुस्लिम लीग को ही अपना संगठन मानते रहे। गांधी जी के विरुद्ध संकीर्ण हिन्दुत्ववादियो का होना इसलिए भी सहज था क्योंकि वे धर्म को व्यक्तिगत जीवन की चीज मानते थे अत राजनैतिक जीवन मे उसका हस्तक्षेप उन्हे स्वीकार नही था हालांकि धर्म के मूल तत्व दया सत्य करुणा परोपकार आदि को उन्होने राजनीति के भी दिशा दर्शक सिद्धान्तो मे स्थान दिया था

सरदार पटेल को छोड़कर नेहरू जी का प्रधानमंत्री के रूप मे चुनाव करने के पीछे भी उनकी राष्ट्रीय एकता और स्वतन्त्रता प्राप्ति की अदम्य लालसा थी जिन्ना और पटेल मुस्लिम और हिन्दू सम्प्रदायो के प्रतीक बन गये थे ऐसी स्थिति मे राष्ट्र को अखण्ड रखने के लिए धर्म निरपेक्ष नेहरू का चयन उनकी मजबूरी और उस समय की जरूरत भी थी

आज राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ भाजपा के लोग गांधी जी से काफी परहेज करते हैं और उनकी देखा देखी हमारे अनेक से आर्य समाजी भी उनकी कटु आलोचना करते हैं। इस आलोचना से बजाय लाभ होने के हिन्दुओ को नुकसान ही हुआ है। आज दुनिया मे साम्यवादी व्यवस्था का यदि कोई विकल्प है तो वह एकमात्र गांधीवादी विचार धारा है। यदि आप गांधी जी या गांधीवादी विचारधारा को नकारते हैं तो उसका सीधा सा मतलब साम्यवादी व्यवस्था का स्वीकार करना है। यदि आप वास्तव मे ही साम्यवादी हैं तो बेशक गांधी जी की बुराई कीजिये। वास्तव मे गांधीजी की आलोचना ने ही युवा पीढ़ी को साम्यवाद की ओर धकेला है। इसी भय से आज भारतीय जनता पार्टी जैसी हिन्दूवादी पार्टी ने भी गांधीवादी समाजवाद को अपने घोषणा पत्र मे अपना लिया है। आज राजनीति आर्थिक सिद्धान्तो पर आधारित है। गांधी जी ने भारतीय धर्म और संस्कृति परिवेश और परिस्थितियो के अनुरूप अर्थव्यवस्था दी। अतएव हमारे लिए वही सहज स्वीकार्य होनी चाहिए। साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर आज राष्ट्रीय स्तर पर उनका हमे फिर से मूल्यांकन करना होगा

[प्रवक्ता सनातन धर्म कालेज पलवल १२११०२]

अजमेर के दयानन्द शोधपीठ को मान्यता

अजमेर। दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मे गत आठ वर्षों से संचालित दयानन्द शोधपीठ को अजमेर विश्वविद्यालय ने उच्च अनुसंधान केन्द्र के रूप मे गत वर्ष से ही मान्यता प्रदान कर दी थी। इस शोधपीठ मे वैदिक संस्कृत एवं अन्य निर्धारित विषयो मे अब एम फिल / पी एच डी / तथा विद्यावारिधि के छात्र छात्राओ के प्रशिक्षण के लिये सुयोग्य प्राध्यापको की सुव्यवस्था कर दी गई है। साथ ही शोधार्थियो के मार्ग दर्शन के लिये एक अतिरिक्त एम ए एम फिल विदुषी की शोध सहायक के रूप मे नियुक्ति भी कर दी गई है जो शोधार्थियो को आगे वाङ्मय संस्कृत सभाषण प्रशिक्षण देगी। शोधपीठ के निदेशक प्रो० श्री दत्तात्रय जी आर्य ने सूचित किया कि राज्य सरकार द्वारा गत दो वर्षों से तकनीकी आपत्तियो के कारण रोका गया उसका अनुदान भी राज्य सरकार द्वारा पुन प्रारम्भ कर दिया गया है। उन्होने यह भी सूचित किया कि आर्य समाज शिक्षा सभा ने अब योग्य शोधार्थियो को २००) दो सौ रु० मासिक छात्रवृत्ति भी देने की व्यवस्था कर दी है।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No 32387/77 Post in N D P S O on 4 5 10-1990 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्य समाज मन्दिर बी० जे० पश्चिमी शालामार बाग दिल्ली में भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन विजयदशमी के अवसर पर श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर ने किया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति प्रतिदिन यज्ञ करते हैं परमात्मा का स्मरण करते हैं वे आत्मिक उन्नति को तो प्राप्त करते ही हैं। वे अपने जीवन को सुगन्धिमय बनाते हुए अपने साथियों मित्रों सुहृदों बन्धु बान्धवों को भी श्रेष्ठ मार्ग की ओर चलाते हैं। इस प्रकार उनको सामाजिक यश भी प्राप्त होता है। वे सुख समृद्धि एवं वैभव को प्राप्त होते हैं। श्री स्वामी जी महाराज ने सभी आर्यजनों का साधुवाद किया तथा यज्ञशाला का निर्माण करने के लिए बधाई भी दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यहां पर प्रतिदिन यज्ञ होगा। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कहा कि आज विजय दशमी का पर्व हम मना रहे हैं। यह पर्व दुष्टता के ऊपर सज्जनता की विजय है। हमारा कर्तव्य है कि हमारे अन्दर जो भी बुराइयां हैं उन्हें दूर करें परमात्मा से भी हम यही प्रार्थना करते हैं— दुरितानि परासुव। हम अच्छे मनुष्य बनें हम सच्चे बनें। श्री डा० महेश विद्यालंकार ने कहा कि आर्य समाज के दस नियम हैं। इनमें से पांच में सत्य की बात कही गई है। सत्यार्थप्रकाश भी यही कहता है। हमें सच्चा बनना चाहिए। प० परमानन्द ने इस अवसर पर कहा कि आर्य समाज सब का कल्याण चाहता है। वार्षिकोत्सव के अवसर पर चार दिन की वेद कथा हुई। प० जैमिनी शास्त्री प० प्रमचन्द श्रीधर डा० महेश विद्यालंकार और प० परमानन्द के प्रवचन हुए। आचार्य यशपाल सुधांशु यज्ञ के ब्रह्मा थे। इस अवसर पर दानदाताओं को सम्मानित भी किया गया।

वेद प्रचार दिवस सम्पन्न

[illegible] मण्डलि की ओर से मन्दिर मार्ग आर्य स्त्री समाज में २-९-९० को प्रा[illegible] महिला सभा की उपप्रधाना श्रीमती सरला जी महता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम यज्ञ डा० चन्द्रप्रभा तथा कृष्णा रसवन्त ने कराया ध्वजारोहण श्रीमती शकुन्तला जी गुप्ता के करकमलों से हुआ। भिन्न ९ समाजों की बहनों ने वेद गान तथा कविता गाई। वेद मन्त्रों की प्रतियोगिता में बहनों ने भाग लिया निर्णायिका श्रीमती सुशीला जी महत्ता तथा डा० चन्द्रप्रभा जी थी। प्रथम श्रीमती पुष्पा जी साहनी द्वितीय श्रीमती शकुन्तला जी गुप्ता तृतीय श्रीमती सावित्री जी चौधरी रहीं। श्रीमती सरला जी मल्होत्रा की ओर से सभी को वैदिक साहित्य भेंट किया गया यदि राजा और प्रजा वेद के अनुरूप अपने जीवन को ढाल लें तो आज राष्ट्र की जो विकट स्थिति है वह कभी न होती। आत्मदाह करने वाले नवयुवकों के प्रति सम्वेदना तथा श्रद्धांजली तथा आरक्षण विरोधी प्रस्ताव पास किया गया जिसमें सरकार से अनुरोध किया गया कि नवयुवकों की भावनाओं का ध्यान रखते हुए आरक्षण का सुधार करें। अन्त में मन्दिर मार्ग की बहनों ने बड़ा आतिथ्य किया। शान्ति पाठ के साथ वेद प्रचार दिवस सम्पन्न हुआ।

कृष्णा रसवन्त मन्त्रिणी

सेवा में—

श्री पुस्तकालयाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ से मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० डी० नं० (सी०)७५६

साप्ताहिक ओ३म कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १३ अंक ५२ रविवार, ८ अक्तूबर, १९९० विक्रमी सम्वत् २०४७ दयानन्दाब्द १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

आर्य समाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

राजधानी की समस्त आर्य समाजो व आर्य सस्थाओ की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का १०७वा निर्वाणोत्सव १८ अक्तूबर को रामलीला मैदान नई दिल्ली मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आर्य समाज कोई मत, मजहब या पन्थ नहीं है बल्कि यह एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र के लिए की थी। उन्होंने कहा कि वेदो के अनुसार सभी मनुष्य समान हैं वेदों का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा ने चार ऋषियो के माध्यम से प्राणी मात्र के कल्याण के लिए दिया था। यदि आज स्वामी दयानन्द की विचारधारा को अपना लिया जाये तो देश वर्तमान के भीषण सकटों से उबर सकता है। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि २३ से २६ दिसम्बर तक राजधानी में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में १० लाख नर-नारी भाग लेंगे और उन्होंने सभी आर्य महानुभावों से तन मन-धन से सक्रिय सहयोग देकर इसे सफल बनाने का आह्वान किया।

सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री प० रामचन्द्र वन्देमातरम् ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें श्रद्धाजलि अर्पित की।

इस अवसर प० वन्देमातरम् ने प० राजवीर शास्त्री को श्री केदारनाथ दीक्षित वैदिक विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल एव महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने आर्य सन्देश का "प० शिवकुमार शास्त्री स्मृति अक एव ऋषि निर्वाणोत्सव विशेषाक" प० वन्देमातरम् को भेंट किया। उन्होने इस विशेषाक का लोकार्पण करते हुए कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य सन्देश के उपयोगी विशेषाक प्रकाशित करके सराहनीय कार्य किया है। इस मौके पर केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री अजय सहगल एव कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता श्री सुखदयाल भूटानी को स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए पूर्व सासद श्री रामचन्द्र विकल ने कहा कि गृह युद्ध के कगार पर खडे देश के लिए आज भी स्वामी दयानन्द के उपदेश अत्यन्त प्रासगिक है। श्री विकल ने शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए योग के महत्व पर भी प्रकाश डाला। समारोह में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० सुषमापाल मल्होत्रा- प्रो० प्रकाशवीर शास्त्री, केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री आदि ने भी महर्षि दयानन्द द्वारा समाज व राष्ट्र के प्रति की गई अमूल्य सेवाओं का स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

इससे पूर्व प्रात. प्रख्यात वैदिक विद्वान प० यशपाल सुधांशु के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें हजारो नर नारियों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात स्वामी जीवनानन्द ने ओ३म् ध्वजारोहण किया एवं सभी आर्य महानुभावों से अपने घरों पर ओ३म् का ध्वज लगाने का अनुरोध किया।

प्रस्तुति—विमलकान्त शर्मा, मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव तथा बिहार के पूर्वमन्त्री श्री रामलखनसिंह का अभिनन्दन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए बिहार सभा की ओर से स्वामी जी महाराज को २० हजार रुपए की थैली भेंट

पटना १४ अक्तूबर, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का ६४वां वार्षिक अधिवेशन मुनीश्वरानन्द भवन नया टोला पटना मे आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। अधिवेशन मे बिहार प्रान्त के कोने कोने से आए ११२० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। स्वामी जी ने ओ३म् ध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिनिधियों को सम्बोधन करते हुए कहा कि आर्य समाज की बढ़ रही लोकप्रियता तथा समाज के जागरूक कार्यकर्ताओ के सतत प्रयास से हम यह आशा करते हैं कि इसी सदी के अन्त तक विश्व में आर्य सभ्यता का विकास होगा। बिहार के आर्यों को सगठित देखकर आर्य समाज को नई शक्ति मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। स्वामी जी ने कहा सबको समवेत रूप से बिहार मे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयत्नशील रहना है।

इस अवसर पर प्रतिनिधियों की विशाल उपस्थिति में श्री भूपनारायण शास्त्री आगामी ३ वर्ष के लिए पुन सर्व सम्मति से प्रधान चुने गए। उनके साथ मन्त्री प्रो. योगेन्द्र नारायण तथा कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र प्रसाद निर्वाचित हुए।

इसके उपरान्त स्वामी जी ने बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

(शेष पृष्ठ २ पर)

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद मनन

पाणि ग्रहण

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्त मया पत्या जरदष्टिर्यथास ।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्य त्वा दुर्गार्हपत्याय देवा ॥
ऋ० १० ८५ ३६

जिससे हो सौभाग्य हमारा इसीलिए यह प्यारा प्यारा।
देकर तुमको स्वत्व सहारा ग्रहण किया है हाथ तुम्हारा ॥
जो युवा काल मे हाथ लिया
सब भाग्य परस्पर बाध लिया
पति ने वृद्धावस्था तक का
प्रिय साथ वधू का माग लिया।
दो नदियो का एक किनारा पति पत्नी की जीवन धारा।
देकर तुमको स्वत्व सहारा ग्रहण किया है हाथ तुम्हारा ॥
भगवान और अर्यमान वही
सविता जग सृजक महान सही
सबका सधर्ता परमेश्वर
उसके सेवक विद्वान सही।
वरदान सभी का उजियारा हुइ साथ यह तरुणी तारा।
देकर तुमको स्वत्व सहारा ग्रहण किया है हाथ तुम्हारा ॥
भौतिक वैभव भले न पाओ
किन्तु आत्मिक उन्नति लाओ
लेकर आशीष जन का
मेरी हृदय स्वामिनी आओ।
धन पोषण सरक्षण सारा अधिकार स्नेह तुमको वारा।
देकर तुमको स्वत्व सहारा ग्रहण किया है हाथ तुम्हारा ॥

—देवनारायण भारद्वाज

सम्पादक के नाम पत्र

मालूम हुआ है आर्य सन्देश का हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का विशेषांक छपा है। दुःख की बात है कि हम देखने को भी नहीं मिला। आर्य समाज प्रीत विहार और निर्माण विहार मे भी नहीं आया जबकि मैंने ८ महीने लाहौर मे महाशय कृष्ण जी के आदेशानुसार और शोलापुर मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के नेतृत्व मे दिनरात काम किया। पजाब के सत्याग्रहियो के जत्थे पहले गुरुदत्त भवन लाहौर मे आते थे फिर १२ दिन बाद शोलापुर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के शिविर मे आते थे महाशय कृष्ण जी ने यह व्यवस्था मेरे जिम्मे लगाई हुई थी मेरे साथ वन्द जी के पिता जी मुशीराम जी भी थे। जब पजाब के जत्था का जोर कम पड़ गया तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने मुझे शोलापुर बुला लिया था। वहा २४ घण्टे काम रहता था। मै महाशय कृष्ण जी के जत्थे मे शामिल होकर सत्याग्रह करना चाहता था परन्तु महाशय कृष्ण जी ने और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने मुझे रोक लिया था।

जब पाकिस्तान में जब भूचाल आया तो हजारो आर्य नर नारी शरणार्थी बनकर लाहौर आये तो मुझे महाशय कृष्ण जी ने मेरे जिम्मे बहुत काम सौंपा दिया था। आपकी जानकारी हेतु यह लिख रहा हू।

—जगनराम भी १०९ प्रीत विहार दिल्ली ९२

श्री वजरतसिंह लाहौर मे रह कर पढ़े हैं—विभाजन से पूर्व लाहौर भारत मे था। यहा रह कर उन्होने यूनिवर्सिटी की शिक्षा समाप्त की। बाद मे वे कुछ वर्षों के लिए वे बरिस्टर पढ़ने विलायत गए थे। इसी प्रकार गाधी जी भी बरिस्टर बनने विलायत गए थे। क्या उन्होने भी अग्रेजी को अपनी मातृभाषा माना? यद्यपि बापू कुशवन्तसिंह से अच्छी और स्वच्छ अग्रेजी लिखते थे। इसके विपरीत नेहरू जी तो ० वर्ष की अवस्था तक ब्रिटेन के सर्वोच्च वर्ग के स्कूलो और विश्व विद्यालयो मे पढ़े। परन्तु क्या उन्होने अग्रेजी को अपना मातृभाषा माना? भारत की कोई भी भाषा हमारी मातृभाषा हो सकती है परन्तु अग्रेजी कदापि नही। अग्रेजी खुशवन्तसिंह को रोजी-रोटी कमाने की भाषा है साधन है उनकी मातृभाषा नही। उनकी मातृभाषा उर्दू मिश्रित पजाबी है।

—श्रीमती कमला रत्नम् १/७ हौज खास नई दिल्ली ११००१६

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

(पृष्ठ १ का शेष)

द्वारा १४ सुसज्जित कमरो वाले नव निर्मित अतिथिशाला का उद्घाटन किया। स्वामी जी ने इस निर्माण कार्य को वर्तमान पदाधिकारियो की कर्मठता की महान् उपलब्धि कहते हुए विचार प्रकट किया कि बिहार मे आर्यसमाज के प्रचार माध्यम का यह स्थायी केन्द्र हो गया है।

इस अवसर पर सार्वजनिक सभा मे बिहार सभा के अधिकारियो की ओर से श्री स्वामी आनन्दबोध जी म स्वनी मुख्यमन्त्री श्री लालू प्रसाद यादव और राज्य के पूर्व मन्त्री श्री रामलखनसिंह का अभिनन्दन किया गया और मान पत्र अर्पित किया।

मुख्यमन्त्री श्री यादव ने कहा कि सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन, आडम्बर पाखण्ड और अन्ध विश्वासो को दूर करने मे आर्य समाज की क्रान्ति चिरस्मरणीय रहेगी। उन्होने अपनी वचनबद्धता को दोहराते हुए कहा कि बिहार मे आर्य समाज के कार्य मे हर प्रकार की रूकावट को सरकार दूर करेगी। स्वामी जी महाराज ने उन्हे अपना आशीर्वाद देते हुए कहा आर्य समाज एक सार्वभौमिक आन्दोलन है। इसने भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे सर्वाधिक त्याग और बलिदान दिया है किन्तु कभी भी कोई अधिकार नही मागा। समारोह मे श्री रामलखनसिंह यादव श्री भूपनारायण शास्त्री तथा अन्य कई लोगो ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

सभा द्वारा अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी द्वारा निम्न विद्वानो का अभिनन्दन किया गया और उन्हे एक एक शाल भेट की—(१) प० वासुदेव शर्मा (२) श्री रामलखनसिंह यादव (३) प० गगाधर शास्त्री (४) प० सवन्द्र शास्त्री (५) प० उमाकान्त शास्त्री।

अन्त मे प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री ने सभी अतिथियो और प्रतिनिधियो का धन्यवाद करते हुए सभा को विसर्जित किया।

आर्य सन्देश का हैदराबाद सत्याग्रह विशेषांक प्राप्त कर अतीव हर्ष हुआ।

ओजपूर्ण सामग्री पूरित विशेषांक अभिराम
सग्रहणीय सुसम्पादित प्रयत्न है और ललाम।

—महाश्वेता चतुर्वेदी बरेली

कृपया हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशताब्दी आर्य सन्देश के विशेषांक पर बधाई स्वीकार करे। जिसमे भारत को एकता अखण्डता साहिष्णुता व र यता को इस रोचक ढग से लिखा गया है कि जिसके हाथ मे वह अक पहुच जाता है वह बिना पूरा पढ़े हुए उसे छोड़ता ही नही। अब था वह अक पढने के लिए लखनऊ क्षेत्र मे घूम रहा है अत उसकी अनुपस्थिति मे ही मैं कुछ शब्द लिख रही हू।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की विजय से भारत का दक्षिण भाग बच गया और भारत अनेक खण्डित होने से बच गया। आर्य वीरो की बलिदान गाथा व विजय का वृत्तान्त युग युगान्तर तक चलती रहेगी। हमारे आगे आने वाली पीढ़ी को देश प्रेम व रक्षा के लिये मन से सदा बलिदान करने की प्रेरणा देता रहेगी। केवल आज आर्य समाज ही आर्य सत्याग्रह सफल हुआ जब कि भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति में लगभग सौ वर्ष लग गये यह सब महर्षि दयानन्द सरस्वती का दान है जो हमको देश भक्ति के महिमा व स्वराज्य की महत्ता का पाठ सिखा गये।

पुनश्च टाइम्स आफ इण्डिया का समाचार पत्र का शनिवार दिनाक १५ सितम्बर १९९० के चौथे पृष्ठ पर छपा है कि Scheduled Caste व Scheduled Tribaes की जातियां बौद्ध मत मे परिणत हो रही है सम्भवत इसी २९ सितम्बर को आगरा मथुरा एटा मनपुरी और अलीगढ़ प्रान्त मे। क्या इस घटकती हुई जनता को दिशा ज्ञान देकर सगठित करने का कोई मार्ग निकाला जा सकता है। आज कम वीरो व महान् नेताओ की ओर हम आशा लगाये बैठे हैं। वेद का ज्ञान तो सब मनुष्यो के लिये है जो सबसे प्रेम करने का आदेश देता है।

प्रिय सवस्य पश्यत उत शूद्र उत आर्ये'

—कमला प्रधान स्वस्तिका नया हैदराबाद लखनऊ

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

दीपावली के दीए का सन्देश



अमावस्या की घनी अन्धेरी रात मे दीपको की एक लम्बी कतार निश्चय ही मन को आल्हाद एव स्फूर्ति देने वाली होती है। दीपावली का दीया अकेला नही होता। यह अकेला हो तो इसका कोई महत्व ही नही है। इसका महत्व तो पक्ति होने मे है। इसका महत्व तो विस्तार मे है। इसका महत्व तो एक सूत्रता मे है। इसका महत्व तो सगठन मे है। यह जरूरी नही है कि सभी दीयो का रग रूप एक ही हो। ये दीए अलग अलग रग रूप के हो सकते है। ये बडे-छोटे भी हो सकते है। ये दीए स्थान विशेष की परम्परा के अनुसार वृत्ताकार या चौकोर भी हो सकते है। आधुनिक विज्ञान के कारण यह आवश्यक नही है कि सभी दीयो मे से एक सी रोशनी निकले। रोशनी कम या ज्यादा हो सकती है। रोशनी का रग भी अलग हो सकता है। रोशनी कम देर चलने वाली मोमबत्ती या ज्यादा देर चलने वाली बिजली के बल्ब की हो सकती है। यह रोशनी आखो को लुभाने वाली हो सकती है। यह रोशनी चुधियाने वाली हो सकती है। पर एक बात तो है कि यह रोशनी होनी है। और रोशनी वह होती है जो रास्ता दिखलाए। जो प्रकाश दे। जो प्रकाश सही रास्ता दिखलाए, उसी को प्रकाश दिखाना कहते है। जो गलत रास्ता दिखलाए, वह रास्ता दिखलाना नही है, वह प्रकाश भी नही है। गलत रास्ता तो अविद्या, अधकार तथा असत्य है। अत रास्ता वही सही है जो सत्य का प्रकाश करे, जो सत्य के अर्थ का प्रकाश करे, जो सत्यार्थ प्रकाश हो। अत सत्यार्थ प्रकाश दिखलाने वाला आज के दिन याद आता है। उसका तो विशेष महत्व है। वह सत्य का मार्ग आलोकित करके, आज ही के दिन तो अनन्त मे विलीन हो गया था।

वह हमारा मार्ग प्रशस्त करने वाला दीपक था, वह हमारा दीपाधार था। उसने हमे सामाजिकता दी। उसने हमे सामुदायिकता दी। यही सन्देश दीवाली के दीए का है। केवल अपना ही मत सोचो, कुछ दूसरे का भी सोचो। स्वार्थी मत बनो, परमार्थी बनो।

"अय निज परो वा इति गणना लघु चेतसाम्, उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।" इस भावना को केवल कागजो पर ही न रहने दो बल्कि इस बात को अपने जीवन मे भी उतार लो। मनुष्य को केवल अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिए, बल्कि सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आदमी चाहते तो है, कि विश्व हमारा गाव हो। वे विश्व नागरिक हो। आधुनिक वैज्ञानिक विकास ने विश्व को बहुत निकट भी ला दिया है, पर ऐसा लगता है कि यह सब मुहावरे की भाषा रह जाएगा, क्या न लोग तो सकीर्णताओ मे जकडे जाने लगे है। उनके अन्दर क्षेत्रीयता, प्रान्तीयता, कूट कूट कर भरी है। वे कबीलाई ही रह जाना चाहते है। क्या हो गया है कि वे केवल अपने कबीले के साथ ही तादात्म्य कर पाते है। उनकी आत्मीयता केवल उन्ही से क्यो स्थापित हो पाती है। उन्हे भावनात्मक सुरक्षा वही क्यो मिलती है। यह विज्ञान की दृष्टि से समुन्नत पीढी क्यो उलटी दिशा मे लौट जाना चाहती है? क्य हमारे ऋषि, मुनियो का, महापुरुषो का, राम और कृष्ण का, महावीर और बुद्ध का, नानक और दयानन्द का, गाधी और नेहरू का यही सन्देश था। उनके विचारो मे तो एक महान उदात्तता थी। आज का पढा लिखा आदमी क्यो सकीर्ण हो रहा है।

पिछले दिनो नेल्सन मण्डेला भारत आए। उन्हे यहा भारत रत्न से सम्मानित भी किया, पर क्या इसकी भावना को अन्तर्मन म लोगो ने स्वीकार किया। उसने रगभेद के विरुद्ध लडाई लडी। गाधी ने भी तो यही किया था। सारा भारत उसके साथ था। इस काम मे सारा विश्व उसके सम्मोहन मे बधा था। मण्डेला ने बार-बार गाधी का नाम लिया। वे वे भारतीयता के आज आदर्श पुरुष है। भारतीयो ने अपनी विचारधारा को उसके माध्यम से क्रियान्वित होते देखा है।

वास्तव मे तो महत्व क्रिया-वयन का ही है। ज्ञानवान होना अच्छा है, पर क्रियावान होना उससे अच्छा है। आओ हम भी सबको समान बनाए। पर हमारी सस्कार हमारा मण्डल तो जोडते नही तोडते है, वे विभाजक रेखाए खीच रहे है। वे विश्व नागरिकता म कबाइली नागरिकता की ओर लौट रहे है। इससे तो देश को कुछ भी न मिलेगा।

दीपावली का दीया एकसूत्रता का सन्देश देता है, प्रकाश का सन्देश देता है। यह दीया एक ध्येय का सन्देश देता है, यह ऊर्ध्वगमन का सन्देश देता है।

आओ हम अपनी सामुदायिकता को पहचाने और सगठित हो जाए ताकि सब मिलकर प्रकाशमार्ग को प्रशस्त कर सके।

—डा० धर्मपाल

हिन्दी का प्रयोग सचमुच कितना

—हरिबाबू कंसल

कई राज्यो की राजभाषा हिन्दी है तथा समय समय पर इस बात के आदेश जारी हुए है। कि उनके सभी विभाग, कार्यालय, निगम मण्डल एव सस्थान अपना काम काज हिन्दी मे ही करे। इस प्रकार की घोषणाए उनके मुख्य मत्री भी समय-समय पर करते रहे है। नए चुनावो के बाद भी उनके मुख्यमत्रियो ने इस प्रकार की घोषणाये की है। किन्तु यह तथ्य है कि उनके कई विभाग आदेशो की उपेक्षा करते रहे है।

प्रश्न यह है कि जब हिन्दी मे ही समस्त काम किए जाने के आदेश एक बार जारी हो चुके है उन्हे बार-बार दोहराने की आवश्यकता क्यो पडती है। यदि आदेशो की अवहेलना करने वाले अधिकारियो के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाती है तो बार-बार घोषणाये करने अथवा नए-नए आदेश जारी करने की आवश्यकता नही रहती।

हिन्दी भाषी राज्य सरकारो के कई निगम, बिजली बोर्ड, वित्त निगम, आदि आज भी अपना अधिकाश काम अग्रेजी मे कर रहे है। उनके पत्र अग्रेजी मे जारी होते है, उनके विज्ञापन हिन्दी समाचार-पत्रो मे भी अग्रेजी मे छपते है, नए भर्ती करते समय अग्रेजी टाइपिस्टो तथा अग्रेजी आशुलिपिको के लिए आवेदन मगाए जाते है, टाइपराइटर पहले से ही अग्रेजी के काफी सख्या मे है तथा नए टाइप-राइटर भी अधिकाशत अग्रेजी के खरीदे जाते है। इन राज्यो मे ऐसी कोई प्रभावी व्यवस्था नही है, न ऐसी समितियो अथवा निरीक्षण दल है जो समय-समय पर विभिन्न विभागो मे जाकर यह देखे कि सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार किस प्रकार कार्य हो रहा है तथा कौन-कौन सा काम अभी भी अग्रेजी मे किया जा रहा है। जब तक इस प्रकार की व्यवस्था नही होगी और आदेशो की अवहेलना करने वाले अधिकारियो के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई नही की जाएगी तब तक मुख्य मत्रियो की घोषणाये केवल घोषणाये ही रहेगी। नियमो की अवहेलना करने वाले अधिकारियो के विरुद्ध कडी कार्रवाई होने से ही उपेक्षावृत्ति वाले अधिकारी सचेत हो पायेगे। क्या हिन्दी भाषी राज्य ऐसे निरीक्षण दल गठित करने की कार्रवाई करेगे जो हिन्दी के प्रयोग की वास्तविक स्थिति का सही जायजा ले। इन निरीक्षण दलो मे कुछ गैर सरकारी व्यक्ति भी शामिल किए जाने चाहिये।

सानुरोध मुझे प्रसगवश कुछ कहना है

दिनाक ७ अक्टूबर के आर्य सन्देश मे प्रकाशित सम्पादकीय विजयादशमी भारतीय चेतना की उदात्तता का प्रतीक जो डा० धर्मपाल द्वारा लिखित है पठनीय है। इसम उन्होने भगवान राम के स्तुतिगान के द्वारा भारतीय जनमानस म उदात्त एव मानवीय मूल्यो की प्रतिष्ठा के सम्बन्ध मे बतलाया है।

दूसरे महात्मा गाधी एक मूल्याकन लेख भी रोचक है। यह डा० धर्मचन्द्र विद्यालकार का है जिसमे उन्होने राजनीति के वातावरण मे शोषण, दमन तथा हिंसा पर गाधी दर्शन का प्रभाव विशेष महत्वपूर्ण बतलाया है। कहना है कि आज क्षण जो आज की ज्वलन्त समस्या है इसका समाधान गाधी जी के सार्वभौमिक तत्व ही है सत्य, अहिंसा एव प्रेम यह तत्व है। साम्प्रदायिक झगडे एव प्रेम व्याप्त है। साम्प्रदायिक झगडे एव छात्र असन्तोष का निदान गान्धी जी सिद्धान्तो के द्वारा सम्भव है।

—सुबोध सारस्वत ए-२-ए/६४ कपूरी नई दिल्ली

आरक्षण-संरक्षण-समाधान

—मूलचन्द गौतम

हमारे नेताओं ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए बड़ा संघर्ष किया था। तन मन धन सब न्यौछावर किया था। जेलो मे यातनाये भी सही थी। परन्तु एक वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की नीति ने देश को दो भागो बटवा दिया। तथाकथित बहु सख्यको के बिना पूछे ही देश का बटवारा नेताओ ने राज्य सत्ता की लालसा मे कर डाला। जो वर्ग देश मे २३ प्रतिशत था उसे ३० प्रतिशत देश का भाग दे दिया गया। परन्तु वोट बनाने तथा बनाये रखने के लिए उस वर्ग को आधी मे अधिक जनता को यही रोक लिया उन्हे अपने नए मिले देश म जाने से जानबूझ कर रोका। इतना ही नही आसाम जैसे क्षत्रो मे बगला देश से बीसियो लाख इसी वर्ग के व्यक्तियो को उस क्षत्र पर अपना राज्य लादने के लिए लाया गया। यह कोई छिपी बात नही है।

डा० भीमराव अम्बेडकर हरिजनो के लिए भी अलग क्षेत्र चाहते थे परन्तु महात्मा गाधी के व्रत पर उन्होने अपना दावा तो वापस ले लिया परन्तु उसका प्रभाव जो देश मे पडा उसका निराकरण न हो सका। फलत सविधान म जनजाति अनुसूचित जातियो के नाम पर उन्हे १५ प्रतिशत तथा साढे सात प्रतिशत का आरक्षण दिया गया। खेद है कि चालीस वर्ष से ऊपर हो जाने पर भी इन जन जातियो तथा अनुसूचित जन जातियो की सख्या आरक्षण मे केवल ११ प्रतिशत ही आ पाई है। क्या इन जातियो मे उठने का साहस नही है या इन्हे उठने का अवसर दिया ही नही गया इन गुत्थी को कौन सुलझाये ? इसी अक्टूबर १९९० मे दो मास समाचार पत्रो मे देखने का मिले है कि इन जनजातियो और अनुसूचित जन जाति के योग्य व्यक्तियो को भी आरक्षण का लाभ नही दिया गया। एक का कहना है कि उससे पच्चीस हजार की रिश्वत मागी गई जो वह दे नही सका और आत्महत्या करने पर मजबूर हुआ। दूसरे व्यक्ति ने श्रममन्त्री के निवास स्थान के सामने आत्मदाह करने का प्रयत्न इसलिए किया कि उसे आरक्षण का लाभ नही दिया गया।

चौ० चरणसिंह पिछडो के हिमायती थे अपना वोट बक बनाने के लिए। १९७८ मे वह सरकार म मन्त्री थे। मोरार जी देसाई ने चौ० चरणसिंह को एक झटका देने के लिए ही मडल गठित किया था। यह भी ध्यान रहे कि पिछडे वर्ग को अपने वोट बैंक मे लाने के लिए काग्रस सरकार ने भी एक आयोग बिठाया था। सविधान मे चूकि वर्ग की बात कही गई है जातिवाद आधार नही रखा गया है। अत श्री कालेलकर ने अपनी रिपोट तो दे दी पर साथ मे तीस पृष्ठो का एक पत्र भी साथ लगा दिया कि जाति पाति के आधार पर सरक्षण देना उचित नही है। सरकार ने इस रिपोट को अलमारी मे बन्द करके रख दिया था। मडल आयोग एक गैर काग्रेसी सरकार ने गठित किया था परन्तु रिपोट आते समय काग्रस सरकार सत्ता मे थी। इस रिपोट पर कार्यवाही नही की गई। इसका भी कारण है। श्री जवाहर लाल नेहरू ने मुख्यमन्त्रियो को एक पत्र लिखा था जिसका अवतरण दिया जा रहा है।

पत्र अवतरण :

मैंने मुख्य मन्त्रियो को पारस्परिक रूढिवादिता त्यागने व क्षमता बढने की सस्तुति की थी। इसकी आवश्यकता तब पडी जब जाति व समूह के आधार पर विशेष रियायते दी जाने लगी। मैं हाल म ही एक बैठक बुलाई जिसमे सभी मुख्य मन्त्री उपस्थित हुए और राष्ट्रीय एकता पर विचार किया। इसके तहत यह मत व्यक्त किया गया कि आरक्षण व सहायता आर्थिक स्थितियो पर दिया जावे न कि हम किसी रूप म अनुसूचित जाति व जन जातियो की सहायता देने के बारे मे निश्चित नियमो से बधे है और उन्हे सहायता की जरूरत भी है लेकिन फिर भी किसी प्रकार के आरक्षण विशेषकर नौकरियो मे क बिल्कुल पक्ष म नही हू। मै ऐसा भी दूसरे दर्जे या क्षमता का सख्त विरोध करता हू। वह क्षण जब हम दूसर दर्जे की बात करते है हम कुछ खो चुके होते हैं।

पिछडे वर्गो की सहायता देने का वास्तविक मार्ग उन्हे केवल अच्छी शिक्षा का अवसर दिलाना है। इसम सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी शिक्षा भी शामिल है। हाल ही म मैने दो निर्णय लिए जो बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहला विश्वव्यापी निशुल्क प्राथमिक शिक्षा और दूसरा मेघावी बालको व बालिकाओ की प्रत्येक स्तर पर बडी मात्रा मे छात्रवृत्ति। इसमे न केवल साक्षर शिक्षा पर यह बात लागू होगी, बल्कि तकनीकी विज्ञानपरक व चिकित्सकीय प्रशिक्षण मे भी इसका उपयोग हो सकेगा। मैं यह सुविधा मेधावी व योग्य बालको को ही देने पर जोर दे रहा हू क्योकि यही बालक बालिकाए देश का स्तर ऊचा उठा सकते हैं। मुझे सन्देह नही कि हमारे देश मे हिन्दी प्रतिभाओ का विशाल आरक्षित भण्डार है। परन्तु हम अगर उन्हे पर्याप्त अवसर द।

लेकिन यदि हम जातीय व साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण देते हैं तो हम मेधावी व योग्य छात्रो को पीछे छोड जाते है, मात्र दूसरे दर्जे व तीसरे दर्जे की बात ही बच जाती है। मुझे दुख है कि साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण का व्यापार कितनी दूर तक फैला है।

मुझे यह जानकर हैरत होती है कि पदो नतियां भी जाति या सम्प्रदाय के आधार पर होती है यह मात्र भूल नही बल्कि गम्भीर खतरा है। हमे पिछडी जातियो की हर प्रकार स सहायता करनी चाहिए लेकिन क्षमता की कीमत पर नही। हम अपने सावजनिक क्षत्र का दूसरे दर्जे के लोगो के साथ कैसे निर्माण कर सकते है। यह पत्र जवाहर लाल नेहरू के पत्र मुख्यमन्त्रियो को [सन १९४७-१९६४ ई० भाग पाचवा जो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा सन् १९८९ मे प्रकाशित हुआ है के पृष्ठ ४५६ ४५७ पर दिया है और दिनाक २७ जून सन् १९६१ का है] सार्वदेशिक दिल्ली के अक दिनाक २ ९ ९० से लिया है जिसका आभार प्रकट करते है।)

इस पत्र के प्रकाश मे मडल रिपोर्ट पर काग्रस सरकार कोई निर्णय कैसे ले सकती थी। जनता दल सरकार के प्रश्न पर और चौ० देवीलाल के पिछडे वर्ग का हिमायत को देखकर मोरार जी देसाई की भाति श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने इससे पहले कि चौ० देवीलाल इस पर सार्वजनिक रूप से आन्दोलन कर शीघ्रता की हडबडी मे इस रिपोर्ट का एक भाग लागू कर दिया। चूकि आरक्षण जातीय आधार पर है योग्यता और क्षमता को तिलाजलि दी जानी अनिवार्य है। योग्य और मेधावी छात्र छात्राओ म रोष फैल गया और आत्मदाह आत्मदाह आत्महत्या की जो होड चली वह आज भी जारी है।

सरकार का मुख्य काम है प्रजा के जान व माल की रक्षा करना। क्या सरकार सर्वतोभावेन प्रजा की रक्षा कर सकने मे सफल रही है। अनुसूचित जातियो और जन जातियो को आरक्षण तो दे दिया पर क्या उनमें से कोई आज तक सार्वजनिक क्षेत्र से किसी विधान सभा अथवा ससद का सदस्य बना है ? क्या सार्वजनिक क्षेत्रो मे उन्हे अपनी मर्जी स अपने वोट का खुले तौर पर प्रयोग करने दिया गया है क्या प्रजा के सभी वर्गो की समुचित शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है। क्या न्याय सब को सुलभ है ? क्या क्या देश मे अनाचार भ्रष्टाचार तथा बलात्कार बन्द हो पाया है ? ऐसे म सरकार मे बैठे लोग अपनी रक्षा के लिए कितना न्याय कर करा रहे है यह देखने की ओर किसी का ध्यान गया है ? क्या प्रजा सरकार के लिए ही है ? क्या सरकार प्रजा के लिए नही है ? क्या इस आरक्षण से सब को समुचित न्याय मिल सकेगा ? क्या इस प्रकार से देश म क्षमता मेधा को बचाया रखा जा सकेगा ? पहले तो देश मे रहने वाले सभी नागो के लिए सरक्षण की आवश्यकता है। उसकी ओर दृष्टि की गई है ? जसे यह जातिया वजूद मे आई हैं क्या यह राजनैतिक दल उसी प्रकार स नही बने हैं ? क्या इन राजनैतिक दलो को आरक्षण दिये जाने का प्रश्न नही उठेगा। सम्प्रदाय मत पथ जात पात और यह दल सभी एक प्रकार से सोचने और करते है। प्रत्येक दल हर प्रकार के बर्तावो स वोट खसने की सोचता है चाहे उन बस्तियो से देश का कितना ही नुकसान क्या न हो। यह भी तो देख कि कुल वोटो मे से कितने बक्सो मे पडते है और जो मैदान मे वोट लेने के लिये उतरते है उन्हे कितने कितने प्रतिशत वोट मिले है। जीतने वाले को कुल वोटो का जो उसके क्षेत्र म बनती हैं कितना प्रतिशत मिला है। यदि किसी भी जीतने वाले को क्षेत्र की वोटो का ५ प्रतिशत से कम मिला है उसे जनादेश किस मुख से कहा जा सकता है ? जनता दल कैसे अपने को जनादेश पर आया मान सकता है ?

देश को टुकडो मे बाटना देश के लिए हितकर कभी नहीं हो सकता। इन सम्प्रदायो, मतो, पथो जाति पातियो को आधार बना कर देश को टूटने से कौन बचा पायेगा ? (शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी अग्निवेश आर्यसमाज तो नहीं

–पं० राजवीर शास्त्री

दिनाक ९ ९ ९० को भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से स्वामी अग्निवेश ने जातीय आधार पर २७ प्रतिशत आरक्षण का समर्थन कर आर्यसमाज के सिद्धान्तो की अवहेलना की है आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द और दलित उद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द ने छोटी-छोटी जातियो मे बटे लोगो को एक करने मे अपना तन मन धन लगाया यहा तक कि स्वामी श्रद्धानन्द को तो इसी कारण अपने प्राण गवाने पडे आज उन्ही के अनुयायियो के मुख से उसी जाति पाति के आधार पर आरक्षण का समर्थन करना उनका अपमान है।

स्वामी अग्निवेश के इस अदूरदर्शी वक्तव्य से प्रतिभा सम्पन्न योग्य छात्रो को आघात लगना अस्वाभाविक नही है एक सुयोग्य निर्धन ब्राह्मण या क्षत्रिय पिछडा हुआ क्यो नही है ? और एक सम्पन्न मन्त्री का अयोग्य पुत्र पिछडे वर्ग से सम्बद्ध होने पर क्यो आरक्षण का अधिकारी है ?

क्या राष्ट्र का भविष्य अयोग्य हाथो मे जाकर और वर्ग भेद होकर सुरक्षित रह सकता है क्या आरक्षण की यह आग ऊच नीच के भेद-भाव उत्पन्न करके आगरा फतेहपुर जैसे झगडो को जन्म नही देगी आरक्षण की बात करना ही अदूरदर्शिता है। स्वामी अग्निवेश अपने यशोभाग के लिए आर्यसमाज का अपमान न करें। तथा अपना वक्तव्य वापिस लें। तथा इस पत्र के माध्यम से आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से निवेदन है कि वे जाति पाति के आधार पर होने वाले आरक्षण का स्पष्ट खण्डन करें।

जन्मना जायते शूद्र । कर्मणा द्विज उच्यते ॥ मनु० ॥

हमारे यहा जन्म से जाति नही कर्म से वर्ण व्यवस्था है इसी व्यवस्था के आधार पर राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है।

आज आवश्यकता आरक्षण की नही है आवश्यकता है गाव गाव मे शिक्षा का महत्व बताने की।

आरक्षण या सर्वनाशकरण

–रामशरण दास आर्य

सरकार ने वोट बटोरने व कुर्सी कायम रखने की राजनीति के लिए आरक्षण का सहारा लिया है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने जातिवाद का खण्डन किया है। कर्म करने को प्राथमिकता दी है। पिछडे वर्ग के लोग अपनी योग्यता से आगे बढ़े है। वे आर्य जगत मे पुरोहितो ब्राह्मणो का कार्य कर रहे है। इनको चारो वेदो का ज्ञान है। वे अच्छे लेखक व कवि भी हैं। बहुत अच्छी पुस्तको का प्रकाशन किया है।

वर्तमान सरकार ने हिन्दू (आर्य) जाति मे फूट डाल दी है। सरकार का यह घृणित कार्य सरकार को ले डूबेगा। निकट भविष्य मे सरकार को हानि पहुँचेगी जिसकी पूर्ति नही होगी

अंग्रेज भारत पर बहुत वर्षों तक राज कर गए लेकिन वे हिन्दुओ को आपस मे लडा नही सके। उन्होने मुसलमानो को हिन्दुओ से लडा दिया और देश का बटवारा करा दिया। इस सरकार को बने केवल ९ मास हुए है। प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह और इनके सहयोगी मन्त्रियो ने हिन्दुओ को हिन्दुओ से इस थोडे समय मे लडा दिया है। हर रोज लडके और लडकिया आत्मदाह कर रहे है लेकिन सरकार अपनी हठधर्मी पर अडी हुई है। इस सरकार के मन्त्री लोगो को चिढा रहे हैं। देश मे करोडो रुपये की सम्पत्ति नष्ट हो रही है। शिक्षा की हानि हो रही है। यातायात की समस्या है लोग घरो से बाहर निकल कर अपने सगे सम्बन्धियो की खुशी गमी मे पहुच नही पाते। प्राईवेट बस बहुत कम चल रही हैं वे लोग मनमाने पैसे वसूल कर रहे हैं। सरकार यह सारा तमाशा देख रही है। यह देश का सर्वनाशकरण हो रहा है या आरक्षण हो रहा है।

यह सरकार हिन्दुओ के वोट से सत्ता मे आई है और हिन्दुओ का नाश कर रही है।

जैसा खाये अन्न, वैसा होए मन

भोजनान्वेषण की प्रवृत्ति सभी जीवधारियो में पायी जाती है। एक नवजात शिशु को भी अपना भोजन ज्ञात होता है। भोजन से हमारे शरीर पर ही प्रभाव नही पडता अपितु मन भी प्रभावित होता है। प्रसन्नता की अवस्था मे किया गया साधारण से साधारण भोजन भी शरीर को स्वस्थ बनाता है परन्तु अनुचित सवेगो की स्थिति मे किया गया अच्छे से अच्छा भोजन भी स्वास्थ्य नही बना सकता।

आहारशुद्धौ सत्वशुद्धि सत्वशुद्धौ ध्रुवास्मृति

आहार की शुद्धि से सत्व की शुद्धि होती है और सत्व की शुद्धि से स्मरण शक्ति निश्चल होता है। अत हमको सात्विक भावना से ओत प्रोत भोजन करना चाहिए। गीता मे सात्विक आहार का लक्षण रसीला चिकना पुष्ट और रुचिकर बताया है। इसमे भोजन के अन्तर्गत घी दूध, मिश्री फल शाक भाजी आता है। भोजन जीने के लिये होना चाहिये न कि भोजन के लिये जीना। जो लोग भोजन के लिये जीते है वेद उन्हे असुतृप (पापी) कहता है।

भोजन ग्रहण करने वाले की भावनाये तो उसके अपने व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है पर जिससे वह भोजन ग्रहण करता है उसकी भावनाये भी उस पर अत्यधिक प्रभाव डालती है। इसके सम्बन्ध मे एक प्रसग उल्लेखनीय है—कि जब भीष्मपितामह शर शैय्या पर पडे हुये पाडव को धर्मोपदेश दे रहे थे तब द्रौपदी ने कहा आपके यह उपदेश उस समय कहा थे जब मुझे राजसभा मे प्रताडित किया जा रहा था। भीष्मपितामह ने कहा— कि उस समय मैं दुर्योधन का अन्न ग्रहण करता था जो उसकी भावनाओ से दूषित हो चुका था और ऐसे अन्न से मेरी बुद्धि भी दूषित हो गई थी।

आजकल देखने मे आ रहा है कि सुबह उठने के साथ ही बेड टी प्रारम्भ हो जाता है जो रात सोने तक चलती रहता है। इसके अतिरिक्त आज मानव अपने को अति आधुनिक सभ्यता का दिखाने के चक्कर मे बिना कुछ सोचे समझे सब कुछ निगलता जा रहा है। उसने केकडे छिपकली साप बिच्छू खाकर सबसे ज्यादा हिंसक जानवर शेर तक को पीछे छोड दिया है। फलस्वरूप कितनी ही समस्याये केवल इस खान पान के कारण उत्पन्न हो रही है क्योकि मनुष्य शाकाहारी प्राणी है और अगर वह सर्वाहारी (Omnivorous) प्राणी बनने की कोशिश करता है तो प्रवृत्ति के मनुष्यो का प्रभाव होगा ही)

मास मनुष्यो का भोजन नही है क्योकि शाकाहारी प्राणियो जैसे—मनुष्य हाथी बकरा गाय भेड आदि को पसीना आता है परन्तु मासाहारी प्राणियो के पसीना नही आता और शाकाहारियो के थूक अधिक होता है मासाहारियो के नही। इसके अतिरिक्त मासाहारी प्राणी जीभ के द्वारा पानी पीते है मासाहारी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

राम जन्म भूमि के मुद्दे पर सरकार उच्चतम न्यायालय की दुहाई देती है कि अदालत का निर्णय आने तक मन्दिर का निर्माण न हो दूसरी ओर आरक्षण के मुद्दे पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय की प्रतीक्षा नही करती यह दो रुखी नीति क्या। सरकार ने श्री देवीलाल की नौ अगस्त की रैली को विफल बनाने के लिए जल्दबाजी मे सात अगस्त को जातीय आरक्षण की घोषणा कर दी। राजा साहब ने अपनी व्यक्तिगत विजय और आगामी चुनाव की राजनीति के लिए यह मार्ग अपनाया। आरक्षण लागू करने से जातिवाद को बढावा मिलेगा, देश का ह्रास होगा हिन्दुओ मे आपस मे शत्रुता बढेगी। इस सरकार श्री वी पी सिंह ने अपने सहयोगी राजनैतिक दलो से भी इस पर परामर्श करने की आवश्यकता नही समझी स्वय देश की मालिक बन बैठी। यह एक स्वार्थसिद्धि है।

आर्यसमाज जातीय आधार पर आरक्षण के विरुद्ध है। आर्थिक आधार पर आरक्षण मे विश्वास रखता है और सबके लिए समान अधिकार का समर्थक है।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के अधिवेशन मे दक्षिण दिल्ली की समस्त ५० आर्य समाजें मण्डल आयोग की सिफारिशो को लागू करने की सरकार की घोषणा की कडे शब्दो मे भर्त्सना करती है और प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह द्वारा लिया गया यह निर्णय सरासर गलत है। यह गृह युद्ध की शुरुआत है। सरकार से प्रार्थना है कि वह मण्डल आयोग की सिफारिशें रद्द कर दे।

आरक्षण-संरक्षण-समाधान

(पृष्ठ ४ का शेष)

इसका समाधान केवल एक है। सरकार सभी निजी स्कूलो को बन्द कर दे। तथा कथित पब्लिक स्कूल और उपरोक्त सम्प्रदाय, मत, पथ तथा जाति पाति के सभी स्कूल बन्द करा दिये जावे। एक एक शिक्षा के लिए अलग अलग पाठविधि बनाई जावे। बालक बालिकाओ को समान सुविधाये और अवसर प्राप्त हो। अपनी प्रतिभा पर आगे जाने वाले को पीछे घसीटना क्या न्यायोचित कहा जा सकता है? क्या इस प्रकार से देश का स्तर जो पहले ही नीचा है और नीचे नही जायेगा। बालक बालिकाओ के स्कूल कालिज अलग अलग हो उन्हे इन सस्थाओ में रहने के लिये सुविधायें जुटाई जावे। सब का खान पान, वेश भूषा एक सी रखी जावे ताकि ऊच नीच, छोटे बडे का चक्कर समाप्त हो और समता उभरे।

इस ससार मे कोई भी सब को बराबर का न कर सका है न कर सकता है। अपने घरो मे ही दृष्टि डाले। क्या प्रत्येक बालक मेधा और क्षमता मे बराबर का है? जब एक छोटे से घर में ही यह क्षमता और मेधा बराबर नही टिक सकती तो इतने बडे राष्ट्र की कौन और क्या कहे।

सभी को बढने का अवसर दिया जावे किसी के साथ अन्याय करने का किसा को भी हक नही है। अत राष्ट्र हित के लिये विचार कर देश के सभी बालक बालिकाओ को समान अवसर और सुविधाये दी जावे। जो इनका लाभ उठाना न चाहे उसका परमात्मा ही मालिक है।

भारत एक प्राचीन सस्कृति और सभ्यता का देश है। और यह देश विश्व म गुरु रहा है इसका इतिहास साक्षी है। वर्ण धर्म (कर्तव्य) तथा आश्रम धर्म की नीव पर ही देश का भला हो सकेगा। जो भी ज्ञान मे जितना बढता है उसका श्रम से उतना ही नाता कम अपने आप होता जाता है। क्या सभी विभागो मे सब एक प्रकार के श्रमिक है? ज्ञानवान को श्रम तो कम करना पडता है परन्तु उसकी जिम्मेदारी उतनी ही बढ जाती है, इसीलिये इस देश को घाटे के अपराध पर जो सजा उसे दी जाती थी बडे के अपराध पर उस बडे को सजा भी बडी दी जाती थी।

आशा है सुविज्ञ पाठक इसपर चिन्ता और मनन कर एक रास्ता निकालेंगे जो देश के भले मे हो देश है तो यह सम्प्रदाय मत पथ आदि बने रह सकते है यदि देश ही नही रहा तो क्या यह सब टिक पायेंगे।

(७२२२, पायोसियान, नरेला, दिल्ली)

जैसा खाये अन्न

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्राणी अधिक क्रोधी और आलसी होते हैं तथा मासाहारियो की आते शाकाहारियो की तुलना मे छोटी होती है। अतः इन सब लक्षणो को देखकर कोई भी कह सकता है कि मनुष्य शाकाहारी प्राणी है, और ये सब लक्षण वैज्ञानिक कसौटी पर खरे उतरते हैं।

अत हम अपने आहार के बारे मे सचेत हो जाये तो मनुष्यो की हिंसक प्रवृत्ति खत्म हो सकती है तथा देश स्वर्गवत हो सकता है। यद्यपि और भी कई बाते है, जो मनुष्यो को ऊपर उठाने मे महत्त्व रखती है, परन्तु यह आहार ही प्रथम सीढी है जिसके द्वारा मानव देश को आगे बढाने में अपना सहयोग प्रदान कर सकता है, क्योकि कहा भी गया है—

"पहले पेट पूजा, फिर कोई काम दूजा।"

कु० प्रतिमा देवदर्शनी

वार्षिकोत्सव

पूज्यपाद श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुल खेडा खुर्द दिल्ली मे ४ नवम्बर १९९० रविवार को ९ बजे से ४ बजे तक बच्चो को आशीर्वाद देने के लिए एक सभा का आयोजन किया गया है। जिसमे आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि थोडासा समय निकाल कर सपरिवार ४ नवम्बर रविवार को ९ बजे से ४ बजे के मध्य गुरुकुल मे आकर बच्चो को आशीर्वाद देंगे। मित्र एव सम्बन्धियो को भी प्रेरणा करेंगे। आपके शुभागमन से गुरुकुल को बहुत बल मिलेगा।

आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप इस सविनय प्रार्थना को अवश्य स्वीकार कर कृतार्थ करेंगे। —रामलाल मलिक

इन्दिरा पार्क में आर्य समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

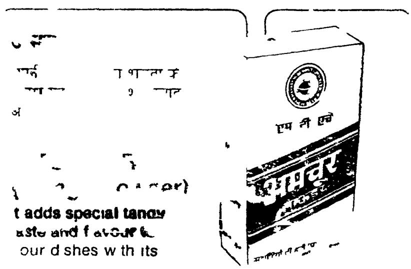
दो महीने पूर्व स्थापित और निर्माणाधीन आर्य-समाज, इन्दिरा पार्क का वार्षिकोत्सव १३ और १४ अक्तूबर, १९९० को धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर १४ अक्तूबर को आयोजित आर्य-सामाजिक सम्मेलन मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी ने आर्य-समाज के पडाल मे उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा—"आज राष्ट्र के सामने जो ज्वलत समस्याये है और जो पीडा हमारा समाज अनुभव कर रहा। इस सब का एकमात्र समाधान वेदो और महर्षि मनु द्वारा प्रतिपादित महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की विचारधारा का अनुसरण करता है। डा० धर्मपाल जी ने श्रोताओ को सबोधित करते हुए आगे कहा कि जिस समय देश मे पराधीनता, नाना कुरीतियां और रूढ़िवादिता व्याप्त थी तो उस समय जिस महापुरुष को गुलामी की पीडा सबसे अधिक और सबसे पहले अनुभव हुई वे महर्षि दयानन्द जी थे। महर्षि ने अप्रैल, १८७५ में आर्य समाज की स्थापना करके मानव निर्माण की दिशा मे एक अभिनव प्रयोग प्रारम्भ किया एक ऐसे आदोलन की शुरूआत की जिसके द्वारा मानव निर्माण अछूतोद्धार नारी-कल्याण, समाज सुधार और देश की स्वतन्त्रता अभिप्रेत थी। डा० धर्मपाल जी ने कहा कि जब कही आर्य समाज की स्थापना होती है तो मुझे देश की उन्नति की ओर एक और कदम उठता हुआ दिखाई देता है। सभा की अध्यक्षता डा० वेदपाल जी आचार्य कर रहे थे। डा० आचार्य जी ने "सुख शाति क्या, क्यो और कैसे विषय पर दार्शनिक प्रकाश डाला। सम्मेलन के प्रमुख वक्ताओ मे श्री ओम वीर शास्त्री थे। श्री शास्त्री के व्याख्यान का प्रारम्भ सत्यार्थ-प्रकाश मे ब्रह्म समाजियो के सबोधन मे उद्धत महर्षि दयानन्द जी के इन मार्मिक शब्दो से हुआ "यदि उन्नति चाहते हो तो आर्य समाज के उद्देश्य के अनुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए। नही तो कुछ हाथ नही लगेगा।' श्री शास्त्री ने अपने व्याख्यान मे आगे कहा कि आर्य समाजो की स्थापना के साथ-साथ हमारा आचरण महर्षि के उपर्युक्त शब्दो को जब तक स्पर्श नही करेगा तब तक वास्तव मे हमारे कुछ हाथ न लगेगा। इस सम्मेलन से पूर्व पूर्वाह्न में यज्ञ हुआ। यज्ञ के पश्चात् विश्व शाति सम्मेलन हुआ जिसमें आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे। सम्मेलन की अध्यक्षता डा० वेदपाल जी आचार्य ने की। श्री ओमवीर जी शास्त्री, श्री चन्द्रपाल जी शास्त्री और श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री सम्मेलन के प्रमुख वक्ता थे। हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री क्षेम सिंह एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक पडित चुन्नी लाल जी ने अपने सगीत द्वारा श्रोताओ को मत्रमुग्ध किया।

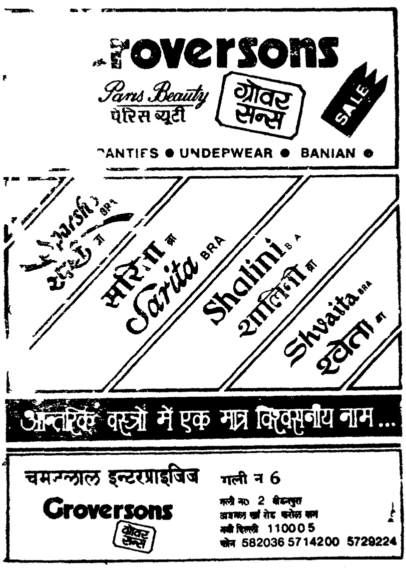
वार्षिकोत्सव १३ अक्तूबर शनिवार प्रात ९.० बजे के यज्ञ से प्रारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति १४ अक्तूबर, प्रात १०-०० बजे हुई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री यज्ञ मुनिजी वानप्रस्थी थे। ऋत्विज आचार्य ओमवीर शास्त्री एव वेदप्रकाश जी शास्त्री थे। यज्ञ के पश्चात् १३ अक्तूबर को यज्ञ मुनि जी ने तथा आचार्य ओमवीर जी शास्त्री ने यजमानो को आशीर्वाद देने के साथ-साथ आर्य समाज इन्दिरा पार्क के लिए शुभकामनाओ से ओतप्रोत एक लघु किन्तु अत्यन्त मार्मिक उपदेश किया।

दोनो दिनो के इस भव्य आयोजन मे स्थानीय आर्य समाज के जिन कार्यकर्ताओ ने तन मन और धन से पूर्ण सहयोग देकर उत्सव को सफल बनाया उनके नाम इस प्रकार है—रिटायर्ड मेजर वेद प्रकाश रोहाणा, श्री रामपाल जी शर्मा, श्री भाटिया जी एव उनके सुपुत्र डा० भाटिया, श्री तेजवीर जी शर्मा, श्रीमती सावित्री जी, माता बिमला जी (मत्री इन्दिरा पार्क), श्री यज्ञ मुनि जी वानप्रस्थी, श्री धर्मदेव जी वानप्रस्थी, डा० दयानन्द जी, श्री अलबेल सिंह जी आर्य, श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री एव श्री बृजपाल जी आर्य आदि (सभी आर्य समाज, सागरपुर)।









200/- रुपये की खरीद पर 1 सुधांशु जी का टेप रिकार्डर कैसेट या तौलिया मुफ्त

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

१	नतिक शिक्षा (भाग प्रथम द्वितीय) प्रत्येक	१ ५०
	नतिक शिक्षा (भाग ततीय)	२ ००
४	नतिक शिक्षा (भाग चतुथ से नवम) प्रत्येक	३ ००
१	नतिक शिक्षा (भाग दशम एकादश) प्रत्येक	४ ००
१२	नतिक शिक्षा (भाग द्वादश)	५ ००
१	धमवार हकाकत त्र वद्य गु दत्त	५ ००
१४	फलै आफ ट थ डा० सत्यप्रकाश वम	७ ००
१५	म याथ प्रकाश म देश	२ ००
६	एमाटामा आफ वेदा त स्वामी विद्यान द सरस्वता	५ ००
७	आया का आदि देश	७ ००
१८	प्रस्थानत्रयी और अद्वतवाद	५ ००
१६	दी आरीजन होम आफ आय स	२ ००
२	चत्वारो वै वदा	५ ००
१	व्रतसिद्धि	५ ००
२२	आयसमाज आज के सन्दभ म डा० धमपाल डा० गोयनका	२० ००
२३	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प० सच्चिदान द शास्त्री	५ ००
४	हसता चल हसाता चल स्वामी स्वरूपान द सरस्वती	५०
२५	स्यान द एण्ड दा वदाज (टैक्ट)	५० रु० सकडा
२६	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)	५० रु० सैकडा
२७	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)	५० रु० सैकडा
८	योगीराज श्रीकृष्ण का स देश (ट्रैक्ट)	५० रु० सैकडा
२६	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या) डा० रघुवीर	५० रु० सैकडा

नोट उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77   Post in N D P S O on 25 26 10-1990   Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६   पूर्व भुगतान बिना भेजने का ला-से स न० यू १३६

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा हालैण्ड में वैदिक प्रचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री गत ६ अक्टूबर को हालैण्ड क दौरे पर रवाना हो चुके हैं। वेद प्रचार के उद्देश्य से लगभग ४ हफ्ते की अपनी विदेश यात्रा के दौरान जहा शास्त्री जी के द्वारा हालैण्ड की विभिन्न आर्य समाजो मे वैदिक उपदेश दिए जावेंगे वही आर्य समाज की गतिविधियो के अधिकाधिक प्रचार के लिए भी हालैण्ड के आर्य जनो को मार्ग दशन मिलेगा। शास्त्री जी की वापसी नवम्बर १९९० के प्रथम सप्ताह मे अपेक्षित है। इस बीच यदि सम्भव हुआ तो वह गयाना सूरीनाम व ट्रिनीडाड की आर्य समाजो का भी निरीक्षण करेंगे।

वदिक प्रचार की दृष्टि से शास्त्री जी की इस विदेश यात्रा का आर्य जगत को विशेष लाभ होगा। डा सच्चिदानन्द शास्त्री ~~वहा अपने साथ~~ वैदिक तथा आर्य साहित्य भी काफी मात्रा मे प्रचाराथ ले गए है।

डा० धर्मपाल

उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रधान, दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा

पुस्तक समीक्षा

गुरुकुल पत्रिका

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की मासिक शोधपत्रिका—गुरुकुल पत्रिका का वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार म विशेष योगदान है। इसके जुलाई सितम्बर १९८९ अक में आचार्य स यव्रत सिद्धान्तालकार के विशेष लेख—उनके पास वेदार्थ की कुजी थी को सम्मिलित किया गया है। मनुष्य के वास्तविक तथा सम्पूर्ण रूप को समझाने के लिए उपनिषदो मे कहा है कि वह पचकोशात्मक है—अन्नमय प्राणमय मनामय विज्ञानमय तथा आनन्दमय। अन्नमय से आनन्दमय तक इसका उत्तरात्तर विकास हाता है। पहले तान से हम सभी परिचित हैं। इसके आगे जो मनुष्य का विकास होता है या हा सकता है—शुद्ध ज्ञान का अनुभव उसे विज्ञानमय कोश रहते ह। आदमी इसमे भी ऊपर आना चाहता है जहा उसके चारो ओर आनन्द ही आनन्द हो रहा हा अर्थात दु ख न हो। इस ही देवत्व कहा गया है। इस देवत्व को कैसे प्राप्त किया जाए। इसके स्रोत वेद ज्ञ न प्राप्ति मे मिलेगे। इस वेदाथ का कैसे सही सही प्राप्त किया जाए। यही इस लेख का वर्ण्य विषय है। इसी पत्रिका के अक्तूबर नवम्बर १९८९ अक म अनेक ज्ञानवर्धक लेख हैं। आर्यबन्धु जैयप्रकाश का आर्यसमाज नान्यपथा विद्यत ऽयनाय हमारा मार्ग प्रशस्त करता है। एकता का मूल मन्त्र प्रदाता ऋषि दयानन्द आर्य जनता का मार्ग दशक है। बौद्ध दर्शन और वेदान्त का तुलनात्क अध्ययन जम्मू विश्वविद्यालय के डा० राकेश कुमार मिश्र ने प्रस्तुत किया है।

[गुरुकुल पत्रिका—स० डा० जयदेव वेदालकार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार मूल्य १० रुपये मात्र]   —मूलचन्द गुप्त सम्पादक

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय,
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ प्र)

श्री सूयदव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज,नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी) ७५६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १४ अंक ४ | रविवार ११ नवम्बर १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में १० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति शील और प्रज्ञा के धनी

—डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का जीवन और कार्य राष्ट्र की उदीयमान प्रजा के लिए सदैव एक दीपक स्तम्भ का कार्य करेगा। वे एक प्रामाणिक पत्रकार, तपस्वी देश-सेवक, निःस्वार्थ समाज सुधारक, तेजस्वी साहित्यकार और समर्पित एवं निष्ठावान् शिक्षाविद् थे। उन्होंने अपने छात्रकाल में सादा जीवन और उच्च विचार के उच्चादर्श की शिक्षा प्राप्त की थी। गुरुकुल कांगड़ी के वे प्रथम स्नातक थे और वे आजीवन सादा जीवन उच्च विचार के आदर्श को चरितार्थ करने में जागरूक एवं सन्नद्ध रहे।

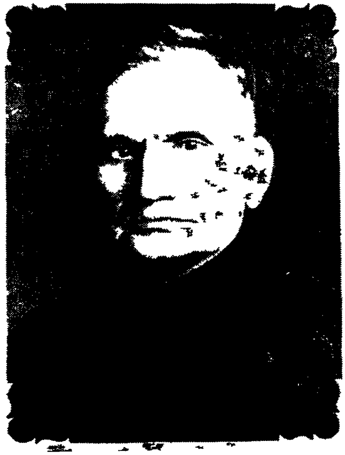
पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का जन्म ९ नवम्बर १८८९ को जालन्धर में हुआ था। देशभक्ति एवं समाज कल्याण के प्रति समर्पण की भावना उन्हें अपने पिता स्वामी श्रद्धानन्द से विरासत में मिली थी। स्वामी जी में भावकता और निर्णय बुद्धि का सुभग समन्वय विद्यमान था। उनकी भावकता उनके बड़े पुत्र हरिश्चन्द्र के हिस्से में अवतीर्ण हुई तथा उनकी बुद्धि पं० इन्द्र जी को मिली।

उपनिषद् कालीन ब्राह्मण की तरह पं० सदैव ब्रह्म मुहूर्त में उठ जाया करते थे। नित्यकर्म से निवृत्त होकर प्रायः प्रातःकाल की शान्त पावन अमृतवेला में ही वे अपने सम्पादकीय लेख, सार्वजनिक भाषण, विचारपूर्ण निबन्ध और अध्ययन अध्यापन सम्बन्धी टिप्पणियां तैयार करते थे। प्राची में प्रकाश की किरण फूटने पर प्रकृति की गोद में विचरण उन्हें प्रिय था।

बचपन में एक साघातिक रोग के कारण उनका एक फेफड़ा बेकार हो गया था। नियमित खानपान और औषधि सेवन आदि के विषय में वे कठोर रूप से नियमित और संयत थे। इस परहेज सेवन और नियमित दिनचर्या के कारण ही वे अन्त तक कार्यक्षम बने रहे।

उनके इतिहास ग्रन्थों, निबन्धों, सम्पादकीय लेखों, महापुरुषों के जीवन चरित्रों और रेखाचित्रों में उनकी प्रतिभा एवं विवेचन शैली का चरम रूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। वे भाषण कला में भी निपुण थे परन्तु उनके मितभाषी स्वभाव के कारण उनके भाषण शब्दाडम्बर शून्य होते थे। उनकी संक्षिप्तता की यह

(शेष पृष्ठ ५ पर)



पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—यशपाल सुधांशु

श्री आगार तमृन का मयन्त

जागृत प्रबुद्ध नर ही सब कुछ पाता है

(–पं० सत्यभूषण वेदालंकार)

कामना ऋचाए भी उसका है करती
सचारित हो सताप हृदय का हरती।
श्रुति साम गान भी है उसको अपनाता
रस सोम उसी के हेतु सुधा सरसाता
लौकिक सुख भी उसके समीप आता है
जागृत प्रबुद्ध नर ही सब कुछ पाता है
जो सोता, उसका भाग्य सदा सोता है
अनुपम रत्नो को अनायास खोता है।
उसका सौभाग्य न उदित कभी होता है
कर मे आगत सम्पदा स्वय खोता है।
जीवन का सृजन न उसका कुछ होता है
अपने पथ मे मानो कटक बोता है।।
जागृत जन की ही सिद्धि सहज मिलती है
यह सृष्टि उसी के लिए वरद खिलती है।
उसका क्षण-क्षण अनमोल हुआ करता है
जो हो सचेष्ट सत्कर्म किया करता है।
नव स्फूर्ति पूर्ण सविता का स्वागत करता
नूतन उमग का उत्स सदा है भरता।
सब देव उसी का स्तवन स्वय करते है
मझधार मे पडी तरणि पार करते है।
उसका ही विभु से सहज हुआ नाता है
जागृत प्रबुद्ध नर ही सब कुछ पाता है।
हो सजग मूल' बटु ने शिव को था जाना
शकर ने सच्चे शकर को पहचाना।
सब भक्त ऊघ-ऊघ निद्रा मे खोये
पर मूल ब्रह्मचारी ने स्वप्न सजोये।
जो जागृत बटु ने था यथार्थ मे जानो।
उस बोधरात्रि को हुआ बोध अनजानो।
निद्रा का हुआ प्रहार विकट जो गैग
तब सहसा सत्य स्वरूप हृदय मे कौधा।
जागृति का ही यह चमत्कार था केवल,
जागृत ने ही पाया स्व मुक्ति का सबल।
इसलिए जागते रहो सिद्धि तब होगी,
परमार्थ स्वार्थ समृद्धि समुद्यत होगी।
उत्तिष्ठत जाग्रत मूल मत्र को साधो।
जीवन है यह सग्राम कदापि न भागो
जो सजग सतत उद्यमी सदा है गन्ता।
इस हेतु 'शान्त' जागृति का पथ अपनाओ
दुर्लभ अति मनुज जन्म, मत व्यर्थ गवाओ।
"इह चद् वेदीदथ सत्ये' सच जानो
अन्यथा महा विनष्टि का सकट मानो।
यह तत्व ज्ञान जागृत होकर पाता है
जागृत बुद्ध जन ही सब कुछ पाता है।

महर्षि का १०७ वां निर्वाण दिवस

—आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई ने अपने ४६ वे स्थापना दिवस के साथ-साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती का १०७ वा निर्वाण दिवस एव प० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह भी मनाया। प्रात ८ बजे यज्ञ के पश्चात् कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के तत्वावधान मे प्रारम्भ हुआ। बम्बई महानगरी की समस्त आर्य समाजो ने समारोह में भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि पद को प्रसिद्ध उद्योगपति एव समाजसेवी श्री सत्यप्रकाश आर्य ने सुशोभित किया। अध्यक्षता श्री ओंकारनाथ आर्य ने की। इस अवसर पर श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्री देवेन्द्र कुमार कपूर, डा० सोमदेव शास्त्री, श्री रामचन्द्र जी आर्य, श्रीमती लज्जा रानी गोयल, श्री भगवती प्रसाद जी गुप्त, श्रीमती शिवराजवती आर्या, श्री ओम प्रकाश आर्य तथा कैप्टिन देवरत्न आर्य ने अपने विचार प्रकट किये।

नवयुवकों ! आत्मदाह मत करो

—किशोरचन्द्र गुप्त

आत्मदाह की न सोचो, स्वप्न मे भी प्यारे वीर,
आत्म हत्या एक महापाप शास्त्र कहते।
दान वीर, दया वीर, धर्म वीर, युद्ध वीर,
कर्म वीर, बन कर क्यो न तुम रहते।।
अन्याय अधर्म और असत् के प्रतिकूल,
आर्य वीर देखो सदा समर हैं करते।
सत्य धर्म न्याय हित समर मे मारा जाय,
ऐसे ही 'सुमत' जन बलिदान कहते ।।१।।
आत्मदाह करने के प्रथम विचारो प्रिय।
कौन तेरी चिता पर अश्रु ढरकायेगा।
बुद्धि हुई भ्रष्ट तव ज्ञान न रहा है कुछ,
निर्दयी, जालिम यह ऐसे झुक जायेगा।।
करो आत्म हत्या मत, जननी के प्यारे वीर।
इससे न देश का सुधार हा ! हो पायेगा।
वीर जननी के लाल, रण बाकुरे हो तुम
खीच लो कृपाण अरि पीठ को दिखायेगा ।।२।।
कायरो की भाति कब, मरना सीखा तुमने,
भीम और पारथ की याद भी भुलाओगे।
वीर, शिवा, राणा, लक्ष्मी, भगत, आजाद, नेता,
आदि का विदेशो में जो मान है, घटाओगे।
वरित्रा रही है भूमि, भारत हमारी सदा,
राम और कृष्ण के भी वश को लजाओगे।
हृदय से पूछो तुम, बार-बार-बार हाय।
गीदडो की तालिका मे नाम क्या लिखाओगे ।।३।।
ऐसी मृत्यु से तुम्हारी, देश की क्या बात करे,
मात-पिता-भगिनी न रच भी सुख पायेगी।
गगा और यमुना की, कल-कल, जल-ध्वनि,
सम्भव नही है तब, यश ज्ञान गायेगी।।
दुष्ट, क्रूर, भेडियो के, उदर भरेंगे हाय।
काक-गृद्ध आदि की तो आग बुझ जायेगी।
पूछते है, 'सुमत' बताओ तुम सत्यवीर।
ऐसी तब जिन्दगी भी कौन काम आयेगी ।।४।।

[ग्राम व पोस्ट कोरिया,
हरदोई उ० प्र०]

कैप्टिन देवरत्न आर्य ने आर्य समाज सान्ताक्रुज की ४६ वी वर्षगाठ पर आर्य समाज सान्ताक्रुज के इतिहास का अवलोकन कराया। आपने बताया गत ४५ वर्षो मे आर्य समाज अपने कार्यों के कारण आर्य जगत मे विश्व विख्यात हो गया है। आपने आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओ का स्मरण कराया जिनके प्रयत्नो से यह आर्य समाज वट वृक्ष के रूप मे दृष्टिगोचर हो रहा है। इस अवसर पर आर्य समाज के सबसे वरिष्ठ सदस्य एव आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट के अध्यक्ष ८६ वर्षीय श्री महाशय चमनलाल एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लीलावती जी का उनकी सेवाओ के प्रति सम्मान करते हुए मानपत्र शाल एव नारियल भेंट कर अभिनन्दन किया गया। श्री महाशय जी ने अपने जीवन के अनुभव सुनाते हुए अपने सभी सहयोगियो का धन्यवाद किया। आपको तथा आपकी धर्मपत्नी दोनो को फूल-मालाओ से लाद दिया गया बम्बई की सभी आर्य समाजो के सदस्यो प्रधान एव मन्त्रियो ने भी चन्दन की मालाए डालकर महाशय जी की सेवा के प्रति आभार व्यक्त किया।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने कहा आज की परिस्थितियो मे आर्य समाज हिन्दु धर्म के आपसी मतभेदो को भुलाकर उन्हे एकता के सूत्र मे बाधने का प्रयत्न करेगा तभी हम हिन्दू राष्ट्र के स्वप्न को पूरा कर सकेंगे। उन्होने कहा भगवान राम न हिन्दू थे, न मुसलमान न सिक्ख और ईसाई। वे मर्यादा पुरुषोत्तम थे और भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च प्रतीक थे अत: उनके जन्म स्थान पर उनका स्मारक मन्दिर बनाना हर हिन्दु का कर्तव्य है।

समारोह का सचालन एव सयोजन श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया।

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश विश्वमार्य

श्री राम मन्दिर एवं बाबरी मस्जिद



यह विवाद पर्याप्त समय से चल रहा है। इस राष्ट्रीय समस्या का समाधान वास्तव मे है भी कठिन ही। इस देश को हम धर्म निरपेक्ष देश कहते है। यह देश धर्म निरपेक्ष हो नही सकता क्योकि यहा के प्रत्येक व्यक्ति के मन मे धर्म मे आस्था है और ईश्वर मे विश्वास है। इसलिए यहा का कोई भी व्यक्ति धर्म से विमुख हो जाए, यह सम्भव नही है। उसे धार्मिक तो होना ही है। वह धार्मिक हुए बिना अपने अस्तित्व को स्वीकार ही नही कर सकता। इस देश का बड़े से बड़ा व्यक्ति भी जो यह घोषणा करता है कि मैं किसी भी धर्म मे विश्वास नही करता, वह भी समय समय पर पूजा-अर्चना करता हुआ देखा जा सकता है। धर्म दूसरा नाम कर्त्तव्य का है। यदि कर्त्तव्य करना है तो धार्मिक होना ही है। धर्म और कर्त्तव्य एक दूसरे के पर्याय है। धर्म यही तो सिखाता है कि हम कर्त्तव्य करे। कर्त्तव्य से तात्पर्य है कि वे कार्य जो हमे करने चाहिए। हमे करने वे ही कार्य चाहिए, जो सामाजिक हित के हों। जो केवल अपनी उन्नति तक सीमित न हों, बल्कि जिनसे सबकी उन्नति अपेक्षित हो। इसलिए सबके भले के लिए, किए गए कार्य ही कर्त्तव्य हैं। वही धर्म है। राममन्दिर के निर्माण से अथवा बाबरी मस्जिद के बने रहने से यदि व्यक्ति धार्मिक बने रहते हैं, अर्थात वे सामाजिक हित मे संलग्न रहते हैं, तो यह अच्छी ही बात है।

हमारे यहा धार्मिक होने का अर्थ साम्प्रदायिक लिया जाने लगा है। यदि कोई व्यक्ति धार्मिकता की बात करता है, तो एकदम कहा जाएगा कि वह साम्प्रदायिक हो गया है। यह बात बहुसंख्यक लोगो पर विशेष रूप से लागू होती है। जो अल्पसंख्यक हैं उन्हें कुछ विशेषाधिकार भारतीय संविधान मे दिए गए हैं। यह अच्छी बात है। पिछले दिनो श्रीमार्गेराम आर्य ने समाचार पत्र की एक कतरन दिखाई थी जिसमे लिखा था कि जिन जिलो मे अल्पसंख्यक बहुसंख्या में हैं, वहा पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् की ओर से ऐसे पाठ्यक्रम चलाए जाए गे, जिनमे अल्पसंख्यको की भावनाओ मे ध्यान मे रखा गया है। इस तरह के पाठ्यक्रम से क्या सिद्ध होता है। क्या यह बहुसंख्यक लोगो के अधिकारो का अतिक्रमण नहीं है।

भारत देश सदा से सहिष्णु रहा है। यहाँ 'जीओ और जीने दो' का उद्घोष सदा से होता रहा है। भारतीय संस्कृति और भारतीय वैदिक धर्म में ग्रन्थो पर स्थान स्थान पर सहिष्णुता तथा सह-अस्तित्व के उद्घोष प्राप्य हैं। सम्भव है कि ऐसी पंक्तियां अन्य धर्मग्रंथा में भी हो। पर कुछ धर्म तो राज्यो द्वारा ही चलाए गए हैं। वे अपना अस्तित्व इसी बात मे मानते हैं कि दूसरो को समाप्त कर दो तभी अपना वर्चस्व रहेगा।

अयोध्या एव बाबरी मस्जिद के विवाद मे धार्मिक नेता तथा राजनेता सभी जुड़े हैं। बल्कि यह कहा जाए कि वहा पर धर्म और राज्य एक दूसरे का शोषण कर रहे हैं, अतिशयोक्ति न होगी। सामान्य जनता न इसकी गम्भीरता मे जाती है और न ही उसके पास, इसे गहराई से समझने के लिए फुर्सत है तथा न ही इसको समझने लायक बुद्धि। कुछ गुट बने है, चाहे उन्हे धार्मिक कह लो या साम्प्रदायिक अथवा राजनैतिक। उनके नेता जैसा कहते है, जनता उसी प्रकार भड़क उठती है।

आवश्यकता इस बात की है कि सरकार, सभी वर्गों के नेतृत्व को विश्वास मे लेकर इस राष्ट्रीय एव जातीय समस्या का समाधान खोजे। सभी वर्गों के नेता अपने अपने समर्थकों को इस प्रकार समझायें कि वे भड़कने के स्थान पर शान्त रहें। यह तभी सम्भव होगा, जब नेतृत्व आपस मे सहमत हो। समस्या एक वर्ग की है और दूसरे वर्ग के नेता समझाएंगे तो इसका असर निश्चय ही उल्टा होगा। इस राष्ट्रीय समस्या पर गम्भीर विचार की आवश्यकता है। किसी भी प्रकार की संवेदना से शून्य गम्भीरता की।

—डा० धर्मपाल

जातियों पर आधारित आरक्षण न उचित है और न ही सम्भव

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री

सरकारी नौकरियो मे आरक्षण के संवेदनशील प्रश्न ने दूसरे अधिक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्नो को पीछे डाल दिया है। इसलिए इस प्रश्न के सभी पहलुओ पर तटस्थ भाव से और निष्पक्षता के साथ विचार करना आवश्यक हो गया है।

१ अक्तूबर १९९० को उच्चतम न्यायालय ने मण्डल आयोग की सिफारिशो के अमल पर रोक लगा दी है और २५ अक्तूबर १९९० से पाच न्यायमूर्तियों की पीठ उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयो मे दायर की गई याचिकाओं को सुनना आरम्भ करेगी। मुझे इस बात मे पूरा पूरा संदेह है कि उच्चतम न्यायालय जन्म के आधार पर जातियो के लिए सरकारी नौकरियो मे आरक्षण की अनुमति दे देगा। हो सकता है कि इस महत्त्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न को यह पीठ अपने से बड़े न्यायपीठ को सौंप दे। इस प्रकार इस प्रश्न के निर्णय मे काफी समय लग सकता है। इस दौरान सभी सम्बद्ध पक्षो को मिल बैठकर सहमति से हल निकालना चाहिए।

यह ध्यान देने की बात है कि संविधान के अनुच्छेद ३४ [१] और ३४२ (१) के अनुसार राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया है कि वे लोक अधिसूचनाओ के द्वारा उन जातियो या आदिम जातियो का उल्लेख कर सकेंगे जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनो के लिए अनुसूचित जातियां या अनुसूचित आदिम जातियां समझा जाएगा।

परन्तु राष्ट्रपति को यह अधिकार नही दिया गया है कि वे लोक अधिसूचना द्वारा उन जातियो का उल्लेख कर सकेंगे जिन्हे इस संविधान के प्रयोजनो के लिए 'पिछड़ी जातियां' समझा जाएगा। मुझे ऐसा लगता है कि इस सम्बन्ध में जारी की गई सभी लोक अधिसूचनायें संविधान का उल्लंघन करने वाली और अधिकारातीत हैं।

यह भी ध्यान देने की बात है कि पिछड़े नागरिको के इन दो वर्गों मे जान बूझकर विभेद किया गया है। जिन जातियों का "अनुसूचित जातियो" के रूप मे उल्लेख किया गया है उन सभी जातियो को सदियो से 'अस्पृश्य' माना जाता रहा और उनको कुओ, तालाबो, स्नान घाटो, सड़को, सार्वजनिक समागम स्थानो के उपयोग से वंचित किया जाता रहा और सार्वजनिक भोजनालयो, होटलो तथा मनोरंजन के स्थानो और मन्दिरो आदि मे इनका प्रवेश बन्द रहा। परन्तु पिछले वर्ग की मानी जाने वाली तथाकथित पिछड़ी जातियो को छुआछूत तथा अन्य सामाजिक निर्योग्यताओं का शिकार नहीं होना पड़ा। दयानन्द और गांधी ने जो जन जागरण किया उसके परिणामस्वरूप इन जातियो ने हीनता की भावनाओ को उखाड़ फेंका और अपने आप को ऋषिमुनियो और वीर क्षत्रियो का वंशज घोषित करते हुए अपने नामो के साथ शर्मा और वर्मा लगाना शुरू किया।

इसीलिए संविधान के निर्माताओं ने 'अनुसूचित जातियो' को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करने के लिए अनुच्छेद ३३० के अनुसार लोक सभा और विधान सभाओ की सीटो के लिए जनसंख्या के आधार पर आरक्षण दिया और अनुच्छेद ३३५ के अनुसार राज्य की सेवाओ और पदो के लिए उनके आरक्षण का दावा कबूल किया।

आर्थिक सामाजिक तथा शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े नागरिक वर्गोन्नति, सामाजिक अन्याय और शोषण से उनकी मुक्ति उनके शिक्षा तथा अर्थ सम्बन्धी हितो के उन्नयन, उनकी प्रगति में बाधक कठिनाईयों के निराकरण तथा आर्थिक अनुदानो द्वारा उनके धन्धो को लाभकारी बनाने के लिए संविधान के अनुच्छेदो (१५)४", ४६ और ३४०) मे इस प्रकार के विशेष प्रावधान करने की छूट दी गई है। संविधान के अनुच्छेद १६(४) के अनुसार राज्य को पिछड़े हुए किसी नागरिक वर्ग के पक्ष में आरक्षण करने का अधिकार होगा, जिनका प्रतिनिधित्व राज्य की राय में राज्याधीन सेवाओ में पर्याप्त नहीं है।

यह ठीक है कि राज्याधीन सेवाओ की संख्या सब नौकरियो का एक प्रतिशत के लगभग हैं, परन्तु यही सेवायें सारे प्रशासन को चलाती है और

इस देश में प्रशासन की सहायता और सरक्षण के बिना खेती, उद्योग व्यापार कोई भी धन्धा नही चल सकता । इसलिए इन सेवाओ मे पर्याप्त नही है ।

जिस कोटि की शिक्षा ग्रामीण बालक बालिकाओ, ग्रामीण स्कूलो मे मिल रही है उसको सविस्तार प्रतिपादित करना मैं आवश्यक नहीं समझता ।राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के प्रर्वतको न ग्रामीण स्कूलो की दशा का जो चित्रण किया है और टीका-टिप्पणी की है उनको मैं दोहराऊगा नहीं । परन्तु इस सन्दर्भ मे, मैं मण्डल आयोग के उत्कट समर्थक श्री मुलायम सिह यादव की उक्ति को उद्धरित करना आवश्यक समझता हू । अप्रैल १९९० में उन्होने कहा था "ग्रामो मे जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है उसका नतीजा हमारे सामने है स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४२ वर्षों के बाद भी देहाती युवको को बडे और महत्वपूर्ण पद सरकारी नौकरियो में नही मिल पाये है । केवल मुट्ठीभर लोगो को ही आई०ए०एस० तथा सहवर्गी पद मिल सके है वे भी उनको जिनके पिता या अभिभावक सरकारी अफसर हैं । "शुद्ध गाव वाले तो आई०ए०एस० तक पहुच ही नही सकते ।

हरयाणा की कुल आबादी का ५१ प्रतिशत अहीर, गूजर, जाट, सिख जाट, राजपूत, सैनी रोड, मेव बिश्नोई, कम्बोज इत्यादि का प्रतिनिधित्व आई०ए०एस० मे केवल ८ ५ प्रतिशत ही है। यदि इनमें से उन अफसरा को निकाल दिया जाए जिनके पिता या अभिभावक सरकारी अफसर थे या जिनके पास शहर के स्कूलो मे पढाने के साधन थे, तो पता चलेगा कि शुद्ध गाव वालो का प्रतिनिधित्व ४ प्रतिशत भी नही है । दूसरे प्रदेशो की अवस्था हरयाणा से बेहतर नही हो सकती ।

इन तथ्यो के प्रकाश मे और भारत के सबसे बडे प्रदेश के मुख्यमन्त्री की राय म, राज्याधीन सेवाओ मे यदि पिछडे हुए किसी नागरिक वर्ग का सबसे कम प्रति निधित्व है तो वह है 'शुद्ध ग्रामीण जिसने गाव के स्कूल मे शिक्षप्रा प्त की है । इसलिए बिना लिहाज जाति और मजहब के शुद्ध गाव वालो' जिसने शिक्षा गाव के स्कूल मे पाई है, राज्याधीन सेवाओं मे आरक्षण का अधिकारी बनता है । प्रधानमन्त्री 'पिछडी जातियो' को लोकसभा और विधानसभाओ मे ४० प्रतिशत सीटे देने की घोषणा करते रहे है, फिर सरकारी सेवाओ मे आरक्षण २७ प्रतिशत क्यो" वह भी ४० प्रतिशत ही होना चाहिए । इस आरक्षण के अन्तर्गत वे सभी जातिया आ जायेगी, जिनके लिए मण्डल आयोग ने २७ प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश की है ।

शहरो की गन्दी बस्तियो और शहरीकृत ग्रामो की अवस्था गाव वालो जैसी ही है, इसलिए बिना लिहाज जाति और मजहब के ५ प्रतिशत आरक्षण इनके लिए भी होना चाहिए ।

अनुसूचित जातिया, जनजातियो का आरक्षण यथापूर्व रहे और भूतपूर्व सैनिको विकलागो और स्वतन्त्रता सेनानिया का आरक्षण भी यथापूर्व रहे ।

शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के लिए आरक्षण अनिवार्य :

प्रधानमन्त्री ने यह कहकर कि शिक्षा सस्थाओ के प्रवेश मे आरक्षण नही होगा,सब गुडगोबर कर दिया । इस घोषणा ने आरक्षण द्वारा जो पद पिछले वर्गों को मिल सकते थे उनसे तो वचित कर ही दिया इसके अलावा,स्वावलम्बन स्वरोजगार के भी रास्त बन्द कर दिए है । यह सवविदित है कि व्यावसायिक और पेशावर शिक्षा के महाविद्यालयो और सस्थानो मे प्रवेश के लिए न्यूनतम अक ७५ प्रतिशत होन चाहिए, स्नातक आनर्स आदि मे प्रवेश क लिए न्यूनतम अक ६५ प्रतिशत होने चाहिए । स्नातक स्तर के अच्छे महाविद्यालया म भी अच्छे अक प्राप्त किए बिना प्रवेश सम्भव नही है ।ऐसी अवस्था मे कम से कम योग्यता के अभाव मे शुद्ध गाववाला को बडे पद और नौकरिया कैसे मिल सकेगी, यदि न भर जाने पर वे जगह खाली रखी जाये तो वे पद खाली ही पडे रहेगे । इसलिए जब तक प्रत्येक तहसील या ताल्लुका मे एक एक निवासीय नवोदय स्कूल गाव के स्कूलो मे पढने वाले लडके और लडकियो के लिए सरकारी खर्चे से नही खोले जाये, और गाव के स्कूलो की शिक्षा का स्तर ऊचा न किया जाए तब तक शिक्षा सस्थाओ मे प्रवेश के लिए "शुद्ध गाववाले' बच्चो के वास्त आरक्षण रहना चाहिए । ऐसे बच्चो के लिए विशेष क्लास छुट्टिया मे लगाना पडे तो लगानी चाहिए, ताकि वे जिन कक्षाओ मे प्रविष्ट किये गए हैं उनमे चल सके ।

आर्थिक मानदण्ड :

आरक्षण का लाभ नए से नए और अधिक से अधिक लोगो को मिल सके इसके लिए सभी आरक्षणा के लिए आर्थिक मानदण्ड आवश्यक है । जो प्रथम श्रेणी के अधिकारी राज्याधीन सेवाओ मे या उसके समकक्ष पद सार्वजनिक क्षेत्र या निजी क्षेत्र के धन्धा मे नियुक्त हैं, या जो आयकर या सम्पत्ति कर दे रहे हैं या जिनके पास २० एकड से अधिक सिंचित अथवा ४० एकड से अधिक असिंचित भूमि है उनके लडके लडकियो को आरक्षण का लाभ नही मिलना चाहिए ।

उपसंहार :

मण्डल आयोग देश को जातियो मे बाटने वाली रेखाओ को प्रतिष्ठापित करके सदा-सदा के लिए जन्मना जातिया के आधार पर बाटने का दोषी कहा जायेगा । कुछ तथाकथित बुद्धीजीवियो तथा केन्द्रीय मन्त्री मण्डल के सदस्यो समेत कुछ राजनेताओ की अदूरदर्शिता से जातीयो में टकराव की स्थिति पैदा हो गई है । इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि अनेक नवयुवको, नवयुवतियो और अन्य नागरिको को मूल्यवान जीवनो की आहूति देनी पडी है और अरबो रुपये की सार्वजनिक सम्पत्ति बर्बाद हुई है । आज भी आत्महत्याओ, आत्मदाहो का सिलसिला जारी है और आरक्षण समर्थक और आरक्षण विरोधी रैलियो मे सर पटव्वल हो रहे हैं। कैसी विडम्बना हैं कि आज चारो तरफ ताप और गरमा गरमी तो है परन्तु आलोक नही है । शायद हम भूल गय है कि हमारे मूलभूत कर्त्तव्य भी है, केवल मौलिक अधिकार ही नही और दोनो का उल्लेख हमारे सविधान मे है ।

सविधान के मूलभूत कर्त्तव्यो सम्बन्धी भाग ४-ए अनुच्छेद ५१—ए (ई) के अनुसार 'भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह मजहब, भाषा, क्षेत्र तथा वर्गों से ऊपर उठकर देश के सभी लोगो मे सद्भाव, सोमनस्य और सर्वनिष्ठ भाईचारा बढावे ।

समय की माग है कि हम अपने नवयुवको का हृदय छूकर उनके हृदयो के घाव भरें और देश की टूटती राज्य व्यवस्था को सम्भाले । हम अपने देश के पिछडे और शोषित सभी वर्गों को सब प्रकार का न्याय इस ढग से दे, जिससे हमारा सर्वनिष्ठ भाईचारा मजबूत हो ।

विलक्षण प्रतिभा के धनी : पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति

—विमलकान्त शर्मा

प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी न केवल एक महान राष्ट्रभक्त, अनन्य हिन्दी सेवी, मूर्धन्य साहित्यकार, सुप्रसिद्ध भाषा शास्त्री व इतिहासविद ही थे बल्कि वे एक यशस्वी पत्रकार भी थे ।

प० इन्द्र विद्यावाचस्पति का जन्म ९ नवम्बर १८८९ को जालधर के एक सम्पन्न परिवार मे हुआ था । उन्हे अपने स्वनाम-धन्य पिता स्वामी श्रद्धानन्द से देश प्रेम व राष्ट्र भक्ति की भावना विरासत मे मिली थी । छात्र जीवन मे उनकी देश प्रेम सम्बन्धी लिखी एक कविता की निम्न पक्तिया उल्लेखनीय हैं —

हे मातृभूमि तेरे चरणो मे सिर नवाऊ
मैं भक्ति भेट अपनी तेरी शरण मे लाऊ ।
तेरे ही काम आऊ तेरे ही मन्त्र गाऊ
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं चढाऊ ।।

उन्होने बचपन मे ही लोकमान्य बाल गगाधर तिलक को अपना राजनैतिक गुरू मान लिया था और स्वतन्त्रता सग्राम मे सक्रिय भाग लेकर वे कई बार जेल भी गये । बाद मे तो वे जिला व प्रान्तीय काग्रेस समिति के भी प्रधान चुने गए थे ।

मेधावी छात्र प० इन्द्र देव जी की शिक्षा दीक्षा गुरुकुल कागडी, विश्वविद्यालय हरिद्वार मे हुई थी । सन १९१२ मे वहा से व स्नातक की उपाधि ग्रहण की और वे उसी विश्वविद्यालय मे इतिहास के अध्यापक नियुक्त हो अध्यापन करने लगे । उन्नति करते करते वे मुख्य अधिष्ठाता व कुलपति के गौरवशाली पद तक पहुच गए । उनके कार्यकाल मे विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का बहुत सुधार हुआ और उन्होने गुरुकुल कागडी मे एक सग्रहालय की भी स्थापना की जो आज भी पर्यटको के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है ।

प्रख्यात साहित्यकार प० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लगभग ५० पुस्तकें लिखी हैं । इनके ६ उपन्यासो मे सरला की भाभी", "अपराधी कौन", "जमीदार", आदि विशेष लोकप्रिय हुये । धार्मिक ग्रन्थो मे "उपनिषदो की भूमिका", "आत्मबलिदान', 'भारतीय सस्कृति का प्रवाह", आदि उल्लेखनीय हैं । "मेरे पिता' नामक पुस्तक पर उन्हे उत्तरप्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया था ।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पं० इन्द्रविद्या वाचस्पति

(पृष्ठ १ का शेष)

कला सुसाध्य थी और हृदय तथा मस्तिष्क पर अपना सीधा प्रभाव डालती थी।

इतिहास के ग्रन्थो और महापुरुषो की जीवन कथाओ को पढने का उन्हे बडा शौक था। उन्होने "मुगल साम्राज्य का क्षय और कारण , स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा', 'भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त , "भारत के स्वाधीनता स ग्राम का इतिहास", आदि कई इतिहास एव राजनीति पर आधारित ग्रन्थ लिखे। उन्होने कई महापुरुषो की जीवनिया भी लिखी। 'नेपौलियन बोनापार्ट की जीवनी", 'प्रिन्स बिस्मार्क-जीवन चरित्र', "गैरीबाल्डी–जीवन चरित्र" "महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र", "प० जवाहर लाल नेहरू-जीवन चरित्र' "सम्राट् रघुवश जीवन चरित्र', 'कर्मयोगी राष्ट्रपति–स स्मरण', 'मेरे पिता–स स्मरण", "लोकमान्य तिलक', आदि उनकी रचनाए पाठक के मन-मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव छोडती हैं। उनकी एक रचना 'मैं' उनका श्रेणी हू' वास्तव मे उस युग के महापुरुषो के व्यक्तित्व एव कर्त्तृत्व का अनूठा आकलन है। उन्होने भारतीय स स्कृति पर आधारित अनेक ग्रन्थो का प्रणयन किया।

अपनी तरुणाई के दिनो मे उन्होने काव्य रचना भी की थी। भारत वन्दना' पर लिखे उनके श्लोको को प० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सराहा था। अपने जीवन के अन्तिम दिनों मे महाभारत की शैली मे उन्होने भारत इतिहास' पर स स्कृत भाषा मे एक मनोहर काव्य लिखा। उनका '"भारत वन्दना" गीत महात्मा गाधी जी को बहुत प्रिय था और अनेक सभाओ में गाधी जी उनसे यह गीत गाने के लिए कहा करते थे।

हम सभी इस बात से परिचित है कि उनकी शिक्षा दीक्षा गुरुकुल के स्वाधीनता और स्वदेश व स्वस स्कृति के प्रेम मे भरे हुए वातावरण में सम्पन्न हुई थी, अत उनके रक्त मे स्वदेश स्वभाषा व स्वस स्कृति की भावनाए सदैव स्पन्दित होती रहती थी। दिल्ली मे हिन्दी का वातावरण बनाने वालो मे उनका नाम पहली पक्ति मे है।

उन्होने अपने जीवन काल मे कई मासिक, साप्ताहिक एव दैनिक पत्र-पत्रिकाओ का सम्पादन एव स चालन किया था। उस युग मे यह कार्य इतना आसान न था। अग्रेजी सरकार का दोष-अन्वेषिणी कठोर दृष्टि सदैव इन पत्रो पर रहती थी, परन्तु प० जी का आदर्श था-न देन्यम् न पलायनम्"। इसी आदर्श-वाक्य को लेकर उन्होने निर्भीक पत्रकारिता को आगे बढाया। उन्होने अपने अन्तिम क्षणो तक राष्ट्र और समाज की चिन्ता की। एक बार उन्होने कहा था—"मेरे गिरने का तो समय आ गया है, पर मैं चाहता हू कि मेरा देश न गिरे और इस दिशा मे आगे बढने वाले आप लोग न गिरे। 'ऐसे बलिपथियो का उत्सर्ग कभी व्यर्थ नही जाएगा। जब तक हम इन्द्र जी जैसे सशक्त पत्रकारो की लेखनी की निर्भीकता और सच्चाई अपनाते रहेगे, जब तक हम उन उदात्त आदर्शों और लक्ष्यो को स्मरण करके, उन्हे प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त रहगे तब तक ऐसी विभूतियो का उत्सर्ग व्यर्थ न जाएगा। राष्ट्रसमाज एव दूसरा के लिए उत्सर्ग कर देने वाले उस दिवगत महामानव को आज हम उनके १० वे जन्मदिन पर स्मरण कर रहे है।

अपने दैनिक पत्र "अर्जुन' की दश वार्षिकी के अवसर पर उन्होने विश्व-कवि रविन्द्र नाथ टैगोर को आमन्त्रित किया। वार्तालाप मे उन्होने कहा भारत ने मुझे तब पहचाना, जब यूरोप ने मेरा जय जयकार किया। प० जी ने तुरन्त "सद्धर्म प्रचारक" साप्ताहिक पत्र की फाइल निकालकर कवीन्द्र को दिखाई और कहा—"आपको नोबुल पुरस्कार मिलने से पहले ही हमने आपकी प्रतिभा और योग्यता का सम्मान किया था। पडित जी की ऐसी थी तत्वदर्शिनी प्रज्ञा।

सन् १९१२ मे गुरुकुल का स्नातक बनने पर उन्होने व्रत लिया था—'मैं शक्तिभर स्वधर्म और स्वदेश की सेवा मे अपना जीवन लगाऊगा'। परमात्मा ने उन्हे उज्जवल प्रज्ञा और साहस प्रदान किया। वे प्राध्यापक, पत्रकार, साहित्यकार, समाज सुधारक स्वाधीनता सेनानी और बाद मे सासद के रूप मे आजीवन लोक-शिक्षक और लोकसेवक बनकर स्वदेश, स्वधर्म और स्वभाषा की सेवा करते रहे।

पडित जी का पारिवारिक जीवन बडा सुखी था। उनके गृहजीवन की सफलता और चारुता का श्रेय उनकी गृहलक्ष्मी चन्द्रवती जी की योजना शक्ति व्यवस्था शक्ति और कार्यक्षमता तथा सेवा परायणता को जाता है।

प० जी ने आजीवन गुरुकुल कागडी की सेवा की। वे यहा पर प्राध्यापक रहे, मुख्याधिष्ठाता रहे और आगे चलकर कुलपति भी। वे गुरुकुल की प्रगति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। उनके नेतृत्व मे गुरकुल ने बहुमुखी उन्नति की। गुरुकुल मे अनेक नए विभाग खुले। पडित जी ने शिक्षा की दृष्टि से गुरुकुल की अपनी विशेषताओ को अक्षुण्ण रखते हुए, उसे बदलते हुए समय के अनुकूल ढालने का प्रयास किया। गुरुकुल की उपाधियो को सरकारी सेवाओ के लिए, सरकार से स्वीकृत कराया। उसमे विज्ञान, कृषि तथा अभियान्त्रिकी जैसे आधुनिक विषयो के पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ कराए। प० जवाहरलाल नेहरू ने एक अगस्त १९५८ को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे विज्ञान भवन का उद्घाटन करते हुए कहा था—"मुझे अपनी प्राचीन सभ्यता पर गर्व है। यह अच्छी और महान दोनो है। यह प्रेरणादायक है। आर्थिक और राजनैतिक तरक्की के लिए जरूरी है कि हम वैज्ञानिक तरीके अपनाए और अपने काम मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखे। आज की वैज्ञानिक सस्कृति और पुरानी सस्कृति दोनो मे मेल होना आवश्यक हैं। यही विचार प० इन्द्र जी के भी थे। प० नेहरू के अतिरिक्त गुरुकुल में डा० सम्पूर्णानन्द, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, डा० चिन्तामणि देशमुख लौह पुरुष सरदार पटेल भी गए।

विजय', 'वीरअर्जुन , और 'नवराष्ट्र' आदि पत्रो का सम्पादक दिल्ली काग्रेस का प्रधान, गुरुकुल कागडी का कुलपति और सार्वदेशिक सभा का समय-समय पर मन्त्री और प्रधान, वह समाज सुधारक महामानव, जीवन का वह ज्योति स्तम्भ २३ अगस्त १९६० को हमे छोड गया। वह दीप जो जीवन भर दूसरो को प्रकाश देता रहा मृत्यु के बाद भी हमारे पथ को आलोकित कर रहा है हमारे मनोबल को दृढ आधार प्रदान कर रहा है। आओ आज हम प्रण करे कि अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक राष्ट्र, देश और धर्म के लिए कार्यरत रहेगे। "हम उसके आदर्शवाक्य को सदैव स्मरण रखेंगे—अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पलायनम। उस महामानव के प्रति हमारी श्रद्धावनत श्रद्धाजलि।

महर्षि निर्वाण दिवस

आर्य समाज, मेस्टन रोड, कानपुर में अमावस्या, बृहस्पतिवार १८ अक्तूबर १९९० को प्रात काल महर्षि दयानन्द, सरस्वती का १०७ वा निर्वाण दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर मृत्युञ्जय महर्षि को श्रद्धाजलि समर्पित करते हुये श्रीयुत जयदेव जी गुप्त ने कहा कि महर्षि ने फिलोसौफिकल जैसी सस्था से या अन्य मतमतान्तरो से आर्य समाज के दूसरे नियम के आधार पर किसी से भी समझौता नही किया श्री बक्षी झा जी ने कहा कि महर्षि भाषा, देवनागरी लिपि एव वेश भूषा पर बडा बल दिया साथ ही सत्य एव धर्म पर अन्त मे डा० विजय पाल शास्त्री ने कहा कि महर्षि का जीवन ही अनोखा है कई बातो का स्मरण दिलाया ब्रह्मचर्य के पोषक भारतीय एकता के प्रतिपादक, अछूतोद्धार के साथ ही साथ कहा कि जोधपुर जाते समय आर्य लोगो ने स्वामी जी से कहा, जहा आप जा रहे हैं वहा के लोग कठोर प्रकृति के हैं कही ऐसा न हो कि चिढा कर आपको पीडा दे। स्वामी ने उत्तर दिया—यदि लोग हमारी अ गुलियो की बत्तिया बनाकर जला दे तो भी कोई चिन्ता नही मै वहा जाकर अवश्य सत्योपदेश करू गा। राव राजा तेजसिंह ने प्रार्थना की कि भगवान् आप रहन सहन के विषय में कुछ न कहियेगा महर्षि ने कहा बलपूर्वक मैं जो कुछ कहूगा सत्य ही कहूगा अन्त मे गुरुदत्त, विद्यार्थी को नास्तिक से आस्तिक बना देते हैं इत्यादि।

विजयपाल शास्त्री (मन्त्री)

—आर्य समाज पालम कालोनी नई दिल्ली गुरुवार १८ अक्टूबर १९९० दोपहर ३ बजे से दीवाली पर्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का १०७ वा निर्वाणोत्सव आर्य समाज के मन्त्री श्री भागवत सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समाज के उपप्रधान श्री राजेश बहल जी अपने भजन के द्वारा महर्षि को मार्ग प्रदर्शक के रूप में बताए। प्रचार मन्त्री श्री कृष्णमाधव प्र० आर्य ने उनकी जीवनी और उपदेशो की ओर सकेत दिलाते हुए लोगो एव युवाओ से आग्रह किया कि महर्षि द्वारा बताए गए मार्ग का अनुकरण करे। युवा सदस्य श्री राजेश कुमार आर्य ऋषि के व्यक्तित्व से अवगत कराते हुए युवाओ को उनके द्वारा बताए गए रास्ते पर चलने के लिए आह्वान किया। युवा सयोजक मन्त्री श्री जसवीर कुमार आर्य ने युवाओ को सम्बोधित करते हुए कहा, महर्षि के जीवनकाल से उपदेश लेकर उन्हे वास्तविकता के धरातल पर उतारने की कोशिश ही न करे, बल्कि सकल्पित हो। विभिन्न व्यक्ति ने उनके जीवनगाथा, क्रियाकलाप एव कर्मपरायणता पर अपने-अपने विचार दिए।

कार्यक्रम अध्यक्ष (कैप्टन भागवतसिंह) के आदेशानुसार क्षण भर मौन धारण कर शोक मनाया गया। अन्त मे उन्होने कहा कि ऋषि की कर्मपरायणता को ध्यान मे रखते हुए समाज, धर्म, राष्ट्र के सम्बर्द्धन के लिए पूरा निष्ठा से अपने कर्म मे तल्लीन रहूगा। उन्होने लोगो से कहा कि नियमित हवन, स्वाध्याय एव हर क्रियाकलाप मे वेदोक्ति का अनुसरण करे। दीपावली के शुभ कामनाओ के साथ कार्य का समापन किया गया। शान्ति पाठ के बाद प्रसाद वितरण किया गया। अन्त में सर्वजन को धन्यवाद ज्ञापन किया गया। —कृष्णमाधव प्र० आर्य (प्र०मन्त्री)

प्रभात आश्रम की प्रभा

गुरुकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री वाचस्पति मिश्र ने मानव ससाधन एव विकास मन्त्रालय (भारत सरकार) के स्वायत्त प्रतिष्ठान राष्ट्रीय सस्कृत–सस्थान (दिल्ली) द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित आचार्य प्राचीन व्याकरण) की परीक्षा (सन् ८९-९०) मे सर्वप्रथम आकर मेरिट मे सर्वोच्च स्थान द्वारा गुरुकुल एव आर्यजगत् को गौरवान्वित किया है।

इस अवसर पर अपने स्नातक बन्धु को बधाई देते हुए स्नातक मण्डल उनके भावी जीवन के प्रति शुभकामनाय प्रकट करता है।

स्नातक मण्डल
गुरुकुल प्रभात आश्रम

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-१ का वार्षिकोत्सव १२ नवम्बर मे १९९० तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर प० राजगुरु शर्मा प्रात ७ से ८ ३० तक ऋग्वेद परायण यज्ञ के ब्रह्मा होगे तथा रात्रि मे ८ ०० से ९ ०० तक वेदकथा करेगे। कथा से पूर्व सत्यपालजी पथिक के भजन होगे। रविवार १८ ११ ९० को पूर्णाहुति के पश्चात् राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सामवार १९-११ ९० को आर्य महिला सम्मेलन होगा। रविवार को अनुभवी आयुर्वेदिक वैद्यो के नि शुल्क परामर्श की व्यवस्था की गई है।

—विद्यासागर कालडा (मन्त्री)

आर्यसमाज गोंडल : प्रस्ताव

आर्यसमाज गोडल की आज की यह सभा सर्वसम्मति मे प्रस्ताव करके गुजरात सरकार स विनती करती है।

राजकोट जिले का टकारा ग्राम युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म भूमि है। इस लिए इस स्थल को देखने के लिए सैकडा लोग देश विदेश से आते हैं।

टकारा एक छोटा गाव है। और वही राजकोट मोरवी रोड पर है। वहा गटर और अच्छे रास्तो का अभाव है। इस लिए यहा पर आने वाले सहस्त्र लोगो को बहुत मुश्किल भुगतनी पडती है। हमारी जानकारी के अनुसार गुजरात सर-कार ने यहा जन्म हुए पुरुषो के जन्म स्थल को जन्म स्थल टाइप जन्म स्थल तक पक्के रास्ते से जोडने का निश्चय किया है। इसलिए हमारी सरकार से प्रार्थना है कि इस बात पर टकारा मे अवश्य अमल किया जाय।

—: टंकारा समाचार :—

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की पावन जन्म भूमि मे स्थित उनके जन्म–गृह पर स्वामी जी का १०७वा निर्वाण दिन उपदेशक महा-विद्यालय टकारा के ब्रह्मचारी एव कार्यकर्ता, स्थानीय आर्य समाज के सदस्य एव आर्य वीर दल क आर्य वीरो की उपस्थिति मे आर्य समाज के मन्त्री श्री हसमुख भाई आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे उपदेशक विद्यालय टकारा के उपाचार्य अरुण कुमार विदर्भीन एव छात्रा ने तथा अन्य सदस्या ने अपनी श्रद्धाजलि स्वामी जी के प्रति अर्पित की। इस अवसर पर दीपावली के पव पर स्वर्गस्थ हुए महावीर स्वामी, स्वामी रामतीर्थ एव विनोबा भावे का भी स्मरण किया गया।

वैदिक दर्शनों को पढ़ें

योग सांख्य, वैशेषिक न्याय, वेदान्त मीमासा इन छ वैदिक दर्शनो का सस्कृत भाष्यो सहित अध्ययन तथा वैदिक योग प्रशिक्षण प्राप्त कर।

विशेषताए—प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण, आदर्श गुरुकुलीय दिनचर्या प्रतिदिन २ घण्टे व्यक्तिगत साधन व्यवहार में यम नियमो का उच्च स्तर से पालन भोजन, वस्त्र, आवास, पुस्तकादि की नि शुल्क व्यवस्था, लिखित एव मौखिक परीक्षाए, व्यवहार की भाषा सस्कृत,

उपाधिया—दर्शनाचार्य, दर्शनविशारद, दर्शनप्राज्ञ,

नोट—आजीवन ब्रह्मचारी को प्राथमिकता व्याकरण आचार्य, शास्त्री वा समकक्ष योग्यता वाले विद्यार्थी प्रवेशार्थ निम्न पते पर पत्राचार करे। स्थान सीमित है। प्रवेश मार्च १९९१ से आरम्भ होगा।

आचार्य
दर्शन-योग-महाविद्यालय,
आर्यवन विकास क्षेत्र, रोजड,
प० सागपुर, जि० साबर काठा,
गुजरात पिन-३८३३०७

विलक्षण प्रतिभा के धनी

(पृष्ठ ४का शेष)

प० इन्द्र जी मूक इतिहासकार भी थे। उन्होने अकबर से लार्ड माउन्ट बेटन तक भारत का इतिहास ६ भागो मे लिख कर एक प्रशसनीय कार्य किया है। आर्य समाज का इतिहास (२ खण्ड) लिखकर उन्होने सर्वप्रथम मौलिक प्रयास किया था।

भाषा शास्त्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी का सस्कृत, उर्दू, अग्रेजी फ्रेंच आदि कई भाषाओ पर समान अधिकार था। हिन्दी के प्रकाड पडित इन्द्र जी ने तो राष्ट्रभाषा की अद्वितीय सेवा की है। बाल्यकाल से ही वे अपनी डायरी हिन्दी या सस्कृत मे लिखते रहे थे। दिल्ली म पहले उर्दू का बोलबाला था परन्तु उनके प्रयासो से यहा हिन्दी का विशेष प्रचार हुआ। गुरुकुल कागडी मे शिक्षा का माध्यम हिन्दी करवाने का श्रेय तो प० जी को ही जाता है। हिन्दी का उल्लेखनीय सेवाओ के लिए तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हे साहित्य वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया था।

प० इन्द्र वाचस्पति जी दिल्ली मे हिन्दी के पत्रकारिता के जनक माने जाते है। ७ ८ वर्ष की अल्प आयु मे ही उन्होने सत्य प्रकाशक नामक हस्त लिखित पत्रिका निकाल कर एक अद्भुत कार्य किया था और बाद म वे "सद्धर्म प्रचारक साप्ताहिक पत्रिका की भी प्रकाशन करने लगे।

सन १९१२ में दिल्ली से उन्होने "वैभव 'भविष्य अर्जुन 'वीर अर्जुन, 'नवराष्ट्र, 'जनसत्ता आदि अनेक पत्र पत्रिकाओ का सफल व कुशल सपादन कर उन्होने निष्पक्ष व राष्ट्रवादी विचारधारा का शखनाद किया था। पडित जी के अग्रलेख व सम्पादकीय देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत होते थे और वे सदैव अग्रेजी सरकार के कोपभाजन बने रहे। इसी कारण कई बार वे जेल भी गये और उन्हे अखबार तक बन्द करने पडे।

प० इन्द्र जी एक आदर्श व यशस्वी पत्रकार थे और उन्होने पत्रकारिता को एक मिशन के रूप मे अपनाया था। वे सफल पत्रकार उसे ही मानते थे जो तपस्वी व निर्लोभी हो। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन ने 'वीर अर्जुन की रजत जयती के अवसर पर कहा था, प० इन्द्र विद्यावाचस्पति के करों मे हिन्दी प्रेम का गाण्डीव सदैव राष्ट्रीयता की रक्षा करता रहेगा। प्रख्यात साहित्यकार श्री क्षेमचन्द्र सुमन ने एक बार उनके बारे मे कहा था कि प० इन्द्रजी हिन्दी पत्रकारिता गगन के एक देदीप्यमान नक्षत्र है। आपके प्रयासो से ही अखिल भारतीय पत्रकार सघ की स्थापना हुई और वे दो बार इसके प्रधान भी चुने गये। हिन्दी पत्रकारिता जगत मे उनकी बहुमूल्य सेवाए सदैव स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगी।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें सन १९५२ में राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया था और वे सन १९५८ तक इसके सदस्य रहे। आप सघ लोक सेवा आयोग के परामर्शदाता, शिक्षा मत्रालय की विश्वकोष परा-मर्शदात्री समिति के सदस्य अस्पृश्यता निवारण लीग के महामन्त्री स्वदेश सघ के प्रधान भी चुने गये। अपनी अद्भुत सूझ बूझ से उन्होंने इन सभी सस्थाओ को सक्रिय सहयोग देकर इनका मार्गदर्शन किया था। ऐसे महापुरुष का स्वर्गवास २३ अगस्त १९६० म हुआ था।

प० इन्द्र विद्यावाचस्पति आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ता थे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के भी मन्त्री व प्रधान निर्वाचित हुए। प० जी ने अत्यन्त लगन व समर्पित भाव से आर्य जगत की जो बहुमूल्य सेवा की है वह सदैव स्मरणीय रहेगी।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी प० इन्द्र विद्यावाचस्पति की जयती के अवसर पर उन्हे कोटि कोटि श्रद्धा-सुमन अर्पित हैं।

[हिन्दी विभाग, पत्रिका केन्द्र, ससद मार्ग,
नई दिल्ली]

निबन्ध एवं चित्रकला प्रतियोगिता

दिनाक २६-१०-९० दिन शुक्रवार को "रतनचन्दसूद आर्य पब्लिक स्कूल, बाई ब्लाक सरोजनी नगर नई दिल्ली में निबन्ध एव चित्रकला प्रतियोगिता हुई, जिसमे ७४ छात्र छात्राओ मे अनेक विद्यालयो से आकर भाग लिया, जिसका शुभारम्भ स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज, श्री रोशन लाल गुप्ता, श्री सुशीराम शर्मा श्री प्रियतम दास रसवन्त आदि आर्य महानुभावो ने अपने सुविचारो तथा छात्र–छात्राओं को आशीर्वाद देते हुए प्रतियोगिता के प्रति उत्साह वर्धन किया। इस प्रतियोगिता को सुचारु रूप से चलाने के लिए सयोजन विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती कपिला जी ने किया। (सुरेन्द्र कुमार शास्त्री-शिक्षक)

स्वतन्त्रता दिवस पर प्रधानमन्त्री के भाषण मे शिक्षा व भारतीय भाषाओं की चर्चा नहीं

लालकिले की प्राचीर से प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ओजस्वी भाषण मे राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान का सकल्प दोहराया है। इससे देश की जनता को यह आशा बधी है कि प्रधानमन्त्री के इरादे नेक है और वे इन इरादो को पूरा करने के लिए कृतसकल्प हैं।

डा प्रशान्त वेदालकार ने प्रधानमन्त्री की इस बात की आलोचना की कि उन्होने अपने भाषण मे शिक्षा व शिक्षको की समस्याओ तथा शिक्षा मे भारतीय भाषाओ के स्थान की कोई चर्चा नही की। ऐसा लगा कि प्रधानमन्त्री शिक्षा को राष्ट्रीय विकास मे कोई महत्व नही मानते।

देश के निम्न वर्ग व पिछडी जातियो की आरक्षण की बैशाखी से उनके विकास का स्वप्न देखने वाले प्रधानमन्त्री यदि पब्लिक स्कूलो मे ५० प्रतिशत स्थान पिछडी व अनुसूचित जातियो तथा जनजातियो और पिछडे वर्ग के लिए सुरक्षित करने की घोषणा करते तो यह प्रकट हो सकता था कि वे जातियो के लिए सचमुच कृतसकल्प है।

देश मे शत प्रतिशत लोगो की साक्षरता की समस्या उच्च वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा व्यावसायिक पाठयक्रम प्रतिभा पलायन मातृभाषा मे शिक्षा शिक्षणालयो मे खेल व सैनिक शिक्षा की असुविधा अध्यापको व छात्रो मे असतोष शिक्षा मे चरित्रनिर्माण का अभाव आदि शिक्षा जगत से सम्बद्ध अनेक समस्याए है जिनकी ओर प्रधानमन्त्री का ध्यान जाना चाहिए था।

इसी प्रकार स्वतन्त्रता के ४३ वर्षो के उपरान्त भी शिक्षा मे भारतीय भाषाओ विशेषत संस्कृत की अवहेलना से उत्पन्न राष्ट्र की भावात्मक तथा सांस्कृतिक एकता के नष्ट होने का भय प्रधानमन्त्री की दृष्टि मे आना चाहिए था।

डा० वेदालकार ने प्रधानमन्त्री से अपील की कि वे शैक्षणिक जगत की ओर भी ध्यान दे।



आर्य वीर दल हरियाणा का तेरहवां प्रान्तीय महासम्मेलन करनाल में सफलतापूर्वक सम्पन्न

डी०ए०वी० सीनियर सैकेण्डरी स्कूल करनाल मे आर्य वीर दल हरियाणा का तेरहवा प्रान्तीय महासम्मेलन ८ ९ सितम्बर को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

स्वामी सच्चिदानन्द जी ने यज्ञ द्वारा सम्मेलन का शुभारम्भ किया। स्वामी रतनदेव जी ने ध्वजारोहण करके आर्य वीरो को आशीर्वाद दिया।

शोभायात्रा बहुत ही प्रभावशाली ढग से प्रारम्भ हुई। हाथी पर सन्यासी गण विराजमान थे। जीप मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सेनापति आचार्य देवव्रत जी आर्य वीर दल हरियाणा के सरक्षक प्रो० उत्तमचन्द्र शरर सचालक श्री उमेदसिंह शर्मा तथा अन्य विद्वान उपस्थित थे।

ओइम् ध्वजधारी स्कूटरो पर सवार आर्यवीर, लोगो को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे।

करनाल का सारा मुख्य बाजार ओ३म् ध्वजा से शोभायमान हो रहा था।

रात्रि मे आचार्य डा० देवव्रत जी की अध्यक्षता मे आर्य वीर सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। उद्घाटन भाषण प्रो० उत्तमचन्द जी शरर ने दिया। इनके पश्चात प्रो० ओमकुमार आर्य उपसचालक आर्यवीर दल हरियाणा प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य स्वामी रतनदेव जी तथा स्वामी निर्मलानन्द जी ने आर्यवीरो को सम्बोधित किया।

प्रो० उत्तमचन्द शरर की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। प्रो० ओमकुमार आर्य प्रो० लाजपतराम आर्य आचार्य देवव्रत जी स्वामी रतनदेवजी प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य श्री उमेदसिंह शर्मा स्वामी सच्चिदानन्द जी आदि विद्वान वक्ताओ ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

अन्त मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता एव श्री उम्मेदसिंह शर्मा सचालक जी के नेतृत्व मे श्री वेदप्रकाश आर्यवीर गोष्ठी का आयोजन किया। इसमे अनेक आर्य वीरो ने अपने अमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए।





आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 8 9 11 1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

११ १वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मेस्टनरोड का कानपुर ११ व वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर शनिवार ९ फरवरी से मंगलवार १२ फरवरी १९९१ तक समारोह पूर्वक श्रद्धानन्द पार्क मे मनाया जाना निश्चित हुआ है। शोभायात्रा—शनिवार ९ फरवरी १९९१ को सायंकाल ठीक ४ बजे से तथा पूर्णाहुति ११ ९ फरवरी। महायज्ञ गायत्री प्रातः के साथ। विस्तृत कार्यक्रम बाद मे प्रकाशित किया जायगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के शास्त्र मर्मज्ञ विद्वान महोपदेशक तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया जा रहा है

डा० विजयपाल शास्त्री (मन्त्री)

आर्यसमाज सान्ताक्रूज ट्रस्ट

आर्यसमाज सांताक्रुज ट्रस्टी स्वर्गीय श्री भरत स्वरूप जी श्री जगदीश चन्द्र जी मलहोत्रा एव श्री सोमदत्त जी शर्मा के निधन पर शोक व्यक्त किया गया एव उनके रिक्त स्थान पर दिनांक २७ जुलाई १९९० को बैठक मे शेष आजीवन ट्रस्टीयो ने श्री इन्द्रबल जी मलहोत्रा श्री राजेन्द्र कुमार सहगल एव आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री देवेन्द्र कुमार जी कपूर को आजीवन ट्रस्टी नियुक्त किया।

आर्यसमाज सांताक्रुज ट्रस्ट के अध्यक्ष पद हेतु आजीवन ट्रस्टी श्री महाशय चिमन लाल जी एव मन्त्री पद हेतु कैप्टन देवरत्न आर्य सर्व सम्मति से निर्वाचित किये गये। इस ट्रस्ट के सात सदस्य आजीवन ट्रस्टी है एव आर्य समाज सांताक्रुज के प्रधान एव मन्त्री पदेन ट्रस्टी हैं।

वार्षिक निर्वाचन

६ १० ९ ० को आर्यसमाज [illegible] का वार्षिक चुनाव हुआ जिसके फलस्वरूप निम्न सदस्यों का चुनाव [illegible] किया गया।

प्रधान	श्री [illegible]
मन्त्री	श्री [illegible] प्रसाद
कोषाध्यक्ष	श्री [illegible] हुड्डा
प्रचार मन्त्री	श्री [illegible] गुप्त

—आर्यसमाज [illegible] का वार्षिक चुनाव रविवार ३० सितम्बर सरंक्षक श्री [illegible] की अध्यक्षता मे हुआ। सर्वसम्मति से निम्न अधिकारियो को मनोनित किया गया।

वैद्य गोपाल गोयल	प्रधान
कप्टन भगवान सिंह	मन्त्री
श्री नेगाराम	कोषाध्यक्ष
कृष्ण माधव प्र० आर्य	प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश II मे शुद्धि

२२-१० ९० को मिस टेरसा इसाक २१ वर्षीय ईसाइ युवती को उनकी इच्छा से हिन्दू वैदिक धर्म मे दीक्षित किया और फिर उनकी शादी बड़े धूमधाम से श्री मनीश शर्मा गाजियाबाद निवासी से सम्पन्न कराई गई—श्री रघुनन्दन गुप्ता मन्त्री आर्यसमाज व पुरोहित श्री मनोहरजी विरक्त ने आशीर्वाद दिया।

सेवा मे—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ० प्र०)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज,नई दिल्ली-११०००२ से मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१,फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४ अंक ५ | रविवार ११ नवम्बर १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक —२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्ययुवा महासम्मेलन समापन समारोह सम्पन्न

—विमल कान्त शर्मा (प्रचार मन्त्री)

नई दिल्ली—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आज तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में ७ वें आर्य युवा महासम्मेलन का भव्य समापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आज देश व समाज के सामने बड़ी विकट परिस्थितियां हैं। उन्होंने छात्रों एवं युवाओं का आवाहन किया कि वे समाज व राष्ट्र उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों एवं आर्य समाज के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा करें। स्वामी जी ने प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित इस आकर्षक व भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभा अधिकारियों को हार्दिक बधाई दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने सभा के श्रेष्ठ कार्यों, गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी दी। आर्यजगत के प्रख्यात पत्रकार प० क्षितीश वेदालंकार ने कहा कि युवकों को अपने मन से निराशा की भावना निकाल देनी चाहिए और अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आत्मदाह का मार्ग त्याग देना चाहिए। देश व समाज से यदि उन्हें कोई शिकायत है तो वे अपने प्रयासों द्वारा परिस्थितियों को बदल दें। उन्होंने युवकों से आवाहन किया कि वे समाज व देश सेवा का सकल्प लें।

स्वामी दीक्षानन्द ने प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के १५० विजेताओं को शील्ड, पदक वैदिक साहित्य आदि भेंट कर सम्मानित किया। स्वामी जी ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे बहुत सौभाग्यशाली हैं कि आर्यसमाज की छत्र छाया में इनका सर्वांगीण विकास हो रहा है। स्वामी जी ने छात्रों व ब्रह्मचारियों द्वारा भव्य प्रदर्शन के लिए सभा को साधुवाद दिया।

प्रख्यात वैदिक विद्वान प० यशपाल सुधांशु ने बच्चों को राष्ट्र का कर्णधार बताया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कार्यक्रम का सुचारु रूप से सचालन करते हुए कहा कि यह धारणा गलत है कि आर्यसमाज में बच्चे नहीं आते हैं। ५ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक एक मास तक चले इन कार्यक्रमों में दिल्ली के ५० स्कूलों के हजारों बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया है। श्री सूर्यदेव ने आर्यसमाज दीवानहाल की ओर से २३ दिसबर से २६ दिसबर ९० तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के लिए ५१,००० रु० की सहायता राशि देने की घोषणा की। उन्होंने सभी उपस्थित महानुभावों से तन-मन धन से राजधानी में हो रहे इस सम्मेलन को हर दृष्टि से सफल बनाने का आवाहन किया।

उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम के प्रारम्भ में लगभग २० विद्यालयों के छात्रों एवं कर्मचारियों ने योगासन, व शस्त्र प्रदर्शन पी टी प्रदर्शन का अत्यन्त आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत कर स्टेडियम में उपस्थित भारी जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। आर्य कन्या गुरुकुल नरेला की ब्रह्मचारिणी द्वारा आंख से सुई उठाने का अत्यन्त रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। आज के कार्यक्रमों में प्रथम आने वाले स्कूल एवं गुरुकुलों को प्रथम पुरस्कार के रूप में शील्ड समारोह के स्वागताध्यक्ष एवं आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल की ओर से प्रदान की गई।

इस कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् प्रान्तीय आर्य महिला सभा की श्रीमती सरला मेहता प्रकाश आर्य श्रीमती कृष्णा रखवन्त एवं राजधानी के समाजों के पदाधिकारियों सहित स्कूलों एवं गुरुकुलों के हजारों बच्चों ने उत्साहपूर्वक समारोह में भाग लिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्यवीर दल के सर्वश्री प्रीतम दास रखवन्त, प० सुखीराम शर्मा, डा ज्ञान प्रकाश शर्मा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सक्रिय सहयोग दिया। उल्लेखनीय है कि पी० टी० प्रदर्शन के लिए रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर को प्रथम, बिरला आर्य कन्या स्कूल कमलानगर एवं महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल को द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किये गये। शस्त्र प्रदर्शन में गुरुकुल गौतम नगर आर्यवीरदल नायसराय एवं कन्या गुरुकुल नरेला को क्रमश पहले, दूसरे व तीसरे इनाम में शील्डें दी गई। योगासन प्रदर्शन के लिए प्रथम पुरस्कार गुरुकुल गौतम नगर, द्वितीय पुरस्कार कन्या गुरुकुल नरेला व तृतीय पुरस्कार राजकीय बाल वरिष्ठ विद्यालय बाड़ा को प्रदान किया गया।

एक महीने तक भाषण, वाद-विवाद, निबन्ध, चित्रकला, खेलकूद आदि की प्रतियोगिताओं एवं इन कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य स्कूलों के छात्रों में नैतिक, बौद्धिक शारीरिक, सर्वांगीण विकास है।

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—यशपाल सुधांशु (?)

आदर्शतम समाज व्यवस्था

(आर्य समाज की मान्यता के अनुसार वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था)

(ले० आर्यबन्धु जयप्रकाश-प्रधान, आर्य समाज विजया
लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-७)

"अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय"

ऋग्वेद ५-६०-५-

'In the eyes of God no one is big, no one is small, all are alike, all are for equally recipient of His love and blessing for prosperity Rigveda)

अर्थ

परमेश्वर की दृष्टि मे न कोई बड़ा है न कोई छोटा है। सभी समान है। उसके प्रेम व कृपा की सुख-समृद्धि सभी को समानता से प्राप्य हैं।

ऋग्वेद

समाज इतिहास

पवित्र वेदो से प्रस्फुटित यही ईश्वरीय व्यवस्था, आदि मानव समुदाय का पथ प्रदर्शन करती थी, कालान्तर मे इस व्यवस्था के विरुद्ध पैदा कुछ राजसी-तामसी वृत्ति के अतिमर्यादित व्यवहारों को नियन्त्रित करने हेतु आदि—राजर्षि "मनु" ने मानव धर्म शास्त्र सपादित किया व धर्म-संस्थापनार्थाय (धर्म सापेक्ष व सम्प्रदाय निरपेक्ष) राजतन्त्र की उत्पत्ति की इस के प्रतिक्रियास्वरूप यद्यपि राजसी-तामसी वृत्ति के अधर्मी (धर्म निरपेक्ष सम्प्रदायिक) राजतन्त्र भी बने बिगड़े तो भी मानव इतिहास मे आर्यों को ही सार्वभौमिक चक्रवर्ती राज्य संचालन का यश सदैव मिला है। आर्यों का आदिदेश आर्यावर्त भारतवर्ष का प्राचीनतम नाम है। आर्य शब्द का अर्थ है—श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा परोपकारी सत्य विद्यादियुक्त, गुणयुक्त अर्थात वे व्यक्ति जो धर्म न्याय आदि के मार्ग पर धैय से चलते हुए समाज का कल्याण चाहते हैं। भारतीय शास्त्रो व पाश्चात्य विद्वानो के मतानुसार भी वही व्यक्ति सभ्य और आर्य होता है जो उदार निष्ठावान सत्यप्रमी दयालु सरल न्याय व न्यायपथावलम्बी हो जो निजदृष्टि मे ऊंचा उठा हो और दूसरो का सम्मान करता हो। वेद मे भी उत्तम व्रतो को वरण (वर्ण) करने वाले सुसस्कृत मनुष्य को आर्य नाम अलंकृत किया गया है।

महाभारत काल मे समाज व्यवस्था सम्पत्ति व सत्ता का व्यवहार जन्मा धिकार के रूप मे आरक्षित होने के उपरान्त आर्यों की आर्य समाज व्यवस्था विकृत हो गई। आरक्षण ने समाज के समान अवसर समाप्त कर दिए तथा स्वस्थ प्रतियोगिता भी समाप्त कर दी। फलत अवैदिक अनार्यो का यह भारतीय समाज राजनीतिक रूप से भी पराधीन हो गया। महान बलिदानो के फलस्वरूप वर्ष १९४७ म भारतवर्ष ने पुन राजनैतिक आजादी तो प्राप्त कर ली किन्तु इस दोषपूर्ण समाज व्यवस्था ने करोड़ो हरिजनो के श्रम से अर्जित वैभव को कुछ चन्द लोग शोषण व सम्मान के हाथ म गिरवी रख दिया है।

विश्व म भी नाना विध राजनैतिक व अन्य राजनैतिक सगठन अपने अपने प्रयासो म मानव समाज के मूल शत्रु गरीबी अशिक्षा व अन्याय से सघषरत है। किन्तु समाज म स्वार्थियो भाज का यह नितान्त भौतिकवादी दृष्टिकोण व्यक्तिमात्र मे आत्मशून्यता ही विकसित कर रहा है पाखण्डी सम्प्रदायो व भौतिक विज्ञान ने नयी पीढ़ी को नास्तिक व चरित्र शून्य बना दिया है।

—इस धर्म संस्कृति चरित्र शून्यता मे मानवता को सच्ची शान्ति कैसे प्राप्त होगी ?

महान ईश्वर भक्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी अपनी अर्जित विद्या व तप के बल पर, तत्कालीन सभी अवैज्ञानिक असत्य विश्वासो व कुरीतियो का खण्डन किया व स्थापना की कि सब सत्य विद्याओ का पुस्तक, पवित्र वेद ही आदि ईश्वरीय ज्ञान हैं। वैदिक सूर्य के प्रकाश से ही कोई भी धर्म तत्त्व प्रति प्रकाश करता है। समान जाति का धर्म एक ही होता है या अनेक ? महर्षि ने कहा कि जो कहो अनेक होते है तो एक दूसर के विरुद्ध होते है व अविरुद्ध ? जो कहो विरुद्ध होते है तो एक के बिना दूसरा सत्य धर्म नही हो सकता और जो कहो अविरुद्ध है तो पृथक-पृथक होना व्यर्थ है। इसलिए धर्म और अधर्म एक ही है अनेक नही। अत विश्व म शान्ति एव कल्याण का शाश्वत मार्ग वैदिक धर्म ही कम्पास सुई की भांति मानव की सनातन ईश्वरीय अचूक दिशा है। अब यदि कोई विश्व कल्याण के इस वैदिक सत्य मार्ग को सम्पूर्णतः जानता हो नही है तो अन्याय मार्गो पर धन श्रम व विचार मे निरर्थक भटकने की बजाए आओ हम अपने महान पूर्वजो की भाति ही पुन वैदिक धर्माचारी बन कर ईश्वरीय आज्ञाओ का पालन कर विश्व मे शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उन्नति हेतु त्रुटिहीन वैदिक समाज व्यवस्था अंगीकार करे।

इसके लिए सर्वप्रथम हम जन्मना अधिकारवाद (आरक्षण समाप्त कर पुन योग्यता आधार पर ही वर्ण निर्धारण की प्रक्रिया निश्चित करनी होगी। अशिक्षा के विरुद्ध कमर कसने वाले-ब्रह्मव्रती अन्याय के विरुद्ध कमर कसने वाले क्षत्रिय व्रती अभाव के विरुद्ध कमर कसने वाले वैश्यव्रती ही द्विज (दीक्षित गुण कर्म स्वभाव का द्वितीय जन्म) कहलाते है यथा सम्मान सहित शेष समुदाय भी वैदिक समाज का अभिन्न सेवक वर्ग होता है। वैदिक समाज व्यवस्था म जो इन चारो वर्णों मे नहीं रहता है वह दस्यु अनार्य कोटि मे पृथक रखा जाता है इसी प्रकार धर्म-अर्थ काम व मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि हेतु मनुष्य को आयु क्रम के चार आश्रम मे जीवन व्यतीत करना वैदिक समाज व्यवस्था का दूसरा आवश्यक अंग है। इसमे प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम मे सभी बालक/बालिकाओं को विद्यार्जन हेतु

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मोक्ष-प्राप्ति

उत्तम कर्म करते शरीर से अर्जित किया प्रकाश को।
कर्मों का फल भोग लिया सुख पाया उस उल्लास को॥
जिसका कोई पार नही है केवल परमानन्द है।
उसकी पाकर जीव अहा पर रंच नहीं दुख द्वन्द्व है॥
भौतिक जग को तजकर जाता परमपिता की गोद में।
परमानन्द प्राप्त कर मर जाता है अतिशय मोद मे॥
परमात्मा का ज्ञाता ही उस परमात्मा को पाता है।
परगति को प्राप्त किया फिर और न कुछ भी भाता है॥
परमेश्वर की आज्ञा पालन जो अधर्म से अलग रहे।
छोड़ अविद्या और कुसंग को कुसंस्कार से विलग रहे।
कुव्यसनो को त्याग सत्य भाषण और पर उपकार करें।
विद्या प्राप्ति पक्षपात तज न्याय धर्म साकार करें॥
ईश स्तुति प्रार्थना उपासना में जो अविचल लीन रहे।
योगाभ्यासी हो अध्ययनाध्यापन मे निरत प्रवीण रहे।
धर्म करे धारण पुरुषार्थी ज्ञानोन्नति मे चित्त धरे।
सर्वोत्तम साधन करने में नित्य धारणा ध्यान करे॥
जो कुछ करे पक्षपात से रहित धर्म के अनुसार करे।
सभी पाय मुक्ति को इससे उलटा चलकर बन्ध करे॥
यही महर्षि दयानन्द ने अनुभव से बतलाया है।
पढ़ो तुम नवम समुल्लास की वाणी ने फरमाया है।
किन्तु मोहमाया मे फसकर हमने भूल गवाया है।
मानव हीरा जन्म मिला उसको भी व्यर्थ लुटाया है।
शान्त समाहित होकर दुर्गुण त्याग ईश्वर का ध्यान करो।
मोक्ष धाम को पाओगे सर्वस्व प्रभु को दान करो॥

—सत्यभूषण शास्त्री वेदालंकार
(एम०ए०)
१० मुनिरका विहार नई दिल्ली ५७

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

मंडल कमीशन बनाम आर्यसमाज कमीशन



देश के राजनीतिज्ञों ने मण्डल-कमीशन को जिन भावनाओं से निर्माण किया उनका आर्यसमाज स्वागत करता है। जहाँ तक मैं समझ पाया हू इस कमीशन का निर्माण इस भावना से हुआ होगा क्योंकि सदियों से भारतीय समाज का चलन जन्म के आधार पर चलता रहा—एक वर्ग उच्च-स्थिति में रहा, दूसरा वर्ग निम्न स्थिति में रहा, और यह ऊच-नीच के भेद जन्म-जन्मान्तर चलते रहे। कुछ सुविधायें जो एक वर्ग को मिलती रहीं दूसरा वर्ग उनसे वंचित रहा। अब युग बदलो हुआ है। कोई जन्म से अपने को ऊंचा नहीं कह सकता, दूसरे को नीचा नहीं कह सकता। कह नहीं सकता—अलग बात है, परन्तु कहता है, और कहता ही नहीं इसी तरह से बरतता भी है—इस जन्म-जात जाति भेद के कारण समाज में असन्तोष उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक है। यह जन्म गत जाति-भेद कैसे मिटाया जाए, सब मनुष्यो को मानवता के अधिकार समान रूप से कैसे दिये जायें—इसी आधार पर मण्डल-कमीशन की रचना हुई। इस कमीशन ने यह देखा कि जन्म के कारण समाज का एक वर्ग मानवता के अधिकारो से भी वंचित है, और इस वञ्चना से सदा असन्तुष्ट रहता है, इस असन्तोष का मुख्य कारण आर्थिक है, यह राय दी कि इस वर्ग को अन्य वर्गों की अपेक्षा हर क्षेत्र में विशेष सुविधायें दी जायें जिसे अंग्रेजी मे 'रिजर्वेशन' तथा हिन्दी में 'आरक्षण' कहा जाता है। इस प्रकार का 'आरक्षण' या रियायतें' दिया जाना स्वाभाविक था, परन्तु इस प्रकार रियायतें दिए जाने का परिणाम यह हुआ कि समाज का वह वर्ग जो अपनी योग्यता के आधार पर सामाजिक—रचना में अपना स्थान बनाये हुआ था वह असन्तुष्ट हो गया। अब स्थिति यह उत्पन्न हो गई है कि समाज दो वर्गों में बट गया है—एक वर्ग वह है जो 'योग्यता' को सामाजिक-रचना में मुख्यत देता है। दूसरा वर्ग वह है जो 'जाति' को इसलिए मुख्य स्थान दे रहा है क्योंकि सदियों से और सदियों तक उनके साथ अमानवता का व्यवहार हुआ है, उसके प्रतिशोध में वह हर क्षेत्र में वरीयता या रियायत मांगता है। हमारे देखते-देखते हमारा सम्पूर्ण-समाज दो भागों मे बट गया है। समाज के दो भागो में बट जाने पर मुझे कोई चिन्ता न होती चिन्ता इस बात की नहीं कि कुछ लोगों को अधिकार मिले, कुछ को नहीं मिले, चिन्ता इस बात की है कि हमारा समाज सदा बटा रहेगा, अछूत सदा अपने को अछूत कहते रहेंगे, छूत सदा अपने को छूत कहते रहेंगे क्योंकि इन शब्दों के प्रयोग से ही हर व्यक्ति को मानवता के अधिकार मिलने या न मिलने का सम्बन्ध जुड़ा रहेगा।

हम देश की एकता का नारा लगाते हैं, और देश को टुकड़ों-टुकड़ो में बांट रहे हैं। मेरा विचार है कि देश को इस भयंकर स्थिति से बचाने के लिए आर्य समाज को मण्डल कमीशन की तरह एक आर्यसमाज-कमीशन बनाना चाहिए। जब देश में राजनीति ने जन्म भी नहीं लिया था, तभी से आर्यसमाज छूत-अछूत की समस्या पर विचार करता रहा है। आर्यसमाज ने ही नारा दिया था कि कोई अछूत नहीं है, अगर है तो 'दलित' है—'दलित शब्द का अर्थ ही यह है कि जिसे समाज ने दबाया है या जिसे मैंने दबाया है दबाने का दोष मेरा है, समाज का है, जिसे दबाया गया है उसका नहीं। एक समय ऐसा आया था जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राजनीतिक-जगत् में प्रवेश कर के देश की समस्या को अपने हाथों में लिया था। कुछ देर राजनीति में रहकर उन्होंने अनुभव किया देश की भीतरी समस्या तो छूत-अछूत की है। तभी उन्होने 'अछूत' शब्द की जगह 'दलित' शब्द का प्रयोग किया क्योंकि 'अछूत' तथा 'दलित'—इन दोनों शब्दों में अर्थगत भेद है, 'अछूतोद्धार' – शब्द का शोर मचाने वालो को भी इस भेद का ज्ञान नहीं। उन्होंने राजनीतिज्ञों की आंखें खोलने के लिए उन्हें समस्या का वास्तविक रूप समझाया, परन्तु अन्धे कहां देख सकते, और बहरे कहां सुन सकते। अन्त में, स्वामी श्रद्धानन्द ने राजनीति से अपना हाथ खींच लिया और 'लिबरेटर' नाम का एक पत्र निकालना शुरु किया जिसमे अछूतपन के निवारण पर बल दिया परन्तु इन लोगो के सिर जूं तक नहीं रेंगी।

परमात्मा का कोटि-कोटि धन्यवाद है कि आज देश के सामने वह समस्या अपना उग्ररूप धारणा करके उठ खड़ी हुई है जिसे ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द तथा आर्यसमाज देश की वास्तविक समस्या समझते रहे। जब देश के करोडो व्यक्तियो को हम मनुष्य ही न समझें तब हमे अपने को मनुष्य कहने का क्या अधिकार है? मैं इस समस्या के उठने से दुखी नहीं हू। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि जिस समस्या की तरफ आज से सैकड़ो साल पहले ऋषि दयानन्द ने देश का ध्यान खींचा जिस समस्या की तरफ स्वामी श्रद्धानन्द ने राजनीतिज्ञों का ध्यान खींचा, जिस समस्या को देश की प्रत्येक आर्य समाज ढोल-पीट कर बहरो के कान खोलने का यत्न कर रही है, वह समस्या देश के भीतर से ही उपज उठी है। दुख सिर्फ इसी बात का है कि हमारे राजनीतिज्ञ समस्या की गहराई तक नहीं गये। वे जिस रास्ते पर चल रहे हैं उसी रास्ते पर चलते रहे तो देश जाटों, अहीरो, किसानो आदि की जातों में बट जायगा और रोज नव-युवकों का आत्म-दाह होगा, रैलिया होगी, बन्द होंगे और देश का सत्यानाश होगा। तो क्या किया जाय, जन्म की जात-पात का, इस भयकर समस्या का क्या हल है?

मेरा आर्यसमाज के नेताओ से अनुरोध है कि आर्यसमाज स्वतन्त्र रूप मे मण्डल कमीशन की तरह इस समस्या को हल करने के लिए 'आर्यसमाज कमीशन' नाम से एक कमीशन का निर्माण करे, और सारी स्थिति पर विचार कर कमीशन की रिपोर्ट तैयार करें जिसमे देश के उच्च कोटि के विचारक अपने विचारो को मौखिक या लिखित रूप में व्यक्त करें। इस प्रकार की देश-व्यापी रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा तैयार कर सकती है। उसके पास धन-जन सब साधन मौजूद है। आर्यसमाज के सामने यह अमूल्य अवसर उपस्थित हुआ है। इस अवसर को हाथ से खो देना ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द तथा स्वयं आर्यसमाज के साथ अन्याय करना होगा। आर्य-बन्धुओं से अनुरोध है कि इसे राजनीति का प्रश्न समझ कर देश का प्रश्न समझें क्योंकि इस समस्या का हल वी०पी० सिंह के पास नहीं है, इस समस्या का हल ऋषि दयानन्द या उसके अनुयायियों के पास है। समस्या का हल यह है कि जात-पात की जड़ें पक्का करने के स्थान पर ये जात-पात को मिटा दिया जाए। यह कैसे हो इस पर कमीशन विचार करेगा।

—डा० सत्यव्रत (सिद्धान्तालंकार)

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में बारहवीं शोध गोष्ठी सम्पन्न

आज दि० ९-९-९० को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला झाल मेरठ की ओर से एक शोध गोष्ठी का आयोजन हुआ। विषय था—"वैदिक उषा का स्वरूप" गोष्ठी की अध्यक्षता, प्रो० शेरसिंह जी पूर्व मन्त्री, केन्द्रीय सरकार एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, ने की। मुख्य अतिथि थे श्री सुभाष जी विद्यालंकार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय। इस अवसर पर निम्नलिखित विद्वानों ने अपना शोध पत्र पढ़ा—

(१) डॉ० अवतार कृष्ण गुटटू—निदेशक, वैदिक विज्ञान अनुसन्धान संस्थान, मथुरा।

(२) डॉ० सुधाकराचार्य—रीडर संस्कृत, मेरठ विश्वविद्यालय

(३) डॉ० ज्ञान प्रकाश—प्रवक्ता संस्कृत – नैशनल डिग्री कालेज मैनपूरी

(४) डॉ० दुर्गाप्रसाद मिश्र— ,, ,, —मेरठ कालेज मेरठ

(५) डॉ० विजेन्द्रकुमार— ,, ,, —कृषक डिग्री कालेज मवाना

(६) डॉ० विजेन्द्रकुमार— ,, ,, —बदायू।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय-विकास की सतत यात्रा :

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह ११ अगस्त १९९० को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री चिमन भाई मेहता भारत सरकार के शिक्षा राज्य मन्त्री, मानव ससाधन मन्त्रालय विशेष अतिथि के रूप में पधारे। इस वर्ष विश्वविद्यालय के पी०एच०डी०, एम०ए०, एम०एस०सी०, बी०एस०सी०, विद्यालंकार, वेदालंकार आदि के १०४ स्नातको को कुलपति श्री सुभाषविद्यालंकार ने उपाधियां वितरित करते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति का परिचय दिया। वैदिक विद्वान आचार्य प्रियव्रत जी ने नव स्नातकों को उपदेश देते हुए गुरुकुल की परम्पराओं के अनुसार क्षेत्र में उतरने तथा गुरुकुल की शिक्षा का प्रसार करने का अनुरोध किया।

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री विजयेन्द्र स्नातक तथा ८४ वर्ष के चिकित्सा शास्त्री के महान् पण्डित डा० बैंसली को विद्यामार्तण्ड की उपाधियां माननीय मन्त्री श्री चिमनभाई मेहता द्वारा प्रदान की गई। अपने दीक्षान्त भाषण में प्रो० शेरसिंह जी ने नव स्नातकों को आशीर्वाद दिया और उन्हें परामर्श दिया कि आप जहा भी जावें वहा गुरुकुल की छाप बनाये रखें। सन्यासियों की ओर से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भी नव स्नातको को आशीर्वाद दिया।

पत्रकारों के अखिल भारतीय सम्मेलन में पधारे पत्रकारों के सम्मान में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से रात्रि भोज का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम एक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजेन्द्र माथुर, श्री राजमोहन गांधी, श्री जयपाल रेड्डी, श्री बी०एस० सिन्हा श्री एडन व्हाईट श्री आर० प्रभु, श्रीवीरेन्द्रदत्त आदि पत्रकारों व नेताओ का स्वागत किया गया। इस अवसर पर सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री सुभाषविद्यालंकार की मांग पर मुख्यमन्त्री महोदय ने इस विश्वविद्यालय में आचार्य किशोरीदास वाजपेय की स्मृति मे शोधपीठ की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की तथा स्वागताध्यक्ष के रूप मे कुलपति महोदय की इस माग को मुख्य मन्त्री जी ने स्वीकार कर लिया हरिद्वार मे एक पत्रकार कि कालोनी तथा एक पत्रकार भवन का निर्माण किया जाय। प्रो० विष्णुदत्त राकेश ने उपस्थित पत्रकारो को गुरुकुल की पत्रकारिता के योगदान मे भूमिका के बारे मे अवगत कराया। उन्होने पत्रकारो को अवगत कराया कि गुरुकुल की भूमि मे ही हिन्दी पत्रकारिता का प्रारम्भ हुआ था।]

विश्वविद्यालय मे रिक्त पदों पर नियुक्तियो हेतु यू.जी०सी० द्वारा ७वी पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। लेकिन कुलपति जी के अथक प्रयत्नो द्वारा यू०जी०सी० द्वारा यह प्रतिबन्ध हटा लिया गया है। तथा अधिकाश पदो हेतु चयन प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है। तथा अधिकाश चयनित व्यक्तियो ने अपना कार्य भार ग्रहण कर लिया है।

आरक्षण के विरोध मे यद्यपि स्थानीय सभी स्कूल एव कालेज पिछले दो माह से बन्द है। लेकिन इस विश्वविद्यालय निरन्तर निर्देशन, अध्ययन, अध्यापन का कार्य चल रहा है।

ग्लोबल एक्सचेन्ज कार्यक्रम के अन्तर्गतदिनाक ४-१०-९०को १५ छात्रो का एक दल विश्वविद्यालय मे आया उन्हे पुस्तकालय के सन्दर्भ मे भारतीय दर्शन, एव वैदिक साहित्य से परिचित कराया गया। तथा उन्होंने वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, आर्य साहित्य एव दुर्लभ ग्रन्थो का अवलोकन किया। पुस्तकालय हाल में विश्वविद्यालय के छात्रो से उनका एक परिचय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें दोना विश्वविद्यालय के छात्रो ने एक दूसरे में जानकारी प्राप्त की। उन्हें गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी मे आयुर्वैदिक औषधियो की निर्माण प्रक्रिया से भी परिचित कराया गया।

१८ सितम्बर १९९० को विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के जन्मदिवस को इतिहास के रूप में मनाया गया। डा० सत्यकेतु जी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए डा० के०एस० वाजपेय, आचार्य प्रियव्रतजी डा० रामनाथ जी तथा डा० राकेश जी ने यह कहा कि डा० सत्यकेतु एक व्यक्ति नहीं संस्था थे। इस अवसर पर स्व० डा० सत्यकेतु जी की धर्म पत्नी भी उपस्थित थीं उन्होने डा० सत्यकेतु जी के अछूते जीवन प्रसगो को उपस्थित समुदाय को सुनाया। इस कार्यक्रम का आयोजन, ड० जबर सिंह सेंगर अध्यक्ष, इतिहास विभाग द्वारा किया गया।

दिनाक ४-१०-९० को वेद मन्दिर में डा० रामनाथ जी वेदालंकार भूतपूर्व आचार्य एव प्रोफेसर दयानन्दपीठ, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ को उ०प्र० संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय सेवाओ के उपलक्ष्य में पुरस्कृत किए जाने के फलस्वरूप उनका अभिनन्दन विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। उत्तर प्रदेश संस्कृत-अकादमी द्वारा डा० रामनाथ जी को २५,००० रुपये के वेद विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

मेरे पूज्य पं० भीमसेन जी विद्यालंकार

—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु

२२ जुलाई के अंक में श्रीमान् डा० धर्मपाल जी का प० भीमसेन जी पर लेख पढ़ा। लेख गागर में सागर के समान है। लेख की एक एक पंक्ति पढ़ता गया और मेरी स्मृतियों में एक बाढ़ सी आ गई। श्री डा० धर्मपाल जी ने तो सब कुछ पढ़ सुनकर लिखा है और मैं उन सौभाग्यशाली आर्यों में से एक हू जिसको इस यशस्वी आर्य साहित्यकार, समाजसेवी व राष्ट्र सेवक से भरपूर स्नेह व प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा। श्री प० जी को निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त रहा। उनके मार्गदर्शन में एक आर्यवीर के रूप में आर्यसमाज की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। अब समझ में नहीं आ रहा कि क्या लिखू और क्या छोड़ू।

मेरे मन में यह विचार भी करवटे लेता रहा कि लाला बिशनदास जी (जैसा कि डा० धर्मपाल जी ने सकेत दिया है) कोई साधारण व्यक्ति न थे। वे आर्यसमाज के एक सपूत थे। पुराने आर्य पत्रो में प्रतिमास दो तीन बार उनकी चर्चा होती ही थी। अच्छा इनपर कभी फिर लिखेंगे। डा० धर्मपाल जी ने पण्डित भीमसेन जी के जन्मस्थान श्री हरगोविन्दपुर की चर्चा भी की है। श्री हरगोविन्द-पुर व्यास नदी के तट पर एक बडा प्रसिद्ध कस्बा है। अब तो उग्रवाद ने इसकी सब रौनक खाली है। यहां का आर्य समाज कभी भारत प्रसिद्ध था। आर्यसमाज का कोई विरला ही विद्वान् व नेता होगा जिसने पण्डित जी के जन्मस्थान की यात्रा न की हो। रक्त साक्षी प० लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्दजी, मास्टर आत्माराम जी, महात्मा मुन्शीराम जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और श्री स्वामी वेदानन्द जी सभी कई कई बार वहा प्रचारार्थ गये। हमारे इस समय के वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध तपस्वी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व प० शान्ति प्रकाश जी भी यहां कई बार प्रचारार्थ गये हैं। मेरी पीढ़ी के आर्यों व मेरे बाद की पीढ़ी के आर्य वीरों में केवल मुझे ही श्री हरगोविन्दपुर में प्रचार करने का सौभाग्य प्राप्त है। मै कालेज में पढ़ता था जब वहा प्रचार करने गया था। यह १९५० ई० की बात होगी।

श्री प० भीमसेन जी के जीवन मे धर्म की रगत थी। इस का परिचय उनके जीवन मे पग पग पर लोगो को मिलता रहा। सन् १९५५ में आर्य प्रति-निधि सभा पजाब का वार्षिक अधिवेशन आर्य स्कूल लुधियाना मे हुआ। पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द जी उसमे सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये। मन्त्रीपद के लिए चुनाव हुआ। एक मत के बहुमत से श्री प० भीमसेन जी मन्त्री चुने गये। वीरेन्द्र जी व उनके पक्ष के लोगो से अपनी पराजय सही न गई। उन्होने दोबारा मतदान की माग की। भोजन उपरान्त फिर मतदान हुआ। श्री वीरेन्द्र जी एक मत से जीत गये। कोई सज्जन तब तक जा चुके होंगे। श्री प० भीमसेन जी को अपनी हार से तनिक भी दुःख न हुआ। हमने उनके माथे पर रोष, मलिनता, दुःख व शोक की कोई रेखा न देखी। वे खडे हुए और पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी को अपना व अपने साथियों का पूरा समर्थन देने का आश्वासन दिया। यही आर्यत्व है।

मेरे पूज्य पं० भीमसेनजी विद्यालंकार

सन् १९५८ मे विजयदशमी के दिन गुरुकुल कांगडी का वार्षिकोत्सव रखा गया तब मुझे तीन बार श्रद्धेय आचार्य नरदेवजी शास्त्री वेद तीर्थ की कुटिया पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होने तब श्री प० भीमसेन जी के आत्मा की विमलता की एक घटना सुनाई। अपनी जवानी के दिनो मे पण्डित जी ने किसी सामाजिक कार्य के लिए आचार्य जी को एक पत्र लिखा। पत्र पर जो टिकट लगाए गये उनमे एक टिकट ऐसा था जो पहले किसी पत्र से उतारकर इस पत्र पर लगाया गया था। आचार्य नरदेव जी शास्त्री ने टिकटो को देखकर ऐसा जान लिया और आचार्य जी का यह अनुमान ठीक था। आचार्य जी ने नवयुवक भीमसेन को लिखा कि तुम्हे ऐसा नही करना चाहिए था। हम आर्यो के व्यवहार में दोष नही होना चाहिए।

आचार्य नरदेव जी ने कहा कि लौटती डाक मे नवयुवक भीमसेन विद्यालंकार का पत्र आया। अपनी भूल पर खेद प्रकट करते हुए भविष्य में ऐसा कभी न करने का आश्वासन भी दिलाया। आचार्य की गहरा छाप पडी। यदि नवयुवक भीमसेन दृढ व दुराग्रह से अपनी भूल न मानते तो आचार्य श्री नरदेव जी के पास ऐसा कौन सा Legal Point वैधानिक तर्क था जो उन्हे दोषी ठहरा लेते। आर्यो आत्मोन्नति इसे ही कहते हैं। यही कल्याण मार्ग है।

एक बार किसी सामाजिक विषय पर 'आर्यमुसाफिर' साप्ताहिक मे पक्ष विपक्ष मे कुछ लेख छपने लगे। यह आर्यसमाज का बडा लोकप्रिय व उच्च स्तरीय पत्र था। श्री प० भीमसेन जी तब पजाब सभा के मन्त्री थे। आपने भी इसमें अपना लेख दिया। पण्डित जी के लेख पर पूज्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने एक लेख लिखा और उसका प्रारम्भ इन शब्दो मे होता है, सभा मन्त्री प० भीमसेन जी के लेख मे ऐसा छपा हैं ।"

अगले सप्ताह पण्डित जी का फिर लेख आ गया कि स्वामी जी ने यह कैसे लिख दिया कि यह सभा मन्त्री का लेख था ? यह तो मेरे व्यक्तिगत विचार थे।

अगले सप्ताह फिर स्वामी जी लेख आ गया कि मैने इसे सभा मन्त्री जी का लेख समझा क्योंकि यह उसी पृष्ठ पर छपा है जिस पर प्राय सभा मन्त्री जी के लेख छपते रहते हैं।

लेखो के इस आदान प्रदान मे श्री प० भीमसेन जी ने पूज्य स्वामीजी के प्रति पूरी श्रद्धा, नम्रता व आदर का प्रकाश किया। जब प० भीमसेन जी ने लिख दिया कि यह उनके व्यक्तिगत विचार थे तो पूज्य श्री स्वामी जी ने झट से इस बात पर खेद प्रकट कर दिया कि मेरी भूल थी जो मै इस लेख को सभा मन्त्री जी का विचार समझा। ये हैं बडो की बाते।

मुझे वर्ष का तो ठीक–ठीक ध्यान नही सम्भवत यह १९६०–६१ की बात होगी। इतना तो निश्चित याद है कि यह घटना उस समय की है जब आचार्य श्री कृष्ण जी (श्रीयुत स्वामी दीक्षानन्द जी) के पिताजी का भटिण्डा में निधन हुआ था। आर्यसमाज भटिण्डा मे गुरुकुल भटिण्डा विषयक एक बैठक बुलाई गई। सभा की ओर से प० भीमसेन जी वहा पहुचे। आसपास की समाजो के प्रतिनिधि बुलाये गये। मुझे स्वर्गीय महाशय निहालचन्द्र जी रामा वाले वहा ले गये। मै केवल प० भीमसेन जी के दर्शन करने के लिए ही समाज मन्दिर मे गया था। वहा जाकर पण्डित जी से मिलकर एक ओर बैठ गया। श्री प० भीमसेन जी ने कहा, "आप अलग क्यों बैठ गये ?

मैंने कहा, "मैं बैठक मे आमन्त्रित नहीं हू।"

सौम्य स्वभाव के पण्डित जी बोले, वाह ! यह क्या कहा आपने ? क्या आप आर्य प्रतिनिधि सभा का अग नही ? आप जैसे आर्य युवको के बिना सभा कैसे चलेगी ? ' पण्डित जी के इन प्यार भरे शब्दो ने मुझ पर उनके बडप्पन की अमिट छाप लगा दी।

वे कितने भोले थे इसका पता इस बात से लगता है कि हुतात्मा भगतसिंह व भगवती चरण वर्मा जैसे क्रान्तिवीरो के इस गुरु को यदि दो व्यक्तियो की साक्षी डालकर मनोविनोद से ही कोई कह दे कि पण्डित जी आपने दो दिन पूर्व जो दस रुपये लिए थे, वे लौटा दें तो वे मान लेते थे कि हो सकता है इन्होने दिये हो मैं ही भूल गया हू। सरलता भी महापुरुषो का एक लक्षण है। देहली मे सम्बन्धित मेरा एक सस्मरण मुझे कभी नही भूलेगा। जब गुरु द्वारा सिग्रेट केस बनाकर मुझे अमानुषिक यातनाये देकर मेरी एक-एक हड्डी तोड दी गई थी तो समस्त आर्य जगत् मे इससे करन्ट सी लगी थी। मेरी भर पेट पिटाई के बाद मुझ पर एक लम्बा अभियोग चलाया गया। सरकार एफ०आई०आर० प्रथम सूचना रिपोर्ट ही न्यायालय मे पेश न कर सकी। आर्यसमाज के इतिहास ऐसा कोई दूसरा अभियोग नही चला जिसमे इतने लम्बे समय तक एफ०आई०आर० ही पुलिस ने पेश न की हो।

मेरे साथ कुछ और बन्धु भी फसाये गये थे। मुख्य निशाना मुझे बनाया गया। कुछ मास के पश्चात् अमृतसर के हमारे दो आर्य मित्रो को भी छोड दिया गया। अमृतसर के लक्ष्मणसर समाज के सज्जन प्रत्येक पेशी पर न्यायालय में आया करते थे इससे हमारा मन बहा लगा रहता था। जब इन दो मित्रो को छोड दिया गया तो कादिया के एक अभियुक्त ने मुझे व्यग्य से कहा, 'देखना अगली पेशी पर अब तुम्हारा कोई भी आर्य समाजी नही आयेगा।'

और यह बात सच निकली। उन्होने मुझे कहा, "देख लिया न, हमने ठीक ही तो कहा था।'

मैंने कहा, "कोई बात नही। धर्म के कामो मे उपेक्षा भी सहनी पडती है।

मैंने आर्य जगत् साप्ताहिक मे यह सारी कहानी लिख दी और यह भी लिखा कि मेरी तो कोई बात नहीं, मैं सब कुछ सहलूगा परन्तु ।"

श्री प० भीमसेन जी ने मेरा यह नोट आर्य जगत् में पढा और मुझे देहली मे रघुमल कन्या पाठशाला में सभा के वार्षिक अधिवेशन मे (मुझे आर्य भाईयो ने अभियोग की कहानी सुनने के लिए घेर रखा था) मेरे पीछे आकर प्यार से पुकार कर कहा, 'जिज्ञासु जी आप आर्य समाज के जीवित शहीद है, आपने अमृतसर के कुछ भाइयो के न्यायालय मे न पहुचने से कैसे यह समझ लिया कि आप अकेले हैं। सारा आर्य जगत् आपके पीछे है।"

पाठक क्षमा करेंगे कि मुझे आत्मश्लाघा के ये कुछ शब्द लिखने पडे है परन्तु ये शब्द उस कर्मवीर उस धर्मवीर और यशस्वी आर्य नेता के विमल चरित्र पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। मुझे भी तब कुछ हृदय से पत्रिका मे लिखना पडा था। इससे आर्य समाज की छवि धूमिल होती थी। उसके पश्चात् पुन पूर्ववत् आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर के कुछ आर्य पुरुष मेरी पेशी पर कोर्ट मे आने लग गये। मेरा विशेष सम्बन्ध इसी समाज से रहा है। वैसे वहा की सब समाजें मुझे जानती थी परन्तु लक्ष्मणसर वालो की मुझ से विशेष आत्मीयता थी।

प० भीमसेन जी एक प्रख्यात पत्रकार व हिन्दी साहित्य सम्मेलन के एक प्रमुख कर्णधार थे, यह तो श्री डा० धर्मपाल जी ने लिख दिया परन्तु पण्डित जी ने कई पुस्तके लिखी भी और ला० लाजपतराय जी की आत्मकथा का हिन्दी अनुवाद भी किया। उनके द्वारा लिखित वीर मराठे पुस्तक के न जाने राजपाल एण्ड सन्ज ने कितने सस्करण छापे। उस युग के हिन्दी पठित युवको मे उत्तर भारत में कोई विरला ही युवक होगा जिसने यह पुस्तक न पढी हो।

मैंने अपनी उठती जवानी मे उनका यह बडप्पन देखा है कि जब कभी अम्बाला के किसी आर्यसमज के उत्सव पर मै जाता था (तब मे अम्बाला मे समाजो के उत्सवो पर जाता रहा) तो मेरे जैसे अनुभव हीन युवक का व्याख्यान भी आदि से अन्त तक बडे ध्यान से सुना करते थे। मैं अपने व्याख्यानो मे जब आर्य विद्वानो की पुस्तको के प्रमाणो की झडी लगा देता तो वे गदगद् हो जाया करते थे। मुझे ऐसा एक भी अवसर याद नही जब उन्होने आशीर्वाद देते हुए प्यार से दुलार से मेरी पीठ न थपथपाई हो।

बालीबाल प्रतियोगिता

दिनाक २७-१०-९० दिन शनिवार को रतनदेवी आर्य कन्या उच्चतर मा० विद्यालय कृष्णानगर दिल्ली-५१ मे बालीबाल प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसमे अनेक विद्यालयो ने भाग लिया, जिसका शुभारम्भ श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज श्री खुशीराम शर्मा, श्री प्रियतम दास रसवन्त एव सुरेन्द्र कुमार शास्त्री ने छात्राओ को प्रतियोगिता की ओर ध्यानाकर्षण करते हुए बच्चो को आशीर्वाद दिया, तथा इस प्रतियोगिता का सचालन श्री नेतरामजी शर्मा प्रबन्धक रतनदेवी आर्य उच्चतर मा० विद्यालय कृष्णानगर दिल्ली ने किया।

प्रतियोगिता में निम्न प्रकार से विद्यालयो ने स्थान प्राप्त किया।

१ रतनदेवी आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (प्रथम)
२ भारतीय महिला राजकीय उ०मा० विद्यालय (द्वितीय)
३ डी०ए०वी०उ०मा० विद्यालय अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली (तृतीय)

गुरुकुल प्रभात आश्रम

(शेष पृष्ठ ४ का)

(७) डा० राजेन्द्रप्रसाद— ,, , —छपरौली।

गोष्ठी का संयोजन संस्थान के निदेशक डा निरुपण विद्यालंकार ने किया। वैदिक प्रार्थना एव सरस्वती वन्दना गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा हुई। सर्वप्रथम डा० सुधाकराचार्य ने सामवेद मे उषा का स्वरूप विषय पर अपना शोध पत्र मधुर कण्ठ से संस्कृत श्लोको के माध्यम से पढा। डा० विजेन्द्र कुमार मवाना ने शाखायान ब्राह्मण मे उषा का स्वरूप कैसा है इस पर प्रकाश डाला तथा बताया कि उषा प्रजापति की पुत्री है इस आधार पर उन्होने उषा के द्वारा सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन किया।

डा० दुर्गाप्रसाद मिश्र जी ने विश्व के अन्य साहित्य और संस्कृत साहित्य मे उषा के स्वरूप का विवेचन किया।

डा० अवतार कृष्णजी मथुरा ने उषा की लालिमा, स्त्री स्वरूप, हिरण्मय रथ पर वैज्ञानिक रूप से प्रकाश डाला तथा बताया कि लाल रग सुखदायक होता है। स्त्रा स्नेह एव प्रेम स्वरूपा होती है अत उषा को स्त्री रूप मे वर्णित किया गया है। उन्होने उषा सम्बन्धी आख्यानो का वैज्ञानिक विवेचन किया।

श्री सोमदेव शतांशु ने 'उषा' के माता, पत्नी एव भगिनी के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिस प्रकार सूर्योदय से पूर्व 'उषा' जागती है एव सूर्य के प्रकाशकत्व धर्म को प्रकाशित करती है, उसी प्रकार पत्नी भी पति के समस्त कार्यों मे सहयोगिनी होनी चाहिए। ऋग्वेद में उषा को दान देने वाली कहा गया है। उषा से तभी हम धन-धान्य प्राप्त कर सकते है जब हम उषा के तुल्य विश्वव्रत-धारी समयानुवर्ती एव सत्ययुक्त होकर सतत कर्मशील बने।

श्री ब्र० शिवशंकर जी ने अपना शोध पत्र संस्कृत मे पढा तथा उषा के विविध रूपा का वर्णन करते हुए उसे एक विदुषी, वीरांगना, और पतिव्रता आदि की संज्ञा दी।

श्री ज्ञानप्रकाश जी निरुक्त के सन्दर्भ मे उषा का वर्णन करते हुए उसकी विस्तृत व्याख्या की।

श्री सुभाष जी विद्यालंकार कुलपति ने मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए गुरुकुल के संस्कृतमय वातावरण से प्रभावित हो कर बडी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होने कहा कि आज यहा मेरा जो सम्मान किया गया है यह वास्तव मे वैदिक संस्कृति का सम्मान किया गया है। पहले वृद्ध गुरु पढाया करते थे आगे युवा गुरुओ को पाठन के क्षेत्रो मे देख कर यह स्वत सिद्ध हो जाता है कि संस्कृत, वैदिक साहित्य और वैदिक संस्कृति का भविष्य उज्ज्वल है। परन्तु विश्वविद्यालयो के विद्वान आज भी विदेशी विद्वानो की जूठन को ही बच्चो को पढा रहे हैं एक अन्धानुकरण चल रहा है। जब तक वेद को महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण से पढा नही जाएगा तब तक वेद का वास्तविक स्वरूप संसार के सामने नही आएगा।

गोष्ठी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह जी ने वैदिक ज्ञान और विज्ञान के महत्व को प्रतिपादित करते हुए गुरुकुल प्रभात आश्रम में इस विषय मे होने वाली गोष्ठियो को बहुत महत्वपूर्ण बताया। साथ ही वैदिक विज्ञान को संसार मे फैलाने की प्रेरणा की।

श्री इन्द्रराज जी मन्त्री गुरुकुल प्रभात आश्रम ने सब का धन्यवाद करते हुए बताया कि स्वामी समर्पणानन्द जी एक अद्भुत पाण्डित्य एव विलक्षण प्रतिभा के व्यक्ति थे। उनके बताए हुए मार्ग पर चल कर एव उनकी योजनाओ को सफल बना कर ही हम उन्हे वास्तविक श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। उन्होंने वैदिक विज्ञान के विकास के लिए गुरुकुल मे ८ लोको की कल्पना की थी जिन लोगो की स्थापना आज के वैज्ञानिक युग मे बहुत महत्व रखती है। समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान और समर्पणानन्द वैदिक पुस्तकालय इस शोध केन्द्र की ओर पहला पग है। आशा हैं कि आप विद्वानो के सहयोग से हम गुरुकुल भूमि को वैदिक शोध केन्द्र बना सकेंगे जिसमे विज्ञान के विविध क्षेत्रो मे वेद के आधार पर खोज हो सकेगी और सारा संसार उससे लाभान्वित होगा।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आदर्शतम समाज व्यवस्था

(पृष्ठ २ का शेष)

समान अवसर प्रदान किया जाता है। बालको मे 'सामाजिक कर्तव्यबोध विकसित करने हेतु विद्योर्जन के साधन बालक का परिवार नही, समाज ही प्रदान करता/कराता है। पारिवारिक सुख दु ख से निश्चिन्त रखकर बालक/बालिकाओ को पृथक-पृथक विद्यागृहो मे ही आवास करना होता है। दीक्षोपरान्त गुण कर्म स्वभावानुसार प्रदत्त समान वर्ण मे वयस्क लडके-लडकी का विवाह कर गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश होता है। गृहस्थी मात्र हेतु दैनिक पचमहायज्ञ आदि का विधान समाज को सुसंस्कारित, व्यवस्थित रखने मे सहायक होता है। गृहस्थ आश्रम के उपरान्त वानप्रस्थ आश्रम मे व्यक्ति प्रवेश लेकर व्यक्ति परिवार से ऊपर अपने अर्जित अनुभव, ज्ञान आदि को राष्ट्र व समाज की सेवा मे लगाता है।

योग्यता व ज्ञान के आधार पर चतुर्थ आश्रम- 'सन्यास में प्रवेश लेकर मनुष्य विश्व के स्तर पर मानव मात्र के कल्याण का समभाव रखते हुए मोक्षफल का प्रयत्न करता है।

इस आश्रम व्यवस्था का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व सन्यास काल में मात्र सीमित सुविधाओ की आवश्यकता रहती है। इस प्रकार तीन चौथाई जनसख्या की ग्रामो, पर्वतो के स्वच्छ पर्यावरण मे अल्प सुविधा युक्त, सामूहिक आवासा में, भ्रष्टाचार अश्लीलता आदि तनावो से मुक्त रखकर देश, जाति एव समाज की बल, बुद्धि संवर्धन न्यूनतम वित्तीय अनुदानो से होती है। दूर-दूर स्कूलो के लिए खर्च की जा रही परिवहन शक्ति व समय को, उत्पादक कार्यों में सदुपयोगी बनाया जा सकेगा। सभी को स्वबुद्धि विकास हेतु, समुचित व समान सुविधाएं मिलेगी तो ही आरक्षण की समस्या समाप्त की जा सकती है। अल्प वेतन मे ही अनुभवी व निष्काम भाव के वानप्रस्थी शिक्षक स्वत मिल जाते है।

केवल सामाजिक नेतृत्व या केवल राजनैतिक नेतृत्व यह कार्य पृथक-पृथक पूरा नहीं कर सकते हैं। इसके लिए राज सत्ता की शक्ति का कुछ विकेन्द्रीकरण समाजसत्ता के मध्य इस प्रकार करना होगा कि तात्कालिक वोट लोलुप संस्कृति के स्थान पर हम कुछ विषयो पर व्यवहारिक नियम राष्ट्रीय एकता के दूरदृष्टि से चिन्तन को दृढता के साथ लागू कर सकें।

अन्यथा और पचास साल लगाकर भी हमारे साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, अलगाववाद ऊर्जा सकट, जातिवाद आदि समस्याओ का केवल सत्ता परिवर्तन द्वारा वर्तमान व्यवस्था से कोई हल असम्भव ही रहेगा।

अत "वर्णाश्रम व्यवस्था" किसी सम्प्रदाय या पथ क मापदण्डो के अनुसार नही वेदानुसार स्वीकार करके/कराके ही हम अपने समाज एव राष्ट्र को बनाने का संकल्प करें। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का चिरस्वप्न रामराज्य की स्थापना का आधार भी केवलमेव "वर्णाश्रम समाज व्यवस्था" से पूरा हो सकता है। ज्ञातव्य हैं कि सम्प्रदायवाद, पूंजीवाद, कम्युनिज्म, सोशलिज्मवाद आदि व्यवस्थाओ की निरर्थकता सिद्ध हो चुकी है, अत हम त्रुटिरहित वर्ण व्यवस्था के चार सूत्र पुन. दोहराते हैं --

१ गणाद गुणो गरियान्-गण से गुण का दर्जा बडा है। Quality not Equality.

२ वर्ग सहयोगो न तु वर्ग विरोध Class cooperation not class war

३ बिना हेतु न निग्रहानुग्रहो No punishment and reward without discrimination.

४ बिना लक्ष्य न विद्या No education without desitgn

आइए संकल्प करे कि हम अपनी शक्ति व सामर्थ्य व प्रभाव को इसी प्राचीन निष्कलक, आदर्शतम समाज व्यवस्था—"वर्णाश्रम समाज" की स्थापना मे लगाकर अपनी सन्तानो का भविष्य सुरक्षित व सुन्दर बनाए।

नोट - (१) इस वैदिक समाज व्यवस्था का प्रचार व प्रसार करने हेतु इस पत्रक की अधिक से अधिक से प्रतिया तैयार कराकर आप भी जनमानस तैयार करें। (२) अधिक जानकारी हेतु- श्रद्धेय स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती रचित पुस्तक "कायाकल्प" (प्रकाशक--सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१) क्रय कर मनन व वितरण करे। (३) संयुक्त राष्ट्रसंघ भारत सरकार आदि को हम व्यवस्था के समर्थन में प्रेषित प्रस्तावो की एक प्रति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१ को भेजें।

गुरुकुल प्रभात आश्रम

(शष पृष्ठ४ का)

अन्त में शोध स था के अध्यक्ष पू य स्वामी विवेकान द स स्वती जी ने परमात्मा को ध यवाद देते हुए कहा कि सब काय निर्विघ्नता पवक हुआ। उ होने कहा कि जब हम किसी शुभ काय को करने चलने है तो प्रकृति स्वय अनुकल हो जाती है। वे द के मौलिक चिन्तन के सम्ब ध म उन्होंने प० बुद्धदेवजी के महत्वपूण योगदान क चर्चा करते हुए कहा कि वे वे द स ही व द को पढते थे। आज के विद्वान वेद मक्समूलर ग्रिफित मकडानलड सायण महीधर और ८ अ आदि विद्वानो के माध्यम से पढते हैं। स्वामी दयानद द जी वेदो के अध्ययन के लिए ऋषियो के माध्यम से पढने की एक दृष्टि प्रदान की। स्वामी विवेकान द जी ने बताया कि वेद को समझन के लिये प० बुद्धदेव जी विद्यालकार न ऋग्वेद मण्डल भाष्य सूक्त की रचना की। जिसके अध्ययन से वेद समझन म बडी सहायता मिलती है। अन्त में उन्होंने वेद को वेद से पटन पर बल दिया।

अन्त मे श्री डा० निरुपण जी विद्यालकार सयोजक न सब का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर प्रभात आश्रम के सुयोग्य स्नातक का राष्ट्रीय सस्कृत स्थान दिल्ली क व्याकरणाचाय परीक्षा मे सवप्रथम न पर स्नातक मण्डल की ओर से उन को रेशमीचादर एव ५०१) रुपये प्रो० सरसिंह जी अध्यक्ष क कर कमलो मे प्रदान कर अभिन दन किया गया। प्रस्तोता—इन्द्रराज
म त्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी भाला मार्ग मेरठ

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी के नाम पर ट्रस्ट

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज के नाम पर इस समय दो ट्रस्ट चल रहे हैं। एक ट्रस्ट का नाम स्वामी श्रद्धान द अखिल भारतीय स्मारक टस्ट है और दूसरे का नाम श्रद्धानन्द सेवा सघ है। इन दोनो ट्रस्टो के मुख्य कार्यालय आय भवन जोरबाग नई दिल्ली मे है।

स्वामी श्रद्धानन्द अखिल भारतीय स्मारक ट्रस्ट

यह टस्ट १९२६ मे स्वामी जी महाराज की वसीयत पर स्थापित किया गया था इसका मुख्य उद्देश्य शुद्धि हिन्दू सगठन और दलित उद्धार के कार्यों को बढावा देना है। इसका कायक्षेत्र सारा भारत है। परन्तु इसके अधिकतर काय केन्द्र बिहार प्रदेश मे छोटा नागपुर के क्षेत्र मे है। राची और खूटी मे श्रद्धानन्द सेवा आश्रम चलाये जा रहे हैं जिनमे वनवासी बच्चो का पालन पोषण और शिक्षा आदि का प्रब ध है। खूटी मे डी०ए०वी० फाउन्डेशन के सहयोग से एक पब्लिक स्कूल भी चलाया जा रहा है और एक औषधालय भी है।

१९६७ मे छोटा नागपुर मे सूखा पडने पर हजारो रुपये व्यय करके ट्रस्ट की ओर से वनवासी लोगो मे अन्न वस्त्र आदि बाटे गये और बच्चो की शिक्षा के लिए स्कूल खोले गये। (पृष्ठ ८ पर शेष)

वार्षिक निर्वाचन

आयसमाज डी०डी०ए० फ्लैट्स कालकाजी का वार्षिक निर्वाचन श्री हरबस लाल कालडा की अध्यक्षता मे श्री भीष्म लाल मिश्रजी के निवास स्थान पर सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी आगामी वर्ष के लिये निर्विरोध चुने गये।

(१) प्रधान श्री प० यशपाल शास्त्री जी

(२) मन्त्री—श्री अशोक कुमार शास्त्री

(३) कोषाध्यक्ष—श्री जे०डी० चावला जी शेष अन्तरग सदस्यो एव अन्य अधिकारियो को मनोनीत करने का अधिकार श्री प्रधान जी को दिया गया।







सार्वदेशिक—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 15 16 11 1990 Licenced to post without prepayment Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस न० यू १३९

(पृष्ठ ७ का शेष)

श्रद्धानन्द सेवा संघ

इसका पूर्व नाम पटौदी हाउस ट्रस्ट था। इस ट्रस्ट की स्थापना स्वयं श्रद्धानन्द जी महाराज ने १९२३ में की थी। उन्होंने दरियागंज दिल्ली में पटौदी हाउस नाम की कोठी खरीदी था। इसके लिये सेठ रघुमल जी ने एक भारी रकम दान के रूप में दी। उसके बाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज और लाला नारायणदत्त ने इस संघ के काम को आगे बढ़ाया। उन्होंने पटौदी हाउस में एक नया भवन बनवाया। तत्पश्चात् आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता और पत्रकार महाशय कृष्णजी ने इस संघ को महत्वपूर्ण सहयोग दिया। उन्होंने ओरबाग नई दिल्ली में एक बहुत बड़ा प्लाट खरीदा और उसपर एक भव्य भवन बनाया। इस भवन का नाम आर्य भवन है। इस भवन में एक बहुत बड़ा हाल बनाया गया जिसका नाम ट्रस्टियों ने महाशय कृष्ण हाल रखा। इस भवन निर्माण के लिये श्री महाशय कृष्ण जी ने ६२००० (बासठ हजार रुपये) का शुभदान दिया। विज्ञान साहित्य और कलाओं की उन्नति करना और धर्मार्थ सेवा के कार्यों को बढ़ावा देना इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य है। इस समय आर्य भवन में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय और वाचनालय चलाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त एक पैथोलोजिकल लेबोरेट्री भी बनायी जा रही है। महाशय कृष्ण हाल में आर्य स्त्री समाज और महिला मण्डल के सत्संग भी होते रहते हैं।

भावी कार्यक्रम

इन दोनों ट्रस्टों के कार्यक्रमों को बढ़ाने की योजना बनायी जा रही है जिसके लिये ऐसे महानुभावों की आवश्यकता है जो कि प्रचार और प्रबन्ध के कार्यों को भली प्रकार कर सकें। जो सज्जन दफ्तर में मैनेजर एकाउन्टेन्ट लेखक और पुस्तकाध्यक्ष डाक्टर और वैद्य आदि का काम कर सकें अथवा पिछड़े वर्गों के जीवन और सुधार और प्रचार का काम कर सकें। जनदाताओं के लिए भी प्रबन्धकों की आवश्यकता है। पिछड़े वर्ग के लोगों को रोजगार दिलाने के उपाय करने के लिए कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। वानप्रस्थी लोग जो दुनियादारी के कार्यों से निवृत्त हो चुके हैं उनके लिए सेवा का अच्छा अवसर है। आवश्यकतानुसार गुजारे के लिये वेतन देने का भी प्रबन्ध किया जायगा।

एक सुझाव यह भी है कि एक सेवा संगठन बनाया जाये जिसमें ऐसे नवयुवक सदस्य बनाये जायें जो आर्य समाज सेवा का कार्य करने के इच्छुक हों। उनके गुजारे के लिये सम्मानपूर्वक पुरस्कार देने का प्रबन्ध किया जायेगा।

—धर्मचन्द्र अध्यक्ष

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डा० (सी ५६७)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४ अंक ७ | रविवार, २ दिसम्बर १९९० | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

कश्मीर के विस्थापित भाइयों की सहायता करना दिल्ली की सभी आर्यसमाजों का प्रमुख कर्त्तव्य है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

भारतवर्ष के अनेक स्थानो पर आज विघटनकारी एवं आतंकवादी तत्त्वो ने सामान्य जनजीवन को अस्तव्यस्त कर दिया है। दिल्ली के ऊपर इसका सीधा असर पडता है। पंजाब के अनेक विस्थापित परिवारो के लिए, पिछले वर्षो मे आर्य समाजो ने मुक्तहस्त से सहायता की थी। इस वर्ष यही भयावह स्थिति हमारे काश्मीरी भाइयो के साथ हो रही है। हमारा कर्त्तव्य है कि इस दशा मे हम सभी मिलकर यथाशक्ति अपनी सामर्थ्य से भी बढकर कार्य करे।

पूज्य श्री स्वामी आनन्दबोध की प्रेरणा के फलस्वरूप दिल्ली की अनेक आर्य समाजो तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आर्य प्रादेशिक सभा तथा प्रान्तीय आर्य महिला सभा ने इस दिशा मे उल्लेखनीय कार्य किया है। गत मगलवार को प्रान्तीय महिला सभा एवं श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री के सौजन्य से अलीगंज, बापू धाम, पालिका धाम एवं कृष्णा मार्किट के समुदाय केन्द्रो मे ठहरे हुए काश्मीर के विस्थापितो को ५० रजाइया तथा १२८ कम्बल ससम्मान भेट किए गए। अन्य प्रान्तीय महिला सभा की अधिकारिणी बहनें—श्री सरला मेहता, श्रीमती प्रकाश आर्या, श्रीमती शान्ति मलिक श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती कृष्णा चड्ढा, श्रीमती कृष्णा रसवन्त, श्रीमती तारा वैद्य और श्रीमती राम चमेली के अतिरिक्त अन्य अनेक बहनो ने इस सहायता कार्य मे सहयोग दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा धर्मपाल और काश्मीर विस्थापित सहायता समिति के अध्यक्ष श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया ने भी इस पुण्य कार्य मे सहयोग दिया।

मंगोलपुरी एवं सुल्तानपुरी के समुदाय केन्द्रो में निवास कर रहे कश्मीरी भाइयो को भी गत शनिवार को १०० (सौ) कम्बल ससम्मान भेट किए गए। श्री लाला सत्य नारायण जी बीकानेरी भुजिया भण्डार चांदनी चौक के सौजन्य से यह सहायता दी गयी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा सभा प्रधान डा० धर्मपाल, सभा महामन्त्री श्री सूर्यदेव, श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया, श्री लाला सत्य नारायण और उनके परिवार के सदस्यो ने यह सहायता भेट की। इस अवसर पर सभा मन्त्री श्री सूर्यदेव ने भविष्य मे भी सहायता भेजन का आश्वासन दिया। यह उल्लेखनीय है कि पहले भी काश्मीर के विस्थापितो को सहायता दी जा चुकी है जिसका विवरण आर्य सन्देश के पिछले अंक मे दिया जा चुका है।



आर्य समाज की सस्थाओ की ओर से काश्मीर के विस्थापितो को रजाइया तथा कम्बल भेंट करते हुए—श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री, डा० धर्मपाल श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया, श्रीमती सरला मेहता श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, श्रीमती शान्ति मलिक, श्रीमती प्रकाश आर्या व अन्य बहने।

वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार के लिए समर्पित एवं निष्ठावान् प्रचारकों की आवश्यकता है : सूर्यदेव

आर्यसमाज दीवान हाल मे दिनांक २८-१०-९० को दिल्ली की आर्य समाजो में कार्यरत महानुभावो की आवश्यक बैठक श्री सूर्यदेव, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई।

इस बैठक का मुख्य उद्देश्य दिल्ली में वैदिक प्रचार को गति देने तथा आर्य समाज के कार्यक्रमो मे जागरुकता लाना था। इस अवसर पर प प्रेमचन्द श्रीधर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज के यज्ञकार्य मे एकरूपता हेतु तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया जाए। जिसमे यज्ञ पद्धति (सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत) के सम्बन्ध मे प्रत्येक प्रक्रिया पर प्रकाश डाला जाए। सुयोग्य विद्वानो द्वारा ही यज्ञ कार्य सम्पन्न किए जाए। जिससे समाज मे यज्ञ-प्रेमियो पर विद्वानो का अच्छा प्रभाव पडे। सत्सग मे सत्यार्थ प्रकाश का पाठ करते समय केवल कठिन वाक्यो का विश्लेषण किया जाए। तथा वेद मन्त्रो की व्याख्या भी अवश्य होनी चाहिए। इसके लिए पुरोहितवर्ग को स्वाध्याय करना चाहिए। वेद मन्त्रो का अर्थ अपने प्रवचन में सरल व सटीक उदाहरण देकर अपने प्रवचन को रुचिकर बनावें।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

क्या वेद में विज्ञान नहीं ?

यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

आर्यसमाज जिसका मूलाधार ही वेद है, वेद को अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान ही नहीं, समस्त ज्ञान—विज्ञान का मूल भी मानता है। उसके संस्थापक का उद्घोष है कि सारी विद्याओ के अधिकरण वेद है अर्थात् वेद मे सारी विद्याओ के मूल का दिग्दर्शन मात्र है।' (पूना प्रवचन वेद विषयक—५वा प्रवचन) वेद मे दिये मूल को पकड कर आगे विस्तार करना मनुष्यो का काम है। किन्तु यदि मूल ही न हो तो विस्तार कैसे हो सकता है ? इस सम्बन्ध मे महर्षि का कथन है कि—"इस जगत् मे निर्मूल का होना व बढना सर्वथा असम्भव है। इससे यह जानना कि परमेश्वर से वेद-विद्या मूल को प्राप्त हो के मनुष्यो मे विद्यारूप वृक्ष विस्तृत हुआ है।' (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद नित्य विषय) इस आधार पर आर्यसमाज वेद मे विज्ञान मानता है। महर्षि वेदो के विषयो की विवेचना करते हुए लिखते है कि—"वेदो मे अवयव रूप विषय तो अनेक है परन्तु उनमे से मुख्य चार है- (१) एक विज्ञान अर्थात् सब पदार्थों को यथावत् जानना (२) कर्म (३) तीसरा उपासना, (४) चौथा ज्ञान है।' फिर विज्ञान की परिभाषा करते हुए महर्षि लिखते हैं कि 'विज्ञान उसको कहते है कि जो कर्म उपासना और ज्ञान इन तीनो से यथावत् उपयोग लेना, और परमेश्वर से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षाद्‌बोध का होना उनसे ,यथावत् उपयोग का करना। इतना ही नही महर्षि विज्ञान की प्रधानता को स्वीकारते हुए लिखते है कि-- 'यह विषय इन चारो मे भी प्रधान है, क्योंकि मी मे वेदो का मुख्य तात्पर्य है' फिर विषय का विस्तार करते हुए महर्षि विज्ञान भी दो भाग करते है—एक वह जिससे परमेश्वर का यथावत् ज्ञान प्राप्त किया जाता है और जो ब्रह्मविद्या या परा विद्या के नाम से जाना जाता है और दूसरा वह जिससे परमेश्वर द्वारा रचे पदार्थों का यथावत् बोध करना एव उनका समुचित उपयोग एव कार्य सिद्धि करना। इसे पदार्थ विद्या एव अपरा विद्या कहा जाता है। तात्पर्य यह कि ब्रह्मविद्या और पदार्थ विद्या दोनो ही विज्ञान के अंग हैं एव दोनो विद्यायें विज्ञान के अन्तर्गत आती हैं।

अब विज्ञान की इन दोनो शाखाओ में भी "ईश्वर का जो प्रतिपादन है सो ही प्रधान है। ऐसी महर्षि की मान्यता है। इससे यह सिद्ध होता है कि वेद मे सम्पूर्ण विज्ञान परा और अपरा दोनो विद्यायें है। अत आर्यसमाज द्वारा वेदो को समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल मानना सर्वथा उचित ही है। किन्तु कभी-कभी हठ दुराग्रह अथवा अज्ञानतावश आर्यसमाज की इस युक्तियुक्त मान्यता का उच्च बौद्धिक स्तर पर विरोध देखने मे आता है फिर यदि किसी एक विषय मे कोई बात हो तो भी कोई बात नहीं किन्तु यहा तो दोनो ही ब्रह्म विद्या तथा पदार्थ विद्या का वेदो में पाया जाना नकारा जाता है। और वह भी बौद्धिक स्तर पर।

वेदो मे विज्ञान के प्रथम अंग ब्रह्मविद्या का निषेध करते हुए हम श्रीस्वामी विवेकानन्द को पाते है। सायण, महीधर आदि ने तो वेदो को शुष्क कर्मकाण्ड बताया ही था, स्वामी विवेकानन्द भी ऐसा ही कहते है। वे उपनिषदो मे तो ब्रह्म विद्या मानते है किन्तु वेदो मे नही। उनका कथन है कि- वेद के संहिता और ब्राह्मण भागो की महिमा मानव जाति के इतिहास की खोज लगाने वालो के लिए और शब्दशास्त्रियो के लिये चाहे जितनी अधिक हो अग्निमीले, य। 'इषेत्वोर्जेत्वा या 'शन्नोदेवीरभीष्टय वेदमन्त्रो से विभिन्न वेदियो मे यज्ञो और आहुतियो के संयोग से प्राप्य फल चाहे जितना वाञ्छनीय हो पर यह सब तो भोगमार्ग है, और किसी ने भी इसके द्वारा मोक्षप्राप्ति का दावा नही किया। इसी कारण ज्ञानकाण्ड, जो आरण्यक नामक श्रुति का श्रेष्ठभाग है और जिसमे आध्यात्मिकता की, मोक्ष-मार्ग की शिक्षा दी गयी है, उसी का प्रभुत्व भारत मे आज तक सदा रहा है तथा भविष्य में भी रहेगा। (स्वामी विवेकानन्द कृत—हिन्दू धर्म के पक्ष मे पृष्ठ ३-४)

स्वामी विवेकानन्द के उपर्युक्त कथनानुसार वेद मोक्ष का मार्ग नही बताता, इस लिए उसका प्रभुत्व नही। उपनिषदें मोक्ष का मार्ग बताती है इसी लिए उनका प्रभुत्व है। प्रथम तो यह कहना ही वास्तविकता से कोसो दूर है कि वेद मोक्ष का मार्ग नहीं बताता ? वेद के अनेक मन्त्रों में ब्रह्मलोक की प्राप्ति की बात कही गयी है और सत्य तो यह है केवल मोक्ष ही नहीं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि की बात वेद मे सर्वत्र कही गयी है। महर्षि दयानन्द के अनुसार तो वेदों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय ही ब्रह्म की प्राप्ति है। फिर जिन उपनिषदों द्वारा मोक्ष की बात कही जाने पर उनके प्रभुत्व की बात स्वामी विवेकानन्द जी करते हैं, वही उपनिषदें उच्च स्वर से वेद की महिमा गा रही है और वेदो में ब्रह्मविद्या के होने का दावा कर रही है। कठोपनिषद् का निम्न प्रमाण ही इसे सिद्ध करने के लिए पर्याप्त होगा—सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पद संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्। जब उपनिषदे स्वय वेदो के प्रभुत्व को स्वीकार कर रही हो और वेदो मे ब्रह्म विद्या का उद्घोष कर रही हो तो फिर श्री स्वामी जी के कथन मे कितना सार है उसे पाठक स्वय ही सोच सकते है। फिर भी हम इतना तो पूछने का हक रखते ही है कि उपनिषदो मे यह विद्या कहा से आई ? निश्चय ही वेदो मे। महर्षि भ्रमोच्छेदन मे लिखते है कि- 'वेदो मे परा विद्या न होती तो केन आदि उपनिषदो मे कहा से आती ? मूल नास्ति कुत शाखा। क्या जो परमेश्वर अपने कहे वेदो मे अपनी स्वरूप विद्या का प्रकाश न करता, तो किसी ऋषि--मुनि का सामर्थ्य ब्रह्म विद्या के कहने मे कभी हो सकता था ? क्योकि कारण के बिना कार्य होना असम्भव है।" अत यह तो हो सकता है कि वेद मे ब्रह्मविद्या का मूल हो और उपनिषदो मे उसकी व्याख्या एव विस्तार हो, किन्तु यह नही कि वेदो में ब्रह्मविद्या है ही नही। फिर उपनिषदो का सदा से प्रभुत्व रहा है और सदा रहेगा --यह बात स्वामी विवेकानन्द जी ने पता नही किस आधार पर कह दी। कोई प्रमाण तो उन्होने प्रस्तुत किया नही। फिर उपनिषदे भी तो अन्तत वेद के प्रमाण को ही स्वीकारती है क्योकि वे परत प्रमाण है, स्वत प्रमाण तो केवल एक वेद ही है। फिर उनका प्रभुत्व कैसे ? ब्राह्मण ग्रथ सभी स्मृतिया सभी धर्मशास्त्र वेद के प्रभुत्व को स्वीकार करते है पर स्वामी विवेकानन्द जी को यह स्वीकार्य नही हो रहा।

अब हम विज्ञान के दूसरे अंग जिसे भौतिक विज्ञान अथवा पदार्थ विद्या या आधुनिक विज्ञान कहते है, उसकी चर्चा करेगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वेदो मे पदार्थ विज्ञान की युक्ति युक्त सप्रमाण सिद्ध की है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के जिन अध्यायो मे वैज्ञानिक विषयो का विवेचन किया गया है, उनमे सृष्टि विद्या, पृथ्वी आदि लोक भ्रमण, आकर्षणानुकर्षण, प्रकाश्य-प्रकाशक, गणित, नौविमान, तारविद्या, वैद्यक आदि आधुनिक विषय प्रमुख है। महर्षि की यह विशेषता है कि वे जहा वेदो मे विज्ञान का समर्थन करते हैं वहा केवल मन्त्रोच्चारण से अग्नि उत्पन्न होने जैसी मिथ्या बातो का खण्डन करने में भी नही चूके। प्राचीन भारत के गौरव को याद करते हुए महर्षि भाव विभोर होकर कहते है कि—'पहले आर्य लोगो मे शतघ्नी अर्थात् तोपे भी थी और भुशुण्डी अर्थात बन्दूके भी थी। यह सब हमारा बल किधर चल दिया ? अग्नि अस्त्रादिको का लोप कैसे हुआ ? आजकल के पण्डित ऐसा कहते हैं कि पहले मन्त्रोच्चार के सामर्थ्य से आग्नेयास्त्रादि निर्माण होते थे परन्तु ऐसा नही। मन्त्रो के कारण आग उत्पन्न होती थी यदि ऐसा मानें तो मन्त्र बोलने वाला स्वय कैसे नही जलता था ? तो भाई ऐसा नही। मन्त्र अर्थात् विशेष अक्षर आनु-पूर्विक अर्थात् शब्दो मे और अर्थो मे संकेत मात्र जो सम्बन्ध है वह और मे सामर्थ्य नही। जैसे अग्नि शब्द मे दाहकत्व नही है तद्वत् मन्त्र जपने से कोरा समय खोना है। (पूना प्रवचन वेद विषयक) इतना ही नही प्राचीन आर्यों की बुद्धिमत्ता का वर्णन करते हुए महर्षि आगे लिखते है कि वे एक ही मन्त्र को लेकर जपने नही बैठते थे, परन्तु अनेक मन्त्रो की मीमांसा करते थे। इसी लिए वारुणास्त्र, आग्नेयास्त्रादि उन्हे विदित थे अर्थात् पदार्थो के गुणो को जान उनकी विशेष योजना वे करते थे। विशल्यौषधि नामक उन्हे एक औषधि विदित थी जिससे कैसा ही जख्म क्या न हो इस औषधि से झट भर आता था। पहले बंगाल मे आर्य लोगो की वैद्यक विद्या की लोग हसी उडाते थे। परन्तु डाक्टर महेन्द्रनाथ सरकार सदृश विद्वान् पण्डित ने चरक, सुश्रुत सदृश ग्रथो का उज्जीवन किया, जिससे अंग्रेजी सीखे हुए लोगो का भ्रम दूर हुआ। महेन्द्रनाथ ने प्राचीन आर्य ग्रन्थो के उज्जीवन करने के लिए बहुत सा धन इकट्ठा करने का प्रयत्न चलाया है सो यह उनका भूषण है। पदार्थ-ज्ञान के विषय मे वेदो मे बडी दक्षता है।" (वही)

महर्षि ने जिस समय वेद मे विज्ञान की बात कही तो उस समय लोग सहसा इस पर विश्वास करने को तैयार नही हुए। यद्यपि आज वैसी स्थिति नही है तथापि अब भी कुछ लोग हैं जो इस पर विश्वास करने को तत्पर नही। काशी विश्वविद्यालय के पण्डित बलदेव उपाध्याय आदि इनमे अग्रणी हैं। वे वेदो मे विज्ञान का निषेध करते है। जबकि विपरीत इसके हम योगी अरविन्द को महर्षि की इस

(शेष पृष्ठ ७ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन



भारत का जनमानस उत्सव प्रेमी है। किसी भी उत्सव की प्रतीक्षा हम सभी बड़ी उत्सुकता से करते हैं। हमारे पारिवारिक उत्सव हो, अथवा सामाजिक, हम सभी उत्सवो को उत्साह पूर्वक मनाते है। वास्तव मे भारतीय जनता उत्सव धर्मी है। अनेक स्थानो पर अनेक मेले होते हैं। उनके लिए कोई निमत्रण पत्र नही भेजता, फिर भी लाखो करोडो लोग कुम्भ के अवसर पर अथवा कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर इकट्ठे हो जाते हैं। ऐसी बात नही है कि केवल उत्तर भारत मे ही यह धार्मिक मेलो के आयोजनो की परम्परा हो, दक्षिण, पश्चिम अथवा पूर्व के किसी भी कोने मे आप चले जाइए, उत्सव यहा पर भी उल्लास के वातावरण मे ही मनाए जाते है। महाराष्ट्र की गणपति पूजा अथवा सुदूर दक्षिण मे नौका विहार—सभी मे उल्लास भरा होता है।

दिल्ली मे तो आए दिन रैलियो का आयोजन होता रहता है। बोटक्लब पर सदा ही किसी न किसी राजनैतिक रैली का आयोजन होता रहता है। कभी-कभी सामाजिक सस्थाए भी गौरक्षा के लिए अथवा महगाई को कम कराने के लिए या अश्लील पोस्टरो पर पाबन्दी लगवाने के लिए प्रदर्शन करती हैं।

परन्तु इन सभी से वह उद्देश्य सिद्ध नही होता जिसकी तडप आदि काल से मनुष्य के मन मे रहती आई है। हर मनुष्य चाहता है कि वह मनुष्य बने। वह मानव मात्र का, प्राणीमात्र का हित चाहने वाला मनुष्य बने। वह वेद का आदेश मानने वाला 'मनुर्भव' जैसा मनुष्य बने। इस दिशा में आर्यसमाज प्रयत्नशील है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे २३-२४-२५ २६ दिसम्बर को दिल्ली के रामलीला मैदान मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है। निश्चय ही यह समारोह आर्यसमाज की ओजस्विता एव ऊर्जा को प्रतिबिंबित करने वाला समारोह होगा। इस अवसर पर देश-विदेश के हजारो नही, लाखो प्रतिनिधि दिल्ली मे आयेंगे और आर्यसमाज के वर्चस्व को बढाएगे।

इस महासम्मेलन मे अनेक सम्मेलनो आर्यो का आदि देश, आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम, राष्ट्रीय एकता एव साम्प्रदायिक सद्भाव, शिक्षा सस्कृत एव सस्कृति, आर्य महिला सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्यसमाज के लिये जीवन समर्पित करने वाले विद्वानो एव कार्यकर्ताओ को सम्मानित भी किया जाएगा। सार्वदेशिक सभा की एक महान योजना —महर्षि दयानन्द गौ दुग्ध सवर्धन केन्द्र का शिलान्यास भी इसी समय किया जाना है।

दिल्ली के सभी आर्य भाइयो और बहनो का कर्त्तव्य है कि तन, मन धन, से इस महान् यज्ञ मे सहयोग करे तथा देश विदेश के मेहमानो का हार्दिक आतिथ्य एव सत्कार करे। उन्हे किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न होने दे। यही हमारी आतिथ्य परम्परा है।

—डॉ० धर्मपाल

वैदिक धर्म और आर्यसमाज

(पृष्ठ १ का शेष)

दिल्ली सभा के महोपदेशक आचार्य हरिदेव सिद्धान्तभूषण ने मुख्य रूप से कहा कि कई बार उपदेशक स्वाध्याय के अभाव मे अपने उपदेश करते समय विषयान्तर हो जाते हैं। अत प्रवचन स्वाध्याय के साथ होकर ही दें।

युवा वैदिक विद्वान् प० यशपाल सुधाशु ने कहा कि इस सम्बन्ध मे मेरा सुझाव यह है कि पुरोहित व प्रचारक रखते समय पूर्णतया सत्यनिष्ठा...

होना चाहिए। उन्होने बताया कि यज्ञ की पुस्तका मे नया व्यक्ति कुछ उलझ सा जाता है, अत यज्ञ की पुस्तको मे दैनिक यज्ञ के मन्त्र एक साथ होने चाहिए। श्री सुधाशु ने कहा कि प्रवचनो—मे उदाहरण अपने इतिहास की गौरव-गाथाओ से ही सम्बन्धित होनी चाहिए। उपदेश के समापन पर मुख्य-मुख्य बातो को अवश्य दोहराए। वेद की बातो को अनेक शैलियो मे समझाया जा सकता है। उपदेश सिद्धान्त परक व मृदु भाषा शैली मे हो जिसे अन्य विचार रखने वाला भी ग्रहण कर सके।

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त बाबू नवनीत लाल एडवोकेट ने कहा कि मैं श्री सूर्यदेव जी का हार्दिक धन्यवाद करता हू कि इन्होने समाज के प्रचार के लिए विद्वानो को एकत्रित कर उनके सुझाव एव विचार सुनने सुनाने का अवसर दिया। इससे समाज के प्रचार कार्य मे गतिशीलता आएगी। उन्होने कहा कि आर्य समाजो को अपने पर्व मन्दिर से दूर हटकर खुले मैदानो में मनाने चाहिए। उपदेशको के लिए प्रशिक्षण शिविर तथा वृद्ध उपदेशको के आर्थिक सहायता हेतु एक ट्रस्ट का गठन होना चाहिए।

अन्त मे सभा मन्त्री श्री सूर्यदेव ने सभी महानुभावो का धन्यवाद करते हुए कहा कि पुन: शीघ्र ही इसी प्रकार की सभा की बैठक बुलायेंगे जिससे अन्य महानुभावों के विचार सुनने का अवसर मिलेगा।

जगदीश मित्र (मन्त्री) दिल्ली-६

यशस्वी डा० सुधाकरजी चौधरी

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
अभ्युदय, बी-२२ गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-४९

१९ अक्तूबर, १९९० के दिन प्रात एक मोटर बस दुर्घटना मे लोनी रोड पर आयुर्वेद एव सिद्ध के एक यशस्वी चिकित्सक डॉ० सुधाकर जी की असामयिक मृत्यु से एक होनहार चिकित्सक एव जिन्दादिल इसान हमेशा के लिए विदा हो गया। मोहननगर के एव दिल्ली के गगाराम चिकित्सालयो मे उनकी प्राणरक्षा की भरसक कोशिश की गई, परन्तु उनकी प्राणरक्षा सम्भव न हो सकी।

डा० सुधाकर जी, जो व्यावहारिक जीवन मे डा० एस० के० चौधरी के नाम से जाने-बूझे जाते थे, एक शिक्षाशास्त्री एव दर्शनो के उद्भट विद्वान गुरुकुल कागडी के दर्शनोपाध्याय प्रो० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति एव प्रसिद्ध समाज सुधारिका एव प्रचारिका माता प्रभावती जी की द्वितीय सन्तान थे। उनका जन्म २६ दिसम्बर, १९३१ को डेरागाजीखा मे हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा कुरुक्षेत्र और इन्द्रप्रस्थ के गुरुकुलो मे हुई थी। सन् १९५४ मे उन्होने गुरुकुल कागडी से आयुर्वेदालकार की उपाधि प्राप्त की। आयुर्वेद की स्नातकोत्तर परीक्षा एच०पी०ए० उन्होने जामनगर के आयुर्वेद सस्थान से ग्रहण की।

आयुर्वेद की उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह जामनगर के सस्थान मे ही आयुर्वेद के प्राध्यापक बन गए। सन् १९६१ से १९७२ तक उन्होने सरदार शहर की प्रसिद्ध शिक्षा सस्था गाधी विद्यामन्दिर के तत्वावधान मे आयुर्वेद विश्वभारती मे आयुर्वेद सम्बन्धी सभी विषयो का योग्यता एव निष्ठा के साथ अध्यापन किया। सन् १९७२ से वह आयुर्वेद एव सिद्ध के केन्द्रीय अनुसन्धान सस्था में कार्यरत हो गए। उन्होने अनेक वर्षो तक नागपुर और दिल्ली मे सस्थान की विविध शोधात्मक एव प्रबन्ध सम्बधी गतिविधियो की सफलतापूर्वक व्यवस्था एव निर्देशन किया। आतकवाद से आक्रान्त पटियाला मे भी वह कुछ समय तक उपयोगी कार्य करते रहे।

डा० सुधाकर जी अभी पूरी तरह स्वस्थ, निरोग एव हृष्टपुष्ट थे। वह एक जिन्दा दिल मिलनसार इन्सान थे। एक सफल चिकित्सक के अतिरिक्त जीवन मे वह हसमुख, सफल व्यावहारिक नागरिक थे। उन्हे कार्यमुक्त होने मे अभी दो वर्ष की अवधि बची थी। अवकाश ग्रहण करने के बाद वह आयुर्वेद चिकित्सा के साथ आयुर्वेद एव सिद्ध के कुछ ग्रन्थ लिखना चाहते थे। उनकी असामयिक अकाल मृत्यु से न तो जनता को उनके आयुर्वेद की चिकित्सा का भरपूर लाभ मिला और न उनके निष्कर्ष ग्रन्थ रूप धारण कर सके।

उनके पीछे उनकी धर्म पत्नी और सुपुत्री रह गई है। भगवान् से यही प्रार्थना है कि वह दिवगत विद्वान डा० साहब की आत्मा को सद्गति एव सच्ची मुक्ति दे एव उनकी सुपुत्री एव धर्मपत्नी का भावी मार्ग प्रशस्त कर उन्हे यशस्वी बनाए।

उनकी यशस्वी स्मृति मे हार्दिक भावाजलि प्रस्तुत है।

महर्षि दयानन्द के प्रशंसक और भक्त : सर सैयद अहमद खां

—डा० भवानीलाल भारतीय

भारत मे मुस्लिम जागरण के अग्रदूत सैयद अहमद का जन्म दिल्ली मे १७ अक्तूबर १८१७ को हुआ था। इनके पूर्वज ईरान के हिरात नगर से आये थे। इनके पिता सैयद मुहम्मद तकी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। प्रारम्भ मे सैयद अहमद को अरबी तथा फारसी की शिक्षा मिली। कुछ अग्रेजी पढने का अवसर भी उन्हे मिला। १८३६ मे पिता की मृत्यु हो जाने पर उन्हे जीविका निर्वाह के लिए तैयार होना पडा। १८३७ ई० मे वे अग्रेजी सरकार की सेवा मे प्रविष्ट हुए। प्रारम्भ मे वे दिल्ली के सदर अमीन की अदालत मे सरिश्तेदार बनाये गये। सन् १८३९ में उनका स्थानान्तर आगरा मे कमिश्नर की अदालत मे डिप्टी रीडर के पद पर हो गया। १८४१ मे वे मुन्सिफ के पद पर नियुक्त होकर फतेहपुर सीकरी आये। १८४६ मे उन्हे पुन दिल्ली स्थानान्तरित कर दिया गया। १८५० में अधीनस्थ न्यायाधीश के रूप मे उनकी नियुक्ति रोहतक में हुई तथा इसी पद पर १८५५ मे वे बिजनौर आ गये। यहा वे १९५७ की मई तक रहे। उसी महीने मे विद्रोह की ज्वालाए भडक उठी। १८५७ की क्रान्ति मे सैयद अहमद ने अग्रेजो की भरपूर सहायता की। उन्होने सैकडो की प्राणरक्षा की तथा विद्रोह को कुचलने मे गोरे शासको का साथ दिया। फलत विद्रोह की समाप्ति पर अग्रेजो ने उन्हे सर आखो पर उठा लिया तथा गिलअत के अतिरिक्त आजीवन २०० रु० मासिक पेंशन देना स्वीकार किया।

सैयद अहमद की धारणा थी कि जब तक भारत के मुसलमान अग्रेजी शिक्षा प्राप्त नही करेगे तब तक न तो उनका पिछडापन ही दूर होगा और न उनमे किसी प्रकार की सामाजिक चेतना ही जागृत होगी। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होने अलीगढ में मोहम्मडन ऐंग्लो ओरियण्टल की स्थापना का निश्चय किया और ८ जनवरी १८७७ को तत्कालीन वायसराय लार्डलिटन के हाथो से इसकी आधार शिला रखवाई। कालान्तर मे यही कालेज अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम मुसलमानो के महान् शिक्षण केन्द्र के रूप मे विकसित हुआ। इससे पूर्व १८६९ में वे इग्लैण्ड गये जहा उन्हे ब्रिटिश सरकार की ओर से सी०एस०आई० की उपाधि दी गई। १८७६ मे राज्य सेवा से उन्होने अवकाश ग्रहण किया और जीवन का अवशिष्ट समय मोहम्मडन कालेज को समुन्नत करने मे ही लगाया। १८८४ मे उन्होने पजाब का भ्रमण किया और अलीगढ कालेज की सहायता के लिए पर्याप्त धन एकत्र किया। पटियाला नरेश विजयानगरम् के महाराजा, बनारस के महाराजा आदि के लिए बडी-बडी राशिया दान रूप में दी।

भारतीय मुसलमानो को अग्रेजी राज्य के अनुकूल बनाने मे सरसैयद की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। १८५७ के विद्रोह के दो वर्ष पश्चात् ही उन्होने The Loyal Mohammadans of India शीर्षक से एक पुस्तिका लिखकर विदेशी शासको के मन मे व्याप्त इस भ्रान्ति को दूर करने का प्रयास किया कि भारत के मुसलमान अपने अग्रेज हुक्कामो के प्रति वफादार नहीं है। हालांकि प्रारम्भ मे अग्रेजो को सरसैयद द्वारा प्रतिपादित मुसलमानो की स्वामिभक्ति पर अधिक विश्वास नही हुआ, किन्तु जब उन्होने डब्लू डब्लू हण्टर द्वारा लिखित एक पुस्तक Indian Mussalmans का खण्डन कर सिद्ध किया कि मुसलमानो को अग्रेजो के प्रति पूरी हमदर्दी है, तो अग्रेजी सरकार ने सर सैयद को सदा के लिए अपना शुभचिन्तक तथा वफादार मान लिया। कालान्तर मे जब कांग्रेस की स्थापना हुई तो उसका विरोध कर सरसैयद ने अग्रेजो की नजरो में चढने की और कोशिश की। इधर हिन्दी और उर्दू के सवाल पर उर्दू का पक्ष लेकर सरसैयद मुसलमानो का भी विश्वास जीतने मे सफल हो गये। उन्होने यथाशक्य प्रयास किया कि कांग्रेस के रूप मे उभरती हुई राष्ट्रीयता की धारा से भारत के मुसलमानो को पृथक् रखा जाय ताकि यह वर्ग अग्रेजो का अधिक से अधिक सरक्षण तथा साहाय्य प्राप्त कर सके। मार्च १८९८ ई० में उनका निधन हो गया।

स्वामी दयानन्द और सर सैयद

स्वामी दयानन्द और सैयद अहमद की प्रथम भेट अलीगढ मे जनवरी में हुई। इस समय वे वहा के न्यायाधीश पद पर थे। स्वामीजी की विचारधारा से सैयद साहब अत्यन्त प्रभावित हुए और दोनो के बीच आत्मीयता स्थापित हो गई। स्वामीजी से उनकी दूसरी भेट इसी वर्ष बनारस मे हुई। इस समय वे बनारस मे सब जज के पद पर कार्य करते थे। स्वामीजी का एक व्याख्यान सरसैयद के बगले पर भी कराया गया तथा उनके माध्यम से वे बनारस के तत्कालीन जिलाधीश मिस्टर शेक्सपियर से भी मिले। स्वामी दयानन्द को सच्चा देश हितैषी तथा समाज सुधारक समझ कर सैयद अहमद ने दिल्ली मे स्वामीजी द्वारा आमन्त्रित उस धर्म सम्मेलन मे भी भाग लिया जो लार्ड लिटन द्वारा जनवरी १८७७ के प्रथम सप्ताह मे दिल्ली मे आयोजित शाही दरबार के अवसर पर किया गया था। सर सैयद से उनकी आखिरी मुलाकात १८७८ के अगस्त मास मे पुन अलीगढ मे ही हुई। इस समय तक सैयद साहब ने सरकारी सेवा से अवकाश ले लिया था और वे स्थायी रूप से अलीगढ मे ही रहने लगे थे। इस समय स्वामी जी से भेट करने के लिए बम्बई के आर्यसमाजी मूलजी ठाकर सी०, श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आये हुए थे। इस अवसर को उपयुक्त जानकर सैयद साहब ने स्वामी जी तथा उनके बम्बई से आये हुए भक्तो को अपने यहा भोजन पर आमन्त्रित किया। स्वामीजी तो भोजन के लिए नही गये किन्तु बम्बई के सज्जनो ने सैयद साहब के यहा भोजन किया। स्वामीजी के लिए किसी अन्य मतावलम्बी के घर का भोजन स्वीकार करना या न करना कोई सैद्धान्तिक प्रश्न नही था तथापि वे नही चाहते थे कि इस बात को लेकर जन-सामान्य मे अनावश्यक रूप से भ्रम फैले।

स्वामीजी के निधन पर सर सैयद ने अपनी शोक सवदेना प्रकट करते हुए अलीगढ इनस्टीट्यूट गजट के वाल्यूम १८ सख्या ७९ (६ नवम्बर १८८३) मे लिखा था- -मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती से भली भाति परिचित था तथा मेरा उनके प्रति पूरा आदर भाव भी था। इसका कारण इतना ही है वे नितान्त उच्चाशय तथा विद्वान् पुरुष थे जिनके प्रति प्रत्येक मतावलम्बी को अपना सम्मान प्रकट करना ही चाहिए। वे इतने महान पुरुष थे कि जिनके तुल्य भारत मे किसी अन्य का मिलना मुश्किल है। अत उनकी मृत्यु का शोक मनाना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। ऐसा अद्वितीय पुरुष हमारे बीच से उठ गया यह नितान्त शोक जनक है।"

इसी प्रसग में उन्होने आगे लिखा था "स्वामी दयानन्द सरस्वती सस्कृत के गम्भीर विद्वान् तथा वेदो के मतर्क अध्येता थे। एक उच्च विद्वान होने के साथ साथ वे उच्च चरित्र तथा आध्यात्मिक वृत्ति के पुरुष भी थे। उनके अनुयायी उन्हे ईश्वर के तुल्य सम्मान देते थे तथा निश्चय ही वे इस सम्मान के पात्र भी थे। उन्होने हिन्दू धर्म मे अनेक सुधार किये। वे मूर्तिपूजा के कट्टर विरोधी थे तथा इस विषय को लेकर उनके पण्डितो से अनेक शास्त्रार्थ भी हुए थे जिनमे उन्होने यह निर्विवाद रूप से सिद्ध किया था कि मूर्तिपूजा के लिए वेदो मे स्वीकृति नहीं है। वे निराकार से भिन्न किसी अन्य ईश्वर की उपासना को अनुचित मानते थे। उन्होने यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया था कि वेदो मे जड तत्त्वो की पूजा का विधान नही है। मेरे विचार के अनुसार स्वामी प्रकृति को अनादि तथा शाश्वत मानते थे तथा उसे 'माया' कहकर भी सम्बोधित करते थे। यदि वे प्रकृति की अनादिता मे विश्वास नही रखते तो सम्भवत ईश्वर के स्वरूप को लेकर उनके तथा मुसलमानो के विचारो मे कोई अन्तर नही रह जाता था।

सर सैयद के अन्तिम कथन का भाव इतना मात्र ही है कि ईश्वर के सम्बन्ध में इस्लाम की मान्यता तथा स्वामी दयानन्द की मान्यता में अधिक अन्तर नही है (दोनो ही ईश्वर निराकार तथा सर्व शक्तिमान मानते है। अन्तर यदि कुछ है तो यही कि इस्लाम मे जड प्रकृति (माद्दा) को भी ईश्वर से ही उत्पन्न माना गया है जब कि स्वामीजी की धारणा के अनुसार ईश्वर तथा जीव की ही भाति प्रकृति भी अनादि अनुत्पन्न तथा शाश्वत है।

हमारी सूचना के अनुसार सर सैयद तथा स्वामी जी के बीच पत्र व्यवहार भी हुआ था। अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सग्रहालय मे यह पत्र-व्यवहार रखा हुआ है। सर सैयदके जन्मदिन के अवसर पर उसे दर्शनार्थी देख सकते हैं।

दयानन्द उवाच

आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मत में हैं वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल वास्तव में सत्य हैं उनको ग्रहण और जो जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं—उनको त्याग कर परस्पर वर्तें तो जगत का पूर्ण हित होवे क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विधि दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए सतप्रावा विद्यालय करौल बाग की ओर से पचास हजार रुपये भेंट

नई दिल्ली ७ अक्टूबर। सतप्रावा आर्य कन्या विद्यालय के प्रागण मे एक सादे समारोह के अन्तर्गत विद्यालय के प्रधान प्रबन्धक श्री तीरथ राम आहूजा द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को दिसम्बर मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए पचास हजार रुपए की थैली भेंट की गई। श्री आहूजा जी ने अपने सम्बोधन मे कहा कि विद्यालय प्रशासन के द्वारा इस महासम्मेलन मे हर प्रकार की सहायता एव योगदान दिया जाएगा। २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक महासम्मेलन मे भाग लेने वाले आर्य बन्धुओ के लिए ठहरने तथा खानपान की व्यवस्था भी विद्यालय की ओर से की जाएगी।

इस सभा मे सर्वश्री धर्मपाल, चन्द्रदेव, सूर्यदेव, अजयमहना, विमल वधावन एडवोकेट, रामलाल मलिक तथा लाला इन्द्रनारायण के अतिरिक्त श्री तीरथराम आहूजा जी के परिवार के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे। लाला इन्द्रनारायण जी ने आर्य महासम्मेलन के लिए पच्चीस हजार रुपये देने की घोषणा की। करौल-बाग आर्य समाज की ओर से भी महासम्मेलन के लिए धन सग्रह का वचन दिया गया। इस अवसर पर श्री रामलाल मलिक ने कहा कि महासम्मेलन मे चार दिन तक रामलीला मैदान मे वह स्वय ऋषि लगर की व्यवस्था करेंगे।

आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

वेद प्रचार मडल पश्चिम क्षेत्र दिल्ली का प्रथम आर्य महासम्मेलन कीर्ति नगर आर्य समाज मे दिनाक १३ तथा १४ अक्टूबर १९९० को पूर्ण उत्साह एव धूमधाम से मनाया गया। इसमे प्रात कालीन यज्ञ, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, कवि सम्मेलन तथा आर्य युवा सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया था। दोनो दिन प्रात ९ बजे उपस्थित धर्म प्रेमियो को फलाहार एव दुग्धपान कराया गया तथा दोपहर को अद्भुत ऋषिलगर की व्यवस्था की गयी। इस सम्मेलन मे प्रकाड विद्वान, तेजस्वी वक्ता एव उच्चकोटि के कविगण उपस्थित थे। यह सम्मेलन मडल की ४५ आर्य समाजो का सम्मिलित सम्मेलन था। सभी आर्य समाजो ने अपनी पूर्ण निष्ठा से सहयोग दिया। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली एव आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने भी पूर्ण सहयोग देकर इस सम्मेलन को सफल बनाने मे मडल को पूरा सहयोग दिया। मैं मडल की ओर से सभी का आभार व्यक्त करता हू। यदि इस सम्मेलन मे किसी को अपने मान एव सत्कार मे जाने तथा अनजाने मे कोई अभाव प्रतीत हुआ हो तो तदर्थ मैं मडल की ओर से क्षमा प्रार्थी हू। मैं सभी आर्यसमाजो के प्रधान, मन्त्री एव कार्यकारिणी का धन्यवादी हू। कीर्ति नगर आर्य समाज के अधिकारियो एव सभी सदस्यो का विशेष रूप से ऋणी हू जिन्होने स्थान एव सहयोग देकर इसे सफल बनाने मे किसी भी प्रकार का अभाव नही होने दिया।

—रामचन्द्र आर्य, महामन्त्री

गुणतन्त्र से राष्ट्रोत्थान—आर्य समाज (बिरला लाईन्स)

७ नवम्बर, दिल्ली। यहा आयोजित एक सभा मे ७ नवम्बर १९६६ के शहीद गौ-भक्तो तथा अब ३० अक्टूबर १९९० व बाद के शहीद रामभक्तो को भावभीनी श्रद्धाजलि दी गई व अत्याचार पर आक्रोश व्यक्त किया गया।

आर्य समाज बिरला लाईन्स के प्रधान-आर्य बन्धु श्री जयप्रकाश जी ने स्पष्ट किया कि सभी गर हिन्दू सम्प्रदाय व जातिवादी लोग, वोटलोलुप राजनीतिज्ञो से बोगस धर्म-निरपेक्षता की आड मे तुष्टीकरण की आत्मघाती लालसा रखते हैं। इसी कारण कई राष्ट्रघाती समस्याए (यथा मडल-आयोग, शाहबानो काड पजाब, कश्मीर, असम आदि) उत्पन्न होती रहती है। अशिक्षा, अभाव व अन्याय के विरुद्ध सघर्ष के स्थान पर भारतीय राजनीतिज्ञ गन्दी राजनीति से देश व अराजनैतिक व्यवस्थाओ का भी खिलवाड कर रहे है।

अन्त मे निम्न प्रस्ताव के द्वारा भारत के महामना राष्ट्रपति जी से गणतन्त्र व सम्प्रदाय निरपेक्षता की वास्तविक रक्षा के लिए सशक्त माग की कि—

(१) कुछ विषयो यथा समान न्याय, शिक्षा (चरित्र, स्वास्थ्य व रोजगार सहित) वाणिज्य, सचार आदि की व्यवस्था हेतु गुणतन्त्र आधारित व राजनीति-निरपेक्ष उच्चाधिकारिणी पृथक सभाए गठित की जाए।

(२) गणतन्त्र से लोकसभा व गुणतन्त्र से अन्य सभाओ को स्पष्ट नियमन व सचालन बनने तक के लिए वर्तमान लोकसभा आदि भग कर एक काम चलाऊ राष्ट्रीय सरकार का गठन तत्काल किया जाए।

—आर्य बन्धु जयप्रकाश

आर्य समाज कृष्णनगर में ऋषि निर्वाणोत्सव

आर्य समाज कृष्णनगर मे २८ अक्तूबर १९९० को ऋषि निर्वाणोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, प्रो० प्रशान्त कुमार वेदालकार एव प्रणव शास्त्री ने आर्य जनता को सम्बोधित किया।

—ज्ञान चन्द चौधरी, प्रधान

आर्य समाज शालीमार बाग में वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बी एन पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली-५२ मे २६ नवम्बर १९९० से १ दिसम्बर १९९० तक, दशम वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रतिदिन प्रात ६ ३० से ८ ०० तक यज्ञ और रात्रि मे ८ बजे से ९ ३० तक आचार्य यशपाल जी सुधांशु की वेदकथा होगी। वेदकथा से पूर्व प० विजयभूषण जी भजनोपदेश करेंगे। १दिसम्बर को दोपहर मे आर्य महिला सम्मेलन तथा २दिसम्बर को पूर्णाहुति के बाद साम्प्रदायिक सद्भाव सम्मेलन आयोजित किया गया है। इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री महाशय धर्मपाल जी, प० सच्चिदानन्द शास्त्री प० इन्द्रराज, प० क्षितीश वेदालकार, डा० धर्मपाल, डा० महेशविद्यालकार, श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, श्रीमती प्रेमशील महेन्द्रू, डा० शशि प्रभा और श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री आर्य जनता को सम्बोधित करेगी।

—देवराज कालरा, मन्त्री

स्व. पं. शिवकुमार शास्त्री जी का ७६ वां जन्मदिवस समारोह

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान मे आर्य समाज डिफेन्स कालोनी मे रविवार १४ अक्तूबर को आर्य जगत् के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान, शिक्षाविद् राजनेता भूतपूर्व सासद स्व० प० शिवकुमार शास्त्री का ७६ वा जन्म दिवस बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूज्यपाद स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान व भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने प० शिवकुमार शास्त्री से ५० वर्षो से घनिष्ठ सम्बन्धो का उल्लेख करते हुए उन से जुडे कई प्रेरक सस्मरण सुनाए व उनके वेद प्रचार के लिए समर्पित जीवन, वैदिक साहित्य के महान पण्डित व उच्चकोटि का वेदोपदेशक आदि गुणो की चर्चा की। श्री प्रेमचन्द श्रीधर ने उन्हे मूल्यो की राजनीति करने वाला महान ध्येयवादी राजनीतिज्ञ बताया। आर्य समाज के प्रसिद्ध लेखक वेदबन्धु प० अमि-विनय भारती सम्पादक वेदोद्धारणी ने शास्त्री जी को लेखनी व वाणी का जादूगर बताते हुए प्रभावी वक्ता तथा प्रतीकात्मक कथाओ से अपनी बात स्पष्ट करने वाले उन्हे असाधारण धर्मोपदेशक बताया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी ने शास्त्री जी को बहुगुणी प्रतिभा का धनी बताते हुए उनके विलक्षण व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री ने आर्य विद्वानो के जन्म दिवस मनाने की परम्परा कायम करने वाले आयोजको को बधाई देते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। श्री कृष्णलाल शास्त्री ने भी शास्त्री के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला।

आर्य जगत् के सम्पादक प० क्षितीश वेदालकार ने आर्य समाज के खोजपूर्ण दस्तावेज के रूप मे अकथनीय सस्मरण सुनाते हुए शास्त्री जी की तुलना आदर्श उपदेशक, आदर्श, राजनीतिज्ञ, आदर्श पिता आदि से उन्हे आदर्शों का प्रकाश स्तम्भ बताया। पूज्यपाद स्वामी दीक्षानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे उनके जीवन के कई पहलुओ पर प्रकाश डालते हुए उन्हे 'विलक्षण व्यक्तित्व' का धनी बताया।

शोक प्रस्ताव व श्रद्धाञ्जलि

श्रीमती सरला पाल मन्त्रिणी आर्य समाज डिफेंस कालोनी एव उपप्रधाना दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा, की पूज्य माता श्रीमती लीलावती बख्शी जी का निधन दीपावली (१८-१०-९०) के दिन हुआ, वह ९१ वर्ष की थी। उन्होने जीवन भर समाज की सेवा की। आप काग्रेस की क्षेत्र प्रधाना भी थी और भगतसिंह के पिता जी को ३०००) का चैक भी दिया था। स्वय खद्दर कात कर पहनने का व्रत लिया था। लाहौर मे अपने घर मे समाज लगाती रही पाकिस्तान बनने के बाद पश्चिमी पटेल नगर मे भी अपने घर समाज लगाते थे। वह अपने भजन बनाकर गाया करती थी। जो बडे लोक प्रिय हुए। सच्चे अर्थ मे स्वामी दयानन्द जी के सिपाही थे। उनके पति देव ने सारी आयु डी ए वी कालेज को अर्पित की। माता जी एक पवित्रात्मा थी। मृत्यु के दिन भी स्वस्थ नजर आती थी। ३-३० बजे साय अपनी इह लीला समाप्त की। उनकी पुत्री श्रीमती सरला पाल तो उनका एक अश है, वह मानवधन्य एव भाग्यशाली है जिन्हे ऐसे माता पिता मिले। उनकी शोक सभा एव श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज मालवीय नगर मे सम्पन्न हुई। आर्य जगत् ऐसी माता को अपनी भावभीनी हार्दिक पुष्पाजलि, सुमनांजलि, श्रद्धाजलि समर्पित करता है।

—आर्य मित्र बजाज

वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १९९१

आर्य समाज सान्ताक्रुज अपने आगामी वार्षिकोत्सव पर जनवरी १९९१ मे निम्न दो पुरस्कारो से आर्य विद्वानो को सम्मानित करेगा।

(१) वेद वेदाग पुरस्कार

जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद वेदागो पर अनुसधान किया हो एव ग्रन्थ लिखे हो--उन्हे वेद वेदाग पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। जिसकी पुरस्कार राशि ३१०००/- होगी।

(२) वेदोपदेशक पुरस्कार

वेद वेदाग के अनुसधान कर्त्ताओ के अतिरिक्त जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त आर्य समाज के उपदशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्त्ता के रूप में सेवा की हो--इस पुरस्कार की राशि ११०००/- होगी।

उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त जिस विद्वान को पुरस्कृत किया जाएगा उन्हे अभिनन्दन पत्र, शाल एव रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जाएगा।

उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ योग्य विद्वानो के प्रस्ताव को आमन्त्रित करती है। जो आर्य बन्धु किसी विद्वान के नाम उपरोक्त पुरस्कारो हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं वे विद्वानो के जीवन परिचय, कार्य एव लिखे गये ग्रन्थो की सूची सहित विस्तृत पत्र दिनाक ३१-१२-९० तक भेजने की कृपा करे।

जो विद्वान अपने नाम का स्वय प्रस्ताव करेगे वे अयोग्य माने जाएगे।

(कैप्टिन देवरत्न आर्य)

वेद वेदाग पुरस्कार समिति

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह

१२ नवम्बर, आर्य युवक सभा पजाब की प० मुनिवर गुरुदत्त जी विद्यार्थी शताब्दी समारोह का आयोजन स्थानीय आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री एस० सी० नन्दा, प्रिंसिपल आर्य कालेज ने की।

समारोह को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालय मन्त्री श्री सरदारी लाल आर्यरत्न ने युवको को आह्वान किया कि जाति पाति को समाप्त करने, दहेज जैसी सामाजिक बुराईयो को समाप्त करने के लिए सघर्ष करें। समारोह के मुख्य अतिथि श्री जे० बी० गोयल, पी० सी० एस० अतिरिक्त उपायुक्त लुधियाना ने कहा कि आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में, सामाजिक उत्थान एव अन्धविश्वास समाप्त करने, देश को आजाद कराने के लिए सराहनीय भूमिका निभाई हैं। आज की विषम परिस्थितियो में आर्य युवको को रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिये।

श्री सतीशचन्द्र जी नन्दा प्रिंसिपल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो पर चलते हुए यदि सभी को शिक्षा के समान अवसर दिये जायें तो मण्डल कमीशन की कोई आवश्यकता नही रह जाती है। उन्होने युवको को चरित्र निर्माण तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर देश की एकता और अखण्डता और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने तथा युवको को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने के लिए अमृतसर से डा० हर भगवान आर्य, लुधियाना से गरीब दास, ललित असवाल, महेन्द्रप्रताप आर्य, राजेन्द्र महेन्द्र, वीरेन्द्र ढीगरा, बरनाला से रामशरण दास गोयल, सतीश सिघवानी, फिरोजपुर से ललित बजाज तथा से चाद राम विद्यालकार, मलेरकोटला से रमेश कौशल आदि ने युवको को सम्बोधित किया।

इस समारोह मे आर्य युवक सभा पजाब के प्रधान श्री रोशन लाल आर्य ने श्री सतीश नन्दा, श्री जे० बी० गोयल, अतिरिक्त उपायुक्त, श्री सरदारी लाल आर्यरत्न को स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया।

५४ वां वार्षिकोत्सव तीर्थ मेला

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी त० पलवल जिला फरीदाबाद का ५४ वा वार्षिकोत्सव फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, नवमी, दशमी तदनुसार २२, २३, २४ फरवरी १९९१ को बडे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाएगा।

इसमे सम्पूर्ण भारत के सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान्, भजनोपदेशक सन्यासी और नेतागण के पधारने की पूर्ण सम्भावना है।

अत आर्य तीर्थ मेला मे इष्ट मित्रो सहित पधार कर अनुगृहीत करें।

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी
बल्लभगढ़ फरीदाबाद (हरियाणा)

गोरक्षा-एक विडम्बना

गाधीजी के अहिंसा सिद्धान्त की दुहाई देने वाली भारत सरकार विदेशी मुद्रा कमाने के लोभ मे आठवी पचवर्षीय योजना मे देश के पशु धन को समाप्त करने को कटिबद्ध है और इस हेतु उसने कई वधशालाए बनाने की योजना बनाई ताकि १९८९-९० मे निर्यातित ११० करोड रुपये के मास के स्थान पर ३०० करोड रुपये का मास प्रति वर्ष निर्यात किया जा सके। आठ नये हत्यालय बनाये जाएगे और ११ पुरानी वधशालाओ का सुधार किया जाएगा। पक्षियों से होने वाली हानि को रोकने के नाम पर रक्षा-मत्रालय ने २२ नगरो मे वधशालाए बनाने का निश्चय किया है।

लगता है कि बुद्धिहीन शासक, ऋषि-मुनियो की इस भूमि को, पूरे भारत-वर्ष को एक विशाल वधशाला बनाने पर तुल गये हैं। बिगडे मस्तिष्को की ऐसी पाशविक योजनाओ से पर्यावरण का जो विनाश होगा उसकी कल्पना से ही हृदय काप उठता है। जगन्नियन्ता का कोप इस देश पर नही होगा तो और क्या होगा?

चीन मे कम्युनिस्टो का शासन स्थापित होने के बाद उन लोगो ने सोचा कि पक्षी खेतो मे से बीज चुग जाते हैं इसलिए फसल की हानि होती है अत झट आदेश जारी हो गया कि सब पक्षी मार डाले जाए। पक्षी मार कर लाने वाले को सरकार से पुरस्कार मिलने लगा। करोडो पक्षी मार डाले गये। फसल उस वर्ष अधिक हुई। योजना बनाने वाले अत्यन्त प्रसन्न। परन्तु फसल के कटने से पहले ही उसमें कीडा लग गया और अनाज खाने के योग्य नही रहा। आयोजक सिर पकड कर बैठ गये। खोज के बाद होश आया कि निस्सदेह पक्षी खेतो से कुछ बीज चुग जाते होंगे परन्तु बडा उपकार वे यह करते थे कि खेतो मे होने वाले कीडो को भी चुग जाते थे।

जगन्नियन्ता द्वारा स्थापित की गई व्यवस्था को बिगाडना मानवता नही बुद्धिहीनता है।

देवदत्त बाली,
देहरादून

आर्य लेखक कोष का प्रकाशन शीघ्र

जिन महानुभावो ने आर्य लेखक कोष के लए अग्रिम शुल्क भेजा है उनको तथा अन्य सभी बन्धुओ को सूचित किया जा रहा है कि कोष का मुद्रण कार्य गत अप्रैल से ही आरम्भ हो चुका है। छपाई वैदिक यत्रालय अजमेर मे हो रही है और प्रूफ मैं स्वय चण्डीगढ मे मगा कर देखता हू ताकि मुद्रण शुद्ध तथा त्रुटि रहित हो। तथापि इधर आरक्षण विरोधी आन्दोलनो के कारण डाक व्यवस्था गडबडा रही है। अत ग्रन्थ के तैयार होने मे विलम्ब होना स्वाभाविक है। ग्रन्थ लगभग ५०० पृष्ठो का सुन्दर गेट अप युक्त तथा सजिल्द होगा। अग्रिम मूल्य मात्र १०० रु० ही है। जिसमे डाक व्यय भी सम्मिलित है। अपना शुल्क आज ही भेज दे ताकि समय पर ग्रन्थ आपको भेजा जा सके।

डा० भवानीलाल भारतीय
कोठी न० ४१, सैक्टर १५ए चण्डीगढ-१६००१५

पं० आशुराम जी आर्य का निधन

आर्य जगत् को यह जानकर अत्यन्त दुःख होगा कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् वेदो के उर्दू अनुवादक तथा विश्ववेद परिषद् चण्डीगढ के महामन्त्री प० आशुराम आर्य का १० नवम्बर १९९० को पी० जी० आई चण्डीगढ मे हृदयाघात के कारण निधन हो गया। वे ७७ वर्ष के थे। प० आशुराम जी तीन दिन पूर्व ही अपनी इग्लैण्ड मे बसी पुत्रियो से मिलकर भारत लौटे थे। अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हे अस्पताल मे दाखिल कराया गया। १९१३ मे मुलतान जिले के खानगढ मे जन्मे प० आशुराम आर्य देश विभाजन के पश्चात् अम्बाला तथा बाद मे चण्डीगढ के निवासी बन गए। उन्होने कुछ काल तक डी० ए० वी० स्कूल में अध्यापन किया तथा इसके बाद पौरोहित्य कर्म को स्वीकार किए। वे एक सफल कर्मकाण्डी पुरोहित थे और चण्डीगढ तथा समीपवर्ती नगरो मे उन्हे सस्कारो, यज्ञों तथा अन्य कर्मकाण्डो के लिये आमन्त्रित किया जाता था। विगत कुछ वर्षो से उन्होने चारो वेदो का उर्दू मे अनुवाद करने का बीडा उठाया था। तीन खण्डो मे वे ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद के कुछ अशो के उर्दू अनुवाद प्रकाशित भी कर चुके थे जिनका उर्दू भाषी वर्ग मे स्वागत हुआ था। प० आशुराम जी आर्यसमाज के लिये सर्वथा समर्पित रहे। ईश्वर उनकी दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। उनकी अन्त्येष्टि मे हजारों की सख्या में चण्डीगढ के नागरिक उपस्थित थे।

भवानीलाल भारतीय

क्या वेद मे विज्ञान नहीं?

(पृष्ठ २ का शेष)

बात की प्रबल वकालत करते देखते है कि वेद मे विज्ञान है। वे लिखते है कि वेद मे केवल धार्मिक सच्चाईया ही नही वैज्ञानिक सच्चाईया भी हैं मैं तो यहा तक कहूगा कि वेद मे कुछ वैज्ञानिक सत्य तो ऐसे भी है कि जि ह आधुनिक विज्ञान जानता तक नही और तब दयानन्द ने वेद विद्या की गम्भीरता का अतिशयोक्ति पूर्ण वणन नही अपितु न्यूनोक्तिपूण वणन किया है। (बकिम तिलक दयानन्द से) आश्चय तो तब होता है कि जब हम कविवर रामधारी सिंह दिनकर जैसे प्रबुद्ध व्यक्ति को वेदो मे विज्ञान का विरोध करते देखते है सस्कृति के चार अध्याय नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक के पष्ठ ५६५ पर श्री दिनकर लिखते है कि आश्चय है कि श्री अरवि द स्वामी दयान द का समथन ही नही किया प्रत्युत यह भी शिकायत है कि स्वामी जी ने वेदो के महत्व को घटा कर ही कहा है। हमारा विश्वास है कि वेद के रहस्य को कोरा कोई विद्वान नही जान सकता अपितु विद्वान् योगी ही जान सकता है महर्षि दयानन्द भी विद्वान योगी थे और अरवि द भी। अत दोनो ही यथाथ तक पहुचने मे सफल हो चुके जबकि कितने ही कोरे विद्वान मानो वेद समुद्र के किनारे खडे लहर ही गिनते रह गये। वेदो मे विज्ञान है इस तथ्य का उद्घाटन वेदो के ऋषि दयान द ने किया और उसका समथन वेदज्ञ योगी अरवि द ने किया। धन्य हो योगेश्वर दयान द और धन्य हो योगीराज अरवि द जो वेद के यथाथ तक स्वय पहुच कर ससार को पहुचा गये

वेदो मे विज्ञान है—महर्षि की इस स्थापना का समथन देश विदेश के अनेको विद्वान् ने किया है एव कर रहे है। बायोग्राफिकल एसेज मे महर्षि दयानन्द पर लिखे अपने एक निब ध मे प्रो० मैक्समूलर (जि हे महर्षि मोक्षमूलर कहा करते थे) लिखते हैं कि स्वामी दयान द के दृष्टि मे वेदो मे वर्णित प्रत्येक बात न केवल पूण सत्य है अपितु वे इससे भी एक कदम आगे बढे और उन्होने उनकी व्याख्या द्वारा अन्यो को भी यह विश्वास दिलाने मे सफलता प्राप्त की कि जो कुछ भी जानने योग्य है वह वेद मे उपलब्ध है यहा तक कि आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कार भी वेद मे वर्णित है। भाप का इजन बिजली तार बेतार आदि का भी वैदिक ऋषियो को ज्ञान था।

युवा वैज्ञानिक डा० राम प्रसाद वेद मे विज्ञान की चर्चा करते हुए अपनी वेद विमर्श नामक एक पुस्तक मे लिखते हैं कि— तो क्या ऋषि का यह विचार कि वेद मे विज्ञान है सत्य है? इस प्रश्न का उत्तर हम कुछ विद्वानो के मुख से दिलाना चाहेगे। इन्ट्रोडक्शन टू दी मैसेज आफ टवनटीयथ सेंचुरी मे पी०एन० गौड लिखता है कि ऋग्वेद वैज्ञानिक सिद्धान्तो और परीक्षणो का वणन करता है जबकि रसायनिक वस्तुओ और सामान के तैयार करने की विधि यजुर्वेद मे पायी जाती है। यजुर्वेद वास्तव मे प्रयोगशाला मार्ग दर्शक है। द वैदिककाल मे डाक्टर रेले स्वीकार करता है कि—हमारा आजकल का नाडी सिस्टम की रचना का ज्ञान ऋग्वेद के जगत के शाब्दिक वणन से इतनी अच्छी तरह से मिलता है कि मन मे जब कई बार यह प्रश्न उठने लगता है कि क्या वेद वास्तव मे धर्म ग्रथ हैं या वे शरीर विज्ञान और नाडी सिस्टम की रचना विषयक ग्रथ है। सर विलियम जोन्स के विचारानुसार शल्य चिकित्सा औषधि शास्त्र जोतिष सगीत विद्या नृत्य कला धनुर्विद्या तथा गृह निर्माण विद्या की व्यवहारिक कलाये जिन मे यान्त्रिक कला की पद्धति भी सम्मलित है वेदो से ली गई है। जैकोलियट अपनी पुस्तक बाईबिल इन इण्डिया मैं लिखता है कि कितनी आश्चय का बात है। केवल वेद के ही विचार आधुनिक विज्ञान के साथ पूण रूप से मिलते हैं। अत पूव और पश्चिम के विद्वान वेद मे विज्ञान मान चुके है। (वेद विमर्श पृष्ठ ३५ १६) डा० राम प्रकाश जी ने कई वेदमन्त्र प्रस्तुत कर वेद मे विज्ञान की बात सिद्ध की है। और यह घोषणा की है कि आज का भौतिक विज्ञान इन वेद मन्त्रो के एक एक शब्द का समथन कर रहा है। (वेद विमर्श पृष्ठ ३७)

अन्त मे विद्वद्वर पावगी के शब्दो में हम यही कहेगे कि— वेदो मे बहुत सी ऐसी बाते है जिनका अभी तक किसी को ज्ञान नही। क्योकि वे साहित्यिक धन की समाप्त न होने वाली खान है जिसका अभी थोडा भाग ही खुला है और जो अभी तक अज्ञात हो पडा है।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 29 30-11-1990 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

पद्म श्री आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' अमृत महोत्सव का शुभारम्भ

दिनाक १७ सितम्बर ९० नागरी प्रचारिणी सभा नई दिल्ली के तत्वावधान म शुक्रवारी नागरी मच तथा कवि सभा की ओर म हिन्दी के तपोनिष्ठ साहित्यकार एव मनीषी पद्मश्री आचाय क्षमचन्द्र सुमन के ७५ व जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे अमृत महोत्सव का शुभारम्भ हिमाचल भवन सभागार नई दिल्ली मे समारोह पूवक सम्पन्न हुआ।

इस महत्वपूर्ण अनुष्ठान की अध्यक्षता जहा नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमन्त्री श्री सुधाकर पाण्डेय ने की थी वहा आचार्य सुमन का मगल तिलक वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ० दशरथ ओझा द्वारा किया गया। समारोह का सयोजन एव सचालन आचार्य सुमन अमृत महोत्सव समिति के महासचिव पद्मश्री चिरजीव ने किया इस पावन अनुष्ठान का प्रारम्भ दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो द्वारा वैदिक मत्रोच्चार स किया गया।

इस अवसर पर पुस्तकालय नई दिल्ला द्वारा प्रकाशित सुमन जी की नवीनतम कृति चमकत जीवन महकते सितारे का लोकापण भारत के भूतपूव महामेधा निबधक और लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय सस्कृत विद्यापीठ के कुलाधिपति श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने किया।

चतुर्वेदी जी के भाषण के उपरान्त सवश्री डा विजयेन्द्र स्नातक डा० रणधीर राम्रा डा० श्यामसिंह शशि, डा० विश्वामित्र उपाध्यक्ष डा० नारायणदत्त पालीवाल तथा डा० वेदप्रताप वैदिक ने सुमनजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके अन्तरग सस्मरण सुनाए। अन्त मे समारोह के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाण्डेय ने सुमन जी कमठता तथा ध्येय निष्ठा को रेखांकित किया।

श्रीमती निर्मला मिश्र का अभिनन्दन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०७ वे निर्वाण दिवस पर श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में आयोजित ऋषि मेला १९९० के अवसर पर दिनाक २७ अक्टूबर ९० को महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास आर्य समाज फुलेरा की ओर से श्रीमती निर्मला मिश्रा एम ए आनरेरी मजिस्ट्रेट प्राचार्या आर्य कन्या महाविद्यालय बदायू को दयानन्द पुरस्कार के फलस्वरूप २५०१ रुपय नकद स्वणपदक उत्तरीय एव प्रशस्ति पत्र परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के करकमलो द्वारा प्रदान किया गया। अभिनन्दन पत्र फुलेरा आर्य समाज के मन्त्री श्री कवरलाल शर्मा ने समर्पित किया।

—कवरलाल शर्मा मन्त्री आर्य समाज फुलेरा

डा. जगन्नाथ अस्वस्थ

कृष्ण नगर दिल्ला आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य, सार्वदेशिक सभा के सदस्य डा० जगन्नाथ जी का आपरेशन हुआ है जिसमे इनका एक पैर काट दिया गया है। डा० साहब अपनी पत्नी के साथ तपोवन वैदिक आश्रम देहरादून में गये हुए थे। उन्हे वहा पैर मे सूजन हुई तदुपरान्त डाक्टर साहब दिल्ली आ गये यहा उनके उपचार के दौरान उनका एक पैर काट दिया गया है। सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल एव महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी डा० साहब को देखन गये। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि उन्हे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ कर।

—सम्पादक

सेवा मे—

सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५६)